भगवान् महावीर की पचीसवी निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष मे

निग्गंथं पावयणं

अंगसुत्ताणि

२

भगवई



विआहपण्णत्ती

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

सपादक
मुनि नथमल

प्रकाशक
जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

प्रबंध सम्पादक :
श्रीचन्द रामपुरिया,
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग
(जैन विश्व भारती)

स्व० श्री बिरधीचन्दजी गोठी
एवं
मदनचन्दजी गोठी
की
पुण्य स्मृति
में
श्री जयचन्दलालजी
सूरजमलजी गोठी
परिवार (सरदारशहर)
के
आर्थिक सौजन्य
से
प्रकाशित

प्रकाशन तिथि
विक्रम संवत् २०३१
कार्तिक कृष्णा १३
(२५०० वां निर्वाण दिवस)

पृष्ठांक ११५०

मूल्य : ६०)

मुद्रक —
एस. नारायण एण्ड सन्स (प्रिंटिंग प्रेस)
७११७/१८, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-६

ANGA SUTTĀNI
II
BHAGAWAI
VIĀHAPANNATTI

(Bhagawati Sūtra with Original Text Critically edited)

Vāćanā PRAMUKHA
ĀCHĀRYA TULASI

EDITOR
MUNI NATHAMAL

Publisher
JAIN VISWA BHĀRATI
LADNUN
(Rajasthan)

Managing Editor
Shreechand Rampuria.
Director :
Āgama and Sahitya Publication Dept.
JAIN VISHWA BHARATI, LADNUN

Published by the kind munifience of the members of the family of Sri Jaichand Lal Surajmal Gouti (Sardar Shahar) in sacred memory of Birdhichandji Gouti and Madan Chandji Gouti

V.S. 2031
Kārtic Kṛishnā 13
2500th Nirvana Day

Pages 1150

Rs. 90/-

Printers :
S. Narayan & Sons (Printing Press)
7117/18, Pahari Dhiraj,
Delhi-6

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथो से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नो से प्राणवान् वना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमो का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमे लगे। सकल्प फलवान् वना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य मे संलग्न हो गया। अत मेरे इस अन्तस्तोष मे मैं उन सबको समभागी वनाना चाहता हूं, जो इस प्रवृत्ति मे सविभागी रहे हैं। सक्षेप मे वह सविभाग इस प्रकार है—

संपादक :		मुनि नथमल
	सहयोगी	मुनि दुलहराज
पाठ-संशोधन :	,,	मुनि सुदर्शन
	,,	मुनि मधुकर
	,,	मुनि हीरालाल

सविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति मे उन्मुक्त भाव से अपना सविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूं और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य वने।

आचार्य तुलसी

समर्पण

पुट्ठो वि पण्णा-पुरिसो सुदक्खो,
आणा-पहाणो जणि जस्स निच्चं।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
भिक्खुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं॥

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पटु,
होकर भी आगम-प्रधान था।
सत्य-योग मे प्रवर चित्त था,
उसी भिक्षु को विमल भाव से।

विलोडियं आगमदुद्धमेव,
लद्धं सुलद्धं णवणीयमच्छं।
सज्झाय - सज्झाण - रयस्स निच्चं,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं॥

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत।
श्रुत-सद्ध्यान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से।

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल सघ मे मेरे मन मे।
हेतुभूत श्रुत - सम्पादन मे,
कालुगणी को विमल भाव से।

•

ग्रन्थानुक्रम

परिशिष्ट

प्रकाशकीय

सन् १९६७ की बात है। आचार्यश्री बम्बई मे विराज रहे थे। मैंने कलकत्ता से पहुंचकर उनके दर्शन किए। उस समय श्री ऋषभदासजी राका, श्रीमती इन्दु जैन, मोहनलालजी कठौतिया आदि आचार्यश्री की सेवा मे उपस्थित थे और 'जैन विश्व भारती' को बम्बई के आस-पास किसी स्थान पर स्थापित करने पर चिन्तन चल रहा था। मैंने सुझाव रखा कि सरदारशहर मे 'गाधी विद्या-मन्दिर' जैसा विशाल और उत्तम संस्थान है। 'जैन विश्व भारती' उसी के समीप सरदारशहर मे ही क्यो न स्थापित की जाये ? दोनो सस्थान एक दूसरे के पूरक होंगे। सुझाव पर विचार हुआ। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ (सरदारशहर) को बम्बई बुलाया गया। सारी बाते उनके सामने रखी गई और निर्णय हुआ कि उनके साथ जाकर एक बार इसी दृष्टि से 'गाधी विद्या-मन्दिर' सस्थान को देखा जाए। निश्चित तिथि पर पहुंचने के लिए कलकत्ता से श्री गोपीचन्दजी चोपडा और मैं तथा दिल्ली से श्रीमती इन्दु जैन, लादूलालजी आच्छा सरदारशहर के लिए रवाना हुए। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ दिल्ली से हम लोगो के साथ हुए। श्री रांकाजी बम्बई से पहुंचे। सरदारशहर मे भावभीना स्वागत हुआ। श्री दूगड़जी ने 'गाधी विद्या-मन्दिर' की प्रबन्ध समिति के सदस्यो को भी आमन्त्रित किया। 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर मे स्थापित करने के विचार का उनकी ओर से भी हार्दिक स्वागत किया गया। सरदारशहर 'जैन विश्व-भारती' के लिए उपयुक्त स्थान लगा। आगे के कदम इसी ओर बढ़े।

आचार्यश्री सतगण व साध्वियो के वृन्द सहित कर्नाटक मे नंदी पहाडी पर आरोहण कर रहे थे। आचार्यश्री ने बीच मे पैर थामे और मुझ से बोले "जैन विश्वभारती के लिए प्रकृति की ऐसी सुन्दर गोद उपयुक्त स्थान है। देखो, कैसा सुन्दर शान्त वातावरण है।"

'जैन विश्व भारती' की योजना को कार्य-रूप मे आगे बढाने की दृष्टि से समाज के कुछ और विचारशील व्यक्ति भी नदी पहाड़ी पर आए थे। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ भी थे। प्रतिक्रमण के बाद का समय था। पहाडी की तलहटी में दीपक और आकाश में तारे जगमगा रहे थे। आचार्यश्री गिरि-शिखर पर कांच महल मे पूर्वाभिमुख होकर विराजित थे। मैं उनके सामने बैठा था। वचनबद्ध हुआ कि यदि 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित होती है, तो उसके लिए मैं अपना जीवन लगाऊगा। उस समय 'जैन विश्व भारती' की जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के एक विभाग के रूप मे परिकल्पना की गई थी। महासभा ने स्वीकार किया और

मैं उसका सयोजक चुना गया। सरदारशहर मे स्थान के लिए श्री कन्हैयालालजी दूगड और मैं प्रयत्नशील हुए। आचार्यश्री ऊटी (उटकमण्ड) पधारे। वहा महासभा के सभापति श्री हनुमानमलजी वैगाणी तथा अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। जैन विश्व भारती की स्थापना प्राकृतिक दृष्टि से साधना के अनुकूल रम्य और शान्त स्थान मे होने की बात ठहरी। इस तरह नदी गिरि की मेरी प्रतिज्ञा से मैं मुक्त हुआ, पर मन ने मुझे कभी मुक्त नही किया। आखिर 'जैन विश्व भारती' की मातृ-भूमि बनने का सौभाग्य सरदारशहर से '६६ मील दूर लाडनूं (राजस्थान) को प्राप्त हुआ, जो सयोग से आचार्यश्री का जन्म-स्थान भी है।

आचार्यश्री ने आगम-सशोधन का कार्य हाथ मे लिया। स० २०१३ मे लाडनूं मे आचार्य श्री के दर्शन प्राप्त हुए। कुछ ही दिनो वाद सुजानगढ मे दशवैकालिक सूत्र के अपने अनुवाद के दो फार्म अपने ढग से मुद्रित कराकर सामने रखे। आचार्यश्री मुग्ध हुए। मुनिश्री नथमलजी ने फरमाया—"ऐसा ही प्रकाशन ईप्सित है।" आचार्यश्री की वाचना मे प्रस्तुत आगम वैशाली से प्रकाशित हो, इस दिशा मे कदम आगे वढे। पर अन्त मे प्रकाशन कार्य महासभा से प्रारम्भ हुआ। आगम-सम्पादन की रूपरेखा इस प्रकार रही—

१ आगम-सुत्त ग्रन्थमाला · मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमो का प्रस्तुतीकरण।

२. आगम-अनुसन्धान ग्रन्थमाला . मूलपाठ, सस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियो सहित आगमो का प्रस्तुतीकरण।

३. आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला : आगमो के समीक्षात्मक अध्ययनो का प्रस्तुतीकरण।

४. आगम-कथा ग्रन्थमाला : आगमो से सम्वन्धित कथाओ का सकलन और अनुवाद।

५. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला . आगमो का सक्षिप्त वर्गीकृत रूप मे प्रस्तुतीकरण।

महासभा की ओर से प्रथम ग्रथमाला मे—(१) दसवेआलिय तह उत्तरज्झयणाणि, (२) आयारो तह आयारचूला, (३) निसीहज्झयण, (४) उववाइय और (५) समवाओ प्रकाशित हुए। रायपसेणइय एव सूयगडो (प्रथम श्रुतस्कन्ध) का मुद्रण-कार्य तो प्राय. समाप्त हुआ पर वे प्रकाशित नही हो पाए।

दूसरी ग्रन्थमाला मे—(१) दशवेआलिय एव (२) उत्तरज्झयणाणि (भाग १ और भाग २) प्रकाशित हुए। समवायाग का मुद्रण-कार्य प्राय. समाप्त हुआ पर प्रकाशित नही हो पाया।

तीसरी ग्रथमाला मे दो ग्रथ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन और (२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

चौथी ग्रथमाला मे कोई ग्रथ प्रकाशित नही हुआ।

पाँचवी ग्रथमाला मे दो ग्रथ निकल चुके है · १. दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. १) और २. उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्मप्रज्ञप्ति ख. २)।

उक्त प्रकाशन-कार्य मे सरावगी चेरिटेवल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदलालजी सरावगी एव कमलनयनजी सरावगी) का वहुत वड़ा अनुदान महासभा को रहा। अनुदान स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी एव उनके पुत्र पन्नालालजी सरावगी की स्मृति मे प्राप्त हुआ था। भाई पन्नालालजी के प्रेरणात्मक शब्द तो आज भी कानो मे ज्यो-के-त्यो गूँज रहे है—"धन देने वाले तो मिल सकते है, पर जो इस प्रकाशन-कार्य मे जीवन लगाने का उत्तरदायित्व लेने को तैयार है, उनकी वरावरी कौन कर सकेगा ?" उन्ही तथा समाज के अन्य उत्साहवर्धक सदस्यो के स्नेह-प्रदान से कार्य-दीपक जलता रहा।

कार्य के द्वितीय चरण मे श्री रामलालजी हसराजजी गोलछा (विराटनगर) ने अपना उदार हाथ प्रसारित किया।

आचार्यश्री की वाचना मे सम्पादित आगमो के सग्रह और मुद्रण का कार्य अव 'जैन विश्व भारती' के अचल से हो रहा है। प्रथम प्रकाशन के रूप मे ११ अगो को तीन खण्डो मे 'अगसुत्ताणि' के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है :

प्रथम खण्ड मे आचार, सूत्रकृत्, स्थान, समवाय—ये प्रथम चार अग है।
दूसरे खण्ड मे भगवती—पाँचवाँ अंग है।

तीसरे खण्ड मे ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्न-व्याकरण और विपाक—ये ६ अग है।

इस तरह ग्यारह अगो का तीन खण्डो मे प्रकाशन 'आगम-सुत्त ग्रथमाला' की योजना को वहुत आगे वढ़ा देता है।

ठाणाग सानुवाद सस्करण का मुद्रण-कार्य भी द्रुतगति से हो रहा है और वह आगम-अनुसन्धान ग्रथमाला के तीसरे ग्रथ के रूप मे प्रस्तुत होगा।

केवल हिन्दी अनुवाद के संस्करण के रूप मे 'दशवैकालिक और उत्तराध्ययन' का प्रकाशन हुआ है, जो एक नई योजना के रूप मे है। इसमे सभी आगमो का केवल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का निर्णय है।

दशवैकालिक एव उत्तराध्ययन मूल पाठ मात्र को गुटको के रूप मे दिया जा रहा है।

'जैन विश्व भारती' की इस अंग एव अन्य आगम प्रकाशन योजना को पूर्ण करने मे जिन महानुभावो के उदार अनुदान का हाथ रहा है, उन्हे संस्थान की ओर से हार्दिक धन्यवाद है।

मुद्रण-कार्य मे एस० नारायण एण्ड सस प्रिंटिंग प्रेस के मालिक श्री नारायणसिंह जी का विनय, श्रद्धा, प्रेम और सौजन्य से भरा जो योग रहा उसके लिए हम कृतज्ञता प्रगट किए बिना नही रह सकते। मुद्रण-कार्य को द्रुतगति देने मे श्री देवीप्रसाद जायसवाल (कलकत्ता) ने रात-दिन सेवा देकर जो सहयोग दिया, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र है। इस सम्बन्ध मे श्री मन्नालाल जी जैन (भूतपूर्व मुनि) की समर्पित सेवा भी स्मरणीय है।

कार्य की प्रारभिक व्यवस्था मे जैन विश्व भारती के उपसभापति श्री माणिकचदजी सेठिया एव श्री मोतीलालजी नाहटा ने मुझे बडा ही सहयोग दिया।

'जैन विश्व भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, मत्री श्री सम्पत्तरायजी भूतोडिया तथा कार्य समिति के अन्यान्य समस्त बन्धुओ को भी इस अवसर पर धन्यवाद दिये बिना नही रह सकता, जिनका सतत् सहयोग और प्रेम हर कदम पर मुझे बल देता रहा।

सन् १६७३ मे मैं जैन विश्व-भारती के आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग का निदेशक चुना गया। तभी से मैं इस कार्य की व्यवस्था मे लगा। आचार्यश्री यात्रा मे थे। दिल्ली मुद्रण की व्यवस्था बैठाई। कार्यारभ हुआ, पर टाइप आदि की व्यवस्था मे विलब होने से कार्य मे द्रुतगति नही आई। आचार्यश्री का दिल्ली पधारना हुआ तभी यह कार्य द्रुतगति से आगे बढा। स्वल्प समय मे इतना आगमिक साहित्य सामने आ सका उसका सारा श्रेय आगम सपादन के वाचनाप्रमुख आचार्यश्री तुलसी तथा सपादक-विवेचक मुनि श्री नथमलजी को है। उनके सहकर्मी मुनि श्री सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी तथा दुलहराजजी भी उस कार्य के श्रेयोभागी है।

ब्रह्मचर्य आश्रम मे ब्रह्मचारी का एक कर्तव्य समिधा एकत्रित करना होता है। मैने इससे अधिक कुछ और नही किया। मेरी आत्मा हर्षित है कि आगम के ऐसे सुन्दर सस्करण 'जैन विश्व भारती' के प्रारभिक उपहार के रूप मे उस समय जनता के कर-कमलो मे आ रहे है, जबकि जगत्वद्य श्रमण भगवान् महावीर की २५००वी निर्वाण तिथि मनाने के लिए सारा विश्व पुलकित है।

४६८४, असारी रोड
२१, दरियागज
दिल्ली-६

श्रीचन्द रामपुरिया
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग
जैन विश्व भारती

सम्पादकीय

ग्रन्थ-बोध—

आगम सूत्रो के मौलिक विभाग दो है—अग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य। अग-प्रविष्ट सूत्र महावीर के मुख्य शिष्य गणधर द्वारा रचित होने के कारण सर्वाधिक मौलिक और प्रामाणिक माने जाते है। उनकी सख्या बारह है—१ आचाराग २. सूत्रकृतांग ३ स्थानाग ४ समवायाग ५ व्याख्याप्रज्ञप्ति ६ ज्ञाताधर्मकथा ७ उपासकदशा ८. अतकृतदशा ९. अनुत्तरोपपातिकदशा १० प्रश्नव्याकरण ११. विपाकश्रुत १२. दृष्टिवाद। बारहवा अग अभी प्राप्त नही है। शेष ग्यारह अग तीन भागो मे प्रकाशित हो रहे हैं। प्रथम भाग मे चार अग है,—१. आचाराग २. सूत्रकृतांग ३ स्थानाग और ४ समवायाग, दूसरे भाग मे केवल व्याख्याप्रज्ञप्ति और तीसरे भाग मे शेष छह अग।

प्रस्तुत भाग अग साहित्य का दूसरा भाग है। इसमे व्याख्याप्रज्ञप्ति का पाठान्तर सहित मूल पाठ है। प्रारम्भ मे सक्षिप्त भूमिका है। विस्तृत भूमिका और शब्द-सूची इसके साथ सम्बद्ध नही है। उनके लिए दो स्वतन्त्र भागो की परिकल्पना है। उसके अनुसार चौथे भाग मे ग्यारह अगो की भूमिका और पाचवे भाग मे उनकी शब्द-सूची होगी।

प्रस्तुत पाठ और सम्पादन-पद्धति

प्रस्तुत आगम का पाठ-सशोधन सात प्रतियो और टीकाओ के आधार पर किया गया है। हम पाठ-सशोधन की स्वीकृत पद्धति के अनुसार किसी एक ही प्रति को मुख्य मानकर नही चलते, किन्तु अर्थ-मीमासा, पूर्वापरप्रसग, पूर्ववर्ती पाठ और अन्य आगम-सूत्रों के पाठ तथा वृत्तिगत व्याख्या को ध्यान मे रखकर मूल पाठ का निर्धारण करते है। प्रस्तुत सूत्र की मूल टीका आज उपलब्ध नही है। चूर्णि उपलब्ध है किन्तु वह हमे प्राप्त नही हुई। अभयदेव सूरि ने अपनी वृत्ति मे जहा-जहा मूल टीका और चूर्णि को उद्धृत किया है, उसका भी हमने पाठ-निर्धारण मे उपयोग किया है। लिपिकारो ने समय-समय पर पाठ का सक्षेप किया है। उस सक्षेपीकरण के अनेक रूप मिलते है। पाठ-सशोधन मे प्रयुक्त प्रतियो मे क्रोधोपयुक्त आदि भगो की चार वाचनाए मिलती है। उनमे पाठ का सक्षेप भिन्न-भिन्न प्रकार से किया गया है, देखें—आगम पृ० ३९। लिपिभेद के कारण भी पाठ मे गलतिया हुई है। १।३६५ सूत्र मे प्रादोषिकी क्रिया के लिए 'पाओसियाए' पाठ है। कुछ प्रतियो मे 'पाउसियाए' पाठ मिलता है। प्राचीन लिपि मे 'ओ'

और 'उ' का भेद करना कठिन होता है। यही कारण है कि आधुनिक प्रतियो मे बहुलतया 'ओ' के स्थान मे 'उ' मिलता है। जो प्रतिया भाषाविद् लिपिकारो द्वारा लिखी गई, उनमे 'ओकार' मिलता है, किन्तु जो केवल लिपिको द्वारा लिखी गई, उनमे 'ओकार' के स्थान मे 'उकार' हो गया। 'ओवासतरे' और 'उवासतरे' यह पाठ-भेद भी उक्त कारण से ही हुआ है। देखे—सूत्र १।३६२ (पृ० ६६), सूत्र १।४४४ (पृ० ७७)।

८।२४२ सूत्र मे 'छेत्तेहिं' पाठ है। लिपिभेद होते-होते 'वित्तेहिं', 'छत्तेहिं', 'चित्तेहिं'—इस प्रकार अनेक पाठ बन गए। ८।३०१ मे 'तदा' के स्थान पर 'तहा' पाठ हो गया।

कुछ प्रतियो मे सक्षिप्त वाचना है। वृत्तिकार को भी सक्षिप्त वाचना प्राप्त हुई थी इसलिए उन्होने लिखा कि अन्ययूथिक वक्तव्यता स्वय उच्चारणीय है। ग्रन्थ के बडा होने के भय से वह लिखी नही गई। वृत्तिकार ने वृत्ति मे सक्षिप्त पाठ को पूर्ण किया। कुछ लिपिको ने वृत्ति के पाठ को मूल मे लिखा और पूर्ण पाठ की वाचना सक्षिप्त पाठ की वाचना से भिन्न हो गई[1]।

कुछ आदर्शो मे सक्षिप्त और विस्तृत—दोनो वाचनाओ का मिश्रण मिलता है। सूत्र २।४७ (पृ० ८८) मे 'खदया पुच्छा' यह सक्षिप्त पाठ है। किसी लिपिकार ने प्रति के हासिये (Margin) मे अपनी जानकारी के लिए इसका पूरा पाठ लिख दिया और उसकी प्रतिलिपियो मे सक्षिप्त और विस्तृत—दोनो पाठ मूल मे लिख दिए गए, देखें—५।१२२ सूत्र का पादटिप्पण (पृ० २०६), २।११८ सूत्र का प्रथम पादटिप्पण (पृ० ११२)। ११।५९ मे पूरा पाठ और 'जहा ओवाइए' यह सक्षिप्त पाठ—दोनो साथ-साथ लिखे हुए है। असोच्चा केवली के प्रकरण मे भी ऐसा ही मिलता है। कुछ प्रतियो मे वृत्ति मे उद्धृत पाठ का समावेश हुआ है, देखें—२।७५ सूत्र का दूसरा पादटिप्पण (पृ० ९९)। कही-कही वृत्तिकार द्वारा किया हुआ वैकल्पिक अर्थ भी उत्तरवर्ती प्रतियो मे मूल पाठ के रूप मे स्वीकृत हो गया, देखे—५।५१ सूत्र का प्रथम पादटिप्पण (पृ० १९४)।

पाठ-सशोधन मे दूसरे आगमो के पाठो को भी आधार माना जाता है। २।९४ सूत्र मे 'चियत्ततेउरघरप्पवेसा' इस पाठ के अनन्तर सभी प्रतियो मे 'बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं' यह पाठ है। वहा इसकी अर्थ-सगति नही होने के कारण वृत्तिकार को 'तैर्युक्ता इति गम्य' यह लिखना पडा, किन्तु ओवाइय और रायपसेणइय सूत्र को देखने से पता चलता है कि उक्त पाठ प्रतियो मे जहा लिखित है वहां नही होना चाहिए। उक्त दोनो सूत्रो के आधार पर आलोच्य पाठ का क्रम इस प्रकार बनता है—'ओसह-भेसज्जेण पडिलाभेमाणा बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणा विहरति।'

२२।१ सूत्र मे सभी आदर्शो मे 'सारकल्लाण जाव केवइ' पाठ लिखित है, किन्तु यहां 'जाव' का कोई प्रयोजन नही है। भगवती ८।२१७ तथा प्रज्ञापना के प्रथम पद के आधार पर 'जाव' के स्थान पर 'जावन्ति' पाठ प्रमाणित होता है।

---

१ इह सूत्रेऽन्ययूथिकवक्तव्य स्वयमुच्चारणीय, ग्रन्थगौरवभयेनाऽलिखितत्वात्तस्य, तच्चेदम्। वृत्तिपत्र १०६।

पाठ मे वर्ण-परिवर्तन से बहुत वार अर्थ नही बदलता किन्तु कही-कही अर्थ समझने मे कठिनाई होती है और वह बदल भी जाता है। ६।१०० सूत्र में 'हृव्वि' पाठ है उसके 'हेट्ठिं' और 'हिट्ठिं'—ये दो पाठान्तर मिलते हैं। वृत्तिकार अभयदेवसूरि ने यहा 'हृव्वि' का अर्थ 'सम' किया है, देखें—वृत्ति पत्र २७१। स्थानाग सूत्र (८।४३) मे इसी प्रकरण मे 'हेट्ठिं' पाठ है। वहा अभयदेवसूरि ने उसका अर्थ 'ब्रह्मलोक के नीचे' किया है, देखें—स्थानागवृत्ति पत्र ४१०।

कही-कही लेखक के समझभेद और लिपिभेद के कारण भी पाठ का परिवर्तन हुआ है। ६।१६५ सूत्र मे 'ओधरेमाणी-ओधरेमाणी' पाठ है। कुछ प्रतियो मे यह पाठ 'उवधरेमाणीओ-उवधरेमाणीओ' इस रूप मे मिलता है। एक प्रति मे यह पाठ 'उवरिधरेमाणीओ-उवरि-धरेमाणीओ' इस रूप मे बदल गया।

पाठ-परिवर्तन के कुछेक उदाहरण इसलिए प्रस्तुत किए गए हैं कि पाठ-सशोधन मे केवल प्रतियो या किसी एक प्रति को आधार नही माना जा सकता। विभिन्न आगमो, उनकी व्याख्याओ और अर्थसंगति के आधार पर ही पाठ का निर्धारण किया जा सकता है।

संक्षेपीकरण और पाठ-संशोधन की समस्या

देवर्धिगणि ने जव आगम सूत्र लिखे तव उन्होने सक्षेपीकरण की जो शैली अपनाई उसका प्रामाणिक रूप प्रस्तुत करना वहुत कठिन कार्य है और वह कठिन इसलिए है कि उत्तरकाल मे अनेक आगमधरो ने अनेक वार आगम पाठो का सक्षेपीकरण किया है। सभव है कुछ लिपिको ने भी लेखन की सुविधा के लिए पाठ-सक्षेप किया है।

१३।२५ सूत्र के सक्षिप्त पाठ मे भवनपति देवो के प्रकार आदि जानने के लिए दूसरे शतक के देवोद्देशक की सूचना दी गई है, किन्तु वहा (२।११७, पृ० १११) विस्तृत पाठ नही है अपितु प्रज्ञापना के स्थानपद को देखने की सूचना मिलती है। १६।३३ सूत्र के सक्षिप्त पाठ मे तृतीय शतक (सूत्र २७, पृ० १३०) देखने की सूचना दी गई है, किन्तु वहा पाठ पूरा नही है। वहा 'रायपसेणइय' सूत्र देखने की सूचना दी गई है।

१६।७१ सूत्र के सक्षिप्त पाठ मे उद्रायण का प्रकरण (१३।११७, पृ० ६१४) देखने की सूचना है। वहा पाठ पूरा नही है। इसी प्रकार १६।१२१, १८।५६, १६।७७ मे विस्तृत पाठ की सूचनाए है, किन्तु सूचित स्थलो मे पाठ विस्तृत नही है।

उक्त सूचनाओ के आधार पर यह अनुमान होता है कि जिस समय मे पाठ सक्षिप्त किए गए उस समय सूचित स्थलो के पाठ पूर्ण थे। उसके पश्चात् किसी अनुयोगधर आचार्य ने उन पूर्ण पाठो का भी सक्षेपीकरण कर दिया। सक्षेपीकरण के लिए 'जाव', 'जहा' आदि पदो का प्रयोग किया गया है। कही-कही 'जाव' का अनावश्यक-सा प्रयोग हुआ है। वह या तो लिपिक का प्रमाद रहा है या प्रवाह के रूप में वह लिखा गया है। जहा 'जाव' का प्रयोग है वहा लिपिकारो ने पर्याप्त स्वतत्रता वरती है। किसी ने 'पावफल जाव कज्जति' लिखा है तो किसी ने 'पावफलविवाग जाव कज्जति' लिखा है। कही-कही 'विंद' (७।१६६), 'पयोग' (८।१७), 'सहस्स' (१६।१०३) जैसे छोटे

पाठो के स्थान पर भी 'जाव' पद लिखा हुआ मिलता है। इस प्रकार के पाठ-सक्षेप लिपिकारो द्वारा समय-समय पर किए हुए प्रतीत होते है।

वर्तमान मे प्रस्तुत आगम की मुख्य दो वाचनाए मिलती है—सक्षिप्त और विस्तृत। सक्षिप्त वाचना का ग्रन्थ परिमाण १५७५१ अनुष्टुप् श्लोक परिमाण माना जाता है। विस्तृत वाचना का ग्रन्थ परिमाण सवा लाख अनुष्टुप् श्लोक माना जाता है। अभयदेवसूरि ने सक्षिप्त वाचना को ही आधार मानकर प्रस्तुत आगम की वृत्ति लिखी है। हमने इस पाठ सपादन मे 'जाव' आदि पदो द्वारा समर्पित पाठो की यथावश्यक पूर्ति की है। उससे इसका ग्रन्थ परिमाण १९३१९ अनुष्टुप् श्लोक, १६ अक्षर अधिक हो गया है।

शब्दान्तर और रूपान्तर

१।४९	निगम	नियम	(ता)
१।२२४	अप्पिया	अप्पिता	(क)
१।२२४	एतेसिं	तेतेसिं	(क, ता, म)
१।२३७	वइ०	वति०	(ता)
१।२३९	वइ०	वयि०	(ता)
१।२४५	मायो	माओ०	(ता)
१।२७३	पोयत	पोदत	(क, ता, ब, म, स)
१।२७६	कज्जइ	किज्जइ	(व, स)
१।२८१	पाणाइवाय	पाणायवाय	(स)
१।२८१	नेरइयाण	नेरतियाणं	(अ, ब, स)
१।२९८।२	उवओगे	ओवओगे	(ता)
१।३१५	अहे	अघे	(ता)
१।३५४	करेज्ज	करिज्ज करेज्जा	(क) (स)
१।३५७	दुहिए	दुक्खिए	(क, ता, म)
१।३५७	दुग्गवे	दुग्घे	(अ, म, स)
१।३६३	आरिय	यारिय	(क, ता)
१।३६४	चउ	चतु	(ता)
१।३६५	पाओसिया	पायोसिया	(अ, व)
१।३७०	सय	सत	(ता)
१।३७१	सधिज्जमाणे	सघेज्जमाणे	(ता)
१।३७१	निसिट्ठे	निसट्ठे	(क, ता)
१।३७१	काइयाए	कातियाए	(ता)
१।३८५	पाणाइवाय०	पाणायवाय०	(व, स)

१।३८६	हुस्सी	हुस्सी, ह्रस्वी	हस्सी (क) (व); (स);
१।४१५	जहा	जधा	(अ, व, स)
१।४२४	सामाइयस्स	सामातियस्स	(ता)
१।४२५	जइ	जति	(अ, क, व, म, स)
१।४३४	किवणस्स	किविणस्स	(ता)
२।२६	मागहा	मागधा	(ता)
२।४१	वियट्टभोई	वियट्टभोती	(अ, ता, व, म, स)
२।५७	सामाइयमाइयाइ	सामाइगमादीयाति सामातियमातियाइ(स)	(क)
२।६६	घमणि०	घवणि०	(क, ता, व, म)
२।६६	रयणीए	रतणीए	(ता)
२।६८	आरूहेइ	आरूभेइ	(क, म)
२।६८	खाइमसाइम	खातिमसातिम	(व, स)
२।६८	सयमेव	सतमेव	(ता)
२।६४	अवगुय०	अवगुत०	(म)
२।६४	खाइमसाइमेण	खातिमसातिमेण	(व, स)
३।४	अयमेयारूवे	अतमेतारूवे	(ता)
३।२१	ईसाणे	तीसाणे	(ता)
३।२५	मोयाओ	मोतातो	(क, ता)
३।३३	खाइमसाइमेण	खातिमसातिमेण	(व, स)
३।११२	सयणिज्जाओ	सतणिज्जाओ	(ता)
३।११२	तिवर्ति	तिपर्ति	(ता)
३।१४३	वेयति	वेदति	(ता)
३।१४८	समय०	समत०	(ता)
५।३	'पडीण'	'पदीण'	(ता, म)
५।६०	आउए	आउगे	(ता)
५।७६	रयहरणमायाए	रतहरणमाताए	(ता)
५।८२	वेयावडिय	वेदावडिय	(व, म)
५।११०	समयसि	समतसि	(ता)
५।१३६	'लोइय'	'लोतिय'	(अ, स)
६।६३	सकसाईहिं	सकसादीहिं	(ता)
६।६३	सजोगी	सजोति	(ता)
६।७६	नागो	नाओ	(ता, म)
६।६०	कण्हरातीओ	कण्हरायीतो	(व)

६।१६६	कालग	कालत	(क)
७।१७६	० जय ०	० जत ०	(ब)
७।२१३	अयमेयारूवे	अतमेतारूवे	(ता)
८।२४८	अणुप्पदायव्वे	अणुप्पतातव्वे	(ता)
८।३१५	गोय	गोद	(ब)
८।३४७	अणादीय०	अणातीत०	(ता)
८।४२०	सातणयाए	सादणताए	(क, व, म)
८।४३१	इस्सरिय०	दिस्सरिय०	(म)
८।४३१	इस्सरिय	तिस्सरिय०	(म)
९।४३	सकसाई	सकसादी	(अ, ता)
९।९४	अहिओ (अ),	अहितो अधितो	(क) (ता)
९।१७४	मय०	मद० मत०	(ता) (व)
९।१६९	सवणयाए	समणयाए	(अ)
११।१३३	धूव	धूम	(ता)
११।१३४	नीव	नीम	(ता, ब)
११।१४२	पउमसर	पदुमसर	(ता)
१६।११३	नियम	नितम	(व)
१७।३८	एयणा	एतणा	(ता, व)
१८।१००	मायिमिच्छ०	मादिमिच्छ०	(व)
१९।८५	जति इदियाणि	जदिदियाणि	(ता)
३०।२२	सजोगी	सजोती	(ख)

प्रति परिचय

(अ) भगवती वृत्ति (पंचपाठी) मूलपाठ सहित (हस्तलिखित)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र १८९ तथा पृष्ठ ३७८ है। प्रत्येक पत्र १३½ इच लम्बा तथा ४¾ इच चौडा है। पत्रो मे मूलपाठ की १ से २३ तक पक्तिया हैं। प्रत्येक पक्ति मे ८० से ८५ तक अक्षर है। प्रति सुन्दर तथा कलात्मक ढग से लिखी गई है। वीच मे वावडी भी है। लिपि-सवत् नही लिखा गया है। अनुमानत यह प्रति १५-१६ वी शताब्दि की लगती है।

(क) भगवती मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति पूनमचन्द बुधमल दूधोड़िया, छापर के सग्रहालय की है। इसके पत्र ३३३ व पृष्ठ ६६६ है। प्रत्येक पत्र १०½ इच लम्बा तथा ४½ इच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र मे १५ पक्तिया

तथा प्रत्येक पंक्ति मे ५२ से ५५ तक अक्षर है। प्रति सुन्दर और कलात्मक है। वीच-बीच मे लाल पाइया तथा बावडी है। लिपि-सवत् नही दिया गया है। यह प्रति अनुमानत १६ वी सदी की है।

(ख) ताडपत्रीय मूलपाठ

यह प्रति जेसलमेर भडार की ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) मदनचन्दजी गोठी सरदारशहर द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ४२२ तथा पृष्ठ ८४४ है। प्रत्येक पृष्ठ मे ३ से ६ तक पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति मे १३० से १४० तक अक्षर है। अतिम प्रशस्ति मे लिखा है—

॥ छ ॥ मगल महा श्रीः ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ रा ॥

लिपि-सवत् नही दिया गया है। यह प्रति अनुमानत. १२ वी शताब्दी की होनी चाहिए।

(ता) ताडपत्रीय मूलपाठ

यह प्रति जैसलमेर भडार की ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) मदनचन्दजी गोठी सरदारशहर द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ३४८ तथा पृष्ठ ६९६ है। प्रत्येक पृष्ठ मे ५ से ९ तक पक्तिया और प्रत्येक पक्ति मे १३० से १४० तक अक्षर है। अतिम पत्र पर चित्र किये हुए है।

अतिम प्रशस्ति मे लिखा है—

। छ । भगवइ समत्ता ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ सवत् १२३५ विशाख वदि एकादश्या गुरौ अपरान्हे लेखकवणचडेन लिखितमिति ॥

(ब) भगवती मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति तेरापथी सभा, सरदारशहर की है। इसके पत्र ४७८ तथा ९५६ पृष्ठ है। प्रत्येक पत्र १०½ इच लम्बा तथा ४½ इच चौडा है। प्रत्येक पत्र मे १६ पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति मे ३८ से ४२ अक्षर है। प्रति सुन्दर तथा कलात्मक है। प्रत्येक पत्र मे तीन स्थानो पर बावडी तथा लाल लाइने है और हरताल से काम किया हुआ है। अतिम प्रशस्ति के अभाव मे लिपि-सवत् अज्ञात है। यह अनुमानतः १६ वी शताब्दि की प्रति लगती है।

(म) भगवती सूत्र मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ४८२ तथा पृष्ठ ९६४ हैं। प्रत्येक पत्र १०¾ इच लम्बा तथा ४¾ इच चौडा है। प्रत्येक पृष्ठ मे १३ पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति मे ४० से ४५ तक अक्षर हैं। पत्रो के वीच-बीच मे लाल पाइया तथा बावडी है।

इसके अन्त मे लिपि-सवत् दिया हुआ नही है, पर यह प्रति लगभग १६ वी शताब्दी की होनी चाहिए।

अतिम प्रशस्ति मे लिखा है—

॥ छ ॥ ग्रंथाग्र १५७७५ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ श्री ॥

छ ॥ श्री कल्याणमस्तु ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥ श्री ॥ श्री ॥ छ ॥ छ ॥

प्रति मे अनेक स्थलो पर मस्कृत मे टिप्पण भी दिये हुए है।

(स) भगवती सूत्र (त्रिपाठी)

केशर भगवती नाम से ख्यात यह प्रति हमारे संघीय पुस्तकालय की है। इसके ६०२ पत्र तथा १२०४ पृष्ठ है। पत्र के मध्य मे मूल पाठ तथा ऊपर नीचे वृत्ति लिखी गई है। यह प्रति सुन्दर और काफी शुद्ध है। किसी पाठक ने मुद्रित प्रति को प्रमाण मानकर स्थान-स्थान पर हरताल लगाकर इसे शुद्ध करने का प्रयत्न किया है। जहा ऐसा किया गया है वहा प्राय. शुद्ध पाठ अशुद्ध बन गया है। इसके प्रत्येक पृष्ठ मे मूल पाठ की ४ से १५ तक पक्तियां और प्रत्येक पक्ति मे ४५ से ५३ तक अक्षर है। प्रशस्ति मे लिखा है—

श्री भगवती सूत्र सम्पूर्णं ॥ छ ॥ श्री विवाहपन्नत्ती पचम अग सम्मत्त ॥ शुभ भवतु। ग्रथाग्र १५६७५ उभयमीलने ग्र० ३४२६१ ॥ श्री ॥ लिषित यती डाहामल्ल श्री नागोरमध्ये स० १८४८ माह शु १५।

वृ (वृपा) मुद्रित

प्रकाशक —श्रीमती आगमोदय समिति।

सहयोगानुभूति

जैन-परम्परा मे वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाए हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नही हुई। उनके वाचना-काल मे जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि मे बहुत ही अव्यवस्थित हो गए। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नही हो सका। अन्तत हम इसी निष्कर्ष पर पहुचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, तटस्थ-दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने-आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी है। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति मे अध्यापन-कर्म के अनेक अग हैं—पाठ का अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियो मे आचार्यश्री का हमे सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य मे प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मै आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर भार-मुक्त होऊ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-सवल पा और अधिक भारी बनू ।

प्रस्तुत आगम के सम्पादन मे पाठ-सम्पादन के स्थायी सहयोगी मुनि सुदर्शनजी, मधुकरजी और हीरालालजी के अतिरिक्त मुनिश्री कानमल जी, छत्रमलजी, अमोलकचन्दजी, दिनकरजी,-पूनमचन्दजी, कन्हैयालालजी, राजकरणजी, ताराचन्दजी, वालचन्द्रजी, विजयराजजी, मणिलालजी, महेन्द्रकुमारजी (द्वितीय), सम्पतमलजी (डूंगरगढ), शान्तिकुमारजी, मोहनलालजी (शार्दूल) और श्रीमन्नालाल जी वोरड का योग रहा है। पाठ-सम्पादन का कार्य स० २०२९ पौष कृष्णा ९ (२८ दिसम्बर १९७२) को सरदारशहर (राजस्थान) मे आरम्भ किया गया और वह सं० २०३० फाल्गुन शुक्ला ११ (४ मार्च १९७४) को दिल्ली मे पूरा हुआ।

प्रति शोधन मे मुनि सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी और दुलहराजजी ने वहुत श्रम किया है। इसका ग्रन्थ-परिमाण मुनि मोहनलाल जी आमेट ने तैयार किया है।

कार्यनिष्पत्ति मे इनके योगका मूल्याकन करते हुए मैं इन सवके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आगमविद् और आगम-संपादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचन्दजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नही किया जा सकता। यदि वे आज होते तो भगवती के कार्य पर उन्हे परम हर्ष होता।

आगम के प्रवन्ध सम्पादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया प्रारम्भ से ही आगम कार्य मे सलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए वे कृत-सकल्प और प्रयत्नशील है। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर अपना अधिकाश समय आगम-सेवा मे लगा रहे है। 'अगमुत्ताणि' के इस प्रकाशन मे इन्होने अपनी निष्ठा और तत्परता का परिचय दिया है।

'जैन विश्व भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्द जी सेठिया, 'जैन विश्व भारती' तथा 'आदर्श साहित्य संघ' के कार्यकर्त्ताओ ने पाठ-सम्पादन मे प्रयुक्त सामग्री के सयोजन मे वड़ी तत्परता से कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालो की समप्रवृत्ति मे योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहारपूर्तिमात्र है। वास्तव मे यह हम सब का पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सवने पालन किया है।

अणुव्रत विहार
नई दिल्ली
१-१०-७४

मुनि नथमल

'ब' संज्ञक भगवई सूत्र का प्रथम पृष्ठ (तेरापंथी सभा हस्तलिखित संग्रहालय, सरदार शहर) ।

'ब' संज्ञक भगवई सूत्र का अंतिम पृष्ठ (तेरापंथी सभा हस्तलिखित संग्रहालय, सरदारशहर)।

'अ' संज्ञक भगवई सूत्र का अंतिम पृष्ठ (गणेशदास गधैया हस्तलिखित संग्रहालय, सरदारशहर)।

'ता' संज्ञक ताडपत्रीय भगवई सूत्र का प्रथम पृष्ठ (जेसलमेर जैन ज्ञान भंडार)।

'ता' संज्ञक ताडपत्रीय भगवई सूत्र का अंतिम पृष्ठ (जेसलमेर जैन ज्ञान भंडार)।

भूमिका

नामकरण

प्रस्तुत आगम का नाम व्याख्याप्रज्ञप्ति है। प्रश्नोत्तर की शैली मे लिखा जाने वाला ग्रन्थ व्याख्याप्रज्ञप्ति कहलाता है। समवायाग और नन्दी के अनुसार प्रस्तुत आगम मे छत्तीस हजार प्रश्नो का व्याकरण है[1]। तत्त्वार्थवार्त्तिक, षट्खण्डागम और कसायपाहुड के अनुसार प्रस्तुत आगम मे साठ हजार प्रश्नो का व्याकरण है[2]।

प्रस्तुत आगम का वर्तमान आकार अन्य आगमो की अपेक्षा अधिक विशाल है। इसमे विषयवस्तु की विविधता है। सम्भवत विश्वविद्या की कोई भी ऐसी शाखा नही होगी जिसकी इसमे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप मे चर्चा न हो। उक्त दृष्टिकोण से इस आगम के प्रति अत्यन्त श्रद्धा का भाव रहा। फलत इसके नाम के साथ 'भगवती' विशेषण जुड गया, जैसे—भगवती व्याख्या-प्रज्ञप्ति। अनेक शताब्दियो पूर्व 'भगवती' विशेषण न रहकर स्वतन्त्र नाम हो गया। वर्तमान मे व्याख्याप्रज्ञप्ति की अपेक्षा 'भगवती' नाम अधिक प्रचलित है।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के विषय के सम्वन्ध मे अनेक सूचनाए मिलती है। समवायाग मे वताया गया है कि अनेको देवो, राजो और राजर्षियो ने भगवान् से विविध प्रकार के प्रश्न पूछे और भगवान् ने विस्तार से उनका उत्तर दिया। इसमे स्वसमय, परसमय, जीव, अजीव, लोक और अलोक व्याख्यात है[3]। आचार्य अकलक के अनुसार प्रस्तुत आगम मे जीव है या नही है—इस प्रकार के अनेक प्रश्न निरूपित है[4]। आचार्य वीरसेन के अनुसार प्रस्तुत आगम मे प्रश्नोत्तरो के साथ-साथ छियानवे हजार छिन्नच्छेद नयो[5] से ज्ञापनीय शुभ और अशुभ का वर्णन है[6]।

---

१ समवाओ, सूत्र ९३; नदी, सूत्र ८५।

२ तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, षट्खण्डागम १, पृ० १०१, कसायपाहुड १, पृ० १२५।

३. समवाओ, सूत्र ९३।

४. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०।

५ जिस व्याख्या पद्धति मे प्रत्येक श्लोक और सूत्र की स्वतन्त्र, दूसरे श्लोको और सूत्रो से निरपेक्ष व्याख्या की जाती है उस व्याख्यापद्धति का नाम छिन्नच्छेद नय है।

६ कसायपाहुड भाग १, पृ० १२५।

उक्त सूचनाओ से प्रस्तुत आगम का महत्व जाना जा सकता है। वर्तमान विज्ञान की अनेक शाखाओ ने अनेक नए रहस्यो का उद्घाटन किया है। हम प्रस्तुत आगम की गहराइयो मे जाते है तो हमे प्रतीत होता है कि इन रहस्यो का उद्घाटन ढाई हजार वर्ष पूर्व ही हो चुका था।

भगवान् महावीर ने जीवो के छह निकाय वतलाए। उनमे त्रस निकाय के जीव प्रत्यक्ष सिद्ध हैं। वनस्पति निकाय के जीव अव विज्ञान द्वारा भी सम्मत है। पृथ्वी, पानी, अग्नि और वायु—इन चार निकायो के जीव विज्ञान द्वारा स्वीकृत नही हुए। भगवान् महावीर ने पृथ्वी आदि जीवो का केवल अस्तित्व ही नही वतलाया, उनका जीवनमान, आहार, श्वास, चैतन्य-विकास सज्ञाएं आदि पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला है। पृथ्वीकायिक जीवो का न्यूनतम जीवनकाल अन्तर्-, मुहूर्त्त का और उत्कृष्ट जीवनकाल बाईस हजार वर्ष का होता है। वे श्वास निश्चित क्रम से नही लेते—कभी कम समय से और कभी अधिक समय से लेते हैं। उनमे आहार की इच्छा होती है। वे प्रतिक्षण आहार लेते है। उनमे स्पर्शनेन्द्रिय का चैतन्य स्पष्ट होता है। चैतन्य की अन्य धाराये अस्पष्ट होती है[1]।

मनुष्य जैसे श्वासकाल मे प्राणवायु का ग्रहण करता है वैसे पृथ्वीकाय के जीव श्वासकाल मे केवल वायु को ही ग्रहण नही करते किन्तु पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और वनस्पति—इन सभी के पुद्गलो को ग्रहण करते है[2]।

पृथ्वी की भाति पानी आदि के जीव भी श्वास लेते है, आहार आदि करते है। वर्तमान विज्ञान ने वनस्पति जीवो के विविध पक्षो का अध्ययन कर उनके रहस्यो को अनावृत किया है, किन्तु पृथ्वी आदि के जीवो पर पर्याप्त शोध नही की। वनस्पति क्रोध और प्रेम प्रदर्शित करती है। प्रेमपूर्ण व्यवहार से वह प्रफुल्लित होती है और घृणापूर्ण व्यवहार से वह मुरझा जाती है। विज्ञान के ये परीक्षण हमे महावीर के इस सिद्धान्त की ओर ले जाते है कि वनस्पति मे दस सज्ञाए होती है। वे संज्ञाए निम्न प्रकार है—आहार सज्ञा, भय सज्ञा, मैथुन सज्ञा, परिग्रह सज्ञा, क्रोध सज्ञा, मान सज्ञा, माया सज्ञा, लोभ संज्ञा, ओघ सज्ञा और लोक सज्ञा। इन संज्ञाओ का अस्तित्व होने पर वनस्पति अस्पष्ट रूप मे वही व्यवहार करती है जो स्पष्ट रूप में मनुष्य करता है।

प्रस्तुत विषय की चर्चा एक उदाहरण के रूप मे की गई है। इसका प्रयोजन इस तथ्य की ओर इगित करना है कि इस आगम मे ऐसे सैकडो विषय प्रतिपादित है जो सामान्य बुद्धि द्वारा ग्राह्य नही हैं। उनमे से कुछ विषय विज्ञान की नई शोधो द्वारा अव ग्राह्य हो चुके हैं और अनेक विषयो को परीक्षण के लिए पूर्व-मान्यता के रूप मे स्वीकार किया जा सकता है। सूक्ष्म जीवो की गतिविधियो के प्रत्यक्षतः प्रमाणित होने पर केवल जीव-शास्त्रीय सिद्धान्तो का ही विकास नही होता, किन्तु अहिंसा के सिद्धान्त को समझने का अवसर मिलता है और साथ-साथ सूक्ष्म जीवो के प्रति किए जाने वाले व्यवहार की समीक्षा का भी।

---

१ भगवई १।१।३२, पृ० ६।

२. भगवई ६।३४।२५३,२५४, पृ० ४६४।

भगवान् महावीर ने पाच मूल द्रव्यो का प्रतिपादन किया। वे पंचास्तिकाय कहलाते है। उनमे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय—ये तीनो अमूर्त्त होने के कारण अदृश्य है। जीवास्तिकाय अमूर्त्त होने के कारण दृश्य नही है फिर भी शरीर के माध्यम से प्रकट होने वाली चैतन्य क्रिया के द्वारा वह दृश्य है। पुद्गलास्तिकाय [परमाणु और स्कन्ध] मूर्त्त होने के कारण दृश्य है। हमारे जगत् की विविधता जीव और पुद्गल के सयोग से निष्पन्न होती है। प्रस्तुत आगम मे जीव और पुद्गल का इतना विशद निरूपण है जितना प्राचीन धर्मग्रन्थो या दर्शनग्रन्थो मे सुलभ नही है।

प्रस्तुत आगम का पूर्ण आकार आज उपलब्ध नही है किन्तु जितना उपलब्ध है उसमे हजारो प्रश्नोत्तर चर्चित हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से आजीवक सघ के आचार्य मखलिगोशाल, जमालि, शिवराजर्षि, स्कन्दक सन्यासी आदि प्रकरण वहुत महत्त्वपूर्ण है। तत्त्वचर्चा की दृष्टि से जयन्ती, मद्दुक श्रमणोपासक, रोह अनगार, सोमिल ब्राह्मण, भगवान् पार्श्व के शिष्य कालासवेसियपुत्त, तुगिया नगरी के श्रावक आदि प्रकरण पठनीय है। गणित की दृष्टि से पार्श्वापत्यीय गागेय अनगार के प्रश्नोत्तर बहुत मूल्यवान् है।

भगवान् महावीर के युग मे अनेक धर्म-सम्प्रदाय थे। साम्प्रदायिक कट्टरता बहुत कम थी। एक धर्म सघ के मुनि और परिव्राजक दूसरे धर्म सघ के मुनि और परिव्राजको के पास जाते, तत्त्व-चर्चा करते और जो कुछ उपादेय लगता वह मुक्तभाव से स्वीकार करते। प्रस्तुत आगम मे ऐसे अनेक प्रसग प्राप्त होते है जिनसे उस समय की धार्मिक उदारता का यथार्थ परिचय मिलता है। इस प्रकार अनेक दृष्टिकोणो से प्रस्तुत आगम पढने मे रुचिकर, ज्ञानवर्धक, संयम और समता का प्रेरक है।

विभाग और अवान्तर विभाग

समवायाग और नन्दीसूत्र के अनुसार प्रस्तुत आगम के सौ से अधिक अध्ययन, दस हजार उद्देशक और दस हजार समुद्देशक हैं[1]। इसका वर्तमान आकार उक्त विवरण से भिन्न है। वर्तमान मे इसके एक सौ अड़तीस शत या शतक और उन्नीस सौ पच्चीस उद्देशक मिलते हैं। प्रथम बत्तीस शतक स्वतन्त्र है। तेतीस से उनचालीस तक के सात शतक बारह-बारह शतको के समवाय हैं। चालीसवा शतक इक्कीस शतको का समवाय है। इकचालीसवा शतक स्वतन्त्र है। कुल मिलाकर एक सौ अडतीस शतक होते है। उनमे इकचालीस मुख्य और शेष अवान्तर शतक है।

शतको मे उद्देशक तथा अक्षर-परिमाण इस प्रकार है—

शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण	शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण
१	१०	३८८४१	४	१०	७५३
२	१०	२३८१८	५	१०	२५६९१
३	१०	३६७०२	६	१०	१८६५२

१ समवाओ, सूत्र ९३; नन्दी, सूत्र ८५।

शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण	शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण
७	१०	२४६३५	२५	१२	४५१०३
८	१०	४८५३४	२६	११	४४५५
९	३४	४५८५९	२७	११	१९०
१०	३४	६९०७	२८	११	६९४
११	०२	३२३३८	२९	११	१०२७
१२	१०	३२८०८	३०	११	४७६४
१३	१०	२१९१४	३१	२८	२३४४
१४	१०	१६०३३	३२	२८	३६३
१५		३९८१२	३३ (१२)	१२४	३०८९
१६	१४	१५९३९	३४ (१२)	१२४	८९६४
१७	१७	८४१२	३५ (१२)	१३२	४१८१
१८	१०	२२४४३	३६ (१२)	१३२	७३१
१९	१०	८०२७	३७ (१२)	१३२	११५
२०	१०	१९८७१	३८ (१२)	१३२	८७
२१ (आठ वर्ग)	८०	१६३०	३९ (१२)	१३२	१३९
२२ (छह वर्ग)	६०	१०६८	४० (२१)	२३१	२७३४
२३ (पाच वर्ग)	५०	७१५	४१	१९६	३५१६
२४	२४	३९९२६	कुल १३८	कुल १९२३[1]	कुल ६१८२२४

भाषा और रचना-शैली

प्रस्तुत आगम की भाषा प्राकृत है। कही-कही शौरसेनी के प्रयोग भी मिलते है। इसमे देशी शब्दो का प्रयोग भी स्थान-स्थान पर मिलता है, जैसे—खत्त, डोगर (७।११७), टोल (७।११९), मग्गओ (७।१५२), वोंदि (३।११२), चिक्खल्ल (८।३५७)।

इसकी भाषा बहुत सरल और सरस है। अनेक प्रकरण कथा-शैली मे लिखे गए है। जीवन-प्रसग, घटनाए और रूपक स्थान-स्थान पर उपलब्ध होते है। स्थान-स्थान पर कठिन विषयो को उदाहरणो द्वारा समझाया गया है।

प्रस्तुत आगम की रचना गद्य शैली मे हुई है। कही-कही स्वतन्त्र रूप से प्रश्नोत्तरो का क्रम चलता है और कही-कही किसी घटनाक्रम के वाद उनका क्रम चलता है। प्रतिपाद्य विषय का सकलन करने के लिए सग्रहणी गाथाओ के रूप मे कुछ पद्य भाग भी मिलता है।

---

१ वीसवें शतक के छठे उद्देशक मे पृथ्वी, अप् और वायु—इन तीनो की उत्पत्ति का निरूपण है। एक परम्परा के अनुसार यह एक उद्देशक है, दूसरी परम्परा के मत मे ये तीन उद्देशक हैं। इस परम्परा के अनुसार प्रस्तुत आगम के कुल उद्देशक १९२५ हैं।

कार्य-संपूर्ति

प्रस्तुत आगम के पाठ-शोधन मे लगभग सवा वर्ष लगा। इसमे अनेक मुनियो का योग रहा। उन सबको मै आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

इसके सम्पादन का बहुत कुछ श्रेय शिष्य मुनि नथमल को है, क्योंकि इस कार्य मे अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे है, उसी से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। अन्यथा यह गुरतर कार्य बड़ा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्रहस्य पकड़ने मे इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है। विनय-शीलता श्रम-परायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए, मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्य-क्षमता और कर्त्तव्य-परता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

मैंने अपने सघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियो के बल-बूते पर ही आगम के इस गुरुतर कार्य को उठाया है। अब मुझे विश्वास हो गया है कि मेरे शिष्य साधु-साध्वियो के निस्वार्थ, विनीत एव समर्पणात्मक सहयोग से इस बृहत् कार्य को असाधारण रूप से सम्पन्न कर सकूंगा।

भगवान् महावीर की पचीसवी निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उनकी वाणी का सबसे बडा सकलन-ग्रन्थ जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव हो रहा है।

अणुव्रत विहार नई दिल्ली
२५००वा निर्वाण दिवस

आचार्य तुलसी

Preface

The Title

The title of the Āgama under review is 'Vyākhyā Prajñapti'. The work written in a dialogue-style is called 'Vyākhyā Prajñapati'. According to 'Samawāyānga' and 'Nandi-Sūtra' the present Āgama has an exposition of thirtysix thousand queries[1]. On the testimony of Tatwārtha-Vārtika, Śatkhandāgama and Kaśaya-Pāhuda the present Āgama contained an exposition of sixty thousand queries[2]

The present Āgama is a volume much larger than other Āgamas. It is multifarious in its contents. Probably, there is no branch of metaphysics, which has not been discussed in it, directly or indirectly. From the aforesaid point of view, this Āgama was held in high esteem. The adjective 'Bhagawati' was, therefore, added to it's title, i.e.'Vāyākhyā Prajñapti'. Many centuries before, the adjective 'Bhagawati' became a part and parcel of the title. Now-a-days, the title 'Bhagawati' is more in vogue than 'Vyākhyā Prajnapti'.

The Content

Different sources provide copicious information regarding the contents of the present Āgama. 'Samawāyānga' tells us that many deities, kings and king-ascetics put different types of queries before the lord and he answered them in detail. Swa-Samaya, Para-Samaya, Jeewa, Ajeewa, Loka and Aloka have been explained in detail[3]. According to Āchārya Akalanka queries, such as whether the Jīwa exists or not, have been answered in this Āgama.[4] According to Ācharya Veersena, alongwith the queries and answers, predictive śubha (auspicious) and aśubha (in-auspicious)[5] have been described by ninetysix thousand Ćhinnaććheda Nayas[6].

---

1 Samawao, Sutra 93 ; Nandi, Sutra 85.

2 Tatwartha Vartika 1/20, Satkhanadagama 1, page 101, Kasaya-Pahuda-1, page 125.

3 Samawao Sutra 93

4 Tatwartha' vartika 1/0

5 Kasayapahuda Pt I, p 125

6 The explaination-method, in which each sloka and sutra is explained independently without considering other slokas and sutras, is called 'chinnacchedanaya'

The importance of the present Āgama may well be understood by the aforesaid indications. Different branches of modern science have recently brought to light many mysteries. When we go into the depths of the present Āgama, we find that these mysteries had been revealed some 2500 years before.

Lord Mahavira has enumerated six groups of living-beings (Jivas). The living beings of the Trasa-kāya(mobile beings)group are self-evident. The living beings of the floral group (Vanaspati nikāya) are supported by the modern Science also. The four groups of living beings—the earth. the water, the fire, and the air have not been accepted by the modern science. Lord Māhavira has not only cited the existence of the earth living-beings etc., but thrown enough light on their life-span, food habits, breathing, evolution of consciousness, perceptions etc. also. The minimum span of life of the living-beings of the earth group is of a Antar Muhrat only and the maximum of twenty two thousand years. They do not have a particular order of breath period. Sometimes it is less and sometimes more. They aspire every moment for food and take it. The consciousness of the touch-organ is quite distinct in them. The other currents of consciousness are indistinct.[1]

As man takes in oxygen in his breath-period, the living-beings of the earth group not only take in air, but the Pudgalas (matter) of all the earth, the water, the fire, the air and the flora[2].

Like the earth living-beings, the other living-beings of the water etc do breathe and take food etc. Modern science has studied the different aspects of the floral living-beings and thrown light on their mysteries, but sufficient research has not been carried out on the earth living-beings. Flora expresses anger and affection. The affectionate behaviour blooms it and the hateful behaviour fades it away. These scientific experiments lead us to the maxim of lord Mahavira that there is ten fold consciousness in the floral-world.

These ten folds are—Food consciousness, fear consciousness, co-habitation consciousness, hoarding consciousness, anger consciousness, ego consciousness, deceit consciousness, greed consciousness, 'Augha' consciousness and world consciousness Having these folds of consciousness the floral world behaves indistinctly the same way as man does distinctly.

---

1. Bhagawai, 1-1-32, page 9.
2. Bhagawai, 9-34-253, 254, page 464.

This topic has been mentioned as an example. The object of it is to point out the fact that in this Āgama hundreds of such topics, that cannot be understood by common sense, have been expounded. A few of them have been so far understood with the help of the modern scientific research and many of them can be accepted as tenets for experiments.

The activities of the subtle living-beings (Sūkshma jīva) being perceivably proved, not only the biological doctrines are evolved, an opportunity to understand the doctrine of Ahimsā, and side by side to review the behaviour towards the subtle living-beings, is provided also.

Lord Mahavira has expounded the five principal substances. They are named as Panchāstikāya. In them dharmāstikāya, adharmāstikāya and ākāśāstikāya, the three being formless are invisible Though Jīvāstikāya too, being formless, is invisible, it is indicated by the activities of consciousness seen through the body. Pudgalāstikāya, being concrete, is visible. The multiformity of our world is a result of the union of Jīva and Pudgala. A clear ascertainment of Jīva and Pudgala is found in this Āgama to such a great extent as is not available in the old religious and philosophical works. The full text of the Āgama is not available today, but whatever is available discusses thousands of queries From the historical point of view, the chapters on Ācharya Mankkhali Gosāla, Jamāli, Śivarājarsi, Skanda Sanyāsi etc. are of great importance. From the angle of philosophical discussion Jayanti, Madduka Śramanopāsaka, Roha Anagāra, Somila Brāhmaṇa, Lord Parśwa's disciple Kālās-vesiya-putta, śrāvakas of Tungīya City etc. are the topics worth reading From the view point of Mathematics, discussions of Pārśwa-patyīya Gāngeya Anāgāra are of great value.

In the age of Lord Mahavira, there were different religious cults. Cultic bigots were almost un-heard. Munis and Parivṛājakas of one religious body went to engage themselves in philosophical discusssions with the Munīs and Parivṛājakas of another religious body, and whatever was found to be acceptable, was accepted freely. There are many contexts in this Āgama to throw light on the true free-mindedness of religion prevailing in that age. In this way, with different view-points this Āgama is a work, interesting to read, inspring of self-control and equilibrium and promoter of knowledge.

Divisions and Sections

According to Samawāyānga and Nandi Sūtra, this Āgama contains more than a hundred Adhyayanas,ten thousand Uddeśakas and ten thousand Samuddesakas[1]. The present volume of it differs from the said account.

1. Samawao, Sutra 93, Nandi, Sutra 85,

Presently, there are one hundred and thirtyeight Śatas (Śatakas) and one thousand and ninehundred and twentyfive Uddeśakas. The first thirytwo Śatakas are independent ones. The seven Śatakas, from thirtythree to thirty-nine, are unions of twelve śatakas each The fortieth śataka is a union of twentyone śatakas. The forty-first śataka is independent. In all, there are one hundred and thiryeight śatakas. In them, fortyone śatakas are cardinals and the rest are secondary ones.

The Uddeśakas and syllables in the Śatakas are as follows :

Śataka	*Uddeśaka*	*Total syllables*
1	10	28841
2	10	23818
3	10	36702
4	10	753
5	10	25691
6	10	18652
7	10	24935
8	10	48435
9	34	45859
10	34	9907
11	12	32338
12	10	32808
13	10	21914
14	10	16033
15	—	39812
16	14	15939
17	17	8412
18	10	22443
19	10	8027
20	10	19871
21 (eight vargas)	80	1630
22 (six vargas)	60	1068
23 (five vargas)	50	715
24	24	39926
25	12	45103
26	11	4455

Sataka	*Uddesaka*	*Total syllables*
27	11	190
28	11	694
29	11	1027
30	11	4764
31	28	2344
32	28	363
33 (12 vargas)	124	3089
34 (,, ,,)	124	8964
35 (,, ,,)	132	4181
36 (,, ,,)	132	731
37 (,, ,,)	132	115
38 (,, ,,)	132	87
39 (,, ,,)	132	139
40 (29 ,,)	231	2734
41	196	3516
138	19231[1]	618224

The Language and the Style

The language of the present Āgama is Prākrit. Here and there the usages of Saurseni are also found. In some instances the use of Desi words (vernacular) is also found, like khatta (खत्त), Dongar (7/117 डोंगर), Tola (7/119 टोल), Maggao (7/152 मग्गओ), Bondi (3/112 बोंदि), Cikkhalla (8/357 चिक्खल्ल).

The expression of it is very lucid and sweet. Many topics have been dealt with in the style of fable narration. Reminiscences, anecdots and allegories are found through out the work. The difficult topics have been explained by citing aporopriate examples in many places.

The present Āgama has been written down in prose style. Somewhere, the order is an independent discussion and sometimes it is an off-shoot of some incident Some verse-part is also available in the form of collected Gāthas to compile the ascertainable topic.

1 In the twentieth Sataka of the sixth Uddesaka, the theory of the origin of the earth, the water, and the air, has been expounded According to one tradition, this is one Uddesaka, but the others hold it as comprised of three Uddesakas. According to this tradition, the Agama under review has 1925 Uddesakas in all,

Accomplishment of the work

It took about a year and a quarter to redeem the text of the present Āgama. In the accomplishment of this task, there has been the contribution of many Munis. I bless them that their devotedness to the performances be ever more developed. On the occasion of this twentyfifth centinary of Lord Mahavira, I have a feeling of great pleasure in presenting to the people the biggest and most volumenous work pertaining to the life and teaching of the Lord.

Anuvrata Vihar **Āchārya Tulasi**

Delhi

Editorial

Introduction to the work

The Āgama Sūtras have two main divisions, i e. the Anga-Pravista and the Anga-Vāhya. The Anga-Pravista Sūtras are considered to be the nearest to the original and most authentic of all as they are composed by the principal diciples of Lord Mahāvira. They are twelve in number . 1. Āchārānga, 2. Sūtrakṛtānga, 3. Sthānānga, 4. Samawāyānga, 5. Vyākhyā-Prajñapti, 6. Jñata Dharma-Kathā, 7 Upāsaka-Daśā, 8. Anta-krita-Daśā, 9. Anuttaro-papātika Daśā, 10 Praśna-Vyākarana, 11. Vipāka-Śruta, 12. Dṛiṣtiwāda. The twelfth Anga is, at present, not available.

The eleven Angas, which are available, are being published in three volumes under the title of Anga-Suttani. The first volume has four Angas, i.e, 1. Āchārānga, 2 Sūtrakṛitānga, 3. Sthānānga and 4. Samawāyānga. The second volume contains only the 'Vyākhyā Prajñapti' and the third contains the rest six Angas.

The present work is the second volume of the Anga-Suttāni. It has the original text of the Vyākhyā-Prajñapti with its recentions A brief preface has been added in the beginning. An elaborate preface and the word-index have not been added to it. It is planned to publish them in two independent volumes. Accordingly, the fourth volume will contain an elaborate preface to the eleven Angas and the fifth one will contain the word-index thereof.

The present text and the method of editing

The text of the present Āgama has been redeemed on the basis of the seven manuscripts (two being palm-leaf manuscripts) and vṛitties (commentaries) . According to the method of text redemption in vouge, we do not proceed on the basis of regarding only one manuscript as main, but redeem the original text with the help of Artha-mīmānsā (critical meaning), former and later contexts, preceding text (Poorwa-Pātha) and the text of other Āgama-Sūtras and the explanation in the Vṛitti (commentary). The original commentary of the Bhagwati is extinct at present. The chūrṇi (commentary) was available but we could not get it. We have made use of the original Tīka and chūrṇi portions quoted by Abhayadeva Sūri in his vṛitti, The scribes, from time to time have abridged the text. Many forms

of the abridgement are found. In the manuscripts used in the text-redemption, there are four different versions. The abridgement of the text found in them has been done in different ways (See, page 39). There have been mistakes also due to the difference in written forms of the letters. In sūtra 1/365, the reading Pāosiyāya' has been substituted for 'Prādoṣikī Kriyā'. In some manuscripts the reading is 'Pā-u-siyāya'. In the old script, it is difficult to differenciate 'O' from 'U'. This is why 'U' is abundantly found in the present manuscripts in place of 'O'. The manuscripts which were transcribed by the scholars efficient in the language, have 'O' but the copies, prepared by mere scribes have 'U' instead of 'O', The recensions such as 'Owāsantare' and 'Uwāsantare' have taken place due to this fact only. (See, page 66, Sūtra 1/392 ; page 77, Sūtra 1/444).

In Sūtra 8/242, the reading is 'Čhettehin'. But, as the transcribing went on, many gradual alterations, such as 'Bittehin', 'Čhattehin', 'Čittehin' occured. 'Tada' became 'Taha' in Sūtra 8/301. There is an obridged 'Vaćna' (lesson) in same manucripts. The commentator, too, received the abridged 'Vaćna'. So he wrote 'Anya Yūthik waktawyata' is to be understood by one himself. It has not been written down lest the work should get bulky[1]'. The commentator completed the abridged reading in the commentary. Some transcribers have included same part of the commentary in the original text. And, thus the reading of the full text differed from that of the abridged text.

In some specimens a mixture of the readings, abridged and full, has taken place. In Sūtra 2/47, page 88, 'Khandayā' Puććhā' is the abridged text. Some transcriber wrote its full text in the margin of the manuscript for his own understanding. And, in the later transcriptions, the abridged and the full text were both included. (See, foot-note of Sūtra 5/122, page 209 ; the first foot-note of Sūtra 2/118, page 112) In 11/59 the full and the abridged text 'Jahā O-wā-i-e' both have been written down. Such is the case in the chapter of Asoććā Kewalī' also. In some manuscript, the quotation given in the commentary has also been included. (See, the second foot-note of Sūtra 2/75, page 99) In some instances, the secondary explanation, too, given by the commentator, was accepted as the original text in the later transcriptions. (See the first foot-note of the Sutra 5/51, page 194).

In the task of text-redemption, the text of other Āgamas also are taken as basis. In all the manuscripts, after the text 'Ćiyatante uragharappawesā' in Sutra 2/94, the text reads as 'Bahūhin Sīlawwaya-guna-weramanapaćća-

---

1. Iha Sutra Anya Yuthika waktawayam Swayamuecaraniyam Grantha—gaurawa —bhayenalikhitatatwattasya taccedam, Vrittipatra 106,

khāna-pōs-hōwa-wasehın'. Due to the inconsistency ın ıts meanıng there, the commentator had to wrıte 'Taıryuktā iti gamyam', but, on seeıng the Sutras 'owā-ıya' and 'Rāyapaśena-ıya', it ıs found that this readıng should not be there where ıt has been wrıtten down. On the basıs of both the above-mentıoned Sūtras, the order of the text ın vıew is constructed thus—'O-saha-Bhesaıjenam Paḍılābhemānā bahūhin Sīlawwaya-gūṇa weramaṇa-Paććakhāna Posahowa-wāsehin ahāparıggahı-e-hın tawokamméhın appānam bhāwemānā wiharantı'. In sūtra 2/1, in all the specimens, the text ıs sārakallāṇa Jāwa kewa-ın' but 'Jāwa' serves no purpose here. On the basis of 8/217 of the Bhagwati as well as the first stenza of the Prajnāpanā, here the text is ascertaıned to be 'Jāwatı, ınstead of 'Jāwa'.

In many ınstances, the meanıng does not change by an alteratıon of letter but dıfficulty arıses in understandıng the meanıng and sometimes ıt changes too In Sūtra 6/90. the readıng is 'hawwin' ; and 'hetthın' as well as 'hıtthin' the two recensıons are also found. The commentator Abhayadeva Sūrı has given the meaning as 'Sama' there. (See the commentary-leaf 271). In the sthānānga Sūtra (143), on the same topıc, the readıng ıs as, 'hitṭhin'. Abhayadeva Sūri has gıven its meaning there as 'below the Brahma-loka'. (See the Sthānānga-vṛittı leaf 410).

In same places the varıent readings occur due to the mıs-understandıng of the transcrıber and difference ın characters in scrıpts. In Sūtra 9/195, the readıng ıs as 'Odharémānī-odharémaṇī'. In some specimens this readıng ıs found ın the form of 'uwadharemānīo-uwadharemānīo'. In one copy, this readıng is changed ınto 'uwarı-dhare-māṇīo-uwarı-dhare-manīo'.

A few examples of recensıons have been cited here to show that manuscripts or only one particular copy cannot be taken as the basis ın the redemption of the text. It can be redeemed only on the basis of various Āgamas, theır commentarıes and consistency of their meanıng.

The problem of abridgement and redemption of the text

It is a task to lay down authentically the method of abridgement adopted by Devardhigaṇi at the tıme of wrıting the Āgama Sūtras. And, ıt ıs a task because many Āgamadharas have abrıdged the Āgama-text in later periods Probably, same transcribers too, for the sake of convenience of transcribıng, have abridged the text.

In the abridged text of sūtra 13/25, the dewoddeśaka of the second Śataka has been referred to ındicate the kınds of Bhawanpatı Dewas etc., but the full text is not there (2/117, page 111) and the sthānpada of the Prajnāpnā has been referred to. Likewıse, in the abrıdged text of Sūtra 16/33, the third

Śataka (Sūtra 27, page 130) has been referred to but the full text is not there. It is indicated there to refer to 'Rayapaseṇa-ima' sutra.

The abridged text of Sūtra 16/71 refers to the chapter of 'Udrāyana (13/117, page 614) only not to find the full text there. In the same way 16/121, 18/56 and 18/77 indicate regarding the full text, but it is not found at the places referred to.

On the basis of these references, it is inferred that the texts, at the places referred to, were complete at the time of their abridgement. But after that, some Anuyogadhara Ācharya abridged those full texts also The words 'Jāwa', 'Jahā' etc. have been used for abridgement.

In some instances, the use of 'Jāwa' is more or less unnecessary. It is either due to negligence on the part of the transcriber or has been written as usual without discernment. The transcribers have taken plenty of freedom in the use of 'Jāwa'. If someone transcribed 'Pāwaphala Jāwa Kajjanti, the other has written it as 'Pāwaphala virvāga Jāwa Kajjati'. Along with the short readings even such as 'winda' (7/196), 'Payoga' (8/17) 'Sahassa' (16/103) the word 'Jāwa' has been added. The abridgements of the text, therefore, seem to have been done from time to time by the scribes.

The Āgama under review has two main Vaćnās, abridged and full. The length of the abridged version of the work is regarded to be a total of 15751 Anustupa Ślokas The extent of the full version of the work is regarded to be a total of one lakh and a quarter Anustupa Ślokas. Abhayadeva Sūri has written his commentary on the basis of the abridged version of this Āgama. In editing the text, we have, as far as needed; completed the texts introduced by the words 'Jāwa' etc, resulting the total length of the work to a measure of 19319 Anusfupa Ślokas and 16 letters more.

Change of Word and Formative

1/49	Nigama	Niyama	(Tā)
1/224	Appiyā	Appitā	(Ka)
1/224	Etesim	Tetesim	(Ka, Tā, Ma)
1/237	Wai.	Wati	(Tā)
1/239	Wai.	Wayī.	(Tā)
1/245	Māyo	Māo	(Tā)
1/273	Poyantam	Podantam	(Ka, Tā, Ba, Ma, Sa)
1/276	Kajjai	Kijjai	(Ba, Sa)
1/281	Pāṇā-i-Wāya	Pāṇāyawāya	(Sa)

1/281	Nera-i-yanam	Neratiyānam	(A, Ba, Sa)
1/298/2	Uwa Ogé	Owa oge	(Tā)
1/315	Ahe	Adhe	(Tā)
1/354	Karejja	Karijja (Ka) Karejjā	(Sa)
1/357	Duhı-é	Dukkhi-e	(Kā, Tā, Ma)
1/357	Dugga ndhe	Dugandhe	(A, Ma, Sa)
1/363	Āriyam	Yariyam	(Ka, Tā)
1/364	ća-u	ćatu	(Tā)
1/365	Pa-O-sıā	Pāyosıā	(A, ba)
1/370	Saya	Sata	(Tā)
1/371	Sandhijjamāne	Sandhejja. māne	(Tā)
1/371	Nısitthe	Nısatthe	(Ka, Tā)
1/371	Kā-ı-ya-e	Kātıyā-e	(Tā)
1/385	Pānā-ı-wāya	Pāṇāyawāyao	(Ba, Sa)
1/389	Hṛıssi	Hussı	(Ba);
		Hṛıswı	(Sa);
		Hassi	(Ka)
1/415	Jahā	Jadh ā	(A, Ba, Sa)
1/424	Sāmā-i-yassa	Sāmātıyassa	(Tā)
1/425	Ja-i	Jatı	(A, Ka, Ba, Ma, Sa)
1/434	Kıwanassa	Kıwınassa	(Tā)
2/26	Māgahā	Māgadhā	(Tā)
2/41	Viyadda bhoī	Viyaddabhotī	(A, Tā, Bā, Ma, Sa)
2/57	Sāmā-i-yama-i-yāin	Sāmā-ı-mādīy-ātım	(Ka, Ba)
		Sāmātiyamā-tiyāın	(Sa)
2/66	Dhamayio	Dhawaṇi	(Ka, Tā, Ba, Ma)
2/66	Rayanīye	Ratnīye	(Tā)
2/68	Ārūhe-i	Ārūbhe-i	(Ka, Ma)
2/68	Khā-ima-Sāimam	Khatimā-Sāti-mam	(Ba, Sa)
2/68	Sayamewa	Satmewa	(Tā)
2/94	Awanguya o	Awanguta o	(Ma)
2/94	Khā-ima sā-i-meṇam	Khātima-Sātimenam	(Ba, Sa)

3/4	Ayameyārūwe	Atametārūwe	(Tā)
3/21	Isāne	Nīsaṇe	(Tā)
3/25	Moya-o	Motāto	(Ka, Tā)
3/33	Khā-ima Sā-ımena	Khātim-Sātı-meṇam	(Ba,Sa)
3/112	Sayaṇıjjā o	Satanijjā o	(Tā)
3/112	Niwatim	Nıpatım	(Tā)
3/143	Weyatı	Wedatı	(Tā)
3/148	Samaya o	Samata o	(Tā)
5/3	'Paḍiṇa'	'Padıṇa'	(Tā, Ma)
5/60	Ā-u-e	Ā-u-ge	(Tā)
5/79	Rayaharana māyā-e	Rataharana-māta-e	(Tā)
5/82	Weyāwadıyam	Wedāwadiyam	(Ba, ma)
5/110	Samayansi	Samatansı	(Tā)
5/139	'Lo-ı-ya'	'Lo-tı-ya'	(A, Sa)
6/63	Sakasā-ī-hin	Sakasādīhin	(Tā)
6/63	Sajogī	Sajotı	(Tā)
6/79	Nāgo	Nā-o	(Tā, ma)
6/90	Kanharātīo	Kanharāyīto	(Ba)
6/166	Kalagam	Kalatam	(Ka)
7/176	o Jaya o	o Jata o	(Ba)
7/213	Ayameyākūwe	Atametākūwe	(Tā)
8/248	Aṇuppadāyawwe	Aṇuppatātawwe	(Tā)
8/315	Goyam	Godam	(Ba)
8/347	Anādīyā o	Anātīta	(Tā)
8/420	Sātānayāe	Sādanatāe	(Ka, Ba, Ma)
8/431	Issarıyao	Dissariya o	(Ma)
8/431	Issarıya	Nıssariya	(Ma)
9/43	Sakasāı	Sakasādı	(A, Tā)
9/94	Ahi-o	Ahıto (Ka), Adhıto (Tā)	
9/174	Maya	Mada o (Tā) Mata o (ba)	
9/169	Sawaṇayāe	Samanayae	(A)
11/133	Dhūwa	Dhūma	(Tā)
11/134	Nīwa	Nīma	(Tā, Ba)
11/142	Pa-u-ma-Sara	Padumasara	(Tā)
16/113	Niyamam	Nītamam	(Ba)
17/38	ćyana	cyaṇa	(Ta, Ba)

18/100	Mayimiccha o	Madimīccha o	(Ba)
19/85	Jati indiyāni	Jadindiyāni	(Tā)
30/22	Sajogī	Sajotī	(Kh.)

Manuscripts used :

(A) Bhagawati-vritti (Panćapaṭhī). Manuscript with original Text.

This manuscript is from the Gadhaiya Library, Sardarshahr. It contains 189 leaves and 278 pages. Each leaf is 13½" in length and 4¾" in width. There are 1 to 23 lines of the original text on each leaf and each line has 80—85 letters The copy has been prepared in a beautiful and artistic manner. There is a 'Wāwaṛi' (hollow space) also in the centre. The year of the transcription has not been given. It is estimatedly written in the 15th-16th century.

(Ka) *Bhagwati Text* (*Manuscript*)

This copy is from the Poonamchand Budhamal Dūdhoria, Ćhapar library It has 333 leaves and 666 pages. Each leaf is 10½" long and 4⅛". wide. There are 15 lines on each leaf and each line has 52-55 letters. The copy is a beautiful and artistic one. There are intermitant Pāis (full-stops) in red ink and wāwaṛi (hollow space). It dates back probably to the 16th ceuntry

(kha) *The text on the palm-leaf* (*Manuscript*)

This manuscript has been received from Madan Chand ji Gothi, Sardar Shahr. It belongs to Jaisalmer Library and is a photo-print of the original written on Tāla Patra. It has 422 leaves and 844 pages. Every page contains 3 to 6 lines and there are 130-140 letters in each line. The concluding eulogy has been written as || ćha || Mangalam Mahā śrī || || ćha ćha || ćha || Rā"

The year of the transcription has not been given but estimatedly it should be of the 12th century.

(Tā) *The text of the Palm-leaf* (*Manuscript*).

This manuscript belongs to Jaisalmer Library and is a photo-print of the Script written on the Talpatra. This, too, has been received from Madan Chand ji Gothi of Sardar Shahr. It has 348 leaves and 696 pages. Each leaf has 5 to 9 lines and there are 130-140 letters in each line. The last leaf is illustrated. The concluding eulogy reads as follows :—

|| ćha || Bhagwati Samattā || ćha || || ćha || || ćha || Sambat 1235 Viśākha-wad ekādasyām gurau aparāhṇe lekhaka -waṇa ćanḍena likhitam"

(Ba) *The text of Bhagawati (Manuscript)*

This manuscript belongs to Terapanthi Sabha, Sardar Shahr. It has 478 leaves and 956 pages. Each leaf is 10½" long and 4½" wide. There are 13 lines on each leaf and each line contains 38-42 letters. The copy has been attractively and artistically prepared. There are three 'Wawadīs' and red lines in it. 'Hartal' (orpiment) has been used. The concluding eulogy is not given in it and hence the year of script is unknown Estimatedly, it dates back to the 16th century.

(Ma) *Bhagwati Sutra Text (Manuscript)*

This manuscript is from the Gadhaiyā Library, Sardar Shahr. It has 482 leaves and 964 pages. Each leaf is 10¼" long and 4½" wide. Each leaf has 13 lines on it and there are 40-45 letters in each line. There are intermittant 'Pāis' (full stops) in red ink and Wāwadīs (hollow spaces).

The year of the script has not been given in the end but estimatedly it dates back to the 16th century. The concluding eulogy reads as follows :—

ćha ‖ Granthāgram 15775 ‖ ćha ‖ ćha ‖ ‖ ćha ‖ Srī ‖ ćha ‖ Srī Kalyānamastu ‖ Śubham Bhawatu ‖ ćha ‖ Śri ‖ Śri ‖ ćha ‖ ćha ‖

The script has notes in Sanskrit in many places.

(Sa) *Bhagwati Sutra (Tripathi)*

Known as Kesar Bhagwati, this manuscript is from the Terapanthi Bhandar, Ladnun. It has 602 leaves and 1204 pages. The text is in the middle of the leaf while the 'vritti' has been given obove and below the text. This is a beautiful and sufficiently correct copy. Some reader, taking a printed copy as authentic has used 'Hartal' in many places and has tried to correct the text of this manuscript. Wherever it has been done so, the correct text has become incorrect. Each leaf of it has 4 to 15 lines of the text on it and each line contains 45-53 letters.

The concluding eulogy reads as follows :—

Srī Bhagwati Sūtram Sampūrnam ‖ ćha ‖ Srī Vivāha Pannatti Pañćamam angam Sammattam ‖ Śubham Bhavatu ‖ Kalayanamastu Granthāgram 15675 Ubhaya Mīlane Gran. 34291 ‖ Srī ‖ Likhatayati Dāhāmallah Śrī Nāgore Madhye Sam. 1848 Māha Śu. 15 ‖

Wṛi, (Wṛipā) Printed

Publisher : Śrīmatī Agamodaya Samiti.

ACKNOWLEDGEMENTS

The 'Vāćnā' has a very ancient history in the Jaina tradition. There had been four 'Vāćnās' of the Āgamas to date in different periods in the last fifteen centuries. There was no well planned Āgama-Vāćnā after Dewardhigaṇi. The Āgamas, written in his Vāćnā-time, have become very much disordered during the long past period A well planned 'Vaćnā' was the need of the day again to set them in order. Āćārya Tulsī had tried for a well planned congreagational Vaćnā but it could not materialize. Ultimately, we reached the conclusion that if our 'Vāćnā' is investigative, researching, full of a well balanced view and diligence, it will itself become congraegational. With this decision in view, our work on this Āgama-Vāćnā began.

Āćārya Tulsī is the Head of this Vāćan. Vāćān means to teach. There are many aspects of teaching in our 'Vāćnā', i.e., redemption of the text, translation, critical study etc. etc. In all such activities, we have received active participation, able guidance and inspiration from the Āćarya. This is the source of strength below this great task.

Only the expression of gratitude to him will not suffice. Better it is that I must achieve the grace of his blessings for future work and prove myself more worthy of my duties.

In the editing of the present Āgama Muni Sudarśanji, Madhukarji, Hīralalji have given constant help to me in various ways. Apart from their valuable assistance, we had co-operation from Muni Śrī Kanmalji, Čhatramalji, Amolakćandji Dinkarji, Poonamćandji, Rajkaranji, Kanhaiyā Lalji, Tārāćandji, Balćandji, Vijairajji, Manilalji, Mahendra Kumarji (second) Sampatmalji (Doongargarh), Śantikumarji, Mohanlalji (Śārdūl) and Manna lalji Boraḍ. The work of editing the text was started on the 9th dark-moon day in the month of Paush in the year 2029 of the Vikrama Era (28th December, 1972), in Sardār Śhahr (Rajasthan) and was completed in Delhi on the 11th day of bright-moon in Phālguna in the year 2030 of the Vikrama Era (4th March, 1974).

Muni Sudarśanji, Madhukarji, Hīralalji and Dulaharajji took great pains in critically examining the press-copy. The counting of the total syllables of the work has been prepared by Muni Mohanlalji (Āmeṭ).

Valueing their contribution to the accomplishment of the work, I express my gratitude to them individually.

On this occasion, the erudite Āgama scholar and active participant in editing of the Āgama, late Śrī Madan ćandji Gothi is very much missed

Had he been alive, he would have been highly contented to see this work accomplished

The Managing editor of the Āgama Śrī Śrī Chānd ji Rampuriā has been devoted to the task of the Āgama from the beginning. He has dedicated himself to the sternous work of making the Āgama Literature popular and handy to the public after giving up his well established practice of an advocate. He has highly shown his faith and dedication in this publication of the'Āgama Suttani'

Sri Khem Chand ji Sethiā, President of the Jain Viśwa Bhārati and his co-workers and the staff of the Ādarśa Sahitya Sangha have worked diligently in collecting the material utilized in the edition of the text.

Accounting the order of contribution to the same activity of the persons marching towards one and the same goal is nothing more than a formality. Actually, it is a solemn duty of us all and this is what we all have performed.

Anuvrata Vihar
New Delhi

Muni Nathmal

भगवई विसयाणुक्कम

दुस्समदुस्समा-पदं-११७, सवुडस्स किरिया-पदं १२५, काम-भोग-पदं १२७, दुब्बलसरीरस्स भोगपरिच्चाय-पद १४६, अकामनिकरण-वेदणा-पद १५०, पकामनिकरण-वेदणा-पद १५३, मोक्ख-पद १५६, हत्थि-कुथु-जीव-समाणत्त-पद १५८, सुह-दुक्ख-पदं १६०, दसविहसण्णा-पदं १६१, नेरइयाण दसविहवेदणा-पदं १६२, हत्थि-कुथूण अपच्चक्खाण-किरिया-पद १६३, अहाकम्मादि-पद १६५, असवुड-अणगारस्स विउव्वणा-पद १६७, महासिलाकटयसगाम-पद १७३, रहमुसलसगाम-पद १८२, वरुण-नागनत्तुय-पद १९२, वरुणनागनत्तुय-मित्त-पद २०४, कालोदाइ-पभितीण पचत्थिकाए सदेह-पद २१२, कालोदाइस्स समाहाणपुव्व पव्वज्जा-पद २१७, कालोदाइस्स कम्मादिविसए पसिण-पदं २२२।

•

अट्ठमं सतं सू० १-५०४ पृ० ३१५-३९७

पोग्गलपरिणति-पद १, पयोगपरिणति-पद २, पज्जत्तापज्जत्त पडुच्च पयोगपरिणति-पद १८, सरीर पडुच्च पयोगपरिणति-पद २७, इदियं पडुच्च पयोगपरिणत्ति-पद ३२, सरीर इदिय च पडुच्च पयोगपरिणति-पद ३५, वण्णादि पडुच्च पयोगपरिणति-पद ३६, सरीर वण्णादि च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं ३७, इदिय वण्णादि च पडुच्च पयोगपरिणति-पद ३८, सरीर इदिय वण्णादि च पडुच्च पयोगपरिणति-पद ३९, मीसपरिणति-पदं ४०, वीससापरिणति-पद ४२, एग दव्व पडुच्च पोग्गलपरिणति-पद ४३, पयोगपरिणति-पदं ४४, मणपयोगपरिणति-पदं ४५, वइपयोगपरिणति-पद ४८, कायपयोगपरिणति-पदं ४९, मीसपरिणति-पदं ६५, वीससापरिणति-पदं ६७, दोण्णि दव्वाइं पडुच्च पोग्गलपरिणति-पदं ७३, तिण्णि दव्वाइ पडुच्च पोग्गलपरिणति-पद ७९, चत्तारि दव्वाइ पडुच्च पोग्गलपरिणति-पद ८२, आसीविस-पदं ८६, छउमत्थ-केवलि-पद ९६, नाण-पद ९७, जीवाण नाणि-अण्णाणित्त-पद १०४, अंतरालगति पडुच्च १११, इदियं पडुच्च—११५, कायं पडुच्च—११८, सुहुम-बादर पडुच्च—१२०, पज्जत्तापज्जत्त पडुच्च—१२३, भवत्थ पडुच्च—१३१, भवसिद्धियाभवसिद्धिय पडुच्च—१३५, सण्णि-असण्णि पडुच्च—१३८, लद्धि-पद १३९, नाणलद्धि पडुच्च-नाणि-अण्णाणित्त-पद १४७, दसण पडुच्च—१५९, चरित्त पडुच्च—१६१, चरित्ताचरित्त पडुच्च—१६३, नाणाइ पडुच्च—१६४, बालाइवीरिय पडुच्च—१६४, इदिय पडुच्च—१६६, उवउत्ताण नाणि-अण्णाणित्त-पद १७२, जोग पडुच्च—१७६, लेस्स पडुच्च—१७७, कसाय पडुच्च—१७९, वेद पडुच्च—१८१, आहारग पडुच्च—१८२, नाणाण विसय-पद १८४, नाणीण सठिइ-पद १९२, नाणीण अतर-पद २००, नाणीण अप्पाबहुयत्त-पद २०५, नाणपज्जव-पद २०८ नाणपज्जवाण अप्पाबहुयत्त-पद २१२, वणस्सइ-पद २१६, जीवपएमाण अतर-पद २२२, चरिम-अचरिम-पद २२४, किरिया-पद २२८, आजीवियसदब्भे समणोवासय-पद २३०, समणोवासगकयस्स दाणस्स परिणाम-पद २४५, उवनिमतितपिडादि परिभोगविहि-पद २४८, आलोयणाभिमुहस्स आराहय-पद २५१,

गासे जीवपदेस-पदं १११, सुदंसणसेट्ठि-पदं ११५, इसिभद्दपुत्त-पद १७४,पोग्गल परिव्वायग-पद १८६ ।

संख-पोक्खली-पद १, उदयणादीण धम्मसवण-पद ३०, जयंती-पसिण-पद ४१, पुढवी-पद ६६, परमाणुपोग्गलाण सघात-भेद-पद ६६, पोग्गलपरियट्ट-पद ८१, वण्णादि अवण्णादि च पडुच्च दव्ववीमसा-पदं १०२, कम्मओ विभत्ति-पद १२०, चद-सूर-गहण-पद १२२, ससि-आइच्च-पदं १२५, चद-सूराण कामभोग-पद १२७, जीवाण सव्वत्थ जम्म-मच्चु-पद १३०, असइ अदुवा अणतखुत्तो उववज्जण-पदं १३३, देवाण विसरीरेसु उववाय-पद १५४, पचेदियतिरिक्खजोणियाण उववाय-पद १५९, पचविह-देव-पद १६३, पचविह-देवाण-उववाय, पद १६९, पचविह-देवाण ठिइ-पद १७८, पचविह-देवाण विउव्वणा-पद १८३, पचविह-देवाण उव्वट्टण-पद १८५, पचविह-देवाण संचिट्ठणा-पद १९१, पंचविह-देवाण-अतर-पद १९२, पचविह-देवाण अप्पावहुयत्त-पद १९७, अट्ठविह-आय-पदं २००, अट्ठविह-आयाण अप्पावहुयत्त-पद २०५, नाणदसणाण अत्तणा भेदाभेद-पद २०६, सियवाद-पद २११ ।

सखेज्जवित्थडेसु नरएसु उववाय-पदं १, सखेज्जवित्थडेसु नरएसु उव्वट्टण-पद ४, सखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु सत्ता-पदं ५ नरय-नेरइयाण अप्पमहत-पदं ४२, नेरइयाण फासाणुभव-पद ४४, नरयाणं वाहल्ल-खुड्डत्त-पदं ४५, निरयपरिसामंत-पद ४६, लोग-मज्झ-पदं ४७, लोय-पदं ५५, धम्मत्थिकायादीणं परोप्पर फास-पदं ६१ धम्मत्थिकायादीण ओगाढ-पद ७४, लोय-पद ८८, आहार-पद ९३, सतर-निरतर-उव्ववज्जणादि-पद ९५, चमरचच-आवास-पद ९६ उद्दायणकहा-पद १०१, भासा-पदं १२४, मण-पद १२६, काय-पद १२८, कम्मपगडि-पद १४७, भाविअप्प-विउव्वणा-पद १४९, छाउमत्थियसमुग्घाय-पदं १६८ ।

लेस्साणुसारि-उववाय-पद १, नेरइयादीण गतिविसय-पद ३, नेरइयादीण अणतरोववन्न-गादि-पद ४, उम्माद-पदं १६, वुट्ठिकायकरण-पद २१, तमुक्कायकरण-पदं २५, विणयविहि-पद २९, पोग्गल-जीव-परिणाम-पद ४४, अगणिकायस्स अतिक्कमण-पद ५४, पच्चणुब्भव-पद ६१, देवस्स उल्लघण-पल्लघण-पद ६८, नेइयादीणं किमाहारादि-पद ७१, देविंदाण भोग-पदं ७४, गोयमस्स आसासण-पद ७७, तुल्लय-पद ८०, भत्तपच्चक्खायस्स आहार-पद ८२, लवसत्तमदेव-पद ८४, अणुत्तरोववाइयदेव-पद ८६, अवाहाए अतर-पद ९०, रुक्खाण पुणब्भव-पद १०१, अम्मड-अंतेवासि-पद १०७, अम्मड-चरिया-पदं ११०, अव्वावाहदेव-

संकेत निर्देशिका

● ० ये दोनो विन्दु पाठपूर्ति के द्योतक हैं। पाठपूर्ति के प्रारभ मे भरा विन्दु [●] और उसके समापन मे रिक्त बिन्दु [०] रखा गया है। देखे—पृष्ठ ५ सूत्र ११।

(?) कोष्ठकवर्ती प्रश्नचिन्ह [?] आदर्शो मे अप्राप्त किन्तु आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखे—पृष्ठ ७४ सूत्र ४३९।

[ ] आदर्शो मे प्राप्त किन्तु प्रस्तुत प्रकरण मे अनावश्यक व्याख्याश पाठ को कोष्ठक मे रखा गया है। देखे—पृष्ठ १०५ सूत्र ९७।

' ' यह दो या उससे अधिक शब्दो के स्थान मे पाठान्तर होने का सूचक है। देखे—पृष्ठ ३। 'वण्णओ' व 'जाव' शब्द के टिप्पण मे उसके पूर्ति-स्थल का निर्देश है। देखे—पृष्ठ ३ सूत्र ६ और पृष्ठ ७ सूत्र ७।

× क्रॉस (×) पाठ न होने का द्योतक है। देखे—पृष्ठ ३ टिप्पण १०।

० पाठ के पूर्व या अन्त मे खाली विन्दु (०) अपूर्ण पाठ का द्योतक है। देखे—पृष्ठ ३ टिप्पण २, पृष्ठ ४ टिप्पण ७।

'जहा' आदि पर टिप्पण मे दिए गए सूत्राक उसकी पूर्ति के सूचक हैं। देखें—पृष्ठ १६ टिप्पण ५।

अ, क, ख, ता, ब, म, स—देखे—सम्पादकीय मे 'प्रति परिचय' शीर्षक।

क्व० क्वचित् प्रयुक्तादर्श।

सं० पा० सक्षिप्त पाठ का सूचक है। देखे—पृष्ठ ५ टिप्पण १०।

वृपा वृत्ति-सम्मत पाठान्तर। देखे—पृष्ठ १५ टिप्पण ४।

वृ वृत्ति का सूचक है। देखे—पृष्ठ १५ टिप्पण ५।

पू० पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यम्। देखे—पृष्ठ ४ टिप्पण १६।

पू० प० पूरक-पाठ परिशिष्ट। देखे—पृष्ठ १२ टिप्पण ४।

अं०	अतगडदसाओ	दसा०	दसासुयक्खधो
अ०	अणुओगदाराइ	ना०	नायाधम्मकहाओ
उत्त०	उत्तरज्झयणाणि	प०	पण्णवणा
उ०	उवगा	भ०	भगवई
उवा०	उवासगदसाओ	राय०	रायपसेणइय
ओ०	ओवाइयं	व०	ववहारो
ज०	जवुद्दीवपण्णत्ती		
जी०	जीवाजीवाभिगम		
ठा०	ठाण		

—०—

भगवई

विआहपण्णत्ती

पढमं सतं

पढमो उद्देसो

मंगल-पद

१. नमो[1] अरहंताण[2],
नमो सिद्धाण,
नमो आयरियाण[3],
नमो उवज्झायाणं,
नमो सव्वसाहूणं[4] ॥

२. नमो बंभीए[5] लिवीए ॥

संगहणी-गाहा

रायगिह १-चलण २-दुक्खे, ३-कखपओसे य ४-पगइ ५-पुढवीओ ।
६-जावते ७-नेरइए, ८-वाले[6] ९-गुरुए य १०-चलणाओ ॥१॥

३. नमो सुयस्स ॥

उक्खेव-पदं

४. तेणं कालेणं तेण समएण रायगिहे नामं[7] नयरे होत्था—वण्णओ[8] ॥

५ तस्स ण रायगिहस्स नगरस्स बहिया[9] उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे गुणसिलए नामं चेइए होत्था ॥

६. 'सेणिए राया, चिल्लणा देवी'[10] ॥

---

१. णमो (क) ।
२. अरिहं° (अ, क, वृपा) , अरह° (वृपा) ।
३. आरिआण (क) ।
४. लोए सव्व° (अ, क, ता, ब, म, वृपा) ।
५. बभीए (ता, ब) ।
६. पाले (ना) ।
७. णाम (क) ।
८. ओ० सू० १ ।
९. बहि (ना) ।
१०. X (ना, ब) ।

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे[1] पुरिसुत्तमे[2] पुरिससीहे[3] पुरिसवरपोंडरीए[4] पुरिसवरगंधहत्थी[5] लोगुत्तमे[6] लोगनाहे[7] लोगपदीवे[8] लोगपज्जोयगरे[9] अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए[10] धम्मदेसए[11] धम्मसारही धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी अप्पडिहयवरनाणदंसणधरे वियट्टछउमे जिणे जाणए बुद्धे बोहए मुत्ते[12] मोयए सव्वण्णू सव्वदरिसी[13] सिवमयलमरुय-मणंतमक्खयमव्वाबाह[14] सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपाविउकामे जाव[15] •पुव्वाणु-पुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहसुहेणं विहरमाणे जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ° ॥

८. परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। पडिगया परिसा[16] ॥

९. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती नामं अणगारे 'गोयमसगोत्ते णं'[17] सत्तुस्सेहे समचउरससंठाणसठिए वज्जरिसभ-नारायसंघयणे[18] कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे[19] महातवे ओराले[20] घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी 'उच्छूढसरीरे संखित्तविउल-तेयलेस्से'[21] चोद्दसपुव्वी चउनाणोवगए सव्वक्खरसन्निवाती समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू[22] अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

१०. तते णं से भगव गोयमे जायसड्ढे जायसंसए जायकोउहल्ले उप्पन्नसड्ढे उप्पन्न-संसए उप्पन्नकोउहल्ले संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोउहल्ले समुप्पन्नसड्ढे

---

१. सयं° (अ)।
२. पुरिसोत्तमे (अ); पुरुमुत्तमे (व)।
३. पुरुससीहे (ता) मर्वत्र।
४. पुरुसवरपुंडरीए (ता)।
५. °हत्थीए (अ)।
६. लोगोत्तमे (अ, व)।
७. °नाहे लोगहिए (अ)।
८. °पईवे (ता, क)।
९. °करे (क)।
१०. °दए बोहिदए (अ, ता)।
११. धम्मदए धम्मदेसए धम्मनायगे (अ); धम्मदए वम्मदेमए (क, ता, व), वम्म-दएत्ति पाठान्तरम् (वृ०)।
१२. मुक्के (क)।
१३. सव्वदंसी (ता)।
१४. °बाहमपुणरावत्तयं (अ, व); सिवमचल-मरुज° (क)।
१५. सं० पा०—जाव समोसरण। ओ० सू० १६-५१।
१६. पू०—ओ० सू० ५२-८१।
१७. गोयमे गोत्तेण (अ, ता, ब); गोयम-सगुत्ते णं (क); गोयमगोत्तेण (म)।
१८. °रिसह° (क, म)।
१९. तत्ततवे घोरतवे (क)।
२०. उराले (अ, ता, व, म, वृपा)।
२१. °तेयलेसे (अ); °तेअलेस्से (क); °तेउलेम्से (म); मूलटीकाकृता तु 'उच्छूढ-सरीरसंखित्तविउलतेयलेस'त्ति कर्मधारयं कृत्वा व्याख्यातमिति (वृ)।
२२. उड्ढजाणू (क, ता); उड्ढजाणु (म)।

समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नकोउहल्ले उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे[1] सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएणं पजलियडे[2] पज्जुवासमाणे एव वयासी[3]—

चलमाण-पदं

११ से नूणं भते ! चलमाणे चलिए ? उदीरिज्जमाणे उदीरिए ? वेदिज्जमाणे[4] वेदिए ? पहिज्जमाणे पहीणे[5] ? छिज्जमाणे[6] छिण्णे ? भिज्जमाणे भिण्णे ? 'दज्झमाणे दड्ढे'[7] ? मिज्जमाणे[8] मए[9] ? निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे ?

हता गोयमा ! चलमाणे चलिए[10]। °उदीरिज्जमाणे उदीरिए। वेदिज्जमाणे वेदिए। पहिज्जमाणे पहीणे। छिज्जमाणे छिण्णे। भिज्जमाणे भिण्णे। दज्झमाणे दड्ढे। मिज्जमाणे मए।° निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे ॥

१२. एए ण भंते ! नव पदा[11] कि एगट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा ? उदाहु नाणट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा ?

गोयमा ! चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए, वेदिज्जमाणे वेदिए, पहिज्जमाणे पहीणे[12]—एए ण चत्तारि पदा एगट्ठा नाणाघोसा नाणावंजणा उप्पण्णपक्खस्स ।

छिज्जमाणे छिण्णे, भिज्जमाणे भिण्णे, दज्झमाणे दड्ढे, मिज्जमाणे मए, निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे—एए णं पच पदा नाणट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा विगयपक्खस्स ॥

नेरइयाणं ठितिआदि-पद

१३ नेरइयाण भते ! केवइय[13] काल ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइ, उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

---

१. णाविदूरे (क), णाइदूरे (ता, म) ।
२ पजलिउडे (अ, क); पजलिपुडे (म) ।
३. वयासि (ता), वदासी (म) ।
४. विदिज्जमाणे (अ,व); वेदिज्जमाणे (क) ।
५. पहिए (ता) ।
६. छिज्जमाणे (ब) ।
७ डज्झमाणे डड्ढे (ता) ।
८. मेज्ज (अ, व) ; मिज (म) ।
९ मडे (क) , मिए (ता) ।
१०. स० पा०—चलिए जाव निज्जरिज्जमाणे ।
११. पया (ता) ।
१२ पहिए (अ, ता, ब, म) ।
१३ केवईय (अ, क, ता), केवइ (ब) ।

१४. नेरइया णं भंते ! केवइकालस्स आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससति वा ? णीससंति वा ?
जहा उस्सासपदे[1] ॥

१५. नेरइया ण भते ! आहारट्ठी ?
हंता गोयमा ! आहारट्ठी। जहा पण्णवणाए पढमए आहारुद्देसए[2] तहा भाणियव्व—

संगहणी-गाहा

ठिइ उस्सासाहारे, कि वाऽऽहारेंति सव्वओ वावि ?
कतिभागं सव्वाणि व ? कीस व भुज्जो परिणमति ? ॥१॥

१६. नेरइयाण भंते ! पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया ?
आहारिया आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणया ?
अणाहारिया आहारिज्जिस्समाणा[3] पोग्गला परिणया ?
अणाहारिया अणाहारिज्जिस्समाणा पोग्गला परिणया ?

गोयमा ! नेरइयाणं पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया।
आहारिया आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणया, परिणमति[4] य।
अणाहारिया आहारिज्जिस्समाणा पोग्गला णो परिणया, परिणमिस्सति।
अणाहारिया अणाहारिज्जिस्समाणा पोग्गला णो परिणया, णो परिणमिस्सति ॥

१७. नेरइयाण भते ! पुव्वाहारिया पोग्गला चिया ? पुच्छा—
जहा परिणया[5] तहा चियावि ॥

१८. एवं—उवचिया, उदीरिया, वेइया, निज्जिण्णा।

संगहणी-गाहा

परिणय 'चिया उवचिया'[6] उदीरिया[7] वेइया[8] य निज्जिण्णा।
एक्केक्कम्मि पदम्मि,[9] चउव्विहा पोग्गला होंति[10] ॥१॥

---

१. प० ७।
२. प० २८।१।
३. आहारिज्जस्स° (क)।
४. परिणमयति (ता)।
५. भ० १।१६।
६. चिया य उवचिया (अ), चित उवचित (म)
७. उदीरिय (ता)।
८. वेतिया (म)।
९. पदमी (ब)।
१०. अतोग्रे 'ता' प्रतौ एतावानतिरिक्तः पाठो लभ्यते—
नेरइयाण भते ! पुव्वाहारिया पोग्गला निज्जिण्णा। तहेव।

१९ नेरइया णं भंते ! कइविहा पोग्गला भिज्जंति ?
गोयमा ! कम्मदव्ववग्गणमहिकिच्च दुविहा पोग्गला भिज्जति, तं जहा—अणू चेव, बादरा चेव ॥

२०. नेरइया णं भंते ! कइविहा पोग्गला चिज्जंति ?
गोयमा ! आहारदव्ववग्गणमहिकिच्च[1] दुविहा पोग्गला चिज्जति, तं जहा—अणू चेव, बादरा चेव ॥

२१. एवं उवचिज्जति[2] ॥

२२ नेरइया ण भंते ! कइविहे पोग्गले उदीरेंति[3] ?
गोयमा ! कम्मदव्ववग्गणमहिकिच्च दुविहे पोग्गले उदीरेंति, त जहा—अणू चेव, बादरा चेव ॥

२३. सेसावि एवं चेव भाणियव्वा[4]—वेदेंति, निज्जरेंति ॥

२४. एव[5]—ओयट्टेसु[6], ओयट्टेंति, ओयट्टिस्संति ।
सकामिसु, सकामेंति, सकामिस्सति ।
निहत्तिसु,[7] निहत्तेंति, निहत्तिस्सति ।
निकाएंसु, निकायति, निकाइस्सति[8] ।

सगहणी-गाहा

भेदिया[9] चिया उवचिया, उदीरिया वेदिया य निज्जिण्णा ।
ओयट्टण सकामण, <u>निहत्तण</u> निकायणे तिविहकालो ॥१॥

२५. नेरइया णं भंते ! जे पोग्गले तेयाकम्मत्ताए गेण्हंति, ते कि तीतकालसमए गेण्हंति ? पडुप्पन्नकालसमए गेण्हति ? अणागयकालसमए गेण्हति ?
गोयमा ! नो तीयकालसमए गेण्हति, पडुप्पन्नकालसमए गेण्हति, नो अणागयं-कालसमए गेण्हति ॥

२६ नेरइया ण भते ! जे पोग्गले तेयाकम्मत्ताए गहिए[10] उदीरेंति, ते किं तीयकाल-समयगहिए पोग्गले उदीरेंति ? पडुप्पन्नकालसमए[11] घेप्पमाणे पोग्गले उदीरेंति ? गहणसमयपुरक्खडे पोग्गले उदीरेंति ?

---

१. °मभिकिच्च (अ, ब) ।
२ °ज्जति वि (ता) ।
३. उदीरति (क) ।
४. °यव्वा एव (अ, क, ता) ।
५ ×(अ, क, व, म) ।
६ उय° (क, ता, म); अपवर्त्तनस्य चोपलक्षणात्वादुद्वर्त्तनमपीह दृश्यम् (वृ) ।
७. निव° (ता) सर्वत्र ।
८. अतोग्रे अ, क, व, म प्रतिषु एतावानतिरिक्त- पाठो लभ्यते—
सव्वेसु वि कम्मदव्ववग्गणमहिकिच्च ।
९. भेतिय (क) ।
१० ×(अ, व) ।
११. °समय (क, ता, ब, म) ।

गोयमा ! तीयकालसमयगहिए पोग्गले उदीरेंति, नो पडुप्पन्नकालसमए घेप्पमाणे पोग्गले उदीरेंति, नो गहणसमयपुरक्खडे पोग्गले उदीरेंति ॥

२७. एवं—वेदेंति, निज्जरेंति[1] ॥

२८. नेरइया णं भंते ! जीवाओ किं चलियं कम्मं बंधंति ? अचलियं कम्मं बंधंति ?
गोयमा ! नो चलियं कम्मं बंधंति, अचलियं कम्मं बंधंति ॥

२९. नेरइया णं भंते ! जीवाओ किं चलियं कम्मं उदीरेंति ? अचलियं कम्मं उदीरेंति ?
गोयमा ! नो चलियं कम्मं उदीरेंति, अचलियं कम्मं उदीरेंति ॥

३०. एवं—वेदेंति, ओयट्टेंति, संकामेंति, निहत्तेंति[2], निकाएंति[3] ॥

३१. नेरइया णं भंते ! जीवाओ किं चलियं कम्मं निज्जरेंति ? अचलियं कम्मं निज्जरेंति ?
गोयमा ! चलियं कम्मं निज्जरेंति, नो अचलियं कम्मं निज्जरेंति ॥

संगहणी-गाहा

बंधोदयवेदोयट्टसंकमे[4] तह निहत्तणनिकाए ।
अचलियं-कम्मं तु भवे, चलियं जीवाउ निज्जरए[5] ॥१॥

३२. एवं[6] ठिई आहारो य भाणियव्वो । ठिती जहा—

१. निज्जरति (ता, ब) ।
२. निवत्तेंति (ता) ।
३ अतोग्रे 'अ' प्रतौ एतावानतिरिक्त पाठो लभ्यते—
सव्वेसु अचलियं नो चलियं ।
'ता' प्रतौ च—सव्वेसु नो चलियं अचलियं ।
४. °वट्ट° (अ), ° व्वट्ट° (ता) ।
५. निज्जरिए (अ, ता, ब); निज्जरइ (क) ।
६. अत्र विस्तृता वाचनापि लभ्यते । तस्यां 'जहा नेरइयाणं' इत्यादि समर्पणपदानि लभ्यन्ते, किन्तु पूर्ववर्ति—नैरयिकपदे तानि न विद्यन्ते, तेन संक्षिप्तैव वाचना मूलपाठ-रूपेणादृता । विस्तृता चैवम्—
असुरकुमाराणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं ॥
असुरकुमारा णं भंते ! केवइकालस्स आणमंति वा पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? णीससंति वा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसेणं साइरेगस्स पक्खस्स आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, णीससंति वा,
असुरकुमाराणं भंते ! आहारट्ठी ?
हंता आहारट्ठी ।
असुरकुमाराणं भंते ! केवइकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ?
गोयमा ! असुरकुमाराणं दुविहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—
आभोगनिव्वत्तिए य अणाभोगनिव्वत्तिए

ठितिपदे[1] तहा भाणियव्वा सव्वजीवाणं। आहारो वि जहा पण्णवणाए पढमे आहारुद्देसए[2] तहा भाणियव्वो, एत्तो आढत्तो—नेरइया णं भते ! आहारट्ठी ? जाव

य। तत्थ ण जे से अणाभोगनिव्वत्तिए, से अणुसमय अविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ। तत्थ ण जे से आभोगनिव्वत्तिए, से जहण्णेण चउत्थभत्तस्स, उक्कोसेण साइरेगस्स वाससहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

असुरकुमारा ण भते ! किमाहारमाहारेति ?

गोयमा ! दव्वओ अणतपएसियाइ दव्वाइ, खेत्तकालभावपण्णवणागमेण सेस जहा नेरइयाण जाव ते ण तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ?

गोयमा ! सोइदियत्ताए ५ सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए ४ इट्ठत्ताए ५ इच्छियत्ताए भिज्जियत्ताए उड्ढत्ताए, णो अहत्ताए सुहत्ताए, णो दुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति।

असुरकुमाराण पुव्वाहारिया पुग्गला परिणया ? असुरकुमाराभिलावेण जहा नेरइयाण जाव नो अचलिय कम्म निज्जरति।

नागकुमाराण भते ! केवइय काल ठिती पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेण दस वाससहस्साइ, उक्कोसेण देसूणाइ दो पलिओवमाइ।

नागकुमारा ण भते ! केवइकालस्स आणमति वा ४ ?

गोयमा ! जहण्णेण सत्तण्ह थोवाण, उक्कोसेण मुहुत्तपुहुत्तस्स आणमति वा ४।

नागकुमारा ण भते ! आहारट्ठी ? हताआहारट्ठी।

नागकुमाराण भते ! केवइकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ?

गोयमा ! नागकुमाराण दुविहे आहारे पण्णत्ते, त जहा—आभोगनिव्वत्तिए य अणाभोगनिव्वत्तिए य। तत्थ ण जे से अणाभोगनिव्वत्तिए, से अणुसमयमविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ। तत्थ ण जे से आभोगनिव्वत्तिए, से जहण्णेण चउत्थभत्तस्स, उक्कोसेण दिवसपुहुत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ। सेस जहा असुरकुमाराण जाव नो अचलिय कम्म निज्जरति।

एव सुवण्णकुमाराणवि जाव थणियकुमाराण ति।

पुढविकाइयाण भते ! केवईय काल ठिई पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण बावीस वाससहस्साइ।

पुढविकाइया केवइकालस्स आणमति वा ४ ?

गोयमा ! वेमाताए आणमति वा ४।

पुढविकाइया ण आहारट्ठी ?

हता आहारट्ठी।

पुढविकाइयाण केवइकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ?

गोयमा ! अणुसमय अविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

पुढविकाइया किमाहारमाहारेति ?

गोयमा ! दव्वओ जहा नेरइयाण जाव निव्वाघाएण छद्दिसिं, वाघाय पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउद्दिसिं सिय पचदिसिं। वण्णओ कालनीलपीतलोहियहालिद्दसुक्किल्लाणि, गधओ सुरभिगंध २ रसओ तित्त ५ फासओ कक्खड ८ सेस तहेव। णाणत्त कइभाग आहारेति ? कइभाग फासाएति ?

गोयमा ! असखिज्जइभाग आहारेंति, अणतभाग फासाएति जाव ते ण तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ?

गोयमा ! फासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। सेस जहा नेरइयाण जाव नो अचलिय कम्म निज्जरति। एव जाव वणस्सइ-

१. प० ४।

२. प० २८।१।

दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।।

काइयाणं, नवरं ठिती वण्णेयव्वा जा जस्स, उस्सासो वेमायाए ।

बेइंदियाणं ठिई भाणियव्वा, ऊसासो वेमायाए ।

बेइंदियाणं आहारे पुच्छा, गोयमा ! आभोगनिव्वत्तिए य अणाभोगनिव्वत्तिए य तहेव । तत्थ णं जे से आभोगनिव्वत्तिए, से णं असंखेज्जसमए अंतोमुहुत्तिए वेमायाए आहारट्ठे समुप्पज्जइ । सेसं तहेव जाव अणंतभागं आसाएंति ।

बेइंदिया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति ते किं सव्वे आहारेंति, णो सव्वे आहारेंति ?

गोयमा ! बेइंदियाणं दुविहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—लोमाहारे पक्खेवाहारे य । जे पोग्गले लोमाहारत्ताए गिण्हंति ते सव्वे अपरिसेसिए आहारेंति । जे पोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गिण्हंति तेसिं णं पोग्गलाणं असंखिज्जइभागं आहारेंति, णेगाइं च णं भागसहस्साइं अणासाइज्जमाणाइं अफासिज्जमाणाइं विद्धंसमावज्जंति ।

एएसि णं भंते ! पोग्गलाणं अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्जमाणाण य कयरे-कयरे अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला अणासाइज्जमाणा, अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा ।

बेइंदिया णं भंते ! जे पोग्गला आहारत्ताए गिण्हंति ते णं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ?

गोयमा ! जिब्भिंदियफासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।

बेइंदियाणं भंते ! पुव्वाहारिया पुग्गला परिणया ? तहेव जाव चलियं कम्मं निज्जरेंति ।

तेइंदियचउरिंदियाणं णाणत्तं ठिईए जाव णेगाइं च णं भागसहस्साइं अणाघाइज्जमाणाइं अणासाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमावज्जंति ।

एएसि णं भंते ! पोग्गलाणं अणाघाइज्जमाणाइं ३ पुच्छा ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला अणाघाइज्जमाणा, अणासाइज्जमाणा अणंतगुणा, अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा । तेइंदियाणं घाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।

चउरिंदियाणं चक्खि(क्खु)दियघाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।

पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं ठिई भणिऊणं ऊसासो वेमायाए । आहारो अणाभोगनिव्वत्तिए अणुसमयं अविरहिओ । आभोगनिव्वत्तिओ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेणं छट्ठभत्तस्स । सेसं जहा चउरिंदियाणं जाव चलियं कम्मं निज्जरेंति ।

एवं मणुस्साणवि, नवरं आभोगनिव्वत्तिए जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अट्ठमभत्तस्स, सोइंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति । सेसं जहा चउरिंदियाणं तहेव जाव निज्जरेंति ।

वाणमंतराणं ठिईए नाणत्तं, परिणमंति अवसेसं जहा नागकुमाराणं । एवं जोइसियाणवि, नवरं उस्सासो जहण्णेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि मुहुत्तपुहुत्तस्स । आहारो जहण्णेणं दिवसपुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि दिवसपुहुत्तस्स । सेसं तहेव ।

वेमाणियाणं ठिई भाणियव्वा ओहिया । ऊसासो जहण्णेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं । आहारो आभोगनिव्वत्तिओ जहण्णेणं दिवसपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए वाससहस्साणं । सेसं चलियाइयं तहेव जाव निज्जरेंति (क, ता, वृ, प० २८।१) ।

आरंभ-अणारंभ-पदं

३३. जीवा ण भंते ! कि आयारभा ? परारभा ? तदुभयारभा ? अणारंभा ?
गोयमा ! अत्थेगइया जीवा आयारंभा वि, परारभा वि, तदुभयारंभा वि, णो अणारंभा ।।
अत्थेगइया जीवा नो आयारभा, नो परारभा, नो तदुभयारंभा, अणारंभा ।।

३४ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइया जीवा आयारंभा वि, [1]•परारंभा वि, तदुभयारभा वि, णो अणारभा ? अत्थेगइया जीवा नो आयारंभा, नो परारभा, नो तदुभयारभा, अणारंभा° ?
गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—ससारसमावण्णगा य, असंसारसमावण्णगा य ।
तत्थ ण जे ते असंसारसमावण्णगा, ते ण सिद्धा। सिद्धा ण नो आयारभा,[2] •नो परारभा, नो तदुभयरभा°, अणारभा ।
तत्थ ण जे ते ससारसमावण्णगा, ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सजया य, असजया य ।
तत्थ ण जे ते सजया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पमत्तसंजया य, अप्पमत्तसजया य ।
तत्थ ण जे ते अप्पमत्तसजया, ते ण नो आयारंभा, नो परारभा,[3] •नो तदुभयारभा°, अणारभा ।
तत्थ ण जे ते पमत्तसजया, ते सुहं जोग पडुच्च नो आयारभा[4], •नो परारंभा, नो तदुभयारभा°, अणारभा । असुभ जोग पडुच्च आयारभा वि,[5] •परारभा वि, तदुभयारभा वि°, नो अणारभा ।
तत्थ ण जे ते असजया[6], ते अविरति पडुच्च आयारभा वि[7], •परारंभा वि, तदुभयारभा वि°, नो अणारभा । से तेणट्ठेणं[8] गोयमा ! एव वुच्चइ—अत्थेगइया जीवा[9] •आयारभा वि, परारभा वि, तदुभयारभा वि, नो अणारंभा । अत्थेगइया जीवा नो आयारभा, नो परारभा, नो तदुभयारभा,° अणारभा ।।

३५. नेरइया ण भते ! कि आयारभा ? परारभा ? तदुभयारभा ? अणारंभा ?

---

१. स० पा०—एव पडिउच्चारेतव्व ।
२. स० पा०—आयारभा जाव अणारभा ।
३. स० पा०—परारभा जाव अणारभा ।
४. स० पा०—आयारभा जाव अणारभा ।
५. स० पा०—वि जाव नो ।
६. अस्सजया (ता, व) ।
७ स० पा०—वि जाव नो ।
८ एणट्ठेणं (अ, क), एतेणट्ठेण (ता,व, म) ।
९. स० पा०—जीवा जाव अणारभा ।

गोयमा ! •नेरइया आयारंभा वि[1], परारंभा वि, तदुभयारंभा वि,° नो अणारंभा ॥

३६. से केणट्ठेणं ?

गोयमा ! अविरतिं पडुच्च । से तेणट्ठेणं[2] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया आयारंभा वि, परारंभा वि, तदुभयारंभा वि,° नो अणारंभा[3] ॥

३७. एवं जाव[4] पंचिंदियतिरिक्खजोणिया । मणुस्सा जहा जीवा, नवरं—सिद्धविरहिया भाणियव्वा । वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया तहा नेरइया[5] ॥

३८. सलेस्सा जहा ओहिया[6] । कण्हलेसस्स[7], नीललेसस्स काउलेसस्स, जहा ओहिया जीवा, नवरं—पमत्तापमत्ता न भाणियव्वा[8] । तेउलेसस्स, पम्हलेसस्स, सुक्कलेसस्स जहा ओहिया जीवा, नवरं—सिद्धा न भाणियव्वा ॥

---

१. सं० पा०—वि जाव नो ।

२. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो ।

३ अणारंभा एवं असुरकुमारा वि जाव (ता) ।

४. पू० प० २ ।

५. भ० १।३५, ३६ ।

६ भ० १।३३, ३४ । 'सिद्धा न भाणियव्वा' इति अध्याहर्तव्यम् । 'सिद्धानामलेश्यत्वात्'—इति वृत्तिकारः ।

७. किण्ह° (अ) ।

८. कण्हलेस्सा णं भंते ! जीवा किं आयारंभा ? परारंभा ? तदुभयारंभा ? अणारंभा ?

गोयमा ! अत्थेगइया कण्हलेस्सा जीवा आयारंभा वि, परारंभा वि, तदुभयारंभा वि, नो अणारंभा ।

अत्थेगइया कण्हलेस्सा जीवा नो आयारंभा, नो परारंभा, नो तदुभयारंभा, अणारंभा ।

से केणट्ठेणं जाव अणारंभा ?

गोयमा ! कण्हलेस्सा जीवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संजया य असंजया य ।

तत्थ णं जे ते संजया ते सुहं जोगं पडुच्च नो आयारंभा जाव अणारंभा ।

असुभं जोगं पडुच्च आयारंभा वि जाव नो अणारंभा ।

तत्थ णं जे ते असंजया ते अविरतिं पडुच्च आयारंभा वि जाव नो अणारंभा । से तेणट्ठेणं जाव अणारंभा ।

नीलकापोतलेश्यानां एष एव गमः ।

तेउलेस्सा णं भंते ! जीवा किं आयारंभा जाव अणारंभा ?

गोयमा ! अत्थेगइया आयारंभा वि जाव नो अणारंभा, अत्थेगइया आयारंभा वि जाव नो अणारंभा, अत्थेगइया नो आयारंभा जाव नो अणारंभा ।

से केणट्ठेणं ?

गोयमा ! दुविहा तेउलेस्सा पण्णत्ता, तं जहा—संजया य असंजया य ।

तत्थ णं जे ते संजया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पमत्तसंजया य, अप्पमत्तसंजया य ।

तत्थ णं जे ते अप्पमत्तसंजया ते णं नो आयारंभा जाव अणारंभा ।

तत्थ णं जे ते पमत्तसंजया ते सुहं जोगं पडुच्च नो आयारंभा जाव अणारंभा । असुभं जोगं पडुच्च आयारंभा वि जाव नो अणारंभा ।

तत्थ णं जे ते असंजया ते अविरतिं पडुच्च आयारंभा वि जाव नो अणारंभा । से तेणट्ठेणं जाव अणारंभा ।

नाणादीणं भवंतर-संकमण-पदं

३९. इहभविए भंते ! नाणे ? परभविए नाणे ? तदुभयभविए नाणे ?
गोयमा ! इहभविए वि नाणे, परभविए वि नाणे, तदुभयभविए वि नाणे ॥

४०. [1]•इहभविए भंते ! दंसणे ? परभविए दंसणे ? तदुभयभविए दंसणे ?
गोयमा ! इहभविए वि दंसणे, परभविए वि दंसणे, तदुभयभविए वि दंसणे° ॥

४१. इहभविए भंते ! चरित्ते ? परभविए चरित्ते ? तदुभयभविए चरित्ते ?
गोयमा ! इहभविए चरित्ते, नो परभविए चरित्ते, नो तदुभयभविए चरित्ते ॥

४२. [2]•इहभविए भंते ! तवे ? परभविए तवे ? तदुभयभविए तवे ?
गोयमा ! इहभविए तवे, नो परभविए तवे, नो तदुभयभविए तवे ॥

४३. इहभविए भंते ! संजमे ? परभविए संजमे ? तदुभयभविए संजमे ?
गोयमा ! इहभविए संजमे, नो परभविए संजमे, नो तदुभयभविए संजमे° ॥

असंवुड-संवुड-अणगार-पदं

४४. असंवुडे[3] णं भंते ! अणगारे[4] सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्व-दुक्खाणं अंतं करेइ ?

पद्मशुक्ललेश्याना एष एव गमः ।

अभयदेवसूरिभिः भिन्नमतमनुसृत्य कृष्णलेश्यादिपाठो व्याख्यातः । कृष्णादिषु हि अप्रशस्त-भावलेश्यासु संयतत्वं नास्ति एतद्मतमनुसृत्य तैरेव पाठरचना कृता— "कण्हलेस्सा णं भंते ! जीवा किं आयारंभा परारंभा तदुभयारंभा अणारंभा ?

गोयमा ! आयारंभा वि जाव नो अणारंभा ।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ?

गोयमा ! अविरइं पडुच्च" एवं नील-कापोतलेश्यादंडकावपीति । किन्तु अभयदेवसूरिणामेतद्मतं पर्यालोच्यमस्ति—

(१) सूत्रकारेण 'पमत्तापमत्ता न भाणियव्वा' इति निर्देशः कृतः किन्तु 'संजतासंजता न भाणियव्वा' इति न सूचितम् ।

(२) कषायकुशीलसंयता षट्सु लेश्यासु भवन्ति । प्रस्तुतागमस्य २५ शतके षष्ठोद्देशे एतत् साक्षाल्लिखितमस्ति—कसायकुसीले पुच्छा । गोयमा ! सलेस्से होज्जा णो अलेस्से होज्जा । जदि सलेस्से होज्जा से णं भंते ! कतिसु लेसासु होज्जा । गोयमा ! छल्लेस्सासु होज्जा, तं जहा—कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए ।

अस्य वृत्तौ अभयदेवसूरिणा एतद् व्याख्यातमस्ति—कषायकुशीलस्तु, षट्स्वपि सकषायमाश्रित्य (वृ) ।

(३) प्रज्ञापनासूत्रे कृष्णलेश्यजीवस्य मनःपर्यवज्ञानस्य अस्तित्वं प्रतिपादितम्—कण्हलेस्से णं भंते ! जीवे कतिसु णाणेसु होज्जा ? गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा णाणेसु हुज्जा (प० १७।३) । अस्यागमस्य वृत्तिकृता सहेतुकमिदं व्याख्यातम्—इह लेश्यानां प्रत्येकमसंख्येय-लोकाकाशप्रदेशप्रमाणानि अध्यवसाय-स्थानानि, तत्र कानिचिन्मंदानुभावान्यध्यवसायस्थानानि, प्रमत्तसंयतस्यापि लभ्यन्ते, अतएव कृष्ण-नील-कापोतलेश्या प्रमत्तसंयतस्यापि गीयन्ते (प्र०वृ) ।

(४) प्रथमशतकस्य १०१ सूत्रं द्रष्टव्यम् ।

१. सं० पा०—दंसणे पि एमेव ।
२. सं० पा०—एवं तवे संजमे ।
३. अस्संवुडे (ता) ।
४. अणगारे किं (अ, ब) ।

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

४५. से केणट्ठेण[1] •भते ! एव वुच्चइ—असवुडे ण अणगारे नो सिज्झइ, नो बुज्झइ, नो मुच्चइ, नो परिनिव्वाइ°, नो सव्वदुक्खाण अत करेइ ?

गोयमा ! असवुडे अणगारे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबधणवद्धाओ धणियबधणवद्धाओ पकरेइ, हस्सकालठिइयाओ[2] दीहकालठिइयाओ पकरेइ, मदाणुभावाओ[3] तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ[4] बहुप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउय च ण कम्म सिय बधइ, सिय नो बधइ, अस्सायावेयणिज्ज च ण कम्म भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइय च ण अणवदग्ग[5] दीहमद्ध चाउरत[6] संसारकतार अणुपरियट्टइ। से तेणट्ठेण गोयमा ! असवुडे अणगारे नो सिज्झइ, नो बुज्झइ, नो मुच्चइ, नो परिनिव्वाइ, नो सव्वदुक्खाण अत करेइ ॥

४६. सवुडे णं भते ! अणगारे सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाण अत करेइ ?

हता ! सिज्झइ,[7] •बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाण° अत करेइ ॥

४७. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सवुडे ण अणगारे सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाण अंतं करेइ ?

गोयमा ! सवुडे अणगारे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ[8] धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबधणबद्धाओ पकरेइ, दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मदाणुभावाओ पकरेइ, बहुप्पएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ। पकरेइ; आउय च ण कम्म न बधइ, अस्सायावेयणिज्ज च ण कम्म नो भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणादीय च ण अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससारकतार वीईवयइ[9]। से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—सवुडे अणगारे सिज्झइ[10], •बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाणं° अत करेइ ॥

असंजयस्स वाणमंतरदेव-पदं

४८. जीवे ण भते ! अस्सजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे इओ चुए पेच्चा[11] देवे सिया ?

गोयमा ! अत्थेगइए देवे सिया, अत्थेगइए णो देवे सिया ॥

---

१. सं० पा०—केणट्ठेण जाव नो।
२. ह्रस्स° (ता), रहस्स° (स)।
३ ° भागाओ (ता, म)।
४. ° सयाओ (क)।
५. अणवयग्ग (अ)।
६ चाउरत (व, म, स)।
७ सं० पा०—सिज्झइ जाव अत।
८ ° प्पग ° (स)।
९ वीतीवतति (क, व, म)।
१० स० पा०—सिज्झइ जाव अत।
११. पिच्चा (अ, क, व)।

४९. से केणट्ठेणं[1] •भंते ! एवं वुच्चइ—अस्संजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे° इओ चुए पेच्चा अत्थेगइए देवे सिया, अत्थेगइए नो देवे सिया ?

गोयमा ! जे इमे जीवा गामागर-नगर-निगम[2]-रायहाणि-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-सण्णिवेसेसु अकामतण्हाए, अकामछुहाए, अकामबंभचेरवासेणं, 'अकामसीतातव-दंस-मसग'[3]-अण्हाणग[4]-सेय-जल्ल-मल-पंक-परिदाहेणं 'अप्पतरं वा भुज्जतरं'[5] वा कालं अप्पाणं परिकिलेसंति, परिकिलेसित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ।।

५०. केरिसा णं भंते ! तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता ?

गोयमा ! से जहानामए इह[6] असोगवणे इ वा, सत्तवण्णवणे[7] इ वा, चंपयवणे इ वा, चूयवणे इ वा, तिलगवणे इ वा, लउयवणे[8] इ वा, नग्गोहवणे[9] इ वा, छत्तोहवणे[10] इ वा, असणवणे इ वा, सणवणे इ वा, अयसिवणे इ वा, कुसुंभवणे इ वा, सिद्धत्थवणे इ वा, बंधुजीवगवणे इ वा, णिच्चं[11] कुसुमिय-माइय-लवइय-थवइय-गुलुइय-गोच्छिय-जमलिय[12]-जुवलिय-विणमिय-पणमिय-सुविभत्तपिंडिमंजरि-वडेंसगधरे[13] सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ।

एवामेव[14] तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएहिं, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठितीएहिं, बहूहिं वाणमंतरेहिं देवेहि य देवीहि य आइण्णा वितिकिण्णा[15] उवत्थडा संथडा फुडा अवगाढगाढा सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ।

एरिसगा णं गोयमा ! तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवे णं अस्संजए[16] •अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे इओ चुए पेच्चा अत्थेगइए° देवे सिया ।।

---

१ स० पा०—केणट्ठेणं जाव इओ ।
२ नियम (ता) ।
३ वृत्तौ 'अकामसीतातव-दंस-मसग' इति पाठो नास्ति व्याख्यातः ।
४ अकामअण्हाणग (क, वृ) ।
५ °तरो वा भुज्जतरो (अ, ता, व, म), 'अप्पतरो वा भुज्जतरो वा कालं' ति प्राकृतत्वेन विभक्तिविपरिणामादल्पतरं वा भूयस्तरं वा बहुतरं कालं यावत् (वृ) ।
६. इहं मणुस्सलोगंसि (अ, क, व, म, स) ।
७. सत्ति° (म) ।
८ लाउय° (अ, क, ब, स), लोध° (म) ।
९ × (अ, क, ता); प्रत्यंतरे—णिग्गोहवणे इ वा (अ), णिग्गोह° (स) ।
१०. छत्तोव° (क); छिन्नो° (व); × (म), छन्नो (स) ।
११ × (अ, क, ता, व) ।
१२ जमइय (अ) ।
१३ °पेडि° (क), °वेण्टमजरि° (ता) ।
१४. एवमेव (ता, म) ।
१५ वितिण्णा (क, व, वृपा); × (वृ) ।
१६ स० पा०—अस्संजए जाव देवे ।

५१—सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगव गोयमे समण भगवं महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमंसित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति ॥

बीओ उद्देसो

५२. रायगिहे नगरे समोसरण। परिसा णिग्गया जाव[1] एव वयासी—

कम्म-वेयण-पदं

५३ जीवे ण भते ! सयकड दुक्ख वेदेइ ?
गोयमा ! अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय नो वेदेइ ॥

५४ से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेइ ? अत्थेगइयं नो वेदेइ ?
गोयमा ! उदिण्णं वेदेइ, 'नो अणुदिण्ण'[2] वेदेइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय नो वेदेइ ॥

५५. एव[3]—जाव वेमाणिए ॥

५६. जीवा ण भते ! सयकड दुक्खं वेदेति ?
गोयमा ! अत्थेगइय वेदेति, अत्थेगइय नो वेदेति ॥

५७. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेति ? अत्थेगइय नो वेदेति ?
गोयमा ! उदिण्ण वेदेति, नो अणुदिण्णं वेदेति। से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेति, अत्थेगइय नो वेदेति ॥

५८. एव—जाव[4] वेमाणिया ॥

५९. जीवे ण भते ! सयकड आउय वेदेइ ?
गोयमा ! अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय नो वेदेइ। जहा[5] दुक्खेण दो दडगा तहा आउएण वि दो दडगा—एगत्त-पोहत्तिया[6] ॥

नेरइयादीणं समाहार-समसरीरादि-पदं

६०. नेरइया ण भते ! सव्वे समाहारा ? सव्वे समसरीरा ? सव्वे समुस्सास-नीसासा[7] ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

---

१. भ० १।८-१०।
२. अणुदिण्णं नो (स)।
३. एव चउव्वीसदडएण (स)।
४ पू० प० २।
५. भ० १।५३-५८।
६. पोहत्तिया। एगत्तेण जाव वेमाणिया। पुहत्तेणं तहेव (व, म, स)।
७ °णिस्सासा (ता)।

६१. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाहारा ? नो सव्वे सम-सरीरा? नो सव्वे समुस्ससानीसासा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—महासरीरा य, अप्पसरीरा य। तत्थ ण जे ते महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेंति, बहुतराए पोग्गले परिणामेंति[1], बहुतराए पोग्गले उस्ससंति, बहुतराए पोग्गले नीससति; अभिक्खणं आहारेति, अभिक्खण परिणामेंति, अभिक्खण उस्ससति, अभिक्खण नीससति। तत्थ ण जे ते अप्पसरीरा ते णं अप्पतराए पोग्गले आहारेंति, अप्पतराए पोग्गले परिणामेंति, अप्पतराए पोग्गले उस्ससति, अप्पतराए पोग्गले नीससति; आहच्च आहारेति, आहच्च परिणामेंति, आहच्च उस्ससति, आहच्च नीससति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाहारा, नो सव्वे समसरीरा, नो सव्वे समुस्सासनीसासा ॥

६२ नेरइया णं भते ! सव्वे समकम्मा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे[2] समट्ठे ॥

६३. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकम्मा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं अप्पकम्मतरागा। तत्थ णं जेते पच्छोववन्नगा ते णं महाकम्मतरागा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकम्मा ॥

६४. नेरइया ण भते ! सव्वे समवण्णा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६५ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवण्णा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ णं जे ते पुव्वोववन्नगा ते ण विसुद्धवण्णतरागा[3]। • तत्थ ण जे ते पच्छोववन्नगा ते णं अविसुद्धवण्णतरागा° । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवण्णा ॥

६६. नेरइया ण भते ! सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६७ से केणट्ठेण[4] •भते ! एवं वुच्चइ—नेरइया° नो सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते ण विसुद्धलेस्सतरागा। तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा

---

१. परिणमति (ता)।
२. तिणट्ठे, (क म)।
३. स० पा०— °तरागा तहेव।
४ स० पा०—केणट्ठेणं जाव नो।

ते ण अविसुद्धलेस्सतरागा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समलेस्सा ।।

६८. नेरइया ण भते ! सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

६९. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सण्णिभूया य, असण्णिभूया य। तत्थ ण जे ते सण्णिभूया ते णं महावेयणा। तत्थ णं जे ते असण्णिभूया ते ण अप्पवेयणतरागा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवेयणा ।।

७०. नेरइया ण भते ! सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

७१. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! नेरइया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मदिट्ठी[1], मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी[2] ।।
तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी तेसि णं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आरंभिया, पारिग्गहिया[3], मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया।
तत्थ ण जे ते मिच्छदिट्ठी तेसि ण पच किरियाओ कज्जति[4], तं जहा—आरंभिया[5], °पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया°, मिच्छादसणवत्तिया। एव सम्मामिच्छदिट्ठीण पि। से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकिरिया ।।

७२. नेरइया ण भते ! सव्वे समाउया ? सव्वे समोववन्नगा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

७३. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाउया ? नो सव्वे समोववन्नगा ?
गोयमा ! नेरइया चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—(१) अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा (२) अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा (३) अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा (४) अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाउया, नो सव्वे समोववन्नगा ।।

७४. असुरकुमारा ण भते ! सव्वे समाहारा[6] ? सव्वे समसरीरा ?

---

१. सम्मा° (अ)।
२. सम्मामिच्छा° (ता, म)।
३ परि° (अ, म)।
४ किज्जति (अ, क, व)।
५ स० पा०—आरभिया जाव मिच्छा°।
६. ° हारगा (अ, ता, व, म)।

जहा[1] नेरइया तहा भाणियव्वा, नवरं—कम्म-वण्ण-लेस्साओ परिवत्तेयव्वाओ[2] [पुव्वोववन्ना महाकम्मतरा, अविसुद्धवण्णतरा, अविसुद्धलेसतरा। पच्छोववन्ना पसत्था। सेस तहेव][3] ॥

७५ एव—जाव[4] थणियकुमारा[5] ॥

७६ पुढविकाइयाण[6] आहार-कम्म-वण्ण-लेस्सा जहा[7] णेरइयाणं ॥

७७ पुढविकाइया[8] ण भते ! सव्वे समवेदणा ?
हता गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ॥

७८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ?
गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे असण्णी[9] असण्णिभूत[10] अणिदाए वेदणं वेदेंति। से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ॥

७९. पुढविकाइया णं भते ! सव्वे समकिरिया ?
हता गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे समकिरिया ॥

८०. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे मायीमिच्छदिट्ठी[11]। ताण णेयतियाओ[12] पच किरियाओ कज्जति, त जहा—आरभिया[13], •पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाण-किरिया°, मिच्छादसणवत्तिया। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समकिरिया ॥

८१. समाउया, समोववन्नगा जहा[14] नेरइया तहा भाणियव्वा ॥

८२. जहा[15] पुढविकाइया तहा जाव[16] चउरिंदिया ॥

८३. पचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा[17] णेरइया, नाणत्तं किरियासु।

८४. पचिंदियतिरिक्खजोणिया ण भते ! सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

---

१ भ० १।६०-७३।
२. परिवण्णेयव्वाओ (अ, क, व, स), परिस्थल्लेयव्वाओ (ता); परित्थणेतव्वाओ (म), कर्म्मादीनि नारकापेक्षया विपर्ययेण वाच्यानि (वृ)।
३ अ, क, ता, स एषु चतुर्षु आदर्शेषु असौ कोष्ठकवर्ती पाठो नास्ति। व, म सकेतितयोरादर्शयोरसौ लभ्यते। असौ च व्याख्यांशोस्ति तेन कोष्ठके गृहीत ।
४. पू० प० २।
५ ° कुमारा ण (अ, क, ता, ब, म, स)।
६. ° कातिया (म)।
७. भ० १।६०-६७।
८ ° क्काइया (क, ता, स)।
९ असण्णी य (अ, ब)।
१०. असण्णीभूय (ता, स)।
११. मायामिच्छ° (अ); मायीमिच्छा° (ता); मायामिच्छा° (म)।
१२. णेएतियाओ (ता), णियइयाओ (स)।
१३. सं० पा०—आरंभिया जाव मिच्छा°।
१४ भ० १।७२, ७३।
१५ भ० १।७६-८१।
१६. पू० प० २।
१७. भ० १।६०-६९, ७२, ७३।

८५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—पंचिदियतिरिक्खजोणिया नो सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! पंचिदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी ।
तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—असजया य, संजया-संजया य ।
तत्थ णं जे ते संजयासंजया, तेसि णं तिण्णि किरियाओ कज्जति, तं जहा—आरंभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया ।
असजयाणं चत्तारि । मिच्छदिट्ठीणं पच । सम्मामिच्छदिट्ठीणं पच ।।

मणुस्सादीणं समाहार-समसरीरादि-पदं

८६. [1]मणुस्सा णं भते ! सव्वे समाहारा ? सव्वे समसरीरा ? सव्वे समुस्सासनीसासा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

८७. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाहारा ? नो सव्वे समसरीरा ? नो सव्वे समुस्सासनीसासा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—महासरीरा य, अप्पसरीरा य ।
तत्थ ण जे ते महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेंति, बहुतराए पोग्गले परिणामेंति, बहुतराए पोग्गले उस्ससंति, बहुतराए पोग्गले नीससंति; आहच्च आहारेंति, आहच्च परिणामेंति, आहच्च उस्ससंति, आहच्च नीससंति ।
तत्थ णं जे ते अप्पसरीरा ते ण अप्पतराए पोग्गले आहारेंति, अप्पतराए पोग्गले परिणामेंति, अप्पतराए पोग्गले उस्ससंति, अप्पतराए पोग्गले नीससंति; अभिक्खणं आहारेंति, अभिक्खण परिणामेंति, अभिक्खण उस्ससंति, अभिक्खणं नीससंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाहारा, नो सव्वे समसरीरा, नो सव्वे समुस्सासनीसासा।

८८ मणुस्सा ण भते ! सव्वे समकम्मा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

८९ से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समकम्मा ?
गोयमा! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य ।
तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं अप्पकम्मतरागा । तत्थ ण जे ते पच्छोववन्नगा ते ण महाकम्मतरागा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समकम्मा ।।

---

१ स० पा०—मणुस्सा जहा णेरइया नाणत्तं जे महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेंति आहच्च आहारेंति । जे अप्पसरीरा ते अप्पतराए पोग्गले आहारेंति अभिक्खणं आहारेंति सेस जहा नेरइयाणं जाव वेयणा ।

९०. मणुस्सा ण भते ! सव्वे समवण्णा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥
९१ से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवण्णा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं विसुद्धवण्णतरागा। तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते ण अविसुद्धवण्णतरागा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवण्णा ॥
९२. मणुस्सा णं भते ! सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥
९३. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते ण विसुद्धलेस्सतरागा। तत्थ ण जे ते पच्छोववन्नगा ते ण अविसुद्धलेस्सतरागा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समलेस्सा ॥
९४. मणुस्सा ण भते ! सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥
९५. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—मस्साणु नो सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सण्णिभूया य, असण्णिभूया य। तत्थ ण जे ते सण्णिभूया ते णं महावेयणा। तत्थ ण जे ते असण्णिभूया ते ण अप्पवेयणतरागा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवेयणा° ॥
९६ मणुस्सा ण भते ! सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥
९७. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! मणुस्सा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी।
तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी ते तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सजया, अस्संजया, सजयासजया।
तत्थ णं जे ते सजया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सरागसंजया य, वीतरागसजया य।
तत्थ णं जे ते वीतरागसजया, ते णं अकिरिया।
तत्थ णं जे ते सरागसंजया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पमत्तसंजया य, अप्पमत्तसंजया य।
तत्थ णं जे ते अप्पमत्तसंजया, तेसि ण एगा मायावत्तिया किरिया कज्जइ।

तत्थ ण जे ते पमत्तसंजया, तेसि ण दो किरियाओ कज्जंति, तं जहा—आरभिया य, मायावत्तिया य।

तत्थ णं जे ते संजयासंजया, तेसि ण आइल्लाओ[1] तिण्णि किरियाओ कज्जति, तं जहा—आरंभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया।

असंजयाण चत्तारि किरियाओ कज्जति—आरभिया पारिग्गहिया, माया-वत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया।

मिच्छदिट्ठीणं पच—आरभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाण-किरिया, मिच्छादसणवत्तिया।

सम्मामिच्छदिट्ठीण पच॥

९८. मणुस्सा[2] ण भते! सव्वे समाउया? सव्वेसमोववन्नगा?

गोयमा! नो इणट्ठे समट्ठे॥

९९. से केणट्ठेण भते! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाउया? नो सव्वे समो-ववन्नगा?

गोयमा! मणुस्सा चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—(१) अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा। (२) अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा। (३) अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा। (४) अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा। से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाउया, नो सव्वे समो-ववन्नगा।

१०० वाणमतर[3]-जोतिस-वेमाणिया जहा[4] असुरकुमारा, नवर—वेयणाए णाणत्त-मायिमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य अप्पवेयणतरा, अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नगा य महावेयणतरा भाणियव्वा जोतिसवेमाणिया॥

---

१. आदिमाओ (क, ता, म)।

२ ८६ सूत्रस्य पादटिप्पणगते समर्पणपाठे 'सेस जहा नेरइयाण जाव वेयणा' इति उल्लेखोऽस्ति, अतोनन्तर क्रियासूत्र नैरयिकसूत्रालापकाद् भिन्नमस्ति तेन समर्पणपाठे तद् ग्रहण न कृतम्। समायुषः सूत्र क्रिया सूत्रात् अग्रे वर्तते, किन्तु तद् नैरयिकसूत्रालापकाद् भिन्न नास्ति तेन पूर्ववर्तिसमर्पणपाठेनैव तस्य ग्रहण कृतमिति सभाव्यते। तदस्माभि· साक्षाल्लिखितम्।

३. प्रज्ञापनाया (१७।१) अस्य रचना सुस्पष्टाऽस्ति, यथा—वाणमतरा ण जहा असुर-कुमारा ण।

एव जोइसिय-वेमाणियाण वि। णवर ते वेदणाए दुविहा पण्णत्ता, त जहा—माइ-मिच्छद्दिट्ठिउववण्णगा य, अमाइसम्मद्दिट्ठी-उववण्णगा य। तत्थ ण जे ते माइमिच्छ-द्दिट्ठोववण्णगा ते ण अप्पवेदणतरागा। तत्थ ण जे ते अमाइसम्मदिट्ठोववण्णगा ते ण महावेदणतरागा।

४. भ० १।७४।

१०१. सलेस्सा णं भंते ! नेरइया सव्वे समाहारगा ?
ओहियाणं[1], सलेस्साणं, सुक्कलेस्साणं—एतेसि ण तिण्हं एक्को गमो ।
कण्हलेस्स[2]-नीललेस्साणं पि एगो[3] गमो, नवरं—वेदणाए मायिमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य, अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा य भाणियव्वा ।
मणुस्सा किरियासु सराग-वीयरागा पमत्तापमत्ता न भाणियव्वा ।
काउलेस्साण वि एसेव[4] गमो, नवर—नेरइइ जहा ओहिए दडए तहा भाणियव्वा ।
तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा 'जस्स अत्थि'[5] जहा ओहिओ दडओ तहा भाणियव्वा, नवर—मणुस्सा सराग-वीयरागा न भाणियव्वा ।

संगहणी-गाहा

दुक्खाउए उदिण्णे, आहारे कम्म-वण्ण-लेस्सा य ।
समवेयण-समकिरिया, समाउए चेव बोधव्वा[6] ॥१॥

लेस्सा-पदं

१०२. कइ ण भते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा! छ लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा, तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा, सुक्कलेस्सा । लेस्साण बीओ[7] उद्देसो भाणियव्वो जाव[8] इड्ढी ॥

जीवाणं भवपरिवट्टण-पदं

१०३ जीवस्स ण भते ! तीतद्धाए आदिट्ठस्स कइविहे ससारसचिट्ठणकाले पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे ससारसचिट्ठणकाले पण्णत्ते, त जहा—नेरइयससारसचिट्ठणकाले, तिरिक्खजोणियससारसचिट्ठणकाले, मणुस्ससंसारसचिट्ठणकाले, देवससारसचिट्ठणकाले[9] ॥
१०४. नेरइयससारचिट्ठणकाले[10] ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त जहा—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले ॥
१०५. तिरिक्खजोणियसंसार[11] °संचिट्ठणकाले ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते° ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—असुन्नकाले य, मिस्सकाले य ॥

---

१. पू०—म० १।६०-७३ ।
२ °लेस्सा (ता, म) ।
३. एसो (अ, ता, व) ।
४. एसोव (अ) ।
५. जस्सत्थि (क, ता, ब) ।
६. वोद्धव्वा (क, ता, म) ।
७ वीयओ (अ, ब, स); वितिओ (क) ।
८ प० १७।२ ।
९. ° काले प (अ, क, ता, व, म, स) ।
१० नेरइयाण° (अ, व, स) ।
११. °जोणिससार° (अ, क, ता, व, म); स० पा०— °ससारपुच्छा ।

१०६. [1]•मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकाले णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त जहा—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले ॥
१०७ देवसंसारसचिट्ठणकाले णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त जहा—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले° ॥
१०८. एतस्स ण भंते ! नेरइयसंसारसंचिट्ठणकालस्स—सुन्नकालस्स, असुन्नकालस्स, मीसकालस्स[2] य कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणतगुणे, सुन्नकाले अणतगुणे ॥
१०९. तिरिक्खजोणियाण सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणतगुणे ॥
११० मणुस्स-देवाण य[3] •सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणतगुणे, सुन्नकाले अणतगुणे ॥
१११. एयस्स ण भते ! नेरइयससारसचिट्ठणकालस्स[4], •तिरिक्खजोणियससारसचिट्ठणकालस्स, मणुस्ससंसारसचिट्ठणकालस्स, देवससारसचिट्ठणकालस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ?° विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे मणुस्ससंसारसचिट्ठणकाले, नेरइयससारसचिट्ठणकाले असखेज्जगुणे, देवससारसचिट्ठणकाले असखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणियससारसचिट्ठणकाले अणतगुणे ॥

अंतकिरिया-पदं

११२. जीवे ण भते ! अतकिरियं करेज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगइए करेज्जा, अत्थेगइए नो करेज्जा । अतकिरियापयं[5] नेयव्वं ।
११३. अह भंते ! असंजयभवियदव्वदेवाण, अविराहियसजमाण, विराहियसजमाण, अविराहियसजमासजमाण, विराहियसजमासंजमाण, असण्णीण, तावसाण, कदप्पियाण, चरग-परिव्वायगाण, किब्बिसियाण, तेरिच्छियाण[6], आजीवियाण आभिओगियाण[7], सलिंगीण दंसणवावण्णगाण—एतेसि ण देवलोगेसु उववज्जमाणाण कस्स कहि उववाए पण्णत्ते ?
गोयमा ! असंजयभवियदव्वदेवाण जहण्णेण भवणवासीसु, उक्कोसेण उवरिमगेवेज्जएसु । अविराहियसजमाण जहण्णेण सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेण सव्वट्ठसिद्धे विमाणे । विराहियसजमाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेण सोहम्मे कप्पे ।

---

१. सं० पा०—मणुस्साण य देवाण य जहा नेरइयाणं ।
२. मीसा° (ता, व, म) ।
३. सं० पा०—य जहा नेरइयाणं ।
४ सं० पा०—°कालस्स जाव देवसंसार जाव विसेसाहिए ।
५ प० २० ।
६. तेरच्छियाण (अ, व, स) ।
७ आभियोगियाण (अ, व, म), आभोगियाण (स) ।

अविराहियसजमासजमाणं जहण्णेण सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे। विराहियसंजमासंजमाण जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेण जोइसिएसु। असण्णीणं जहण्णेण भवणवासीसु, उक्कोसेण वाणमतरेसु।

अवसेसा सव्वे जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेण[1] वोच्छामि—

तावसाण जोतिसिएसु, कदप्पियाण सोहम्मे कप्पे, चरग-परिव्वायगाण बंभलोए कप्पे, किब्बिसियाण लंतगे कप्पे, तेरिच्छियाण सहस्सारे कप्पे, आजीवियाण अच्चुए कप्पे, आभिओगियाणं अच्चुए कप्पे, सलिगीणं दसणवावन्नगाण उवरिमगेविज्जएसु ॥

असण्णि-आउय-पदं

११४ कतिविहे ण भते ! असण्णिआउए पण्णत्ते ?

गोयमा ! चउव्विहे असण्णिआउए पण्णत्ते, त जहा—नेरइयअसण्णिआउए[2], तिरिक्खजोणियअसण्णिआउए, मणुस्सअसण्णिआउए, देवअसण्णिआउए ॥

११५ असण्णी ण भते ! जीवे कि नेरइयाउय पकरेइ ? तिरिक्खजोणियाउय पकरेइ ? मणुस्साउय पकरेइ ? देवाउय पकरेइ ?

हता गोयमा ! नेरइयाउय पि पकरेइ, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेइ, मणुस्साउयं पि पकरेइ, देवाउय पि पकरेइ।

नेरइयाउयं पकरेमाणे जहण्णेण दस वाससहस्साइ, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पकरेइ।

तिरिक्खजोणियाउय पकरेमाणे जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभागं पकरेइ।

मणुस्साउय[3] °पकरेमाणे जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभागं पकरेइ।

देवाउय पकरेमाणे जहण्णेणं दस वाससहस्साइ, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभागं पकरेइ° ॥

११६ एयस्स ण भते ! नेरइयअसण्णिआउयस्स, तिरिक्खजोणियअसण्णिआउयस्स, मणुस्सअसण्णिआउयस्स, देवअसण्णिआउयस्स कयरे[4] °कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा° ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवे देवअसण्णिआउए, मणुस्सअसण्णिआउए असंखेज्जगुणे[5], तिरिक्खजोणियअसण्णिआउए असखेज्जगुणे, नेरइयअसण्णिआउए असखेज्जगुणे।

११७. सेवं भते ! सेव भते[6] !

---

१. उक्कोसग (क, ता, व, म, स)।
२. नेरइयस्स ° (ता)।
३. स० पा०—मणुस्साउए वि एव चेव, देवा जहा नेरइया।
४ स० पा०—कयरे जाव विसेसाहिए वा।
५. सखेज्ज ° (अ, क, व, म)।
६ भ० १।५१।

तइओ उद्देसो

कंखामोहणिज्ज-पदं

११८. जीवाणं भंते ! कंखामोहणिज्जे कम्मे कडे ?
हंता कडे ॥

११९. से भंते ! किं १ देसेण देसे कडे ? २. देसेण सव्वे कडे ? ३ सव्वेण देसे कडे ? ४. सव्वेण सव्वे कडे ?
गोयमा ! १. नो देसेण देसे कडे २ नो देसेण सव्वे कडे ३ नो सव्वेण देसे कडे ४. सव्वेण सव्वे कडे ॥

१२०. नेरइयाण भंते ! कंखामोहणिज्जे कम्मे कडे ?
हंता कडे[1] ॥

१२१. °से भंते ! किं १. देसेणं देसे कडे ? २. देसेण सव्वे कडे ? ३. सव्वेण देसे कडे ? ४. सव्वेण सव्वे कडे ?
गोयमा ! १ नो देसेण देसे कडे २ नो देसेण सव्वे कडे ३ नो सव्वेण देसे कडे° ४ सव्वेणं सव्वे कडे ॥

१२२. एवं जाव[2] वेमाणियाण दंडओ भाणियव्वो ॥

१२३. जीवा णं भंते ! कंखामोहणिज्जं कम्मं करिंसु ?
हंता करिंसु ॥

१२४ तं भंते ! किं १. देसेणं देसं करिंसु ? २. देसेण सव्वं करिंसु ? ३ सव्वेण देसं करिंसु ? ४ सव्वेण सव्वं करिंसु ?
गोयमा ! १ नो देसेण देसं करिंसु २ नो देसेण सव्वं करिंसु ३. नो सव्वेण देसं करिंसु । ४. सव्वेण सव्वं करिंसु ॥

१२५. एएणं अभिलावेणं दंडओ भाणियव्वो, जाव[3] वेमाणियाणं ॥

१२६ एवं करेंति । एत्थ वि दंडओ जाव[4] वेमाणियाणं ॥

१२७. एवं करिस्संति । एत्थ वि दंडओ जाव[5] वेमाणियाणं ॥

१२८. एवं चिए, चिणिंसु, चिणंति, चिणिस्संति । उवचिए, उवचिणिंसु, उवचिणंति, उवचिणिस्संति । उदीरेंसु, उदीरेंति, उदीरिस्संति । वेदेंसु, वेदेंति, वेदिस्संति । निज्जरेंसु, निज्जरेंति, निज्जरिस्संति ।

संगहणी-गाहा

कड-चिय-उवचिय, उदीरिया वेदिया य निज्जिण्णा ।
आदितिए चउभेदा, तियभेदा पच्छिमा तिण्णि ॥१॥

---

१. स० पा०—कडे जाव सव्वेणं । ३, ४, ५. पू० प० २ ।
२. पू० प० २ ।

१२९. जीवा ण भते ! कखामोहणिज्ज कम्म वेदेति ?
हता वेदेति ।।

१३०. कहण्णं[1] भंते ! जीवा कखामोहणिज्जं कम्मं वेदेति ?
गोयमा ! तेहि तेहि कारणेहि सकिया, कखिया, वितिगिछिया[2], भेदसमावन्ना, कलुससमावन्ना—एवं खलु जीवा कखामोहणिज्जं कम्मं वेदेति ।।

सद्धा-पदं

१३१. से नूण भते ! तमेव सच्च णीसक, जं जिणेहि पवेइयं ?
हता गोयमा ! तमेव सच्च णीसक, ज जिणेहि पवेइय ।।

१३२ से नूण भते ! एव मण धारेमाणे, एव पकरेमाणे, एवं चिट्ठेमाणे, एवं संवरेमाणे आणाए आराहए भवति ?
हता गोयमा ! एव मण धारेमाणे[3] •एव पकरेमाणे, एव चिट्ठेमाणे, एव सवरेमाणे आणाए आराहए° भवति ।।

अत्थि-नत्थि-पद

१३३. से नूण भते ! अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ ? नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ ?
हंता गोयमा[4] ! •अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ । नत्थित्त नत्थित्ते° परिणमइ ।

१३४. 'ज ण'[5] भते ! अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ, तं कि पयोगसा ? वीससा ?
गोयमा ! पयोगसा वि त [अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ][6] ।
वीससा वि त [अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ][7] ।।

१३५. जहा ते भते ! अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, तहा ते नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ ? जहा ते नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ, तहा ते अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ ?
हता गोयमा ! जहा मे अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, तहा मे नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ ।
जहा मे नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ, तहा मे अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ ।।

१३६. से नूण भते ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज ? [8]•नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्जं ?
हता गोयमा ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज । नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्जं ।।

---

१. कह ण (क); कह ण (व, स) ।
२ वितिगछिया (अ, व, स), वितिगिञ्छिता (क), वितिकिंछिगा (म) ।
३. स० पा०—धारेमाणे जाव भवति ।
४. स० पा०—गोयमा जाव परिणमइ ।
५ त (अ, व, स); × (ता) ।
६, ७ कोष्ठकवर्त्तिपाठ. व्याख्याशोस्ति ।
८. स० पा०—जहा परिणमइ दो आलावगा तहा गमणिज्जेण वि दो आलावगा भाणियव्वा जाव तहा ।

१३७. ज ण भते ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज, नत्थित्तं नत्थित्ते गमणिज्जं, त कि पयोगसा ? वीससा ?
गोयमा ! पयोगसा वि तं [अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्जं, नत्थित्तं नत्थित्ते गमणिज्ज] ।
वीससा वि त [अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज, नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज] ॥
१३८. जहा ते भते ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज, तहा ते नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज ? जहा ते नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज, तहा ते अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्जं ?
हंता गोयमा ! जहा मे अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज, तहा मे नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज ।
जहा मे नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज°, तहा मे अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज ॥

भगवओ समता-पदं

१३९ जहा ते भते ! एत्थ गमणिज्ज, तहा ते इह गमणिज्ज ? जहा ते इह गमणिज्ज, तहा ते एत्थ गमणिज्ज ?
हंता गोयमा ! जहा मे एत्थ गमणिज्ज[1], °तहा मे इह गमणिज्ज । जहा मे इहं गमणिज्जं°, तहा मे एत्थं गमणिज्जं ॥

कंखामोहणिज्जस्स बंधादि-पदं

१४०. जीवा ण भते ! कखामोहणिज्जं कम्मं बंधति ?
हंता बंधंति ॥
१४१ कहण्णं[2] भंते ! जीवा कंखामोहणिज्ज कम्म बंधति ?
गोयमा ! पमादपच्चया, जोगनिमित्तं[3] च ॥
१४२. से णं भंते ! पमादे किंपवहे[4] ?
गोयमा ! जोगप्पवहे ॥
१४३. से णं भते ! जोए किंपवहे ?
गोयमा ! वीरियप्पवहे ॥
१४४. से णं भते ! वीरिए किंपवहे ?
गोयमा ! सरीरप्पवहे ॥
१४५. से ण भंते ! सरीरे किंपवहे ?
गोयमा ! जीवप्पवहे ॥
१४६. एवं सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

---

१. स० पा०—गमणिज्ज जाव तहा ।
२. कह ण (अ) ।
३ °निमित्तय (क) ।
४. किंपभवे (क, वृपा) सर्वत्र ।

१४७ से नूणं भते ! अप्पणा चेव उदीरेति ? अप्पणा चेव गरहति ? अप्पणा चेव संवरेति[1] ?
हता गोयमा ! अप्पणा चेव[2] •उदीरेति । अप्पणा चेव गरहति । अप्पणा चेव सवरेति° ॥

१४८ 'ज ण'[3] भते ! अप्पणा चेव उदीरेति, अप्पणा चेव गरहति, अप्पणा चेव संवरेति, त किं—१ उदिण्णं उदीरेति ? २ अणुदिण्ण उदीरेति ? ३ अणुदिण्णं उदीरणाभविय कम्म उदीरेति ? ४. उदयाणतरपच्छाकड कम्म उदीरेति ?
गोयमा ! १. नो उदिण्ण उदीरेति । २ नो अणुदिण्ण उदीरेति । ३ अणुदिण्ण उदीरणाभवियं कम्म उदीरेति । ४. नो उदयाणतरपच्छाकड[4] कम्म उदीरेति ॥

१४९. जं ण भते ! अणुदिण्ण उदीरणाभवियं कम्म उदीरेति, त कि उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेण, वीरिएण, पुरिसक्कार-परक्कमेण अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म उदीरेति ? उदाहु त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अबलेणं, अवीरिएण, अपुरिसक्कार-परक्कमेण अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म उदीरेति ?
गोयमा ! त उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, वलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म उदीरेति । णो त अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेण, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेणं अणुदिण्णं उदीरणाभविय कम्मं उदीरेति ॥

१५० एव सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१५१. से नूण भते ! अप्पणा चेव उवसामेइ ? अप्पणा चेव गरहइ ? अप्पणा चेव सवरेइ ?
हता गोयमा ! [5]•अप्पणा चेव उवसामेइ । अप्पणा चेव गरहइ । अप्पणा चेव सवरेइ ॥

---

१. सवरइ (अ, व, म, स) ।
२ स० पा०—त चेव उच्चारेतव्व ।
३ त (अ, क, ता, व, म, स), क्वचित्प्रयुक्त-प्रत्याधारेण स्वीकृतोऽसौ पाठ ।
४ उदयअणतर° (अ, क, ता, व, स) ।
५ स० पा०—एत्थ वि तह चेव भाणियव्व, नवर अणुदिण्ण उवसामेइ सेसा पडिसेहे-यव्वा तिण्णि । ज तं भते ! अणूदिण्ण उवसामेइ त कि उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा । से नूण भते ! अप्पणा चेव वेदेइ अप्पणा चेव गरहइ एत्थ वि सच्चेव परिवाडी, नवर उदिण्ण वेदेइ नो अणुदिण्ण वेदेइ एव जाव पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा । से नूण भते ! अप्पणा चेव निज्जरेइ अप्प० एत्थ वि सच्चेव परिवाडी, नवर उदयअणतरपच्छा-कड कम्म निज्जरेइ एव जाव परक्कमेइ वा ।

१५२ जं णं भंते ! अप्पणा चेव उवसामेइ, अप्पणा चेव गरहति, अप्पणा चेव संवरेति, तं किं—१. उदिण्णं उवसामेइ ? २ अणुदिण्णं उवसामेइ ? ३. अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उवसामेइ ? ४. उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं उवसामेइ ?

गोयमा ! १ नो उदिण्णं उवसामेइ। २ अणुदिण्णं उवसामेइ। ३. नो अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उवसामेइ। ४. नो उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं उवसामेइ ॥

१५३ जं णं भंते ! अणुदिण्णं उवसामेइ, तं किं उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार-परक्कमेणं अणुदिण्णं उवसामेइ ? उदाहु तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेणं अणुदिण्णं उवसामेइ ?
गोयमा ! तं उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अणुदिण्णं उवसामेइ। णो तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेणं अणुदिण्णं उवसामेइ ॥

१५४ एवं सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१५५. से नूणं भंते ! अप्पणा चेव वेदेति ? अप्पणा चेव गरहति ?
हंता गोयमा ! अप्पणा चेव वेदेति। अप्पणा चेव गरहति ॥

१५६ जं णं भंते ! अप्पणा चेव वेदेति, अप्पणा चेव गरहति तं किं—१ उदिण्णं वेदेति ? २ अणुदिण्णं वेदेति ? ३. अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं वेदेति ? ४. उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं वेदेति ?
गोयमा ! १ उदिण्णं वेदेति। २. नो अणुदिण्णं वेदेति। ३. नो अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं वेदेति। ४. नो उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं वेदेति ॥

१५७ जं णं भंते ! उदिण्णं वेदेति तं किं उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार-परक्कमेणं उदिण्णं वेदेति ? उदाहु तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेणं उदिण्णं वेदेति ?

गोयमा ! तं उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि उदिण्णं वेदेति। नो तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेणं उदिण्णं वेदेति ॥

१५८. एवं सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१५९. से नूणं भंते ! अप्पणा चेव निज्जरेति ? अप्पणा चेव गरहति ?
हंता गोयमा ! अप्पणा चेव निज्जरेति। अप्पणा चेव गरहति ॥

१६० ज ण भते ! अप्पणा चेव निज्जरेति, अप्पणा चेव गरहति, त कि—
१. उदिण्ण निज्जरेति ? २ अणुदिण्ण निज्जरेति ? ३. अणुदिण्ण उदीरणाभवियं कम्म निज्जरेति ? ४ उदयाणतरपच्छाकड कम्म निज्जरेति ?
गोयमा ! १ नो उदिण्ण निज्जरेति । २. नो अणुदिण्ण निज्जरेति । ३. नो अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म निज्जरेति । ४ उदयाणतरपच्छाकडं कम्म निज्जरेति ॥

१६१ ज ण भते ! उदयाणतरपच्छाकड कम्म निज्जरेति त कि उट्ठाणेणं, कम्मेण, बलेण, वीरिएणं, पुरिसक्कार-परक्कमेण उदयाणतरपच्छाकड कम्मं निज्ज-रेति ? उदाहु तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेण, अवीरिएण, अपुरिसक्कार-परक्कमेण उदयाणतरपच्छाकड कम्मं निज्जरेति ?
गोयमा ! तं उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि उदयाणतरपच्छाकड कम्म निज्जरेति । णो त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अबलेण, अवीरिएण, अपुरिसक्कारपरक्कमेण उदयाणंतरपच्छाकडं कम्म निज्जरेति ॥

१६२. एव सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरि-सक्कार°-परक्कमेइ वा ॥

१६३. नेरइया णं भते ! कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेति ?
जहा[1] ओहिया जीवा तहा नेरइया जाव[2] थणियकुमारा ॥

१६४ पुढविक्काइया ण भते ! कखामोहणिज्जं कम्मं वेदेति ?
हता वेदेति ॥

१६५. कहण्ण भते ! पुढविक्काइया कखामोहणिज्ज कम्म वेदेति ?
गोयमा ! तेसि ण जीवाण णो एव तक्का इ वा, सण्णा इ वा, पण्णा इ वा, मणे इ वा, वई ति वा—अम्हे ण कंखामोहणिज्जं कम्म वेदेमो, वेदेति पुण ते ॥

१६६ से नूण भते ! तमेव सच्च नीसक, ज जिणेहि पवेइय ?
हता गोयमा ! तमेव सच्च नीसक, ज जिणेहि पवेइय ।
सेस त चेव जाव[3] अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१६७ एव जाव[4] चउरिदिया ॥

१६८ पचिदियतिरिक्खजोणिया जाव[5] वेमाणिया जहा[6] ओहिया जीवा ॥

---

१. भ० १।१२६-१६२ ।
२ पू० प० २ ।
३. भ० १।१३२-१६२ ।
४ पू० प० २ ।
५ पू० प० २ ।
६. भ० १।१२६-१६२ ।

१६९. अत्थि णं भंते ! समणा वि निग्गंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेएंति ?
'हंता अत्थि'[1] ॥

१७०. कहण्णं भंते ! समणा निग्गंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ?
गोयमा ! तेहिं तेहिं नाणंतरेहिं, दंसणंतरेहिं[2], चरित्तंतरेहिं[3], लिंगंतरेहिं, पवयणंतरेहिं, पावयणंतरेहिं, कप्पंतरेहिं, मग्गंतरेहिं, मतंतरेहिं[4], भंगंतरेहिं, णयंतरेहिं, नियमंतरेहिं, पमाणंतरेहिं संकिता कंखिता वितिकिच्छिता[5] भेदसमावन्ना कलुससमावन्ना—एवं खलु समणा निग्गंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ॥

१७१. से नूणं भंते ! तमेव सच्चं नीसंकं, जं जिणेहिं पवेदितं ?
हंता गोयमा ! तमेव सच्चं नीसंकं, जं जिणेहिं पवेदितं ॥

१७२. एवं जाव[6] अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१७३. सेवं भंते ! सेवं भंते[7] !

चउत्थो उद्देसो

कम्म-पदं

१७४. कति णं भंते ! कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, कम्मप्पगडीए पढमो उद्देसो नेयव्वो जाव[8]—अणुभागो समत्तो ।

संगहणी-गाहा

कति पगडी ? कह[9] बंधति ? कतिहिं व ठाणेहिं बंधती पगडी ?
कति वेदेति व पगडी ? अणुभागो कतिविहो कस्स ? ॥१॥

उवट्ठावण-अवक्कमण-पदं

१७५. जीवे णं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उदिण्णेणं उवट्ठाएज्जा ?
हंता उवट्ठाएज्जा[10] ॥

---

१. हंतत्थि (ता) ।
२. दरिसणतरेहिं (क) ।
३. चरित्तंतरेहिं तित्थंतरेहिं (क) ।
४. मतंतरेहिं (अ, व); × (क) ।
५. वितिकिंछिया (ता) ।
६. भ० १।१३२-१६२ ।
७. भ० १।५१ ।
८. प० २३।१ ।
९. किह (अ, क, ता, म); कहिं (स) ।
१०. उवट्ठाएज्ज (क, ता) ।

१७६. से भंते ! कि वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा। णो अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥

१७७ जइ वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, कि—बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? पंडिय-वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? बालपंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा। नो पंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा। नो बालपंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥

१७८ जीवे णं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेण कम्मेणं उदिण्णेणं अवक्कमेज्जा ?
हंता अवक्कमेज्जा ॥

१७९. से भंते ! °कि वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा। नो अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ॥

१८० जइ वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, कि—बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? पंडिय-वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?° बालपंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! 'बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा। नो पंडियवीरियत्ताए अवक्क-मेज्जा। सिय बालपंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा'[२] ॥

१८१. [३]°जीवे णं भंते ! मोहणिज्जेण कडेणं कम्मेण उवसंतेण उवट्ठाएज्जा ?
हंता उवट्ठाएज्जा ॥

१८२. से भंते ! कि वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा। नो अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥

१८३. जइ वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, कि—बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? पंडिय-वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? बालपंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! 'नो बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा। पंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा। नो बालपंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा'[४] ॥

१८४. जीवे णं भंते ! मोहणिज्जेण कडेणं कम्मेण उवसंतेण अवक्कमेज्जा ?
हंता अवक्कमेज्जा ॥

१८५. से भंते ! कि वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा। नो अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ॥

---

१. सं० पा०—भंते जाव बालपंडियवीरियत्ताए।
२. वाचनान्तरे त्वेवम्—'बालवीरियत्ताए नो पंडियवीरियत्ताए नो बालपंडियवीरियत्ताए' (वृ)।
३. सं० पा०—जहा उदिण्णेणं दो आलावगा तहा उवसंतेण वि दो आलावगा भाणि-यव्वा, नवरं उवट्ठाएज्जा पंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा बालपंडियवीरियत्ताए।
४ वृद्धैस्तु काञ्चिद्वाचनामाश्रित्येदं व्याख्यातं—मोहनीयेनोपशान्तेन सता न मिथ्यादृष्टि-र्जायते, साधुः श्रावको वा भवतीति (वृ)।

१८६. जइ वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, किं—बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? पंडिय-वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? बालपंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! नो बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । नो पंडियवीरियत्ताए अवक्क-मेज्जा । बालपंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा° ॥

१८७. से भंते ! किं आयाए अवक्कमइ ? अणायाए अवक्कमइ ?
गोयमा ! आयाए अवक्कमइ, नो अणायाए अवक्कमइ—मोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे ॥

१८८. से कहमेयं भंते ! एवं ?
गोयमा ! पुव्विं से एयं एवं रोयइ । इयाणिं से एयं एवं नो रोयइ—एवं खलु एयं एवं ॥

कम्ममोक्ख-पदं

१८९. से नूणं भंते ! नेरइयस्स वा, तिरिक्खजोणियस्स वा, मणुस्सस्स[1] वा, देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि णं[2] तस्स अवेदइत्ता[3] मोक्खो ?
हंता गोयमा ! नेरइयस्स वा, तिरिक्खजोणियस्स वा, मणुस्सस्स वा, देवस्स वा[4] °जे कडे पावे कम्मे, नत्थि णं तस्स अवेदइत्ता° मोक्खो ॥

१९०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नेरइयस्स वा[5] °तिरिक्खजोणियस्स वा, मणु-स्सस्स वा, देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि णं तस्स अवेदइत्ता° मोक्खो ?
एवं खलु मए गोयमा ! दुविहे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा—पदेसकम्मे य, अणु-भागकम्मे य ।
तत्थ णं जं णं[6] पदेसकम्मं तं नियमा वेदेइ । तत्थ णं जं णं अणुभागकम्मं तं[7] अत्थेगइयं वेदेइ, अत्थेगइयं णो वेदेइ ।
णायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया—इमं कम्मं अयं जीवे अब्भोवगमियाए[8] वेदणाए वेदेस्सइ, इमं कम्मं अयं जीवे उवक्कमियाए वेदणाए वेदेस्सइ ।
अहाकम्मं, अहानिकरणं जहा जहा तं भगवया दिट्ठं तहा तहा तं विप्परि-णमिस्सतीति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइयस्स वा[9], °तिरिक्ख-जोणियस्स वा, मणुस्सस्स वा, देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि णं तस्स अवेदइत्ता° मोक्खो ॥

---

१. मणूसस्स (क, ता), मणुसस्स (ब, म, स) ।
२. × (अ, स) ।
३. अवेदयत्ता (अ, ब), अवेइत्ता (म, स) ।
४. स० पा०—वा जाव मोक्खो ।
५. स० पा०—वा जाव मोक्खो ।
६. तं (अ, क, ता, ब, म, स) ।
७. × (ता) ।
८. अब्भोवमियाए (क) ।
९. स० पा०—वा जाव मोक्खो ।

पोग्गल-जीवाणं तेकालियत्त-पदं

१६१ एस ण भते ! पोग्गले[1] तीत अणतं सासय समय भुवीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! एस ण पोग्गले तीत अणत सासय समय भुवीति वत्तव्वं सिया ॥

१६२ एस णं भते ! पोग्गले पडुप्पण्ण सासय समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! [2]°एस ण पोग्गले पडुप्पण्ण सासय समयं भवतीति वत्तव्वं सिया° ॥

१६३ एस ण भते ! पोग्गले अणागयं अणंत सासय समयं भविस्सतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! [3]°एस ण पोग्गले अणागय अणतं सासयं समय भविस्सतीति वत्तव्व सिया° ॥

१६४ [4]°एस णं भते ! खधे तीत अणत सासय समयं भुवीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! एस ण खधे तीत अणत सासय समय भुवीति वत्तव्व सिया ॥

१६५ एस ण भते ! खधे पडुप्पण्ण सासय समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! एस ण खधे पडुप्पण्ण सासय समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ॥

१६६. एस ण भते ! खधे अणागय अणंत सासय समयं भविस्सतीति वत्तव्व सिया ?
हंता गोयमा ! एस ण खधे अणागय अणत सासय समय भविस्सतीति वत्तव्वं सिया ॥

१६७ एस णं भते ! जीवे तीत अणत सासय समय भुवीति वत्तव्व सिया ?
हंता गोयमा ! एस ण जीवे तीत अणत सासय समय भुवीति वत्तव्वं सिया ॥

१६८. एस ण भते ! जीवे पडुप्पण्ण सासय समय भवतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! एस ण जीवे पडुप्पण्ण सासय समय भवतीति वत्तव्वं सिया ॥

१६९. एस ण भते ! जीवे अणागय अणत सासय समय भविस्सतीति वत्तव्व सिया ?
हंता गोयमा ! एस ण जीवे अणागय अणत सासय समयं भविस्सतीति वत्तव्व सिया° ॥

मोक्ख-पदं

२०० छउमत्थे ण भते ! मणूसे[5] तीत अणत सासय समय—केवलेण सजमेणं, केवलेण सवरेण, केवलेण बभचेरवासेण, केवलाहि पवयणमायाहिं[6] सिज्झिसु ?

---

१. पोग्गलेति परमाणुरुत्तरत्रस्कन्धग्रहणात् (वृ) ।
२. स० पा०—त चेव उच्चारेयव्व ।
३. स० पा०—त चेव उच्चारेयव्व ।
४, स० पा०—एव खधेण वि तिण्णि आलावगा । एव जीवेण वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा ।
५ मणुस्से (अ, म) ।
६, °मातािहं (ता, म) ।

बुज्झिसु[1] ? °मुच्चिसु ? परिणिव्वाइंसु° ? सव्वदुक्खाणं अंतं करिंसु ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

२०१ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ [2]°छउमत्थे णं मणुस्से तीतं अणंतं सासयं समयं —केवलेणं संजमेणं, केवलेणं संवरेणं, केवलेणं बंभचेरवासेणं, केवलाहिं पवयण-मायाहिं नो सिज्झिंसु ? नो बुज्झिंसु ? नो मुच्चिंसु ? नो परिनिव्वाइंसु ? नो सव्वदुक्खाणं° अंतं करिंसु ?

गोयमा ! जे केइ अंतकरा वा अंतिमसरीरिया वा—सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा, करेंति वा, करिस्संति वा—सव्वे ते उप्पण्णणाण-दंसणधरा अरहा जिणा[3] केवली भवित्ता तओ पच्छा 'सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वायंति'[4], सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा, करेंति वा, करिस्संति वा । से तेणट्ठेणं गोयमा[5] ! °एवं वुच्चइ छउमत्थे णं मणुस्से तीतं अणंतं सासयं समयं—केवलेणं संजमेणं, केवलेणं संवरेणं, केवलेणं बंभचेरवासेणं, केवलाहिं पवयणमायाहिं नो सिज्झिंसु, नो बुज्झिंसु, नो मुच्चिंसु, नो परिनिव्वाइंसु, नो°सव्वदुक्खाणं अंतं करिंसु ।।

२०२. पडुप्पण्णे वि एवं[6] चेव, नवरं—सिज्झंति भाणियव्वं ।।

२०३. अणागए वि एवं[7] चेव, नवरं—सिज्झिस्संति भाणियव्वं ।।

२०४. जहा[8] छउमत्थो तहा आहोहिओ वि, तहा परमाहोहिओ[9] वि । तिण्णि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा ।।

२०५. केवली णं भंते ! मणूसे तीतं अणंतं सासयं समयं[10] °सिज्झिंसु ? बुज्झिंसु ? मुच्चिंसु ? परिनिव्वाइंसु ? सव्वदुक्खाणं अंतं करिंसु ?
हंता गोयमा ! केवली णं मणूसे तीतं अणंतं सासयं समयं सिज्झिंसु, बुज्झिंसु, मुच्चिंसु, परिनिव्वाइंसु, सव्वदुक्खाणं अंतं करिंसु ।।

२०६. केवली णं भंते ! मणूसे पडुप्पण्णं सासयं समयं सिज्झंति ? बुज्झंति ? मुच्चंति ? परिनिव्वायंति ? सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?
हंता गोयमा ! केवली णं मणूसे पडुप्पण्णं सासयं समयं सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वायंति, सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ।।

---

१. सं० पा०—बुज्झिंसु जाव सव्व° ।
२. सं० पा०—तं चेव जाव अंतं ।
३. जिणे (अ, क, ता, ब, स) ।
४. 'सिज्झंती' त्यादिषु चतुर्षु पदेषु वर्त्तमाननिर्देशस्य शेषोपलक्षणत्वात् 'सिज्झिंसु सिज्झंति सिज्झिस्संती' त्येवमतीतादिनिर्देशो द्रष्टव्यः (वृ) ।
५. सं० पा०—गोयमा जाव सव्व° ।
६. भ० १।२००, २०१ ।
७. भ० १।२००, २०१ ।
८. भ० १।२००-२०३ ।
९. परमोहिओ (अ, क ता, ब, म, वृपा) ।
१०. सं० पा०—समयं जाव अंतं हंता सिज्झिंसु जाव अंतं एते तिण्णि आलावगा भाणियव्वा । छउमत्थस्स जहा नवरं सिज्झिंसु सिज्झंति सिज्झिस्संति ।

२०७. केवली णं भते ! मणूसे अणागय अणत सासय समय सिज्झिस्सति ? बुज्झिस्सति ? मुच्चिस्सति ? परिनिव्वाइस्सति ? सव्वदुक्खाणं अत करिस्सति ?
हंता गोयमा ! केवली ण मणूसे अणागयं अणत सासय समयं सिज्झिस्सति, बुज्झिस्सति, मुच्चिस्सति, परिनिव्वाइस्सति, सव्वदुक्खाणं अत करिस्सति° ॥

२०८ से नूण भते ! तीत अणतं सासयं समय, पडुप्पण्ण वा सासय समयं, अणागयं अणतं वा सासय समय जे केइ अतकरा वा अतिमसरीरिया वा सव्वदुक्खाण अतं करेसु वा, करेति वा, करिस्सति वा, सव्वे ते उप्पण्णणाण-दसणधरा अरहा जिणा केवली भवित्ता तओ पच्छा सिज्झति[1] ? °बुज्झति ? मुच्चति ? परिनिव्वायंति ? सव्वदुक्खाणं अतं करेसु वा ? करेति वा ? करिस्सति वा ?°
हता गोयमा ! तीत अणतं सासय[2] °समय, पडुप्पण्ण वा सासय समय, अणागय अणत वा सासय समयं जे केइ अतकरा वा अतिमसरीरिया वा सव्वदुक्खाण अत करेसु वा, करेति वा, करिस्सति वा, सव्वे ते उप्पण्णणाण-दंसणधरा अरहा जिणा केवली भवित्ता तओ पच्छा सिज्झति, बुज्झति, मुच्चति, परिनिव्वायति, सव्वदुक्खाण अतं करेसु वा, करेति वा°, करिस्सति वा ॥

२०९. से नूण भते ! उप्पण्णणाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली, अलमत्थु त्ति वत्तव्वं सिया ?
हता गोयमा ! उप्पण्णणाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली अलमत्थु त्ति वत्तव्वं सिया ॥

२१० सेवं भते ! सेवं भते[3] !

पंचमो उद्देसो

पुढवि-पदं

२११. कति ण भते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवोओ पण्णत्ताओ, त जहा—रयणप्पभा[4], °सक्करप्पभा, वालुयप्पभा, पकप्पभा, धूमप्पभा, तमप्पभा°, तमतमा ॥

---

१. स० पा०—सिज्झति जाव अतं करिस्सति । द्रष्टव्य १।२०१ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
२. स० पा०—सासयं जाव करिस्सति ।
३. भ० १।५१ ।
४. स० पा०—रयणप्पभा जाव तमतमा ।

२१२. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए कति निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

संगहणी-गाहा

तीसा य पन्नवीसा, पन्नरस दसेव या सयसहस्सा ।
तिन्नेग पंचूण, पंचेव अणुत्तरा निरया ॥१॥

आवास-पदं

२१३. केवइया ण भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोयट्ठी असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

संगहणी-गाहा

एव—

चोयट्ठी[1] असुराण, चउरासीई य होइ नागाण ।
बावत्तरि सुवण्णाणं, वाउकुमाराण छन्नउई ॥१॥
दीव-दिसा-उदहीण, विज्जुकुमारिंद-थणियमग्गीण ।
छण्हं पि जुयलयाण[2], छावत्तरिमो सयसहस्सा ॥२॥

२१४. केवइया ण भंते ! पुढविक्काइयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा असखेज्जा पुढविक्काइयावाससयसहस्सा पण्णत्ता जाव[3] असंखिज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

२१५ सोहम्मे ण भंते ! कप्पे कति विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बत्तीस विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

संगहणी-गाहा

एवं—

बत्तीसट्ठावीसा, बारस-अट्ठ[4]-चउरो सयसहस्सा ।
पन्ना-चत्तालीसा, छच्च सहस्सा सहस्सारे ॥१॥
आणय-पाणयकप्पे, चत्तारि सयारणच्चुए तिण्णि ।
सत्त विमाणसयाइ, चउसु वि एएसु कप्पेसु ॥२॥
एक्कारसुत्तरं हेट्ठिमए[5] सत्तुत्तरं सय च मज्झमए ।
सयमेगं उवरिमए, पंचेव अणुत्तरविमाणा ॥३॥

नेरइयाणं नाणावसासु कोहोवउत्तादिभंग-पदं

पुढवी ट्ठिति-ओगाहण-सरीर-संघयणमेव सठाणे ।
लेस्सा दिट्ठी णाणे, जोगुवओगे य दस ठाणा[6] ॥४॥

---

१. चोवट्ठी (क); चोसट्ठी (म, स) ।
२. जुवलयाण (अ, क, ता, व) ।
३. पू० प० २ ।
४. अट्ठ य (क, ता, म) ।
५. हेट्ठिमेसु (क, ता, म), हेट्ठिमएसु (स) ।
६ ठाणे (अ, व) ।

२१६. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि नेरइयाण केवइया ठितिट्ठाणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! असखेज्जा ठितिट्ठाणा पण्णत्ता, त जहा—जहण्णिया ठिती, समयाहिया जहण्णिया ठिती, दुसमयाहिया जहण्णिया ठिती जाव असंखेज्ज-समयाहिया जहण्णिया ठिती । तप्पाउग्गुक्कोसिया ठिती ॥

२१७. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि जहण्णियाए ठितीए वट्टमाणा नेरइया कि—कोहोवउत्ता ? माणोवउत्ता ? मायोवउत्ता ? लोभोवउत्ता ?

गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा १. कोहोवउत्ता । २ अहवा कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य । ३ अहवा कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य[1] । ४. अहवा कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ते य । ५. अहवा कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य[2] । ६. अहवा कोहोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य । ७ अहवा कोहोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य[3] । ८. अहवा कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ते य । ९. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ता य । १०. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ते य । ११. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य[4] । १२ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, लोभोवउत्ते य । १३ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य । १४. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य । १५. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य । १६ कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य । १७. कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य । १८ कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य । १९. कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य । २०. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य,

---

१. 'म' प्रतौ—अतोग्रे एवं माया वि लोभो वि कोहेण भइयव्वो अथवा कोहोवउत्ता य माणोवउत्ते य मायोवउत्ते य पच्छा माणेण लोभेण य पच्छा मायाए लोभेण य पच्छा माणेण मायाए लोभेण य कोहो भणियव्वो ते कोह अमुचता कोह अमुचता एव सत्तावीस भगा णेयव्वा ।

२. 'ता' प्रतौ—अतोग्रे एवं सत्तावीस भगा णेतव्वा ।

३. 'क', 'व' प्रत्योः—अतोग्रे एव सत्तावीस भगा णेतव्वा ।

४ 'अ' प्रतौ—अतोग्रे एव कोहे माणेण लोभेणं चत्तारि भगा ८ एवं कोहेणं मायाए लोभेण चत्तारि भगा १२ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते १ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता २ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ३ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ४ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ५ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ६ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते य ७ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ८ एवं सत्तावीस भगा णेयव्वा ।

मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ते य। २१ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य। २२ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य। २३. कोहोवउत्ताय, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य। २४ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ताय। २५ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य। २६ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य। २७ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य॥

२१८. इमीसे ण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि निरयावाससि समयाहियाए जहण्णट्ठितीए वट्टमाणा नेरइया कि—कोहोवउत्ता ? माणोवउत्ता ? मायोवउत्ता ? लोभोवउत्ता ?

गोयमा ! कोहोवउत्ते य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ते य। कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य। अहवा कोहोवउत्ते य, माणोवउत्ते य। अहवा कोहोवउत्ते य, माणोवउत्ता य। एव असीतिभगा[1] नेयव्वा।

---

१. १—(८)—१. कोहोवउत्ते २. माणोवउत्ते ३. मायोवउत्ते ४. लोभोवउत्ते ५. कोहोवउत्ता ६. माणोवउत्ता ७. मायोवउत्ता ८. लोभोवउत्ता।

२—(२४)—९. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते १०. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता ११. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते १२. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता १३. कोहोवउत्ते मायोवउत्ते १४ कोहोवउत्ते मायोवउत्ता १५ कोहोवउत्ता मायोवउत्ते १६. कोहोवउत्ता मायोवउत्ता १७. कोहोवउत्ते लोभोवउत्ते १८. कोहोवउत्ते लोभोवउत्ता १९. कोहोवउत्ता लोभोवउत्ते २०. कोहोवउत्ता लोभोवउत्ता २१. माणोवउत्ते मायोवउत्ते २२. माणोवउत्ते मायोवउत्ता २३. माणोवउत्ता मायोवउत्ते २४. माणोवउत्ता मायोवउत्ता २५. माणोवउत्ते लोभोवउत्ते २६. माणोवउत्ते लोभोवउत्ता २७. माणोवउत्ता लोभोवउत्ते २८. माणोवउत्ता लोभोवउत्ता २९. मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ३०. मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ३१. मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ३२. मायोवउत्ता लोभोवउत्ता।

३—(३२)—

३३. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ते
३४. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ता
३५ कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ते
३६ कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ता
३७ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते
३८. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता
३९. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते
४०. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता
४१. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते लोभोवउत्ते
४२ कोहोवउत्ते माणोवउत्ते लोभोवउत्ता
४३. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता लोभोवउत्ते
४४. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता लोभोवउत्ता
४५ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते लोभोवउत्ते
४६ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते लोभोवउत्ता
४७. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता लोभोवउत्ते

एवं जाव सखेज्जसमयाहियाए ठितीए, असखेज्जसमयाहियाए ठितीए तप्पाउग्गुक्कोसियाए ठितीए सत्तावीसं भगा भाणियव्वा[1] ॥

२१९. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि नेरइयाणं केवइया ओगाहणाठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा ओगाहणाठाणा पण्णत्ता, त जहा—जहण्णिया ओगाहणा, पदेसाहिया जहण्णिया ओगाहणा, दुपदेसाहिया जहण्णिया ओगाहणा जाव असखेज्जपएसाहिया जहण्णिया ओगाहणा । तप्पाउग्गुक्कोसिया ओगाहणा ॥

२२०. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि जहण्णियाए ओगाहणाए वट्टमाणा नेरइया कि कोहोवउत्ता ? असीइभगा भाणियव्वा[2] जाव सखेज्जपदेसाहिया जहण्णिया ओगाहणा ।
असंखेज्जपदेसाहियाए जहण्णियाए ओगाहणाए वट्टमाणाण, तप्पाउग्गुक्कोसि-

---

४८. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता लोभोवउत्ता
४९. कोहोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
५०. कोहोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
५१. कोहोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
५२. कोहोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता
५३. कोहोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
५४. कोहोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
५५ कोहोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
५६. कोहोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता
५७. माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
५८. माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
५९. माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
६०. माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता
६१. माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
६२. माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
६३. माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
६४. माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ।

४—(१६)—६५. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ६६. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ६७. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ६८. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ६९. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ७०. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ७१. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ७२. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ७३. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ७४. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ७५. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ७६ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ७७. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ७८. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ७९ कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ८०. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ।

१. भ० १।२१७ ।
२. भ० १।२१८ पादटिप्पण ।

याए ओगाहणाए वट्टमाणाणं[1] सत्तावीस भगा[2] ॥

२२१. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए[3] °तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु° एगमेगंसि निरयावासंसि नेरइयाणं कइ सरीरया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिण्णि सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—वेउव्विए, तेयए, कम्मए ॥

२२२. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[4] वेउव्वियसरीरे वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भंगा[5] ॥

२२३. एएणं गमेणं तिण्णि सरीरया भाणियव्वा ॥

२२४. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[6] नेरइयाणं सरीरया किंसंघयणा[7] पण्णत्ता ?
गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी नेवट्ठी, नेव छिरा[8], नेव ण्हारूणि। जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया[9] असुहा अमणुण्णा अमणामा एतेसिं[10] सरीरसंघायत्ताए परिणमंति ॥

२२५. इमीसे णं भंते ? रयणप्पभाए जाव[11] छण्हं संघयणाणं असंघयणे वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भंगा[12] ॥

२२६. इमीसे णं भंते ? रयणप्पभाए जाव[13] नेरइयाणं सरीरया किंसंठिया पण्णत्ता ?
गोयमा[14] ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा य, उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा ते हुंडसंठिया पण्णत्ता, तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया ते वि हुंडसंठिया पण्णत्ता ॥

२२७. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[15] हुंडसंठाणे वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भंगा[16] ॥

२२८. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[17] नेरइयाणं कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! एगा काउलेस्सा पण्णत्ता ॥

२२९. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[18] काउलेस्साए वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भंगा ॥[19]

---

१. वट्टमाणाए नेरइयाणं दोसु वि (अ), वट्टमाणाणं जाव नेरइयाणं दोसु वि (क, स), वट्टमाणाए दोसु वि (म)।
२. भ० १।२१७।
३. सं० पा०—पुढवीए जाव एगमेगंसि।
४. भ० १।२१७।
५. भ० १।२१७।
६. भ० १।२१६।
७. किंसंघयणी (क, ता, स)।
८. च्छिरा (ता, म, स)।
९. अप्पिता (क)।
१०. तेतेसिं (क, ता, म)।
११. भ० १।२१७।
१२ भ० १।२१७।
१३. भ० १।२१६।
१४. 'नेरइयाणं सरीरया' इति शेषः।
१५. भ० ।२१७।
१६. भ० १।२१७।
१७. भ० १।२१६।
१८. भ० १।२१७।
१९ भ० १।२१७

२३०. इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए जाव[1] नेरइया कि सम्मदिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी ? सम्मामिच्छदिट्ठी ?
तिण्णि वि ॥

२३१. इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए जाव[2] सम्मदंसणे वट्टमाणा नेरइया कि कोहोवउत्ता ? सत्तावीस भंगा[3] ॥

२३२. एव मिच्छदसणे वि ॥

२३३. सम्मामिच्छदसणे असीतिभगा[4] ॥

२३४. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[5] नेरइया कि नाणी,अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । तिण्णि[6] नाणाइ नियमा । तिण्णि अण्णाणाइ भयणाए ॥

२३५. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[7] आभिनिबोहियनाणे वट्टमाणा नेरइया कि कोहोवउत्ता ? सत्तावीस भगा[8] ॥

२३६. एव तिण्णि नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ भाणियव्वाइं ॥

२३७. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[9] नेरइया कि मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
तिण्णि वि ॥

२३८. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[10] मणजोए वट्टमाणा नेरइया कि कोहोवउत्ता ? सत्तावीस भगा[11] ॥

२३९. एव वइजोए ॥

२४०. एव कायजोए ॥

२४१. इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए जाव[12] नेरइया कि सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता[13] ?
गोयमा ! सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि ॥

२४२. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[14] सागारोवओगे वट्टमाणा नेरइया कि कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भगा[15] ॥

---

१. भ० १।२१६ ।
२. भ० १।२२७ ।
३. भ० १।२१७ ।
४. भ० १।२१८ पादटिप्पण ।
५. भ० १।२१६ ।
६. तिण्णि वि (ता) ।
७. भ० १।२१७ ।
८. भ० १।२१७ ।
९. भ० १।२१६ ।
१०. भ० १।२१७ ।
११. भ० १।२१७ ।
१२. भ० १।२१६ ।
१३. अणगारोवउत्ता(अ), अणागारोवयुत्ता (ता) ।
१४ भ० १।२१७ ।
१५. भ० १।२१७ ।

२४३. एव अणागारोवउत्ते वि सत्तावीस भंगा[1] ॥
२४४. एवं सत्त वि पुढवीओ[2] नेयव्वाओ, नाणत्त लेसासु ॥

संगहणी-गाहा

काऊ य दोसु, तइयाए मीसिया, नीलिया चउत्थीए ।
पचमियाए मीसा, कण्हा तत्तो परमकण्हा ॥१॥

असुरकुमारादीणं नाणादसासु कोहोवउत्तादि भंग-पदं

२४५. चउसट्ठीए णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमाराणं केवइया ठितिट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा ठितिट्ठाणा पण्णत्ता । जहण्णिया ठिई जहा[3] नेरइया तहा, नवरं—पडिलोमा भगा भाणियव्वा ।
सव्वे वि ताव होज्ज लोभोवउत्ता ।
अहवा लोभोवउत्ता य, मायोवउत्ते य । अहवा लोभोवउत्ता य, मायोवउत्ता य । एएण गमेण नेयव्व जाव[4] थणियकुमारा, 'नवर—नाणत्त जाणियव्वं'[5] ॥
२४६. असखेज्जेसु ण भते ! पुढविक्काइयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि पुढविक्काइयावाससि पुढविक्काइयाण केवइया ठितिट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा ठितिट्ठाणा पण्णत्ता तं जहा—जहण्णिया ठिई जाव[6] तप्पाउग्गुक्कोसिया ठिई ॥
२४७. असखेज्जेसु ण भते ! पुढविक्काइयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि पुढविक्काइयावाससि जहण्णियाए ठितीए वट्टमाणा पुढविक्काइया कि कोहोवउत्ता ? माणोवउत्ता ? मायोवउत्ता ? लोभोवउत्ता ?
गोयमा ! कोहोवउत्ता वि, माणोवउत्ता वि, मायोवउत्ता वि, लोभोवउत्ता वि ।
एवं पुढविक्काइयाण सव्वेसु वि ठाणेसु अभगयं, नवरं—तेउलेस्साए असीति-भगा[7] ॥
२४८. एव आउक्काइया वि ॥
२४९. तेउक्काइय-वाउक्काइयाणं सव्वेसु वि ठाणेसु अभगय ॥
२५०. वणप्फइकाइया जहा[8] पुढविक्काइया ॥

---

१. भ० १।२१७ ।
२. भ० १।२११ ।
३. भ० १।२१६-२४३ ।
४. पू० प० २ ।
५. तच्च नारकाणामसुरकुमारादीना च सहनन-सस्थानलेश्यासूत्रेषु भवति (वृ) ।
६. भ० १।२१६ ।
७. भ० १।२१८ पादटिप्पण ।
८. भ० १।२४७ ।

२५१. बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाण जेहिं ठाणेहिं नेरइयाणं असीइभंगा तेहिं ठाणेहिं असीइ चेव, नवरं—अब्भहिया सम्मत्ते। आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे य एएहिं असीइभंगा। जेहिं ठाणेहिं नेरइयाण सत्तावीस भंगा तेसु ठाणेसु सव्वेसु अभंगयं ॥

२५२. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया तहा भाणियव्वा[1], नवरं—जेहिं सत्तावीस भंगा तेहिं अभंगयं कायव्वं[2] ॥

२५३. मणुस्सा वि। जेहिं ठाणेहिं नेरइयाणं असीतिभंगा तेहिं ठाणेहिं मणुस्साण वि असीतिभंगा भाणियव्वा। जेसु सत्तावीसा तेसु अभंगयं, नवरं—मणुस्साणं अब्भहियं जहण्णियाए ठिईए, आहारए य असीतिभंगा ॥

२५४. वाणमंतर-जोतिस-वेमाणिया जहा भवणवासी, नवरं—नाणत्तं जाणियव्वं जं जस्स जाव अणुत्तरा ॥

२५५. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव[3] विहरइ ॥

छट्ठो उद्देसो

सूरिय-पदं

२५६. जावइयाओ[4] णं भंते! ओवासंतराओ उदयंते सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, अत्थमंते वि य णं सूरिए तावतियाओ चेव ओवासंतराओ चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति?

हंता गोयमा! जावइयाओ णं ओवासंतराओ उदयंते सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, अत्थमंते वि[5] °य णं सूरिए तावतियाओ चेव ओवासंतराओ चक्खुप्फासं° हव्वमागच्छति ॥

२५७. 'जावइयं णं'[6], भंते! खेत्तं उदयंते सूरिए आयवेणं सव्वओ समंता ओभासेइ उज्जोएइ तवेइ पभासेइ, अत्थमंते वि य णं सूरिए तावइयं चेव खेत्तं आयवेणं सव्वओ समंता ओभासेइ? उज्जोएइ? तवेइ? पभासेइ?

---

१. भ० १।२१६-२४३।
२. कायव्वं जत्थ असीति तत्थ असीति चेव (अ)।
३. भ० १।५१।
४. जावइया (अ)।
५. स० पा०—वि जाव हव्व °।
६. जावइयाओ ण (अ); जावइयाण्णं (ता); जावइया ण (म, स); स्वीकृतपाठे 'ण' पदस्य योगे 'जावइय' पदस्य अनुस्वारलोपो जातः।

हता गोयमा ! जावतियं णं खेत्तं[1] •उदयंते सूरिए आयवेणं सव्वओ समंता ओभासेइ उज्जोइए तवेइ पभासेइ, अत्थमंते वि य णं सूरिए तावइयं चेव खेत्तं आयवेणं सव्वओ समंता ओभासेइ उज्जोएइ तवेइ॰ पभासेइ ॥

२५८. तं भंते ! किं पुट्ठं ओभासेइ ? अपुट्ठं ओभासेइ[2] ?
•गोयमा ! पुट्ठं ओभासेइ, नो अपुट्ठं ॥

२५९. तं भंते ! किं ओगाढं ओभासेइ ? अणोगाढं ओभासेइ ?
गोयमा ! ओगाढं ओभासेइ, नो अणोगाढं ॥

२६०. तं भंते ! किं अणंतरोगाढं ओभासेइ ? परंपरोगाढं ओभासेइ ?
गोयमा ! अणंतरोगाढं ओभासेइ, नो परंपरोगाढं ॥

२६१. तं भंते ! किं अणुं ओभासेइ ? बायरं ओभासेइ ?
गोयमा ! अणुं पि ओभासेइ, बायरं पि ओभासेइ ॥

२६२. तं भंते ! किं उड्ढं ओभासेइ ? तिरियं ओभासेइ ? अहे ओभासेइ ?
गोयमा ! उड्ढं पि ओभासेइ, तिरियं पि ओभासेइ, अहे पि ओभासेइ ॥

२६३. तं भंते ! किं आइं ओभासेइ ? मज्झे ओभासेइ ? अंते ओभासेइ ?
गोयमा ! आइं पि ओभासेइ, मज्झे पि ओभासेइ, अंते पि ओभासेइ ॥

२६४. तं भंते ! किं सविसए ओभासेइ ? अविसए ओभासेइ ?
गोयमा ! सविसए ओभासेइ, नो अविसए ॥

२६५. तं भंते ! किं आणुपुव्विं ओभासेइ ? अणाणुपुव्विं ओभासेइ ?
गोयमा ! आणुपुव्विं ओभासेइ, नो अणाणुपुव्विं ॥

२६६. तं भंते ! कइदिसिं ओभासेइ ?
गोयमा ! नियमा॰ छद्दिसिं ओभासेइ ॥

२६७. एवं—उज्जोवेइ तवेइ पभासेइ ॥

फुसणा-पदं

२६८. से नूणं भंते ! सव्वंति सव्वावंति फुसमाणकालसमयंसि जावतियं खेत्तं फुसइ तावतियं फुसमाणे पुट्ठे त्ति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! सव्वंति[3] •सव्वावंति फुसमाणकालसमयंसि जावतियं खेत्तं फुसइ तावतियं फुसमाणे पुट्ठे त्ति॰ वत्तव्वं सिया ॥

२६९. तं[4] भंते ! किं पुट्ठं फुसइ ? अपुट्ठं फुसइ ?
गोयमा ! पुट्ठं फुसइ, नो अपुट्ठं जाव[5] नियमा छद्दिसिं फुसइ ॥

---

१. स० पा०—खेत्तं जाव पभासेइ ।
२. स० पा०—ओभासेइ जाव छद्दिसिं ।
३. स० पा०—सव्वंति जाव वत्तव्वं ।
४. एतत् सूत्रं वृत्तौ व्याख्यातं नास्ति, प्रकरणानुसारि चापि न दृश्यते, किन्तु सर्वासु प्रतिषु उपलब्धमस्ति ।
५. भ० १।२५८-२६६ ।

२७०. लोयते भंते ! अलोयंतं फुसइ ? अलोयते वि लोयंतं फुसइ ?
हंता गोयमा ! लोयते अलोयत फुसइ, अलोयते वि लोयत फुसइ ॥

२७१. तं भते ! कि पुट्ठ फुसइ ? अपुट्ठ फुसइ ?
गोयमा ! पुट्ठ फुसइ, नो अपुट्ठं जाव[1] नियमा छद्दिसि फुसइ ॥

२७२ दीवते भते ! सागरत फुसइ ? सागरते वि दीवंत फुसइ ?
हंता गोयमा ! दीवते सागरतं फुसइ, सागरते वि दीवंतं फुसइ जाव[2] नियमा छद्दिसि फुसइ ॥

२७३. •[3]उदयते भंते ! पोयत[4] फुसइ ? पोयते वि उदयतं फुसइ ?
हंता गोयमा ! उदयते पोयंतं फुसइ, पोयते उदयंतं फुसइ जाव[5] नियमा छद्दिसि फुसइ ॥

२७४. छिद्दते भंते ! दूसतं फुसइ ? दूसते वि छिद्दंतं फुसइ ?
हंता गोयमा ! छिद्दंते दूसतं फुसइ, दूसते वि छिद्दंत फुसइ जाव[6] नियमा छद्दिसि फुसइ ॥

२७५. छायंते भते ! आयवत फुसइ ? आयवते वि छायत फुसइ ?
हंता गोयमा ! छायते आयवतं फुसइ, आयवते वि छायंतं फुसइ जाव[7] नियमा° छद्दिसि फुसइ ॥

किरिया-पदं

२७६. अत्थि णं भते ! जीवाणं पाणाइवाए णं किरिया कज्जइ ?
हंता अत्थि ॥

२७७. सा भते ! कि पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?
गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ जाव[8] निव्वाघाएण छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिया तिदिसि, सिया चउदिसि, सिया पंचदिसि ॥

२७८ सा भंते ! कि कडा कज्जइ ? अकडा कज्जइ ?
गोयमा ! कडा कज्जइ, नो अकडा कज्जइ ॥

२७९. सा भते ! किं अत्तकडा कज्जइ ? परकडा कज्जइ ? तदुभयकडा कज्जइ ?
गोयमा ! अत्तकडा कज्जइ, नो परकडा कज्जइ, नो तदुभयकडा कज्जइ ॥

२८०. सा भते कि 'आणुपुव्वि कडा'[9] कज्जइ ? अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ ?
गोयमा ! आणुपुव्वि कडा कज्जइ, नो अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ । जा य

---

१. भ० १।२५८-२६६ ।
२. भ० १।२५८-२६६ ।
३. स० पा०—एवं एएणं अभिलावेण उदयते पोयत छिद्दते दूसंत छायते आयवत जाव नियमा ।
४. पोदंत (क, ता, व, म, स) ।
५, ६, ७. भ० १।२५८-२६६ ।
८. भ० १।२५९-२६६ ।
९. आणुपुव्विकडा (अ, क, व) ।

कडा कज्जइ, जा य कज्जिस्सइ, सव्वा सा आणुपुव्वि कडा, नो अणाणुपुव्वि 'कडा ति'[1] वत्तव्व सिया ॥

२८१. अत्थि णं भंते ! नेरइयाण पाणाइवायकिरिया कज्जइ ?
हंता अत्थि ॥

२८२. सा भंते ! कि पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?
गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ जाव[2] नियमा छद्दिसि कज्जइ ॥

२८३. सा भंते ! कि कडा कज्जइ ? अकडा कज्जइ ?
गोयमा ! कडा कज्जइ, नो अकडा कज्जइ ॥

२८४. त चेव जाव[3] नो अणाणुपुव्वि कडा ति वत्तव्व सिया ॥

२८५. जहा[4] नेरइया तहा एगिदियवज्जा भाणियव्वा जाव[5] वेमाणिया। एगिदिया जहा[6] जीवा तहा भाणियव्वा ॥

२८६. जहा[7] पाणाइवाए तहा मुसावाए तहा अदिण्णादाणे, मेहुणे, परिग्गहे, कोहे,[8] •माणे, माया, लोभे, पेज्जे, दोसे, कलहे, अब्भक्खाणे, पेसुण्णे, परपरिवाए, अरतिरती, मायामोसे,° मिच्छादंसणसल्ले—एवं एए अट्ठारस। चउवीस दंडगा भाणियव्वा ॥

२८७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति जाव[9] विहरति ॥

रोहस्स पण्ह-पदं

२८८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी रोहे णामं अणगारे पगइभद्दए[10] पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे[11] मिउमद्दव-संपन्ने[12] अल्लीणे[13] विणीए समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

---

१. कडा इति (क), कड त्ति (ब, स)।
२. भ० १।२५९-२६६।
३. भ० १।२७९, २८०।
४. भ० १।२८१-२८४।
५. पू० प० २।
६. भ० १।२७६-२८०।
७. भ० १।२७६-२८५।
८. स० पा०—कोहे जाव मिच्छादसणसल्ले।
९. भ० १।५१।
१०. °भद्दए पगइमउए पगइविणीए (अ क, ता. ब, म, स, वृ)।
११. °माय ° (ता)।
१२. °संपुण्णे (स)।
१३ आलीणे भद्दए (अ, क, ब); अल्लीणे भद्दए (ता, म, स, वृ)। आदर्शेषु वृत्तौ च 'पगइभद्दए' इत समादाय 'विणीए' एतदन्तानि सर्वाण्यपि पदानि वर्तन्ते, किन्तु औपपातिक (६१, ११९) सूत्रस्य संदर्भे 'पगइमउए पगइविणीए भद्दए' एतानि त्रीणि पदानि द्विरुक्तानि सन्ति, तानि पाठान्तरे गृहीतानि। द्रष्टव्य भ० २।७० सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

२८९. ततेण से रोहे अणगारे[1] जायसड्ढे जाव[2] पज्जुवासमाणे एवं वदासी—

२९०. पुव्वि भते ! लोए, पच्छा अलोए ? पुव्वि अलोए, पच्छा लोए ?
रोहा ! लोए य अलोए य पुव्वि पेते, पच्छा पेते[3]—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा ॥

२९१. पुव्वि भते ! जीवा, पच्छा अजीवा ? पुव्वि अजीवा, पच्छा जीवा ?
[4]● रोहा ! जीवा य अजीवा य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२९२. पुव्वि भते ! भवसिद्धिया[5], पच्छा अभवसिद्धिया ? पुव्वि अभवसिद्धिया, पच्छा भवसिद्धिया ?
रोहा ! भवसिद्धिया य, अभवसिद्धिया य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२९३ पुव्वि भते ! सिद्धि, पच्छा असिद्धी ? पुव्वि असिद्धी, पच्छा सिद्धी ?
रोहा ! सिद्धी य असिद्धी य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२९४ पुव्वि भते ! सिद्धा, पच्छा असिद्धा ? पुव्वि असिद्धा, पच्छा सिद्धा ?
रोहा ! सिद्धा य असिद्धा य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा ! °

२९५. पुव्वि भते ! अडए, पच्छा कुक्कुडी ? पुव्वि कुक्कुडी, पच्छा अंडए ?
रोहा ! से ण अडए कओ ?
भयव ! कुक्कुडीओ ।
सा ण कुक्कुडी कओ ?
भते ! अडयाओ ।
एवामेव रोहा ! से य अडए, सा य कुक्कुडी पुव्वि पेते, पच्छा पेते—'दो वेते'[6] सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२९६. पुव्वि भते ! लोयंते, पच्छा अलोयते ? पुव्वि अलोयते, पच्छा लोयंते ?
रोहा ! लोयंते य अलोयते य[7] ●पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा°, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

---

१. भगव अणगारे (क, ब), अणगारे भगव (ता) ।
२. भ० १।१० ।
३. वेते (ता) ।
४. स० पा०—जहेव लोए य अलोए य तहेव जीवा य अजीवा य । एवं भवसिद्धिया य अभवसिद्धिया य सिद्धी असिद्धी सिद्धा असिद्धा ।
५ भवसिद्धीया (क, ता, स) ।
६. दुवेए (स) ।
७. सं० पा०—य जाव अणाणुपुव्वी ।

२९७. पुव्वि भंते ! लोयंते, पच्छा सत्तमे ओवासंतरे ? [1]•पुव्वि सत्तमे ओवासंतरे, पच्छा लोयंते ?०
रोहा ! लोयंते य सत्तमे ओवासंतरे य पुव्वि पेते[2], •पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा०, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२९८. एवं लोयंते य सत्तमे य तणुवाए। एवं घणवाए, घणोदही, सत्तमा पुढवी। एवं लोयंते एक्केक्केणं संजोएतव्वे इमेहिं ठाणेहिं, त जहा—

संगहणी-गाहा

ओवास-वात-घणउदहि-पुढवि-दीवा य सागरा वासा।
नेरइयादि[3] अत्थिय, समया कम्माइ[4] लेस्साओ ॥१॥
दिट्ठी दंसण-नाणे, सण्ण-सरीरा य जोग-उवओगे।
दव्व-पएसा-पज्जव, अद्धा किं पुव्वि लोयंते ॥२॥

२९९. [5]•पुव्वि भंते ! लोयंते, पच्छा अतीतद्धा ? पुव्वि अतीतद्धा, पच्छा लोयंते ?
रोहा ! लोयंते य अतीतद्धा य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

३००. पुव्वि भंते ! लोयंते, पच्छा अणागतद्धा ? पुव्वि अणागतद्धा, पच्छा लोयंते ?
रोहा ! लोयंते य अणागतद्धा य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

३०१. पुव्वि भंते ! लोयंते, पच्छा सव्वद्धा ? पुव्विं सव्वद्धा, पच्छा लोयंते ?
रोहा ! लोयंते य सव्वद्धा य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !०

३०२. जहा[6] लोयंतेणं संजोइया सव्वे ठाणा एते, एवं अलोयंतेण वि संजोएतव्वा सव्वे ॥

३०३. पुव्वि भंते ! सत्तमे ओवासंतरे, पच्छा सत्तमे तणुवाए[7] ? •पुव्विं सत्तमे तणुवाए, पच्छा सत्तमे ओवासंतरे ?
रोहा ! सत्तमे ओवासंतरे य सत्तमे तणुवाए य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !०

३०४. एवं सत्तमं ओवासंतरं सव्वेहिं समं संजोएतव्वं जाव[8] सव्वद्धाए ॥

३०५. पुव्वि भंते ! सत्तमे तणुवाए ? पच्छा सत्तमे घणवाए[9] ? •पुव्विं सत्तमे घणवाए, पच्छा सत्तमे तणुवाए ?

---

१. स० पा०—पुच्छा।
२. स० पा०—पेते जाव अणाणुपुव्वी।
३. चउवीस दंडगा।
४. कम्माइ (अ, क, ब, म, स)।
५. स० पा०—पुव्वि भंते ! लोयंते पच्छा सव्वद्धा।
६. भ० १।२९७-३०१।
७. स० पा०—तणुवाए०।
८. भ० १।२९८-३०१।
९. स० पा० घणवाए०।

रोहा ! सत्तमे तणुवाए य सत्तमे घणवाए य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा ! ०

३०६ एव[1] तहेव नेयव्व जाव[2] सव्वद्धा ॥

३०७ एव उवरिल्ल एक्केक्कं संजोयतेणं, जो जो हिट्ठिल्लो त तं छड्डतेण नेयव्वं जाव[3] अतीत-अणागतद्धा, पच्छा सव्वद्धा जाव[4] अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

३०८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[5] विहरइ ॥

लोयट्ठिति-पदं

३०९. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर जाव[6] एव वयासी—

३१०. कतिविहा ण भते ! लोयट्ठिती पण्णत्ता ?

गोयमा ! अट्ठविहा लोयट्ठिति पण्णत्ता, त जहा—१. आगासपइट्ठिए वाए। २. वायपइट्ठिए उदही। ३. उदहिपइट्ठिया पुढवी। ४. पुढविपइट्ठिया तस-थावरा पाणा। ५. अजीवा जीवपइट्ठिया। ६. जीवा कम्मपइट्ठिया। ७. अजीवा जीवसगहिया। ८. जीवा कम्मसगहिया ॥

३११. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अट्ठविहा लोयट्ठिती जाव[7] जीवा कम्मसंगहिया ?

गोयमा ! से जहाणामए केइ पुरिसे वत्थिमाडोवेइ[8], वत्थिमाडोवेत्ता उप्पि सित बधइ, बधित्ता मज्झे[9] गंठि बधइ, बधित्ता उवरिल्लं गंठि मुयइ, मुइत्ता उवरिल्ल देस वामेइ, वामेत्ता उवरिल्लं देस 'आउयायस्स पूरेइ'[10], पूरेत्ता उप्पि सित बंधइ, बधित्ता मज्झिल्लं गठि मुयइ। से नूण गोयमा ! से आउयाए तस्स वाउयायस्स उप्पि उवरिमतले चिट्ठइ ?

हता चिट्ठइ[11]।

से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—अट्ठविहा लोयट्ठिती जाव जीवा कम्मसगहिया।

से जहा वा केइ पुरिसे वत्थिमाडोवेइ, वत्थिमाडोवेत्ता कडीए बंधइ, बधित्ता अत्थाहमतारमपोरुसियसि[12] उदगसि ओगाहेज्जा। से नूण गोयमा ! से पुरिसे तस्स आउयायस्स उवरिमतले चिट्ठइ ?

हता चिट्ठइ।

एव वा अट्ठविहा लोयट्ठिई जाव जीवा कम्मसंगहिया ॥

---

१. एव पि (क, ता, ब, म, स)।
२. भ० १।२९८-३०१।
३. भ० १।२९८-३०१।
४. भ० १।३०१।
५. भ० १।५१।
६. भ० १।१०।
७ भ० १।३१०।
८. बत्थि० (क)।
९. मज्झिल (व)।
१०. आउयाए सपूरेइ (अ)।
११. चेट्ठइ (अ), चेष्टति (ब)।
१२. अत्थाहमपार ० (वृपा)।

जीव-पोग्गल पदं

३१२. अत्थि ण भंते ! जीवा य पोग्गला य अण्णमण्णबद्धा, अण्णमण्णपुट्ठा, अण्णमण्ण-मोगाढा, अण्णमण्णसिणेहपडिबद्धा, अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति ?
हंता अत्थि ॥

३१३. से केणट्ठेण भंते[1] ! • एव वुच्चइ—अत्थि ण जीवा य पोग्गला य अण्णमण्ण-बद्धा, अण्णमण्णपुट्ठा, अण्णमण्णमोगाढा, अण्णमण्णसिणेहपडिबद्धा, अण्णमण्ण-घडत्ताए° चिट्ठंति ?
गोयमा ! से जहाणामए हरदे सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभरघडत्ताए चिट्ठइ।
अहे ण केइ पुरिसे तंसि हरदंसि एगं महं[2] नावं सयासवं[3] सयछिद्दं[4] ओगा-हेज्जा। से नूण गोयमा ! सा नावा तेहिं आसवदारेहिं आपूरमाणी-आपूरमाणी पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठइ ?
हंता चिट्ठइ।
से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थि ण जीवा य[5] •पोग्गला य अण्ण-मण्णबद्धा, अण्णमण्णपुट्ठा, अण्णमण्णमोगाढा, अण्णमण्णसिणेहपडिबद्धा, अण्ण-मण्णघडत्ताए° चिट्ठंति ॥

सिणेहकाय-पदं

३१४. अत्थि ण भंते ! सदा समितं सुहुमे सिणेहकाए पवडइ ?
हंता अत्थि ॥

३१५. से भंते ! किं उड्ढे पवडइ[6] ? अहे पवडइ ? तिरिए पवडइ ?
गोयमा ! उड्ढे वि पवडइ, अहे वि पवडइ, तिरिए वि पवडइ ॥

३१६. जहा से बायरे आउयाए अण्णमण्णसमाउत्ते चिरं पि दीहकालं चिट्ठइ तहा ण से वि ?
णो इणट्ठे समट्ठे। से ण खिप्पामेव विद्धंसमागच्छइ।

३१७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[7] ॥

---

१. स० पा०—भंते जाव चिट्ठंति।
२. महा (ता)।
३. सदा° (अ, क, ता, व, स)।
४. सदाछिड्ड (अ), सतछिड्ड (ता); सदछिड्ड (व)।
५. स० पा०—य जाव चिट्ठंति।
६. पडइ (अ, व)।
७. भ० १।५१।

सत्तमो उद्देसो

देस-सव्व-पदं

३१८. नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे, किं—१. देसेण देसं उववज्जइ ? २. देसेण सव्वं उववज्जइ ? ३. सव्वेणं देसं उववज्जइ ? ४. सव्वेण सव्वं उववज्जइ ?
गोयमा ! १ नो देसेण देसं उववज्जइ। २. नो देसेणं सव्वं उववज्जइ। ३. नो सव्वेण देस उववज्जइ। ४ सव्वेण सव्व उववज्जइ ॥

३१९. जहा नेरइए, एव जाव[1] वेमाणिए ॥

३२०. नेरइए ण भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे, किं—१. देसेण देस आहारेइ ? २ देसेण सव्व आहारेइ ? ३ सव्वेण देस आहारेइ ? ४. सव्वेण सव्व आहारेइ ?
गोयमा ! १. नो देसेण देस आहारेइ। २ नो देसेण सव्व आहारेइ। ३ सव्वेणं वा देसं आहारेइ। ४. सव्वेण वा सव्व आहारेइ ॥

३२१. एव जाव[2] वेमाणिए[3] ॥

३२२. नेरइए ण भंते ! नेरइएहिंतो[4] उव्वट्टमाणे, किं—१. देसेण देस उव्वट्टइ ? २ [5]देसेणं सव्व उव्वट्टइ ? ३ सव्वेण देस उव्वट्टइ ? ४ सव्वेण सव्व उव्वट्टइ ?
गोयमा ! १. नो देसेण देस उव्वट्टइ। २. नो देसेण सव्व उव्वट्टइ। ३. नो सव्वेण देस उव्वट्टइ। ४ सव्वेण सव्व उव्वट्टइ ॥

३२३. एव जाव वेमाणिए ॥

३२४. नेरइए ण भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे, किं—१ देसेण देस आहारेइ ? २ देसेण सव्व आहारेइ ? ३. सव्वेण देस आहारेइ ? ४ सव्वेण सव्व आहारेइ ?
गोयमा ! १ नो देसेणं देस आहारेइ। २ नो देसेण सव्व आहारेइ। ३ सव्वेण वा देस आहारेइ। ४. सव्वेण वा सव्व आहारेइ ॥

---

१. पू० प० २।

२ पू० प० २।

३. वेमाणिया (म)।

४. नेरइएसु (ता, म)।

५. स० पा०—जहा उववज्जमाणे तहेव उव्वट्ट-माणे वि दंडगो भाणियव्वो। नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे किं देसेणं देस आहारेइ तहेव जाव सव्वेण वा देस आहारेइ। सव्वेण वा सव्व आहारेइ। एव जाव वेमाणिया। नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववण्णे किं देसेणं देस उववण्णे एसो वि तहेव जाव सव्वेणं सव्व उववण्णे। जहा उववज्जमाणे उव्वट्टमाणे य चत्तारि दंडगा तहा उववण्णेण उव्वट्टेण वि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा—सव्वेणं सव्वं उववण्णे, सव्वेणं वा देस आहारेइ, सव्वेण वा सव्व आहारेइ। एएणं अभिलावेणं उववण्णे वि उव्वट्टे वि नेयव्वं।

३२५. एव जाव वेमाणिए ॥

३२६. नेरइए णं भते ! नेरइएसु उववण्णे, कि—१. देसेण देस उववण्णे ? २. देसेण सव्व उववण्णे ? ३. सव्वेण देस उववण्णे ? ४. सव्वेण सव्व उववण्णे ?
गोयमा ! १. नो देसेण देस उववण्णे । २. नो देसेण सव्व उववण्णे । ३. नो सव्वेण देस उववण्णे । ४ सव्वेणं सव्व उववण्णे ॥

३२७. एवं जाव वेमाणिए ॥

३२८. नेरइए ण भते ! नेरइएसु उववण्णे, कि—१ देसेण देस आहारेइ ? २. देसेणं सव्व आहारेइ ? ३. सव्वेण देस आहारेइ ? ४ सव्वेण सव्व आहारेइ ?
गोयमा ! १. नो देसेण देस आहारेइ । २. नो देसेण सव्व आहारेइ । ३ सव्वेण वा देस आहारेइ । ४ सव्वेण वा सव्व आहारेइ ॥

३२९. एवं जाव वेमाणिए ॥

३३०. नेरइए णं भते ! नेरइएहितो उव्वट्टे, कि—१ देसेण देस उव्वट्टे ? २. देसेण सव्व उव्वट्टे ? ३. सव्वेण देसं उव्वट्टे ? ४ सव्वेण सव्व उव्वट्टे ?
गोयमा ! १ नो देसेणं देस उव्वट्टे । २ नो देसेण सव्व उव्वट्टे । ३ नो सव्वेण देस उव्वट्टे । ४. सव्वेण सव्व उव्वट्टे ॥

३३१. एव जाव वेमाणिए ॥

३३२. नेरइए णं भते ! नेरइएहितो उव्वट्टे, कि—१. देसेण देस आहारेइ ? २ देसेण सव्वं आहारेइ ? ३ सव्वेण देस आहारेइ ? ४ सव्वेण सव्व आहारेइ ?
गोयमा ! १. नो देसेण देसं आहारेइ । २. नो देसेण सव्व आहारेइ । ३ सव्वेण वा देसं आहारेइ । ४. सव्वेण वा सव्व आहारेइ ॥

३३३. एव जाव वेमाणिए ॥°[1]

३३४. नेरइए णं भते ! नेरइएसु उववज्जमाणे, कि—१ अद्धेण अद्ध उववज्जइ ? २ अद्धेण सव्व उववज्जइ ? ३. सव्वेण अद्ध उववज्जइ ? ४ सव्वेण सव्व उववज्जइ ?
जहा पढमिल्लेण अट्ठ दडगा तहा अद्धेण वि अट्ठ दडगा भाणियव्वा, नवर—जहि देसेणं देस उववज्जइ, तहि अद्धेण अद्ध उववज्जइ इति भाणियव्व, एय नाणत्तं । एते सव्वे वि सोलस दंडगा भाणियव्वा ॥

विग्गहगइ-पद

३३५. जीवे ण भंते ! कि विग्गहगइसमावण्णए ? अविग्गहगइसमावण्णए ?
गोयमा ! सिय विग्गहगइसमावण्णए, सिय अविग्गहगइसमावण्णए ॥

---

१. अस्मिन्नालापके वृत्तिकृता पाठान्तरस्य उल्लेख कृतोस्ति—'पुस्तकान्तरे तूत्पादतदाहारदडकानन्तरमुत्पादे सत्युत्पन्नतदाहारदडकौ ततस्तूत्पादप्रतिपक्षत्वादुद्वर्त्तनाया उद्वर्त्तनातदाहारदडकौ उद्वर्तनाया चोद्वृत्त. स्यादित्युद्वृत्ततदाहारदडकौ' (वृ) ।

३३६. एवं जाव[1] वेमाणिए ॥

३३७. जीवा ण भंते ! कि विग्गहगइसमावण्णया ? अविग्गहगइसमावण्णया ?
गोयमा ! विग्गहगइसमावण्णगा वि, अविग्गहगइसमावण्णगा वि ॥

३३८. नेरइया ण भंते ! कि विग्गहगइसमावण्णगा ? अविग्गहगइसमावण्णगा ?
गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्ज अविग्गहगइसमावण्णगा । अहवा अविग्गहगइसमावण्णगा, विग्गहगइसमावण्णगे य । अहवा अविग्गहगइसमावण्णगा य, विग्गहगइसमावण्णगा य । एव जीव—एगिदियवज्जो तियभंगो ।

आयु-पदं

३३९. देवे ण भंते ! महिड्ढिए[2] महज्जुइए महब्बले महायसे महेसक्खे[3] महाणुभावे अविउक्कतिय चयमाणे[4] किंचिकाल[5] हिरिवत्तिय[6] दुगछावत्तिय परीसहवत्तिय[7] आहारं नो आहारेइ । अहे ण आहारेइ आहारिज्जमाणे आहारिए, परिणामिज्जमाणे परिणामिए, पहीणे य आउए भवइ । जत्थ उववज्जइ तं आउयं पडिसवेदेइ, तं जहा—तिरिक्खजोणियाउय वा, मणुस्साउय वा ?
हता गोयमा ! देवेण महिड्ढिए[8] °महज्जुइए महब्बले महायसे महेसक्खे महाणुभावे अविउक्कतिय चयमाणे किंचिकाल हिरिवत्तिय दुगछावत्तियं परीसहवत्तिय आहार नो आहारेइ । अहे ण आहारेइ आहारिज्जमाणे आहारिए, परिणामिज्जमाणे परिणामिए, पहीणे य आउए भवइ । जत्थ उववज्जइ त आउय पडिसवेदेइ, त जहा—तिरिक्खजोणियाउय वा° मणुस्साउयं वा ।

गब्भ-पदं

३४०. जीवे ण भंते ! गब्भ वक्कममाणे किं सइंदिए वक्कमइ ? अणिदिए वक्कमइ ?
गोयमा ! सिय सइंदिए वक्कमइ । सिय अणिदिए वक्कमइ ॥

३४१. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—सिय सइंदिए वक्कमइ ? सिय अणिदिए वक्कमइ ?
गोयमा ! दव्विदियाइ पडुच्च अणिदिए वक्कमइ । भाविंदियाइ पडुच्च सइंदिए वक्कमइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय सइंदिए वक्कमइ । सिय अणिदिए वक्कमइ ॥

---

१. पू० प० २ ।
२. महड्ढिए (क) ।
३. महासुक्खे (अ) ; महासोक्खे (म, वृपा) ।
४. चय चयमाणे (अ, ता, व, म, स, वृपा) ।
५. कचि° (ता) ।
६ हिरिवित्तिय (स) ।
७ परिस्सह ° (क, ता, स) ।
८ स० पा०—महिड्ढिए जाव मणुस्साउय ।

३४२. जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं ससरीरी वक्कमइ, असरीरी वक्कमइ ?
गोयमा ! सिय ससरीरी वक्कमइ। सिय असरीरी वक्कमइ ॥

३४३. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी वक्कमइ ? सिय असरीरी वक्कमइ ?
गोयमा ! ओरालिय-वेउव्विय-आहारयाइं[1] पडुच्च असरीरी वक्कमइ। तेया-कम्माइं पडुच्च ससरीरी वक्कमइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-सिय ससरीरी वक्कमइ। सिय असरीरी वक्कमइ ॥

३४४. जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे तप्पढमयाए किमाहारमाहारेइ ?
गोयमा ! माउओयं पिउसुक्कं—तं तदुभयसंसिट्ठं[2] तप्पढमयाए आहारमाहारेइ ॥

३४५. जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे किं आहारमाहारेइ ?
गोयमा ! जं से माया नाणाविहाओ रसविगतीओ[3] आहारमाहारेइ, तदेकदेसेण ओयमाहारेइ ॥

३४६. जीवस्स णं भंते ! गब्भगयस्स समाणस्स अत्थि उच्चारे इ वा पासवणे इ वा खेले इ वा सिंघाणे इ वा 'वंते इ वा पित्ते इ वा'[4] ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

३४७. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! जीवे णं गब्भगए समाणे जमाहारेइ तं चिणाइ, तं जहा —सोइंदियत्ताए,[5] •चक्खिदियत्ताए, घाणिंदियत्ताए, रसिंदियत्ताए°, फासिंदियत्ताए, अट्ठि-अट्ठिमिंज-केस-मंसु-रोम-नहत्ताए। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवस्स णं गब्भगयस्स समाणस्स णत्थि उच्चारे इ वा पासवणे इ वा खेले इ वा सिंघाणे इ वा वंते इ वा पित्ते इ वा ॥

३४८. जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे पभू मुहेणं कावलियं आहारमाहारित्तए ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

३४९. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! जीवे णं गब्भगए समाणे सव्वओ आहारेइ, सव्वओ परिणामेइ, सव्वओ उस्ससइ, सव्वओ निस्ससइ, अभिक्खणं आहारेइ, अभिक्खणं परिणामेइ, अभिक्खणं उस्ससइ, अभिक्खणं निस्ससइ, आहच्च आहारेइ, आहच्च परिणामेइ, आहच्च उस्ससइ, आहच्च निस्ससइ[6]।

---

१. आहारादी (अ, व), आहाराइ (ता, स)।
२. °संसिट्ठं कलुसं किब्बिसं (अ, क, म, स)।
३. रसवतीओ (अ, क, व, म), रसवित्तीओ (ता)।
४. × (अ, क, ता, व) एते पदे वृत्तावपि न व्याख्याते।
५. सं०पा०—सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए।
६. नीससति (अ, क, ता, म, स)।

माउजीवरसहरणी, पुत्तजीवरसहरणी, माउजीवपडिबद्धा पुत्तजीवफुडा[1]—तम्हा आहारेइ, तम्हा परिणामेइ।
अवरा वि य णं पुत्तजीवपडिबद्धा माउजीवफुडा[2]—तम्हा चिणाइ, तम्हा उवचिणाइ। से तेणट्ठेणं[3] °गोयमा! एवं वुच्चइ—जीवे णं गब्भगए समाणे° नो पभू मुहेणं कावलियं आहारमाहारित्तए॥

माइय-पेइय-अंग-पदं

३५०. कइ णं भंते! माइयंगा पण्णत्ता?
गोयमा! तओ माइयंगा पण्णत्ता, तं जहा—मंसे, सोणिए, मत्थुलुंगे[4]॥

३५१. कइ णं भंते! पेतियंगा[5] पण्णत्ता?
गोयमा! तओ पेतियंगा पण्णत्ता, तं जहा—अट्ठि, अट्ठिमिंजा, केस-मंसु-रोम-नहे॥

३५२. अम्मापेइए[6] णं भंते! सरीरए केवइयं कालं संचिट्ठइ?
गोयमा! जावइयं से कालं भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावन्ने भवइ एवतियं कालं संचिट्ठइ, अहे णं समए-समए वोयसिज्जमाणे-वोयसिज्जमाणे चरिम-कालसमयंसि वोच्छिण्णे भवइ॥

गब्भस्स नरगगमण-पदं

३५३. जीवे णं भंते! गब्भगए समाणे नेरइएसु उववज्जेज्जा?
गोयमा! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा॥

३५४. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा?
गोयमा! से णं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए पराणीयं आगयं सोच्चा निसम्म[7] पएसे निच्छुभइ, निच्छुभित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ,[8] समोहणित्ता चाउरंगिणिं सेणं[9] विउव्वइ, विउव्वित्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएणं सद्धिं संगामं संगामेइ।
से णं जीवे अत्थकामए रज्जकामए भोगकामए कामकामए, अत्थकंखिए रज्जकंखिए भोगकंखिए कामकंखिए, अत्थपिवासिए रज्जपिवासिए भोग-पिवासिए कामपिवासिए, तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झव-साणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए, एयंसि णं अंतरंसि कालं

---

१. पुत्तजीव फुडा (वृ)।
२. माउजीव फुडा (वृ)।
३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो।
४. ° लुए (अ, क, स), ° लिंगे (म)।
५. पितियंगा (अ, म, स)।
६. ° पिइए (अ, म, स)।
७. निसम्मा (ता)।
८. समोहणइ (अ, स)।
९. सेण्णं (क, ता, व, म, स)।

करेज्ज नेरइएसु उववज्जइ। से तेणट्ठेण गोयमा[1]! •एवं वुच्चइ—अत्थेगइए उववज्जेज्जा°, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा॥

गब्भस्स देवलोगगमण-पद

३५५. जीवे णं भंते! गब्भगए समाणे देवलोगेसु उववज्जेज्जा?
गोयमा! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा॥

३५६. से केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ—अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा?

गोयमा! से णं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म तओ भवइ संवेगजायसड्ढे[2] तिव्वधम्माणुरागरत्ते।

से णं जीवे धम्मकामए पुण्णकामए सग्गकामए मोक्खकामए, धम्मकंखिए पुण्णकंखिए सग्गकंखिए मोक्खकंखिए, धम्मपिवासिए पुण्णपिवासिए सग्ग-पिवासिए मोक्खपिवासिए, तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झव-साणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए, एयंसि णं अंतरंसि कालं करेज्ज देवलोगेसु उववज्जइ। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा॥

३५७. जीवे णं भंते! गब्भगए समाणे उत्ताणए[3] वा पासल्लए[4] वा अंबखुज्जए वा अच्छेज्ज वा? चिट्ठेज्ज वा? निसीएज्ज वा? तुयट्टेज्ज वा? माउए सुयमाणीए[5] सुवइ? जागरमाणीए जागरइ? सुहियाए सुहिए भवइ? दुहियाए दुहिए भवइ?

हंता गोयमा! जीवे णं गब्भगए समाणे[6] •उत्ताणए वा पासल्लए वा अंबखुज्जए वा अच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा निसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा। माउए सुयमाणीए सुवइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ° दुहियाए दुहिए भवइ।

अहे णं पसवणकालसमयंसि सीसेण वा पाएहिं वा आगच्छति सममागच्छति[7], तिरियमागच्छति विणिहायमावज्जति।

वण्णवज्झाणि य से कम्माइं बद्धाइं पुट्ठाइं निहत्ताइं कडाइं पट्ठवियाइं अभिनिविट्ठाइं अभिसमण्णागयाइं उदिण्णाइं—नो उवसंताइं भवंति,

१. सं० पा०—गोयमा जाव अत्थे°।
२. ° जाइसड्ढे (ब, स)।
३. उत्ताणे (ता)।
४. पोसल्लए (अ), पासिल्लए (क); पासल्लिए (ता, म)।
५. सुवमाणीए (क, ता, म)।
६. सं० पा०—समाणे जाव दुहियाए।
७. सम्ममा° (अ, व, स, वृपा)।

तओ भवइ दुरूवे दुवण्णे 'दुग्गधे दुरसे'[1] दुफासे अणिट्ठे अकते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे अणिट्ठस्सरे अकतस्सरे अप्पियस्सरे असुभस्सरे अमणुण्णस्सरे अमणामस्सरे 'अणाएज्जवयणे पच्चायाए'[2] या वि भवइ ।

वण्णवज्झाणि य से कम्माइ नो बद्धाइ[3] •नो पुट्ठाइं नो निहत्ताइ नो कडाइ नो पट्ठवियाइं नो अभिनिविट्ठाइ नो अभिसमण्णागयाइं नो उदिण्णाइं—उवसताइ भवंति, तओ भवइ सुरूवे सुवण्णे सुगधे सुरसे सुफासे इट्ठे कंते पिए सुभे मणुण्णे मणामे अहीणस्सरे अदीणस्सरे इट्ठस्सरे कतस्सरे पियस्सरे सुभस्सरे मणुण्णस्सरे मणामस्सरे॰ 'आदेज्जवयणे पच्चायाए'[4] या वि भवइ ।।

३५८. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति[5] ।।

अट्ठमो उद्देसो

बालस्स आउय-पद

३५९. एगंतबाले णं भते ! मणुस्से कि नेरइयाउयं पकरेति ? तिरिक्खाउयं पकरेति ? मणुस्साउय पकरेति ? देवाउय पकरेति ? नेरइयाउय किच्चा नेरइएसु उववज्जति ? तिरियाउय किच्चा तिरिएसु उववज्जति ? मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति ? देवाउय किच्चा देवलोगेसु उववज्जति ?

गोयमा ! एगतबाले ण मणुस्से नेरइयाउय पि पकरेति, तिरियाउयं वि पकरेति, मणुस्साउयं पि पकरेति, देवाउयं पि पकरेति, नेरइयाउय किच्चा नेरइएसु उववज्जति, तिरियाउय किच्चा तिरिएसु उववज्जति, मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति, देवाउय किच्चा देवलोगेसु उववज्जति ।।

पडियस्स आउय-पदं

३६०. एगंतपडिए ण भते ! मणुस्से कि नेरइयाउयं पकरेति[6] ? •तिरिक्खाउयं पकरेति ? मणुस्साउय पकरेति ? देवाउयं पकरेति ? नेरइयाउय किच्चा

---

१. दुगधे (म) ।

२. ॰ वयणपच्चाए (अ, क, ता, ब, म, स), स्थानाङ्गे (८।१०) 'पच्चायाए' इत्येव पाठोऽस्ति ।

३. स॰ पा॰—पसत्थ नेयव्व जाव आदेज्ज॰ ।

४. ॰ वयणपच्चाए (क, ता) ।

५. भ॰ १। ५१ ।

६. स॰ पा॰—पकरेति जाव देवाउयं ।

नेरइएसु उववज्जति ? तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जति ? मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति ? °देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जति ?
गोयमा ! एगंतपंडिए णं मणुस्से[1] आउयं सिय पकरेति, सिय णो पकरेति, जइ पकरेति णो नेरइयाउयं पकरेति, णो तिरियाउयं पकरेति, णो मणुस्साउयं पकरेति, देवाउयं पकरेति, णो नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जति, णो तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जति, णो मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति, देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ।।

३६१. से केणट्ठेणं जाव[2] देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ?
गोयमा ! एगंतपंडियस्स णं मणुस्सस्स केवलमेव दो गतीओ पण्णायंति, त जहा—अंतकिरिया चेव, कप्पोववत्तिया चेव । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ।।

बालपंडियस्स आउय-पदं

३६२. बालपंडिए णं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेति[3] ? °तिरिक्खाउयं पकरेति ? मणुस्साउयं पकरेति ? देवाउयं पकरेति ? नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जति ? तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जति ? मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति ? देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ?
गोयमा ! बालपंडिए णं मणुस्से णो नेरइयाउयं पकरेति, णो तिरिक्खाउयं पकरेति, णो मणुस्साउयं पकरेति, देवाउयं पकरेति, णो नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जति, णो तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जति, णो मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति°, देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ।।

३६३. से केणट्ठेणं जाव[4] देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ?
गोयमा ! बालपंडिए णं मणुस्से तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं[5] धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म[6] देसं उवरमइ, देसं णो उवरमइ, देसं पच्चक्खाइ, देसं णो पच्चक्खाइ ।
'से तेणं[7] देसोवरम-देसपच्चक्खाणेणं णो नेरइयाउयं पकरेति जाव[8] देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति । से तेणट्ठेणं जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ।।

---

१. मणूसे (ता) ।
२. भ० १।३६० ।
३. सं० पा०—पकरेति जाव देवाउयं ।
४. भ० १।३६२ ।
५. यारियं (क, ता) ।
६. निसम्मा (अ, ता, व) ।
७. सेणं ते (क); सेणं तेण (ता, व) ।
८. भ० १।३६० ।

किरिया-पदं

३६४. पुरिसे ण भते ! कच्छसि वा दहसि वा उदगसि वा दवियंसि वा वलयंसि वा नूमसि वा गहणसि वा गहणविदुग्गसि वा पव्वयसि वा पव्वयविदुग्गसि वा वणसि वा वणविदुग्गसि वा मियवित्तीए[1] मियसकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गता एते मिय[2] त्ति काउ अण्णयरस्स मियस्स वहाए कूडपास उद्दाति[3], ततो ण भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! सिय[4] तिकिरिए, सिय चउकिरिए[5], सिय पचकिरिए ॥

३६५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सिय तिकिरिए ? सिय चउकिरिए ? सिय पचकिरिए ?

गोयमा ! जे भविए उद्दवणयाए—णो बधणयाए, णो मारणयाए—तावं च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए[6]—तिहि किरियाहि पुट्ठे ।

जे भविए उद्दवणताए वि, बधणताए वि—णो मारणताए—ताव च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए[7], पारितावणियाए—चउहि किरियाहि पुट्ठे ।

जे भविए उद्दवणताए[8] वि, बधणताए वि, मारणताए वि, तावं च णं से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणातिवाय-किरियाए—पचहि किरियाहि पुट्ठे । से तेणट्ठेण[9] °गोयमा ! एव वुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय° पंचकिरिए ॥

३६६. पुरिसे णं भते ! कच्छसि वा जाव[10] वणविदुग्गसि वा तणाइ ऊसविय-ऊसविय अगणिकायं निसिरइ—तावं च णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए ॥

३६७. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—सिय तिकिरिए ? सिय चउकिरिए ? सिय पचकिरिए ?

गोयमा ! जे भविए उस्सवणयाए[11]—°णो निसिरणयाए, णो दहणयाए—तावं

---

१. मियवत्तिए (अ), मियवत्तीए (स) ।
२. मिए (अ, ता, ब, म, स) ।
३. उड्डाइ (अ, क, ता, ब, स) ।
४. जाव च ण से पुरिसे कच्छसि वा जाव कूडपासं उड्डाइ ताव च णं से पुरिसे सिय (क, ता, म, स) ।
५. चतु° (ता) ।
६. पाउसियाए (अ, ब, म) ।
७. पायोसियाए (ब) ।
८. उद्दणयाए (ता) ।
९. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव पच° ।
१०. भ० १।३६४ ।
११. सं० पा०—उस्सवणयाए तिहि, उस्सवणयाए वि निसिरणयाए वि नो दहणयाए चउहि, जे भविए उस्सवणयाए वि निसिरणयाए वि दहणयाए वि ताव च ण से पुरिसे काइयाए जाव पंचहि ।

च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए—तिहि किरियाहि पुट्ठे।

जे भविए उस्सवणयाए वि, निसिरणयाए वि, णो दहणयाए—तावं च णं से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए—चउहि किरियाहि पुट्ठे।

जे भविए उस्सवणयाए वि, निसिरणयाए वि, दहणयाए वि, तावं च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणातिवाय-किरियाए°—पचहि किरियाहि पुट्ठे। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥

३६८. पुरिसे णं भंते ! कच्छसि वा जाव[1] वणविदुग्गसि वा मियवित्तीए मियसंकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गता एते 'मिय त्ति'[2] काउ अण्णतरस्स मियस्स वहाए उसु निसिरति, ततो ण भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए।

३६९. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ?

गोयमा ! जे भविए निसिरणयाए—णो विद्धसणयाए, णो मारणयाए—ताव च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए—तिहि किरियाहि पुट्ठे।

जे भविए निसिरणताए वि, विद्धसणताए वि—णो मारणयाए—तावं च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए—चउहि किरियाहि पुट्ठे।

जे भविए निसिरणयाए वि, विद्धसणयाए वि, मारणताए वि—ताव च ण से पुरिसे[3] °काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणातिवायकिरियाए°—पंचहि किरियाहि पुट्ठे। से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥

३७०. पुरिसे णं भते ! कच्छसि वा जाव[4] वणविदुग्गसि वा ? मियवित्तीए मियसंकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गता एते मिय त्ति काउं अण्णतरस्स मियस्स वहाए आयत-कण्णायतं उसु आयामेत्ता चिट्ठेज्जा, अण्णयरे[5] पुरिसे मग्गतो आगम्म सयपाणिणा[6] असिणा सीसं छिंदेज्जा, से य उसू ताए चेव पुव्वायामणयाए तं

१. भ० १।३६४।
२. मिए त्ति (अ); मिया ति (ता, म); मिये ति (व, स)।
३. स० पा०—पुरिसे जाव पचहि।
४. भ० १।३६४।
५. अण्णे य से (क, ता, म)।
६. सत° (ता)।

मियं विंधेज्जा, से णं भंते ! पुरिसे किं मियवेरेण पुट्ठे ? पुरिसवेरेण पुट्ठे ? गोयमा ! जे मियं मारेइ, से मियवेरेण पुट्ठे । जे पुरिसं मारेइ, से पुरिसवेरेणं पुट्ठे ॥

३७१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[1]—•जे मियं मारेइ, से मियवेरेण पुट्ठे ? जे पुरिसं मारेइ, से° पुरिसवेरेण पुट्ठे ?

से नूणं गोयमा ! कज्जमाणे कडे, सधिज्जमाणे[2] सधिते, निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिते, निसिरिज्जमाणे निसिट्ठे[3] त्ति वत्तव्वं सिया ?

हंता भगवं ! कज्जमाणे कडे[4], •सधिज्जमाणे सधिते, निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिते, निसिरिज्जमाणे° निसिट्ठे त्ति वत्तव्वं सिया ।

से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जे मियं मारेइ, से मियवेरेणं पुट्ठे । जे पुरिसं मारेइ, से पुरिसवेरेणं पुट्ठे ।

अंतो छण्हं मासाणं मरइ—काइयाए[5], •अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणातिवायकिरियाए°—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे । बाहिं छण्हं मासाणं मरइ—काइयाए[6] •अहिगरणियाए, पाओसियाए° पारितावणियाए—चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥

३७२ पुरिसे णं भंते ! पुरिसं सत्तीए समभिधंसेज्जा, सयपाणिणा[7] वा से असिणा सीसं छिंदेज्जा, ततो णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे तं पुरिसं सत्तीए समभिधंसेति[8], सयपाणिणा[9] वा से असिणा सीसं छिंदति—ताव च णं से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए[10] •पाओसियाए, पारितावणियाए°, पाणातिवातकिरियाए—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे ।

आसण्णवधएण य अणवकंखणवत्तीए[11] णं पुरिसवेरेण पुट्ठे ॥

जय-पराजय-पदं

३७३. दो भंते ! पुरिसा सरिसया[12] सरित्तया[13] सरिव्वया सरिसभंडमत्तोवगरणा अण्णमण्णेण सद्धिं संगामं संगामेंति तत्थ णं एगे पुरिसे पराइणति, एगे पुरिसे परायिज्जति[14] । से कहमेयं भंते ! एवं ?

---

१. सं० पा०—वुच्चइ जाव पुरिस° ।
२. संधेज्जमाणे (ता) ।
३. निसट्ठे (क, ता) ।
४. सं० पा०—कडे जाव निसिट्ठे ।
५. सं० पा०—काइयाए जाव पचहिं ।
६. सं० पा०—काइयाए जाव पारिया°; कातियाए (ता) ।
७. सपाणिणा (क, ता) ।
८. अभिधसेइ (अ, व, स) ।
९. सपाणिणा (क, ता) ।
१०. सं० पा०—अहिगरणियाए जाव पाणा° ।
११. अणवकंखवत्तीए (अ, स) ।
१२. सरसया (व) ।
१३. सरिसत्तया (ता) ।
१४. पराइणिज्जइ (अ, ता, व); पराएज्जइ (स) ।

गोयमा ! सवीरिए परायिणति, अवीरिए परायिज्जति ।।

३७४ से केणट्ठेण[1] •भते ! एव वुच्चइ—सवीरिए परायिणति ? अवीरिए° परायिज्जति ?

गोयमा ! जस्स णं वीरियवज्झाइ कम्माइ नो बद्धाइ नो पुट्ठाइं[2] •नो निहत्ताइ नो कडाइं नो पट्ठवियाइ नो अभिनिविट्ठाइ° नो अभिसमण्णागयाइं नो उदिण्णाइ—उवसंताइं भवति से ण परायिणति ।

जस्स ण वीरियवज्झाइ कम्माइं बद्धाइ[3]• पुट्ठाइ निहत्ताइ कडाइं पट्ठवियाइ अभिनिविट्ठाइ अभिसमण्णागयाइं° उदिण्णाइ णो उवसताइ भवंति से ण पुरिसे परायिज्जति, से तेणट्ठेण । गोयमा ! एव वुच्चति—सवीरिए परायिणति, अवीरिए परायिज्जति ।।

वीरिय-पदं

३७५. जीवा ण भते ! कि सवीरिया ? अवीरिया ?

गोयमा ! सवीरिया वि, अवीरिया वि ।।

३७६ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जीवा सवीरिया वि ? अवीरिया वि ?

गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—संसारसमावण्णगा य, असंसार समावण्णगा य ।

तत्थ णं[4] जे ते असंसारसमावण्णगा ते ण सिद्धा । सिद्धा णं अवीरिया । तत्थ ण जे ते ससारसमावण्णगा[5] ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सेलेसिपडिवण्णगा य, असेलेसिपडिवण्णगा य । तत्थ ण जे ते सेलेसिपडिवण्णगा ते ण लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएण अवीरिया । तत्थ ण जे ते असेलेसिपडिवण्णगा ते ण लद्धिवीरिएण सवीरिया, करणवीरिएण सवीरिया वि, अवीरिया वि । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—जीवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सवीरिया वि, अवीरिया वि ।।

३७७. नेरइया ण भते ! कि सवीरिया ? अवीरिया ?

गोयमा ! नेरइया लद्धिवीरिएण सवीरिया, करणवीरिएण सवीरिया य, अवीरिया य ।।

३७८. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—नेरइया लद्धिवीरिएण सवीरिया ? करण-वीरिएण सवीरिया य ? अवीरिया य ?

गोयमा ! जेसि णं नेरइयाण अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-

---

१. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव परायिज्जति ।
२. स० पा०—पुट्ठाइ जाव नो ।
३. सं० पा०—बद्धाइ जाव उदिण्णाइं ।
४. × (क, ता, ब, म) ।
५. ° वण्णया (क, ता, म) ।

परक्कमे, ते णं नेरइया लद्धिवीरिएण वि सवीरिया, करणवीरिएण वि सवीरिया।

जेसि णं नेरइयाण णत्थि उट्ठाणे[1] °कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार°-परक्कमे, ते ण नेरइया लद्धिवीरिएण सवीरिया, करणवीरिएण अवीरिया। से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया लद्धिवीरिएणं सवीरिया। करण-वीरिएण सवीरिया य, अवीरिया य ।।

३७९. जहा नेरइया एवं जाव[2] पंचिंदियतिरिक्खजोणिया ।।

३८०. [3]°मणुस्सा णं भंते ! किं सवीरिया ? अवीरिया ?

गोयमा ! सवीरिया वि, अवीरिया वि ।।

३८१. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा सवीरिया वि ? अवीरिया वि ?

गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सेलेसिपडिवण्णगा य, असेलेसि-पडिवण्णगा य ।

तत्थ ण जे ते सेलेसिपडिवण्णगा ते ण लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करण-वीरिएण अवीरिया। तत्थ ण जे ते असेलेसिपडिवण्णगा ते ण लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं सवीरिया वि, अवीरिया वि। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—मणुस्सा सवीरिया वि, अवीरिया वि° ।।

३८२. वाणमंतर-जोतिस-वेमाणिया जहा[4] नेरईया ।।

३८३. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति जाव[5] विहरइ ।।

नवमो उद्देसो

गुरु-लघु-पदं

३८४. कहण्ण[6] भंते ! जीवा गरुयत्त हव्वमागच्छंति ?

गोयमा ! पाणाइवाएण मुसावाएण अदिण्णादाणेण मेहुणेण परिग्गहेण कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुन्न- '[7]परपरिवाय-अरति-रति'°-मायामोस-मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु गोयमा ! जीवा गरुयत्तं[8] हव्वमागच्छंति ।।

---

१. स० पा०—उट्ठाणे जाव परक्कमे।
२ पू० प० २ ।
३. स० पा०—मणुस्सा जहा ओहिया जीवा णवर सिद्धवज्जा भाणियव्वा।
४. भ० १।३७७, ३७८ ।
५ भ० १।५१ ।
६. कह ण (अ, ब)।
७. रतिअरतिपरपरिवाय (अ, ब, स)।
८. गुरुयत्त (व)।

३८५ कहण्ण भते ! जीवा लहुयत्त हव्वमागच्छति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेण[1] •मुसावायवेरमणेण अदिण्णादाणवेरमणेण मेहुणवेरमणेण परिग्गहवेरमणेण 'कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुन्न-परपरिवाय-अरतिरति-मायामोस°-मिच्छादसणसल्ल वेरमणेण'[2]—एव खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्त हव्वमागच्छति ॥

३८६. [3]•कहण्ण भते ! जीवा ससार आउलीकरेति ?
गोयमा ! पाणाइवाएण जाव[4] मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु गोयमा ! जीवा ससार आउलीकरेति ॥

३८७. कहण्ण भते ! जीवा ससारं परित्तीकरेति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेण जाव[5] मिच्छादसणसल्लवेरमणेण—एव खलु गोयमा ! जीवा ससार परित्तीकरेति ॥

३८८. कहण्ण भते ! जीवा ससारं दीहीकरेति ?
गोयमा ! पाणाइवाएण जाव[6] मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु गोयमा ! जीवा ससार दीहीकरेति ॥

३८९. कहण्णं भते जीवा ससार ह्रस्सीकरेति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेण जाव[7] मिच्छादसणसल्लवेरमणेण—एव खलु गोयमा ! जीवा ससार ह्रस्सीकरेति ॥

३९० कहण्ण भते ! जीवा ससार अणुपरियट्टति ?
गोयमा ! पाणाइवाएण जाव[8] मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु गोयमा ! जीवा ससार अणुपरियट्टति ॥

३९१. कहण्ण भते ! जीवा ससार वीतिवयति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेण जाव[9] मिच्छादसणसल्लवेरमणेण—एव खलु गोयमा ! जीवा ससार वीतिवयति ॥

३९२. सत्तमे णं भते ! ओवासतरे[10] कि गरुए[11] ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ॥

---

१. पाणायवाय° (ब, स);
स° पा°—पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छा° ।
२. स्थानाङ्ग १।११४-१२६ क्रोधादीनामग्रे 'विवेगे' इति पदं प्रयुक्तमस्ति ।
३. स° पा°—एव ससार आउलीकरेति एव परित्तीकरेति एव दीहीकरेति एव ह्रस्सीकरेति एव अणुपरियट्टति एव वीईवयति पसत्था चत्तारि अपसत्था चत्तारि ।
४. भ° १।३८४ ।
५. भ° १।३८५ ।
६ भ° १।३८४ ।
७. भ° १।३८५ ।
८. भ° १।३८४ ।
९. भ° १।३८५ ।
१०. उवासतरे (क, ब, म, स) ।
११. गुरुए (अ) ।

३९३. सत्तमे ण भते ! तणुवाए कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, गरुयलहुए, णो अगरुयलहुए ॥

३९४. एव सत्तमे घणवाए, सत्तमे घणोदही, सत्तमा पुढवी ॥

३९५. ओवासतराइ सव्वाइ जहा[1] सत्तमे ओवासतरे ॥

३९६. 'जहा तणुवाए एव—ओवास-वाय-घणउदही, पुढवी दीवा य सागरा वासा'[2] ॥

३९७. नेरइया ण भते ! कि गरुया[3] ? •लहुया ? गरुयलहुया ?• अगरुयलहुया ?
गोयमा ! णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया वि, अगरुयलहुया वि ॥

३९८. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—नेरइया णो गरुया ? णो लहुया ? गरुयलहुया वि ? अगरुयलहुया वि ?
गोयमा ! विउव्विय-तेयाइ पडुच्च णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया, णो अगरुयलहुया । जीवं च कम्मग[4] च पडुच्च णो गरुया, णो लहुया, णो गरुयलहुया, अगरुयलहुया । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया वि, अगरुयलहुया वि ॥

३९९. एव जाव[5] वेमाणिया, नवर—नाणत्त जाणियव्व सरीरेहि ॥

४००. धम्मत्थिकाए[6] •ण भते ! कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ॥

४०१. अहम्मत्थिकाए णं भते ! कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ॥

४०२. आगासत्थिकाए णं भते ! कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ॥

४०३ जीवत्थिकाए ण भते ! कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए• ॥

४०४ पोग्गलत्थिकाए ण भते ! कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, गरुयलहुए वि, अगरुयलहुए वि ॥

४०५ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ–णो गरुए ? णो लहुए ? गरुयलहुए वि ? अगरुयलहुए वि ?
गोयमा ! गरुयलहुयदव्वाइ पडुच्च णो गरुए, णो लहुए, गरुयलहुए,

---

१. भ० १।३९२ ।

२. 'एव गरुयलहुए' इति पाठ एकस्मिन् क्वचित् प्रयुक्ते आदर्शे लभ्यते । एतत् सग्रहगाथायाश्चरणद्वयमस्ति तेन पूर्वोक्तस्यापि 'ओवास' पदस्य पुनरुल्लेखोत्र जातोस्ति ।

३. सं० पा०—गरुया जाव अगरुय० ।

४. कम्मक (क), कम्मग (वृत्तौ लिपि पाठसकेते) ।

५ पू० प० २ ।

६. सं० पा०—धम्मत्थिकाए जाव जीवत्थि० चउत्थपएग ।

अगरुयलहुए । अगरुयलहुयदव्वाइ पडुच्च णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ॥

४०६. [1]•समया णं भते ! कि गरुया ? लहुया ? गरुयलहुया ? अगरुयलहुया ?
गोयमा ! णो गरुया, णो लहुया, णो गरुयलहुया, अगरुयलहुया ॥

४०७. कम्माणि ण भते ! कि गरुयाइ ? लहुयाइ ? गरुयलहुयाइ ? अगरुयलहुयाइ ?
गोयमा ! णो गरुयाइ, णो लहुयाई, णो गरुयलहुयाइ, अगरुयलहुयाइ° ॥

४०८. कण्हलेस्सा ण भते ! कि गरुया[2] ?• लहुया ? गरुयलहुया ?° अगरुयलहुया ?
गोयमा ! णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया वि, अगरुयलहुया वि ॥

४०९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—कण्हलेस्सा णो गरुया ? णो लहुया ? गरुयलहुया वि ? अगरुयलहुया वि ?
गोयमा ! दव्वलेस्स पडुच्च ततियपदेण,[3] भावलेस्स पडुच्च चउत्थपदेण[4] ॥

४१०. एव जाव[5] सुक्कलेसा ॥

४११. दिट्ठी-दसण-'णाण-अण्णाण'[6]-सण्णाओ चउत्थएण पदेण नेतव्वाओ ॥

४१२. हेट्ठिल्ला चत्तारि[7] सरीरा नेयव्वा[8] ततिएण पदेण । कम्मय[9] चउत्थएण पदेण ॥

४१३. मणजोगो, वइजोगो चउत्थएण पदेण, कायजोगो ततिएण पदेण ॥

४१४. सागारोवओगो, अणागारोवओगो चउत्थएणं पदेण ॥

४१५ सव्वदव्वा, सव्वपएसा, सव्वपज्जवा जहा[10] पोग्गलत्थिकाओ[11] ॥

४१६. तीतद्धा, अणागतद्धा, सव्वद्धा चउत्थएण[12] पदेण ॥

पसत्थ-पदं

४१७. से नूण भते ! लाघवियं अप्पिच्छा अमुच्छा अगेही अपडिबद्धया समणाण निग्गथाण पसत्थ ?
हता गोयमा ! लाघविय[13] •अप्पिच्छा अमुच्छा अगेही अपडिबद्धया समणाण निग्गथाण° पसत्थ ॥

४१८. से नूण भते ! अकोहत्त अमाणत्त अमायत्त अलोभत्त समणाण निग्गथाण पसत्थ ?

---

१. सं० पा०—समया कम्माणि य चउत्थपदेण ।
२. स० पा०—गरुया जाव अगरुय° ।
३. गरुयलहुया ।
४. अगरुयलहुया ।
५. भ० १।१०२ ।
६. नाणाण्णाण (ता) ।
७. ओरालियवेउव्वियआहारगतेया ।
८ नायव्वा (अ, व स) ।
९ कम्मया (क, म, स), कम्मइए (ता) ।
१०. जधा (अ, व, स) ।
११ भ० १।४०४ ।
१२. चउत्थेण (क, ता, व, म) ।
१३. स० पा०—लाघविय जाव पसत्थ ।

हता गोयमा ! अकोहत्त अमाणत्त[1] •अमायत्त अलोभत्त समणाणं निग्गंथाण° पसत्थ ॥

कखापदोस-पदं

४१६. से नूण भते ! कंखापदोसे खीणे समणे निग्गथे अंतकरे भवति, अतिमसरीरिए वा ?

बहुमोहे वि य ण पुव्वि विहरित्ता अह[2] पच्छा संवुडे काल करेइ ततो पच्छा सिज्झति[3] •बुज्झति मुच्चति परिनिव्वाति सव्वदुक्खाणं° अंत करेति ?

हता गोयमा ! कखापदोसे[4] खीणे[5] •समणे निग्गथे अतकरे भवति, अतिमसरीरिए वा।

बहुमोहे वि य ण पुव्वि विहरित्ता अह पच्छा सवुडे कालं करेइ ततो पच्छा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिनिव्वाति सव्वदुक्खाण° अत करेति ॥

इह-पर-भवियाउय-पदं

४२०. अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति, एव भासति, एवं पण्णवेति, एव परूवेति—एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो आउयाइ पकरेति, तं जहा—इहभवियाउय[6] च, परभवियाउय च।

ज समय इहभवियाउयं पकरेति, तं समय परभवियाउय पकरेति।
ज समय परभवियाउय पकरेति, त समय इहभवियाउय पकरेति।
इहभवियाउयस्स पकरणयाए परभवियाउय पकरेति,
परभवियाउयस्स पकरणयाए इहभवियाउय पकरेति।
एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएण दो आउयाइ पकरेति, त जहा—इहभवियाउय च, परभवियाउय च ॥

४२१. से कहमेय[7] भते ! एव ?

गोयमा ! जण्ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव[8] एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण दो आउयाइं पकरेति, त जहा—इहभवियाउय च, परभवियाउय च।

जे ते एवमाहसु मिच्छ ते एवमाहसु। अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि[9], •एवं भासेमि, एव पण्णवेमि, एव° परूवेमि—एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण एग आउय पकरेति, त जहा—इहभवियाउय वा, परभवियाउयं वा।

---

१. स० पा०—अमाणत्त जाव पसत्थ।
२. अहा (अ, ता, व, म)।
३ स० पा०—सिज्झति जाव अत।
४. कख° (अ, व, स)।
५ स० पा०—खीणे जाव अत।
६. °आउग (क)।
७. °भेत (ता, म), °मेव (स)।
८. भ० १।४२०।
९. स० पा०—एवमाइक्खामि जाव परूवेमि।

ज समय इहभवियाउय पकरेति, णो त समयं परभवियाउय पकरेति ।
ज समय परभवियाउय पकरेति, णो त समय इहभवियाउयं पकरेति ।
इहभवियाउयस्स पकरणताए णो परभवियाउयं पकरेति ।
परभवियाउयस्स पकरणताए णो इहभवियाउय पकरेति ।
एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग आउय पकरेति, तं जहा—इहभवियाउय वा, परभवियाउय वा ॥

४२२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगव गोयमे जाव[1] विहरति ॥

कालासवेसियपुत्त-पदं

४२३. तेण कालेण तेण समएण पासावच्चिज्जे कालासवेसियपुत्ते णाम अणगारे जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते[2] एवं वयासी—
थेरा सामाइय न याणति, थेरा सामाइयस्स अट्ठ न याणति ।
थेरा पच्चक्खाण न याणति, थेरा पच्चक्खाणस्स अट्ठं न याणति ।
थेरा संजम न याणंति, थेरा सजमस्स अट्ठ न याणति ।
थेरा सवर न याणति, थेरा सवरस्स अट्ठ न याणति ।
थेरा विवेग न याणति, थेरा विवेगस्स अट्ठ ण याणति ।
थेरा विउस्सग्ग न याणति, थेरा विउस्सग्गस्स अट्ठ न याणति ॥

४२४. तए ण थेरा भगवतो कालासवेसियपुत्त अणगार एवं वदासी—
जाणामो ण अज्जो ! सामाइय, जाणामो णं अज्जो ! सामाइयस्स[3] अट्ठ[4] ।
•जाणामो ण अज्जो ! पच्चक्खाण, जाणामो णं अज्जो ! पच्चक्खाणस्स अट्ठं ।
जाणामो ण अज्जो ! सजम, जाणामो णं अज्जो ! सजमस्स अट्ठ ।
जाणामो ण अज्जो ! सवर, जाणामो ण अज्जो ! सवरस्स अट्ठ ।
जाणामो ण अज्जो ! विवेग, जाणामो ण अज्जो ! विवेगस्स अट्ठ ।
जाणामो ण अज्जो ! विउस्सग्ग°, जाणामो ण अज्जो ! विउस्सग्गस्स अट्ठ ॥

४२५. तते ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे ते थेरे भगवते एव वयासी—जइ[5] णं अज्जो ! तुब्भे जाणह सामाइयं, तुब्भे जाणह सामाइयस्स अट्ठ जाव[6] जइ णं अज्जो ! तुब्भे जाणह विउस्सग्ग, तुब्भे जाणह विउस्सग्गस्स अट्ठ । के भे[7]

---

१. भ० १।५१ ।
२. भगव (अ, व) ।
३. सामातियस्स (ता) ।
४. स० पा०—अट्ठ जाव जाणामो ।
५. जति (अ, क, व, म) ।
६. भ० १।४२३ ।
७. ते (व, म) ।

अज्जो ! सामाइए ? के भे अज्जो ! सामाइयस्स अट्ठे ? जाव के भे अज्जो ! विउस्सग्गे ? के भे अज्जो ! विउस्सग्गस्स अट्ठे ?

४२६. तए ण थेरा भगवतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी—
आया णे अज्जो ! सामाइए, आया णे अज्जो ! सामाइयस्स अट्ठे[1]।
•आया णे अज्जो ! पच्चक्खाणे, आया णे अज्जो ! पच्चक्खाणस्स अट्ठे ।
आया णे अज्जो ! सजमे, आया णे अज्जो ! सजमस्स अट्ठे ।
आया णे अज्जो ! संवरे, आया णे अज्जो ! सवरस्स अट्ठे ।
आया णे अज्जो ! विवेगे, आया णे अज्जो ! विवेगस्स अट्ठे ।।
आया णे अज्जो ! विउस्सग्गे, आया णे अज्जो ! ° विउस्सग्गस्स अट्ठे ।।

४२७. तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवते एवं वदासी—
जइ भे अज्जो ! आया सामाइए, आया सामाइयस्स अट्ठे जाव[2] आया विउस्सग्गस्स अट्ठे—अवहट्टु कोह-माण-माया-लोभे किमट्ठ अज्जो ! गरहह[3] ?
कालासा[4] ! सजमट्ठयाए ।।

४२८. से भते ! कि गरहा सजमे ? अगरहा सजमे ?
कालासा ! गरहा सजमे, णो अगरहा संजमे। गरहा वि य ण सव्व दोस पविणेति, सव्व बालिय परिण्णाए। एव खु णे आया संजमे उवहिते भवति। एव खु णे आया सजमे उवचिए भवति। एव खु णे आया संजमे उवट्ठिते भवति ।।

४२९. एत्थ ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे सबुद्धे थेरे भगवते वदति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एएसि ण भते ! पयाण पुव्वि अण्णाणयाए असवणयाए अबोहीए[5] अणभिगमेण अदिट्ठाण अस्सुयाण अमुयाणं[6] अविण्णायाणं अव्वोकडाण[7] अव्वोच्छिण्णाण अणिज्जूढाण अणुवधारियाण एयमट्ठे नो सद्दहिए नो पत्तिइए नो रोइए।

इदाणि भते ! एतेसि पयाणं जाणयाए सवणयाए बोहीए अभिगमेणं दिट्ठाणं सुयाण मुयाण[8] विण्णायाणं वोगडाण वोच्छिण्णाण णिज्जूढाण उवधारियाण[9] एयमट्ठ सद्दहामि पत्तियामि रोएमि। एवमेय से जहेय[10] तुब्भे वदह ।।

४३०. तए ण ते थेरा भगवतो कालासवेसियपुत्त अणगार एव वयासी—सद्दहाहि

१. स० पा०—अट्ठे जाव विउस्सग्गस्स ।
२. भ० १।४२३ ।
३ गरहह (व) ।
४. कालास (स) ।
५. अबोहियाए (अ, स) ।
६ असुयाणं (म), वृत्तौ 'अस्मृताना' इति व्याख्यातमस्ति ।
७. अव्वोगडाण (अ,व,स); अवोकडाण (क,म) ।
८. सुयाण (व); × (म) ।
९. अवधारियाण (म) ।
१०. जहेद (ता) ।

अज्जो ! पत्तियाहि अज्जो ! रोएहि अज्जो ! से जहेय अम्हे वदामो ॥

४३१. तए ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवते वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एवं वदासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंच-महव्वइय सपडिक्कमणं धम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए।
अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध[1] ॥

४३२. तए ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवते वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता चाउज्जामाओ धम्माओ पचमहव्वइय सपडिक्कमणं धम्मं उवसपज्जित्ता ण विहरति ॥

४३३. तए ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुडभावे अण्हाणय अदतवणय[2] अच्छत्तय अणोवाहणय भूमिसेज्जा फलसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोओ बभचेरवासो परघरप्पवेसो लद्धावलद्धी उच्चावया गामकटगा बावीस परिसहोवसग्गा अहियासिज्जति, तमट्ठ आराहेइ, आराहेत्ता चरमेहिं उस्सास-नीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे[3] सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

अपच्चक्खाणकिरिया-पदं

४३४. भते ति ! भगव गोयमे समण भगवं महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वदासी—से नूण भते ! सेट्ठियस्स[4] य तणुयस्स य किवणस्स[5] य खत्तियस्स य 'समा चेव'[6] अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ?
हता गोयमा ! सेट्ठियस्स[7] •य तणुयस्स य किवणस्स य खत्तियस्स य समा चेव° अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ॥

४३५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सेट्ठियस्स य तणुयस्स य किवणस्स य खत्तियस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ?
गोयमा ! अविरति पडुच्च। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सेट्ठियस्स य तणुयस्स[8] •य किवणस्स य खत्तियस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया° कज्जइ ॥

आहाकम्म-पदं

४३६. 'आहाकम्म ण'[9] भुजमाणे समणे निग्गथे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?

१. कुरुष्व इति गम्यम् (वृ)।
२. अदंतवण्णयं (क); अदतघुवणय (ता, ब, स)।
३. परिणिव्वुए (अ, ता, ब); परिणिव्वुते (क, म)।
४. सेट्ठिस्स (ता, ब), सिट्ठिस्स (म)।
५. किविणस्स (ता)।
६ समच्चेव (ब, म)।
७ स० पा०—सेट्ठियस्स जाव अपच्चक्खाण°।
८. स० पा०—तणुयस्स जाव कज्जइ।
९. आहाकम्मे ण (क), आहाकम्म ण (ता), आहाकम ण (ब), आहाकम्मणं (म)।

गोयमा ! आहाकम्मं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ[1], °हस्सकालठिइयाओ दीहकालठिइयाओ पकरेइ, मंदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ बहुप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, अस्सायावेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं° अणुपरियट्टइ ॥

४३७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—आहाकम्मं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ जाव[2] चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टइ ?

गोयमा ! आहाकम्मं णं भुंजमाणे आयाए धम्मं अइक्कमइ, आयाए धम्मं अइक्कममाणे पुढविकायं णावकंखइ[3], °आउकायं णावकंखइ, तेउकायं णावकंखइ, वाउकायं णावकंखइ, वणस्सइकायं णावकंखइ°, तसकायं णावकंखइ, जेसिं पि य णं जीवाणं सरीराइं आहारमाहारेइ ते वि जीवे णावकंखइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—आहाकम्मं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ जाव चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टइ ॥

फासु-एसणिज्ज-पदं

४३८. फासु-एसणिज्जं णं भंते ! भुंजमाणे समणे निग्गंथे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?

गोयमा ! फासु-एसणिज्जं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ, °[4]दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ, बहुप्पएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, अस्सायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणादीयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं° वीईवयइ ॥

४३९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—फासु-एसणिज्जं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ जाव[5] चाउरंतं संसारकंतारं वीईवयइ ?

गोयमा ! फासु-एसणिज्जं णं भुंजमाणे समणे निग्गंथे आयाए धम्मं

---

१. सं० पा०—पकरेइ जाव अणुपरियट्टइ ।
२. भ० १।४३६ ।
३. सं० पा०—णावकंखइ जाव तसकायं ।
४. सं० पा०—जहा संवुडे, नवरं आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ सिय णो बंधइ सेसं तहेव जाव वीईवयइ ।
५. भ० १।४३८ ।

नाइक्कमइ, आयाए धम्मं अणइक्कममाण पुढविकायं[1] अवकंखइ जाव[2] तसकायं अवकंखइ, जेसिं पि य णं जीवाणं सरीराइं (आहारं ?[3]) आहारेइ ते वि जीवे अवकंखइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—फासु-एसणिज्ज णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ धणियवधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ जाव[4] चाउरंतं संसारकंतारं वीईवयइ ॥

४४०. से नूणं भंते ! अथिरे पलोट्टइ, नो थिरे पलोट्टइ ? अथिरे भज्जइ, नो थिरे भज्जइ ? सासए बालए, बालियत्तं असासयं ? सासए पंडिए, पंडियत्त असासयं ?

हंता गोयमा ! अथिरे पलोट्टइ[5], •नो थिरे पलोट्टइ। अथिरे भज्जइ, नो थिरे भज्जइ। सासए बालए, बालियत्तं असासयं। सासए पंडिए°, पंडियत्त असासयं ॥

४४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[6] विहरइ ॥

दसमो उद्देसो

परसमयवत्तव्वया-पदं

४४२. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति[7], •एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं° परूवेंति—

एवं खलु चलमाणे अचलिए[8]। •उदीरिज्जमाणे अणुदीरिए। वेदिज्जमाणे अवेदिए। पहिज्जमाणे अपहीणे। छिज्जमाणे अच्छिण्णे। भिज्जमाणे अभिण्णे। दज्झमाणे अदड्ढे। मिज्जमाणे अमए°। निज्जरिज्जमाणे अणिज्जिण्णे।

दो परमाणुपोग्गला एगयओ[9] न[10] साहण्णंति,

कम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ न साहण्णति ?

दोण्हं परमाणुपोग्गलाणं नत्थि सिणेहकाए, तम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ न साहण्णंति।

---

१. पुढविक्कायं (ता, म, स)।
२. म० १।४३७।
३. द्रष्टव्यं—म० १।४३७ सूत्रम्।
४. म० १।४३८।
५. सं० पा०—पलोट्टइ जाव पंडियत्त।
६. म० १।५१।
७. सं० पा०—एवमाइक्खति जाव परूवेंति।
८. सं० पा०—अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे।
९. एगतत्तो (क, म); एगतओ (ता)।
१०. णो (ता)।

तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति,
कम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति ?

तिण्हं परमाणुपोग्गलाणं अत्थि सिणेहकाए, तम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति ।

ते भिज्जमाणा 'दुहा वि'[1], तिहा[2] वि कज्जंति ।

दुहा कज्जमाणा[3] एगयओ दिवड्ढे परमाणुपोग्गले भवइ—एगयओ वि दिवड्ढे परमाणुपोग्गले भवइ ।

तिहा कज्जमाणा तिण्णि परमाणुपोग्गला भवंति । एवं[4] चत्तारि ।

पंच परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, एगयओ साहणित्ता[5] दुक्खत्ताए कज्जंति । दुक्खे वि य णं से सासए सया समितं[6] उवचिज्जइ य, अवचिज्जइ य ।

पुव्विं[7] भासा भासा । भासिज्जमाणी भासा अभासा । भासासमयवितिक्कंतं च णं भासिया भासा ।

जा सा पुव्विं भासा भासा । भासिज्जमाणी भासा अभासा । भासासमय-वितिक्कंतं च णं भासिया भासा । सा किं भासओ भासा ? अभासओ भासा ?

अभासओ णं सा भासा । नो खलु सा भासओ भासा ।

पुव्विं किरिया दुक्खा । कज्जमाणी किरिया अदुक्खा । किरियासमय-वितिक्कंतं च णं कडा किरिया दुक्खा ।

जा सा पुव्विं किरिया दुक्खा । कज्जमाणी किरिया अदुक्खा । किरिया-समयवितिक्कंतं च णं कडा किरिया दुक्खा । सा किं करणओ दुक्खा ? अकरणओ दुक्खा ?

अकरणओ णं सा दुक्खा । नो खलु सा करणओ दुक्खा—सेवं वत्तव्वं सिया ।

अकिच्चं दुक्खं, अफुसं दुक्खं, अकज्जमाणकडं दुक्खं, अकट्टु-अकट्टु पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदणं वेदेंति—इति वत्तव्वं सिया ।।

ससमयवत्तव्वया-पदं

४४३—से कहमेयं भंते ! एवं ?

---

१. दुविहा (व) ।
२. तिविहा (व, स) ।
३. किज्जमाणा (व) ।
४. एवं जाव (अ, क, ता, व, म, स); अत्र 'जाव' पदं प्रवाहपतितमायातमिति संभाव्यते । किं च अनेनात्र किञ्चित् ग्राह्यं नास्ति ।
५. साहणित्ता (ता, व) ।
६. समियं (अ, म) ।
७. पुव्वं (क, म, स) ।

गोयमा ! जण्ण[1] ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव[2] वेदण वेदेति—इति वत्तव्व सिया ।

जे ते एवमाहसु, मिच्छा[3] ते एवमाहसु । अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, एव भासेमि, एव पण्णवेमि, एवं परूवेमि—एव खलु चलमाणे चलिए[4]। •उदीरिज्जमाणे उदीरिए । वेदिज्जमाणे वेदिए । पहिज्जमाणे पहीणे । छिज्जमाणे छिण्णे । भिज्जमाणे भिण्णे । दज्झमाणे दड्ढे । मिज्जमाणे मए° । निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे ।

दो परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति,

कम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति ?

दोण्ह परमाणुपोग्गलाणं अत्थि सिणेहकाए, तम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति।

ते भिज्जमाणा दुहा कज्जंति । दुहा कज्जमाणा एगयओ परमाणुपोग्गले—एगयओ परमाणुपोग्गले भवति ।

तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति,

कम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति ?

तिण्ह परमाणुपोग्गलाण अत्थि सिणेहकाए, तम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति ।

ते भिज्जमाणा दुहा वि, तिहा वि कज्जति । दुहा कज्जमाणा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे भवति ।

तिहा कज्जमाणा तिण्णि परमाणुपोग्गला भवति । एव[5] चत्तारि[6] ।

पंच परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति । एगयओ साहणित्ता खधत्ताए कज्जति । खधे वि य ण से असासए सया समित उवचिज्जइ य, अवचिज्जइ य । पुव्वि भासा अभासा, भासिज्जमाणी भासा भासा, भासासमयवितिक्कत च ण भासिया भासा अभासा ।

---

१. ज ण (ता) ।

२. भ० १।४४२ ।

३. मिच्छ (ता) ।

४. स० पा०—चलिए जाव निज्जरिज्जमाणे ।

५. एव जाव (अ, क, ता, व, म, स), अत्र 'जाव' पद प्रवाहपतितमायातमिति संभाव्यते । किं च अनेनात्र किञ्चित् ग्राह्य नास्ति ।

६. अस्य पाठस्य रचना एव संभाव्यते—
चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति,
कम्हा चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति ?
चउण्ह परमाणुपोग्गलाण अत्थि सिणेहकाए, तम्हा चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति ।
ते भिज्जमाणा दुहा वि, तिहा वि,चउहा वि

जा सा पुव्वि भासा अभासा। भासिज्जमाणी भासा भासा, भासासमय-वितिक्कत च ण भासिया भासा अभासा। सा कि भासओ भासा ? अभासओ भासा ?

भासओ ण भासा, नो खलु सा अभासओ भासा।

पुव्वि किरिया अदुक्खा।[1] •कज्जमाणी किरिया दुक्खा। किरियासमय-वितिक्कत च ण कज्जमाणी किरिया अदुक्खा।

जा सा पुव्वि किरिया अदुक्खा। कज्जमाणी किरिया दुक्खा। किरिया-समयवितिक्कत च ण कज्जमाणी किरिया अदुक्खा। सा कि करणओ दुक्खा ? अकरणओ दुक्खा ?०

करणओ ण सा दुक्खा। नो खलु सा अकरणओ दुक्खा—सेव वत्तव्व सिया। किच्च दुक्ख, फुस दुक्ख, कज्जमाणकड दुक्ख, कट्टु-कट्टु पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदण वेदेति—इति वत्तव्व सिया॥

इरियावहिया-सपराइया-पद

४४४. अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति[2], •एव भासति, एवं पण्णवेति, एव परूवेति०—एव खलु एगे जीवे एगेणं समएण दो किरियाओ पकरेति, तं जहा—इरियावहिय[3] च, सपराइय च।

ज समय इरियावहिय पकरेइ, त समय सपराइय पकरेइ।

•[4]ज समय सपराइय पकरेइ, त समय इरियावहियं पकरेइ।

इरियावहियाए पकरणयाए सपराइय पकरेइ।

सपराइयाए पकरणयाए इरियावहिय पकरेइ।

एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो किरियाओ पकरेति, त जहा—इरिया-वहिय च, सपराइय च॥

४४५. से कहमेयं भते ! एव ?

गोयमा ! जण्ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति, एव भासति, एव पण्णवेति,

---

कज्जति। दुहा कज्जमाणा एगयओ दुपएसिए खधे—एगयओ वि दुपएसिए खधे। अहवा एगयओ तिपएसिए खधे—एगयओ परमाणु-पोग्गले भवइ।

तिहा कज्जमाणा एगयओ दुपएसिए खधे—एगयओ एगे-एगे परमाणुपोग्गले भवइ।

चउहा कज्जमाणा चत्तारि परमाणुपोग्गला भवति।

१ स० पा०—जहा भासा तहा भाणियव्वा किरिया वि जाव करणओ।

२ स० पा०—एवमाइक्खति जाव एव।

३. रिया० (अ, ता, व, म)।

४ स० पा०—परउत्थियवत्तव्व णेयत्व ससमय-वत्तव्वयाए णेयव्व जाव इरियावहियं, 'क', 'ता' सकेतितयोरादर्शयोर्वृत्तौ च सक्षिप्तपाठो लभ्यते। शेषादर्शेषु वृत्तिकृता विस्तारं नीतः

एव परूवेंति—एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो किरियाओ पकरेति, जाव[1] इरियावहिय च, सपराइय च ।

जे ते एवमाहसु । मिच्छा ते एवमाहसु । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, एव भासेमि, एव पण्णवेमि, एवं परूवेमि—एवं खलु एगे जीवे एगेण समएणं एक्क किरिय पकरेइ, त जहा—इरियावहिय वा, सपराइय वा ।

ज समय इरियावहिय पकरेइ, नो त समय सपराइयं पकरेइ ।

ज समय सपराइय पकरेइ नो त समय इरियावहिय पकरेइ ।

इरियावहियाए पकरणयाए नो सपराइयं पकरेइ ।

सपराइयाए पकरणयाए नो इरियावहिय पकरेइ ।

एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग किरिय पकरेइ, त जहा°—इरियावहिय वा, सपराइय वा ।।

उपपात-पदं

४४६. निरयगई ण भते ! केवतिय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ।।

३४७ एव वक्कतीपय[2] भाणियव्व निरवसेस ।।

४४८. सेवं भते ! सेव भते त्ति जाव[3] विहरइ ।।

पाठो दृश्यते । अत्र च १।४२०, ४२१ सूत्रानुसारेण स पूर्ति नीतोस्ति ।

१. भ० १।४४४ ।

२. प० ६ ।

३ भ० १।५१ ।

बीअं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१ 'ऊसास खंदए वि य, २ समुग्घाय ३,४ पुढविंदिय ५ अण्णउत्थि ६ भासा य।
७ देवा य ८ चमरचंचा, ९,१० समयक्खित्तत्थिकाय बीयसए'[1] ॥१॥

उक्खेव-पदं

१ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं नयरे होत्था—वण्णओ[2]। सामी समोसढे। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। पडिगया परिसा॥

सासुस्सास-पदं

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव[3] पज्जुवासमाणे एवं वदासी—
जे इमे भंते! बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया जीवा, एएसि णं आणामं वा पाणामं वा उस्सासं वा निस्सासं वा जाणामो पासामो।
जे इमे पुढविकाइया जाव[4] वणप्फइकाइया—एगिंदिया जीवा, एएसि णं आणामं वा पाणामं वा उस्सासं वा निस्सासं वा न याणामो न पासामो।
एए णं भंते! जीवा आणमंति वा? पाणमंति वा? ऊससंति वा? नीससंति वा?

हंता गोयमा! एए वि णं जीवा आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा॥

---

१. × (अ, ता, व, म, स)।
२. ओ० सू० १।
३. भ० १।९, १०।
४. भ० १।४३७।

३. किण्ण[1] भंते ! एते जीवा आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?
गोयमा ! दव्वओ[2] अणंतपएसियाइं दव्वाइं, खेत्तओ असंखेज्जपएसोगाढाइं, कालओ अण्णयरठितियाइं[3], भावओ वण्णमंताइं गंधमंताइं रसमंताइं फासमंताइं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा ॥

४ जाइं भावओ वण्णमंताइं आणमंति वा, पाणमंति वा ऊससंति वा, नीससंति वा ताइं किं एगवण्णाइं[4] •जाव[5] किं पंचवण्णाइं आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?
गोयमा ! ठाणमग्गणं पडुच्च एगवण्णाइं पि जाव[6] पंचवण्णाइं पि आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा। विहाणमग्गणं पडुच्च कालवण्णाइं पि जाव सुक्किलाइं पि आणमंति वा, पणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा । आहारगमो नेयव्वो[7] जाव—

५. पुढविकाइया णं भंते ! कइदिसं आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?
गोयमा ! निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउदिसिं सिय पंचदिसिं° ॥

६. किण्णं भंते ! नेरइया आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?
तं चेव जाव[8] नियमा छद्दिसिं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा ॥

७. जीव-एगिंदिया वाघाय-निव्वाघाया च भाणियव्वा[9]। सेसा नियमा छद्दिसिं ॥

८. वाउयाए णं भंते ! वाउयाए चेव आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?
हंता गोयमा ! वाउयाए णं[10] •वाउयाए चेव आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा°, नीससंति वा ॥

वाउकायस्स कायट्ठिइ-पदं

९. वाउयाए णं भंते ! वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाति ?

---

१. किं ण (ता) ।
२. दव्वओ णं (अ, म, स) ।
३. °ठितीयाइं (अ, क, ता, ब, म, स) ।
४. सं० पा०—एगवण्णाइं आणमंति वा पाण-मंति वा ऊससंति वा नीससंति वा आहार-गमो नेयव्वो जाव पंचदिसं ।
५, ६, ७ प० २८।१ ।
८ प० २८।१ ।
९. प० २८।१ ।
१०. सं० पा०—वाउयाए णं जाव नीससंति ।

हंता गोयमा[1] ! °वाउयाए णं वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो° पच्चायाति ॥

१०. से भंते ! किं पुट्ठे उद्दाति ? अपुट्ठे उद्दाति ?
गोयमा ! पुट्ठे उद्दाति, नो अपुट्ठे उद्दाति ॥

११ से भंते ! किं ससरीरी निक्खमइ ? असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥

१२ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! वाउयायस्स णं चत्तारि सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए, वेउव्विए, तेयए, कम्मए। ओरालिय-वेउव्वियाइं विप्पजहाय तेयय-कम्मएहिं निक्खमइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥

मडाइ-नियंठ-पदं

१३. मडाई[2] णं भंते ! नियंठे नो निरुद्धभवे, नो निरुद्धभवपवंचे[3], नो पहीणसंसारे, नो पहीणसंसारवेयणिज्जे, नो वोच्छिण्णसंसारे, नो वोच्छिण्णसंसारवेयणिज्जे, नो निट्ठियट्ठे, नो निट्ठियट्ठकरणिज्जे पुणरवि इत्थत्थं[4] हव्वमागच्छइ ?
हंता गोयमा ! मडाई णं नियंठे नो निरुद्धभवे, नो निरुद्धभवपवंचे, नो पहीणसंसारे, नो पहीणसंसारवेयणिज्जे, नो वोच्छिण्णसंसारे, नो वोच्छिण्ण-संसारवेयणिज्जे, नो निट्ठियट्ठे, नो निट्ठियट्ठकरणिज्जे पुणरवि इत्थत्थं[4] हव्वमागच्छइ ॥

१४. से णं भंते ! किं ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! पाणे त्ति वत्तव्वं सिया। भूए त्ति वत्तव्वं सिया। जीवे त्ति वत्तव्वं सिया। सत्ते त्ति वत्तव्वं सिया। विण्णु[5] त्ति वत्तव्वं सिया। 'वेदे त्ति'[6] वत्तव्वं सिया। पाणे भूए जीवे सत्ते विण्णू वेदे त्ति वत्तव्वं सिया ॥

१५. से केणट्ठेणं पाणे त्ति वत्तव्वं सिया जाव वेदे त्ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! जम्हा आणमइ वा, पाणमइ वा, उस्ससइ वा, नीससइ वा तम्हा पाणे त्ति वत्तव्वं सिया।
जम्हा भूते भवति भविस्सति य तम्हा भूए त्ति वत्तव्वं सिया।

---

१. स० पा०—गोयमा जाव पच्चायाति।
२. मडादी (ता)।
३. ° पवधे (व)।
४. इत्थत्त (अ, ता, व, स, वृपा), इत्तत्थं (क); वृत्तौ 'इत्थत्थं—एनमर्थम्' इति व्याख्यातमस्ति, तेन तत्रापि इत्तत्थमिति पाठः संभाव्यते।
५. विन्नुय (व)।
६. वेदाति (क, ता, व, म)।

जम्हा जीवे जीवति[1], जीवत्त आउयं च कम्म उवजीवति[2] तम्हा जीवे त्ति वत्तव्व सिया।

जम्हा सत्ते सुभासुभेहि कम्मेहि तम्हा सत्ते त्ति वत्तव्व सिया।

जम्हा 'तित्तकडुकसायंबिलमहुरे रसे'[3] जाणइ तम्हा विण्णु त्ति वत्तव्व सिया।

जम्हा वेदेति य सुह-दुक्खं तम्हा वेदे त्ति वत्तव्व सिया। से तेणट्ठेणं[4] पाणे त्ति वत्तव्वं सिया जाव वेदे त्ति वत्तव्व सिया॥

१६. मडाई णं भते ! नियठे निरुद्धभवे, निरुद्धभवपवचे[5], •पहीणससारे, पहीणसंसार-वेयणिज्जे, वोच्छिण्णससारे, वोच्छिण्णसंसारवेयणिज्जे, निट्ठियट्ठे°, निट्ठियट्ठकरणिज्जे नो पुणरवि इत्थत्थं हव्वमागच्छइ ?

हता गोयमा ! मडाई णं नियठे[6] •निरुद्धभवे, निरुद्धभवपवचे, पहीणससारे, पहीणससारवेयणिज्जे, वोच्छिण्णससारे, वोच्छिण्णससारवेयणिज्जे, निट्ठियट्ठे, निट्ठियट्ठकरणिज्जे° नो पुणरवि इत्थत्थ हव्वमागच्छइ॥

१७. से ण भते ! कि ति वत्तव्व सिया ?

गोयमा ! सिद्धे त्ति वत्तव्व सिया। बुद्धे त्ति वत्तव्वं सिया। मुत्ते त्ति वत्तव्व सिया। पारगए त्ति वत्तव्वं सिया। परंपरगए त्ति वत्तव्व सिया। सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिव्वुडे अतकडे[7] सव्वदुक्खप्पहीणे त्ति वत्तव्व सिया॥

१८. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति भगव गोयमे समणं भगव महावीर वंदति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति॥

१९. तए ण समणे भगव महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइआओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ॥

खदयकहा-पदं

२०. तेण कालेणं तेण समएण कयगला नाम नगरी होत्था—वण्णओ[8]॥

२१. तीसे णं कयगलाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए छत्तपलासए नामं चेइए होत्था—वण्णओ[9]॥

२२. तए ण समणे भगव महावीरे उप्पन्ननाणदसणधरे[10] •अरहा जिणे केवली जेणेव कयंगला नयरी जेणेव छत्तपलासए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

१. जीवेति (क)।
२. उवजीवेइ (ब)।
३. °कटु° (ब); °महुररसे (ता, म)।
४. तेणट्ठेणं जाव (अ, क, ता, ब, म)।
५. स० पा०—निरुद्धभवपवचे जाव निट्ठिय°।
६. स० पा०—नियठे जाव नो।
७. अतगडे (क)।
८. ओ० सू० १।
९. ओ० सू० २-१३।
१०. स० पा०—उप्पन्ननाणदसणधरे जाव समोसरणं।

अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ जाव[1] समोसरणं । परिसा निग्गच्छइ ॥

२३. तीसे णं कयंगलाए नयरीए अदूरसामंते सावत्थी नामं नयरी होत्था—वण्णओ[2] ॥

२४. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए गद्दभालस्स[3] अंतेवासी खंदए[4] नामं कच्चायणसगोत्ते परिव्वायगे परिवसइ[5]-रिव्वेद[6]-जजुव्वेद-सामवेद-अहव्वणवेद[7]-इतिहास-पंचमाणं निघंटुछट्ठाणं—चउण्हं वेदाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं सारए धारए[8] पारए सडंगवी सट्ठितंतविसारए, संखाणे सिक्खा-कप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोतिसामयणे[9], अण्णेसु य बहूसु बंभण्णएसु[10] परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए या वि होत्था ॥

२५ तत्थ णं सावत्थीए नयरीए पिंगलए नामं नियंठे वेसालियसावए[11] परिवसइ ॥

२६ तए णं से पिंगलए नामं नियंठे वेसालियसावए अण्णया कयाइ[12] जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खंदगं कच्चायणसगोत्तं इणमक्खेवं पुच्छे—मागहा[13] !

१ किं सअंते[14] लोए ? अणंते लोए ? २. सअंते जीवे ? अणंते जीवे ? ३ सअंता सिद्धी ? अणंता सिद्धी ? ४. सअंते सिद्धे ? अणंते सिद्धे ? ५. केण वा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ?—एतावंताव[15] आइक्खाहि वुच्चमाणे एवं ॥

२७ तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसावएणं इणमक्खेवं पुच्छिए समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने णो संचाएइ पिंगलयस्स नियंठस्स वेसालियसावयस्स किंचि वि पमोक्खमक्खाइउं, तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

२८ तए णं से पिंगलए नियंठे वेसालियसावए खंदयं कच्चायणसगोत्तं दोच्चं पि तच्चं पि इणमक्खेवं पुच्छे—मागहा !

---

१. ओ० सू० १६-५१ ।
२. ओ० सू० १ ।
३. गद्दभालिस्स (व) ।
४. खडए (व) ।
५. वसइ (अ) ।
६. रिउव्वेद (अ, व, स); रिजुव्वेद (क) ।
७. अथव्वण० (अ); अरथव्वेय (क), अथव्ववेद (ता, म), अहव्वेद (व) ।
८. आरए धारए (अ, क, म, स); वारए (ब, वृ); धारए (वृपा) ।
९. जोतिसांअयणे (ता) ।
१०. बम्हण्णए (क) ।
११. वेसालीसावए (क, ता); वेसालियस्सावए (म) ।
१२. कयाए (स) ।
१३. मागधा (ता) ।
१४. संते (ता) ।
१५. एतावता (अ, क, व); एत्तावताव (ता, म) ।

१. किं सअंते लोए[1] ? °अणंते लोए ? २. सअंते जीवे ? अणंते जीवे ? ३. सअंता सिद्धी ? अणंता सिद्धी ? ४. सअंते सिद्धे ? अणंते सिद्धे ?° ५. केण वा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ?—एतावताव आइक्खाहि वुच्चमाणे एवं ।।

२९. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसावएणं दोच्चं पि तच्चं पि इणमक्खेवं पुच्छिए समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए[2] भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने णो संचाएइ पिंगलस्स नियंठस्स वेसालियसावयस्स किंचि वि पमोक्खमक्खाइउं, तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

३०. तए णं सावत्थीए नयरीए सिंघाडग[3]-°तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु महया जणसंमद्दे[4] इ वा जणवूहे इ वा[5] °जणबोले इ वा जणकलकले इ वा जणुम्मी इ वा जणुक्कलिया इ वा जणसण्णिवाए इ वा बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एवं भासेइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ—

एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे आइगरे जाव[6] सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपाविउकामे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इहसंपत्ते इहसमोसढे इहेव कयंगलाए नयरीए बहिया छत्तपलासए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

तं महप्फलं खलु भो देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्सवि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्सवि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो । एयं णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु बहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता एवं दुप्पडोयारेणं—राइण्णा खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई लेच्छईपुत्ता, अण्णे य बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितओ जाव[7] महया उक्किट्ठसीहनाय-बोल-कलकलरवेणं पक्खुभियमहासमुद्दरवभूयं पिव करेमाणा सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं° निग्गच्छंति ।।

३१. तए णं तस्स खंदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—

---

१. सं० पा०—लोए जाव केण ।
२. ° गिंछिए (अ) ।
३. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।
४. ° सद्दे (अ, म, वृपा) ।
५. सं० पा०—जणवूहे इ वा परिसा निग्गच्छइ ।
६. भ० १।७ ।
७. ओ० सू० ५२ ।

'एवं खलु समणे भगवं महावीरे कयंगलाए नयरीए बहिया छत्तपलासए चेइए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसामि'[1]। सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता, नमंसित्ता सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासित्ता इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं[2] वागरणाइं पुच्छित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिदंडं च कुंडियं च कंचणियं च करोडियं च भिसियं च केसरियं च छण्णालयं[3] च अंकुसयं च पवित्तयं[4] च गणेत्तियं च छत्तयं च वाहणाओ[5] य पाउयाओ[6] य धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तिदंड-कुंडिय-कंचणिय-करोडिय-भिसिय-केसरिय-छण्णालय-अंकुसय-पवित्तय-गणेत्तियहत्थगए, छत्तोवाहणसंजुत्ते, धाउरत्तवत्थपरिहिए सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कयंगला नगरी, जेणेव छत्तपलासए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

३२ गोयमाइ[7]! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—
दच्छिसि णं गोयमा! पुव्वसंगइयं।
कं[8] भंते!?
खंदयं नाम।
से काहे वा? किह वा? केवच्चिरेण वा?

३३ एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नगरी होत्था—वण्णओ[10]। तत्थ णं सावत्थीए नयरीए गद्दभालस्स अंतेवासी खंदए नामं कच्चायणसगोत्ते परिव्वायए परिवसइ। तं चेव जाव[11] जेणेव ममं अंतिए, तेणेव पहारेत्थ गमणाए। से अदूरागते[12] बहुसंपत्ते अद्धाणपडिवण्णे अंतरा पहे वट्टइ। अज्जेव णं दच्छिसि[13] गोयमा!

३४. भंतेति! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—पहू णं भंते! खंदए कच्चायणसगोत्ते देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे

---

१. × (क, ता, ब)।
२. × (अ, ब, म)।
३. छण्हालय (ता)।
४ पवित्तिय (क)।
५. पाहणाओ (ता)।
६. ओवाइय (सू० ११७) सूत्रे 'पाउयाओ' इति पदं नास्ति, प्रस्तुतप्रकरणे पि किंचिदग्रे 'छत्तोवाहणसंजुत्ते' इत्यत्रापि तन्नास्ति।
७. ° वाणह° (क)।
८. ° दि (क, ता, म)।
९. कं तं (अ, क, ता)।
१०. ओ० सू० १।
११. भ० २।२५-३१।
१२. अदूराइते (क); अदूरियाते (ब)।
१३. दिच्छसि (अ, स); दच्छसि (म)।

भवित्ता[1] अगाराओ[2] अणगारियं पव्वइत्तए ?

हंता पभू ॥

३५. जावं च णं समणे भगवं महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठं परिकहेइ, तावं च णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते तं देसं हव्वमागए ॥

३६. तए णं भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं अदूरागतं[3] जाणित्ता खिप्पामेव अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता खिप्पामेव पच्चुवगच्छइ,[4] जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी—हे खंदया ! सागयं खंदया ! सुसागयं खंदया ! अणुरागयं[5] खंदया ! सागयमणुरागयं खंदया ! से नूणं तुमं खंदया ! सावत्थीए नयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालिय-सावएणं इणमक्खेवं पुच्छिए—मागहा ! किं सअंते लोगे ? अणंते लोगे ? एवं तं चेव जाव[6] जेणेव इहं, तेणेव हव्वमागए । से नूणं खंदया ! 'अट्ठे समट्ठे' ?[7]

हंता अत्थि ॥

३७. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—'से केस णं गोयमा'[8] ! तहारूवे नाणी वा तवस्सी वा, जेणं तव एस अट्ठे मम ताव[9] रहस्स-कडे हव्वमक्खाए, जओ णं तुमं जाणसि ?

३८. तए णं से भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी—एवं खलु खंदया ! ममं धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे उप्पण्णनाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी जेणं ममं एस अट्ठे तव ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओ णं अहं जाणामि खंदया !

३९. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—गच्छामो णं गोयमा ! तव धम्मायरियं धम्मोवदेसयं समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो[10] •सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासामो ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

४०. तए णं से भगवं गोयमे खंदएणं कच्चायणसगोत्तेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महा-वीरे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४१. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे वियट्टभोई[11] यावि होत्था ॥

---

१. भवित्ता णं (क, ता, ब, स) ।

२. आगाराओ (अ, क, ब, स) ।

३. अदूरआगय (अ, ब, स); अदूरमागत (ता) ।

४. पच्चुगच्छइ (अ, क, ता, म); पत्थुगच्छइ (ब) ।

५. रेफस्य आगमिकत्वात् (वृ) ।

६. भ० २।२६-३५ ।

७-अत्थे समत्थे (क, वृ); अट्ठे समट्ठे (वृपा) ।

८. से केणं गोयमा (अ, व); केस णं गोयमा से (ता) ।

९. आय (ता) ।

१०. सं० पा०—नमंसामो जाव पज्जुवासामो ।

११. वियट्टभोति (अ, ता, ब, म, स) ।

४२. तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स[1] सरीरयं ओरालं सिंगारं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं[2] अणलंकियविभूसियं लक्खण-वंजण-गुणोववेयं सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणं चिट्ठइ ॥

४३. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरयं ओरालं[3] •सिंगारं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं अणलंकियविभूसियं लक्खण-वंजण-गुणोववेयं सिरीए॰ अतीव-अतीव उवसोभेमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए णंदिए[4] पीइमणे[5] परमसोमणस्सिए[6] हरिसवसविसप्पमाणहियए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ[7], •करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे॰ पज्जुवासइ ॥

४४. खंदयाति ! - समणे भगवं महावीरे खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी—से नूणं तुमं खंदया ! सावत्थीए नयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसावएणं इणमक्खेवं पुच्छिए—मागहा !

१. किं सअंते लोए ? अणंते लोए ? २. सअंते जीवे ? अणंते जीवे ? ३. सअंता सिद्धी ? अणंता सिद्धी ? ४. सअंते सिद्धे ? अणंते सिद्धे ? ५. केण वा मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ? एवं तं चेव जाव[8] जेणेव ममं अंतिए तेणेव हव्वमागए। से नूणं खंदया ! अट्ठे समट्ठे ?

हंता अत्थि ॥

४५. जे वि य ते खंदया ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—किं सअंते लोए ? अणंते लोए ?—तस्स वि य णं अयमट्ठे—एवं खलु मए खंदया ! चउव्विहे लोए पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।

दव्वओ णं एगे लोए सअंते।

खेत्तओ णं लोए असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम-विक्खंभेणं, असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं पण्णत्ते, अत्थि पुण से अंते।

कालओ णं लोए न कयाइ न आसी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे नियए[9] सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए निच्चे, नत्थि पुण से अंते।

१. वियट्टाभोगिस्स (ता, व, म)।
२. मंगल्लं सस्सिरीयं (क)।
३. सं॰ पा॰—ओरालं जाव अतीव।
४. × (अ, क, व, म, स)।
५. पीतमणे (अ, स)।
६. परमसोमणसिए (अ, क, ता, व, म, स)।
७. सं॰ पा॰—करेइ जाव पज्जुवासइ।
८. भ॰ २।२६-३५।
९. णितिए (अ, क, ता), णितए (व)।

भावओ णं लोए अणंता वण्णपज्जवा, अणंता गंधपज्जवा, अणंता रसपज्जवा, अणंता फासपज्जवा, अणंता संठाणपज्जवा, अणंता गरुयलहुयपज्जवा, अणंता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अंते ।
सेत्तं खंदगा[१] ! दव्वओ लोए सअंते, खेत्तओ लोए सअंते, कालओ लोए अणंते, भावओ लोए अणंते ॥

४६. जे वि य ते खंदया[२] ! •अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—
किं सअंते जीवे ?° अणंते जीवे ?
तस्स वि य णं अयमट्ठे—एवं खलु[३] •मए खंदया ! चउव्विहे जीवे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ°।
दव्वओ णं एगे जीवे सअंते ।
खेत्तओ णं जीवे असंखेज्जपएसिए, असंखेज्जपएसोगाढे, अत्थि पुण से अंते ।
कालओ णं जीवे न कयाइ न आसी[४], •न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए° निच्चे, नत्थि पुण[५] से अंते ।
भावओ णं जीवे अणंता नाणपज्जवा, अणंता दंसणपज्जवा, अणंता चारित्तपज्जवा, अणंता गरुयलहुयपज्जवा, अणंता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अंते ।
सेत्तं खंदगा ! दव्वओ जीवे सअंते, खेत्तओ जीवे सअंते, कालओ जीवे अणंते, भावओ जीवे अणंते ॥

४७. जे वि य ते खंदया[६] ! •अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—
किं सअंता सिद्धी ? अणंता सिद्धी ?
तस्स वि य णं अयमट्ठे । एवं खलु मए खंदया ! चउव्विहा सिद्धी पण्णत्ता, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ° ।
दव्वओ णं एगा सिद्धी सअंता ।
खेत्तओ णं सिद्धी पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य अउणापन्नजोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ता, अत्थि पुण से अंते ।

---

१. × (क, व) ।
२. सं० पा०—खंदया जाव अणंता ।
३. सं० पा०—खलु जाव दव्वओ ।
४. सं० पा०—आसी जाव निच्चे ।
५. पुणाइ (ता, ब, म) ।
६. सं० पा०—खंदया पुच्छा ।

कालओ णं सिद्धी न कयाइ न आसी[1], •न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ —भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवा नियया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया निच्चा, नत्थि पुण सा अंता ।

भावओ ण सिद्धीए अणता वण्णपज्जवा, अणता गंधपज्जवा, अणंता रसपज्जवा, अणंता फासपज्जवा, अणता संठाणपज्जवा, अणता गरुयलहुयपज्जवा, अणंता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण सा अंता ।

सेत्तं खदया ! °दव्वओ सिद्धी सअंता, खेत्तओ सिद्धी सअंता, कालओ सिद्धी अणंता, भावओ सिद्धी अणता ।।

४८. जे वि य ते खदया[2] ! •अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—

किं सअंते सिद्धे ? अणते सिद्धे ?

तस्स वि य ण अयमट्ठे—एवं खलु मए खदया ! चउव्विहे सिद्धे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।°

दव्वओ ण एगे सिद्धे सअंते ।

खेत्तओ ण सिद्धे असंखेज्जपएसिए, असंखेज्जपएसोगाढे, अत्थि पुण से अंते ।

कालओ णं सिद्धे सादीए, अपज्जवसिए, नत्थि पुण से अंते ।

भावओ णं सिद्धे अणता नाणपज्जवा, अणंता दंसणपज्जवा, अणंता[3] अगरुयलहुय-पज्जवा, नत्थि पुण से अंते ।

सेत्तं खदया ! दव्वओ सिद्धे सअंते, खेत्तओ सिद्धे सअंते, कालओ सिद्धे अणंते, भावओ सिद्धे अणंते ।।

४९ जे वि य ते खदया ! इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए[4] •पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—

केण वा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ?

तस्स वि य ण अयमट्ठे—एव खलु खंदया ! मए दुविहे मरणे पण्णत्ते, तं जहा—बालमरणे य, पंडियमरणे य ।

से किं त बालमरणे ?

बालमरणे दुवालसविहे पण्णत्ते, तं जहा—

१. बलयमरणे २. वसट्टमरणे ३. अंतोसल्लमरणे ४. तब्भवमरणे ५. गिरिपडणे ६. तरुपडणे ७. जलप्पवेसे ८. जलणप्पवेसे ९. विसभक्खणे १० सत्थोवाडणे

---

१. स० पा०—कालओ य भावओ य जहा लोयस्स तहा भाणियव्वा, तत्थ ।
२. स० पा० खदया जाव किं अणते सिद्धे त चेव जाव दव्वओ ।
३. जाव पज्जवा (अ, क, ता, ब, म, स) ।
४ सं० पा०—चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था ।

११ वेहाणसे १२. गद्धपट्ठे—इच्चेतेण खदया ! दुवालसविहेण बालमरणेण मरमाणे जीवे अणतेहि नेरइयभवग्गहणेहि अप्पाणसंजोएइ, अणतेहि तिरियभवग्गहणेहि अप्पाण सजोएइ, अणतेहि मणुयभवग्गहणेहि अप्पाण सजोएइ, अणतेहि देवभवग्गहणेहि अप्पाण सजोएइ, अणाइय च ण अणवदग्ग[1] चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टइ । सेत्त मरमाणे वड्ढइ-वड्ढइ ।

सेत्त बालमरणे ।

से किं तं पडियमरणे ?

पडियमरणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पाओवगमणे[2] य, भत्तपच्चक्खाणे य ।

से कि तं पाओवगमणे ?

पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य । नियमा अप्पडिकम्मे ।

सेत्त पाओवगमणे ।

से कि तं भत्तपच्चक्खाणे ?

भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य । नियमा सपडिकम्मे ।

सेत्त भत्तपच्चक्खाणे ।

इच्चेतेण खंदया ! दुविहेणं पडियमरणेण मरमाणे जीवे अणतेहि नेरइयभवग्गहणेहि अप्पाण विसजोएइ[3], °अणतेहि तिरियभवग्गहणेहि अप्पाणं विसजोएइ, अणतेहि मणुयभवग्गहणेहि अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि देवभवग्गहणेहि अप्पाण विसजोएइ, अणाइय च ण अणवदग्ग चाउरत ससारकतार° वीईवयइ ।

सेत्त मरमाणे हायइ-हायइ ।

सेत्त पडियमरणे ।

इच्चेएण खंदया ! दुविहेण मरणेणंमरमाणे जीवे वड्ढइ वा, हायइ वा ॥

५०. एत्थ ण से खदए कच्चायणसगोत्ते सबुद्धे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं निसामित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध ॥

५१. तए ण समणे भगव महावीरे खदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स, तीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्म परिकहेइ । धम्मकहा भाणियव्वा[4] ॥

---

१. अणवयग्ग (अ, ब); अणवदग्गं (म) ।

२. पाओय० (ता, म) ।

३. सं० पा—विसंजोएइ जाव वीईवयइ ।

४. ओ० सू० ७१-७७ ।

५२. तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[1] •चित्तमाणदिऐ णदिऐ पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिस-वसविसप्पमाण॰हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—
सद्दहामि णं भते ! निग्गथ पावयण,
पत्तियामि णं भते ! निग्गंथं पावयण,
रोएमि णं भते ! निग्गथ पावयण,
अब्भुट्ठेमि ण भते ! निग्गथ पावयण।
एवमेयं भते ! तहमेय भते ! अवितहमेय भते ! असदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते !—से जहेय तुब्भे वदह त्ति कट्टु समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभाय अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तिदड च कुडिय च जाव[2] धाउरत्ताओ य एगते एडेइ, एडेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता[3] •वदइ नमसइ, वदित्ता ॰नमसित्ता एव वयासी—आलित्ते ण भत्ते ! लोए, पलित्ते ण भते ! लोए, आलित्त-पलित्ते ण भते ! लोए जराए मरणेण य।
से जहानामए केइ गाहावई अगारसि झियायमाणसि जे से तत्थ भडे भवइ अप्पभारे[4] मोल्लगरुए[5], त गहाय आयाए एगतमत अवक्कमइ। एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा 'पुरा य'[6] हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ।
एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झ वि आया एगे भडे इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे[7] वेस्सासिए सम्मए 'बहुमए अणुमए'[8] भडकरडगसमाणे, मा ण सीय, मा ण उण्ह, मा ण खुहा, मा ण पिवासा, मा ण चोरा, मा ण वाला, मा ण दसा, मा ण मसया, मा ण वाइय-पित्तिय-सेभिय-सन्निवाइय[9] विविहा रोगायका परीस-

१. स॰ पा॰—हट्ठतुट्ठे जाव हियए, ॰ हिदये (क)।
२. भ॰ २।३१।
३. स॰ पा॰—करेत्ता जाव नमसित्ता।
४. अप्पसारे (अ, क, ता, ब, स, वृ); एतत् परिवर्तन लिपिहेतुक सभाव्यते। वृत्तिकारेण परिवर्तित पाठो लब्ध:, तथैव व्याख्यात.। अथवा वृत्तावपि भारस्य साररूपेण परिवर्तन जात स्यात्। अर्थमीमासया भारपदस्यैवात्र सगतिर्वर्तते।
५. ॰ गुरुए (क, स)।
६. पुराए (अ, ता, व), पुरा (क, म)।
७. थेज्जे (अ), पेज्जे (म)।
८. अणुमए बहुमए (ता)।
९. इह प्रथमाबहुवचनलोपो दृश्य (वृ)।

होवसग्गा[1] फुसतु त्ति कट्टु एस मे[2] नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ।

तं इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! सयमेव पव्वावियं, सयमेव मुडाविय, सयमेव सेहावियं, सयमेव सिक्खाविय, सयमेव आयार-गोयर विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तिय[3] धम्ममाइक्खिय ॥

५३. तए ण समणे भगवं महावीरे खदयं कच्चायणसगोत्त सयमेव पव्वावेइ,[4] °सयमेव मुडावेइ, सयमेव सेहावेइ, सयमेव सिक्खावेइ, सयमेव आयार-गोयरं विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तिय° धम्ममाइक्खइ[5]—एव देवाणुप्पिया ! गतव्व, एव चिट्ठियव्व, एवं निसीइयव्वं, एव तुयट्टियव्व, एव भुजियव्व, एव भासियव्वं, एव उट्ठाय-उट्ठाय पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि सजमेण सजमियव्वं, अस्सि च ण अट्ठे णो किंचि वि[6] पमाइयव्व ॥

५४ तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स इम एयारूव धम्मिय उवएस सम्म सपडिवज्जइ—तमाणाए तह गच्छइ, तह चिट्ठइ, तह निसीयइ, तह तुयट्टइ, तह भुजइ, तह भासइ, तह उट्ठाय-उट्ठाय पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि सजमेण सजमेइ, अस्सि च ण अट्ठे णो पमायइ ॥

५५. तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते अणगारे जाते—इरियासमिए भासासमिए एसणासमिए आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिए मणसमिए वइसमिए कायसमिए मणगुत्ते वइगुत्ते[7] कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबंभयारी चाई लज्जू[8] धन्ने खतिखमे जिइदिए सोहिए अनियाणे अप्पुस्सुए अबहिल्लेसे सुसामण्णरए दते इणमेव निग्गथ पावयण पुरओ काउ विहरइ ॥

५६. तए णं समणे भगव महावीरे कयंगलाओ नयरीओ छत्तपलासाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ ॥

५७. तए ण से खंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाण थेराणं अतिए सामाइयमाइयाइ[9] एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीर वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एव वदासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

---

१. परिस्सहो° (ता, म) ।
२. × (अ, क, ता, ब, म) ।
३. °वित्तिय धुव (क); °वित्तिय (ता,म,स) ।
४. स० पा०—पव्वावेइ जाव धम्म० ।
५. ° माइक्खाइ (अ, ता, ब, स) ।
६. × (अ, ब, स) ।
७. वय° (अ) ।
८. लज्ज (अ, ब) ।
९. सामाइगमादियाति (क, ब), सामातियमातियाइ (स) ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

५८. तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठे जाव[1] नमंसित्ता मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता ण विहरइ ॥

५९. तए णं से खंदए अणगारे मासियं भिक्खुपडिमं अहासुत्त अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं अहासम्मं सम्मं[2] काएण फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ पूरेइ किट्टेइ अणुपालेइ आणाए आराहेइ, सम्मं काएण फासेत्ता[3] °पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता पूरेत्ता किट्टेत्ता अणुपालेत्ता आणाए° आराहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं[4] °महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भते ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं । तं चेव[5] ॥

६०. एवं[6] तेमासिय, चउम्मासियं, पचमासियं, छम्मासियं, सत्तमासियं, पढमसत्तरातिदिय, दोच्चसत्तरातिदियं, तच्चसत्तरातिदिय, रातिदियं[7], एगरातियं[8] ॥

६१. तए णं से खदए अणगारे एगरातिय भिक्खुपडिमं अहासुत्तं जाव[9] आराहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीरं[10] °वंदइ नमंसइ, वदित्ता° नमसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे गुणरयणसवच्छरं[11] तवोकम्मउवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

६२ तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठे जाव[12] नमसित्ता गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसपज्जित्ता णं विहरति, तं जहा—

पढमं मासं चउत्थंचउत्थेणं अणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेण अवाउडेण य ।

दोच्चं मास छट्ठछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेणं अवाउडेण य ।

---

१. भ० २।५२ ।
२. × (ता, म, वृ); समं (म, स), स्थानाङ्गे (७१३) 'अहासम्म' इति पद नास्ति, केवलं 'सम्म' वर्तते ।
३. सं० पा०—फासेत्ता जाव आराहेत्ता ।
४ सं० पा०—भगव जाव नमसित्ता ।
५. भ० २।५८, ५९ । चेव एव दोमासिय (अ, क, ता, व, म, स) ।
६. भ० २।५८-५९ ।
७ अहोरातिंदियं (अ, ता, म, स) ।
८ एगरातिंदिय (अ, क, म, स) ।
९. भ० २।५९ ।
१०. स० पा०—महावीर जाव नमसित्ता ।
११. गुणरयण (क, ता, म, स) ।
१२. भ० २।५२ ।

एव तच्चं मासं अट्ठमअट्ठमेण । चउत्थ मास दसमदसमेण । पचम मासं बारसमबारसमेण । छट्ठं मासं चउद्दसमचउद्दसमेणं । सत्तम मास सोलसमसोलसमेण । अट्ठमं मासं अट्ठारसमअट्ठारसमेण । नवम मास वीसइमवीसइमेणं । दसमं मास बावीसइमबावीसइमेण । एक्कारसमं मास चउवीसइमचउवीसइमेण । बारसमं मास छव्वीसइमंछव्वीसइमेण । तेरसम मासं अट्ठावीसइमंअट्ठावीसइमेण । चउद्दसमं मास तिसइमतिसइमेण । पण्णरसमं मासं बत्तीसइमबत्तीसइमेण । सोलसं मास चोत्तीसइमचोत्तीसइमेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेणं अवाउडेण य ।।

६३ तए ण से खदए अणगारे गुणरयणसवच्छरं तवोकम्म अहासुत्त अहाकप्प जाव[1] आराहेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता बहूहि चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहि, मासद्धमासखमणेहि विचित्तेहि तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

६४. तए ण से खदए अणगारे तेण ओरालेण विउलेणं पयत्तेण पग्गहिएण कल्लाणेण सिवेण धन्नेण मगल्लेण सस्सिरीएण उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेण उदारेण महाणुभागेण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे[2] निम्मसे अट्ठि-चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए[3] किसे धमणिसतए जाए यावि होत्था । जीवजीवेण गच्छइ, जीवजीवेण चिट्ठइ, भास भासित्ता वि गिलाइ, भास भासमाणे गिलाइ, भास भासिस्सामीति गिलाइ । से जहानामए कट्ठसगडिया इ वा, पत्तसगडिया इ वा, पत्त-'तिल-भडगसगडिया'[4] इ वा, एरडकट्ठसगडिया इ वा, इगालसगडिया[5] इ वा—उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद्द गच्छइ, ससद्द चिट्ठइ, एवामेव खदए[6] अणगारे ससद्द गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, उवचिए तवेण अवचिए मस-सोणिएण, हुयासणे विव भासरासिपडिच्छण्णे तवेण, तेएण, तव-तेयसिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ।।

६५. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नगरे समोसरण जाव[7] परिसा पडिगया ।।

६६ तए णं तस्स खदयस्स अणगारस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए[8] °पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—

१. भ० २।५९ ।
२. भुक्खे (अ, म) ।
३ ° किडिय° (अ, ब) ।
४. तिलसठगसगडिया (वृपा) ।
५ इगालकट्ठसगडिया (अ, व) ।
६ खदए वि (ता, म) ।
७. ओ० सू० १६-८० ।
८. स० पा—चितिए जाव समुप्पज्जित्था ।

एव खलु अह इमेण एयारूवेणं ओरालेण[1] •विउलेण पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेण सिवेण धन्नेणं मगल्लेणं सस्सिरीएण उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेणं उदारेणं महाणुभागेण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठि-चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए॰ किसे धमणिसतए[2] जाए। जीवजीवेण गच्छामि, जीवंजीवेणं चिट्ठामि[3], •भास भासित्ता वि गिलामि, भासं भासमाणे गिलामि, भास भासिस्सामीति गिलामि।

से जहानामए कट्ठसगडिया इ वा, पत्तसगडिया इ वा, पत्त-तिल-भंडगसगडिया इ वा, एरडकट्ठसगडिया इ वा, इंगालसगडिया इ वा—उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद्दं गच्छइ, ससद्द चिट्ठइ॰, एवामेव अह पि ससद्द गच्छामि, ससद्द चिट्ठामि।

त अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए,[4] फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अहपडुरे[5] पभाए, रत्तासोयप्पकासे[6], किसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे, कमलागरसंडबोहए, उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते समण भगव महावीरं वदित्ता नमंसित्ता[7] •णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे अभिमुहे विणएणं पजलियडे॰ पज्जुवासित्ता समणेण भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पच महव्वयाणि आरोवेत्ता, समणा य समणीओ य खामेत्ता तहारूवेहिं थेरेहिं कडाईहि सद्धिं विपुलं पव्वय 'सणियं-सणिय'[8] दुरुहित्ता[9] मेहघणसनिगासं[10] देवसन्निवात पुढवीसिलापट्टयं पडिलेहित्ता, दब्भसथारग सथरित्ता दब्भसंथारोवगयस्स संलेहणाझूसणाझूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव समणे भगवं महावीरे[11]•तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएणं पजलियडे॰ पज्जुवासइ॥

१. उरालेण (क ता, म, स); सं॰ पा॰—ओरालेण जाव किसे।
२. धवणि॰ (क, ता, व, म)।
३. स॰ पा॰—चिट्ठामि जाव गिलामि जाव एवामेव।
४. रतणीए (ता)।
५. अहपंडरे (ल, ता, व); अहापडुरे (स)।
६. ॰प्पगासे (क), ॰सकासे (ता)।
७. सं॰ पा॰—नमंसित्ता जाव पज्जुवासित्ता।
८. सणित सणितं (क)।
९. दुहित्ता (क, म); दूहित्ता (ता); रुहित्ता (व), दुरुहित्ता (स)।
१०. मेघ॰ (अ)।
११. स॰ पा॰—महावीरे जाव पज्जुवासइ।

६७. खंदयाइ ! समणे भगवं महावीरे खंदयं अणगारं एवं वयासी—से नूणं तव खंदया ! पुव्वरत्तावरत्त[1] •कालसमयंसि धम्मजागरियं° जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[2] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं तवेणं ओरालेणं विउलेणं तं चेव जाव[3] कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेसि, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[4] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव ममं अंतिए तेणेव हव्वमागए। से नूणं खंदया ! अट्ठे समट्ठे ?
हंता अत्थि।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं॥

६८. तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठ-तुट्ठ[5] •चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण°हि-यए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पया-हिणं करेइ[6], •करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेइ[7], आरुहेत्ता समणा य समणीओ य खामेइ, खामेत्ता तहारूवेहिं थेरेहिं कडाईहिं[8] सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहइ, दुरुहित्ता मेहघणसन्निगासं देव-सन्निवातं पुढविसिलापट्टयं[9] पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—
नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव[10] सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपत्ताणं।
नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव[11] सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपाविउकामस्स।
वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ मे[12] भगवं तत्थगए इहगयं ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पुव्विं पि मए समणस्स भगवओ महा-वीरस्स अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव[13] मिच्छादंसणसल्ले पच्चक्खाए जावज्जीवाए। इयाणिं पि य णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए

---

१. पुव्वरत्तावररत्त° (क); सं० पा०—पुव्व-रत्तावरत्त जाव जागरमाणस्स।
२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
३ भ० २।६६।
४. भ० २।६६।
५. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए।
६. सं० पा०—करेइ जाव नमंसित्ता।
७. आरुभेइ (क, म)।
८ कडादीहिं (अ, व, स), कडायीहिं (ता, म)।
९. ° वट्टय (अ, क, म, स)।
१०. ओ० सू० २१।
११. ओ० सू० २१।
१२. मे से (क, ब, म, स)।
१३. भ० १।३८४।

सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए। सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं—चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए। जं पि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं जाव[1] मा णं वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सन्निवाइय[2] विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एयं पि णं चरिमेहिं उस्सास-नीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु संलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरइ॥

६९. तए णं से खंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए॥

७०. तए णं ते थेरा भगवंतो खंदयं अणगारं कालगयं जाणित्ता परिनिव्वाणवत्तियं काउसग्गं करेंति, करेत्ता पत्त-चीवराणि गेण्हंति, गेण्हित्ता विपुलाओ पव्वयाओ सणियं-सणियं पच्चोरुहंति[3], पच्चोरुहित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी— एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी खंदए नामं अणगारे 'पगइभद्दए पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपन्ने अल्लीणे[4] विणीए'[5]। से णं देवाणुप्पिएहिं अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाणि आरुहेत्ता[6], समणा[7] य समणीओ य खामेत्ता, अम्हेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं[8]° सणियं-सणियं दुरुहित्ता जाव[9] मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते° आणुपुव्वीए कालगए। इमे य से आयारभंडए॥

७१. भंतेति! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी खंदए नामं अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए? कहिं उववण्णे?

गोयमाइ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वदासी—एवं खलु

---

१. भ० २।५२।
२. द्रष्टव्यं २।५२ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
३. पच्चोसक्कंति (स)।
४. अलीणे (क, ब)।
५. औपपातिके (६१, ११६) एतावान् एव पाठोस्ति। अत्र केषुचिदादर्शेषु 'पगइभद्दए पगइविणीए' इति पाठोप्यस्ति तथा 'मिउ-मद्दवसंपन्ने भद्दए विणीए' इत्यपि वर्तते। इति द्विरुक्तमस्ति तेन औपपातिकपाठ एव समीचीनोस्ति।
६. आरोवेत्ता (अ, क, ता, ब, स); आरोहेत्ता (म)।
७. समणे (अ, ता, ब, म)।
८. सं० पा०—पव्वयं तं चेव निरवसेसं जाव आणुपुव्वीए।
९. भ० २।६८, ६९।

गोयमा ! मम अंतेवासी खंदए नामं अणगारे पगइभद्दए[1] °पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसपण्णे अल्लीणे विणीए°, से णं मए अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेत्ता[2] °जाव[3] मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता° आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णे ॥

७२. तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता तत्थ णं खंदयस्स वि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

७३. से णं भंते ! खंदए देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति[4] ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिति ॥

बीओ उद्देसो

समुग्घाय-पदं

७४. कइ णं भंते ! समुग्घाया पण्णत्ता?
गोयमा ! सत्त समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—१. वेदणासमुग्घाए २. कसायसमुग्घाए ३. मारणंतियसमुग्घाए ४. वेउव्वियसमुग्घाए ५. तेजससमुग्घाए ६. आहारगसमुग्घाए ७. केवलियसमुग्घाए। छाउमत्थियसमुग्घायवज्जं[5] समुग्घायपदं नेयव्वं[6] ॥

---

१. स॰ पा॰—पगइभद्दए जाव सेणं।

२. स॰ पा॰—आरुहेत्ता तं चेव सव्वं अविसेसितं णेयव्वं जाव आलोइय॰।

३. भ॰ २।६८, ६६।

४. गमिहिति (अ, व, स), गच्छिह्री (ता)।

५. एवं समुग्घायपदं छाउमत्थियसमुग्घायवज्जं भाणियव्वं जाव—वेमाणियाणं। कसायसमुग्घाया, अप्पाबहुयं। अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो केवली समुग्घाए जाव—सासतं, अणागयद्धं चिट्ठति ? समुग्घायपदं नेयव्वं (अ, व)।

६. सूत्रकृता प्रज्ञापनायाः 'मणस्सा जहा जीवा, नवरं—मरणसमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा' इत्येव पाठोत्र विवक्षितः, अतः परवर्ती छाद्मस्थिकसमुद्घातप्ररूपकपाठो नात्र अधिकृतोस्ति। द्रष्टव्यम्—प्रज्ञापना, पद ३६।

तइओ उद्देसो

पुढवि-पदं

७५. कइ ण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, त जहा—१ रयणप्पभा २. सक्करप्पभा ३. बालुयप्पभा ४ पकप्पभा ५. धूमप्पभा ६. तमप्पभा ७. तमतमा। जीवाभिगमे[1] नेरइयाण जो बितिओ उद्देसो सो नेयव्वो[2] जाव—

७६. 'किं सव्वे पाणा उववण्णपुव्वा ?'[3]
हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो ॥

चउत्थो उद्देसो

इंदिय-पदं

७७. कइ ण भंते ! इंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच इंदिया पण्णत्ता, त जहा—१. सोइंदिए २. चक्खिंदिए ३. घाणिंदिए ४ रसिंदिए ५ फासिंदिए। पढमिल्लो इंदियउद्देसओ[4] नेयव्वो[5] जाव[6]—

७८ अलोगे ण भंते ! किणा फुडे ? कतिहि वा काएहि फुडे ?

---

१. जी० ३।२।

२. अतोग्रे 'क, ता, म' सकेतितादर्शेषु 'पुढवी ओगाहित्ता, निरया सठाणमेव बाहल्लं। जाव किं' एव पाठो वर्तते। शेषादर्शेषु 'बाहल्ल' इति पदस्याग्रे 'विक्खभ-परिक्खेवो, वण्णो गधो य फासो य जाव किं' एव पाठोस्ति। वृत्तिकृता एका टिप्पणी कृतास्ति—सूत्रपुस्तकेषु च पूर्वार्द्धमेव लिखित, शेषाणां विवक्षितार्थाना यावच्छब्देन सूचितत्वात्। असौ गाथा जीवाभिगमस्य नारकद्वितीयोद्देशकार्थसग्रहपरा वर्तते

३. अत्र सक्षिप्तपाठ.। जीवाभिगमे (३।२) पूर्णपाठ. एवमस्ति—
इमीसे ण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु इक्कमिक्कसि निरयावाससि सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, नेरइयत्ताए उववण्णपुव्वा ?

४. प० १५।१।

५. अतोग्रे सर्वादर्शेषु 'सठाणं बाहल्ल पोहत्त जाव अलोगे' इति पाठोस्ति, इह च सूत्रपुस्तकेषु द्वारत्रयमेव लिखितं, शेषास्तु तदर्था यावच्छब्देन सूचिता : (वृ)।

६. प० १५।१।

गोयमा ! नो धमत्थिकाएणं फुडे जाव[1] नो आगासत्थिकाएण फुडे, आगासत्थिकायस्स देसेणं फुडे आगासत्थिकायस्स पदेसेहिं फुडे, नो पुढविकाइएणं फुडे जाव[2] नो अद्धासमएणं फुडे, एगे अजीवदव्वदेसे अगुरुलहुए अणंतेहिं अगुरुलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वगासे अणंतभागूणे ।।

पंचमो उद्देसो

परिचारणा-वेद-पदं

७९. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति भासंति पण्णवंति परूवेंति—

१. एवं खलु नियंठे कालगए समाणे देवब्भूएणं[3] अप्पाणेणं से ण तत्थ नो अण्णे देवे, नो अण्णेसि देवाणं देवीओ 'आभिजुंजिय-अभिजुंजिय'[4] परियारेइ, नो अप्पणिच्चियाओ[5] देवीओ अभिजुंजिय-अभिजुंजिय परियारेइ, अप्पणामेव अप्पाणं विउव्विय-विउव्विय परियारेइ ।

२. एगे वि य णं जीवे एगेणं समएणं दो वेदे वेदेइ, तं जहा—इत्थिवेदं च, पुरिसवेदं च ।

[6]°जं समयं इत्थिवेयं वेएइ तं समयं पुरिसवेयं वेएइ ।

जं समयं पुरिसवेयं वेएइ तं समयं इत्थिवेयं वेएइ ।

इत्थिवेयस्स वेयणाए पुरिसवेयं वेएइ, पुरिसवेयस्स वेयणाए इत्थिवेयं वेएइ ।

एवं खलु एगे वि य ण जीवे एगेणं समएणं दो वेदे वेदेइ, तं जहा°—इत्थिवेदं च, पुरिसवेदं च ।।

८०. से कहमेयं भंते ! एवं ?

गोयमा ! जं णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव[7] इत्थिवेदं च, पुरिसवेदं च । जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि भासामि पण्णवेमि परूवेमि—

---

१. प० १५।१ ।
२. प० १५।१ ।
३. प्राकृतत्वात् भकारस्य द्वित्वम् ।
४. अहियंजिय (व) ।
५. अप्पणो ° (अ, क, ता, व); अप्पिणिच्चियाओ (वृ); अप्पणिज्जियाओ (ठा० ३।६) ।
६. सं० पा०—एवं परउत्थियवत्तव्वया णेयव्वा जाव इत्थिवेद ।
७. भ० २।७९ ।

१. एवं खलु णियठे कालगए समाणे अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति[1]—महिड्ढिएसु[2] •महज्जुतीएसु महाबलेसु महायसेसु महासोक्खेसु° महाणुभागेसु दूरगतीसु चिरट्ठितीएसु। से ण तत्थ देवे भवइ महिड्ढिए जाव[3] दस दिसाओ उज्जोएमाणे पभासेमाणे[4] •पासाइए दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे। से णं तत्थ अण्णे देवे, अण्णेसि देवाणं देवीओ अभिजुजिय-अभिजुजिय परियारेइ, अप्पणिच्चियाओ[5] देवीओ अभिजुजिय-अभिजुजिय परियारेइ, नो अप्पणामेव अप्पाण विउव्विय-विउव्विय परियारेइ।

२ एगे वि य णं जीवे एगेण समएण एगं वेद वेदेइ, त जहा—इत्थिवेदं वा, पुरिसवेद वा।

ज समयं इत्थिवेद वेदेइ नो त समय पुरिसवेद वेदेइ।

ज समय पुरिसवेदं वेदेइ, नो त समय इत्थिवेदं वेदेइ।

इत्थिवेदस्स उदएण नो पुरिसवेद वेदेइ, पुरिसवेदस्स उदएणं नो इत्थिवेदं वेदेइ।

एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण एग वेदं वेदेइ, तं जहा—इत्थीवेदं वा, पुरिसवेदं वा।

इत्थी इत्थिवेदेण उदिण्णेणं पुरिसं पत्थेइ। पुरिसो पुरिसवेदेणं उदिण्णेणं इत्थिं पत्थेइ। दो वि ते अण्णमण्णं पत्थेति, त जहा—इत्थी वा पुरिसं, पुरिसे वा इत्थिं॥

गब्भ-पदं

८१. उदगब्भे[6] ण भते! उदगब्भे त्ति कालओ केवच्चिर होइ?
गोयमा! जहण्णेण एक समय, उक्कोसेण छम्मासा॥

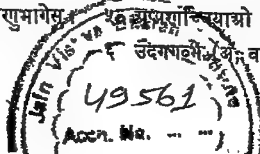
८२ तिरिक्खजोणियगब्भे ण भते! तिरिक्खजोणियगब्भे त्ति कालओ केवच्चिरं होइ?
गोयमा! जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण अट्ठ संवच्छराइ॥

८३. मणुस्सीगब्भे णं भते! मणुस्सीगब्भे त्ति कालओ केवच्चिर होइ?
गोयमा! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वारस संवच्छराइ॥

८४. कायभवत्थे ण भते! कायभवत्थे त्ति कालओ केवच्चिरं होइ?
गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण चउवीसं सवच्छराइ॥

---

१ प्राकृतशैल्या उपपत्ता भवतीति ज्ञेयम् (वृ)।
२. स० पा०—महिड्ढिएसु जाव महाणुभागेसु।
३. ठा० ८।१०।
४. स० पा०—पभासेमाणे जाव पडिरूवे।
५. अप्पणिच्चियाओ (अ, क, ता, व)।
६. उदगगब्भे (अ, व, स); दगगब्भे (वृपा)।



८५. मणुस्स-पंचेंदियतिरिक्खजोणियबीए णं भंते ! जोणिब्भूए केवतियं कालं संचिट्ठइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥

८६. एगजीवे णं भंते ! एगभवग्गहणेणं केवइयाणं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं इक्कस्स वा 'दोण्ह वा तिण्ह'[1] वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तस्स[2] जीवा णं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ॥

८७. एगजीवस्स णं भंते ! एगभवग्गहणेणं[3] केवइया जीवा पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्तं जीवा णं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ॥

८८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[4]—•जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्तं जीवा णं पुत्तत्ताए° हव्वमागच्छंति ?
गोयमा ! इत्थीए[5] पुरिसस्स य कम्मकडाए जोणीए मेहुणवत्तिए नामं संजोए समुप्पज्जइ। ते दुहओ सिणेहं 'चिणंति, चिणित्ता'[6] तत्थ णं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्तं जीवा णं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति। से तेणट्ठेणं[7] •गोयमा ! एवं वुच्चइ-जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्तं जीवा णं पुत्तत्ताए° हव्वमागच्छंति ॥

८९. मेहुणण्णं[8] भंते ! सेवमाणस्स केरिसए[9] असंजमे कज्जइ ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे रूयनालियं[10] वा बूरनालियं[11] वा तत्तेणं कणएणं समभिद्धंसेज्जा, एरिसएणं गोयमा ! मेहुणं सेवमाणस्स असंजमे कज्जइ ॥

९०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव[12] विहरइ ॥

९१. तए णं समणे भवगं महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

तुंगियानयरी-समणोवासय-पदं

९२. तेणं कालेण तेण समएणं तुंगिया नामं नयरी होत्था—वण्णओ[13] ॥

९३. तीसे णं तुंगियाए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे[14] पुप्फवतिए नामं चेइए होत्था—वण्णओ[15] ॥

---

१. दोण्ह वा तिण्ह (अ, स)।
२. पुहुत्तस्स (क, स)।
३. एगजीव० (स)।
४. सं० पा०—वुच्चइ जाव हव्व०।
५. इत्थीए य (क, ता, व, म)।
६. संचिणति, संचिणित्ता (म)।
७. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव हव्व०।
८. मेहुणं (अ); मेहुणेणं (स)।
९. केरिसे (अ, ता, व, स)।
१०. रूवनालियं (क); रूयण्णालियं (ता); रूवणालिय (म)।
११. पूर० (ता, व)।
११. भ० १।५१।
१२. ओ० सू० १।
१३. दिसाभागे (क)।
१४. ओ० सू० २-१३।

९४. तत्थ ण तुंगियाए नयरीए बहवे समणोवासया परिवसंति—अड्ढा दित्ता वित्थिण्णविपुलभवण-सयणासण-जाणवाहणाइण्णा बहुधण-बहुजायरूव-रयया आयोग-पयोगसंपउत्ता विच्छड्डियविपुलभत्तपाणा बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेल-यप्पभूया बहुजणस्स अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्ण-'पावा सव'[1]-संवर-निज्जर[2]-किरियाहिकरणबंध[3]-पमोक्खकुसला[4] असहेज्जा[5] देवासुर-नागसुवण्ण जक्खरक्खसकिन्नरकिंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगादिएहिं[6] देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ[7] अणतिक्कमणिज्जा, निग्गंथे पावयणे निस्संकिया निक्कंखिया निव्वितिगिच्छा[8] लद्धट्ठा[9] गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ता[10] अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे, ऊसियफलिहा अवगुयदुवारा[11] 'चियत्तंतेउर-घरप्पवेसा'[12] चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु[13] पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपाले-माणा, समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-'खाइम-साइमेणं'[14] वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं 'ओसह-भेसज्जेणं'[15] पडिलाभेमाणा बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहाप-रिग्गहिएहिं[16] तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥

---

१. पावासव (ता) ।
२ निज्जरा (अ) ।
३. °हिगरणकुसला (अ) ।
४. प्पमोक्ख° (क, ता, म, स), मोक्ख° (व) ।
५ असहेज्ज (अ, क, ता, व, म, स); असा-हाय्यास्ते च ते देवादयश्चेति कर्मधारयः अथवा व्यस्तमेवेदम् (वृ) ।
६ °महोरगादी° (अ, म, स) ।
७. पवयणाओ (व) ।
८. निव्वितिगिंछिया (ता) ।
९. लद्धिट्ठा (व) ।
१०. ° प्पेमाणुराव° (ता) ।
११. अपगुय° (क); अवगुत ° (म) ।
१२. चियत्ततेउरपरघर °(ता) । अतोग्रे सर्वेषु आदर्शेषु 'बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरामण-पच्चक्खाण—पोसहोववासेहिं' इति पाठो दृश्यते । वृत्तिकृतापि असौ अत्रैव व्याख्यात., वाक्यरचनायाः सम्बन्धयोजनार्थं च 'युक्ता इति गम्यम्' इति उल्लिखितम् । किन्तु ओवाइय — रायपसेणइयसूत्रयोरवलोकनेन प्रतीयते असौ पाठ 'पडिलाभेमाणा' इति पदस्यानन्तर युज्यते । ओवाइयसूत्रे (१२०) 'पडिलाभेमाणे सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहाप-रिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे' । रायपसेणइयसूत्रे (६९८) 'पडिलाभेमाणे बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाण भावेमाणे ।' अनयो. पाठयोराधारेण अत्रापि असौ पाठ. 'पडिला-भेमाणा' इति पदस्यानन्तर गृहीतः ।
१३ चाउद्दसि° (ता) ।
१४ खातिम-सातिमेणं (व, स) ।
१५ × (क) ।
१६ अहापडि° (स, वृ) ।

९५. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना कुलसंपन्ना बलसंपन्ना रूवसपन्ना विणयसंपन्ना नाणसंपन्ना दसणसंपन्ना चरित्तसंपन्ना लज्जासंपन्ना लाघवसंपन्ना ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जससी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जियनिद्दा[1] जिइंदिया[2] जियपरीसहा जीवियास[3]—मरण-भयविप्पमुक्का[4] •तवप्पहाणा गुणप्पहाणा करणप्पहाणा चरणप्पहाणा निग्गह-प्पहाणा निच्छयप्पहाणा मद्दवप्पहाणा अज्जवप्पहाणा लाघवप्पहाणा खतिप्पहाणा मुत्तिप्पहाणा विज्जाप्पहाणा मंतप्पहाणा वेयप्पहाणा बंभप्पहाणा नयप्पहाणा नियमप्पहाणा सच्चप्पहाणा सोयप्पहाणा चारुपण्णा सोही अणियाणा अप्पुस्सुया अबहिल्लेसा सुसामण्णरया अच्छिद्दपसिणवागरणा °कुत्तियावणभूया बहुस्सुया बहुपरिवारा[5] पंचहि अणगारसएहि सद्धि संपरिवुडा अहाणुपुव्वि चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा सुहसुहेणं विहरमाणा जेणेव तुंगिया नगरी जेणेव पुप्फवइए चेइए 'तेणेव उवागच्छति'[6], उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता णं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥

९६. तए णं तुंगियाए नयरीए सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह[7]-महापह-पहेसु जाव[8] एगदिसाभिमुहा निज्जायंति ॥

९७. तए णं ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठ[9]•चित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया अण्णमण्ण° सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना जाव[10] अहापडिरूवं ओग्गह ओगिण्हित्ता णं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।

तं महाफलं खलु देवाणुप्पिया ! तहारूवाण थेराणं भगवताण नामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासण-याए[11] ? °एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्य अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! थेरे भगवंते वंदामो नमंसामो[12] °सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाण मंगलं देवयं चेइय पज्जुवा-सामो । एयं णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामि-

---

१. × (क) ।
२. जितेंदिया (अ, क, व); जितिंदिया (म) ।
३. जीवियासा (अ, ता, ब, स) ।
४. सं० पा०—मरणभयविप्पमुक्का जाव कुत्तिया° ।
५. × (अ, व) ।
६. तेणेवाग° (अ, क, व) ।
७. × (अ, क, व, म, स) ।
८. राय० सू० ६८७-६८९ ।
९. स० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव सद्दावेंति ।
१०. राय० सू० ६८६ ।
११. सं० पा०—पज्जुवासणयाए जाव गहणयाए ।
१२. स० पा०—नमसामो जाव पज्जुवासामो जाव भविस्सति ।

यत्ताए° भविस्सति इति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव सयाइ-सयाइ गिहाइं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइ 'वत्थाइं पवर परिहिया'[1] अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा सएहि-सएहि गिहेहितो[2] पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता एगयओ[3] 'मेलायंति, मेलायित्ता'[4] पायविहारचारेण तुगियाए नयरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव पुप्फवतिए[5] चेइए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवते पंचविहेण अभिगमेणं अभिगच्छति, [त जहा—१ सच्चित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए २. अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए ३ एगसाडिएण उत्तरासगकरणेणं ४. चक्खुप्फासे अजलिप्पग्गहेण ५. मणसो एगत्तीकरणेण][6] जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेति, करेत्ता[7] °वदंति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता° तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासति ॥

९८. तए णं ते थेरा भगवंतो तेसि समणोवासयाणं तीसे 'महइमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेति, तं जहा—
सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण,
सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमण, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमण'[8] ॥

९९. तए ण ते समणोवासया थेराण भगवताण अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा जाव[9] हरिसवसविसप्पमाणहियया तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेति, 'करेत्ता एव'[10] वयासी—सजमेणं भते ! किफले ? तवे[11] किफले ?

१००. तए ण ते थेरा भगवतो ते समणोवासए एवं वयासी[12]—संजमे ण अज्जो ! अणण्हयफले, तवे वोदाणफले ॥

१०१. तए ण ते समणोवासया थेरे भगवंते एवं वयासी—जइ ण भते ! संजमे अणण्हयफले, तवे वोदाणफले । किपत्तिय ण भते ! देवा देवलोएसु उववज्जति ?

---

१. पवराइं परिहिया (क); वत्थाइ पवराइ-परिहिय त्ति क्वचिद्दृश्यते, क्वचिच्च वत्थाइ पवर परिहिय त्ति (वृ) ।
२. गेहेहिंतो (म, स) ।
३. एगओ (ता) ।
४. मिलायति २ (अ, म) ।
५. पुप्फवतीए (अ, क, व, स) ।
६. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांश : प्रतीयते ।
७. स० पा०—करेत्ता जाव तिविहाए ।
८. महइमहालियाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेंति । जहा केसि सामिस्स, जाव समणोवासियत्ताए आणाए आराहए भवति जाव धम्मो कहिओ (अ, म, स), महइमहालियाए जाव धम्मो कहिओ (क, ता, ब) ।
९. भ० २।४३ ।
१०. करेत्ता जाव तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासति २ एवं (ता, म, स); करेत्ता जाव एवं (क) ।
११. तवे णं भते ! (अ) ।
१२. वदिंसु (क) ।

१०२. तत्थ णं कालियपुत्ते नामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी—पुव्वतवेणं अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ।
तत्थ णं मेहिले नामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी—पुव्वसंजमेणं अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ।
तत्थ णं आणंदरक्खिए नामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी—कम्मियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ।
तत्थ णं कासवे नामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी—संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ।
पुव्वतवेणं, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति । सच्चे णं एस[1] अट्ठे, नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए ॥

१०३. तए णं ते समणोवासया थेरेहिं भगवंतेहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठा[2] थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, पसिणाइं पुच्छंति, अट्ठाइं उवादियंति, उवादिएत्ता[3] जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥

१०४. 'तए णं ते थेरा अण्णया कयाइ तुंगियाओ नयरीओ पुप्फवतियाओ चेइयाओ पडिनिग्गच्छंति[4], बहिया जणवयविहारं विहरंति'[5] ॥

१०५. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था—सामी समोसढे जाव[6] परिसा पडिगया ॥

१०६. तेण कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जाव[7] संखित्तविपुलतेयलेस्से छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

१०७. तए णं[8] भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि[9] पढमाए पोरिसीए[10] सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइं[11] पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणाइं पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे

---

१. एसे (क, ब, म) ।
२. × (क, ता, ब) ।
३. उवादिएत्ता उट्ठाए उट्ठेन्ति उट्ठेत्ता थेरे भगवंते तिक्खुत्तो वंदंति नमंसंति २ थेराणं भगवंताणं अंतियाओ पुप्फवतियाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति (अ, म, स) ।
४. पडिनिक्खमंति (अ) ।
५. × (ता, ब) ।
६. भ० १।७, ८ ।
७. भ० १।९ ।
८. ण से (अ, क, ता, म, स); णं समणे (ब) ।
९. ° गंमि (ता) ।
१०. पोरुसीए (क, ता, म) ।
११. भायणाइं वत्थाइं (अ, ब, स) ।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे छट्ठ-क्खमणपारणगसि रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध ।।

१०८. तए ण भगव गोयमे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडि-निक्खमित्ता अतुरियमचवलमसभते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं 'सोहेमाणे-सोहेमाणे'[1] जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरिय अडइ ।

१०९. तए ण[2] भगव गोयमे रायगिहे नगरे[3] •उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमु-दाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे बहुजणसद्द निसामेइ—एव खलु देवाणुप्पिया ! तुगियाए नयरीए बहिया पुप्फवइए चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवतो समणोवासएहि इमाइ एयारूवाइं वागरणाइ पुच्छिया—सजमे ण भते ! किफले ? तवे किफले ?

तए ण ते थेरा भगवतो ते समणोवासए एव वयासी—सजमे ण अज्जो ! अणण्हयफले, तवे वोदाणफले त चेव जाव[4] पुव्वतवेण, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, सगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति । सच्चे ण एस मट्ठे[5], नो चेव ण आयभाववत्तव्वयाए ।

से कहमेय मन्ने[6] एवं ।।

११०. तए ण[7] भगवं गोयमे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जायसड्ढे जाव[8] समुप्पन्न-कोउहल्ले अहापज्जत्त समुदाण गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ नयराओ पडिनि-क्खमइ अतुरिय[9]•मचवलमसभते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे°-सोहेमाणे जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणा-गमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्त-पाणं पडिदसेइ, पडिदसेत्ता समण भगव महावीर[10] •वदइ, नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता° एवं वदासी—एवं खलु भते ! अह तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे राय-

१. सोहेमाणे (क, ता, ब) ।
२. ण से (अ, क, ब, म, स) ।
३. स० पा०—नयरे जाव अडमाणे ।
४. भ० २।१०१, १०२।
५. मट्ठे समट्ठे (क), अट्ठे (ता) ।
६. भते ! (अ, ब) ।
७. ण से (अ, क, ता, ब, म, स) ।
८. भ० १।१० ।
९. सं० पा०—अतुरिय जाव सोहेमाणे ।
१०. स० पा०—महावीर जाव एवं ।

गिहे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेमि—एवं खलु देवाणुप्पिया! तुंगियाए नयरीए बहिया पुप्फवइए चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया—संजमे णं भंते! किंफले? तवे किंफले? तं चेव जाव[1] सच्चे णं एस मट्ठे,[2] नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए।१

तं[3] पभू णं भंते! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए? उदाहु अप्पभू? समिया णं भंते! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए? उदाहु असमिया[4]? आउज्जिया णं भंते! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए? उदाहु अणाउज्जिया? पलिउज्जिया णं भंते! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए? उदाहु अपलिउज्जिया?—पुव्वतवेणं अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति। पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति। सच्चे णं एस मट्ठे, नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए।२

पभू णं गोयमा! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए, नो 'चेव णं'[5] अप्पभू। °[6]समिया णं गोयमा! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए। आउज्जिया णं गोयमा! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए। पलिउज्जिया णं गोयमा! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए—पुव्वतवेणं अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति।° सच्चे णं एस मट्ठे, नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए।३

अहं पि णं गोयमा! एवमाइक्खामि, भासामि, पण्णवेमि, परूवेमि—पुव्वतवेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति। पुव्वसंजमेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति। कम्मियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति। संगियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति। पुव्वतवेणं, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति। सच्चे णं एस मट्ठे, नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए॥

---

१. भ० २।९९-१०२।
२. अट्ठे (ता)।
३. एवं (ब)।
४. अस्समिया (क, ता, म)।
५. × (अ, क, ब)।
६. सं० पा०—तह चेव नेयव्वं अविसेसियं जाव पभू समिय आउज्जियपलिउज्जिय जाव सच्चे।

१११. तहारूव ण भते ! समण वा माहणं वा पज्जुवासमाणस्स किफला पज्जुवासणा ?

गोयमा ! सवणफला ।

से णं भते ! सवणे किफले ?

नाणफले ।

से णं भते ! नाणे किंफले ?

विण्णाणफले ।

से ण भंते ! विण्णाणे किफले ?

पच्चक्खाणफले ।

से ण भंते ! पच्चक्खाणे किफले ?

सजमफले ।

से ण भते ! संजमे किफले ?

अणण्हयफले ।

से ण भते ! अणण्हए किंफले ।

तवफले ।

से ण भते ! तवे किफले ?

वोदाणफले ।

से ण भते ! वोदाणे किफले ?

अकिरियाफले ।

सा ण भते ! अकिरिया किफला ?

सिद्धिपज्जवसाणफला—पण्णत्ता गोयमा !

संगहणी-गाहा

सवणे नाणे य विण्णाणे, पच्चक्खाणे य संजमे ।
अणण्हए तवे चेव, वोदाणे अकिरिया सिद्धी ॥१॥

उण्हजलकुंड-पदं

११२. अन्नउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति, भासंति, पण्णवेति, परूवेति—एवं खलु रायगिहस्स नयरस्स बहिया वेभारस्स पव्वयस्स अहे, एत्थ ण महं एगे हरए[1] अघे[2] पण्णत्ते—अणेगाइ जोयणाइं आयाम-विक्खभेणं, नाणादुमसंडमंडिउद्देसे, सस्सिरीए[3] °पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे । तत्थ णं बहवे ओराला

१. ° हरगे (ता) ।

२. अप्पे (अ, क, व, म, स); क्वचित् हरए त्ति न दृश्यते 'अघ' इत्यस्य च स्थाने 'अप्पे' त्ति दृश्यते (वृ) ।

३ सं० पा०—सस्सिरीए जाव पडिरूवे ।

बलाहया ससेयति समुच्छति वासंति। तव्वइरित्ते य ण सया समियं उसिणे-उसिणे आउकाए अभिनिस्सवइ।

११३. से कहमेय भंते ! एवं ?
गोयमा ! ज ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव जे ते एवमाइक्खति, मिच्छ ते एवमाइक्खति[1]। अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, भासामि, पण्णवेमि, परूवेमि—एव खलु रायगिहस्स नयरस्स बहिया वेभारस्स पव्वयस्स अदूरसामंते, एत्थ णं महातवोवतीरप्पभवे नाम पासवणे पण्णत्ते—पच धणु-सयाइ आयाम-विक्खभेण, नाणादुमसडमंडिउद्देसे सस्सिरीए पासादीए दरि-सणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे। तत्थ ण बहवे उसिणजोणिया[2] जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए[3] वक्कमति विउक्कमति चयति उववज्जति[4]। तव्वइरित्ते वि य णं सया समिय उसिणे-उसिणे आउयाए अभिनिस्सवइ। एस ण गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवे[5] पासवणे। एस ण गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवस्स पासवणस्स अट्ठे पण्णत्ते ॥

११४ सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीर वदइ नमसइ ॥

छट्ठो उद्देसो

भासा-पदं

११५. से नूण भंते ! मन्नामी ति ओहारिणी भासा ? एव भासापद[6] भाणियव्व ॥

सत्तमो उद्देसो

ठाण-पदं

११६. कति[7] णं भंते ! देवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा देवा पण्णत्ता, त जहा—भवणवइ-वाणमतर-जोइस-वेमाणिया ॥

---

१. एवमाइक्खति जाव सव्व नेयव्वं (अ, स), एवमाइक्खति जाव सव्व नेयव्व जाव (क, ता, म)।
२. उसिणजोणीया (अ, ता, म, स); उसुण-जोणीया (ब)।
३. उदत्ताए (ता)।
४. उवचयति (अ, ब)।
५. महातवोतीर° (क, ता, ब, म)।
६. प० ११।
७. कतिविहा (अ, ता, म)।

११७. कहि णं भंते ! भवणवासीण देवाण ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जहा ठाणपदे[1] देवाण वत्तव्वया सा भाणियव्वा[2] । उववाएण[3] लोयस्स असखेज्जइभागे एव सव्व भाणियव्वं, जाव[4] सिद्धगडिया समत्ता ।[5]
कप्पाण पइट्ठाण, बाहुल्लुच्चत्त मेव सठाणं ।
जीवाभिगमे जो[6] वेमाणिउद्देसो[7] सो[8] भाणियव्वो सव्वो ।।

अट्ठमो उद्देसो

चमरसभा-पदं

११८. कहि ण भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो[9] सभा सुहम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जबुद्दीवे[10] दीवे मंदरस्सं पव्वयस्स दाहिणे ण तिरियमसखेज्जे[11] दीव-समुद्दे वीईवइत्ता[12] अरुणवरस्स दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयताओ अरुणोदयं[13] समुद्द बायालीसं जोयणसयसहस्साइ[14] ओगाहित्ता, एत्थ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तिगिछिकूडे[15] नाम उप्पायपव्वए पण्णत्ते—सत्तरस-एक्कवीसे जोयणसए उड्ढ उच्चत्तेण चत्तारितीसे जोयणसए कोसं च 'उव्वेहेण मूले दसबावीसे जोयणसए विक्खभेण, मज्झे चत्तारि चउवीसे जोयणसए विक्खं-भेण, [उवरिं सत्ततेवीसे जोयणसए विक्खभेण,] मूले तिण्णि जोयणसहस्साइं, दोण्णि य बत्तीसुत्तरे जोयणसए किंचि विसेसूणे परिक्खेवेण, मज्झे एग जोयण-सहस्स तिण्णि य इगयाले[16] जोयणसए किंचि विसेसूणे परिक्खेवेण, उवरिं दोण्णि

---

१. प० २ ।
२. भाणिअव्वा नवर भवणा पण्णत्ता (अ, क, ता, ब, म, स), नवर भवणा पण्णत्त त्ति क्वचिद् दृश्यते तस्य च फल न सम्यगव-गम्यते (वृ) ।
३ उववादेण (अ, क, ब, म) ।
४. प० २ ।
५. सम्मत्ता (क, ब, म, स) ।
६. जाव (अ) ।
७. वेमाणियुद्देसो (ता, ब) ।
८ × (अ, म, स) ।
९ असुररण्णो (क, ता, ब) ।
१०. जबूदीवे (म) ।
११ °मसखेज्ज (ता, ब, स) ।
१२ वीति ° (अ, क, ब, म) ।
१३ अरुणोद (क, म) ।
१४. जोयणसहस्साइ (अ, क, ता, म, स) ।
१५. तिगिच्छि° (क); तिगिच्छ° (म) ।
१६. इयाले (अ) ।

य जोयणसहस्साइं, दोण्णि य छलसीए जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण,[१] मूले वित्थडे, मज्झे संखित्ते, उप्पिं विसाले, वरवइरविग्गहिए[२] महामउंदसंठाण-संठिए सव्वरयणामए अच्छे[३] °सण्हे लण्हे घट्ठे मट्ठे निरए निम्मले निप्पंके निक्कंकडच्छाए सप्पभे समिरिईए सउज्जोए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे। से णं एगाए पउमवरवेइयाए, वणसंडेण य सव्वओ समंता सपरिक्खित्ते। पउमवरवेइयाए वणसंडस्स य वण्णओ[४] ॥

११९. तस्स णं तिगिंछिकूडस्स उप्पायपव्वयस्स उप्पिं बहुसम-रमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते—वण्णओ[५] ॥

१२०. तस्स ण वहुसम-रमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे, एत्थ णं महं एगे पासायवडेंसए पण्णत्ते—अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण, पणुवीसं[६] जोयणसय विक्खंभेणं। पासायवण्णओ[७]। उल्लोयभूमिवण्णओ[८]। अट्ठजोयणाइं मणिपेढिया। चमरस्स सीहासण सपरिवारं[९] भाणियव्व ॥

१२१. तस्स णं तिगिंछिकूडस्स दाहिणे ण छक्कोडिसए पणवन्न च कोडीओ पणतीसं च सयसहस्साइं पण्णास च सहस्साइं अरुणोदए समुद्दे तिरियं वीइवइत्ता अहे रयणप्पभाए पुढवीए चत्तालीस जोयणसहस्साइ, ओगाहित्ता, एत्थ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचा नामं रायहाणी पण्णत्ता एग जोयणसय-सहस्सं आयाम-विक्खभेण जंबूदीवप्पमाणा।

---

१. उव्वेहेण गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पमाणेण नेयव्व, नवर उवरिल्ल पमाण मज्झे भाणियव्व जाव (क, ता, ब, वृ)। अ, म, स सकेतितादर्शेषु द्वयोवर्णयोर्मिश्रणं दृश्यते।

२ ° विग्गहे (अ, व, स)।

३. स० पा०—अच्छे जाव पडिरूवे।

४ राय० सू० १८९-२०१।

५ राय० सू० २४-३१।

६. पण० (अ, स)।

७ राय० सू० २०४।

८ राय० सू० २४-३४, भ० वृत्ति।

९ तच्चैवम्—तस्स ण सिंहासणस्स अवरुत्तरे ण, उत्तरे ण, उत्तरपुरत्थिमे णं, एत्थ ण चमरस्स चउसट्ठी सामाणियसाहस्सीण, चउसट्ठी भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, एव पुरत्थिमे ण पचण्हं अग्गमहिसीण सपरिवाराण पच भद्दासणाइ सपरिवाराइ, दाहिणपुरत्थिमे ण अब्भितरियाए परिसाए चउव्वीसाए देवसाहस्सीण चउव्वीस भद्दासणसाहस्सीओ, एव दाहिणे ण पच्चत्थिमे ण सत्तण्ह अणियाहिवईण मज्झिमाए अट्ठावीस भद्दासण-साहस्सीओ, दाहिणपच्चत्थिमे ण बाहिराए वत्तीस भद्दासणसाहस्सीओ, सत्त भद्दा-सणाइं, चउद्दिस आयरक्खदेवाण चत्तारि भद्दासणसहस्सचउसट्ठीओ (वृ)।

ओवारियलेण सोलसजोयणसहस्साइं आयाम-विक्खभेणं, पण्णास जोयणसहस्साइ पच य सत्ताणउए जोयणसए किचि विसेसूणे परिक्खेवेणं, सव्वप्पमाण वेमाणियप्पमाणस्स अद्धं नेयव्व[1] ॥

नवमो उद्देसो

समयखेत्त-पदं

१२२. किमिद भंते ! समयखेत्ते त्ति पवुच्चति ?

गोयमा ! अड्ढाइज्जा दीवा, दो य समुद्दा, एस णं एवइए समयखेत्तेति पवुच्चति ॥

१२३. तत्थ णं अयं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण सव्वब्भतरे। एवं जीवाभिगम-वत्तव्वया नेयव्वा जाव[2] अब्भितर-पुक्खरद्ध जोइसविहूण[3] ॥

---

१. एतदेव वाचनान्तरे उक्तम्—'चत्तारि परिवाडीओ पासायवडेंसगाण अद्धद्धहीणाओ (वृ), राय० सू० २०४-२०८।

२ जी० ३।

३. वाचनान्तरे तु 'जोइसअट्ठविहूण' ति इत्यादि बहु दृश्यते, तत्र 'जबुद्दीवे णं भते ! कइ चदा पभासिसु वा ३ ? कति सूरीया तविसु वा ३ ? कइ नक्खत्ता जोइ जोइसु वा ३ ? इत्यादिकानि प्रत्येक ज्योतिष्क-सूत्राणि, तथा—से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जबुद्दीवे दीवे ?, गोयमा ! जबुद्दीवे ण दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण लवणस्स दाहिणे ण जाव तत्थ २ बहवे जबूरुक्खा जबूवणा जाव उवसोहेमाणा चिट्ठति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जबुद्दीवे दीवे इत्यादीनि प्रत्येकमर्थसूत्राणि च सन्ति, तत-श्चैतद्विहीन यथा भवत्येव जीवाभिगमवक्तव्यतया नेय अस्योद्देशकस्य सूत्रं 'जाव इमा गाह' त्ति संग्रहगाथा, सा च—"अरहत समय बायर, विज्जू थणिया बलाहगा अगणी। आगर निहि नइ उवराग निग्गमे वुड्ढिवयणं च (वृ)।

दसमो उद्देसो

अत्थिकाय-पदं

१२४. कति णं भंते ! अत्थिकाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच अत्थिकाया पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए ॥

१२५. धम्मत्थिकाए णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे;
अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।
दव्वओ णं धम्मत्थिकाए एगे दव्वे,
खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते,
कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ[1] °नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए°, णिच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे ।
गुणओ गमणगुणे ॥

१२६. अधम्मत्थिकाए[2] °णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे;
अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।
दव्वओ णं अधम्मत्थिकाए एगे दव्वे ।
खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते ।
कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे ।
गुणओ ठाणगुणे° ॥

---

१. स० पा०—कयाइ जाव णिच्चे ।

२. स० पा०—अधम्मत्थिकाए एवं चेव नवरं गुणओ ठाणगुणे ।

१२७ आगासत्थिकाए[1] •णं भंते! कतिवण्णे? कतिगंधे? कतिरसे? कतिफासे?
गोयमा! अवण्णे, अगधे, अरसे, अफासे;
अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ।
दव्वओ णं आगासत्थिकाए एगे दव्वे।
खेत्तओ लोयालोयप्पमाणमेत्ते—अणते।
कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे।
भावओ अवण्णे, अगधे, अरसे, अफासे।°
गुणओ अवगाहणागुणे॥

१२८ जीवत्थिकाए ण भते! कतिवण्णे? कतिगधे? कतिरसे? कतिफासे?
गोयमा! अवण्णे[2], •अगधे, अरसे, अफासे°;
अरूवी, जीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे।
से समासओ पचविहे पण्णत्ते,—तं जहा—दव्वओ[3], •खेत्तओ, कालओ, भावओ°, गुणओ।
दव्वओ णं जीवत्थिकाए अणताइं जीवदव्वाइं।
खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते।
कालओ न कयाइ न आसि[4], •न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए° णिच्चे।
भावओ अवण्णे, अगधे, अरसे, अफासे।
गुणओ उवओगगुणे॥

१२९. पोग्गलत्थिकाए ण भते! कतिवण्णे[5]? •कतिगधे? कतिरसे°? कतिफासे?
गोयमा! पंचवण्णे, पंचरसे, दुगधे, अट्ठफासे,
रूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए, लोगदव्वे।

---

१. स० पा०—आगासत्थिकाए वि एव चेव नवर खेत्तओ ण आगासत्थिकाए लोयालोयप्पमाणमेत्ते अणते चेव जाव गुणओ।
२. स० पा०—अवण्णे जाव अरूवी।
३. स० पा०—दव्वओ जाव गुणओ।
४. स० पा०—आसि जाव णिच्चे।
५. स० पा०—कतिवण्णे जाव कतिफासे।

से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा--दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ गुणओ।

दव्वओ णं पोग्गलत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं।

खेत्तओ लोयप्पमाणमेत्ते।

कालओ न कयाइ न आसि[1], •न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ--भविसु य, भवति य, भविस्सइ य--धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए°, णिच्चे।

भावओ वण्णमंते, गंधमंते, रसमंते, फासमंते।

गुणओ गहणगुणे॥

१३०. एगे भंते! धम्मत्थिकायपदेसे धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया?
गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे॥

१३१. एवं दोण्णि,[2] 'तिण्णि, चत्तारि'[3] पंच, छ, सत्त, अट्ठ, नव, दस, संखेज्जा, असंखेज्जा। भंते! धम्मत्थिकायपदेसा धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया?
गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे॥

१३२. एगपदेसूणे वि य णं भंते! धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया?
गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे॥

१३३. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ--एगे धम्मत्थिकायपदेसे नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया जाव एगपदेसूणे वि य णं धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया?

से नूणं गोयमा! खंडे चक्के? सगले चक्के?
भगवं! नो खंडे चक्के, सगले चक्के।
[4]•खंडे छत्ते? सगले छत्ते?
भगवं! नो खंडे छत्ते, सगले छत्ते।
खंडे चम्मे? सगले चम्मे?
भगवं! नो खंडे चम्मे, सगले चम्मे।
खंडे दंडे? सगले दंडे?
भगवं! नो खंडे दंडे, सगले दंडे।
खंडे दूसे? सगले दूसे?

---

१. सं० पा०--आसि जाव णिच्चे।
२. दोण्णि वि (अ, स), दो (क)।
३. तिण्णि वि चत्तारि वि (अ, स)।
४. सं० पा०--एवं छत्ते चम्मे दंडे दूसे आउहे मोदए।

भगवं ! नो खडे दूसे, सगले दूसे ।
खडे आयुहे ? सगले आयुहे[1] ?
भगव ! नो खडे आयुहे, सगले आयुहे ।
खडे मोदए ? सगले मोदए[2] ?

भगवं ! नो खडे मोदए, सगले मोदए ।° से तेणट्ठेणं गोयमा !, एव वुच्चइ—एगे धम्मत्थिकायपदेसे नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया जाव एगपदेसूणे वि य णं धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्व सिया ॥

१३४. से किखाइ[3] ण भते ! धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! असंखेज्जा धम्मत्थिकायपदेसा, ते सव्वे कसिणा पडिपुण्णा निरवसेसा एकग्गहणगहिया—एस ण गोयमा ! धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्व सिया ॥

१३५ एवं अधम्मत्थिकाए वि । आगासत्थिकाय-जीवत्थिकाय-पोग्गलत्थिकाया वि एवं चेव, नवर—तिण्ह पि पदेसा अणता भाणियव्वा । सेस तं चेव ॥

जीवत्त-उवदंसण-पदं

१३६ जीवे ण भते ! सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे आयभावेण जीवभावं उवदसेतीति वत्तव्वं सिया ?
हता गोयमा ! जीवे ण सउट्ठाणे[4] °सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे आयभावेण जीवभावं° उवदसेतीति वत्तव्व सिया ॥

१३७ से केणट्ठेण[5] °भते ! एव वुच्चइ—जीवे ण सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे आयभावेण जीवभाव उवदसेतीति° वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! जीवे ण अणंताण आभिणिबोहियनाणपज्जवाण, अणताण सुयनाण-पज्जवाण, अणताण ओहिनाणपज्जवाण, अणताणं मणपज्जवनाणपज्जवाणं, अणताण केवलनाणपज्जवाण, अणंताण मइअण्णाणपज्जवाण, अणंताणं सुयअण्णाणपज्जवाण, अणंताण विभगनाणपज्जवाण, अणंताणं चक्खुदंसण-पज्जवाणं, अणताणं अचक्खुदंसणपज्जवाण, अणंताणं ओहिदंसणपज्जवाण, अणंताण केवलदसणपज्जवाण उवओग गच्छइ । उवओगलक्खणे ण जीवे । से एएणट्ठेण एव वुच्चइ—गोयमा ! जीवे णं सउट्ठाणे[6] °सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे आयभावेण जीवभावं उवदंसेतीति° वत्तव्वं सिया ॥

---

१. आउहे (क, व) ।
२ मोयए (अ, क, व, स) ।
३ किंखाइए (ता) ।
४. स० पा०—सउट्ठाणे जाव उवदसेतीति ।
५ स० पा०—केणट्ठेणं जाव वत्तव्व ।
६ स० पा०—सउट्ठाणे जाव वत्तव्वं ।

आगास-पदं

१३८. कतिविहे णं भंते ! आगासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे आगासे पण्णत्ते, तं जहा—लोयागासे[1] य अलोयागासे य ॥

१३९. लोयागासे णं भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा ? जीवप्पदेसा ? अजीवा ? अजीवदेसा ? अजीवप्पदेसा ?
गोयमा ! जीवा वि, जीवदेसा वि, जीवप्पदेसा वि; अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवप्पदेसा वि ।
जे जीवा ते नियमा एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अणिंदिया ।
जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा[2], •बेइंदियदेसा, तेइंदियदेसा, चउरिंदियदेसा, पंचिंदियदेसा°, अणिंदियदेसा ।
जे जीवप्पदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा[3], •बेइंदियपदेसा, तेइंदियपदेसा, चउरिंदियपदेसा, पंचिंदियपदेसा°, अणिंदियपदेसा ।
जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूवी य अरूवी य ।
जे रूवी ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणुपोग्गला ।
जे अरूवी ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, नो धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा; अधम्मत्थिकाए, नो अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए ॥

१४०. अलोयागासे णं भंते ! किं जीवा[4] ? •जीवदेसा ? जीवप्पदेसा ? अजीवा ? अजीवदेसा ? अजीवप्पदेसा ?°
गोयमा ! नो जीवा[5], •नो जीवदेसा, नो जीवप्पदेसा; नो अजीवा, नो अजीवदेस°, नो अजीवप्पदेसा; एगे अजीवदव्वदेसे अगरुयलहुए अणंतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणे ॥

अत्थिकाय-पदं

१४१. धम्मत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ ॥

---

१. ° कासे (क, ता, म) ।
२. सं० पा०—एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा ।
३. सं० पा०—एगिंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा ।
४. सं० पा०—जीवा पुच्छा तह चेव ।
५. सं० पा०—जीवा जाव नो ।

१४२. [1]•अधम्मत्थिकाए ण भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता ण चिट्ठइ ॥
१४३. लोयाकासे णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोय चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ ॥
१४४. जीवत्थिकाए ण भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ ॥
१४५. पोग्गलत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ° ॥

फुसणा-पदं

१४६. अहोलोए णं भंते ! धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसति ?
गोयमा ! सातिरेगं अद्धं फुसति ॥
१४७. तिरियलोए णं भंते[2] ! •धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसति ?°
गोयमा ! असंखेज्जइभागं फुसति ॥
१४८. उड्ढलोए णं भंते[3] ! •धम्मत्थिकायस्स केवइय फुसति ?°
गोयमा ! देसूणं अद्धं फुसति ॥
१४९ इमा ण भंते ! रयणप्पभापुढवी धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसति ? असंखेज्जइभागं फुसति ? संखेज्जे भागे फुसति ? असंखेज्जे भागे फुसति ? सव्वं फुसति ?
गोयमा ! णो संखेज्जइभाग फुसति, असंखेज्जइभागं फुसति, णो संखेज्जे भागे फुसति, णो असंखेज्जे भागे फुसति, णो सव्वं फुसति ॥
१५०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदही धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसति ? असंखेज्जइभागं फुसति ? संखेज्जे भागे फुसति ? असंखेज्जे भागे फुसति ? सव्वं फुसति ?
जहा रयणप्पभा तहा घणोदहि-घणवाय-तणुवाया वि ॥
१५१. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए ओवासंतरे धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभाग फुसति ? असंखेज्जइभाग फुसति ? संखेज्जे भागे फुसति ? असंखेज्जे भागे फुसति ? सव्वं फुसति ?
गोयमा ! संखेज्जइभाग फुसति, नो असंखेज्जइभागं फुसति, नो संखेज्जे भागे फुसति, नो असंखेज्जे भागे फुसति, नो सव्वं फुसति ।
ओवासंतराइं सव्वाइं ॥

---

१. सं० पा०—एव अधम्मत्थिकाए लोयाकासे जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए पंच वि एक्काभिलावा ।
२. सं० पा०—भंते पुच्छा ।
३. सं० पा०—भंते पुच्छा ।

१५२. जहा रयणप्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया[1] एवं जाव[2] अहेसत्तमाए[3] ॥
एवं सोहम्मे कप्पे जाव[4] ईसीपब्भारा पुढवी—एते सव्वे वि असखेज्जइभागं फुसंति । सेसा पडिसेहियव्वा ।

१५३. एवं अधम्मत्थिकाए, एवं लोयाकासे वि ।

संगहणी-गाहा

पुढवोदही घण-तणू, कप्पा गेवेज्जणुत्तरा सिद्धी ।
संखेज्जइभाग अंतरेसु सेसा असंखेज्जा ॥१॥

---

१. भाणिया (अ, ता, व, स) ।
२. भ० २।१४६-१५१; २।७५ ।
३. अहेसत्तमाए जबुद्दीवाइया दीवसमुद्दा (अ, ता, म) ।
४. अ० सू० २८७ ।

तइयं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१ केरिसविउव्वणा २ चमर ३. किरिय ४,५. जाणित्थि ६ नगर ७ पाला य।
८. अहिवइ ९. इंदिय १०. परिसा, ततियम्मि सए[1] दसुद्देसा ॥१॥

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं मोया नाम नयरी होत्था—वण्णओ[2] ॥

२. तीसे ण मोयाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे नदणे नामं चेइए होत्था—वण्णओ[3] ॥

३. 'तेणं कालेणं तेणं समएणं'[4] सामी समोसढे। परिसा निग्गच्छइ, पडिगया परिसा ॥

देवविकुव्वणा-पदं

४. तेणं कालेणं तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स दोच्चे अंतेवासी अग्गिभूई नाम अणगारे गोयमे गोत्तेण सत्तुस्सेहे जाव[5] पज्जुवासमाणे एवं वदासि—चमरे ण भते ! असुरिंदे असुरराया केमहिड्ढीए[6] ? केमहज्जुतीए ? केमहाबले ? केमहायसे ? केमहासोक्खे ? केमहाणुभागे ? केवइय च णं पभू विकुव्वित्तए ?
गोयमा ! चमरे णं असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए,[7] °महज्जुतीए, महाबले, महायसे, महासोक्खे°, महाणुभागे। से णं तत्थ चोत्तीसाए भवणावाससयसहस्साणं,[8] चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं, तायत्तीसाए[9] तावत्तीसगाणं[10],

---

१. सदे (ता)।
२. ओ० सू० १।
३. ओ० सू० २-१३।
४. × (ता)।
५ भ० १।९, १०।
६. केमहड्ढीए (क, म)।
७. स० पा०—महिड्ढीए जाव महाणुभागे।
८. भवण० (अ, क, ता, म)।
९. तावत्तीसाए (अ, ता, व, म, स)।
१०. सं० पा०—तावत्तीसगाणं जाव विहरइ।

•चउण्हं लोगपालाणं, पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, चउसट्ठीण आयरक्ख-देवसाहस्सीण, अण्णेसिं च बहूण चमरचंचा रायहाणिवत्थव्वाण देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहयनट्टगीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजेमाणे° विहरइ। एमहिड्ढीए,[1] •एमहज्जुतीए, एमहाबले, एमहायसे, एमहासोक्खे,° एमहाणुभागे। एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए। से जहानामए—जुवती जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया वेउव्विय समुग्घाएणं समोहण्णइ,[2] समोहणित्ता 'संखेज्जाइं जोयणाइं'[3] दंडं[4] निसिरइ, तं जहा—रयणाणं[5] •वयराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंजणाणं अंजणपुलगाणं रययाणं जायरूवाणं अंकाणं फलिहाणं° रिट्ठाणं अहाबायरे पोग्गले परिसाडेइ, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियायइ[6], परियाइत्ता दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णति। पभू णं गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य आइण्णं वितिकिण्णं उवत्थडं संथडं फुडं अवगाढावगाढं[7] करेत्तए।

अदुत्तरं च णं गोयमा! पभू चमरे असुरिंदे असुरराया तिरियमसंखेज्जे दीव-समुद्दे बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे संथडे फुडे अवगाढावगाढे[8] करेत्तए।

एस णं गोयमा! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अयमेयारूवे[9] विसए विसयमेत्ते वुइए, णो चेव णं संपत्तीए विकुव्विंसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा॥

५. जइ णं भंते! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्ढीए जाव[10] एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए, चमरस्स णं भंते! असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणिया देवा केमहिड्ढीया? जाव[11] केवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए?

---

१. स० पा०—एमहिड्ढीए जाव एमहाणुभागे।
२. समोहणइ (अ, ता, स)।
३. संखेज्जाणि जोयणाणि (अ, ब)।
४. उड्ढं दंडं (ता, म)।
५. स० पा०—रयणाण जाव रिट्ठाणं। अस्य-पूर्तिः—'रायपसेणइय' (१०) सूत्रेण कृता। भगवतीवृत्तौ तु एतत् पूर्त्तिरित्थमस्ति—वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलयाणं सोगंधियाणं जोतीरसाणं अंकाणं अंजणाणं रययाणं जायरूवाणं अंजणपुलयाणं फलिहाणं।
६. परियाति (क)।
७. अरगाढावगाढं (अ, ता, ब)।
८. अरगाढावगाढे (अ, क, ता, ब)।
९. अतमेता° (ता)।
१०. भ० ३।४।
११. भ० ३।४।

गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणिया देवा महिड्ढीया[1] •महज्जुतीया महाबला महायसा महासोक्खा° महाणुभागा। ते णं तत्थ साण-साणं भवणाणं, साणं-साणं सामाणियाण, साणं-साणं अग्गमहिसीण जाव[2] दिव्वाइं भोगभोगाइ भुंजमाणा विहरंति। एमहिड्ढीया जाव[3] एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए। से जहानामए—जुवती जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ जाव[4] दोच्च पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ।

पभू ण गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे केवलकप्पं जंबुद्दीव दीवं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहि देवीहि य आइण्ण वितिकिण्ण उवत्थडं संथड फुडं अवगाढावगाढं करेत्तए।

अदुत्तरं च णं गोयमा ! पभू चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे तिरियमसखेज्जे दीव-समुद्दे बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे सथडे फुडे अवगाढावगाढे करेत्तए।

एस णं गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगस्स सामाणियदेवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, नो चेव ण सपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्संति वा।

६. जइ ण भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणियदेवा एमहिड्ढीया जाव[5] एवतियं च ण पभू विकुव्वित्तए, चमरस्स ण भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो तावत्तीसया[6] देवा केमहिड्ढीया[7] ?

तावत्तीसया जहा सामाणिया तहा नेयव्वा। लोयपाला तहेव, नवरं—संखेज्जा दीव-समुद्दा भाणियव्वा[8]।

७. जइ ण भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो लोगपाला देवा एमहिड्ढीया जाव[9] एवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए, चमरस्स ण असुरिंदस्स असुररण्णो अग्गमहिसीओ देवीओ केमहिड्ढियाओ जाव[10] केवइयं च ण पभू विकुव्वित्तए ?

गोयमा ! चमरस्स ण असुरिंदस्स असुररण्णो अग्गमहिसीओ देवीओ महिड्ढियाओ

---

१. स० पा०—महिड्ढीया जाव महाणुभागा।
२. भ० ३।४।
३. भ० ३।४।
४. भ० ३।४।
५. भ० ३।४।
६. तायत्ती ° (क)।
७ महड्डिया (स)।
८. भाणियव्वा बहूहिं असुरकुमारेहि देवेहिं देवेहि य आइन्ने जाव विकुव्विस्सति वा (अ, ब)।
९. भ० ३।४।
१०. भ० ३।४।

जाव[1] महाणुभागाओ[2]। ताओ णं तत्थ साणं-साणं भवणाणं, साणं-साणं सामाणिय-साहस्सीण, साण-साणं महत्तरियाण[3], साण-साण परिसाणं जाव[4] एमहिड्ढीयाओ। अण्णं जहा लोगपालाणं अपरिसेसं।

८. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति भगव दोच्चे[5] गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तच्च गोयम वायुभूति अणगार एव वदासि—एव खलु गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्ढीए त चेव एव सव्वं अपुट्ठवागरणं नेयव्वं अपरिसेसिय[6] जाव[7] अग्गमहिसीण वत्तव्वया समत्ता।

९. तेण से तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे दोच्चस्स गोयमस्स अग्गिभूतिस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठ नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एयमट्ठ असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव[8] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—एवं खलु भंते! दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे मम एवमाइक्खइ भासइ पण्णवेइ परूवेइ—एव खलु गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए[9] जाव[10] महाणुभागे। से ण तत्थ चोत्तीसाए भवणावाससयसहस्साण त चेव सव्वं अपरिसेस भाणियव्वं जाव[11] अग्गमहिसीण[12] वत्तव्वया समत्ता।

१० से कहमेयं भंते! एवं?

गोयमादि! समणे भगव महावीरे तच्च गोयम वायुभूति अणगार एवं वयासी—जं ण गोयमा! तव दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे एवमाइक्खइ भासइ पण्णवेइ परूवेइ—एव खलु गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए त चेव सव्व जाव[13] अग्गमहिसीओ। सच्चे ण एसमट्ठे। अह पि ण गोयमा! एवमाइक्खामि भासामि पण्णवेमि परूवेमि—एव खलु गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए[14] त चेव जाव[15] अग्गमहिसीओ। 'सच्चे णं एसमट्ठे'[16]।

---

१. भ० ३।४।
२. महाणुभावाओ (ता)।
३. मयहरिया° (अ, व)।
४. भ० ३।४।
५. × (क, ता, म)।
६. अपरिसेसं (अ, क, स)।
७. भ० ३।४-७।
८. भ० १।१०।
९. एमहिड्ढीए (अ, क, ता, व)।
१०. भ० ३।४।
११. भ० ३।४-७।
१२. अग्गमहिसीओ (अ, क, ता, व)।
१३. भ० ३।४-७।
१४. महिड्ढीए सो चेव बितिओ गमो भाणियव्वो (अ, व, म, स)।
१५. भ० ३।४-७।
१६ सच्चमेसे अट्ठे (अ, क, ता, व)।

११. सेवं भंते ! सेवं भते ! त्ति तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोच्चं गोयमं अग्गिभूइं अणगारं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेइ ॥

१२. 'तए णं से तच्चे गोयमे वायुभूति अणगारे दोच्चेणं गोयमेण अग्गिभूतिणा अणगारेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव[1] पज्जुवासमाणे एवं वयासी'[2]—जइ णं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्ढीए जाव[3] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, बली णं भंते ! वइरोयणिंदे वइरोयणराया केमहिड्ढीए ? जाव[4] केवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए ?

'गोयमा ! बली णं वइरोयणिंदे वइरोयणराया महिड्ढीए जाव[5] महाणुभागे। जहा चमरस्स तहा बलिस्स वि नेयव्वं, नवरं—सातिरेगं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं भाणियव्वं, सेसं तं चेव निरवसेसं नेयव्वं, नवरं—नाणत्तं जाणियव्वं भवणेहिं सामाणिएहि य'[6] ॥

---

१. भ० १।१० ।

२. ततेणं से दोच्चे गोतमे अग्गिभूती अणगारे तच्चेणं गोतमेणं वायुभूइणा अणगारेणं एतमट्ठं सम्मं विणएण भुज्जो-भुज्जो खामिए समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता तच्चेणं गोतमेण वायुभूतिणा अणगारेण सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीर वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी (क, ता), अत्र प्रश्नकर्ता तृतीयो गोतमो वर्तते तेन प्रस्तुतवाचना समीचीना न दृश्यते ।

३. भ० ३।४ ।

४ भ० ३।४ ।

५. भ० ३।४ ।

६. गोयमा ! बली वइरोयणिंदे वइरोयणराया महिड्ढीए, से णं तत्थ तीसाए भवणावाससयसहस्साणं सट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं सेसं जहा चमरस्स, नवरं—चउण्ह सट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं जाव भुंजमाणे विहरति । से जहानामए एवं जहा चमरस्स तहा बलिस्स वि नेयव्व, नवरं—सातिरेग केवलकप्प जंबुद्दीव भाणियव्व सेसं त चेव निरवसेस नेयव्व, नवरं—नाणत्त जाणियव्वं भवणेहिं सामाणिएहिं (अ); गोयमा ! जाव महिड्ढीए ।५। से ण तत्थ तीसाए भवणावाससतसहस्साण सट्ठीए सामाणियसाहस्सीण सेसं जहा चमरस्स, नवरं—चउण्ह सट्ठीण आतरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च जाव भुंजमाणे विहरइ । से जहानामए एवं जहा चमरस्स, नवरं—साइरेगं जंबुद्दीव जाव एगमेगाए अग्गमहिसीए देवीए इमे वुइए विसए जाव विउव्विस्सति वा (क); गोयमा ! जाव महिड्ढीए ।५। से ण तत्थ तीसाए भवणावाससतसहस्साण सट्ठीए सामाणियसाहस्सीण सेसं जहा चमरस्स, नवरं—चउण्ह सट्ठीणं आतरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च जाव भुंजमाणे विहरइ । से जहानामए एव जहा चमरस्स, नवरं साइरेग केवलकप्पं जंबुद्दीव

१३. सेव भते ? सेव भते ! त्ति तच्चे गोयमे 'वायुभूई अणगारे समणं भगव महावीरं वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता णच्चासण्णे[1] •णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएणं पजलियडे° पज्जुवासइ'[2] ॥

१४. तते ण से दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे समण भगव महावीरं वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—जइ ण भते ! बली वइरोयणिदे वइरोयणराया एमहिड्ढीए जाव[3] एवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए, धरणे ण भते ! नागकुमारिंदे नागकुमारराया केमहिड्ढोए ? जाव[4] केवइय च ण पभू विकुव्वित्तए ?
गोयमा ! धरणे ण नागकुमारिंदे नागकुमारराया महिड्ढीए जाव[5] महाणुभागे। से णं तत्थ चोयालीसाए भवणावाससयसहस्साण, छण्हं सामाणियसाहस्सीण, तायत्तीसाए तावत्तीसगाण, चउण्हं लोगपालाण, छण्हं अग्गमहिसीण सपरिवाराण, तिण्हं परिसाण, सत्तण्हं अणियाण, सत्तण्हं अणियाहिवईण, चउव्वीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीण अण्णेसि, च जाव[6] विहरइ। एवतिय च णं पभू विउव्वित्तए। से जहानामए जुवती जुवाणे जाव[7] पभू केवलकप्पं जबुद्दीव दीव जाव तिरियं सखेज्जे दीव-समुद्दे बहूहि नागकुमारीहि जाव विकुव्विस्सति वा।
सामाणिया तावत्तीस-लोगपालग्गमहिसीओ य तहेव जहा[8] चमरस्स, नवरं— सखेज्जे दीव-समुद्दे भाणियव्वे ॥

१५. एवं जाव[9] थणियकुमारा, वाणमतरा, जोईसिया वि, नवरं—दाहिणिल्ले सव्वे अग्गिभूई पुच्छइ, उत्तरिल्ले सव्वे वायुभूई पुच्छइ ॥

१६ भतेत्ति ! भगव दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे समण भगव महावीरं वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—जइ ण भंते ! जोइसिदे जोइसराया एमहिड्ढीए जाव[10] एवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए, सक्के ण भते ! देविदे देवराया केमहिड्ढीए ? जाव[11] केवतिय च णं पभू विकुव्वित्तए ?

दीव भाणितव्व सेस तहेव जाव विउव्वि-स्सति वा।
जइण भते ! बली वइरोयणिदे वइरोयण-राया एवमहिड्ढीए जाव एवतिय च ण पभू विउव्वित्तए, बलिस्सण भते। वइरोयणस्स वइ° सामाणिया देवा केमहिड्ढीया एव सामाणिया तावत्तीसा तावत्तीसा लोगपाल-ग्गमहिसीओ य जहा चमरस्स, नवर— सातिरेग जबुद्दीव जाव एगमेगाए अग्गमहि-सीदेवीए इमे वतिए विसए जाव विउव्वि-स्सति वा (ता)।

१. स० पा०—णच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ।
२. वायुभूई जाव विहरइ (अ, ब, म, स)।
३. भ० ३।१२।
४. भ० ३।१२।
५ भ० ३।४।
६. भ० ३।४।
७. भ० ३।४।
८. भ० ३।५-७।
९. पू० प० २।
१०. भ० ३।४।
११. भ० ३।४।

गोयमा ! सक्के णं देविंदे देवराया महिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे । से णं बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साण, चउरासीए[2] सामाणियसाहस्सीणं,[3] •तायत्तीसाए तावत्ती-सगाण, चउण्हं लोगपालाण अट्ठण्ह अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईण°, चउण्हं चउरासीण आयरक्खसाहस्सीणं, अण्णेसिं च जाव[4] विहरइ । एमहिड्ढए जाव[5] एवतिय च णं पभू विकुव्वित्तए, एवं जहेव[6] चमरस्स तहेव भाणियव्व, नवर—दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अवसेसं तं चेव ।

एस ण गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते[7] बुइए, नो चेव णं सपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा ।।

१७ जइ णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया एमहिड्ढीए जाव[8] एवतियं च ण पभू विकुव्वित्तए, एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासि तीसए नाम अणगारे पगइभद्दए[9] •पगइउवसते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसपन्ने अल्लीणे° विणीए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं अट्ठ संवच्छराइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता, मासियाए[10] सलेहणाए अत्ताण झूसेत्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे सयंसि विमाणसि उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसतरिए अगुलस्स असखेज्जइभागमेत्तीए[11] ओगाहणाए सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सामा-णियदेवत्ताए उववण्णे ।

तए ण तीसए देवे अहुणोववण्णमेत्ते समाणे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव[12] गच्छइ [त जहा—आहारपज्जत्तीए, सरीरपज्जत्तीए, इंदियपज्जत्तीए, आणापाणु-पज्जत्तीए, भासा-मणपज्जत्तीए[13]]

तए णं त तीसय देव पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव[14] गयं समाण सामाणिय-परिसोववण्णया देवा करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु जएण विजएण वद्धावेंति वद्धावित्ता एवं वयासी—अहो णं देवाणुप्पिएहिं

---

१. भ० ३।४।
२. चउरासीतीए (क, ता, म)।
३ स० पा०—सामाणियसाहस्सीण जाव चउण्ह।
४. भ० ३।४।
५ भ० ३।४।
६. भ० ३।४-७।
७. विसयमेत्ते ण (म, स)।
८. भ० ३।४।
९ स० पा०—पगइभद्दए जाव विणीए।
१०. मासिय (क, व)।
११. असखेज्जभाग° (अ, व), असखेज्जभागमे-त्ताए (स)।
१२ पज्जत्तभाव (ता)।
१३. असौ कोष्ठकवर्तिपाठो व्याख्यांश : प्रतीयते ?
१४. पज्जत्तभाव (अ, स)।

दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए। जारिसिया[1] णं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तारिसिया णं सक्केण वि देविंदेण देवरण्णा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए। जारिसिया णं सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए। जारिसिया णं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए।

से णं भंते! तीसए देवे केमहिड्ढीए जाव केवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए? गोयमा! महिड्ढीए जाव[2] महाणुभागे। से णं तत्थ सयस्स विमाणस्स, चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं, चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अण्णेसिं च बहूणं वेमाणियाणं देवाणं, देवीण य जाव[3] विहरइ। एमहिड्ढीए जाव[4] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए। से जहानामए जुवती जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, जहेव सक्कस्स तहेव जाव[5] एस णं गोयमा! तीसयस्स देवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, णो चेव णं संपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा॥

१८. जइ णं भंते! तीसए देवे महिड्ढीए जाव[6] एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए, सक्कस्स णं भंते! देविंदस्स देवरण्णो अवसेसा सामाणिया देवा केमहिड्ढीया? तहेव सव्वं जाव[7] एस णं गोयमा! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो एगमेगस्स सामाणियस्स[8] देवस्स इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, नो चेव णं संपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा।

तावत्तीसय—लोगपालग्गमहिसी णं जहेव[9] चमरस्स, नवरं—दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अण्णं तं चेव॥

१९. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति दोच्चे गोयमे जाव[10] विहरइ॥

२०. भंतेति! भगवं तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समणं भगवं[11] °महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वदासी—जइ णं भंते! सक्के देविंदे देवराया

---

१. जारिसाण (अ, ब)।
२. भ० ३।४।
३. भ० ३।४।
४. भ० ३।४।
५. भ० ३।१६।
६. भ० ३।४।
७. भ० ३।१७।
८. सामाणिय (अ)।
९. भ० ३।६, ७।
१०. भ० १।५१।
११. स० पा०—भगवं जाव एवं।

महिड्ढीए जाव[1] एवइय च णं पभू विकुव्वित्तए, ईसाणे णं भंते ! देविदे देवराया केमहिड्ढीए ? एवं तहेव[2], नवरं—साहिए दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अवसेस तहेव।।

२१. जइ णं भंते ! ईसाणे[3] देविदे देवराया एमहिड्ढीए जाव[4] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुरुदत्तपुत्ते नामं अणगारे पगति-भद्दए जाव[5] विणीए अट्ठमंअट्ठमेण अणिक्खित्तेण, पारणए आयबिलपरिग्गहिएणं तवोकम्मेण उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे बहुपडिपुण्णे छम्मासे सामण्णपरियागं पाउणित्ता, अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता,[6] तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे सयंसि विमाणंसि उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसतरिए अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए ईसाणस्स देविदस्स देवरण्णो सामाणियदेवत्ताए उववण्णे। जा तीसए वत्तव्वया[7] सच्चेव[8] अपरिसेसा कुरुदत्तपुत्ते वि. नवरं—सातिरेगे दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अवसेसं तं चेव।

एवं सामाणिय-तावत्तीसग-लोगपाल-अग्गमहिसीणं जाव[9] एस णं गोयमा ! ईसाणस्स देविदस्स देवरण्णो एगमेगाए अग्गमहिसीए देवीए अयमेयारूवे विसए विसय-मेत्ते बुइए, नो चेव णं संपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा।

२२ एवं सणंकुमारे वि,[10] नवरं—चत्तारि केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अदुत्तरं च णं तिरियमसंखेज्जे।

एवं[11] सामाणिय-तावत्तीसग-लोगपाल-अग्गमहिसीणं[12]। असंखेज्जे दीव-समुद्दे सव्वे विकुव्वंति, सणंकुमाराओ आरद्धा[13] उवरिल्ला लोगपाला[14] सव्वे वि असंखेज्जे दीव-समुद्दे विकुव्वंति।।

---

१. भ० ३।१६।
२. भ० ३।१६।
३. तीसाणे (ता)।
४ भ० ३।४।
५. भ० ३।१७।
६. झोसइत्ता (अ, व, स); झोसेत्ता (ता, म)।
७. भ० ३।१७।
८ सा० (ता)।
९. भ० ३।५-७।
१०. भ० ३।१६।
११. भ० ३।५-७।
१२ यद्यपि सनत्कुमारे स्त्रीणामुत्पत्तिर्नास्ति तथापि या. सौधर्मोत्पन्नाः समयाधिकप-ल्योपमादिदशपल्योपमान्तस्थितयोऽपरिगृहीतदेव्यस्ताः सनत्कुमारदेवाना भोगाय सप-द्यन्ते इति कृत्वाग्रमहिष्य इत्युक्तम् (वृ); इत्यपि सभाव्यते 'अग्गमहिसीए' इति पाठः आदर्शेषु प्रवाहरूपेण आगतः, वृत्तिकृता सगत्यर्थं उक्तव्याख्या कृता।
१३. आरद्ध (अ)।
१४. लोगवाला (म)।

२३. एवं माहिंदे वि, नवर—सातिरेगे चत्तारि केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे।
एवं बंभलोए वि, नवर—अट्ठ केवलकप्पे।
एवं लंतए वि, नवर—सातिरेगे अट्ठ केवलकप्पे।
महासुक्के सोलस केवलकप्पे। सहस्सारे सातिरेगे सोलस।
एवं पाणए वि, नवर—बत्तीस केवलकप्पे।
एवं अच्चुए वि, नवर—सातिरेगे बत्तीस केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अण्णं तं चेव॥

२४. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ जाव[1] विहरइ॥

तामलिस्स ईसाणिंद-पदं

२५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ मोयाओ[2] नयरीओ नंदणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ॥

२६. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[3] जाव[4] परिसा पज्जुवासइ॥

२७. तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया[5] ईसाणे कप्पे ईसाणवडेंसए विमाणे जहेव रायप्पसेणइज्जे जाव[6] दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं बत्तीसइबद्धं नट्टविहिं उवदंसित्ता जाव जामेव दिसिं पाउब्भूए, तामेव दिसिं पडिगए।

२८. भंतेति! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—अहो णं भंते! ईसाणे देविंदे देवराया महिड्ढीए जाव[7] महाणुभागे।
ईसाणस्स णं भंते! सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे कहिं गते? कहिं अणुपविट्ठे?
गोयमा! सरीरं गते, सरीरं अणुपविट्ठे॥

२९. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—सरीरं गते? सरीरं अणुपविट्ठे?
गोयमा! से जहानामए कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवायगंभीरा। तीसे णं[8] *कूडागारसालाए अदूरसामंते, एत्थ णं महेगे जणसमूहे एगं महं अब्भवद्दलगं वा वासवद्दलगं वा महावायं वा एज्जमाणं

---

१. भ० १।५१।
२. मोतातो (क, ता)।
३. ओ० सू० १।
४. ओ० सू० १९-५२।
५. देवराया सूलपाणी वसभवाहणे उत्तरड्ढलो-गाहिवई अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहि-वई अरयंवर वत्थधरे आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचंचलकुंडलविलिहिज्जमाण-गंडे जाव दस दिसाओ उज्जोवेमाणे पभासे-माणे (अ, म, स)।
६. राय० सू० ७-१२०।
७. भ० ३।४।
८. सं० पा०—कूडागारसालदिट्ठंतो भाणियव्वो।

पासति, पासित्ता तं कूडागारसाल अतो अणुपविसित्ता णं चिट्ठइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चति—सरीर गते, सरीर अणुपविट्ठे° ॥

३०. ईसाणेण भते ! देविदेण देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढो दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे किण्णा लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? के वा एस आसि पुव्वभवे ? किनामए वा ? किगोत्ते वा ? कयरसि वा गामसि वा नगरंसि वा जाव[1] सण्णिवेससि वा[2] ? कि वा दच्चा ? कि वा भोच्चा ? कि वा किच्चा ? कि वा समायरित्ता ? कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिए एगमवि आरिय धम्मिय सुवयण सोच्चा निसम्म ? ज ण ईसाणेणं देविदेण देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ?

३१. एवं खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे तामलित्ती[3] नाम नयरी होत्था—वण्णओ[4] ॥

३२ तत्थ ण तामलित्तीए नयरीए तामली नाम मोरियपुत्ते गाहावई होत्था—अड्ढे दित्ते जाव[5] वहुजणस्स अपरिभूए यावि होत्था ॥

३३ तए णं तस्स मोरियपुत्तस्स तामलिस्स गाहावइस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयसि कुटुवजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[6] °चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—अत्थि ता मे पुरा पोराणाण सुचिण्णाणं सुपरक्कताण[7] सुभाण कल्लाणाण कडाण कम्माण कल्लाणफलवित्तिविसेसे, जेणाहं हिरण्णेण वड्ढामि सुवण्णेण वड्ढामि, धणेण वड्ढामि, धण्णेण वड्ढामि, पुत्तेहि वड्ढामि, पसूहि वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सतसारसावएज्जेणं अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, त कि णं अहं पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं[8] °सुपरक्कताण सुभाण कल्लाणाण° कडाण कम्माणं 'एगतसो खय'[9] उवेहमाणे विहरामि ?

त जावताव[10] अहं हिरण्णेण वड्ढामि जाव अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, जावं च मे मित्त-नाति-नियग-सयण-सवधि-परियणो आढाति परियाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाण मगल देवय चेइय विणएण पज्जुवासइ, तावता मे सेय कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[11] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा

१. भ० १।४६ ।
२ वा कि वा सोच्चा (क) ।
३. तामलत्ती (म) ।
४. ओ० सू० १ ।
५ भ० २।६४ ।
६. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
७. सुपरि° (अ, म), सुप्पर° (क, ता, स); सुप्परि° (व) ।
८. स० पा०—सुचिण्णाण जाव कडाण ।
९. °सोक्खय (अ, क, व, म, स) ।
१०. जाव (व) ।
११. भ० २।६६ ।

जलंते सयमेव दारुमयं पडिग्गहग[1] करेत्ता विउल 'असण-पाण-खाइम-साइम'[2] उवक्खडावेत्ता, मित्त-नाइ नियग-सयण[3],-संबधि-परियण आमंतेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवंधि-परियणं विउलेण असण-पाण-'खाइम-साइमेणं'[4] वत्थ-गंध-मल्लालकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुंबे[5] ठावेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियणं जेट्ठपुत्त च आपुच्छित्ता, सयमेव दारुमय पडिग्गहग गहाय मुडे भवित्ता पाणामाए[6] पव्वज्जाए पव्वइत्तए। पव्वइए वि य ण समाणं इम एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हिस्सामि—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं उड्ढ वाहाओ 'पगिज्झिय-पगिज्झिय'[7] सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य ण पारणयसि[8] आयावणभूमीओ पच्चोरुभित्ता सयमेव दारुमय पडिग्गहगं गहाय तामलित्तीए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्ता सुद्धोदणं पडिग्गाहेत्ता त तिसत्तक्खुत्तो उदएण[9] पक्खालेत्ता तओ पच्छा आहार आहारित्तए त्ति कट्टु एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[10] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते सयमेय दारुमयं पडिग्गहगं करेइ, करेत्ता विउल असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता ततो पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइ वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे[11] भोयणवेलाए भोयणमडवसि सुहासणवरगए तेणं[12] मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परिजणेण सद्धि त विउल असण-पाण-खाइम-साइमं आसादेमाणे वीसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए वि य ण समाणे आयते चोक्खे परमसुइब्भूए त मित्त[13]-•नाइ-नियग-सयण-सवंधि-°परियण विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-गंध-मल्लालकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, तस्सेव मित्त-नाइ[14]-•नियग-सयण-सबधि° परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्त कुटुंबे ठावेइ, ठावेत्ता तं मित्त-नाइ[15]-•नियग-सयण-

१. पडिग्गहय (अ, म, स)।
२. असण पाण खाइम साइम (अ, स)।
३. × (क, ता, व, म, स)।
४. खातिमसातिमेण (व, स)।
५. कुडुवे (ता)।
६. पाणायामाए (व)।
७. पगज्झिय २ (स)।
८. पारणसि (म)।
९ दएण (ता, म)।
१० भ० २।६६।
११. अप्पमहग्घालकारभूसितसरीरे (ता)।
१२. तए णं (अ, ता, व, म, स)।
१३ स० पा०—मित्त जाव परियण।
१४. स० पा०—नाइ जाव परियणस्स।
१५. स० पा०—नाइ जाव परियण।

सबंधि-°परियणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता मुंडे भवित्ता पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए। पव्वइए वि य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ —कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं जाव आहारित्तए त्ति कट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं[1] अभिगिण्हित्ता जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरइ। छट्ठस्स वि य णं पारणयंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ[2], पच्चोरुभित्ता सयमेव दारुमयं पडिग्गहगं गहाय तामलित्तीए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडइ, अडित्ता सुद्धोयणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेत्ता तिसत्तक्खुत्तो उदएणं पक्खालेइ, पक्खालेत्ता तओ पच्छा आहारं आहारेइ॥

३४. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—पाणामा पव्वज्जा?
गोयमा! पाणामाए णं पव्वज्जाए पव्वइए समाणे जं जत्थ पासइ—इंदं वा खंदं वा रुद्दं वा सिवं वा वेसमणं वा अज्जं वा कोट्टकिरियं[3] वा रायं वा[4] °ईसरं वा तलवरं वा माडंबियं वा कोडुंबियं वा इब्भं वा सेट्ठिं सेणावइं वा° सत्थवाहं[5] वा कागं वा साणं वा पाणं[6] वा—उच्चं पासइ उच्चं पणामं करेइ, नीयं पासइ नीयं पणामं करेइ, जं जहा पासइ तस्स तहा पणामं करेइ। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ पाणामा पव्वज्जा॥

३५. तए णं से तामली मोरियपुत्ते तेणं ओरालेणं विपुलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बालतवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे[7] °निम्मंसे अट्ठि-चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे° धमणिसंतए जाए यावि होत्था।

३६. तए णं तस्स तामलिस्स बालतवस्सिस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[8] °चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे°समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं विपुलेणं[9] °पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं सस्सिरीएणं° उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे जाव[10] धमणिसंतए जाए, तं अत्थि जा[11] मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तावता मे सेयं

---

१. अभिग्गहं अभिगिण्हइ (अ, क, ता, ब, म, स); 'उवंगा' (३।४२) सूत्रे सोमिलस्य प्रव्रज्याप्रसंगे एतत् पदं नास्ति। अत्रापि तथैव युक्तमस्ति।
२. पच्चोरुहइ (अ, ब)।
३. ° इरियं (ता)।
४. सं० पा०—रायं वा जाव सत्थवाहं।
५. सत्थाहं (ता)।
६. पाणगं (अ)।
७. भुक्खे (अ, क, ब, स), सं० पा०—लुक्खे जाव धमणि०।
८. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
९. सं० पा०—विपुलेणं जाव उदग्गेणं।
१०. भ० ३।३५।
११. × (अ); ता (ता) ; इ (ब)।

कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते तामलित्तीए नगरीए दिट्ठाभट्ठे य पासडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसगतिए य[1] परियायसगतिए य आपुच्छित्ता तामलित्तीए नगरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छित्ता पादुग[2]-कुडिय-मादीय उवगरण दारुमय च पडिग्गहग एगते एडित्ता तामलित्तीए नगरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णियत्तणिय-मडल आलिहित्ता[3] संलेहणा भूसणा भूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते[4] °तामलित्तीए नगरीए दिट्ठाभट्ठे य पासडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसगतिए य परियायसगतिए य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता तामलित्तीए नयरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पादुग-कुडिय-मादीय उवगरण दारुमय च पडिग्गहग एगते एडेइ, एडेत्ता तामलित्तीए नगरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णियत्तणिय-मडल आलिहइ, आलिहित्ता सलेहणाभूसणाभूसिए° भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमण निवण्णे ॥

३७. तेण कालेण तेण समएण वलिचंचा रायहाणी अणिदा अपुरोहिया या वि होत्था ॥

३८. तए ण ते वलिचचा रायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिं बालतवस्सिं ओहिणा आभोएंति, आभोएत्ता अण्णमण्ण सद्दावेति, सद्दावेत्ता एव वयासि—एव खलु देवाणुप्पिया ! बलिचचा रायहाणी अणिदा अपुरोहिया, अम्हे य ण देवाणुप्पिया ! इदाहीणा इदाहिट्ठिया इदाहीणकज्जा, अय च ण देवाणुप्पिया ! तामली बालतवस्सी तामलित्तीए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभागे[5] नियत्तणिय-मडल आलिहित्ता सलेहणाभूसणाभूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमण निवण्णे, त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह तामलि बालतवस्सि बलिचंचाए रायहाणीए ठितिपकप्प पकरावेत्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अतिए एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता बलिचचाए रायहाणीए मज्झमज्झेण निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव रुयगिदे[6] उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णति, समोहणित्ता जाव[7] उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइ विकुव्वति, विकुव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए 'उद्धयाए दिव्वाए'[8] देवगईए तिरिय असखेज्जाणं दीवसमुद्दाण मज्झमज्झेण 'वीईवयमाणा-वीईवयमाणा'[9]

१. य पच्छासंगतिए य (अ, म)।
२. पाउग (अ, क, व, म)।
३. आलिभित्ता (ता)।
४. स० पा०—जलते जाव आपुच्छइ २ तामलित्तीए एगते एडेइ जाव भत्त°।
५. दिसाभाए (क, ता)।
६. रुययिंदे (अ, व); रुयइदे (क, ता, म)।
७. राय० सू० १०।
८. दिव्वाए उद्धयाए (अ, क, ता, व, स, वृ)।
९. एते पदे 'रायपसेणइय'(१०)सूत्रात् पूरिते।

जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव तामलित्ती नगरी जेणेव तामली मोरियपुत्ते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तामलिस्स बालतवस्सिस्स उप्पि सपक्खि सपडिदिसिं ठिच्चा दिव्वं देविड्ढि दिव्वं देवज्जुतिं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं बत्तीसतिविहं नट्टविहिं उवदंसेंति, उवदंसेत्ता तामलिं बालतवस्सिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति[1], करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे बलिचंचारायहाणीवत्थव्वया बहवे असुर-कुमारा देवा य देवीओ य देवाणुप्पियं वंदामो नमंसामो[2] °सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासामो । अम्हण्णं[3] देवाणुप्पिया ! बलिचंचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया, अम्हे य णं देवाणुप्पिया ! इंदाहीणा इंदाहिट्ठिया इंदाहीणकज्जा, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! बलिचंचं रायहाणिं आढाह[4] परियाणह सुमरह, अट्ठं बंधह, निदाणं पकरेह, ठितिपकप्पं पकरेह, तए णं तुब्भे कालमासे कालं किच्चा बलिचंचाए[5] रायहाणीए उववज्जिस्सह, तए णं तुब्भे अम्हं इंदा भविस्सह, तए णं तुब्भे अम्हेहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरिस्सह ।।

३९. तए णं से तामली बालतवस्सी तेहिं बलिचंचारायहाणिवत्थव्वएहिं बहूहिं असुर-कुमारेहिं देवेहिं देवीहिं य एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणेइ[6], तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

४०. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिं मोरियपुत्तं दोच्चं पि तच्चं पि तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति जाव[7] अम्हं च णं देवाणुप्पिया ! बलिचंचा रायहाणी अणिंदा[8] °अपुरोहिया, अम्हे य णं देवाणुप्पिया ! इंदाहीणा इंदाहिट्ठिआ इंदाहीणकज्जा, तं तुब्भे णं देवाणु-प्पिया ! बलिचंचं रायहाणिं आढाह परियाणह सुमरह, अट्ठं बंधह, निदाणं पकरेह°, ठितिपकप्पं पकरेह जाव दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे[9] °एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणेइ°, तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

४१. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिणा बालतवस्सिणा अणाढाइज्जमाणा अपरियाणिज्जमाणा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।।

४२. तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे कप्पे अणिंदे अपुरोहिए या वि होत्था ।।

---

१. पकरेंति (अ, ता) ।
२. सं० पा०—नमंसामो जाव पज्जुवासामो ।
३. अम्हाणं (अ, स) ।
४. आढह (अ, स) ।
५. बलिचंचा (अ, व, म, स) ।
६. परियाणइ (अ, क, ता, म); परियाणाइ (व) ।
७. भ० ३।३८ ।
८. सं० पा०—अणिंदा जाव ठिति० ।
९. सं० पा०—समाणे जाव तुसिणीए ।

४३. तए ण से तामली बालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइं सट्ठि वाससहस्साइं परियागं पाउणित्ता, दोमासियाए सलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेदित्ता कालकासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे ईसाणवडेसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसतरिए[1] अंगुलस्स असखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए ईसाणदेविंदविरहियकालसमयंसि ईसाणदेविंदत्ताए[2] उववण्णे ।।

४४. तए ण से ईसाणे देविदे देवराया अहुणोववण्णे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव गच्छइ, [तं जहा—आहारपज्जत्तीए जाव[3] भासा-मणपज्जत्तीए][4] ।।

४५. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलि बालतवस्सि कालगतं जाणित्ता, ईसाणे य कप्पे देविंदत्ताए उववण्ण पासित्ता आसुरुत्ता रुट्ठा कुविया चंडिक्किया मिसिमिसेमाणा बलिचंचाए रायहाणीए मज्झमज्झेण निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव[5] जेणेव भारहे वासे जेणेव तामलित्ती नयरी जेणेव तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरए तेणेव उवागच्छंति, वामे पाए[6] सुबेण[7] बधंति, तिक्खुत्तो मुहे निट्ठुहंति[8], तामलित्तीए नगरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु 'आकड्ढ-विकड्ढि'[9] करेमाणा, महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयासि—केस[10] णं भो ! से तामली बालतवस्सी सयंगहियलिंगे[11] पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए ? केस ण से ईसाणे कप्पे ईसाणे देविदे देवराया ?—ति कट्टु तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरयं हीलंति[12] निंदति खिसंति गरहंति अवमण्णंति तज्जेंति तालेंति परिवहेंति पव्वहेंति, आकड्ढ-विकड्ढि करेंति, हीलेत्ता[13] •निंदित्ता खिसित्ता गरहित्ता अवमण्णेत्ता तज्जेत्ता तालेत्ता परिवहेत्ता पव्वहेत्ता॰ आकड्ढ-विकड्ढि करेत्ता एगते एडंति, एडित्ता जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया ।।

४६. तए ण ते[14] ईसाणकप्पवासी[15] बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य बलिचंचारायहाणिवत्थव्वएहिं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरय हीलिज्जमाणं निंदिज्जमाण[16] •खिसिज्जमाण गरहिज्जमाणं अवमण्णिज्जमाण तज्जिज्जमाणं तालेज्जमाणं परिवहिज्जमाणं पव्वहिज्जमाणं॰ आकड्ढ-

---

१. ॰ दूसतरियंसि (अ); ॰ दूसतरिय (व) ।
२. ईसाणे ॰ (अ, ता) ।
३. भ० ३।१७ ।
४. असौ कोष्ठकवर्त्तिपाठो व्याख्यांश. प्रतीयते ।
५. भ० ३।३८ ।
६. पायंसि (क) ।
७. सुंदेण (अ) ।
८. उट्ठुहंति (अ, व, म, स) ।
९. आकट्ट-विकट्टिं (क, ब, म, स) ।
१०. से के (अ, व) ।
११. सईगिहिय ॰ (क, ता, व) ।
१२. हीलयंति (ता) ।
१३. स० पा०—हिलेत्ता जाव आकड्ढ ।
१४. × (अ, ब) ।
१५. ईसाणंसि (व) ।
१६. स० पा०—निंदिज्जमाण जाव आकड्ढ ।

विकड्ढि कीरमाणं पासति, पासित्ता आसुरुत्ता[1] जाव[2] मिसिमिसेमाणा जेणेव ईसाणे देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी— एवं खलु देवाणुप्पिया ! बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य देवाणुप्पिए कालगए जाणित्ता ईसाणे य कप्पे इंदत्ताए उववण्णे पासेत्ता आसुरुत्ता जाव एगंते एडेंति, एडेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।।

४७. तए णं ईसाणे देविंदे देवराया तेसिं ईसाणकप्पवासीणं बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव[3] मिसिमिसेमाणे तत्थेव सयणिज्जवरगए तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु बलिचंचारायहाणिं अहे सपक्खि सपडिदिसि समभिलोएइ ।।

४८. तए णं सा बलिचंचा रायहाणी ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा अहे सपक्खि सपडिदिसि समभिलोइया समाणी तेणं दिव्वप्पभावेणं इंगालब्भूया मुम्मुरब्भूया छारियब्भूया तत्तकवेल्लकब्भूया तत्ता समजोइब्भूया जाया यावि होत्था ।।

४९. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तं बलिचंचं[4] रायहाणिं इंगालब्भूयं जाव[5] समजोइब्भूयं पासंति, पासित्ता भीआ तत्था[6] तसिआ[7] उव्विग्गा संजायभया सव्वओ समंता आधावेंति परिधावेंति, आधावेत्ता परिधावेत्ता अण्णमण्णस्स कायं समतुरंगेमाणा-समतुरंगेमाणा चिट्ठंति ।।

५०. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य ईसाणं देविंदं देवरायं परिकुवियं जाणित्ता ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो तं दिव्वं देविड्ढि दिव्वं देवज्जुइं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं तेयलेस्सं असहमाणा सव्वे सपक्खि सपडिदिसिं ठिच्चा करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—अहो ! णं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी[8] •दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए, तं दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं दिव्वा देविड्ढी[9] •दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे° लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तं खामेमो णं देवाणुप्पिया ! खमंतु णं

---

१. आसुरत्ता (व, म) ।
२. भ० ३।४५ ।
३. भ० ३।४५ ।
४. वलिचंचा (अ, क, व, म, स) ।
५. भ० ३।४८ ।
६. उत्तत्था (ता, स) ।
७. तेसिया (व), सुसिया (स); हस्तलिखितवृत्तौ क्वचित्तसियत्ति शुषितानदरसाः, क्वचिच्च 'सुसियत्ति' शुषितानदरसा इति लभ्यते ।
८. स० पा०—देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए ।
९. स० पा०—देविड्ढी जाव लद्धे ।

देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहंति[1] णं देवाणुप्पिया ! णाइ[2] भुज्जो[3] एवं करणयाए त्ति कट्टु एयमट्ठं सम्मं विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेंति ॥

५१. तए णं से ईसाणे देविंदे देवराया तेहिं बलिचंचारायहाणिवत्थव्वएहिं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य एयमट्ठं सम्मं विणएण भुज्जो-भुज्जो खामिते समाणे तं दिव्वं देविड्ढिं जाव[4] तेयलेस्सं पडिसाहरइ। तप्पभिति च णं गोयमा ! ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया[5] बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य ईसाणं देविंदं देवरायं आढंति[6] •परियाणंति सक्कारेंति सम्माणेंति कल्लाणं मंगलं देवयं विणएणं चेइयं° पज्जुवासंति, ईसाणस्स य देविंदस्स देवरण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठंति।

एवं खलु गोयमा ! ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी[7] •दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए ॥

५२. ईसाणस्स भंते ! देविंदस्स देवरण्णो केवतियं[8] कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

५३. ईसाणे णं भंते ! देविंदे देवराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं[9] •भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता° कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति[10] •बुज्झिहिति मुच्चिहिति सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिति ॥

सक्कीसाण-पदं

५४. सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिं उच्चतरा चेव ईसिं उन्नयतरा[11] चेव ? ईसाणस्स वा देविंदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिं णीयतरा चेव ईसिं निण्णतरा चेव ?
हंता गोयमा ! सक्कस्स तं चेव सव्वं नेयव्वं ॥

५५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—

---

१. खतुमरिहतु (अ, ब); खमतुमरिहतु (ता, स)।
२. णाइ (ता, स)।
३. भुज्जो-भुज्जो (अ, क, स)।
४. भ० ३।५०।
५. ° वत्थव्वा (अ, ता, ब, म, स)।
६. आढायंति (क, ता); स० पा०—आढंति जाव पज्जुवासंति।
७. स० पा०—देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए।
८. केवइ (ता)।
९. स० पा०—आउक्खएण जाव कहिं।
१०. स० पा०—सिज्झिहिति जाव अंतं।
११. उन्नयरा (अ, ता, ब, व, स)।

गोयमा ! से जहानामए करयले सिया—देसे उच्चे, देसे उन्नए। देसे णीए, देसे निण्णे। से तेणट्ठेण गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जाव[1] ईसिं निण्णतरा चेव ॥

५६. पभू ण भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवित्तए ?
हंता पभू ॥

५७. से भंते ! किं आढामाणे[2] पभू ? अणाढामाणे[3] पभू ?
गोयमा ! आढामाणे पभू, नो अणाढामाणे पभू ॥

५८. पभू णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवित्तए ?
हंता पभू ॥

५९. से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे वि पभू, अणाढामाणे वि पभू ॥

६०. पभू ण भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणं देविंदं देवरायं सपक्खिं[4] सपडिदिसिं समभिलोइत्तए ?
[5]•हंता पभू ॥

६१ से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे पभू, नो अणाढामाणे पभू ॥

६२ पभू णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया सक्कं देविंदं देवरायं सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोइत्तए ?
हंता पभू ॥

६३. से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे वि पभू, अणाढामाणे वि पभू° ॥

६४. पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणेण देविंदेणं देवरण्णा सद्धिं आलावं वा संलावं वा करेत्तए ?
हंता पभू ॥

६५. [6]•से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे पभू, नो अणाढामाणे पभू ॥

---

१. भ० ३।५४।
२. आढामीणे (अ, क, ता, ब, म); आढायमाणे (स)।
३. अणाढामीणे (अ, क, ता, ब, म); अणाढायमाणे (स)।
४. सपक्खं (क, ता)।
५. स० पा०—जहा पादुब्भवणा तहा दो वि आलावगा णेयव्वा।
६. स० पा०—जहा पादुब्भवा।

६६. पभू णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया सक्केणं देविंदेण देवरण्णा सद्धिं आलावं वा संलावं वा करेत्तए ?
हंता पभू ॥

६७. से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! °आढामाणे वि पभू, अणाढामाणे वि पभू° ॥

६८. अत्थि णं भंते ! तेसिं सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं किच्चाइं करणिज्जाइं समुप्पज्जंति[1] ?
हंता अत्थि ॥

६९. से कहमिदाणि पकरेंति ?
गोयमा ! ताहे चेव णं से सक्के देविंदे देवराया ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवति, ईसाणे वा देविंदे देवराया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवति इति भो ! सक्का ! देविंदा ! देवराया ! दाहिणड्ढलोगाहिवई ! इति भो ! ईसाणा ! देविंदा ! देवराया ! उत्तरड्ढलोगाहिवई ! इति भो ! इति भो ! त्ति ते अण्णमण्णस्स किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥

७०. अत्थि णं भंते ! तेसिं सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं विवादा समुप्पज्जंति ?
हंता अत्थि ॥

७१. से कहमिदाणि पकरेंति ?
गोयमा ! ताहे चेव णं ते सक्कीसाणा देविंदा देवरायाणो सणंकुमारं देविंदं देवरायं मणसीकरेंति । तए णं से सणंकुमारे देविंदे देवराया तेहिं सक्कीसाणेहिं देविंदेहिं देवराईहिं मणसीकए समाणे खिप्पामेव सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं अंतियं पाउब्भवति, जं से वदइ तस्स आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठंति ।

सणंकुमार-पदं

७२ सणंकुमारे णं भंते ! देविंदे देवराया किं भवसिद्धिए ? अभवसिद्धिए ? सम्मद्दिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी ? परित्तसंसारिए ? अणंतसंसारिए ? सुलभबोहिए[2] ? दुल्लभबोहिए ? आराहए ? विराहए ? चरिमे ? अचरिमे ?
गोयमा ! सणंकुमारे णं देविंदे देवराया भवसिद्धिए[3], नो अभवसिद्धिए । [4]°सम्म-

---

१. × (अ, ब, क) ।
२. ° बोहीए (अ, व, स) ।
३. भवसिद्धीए (ता) ।
४. स० पा०—एवं स प सु आ च पसत्थं नेयव्वं ।

द्दिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी। परित्तसंसारिए, नो अणंतसंसारिए। सुलभबोहिए, नो दुल्लभबोहिए। आराहए, नो विराहए। चरिमे, नो अचरिमे° ॥

७३ से केणट्ठेणं भंते !
गोयमा ! सणंकुमारे णं देविंदे देवराया बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं हियकामए सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेयसिए हिय-सुह-निस्सेसकामए। से तेणट्ठेणं गोयमा ! सणंकुमारे ण देविंदे देवराया भवसिद्धिए[1], °नो अभवसिदिए। सम्मद्दिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी। परित्तसंसारिए, नो अणंतसंसारिए। सुलभबोहिए, नो दुल्लभबोहिए। आराहए, नो विराहए। चरिमे°, नो अचरिमे ॥

७४. सणंकुमारस्स ण भंते ! देविंदस्स देवरण्णो केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! सत्त सागरोवमाणि ठिती पण्णत्ता ॥

७५. से ण भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं[2] °भवक्खएणं ठिइक्खएण अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ° ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति[3] °बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं° अंतं करेहिति ॥

७६. सेवं भंते ! सेवं भंते ![4]

संगहणी-गाहा

छट्ठट्ठममासो, अद्धमासो वासाइं अट्ठ छम्मासा।
तीसग-कुरुदत्ताणं, तव-भत्तपरिण्ण-परियाओ ॥१॥
उच्चत्त विमाणाणं, पाउब्भव पेच्छणा य सलावे।
किच्च विवादुप्पत्ती, सणंकुमारे य भवियत्तं[5] ॥२॥

---

१. सं० पा०—भवसिद्धिए जाव नो।
२. सं० पा०—आउक्खएण जाव कहिं।
३. सं० पा०—सिज्झिहिति जाव अंत।
४. भ० १।५१।
५. भवियव्वं (ता); अतोग्रे सर्वेष्वादर्शेषु 'मोया सम्मत्ता' इति पाठोस्ति, वृत्तिकृतापि व्याख्यातोसौ, किन्तु मोया-प्रकरणं तामलि-तापसप्रकरणात् पूर्वमेव समाप्तम्, तेन नावश्यकोसौपाठः।

बीओ उद्देसो

७७. तेण कालेणं तेण समएण रायगिहे नाम नगरे होत्था जाव[1] परिसा पज्जुवासइ ॥

७८. तेण कालेणं तेण समएण चमरे असुरिंदे असुरराया चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सीहासणसि, चउसट्ठीए सामाणियसाहसहि जाव[2] नट्टविहि उवदसेत्ता जामेव दिसि[3] पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥

७९. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—अत्थि ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसति ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।

८०. एव जाव[4] अहेसत्तमाए पुढवीए, सोहम्मस्स कप्पस्स अहे जाव[5] अत्थि ण भते ! ईसिप्पब्भाराए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसति ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

८१. से कहि खाइ ण भते ! असुरकुमारा देवा परिवसति ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीतुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए[6] एव असुरकुमारदेववत्तव्वया जाव[7] दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरति ॥

८२. अत्थि ण भते ! असुरकुमाराण देवाण अहे गतिविसए ?
हता अत्थि ॥

८३. केवतियण्ण[8] भते ! असुरकुमाराण देवाण अहे गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ? जाव अहेसत्तमाए पुढवीए । तच्चं पुण पुढविं गया य गमिस्सति य ॥

८४. किंपत्तियण्ण[9] भते ! असुरकुमारा देवा तच्च पुढवि गया य गमिस्सति य ?
गोयमा ! पुव्ववेरियस्स वा वेदणउदीरणयाए, पुव्वसगतियस्स वा वेदणउवसामणयाए—एव खलु असुरकुमारा देवा तच्च पुढवि गया य गमिस्सति य ॥

८५ अत्थि ण भते ? असुरकुमाराण देवाण तिरियं गतिविसए पण्णत्ते ?
हता अत्थि ॥

८६. केवतियण्ण भते ! असुरकुमाराण देवाणं तिरिय गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! जाव असखेज्जा दीव-समुद्दा, नदिस्सरवर पुण दीव गया य गमिस्सति य ॥

८७. किंपत्तियण्ण भते ! असुरकुमारा देवा नदिस्सरवर दीव गया य गमिस्सति य ?

---

१. ओ० सू० १९-५२ ।
२. राय० सू० ७-१२० ।
३. दिसं (ता, व, म, स) ।
४. अ० सू० २८७ ।
५. अ० सू० २८७ ।
६. असीउत्तर० (अ, व, म, स) ।
७. प० २ ।
८. केवतियं ण (स) ।
९. किंपत्तिय ण (अ, ता, व, म) ।

गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवतो[1], एएसि णं जम्मणमहेसु वा, निक्खमणमहेसु वा, नाणुप्पायमहिमासु[2] वा, परिनिव्वाणमहिमासु वा—एव खलु असुरकुमारा देवा नंदिस्सरवरं दीव गया य गमिस्संति य ॥

८८. अत्थि णं भंते असुरकुमाराण देवाणं उड्ढं गतिविसिए ?
हंता अत्थि ॥

८९. केवतियण्णं भते ! असुरकुमाराणं देवाण उड्ढ गतिविसए ?
गोयमा ! 'जाव अच्चुतो'[3] कप्पो, सोहम्मं पुण कप्प गया य गमिस्सति य ॥

९०. किपत्तियण्णं भते ! असुरकुमारा देवा सोहम्म कप्प गया य गमिस्संति य ?
गोयमा ! तेसि ण देवाण भवपच्चइए[4] वेराणुबधे, ते ण देवा विकुव्वेमाणा परियारेमाणा वा आयरक्खे देवे वित्तासेति[5] अहालहुसगाइ रयणाइ गहाय आया। एगंतमत अवक्कमति ॥

९१. अत्थि ण भते ! तेसि देवाणं अहालहुसगाइ रयणाइं ?
हंता अत्थि ॥

९२. से कहमिदाणि पकरेति ?
तओ से पच्छा कायं पव्वहति ॥

९३ पभू ण भते ! असुरकुमारा देवा तत्थ गया चेव[6] समाणा ताहि अच्छराहिं सद्धि दिव्वाइं भोगभोगाइं भुजमाणा विहरित्तए ?
णो इणट्ठे समट्ठे । ते ण ततो पडिनियत्तति, ततो पडिनियत्तित्ता इहमागच्छति[7] । जइ ण ताओ अच्छराओ आढायंति परियाणति, पभू ण ते असुरकुमारा देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरित्तए । अह ण ताओ अच्छराओ नो आढंति,[8] नो परियाणति, नो णं पभू ते असुरकुमारा देवा ताहि अच्छराहि सद्धि दिव्वाइं भोगभोगाइं भुजमाणा विहरित्तए । एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा सोहम्म कप्पं गया य गमिस्सति य ॥

९४. केवइयकालस्स[9] णं भते ! असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्म कप्पं गया य गमिस्संति य ?
गोयमा ! अणंताहिं 'ओसप्पिणीहि, अणताहि उस्सप्पिणीहि'[10] समतिक्कताहि

---

१. भगवता (क, ब, स) ।
२. नाणुप्पत्ति ° (क) ।
३. जावच्चुए (अ ता, ब, म, स) ।
४. °पच्चइय (अ, ब, म, स) ।
५. तासेति २ (ता) ।
६. च्चेव (ता) ।
७. इह समागच्छति (अ, ब) ।
८. आढायति (क, ता, म, स) ।
९. केवइकालस्स (अ, क, ब, म, स) ।
१०. उस्सप्पिणीहिं अणंताहिं अवसप्पिणीहिं (अ, ब, स) ।

अत्थि ण एस भावे लोयच्छेरयभूए समुप्पज्जइ, जं णं असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ॥

९५. किं निस्साए ण भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ? गोयमा ! से जहानामए इह सबरा[1] इ वा बब्बरा इ वा टकणा[2] इ वा चुचुया[3] इ वा पल्हा[4] इ वा पुलिंदा इ वा एग मह 'रण्णं वा'[5] गड्ढं वा दुग्गं वा दरिं वा विसमं वा पव्वयं वा नीसाए सुमहल्लमवि आसबलं वा हत्थिबलं वा जोहबलं वा धणुबलं वा आगलेंति, एवामेव असुरकुमारा वि देवा नण्णत्थ[6] अरहंते वा अरहंतचेतियाणि वा अणगारे वा भावियप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ॥

९६ सव्वे वि णं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । महिड्ढिया ण असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ॥

९७. एस वि य ण भंते । चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पइयपुव्वे जाव सोहम्मो कप्पो ?
हंता गोयमा ! एस वि य णं चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पइयपुव्वे जाव सोहम्मो कप्पो ॥

९८. अहो णं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए महज्जुईए[7] •जाव[8] महाणुभागे । चमरस्स ण भंते ! सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे कहिं गते° ? कहिं अणुपविट्ठे ?
कूडागारसालादिट्ठंतो[9] भाणियव्वो[10] ॥

९९. चमरेण भंते ! असुरिंदेणं असुररण्णा सा दिव्वा देविड्ढी •[11]दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे° किण्णा लद्धे ? पत्ते ? अभिसमण्णागए ?

१००. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले बेभेले नामं सण्णिवेसे होत्था—वण्णओ[12] ॥

---

१. सव्वरा (अ, ब) ।
२. ढकणा (क) ।
३. भुभुया (ब), चूचुया (अ), (क, व); भुत्तुया (स) ।
४. पण्हाया (अ); पण्हवा (क, ता); पण्हा (व, स) ।
५. × (अ, क, व, म) ।
६. × (अ, ता, व) ।
७. स० पा०—महज्जुईए जाव कहिं ।
८. भ० ३।४ ।
९. ° सालदिट्ठतो (क, ता, ब, म) ।
१०. भ० ३।२९ ।
११. स० पा०—त चेव ।
१२. ओ० सू० १; एतद्वर्णने 'नंदणवण-सन्निभ-प्पगासे' एतावदेव ग्राह्यम् ।

१०१. तत्थ णं बेभेले सण्णिवेसे पूरणे नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे दित्ते[1] •जाव[2] बहुजणस्स अपरिभूए या वि होत्था ॥

१०२. तए णं तस्स पूरणस्स गाहावइस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुटुंबजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणफलवित्तिविसेसे, जेणाहं हिरण्णेणं वड्ढामि, सुवण्णेणं वड्ढामि, धणेणं वड्ढामि, धण्णेणं वड्ढामि, पुत्तेहिं वड्ढामि, पसूहिं वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसारसावएज्जेणं अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, तं किं णं अहं पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं जाव कडाणं कम्माणं एगंतसो खयं उवेहमाणे विहरामि ?

तं जावताव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि जाव अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, जावं च मे मित्त-नाति-नियग-सयण-संबंधि-परियणो आढाति परियाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं विणएणं चेइयं पज्जुवासइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[3] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सयमेव चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहगं करेत्ता, विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेत्ता, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं, वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुंबे ठावेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छित्ता•, सयमेव चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहगं गहाय मुंडे भवित्ता दाणामाए पव्वज्जाए पव्वइत्तए। पव्वइए वि य णं समाणे[4] •इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य णं पारणंसि• आयावणभूमीओ पच्चोरुभित्ता सयमेव चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहगं गहाय बेभेले सण्णिवेसे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्ता जं मे पढमे पुडए पडइ, कप्पइ मे तं पंथे पहियाणं दलइत्तए।

---

१. सं० पा०—जहा तामलिस्स वत्तव्वया तहा नेतव्वा, नवरं चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहयं करेत्ता जाव विउलं असणपाणखाइमसाइमं जाव सयमेव।

२. भ० २।९४।

३. भ० २।६६।

४. सं० पा०—तं चेव जाव आयावण•।

'जं मे' दोच्चे पुडए पडइ, कप्पइ मे तं काग-सुणयाण' दलइत्तए। 'जं मे'[2] तच्चे पुडए पडइ, कप्पइ मे तं मच्छ-कच्छभाणं दलइत्तए। ज मे चउत्थे पुडए पडइ, कप्पइ मे त अप्पणा आहारं आहारेत्तए—त्ति कट्टु एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए तं चेव निरवसेसं जाव जं से चउत्थे पुडए पडइ, तं अप्पणा आहारं आहारेइ॥

१०३. तए णं से पूरणे बालतवस्सी तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बालतवोकम्मेणं[3] •सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठि—चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए यावि होत्था॥

१०४. तए णं तस्स पूरणस्स बालतवस्सिस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेण ओरालेण विपुलेण पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं सस्सिरीएण उदग्गेण उदत्तेणं उत्तमेणं महाणुभागेण तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे जाव[4] धमणिसतए जाए, तं अत्थि जा मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[5] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते वेभेलस्स सण्णिवेसस्स दिट्ठाभट्ठे य पासंडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसगतिए य परियायसंगतिए य आपुच्छित्ता वेभेलस्स सण्णिवेसस्स मज्झमज्झेण निग्गच्छित्ता, पादुग-कुडिय-मादीय उवगरणं चउप्पुडयं दारुमय च पडिग्गहगं एगते एडित्ता, वेभेलस्स सण्णिवेसस्स दाहिणपुरत्थिमे दिसीभागे अद्धनियत्तणिय-मडल आलिहित्ता संलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते वेभेले सण्णिवेसे दिट्ठाभट्ठे य पासंडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसंगतिए य परियायसंगतिए य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता वेभेलस्स सण्णिवेसस्स मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निगच्छित्ता पादुग-कुडिय-मादीयं उवगरणं दारुमय च पडिग्गहग एगते एडेइ, एडेत्ता वेभेलस्स सण्णिवेसस्स दाहिणपुरत्थिमे दिसीभागे अद्धनियत्तणिय-मंडलं आलिहित्ता सलेहणा-झूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमण निवण्णे॥

१०५. तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा! छउमत्थकालियाए एक्कारसवासपरियाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे पुव्वाणु-

---

१. मुणकाए (क, ता); सुणगाए (म)।
२. जम्मे (ता)।
३. सं० पा०—त चेव जाव वेभेलस्स।
४ भ० ३।३५।
५. भ० २।६६।

पुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सुंसुमारपुरे नगरे जेणेव असोय-संडे[1] उज्जाणे जेणेव असोयवरपायवे जेणेव पुढवीसिलावट्टए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स हेट्ठा पुढवीसिलावट्टयंसि अट्ठमभत्तं पगिण्हामि,[2] दो वि पाए साहट्टु वग्घारियपाणी एगपोग्गलनिविट्ठदिट्ठी अणिमिसणयणे ईसिपब्भारगएण[3] काएण, अहापणिहिएहिं गत्तेहिं, सव्विदिएहिं गुत्तेहिं एगराइयं महापडिमं उवसपज्जेत्ता णं विहरामि ॥

१०६. तेण कालेण तेण समएणं चमरचचा रायहाणी अणिदा अपुरोहिया या वि होत्था ॥

१०७. तए णं से पूरणे बालतवस्सी वहुपडिपूण्णाइं दुवालसवासाइं परियागं पाउणित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताणं भूसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, कालमासे काल किच्चा चमरचचाए रायहाणीए उववायसभाए जाव इंदत्ताए उववण्णे ॥

१०८. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया अहुणोववण्णे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्ति-भाव[4] गच्छइ, [त जहा—आहारपज्जत्तीए जाव[5] भास-मणपज्जत्तीए[6]] ॥

१०९. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गए समाणे उड्ढं वीससाए ओहिणा आभोएइ जाव[7] सोहम्मो कप्पो, पासइ य तत्थ—

सक्कं देविंदं देवरायं, मघवं पाकसासणं ।
सयक्कतुं[8] सहस्सक्खं, वज्जपाणिं पुरंदरं[9] ॥

•दाहिणड्ढलोगाहिवइं बत्तीसविमाणसयसहस्साहिवइं एरावणवाहणं सुरिंदं अरयवरवत्थधरं आलइयमालमउडं नव-हेम-चारुचित्त-चंचल-कुडल-विलिहिज्ज-माणगंड भासुरबोंदिं पलंबवणमालं दिव्वेणं वण्णेणं जाव[10]० दस दिसाओ उज्जोवेमाणं पभासेमाणं सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कंसि सीहासणंसि जाव[11] दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे[12] अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—केस णं एस अपत्थियपत्थए[13] दुरतपंतलक्खणे हिरिसिरिपरिवज्जिए हीणपुण्णचाउद्दसे

१. असोयवणसडे (क, म, स) ।
२. परिगिण्हामि (स) ।
३. ईसिं० (क, स) ।
४. भ० ३।४३ ।
५. पज्जत्तभाव (व) ।
६. भ० ३।१७ ।
७. असौ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।
८. सयक्कउं (क, ता) ।
९. स० पा०—पुरंदरं जाव दस ।
१०. उवा० २।४० ।
११. उवा० २।४०; भ० ३।१६ ।
१२. इमे एया० (क, व) ।
१३. ०पत्थिए (व, म, स) ।

ज ण ममं इमाए एयारूवाए दिव्वाए देविड्ढीए[1] •दिव्वाए देवज्जुतीए॰ 'दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए'[2] उप्पि अप्पुस्सुए दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता सामाणियपरिसोववण्णए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—केस ण एस देवाणुप्पिया ! अपत्थियपत्थए जाव दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ?

११०. तए ण ते सामाणियपरिसोववण्णगा देवा चमरेण असुरिदेण असुररण्णा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ[3]•चित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण॰हियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु जएणं विजएण वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एव वयासी—एस ण देवाणुप्पिया ! सक्के देविदे देवराया जाव[4] दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ।।

१११. तए ण से चमरे असुरिदे असुरराया तेसि सामाणियपरिसोववण्णगाण देवाणं अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[5] रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे ते सामाणियपरिसोववण्णगे देवे एव वयासी—अण्णे खलु भो ! से सक्के देविदे देवराया, अण्णे खलु भो ! से चमरे असुरिदे असुरराया, महिड्ढीए खलु भो ! से सक्के देविदे देवराया, अप्पिड्ढीए खलु भो ! से चमरे असुरिदे असुरराया, त इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! सक्क देविदं देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तए[6] त्ति कट्टु उसिणे उसिणब्भूए जाए यावि होत्था ।।

११२. तए ण से चमरे असुरिदे असुरराया ओहि पउजइ[7], पउजित्ता ममं ओहिणा आभोएइ[8], आभोएत्ता[9] इमेयारूवे अज्झत्थिए[10]•चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे॰समुप्पज्जित्था—एव खलु समणे भगव महावीरे जबूदीवे दीवे भारहे वासे सुसुमारपुरे[11] नयरे असोगसडे[12] उज्जाणे असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयसि अट्ठमभत्त पगिण्हित्ता एगराइय महापडिम उवसपज्जित्ता ण विहरत्ति, त सेय खलु मे समण भगव महावीर णीसाए सक्क देविद देवराय सयमेव अच्चासाइत्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता सयणिज्जाओ[13] अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता देवदूस परिहेइ, परिहेत्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव चोप्पाले पहरणकोसे

---

१. सं॰ पा॰—देवड्ढीए जाव दिव्वे ।
२. एतान्यपि अत्र सप्तम्यन्तानि पदानि विद्यन्ते ।
३. सं॰ पा॰—हट्ठतुट्ठ जाव हियया ।
४. भ॰ ३।१०६ ।
५. आसुरत्ते (अ, व) ।
६. अच्चासादेत्तए (अ, ता, व, स) ।
७. पयुजइ (ता) ।
८. आलोएइ (व) ।
९. अतोग्रे 'तस्स' इति पदमध्याहार्यम् ।
१०. स॰ पा॰—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
११. सुसमारपुरे (स) ।
१२. ॰ वणसडे (अ, क, ता, व, म, स) ।
१३. सत्तणिज्जाओ (ता) ।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता फलिहरयणं परामुसइ, एगे अबीए[1] फलिहरयणमायाए महया अमरिस वहमाणे चमरचचाए रायहाणीए मज्झमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिगच्छित्ता जेणेव तिगिछिकूडे[2] उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता जाव[3] उत्तरवेउव्विय[4] रूव विकुव्वइ, विकुव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धूयाए दिव्वाए देवगईए तिरिय असखेज्जाण दीव-समुद्दाण मज्झमज्झेणं वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव जबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव सुसुमारपुरे नगरे जेणेव असोयसडे उज्जाणे जेणेव असोयवरपायवे जेणेव पुढविसिलावट्टए जेणेव ममं अतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ[5], •करेत्ता वदइ, नमंसइ, वदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भं नीसाए सक्क देविंद देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तए त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभाग अवक्कमेइ, अवक्कमेत्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णति, समोहणित्ता जाव[6] दोच्च पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ[7] एग मह घोरं घोरागार भीम भीमागारं भासुरं[8] भयाणीयं गभीर उत्तासणय कालड्ढरत्त-मासरासिसकास[9] जोयणसयसाहस्सीय[10] महाबोदि विउव्वइ, विउव्वित्ता अप्फोडेइ[11] वग्गइ[12] गज्जइ, हयहेसियं करेइ, हत्थिगुलगुलाइय करेइ, रहघणघणाइयं करेइ, पायदद्दरगं करेइ, भूमिचवेडय दलयइ, सीहणादं नदइ, उच्छोलेइ पच्छोलेइ, तिवति[13] छिदइ, वाम भुय ऊसवेइ, दाहिणहत्थपदेसिणीए अंगुट्ठणहेण य वितिरिच्छं मुह विडवेइ, महया-महया सद्देण कलकलरवं करेइ एगे अबीए[14] फलिहरयणमायाए उड्ढ वेहास उप्पइए—खोभते चेव[15] अहेलोयं कपेमाणे व[16] मेइणीतल[17] साकड्ढते[18] व तिरियलोय, फोडेमाणे व अबरतलं,

१. अबितिए (क, ता)।
२. तिगिच्छि (ता, म); तिगिच्छ (व)।
३. राय० सू० १०।
४. °वेउव्वियरूव (म)।
५. स० पा०—करेइ जाव नमसित्ता।
६. राय० सू० १०।
७. समोहणइ (अ, स)।
८. भामर (क, ता)।
९. भासरासि° (अ)।
१०. जोतण° (ता)।
११. बहुलासु प्रतिषु क्रियानन्तर सर्वत्र क्त्वाप्रत्ययस्स प्रयोगा दृश्यन्ते, यथा—अप्फोडेइ, अप्फोडेत्ता।
१२. × (क, ता, व, म)।
१३. तिपतिं (ता)।
१४. अव्वितिए (क, ता, व)।
१५. च्चेव (ता)।
१६. तिव (ता); वा (व, म)।
१७. मेयणि° (अ); मेतिणी° (क, म); मेदिणी° (ता)।
१८. आकड्ढते (अ, म, स), आसाकड्ढते (व)।

कत्थइ गज्जते, कत्थइ विज्जुयायंते, कत्थइ वासं वासमाणे[1], कत्थइ रयुग्घायं पकरेमाणे, कत्थइ तमुक्कायं पकरेमाणे, वाणमंतरे देवे वित्तासेमाणे-वित्तासेमाणे[2], जोइसिए देवे दुहा विभयमाणे-विभयमाणे, आयरक्खे देवे विपलायमाणे-विपलायमाणे[3], फलिहरयणं अंबरतलंसि वियट्टमाणे-वियट्टमाणे, विउब्भाएमाणे-विउब्भाएमाणे[4] ताए उक्किट्ठाए[5] •तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए देवगईए° तिरियमसंखेज्जाणं दीव-समुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव सोहम्मे कप्पे, जेणेव सोहम्मवडेंसए विमाणे, जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छइ, एगं पायं पउमवरवेइयाए करेइ, एगं पायं सभाए सुहम्माए करेइ, फलिहरयणेणं महया-महया सद्देणं तिक्खुत्तो इंदकीलं आउडेइ, आउडेत्ता एवं वयासी—कहि णं भो[6]! सक्के देविंदे देवराया? कहि णं ताओ चउरासीइसामाणियसाहस्सीओ[7]? •कहि णं ते तायत्तीसयतावत्तीसगा? कहि णं ते चत्तारि लोगपाला? कहि णं ताओ अट्ठ अग्गमहिसीओ सपरिवाराओ? कहि णं ताओ तिण्णि परिसाओ? कहि णं ते सत्त अणिया? कहि णं ते सत्त अणियाहिवई?° कहि णं ताओ चत्तारि चउरासीईओ आयरक्खदेवसाहस्सीओ? कहि णं ताओ अणेगाओ अच्छराकोडीओ? अज्ज हणामि, अज्ज महेमि, अज्ज वहेमि, अज्ज मम अवसाओ अच्छराओ वसमुवणमंतु त्ति कट्टु तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं अमणामं फरुसं गिरं निसिरइ।

११३. तए णं से सक्के देविंदे देवराया तं अणिट्ठं[8] •अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं° अमणामं अस्सुयपुव्वं फरुसं गिरं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[9] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु चमरं असुरिंदं असुररायं एवं वदासि—हं भो! चमरा! असुरिंदा! असुरराया! अपत्थियपत्थया[10]! •दुरंतपंतलक्खणा! हिरिसिरिपरिवज्जिया!° हीणपुण्णचाउद्दसा! अज्ज न भवसि, नाहि[11] ते सुहमत्थीति कट्टु तत्थेव सीहासणवरगए वज्जं परामुसइ, परामुसित्ता तं जलंतं फुडंतं तडतडंतं[12] उक्कासहस्साइं विणि-

१. वासेमाणे (अ, क)।
२. वित्तासमाणे (अ)।
३. विपलासमाणे (अ)।
४. विउब्भासेमाणे (ता)।
५. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव तिरिय०।
६. से (क)।
७. सं० पा०—°सामाणियसाहस्सीओ जाव कहि।
८. सं० पा०—अणिट्ठं जाव अमणाम।
९. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे।
१०. सं० पा०—अपत्थियपत्थया जाव हीणपुण्ण°
११. नहि (व)।
१२. तडवडंत (ता), तडातडंत (व)।

म्मुयमाणं-विणिम्मुयमाणं, जालासहस्साइ पमुंचमाण-पमुंचमाणं, इंगालसहस्साइं पविक्खिरमाणं-पविक्खिरमाण, फुलिंगजालामालासहस्सेहि चक्खुविक्खेवदिट्ठिपडिघातं पि पकरेमाणं हुयवहअइरेगतेयदिप्पतं जइणवेग फुल्लकिंसुयसमाण महब्भयं भयंकरं चमरस्स असुरिंदस्स असुरण्णो वहाए वज्ज निसिरइ ॥

११४. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया त जलतं जाव[1] भयंकरं वज्जमभिमुह आवयमाण पासइ, पासित्ता झियाइ पिहाइ, पिहाइ झियाइ, झियायित्ता पिहाइत्ता तहेव संभग्गमउडविडवे[2] सालवहत्थाभरणे उड्ढपाए अहोसिरे कक्खागयसेयं पिव विणिम्मुयमाणे-विणिम्मुयमाणे ताए उक्किट्ठाए जाव[3] तिरियमसखेज्जाणं दीव-समुद्दाणं मज्झमज्झेण वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव जंबूदीवे दीवे जाव[4] जेणेव असोगवरपायवे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भीए भयगग्गरसरे 'भगवं सरणं' इति वुयमाणे मम दोण्ह वि पायाण अतरसि झत्ति वेगेण समोवडिए[5] ॥

११५. तए ण तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे अज्झत्थिए[6] °चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—नो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया, नो खलु समत्थे चमरे असुरिंदे असुरराया, नो खलु विसए चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पइत्ता जाव सोहम्मो कप्पो, नण्णत्थ अरहंते[7] वा, अरहतचेइयाणि वा, अणगारे वा भाविअप्पाणो नीसाए उड्ढं उप्पयइ जाव सोहम्मो कप्पो, त महादुक्ख खलु तहारूवाणं अरहंताण भगवंताण अणगाराण य अच्चासायणाए त्ति कट्टु ओहि पउंजइ, मम ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता हा ! हा ! अहो ! हतो अहमंसि त्ति कट्टु ताए उक्किट्ठाए जाव[8] दिव्वाए देवगईए वज्जस्स वीहि अणुगच्छमाणे-अणुगच्छमाणे तिरियमसखेज्जाणं दीव-समुद्दाणं मज्झंमज्झेणं जाव[9] जेणेव असोगवरपायवे, जेणेव मम अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मम चउरंगुलमसंपत्त वज्जं पडिसाहरइ, अवियाइ मे गोयमा ! मुट्ठिवाएण केसग्गे वीइत्था ॥

११६. तए ण से सक्के देविंदे देवराया वज्जं पडिसाहरित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासि—एव खलु भंते ! अहं तुब्भं नीसाए चमरेणं असुरिंदेण असुररण्णा सयमेव अच्चासाइए। तए णं मए परिकुविएणं समाणेणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो वहाए

---

१. भ० ३।११२।
२. °विडए (अ, क); °पिडए (व)।
३. भ० ३।११२।
४. भ० ३।११२।
५. समोवडए (ता)।
६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
७. अरहतं (क); अन्हता (ना)।
८. भ० ३।११२।
९. भ० ३।११२।

वज्जे निसट्ठे[1]। तए णं ममं इमेयारूवे अज्झत्थिए[2] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे॰समुप्पज्जित्था—नो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया[3], •नो खलु समत्थे चमरे असुरिंदे असुरराया, नो खलु विसए चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पइत्ता जाव सोहम्मो कप्पो, नण्णत्थ अरहंते वा, अरहंतचेइयाणि वा, अणगारे वा भाविअप्पाणो नीसाए उड्ढं उप्पयइ जाव सोहम्मो कप्पो, तं महादुक्खं खलु तहारूवाणं अरहंताण भगवंताणं अणगाराण य अच्चासायणाए त्ति कट्टु॰ ओहिं पउजामि, देवाणुप्पिए ओहिणा आभोएमि, आभोएत्ता हा ! हा ! अहो ! हतो अहमंसि त्ति कट्टु ताए उक्किट्ठाए जाव[4] जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि, देवाणुप्पियाण चउरंगुलमसपत्त वज्जं पडिसाहरामि, वज्जपडिसाहरणट्ठयाए ण इहमागए इह समोसढे इह संपत्ते इहेव अज्ज उवसंपज्जित्ता णं विहरामि। तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमंतु ण देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहंति[5] णं देवाणुप्पिया ! नाइ[6] भुज्जो एव करणयाए[7] त्ति कट्टु मम वदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, वामेणं पादेणं तिक्खुत्तो भूमिं विदलेइ[8], विदलेत्ता चमरं असुरिंदं असुररायं एवं वदासि—मुक्को सि णं भो चमरा ! असुरिंदा ! असुरराया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स पभावेणं—नाहिं[9] ते[10] दाणि[11] ममातो[12] भयमत्थि त्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं[13] पडिगए॥

११७. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव[14] महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेवं अणुपरियट्टित्ता णं गेण्हित्तए ?

हंता पभू॥

११८. से केणट्ठेणं[15] •भंते ! एवं वुच्चइ—देवे णं महिड्ढीए जाव[16] महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ता णं॰ गेण्हित्तए ?

गोयमा ! पोग्गले णं खित्ते[17] समाणे पुव्वामेव सिग्घगई[18] भवित्ता ततो पच्छा

---

१. निसिट्ठे (अ, स)।
२. स॰ पा॰—अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था।
३. सं॰ पा॰—तहेव जाव ओहिं।
४. भ॰ ३।११५।
५. °मरुहंतु (अ, स)।
६. नाइं (ता, व)।
७. पकरणयाए (वृ, स)।
८. दालेइ (अ, क, व, स), दलइ (म)।
९. णाहिं (अ, क, ता); नहि (व)।
१०. भे (व)।
११. इदाणिं (क, म)।
१२. ममतो (अ, क)।
१३. दिसं (ता, व, म)।
१४. भ॰ ३।४।
१५. सं॰ पा॰—केणट्ठेणं जाव गेण्हित्तए।
१६. भ॰ ३।४।
१७. खित्ते णं (अ), विखित्ते (स)।
१८. सिग्घागई (व)।

मदगती भवति, देवे ण महिड्ढीए जाव महाणुभागे पुव्वि पि पच्छा वि सीहे सीहगती चेव तुरिए तुरियगती चेव। से तेणट्ठेण जाव पभू गेण्हित्तए ॥

११९. जइ ण भते ! देवे[1] महिड्ढीए जाव[2] पभू तमेव अणुपरियट्टित्ता ण गेण्हित्तए, कम्हा ण भते ! 'सक्केण देविदेण देवरण्णा'[3] चमरे असुरिदे असुरराया नो सचाइए[4] साहित्थ गेण्हित्तए ?

गोयमा ! असुरकुमाराण देवाण अहे गइविसए 'सीहे-सीहे'[5] चेव तुरिए-तुरिए चेव, उड्ढ गइविसए अप्पे-अप्पे चेव मदे-मदे चेव। वेमाणियाण देवाण उड्ढ गइविसए सीहे-सीहे चेव। तुरिए-तुरिए चेव, अहे गइविसए अप्पे-अप्पे चेव मदे-मदे चेव।

जावतिय खेत्त सक्के देविदे देवराया उड्ढं उप्पयइ एक्केण समएण, तं वज्जे दोहि, ज वज्जे दोहि, त चमरे तिहि। सव्वत्थोवे सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो उड्ढलोयकडए, अहेलोयकंडए[6] संखेज्जगुणे।

जावतिय खेत्त चमरे असुरिदे असुरराया अहे ओवयइ एक्केण समएण, तं सक्के दोहि, ज सक्के दोहि, त वज्जे तीहि। सव्वत्थोवे चमरस्स असुरिदस्स असुररण्णो अहेलोयकडए, उड्ढलोयकंडए सखेज्जगुणे।

एव खलु गोयमा ! सक्केण देविदेणं देवरण्णा चमरे असुरिदे असुरराया नो सचाइए साहत्थि गेण्हित्तए ॥

१२०. सक्कस्स ण भते ! देविदस्स देवरण्णो उड्ढ अहे तिरिय च गइविसयस्स कयरे कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोव खेत्त सक्के देविदे देवराया अहे ओवयइ एक्केण समएण तिरिय सखेज्जे भागे गच्छइ, उड्ढ सखेज्जे भागे गच्छइ ॥

१२१ चमरस्स ण भते ! असुरिदस्स असुररण्णो उड्ढं अहे तिरिय च गइविसयस्स कयरे कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोव खेत्त चमरे असुरिदे असुरराया उड्ढ उप्पयइ एक्केणं समएण, तिरिय सखेज्जे भागे गच्छइ, अहे सखेज्जे भागे गच्छइ ॥

१२२. [7]°वज्जस्स ण भते ! उड्ढं अहे तिरिय च गइविसयस्स कयरे कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोव खेत्त वज्जे अहे ओवयइ एक्केण समएण, तिरिय विसेसाहिए भागे गच्छइ, उड्ढ विसेसाहिए भागे गच्छइ° ॥

---

१. देविंदे (अ, ता, ब, स)।
२ भ० ३।११८।
३. सक्के देविंदे देवराया (स)।
४. सचाइति (अ); सचाएति(स)।
५. सिग्घे-सिग्घे (अ, स)।
६. अहो० (अ, ब)।
७. स० पा०—वज्ज जहा सक्कस्स तहेव नवरं विसेसाहियं कायव्व।

१२३. सक्कस्स ण भंते ! देविंदस्स देवरण्णो ओवयणकालस्स य, उप्पयणकालस्स य कयरे कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उप्पयणकाले, ओवयणकाले संखेज्जगुणे ॥

१२४. चमरस्स वि जहा सक्कस्स, नवरं—सव्वत्थोवे ओवयणकाले, उप्पयणकाले संखेज्जगुणे ॥

१२५. वज्जस्स पुच्छा।
गोयमा ! सव्वत्थोवे उप्पयणकाले, ओवयणकाले विसेसाहिए ॥

१२६. एयस्स ण भंते ! वज्जस्स, वज्जाहिवइस्स, चमरस्स य असुरिंदस्स असुररण्णो ओवयणकालस्स य, उप्पयणकालस्स य कयरे कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सक्कस्स य उप्पयणकाले, चमरस्स य ओवयणकाले—एए ण दोण्णि[1] वि तुल्ला सव्वत्थोवा। सक्कस्स य ओवयणकाले, वज्जस्स य उप्पयणकाले—एस ण दोण्ह वि तुल्ले संखेज्जगुणे। चमरस्स य उप्पयणकाले, वज्जस्स य ओवयणकाले—एस ण दोण्ह वि तुल्ले विसेसाहिए ॥

१२७ तए ण से चमरे असुरिंदे असुरराया वज्जभयविप्पमुक्के, सक्केण देविंदेणं देवरण्णा महया अवमाणेण अवमाणिए समाणे चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि ओहयमणसंकप्पे चितासोयसागरसंपविट्ठे करयलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठीए झियाति ॥

१२८. तए णं चमरं असुरिंदं असुररायं सामाणियपरिसोववण्णया देवा ओहयमणसंकप्पं जाव[2] झियायमाणं पासंति, पासित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—किं णं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा चितासोयसागरसंपविट्ठा करयलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियायह ?

१२९. तए ण से चमरे असुरिंदे असुरराया ते सामाणियपरिसोववण्णए देवे एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए समणं भगवं महावीरं नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासाइए। तए णं तेणं परिकुविएणं समाणेणं मम वहाए वज्जे निसट्ठे[3]। तं भद्दण्णं[4] भवतु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स जस्सम्हि[5] पभावेण अकिट्ठे अव्वहिए अपरिताविए इहमागए इह समोसढे

---

१. विण्णि (ता, म)।
२. भ० ३।१२७।
३. निसिट्ठे (अ, स)।
४. भद्द ण (अ, स)।
५. जस्संसि (ता)।

इह संपत्ते इहेव अज्ज उवसपिज्जत्ता णं विहरामि । तं गच्छामो ण देवाणुप्पिया। समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो जाव[1] पज्जुवासामो त्ति कट्टु चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव[2] सव्विड्ढीए जाव[3] जेणेव असोगवरपायवे, जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण[4] •करेत्ता वंदेता॰ नमसित्ता एव वयासि-एवं खलु भते ! मए तुब्भं नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासाइए[5]। •तए ण तेण परिकुविएण समाणेण ममं वहाए वज्जे निसट्ठे॰ । त भद्दण्ण भवतु देवाणुप्पियाण जस्सम्हि पभावेण अकिट्ठे[6] •अव्वहिए अपरिताविए इहमागए इह समोसढे इह संपत्ते इह अज्ज उवसपज्जित्ता णं॰ विहरामि । त खामेमि णं देवाणुप्पिया[7] ! • खमतु णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहति ण देवाणुप्पिया ! नाइ भुज्जो एव करणयाए त्ति कट्टु मम वंदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता॰ उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता जाव[8] बत्तीसइबद्धं[9] नट्टविहिं उवदसेइ, उवदसेत्ता जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥

१३०. एवं खलु गोयमा ! चमरेणं असुरिंदेण असुररण्णा सा दिव्वा देविड्ढी[10] •दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते॰ अभिसमण्णागए । ठिई सागरोवम महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव[11] अत काहिइ ॥

१३१. किंपत्तियं ण भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ? गोयमा ! तेसि णं देवाणं अहुणोववण्णाण[12] वा चरिमभवत्थाण वा इमेयारूवे अज्झत्थिए[13] •चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे॰ समुप्पज्जइ—अहो ! णं अम्हेहि दिव्वा देविड्ढी जाव[14] अभिसमण्णागए, जारिसिया णं अम्हेहि दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए, तारिसिया ण सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए। जारिसिया ण सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा जाव अभिसमण्णागए, तारिसिया ण अम्हेहि वि जाव अभिसमण्णागए। तं गच्छामो णं सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवामो पासामो ताव सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो दिव्वं देविड्ढि जाव अभिसमण्णागयं, पासउ ताव अम्ह वि सक्के देविदे देवराया

---

१. भ० २।३० ।
२. भ० ३।४ ।
३. राय० सू० ५८ ।
४. स० पा०—पयाहिणं जाव नमंसित्ता ।
५. सं० पा०—अच्चासाइए जाव तं ।
६. सं० पा०—अकिट्ठे जाव विहरामि ।
७. स० पा०—देवाणुप्पिया जाव उत्तर॰ ।
८. राय० सू० ६५-१२० ।
९. बत्तीसविह (क) ।
१०. सं० पा०—देविड्ढी जाव अभि॰ ।
११. भ० २।७३ ।
१२. अहुणोववण्णगाण (अ, व) ।
१३. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जइ ।
१४. भ० ३।१३० ।

दिव्वं देविड्ढि जाव अभिसमण्णागयं। तं जाणामो ताव सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो दिव्वं देविड्ढि जाव अभिसमण्णागय, जाणउ ताव अम्ह वि सक्के देविंदे देवराया दिव्वं देविड्ढि जाव अभिसमण्णागयं।

एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ॥

१३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

तइओ उद्देसो

किरिया-पदं

१३३. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था जाव[2] परिसा पडिगया ॥

१३४. तेणं कालेणं तेणं समएणं[3] °समणस्स भगवओ महावीरस्स° अंतेवासी मंडिअपुत्ते नाम अणगारे पगइभद्दए जाव[4] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—कइ णं भंते ! किरियाओ पण्णत्ताओ ?

मंडिअपुत्ता ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—काइया, अहिगरणिआ, पाओसिआ[5], पारियावणिआ, पाणाइवायकिरिया ॥

१३५. काइया णं भंते ! किरिया कइविहा पण्णत्ता ?

मंडिअपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणुवरयकायकिरिया य, दुप्पउत्तकाय-किरिया[6] य ॥

१३६. अहिगरणिआ णं भंते ! किरिया कइविहा पण्णत्ता ?

मंडिअपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संजोयणाहिगरणकिरिया[7] य, निवत्त-णाहिगरणकिरिया[8] य ॥

१३७. पाओसिआ[9] णं भंते ! किरिया कइविहा पण्णत्ता ?

मंडिअपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवपाओसिआ य, अजीवपाओ-सिआ य ॥

---

१. भ० १।५१।

२. भ० १।४-८।

३. सं० पा०—समणेणं जाव अंतेवासी।

४. भ० १।२८८, २८९।

५. पायो° (क, ता)।

६. दुप्पयुत्त° (ता)।

७. °करण° (क, ता, स)।

८. °करण° (ता, व, स)।

९. पादोसिया (अ, क, व); पाओसिगा (ता)।

१३८. पारियावणिआ णं भंते ! 'किरिया कइविहा पण्णत्ता'[1] ?
मडिअपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सहत्थपारियावणिआय, परहत्थपारियावणिआ य ॥

१३९. पाणाइवायकिरिया णं भते ! 'किरिया कइविहा पण्णत्ता ?'[2]
मडिअपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सहत्थपाणाइवायकिरिया य, परहत्थपाणाइवायकिरिया य ॥

किरिया-वेदणा-पदं

१४०. पुव्वि भते ! किरिया, पच्छा वेदणा ? पुव्वि वेदणा, पच्छा किरिया ?
मडिअपुत्ता ! पुव्वि किरिया, पच्छा वेदणा। णो पुव्वि वेदणा, पच्छा किरिया ॥

१४१ अत्थि ण भते ! समणाण निग्गथाण किरिया कज्जइ ?
हता अत्थि ॥

१४२. कहण्णं[3] भते ! समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ?
मडिअपुत्ता ! पमायपच्चया, जोगनिमित्तं च। एवं खलु समणाण निग्गंथाण किरिया कज्जइ ॥

अंतकिरिया-पदं

१४३. जीवे णं भते ! सया समितं[4] एयति वेयति[5] 'चलति फदइ घट्टइ'[6] खुब्भइ उदीरइ त त भाव परिणमइ ?
हता मडिअपुत्ता ! जीवे णं सया समितं एयति[7] •वेयति चलति फंदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ° तं त भावं परिणमइ ॥

१४४. जाव च ण भते ! से जीवे सया समितं[8] •एयति वेयति चलति फदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ त त भावं° परिणमइ, तावं च ण तस्स जीवस्स अते अत किरिया भवइ ?
नो इणट्ठे[9] समट्ठे ॥

१४५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जाव च ण से जीवे सया समित[10] •एयति वेयति चलति फदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ त त भाव परिणमइ, तावं च ण तस्स जीवस्स° अते अतकिरिया न भवति ?
मडिअपुत्ता ! जाव च ण से जीवे सया समित[11] •एयति वेयति चलति फंदइ

---

१. पुच्छा (व)।
२. पुच्छा (ता, व)।
३. कह णं (अ, क, व); कहं ण (ता); कहि ण (स)।
४ समिय (अ, ता, ब, म, स)।
५. वेदति (ता)।
६. चलेइ फदेइ घट्टेइ (अ, व, स)।
७. सं० पा०—एयति जाव तं।
८. सं० पा०—समित जाव परिणमइ।
९. तिणट्ठे (अ, क, व, म, स)।
१०. सं० पा०—समित जाव अते।
११. सं० पा०—समित जाव परिणमइ।

घट्टइ खुब्भइ उदीरइ तं तं भावं° परिणमइ, ताव च णं से जीवे—'आरभइ सारभइ समारभइ'[1], आरभे वट्टइ सारंभे वट्टइ समारभे वट्टइ, 'आरभमाणे सारभमाणे समारभमाणे'[2], आरभे वट्टमाणे सारभे वट्टमाणे समारभे वट्टमाणे बहूण पाणाण भूयाण जीवाणं सत्ताणं दुक्खावणयाए[3] सोयावणयाए जूरावणयाए तिप्पावणयाए पिट्टावणयाए परियावणयाए वट्टइ ॥

से तेणट्ठेण मंडिअपुत्ता ! एवं वुच्चइ—जावं च ण से जीवे सया समितं एयति[4] •वेयति चलति फदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ त त भाव° परिणमइ, ताव च णं तस्स जीवस्स अते अंतकिरिया न भवति ॥

१४६. जीवे णं भते ! सया समित नो एयति[5] •नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो त त भाव परिणमइ ?

हता मडिअपुत्ता ! जीवे ण सया समित[6] •नो एयति नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो त तं भाव परिणमइ ॥

१४७. जाव च णं भते ! से जीवे नो एयति[7] •नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो त त भावं परिणमइ, ताव च ण तस्स जीवस्स अते अतकिरिया भवइ ?

हंता[8] •मडिअपुत्ता ! जावं च णं से जीवे नो एयति नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ नो त त भाव परिणमइ, ताव च णं तस्स जीवस्स अते अतकिरिया° भवइ ॥

१४८. से केणट्ठेण[9] •भते ! एवं वुच्चइ—जावं च णं से जीवे नो एयति नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ नो तं त भावं परिणमइ, ताव च णं तस्स जीवस्स अते अतकिरिया° भवइ ?

मडिअपुत्ता ! जाव च ण से जीवे सया समित नो एयति[10] •नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो तं त भाव परिणमइ, तावं च ण से जीवे नो आरभइ नो सारभइ नो समारभइ, नो आरभे वट्टइ नो सारभे वट्टइ नो समारभे वट्टइ, अणारभमाणे असारभमाणे असमारभमाणे, आरभे अवट्टमाणे सारभे अवट्टमाणे समारभे अवट्टमाणे बहूण पाणाण भूयाणं

---

१. आरभइ सारभइ समारंभइ (अ, स)।
२. आरभमाणे सारभमाणे समारभमाणे (अ, क, ता, स)।
३. क्वचित्पठ्यते—'दुक्खणयाए' इत्यादि, तच्च व्यक्तमेव, यच्च तत्र 'किलामणयाए उद्दवणयाए, इत्यधिकमभिधीयते° (वृ)।
४. स० पा०—एयति जाव परिमणइ।
५. स० पा०—एयति जाव नो।
६. स० पा०—समित जाव नो।
७. स० पा०—एयति जाव नो।
८. स० पा०—हता जाव भवइ।
९. स० पा०—केणट्ठेण जाव भवइ।
१०. स० पा०—एयति जाव नो।

जीवाण सत्ताण अदुक्खावणयाए[1] •असोयावणयाए अजूरावणयाए अतिप्पावणयाए अपिट्टावणयाए° अपरियावणयाए वट्टइ।

से जहानामए केइ पुरिसे सुक्कं[2] तणहत्थयं जायतेयंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं मंडिअपुत्ता! से सुक्के तणहत्थए जायतेयंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जइ?

हंता मसमसाविज्जइ।

से जहानामए केइ पुरिसे तत्तंसि अयकवल्लंसि उदयबिंदु पक्खिवेज्जा, से नूणं मंडिअपुत्ता! से उदयबिंदू तत्तंसि अयकवल्लंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव विद्धंसमागच्छइ?

हंता विद्धंसमागच्छइ।

से जहानामए हरए सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभरघडत्ताए चिट्ठति[3]। अहे णं केइ पुरिसे तंसि हरयंसि एगं महं नावं सतासवं सतच्छिड्डं ओगाहेज्जा, से नूणं मंडिअपुत्ता! सा नावा तेहिं आसवदारेहिं[4] आपूरमाणी-आपूरमाणी पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठति?

हंता चिट्ठति।

अहे णं केइ पुरिसे तीसे नावाए सव्वओ समंता आसवदाराइं पिहेइ, पिहेत्ता नावा-उस्सिचणएणं उदयं उस्सिचेज्जा से नूणं मंडिअपुत्ता! सा नावा तंसि उदयंसि उस्सित्तंसि समाणंसि खिप्पामेव उदाइ[5]?

हंता उदाइ।

एवामेव मंडिअपुत्ता! अत्तत्ता-संवुडस्स अणगारस्स इरियासमियस्स[6] •भासासमियस्स एसणासमियस्स आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमियस्स उच्चारपासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमियस्स मणसमियस्स वइसमियस्स कायसमियस्स मणगुत्तस्स वइगुत्तस्स कायगुत्तस्स गुत्तस्स गुत्तिंदियस्स° गुत्तबंभयारिस्स, आउत्तं गच्छमाणस्स चिट्ठमाणस्स[7] निसीयमाणस्स तुयट्टमाणस्स, आउत्तं वत्थ-पडिग्गह-कंवल-पायपुंछणं गेण्हमाणस्स निक्खिवमाणस्स जाव चक्खुपम्हनिवायमवि वेमाया[8] सुहुमा इरियावहिया[9] किरिया कज्जइ—सा पढमसमय-

---

१ स० पा०—अदुक्खावणयाए जाव अपरियावणयाए।

२. सुक्क (अ, व)।

३ चिट्ठइ हता चिट्ठइ (ता, म, स)।

४. °द्दारेहिं (ता, व, म)।

५. तुदाति (ता), उद्दाइ (म); उड्ढ उदाइ (स)

६. रिया° (ता, व, म); स० पा०—इरियासमितस्स जाव गुत्तबभयास्सि।

७. सर्वेष्वपि पदेषु 'आउत्तं' इति पदं गम्यम्।

८. वेमाता (ता), सपेहाए (वृपा)।

९. रिया० (अ, ता, व)।

वद्धपुट्ठा[1], वितियसमयवेइया[2], ततियसमयनिज्जरिया[3]। सा बद्धा पुट्ठा उदीरिया वेइया निज्जिण्णा सेयकाले अकम्म वावि[4] भवति। से तेणट्ठेण मडिअपुत्ता! एवं वुच्चइ—जावं च णं से जीवे सया समिल नो एयति[5] •नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घटइ नो खुब्भइ नो उदीरइ नो तं त भावं परिणमइ, ताव च ण तस्स जीवस्स° अते अतकिरिया भवइ॥

पमत्तापमत्तद्धा-पदं

१४६. पमत्तसजयस्स णं भते! पमत्तसंजमे वट्टमाणस्स सव्वा वि य णं पमत्तद्धा कालओ केवच्चिर[6] होइ?

मडिअपुत्ता! एगं जीव पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। नाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धा॥

१५०. अप्पमत्तसजयस्स णं भंते! अप्पमत्तसजमे वट्टमाणस्स सव्वा वि य ण अप्पमत्तद्धा कालओ केवच्चिरं होइ?

मंडिअपुत्ता! एगं जीवं पडुच्च जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं 'देसूणा पुव्वकोडी'[7] नाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धं॥

१५१. सेवं भते! सेवं भते! त्ति भगव मडिअपुत्ते अणगारे समणं भगवं महावीर वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति॥

लवणसमुद्द-वुड्ढि-हाणि-पदं

१५२. भतेति! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमसंइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—कम्हा णं भते! लवणसमुद्दे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु अतिरेगे वड्ढइ वा? हायइ वा?

लवणसमुद्दवत्तव्वया[8] नेयव्वा जाव[9] लोयट्ठिई, लोयाणुभावे॥

१५३. सेव भते! सेव भंते? त्ति जाव[10] विहरति[11]॥

---

१. °समत° (ता)।

२. बीयसमयवेतिता (क); °वेदिता (ता); वीय° (व)।

३. टितिय° (व)।

४. चावि (ता)।

५. स° पा°—एयति जाव अते।

६. केवचिर (अ, क)।

७. पुव्वकोडी देसूणा (क, ता, व, म, स)।

८. जहा जीवाभिगमे लवण° (स)।

६. जी° ३ मन्दरोद्देशक.।

१०. भ° १।५१।

११. विहरइ किरिया समत्ता (अ, क, ता, व, म, स)

चउत्थो उद्देसो

भाविअप्प-पदं

१५४. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा देव वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहयं जाणरूवेणं जामाणं[1] जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! १. अत्थेगइए देवं पासइ, नो जाणं पासइ। २. अत्थेगइए जाणं पासइ, नो देवं पासइ। ३. अत्थेगइए देवं पि पासइ, जाणं पि पासइ। ४. अत्थेगइए नो देव पासइ, नो जाणं पासइ ॥

१५५. अणगारे ण भंते ! भाविअप्पा देविं वेउव्वियसमुग्घाएण समोहयं जाणरूवेणं जामाणिं[2] जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! १. [3]°अत्थेगइए देविं पासइ, नो जाणं पासइ। २. अत्थेगइए जाणं पासइ, नो देविं पासइ। ३. अत्थेगइए देविं पि पासइ, जाण पि पासइ। ४. अत्थेगइए नो देविं पासइ, नो जाण पासइ° ॥

१५६. अणगारे ण भंते ! भाविअप्पा देवं सदेवीअं वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहयं जाणरूवेण जामाणं जाणइ-पासइ ?
[4]°गोयमा ! १. अत्थेगइए देवं सदेवीअं पासइ, नो जाणं पासइ। २. अत्थेगइए जाण पासइ, नो देवं सदेवीअ पासइ। ३ अत्थेगइए देव सदेवीअ पि पासइ, जाणं पि पासइ। ४. अत्थेगइए नो देवं सदेवीअ पासइ, नो जाण पासइ° ॥

१५७ अणगारे णं भते ! भाविअप्पा रुक्खस्स किं अंतो पासइ ? बाहिं पासइ ?
[5]°गोयमा ! १. अत्थेगइए रुक्खस्स अतो पासइ, नो बाहिं पासइ। २. अत्थेगइए रुक्खस्स बाहिं पासइ, नो अतो पासइ। ३. अत्थेगइए रुक्खस्स अतो पि पासइ, बाहिं पि पासइ। ४. अत्थेगइए रुक्खस्स नो अंतो पासइ, नो बाहिं पासइ° ॥

१५८. [6]°अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा रुक्खस्स किं मूलं पासइ ? कंदं पासइ ?
गोयमा ! १. अत्थेगइए रुक्खस्स मूल पासइ, नो कंदं पासइ। २. अत्थेगइए रुक्खस्स कंदं पासइ, नो मूलं पासइ। ३. अत्थेगइए रुक्खस्स मूलं पि पासइ, कदं पि पासइ। ४. अत्थेगइए रुक्खस्स नो मूल पासइ, नो कंदं पासइ° ॥

---

१. जायमाण (अ, क, ब, स)।
२. जाइमाणिं (अ, ब); जायमाणिं (क, स)।
३. स० पा०—एव चेव।
४. स० पा०—एतेण अभिलावेण चत्तारि भंगा।
५. सं० पा०—चउभगो।
६. स० पा०—एवं किं मूलं पासइ, कदं पासइ ? चउभगो।

१५९. मूलं पासइ ? खंधं पासइ ? चउभंगो ॥
१६०. एवं मूलेणं[1] [जाव ?] बीजं संजोएयव्वं ॥
१६१. एवं कंदेण वि समं सजोएयव्वं जाव बीयं ॥
१६२. एवं जाव पुप्फेण समं बीयं संजोएयव्वं ॥
१६३. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा रुक्खस्स किं फलं पासइ ? बीयं पासइ ? चउभंगो[2] ॥

वाउकाय-पदं

१६४ पभू णं भंते ! वाउकाए एगं महं इत्थिरुवं वा पुरिसरूवं वा [आसरूवं वा[3] ?] हत्थिरूवं वा जाणरूवं वा जुग्गरूवं वा गिल्लिरूवं वा थिल्लिरूव[4] वा सीयरूवं वा संदमाणियरूवं वा विउव्वित्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । वाउकाए[5] ण विकुव्वमाणे एगं महं पडागासठियं रूव विकुव्वइ ॥
१६५. पभू णं भंते ! वाउकाए एगं महं पडागासंठिय रूवं विउव्वित्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ?
हंता पभू ॥

---

१. एवमिति मूलकदसूत्राभिलापेन मूलेन सह कंदादिपदानि वाच्यानि यावद्बीजपदम् । तत्र मूलम्, कंदः, स्कन्ध , त्वक्, शाखा, प्रवालम्, पत्रम्, पुष्पम्, फलम्, बीजम् चेति दश पदानि, एषां च पञ्चचत्वारिंशद् द्विकसयोगा. भङ्गा.—
१. मूल कद २. मूल स्कंध
३. मूल त्वक् ४. मूल शाखा
५. मूल प्रवाल ६. मूल पत्र
७. मूल पुष्प ८. मूल फल
९. मूल बीज १०. कद स्कध
११. कंद त्वक् १२. कंद शाखा
१३. कद प्रवाल १४. कंद पत्र
१५. कंद पुष्प १६. कद फल
१७. कद बीज १८. स्कंध त्वक्
१९. स्कध शाखा २०. स्कंध प्रवाल
२१. स्कध पत्र २२. स्कंध पुष्प
२३. स्कध फल २४. स्कंध बीज
२५. त्वक् शाखा २६. त्वक् प्रवाल
२७. त्वक् पत्र २८. त्वक् पुष्प
२९. त्वक् फल ३०. त्वक् बीज
३१. शाखा प्रवाल ३२. शाखा पत्र
३३. शाखा पुष्प ३४. शाखा फल
३५. शाखा बीज ३६. प्रवाल पत्र
३७. प्रवाल पुष्प ३८. प्रवाल फल
३९. प्रवाल बीज ४०. पत्र पुष्प
४१. पत्र फल ४२. पत्र बीज
४३. पुष्प फल ४४. पुष्प बीज
४५. फल बीज (वृ) ।

२. चउभगो एवं (ता) ।
३. १७९ सूत्रे 'आसरूवं' इति पाठो विद्यते वृत्तावपि तस्योल्लेखोस्ति, तेनात्रापि संभाव्यते ।
४. खिल्लि° (क) ।
५. वाउयाए (क, ता) ।

१६६. से भंते ! किं आइड्ढीए[1] गच्छइ ? परिड्ढीए गच्छइ ?
गोयमा ! आइड्ढीए गच्छइ, नो परिड्ढीए गच्छइ ॥

१६७. [2]•से भंते ! किं आयकम्मुणा गच्छइ ? परकम्मुणा गच्छइ ?
गोयमा ! आयकम्मुणा गच्छइ, नो परकम्मुणा गच्छइ ॥

१६८. से भंते ! किं आयप्पयोगेण गच्छइ ? परप्पयोगेण गच्छइ ?
गोयमा ! आयप्पयोगेण गच्छइ, नो परप्पयोगेण गच्छइ° ॥

१६९. से भंते ! किं ऊसिओदयं[3] गच्छइ ? पतोदयं गच्छइ ?
गोयमा ! ऊसिओदयं पि गच्छइ, पतोदयं पि गच्छइ ॥

१७०. से भंते ! किं एगओपडागं गच्छइ ? दुहओपडागं गच्छइ ?
गोयमा ! एगओपडागं गच्छइ, नो दुहओपडागं गच्छइ ॥

१७१. से भंते ! किं वाउकाए ? पडागा[4] ?
गोयमा ! वाउकाए णं से, नो खलु सा पडागा ॥

बलाहक-पदं

१७२. पभू णं भंते ! बलाहए एगं महं इत्थिरूवं वा जाव[5] संदमाणियरूवं वा परिणामेत्तए ?
हंता पभू ॥

१७३. पभू णं भंते ! बलाहए एगं महं इत्थिरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ।
हंता पभू ॥

१७४. से भंते ! किं आइड्ढीए गच्छइ ? परिड्ढीए गच्छइ ?
गोयमा ! नो आइड्ढीए गच्छइ, परिड्ढीए गच्छइ ॥

१७५. [6]•से भंते ! किं आयकम्मुणा गच्छइ ? परकम्मुणा गच्छइ ?
गोयमा ! नो आयकम्मुणा गच्छइ, परकम्मुणा गच्छइ ॥

१७६. से भंते ! किं आयप्पयोगेणं गच्छइ ? परप्पयोगेणं गच्छइ ?
गोयमा ! नो आयप्पयोगेणं गच्छइ, परप्पयोगेणं गच्छइ ॥

१७७ से भंते ! किं ऊसिओदयं गच्छइ ? पतोदयं गच्छइ ?
गोयमा ! ऊसिओदयं पि गच्छइ, पतोदयं पि गच्छइ° ॥

---

१ आयड्ढीए (अ, व, स), आतिड्ढीए (क, म)
२. स० पा०—जहा आयड्ढीए एवं अयकम्मुणा वि आयप्पयोगेण वि भाणियव्वं ।
३. ऊसिओदग (म, स) ।
४. पडाग वा (ता) ।
५. भ० २।१६४ ।
६. स० पा०—एवं नो आयकम्मुणा, परकम्मुणा । नो आयप्पयोगेणं, परप्पयोगेणं । ऊसिओदयं वा गच्छइ पयोदयं वा गच्छइ ।

१७८. से भंते ! किं बलाहए ? इत्थी ?
गोयमा ! बलाहए णं से, नो खलु सा इत्थी ॥

१७९. एवं[1] पुरिसे, आसे, हत्थी ॥

१८०. पभू णं भंते ! बलाहए एगं महं जाणरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ?
जहा[2] इत्थिरूवं तहा भाणियव्वं ॥

१८१. [3]•से भंते ! किं एगओचक्कवालं गच्छइ ? दुहओचक्कवालं गच्छइ ?
गोयमा ! एगओचक्कवालं पि गच्छइ, दुहओचक्कवालं पि गच्छइ० ॥

१८२. जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीया-संदमाणिया[4] तहेव[5] ॥

किलेसोववाय-पदं

१८३. जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए,[6] से णं भंते ! किलेस्सेसु उववज्जइ ?
गोयमा ! जल्लेस्साइं[7] दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ, तल्लेस्सेसु उववज्जइ, तं जहा—कण्हलेस्सेसु वा, नीललेस्सेसु वा, काउलेस्सेसु वा। एवं जस्स जा लेस्सा सा तस्स भाणियव्वा। जाव[8]—

१८४. जीवे णं भंते ! जे भविए जोइसिएसु उववज्जित्तए[9]•, से णं भंते ! किलेस्सेसु उववज्जइ० ?
गोयमा ! जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेस्सेसु उववज्जइ, तं जहा—तेउलेस्सेसु ॥

१८५. जीवे णं भंते ! जे भविए वेमाणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! किलेस्सेसु उववज्जइ ?
गोयमा ! जल्लेस्साइं दव्वाइं परियाइत्ता[10] कालं करेइ तल्लेस्सेसु उववज्जइ, तं जहा—तेउलेस्सेसु वा, पम्हलेस्सेसु वा, सुक्कलेसे वा ॥

---

१. भ० ३।१७३-१७८।
२. भ० ३।१७३-१७८।
३. सं० पा०—नवरं एगओ चक्कवालं पि दुहओचक्कवालं पि भाणियव्वं।
४. संदमाणिया णं (अ, ब, स)।
५. भ० ३।१७३-१७८।
६. उववज्जइए (अ)।
७. जं लेसाइं (अ, स)।
८. जाव जीवेणं भंते जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जइ से भंते किलेसेसु असुरकुमारेसु उववज्जइ ? जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु असुरकुमारेसु उववज्जइ। तं कण्हनीलकाउतेउलेसेसु वा एवं जहा नेरइयाणं नवरं अब्भहियं तेउलेसेसु वा एवं जस्स जा सा भाणियव्वा जाव (ता); पू० प० २।
९. सं० पा०—पुच्छा।
१०. परियाइतित्ता (अ, ब, स)।

भाविअप्प-विकुव्वणा-पदं

१८६. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू वेभार[1] पव्वयं उल्लंघेत्तए वा ? पल्लंघेत्तए वा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१८७. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू वेभारं पव्वयं उल्लंघेत्तए वा ? पल्लंघेत्तए वा ?
हंता पभू ॥

१८८. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता जावइयाइं रायगिहे नगरे रूवाइं, एवइयाइं विकुव्वित्ता वेभारं पव्वयं अंतो अणुप्पविसित्ता पभू समं वा विसमं करेत्तए ? विसमं वा समं करेत्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१८९. •[2]अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता जावइयाइं रायगिहे नगरे रूवाइं, एवइयाइं विकुव्वित्ता वेभारं पव्वयं अंतो अणुप्पविसित्ता पभू समं वा विसमं करेत्तए ? विसमं वा समं करेत्तए ?
हंता पभू° ॥

१९०. से भंते ! किं माई विकुव्वइ ? अमाई ? विकुव्वइ
गोयमा ! माई विकुव्वइ, नो अमाई विकुव्वइ ॥

१९१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[3]—•माई विकुव्वइ°, नो अमाई विकुव्वइ ?
गोयमा ! माई णं पणीयं पाण-भोयणं भोच्चा-भोच्चा वामेति । तस्स णं तेणं पणीएणं पाण-भोयणेणं अट्ठि-अट्ठिमिंजा बहलीभवंति, पयणुए मंस-सोणिए भवति । जे वि य से अहाबायरा पोग्गला ते वि य से परिणमंति, तं जहा—सोइंदियत्ताए[4] •चक्खिदियत्ताए घाणिंदियत्ताए रसिंदियत्ताए° फासिंदियत्ताए, अट्ठि-अट्ठिमिंज-केस-मंसु-रोम-नहत्ताए, सुक्कत्ताए, सोणियत्ताए ।
अमाई णं लूहं पाण-भोयणं भोच्चा-भोच्चा णो वामेइ । तस्स णं तेणं लूहेणं पाण-भोयणेणं अट्ठि-अट्ठिमिंजा पयणूभवंति, बहले मंस-सोणिए । जे वि य से अहाबायरा पोग्गला ते वि य से परिणमंति, तं जहा—उच्चारत्ताए पासवणत्ताए[5] •खेलत्ताए सिंघाणत्ताए वंतत्ताए पित्तत्ताए पूयत्ताए° सोणियत्ताए । से तेणट्ठेणं[6] •भंते ! एवं वुच्चइ—माई विकुव्वइ°, नो अमाई विकुव्वइ ॥

---

१. वेब्भार (ता) ।
२. सं० पा०—एवं चेव बितिओ वि आलावगो नवरं परियातित्ता पभू ।
३. सं० पा०—वुच्चइ जाव नो ।
४. सं० पा०—सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए ।
५. सं० पा०—पासवणत्ताए जाव सोणियत्ताए ।
६. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो ।

१९२. माई णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते[1] कालं करेइ, नत्थि तस्स आराहणा। अमाई णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते कालं करेइ, अत्थि तस्स आराहण ॥

१९३. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति[2] ॥

पंचमो उद्देसो

१९४. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं इत्थीरूवं वा जाव[3] संदमाणियरूव वा विउव्वित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१९५. अणगारे णं भते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगं महं इत्थीरूवं वा जाव[4] संदमाणियरूवं वा विउव्वित्तए ?
हंता पभू ॥

१९६. अणगारे णं भते ! भाविअप्पा केवइआइं पभू इत्थिरूवाइं विउव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए—जुवइं जुवाणे हत्थेण हत्थसि गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा वेउव्वियससमुग्घाएणं समोहण्णइ जाव[5] पभू ण गोयमा ! अणगारे ण भाविअप्पा केवलकप्पं जंबुद्दीव दीव बहूहि इत्थिरूवेहि आइण्ण वितिकिण्ण[6] °उवत्थडं संथड फुडं अवगाढा-वगाढं करेत्तए° । एस ण गोयमा ! अणगारस्स भाविअप्पणो अयमेयारूवे विसए, विसयमेत्ते बुइए, णो चेव णं संपत्तीए विउव्विसु वा, विउव्वति वा, विउव्विस्सति वा । एव परिवाडीए नेयव्व जाव[7] संदमाणिया ॥

१९७. से जहानामए केइ पुरिसे असिचम्मपायं[8] गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा असिचम्मपायहत्थकिच्चगएण अप्पाणेणं उड्ढं वेहास उप्पएज्जा ?
हंता उप्पएज्जा ॥

---

१. अणालोतिय° (अ, ब, स) ।
२. भ० १।५१ ।
३. भ० ३।१६४।
४. भ० ३।१६४।
५. भ० ३।४ ।
६. स हा०—वितिकिण्ण जाव एस ।
७. भ० ३।१६४।
८. असि चम्म° (ता) ।

१९८. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा केवइयाइं पभू असिचम्म (पाय ?) हत्थकिच्च-गयाइ रूवाइ विउव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए—जुवइ जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा, त चेव जाव[1] विउव्विसु वा, विउव्वति वा, विउव्विस्सति वा ॥

१९९. से जहानामए केइ पुरिसे एगओपडागं काउं गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा एगओपडागाहत्थकिच्चगएण[2] अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं[3] उप्पएज्जा ?
हंता[4] उप्पएज्जा ॥

२००. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा केवइयाइ पभू एगओपडागाहत्थकिच्चगयाइं रूवाइ विकुव्वित्तए ?
एव चेव जाव[1] विकुव्विसु वा, विकुव्वतिवा वा, विकुव्विस्सति वा ॥

२०१. एव दुहओपडाग पि ।

२०२. से जहानामए केइ पुरिसे एगओजण्णोवइत काउ गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा एगओजण्णोवइतकिच्चगएण अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ?
हंता उप्पएज्जा ॥

२०३. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा केवइयाइं पभू एगओजण्णोवइतकिच्चगयाइं रूवाइ विकुव्वित्तए ?
तं चेव जाव[5] विकुव्विसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ।

२०४. एव दुहओजण्णोवइयं पि ॥

२०५. से जहानामए केइ पुरिसे एगओपल्हत्थिय काउं चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा एगओपल्हत्थिय किच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढ वेहासं उप्पएज्जा ?
त चेव जाव[6] विकुव्विसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ॥

२०६. एव दुहओपल्हत्थिय पि ॥

२०७. से जहानामए केइ पुरिसे एगओपलियंक काउ चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा एगओपलियककिच्चगएण अप्पाणेण उड्ढं वेहास उप्पएज्जा ?
तं चेव जाव[7] विकुव्विसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ॥

२०८. एवं दुहओपलियक पि ॥

---

१. भ० ३।१९६ ।
२. एगततोपडागा° (ता) ।
३. वेहायस (व) ।
४. हंता गोयमा (अ, ता, व, स) ।
५. भ० ३।१९६ ।
६. भ० ३।१९६ ।
७. भ० ३।२०२, २०३ ।
८. भ० ३।२०२, २०३ ।

भाविअप्प-अभिजुंजणा-पदं

२०९. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं आसरूवं वा हत्थिरूवं वा सीहरूवं वा विग्घरूवं वा विगरूवं[1] वा दीवियरूवं वा अच्छरूवं वा तरच्छरूवं वा परासररूवं[2] वा अभिजुंजित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

२१०. अणगारे णं[3] •भंते ! भाविअप्पा बाहिरिए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगं महं आसरूवं वा हत्थिरूवं वा सीहरूवं वा वग्घरूवं वा विगरूवं वा दीवियरूवं वा अच्छरूवं वा तरच्छरूवं वा परासररूवं वा अभिजुजित्तए ?
हंता पभू° ॥

२११. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा (पभू ?) एगं महं आसरूवं वा अभिजुजित्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ?
हंता पभू ॥

२१२. से भंते ! किं आइड्ढीए गच्छइ ? परिड्ढीए गच्छइ ?
गोयमा ! आइड्ढीए गच्छइ, नो परिड्ढीए गच्छइ ॥

२१३. [4]•से भंते ! कि आयकम्मुणा गच्छइ ? परकम्मुणा गच्छइ ?
गोयमा ! आयकम्मुणा गच्छइ, नो परकम्मुणा गच्छइ ॥

२१४. से भंते! किं आयप्पयोगेणं गच्छइ ? परप्पयोगेणं गच्छइ !
गोयमा ! आयप्पयोगेणं गच्छइ, नो परप्पयोगेणं गच्छइ ॥

२१५. से भंते ! कि ऊसिओदयं गच्छइ ? पतोदयं गच्छइ ?
गोयमा ! ऊसिओदयं पि गच्छइ, पतोदयं पि गच्छइ° ॥

२१६. से णं भंते ! कि अणगारे ? आसे ?
गोयमा ! अणगारे णं से, नो खलु से आसे ॥

२१७. एवं जाव[5] परासररूवं वा ॥

२१८. से भंते ! किं 'मायी विकुव्वइ[6]', ? अमायी विकुव्वइ ?
गोयमा ! मायी विकुव्वइ, नो अमायी विकुव्वइ ॥

---

१. वग° (क, ता, ब, म) ।
२. इह अन्यान्यपि शृगालादिपदानि वाचनान्तरे दृश्यन्ते (वृ) ।
३. सं० पा०—एवं बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू ।
४. सं० पा०—एवं आयकम्मुणा नो परकम्मुणा आयप्पयोगेण नो परप्पयोगेण उस्सिओदयं वा गच्छइ पयोदयं वा गच्छइ ।
५. भ० ३।२०९, २११-२१६ ।
६. मायी अभिजुंजइ" अधिकृतवाचनायां 'मायी विक्कुव्वइ' त्ति दृश्यते (वृ) ।

२१६. मायी णं भंते ! तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालं करेइ, कहिं उववज्जइ ?
गोयमा ! अण्णयरेसु आभियोगिएसु[1] देवलोगेसु देवत्ताए उववज्जइ ।।

२२०. अमायी णं भंते ! तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते कालं करेइ, कहिं उववज्जइ ?
गोयमा ! अण्णयरेसु अणाभियोगिएसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जइ ।।

२२१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ।

संगहणी-गाहा

१. इत्थी असी पडागा, जण्णोवइए य होइ बोद्धव्वे[3] ।
पल्हत्थिय पलियंके, अभिओग विकुव्वणा मायी ।।

छट्ठो उद्देसो

भावियप्प-विकुव्वणा-पदं

२२२. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभंगनाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ।।

२२३. से भंते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तहाभावं जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ।।

२२४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नो तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं रायगिहे नगरे समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नगरीए रूवाइं जाणामि-पासामि । 'सेस दंसण-विवच्चासे'[4] भवइ । से तेणट्ठेणं[5] °गोयमा ! एवं वुच्चइ—नो तहाभावं जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ°-पासइ ।।

---

१. आभियोगेसु (अ, व, स); आभिओग्गिएसु (ता) ।
२. भ० १।५१ ।
३. बोधव्वे (अ, क, म, स) ।
४. से से दसणे विवच्चासे (अ, व, स, वृ); से से दसणे विवरीए विवच्चासे (वृपा) ।
५. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव पासइ ।

२२५. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी[1] •वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभंगनाणलद्धीए° रायगिहे नगरे समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ॥

२२६. [2]•से भंते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तहाभावं जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२२७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नो तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा !° तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइं जाणामि-पासामि । सेसं दंसण-विवच्चासे भवति । से तेणट्ठेणं[3] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—नो तहाभावं जाणइ-पासइ°, अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२२८. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभंगनाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं, रायगिहं च नगरं, अंतरा[4] एगं महं जणवयग्गं[5] समोहए, समोहणित्ता वाणारसिं नगरिं रायगिहं च नगरं अंतरा[6] एगं महं जणवयग्गं जाणति-पासति ?
हंता जाणति-पासति ।

२२९. से भंते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तहाभावं जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२३०. से केणट्ठेणं[7] •भंते ! एवं वुच्चइ—नो तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ°-पासइ ?
गोयमा ! तस्स खलु एवं भवति—एस खलु वाणारसी नगरी, एस खलु रायगिहे नगरे, एस खलु अंतरा एगे महं जणवयग्गे, नो खलु एस महं वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी विभंगनाणलद्धी इड्ढी जुती जसे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए 'सेसं दंसण-विवच्चासे'[8] भवति । से तेणट्ठेणं[9] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—नो तहाभावं जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ°-पासइ ॥

---

१. स० पा०—मिच्छदिट्ठी जाव रायगिहे ।
२. स० पा०—तं चेव जाव तस्स ।
३. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव अण्णहाभावं ।
४. अंतरा य (क, ता, ब) ।
५. जणवयवग्गं (क, म, स, वृ); अत्र स्वीकृतः पाठः समीचीनः प्रतिभाति । वृत्तिकृतः सम्मुखवर्तिषु आदर्शेषु 'जणवयवग्ग' इति पाठ आसीत् तेन तथा व्याख्यातोसौ लभ्यते ।
६. तं० च अंतरा (क, ता, ब, म) ।
७. स० पा०—केणट्ठेणं जाव पासइ ।
८. से से दंसणे विवच्चासे (अ, क, ब, स) ।
९. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव पासइ ।

२३१. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए रायगिहं नगरं समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ॥

२३२. से भंते ! किं तहाभावं[1] जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२३३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं रायगिहे नयरे समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणामि-पासामि । सेसं दंसण-अविवच्चासे भवति । से तेणट्ठेणं[2] °गोयमा ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२३४. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ॥

२३५. से भंते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२३६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ ? नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं वाणारसिं नगरिं समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइं जाणामि-पासामि । सेसं दंसण-अविवच्चासे भवति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ° ॥

२३७. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए रायगिहं नगरं, वाणारसिं च नगरिं, अंतरा एगं महं जणवयग्गं[3] समोहए, समोहणित्ता रायगिहं नगरं, वाणारसिं च नगरिं, अंतरा[4] एगं महं जणवयग्गं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ॥

---

१. तहारूवं (क) ।
२. स० पा०—वितिओ वि आलावगो एवं चेव नवरं वाणारसीए समोहणा णेयव्वा । रायगिहे नगरे रूवाइं जाणइ पासइ ।
३. जणवयवग्गं (क, म, स), जणवदग्गं (ता) ।
४. तं च अंतरा (क, ता, व, म) ।

२३८. से भंते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२३९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ ? नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स णं एवं भवति—नो खलु एस रायगिहे नगरे, नो खलु एस वाणारसी नगरी, नो खलु एस अंतरा एगे जणवयग्गे, एस खलु मम वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी ओहिनाणलद्धी इड्ढी जुती जसे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए। सेसं दंसण-अविवच्चासे भवइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२४०. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं गामरूवं वा नगररूवं वा जाव[1] सण्णिवेसरूवं वा विउव्वित्तए ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

२४१. [2]°अणगारे णं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगं महं गामरूवं वा नगररूवं वा जाव सण्णिवेसरूवं वा विउव्वित्तए ?
हंता पभू° ॥

२४२. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा केवइयाइं पभू गामरूवाइं विकुव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए—जुवतिं जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा तं चेव जाव[3] विकुव्विंसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ॥

२४३. एवं जाव[4] सण्णिवेसरूवं वा ॥

आयरक्ख-पदं

२४४. चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो कइ आयरक्खदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि चउसट्ठीओ आयरक्खदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। ते णं आयरक्खा—वण्णओ[5] ॥

२४५. एवं सव्वेसिं इंदाणं जस्स जत्तिया आयरक्खा ते भाणियव्वा[6] ॥

२४६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[7] ॥

---

१. भ० ३।४९।
२. स० पा०—एवं बितिओ वि आलावगो नवरं बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभु।
३. भ० ३।१८६।
४. भ० ३।४९।
५. राय० सू० ६६४; वण्णओ जहा रायपसेणइज्जे (व, म); अयं च पुस्तकान्तरे साक्षाद् दृश्यत एव (वृ)।
६. प० २।
७. भ० १।५१।

सत्तमो उद्देसो

लोगपाल-पदं

२४७. रायगिहे नगरे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी—सक्कस्स णं भंते ! देविदस्स देवरण्णो कति लोगपाला पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता, तं जहा—सोमे जमे वरुणे वेसमणे ।।

२४८. एएसि णं भंते ! चउण्हं लोगपालाणं कति विमाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि विमाणा पण्णत्ता, तं जहा—सझप्पभे वरसिट्ठे सयजले वग्गू ।।

२४९. कहि णं भंते ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो संझप्पभे नाम महाविमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम-सूरिय[1]-गहगण[2]-नक्खत्त तारारूवाण बहूइं जोयणाइं जाव[3] पंच वडेंसया पण्णत्ता, तं जहा—असोगवडेंसए, सत्तवण्णवडेंसए, चंपयवडेंसए, चूयवडेंसए[4], मज्झे सोहम्मवडेंसए ।।

सोम-पदं

२५०. तस्स णं सोहम्मवडेंसयस्स महाविमाणस्स पुरत्थिमे णं सोहम्मे कप्पे असंखेज्जाइं जोयणाइं वीइवइत्ता, एत्थ णं सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो संझप्पभे नाम महाविमाणे पण्णत्ते—अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइं[5] आयाम-विक्खंभेण, उयालीसं[6] जोयणसयसहस्साइं बावन्नं च सहस्साइं अट्ठ य[7] अडयाले जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते । जा सूरियाभविमाणस्स वत्तव्वया सा अपरिसेसा भाणियव्वा जाव[8] अभिसेओ, नवरं—सोमो देवो ।।

२५१. संझप्पभस्स णं महाविमाणस्स अहे, सपक्खि, सपडिदिसिं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं[9] ओगाहित्ता, एत्थ णं सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो

---

१. सूरिम (क, ता, म) ।
२. गह (ता) ।
३. राय० सू० १२४, १२५ ।
४. भूय० (व, म, स) ।
५. अड्ढ० (ता) ।
६. ऊया० (क, ता, व) ।
७. × (अ, स) ।
८. राय० सू० १२६-१८० ।
९. जोयणसयसहस्साइं (क, व) ।

सोमा नामं रायहाणी पण्णत्ता—एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं जंबु-द्दीवप्पमाणा। वेमाणियाणं पमाणस्स अद्ध नेयव्व[1] जाव[2] ओवारियलेण[3] सोलस जोयणसहस्साइ आयाम-विक्खभेण, पण्णासं जोयणसहस्साइ पच य सत्ताणउए जोयणसते किचि विसेसूणे परिक्खेवेण पण्णत्त। पासायाण चत्तारि परिवाडीओ नेयव्वाओ, सेसा नत्थि॥

२५२. सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे देवा आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठति, तं जहा—सोमकाइया इ वा, सोमदेवयकाइया इ वा, विज्जुकुमारा, विज्जुकुमारीओ, अग्गिकुमारा, अग्गिकुमारीओ, वायकुमारा[4], वायकुमारीओ[5], चदा, सूरा, गहा णक्खत्ता, तारारूवा—जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया, तप्पक्खिया, तब्भारिया सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठति॥

२५३. जबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण जाइ इमाइं समुप्पज्जति, तं जहा—गहदडा इ वा, गहमुसला इ वा, गहगज्जिया इ वा, गहजुद्धा[6] इ वा, गहसिंघाडगा इ वा, गहावसव्वा इ वा, 'अब्भा इ वा'[7] अब्भरुक्खा इ वा, सझा इ वा, गंधव्वनगरा इ वा, उक्कापाया इ वा, दिसिदाहा इ वा, गज्जिया इ वा, विज्जुया इ वा, पसुवुट्ठी इ वा, जूवे इ वा, जक्खालित्तए त्ति वा, धूमिया इ वा, महिया इ वा, रयुग्घाए त्ति वा, चदोवरागा इ वा सूरोवरागा इ वा, चदपरिवेसा[8] इ वा, सूरपरिवेसा[9] इ वा, पडिचदा इ वा, पडिसूरा इ वा, इदधणू इ वा, उदगमच्छा[10] इ वा, कपिहसिया इ वा, अमोहा इ वा, पाईणवाया इ वा, पईणवाया इ वा[11], •दाहिणवाया इ वा, उदीणवाया इ वा, उड्ढावाया इ वा, अहोवाया इ वा, तिरियवाया इ वा, विदिसीवाया इ वा, वाउब्भामा इ वा, वाउक्कलिया इ वा, वायमडलिया इ वा, उक्कलियावाया इ वा, मडलियावाया इ वा, गुजावाया इ वा, झझावाया इ वा°, सवट्टयवाया इ वा, गामदाहा इ वा, जाव[12] सण्णिवेसदाहा इ वा, पाणक्खया, जणक्खया, धणक्खया, कुलक्खया, वसणब्भूया मणारिया[13]—जे यावण्णे तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देवि-

---

१. राय० सू० २०४-२०८।
२. भ० २।१२१।
३. उवगारियलेण (अ, स)।
४. वायु° (क); वाउ° (ता)।
५. वायु° (क); वाउ° (ता)।
६. एव गहजुद्धा (अ, क, ता, ब, म, स)।
७. × (अ, ता, म, स)।
८. °परिएसा (ब, म)।
९. °परिएसा (ब, म)।
१०. उदगमच्छगे (ब, म)।
११. स० पा०—पईणवाया इ वा जाव सवट्टयवाया।
१२. भ० १।४९।
१३. मकारोलाक्षणिक.।

दस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो अण्णाया अदिट्ठा असुया अमुया[1] अविण्णाया, तेसि वा सोमकाइयाण देवाणं ॥

२५४. सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चा अभिण्णाया[2] होत्था, तं जहा—इंगालए वियालए लोहियक्खे सण्णिच्चरे[3] चंदे सूरे सूक्के बुहे वहस्सई राहू ॥

२५५ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सतिभागं[4] पलिओवमं ठिई पण्णत्ता । अहावच्चाभिण्णायाणं[5] देवाणं एग पलिओवमं ठिई पण्णत्ता । एमहिड्ढीए जाव[6] महाणुभागे सोमे महाराया ॥

यम-पदं

२५६ कहि ण भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो वरसिट्ठे नामं महाविमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सोहम्मवडेसयस्स[7] महाविमाणस्स दाहिणे णं सोहम्मे कप्पे असखेज्जाइं जोयणसहस्साइ वीईवइत्ता, एत्थ णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो वरसिट्ठे नामं महाविमाणे[8] पण्णत्ते—अद्धतेरसजोयणसयसहस्साई—जहा सोमस्स विमाण तहा जाव[9] अभिसेओ। रायहाणी तहेव जाव[10] पासायपंतीओ ।

२५७ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो इमे देवा आणा[11]-°उववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठंति, त जहा—जमकाइया इ वा, जमदेवयकाइया[12] इ वा, पेतकाइया इ वा, पेतदेवयकाइया इ वा, असुरकुमारा, असुरकुमारीओ, कंदप्पा, निरयपाला[13], अभियोगा[14]—जे यावण्णे तहप्पगारा[15] सव्वे ते तब्भत्तिगा, तप्पक्खिया तब्भारिया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो आणा[16]-°उववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठंति ॥

---

१ असुया (अ, क, म); अस्मृतपदस्य असुयं अमुय इतिरूपद्वय भवति । वृत्तिकृता असुयत्ति अस्मृता इति व्याख्यातम् ।
२. अहाभिण्णाता (क, ता)
३ सणिचरे (अ); सण्णिच्छरे (क, ब, म); सणिचरे (ता) ।
४. सइंभाग (ता), सत्तिभाग (व, म) ।
५ अहापच्चभिण्णायाण (क); अहापच्चभिण्णाताण (ता) ।
६. भ० ३।४ ।
७. सोहम्मवडसयस्स (स) ।
८. विमाणो (क. ता, व) ।
९. भ० ३।२५० ।
१०. भ० ३।२५१ ।
११. स० पा०—आणा जाव चिट्ठति ।
१२. जमदेवतक्काइया (ता); जमदेवकाइया (म, स) ।
१३. निरयवाला (अ) ।
१४. आभियोग्गा (ता, व) ।
१५. तप्पगारा (ता, व) ।
१६. स० पा०—आणा जाव चिट्ठति ।

२५८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा—डिंबा इ वा, डमरा इ वा, कलहा इ वा, बोला इ वा, खारा इ वा, महाजुद्धा इ वा, महासंगामा इ वा, महासत्थनिवडणा इ वा, महापुरिसनिवडणा[1] इ वा, महारुहिरनिवडणा इ वा, दुब्भूया इ वा, कुलरोगा इ वा, गामरोगा इ वा, मंडलरोगा इ वा, नगररोगा इ वा, सीसवेयणा इ वा, अच्छिवेयणा इ वा कण्णवेयणा इ वा, नहवेयणा इ वा, दंतवेयणा इ वा, इंदग्गहा इ वा, खदग्गहा इ वा, कुमारग्गहा इ वा, जक्खग्गहा इ वा, भूयग्गहा[2] इ वा, एगाहिया इ वा, बेहिया इ वा, तेहिया इ वा, चाउत्थया[3] इ वा, उव्वेयगा इ वा, कासा इ वा, 'सासाइवा, सोसा'[4] इ वा, जरा इ वा, दाहा इ वा, कच्छकोहा इ वा, अजीरगा इ वा, पंडुरोगा इ वा, अरिसा[5] इ वा, भगंदला[6] इ वा, हिययसूला इ वा, मत्थयसूला इ वा, जोणिसूला इ वा, पाससूला इ वा, कुच्छिसूला इ वा, गाममारी इ वा, नगरमारी इ वा, खेडमारी इ वा, कव्वड-मारी इ वा, दोणमुहमारी इ वा, मडंबमारी इ वा, पट्टणमारी इ वा, आसममारी इ वा, सवाहमारी इ वा, सण्णिवेसमारी इ वा, पाणक्खया, जणक्खया, धणक्खया, कुलक्खया, 'वसणब्भूया मणारिया'[7] जे यावण्णे[8] तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो अण्णाया अदिट्ठा असुया अमुया अविण्णाया, तेसिं वा जमकाइयाण देवाण ॥

२५९. सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चा अभिण्णाया[9] होत्था, तं जहा—

संगहणी-गाहा

अंबे अंबरिसे चेव, सामे सबले त्ति यावरे।
रुद्दोवरुद्दे काले य, महाकाले त्ति यावरे ॥१॥
'असिपत्ते धणू कुंभे'[10], वालुए[11] वेतरणी[12] त्ति य।
खरस्सरे महाघोसे, एते[13] पण्णरसाहिया ॥२॥

---

१. एवं महापुरिस° (अ, क, ता, ब, म. स)।
२. भूमग्गहा (ता)।
३. चतुत्थया (ता, म)।
४. खासा इ वा सासा (अ)।
५. अरसा (अ); हरिसा ब, म)।
६. भगंदरा (ता)।
७. ° भूयमणारिया (अ, क. ता); °भूतामणारिया (ब)।
८. जे या वि अन्ने (ब, म)।
९. अहाभिण्णाया (क, ता)।
१०. असी य असिपत्ते कुंभे (क, वृ); असिपत्त धणू कुभे (वृपा)।
११. वालू (अ, ता, ब, म, स)।
१२. वेदरणी (ब, म)।
१३. एमेए (क, ब, वृ)।

२६०. सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो सतिभाग पलिश्र ठिई पण्णत्ता, अहावच्चाभिण्णायाण देवाण एगं पलिओवम ठिई पण्णत्ता। एमहिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे जमे महाराया ॥

वरुण-पदं

२६१. कहि ण भते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो सयंजले नामं महाविमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तस्स ण सोहम्मवडेसयस्स महाविमाणस्स पच्चत्थिमे णं जहा सोमस्स तहा विमाण-रायधाणीओ भाणियव्वा जाव[2] पासादवडेसया, नवरं—नाम-नाणत्त ॥

२६२ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो[3] •इमे देवा आणाउववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठति, त जहा—वरुणकाइया इ वा, वरुणदेवयकाइया इ वा, नागकुमारा, नागकुमारीओ, उदहिकुमारा, उदहिकुमारीओ, थणियकुमारा, थणियकुमारीओ—जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया[4], •तप्पक्खिया, तब्भारिया सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठति ॥

२६३. जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा—अइवासा इ वा, मंदवासा इ वा, सुवुट्ठी इ वा, दुवुट्ठी[5] इ वा, उदब्भेदा[6] इ वा, उदप्पीला[7] इ वा, ओवाहा[8] इ वा, पवाहा इ वा, गामवाहा इ वा, जाव[9] सण्णिवेसवाहा इ वा, पाणक्खया[10], •जणक्खया, धणक्खया, कुलक्खया, वसणब्भूया मणारिया जेयावण्णे तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो अण्णाया अदिट्ठा असुया अमुया अविण्णाया°, तेसिं वा वरुणकाइयाण देवाणं ॥

२६४. सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चाभिण्णाया होत्था, त जहा—

कक्कोडए कद्दमए, अंजणे संखवालए पुडे ।
पलासे मोए जए, दहिमुहे[11] अयपुले कायरिए ॥

---

१. भ० ३।४ ।
२. भ० ३।२५०, २५१ ।
३. स० पा०—महारण्णो जाव चिट्ठति ।
४. स० पा०—तब्भत्तिया जाव चिट्ठति ।
५. मदवुट्ठी (अ, क, ता, व, म) ।
६. दउब्भेदा (क, ब) ।
७. दउप्पीला (क, ब) ।
८. उदवाहा (अ, क) ।
९. भ० ३।२५८ ।
१०. स० पा०—पाणक्खया जाव तेसिं ।
११. ओहिमुहे (क); उदधिमुहे (ता) ।

२६५. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो देसूणाइ दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। अहावच्चाभिण्णायाणं देवाण एगं पलिओवम ठिई पण्णत्ता। एमहिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे वरुणे महाराया॥

वेसमण-पदं

२६६. कहि णं भंते! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो वग्गू नामं महाविमाणे पण्णत्ते?
गोयमा! तस्स ण सोहम्मवडेंसयस्स महाविमाणस्स उत्तरे णं जहा सोमस्स विमाण-रायहाणि-वत्तव्वया तहा नेयव्वा जाव[2] पासादवडेंसया॥

२६७. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो इमे देवा आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठंति, त जहा—वेसमणकाइया इ वा, वेसमणदेवयकाइया इ वा, सुवण्णकुमारा, सुवण्णकुमारीओ, 'दीवकुमारा, दीवकुमारीओ,'[3] दिसाकुमारा, दिसाकुमारीओ, वाणमंतरा, वाणमंतरीओ—जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया[4] •तप्पक्खिया तब्भारिया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे॰ चिट्ठंति॥

२६८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा—अयागरा इ वा, तउयागरा इ वा, तंबागरा इ वा, 'सीसागरा इ वा, हिरण्णागरा इ वा'[5] सुवण्णागरा इ वा, रयणागरा इ वा, वइरागरा इ वा, वसुहारा इ वा, हिरण्णवासा इ वा, सुवण्णवासा इ वा, रयणवासा इ वा, वइरवासा इ वा, आभरणवासा इ वा, पत्तवासा इ वा, पुप्फवासा इ वा, फलवासा इ वा, बीयवासा इ वा, मल्लवासा इ वा, वण्णवासा इ वा, चुण्णवासा इ वा, गंधवासा इ वा, वत्थवासा इ वा, हिरण्णवुट्ठी इ वा, सुवण्णवुट्ठी इ वा, रयणवुट्ठी इ वा, वइरवुट्ठी इ वा, आभरणवुट्ठी इ वा, पत्तवुट्ठी इ वा, पुप्फवुट्ठी इ वा, फलवुट्ठी इ वा, बीयवुट्ठी इ वा, मल्लवुट्ठी इ वा, वण्णवुट्ठी इ वा, चुण्णवुट्ठी इ वा, गंधवुट्ठी इ वा, वत्थवुट्ठी इ वा, भायणवुट्ठी इ वा, खीरवुट्ठी इ वा, सुकाला[6] इ वा, दुक्काला इ वा, अप्पग्घा इ वा, महग्घा इ वा, सुभिक्खा इ वा, दुब्भिक्खा इ वा, कयविक्कया इ वा, सण्णिही इ वा, सण्णिचया इ वा, निही इ वा, निहाणाइ वा—चिरपोराणाइ वा, पहीणसामियाइ वा, पहीणसेतुयाइ वा, पहीणमग्गाइ[7] वा, पहीणगोत्तागाराइ वा, उच्छण्णसामियाइ वा, उच्छण्णसेतुयाइ वा, (उच्छण्णमग्गा इ वा?) उच्छण्णगोत्तागारा इ वा, सिंघाडग-तिग-चउक्क-

---

१. भ० ३।४।
२. भ० ३।२५०, २५१।
३. × (क, ता, म)।
४. स० पा०—तब्भत्तिया जाव चिट्ठंति।
५. एवं सिसाग हिरण्ण॰ (ता)।
६. सुयाला (ता)।
७. × (क, ता, व, म)।

चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु वा' नगरनिद्धमणेसु' वा, सुसाण-गिरि-कदर-संति-सेलोवट्ठाण-भवणगिहेसु सनिक्खित्ताइं' चिट्ठति, न ताइं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो 'अण्णायाइ अदिट्ठाइं असुयाइं अमुयाइं अविण्णयाइ'' तेसिं वा वेसमणकाइयाणं देवाणं ॥

२६९. सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चाभिण्णाया होत्था, त जहा—पुण्णभद्दे माणिभद्दे सालिभद्दे सुमणभद्दे चक्करक्खे पुण्णरक्खे सव्वाणे सव्वजसे सव्वकामे' समिद्धे अमोहे असगे' ॥

२७०. सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता। अहावच्चाभिण्णायाणं देवाण एगं पलिओवम ठिई पण्णत्ता। एमहिड्ढीए जाव' महाणुभागे वेसमणे महाराया ॥

२७१. सेव भंते ! सेव भते ! त्ति' ॥

अट्ठमो उद्देसो

२७२. रायगिहे नगरे जाव' पज्जुवासमाणे एव वयासी—असुरकुमाराणं भंते ! देवाणं कइ देवा आहेवच्च जाव' विहरति ?
गोयमा ! दस देवा आहेवच्चं जाव विहरति, तं जहा—चमरे असुरिदे असुरराया, सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे, बली वइरोयणिंदे वइरोयणराया, सोमे, जमे, वेसमणे'', वरुणे ॥

---

१. °द्धवणेसु (वृ)।
२. सनिक्खित्ता (अ, ता)।
३. अन्नाया अदिट्ठा असुया असुया अविण्णाया (अ, क, ता, ब)।
४. सव्वकाम (अ, ता, म)।
५ असमे (अ), असते (क, स)।
६. भ० ३।४।
७. भ० १।५१।
८. भ० १।४-१०।
९ भ० ३।४।
१० स्थानाङ्गे ४।१२२ सूत्रे 'दाक्षिणात्यलोकपालेषु यौ तृतीयचतुर्थो तौ ओदीच्येषु चतुर्थतृतीयौ स्त.। प्रस्तुतसूत्रादर्शेषु वृत्तौ च नैष क्रमो लभ्यते। वृत्तिकृता अस्य क्रमस्य पाठान्तररूपेणोल्लेखः कृतः—इह च पुस्तकान्तरेऽयमर्थो दृश्यते—दाक्षिणात्येषु लोकपालेषु प्रतिसूत्र यौ तृतीयचतुर्थौ तावौदीच्येषु चतुर्थतृतीयाविति। किन्तु वैमानिकदेवेषु वृत्तिकृता तृतीयचतुर्थयोर्व्यत्यय. स्वीकृत.—
सनत्कुमारादीन्द्रयुग्मेषु पूर्वेन्द्रापेक्षयोत्तरेन्द्रसम्बन्धिना लोकपालाना तृतीयचतुर्थयो व्यत्ययो वाच्य. (वृ)। असौ क्रम. पूर्वक्रमाद् भिन्नोस्ति। अस्माभिः सर्वत्र स्थानाङ्गानुसारी एक एव क्रमः स्वीकृत.।

२७३. नागकुमाराणं भंते ![1] •देवाणं कइ देवा आहेवच्चं जाव[2] विहरंति ?◦
गोयमा ! दस देवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तं जहा—धरणे णं नागकुमारिंदे नागकुमारराया, कालवाले, कोलवाले,सेलवाले, संखवाले, भूयाणंदे नागकुमारिंदे नागकुमारराया, कालवाले, कोलवाले, 'संखवाले, सेलवाले'[3] ।।

२७४. जहा नागकुमारिंदाणं एताए वत्तव्वयाए नीयं एवं इमाणं नेयव्वं—
सुवण्णकुमाराणं—वेणुदेवे, वेणुदाली, चित्ते, विचित्ते, चित्तपक्खे, विचित्तपक्खे ।
विज्जुकुमाराणं—हरिकंत-हरिस्सह-पभ-सुप्पभ-पभकंत-सुप्पभकंता ।
अग्गिकुमाराणं—अग्गिसिह-अग्गिमाणव-तेउ-तेउसिह[4]-तेउकंत-तेउप्पभा ।
दीवकुमाराणं—पुण्ण-विसिट्ठ[5]-रूय-रूयंस-रूयकंत-रूयप्पभा ।
उदहीकुमाराणं—जलकंत-जलप्पभ-जल-जलरूय[6]-जलकंत-जलप्पभा ।
दिसाकुमाराणं—अमितगति, अमितवाहण-तुरियगति-खिप्पगति-सीहगति-सीहविक्कमगती ।
वाउकुमाराणं—वेलंब-पभंजण-काल-महाकाल-अंजण-रिट्ठा ।
थणियकुमाराणं—घोस-महाघोस-आवत्त-वियावत्त-नंदियावत्त-महानंदियत्ता ।
एवं भाणियव्वं जहा[7] असुरकुमारा[8] ।।

२७५. पिसायकुमाराणं[9] •भंते ! देवाणं कइ देवा आहेवच्चं जाव[10] विहरंति ?◦
गोयमा ! दो देवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तं जहा—

संगहणी-गाहा

काले य महाकाले, सुरूव-पडिरूव-पुण्णभद्दे य ।
अमरवई माणिभद्दे, भीमे य तहा महाभीमे ।।१।।
किन्नर-किंपुरिसे खलु, सप्पुरिसे खलु तहा महापुरिसे ।
अइकाय-महाकाए, गीयरई चेव गीयजसे ।।२।।

एते वाणमंतराणं देवाणं ।।

---

१. सं० पा०—पुच्छा ।
२. भ० ३।४ ।
३. सेलवाले संखवाले (अ, क, म) ।
४. तेउसीह (अ) ।
५. वसिट्ठ (ता, ब); विसट्ठ (स) ।
६. जलरूय (अ); जलरते (ठा० ४।१२२) ।
७. भ० ३।२७२ ।
८. अतोग्रे आदर्शेपु वृत्तौ च सांकेतिकः पाठो वर्तते । वृत्तिकृता तस्योल्लेख एवं कृतः— सो १ का २ चि ३ प्प ४ ते ५ रु ६ ज ७ तु ८ का ९ आ १० इत्यनेनाक्षरदशकेन दाक्षिणभवनपतीन्द्राणां प्रथमलोकपालनामानि सूचितानि, वाचनान्तरे त्वेतान्येव गाथाया, साचेयम्—सोमे य १ महाकाले २ चित्त ३ प्पभ ४ तेउ ५ तह रूए चेव ६ । जल तह ७ तुरिय गई य ८ काले ९ आउत्त १० पढमा उ ।। एवं द्वितीयादयोप्ययभ्यूह्या. (वृ) ।
९. सं० पा०—पुच्छा ।
१०. भ० ३।४ ।

२७६. जोइसियाणं देवाणं दो देवा आहेवच्चं जाव[1] विहरंति, तं जहा—चंदे य, सूरे य ॥

२७७. सोहम्मीसाणेसु ण भंते ! कप्पेसु कइ देवा आहेवच्च जाव[2] विहरंति ?
गोयमा ! दस देवा आहेवच्च जाव विहरंति, त जहा—सक्के देविंदे देवराया, सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे। ईसाणे देविंदे देवराया, सोमे, जमे, 'वेसमणे, वरुणे'[3]।
एसा वत्तव्वया सव्वेसु वि कप्पेसु एए चेव भाणियव्वा। जे य इंदा ते य भाणियव्वा ॥

२७८. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति[4] ॥

नवमो उद्देसो

२७९. रायगिहे जाव[5] एव वयासी—कइविहे णं भंते ! इंदियविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे इंदियविसए[6] पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियविसए चक्खिंदियविसए घाणिंदियविसए रसिंदियविसए फासिंदियविसए। जीवाभिगमे जोइसियउद्देसओ नेयव्वो अपरिसेसो ॥

---

१. भ० ३।४।
२. भ० ३।४।
३. वरुणे वेसमणे (क, व, म, स)।
४. भ० १।५१।
५. भ० १।४-१०।
६. वाचनान्तरे च—'इंदियविसए उच्चावय—सुब्भिणो' त्ति दृश्यते, तत्र इन्द्रियविषयसूत्रं दर्शितमेव, उच्चावयसूत्र त्वेवम्—'से नूणं भंते ! उच्चावएहिं सद्दपरिणामेहिं परिणममाणा पोग्गला परिणमतीति वत्तव्वं सिया ? हंता गोयमा !' इत्यादि, 'सुब्भिणो त्ति, इदं सूत्रं पुनरेवम्—'से नूण भंते ! सुब्भिसद्दपोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति ? हंता गोयमा !' इत्यादि।

दसमो उद्देसो

२८०. रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो कइ परिसाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समिया, चंडा, जाया। एवं जहाणुपुव्वीए 'जाव अच्चुओ'[2] कप्पो ॥

२८१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

---

१. भ० १।४-१०।
२. जावच्चुओ (अ, क, ब); ठा० ३।१४३-१६०; जी० ३।
३. भ० १।५१।

चउत्थं सतं

१, २, ३, ४ उद्देसो

संगहणी-गाहा

चत्तारि विमाणेहि, चत्तारि य होंति रायहाणीहि।
नेरइए लेस्साहि य, दस उद्देसा चउत्थसए ॥१॥

१. रायगिहे नगरे जाव[1] एवं वयासी—ईसाणस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो कइ लोगपाला पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता, तं जहा—सोमे, जमे, 'वेसमणे, वरुणे[2]' ॥

२. एएसि णं भंते ! लोगपालाणं कइ विमाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि विमाणा पण्णत्ता, तं जहा—सुमणे, सव्वओभद्दे, वग्गू, सुवग्गू ॥

३. कहि णं भंते ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सुमणे नामं महाविमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स[3] उत्तरे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव[4] ईसाणे नामं कप्पे पण्णत्ते। तत्थ णं जाव[4] पंच वडेंसया पण्णत्ता, तं जहा—अंकवडेंसए, फलिहवडेंसए, रयणवडेंसए, जायरूववडेंसए, मज्झे[5] ईसाणवडेंसए ॥

---

१. भ० १।४-१०।
२. वरुणे वेसमणे (व)।
३. प० २।
४. प० २।
५. मज्झे तत्थ (अ); मज्झे यत्थ (क, ता, म)।

४. तस्स णं ईसाणवडेसयस्स महाविमाणस्स पुरत्थिमे णं तिरियमसंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं वीईवइत्ता, एत्थ णं ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सुमणे नामं महाविमाणे पण्णत्ते अद्धतेरसजोयसणसयहस्साइं, जहा सक्कस्स वत्तव्वया तइयसए तहा ईसाणस्स वि जाव[1] अच्चणिया समत्ता ॥

५. चउण्ह वि लोगपालाण विमाणे-विमाणे उद्देसओ, चऊसु वि विमाणेसु चत्तारि उद्देसा अपरिसेसा, नवरं—ठिईए नाणत्तं—

संगहणी-गाहा

आदि दुय तिभागूणा, पलिया धणयस्स होंति दो चेव ।
दो सतिभागा वरुणे, पलियमहावच्चदेवाणं ॥१॥

५, ६, ७, ८ उद्देसो

६. रायहाणीसु वि चत्तारि उद्देसा भाणियव्वा जाव एमहिड्ढीए जाव[2] वरुणे महाराया ॥

नवमो उद्देसो

७. नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ ? अनेरइए[3] नेरइएसु उववज्जइ ? पण्णवणाए लेस्सापए तइओ उद्देसओ भाणियव्वो जाव नाणाइं ॥

---

१. भ० ३।२५०-२७१ ।
२. भ० ३।२५०-२७१ ।
३. अनेरइए ण भते ! (अ, स) ।

दसमो उद्देसो

८. से नूण भंते ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए, तावण्णत्ताए, तागधत्ताए, तारसत्ताए, ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ?
हंता गोयमा ! कण्हलेसा नीललेस पप्प तारूवत्ताए, तावण्णत्ताए, तागधत्ताए, तारसत्ताए, ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। एवं चउत्थो उद्देसओ पण्णवणाए चेव लेस्सापदे नेयव्वो जाव[1]—

संगहणी-गाहा

परिणाम-वण्ण-रस-गंध-सुद्ध-अपसत्थ-सकिलिट्ठुण्हा ।
गइ-परिणाम-पएसोगाह-वग्गणायणमप्पबहुं ॥१॥

९. सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

---

१. जावेत्यादि परिणामेत्यादि द्वारगाथोक्तद्वार-परिसमाप्ति यावदित्यर्थः (वृ)।
२. भ० १।५१।

पंचमं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१ चंप-रवि २ अनिल ३ गंठिय ४ सद्दे ५-६ छउमाउ ७[1] एयण ८ नियंठे ।
९ रायगिह १० चंपा-चंदिमा य दस पंचमम्मि सए ॥१॥

जंबुद्दीवे सूरिय-वत्तव्वया-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नगरी होत्था—वण्णओ[2] ॥

२. तीसे णं चंपाए नगरीए पुण्णभद्दे नामं चेइए होत्था—वण्णओ[3] । सामी समोसढे जाव[4] परिसा पडिगया ॥

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे गोयमे गोत्तेणं जाव[5] एवं वयासी—जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ[6] पाईण-दाहिणमागच्छंति, पाईण-दाहिणमुग्गच्छ दाहिण-पडीणमागच्छंति[7], दाहिण-पडीणमुग्गच्छ पडीण-उदीणमागच्छंति[8], पडीण-उदीण-मुग्गच्छ उदीचि-पाईणमागच्छंति ?

हंता गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ जाव उदीचि-पाईणमागच्छंति ॥

---

१. ०माउ (अ, स) ।
२. ओ० सू० १ ।
३. ओ० सू० २।१३ ।
४. भ० १।७, ८ ।
५. भ० १।९, १० ।
६. पादीण० (अ, ता) ।
७. ०पदीण० (ता, म) ।
८. उदीचि० (क, ता, व, म) ।

जंबुद्दीवे दिवसराई-वत्तव्वया-पदं

४. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेवि दिवसे भवइ; जया णं उत्तरड्ढे[1] दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम[2]-पच्चत्थिमे णं राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे[3] दिवसे जाव पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं राई भवइ ॥

५. जया णं भंते ! जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमे ण वि दिवसे भवइ; जया णं पच्चत्थिमे णं दिवसे भवइ, तया णं जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया णं जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं दिवसे जाव उत्तर-दाहिणे णं राई भवइ ॥

६. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे वि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ; जया णं उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे जाव दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ॥

७. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमे वि उक्कोसेण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जया णं पच्चत्थिमे णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे उत्तर[4]-•दाहिणे णं जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता° राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जाव भवइ ॥

८. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे वि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं साइरेगा दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया णं जंबुद्दीवे जाव राई भवइ ॥

---

१. उत्तरड्ढेवि (अ, ता, स) ।
२. पुरत्थिमेण (अ, ता) ।
३. दाहिणड्ढे वि (ता) ।
४. सं० पा०—उत्तर जाव राई ।

९. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमे वि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ; जया णं पच्चत्थिमे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तदा णं जंबुदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं साइरेगा दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जाव भवइ ॥

१०. एवं एएणं कमेण ओसारेयव्वं—सत्तरसमुहुत्ते दिवसे, तेरसमुहुत्ता राई। सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेगा तेरसमुहुत्ता राई।
सोलसमुहुत्ते दिवसे, चोद्दसमुहुत्ता राई। सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेगा चउद्दसमुहुत्ता राई।
पण्णरसमुहुत्ते दिवसे, पण्णरसमुहुत्ता राई। पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेगा पण्णरसमुहुत्ता राई।
चोद्दसमुहुत्ते दिवसे, सोलसमुहुत्ता राई। चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेगा सोलसमुहुत्ता राई।
तेरसमुहुत्ते दिवसे, सत्तरसमुहुत्ता राई। तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेगा सत्तरसमुहुत्ता राई ॥

११. जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे वि, जया णं उत्तरड्ढे, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ ?
हंता गोयमा ! एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव राई भवइ ॥

१२. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमे णं वि; जया णं पच्चत्थिमे[1], तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जाव राई भवइ ॥

जंबुद्दीवे उउ-वत्तव्वया-पदं

१३. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढे वि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ; जया णं उत्तरड्ढे[2] वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं अणंतरपुरक्खडे समयंसि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ ?

---

१. पच्चत्थिमे णं वि (अ, क, ता, ब, म, स)। २. उत्तरड्ढे वि (स)।

हता गोयमा ! जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तह चेव जाव पडिवज्जइ ॥

१४. जया ण भते ! जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण पच्चत्थिमे ण वि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ ; जया ण पच्चत्थिमे ण वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण[1] °जवुद्दीवे दीवे° मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण अणतरपच्छाकडसमयसि वासाण पढमे समए पडिवन्ने भवइ ?
हता गोयमा ! जया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं एव चेव उच्चारेयव्वं जाव पडिवन्ने भवइ ॥

१५. एव जहा समएणं अभिलावो भणिओ वासाण तहा आवलियाएवि भाणियव्वो । आणापाणूणवि[2], थोवेणवि, लवेणवि, मुहुत्तेणवि, अहोरत्तेणवि, पक्खेणवि, मासेणवि, उऊणवि । एएसि सव्वेसि जहा समयस्स अभिलावो तहा भाणियव्वो ॥

१६. जया ण भते ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे हेमंताण पढमे समए पडिवज्जइ, जहेव वासाण अभिलावो तहेव हेमताण वि, गिम्हाण वि भाणियव्वो जाव[3] उऊए । एवं तिण्णि वि । एएसि तीसं आलावगा भाणियव्वा ॥

जंबुद्दीवे अयणादि-वत्तव्वया-पदं

१७. जया ण भते ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया ण उत्तरड्ढे वि पढमे अयणे पडिवज्जइ, जहा समएण अभिलावो तहेव अयणेण वि भाणियव्वो जाव[4] अणंतरपच्छाकडसमयसि पढमे अयणे पडिवन्ने भवइ ॥

१८. जहा अयणेण अभिलावो तहा सवच्छरेण वि भाणियव्वो । जुएण वि, वाससएण वि, वाससहस्सेण वि, वाससयसहस्सेण वि, पुव्वंगेण वि, पुव्वेण वि, तुडियगेण वि, तुडिएण वि—एवं पुव्वगे, पुव्वे, तुडियगे, तुडिए, अडडगे, अडडे, अववगे, अववे[5], हूहूयगे, हूहूए, उप्पलगे, उप्पले, पउमगे, पउमे, नलिणगे, नलिणे, अत्थणिउरगे, अत्थणिउरे, अउयगे, अउए, णउयगे, णउए, पउयंगे पउए, चूलियगे, चूलिया, सीसपहेलियगे सीसपहेलिया—पलिओवमेण, सागरोवमेण वि भाणियव्वो ॥

---

१. स० पा०—तयाण जाव मदरस्स ।
२. °पाणूएण (व) ।
३. भ० ५।१३-१५ ।
४. भ० ५।१३, १४ ।
५. अपपे (व, म) ।

१९. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढे वि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ; जया णं उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए ण तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो ?

हंता गोयमा ! तं चेव उच्चारेयव्वं जाव समणाउसो ॥

२०. जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एवं उस्सप्पिणीए वि भाणियव्वो ॥

लवणसमुद्दादिसु सूरियादि-वत्तव्वय-पदं

२१. लवणे णं भंते ! समुद्दे सूरिया उदीण[1]-पाईणमुग्गच्छ पाईण-दाहिणमागच्छंति, जच्चेव जंबुद्दीवस्स वत्तव्वया भणिया सच्चेव सव्वा अपरिसेसिया लवणसमुद्दस्स वि भाणियव्वा[2], नवरं—अभिलावो इमो जाणियव्वो ॥

२२. जया ण भंते ! लवणसमुद्दे[3] दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तं चेव जाव[4] तदा णं लवणसमुद्दे पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण राई भवति ॥

२३. एएणं अभिलावेण नेयव्वं जाव[5] जया ण भंते ! लवणसमुद्दे दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढे वि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ; जया ण उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया ण लवणसमुद्दे पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण नेवत्थि ओसप्पिणी[6], °नेवत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिएण तत्थ काले पण्णत्ते° समणाउसो ?

हंता गोयमा ! जाव समणाउसो[7] ॥

२४. धायइसडे णं भंते ! दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ पाईण-दाहिणमागच्छंति, जहेव जंबुद्दीवस्स वत्तव्वया भणिया सच्चेव धायइसडस्स वि भाणियव्वा, नवरं—इमेण अभिलावेण सव्वे आलावगा भाणियव्वा[8] ॥

२५. जया णं भंते ! धायइसडे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तदा णं उत्तरड्ढे वि; जया णं उत्तरड्ढे, तया ण धायइसडे दीवे मंदराणं पव्वयाण पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण राई भवइ ?

हंता गोयमा ! एवं चेव जाव राई भवइ ॥

---

१. उदीचि (अ) ।
२. भ० ५।३ ।
३. लवणे समुद्दे (क, ब, स) ।
४. भ० ५।४ ।
५. भ० ५।५-१८ ।
६. सं० पा०—ओसप्पिणी जाव समणाउसो ।
७. अतोग्रे 'जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एवं उस्सप्पिणीए वि भाणियव्वो' इति ५।२० सूत्रं अध्याहार्यम् ।
८. भ० ५।३ ।

२६. जया णं भते ! धायइसडे दीवे मदराण पव्वयाणं पुरत्थिमे ण दिवसे भवइ, तया ण पच्चत्थिमे ण वि; जया णं पच्चत्थिमे णं दिवसे भवइ, तया णं धायइसडे दीवे मदराणं पव्वयाणं उत्तर-दाहिणे णं राई भवइ ?
हता गोयमा ! जाव भवइ ॥

२७. एव एएणं अभिलावेण नेयव्व जाव[1] जया णं भते ! दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी, तया णं उत्तरड्ढे वि; जया णं उत्तरड्ढे वि; तया ण धायइसडे दीवे मदराण पव्वयाणं पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं नत्थि ओसप्पिणी जाव[2] समणाउसो ?
हता गोयमा ! जाव समणाउसो[3] ॥

२८ जहा लवणसमुद्दस्स वत्तव्वया[4] तहा कालोदस्स वि भाणियव्वा, नवरं—कालोदस्स नाम भाणियव्वं ॥

२९. अब्भितरपुक्खरद्धे ण भते ! सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ पाईण-दाहिणमागच्छति, जहेव धायइसंडस्स वत्तव्वया[5] तहेव अब्भितरपुक्खरद्धस्स वि भाणियव्वा, नवर—अभिलावो जाणियव्वो जाव तया ण अब्भितरपुक्खरद्धे मदराण पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए ण तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो ॥

३० सेव भते ! सेव भते ! त्ति[6] ॥

बीओ उद्देसो

वाउ-पदं

३१. रायगिहे नगरे जाव[7] एव वयासी—अत्थि ण भते ! ईसिं पुरेवाया[8] पत्था[9] वाया मदा वाया 'महावाया वायति ?'[10]
हता अत्थि ॥

---

१. भ० ५।५-१८ ।
२. भ० ५।१६ ।
३. अतोग्रे 'जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एव उस्सप्पिणीए वि भाणियव्वो' इति ५।२० सूत्र अध्याहार्यम् ।
४ भ० ५।२१-२३ ।
५. भ० ५।२४-२७ ।
६. भ० १।५१ ।
७. भ० १।४-१० ।
८ सत्रेहवाता. (वृ) ।
९ पच्छा (अ, क, ता, स) ।
१०. महावाता वाता वातति (क, ता) सर्वत्र ।

३२. अत्थि णं भंते ! पुरत्थिमे ण ईसि पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायति ?
हंता अत्थि ।।

३३. एव पच्चत्थिमे णं, दाहिणे ण, उत्तरे ण, उत्तर-पुरत्थिमे ण, 'दाहिणपच्चत्थिमे णं, दाहिण-पुरत्थिमे ण'[1] 'उत्तर-पच्चत्थिमे णं ।।

३४. जया ण भते ! पुरत्थिमे ण ईसि पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायति, तया ण पच्चत्थिमे ण वि ईसि पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति, जया ण पच्चत्थिमे णं ईसि पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायंति, तया णं पुरत्थिमे ण वि ?
हंता गोयमा ! जया णं पुरत्थिमे ण ईसि पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायति, तया ण पच्चत्थिमे ण वि ईसि पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायंति; जया ण पच्चत्थिमे ण ईसि पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायंति, तया णं पुरत्थिमे ण वि ईसि पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति ।।

३५. एव दिसासु, विदिसासु[2] ।।

३६. अत्थि णं भंते ! दीविच्चया[3] ईसि पुरेवाया[4] ?
हंता अत्थि ।।

३७. अत्थि ण भंते ! सामुद्दया ईसि पुरेवाया[4] ?
हंता अत्थि ।।

३८. जया णं भंते ! दीविच्चया ईसि पुरेवाया[4], तया ण सामुद्दया वि ईसि पुरेवाया[4], जया णं सामुद्दया ईसि पुरेवाया[4], तया णं दीविच्चया वि ईसि पुरेवाया[4] ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

३९. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—जया णं दीविच्चया ईसि पुरेवाया[4], णो ण तया सामुद्दया ईसि पुरेवाया[4], जया ण सामुद्दया ईसि पुरेवाया[4], णो ण तया दीविच्चया ईसि पुरेवाया[4] ?
गोयमा ! तेसि ण वायाण अण्णमण्णविवच्चासेणं लवणसमुद्दे वेल नाइक्कमइ । से तेणट्ठेणं जाव णो ण तया दीविच्चया ईसि पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति ।।

---

१. दाहिणपुरत्थिमे ण दाहिणपच्चत्थिमे ण (स)

२. एव विदिसासु (क, ता) ।

३. दीविच्चता (ब) ।

३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२. पू० भ० ५।३१ ।

४०. अत्थि णं भंते ! ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायंति ?
हंता अत्थि ॥

४१. कया णं भंते ! ईसिं पुरेवाया जाव[1] वायंति ?
गोयमा ! जया णं वाउयाए अहारियं रियति[2], तया णं ईसिं पुरेवाया जाव वायंति ॥

४२. अत्थि णं भंते ! ईसिं पुरेवाया[3] ?
हंता अत्थि ॥

४३. कया णं भंते ! ईसिं पुरेवाया[4] ?
गोयमा ! जया णं वाउयाए उत्तरकिरियं रियइ, तया णं ईसिं पुरेवाया जाव[5] वायंति ॥

४४. अत्थि णं भंते ! ईसिं पुरेवाया[6] ?
हंता अत्थि ॥

४५. कया णं भंते ! ईसिं पुरेवाया पत्था वाया[7] ?
गोयमा ! जया णं वाउकुमारा, वाउकुमारीओ वा अप्पणो[8] परस्स वा तदुभयस्स वा अट्ठाए वाउकायं उदीरेंति तया णं ईसिं पुरेवाया जाव[9] वायंति[10] ॥

४६. वाउयाए णं भंते ! वाउयायं चेव आणमति वा ? पाणमंति वा ? ऊससति वा ? नीससति वा ?
[11]●हंता गोयमा ! वाउयाए णं वाउयाए चेव आणमति वा, पाणमति वा, ऊससति वा, नीससंति वा ॥

४७. वाउयाए णं भंते ! वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाति ?
हंता गोयमा ! वाउयाए णं वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाति ॥

४८. से भंते ! किं पुट्ठे उद्दाति ? अपुट्ठे उद्दाति ?
गोयमा ! पुट्ठे उद्दाति, नो अपुट्ठे उद्दाति ॥

---

१ भ० ५।४० ।
२ रियति (अ, क, स) ।
३,४ पू० भ० ५।४० ।
५ भ० ५।४० ।
६,७. पू० भ० ५।४० ।
८. अप्पणो वा (क, ता, ब) ।
९ भ० ५।४० ।
१०. इह चैकसूत्रेणैव वायुवानकारणत्रयस्य वक्तुं शक्यत्वे यत्सूत्रत्रयकरणं तद्विचित्रत्वात्सूत्रगतेरिति मन्तव्यं, वाचनान्तरे त्वाद्यं कारणं महावातवर्जितानां, द्वितीयं तु मन्दवातवर्जितानां, तृतीयं तु चतुर्णामप्युक्तमिति [वृ] ।
११. सं० पा०—जहा उदए तहा चत्तारि आलावगा नेयव्वा अणेगसयसहस्स पुट्ठे उद्दाइ ससरीरी निक्खमइ ।

४९. से भंते ! कि ससरीरी निक्खमइ ? असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥

५०. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ ? सिय असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! वाउयायस्स ण चत्तारि सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए। ओरालिय-वेउव्वियाइं विप्पजहाय तेयय-कम्मएहिं निक्खमइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ° ॥

ओदणादीणं किंसरीरत्त-पदं

५१. अह णं भते ! ओदणे, कुम्मासे, सुरा—एए ण किसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! ओदणे, कुम्मासे, सुराए य जे घणे दव्वे—एए ण पुव्वभावपण्णवण पडुच्च वणस्सइजीवसरीरा। तओ पच्छा सत्थातीया, सत्थपरिणामिया, अगणिज्झामिया, अगणिझूसिया[1], अगणिपरिणामिया अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया। सुराए य जे दवे दव्वे—एए णं पुव्वभावपण्णवण पडुच्च आउजीवसरीरा। तओ पच्छा सत्थातीया जाव अगणिजीवसरीरा[2] ति वत्तव्व सिया ॥

५२. अह णं भते ! अये, तबे, तउए, सीसए, उवले, कसट्टिया—एए ण किसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ? अये, तबे, तउए, सीसए, उवले, कसट्टिया—एए ण पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च पुढवीजीवसरीरा। तओ पच्छा सत्थातीया जाव[3] अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया ॥

५३. अह ण भते ! अट्ठी, अट्ठिज्झामे, चम्मे, चम्मज्झामे, रोमे, रोमज्झामे, सिगे, सिंगज्झामे, खुरे, खुरज्झामे, नखे, नखज्झामे—एए णं किसरीरा ति वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! अट्ठी, चम्मे, रोमे, सिंगे, खुरे, नखे—एए णं तसपाणजीवसरीरा। अट्ठिज्झामे, चम्मज्झामे, रोमज्झामे, 'सिंगज्झामे, खुरज्झामे, नखज्झामे'[4]—एए णं पुव्वभावपण्णवण पडुच्च तसपाणजीवसरीरा। तओ पच्छा सत्थातीया जाव[5] 'अगणिजीवसरीरा ति'[6] वत्तव्व सिया ॥

---

१. °झूसिया अगणिसेविया (अ, स)। वृत्तौ अगणिझूसिया इति पदस्य अग्निना सेवितानि वा इति वैकल्पिकोर्थः आसीत् सएव केषुचित् उत्तरवर्त्यादर्शेषु मूलपाठरूपेण स्वीकृतोभूत्।
२. अगणिकायसरीरा (स)।
३. भ० ५।५१।
४. सिग-खुर-नखज्झामे (अ, ता, स)।
५. भ० ५।५१।
६. अगणि त्ति (अ, स)।

५४. अह णं भंते ! इंगाले, छारिए, भुसे[1], गोमए—एए णं किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! इंगाले, छारिए, भुसे, गोमए—एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च एगिंदियजीवसरीरप्पयोगपरिणामिया वि जाव[2] पंचिंदियजीवसरीरप्पयोग-परिणामिया[3] वि। तओ पच्छा सत्थातीया जाव[4] अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया ।।

लवणसमुद्द-पदं

५५. लवणे णं भंते ! समुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खंभेण पण्णत्ते ?
एवं नेयव्वं जाव[5] लोगट्ठिई, लोगाणुभावे ।।

५६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव[6] विहरइ ।।

तइओ उद्देसो

आउ-पकरण-पडिसंवेदण-पदं

५७. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति भासंति पण्णवेंति परूवेंति[7]—से जहा-नामए जालगंठिया सिया—आणुपुव्विगढिया[8] अणंतरगढिया परंपरगढिया अण्णमण्णगढिया, अण्णमण्णगरुयत्ताए अण्णमण्णभारियत्ताए अण्णमण्णगरुय-सभारियत्ताए अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठइ, एवामेव बहूणं जीवाणं बहूसु आजाति-सहस्सेसु[9] बहूइं आउयसहस्साइं आणुपुव्विगढियाइं जाव चिट्ठंति।
एगे वि य णं जीवे एगेणं समएणं दो आउयाइं पडिसंवेदेइ[10], तं जहा—इह-भवियाउयं च, परभवियाउयं च।
जं समयं इहभवियाउयं पडिसंवेदेइ, तं समयं परभवियाउयं पडिसंवेदेइ[11]।
•जं समयं परभवियाउयं पडिसंवेदेइ, तं समयं इहभवियाउयं पडिसंवेदेइ।

१. तुसे (क)।
२. भ० २।१३९।
३. °परिणता (म)।
४. भ० ५।५१।
५. जी० ३ मंदरोद्देशक।
६. भ० १।५१।
७. एवं परूवेंति (क, ब, स)।
८. आणुपुव्वि° (ब, स)।
९. आयति° (क); आयाति° (ब)।
१०. पडिसंवेदयति (अ, क, ब, म)।
११. सं० पा०—पडिसंवेदेइ जाव से।

इहभवियाउयस्स पडिसवेदणयाए परभवियाउयं पडिसंवेदेइ,
परभवियाउयस्स पडिसवेदणयाए इहभवियाउयं पडिसवेदेइ।
एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण दो आउयाइं पडिसवेदेइ, त जहा—इहभवियाउय च, परभवियाउय च° ॥

५८. से कहमेय भते ! एव ?
गोयमा ! जण्ण त अण्णउत्थिया त चेव जाव परभवियाउय च। जे ते एवमाहसु तं मिच्छा, अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि भासामि पण्णवेमि परूवेमि—से जहानामए जालगठिया सिया[1]—•आणुपुव्विगढिया अणतरगढिया परपरगढिया अण्णमण्णगढिया, अण्णमण्णगरुयत्ताए अण्णमण्णभारियत्ताए अण्णमण्णगरुय-संभारियत्ताए° अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति, एवामेव एगमेगस्स जीवस्स वहूहि आजातिसहस्सेहि बहूइ आउयसहस्साइ आणुपुव्विगढियाइ जाव चिट्ठति।
एगे वि य ण जीवे एगेण समएण एगं आउय पडिसवेदेइ, तं जहा—इहभवियाउयं वा, परभवियाउय वा।
ज समय इहभवियाउय पडिसवेदेइ, नो त समयं परभवियाउय पडिसवेदेइ।
ज समय परभवियाउय पडिसवेदेइ, नो त समयं इहभवियाउय पडिसवेदेइ।
इहभवियाउयस्स पडिसवेदणाए, नो परभवियाउय पडिसवेदेइ।
परभवियाउयस्स पडिसवेदणाए, नो इहभवियाउय पडिसवेदेइ।
एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग आउय पडिसवेदेइ, त जहा—इहभवियाउय वा, परभवियाउय वा ॥

साउयसंकमण-पदं

५९ जीवे ण भते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! कि साउए सकमइ ? निराउए सकमइ ?
गोयमा ! साउए सकमइ, नो निराउए संकमइ ॥

६०. से ण भते ! आउए[2] कहि कडे ? कहि समाइण्णे ?
गोयमा ! पुरिमे भवे कडे, पुरिमे भवे समाइण्णे ॥

६१. एव जाव[3] वेमाणियाणं दडओ ॥

६२. से नूण भते ! जे 'ज भविए जोणि'[4] उववज्जित्तए, से तमाउयं पकरेइ, त

---

१. स० पा०—सिया जाव अण्णमण्णघडत्ताए।
२. आउगे (ता)।
३. पू० प० २।
४. विभक्तिपरिणामाद् यो यस्या योनावुत्पत्तु योग्य इत्यर्थ. (व)।

जहा—नेरइयाउयं वा[1] ? •तिरिक्खजोणियाउयं वा ? मणुस्साउयं वा ?° देवाउयं वा ?

हंता गोयमा ! जे जं भविए जोणिं उववज्जित्तए, से तमाउयं पकरेइ, तं जहा—नेरइयाउयं वा, तिरिक्खजोणियाउयं वा, मणुस्साउयं वा देवाउयं वा।

नेरइयाउयं पकरेमाणे सत्तविहं पकरेइ, तं जहा—रयणप्पभापुढविनेरइयाउयं वा[2], •सक्करप्पभापुढविनेरइयाउयं वा, वालुयप्पभापुढविनेरइयाउयं वा, पंकप्पभापुढविनेरइयाउयं वा, धूमप्पभापुढविनेरइयाउयं वा, तमप्पभापुढविनेरइयाउयं वा°, अहेसत्तमापुढविनेरइयाउयं वा।

तिरिक्खजोणियाउयं पकरेमाणे पंचविहं पकरेइ, तं जहा—एगिंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा[3], •बेइंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा, तेइंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा, चउरिंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा°।

मणुस्साउयं दुविहं[4] •पकरेइ, तं जहा—सम्मुच्छिममणुस्साउयं वा, गब्भवक्कंतियमणुस्साउयं वा°।

देवाउयं चउव्विहं[5] •पकरेइ, तं जहा—भवणवासिदेवाउयं वा, वाणमंतरदेवाउयं वा, जोइसियदेवाउयं वा, वेमाणियदेवाउयं वा° ॥

६३ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

चउत्थो उद्देसो

छउमत्थ-केवलीणं सद्दसवण-पदं

६४. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से आउडिज्जमाणाइं सद्दाइं सुणेइ, तं जहा—संखसद्दाणि वा, सिंगसद्दाणि वा, संखियसद्दाणि वा, खरमुहीसद्दाणि वा, पोयासद्दाणि वा, पिरिपिरियासद्दाणि[7] वा, पणवसद्दाणि वा, पडहसद्दाणि वा, भंभासद्दाणि वा, होरंभसद्दाणि वा, भेरिसद्दाणि वा, झल्लरीसद्दाणि वा, दुंदुभिसद्दाणि वा, तताणि वा, वितताणि वा, घणाणि वा, झुसिराणि[8] वा ?

---

१. सं० पा०—नेरइयाउयं वा जाव देवाउयं।

२. सं० पा०—रयणप्पभापुढविणेरइयाउयं वा जाव अहेसत्तमा°।

३ सं० पा०—भेदो सव्वो भाणियव्वो।

४ सं० पा०—मणुस्साउयं दुविहं।

५ सं० पा०—देवाउयं चउव्विहं।

६ भ० १।५१।

७. परि° (अ, स)।

८. सुसिराणि (क)।

हंता गोयमा ! छउमत्थे णं मणुस्से आउडिज्जमाणाइं सद्दाइं सुणेइ, तं जहा—संखसद्दाणि वा जाव झुसिराणि वा।

ताइं भंते ! किं पुट्ठाइं सुणेइ ? अपुट्ठाइं सुणेइ ?

गोयमा ! पुट्ठाइं सुणेइ, नो अपुट्ठाइं सुणेइ[1]।

•जाइं भंते ! पुट्ठाइं सुणेइ ताइं किं ओगाढाइं सुणेइ ? अणोगाढाइं सुणेइ ?

गोयमा ! ओगाढाइं सुणेइ, नो अणोगाढाइं सुणेइ।

जाइं भंते ! ओगाढाइं सुणेइ ताइं किं अणंतरोगाढाइं सुणेइ ? परंपरोगाढाइं सुणेइ ?

गोयमा ! अणंतरोगाढाइं सुणेइ, नो परंपरोगाढाइं सुणेइ।

जाइं भंते ! अणंतरोगाढाइं सुणेइ ताइं किं अणूइं सुणेइ ? बादराइं सुणेइ ?

गोयमा ! अणूइं पि सुणेइ, बादराइं पि सुणेइ।

जाइं भंते ! अणूइं पि सुणेइ बादराइं पि सुणेइ ताइं किं उड्ढं सुणेइ ? अहे सुणेइ ? तिरियं सुणेइ ?

गोयमा ! उड्ढं पि सुणेइ, अहे वि सुणेइ, तिरियं पि सुणेइ।

जाइं भंते ! उड्ढं पि सुणेइ अहे वि सुणेइ तिरियं पि सुणेइ ताइं किं आइं सुणेइ ? मज्झे सुणेइ ? पज्जवसाणे सुणेइ ?

गोयमा ! आइं पि सुणेइ, मज्झे पि सुणेइ, पज्जवसाणे वि सुणेइ।

जाइं भंते ! आइं पि सुणेइ मज्झे वि सुणेइ पज्जवसाणे वि सुणेइ ताइं किं सविसए सुणेइ ? अविसए सुणेइ ?

गोयमा ! सविसए सुणेइ, नो अविसए सुणेइ।

जाइं भंते ! सविसए सुणेइ ताइं किं आणुपुव्विं सुणेइ ? अणाणुपुव्विं सुणेइ ?

गोयमा ! आणुपुव्विं सुणेइ, नो अणाणुपुव्विं सुणेइ।

जाइं भंते ! आणुपुव्विं सुणेइ ताइं किं तिदिसिं सुणेइ जाव छद्दिसिं सुणेइ ?

गोयमा ! ° नियमा छद्दिसिं सुणेइ॥

६५. छउमत्थे णं भंते ! मणूसे किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ ? पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ?

गोयमा ! आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, नो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ॥

६६. जहा णं भंते ! छउमत्थे मणूसे आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, नो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ, तहा णं[2] केवली किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ ? पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ?

गोयमा ! केवली णं आरगयं वा, पारगयं वा सव्वदूर-मूलमणंतियं सद्दं जाणइ-पासइ॥

---

१. स० पा०—सुणेइ जाव नियमा। २. णं भंते ! (स)।

६७ से केणट्ठेण[1] •भंते ! एवं वुच्चइ—केवली णं आरगयं वा, पारगयं वा सव्वदूर-मूलमणंतियं सद्दं जाणइ°-पासइ ?
गोयमा ! केवलीणं पुरत्थिमे णं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ । एवं दाहिणे णं, पच्चत्थिमे णं, उत्तरे णं, उड्ढं, अहे मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ ।
सव्वं जाणइ केवली, सव्वं पासइ केवली ।
सव्वओ जाणइ केवली, सव्वओ पासइ केवली ।
सव्वकालं जाणइ केवली, सव्वकालं पासइ केवली ।
सव्वभावे जाणइ केवली, सव्वभावे पासइ केवली ।
अणंते नाणे केवलिस्स, अणंते दंसणे केवलिस्स ।
निव्वुडे नाणे केवलिस्स, निव्वुडे दंसणे केवलिस्स[2] । से तेणट्ठेणं[3] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—केवली णं आरगयं वा, पारगयं वा सव्वदूर-मूलमणंतियं सद्दं जाणइ°-पासइ ॥

छउमत्थ-केवलीणं हास-पदं

६८ छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से हसेज्ज वा ? उस्सुयाएज्ज वा ?
हंता हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा ॥

६९. जहा णं भंते ! छउमत्थे मणुस्से हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा, तहा णं केवली वि हसेज्ज वा ? उस्सुयाएज्ज वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

७० से केणट्ठेणं[4] •भंते ! एवं वुच्चइ—जहा णं छउमत्थे मणुस्से हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा°, नो णं तहा केवली हसेज्ज वा ? उस्सुयाएज्ज वा ?
गोयमा ! जं णं जीवा चरित्तमोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं हसंति वा, उस्सुयायंति वा । से णं केवलिस्स नत्थि । से तेणट्ठेणं[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जहा णं छउमत्थे मणुस्से हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा°, नो णं तहा केवली हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा ॥

७१. जीवे णं भंते ! हसमाणे वा, उस्सुयमाणे वा कइ[6] कम्मपगडीओ बंधइ ?
गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा । एवं जाव[7] वेमाणिए[8] । पोहत्तएहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो ॥

---

१. सं० पा०—तं चेव केवलीणं आरगयं वा पारागयं वा जाव पासइ ।
२. वाचनान्तरे तु 'निव्वुडे वितिमिरे विसुद्धे' त्ति विशेषणत्रयं ज्ञानदर्शनयोरधीयते (वृ) ।
३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव पासइ ।
४. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव नो ।
५. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो ।
६. कति (क, व, म) ।
७. पू० प० २ ।
८. वेमाणिए नेरइया णं भंते ! हसमाणा कइ°

छउमत्थ-केवलीणं निद्दा-पदं

७२. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से निद्दाएज्ज वा ? पयलाएज्ज वा ?
हंता निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा ॥

७३. [1]•जहा णं भंते ! छउमत्थे मणुस्से निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा, तहा णं केवली वि निद्दाएज्ज वा ? पयलाएज्जा वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

७४ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहा णं छउमत्थे मणुस्से निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा, नो णं तहा केवली निद्दाएज्ज वा ? पयलाएज्ज वा ?
गोयमा ! जं णं जीवा दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं निद्दायंति वा, पयलायंति[2] वा । से णं केवलिस्स नत्थि । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जहा णं छउमत्थे मणुस्से निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा, नो णं तहा केवली निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा° ॥

७५. जीवे णं भंते ! निद्दायमाणे वा, पयलायमाणे वा कइ कम्मप्पगडीओ बंधइ ?
गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा । एवं जाव[3] वेमाणिए । पोहत्ति-एसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो ॥

गब्भसाहरण-पदं

७६. [4]से नूणं भंते ! हरि-नेगमेसी[5] सक्कदूए इत्थीगब्भं संहरमाणे किं गब्भाओ गब्भं साहरइ ? गब्भाओ जोणिं साहरइ ? जोणीओ गब्भं साहरइ ? जोणीओ जोणिं साहरइ ?
गोयमा ! नो गब्भाओ गब्भं साहरइ, नो गब्भाओ जोणिं साहरइ, नो जोणीओ जोणिं साहरइ, परामुसिय-परामुसिय अव्वाबाहेणं अव्वाबाहं जोणीओ गब्भं साहरइ ॥

७७ पभू णं भंते ! हरि-नेगमेसी सक्कदूए[5] इत्थीगब्भं नहसिरंसि वा, रोमकूवंसि वा साहरित्तए वा ? नीहरित्तए वा ?

. गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्ज सत्तविहबंधगा । अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगे य । अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य (क, व, म, स) ।

१. सं० पा०—जहा हसेज्ज वा तहा नवरं दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं निद्दायंति वा पयलायंति वा, से णं केवलिस्स नत्थि अण्णं तं चेव ।

२. पयलाइंति (स) ।

३. पू० प० २ ।

४. हरी णं भंते ! हरिणेगमेसी (अ, क, ता), हरी णं भंते ! हरिणेगमेसी (स), 'हरी णं भंते ! हरिणेगमेसी' इति द्व्यर्थक पद द्वयो र्वाचनायो समिश्रणेन जातम् ।

५ सक्कस्स णं दूते (व, स), सक्कस्स दूए (म) ।

हंता पभू, नो चेव णं तस्स गब्भस्स किंचि[1] आवाहं वा विवाहं वा उप्पाएज्जा, छविच्छेदं पुण करेज्जा । एसुहुमं[2] च णं साहरेज्ज वा, नीहरेज्ज वा ।

अइमुत्तग-पदं

७८ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अइमुत्ते[3] नामं कुमार-समणे पगइभद्दए[4] •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपन्ने अल्लीणे° विणीए ।।

७९ तए णं से अइमुत्ते कुमार-समणे अण्णया कयाइ महावुट्ठिकायंसि निवयमाणंसि कक्खपडिग्गह-रयहरणमायाए[5] बहिया संपट्ठिए विहाराए ।।

८०. तए णं से अइमुत्ते कुमार-समणे वाहयं वहमाणं पासइ, पासित्ता मट्टियाए पालिं बंधइ, बंधित्ता 'णाविया मे, णाविया मे' नाविओ विव णावमयं पडिग्गहगं उदगंसि[6] पव्वाहमाणे-पव्वाहमाणे अभिरमइ । तं च थेरा अद्दक्खु[7] । जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एवं वदासी—
एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी अइमुत्ते नामं कुमार-समणे, से णं भंते ! अइ-मुत्ते कुमार-समणे कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिहिति[8] •बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं° अंतं करेहिति ?

८१ अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे ते थेरे एवं वयासी—एवं खलु अज्जो ! ममं अंतेवासी अइमुत्ते नामं कुमार-समणे पगइभद्दए जाव[9] विणीए, से णं अइमुत्ते कुमार-समणे इमेणं चेव भवग्गहणेणं सिज्झिहिति जाव[10] अंतं करेहिति । तं मा णं अज्जो ! तुब्भे अइमुत्तं कुमार-समणं हीलेह निंदह खिंसह गरहह अवमण्णह[11] । तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! अइमुत्तं कुमार-समणं अगिलाए संगिण्हह, अगिलाए उवगिण्हह, अगिलाए भत्तेणं पाणेणं विणएणं वेयावडियं करेह । अइमुत्ते णं कुमार-समणे अंतकरे चेव, अंतिमसरीरिए चेव ।।

८२ तए णं ते थेरा भगवंतो समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, अइमुत्तं कुमार-समणं अगिलाए संगिण्हंति[12], •अगिलाए उवगिण्हंति, अगिलाए भत्तेणं पाणेणं विणएणं° वेयावडियं[13] करेंति ।।

---

१. किंचि वि (स) ।
२ तेसुहुमं (ता) ।
३ अतिमुत्ते (क, व, म) ।
४. सं० पा०—पगइभद्दए जाव विणीए ।
५ रतहरणमाताए (ता) ।
६ उदगंसि कट्टु (क, ता, व, म, स) ।
७ अदक्खु (ता, म) ।
८ सं० पा०—सिज्झिहिति जाव अंतं ।
९. भ० ५।७८ ।
१०. भ० २।७३ ।
११. अवमण्णह परिभवह (वृपा) ।
१२. सं० पा०—संगिण्हंति जाव वेयावडियं ।
१३. वेदावडियं (व, म) ।

महासुक्कागयदेव-पण्ह-पदं

८३. तेण कालेण तेण समएणं महासुक्काओ कप्पाओ, महासामाणाओ[1] विमाणाओ दो देवा महिड्ढिया जाव[2] महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया। तए णं ते देवा समणं भगवं महावीरं[3] वंदंति नमंसंति, मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं पुच्छंति—

८४. कति णं भंते[4]! देवाणुप्पियाणं अंतेवासीसयाइं सिज्झिहिंति जाव[5] अंतं करेहिंति? तए णं समणे भगवं महावीरे तेहिं देवेहिं मणसा पुट्ठे तेसिं देवाणं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया! मम सत्त अंतेवासी-सयाइं सिज्झिहिंति जाव अंतं करेहिंति।

तए णं ते देवा समणेणं भगवया महावीरेणं मणसा पुट्ठेणं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठ[6]•चित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण°हियया समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता मणसा चेव सुस्सूसमाणा नमंसमाणा अभिमुहा[7] •विणएणं पंजलियडा° पज्जुवासंति॥

८५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जाव[8] अदूरसामंते उड्ढंजाणू[9] •अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ। तए णं तस्स भगवओ गोयमस्स झाणंत-रियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[10] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु दो देवा महिड्ढिया जाव[11] महाणुभागा समणस्स भग-वओ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया[12], तं नो खलु अहं ते देवे[13] जाणामि कयराओ कप्पाओ वा सग्गाओ वा विमाणाओ वा कस्स वा अत्थस्स अट्ठाए इहं हव्वमा-गया? तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसामि जाव[14] पज्जु-वासामि, इमाइं च णं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामि त्ति कट्टु एवं संपेहेइ,

---

१. महासमाणाओ (अ, ब, म), महासग्गाओ (स)। एकस्मिन्नादर्शे 'महासग्गाओ' इति पाठो लभ्यते, किन्तु समवायांगसूत्रस्य सप्त-दशसमवायस्य (१८) सदर्भे 'महासामाणाओ' इत्येव पाठः समीचीनोस्ति।

२. भ० ३।४।

३. महावीरं मणसा चेव (अ, स); महावीरं मणसा (ब, म)।

४. × (क, ता, ब, म)।

५. भ० २।७३।

६. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया।

७. सं० पा०—अभिमुहा जाव पज्जुवासंति।

८. भ० १।९।

९. सं० पा०—उड्ढंजाणू जाव विहरइ।

१०. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

११. भ० ३।४।

१२. पादुब्भूता (क, ब, म)।

१३. देवा (ता, ब)।

१४. भ० २।३०।

संपेहेत्ता उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव[1] पज्जुवासइ ॥

८६. गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—से नूणं तव गोयमा ! झाणंतरियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव[2] जेणेव ममं अंतिए तेणेव हव्वमागए, से नूणं गोयमा ! अट्ठे[3] समट्ठे[4] ?
हंता अत्थि । तं गच्छाहि णं गोयमा ! एए चेव देवा इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेहिंति ॥

८७ तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, जेणेव ते देवा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

८८ तए णं ते देवा भगवं गोयमं एज्जमाणं[5] पासंति, पासित्ता हट्ठ[6]•तुट्ठचित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण°हियया खिप्पामेव अब्भुट्ठेंति, अब्भुट्ठेत्ता खिप्पामेव अब्भुवगच्छंति[7] जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति जाव[8] नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते ! अम्हे महासुक्काओ कप्पाओ महासामाणाओ[9] विमाणाओ दो देवा महिड्ढिया जाव[10] महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया । तए णं अम्हे समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो, वंदित्ता नमंसित्ता मणसा चेव इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छामो—कइ णं भंते ! देवाणुप्पियाणं अंतेवासीसयाइं सिज्झिहिंति जाव[11] अंतं करेहिंति ? तए णं समणे भगवं महावीरे अम्हेहिं मणसा पुट्ठे अम्हं[12] मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम सत्त अंतेवासीसयाइं जाव अंतं करेहिंति । तए णं अम्हे समणेणं भगवया महावीरेणं मणसा चेव पुट्ठेणं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरिया समाणा समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो जाव[13] पज्जुवासामो त्ति कट्टु भगवं गोयमं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥

देवाणं नोसंजयवत्तव्वया-पदं

८९. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति जाव[14] एवं वयासी—देवा णं भंते ! संजया ति वत्तव्वं सिया ?

---

१. भ० १।१० ।
२. भ० ५।८५ ।
३. अत्थे (अ, क, ता, स) ।
४. समत्थे (अ) ।
५. इज्जमाणं (ब) ।
६. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया ।
७. पच्चुवगच्छंति २ (अ, क, ता, स) ।
८. भ० १।१० ।
९. महासग्गाओ (स) ।
१०. भ० ३।४ ।
११. भ० २।७३ ।
१२. अम्हे (क, म) ।
१३. भ० २।३० ।
१४. भ० १।१० ।

गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । अब्भक्खाणमेय देवाणं[1] ॥

९०. देवा ण भते ! असजता[2] ति वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । निट्ठुरवयणमेय देवाण[3] ॥

९१ देवा ण भते ! णो सजयासजया ति वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । असब्भूयमेय देवाणं ॥

९२ से किं खाइ ण भते ! देवा ति वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! देवा ण नोसजया ति वत्तव्व सिया ॥

देवभाषा-पदं

९३ देवा ण भते ! कयराए भासाए भासति ? कयरा व भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति ? गोयमा ! देवा ण अद्धमागहाए भासाए भासति । सा वि य ण अद्धमागहा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति ॥

छउमत्थ-केवलीणं नाणभेद-पदं

९४ केवली ण भते ! अतकर वा, अतिमसरीरिय[4] वा जाणइ-पासइ ?
हता[5] जाणइ-पासइ ॥

९५. जहा ण भते ! केवली अतकर वा, अतिमसरीरिय वा जाणइ-पासइ, तहा[6] ण छउमत्थे[7] वि अतकर वा, अतिमसरीरिय वा जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । सोच्चा जाणइ-पासइ, पमाणतो वा ॥

९६ से कि त सोच्चा ?
सोच्चा ण केवलिस्स वा, केवलिसावगस्स[8] वा, केवलिसावियाए वा, केवलि-उवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पक्खियस्स वा तप्पक्खियसावगस्स वा, तप्पक्खियसावियाए वा तप्पक्खियउवासगस्स वा तप्पक्खियउवासियाए वा । से त सोच्चा ॥

९७ से कि त पमाणे ?
पमाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—पच्चक्खे अणुमाणे ओवम्मे आगमे, जहा अणुओगदारे तहा नेयव्व पमाण जाव[9] तेण पर सुत्तस्स वि अत्थस्स वि नो अत्तागमे, नो अणतरागमे, परपरागमे ॥

---

१. × (स) ।
२. अस्सजता (अ, क, ता, व, म) ।
३. × (स) ।
४. °सारीरिय (अ, क, व, स) ।
५. गोयमा (क, म); हता गोयमा (स) ।
६ तघा (अ, स) ।
७ छदुमत्थे (ता) ।
८. °सावयस्स (क, व, म, स) ।
९ अ० सू० ५१६-५५१ ।

९८ केवली ण भंते ! चरिमकम्मं वा, चरिमणिज्जरं वा जाणइ-पासइ?
हंता[1] जाणइ पासइ ॥

९९ जहा णं भंते ! केवली चरिमकम्मं वा, चरिमणिज्जरं वा जाणइ-पासइ, तहा णं छउमत्थे वि चरिमकम्मं वा, चरिमणिज्जरं वा जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। सोच्चा जाणइ-पासइ, पमाणतो वा। जहा णं अंतकरेण[2] आलावगो[3] तहा चरिमकम्मेण वि अपरिसेसिओ नेयव्वो ॥

केवलीणं पणीय-मण-वइ-पदं

१००. केवली णं भंते ! पणीयं मणं वा, वइं वा धारेज्जा ?
हंता धारेज्जा ॥

१०१ जण्णं[4] भंते ! केवली पणीयं मणं वा, वइं वा धारेज्जा, तण्णं[5] वेमाणिया देवा जाणंति-पासंति ?
गोयमा ! अत्थेगतिया जाणंति-पासंति, अत्थेगतिया ण जाणंति, ण पासंति ॥

१०२. से केणट्ठेणं[6] •भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगतिया जाणंति-पासंति, अत्थेगतिया ण जाणंति•, ण पासंति ?
गोयमा ! वेमाणिया देवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—माइमिच्छादिट्ठीउववण्णगा य, अमाइसम्मदिट्ठीउववण्णगा य। तत्थ णं जे ते माइमिच्छादिट्ठीउववण्णगा ते ण जाणंति ण पासंति। 'तत्थ णं जे ते अमाइसम्मदिट्ठीउववण्णगा ते णं जाणंति-पासंति।
से केणट्ठेणं ? गोयमा ! अमाइसम्मदिट्ठी दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोववण्णगा य, परंपरोववण्णगा य। तत्थ णं जे ते अणंतरोववण्णगा ते ण जाणंति, ण पासंति। तत्थ णं जे ते परंपरोववण्णगा ते णं जाणंति-पासंति।
से केणट्ठेणं ? गोयमा ! परंपरोववण्णगा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अपज्जत्तगा य, पज्जत्तगा य। तत्थ णं जे ते अपज्जत्तगा ते ण जाणंति, ण पासंति। तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा ते णं जाणंति-पासंति।
से केणट्ठेणं ? गोयमा ! पज्जत्तगा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणुवउत्ता य उवउत्ता य। तत्थ णं जे ते अणुवउत्ता ते ण जाणंति, ण पासंति। तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते णं जाणंति-पासंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थेगतिया जाणंति-पासंति, अत्थेगतिया ण जाणंति, ण पासंति'[7] ॥

---

१ गोयमा (अ, म), हंता गोयमा (स)।
२ अंतकरेण वा (म, स)।
३. भ० ५।९६, ९७।
४ जं णं (ता), जहा णं (म, स)।
५. तं णं (क, ता, व, म)।
६. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव ण।
७ एवं अणंतर परंपर पज्जत्त अपज्जत्ता य उवउत्ता अणुवउत्ता। तत्थ णं जे ते उवउत्ता

अणुत्तरोववाइयाणं केवलिणा आलाव-पदं

१०३. पभू णं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धि आलावं वा, संलाव वा करेत्तए ?
हंता पभू ॥

१०४. से केणट्ठेण[1] •भंते ! एवं वुच्चइ—पभू ण अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धि आलावं वा, संलावं वा° करेत्तए ?
गोयमा ! जण्ण अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा अट्ठ वा हेउं वा पसिण वा कारण वा वागरण वा पुच्छति, तण्ण इहगए केवली अट्ठ वा[2] •हेउ वा पसिण वा कारणं वा° वागरण वा वागरेइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—पभू णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धि आलाव वा, सलाव वा करेत्तए ॥

१०५. जण्ण भते ! इहगए केवली अट्ठं वा[3] •हेउ वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं वा° वागरेइ, तण्ण अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणंति-पासति ?
हता जाणति-पासति ॥

१०६. से केणट्ठेण[4] •भते ! एव वुच्चइ—जण्णं इहगए केवली अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं वा वागरेइ, तण्ण अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणंति°-पासंति ?
गोयमा ! तेसि ण देवाण अणंताओ मणोदव्ववग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमण्णागयाओ भवति। से तेणट्ठेणं[5] •गोयमा ! एव वुच्चइ—जण्णं इहगए केवली अट्ठं वा हेउ वा पसिण वा कारणं वा वागरणं वा वागरेइ, तण्णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणति°-पासति ॥

१०७. अणुत्तरोववाइया ण भते ! देवा कि उदिण्णमोहा ? उवसतमोहा ? खीण मोहा? गोयमा ! नो उदिण्णमोहा, उवसतमोहा, नो खीणमोहा ॥

केवलीणं इंदियनाण-निसेध-पदं

१०८. केवली णं भते ! आयाणेहि जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

ते जाणति पासति से तेणट्ठेण त चेव (अ, क, ता, ब, म, वृ); वाचानान्तरेत्विद सूत्र साक्षादेवउपलभ्यते (वृ) ।

१. सं० पा०—केणट्ठेण जाव पभू णं अणुत्तरोववाइया देवा जाव करेत्तए ।

२. सं० पा०—अट्ठ वा जाव वागरणं ।

३. स० पा०—अट्ठ वा जाव वागरेइ ।

४. स० पा०—केणट्ठेण जाव पासति ।

५. स० पा०—तेणट्ठेण जण्ण इहगए केवली जाव पासति ।

१०९. से केणट्ठेणं[1] •भते ! एवं वुच्चइ°—केवली णं आयाणेहिं ण जाणइ, ण पासइ ?
गोयमा ! केवली ण पुरत्थिमे णं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ[2]। •एवं दाहिणे ण, पच्चत्थिमे ण, उत्तरे णं, उड्ढं, अहे मियं पि जाणइ, अमिय पि जाणइ।
सव्व जाणइ केवली, सव्व पासइ केवली।
सव्वओ जाणइ केवली, सव्वओ पासइ केवली।
सव्वकाल जाणइ केवली, सव्वकाल पासइ केवली।
सव्वभावे जाणइ केवली, सव्वभावे पासइ केवली।
अणंते नाणे केवलिस्स, अणते दसणे केवलिस्स।
निव्वुडे नाणे केवलिस्स निव्वुडे दसणे केवलिस्स। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—केवली ण आयाणेहि ण जाणइ, ण पासइ° ॥

केवलीणं जोगचंचलया-पदं

११०. केवली णं भते ! अस्सि समयसि[3] जेसु आगासपदेसेसु हत्थं वा पायं वा बाहं वा ऊरु° वा ओगाहित्ता ण चिट्ठति, पभू ण केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थं वा[4] •पायं वा बाहं वा ऊरुं वा° ओगाहित्ताणं चिट्ठित्तए ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे ॥

१११. से केणट्ठेण भते[5] ! •एव वुच्चइ°—केवली णं अस्सि समयसि जेसु आगासपदेसेसु[6] •हत्थ वा पाय वा बाह वा ऊरु वा ओगाहित्ताण° चिट्ठति, णो ण पभू केवली सेयकालसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थ वा[7] •पाय वा बाहं वा ऊरु वा ओगाहित्ता ण° चिट्ठित्तए ?
गोयमा ! केवलिस्स ण वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए चलाइ उवकरणाइ भवति। चलोवकरणट्ठयाए य ण केवली अस्सिं[8] समयसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थ वा[9] •पायं वा बाह वा ऊरु वा ओगाहित्ता ण° चिट्ठति, णो णं पभू केवली सेयकालसि वि तेसु चेव[10] •आगासपदेसेसु हत्थ वा पाय वा बाहं वा ऊरु वा ओगाहित्ताण° चिट्ठित्तए। से तेणट्ठेण[11] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—केवली ण अस्सि समयसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थ वा पाय वा बाह वा ऊरु वा ओगा-

---

१. स० पा०—केणट्ठेण जाव केवली।
२. स० पा०—जाणइ जाव निव्वुडे दसणे केवलिस्स से तेणट्ठेण।
३. समतसि (ता)।
४ स० पा०—हत्थ वा जाव ओगाहित्ता।
५. स० पा०—भते जाव केवली।
६. स० पा०—आगासपदेसेसु जाव चिट्ठति।
७. स० पा०—हत्थ वा जाव चिट्ठित्तए।
८. जसि (अ)।
९ स० पा०—हत्थं वा जाव चिट्ठति।
१०. स० पा०—चेव जाव चिट्ठित्तए।
११. स० पा०—तेणट्ठेण जाव वुच्चइ। केवली ण अस्सि समयसि जाव चिट्ठित्तए।

हित्ता णं चिट्ठति, णो णं पभू केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थ वा पाय वा बाहु वा ऊरुं वा ओगाहित्ता णं॰ चिट्ठित्तए ॥

चोद्दसपुव्वीणं सामत्थ-पदं

११२. पभू ण भते ! चोद्दसपुव्वी घडाओ घडसहस्सं, पडाओ पडसहस्स, कडाओ कडसहस्स, रहाओ रहसहस्सं, छत्ताओ छत्तसहस्स, दडाओ दडसहस्स अभिनिव्वट्टेत्ता उवदसेत्तए ?
हंता पभू ॥

११३. से केणट्ठेणं पभू चोद्दसपुव्वी जाव[1] उवदसेत्तए ?
गोयमा ! चोद्दसपुव्विस्स ण अणताइ दव्वाइ उक्कारियाभेएण[2] भिज्जमाणाइ लद्धाइ पत्ताइ अभिसमण्णागयाइ भवति ।
से तेणट्ठेण[3] •गोयमा ! एव वुच्चइ—पभू णं चोद्दसपुव्वी घडाओ घडसहस्स, पडाओ पडसहस्स, कडाओ कडसहस्स, रहाओ रहसहस्स, छत्ताओ छत्तसहस्स, दडाओ दडसहस्स अभिनिव्वट्टेत्ता॰ उवदसेत्तए ॥

११४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

पंचमो उद्देसो

मोक्ख-पदं

११५ छउमत्थे ण भते ! मणूसे तीयमणत सासय समय केवलेण सजमेण, केवलेण सवरेण, केवलेण बभचेरवासेण, केवलाहि पवयणमायाहि सिज्झिसु ? बुज्झिसु ? मुच्चिसु ? परिणिव्वाइसु ? सव्वदुक्खाण अत करिसु ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । जहा पढमसए चउत्थुद्देसे आलावगा तहा नेयव्वा जाव[5] अलमत्थु त्ति वत्तव्व सिया ॥

एवंभूय-अणेवंभूय-वेदणा-पदं

११६ अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खंति जाव[6] परूवेति—सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता एव भूय वेदण वेदेति ॥

---

१. भ० ५।११२ ।
२. प्रज्ञापनासूत्रे भाषापदे 'उक्करियाभेए' इति पद लभ्यते, तत्रापि केषुचिदादर्शेषु उक्कारियाभेए इत्यपि पाठो लभ्यते ।
३. स० पा०—तेणट्ठेण जाव उवदसेत्तए ।
४. भ० १।५१ ।
५. भ० १।२०१-२०६ ।
६. भ० १।४२० ।

११७. से कहमेयं भंते ! एवं ?
गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव[1] सव्वे सत्ता एवंभूयं वेदण वेदेति। जे ते एवमाहंसु, मिच्छं[2] ते एवमाहसु। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[3] परूवेमि—अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एवभूयं वेदेण वेदेति, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवभूयं वेदणं वेदेति ।।

११८. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइया[4] •पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूयं वेदणं वेदेति, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवभूय वेदण वेदेति° ?
गोयमा ! जे ण पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा तहा वेदणं वेदेति, ते णं पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूय वेदेण वेदेंति।
जे णं पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा नो तहा वेदणं वेदेति, ते णं पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवभूय वेदणं वेदेंति। से तेणट्ठेणं[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एवभूयं वेदणं वेदेति, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवभूयं वेदण वेदेति° ।।

११९. नेरइया ण भंते ! किं एवंभूय वेदणं वेदेति ? अणेवभूयं वेदणं वेदेति ?
गोयमा ! नेरइया णं एवंभूय पि वेदण वेदेति, अणेवभूयं पि वेदणं वेदेति ।।

१२०. से केणट्ठेणं[6] •भते ! एव वुच्चइ—नेरइया णं एवंभूयं पि वेदणं वेदेति, अणेवंभूय पि वेदणं वेदेति° ?
गोयमा ? जे ण नेरइया जहा कडा कम्मा तहा वेदणं वेदेति, ते णं नेरइया एवभूयं वेदणं वेदेति।
जे ण नेरइया जहा कडा कम्मा नो तहा वेदणं वेदेति, तेणं नेरइया अणेवभयं वेदणं वेदेसि। से तेणट्ठेणं ।।

१२१. एव जाव[1] वेमाणिया ।।

कुलगरादि-पदं

१२२. संसारमडल नेयव्व[7] ।।

१२३. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति जाव[8] विहरइ ।।

---

१. भ० ५।११६।
२. मिच्छा (अ, क, ब, म, स)।
३. भ० १।४२१।
४. सं० पा०—त चेव उच्चारेयव्वं।
५. सं० पा०—तहेव।]
६. सं० पा०—तं चेव।
७. पू० प० २।
८. नेयव्व। जबूदीवे ण भते ! इह भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए समाए कइ कुलगरा होत्था ?
गोयमा ! सत्त। एवं तित्थयरमायरो, पियरो, पढमा सिस्सिणीओ, चक्कवट्टिमायरो, इत्थि-

छट्ठो उद्देसो

अप्पायु-दीहायु-पदं

१२४. कहण्णं[1] भंते ! जीवा अप्पाउयत्ताए कम्म पकरेंति ?
गोयमा[2] ! पाणे अइवाएत्ता, मुस वइत्ता, तहारूव समण वा माहण वा अफासुएण अणेसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभेत्ता[3]—एव खलु जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?

१२५. कहण्ण भते ! जीवा दीहाउयत्ताए कम्म पकरेंति ?
गोयमा ! नो पाणे अइवाएत्ता[4], नो मुस वइत्ता, तहारूव समण वा माहणं वा फासुएण[5] एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभेत्ता—एव खलु जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ॥

असुभसुभ-दीहायु-पदं

१२६. कहण्णं भते ! जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्म पकरेंति ?
गोयमा ! पाणे अइवाएत्ता, मुस वइत्ता, तहारूव समण वा माहण वा हीलित्ता[6] निंदित्ता खिंसित्ता गरहित्ता अवमण्णित्ता 'अण्णयरेण अमणुण्णेण अपीतिकारएण'[7] असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभेत्ता—एव खलु जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्म पकरेंति ॥

१२७. कहण्ण भते ? जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्म पकरेंति ?
गोयमा ! नो पाणे अइवाएत्ता, नो मुस वइत्ता, तहारूव समणं वा माहण वा वदित्ता नमसित्ता जाव[8] पज्जुवासित्ता 'अण्णयरेण मणुण्णेणं पीतिकारएण'[9] असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभेत्ता—एव खलु जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्म पकरेंति ॥

रयणं, बलदेवा, वासुदेवा, वासुदेवमायरो, पियरो; एएसिं पडिसत्तू जहा समवाए नामपरिवाडीए तहा नेयव्वा (अ, क, ब, स); एषु आदर्शेषु द्वयोर्वाचनयोः सम्मिश्रण जातम्। वृत्तिकृता अस्य वाचनान्तरस्य उल्लेखोपि कृतोस्ति, यथा—अथ चेह स्थाने वाचनान्तरे कुलकर तीर्थकरादि वक्तव्यता दृश्यते, ततश्च 'ससारमडल' शब्देन पारिभाषिकसञ्ज्ञया सेह सूचितेति सभाव्यते (वृ)। पइण्णगसमवाय २१८-२४७।

१. भ० १।५१।

२ कह ण (अ, ता, म), कहि ण (क),। कह ण (व)।

३. गोयमा तिहिं ठाणेहिं त (ब, स) सर्वत्र; द्रष्टव्य—ठा० ३।१७-२०।

४. ०हेत्ता (म)।

५ अतिवतित्ता (अ, म)।

६. फासु (अ, क, ता, म, स)।

७ हीलेत्ता (क, ता, व, म)।

८. वाचनान्तरे तु अफासुएण अणेसणिज्जेण ति दृश्यते (वृ)।

९. भ० २।३०।

१०. वाचनान्रे तु फासुएण इत्यादि दृश्यते (वृ)।

कयविक्कए किरिया-पदं

१२८. गाहावइस्स णं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स केइ भंडं अवहरेज्जा, तस्स णं भंते ! 'भंडं अणुगवेसमाणस्स'[1] किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? पारिग्गहिया[2] किरिया कज्जइ ? मायावत्तिया किरिया कज्जइ ? अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ? मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! आरंभिया किरिया कज्जइ, पारिग्गहिया किरिया कज्जइ, मायावत्तिया किरिया कज्जइ, अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ, मिच्छादंसणकिरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ ।

अह से भंडे अभिसमण्णागए भवइ, तओ से पच्छा सव्वाओ ताओ पयणुईभवंति ।।

१२९. गाहावइस्स णं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स कइए[3] भंडं साइज्जेज्जा, भंडे य से अणुवणीए सिया ।

गाहावइस्स णं भंते ! ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव[4] मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ ?

कइयस्स वा ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव मिच्छादंसण-किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! गाहावइस्स ताओ भंडाओ आरंभिया किरिया कज्जइ 'जाव[5] अपच्च-क्खाणकिरिया कज्जइ । मिच्छादंसणकिरिया'[6] सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ । कइयस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति ।।

१३०. गाहावइस्स णं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स[7] °कइए भंडं साइज्जेज्जा°, भंडे से उवणीए सिया ।

कइयस्स णं भंते ! ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव[8] मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ ?

गाहावइस्स वा ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ जाव मिच्छादंसण किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! कइयस्स ताओ भंडाओ हेट्ठिल्लाओ चत्तारि किरियाओ कज्जंति । मिच्छादंसणकिरिया भयणाए ।

गाहावइस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति ।

१. त भंडय गवेस° (व, म) ।
२. परि° (अ, स) ।
३. कतिए (क, ता, ब, म, स) ।
४. भ० ५।१२८ ।
५. भ० ५।१२८ ।
६. जाव अपच्चक्खाण मिच्छादसणवत्तिया° (अ, स), जाव मिच्छादसणवत्तिया° (क, ता, म); जाव मिच्छादसण° (व) ।
७. सं० पा०—विक्किणमाणस्स जाव भंडे ।
८. भ० ५।१२८ ।

१३१. गाहावइस्स णं भंते ! भंडं[1] •विक्किणमाणस्स कइए भंडं साइज्जेज्जा, धणे य से अणुवणीए सिया ?
कइयस्स णं भंते ! ताओ धणाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव[2] मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ ?
गाहावइस्स वा ताओ धणाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ ?
गोयमा ! कइयस्स ताओ धणाओ हेट्ठिल्लाओ चत्तारि किरियाओ कज्जंति । मिच्छादंसणकिरिया भयणाए ।
गाहावइस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति ॥

१३२. गाहावइस्स णं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स कइए भंडं साइज्जेज्जा, धणे से उवणीए सिया ।
गाहावइस्स णं भंते ! ताओ धणाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव[3] मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ ?
कइयस्स वा ताओ धणाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ ?
गोयमा ! गाहावइस्स ताओ धणाओ आरंभिया किरिया कज्जइ जाव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ । मिच्छादंसणकिरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ ।
कइयस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति° ॥

अगणिकाए महाकम्मादि पदं

१३३. अगणिकाए णं भंते ! अहुणोज्जलिए[4] समाणे महाकम्मतराए चेव[5], महाकिरियतराए चेव, महासवतराए[6] चेव, महावेदणतराए चेव भवइ । अहे णं समए-समए 'वोक्कसिज्जमाणे-वोक्कसिज्जमाणे'[7] चरिमकालसमयंसि इंगालब्भूए मुम्मुरब्भूए छारियब्भूए[8], तओ पच्छा अप्पकम्मतराए चेव, अप्पकिरियतराए

---

१. स० पा०—भंडं जाव धणे य से अणुवणीए सिया ? एयं पि जहा भंडे उवणीए तहा नेयव्वं ।
चउत्थो आलावगो—'धणे य से उवणीए सिया' जहा पढमो आलावगो—'भंडे य से अणुवणीए सिया', तहा नेयव्वो ।
पढम-चउत्थाणं एक्को गमो, वितिय-तइयाणं एक्को गमो ।
२. भ० ५।१२८ ।
३. भ० ५।१२८ ।
४. अहुणुज्जलिए (ता), अहुणुज्जलिए (ब) ।
५. च्चेव (ता) ।
६. महस्सव० (अ, ता, ब) ।
७. वोयसिज्जमाणे २ वोच्छिज्जमाणे २ (अ,स), वोकसिज्जमाणे २ वोच्छिज्जमाणे २ (ता), वोयसिज्जमाणे २ (म) ।
८. छारब्भूए (अ) ।

चेव, अप्पासवतराए चेव, अप्पवेयणतराए चेव भवइ ?
हंता गोयमा ! अगणिकाए ण अहुणोज्जलिए समाणे तं चेव ॥

धणुपक्खेवे किरिया-पदं

१३४ पुरिसे ण भते ! धणु परामुसइ, परामुसित्ता उसु परामुसइ,[1] परामुसित्ता ठाणं[2] ठाइ, ठिच्चा आयतकण्णातय[3] उसु करेति, उड्ढ वेहास उसु उव्विहइ ।
तए[4] ण से उसू[5] उड्ढ वेहास[6] उव्विहिए समाणे जाइ तत्थ पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइ अभिहणइ वत्तेति लेसेति[7] संघाएइ सघट्टेति परितावेइ किलामेइ[8], ठाणाओ ठाण संकामेइ, जीवियाओ ववरोवेइ । तए ण भते ! से पुरिसे कति-किरिए ?
गोयमा ! जाव च ण से पुरिसे धणु परामुसइ[9], °उसु परामुसइ, ठाण ठाइ, आयतकण्णातय उसु करेति, उड्ढ वेहास उसु° उव्विहइ, ताव च णं से पुरिसे काइयाए[10] °अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारियावणियाए°, पाणाइवाय-किरियाए—पंचहि किरियाहि पुट्ठे । जेसि पि य ण जीवाण सरीरेहि धणू निव्वत्तिए ते वि य ण जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहि पुट्ठा[11] । एव धणुपट्ठे[12] पचहि किरियाहि, जीवा पंचहि, ण्हारू पचहि, उसू पचहि—सरे, पत्तणे, फले, ण्हारू पचहि ॥

१३५ अहे[13] ण से उसू अप्पणो गुरुयत्ताए, भारियत्ताए, गुरुसभारियत्ताए अहे वीससाए पच्चोवयमाणे जाइं तत्थ पाणाइ जाव[14] जीवियाओ ववरोवेइ तावं च णं से पुरिसे कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च ण से उसू अप्पणो गुरुयत्ताए जाव जीवियाओ ववरोवेइ ताव च णं से पुरिसे काइयाए जाव[15] चउहि किरियाहि पुट्ठे । जेसि पि य णं जीवाण सरीरेहि धणू निव्वत्तिए ते वि जीवा चउहि किरियाहि, धणुपट्ठे[16] चउहि,

---

१. परामसइ (ब, म) ।
२ वेसाह ठाण (उ० १।२२) ।
३. °कण्णाइय (अ, स); कण्णायय (म, उ० १।२२) ।
४ ततो (क, ता, ब, स) ।
५. उसु (स) ।
६ वेहासे (ता) ।
७. लेस्सेति (अ, व, स) ।
८. किलोमेह उद्दवेह (भ० ८।२८७) ।
९. स० पा०—परामुसइ जाव उव्विहइ ।
१०. स० पा०—काइयाए जाव पाणाइवाय° ।
११. पुट्ठे (अ, ता, ब, म, स), पट्ठो (क) । अत्र जीवा इति कर्तृपद बहुवचनान्तमस्ति तेन 'पुट्ठा' इति पद स्वीकृतम् ।
१२. धणू° (अ, ता, स), धणूपिट्ठे (व) ।
१३. अघे (ता) ।
१४. भ० ५।१३४ ।
१५. भ० ५।१३४ ।
१६. °पुट्ठे (अ, म, स) ।

जीवा चउहि, ण्हारू चउहि, उसू पंचहि—सरे, पत्तणे, फले, ण्हारू पंचहि। जे वि य से जीवा अहे पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे[1] वट्टंति ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहि किरियाहि पुट्ठा ॥

अण्णउत्थिय-पदं

१३६. अण्णउत्थिया ण भंते ! एवमातिक्खंति जाव[2] परूवेंति—से जहानामए जुवति जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव जाव चत्तारि पंच जोयणसयाइं बहुसमाइण्णे मणुयलोए[3] मणुस्सेहि ॥

१३७. से कहमेयं भंते ! एवं ?

गोयमा ! जण्ण ते अण्णउत्थिया एवमातिक्खंति जाव[4] बहुसमाइण्णे मणुयलोए मणुस्सेहि। जे ते एवमाहंसु, 'मिच्छं ते एवमाहंसु'[5]। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि[6] •जाव[7] परूवेमि—से जहानामए जुवति जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया°, एमामेव जाव चत्तारि पंच जोयणसयाइं बहुसमाइण्णे निरयलोए नेरइएहि ॥

नेरइयविउव्वणा-पदं

१३८. नेरइया ण भंते ! किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए ? पुहत्तं[8] पभू विउव्वित्तए ?

गोयमा ! एगत्तं पि पहू विउव्वित्तए, पुहत्तंपि पहू विउव्वित्तए। जहा जीवाभिगमे आलावगो तहा नेयव्वो जाव[9] विउव्वित्ता अण्णमण्णस्स कायं अभिहणमाणा-अभिहणमाणा वेयणं उदीरेंति—उज्जलं विउलं पगाढं कक्कसं कडुयं फरुसं निट्ठुरं चंडं तिव्वं दुक्खं दुग्गं दुरहियासं ॥

आहाकम्मादिआहारे आराहणादि-पदं

१३९. आहाकम्मं 'अणवज्जे' त्ति मणं पहारेत्ता भवति, से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते[10] कालं करेइ—नत्थि तस्स आराहणा। से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ—अत्थि तस्स आराहणा ॥

१४०. एएणं गमेणं नेयव्वं—कीयगडं[11], ठवियं[12], रइयं[13], कंतारभत्तं 'दुब्भिक्खभत्तं, वद्दलियाभत्तं'[14], गिलाणभत्तं, सेज्जायरपिंडं, रायपिंडं[15] ॥

---

१. ओवग्गहे (अ)।
२. भ० १।४२०।
३. मणुस्स° (ता)।
४. भ० ५।१३६।
५. मिच्छा (अ, क, व, म, स)।
६. स० पा०—एवमाइक्खामि जाव एवामेव।
७. भ० १।४२१।
८. पहुत्तं (ता)।
९. जी० ३, नेरइय-उद्देसो २।
१०. °लोतिय° (अ, स)।
११. कीयकडं (क, व), उद्देसिय कीयकडं (ता)
१२. ठवियक (क, ता); ठवितकडं (व)।
१३. रतियक (क, व); रइयक (ता)।
१४. °वत्तं वद्दलियावत्तं (व)।
१५. × (क)।

१४१. आहाकम्मं 'अणवज्जे' त्ति[1] सयमेव परिभुंजित्ता भवति, से ण तस्स ठाणस्स[2] •अणालोइयपडिक्कते कालं करेइ—नत्थि तस्स आराहणा। से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेइ°—अत्थि तस्स आराहणा॥

१४२ एय पि तेह चेव जाव[3] रायपिड॥

१४३. आहाकम्म[4] 'अणवज्जे' त्ति अण्णमण्णस्स अणुप्पदावइत्ता भवइ, से णं तस्स[5] •ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते काल करेइ—नत्थि तस्स आराहणा। से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते काल करेइ—अत्थि तस्स आराहणा° ॥

१४४. एय पि तह चेव जाव[6] रायपिड॥

१४५. आहाकम्मं ण 'अणवज्जे' त्ति वहुजणमज्झे पण्णवइत्ता भवति, से ण तस्स[7] •ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते काल करेइ—नत्थि तस्स आराहणा। से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेइ°—अत्थि तस्स आराहणा॥

१४६. एय पि तह चेव जाव[8] रायपिड॥

आयरिय-उवज्झायस्स सिद्धि-पदं

१४७. आयरिय- उवज्झाए ण भंते! सविसयसि गणं अगिलाए सगिण्हमाणे, अगिलाए उवगिण्हमाणे कइहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव[9] सव्वदुक्खाण अतं करेति?

गोयमा! अत्थेगतिए तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति, अत्थेगतिए दोच्चेण भव-ग्गहणेणं सिज्झति, तच्च पुण भवग्गहण नाइक्कमति॥

अब्भक्खाणिस्स कम्मबंध-पदं

१४८. जे ण भते! पर अलिएण असब्भूएण अब्भक्खाणेण[10] अब्भक्खाति[11], तस्स णं कहप्पगारा कम्मा कज्जति?

गोयमा! जे ण पर अलिएण, असतएण[12] अब्भक्खाणेणं अब्भक्खाति, तस्स ण तहप्पगारा चेव कम्मा कज्जति। जत्थेव ण अभिसमागच्छति तत्थेव णं पडिसंवेदेति, तओ से पच्छा वेदेति॥

१४९. सेवं भते! सेवं भते! त्ति[13]॥

---

१. त्ति वहुजणस्स मज्झे भासित्ता (अ, स)।
२. स० पा०—ठाणस्स जाव अत्थि।
३ भ० ५।१४०।
४. अहाकम्मं (अ)।
५ स० पा०—तस्स°।
६ भ० ५।१४०।
७. स० पा०—तस्स जाव अत्थि।
८. भ० ५।१४०।
९. भ० १।४४।
१०. × (अ)।
११ अब्भाइक्खइ (क, ता, व)।
१२. असतवयणेण (म, स)।
१३ भ० १।५१।

सत्तमो उद्देसो

परमाणु-खंधाणं एयणादि-पदं

१५०. परमाणुपोग्गले णं भंते ! एयति वेयति[1] °चलति फंदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ°, तं तं भावं परिणमति ?
गोयमा ! सिय एयति वेयति जाव तं तं भावं परिणमति; सिय नो एयति जाव नो तं तं भावं परिणमति ॥

१५१. दुप्पएसिए णं भंते ! खंधे एयति जाव[2] त तं भावं परिणमति ?
गोयमा ! सिय एयति जाव तं तं भावं परिणमति । सिय नो एयति जाव नो तं तं भावं परिणमति । सिय देसे एयति, देसे नो एयति ॥

१५२. तिप्पएसिए ण भते ! खंधे एयति ?
गोयमा ! सिय एयति, सिय नो एयति । सिय देसे एयति, नो देसे एयति । सिय देसे एयति, नो देसा एयंति । सिय देसा एयति, नो देसे एयति ॥

१५३. चउप्पएसिए णं भंते ! खंधे एयति ?
गोयमा ! सिय एयति, सिय नो एयति । सिय देसे एयति, नो देसे एयति । सिय देसे एयति, नो देसा एयंति । सिय देसा एयंति, नो देसे एयति । सिय देसा एयंति, नो देसा एयति ।
जहा चउप्पएसिओ तहा पंचपएसिओ, तहा जाव अणंतपएसिओ ॥

परमाणु-खंधाण छेदादि-पदं

१५४. परमाणुपोग्गले णं भते ! असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा ?
हंता ओगाहेज्जा[3] ।
से णं भंते ! तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?
गोयमा नो तिणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१५५. एवं जाव असंखेज्जपएसिओ ॥

१५६. अणंतपएसिए णं भंते ! खंधे असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा ?
हंता ओगाहेज्जा ।
से णं भंते ! तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?
गोयमा ! अत्थेगइए छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा, अत्थेगइए नो छिज्जेज्ज वा नो भिज्जेज्ज वा ॥

---

१. स० पा०—वेयति जाव तं ।
२. भ० ५।१५० ।
३. ओगाहिज्ज (क, व, म, स) ।

१५७. [1]परमाणुपोग्गले ण भंते ? अगणिकायस्स मज्झंमज्झेण वीइवएज्जा ?
हता वीइवएज्जा ।
से णं भते ! तत्थ झियाएज्जा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ।
से ण भते ! पुक्खलसवट्टगस्स महामेहस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
हता वीइवएज्जा ।
से ण भते ! तत्थ उल्ले सिया ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थ कमइ ।
से णं भते ! गगाए महाणदीए पडिसोय हव्वमागच्छेज्जा ?
हता हव्वमागच्छेज्जा ।
से ण भते ! तत्थ विणिहायमावज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थ कमइ ।
से ण भंते ! उदगावत्त वा उदगविदु वा ओगाहेज्जा ?
हता ओगाहेज्जा ।
से ण भते ! तत्थ परियावज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ।।

१५८. एव जाव असखेज्जपएसिओ ।।

१५९. अणतपएसिए ण भंते ! खधे अगणिकायस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?
हता वीइवएज्जा ।
से ण भंते ! तत्थ झियाएज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगइए झियाएज्जा, अत्थेगइए नो झियाएज्जा ।
से ण भते ! पुक्खलसवट्टगस्स महामेहस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ।
हता वीइवएज्जा ।
से ण भते ! तत्थ उल्ले सिया ?
गोयमा ! अत्थेगइए उल्ले सिया, अत्थेगइए नो उल्ले सिया ।
से ण भते ! गंगाए महानईए पडिसोयं हव्वमागच्छेज्जा ?
हंता हव्वमागच्छेज्जा ।
से णं भते ! तत्थ विणिहायमावज्जेज्जा ?

---

१. स० पा०—एव अगणिकायस्स मज्झंमज्झेण तहि नवरं झियाएज्ज भाणियव्व । एव पुक्खलसवट्टगस्स महामेहस्स मज्झमज्झेण तहि उल्ले सिया । एवं गगाए महाणदीए पडिसोय हव्वमागच्छेज्जा तहि विणिहायमावज्जेज्जा । उदगावत्त वा उदगविदु वा ओगाहेज्जा । से ण तत्थ परियावज्जेज्जा ।

गोयमा ! अत्थेगइए विणिहायमावज्जेज्जा, अत्थेगइए नो विणिहाय-मावज्जेज्जा ।

से णं भंते ! उदगावत्त वा उदगविंदु वा ओगाहेज्जा ?

हता ओगाहेज्जा ।

से णं भते ! तत्थ परियावज्जेज्जा ?

गोयमा ! अत्थेगइए परियावज्जेज्जा, अत्थेगइए नो परियावज्जेज्जा° ॥

परमाणु-खंधाणं सअड्ढसमज्भादि-पदं

१६०. परमाणुपोग्गले ण भते ! किं सअड्ढे[1] समज्भे सपएसे ? उदाहु अणड्ढे अमज्भे अपएसे ?

गोयमा ! अणड्ढे अमज्भे अपएसे, नो सअड्ढे नो समज्भे नो सपएसे ॥

१६१. दुप्पएसिए णं भते ! खंधे कि सअड्ढे समज्भे सपएसे ? उदाहु[2] अणड्ढे अमज्भे अपएसे ?

गोयमा ! सअड्ढे अमज्भे सपएसे, नो अणड्ढे नो समज्भे नो अपएसे ॥

१६२ तिप्पएसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा ।

गोयमा ! अणड्ढे समज्भे सपएसे, नो सअड्ढे नो अमज्भे नो अपएसे ॥

१६३ जहा दुप्पएसिओ तहा जे समा ते भाणियव्वा, जे विसमा ते जहा तिप्पएसिओ तहा भाणियव्वा ॥

१६४. सखेज्जपएसिए ण भते ! खधे कि सअड्ढे ? पुच्छा ।

गोयमा ! सिय सअड्ढे अमज्भे सपएसे, सिय अणड्ढे समज्भे सपएसे ।

जहा संखेज्जपएसिओ तहा असंखेज्जपएसिओ वि, अणंतपएसिओ वि ॥

परमाणु-खंधाणं परोप्परं फुसणा-पदं

१६५. परमाणुपोग्गले ण भते ! परमाणुपोग्गल फुसमाणे किं—

१. देसेण देस फुसइ २. देसेहि देसे फुसइ ३. देसेण सव्वं फुसइ ४. देसेहिं देसे फुसइ ५. देसेहि देसे फुसइ ६. देसेहि सव्व फुसइ ७. सव्वेणं देस फुसइ ८. सव्वेणं देसे फुसइ ९. सव्वेण सव्व फुसइ[3] ?

गोयमा ! १ नो देसेण देस फुसइ २. नो देसेणं देसे फुसइ ३. नो देसेण सव्व फुसइ ४. नो देसेहि देसं फुसइ ५. नो देसेहिं देसे फुसइ ६ नो देसेहिं सव्वं

---

१. सअद्धे (व) । (२) देशेन देशान् (५) देशै देशान् (८) सर्वेण देशान्
२. उआहु (व) । (३) देशेन सर्वम् (६) देशै. सर्वम् (९) सर्वेण सर्वम् ।
३. (१) देशेन देशम् (४) देशै देशम् (७) सर्वेण देसम् ।

फुसइ ७ नो सव्वेण देसं फुसइ ८ नो सव्वेण देसे फुसइ ९ सव्वेण सव्वं फुसेइ ।।

१६६. परमाणुपोग्गले[1] दुप्पएसियं फुसमाणे सत्तम-णवमेहि फुसइ ।
परमाणुपोग्गले तिप्पएसिय फुसमाणे निपच्छिमएहि[2] तिहि फुसइ ।
जहा परमाणुपोग्गले तिप्पएसिय फुसाविओ एव फुसावेयव्वो जाव अणत-पएसिओ ।।

१६७. दुप्पएसिए ण भते ! खंधे परमाणुपोग्गलं फुसमाणे कि देसेण देस फुसइ ? पुच्छा ।
ततिय-नवमेहि फुसइ ।
दुप्पएसिओ दुप्पएसियं फुसमाणे पढम-ततिय-सत्तम-नवमेहि फुसइ ।
दुप्पएसिओ तिप्पएसिय फुसमाणे आदिल्लएहि य, पच्छिल्लएहि य तिहि[3] फुसइ, मज्झिमएहि तिहि विपडिसेहेयव्व ।
दुप्पएसिओ जहा तिप्पएसिय फुसाविओ एव फुसावेयव्वो जाव अणतपएसिय ।।

१६८. तिपएसिए ण भंते ! खधे परमाणुपोग्गल फुसमाणे पुच्छा ।
ततिय-छट्ठ-नवमेहि फुसइ ।
तिपएसिओ दुपएसियं फुसमाणे पढमएण, ततिएणं, चउत्थ-छट्ठ-सत्तम-नवमेहि फुसइ ।
तिपएसिओ तिपएसिय फुसमाणे सव्वेसु वि ठाणेसु फुसइ ।
जहा तिपएसिओ तिपएसियं फुसाविओ एवं तिप्पएसिओ जाव अणतपएसिएण सजोएयव्वो ।
जहा तिपएसिओ एवं जाव अणंतपएसिओ भाणियव्वो ।।

परमाणु-खंधाणं संठिइ-पदं

१६९ परमाणुपोग्गले ण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेण असखेज्जं कालं । एव जाव अणतपएसिओ ।।

१७०. एगपएसोगाढे णं भते ! पोग्गले सेए[4] तम्मि वा ठाणे वा, अण्णम्मि वा ठाणे कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समयं, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग । एव जाव असखेज्जपएसोगाढे ।।

---

१. एवं पर° (क, ता) ।
२. अन्त्यैः ।
३. × (क, ता) ।
४. सेते (ता) ।

१७१. एगपएसोगाढे ण भते ! पोग्गले निरेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेणं असंखेज्ज काल। एव जाव असखेज्ज-पएसोगाढे ॥

१७२. एगगुणकालए ण भते ! पोग्गले कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समयं, उक्कोसेण असखेज्ज काल। एव जाव अणत-गुणकालए।
एव वण्ण-गध-रस-फास जाव[1] अणतगुणलुक्खे। एव सुहुमपरिणए पोग्गले, एव बादरपरिणए पोग्गले ॥

१७३ सद्दपरिणए ण भते ! पोग्गले कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभागं ॥

१७४. असद्दपरिणए[2] •ण भते ! पोग्गले कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेणं असखेज्ज कालं• ॥

परमाणु-खंधाणं अंतरकाल-पदं

१७५. परमाणुपोग्गलस्स ण भते ! अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल ॥

१७६. दुप्पएसियस्स ण भते ! खधस्स अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समयं, उक्कोसेणं अणत काल। एव जाव अणतपएसिओ ॥

१७७. एगपएसोगाढस्स ण भते ! पोग्गलस्स सेयस्स अतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असंखेज्जं काल। एवं जाव असखेज्ज-पएसोगाढे ॥

१७८. एगपएसोगाढस्स ण भते। पोग्गलस्स निरेयस्स अतर कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग। एव जाव असखेज्जपएसोगाढे।
वण्ण-गध-रस-फास-सुहुमपरिणय-बायरपरिणयाणं—एतेसि 'जं चेव'[3] सचिट्ठणा त चेव अतर पि भाणियव्व[4] ॥

१७९. सद्दपरिणयस्स ण भते ! पोग्गलस्स अंतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एगं समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल ॥

१८०. असद्दपरिणयस्स ण भते ! पोग्गलस्स अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एगं समयं, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग ॥

---

१. प० १।
२. स० पा०—असद्दपरिणए जहा एगगुण-कालए।
३. जच्चेव (अ, क, ता, ब, म)।
४. भ० ५।१७२।

परमाणु-खंधाणं परोप्परं अप्पाबहुयत्त-पदं

१८१. एयस्स णं भंते ! दव्वट्ठाणाउयस्स, खेत्तट्ठाणाउयस्स, ओगाहणट्ठाणाउयस्स, भावट्ठाणाउयस्स कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे खेत्तट्ठाणाउए, ओगाहणट्ठाणाउए, असंखेज्जगुणे, दव्वट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे, भावट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे ।

संगहणी-गाहा

खेत्तोगाहणदव्वे, भावट्ठाणाउयं च अप्प-बहुं ।
खेत्ते सव्वत्थोवे, सेसा ठाणा असंखेज्जगुणा ॥१॥

जीवाणं सारंभ सपरिग्गह-पदं

१८२. नेरइया णं भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारंभा अपरिग्गहा ?
गोयमा ! नेरइया सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा अपरिग्गहा ।

१८३. से केणट्ठेणं[2] •भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा° अपरिग्गहा[3] ?
गोयमा ! नेरइया णं पुढविकायं समारंभंति[4], •आउकायं समारंभंति, तेउकायं समारंभंति, वाउकायं समारंभंति, वणस्सइकायं समारंभंति° तसकायं समारंभंति, सरीरा परिग्गहिया भवंति, कम्मा परिग्गहिया भवंति, सचित्ताचित्त-मीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति । से तेणट्ठेणं[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा अपरिग्गहा°॥

१८४. असुरकुमारा णं भंते ! किं सारंभा ? पुच्छा ।
गोयमा ! असुरकुमारा सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा अपरिग्गहा ॥

१८५. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! असुरकुमारा णं पुढविकायं समारंभंति जाव[6] तसकायं समारंभंति, सरीरा परिग्गहिया भवंति, कम्मा परिग्गहिया भवंति, भवणा परिग्गहिया भवंति, देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ परिग्गहिया भवंति, आसण-सयण-भंड-मत्तोवगरणा परिग्गहिया भवंति, सचित्ताचित्त-मीसयाइं[7] दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति । से तेणट्ठेणं[8]

---

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव अपरिग्गहा ।
३. नो अपरि° (ता) ।
४. सं० पा०—समारभंति जाव तसकायं ।
५. सं० पा०—तं चेव ।
६. भ० ५।१८३ ।
७. मिस्सियाइं (व); मीसजाइं (क) ।
८. सं० पा०—तहेव ।

°गोयमा ! एवं वुच्चइ—असुरकुमारा सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा अपरिग्गहा° ।।

१८६ एव जाव[1] थणियकुमारा । एगिदिया जहा[2] नेरइया ।।

१८७ बेइदिया ण भंते ! कि सारंभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारभा अपरिग्गहा ? त चेव[3] बेइदिया ण पुढविकाय समारभति जाव[4] तसकायं समारभति, सरीरा परिग्गहिया भवति, कम्मा परिग्गहिया भवंति, बाहिरा[5] भंड-मत्तोवगरणा परिग्गहिया भवति, 'सचित्ताचित्त-मीसयाइ दव्वाइ परिग्गहियाइ भवति'[6] ।।

१८८. एव जाव[7] चउरिदिया ।।

१८९. पचिदियतिरिक्खजोणिया ण भते ! कि सारंभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारभा अपरिग्गहा ?

तं चेव जाव[8] कम्मा परिग्गहिया भवति, टका कूडा सेला सिहरी पब्भारा परिग्गहिया भवंति, जल-थल-बिल-गुह-लेणा परिग्गहिया भवति,उज्झर-निज्झर चिल्लल-पल्लल[9]-वप्पिणा परिग्गहिया भवति, अगड-तडाग[10]-दह-नईओ वावी-पुक्खरिणीदीहिया गुजालिया सरा सरपतियाओ सरसरपतियाओ बिलपतियाओ परिग्गहियाओ भवंति, आरामुज्जाण[11]-काणणा वणा वणसडा वणराईओ[12] परिग्गहियाओ भवति, देवउल-सभ-पव-थूभ-खाइय-परिखाओ परिग्गहियाओ भवति, पागार-अट्टालग-चरिय-दार-गोपुरा परिग्गहिया भवति, पासाद-घर-सरण-लेण- आवणा परिग्गहिया भवति, सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहा परिग्गहिया भवति, सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-सदमाणियाओ परिग्गहियाओ भवति, लोही-लोहकडाह-कडुच्छया परिग्गहिया भवति, भवणा परिग्गहिया भवति, देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्ख-जोणिया तिरिक्खजोणिणीओ परिग्गहिया भवति, आसण-सयण-खंभ-भंड-सचित्ताचित्त-मीसयाइ दव्वाइ परिग्गहियाइ भवति । से तेणट्ठेण ।।

१९० जहा तिरिक्खजोणिया तहा मणुस्सा वि भाणियव्वा । वाणमतर-जोइस-वेमाणिया जहा भवणवासी तहा नेयव्वा[13] ।।

---

१. पू० प० २ ।
२ भ० ५।१८२, १८३ ।
३. ४. भ० ५।१८३ ।
५ बाहिरिया (अ, क, ब, म, स) ।
६. × (अ) ।
७. भ० २।१३८ ।
८. भ० ५।१८३ ।
९. पिल्लव (ब) ।
१०. तलाग (क, ता, ब, म) ।
११. °मुज्जाणा (क, ब, स) ।
१२. वणरातीओ (अ, ता, स) ।
१३. भ० ५।१८४, १८५ ।

हेउ-पदं

१९१. पंच[1] हेऊ पण्णत्ता, तं जहा—हेउं जाणइ, हेउं पासइ, हेउ बुज्झइ, हेउं अभिसमागच्छइ, हेउ छउमत्थमरण मरइ ॥

१९२. पंच हेऊ पण्णत्ता, त जहा—हेउणा जाणइ जाव[2] हेउणा छउमत्थमरण मरइ ॥

१९३. पच हेऊ पण्हत्ता, त जहा—हेउ ण जाणइ जाव[3] हेउ अण्णाणमरण मरइ ॥

१९४ पच हेऊ पण्णत्ता, त जहा—हेउणा ण जाणइ जाव[4] हेउणा अण्णाणमरण मरइ ॥

१९५. पच अहेऊ पण्णत्ता, त जहा—अहेउं जाणइ जाव[5] अहेउ केवलिमरण मरइ ॥

१९६. पच अहेऊ पण्णत्ता, त जहा—अहेउणा जाणइ जाव[6] अहेउणा केवलिमरण मरइ ॥

१९७. पच अहेऊ पण्णत्ता, त जहा—अहेउ न जाणइ जाव[7] अहेउ छउमत्थमरण मरइ ॥

१९८. पंच अहेऊ पण्णत्ता, त जहा—अहेउणा न जाणइ जाव[8] अहेउणा छउमत्थमरणं मरइ ॥

१९९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[9] ॥

अट्ठमो उद्देसो

नियठिपुत्त-नारयपुत्त-पद

२००. तेण कालेणं तेण समएणं जाव[10] परिसा पडिगया ॥

२०१. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी नारयपुत्ते नाम अणगारे पगइभद्दए जाव[11] विहरति ।
तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी नियंठिपुत्ते नाम अणगारे पगइभद्दए जाव विहरति ।

---

१ स्थानाङ्गस्य पचमस्थाने (७५-८२) एतानि अष्टसूत्राणि क्रमभेदेन तथा किञ्चित् पाठभेदेन लभ्यन्ते ।
२. भ० ५।१९१ ।
३. भ० ५।१९१ ।
४. भ० ५।१९१ ।
५. भ० ५।१९१ ।
६ भ० ५।१९१ ।
७. भ० ५।१९१ ।
८ भ० ५।१९१ ।
९. भ० १।५१ ।
१०. भ० १।४-८ ।
११. भ० १।२८८ ।

तए णं से नियंठिपुत्ते अणगारे जेणामेव नारयपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नारयपुत्तं अणगार एव वयासी—सव्वपोग्गला ते अज्जो ! किं सअड्ढा समज्झा सपएसा ? उदाहु अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?

अज्जो ! त्ति नारयपुत्ते अणगारे नियठिपुत्त अणगारं एवं वयासी—सव्वपोग्गला मे अज्जो ! सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा।

२०२. तए णं से नियठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगार एवं वयासी—जइ णं ते अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा, कि—

दव्वादेसेण अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?

खेत्तादेसेण अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा [1]•समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?•

कालादेसेणं [2]•अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?•

भावादेसेण [3]•अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?•

तए ण से नारयपुत्ते अणगारे नियठिपुत्तं अणगारं एवं वयासी—दव्वादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा,

'खेत्तादेसेण वि, कालादेसेण वि, भावादेसेण वि'[4]॥

२०३. तए ण से नियंठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगार एवं वयासी—जइण अज्जो ! दव्वादेसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा, एव ते परमाणुपोग्गले वि सअड्ढे समज्झे सपएसे, नो अणड्ढे अमज्झे अपएसे।

जइ ण अज्जो खेत्तादेसेण वि सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, एव ते एगपएसोगाढे वि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे।

जइ णं अज्जो ! कालादेसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, एव ते एगसमयट्ठितीए वि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे[5]।

---

१. स० पा०—तह चेव।
२. स० पा०—तं चेव।
३. स० पा०—तहेव।
४. एव खेत्तकालभावादेसेण वि नेतव्वं (ता)।
५. सपएसे ३ त चेव (अ, क, ता, स)।

जइ णं अज्जो ! भावादेसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, एवं ते एगगुणकालए वि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे[1]।
अह ते एव न भवति तो जं वयसि 'दव्वादेसेण वि सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा, एव खेत्तादेसेण वि, कालादेसेण वि, भावादेसेण वि' त णं मिच्छा ।।

२०४. तए ण से नारयपुत्ते अणगारे नियठिपुत्त अणगारं एवं वयासी—नो खलु एवं[2] देवाणुप्पिया ! एयमट्ठ जाणामो-पासामो । जइ णं देवाणुप्पिया नो गिलायति परिकहित्तए, त इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाणित्तए ।।

२०५. तए ण से नियठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी—दव्वादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वे पोग्गला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणता ।
खेत्तादेसेण वि[3] °मे अज्जो ! सव्वे पोग्गला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणता ।
कालादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वे पोग्गला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणता ।
भावादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वे पोग्गला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणंता ।°
जे दव्वओ अपएसे से खेत्तओ नियमा अपएसे, कालओ सिय सपएसे सिय-अपएसे, भावओ सिय सपएसे सिय अपएसे ।
जे खेत्तओ अपएसे से दव्वओ सिय सपएसे सिय अपएसे, कालओ भयणाए, भावओ भयणाए ।
जहा खेत्तओ एव कालओ, भावओ ।
जे दव्वओ सपएसे से खेत्तओ सिय सपएसे सिय अपएसे । एव कालओ, भावओ वि ।
जे खेत्तओ सपएसे से दव्वओ नियमा सपएसे, कालओ भयणाए, भावओ भयणाए ।
जहा दव्वओ तहा कालओ, भावओ वि ।।

२०६. एएसि ण भंते ! पोग्गलाणं दव्वादेसेण, खेत्तादेसेणं, कालादेसेणं, भावादेसेणं सपएसाणं अपएसाण य कयरे कयरेहितो[4] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
नारयपुत्ता ! सव्वत्थोवा पोग्गला भावादेसेण अपएसा, कालादेसेणं अपएसा असखेज्जगुणा, दव्वादेसेण अपएसा असखेज्जगुणा, खेत्तादेसेण अपएसा असंखे-

---

१. सपएसे ३ त चेव (अ, क, ता, स) ।
२. एय (अ, क, ता, ब); × (स) ।
३ सं० पा० खेत्तादेसेण वि एव चेव कालदेसेण वि भावादेसेण वि एव चेव ।
४. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

ज्जगुणा, खेत्तादेसेणं चेव सपएसा असंखेज्जगुणा, दव्वादेसेणं सपएसा विसेसाहिया, कालादेसेणं सपएसा विसेसाहिया, भावादेसेणं सपएसा विसेसाहिया ॥

२०७. तए णं से नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेति, खामेत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

जीवाणं-वड्ढि-हाणि-अवट्ठिइ-पदं

२०८. भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं[1] •भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता• एवं वयासी—जीवा णं भंते ! किं वड्ढंति ? हायंति ? अवट्ठिया ?
गोयमा ! जीवा नो वड्ढंति, नो हायंति, अवट्ठिया ॥

२०९. नेरइया णं भंते ! किं वड्ढंति ? हायंति ? अवट्ठिया ?
गोयमा ! नेरइया वड्ढंति वि, हायंति वि, अवट्ठिया वि ॥

२१०. जहा नेरइया एवं जाव[2] वेमाणिया ॥

२११. सिद्धा णं भंते ! पुच्छा।
गोयमा ! सिद्धा वड्ढंति, नो हायंति, अवट्ठिया वि ॥

२१२. जीवा णं भंते ! केवतियं कालं अवट्ठिया ?
गोयमा ! सव्वद्धं ॥

२१३. नेरइया णं भंते ! केवतियं कालं वड्ढंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं ॥

२१४. एवं हायंति वि[3] ॥

२१५. नेरइया णं भंते ! केवतियं कालं अवट्ठिया ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउवीसं मुहुत्ता ॥

२१६. एवं 'सत्तसु वि'[4] पुढवीसु 'वड्ढंति, हायंति' भाणियव्वं, नवरं—अवट्ठिएसु इमं नाणत्तं, तं जहा—रयणप्पभाए पुढवीए अडयालीसं मुहुत्ता, सक्करप्पभाए चोद्दस राइंदिया[5], वालुयप्पभाए मासं, पंकप्पभाए दो मासा, धूमप्पभाए चत्तारि मासा, तमाए अट्ठ मासा, तमतमाए बारस मासा ॥

२१७. असुरकुमारा वि वड्ढंति, हायंति जहा नेरइया। अवट्ठिया जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अट्ठचत्तालीसं[6] मुहुत्ता ॥

२१८. एवं दसविहा वि ॥

---

१. सं० पा०—समणं जाव एवं।
२. पू० प० २।
३. वा (अ, क, ता, स)।
४. सत्त (ता)।
५. राइंदियाइं (अ, क, व, म); राइंदिया ए (स)।
६. अडतालीसं (ता)।

२१९ एगिदिया वड्ढति वि, हायति वि अवट्ठिया वि। एएहि तिहि वि जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभागं[1] ॥

२२०. बेइदिया[2] 'वड्ढति, हायति' तहेव, अवट्ठिया जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेणं दो अतोमुहुत्ता ॥

२२१. एव जाव[3] चउरिदिया ॥

२२२. अवसेसा सव्वे 'वड्ढति, हायति' तहेव, अवट्ठियाण नाणत्त इम, त जहा— समुच्छिमपचिदियतिरिक्खजोणियाण दो अतोमुहुत्ता, गब्भवक्कतियाणं चउव्वीस मुहुत्ता, समुच्छिममणुस्साण अट्ठचत्तालीस मुहुत्ता, गब्भवक्कतियमणुस्साण चउवीस मुहुत्ता, वाणमतर-जोतिसिय[4]-सोहम्मीसाणेसु अट्ठचत्तालीसं मुहुत्ता, सणकुमारे अट्ठारस राइदियाइ चत्तालीस य मुहुत्ता, माहिदे चउवीसं राइदियाइ वीस य मुहुत्ता, बभलोए पचचत्तालीसं राइदियाइ, लतए नउइ[5] राइदियाइ, महासुक्के सट्ठि[6] राइदियसय, सहस्सारे दो राइदियसयाइं, आणय-पाणयाण सखेज्जा मासा, आरणच्चुयाणं सखेज्जाइं वासाइं, एव गेवेज्जदेवाण[7], विजय-वेजयत-जयत-अपराजियाण असखेज्जाइ वाससहस्साइ, सव्वट्ठसिद्धे पलिओवमस्स सखेज्जइभागो।

एव भाणियव्व —'वड्ढति, हायति जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असखेज्जइभाग, अवट्ठियाण ज भणिय'[8] ॥

२२३. सिद्धा ण भते ! केवइय काल वड्ढति ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेणं अट्ठ समया ॥

२२४ केवइय काल अवट्ठिया ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण छम्मासा ॥

जीवाणं सोवचय-सावचयादि-पदं

२२५. जीवा णं भते ! कि सोवचया ? सावचया ? सोवचय-सावचया ? निरुवचय-निरवचया ?
गोयमा ! जीवा नो सोवचया, नो सावचया, नो सोवचय-सावचया, निरुवचय-निरवचया।
एगिदिया ततियपदे, सेसा जीवा चउहि वि[9] पदेहि भाणियव्वा ॥

---

१ असखेज्जभाग (क, ब, म)।
२ वेंतिदिया (अ, स)।
३. भ० २।१३८।
४. जोतिस (अ, क, स)।
५. नउयं (अ, स)।
६ सट्ठ (ता, ब)।
७ गेवेज्जग० (ता)।
८ एतद् निगमनवाक्य तेन पूर्वोक्तस्य पुनरुक्तमस्ति।
९. × (अ, क, स)।

२२६. सिद्धा णं भंते ! पुच्छा ।
गोयमा ! सिद्धा सोवचया, नो सावचया, नो सोवचय-सावचया, निरुवचय-निरवचया ॥

२२७. जीवा ण भंते ! केवतियं काल निरुवचय-निरवचया ?
गोयमा ! सव्वद्धं ॥

२२८. नेरइया णं भंते ! केवतियं कालं सोवचया ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्क समयं, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग ॥

२२९. केवतियं कालं सावचया ?
एवं चेव ॥

२३०. केवतियं कालं सोवचय-सावचया ?
एव चेव ॥

२३१. केवतियं कालं निरुवचय-निरवचया ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ।
एगिंदिया सव्वे सोवचय-सावचया सव्वद्धं । सेसा सव्वे सोवचया वि, सावचया वि, सोवचय-सावचया वि[1], जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेण आवलियाए असंखेज्जइभागं । अवट्ठिएहि वक्कंतिकालो भाणियव्वो ॥

२३२. सिद्धा ण भते ! केवतियं काल सोवचया ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समयं, उक्कोसेणं अट्ठ समया ॥

२३३. केवतिय काल निरुवचय-निरवचया ?
जहण्णेण एक्क समयं, उक्कोसेणं छ मासा ॥

२३४. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

---

१. वि निरुवचय-निरवचया वि (क, ब, स) । २. भ० १।५१ ।

नवमो उद्देसो

किमिदंरायगिह-पदं

२३५. तेण कालेणं तेण समएणं जाव[1] एवं वयासी—किमिदं[2] भंते ! नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं पुढवी नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं आऊ नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ[3] ? •किं तेऊ वाऊ वणस्सई नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं टंका कूडा सेला सिहरी पब्भारा नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं जल-थल-बिल-गुह-लेणा नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं उज्झर-निज्झर-चिल्लल-पल्लल-वप्पिणा नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं अगड-तडाग दह-नईओ वावी-पुक्खरिणी-दीहिया गुंजालिया सरा सरपंतियाओ सरसरपंतियाओ बिलपंतियाओ नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं आरामुज्जाण-काणणा वणा वणसंडा वणराईओ नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं देवउल-सभ-पव-थूभ-खाइय-परिखाओ नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं पागार-अट्टालग-चरिय-दार-गोपुरा नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं पासाद-घर-सरण-लेण-आवणा नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहा नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-संदमाणियाओ नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं लोही-लोहकडाह-कडुच्छुया नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं भवणा नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं सयण-खंभ-भंड•-सचित्ताचित्त-मीसयाइं दव्वाइं नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ?

गोयमा ! पुढवि वि नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ जाव सचित्ताचित्त-मीसयाइं दव्वाइं नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ॥

२३६. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! पुढवी जीवा इ य, अजीवा इ य नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ जाव सचित्ताचित्त-मीसयाइं दव्वाइं जीवा इ य, अजीवा इ य नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ । से तेणट्ठेणं तं चेव ॥

उज्जोय-अंधयार-पदं

२३७. से नूणं भंते ! दिया उज्जोए ? राइं अंधयारे ?
हंता गोयमा[4] ! •दिया उज्जोए, राइं• अंधयारे ॥

---

१. भ० १।४-१० ।
२. किमिय (क); किमित (ब, म) ।
३. सं० पा०—पवुच्चइ जाव वणस्सई ? जहा—एयणुद्देसए पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं वत्तव्वया तहा भाणियव्वा जाव सचित्ताचित्त ।
४. सं० पा०—गोयमा जाव अंधयारे ।

२३८. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! दिया सुभा पोग्गला सुभे पोग्गलपरिणामे, राइं[1] असुभा पोग्गला असुभे पोग्गलपरिणामे। से तेणट्ठेण ॥

२३९. नेरइयाणं भंते ! किं उज्जोए ? अंधयारे ?
गोयमा ! नेरइयाण नो उज्जोए, अंधयारे ॥

२४०. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! नेरइयाण असुभा पोग्गला असुभे पोग्गलपरिणामे। से तेणट्ठेण ॥

२४१. असुरकुमाराण भंते ! किं उज्जोए ? अंधयारे ?
गोयमा ! असुरकुमाराणं उज्जोए, नो अंधयारे ॥

२४२. से केणट्ठेण ? गोयमा ! असुरकुमाराणं सुभा पोग्गला सुभे पोग्गलपरिणामे। से तेणट्ठेणं। जाव[2] थणियकुमाराणं[3] ॥

२४३. पुढविक्काइया जाव[4] तेइंदिया 'जहा नेरइया[5]' ॥

२४४. चउरिंदियाण भंते ! किं उज्जोए ? अंधयारे ?
गोयमा ! उज्जोए वि, अंधयारे वि ॥

२४५. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! चउरिंदियाणं सुभासुभा य पोग्गला सुभासुभे य पोग्गलपरिणामे। से तेणट्ठेण ॥

२४६. एवं जाव[6] मणुस्साण ॥

२४७. वाणमंतर-जोइस वेमाणिया जहा असुरकुमारा[7] ॥

मणुस्सखेत्ते समयादि-पद[8]

२४८ अत्थि ण भंते ! नेरइयाणं तत्थगयाणं एव पण्णायए, तं जहा—समया इ वा, आवलिया इ वा जाव[8] ओसप्पिणी इ वा, उस्सप्पिणी इ वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ॥

२४९. से केणट्ठेण[9] °भंते ! एव वुच्चइ—नेरइयाण तत्थगयाण नो एव पण्णायए, तं जहा°—समया इ वा, आवलिया इ वा जाव[10] ओसप्पिणी इ वा, उस्सप्पिणी इ वा ?
गोयमा ! इहं तेसिं माण, इहं तेसिं पमाण, इह तेसिं एव पण्णायए, तं जहा—समया इ वा जाव उस्सप्पिणी इ वा। से तेणट्ठेण जाव नो एव पण्णायए, तं जहा—समया इ वा जाव उस्सप्पिणी इ वा ॥

---

१. रत्तिं (ता, ब, म)।
२. जाव एव वुच्चइ जाव (अ, क, ता, ब, म, स)
३. थणियाण (क, ता, ब, म, स)।
४. पू० प० २।
५. नेरइया जहा (क, ता, ब, म); भ० ५।२३९, २४०।
६. पू० प० २।
७. भ० ५।२४१, २४२।
८. ठा० २।३८७-३८९।
९. स० पा०—केणट्ठेण जाव समया।
१०. ठा० २।३८७-३८९।

२५०. एवं जाव[1] पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं ॥

२५१. अत्थि णं भंते ! मणुस्साणं इहगयाणं एवं पण्णायते[2], तं जहा—समया इ वा जाव[3] उस्सप्पिणी इ वा ?
हंता अत्थि ॥

२५२. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! इहं तेसिं माणं, इहं तेसिं पमाणं, इहं चेव तेसिं एवं पण्णायते, तं जहा—समया इ वा जाव[4] उस्सप्पिणी इ वा । से तेणट्ठेणं ॥

२५३. वाणमंतर-जोइस-वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं[5] ॥

पासावच्चिज्ज-पदं

२५४. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूर-सामंते ठिच्चा एवं वयासी—से नूणं भंते ! असंखेज्जे लोए अणंता राइंदिया उप्पज्जिंसु वा, उप्पज्जंति वा, उप्पज्जिस्संति वा ? विगच्छिंसु[6] वा, विगच्छंति वा, विगच्छिस्संति वा ? परित्ता राइंदिया उप्पज्जिंसु वा, उप्पज्जंति वा, उप्पज्जि-स्संति वा ? विगच्छिंसु वा, विगच्छंति वा, विगच्छिस्संति वा ?
हंता अज्जो ! असंखेज्जे लोए अणंता राइंदिया तं चेव ॥

२५५. से केणट्ठेणं जाव विगच्छिस्संति वा ?
से नूणं भे अज्जो ! पासेणं अरहया पुरिसादाणिएणं सासए लोए वुइए—अणा-दीए अणवदग्गे परित्ते परिवुडे हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्झे संखित्ते, उप्पिं विसाले, अहे पलियंकसंठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठिए । तंसि च णं सासयंसि लोगंसि अणादियंसि अणवदग्गंसि परित्तंसि परिवुडंसि हेट्ठा विच्छिण्णंसि, मज्झे संखित्तंसि, उप्पिं विसालंसि, अहे पलियंकसंठियंसि, मज्झे वरवइरविग्गहियंसि, उप्पिंउद्धमुइंगाकारसंठियंसि अणंता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयंति, परित्ता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयंति । से भूए[7] उप्पण्णे विगए परिणए, अजीवेहिं लोक्कइ पलोक्कइ, जे लोक्कइ से लोए ?
हंता भगवं ! से तेणट्ठेणं अज्जो ! एवं वुच्चइ—असंखेज्जे लोए अणंता राइंदिया तं चेव ।

---

१. पू० प० २ ।
२. पण्णायति (अ, क, व, म); पण्णायइ ता ।
३. ठा० २।३८७-३८६ ।
४. ठा० २।३८७-३८६ ।
५. भ० ५।२४८-२४६ ।
६. विगिच्छिंसु (अ, ता, म) ।
७. नूण (स) ।

तप्पभिइं च णं ते पासावच्चेज्जा थेरा भगवंतो समणं भगवं महावीरं पच्चभिजाणंति सव्वण्णू सव्वदरिसी ॥

२५६. तए णं ते थेरा भगवंतो समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

२५७. तए णं ते पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति जाव[1] चरिमेहिं उस्सास-निस्सासेहिं सिद्धा[2] •बुद्धा मुक्का परिनिव्वुडा° सव्वदुक्खप्पहीणा । अत्थेगतिया देवलोएसु[3] उववण्णा ॥

देवलोय-पदं

२५८. कइविहा णं भंते ! देवलोगा पण्णत्ता ?

गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी 'वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियभेदेणं'[4] ।

भवणवासी दसविहा, वाणमंतरा अट्ठविहा, जोतिसिया पंचविहा वेमाणिया दुविहा ।

संगहणी-गाहा

किमिदं रायगिहं ति य, उज्जोए अंधयार-समए य ।
पासंतिवासिपुच्छा, रातिंदिय देवलोगा य ॥१॥

२५९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[5] ॥

दसमो उद्देसो

२६०. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नगरी, जहा पढमिल्लो उद्देसओ[6] तहा नेयव्वो एसो वि, नवरं—चंदिमा भाणियव्वा ॥

---

१. भ० १।४३३ ।
२. सं० पा०—सिद्धा जाव सव्व° ।
३. देवा देवलोएसु (अ, क, ता, ब, म) ।
४. वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया भेदेणं (अ, ता, म) ।
५. भ० १।५१ ।
६. अस्यैव शतकस्य ।

छट्ठं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. वेदण २. आहार ३. महस्सवे य ४. सपदेश ५. तमुए[1] ६. भविए।
७. साली ८ पुढवी ९ 'कम्म १०. अण्णउत्थि'[2] दस छट्ठगम्मि सए ॥१॥

पसत्थनिज्जराए सेयत्त-पदं

१ से नूण भंते ! जे महावेदणे से महानिज्जरे ? जे महानिज्जरे से महावेदणे ? महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे पसत्थनिज्जराए ?
हंता गोयमा ! जे महावेदणे[3] •से महानिज्जरे, जे महानिज्जरे से महावेदणे, महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे पसत्थनिज्जराए° ॥

२. छट्ठ-सत्तमासु णं भंते ! पुढवीसु नेरइया महावेदणा ?
हंता महावेदणा ॥

३. ते णं भंते ! समणेहिंतो निग्गंथेहिंतो महानिज्जरतरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४. से केणं खाइ अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जे महावेदणे[4] •से महानिज्जरे ? जे महानिज्जरे से महावेदणे ? महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे° पसत्थ-निज्जराए ?
गोयमा ! से जहानामए दुवे वत्था सिया—एगे वत्थे कद्दमरागरत्ते, एगे वत्थे खंजणरागरत्ते। एएसि णं गोयमा ! दोण्हं वत्थाणं कयरे वत्थे दुद्धोयतराए चेव, दुवामतराए चेव, दुपरिकम्मतराए चेव; कयरे वा वत्थे सुद्धोयतराए चेव,

---

१. तमुयाए (क्व०)।
२. कम्मण्णउत्थि (क, ता, व, म)।
३. सं० पा०—एव चेव।
४. सं० पा०—महावेदणे जाव पसत्थनिज्जराए

सुवामतराए चेव, सुपरिकम्मतराए चेव, जे वा से वत्थे कद्दमरागरत्ते ? जे वा से वत्थे खजणरागरत्ते ?

भगव ! तत्थ णं जे से[1] कद्दमरागरत्ते, से ण वत्थे[2] दुद्धोयतराए चेव, दुवामतराए चेव, दुप्परिकम्मतराए चेव, एवामेव गोयमा ! नेरइयाण पावाइ कम्माइ गाढीकयाइं, चिक्कणीकयाइं[3], सिलिट्ठीकयाइं[4], खिलीभूताइं[5] भवति । सपगाढं पि य ण ते वेदण वेदेमाणा नो महानिज्जरा, नो महापज्जवसाणा भवति ।

से जहा वा केइ पुरिसे अहिगरणि आउडेमाणे[6] महया-महया सद्देण, महया-महया घोसेण, महया-महया परपराघाएण नो संचाएइ तीसे अहिगरणीए केइ अहाबायरे पोग्गले परिसाडित्तए, एवामेव गोयमा ! नेरइयाण पावाइ कम्माइ गाढीकयाइं[7], °चिक्कणीकयाइ, सिलिट्ठीकयाइं, खिलीभूताइ भवति । सपगाढ पि य ण ते वेदण वेदेमाणा नो महानिज्जरा,° नो महापज्जवसाणा[8] भवति ।

भगव ! तत्थ जे से[9] खजणरागरत्ते, से ण वत्थे सुद्धोयतराए चेव, सुवामतराए चेव, सुपरिकम्मतराए चेव, एवामेव गोयमा ! समणाण निग्गथाण अहाबायराइ कम्माइ सिढिलीकयाइ, निट्ठियाइ कयाइं[10], विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइ भवंति । जावतिय तावतिय पि ण ते वेदण वेदेमाणा महानिज्जरा, महापज्जवसाणा भवति ।

से जहानामए केइ पुरिसे सुक्कं तणहत्थय जायतेयंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा !

से सुक्के तणहत्थए जायतेयसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जति ?

हंता मसमसाविज्जति ।

एवामेव गोयमा ! समणाण निग्गथाण अहाबायराइ कम्माइ[11], °सिढिलीकयाइं, निट्ठियाइ कयाइ, विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइ भवंति । जावतिय तावतियं पि णं ते वेदणं वेदेमाणा महानिज्जरा,° महापज्जवसाणा भवति ।

से जहानामए केइ पुरिसे तत्तसि अयकवल्लसि उदगबिदु[12] °पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! से उदगबिदु तत्तसि अयकवल्लसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव विद्धसमागच्छइ ?°

हता विद्धसमागच्छइ ।

---

१. से वत्थे (क, ब, म) ।
२. भंते (ब, म) ।
३. × (अ) ।
४. सिढिलीकयाइ (म, स) ।
५. खिलीकयाइ (अ, स) ।
६. आकोडेमाणे (अ, क, ता, न, म, स) ।
७ स० पा०—गाढीकयाइ जाव नो ।
८. °साणाइ (अ, स) ।
९. से वत्थे (अ, क, ता, ब, म, स) ।
१०. कडाइ (अ, क, ता, ब, म, स) ।
११. सं० पा०—कम्माइ जाव महा° ।
१२. स० पा०—उदगबिदु जाव हता ।

एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं[1] •अहाबायराइं कम्माइं, सिढिलीकयाइ, निट्ठियाइ कयाइ, विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइं भवंति। जावतियं तावतिय पि ण ते वेदण वेदेमाणा महानिज्जरा,° महापज्जवसाणा भवति। से तेणट्ठेण जे महावेदणे से महानिज्जरे[2] •जे महानिज्जरे से महावेदणे, महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे पसत्थ° निज्जराए ॥

करण-पद[3]

५. कतिविहे णं भते ! करणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे करणे पण्णत्ते, त जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे कम्मकरणे ॥

६ नेरइयाण भते ! कतिविहे करणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे ॥

७. एव पचिदियाण सव्वेसि चउव्विहे करणे पण्णत्ते।
एगिदियाणं दुविहे—कायकरणे य, कम्मकरणे य।
विगलिदियाण तिविहे—वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे।

८. नेरइयाण भते ! कि करणओ असाय वेदण वेदेंति ? अकरणओ असायं वेदण वेदेति ?
गोयमा ! नेरइया णं करणओ असायं वेदण वेदेंति, नो अकरणओ असायं वेदण वेदेति ॥

९. से केणट्ठेण ? गोयमा ! नेरइया ण चउव्विहे करणे पण्णत्ते, त जहा—मणकरणे वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे। इच्चेएणं चउव्विहेण असुभेणं करणेण नेरइया करणओ अस्साय वेदणं वेदेंति, नो अकरणओ। से तेणट्ठेण ॥

१०. असुरकुमारा ण कि करणओ ? अकरणओ ?
गोयमा ! करणओ, नो अकरणओ ॥

११. से केणट्ठेण ? गोयमा ! असुरकुमाराणं चउव्विहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे। इच्चेएणं सुभेण करणेणं असुरकुमारा करणओ सातं वेदणं वेदेति, नो अकरणओ ॥

१२. एवं जाव[3] थणियकुमारा ॥

---

१. सं० पा०—निग्गथाण जाव महा°।
२. सं० पा०—महानिज्जरे जाव निज्जराए।
३. पू० प० २।

१३. पुढवीकाइयाणं एवामेव पुच्छा, नवरं—इच्चेएणं सुभासुभेणं[1] करणेणं पुढविक्का-इया करणओ वेमायाए वेदणं वेदेंति, नो अकरणओ ॥

१४. ओरालियसरीरा सव्वे सुभासुभेणं वेमायाए[2]।
देवा सुभेणं सायं ॥

महावेदणा-महानिज्जरा-चउभंग-पदं

१५. जीवा णं भंते ! किं महावेदणा महानिज्जरा ? महावेदणा अप्पनिज्जरा ? अप्पवेदणा महानिज्जरा ? अप्पवेदणा अप्पनिज्जरा ?
गोयमा ! अत्थेगतिया जीवा महावेदणा महानिज्जरा, अत्थेगतिया जीवा महा-वेदणा अप्पनिज्जरा, अत्थेगतिया जीवा अप्पवेदणा महानिज्जरा, अत्थेगतिया जीवा अप्पवेदणा अप्पनिजरा ॥

१६. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! पडिमापडिवन्नए अणगारे महावेदणे महानिज्जरे। छट्ठ-सत्तमासु[3] पुढवीसु नेरइया महावेदणा अप्पनिज्जरा। सेलेसिं पडिवन्नए अणगारे अप्पवेदणे महानिज्जरे। अणुत्तरोववाइया देवा अप्पवेदणा अप्पनिज्जरा ॥

१७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4]।

संगहणी-गाहा

महावेदणे य वत्थे, कद्दम-खजणकए य अहिगरणी।
तणहत्थे य कवल्ले, करण-महावेदणा जीवा[5] ॥१॥

---

१. असुभेणं (म)।
२. विविधमात्रया कदाचित् सातास्, कदाचित् असातामित्यर्थः (वृ)।
३. सत्तमीसु (क, ता, ब, म)।
४. भ० १।५१।
५. अतोग्रे 'सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति' पाठः सर्वेषु आदर्शेषु अस्ति, किन्तु संग्रहणी-गाथाया अनन्तरं अस्य किं प्रयोजनं न ज्ञायते।

बीओ उद्देसो

१८. रायगिहं नगरं जाव[1] एवं वयासी—आहारुद्देसओ जो पण्णवणाए[2] सो सव्वो निरवसेसो नेयव्वो ॥

१९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

तइओ उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. बहुकम्म २. वत्थपोग्गल-पयोगसा-वीससा य ३ सादीए ।
४ कम्मट्ठिति ५ त्थि ६. संजय ७ सम्मदिट्ठी य ८. सन्नी य ॥१॥
९ भविए १०.दसण ११ पज्जत्त १२ भासय १३ परित्ते १४.नाण १५ जोगेय ।
१६, १७. उवओगाहारग १८. सुहुम १९. चरिमबंधे य २० अप्पबहुं ॥२॥

महाकम्मादीणं पोग्गलबंधादि-पदं

२० से नूण भंते ! 'महाकम्मस्स, महाकिरियस्स, महासवस्स'[4], 'महावेदणस्स सव्वओ पोग्गला बज्झति, सव्वओ पोग्गला चिज्जति, सव्वओ पोग्गला उवचिज्जति; सया समिय पोग्गला बज्झति, सया समियं पोग्गला चिज्जति, सया समिय पोग्गला उवचिज्जति; सया समिय च ण तस्स आया दुरूवत्ताए दुवण्णत्ताए दुगंधत्ताए दुरसत्ताए दुफासत्ताए, अणिट्ठत्ताए अकंतत्ताए अप्पियत्ताए असुभत्ताए अमणुण्णत्ताए अमणामत्ताए अणिच्छियत्ताए अभिज्झियत्ताए अहत्ताए—नो उड्ढत्ताए, दुक्खत्ताए—नो सुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ?
हंता गोयमा ! महाकम्मस्स त चेव ॥

२१. से केणट्ठेण ? गोयमा ! से जहानामए वत्थस्स अहयस्स वा, धोयस्स वा, ततुग्गयस्स वा आणुपुव्वीए परिभुज्जमाणस्स सव्वओ पोग्गला वज्झति, सव्वओ पोग्गला चिज्जति जाव[6] परिणमति से तेणट्ठेणं ॥

---

१. भ० १।४-१० ।
२. प० २८ ।
३. भ० १।५१ ।
४. महस्सवस्स (ता, म) ।
५ महाकम्मस्स महासवस्स महाकिरियस्स (अ); महासवस्स, महाकम्मस्स महाकिरियस्स (क, ता, म, स) ।
६. भ० ६।२० ।

अप्पकम्मादीणं पोग्गलभेदादि-पदं

२२ से नूणं भंते ! अप्पकम्मस्स, अप्पकिरियस्स, अप्पासवस्स, अप्पवेदणस्स सव्वओ पोग्गला भिज्जंति, सव्वओ पोग्गला छिज्जंति, सव्वओ पोग्गला विद्धंसंति, सव्वओ पोग्गला परिविद्धंसंति; सया समियं पोग्गला भिज्जंति, सया समियं पोग्गला छिज्जंति, सया समियं पोग्गला विद्धंस्संति, सया समियं पोग्गला परिविद्धंस्संति; सया समियं च णं तस्स आया सुरूवत्ताए[1] •सुवण्णत्ताए सुगंधत्ताए सुरसत्ताए सुफासत्ताए इट्ठत्ताए कंतत्ताए पियत्ताए सुभत्ताए मणुण्णत्ताए मणामत्ताए इच्छियत्ताए अणभिज्झियत्ताए उड्ढत्ताए—नो अहत्ताए•, सुहत्ताए—नो दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ?
हंता गोयमा ! जाव परिणमंति ॥

२३. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! से जहानामए वत्थस्स जल्लियस्स वा, पंकियस्स वा, मइल्लियस्स वा, रइल्लियस्स[2] वा आणुपुव्वीए परिकम्मिज्जमाणस्स सुद्धेणं वारिणा धोव्वेमाणस्स[3] सव्वओ पोग्गला भिज्जंति जाव[4] परिणमंति। से तेणट्ठेणं ॥

कम्मोवचय-पदं

२४. वत्थस्स णं भंते ! पोग्गलोवचए किं पयोगसा ? वीससा ?
गोयमा ! पयोगसा वि, वीससा वि ॥

२५. जहा णं भंते ! वत्थस्स णं पोग्गलोवचए पयोगसा वि, वीससा वि, तहा णं 'जीवाणं कम्मोवचए'[5] किं पयोगसा ? वीससा ?
गोयमा ! पयोगसा[6], नो वीससा ॥

२६. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जीवाणं तिविहे पयोगे पण्णत्ते, तं जहा—मणप्पयोगे, वइप्पयोगे, कायप्पयोगे। इच्चेएणं तिविहेणं पयोगेणं जीवाणं कम्मोवचए पयोगसा, नो वीससा।
एवं सव्वेसिं पंचिंदियाणं तिविहे पयोगे भाणियव्वे।
पुढवीकाइयाणं एगविहेणं पयोगेणं, एवं जाव[7] वणस्सइकाइयाणं।
विगलिंदियाणं दुविहे पयोगे पण्णत्ते, तं जहा—वइपयोगे,[8] कायपयोगे य।

---

१. सं० पा०—पसत्थं नेयव्वं जाव सुहत्ताए।
२. रतिल्लियस्स (ब, म, स)।
३. धोव्व० (अ, क, ब, म)।
४. भ० ६।२२।
५. भंते ! जीवस्स पुग्गलोवचए (ब)।
६. पओगसा (स)।
७. भ० १।४३७।
८. वय० (क, ब, म, स)।

इच्चेएण दुविहेण पयोगेणं कम्मोवचए पयोगसा, नो वीससा। से तेणट्ठेण[1] •गोयमा ! एव वुच्चइ—जीवाणं कम्मोवचए पयोगसा°, नो वीससा। 'एव जस्स जो पयोगो जाव वेमाणियाण'[2] ॥

कम्मोवचयस्स सादि-अनादित्त-पद

२७ वत्थस्स ण भते ! पोग्गलोवचए कि सादीए सपज्जवसिए ? सादीए अपज्जवसिए ? अणादीए सपज्जवसिए ? अणादीए अपज्जवसिए ?
गोयमा ! वत्थस्स ण पोग्गलोवचए सादीए सपज्जवसिए, नो सादीए अपज्जवसिए, नो अणादीए सपज्जवसिए, नो अणादीए अपज्जवसिए ॥

२८ जहा ण भते ! वत्थस्स पोग्गलोवचए सादीए सपज्जवसिए, नो सादीए अपज्जवसिए, नो अणादीए सपज्जवसिए, नो अणादीए अपज्जवसिए, तहा ण जीवाण कम्मोवचए पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतियाण जीवाण कम्मोवचए सादीए सपज्जवसिए, अत्थेगतियाणं अणादीए सपज्जवसिए, अत्थेगतियाण अणादीए अपज्जवसिए, नो चेव ण जीवाण कम्मोवचए सादीए अपज्जवसिए ॥

२९ से केणट्ठेण ? गोयमा ! इरियावहियबधयस्स[3] कम्मोवचए सादीए सपज्जवसिए, भवसिद्धियस्स कम्मोवचए अणादीए सपज्जवसिए, अभवसिद्धियस्स कम्मोवचए अणादीए अपज्जवसिए। से तेणट्ठेण ॥

जीवाणं सादि-अनादित्त-पदं

३० वत्थे ण भते ! कि सादीए सपज्जवसिए—चउभगो ?
गोयमा ! वत्थे सादीए सपज्जवसिए, अवसेसा 'तिण्णि वि'[4] पडिसेहेयव्वा ॥

३१. जहा ण भते ! वत्थे सादीए सपज्जवसिए, नो सादीए अपज्जवसिए, नो अणादीए सपज्जवसिए, नो अणादीए अपज्जवसिए, तहा ण जीवा किं सादीया सपज्जवसिया ? चउभगो—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिया सादीया सपज्जवसिया—चत्तारि वि भाणियव्वा ॥

३२ से केणट्ठेण ? गोयमा ! नेरतिय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवा गतिरागतिं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, सिद्धा गति पडुच्च सादीया अपज्जवसिया, भवसिद्धिया लद्धि पडुच्च अणादीया सपज्जवसिया, अभवसिद्धिया संसार पडुच्च अणादीया अपज्जवसिया। से तेणट्ठेण ॥

---

१. स० पा०—तेणट्ठेण जाव नो।
२ एतद् द्विरुक्तमिव आभाति।
३. रिया° (अ, ता, व, म)।
४. × (अ), तिण्णि (क, ता, व, म)।

कम्मपगडी बंध विवेयण-पदं

३३. कति णं भंते ! कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—१. नाणावरणिज्जं २. दरिसणावरणिज्जं[1] •३. वेदणिज्जं ४. मोहणिज्ज ५. आउगं ६. नाम ७. गोयं° ८. अंतराइयं ॥

३४. नाणावरणिज्जस्स णं भते ! कम्मस्स केवतियं कालं बधट्ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण तीस सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइ अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।
[2]•दरिसणावरणिज्जं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ° ।
वेदणिज्जं जहण्णेणं दो समया, उक्कोसेणं[3] •तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ° ।
मोहणिज्ज जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ, सत्त य वाससहस्साणि अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।
आउगं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाणि पुव्वकोडितिभागमब्भहियाणि, कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।
नाम-गोयाण जहण्णेण अट्ठ मुहुत्ता, उक्कोसेण वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, दोण्णि य वाससहस्साणि अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।
अंतराइय[4] •जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण तीस सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ° ॥

३५ नाणावरणिज्ज[5] ण भंते ! कम्मं किं इत्थी बधइ ? पुरिसो बधइ ? नपुसओ बधइ ? नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुसओ बधइ ?
गोयमा ! इत्थी वि बधइ, पुरिसो वि बधइ, नपुसओ वि बंधइ । नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुसओ सिय बधइ सिय नो बधइ ।
एव आउगवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ ॥

३६ आउगं णं भते ! कम्म कि इत्थी बधइ ? पुरिसो बधइ ? नपुसओ बधइ ? 'नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुंसओ बधइ ?'[6]

---

१. दसरा° (ब); सं० पा०—दरिसरणावरणिज्ज जाव अतराइय ।
२. स० पा०—एव दरिसरणावरणिज्जं पि ।
३. सं० पा०—जहा नाणावरणिज्ज ।
४. स० पा०—जहा नाणावरणिज्ज ।
५. नाणावरणिज्जे (अ, स) ।
६. पुच्छा (अ, क, ता, ब, म, स) ।

गोयमा ! इत्थी सिय बधइ, सिय नो बंधइ।[1] •पुरिसो सिय बंधइ, सिय नो बधइ। नपुसओ सिय बंधइ, सिय नो बधइ।° नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुसओ न बधइ॥

३७ नाणावरणिज्ज णं भते ! कम्मं किं सजए बंधइ ? अस्संजए बधइ ? सजयासजए बधइ ? नोसजए नोअसंजए नोसजयासजए बधइ ?

गोयमा ! सजए सिय बधइ, सिय नो बधइ। अस्संजए बंधइ, संजयासजए वि बधइ। नोसजए नोअस्सजए नो संजयासजए न बधइ।

एव आउगवज्जाओ सत्त वि। आउगे हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए, उवरिल्ले न बंधइ॥

३८ नाणावरणिज्ज णं भंते ! कम्मं किं सम्मदिट्ठी बंधइ ? मिच्छदिट्ठी[2] बंधइ ? सम्मामिच्छदिट्ठी बधइ ?

गोयमा ! सम्मदिट्ठी सिय बधइ, सिय नो बधइ। मिच्छदिट्ठी बंधइ, सम्मामिच्छदिट्ठी बधइ।

एवं आउगवज्जाओ सत्त वि। आउगे हेट्ठिल्ला दो भयणाए, सम्मामिच्छदिट्ठी न बधइ॥

३९. नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्मं कि सण्णी बधइ ? असण्णी बधइ ? नोसण्णी नोअसण्णी बधइ ?

गोयमा ! सण्णी सिय बंधइ, सिय नो बधइ। असण्णी बंधइ। नोसण्णी नोअसण्णी न बंधइ।

एव वेदणिज्जाउगवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ। वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला दो बधंति, उवरिल्ले भयणाए। आउग हेट्ठिल्ला दो भयणाए, उवरिल्ले न बधइ॥

४०. नाणावरणिज्जं णं भते ! कम्म कि भवसिद्धिए बधइ ? अभवसिद्धिए बधइ ? नोभवसिद्धिए नोअभवसिद्धिए बंधइ ?

गोयमा ! भवसिद्धिए भयणाए, अभवसिद्धिए बधइ। नोभवसिद्धिए नोअभवसिद्धिए न बधइ।

एव आउगवज्जाओ सत्त वि। आउग हेट्ठिल्ला दो भयणाए। उवरिल्ले न बधइ॥

४१ नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म कि चक्खुदंसणी बधइ ? अचक्खुदसणी बंधइ ? ओहिदसणी बधइ ? केवलदसणी बधइ ?

गोयमा ! हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए, उवरिल्ले न बधइ।

एव वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि। वेदणिज्ज हेट्ठिल्ला तिण्णि बंधति, केवलदसणी भयणाए॥

---

१. स० पा०—एव तिण्णि वि भाणियव्वा। २. मिच्छा° (क)।

४२. नाणावरणिज्ज णं भंते ! कम्मं किं पज्जत्तए बंधइ ? अपज्जत्तए बंधइ ? नोपज्जत्तए नोअपज्जत्तए बंधइ ?
गोयमा ! पज्जत्तए भयणाए, अपज्जत्तए बंधइ । नोपज्जत्तए नोअपज्जत्तए न बंधइ ।
एवं आउगवज्जाओ सत्त वि । आउगं हेट्ठिल्ला दो भयणाए, उवरिल्ले न बंधइ ॥

४३. नाणावरणिज्ज णं भंते ! कम्मं किं भासए बंधइ ? अभासए बंधइ ?
गोयमा ! दो वि भयणाए ।
एवं वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि । वेदणिज्जं भासए बंधइ, अभासए भयणाए ॥

४४. नाणावरणिज्ज णं भंते ! कम्मं किं परित्ते बंधइ ? अपरित्ते बंधइ ? नोपरित्ते नोअपरित्ते बंधइ ? गोयमा ! परित्ते भयणाए, अपरित्ते बंधइ । नोपरित्ते नोअपरित्ते न बंधइ । एवं आउगवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ । आउय[1] परित्ते वि, अपरित्ते वि भयणाए, नोपरित्ते नोअपरित्ते न बंधइ ॥

४५. नाणावरणिज्ज णं भंते ! कम्मं किं आभिणिबोहियनाणी बंधइ ? सुयनाणी बंधइ ? ओहिनाणी बंधइ ? मणपज्जवनाणी बंधइ ? केवलनाणी बंधइ ?
गोयमा ! हेट्ठिल्ला चत्तारि भयणाए । केवलनाणी न बंधइ ।
एवं वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि । वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला चत्तारि बंधंति, केवलनाणी भयणाए ॥

४६. नाणावरणिज्ज णं भंते ! कम्मं किं मइअण्णाणी बंधइ ? सुयअण्णाणी बंधइ ? विभंगनाणी बंधइ ?
गोयमा ! आउगवज्जाओ सत्तवि बंधंति, आउगं भयणाए ॥

४७. नाणावरणिज्ज णं भंते ! कम्मं किं मणजोगी बंधइ ? वइजोगी[2] बंधइ ? कायजोगी बंधइ ? अजोगी बंधइ ?
गोयमा ! हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए, अजोगी न बंधइ ।
एवं वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि । वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला बंधंति, अजोगी न बंधइ ॥

४८. नाणावरणिज्ज णं भंते ! कम्मं किं सागारोवउत्ते[3] बंधइ ? अणागारोवउत्ते बंधइ ?
गोयमा ! अट्ठसु वि भयणाए ॥

४९. नाणावरणिज्ज णं भंते ! कम्मं किं आहारए बंधइ ? अणाहारए बंधइ ?
गोयमा ! दो वि भयणाए ।
एवं वेदणिज्जाउगवज्जाणं छण्हं । वेदणिज्जं आहारए बंधइ, अणाहारए भयणाए । आउए आहारए भयणाए, अणाहारए न बंधइ ॥

---

१. आउए (अ, ब, स) ।
२. वय° (म, स) ।
३. सागारोवयुत्ते (अ, स) ।

५०. नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं सुहुमे बंधइ ? बादरे बंधइ ? नोसुहुमे नोबादरे बंधइ ?
गोयमा ! सुहुमे बंधइ, बादरे भयणाए। नोसुहुमे नोबादरे न बंधइ।
एवं आउगवज्जाओ सत्त वि। आउगं सुहुमे वादरे भयणाए। नोसुहुमे नोबादरे न बंधइ॥

५१ नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं चरिमे बंधइ ? अचरिमे बंधइ ?
गोयमा ! अट्ठ वि भयणाए॥

वेदगावेदगाणं जीवाणं अप्पाबहुयत्त-पदं

५२. एएसि णं भंते ! जीवाणं इत्थीवेदगाणं पुरिसवेदगाणं, नपुंसगवेदगाणं, अवेदगाण य कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?॰
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पुरिसवेदगा, इत्थिवेदगा संखेज्जगुणा, अवेदगा अणंतगुणा, नपुंसगवेदगा अणंतगुणा।
एएसि सव्वेसि पदाणं[2] अप्प-बहुगाइं उच्चारेयव्वाइं जाव[3] सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा, चरिमा अणंतगुणा॥

५३ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4]॥

चउत्थो उद्देसो

कालादेसेणं सपदेस-अपदेस-पदं

५४. जीवे णं भंते ! कालादेसेणं किं सपदेसे ? अपदेसे ?
गोयमा ! नियमा सपदेसे॥

५५. नेरइए णं भंते ! कालादेसेणं किं सपदेसे ? अपदेसे ?
गोयमा ! सिय सपदेसे, सिय अपदेसे॥

५६. एवं जाव[5] सिद्धे॥

५७ जीवा णं भंते ! कालादेसेणं किं सपदेसा ? अपदेसा ?
गोयमा ! नियमा सपदेसा॥

---

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
२. भ० ६।३७-५१।
३. प० ३।
४. भ० १।५१।
५. पू० प० २।

५८. नेरइया णं भंते ! कालादेसेणं किं सपदेसा ? अपदेसा ?
गोयमा ! १. सव्वे वि ताव होज्जा सपदेसा २ अहवा सपदेसा य अपदेसे य ३. अहवा सपदेसा य अपदेसा य ॥

५९. एवं जाव[1] थणियकुमारा ॥

६०. पुढविकाइया णं भंते ! किं सपदेसा ? अपदेसा ?
गोयमा ! सपदेसा वि, अपदेसा वि ॥

६१. एवं जाव[2] वणप्फइकाइया[3] ॥

६२. सेसा जहा[4] नेरइया तहा जाव[5] सिद्धा ॥

६३. आहारगाणं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। अणाहारगाणं जीवेगिंदियवज्जा[6] छब्भंगा एवं भाणियव्वा—१. सपदेसा वा २. अपदेसा वा ३ अहवा सपदेसे य अपदेसे य ४. अहवा सपदेसे य अपदेसा य ५. अहवा सपदेसा य अपदेसे य ६. अहवा सपदेसा य अपदेसा य। सिद्धेहिं तियभंगो।
भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया जहा[7] ओहिया। नोभवसिद्धिय-नोअभवसिद्धिय-जीव-सिद्धेहिं तियभंगो।
सण्णीहिं जीवादिओ तियभंगो। असण्णीहिं एगिंदियवज्जो तियभंगो। नेरइयदेव-मणुएहिं छब्भंगो। नोसण्णि-नोअसण्णि-जीव-मणुय-सिद्धेहिं तियभंगो।
सलेसा जहा ओहिया। कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा जहा आहारओ, नवरं—जस्स अत्थि एयाओ। तेउलेस्साए जीवादिओ तियभंगो, नवरं—पुढविक्काइएसु, आउवणप्फतीसु छब्भंगा। पम्हलेस्स-सुक्कलेस्साए जीवादिओ तियभंगो। अलेसेहिं जीव-सिद्धेहिं तियभंगो। मणुएसु छब्भंगा।
सम्मद्दिट्ठीहिं जीवादिओ तियभंगो। विगलिंदिएसु छब्भंगा। मिच्छद्दिट्ठीहिं एगिंदियवज्जो तियभंगो। सम्मामिच्छद्दिट्ठीहिं छब्भंगा। संजएहिं जीवादिओ तियभंगो। अस्संजएहिं[8] एगिंदियवज्जो तियभंगो। संजयासंजएहिं तियभंगो जीवादिओ। नोसंजय-नोअसंजय-नोसंजयासंजय-जीव-सिद्धेहिं तियभंगो।
सकसाईहिं[9] जीवादिओ तियभंगो। एगिंदिएसु अभंगकं। कोहकसाईहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। देवेहिं छब्भंगा। माणकसाई-मायाकसाईहिं जीवेगि-

---

१. पू० प० २।
२. पू० प० २।
३. वणस्सइ० (क)।
४. भ० ६।५५, ५८।
५. पू० प० २।
६. जीवपदे एकेन्द्रियपदे च सपएसा य अप्पएसा य इत्येवरूप. एक एव भगक', बहूना विग्रहगत्यापन्नाना सप्रदेशानामप्रदेशानां च लाभात् (वृ)।
७. भ० ६।५४, ५७।
८. असजएहिं (क, म)।
९. सकसादीहिं (ता)।

दियवज्जो तियभंगो। नेरइय-देवेहिं छब्भंगा। लोभकसाईहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। नेरइएसु छब्भंगा अकसाई-जीव-मणुएहिं, सिद्धेहिं तियभंगो।

ओहियनाणे, आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे जीवादिओ तियभंगो। विगलिंदिएहिं छब्भंगा। ओहिनाणे 'मणपज्जवनाणे केवलनाणे'[1] जीवादिओ तियभंगो। ओहिए अण्णाणे, मइअण्णाणे, सुयअण्णाणे, एगिंदियवज्जो तियभंगो। विभंगनाणे जीवादिओ तियभंगो।

सजोगी[2] जहा ओहिओ, मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी जीवादिओ तियभंगो, नवरं—कायजोगी एगिंदिया, तेसु अभंगयं[3]। अजोगी जहा अलेस्सा।

सागारोवउत्त-अणागारोवउत्तेहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो।

सवेदगा जहा सकसाई। इत्थिवेदग-पुरिसवेदग-नपुंसगवेदगेसु जीवादिओ तियभंगो, नवरं—नपुंसगवेदे एगिंदिएसु अभंगयं। अवेदगा जहा अकसाई।

ससरीरी जहा ओहिओ। ओरालिय-वेउव्वियसरीराणं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। आहारगसरीरे जीव-मणुएसु छब्भंगा, तेयग-कम्मगाइं[4] जहा ओहिया। असरीरेहिं जीव-सिद्धेहिं तियभंगो।

आहारपज्जत्तीए, सरीरपज्जत्तीए, इंदियपज्जत्तीए, आणापाणपज्जत्तीए[5] जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, भासा[6]-मणपज्जत्तीए जहा सण्णी। आहार-अपज्जत्तीए जहा अणाहारगा, सरीर-अपज्जत्तीए, इंदिय-अपज्जत्तीए, आणापाण-अपज्जत्तीए जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, नेरइय-देव-मणुएहिं छब्भंगा, भासा-मणअपज्जत्तीए जीवादिओ तियभंगो, नेरइय-देव-मणुएहिं छब्भंगा।

संगहणी-गाहा

सपदेसाहारग-भविय-सण्णि-लेसा-दिट्ठि-संजय-कसाए।
नाणे जोगुवओगे, वेदे य सरीर-पज्जत्ती ॥१॥

पच्चक्खाणादि-पदं

६४. जीवा णं भंते! किं पच्चक्खाणी? अपच्चक्खाणी? पच्चक्खाणापच्चक्खाणी? गोयमा! जीवा पच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी वि॥

---

१. मणकेवलनाणे (अ, क, ता, म, स)।
२ सजोति (ता)।
३. अभगग (ता)।
४. कम्माइ (अ, ता, म); कम्मगाण (स)।
५. आणापाणु° (क, ता, ब, म)।
६. भास (अ, क, ता, ब)।

६५. सव्वजीवाणं एवं पुच्छा।
गोयमा ! नेरइया अपच्चक्खाणी जाव[1] चउरिंदिया [सेसा दो पडिसेहेयव्वा[2]]। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नो पच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी वि। मणूसा तिण्णि वि। सेसा जहा नेरइया॥

६६. जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणं जाणंति ? अपच्चक्खाणं जाणंति ? पच्चक्खाणापच्चक्खाणं जाणंति ?
गोयमा ! जे पंचिंदिया ते तिण्णि वि जाणंति, अवसेसा 'पच्चक्खाणं न जाणंति'[3], अपच्चक्खाणं न जाणंति, पच्चक्खाणापच्चक्खाणं न जाणंति॥

६७. जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणं कुव्वंति ? अपच्चक्खाणं कुव्वंति ? पच्चक्खाणापच्चक्खाणं कुव्वंति ?
जहा ओहिओ तहा कुव्वणा॥

६८. जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ? अपच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ? पच्चक्खाणापच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ?
गोयमा ! जीवा य, वेमाणिया य पच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया, तिण्णि वि। अवसेसा अपच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया।

संगहणी-गाहा

१. पच्चक्खाणं २ जाणइ, ३. कुव्वइ तिण्णेव ४. आउनिव्वत्ती।
सपएसुद्देसम्मि य, एमेए दंडगा चउरो॥१॥

६९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4]॥

पंचमो उद्देसो

तमुक्काय-पदं

७०. किमियं भंते ! तमुक्काए त्ति पवुच्चति ? किं पुढवी[5] तमुक्काए त्ति पवुच्चति ? आऊ[6] तमुक्काए त्ति पवुच्चति ?
गोयमा ! नो पुढवि तमुक्काए त्ति पवुच्चति, आऊ तमुक्काए त्ति पवुच्चति॥

---

१. पू० प० २।
२. असौ कोष्ठकवर्तिपाठो व्याख्यांश: प्रतीयते।
३. अपच्चक्खाणं जाणंति (ता, म)।
४. भ० १।५१।
५. पुढवि (अ, क, ता, स)।
६. आउ (अ, क, व, म, स)।

७१ से केणट्ठेणं ? गोयमा ! पुढविकाए णं अत्थेगइए सुभे देसं पकासेइ, अत्थेगइए[1] देसं नो पकासेइ । से तेणट्ठेण ।।

७२ तमुक्काए[2] ण भते ! कहि समुट्ठिए ? कहि सनिट्ठिए[3] ?
गोयमा ! जबूदीवस्स दीवस्स बहिया तिरियमसखेज्जे दीव-समुद्दे वीईवइत्ता, अरुणवरस्स दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयताओ अरुणोदय समुद्द बायालीस जोयणसहस्साणि ओगाहित्ता उवरिल्लाओ जलताओ एगपएसियाए सेढीए--एत्थ[4] ण तमुक्काए समुट्ठिए। सत्तरस-एक्कवीसे जोयणसए उड्ढ उप्पइत्ता तओ पच्छा तिरियं पवित्थरमाणे-पवित्थरमाणे सोहम्मीसाण-सणकुमार-माहिदे चत्तारि वि कप्पे आवरित्ता ण उड्ढं पि य ण जाव[5] बभलोगे कप्पे रिट्ठविमाणपत्थड सपत्ते--एत्थ ण तमुक्काए सनिट्ठिए[6] ।।

७३ तमुक्काए ण भते ! किसठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! अहे मल्लग-मूलसठिए, उप्पि कुक्कुडग[7]-पजरगसठिए पण्णत्ते ।।

७४ तमुक्काए ण भते ! केवतिय विक्खभेण, केवतिय परिक्खेवेणं पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा--सखेज्जवित्थडे य, असखेज्जवित्थडे य ।
तत्थ ण जे से सखेज्जवित्थडे, से ण संखेज्जाइं जोयणसहस्साइ विक्खभेण, असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिक्खेवेण पण्णत्ते ।
तत्थ णं जे से असखेज्जवित्थडे, से ण असखेज्जाइं जोयणसहस्साइ विक्खंभेणं, असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिक्खेवेण पण्णत्ते ।।

७५. तमुक्काए ण भते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! अयण्ण[8] जबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण सव्वब्भतराए जाव[9] एग जोयणसयसहस्स आयाम-विक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ सोलससहस्साइ दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीस च धणुसय तेरस अगुलाइ अद्धगुलग च किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते। देवे ण महिड्ढीए जाव[10] महाणुभावे इणामेव-इणामेवत्ति कट्टु केवलकप्प जबूदीव दीव तिहि अच्छरानिवाएहि तिसत्तक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छिज्जा, से ण देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए जाव[11] दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जाव

---

१ × (क, ता) ।
२ तमुकाए (अ, क, ता, ब, म) ।
३. सण्णिट्ठिए (ता) ।
४ तत्थ (अ, स) ।
५ × (अ) ।
६. सनिविट्ठिए (अ, स), सनिहिते (क) ।
७. कुकुडग (म, स) ।
८. अय ण (क, म), अय ण (ता, स) ।
९. ठा० १।२४८ ।
१० भ० ३।४ ।
११. भ० ३।३८ ।

एकाहं वा, दुयाहं वा, तियाहं वा, उक्कोसेण छम्मासे वीईवएज्जा, अत्थेगतिय तमुक्कायं वीईवएज्जा अत्थेगतिय तमुक्कायं नो वीईवएज्जा। एमहालए ण गोयमा ! तमुक्काए पण्णत्ते ॥

७६. अत्थि ण भंते ! तमुक्काए गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ॥

७७. अत्थि णं भंते ! तमुक्काए गामा इ वा ? जाव[1] सण्णिवेसा इ वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ॥

७८. अत्थि ण भंते ! तमुक्काए ओराला बलाहया संसेयंति ? सम्मुच्छंति ? वासं वासंति ?
हंता अत्थि ॥

७९. तं भंते ! किं देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?
गोयमा ! देवो वि पकरेति, असुरो वि पकरेति, नागो[2] वि पकरेति ॥

८०. अत्थि ण भंते ! तमुक्काए बादरे थणियसद्दे ? बादरे विज्जुयारे[3] ?
हंता अत्थि ॥

८१. तं भंते ! किं देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?
तिण्णि वि पकरेंति ॥

८२. अत्थि णं भंते ! तमुक्काए बादरे पुढविकाए ? बादरे अगणिकाए ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, नण्णत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं ॥

८३. अत्थि ण भंते ! तमुक्काए चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, पलियस्सओ पुण अत्थि ॥

८४. अत्थि णं भंते ! तमुक्काए चंदाभा ति वा ? सूराभा ति वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, 'कादूसणिया पुण'[4] सा ॥

८५. तमुक्काए ण भंते ! केरिसए वण्णएण पण्णत्ते ?
गोयमा ! काले कालोभासे गभीरे[5] लोमहरिसजणणे भीमे उत्तासणए परमकिण्हे वण्णेणं पण्णत्ते। देवे वि णं अत्थेगतिए जे णं तप्पढमयाए पासित्ता ण खुभाएज्जा[6], अहेणं अभिसमागच्छेज्जा तओ पच्छा[7] सीहं-सीहं तुरियं-तुरियं खिप्पामेव वीतीवएज्जा ॥

८६. तमुक्कायस्स णं भंते ? कति नामधेज्जा पण्णत्ता ?

---

१. भ० १।४९।
२. नाओ (ता, म)।
३. विज्जयाए (अ); विज्जुए (क, ता, व, म)।
४. काउसणिया पुण (ता)।
५. गभीर (अ, क, ता, ब, स, वृ)।
६. खोभाएज्ज (क, ता, म); खभाएज्जा (स)।
७. एतत् पद वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम्।

गोयमा ! तेरस नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—तमे इ वा, तमुक्काए इ वा, अंधकारे इ वा, महंधकारे इवा, लोगंधकारे इ वा, लोगतमिसे[1] इ वा, देवंधकारे इ वा, देवतमिसे[2] इ वा, देवरण्णे[3] इ वा, देववूहे[4] इ वा, देवफलिहे[5] इ वा, देवपडिक्खोभे इ वा, अरुणोदए इ वा समुद्दे[6] ॥

८७. तमुक्काए णं भंते ! किं पुढविपरिणामे ? आउपरिणामे ? जीवपरिणामे ? पोग्गलपरिणामे ?
गोयमा ! नो पुढविपरिणामे, आउपरिणामे वि, जीवपरिणामे वि, पोग्गलपरिणामे वि ॥

८८. तमुक्काए णं भंते ! सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव[7] तसकाइयत्ताए उववन्नपुव्वा ?
हंता गोयमा ! असतिं[8] अदुवा अणंतक्खुत्तो, नो चेव णं बादरपुढविकाइयत्ताए, बादरअगणिकाइयत्ताए वा ।

कण्हराइ-पदं

८९. कइ णं भंते ! कण्हरातीओ पण्णत्ताओ[9] ?
गोयमा ! अट्ठ कण्हरातीओ पण्णत्ताओ ॥

९०. कहि णं भंते ! एयाओ अट्ठ कण्हरातीओ[10] पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! उप्पिं सणंकुमार-माहिंदाणं कप्पाणं, हव्वि[11] बंभलोए कप्पे 'रिट्ठे विमाणपत्थडे'[12], एत्थ णं अक्खाडग-समचउरंस-संठाणसंठियाओ अट्ठ कण्हरातीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पुरत्थिमे णं दो, पच्चत्थिमे णं दो, दाहिणे णं दो, उत्तरे णं दो । पुरत्थिमब्भंतरा[13] कण्हराती दाहिण-बाहिरं कण्हरातिं पुट्ठा, दाहिणब्भंतरा कण्हराती पच्चत्थिम-बाहिरं कण्हरातिं पुट्ठा, पच्चत्थिमब्भंतरा कण्हराती उत्तर-बाहिरं कण्हरातिं पुट्ठा, उत्तरब्भंतरा[14] कण्हराती पुरत्थिम-बाहिरं कण्हरातिं पुट्ठा ।

---

१. °तिमिसे (क, ता, म) ।
२. देवतिमिसे (अ, क, ता, स) ।
३. देवारण्णे (क, ता, ब) ।
४. देवपूहे (ता) ।
५. °पलिहे (ता) ।
६. समुद्देति वा (अ, स) ।
७. भ० १।४३७ ।
८. असइं-असइं (ता) ।
९. द्रष्टव्य—ठा० ८।४३-४७ ।
१०. °रायीतो (ब) ।
११. हेट्ठि (अ, क, ब, म); हिट्ठि (स), स्थानाङ्गसूत्रे (८।४३, वृत्तिपत्र ४१०) अभयदेवसूरिणा 'हेट्ठि त्ति अधस्तात्' ब्रह्मलोकस्य इति व्याख्यातम् । अत्र च (वृत्तिपत्र २७१) 'हव्वि त्ति सम' इति व्याख्यातम् ।
१२. रिट्ठविमाण° (ठा० ८।४३) ।
१३. पुरत्थिमब्भितरा (क) ।
१४. उत्तरमब्भतरा (ब, स) ।

दो पुरत्थिम-पच्चत्थिमाओ बाहिराओ कण्हरातीओ छलंसाओ, दो उत्तर-दाहिणाओ बाहिराओ कण्हरातीओ तसाओ, दो पुरत्थिम-पच्चत्थिमाओ अब्भंतराओ कण्हरातीओ चउरंसाओ, दो उत्तर-दाहिणाओ अब्भंतराओ कण्हरातीओ चउरंसाओ।

संगहणी-गाहा

पुव्वावरा छलंसा, तंसा पुण दाहिणुत्तरा बज्भा।
अब्भतर चउरसा, सव्वा वि य कण्हरातीओ ॥१॥

९१. कण्हरातीओ ण भते ! केवतियं आयामेण ? केवतिय विक्खभेण ? केवतियं परिक्खेवेण पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ आयामेणं, सखेज्जाइं जोयणसहस्साइं विक्खभेणं, असखेज्जाइ जोयणसहस्साइं परिक्खेवेण पण्णत्ताओ ॥

९२. कण्हरातीओ ण भते ! केमहालियाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अयं णं जबुद्दीवे दीवे[1] °जाव[2] देवे ण महिड्ढीए जाव[3] महाणुभावे इणामेव-इणामेव त्ति कट्टु केवलकप्पं जबूदीव दीवं तिहि अच्छरानिवाएहिं तिसत्तक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छिज्जा, से णं देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए जाव[4] दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जाव एकाहं वा, दुयाह वा, तियाहं वा, उक्कोसेण° अद्धमास वीईवएज्जा, अत्थेगइए कण्हराति वीईवएज्जा। अत्थेगइए कण्हराति णो वीईवएज्जा, एमहालियाओ ण गोयमा ! कण्हरातीओ पण्णत्ताओ ॥

९३. अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

९४. अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु गामा इ वा ? जाव[5] सण्णिवेसा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

९५. अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु ओराला वलाहया संसेयंति ? सम्मुच्छंति ? वासं वासति ?
हता अत्थि ॥

९६. तं भंते ! कि देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?
गोयमा ! देवो पकरेति, नो असुरो, नो नागो पकरेति ॥

---

१. स० पा०—दीवे जाव अद्धमासं।
२. भ० ६।७५।
३. भ० ३।४।
४. भ० ३।३८।
५ भ० १।४९ :

९७. अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु बादरे थणियसद्दे ? बादरे विज्जुयारे ?
[1]•हता अत्थि ॥

९८. त भते ! कि देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?
गोयमा ! देवो पकरेति, नो असुरो, नो नागो पकरेति° ॥

९९. अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु बादरे आउकाए ? बादरे अगणिकाए ? बादरे वणप्फइकाए ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, नण्णत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं ॥

१०० अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-ताराख्वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ॥

१०१. अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु चदाभा ति वा ? सुराभा ति वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ॥

१०२. कण्हरातीओ ण भते ! केरिसियाओ वण्णेण पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! कालाओ[2] •कालोभासाओ गभीराओ लोमहरिसजणणाओ भीमाओ उत्तासणाओ परमकिण्हाओ वण्णेण पण्णत्ताओ । देवे वि णं अत्थेगतिए जे ण तप्पढमयाए पासित्ता ण खुभाएज्जा, अहेणं अभिसमागच्छेज्जा तओ पच्छा सीह-सीह तुरिय-तुरिय° खिप्पामेव वीतीवएज्जा ॥

१०३. कण्हराती ण भते ! कति[3] नामधेज्जा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठ नामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—कण्हराती इ वा, मेहराती इ वा, मघा इ वा, माघवई इ वा, वायफलिहा इ वा, वायपलिक्खोभा इ वा, देवफलिहा इ वा, देवपलिक्खोभा इ वा ॥

१०४. कण्हरातीओ ण भते ! कि पुढवीपरिणामाओ ? आउपरिणामाओ ? जीवपरिणामाओ ? पोग्गलपरिणामाओ ?
गोयमा ! पुढविपरिणामाओ, नो आउपरिणामाओ, जीवपरिणामाओ वि, पोग्गलपरिणामाओ वि ॥

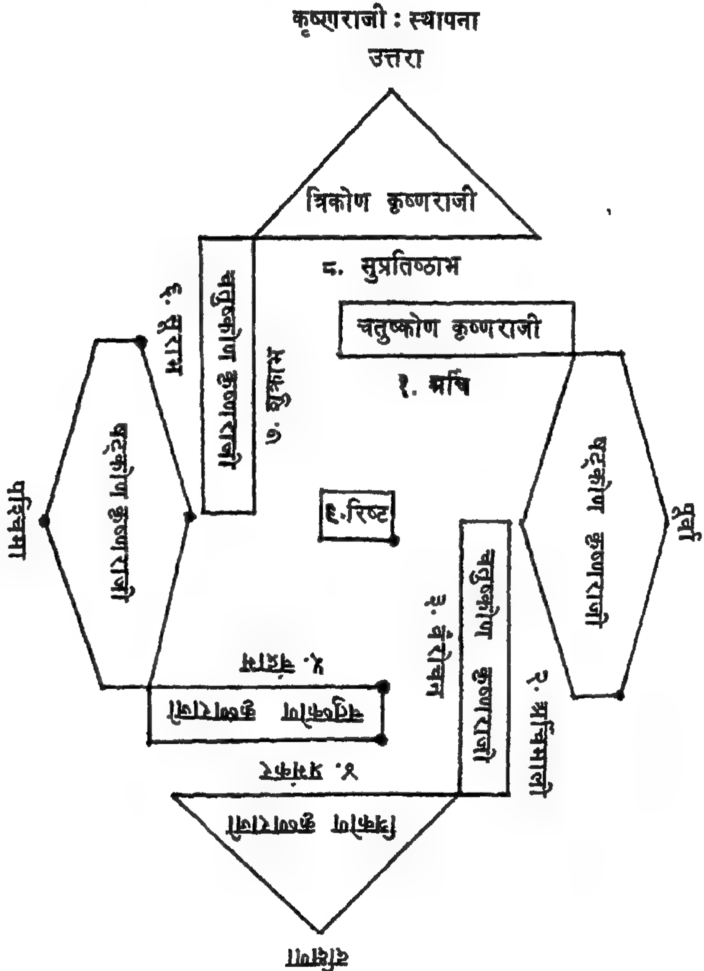
१०५. कण्हरातीसु ण भते ! सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव[4] तसकाइयत्ताए उववण्णपुव्वा ?
हता गोयमा ! असइ अदुवा अणतक्खुत्तो; नो चेव णं बादरआउकाइयत्ताए, बादरअगणिकाइयत्ताए, बादरवणप्फइकाइयत्ताए वा ॥

---

१. स० पा०—जहा ओराला तहा ।
२. स० पा०—कालाओ जाव खिप्पामेव ।
३. केवइया (ता) ।
४. भ० १।४३७ ।

लोगंतियदेव-पदं

१०६. एएसि णं अट्ठण्हं कण्हराईण अट्ठसु ओवासंतरेसु अट्ठ लोगंतिगविमाणा पण्णत्ता, तं जहा—१. अच्ची २. अच्चिमाली ३. वइरोयणे ४ पभंकरे[1] ५. चंदाभे ६. सूराभे ७. सुक्काभे[2] ८ सुपइट्ठाभे, 'मज्झे रिट्ठाभे'[3]॥



१. वभंकरे (ता)।

२. सुकाभे (ता)।

३. इह चावकाशान्तरवर्तिषु अष्टासु अर्चिःप्रभृतिषु विमानेषु वाच्येषु यद् कृष्णराजीनां मध्यमभागवर्ति रिष्टं विमानं नवमं उक्तं तद्विमानप्रस्तावाद् अवसेयम् (वृ)।

१०७ कहि णं भंते ! अच्चि-विमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! उत्तर-पुरत्थिमे णं ॥

१०८. कहि ण भते ! अच्चिमाली विमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पुरत्थिमे ण । एव परिवाडीए नेयव्वं जाव—

१०९. कहि ण भते ! रिट्ठे विमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! बहुमज्झदेसभाए ॥

११०. एएसु ण अट्ठसु लोगंतियविमाणेसु अट्ठविहा लोगंतिया देवा परिवसंति, तं जहा—

संगहणी-गाहा

सारस्सयमाइच्चा, वण्ही वरुणा य गद्दतोया य ।
तुसिया अव्वाबाहा, अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ॥१॥

१११. कहि ण भते ! सारस्सया देवा परिवसंति ?
गोयमा ! अच्चिम्मि विमाणे परिवसंति ॥

११२ कहि णं भंते ! आइच्चा देवा परिवसंति ?
गोयमा ! अच्चिमालिम्मि विमाणे । एवं नेयव्वं जहाणुपुव्वीए जाव—

११३ कहि ण भंते ! रिट्ठा देवा परिवसंति ?
गोयमा ! रिट्ठम्मि विमाणे ॥

११४ सारस्सयमाइच्चाण भंते । देवाण कति देवा, कति देवसया पण्णत्ता ?
गोयमा ! सत्त देवा, सत्त देवसया परिवारो[1] पण्णत्तो ।
वण्ही—वरुणाण देवाण चउद्दस देवा, चउद्दस देवसहस्सा परिवारो पण्णत्तो ।
गद्दतोय—तुसियाण देवाण सत्त देवा, सत्त देवसहस्सा परिवारो पण्णत्तो ।
अवसेसाण नव देवा, नव देवसया परिवारो पण्णत्तो ।

संगहणी-गाहा

पढम-जुगलम्मि सत्तओ, सयाणि बीयम्मि चउद्दससहस्सा ।
तइए सत्तसहस्सा, नव चेव सयाणि सेसेसु ॥१॥

११५. लोगंतिगविमाणा ण भंते ! किंपइट्ठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! वाउपइट्ठिया पण्णत्ता । एव नेयव्वं विमाणाण पइट्ठाणं, बाहुल्लुच्चत्तमेव संठाणं, बंभलोयवत्तव्वया नेयव्वा[2] जाव[3]—

---

१. × (अ, क, ता, ब, म) ।
२. नेयव्वा जहा जीवाभिगमे देवुद्देसए (अ, स)
३. जी० ३ ।

११६. लोयंतियविमाणेसु णं भंते ! सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता पुढविकाइयत्ताए, आउकाइयत्ताए, तेउकाइयत्ताए, वाउकाइयत्ताए, वणस्सइकाइयत्ताए, देवत्ताए, देवित्ताए उववण्णपुव्वा ?
हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतक्खुत्तो, नो चेव णं देवित्ताए[1] ॥
११७. 'लोगंतिय देवाणं'[2] भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठ सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥
११८. लोगंतियविमाणेहिंतो णं भंते ! केवतियं अबाहाए[3] लोगंते पण्णत्ते ?
गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं अबाहाए लोगंते पण्णत्ते ॥
११९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

छट्ठो उद्देसो

नेरइयादीणं आवास-पदं

१२०. कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा जाव[5] अहेसत्तमा[6]। रयणप्पभाईणं आवासा भाणियव्वा जाव[7] अहेसत्तमाए। एवं जत्तिया[8] आवासा ते भाणियव्वा जाव[9]—
१२१. कति णं भंते ! अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता, तं जहा—विजए[10], °वेजयंते, जयंते, अपराजिए° सव्वट्ठसिद्धे ॥

मारणंतियसमुग्घाय-पदं

१२२. जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अण्णयरंसि निरयावासंसि

---

१. देवत्ताए (म, स)।
२. लोगंतियविमाणेसु णं (अ, क, ता, ब, म)।
३. आबाहाए (ता)।
४. भ० १।५१।
५. भ० १।२११।
६. तमतमा (अ, स)।
७. भ० १।२१२।
८. जे जत्तिया (अ, क, ब, म, स)।
९. भ० १।२१३-२१५।
१०. सं० पा०—विजए जाव सव्वट्ठसिद्धे।

नेरइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! तत्थगए च्चेव आहारेज्ज वा ? परिणामेज्ज वा ? सरीर वा बधेज्जा ?

गोयमा ! अत्थेगतिए तत्थगए चेव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीर वा बधेज्जा, अत्थेगतिए तओ पडिनियत्तति[1], ततो पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता दोच्च पि मारणतियसमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अण्णयरसि निरयावाससि नेरइयत्ताए उववज्जित्तए, तओ पच्छा आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीर वा बधेज्जा। एव जाव[2] अहेसत्तमा पुढवी ॥

१२३. जीवे ण भते ! मारणतियसमुग्घाएण समोहए, समोहणित्ता जे भविए चउसट्ठीए असरकुमारावाससयसहस्सेसु अण्णयरसि असुरकुमारावाससि असुरकुमारत्ताए उववज्जित्तए, जहा नेरइया तहा भाणियव्वा जाव[3] थणियकुमारा ॥

१२४ जीवे ण भते ! मारणतियसमुग्घाएण समोहए, समोहणित्ता जे भविए असखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु अण्णयरसि पुढविकाइयावाससि पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते! मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण केवइय गच्छेज्जा ? केवइय पाउणेज्जा ?

गोयमा ! लोयत गच्छेज्जा, लोयत पाउणेज्जा ॥

१२५. से ण भते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा ? परिणामेज्ज वा ? सरीरं वा बधेज्जा ?

गोयमा ! अत्थेगतिए तत्थगए चेव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीर वा बधेज्जा, अत्थेगतिए तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ[4], दोच्च पि मारणतियसमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण अगुलस्स असखेज्जइभागमेत्त वा, सखेज्जइभागमेत्त वा, वालग्ग वा, वालग्गपुहत्त[5] वा; एव लिक्ख-जूय-जव-अगुल जाव[6] जोयणकोडि वा, जोयणकोडाकोडि वा सखेज्जेसु वा असखेज्जेसु वा जोयणसहस्सेसु, लोगते वा एगपएसिय सेढि मोत्तूण असखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु अण्णयरसि पुढविकाइयावाससि पुढविकाइयत्ताए उववज्जेत्ता, तओ पच्छा आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीर वा बधेज्जा।

जहा पुरत्थिमे ण मदरस्स पव्वयस्स आलावओ भणिओ, एव दाहिणे ण, पच्चत्थिमे ण, उत्तरे ण, उड्ढे, अहे।

---

१. नियत्तेति (अ, स)।
२. भ० १।२११।
३. पू० प० २।
४ इह हव्वमा॰ (स)।
५. ॰पुहुत्त (म)।
६ वृ; अ० सू० ४००।

जहा पुढविकाइया तहा एगिंदियाणं सव्वेसिं एक्केक्कस्स छ आलावगा भाणियव्वा।

१२६. जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता जे भविए असंखेज्जेसु बेइंदियावाससयसहस्सेसु अण्णयरंसि बेइंदियावासंसि बेइंदियत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा ? परिणामेज्ज वा ? सरीरं वा बंधेज्जा ?

जहा नेरइया[1], एवं जाव[2] अणुत्तरोववाइया ॥

१२७. जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए, समोहणित्ता जे भविए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु महाविमाणेसु अण्णयरंसि अणुत्तरविमाणंसि अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा ? परिणामेज्ज वा ? सरीरं वा बंधेज्जा ?

तं चेव जाव[3] आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीरं वा बंधेज्जा।

१२८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

सत्तमो उद्देसो

धन्नाणं जोणि-ठिइ-पदं

१२९. अह भंते ! सालीणं, वीहीणं, गोधूमाणं, जवाणं, जवजवाणं—एएसि णं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं ओलित्ताणं[5] लित्ताणं पिहियाणं मुद्दियाणं लंछियाणं केवतियं कालं जोणी संचिट्ठइ ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि संवच्छराइं। तेण परं जोणी पमिलायइ, तेण परं जोणी पविद्धंसइ[6], तेण परं बीए अबीए भवति, तेण परं जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते समणाउसो !

१३०. अह भंते ! कल[7]-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-निप्फाव[8]-कुलत्थ-आलिसंदग-सतीण[9]-पलिमंथगमाईणं[10]—एएसि णं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं

---

१. भ० ६।१२२।
२. भ० १।२१४, २१५।
३. भ० ६।१२२।
४. भ० १।५१।
५. उल्लित्ताणं (स)।
६. विद्धंसेइ (अ, क, स)।
७. कलाव (अ); कलाय (व, स); कालाव (म)
८. निप्पाव (ता, स)।
९. सतीण (अ, व, स)।
१०. तिलिमिंथग० (ता)।

मालाउत्ताणं ओलित्ताण लित्ताणं पिहियाणं मुद्दियाणं लंछियाण केवतियं कालं जोणी सचिट्ठइ ?

[1]•गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पच सवच्छराइं। तेण परं जोणी पमिलायइ, तेण पर जोणी पविद्धसइ, तेण पर बीए अबीए भवति, तेण परं जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते समणाउसो° !

१३१. अह भते ! अयसि-कुसुभग-कोद्दव-कंगु-वरग[2]-रालग-कोद्दूसग[3]-सण-सरिसव-मूलाबीयमाईण[4]—एएसि ण धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताण मंचाउत्ताणं मालाउत्ताण ओलित्ताण लित्ताण पिहियाण मुद्दियाणं लछियाण केवतियं कालं जोणी सचिट्ठइ ?

[5]•गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सत्त संवच्छराइ। तेण परं जोणी पमिलायइ, तेण पर जोणी पविद्धसइ, तेण परं बीए अबीए भवति, तेण परं जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते समणाउसो[6]° !

गणना-काल-पदं

१३२ एगमेगस्स ण भते ! मुहुत्तस्स केवतिया ऊसासद्धा वियाहिया ?

गोयमा ! असखेज्जाण समयाणं समुदय-समिति-समागमेण सा एगा 'आवलिय त्ति'[7] पवुच्चइ, सखेज्जा आवलिया ऊसासो, संखेज्जा आवलिया निस्सासो—

गाहा—

हट्ठस्स अणवगल्लस्स, निरुवकिट्ठस्स[8] जंतुणो।
एगे ऊसास-नीसासे, एस पाणु त्ति वुच्चइ ॥१॥
सत्त पाणूइ[9] से थोवे, सत्त थोवाइं से लवे।
लवाण सत्तहत्तरिए[10], एस मुहुत्ते वियाहिए ॥२॥
तिण्णि सहस्सा सत्त य, सयाइ तेवत्तरिं च ऊसासा।
एस मुहुत्तो दिट्ठो, सव्वेहिं अणंतनाणीहिं ॥३॥

---

१ सं० पा०—जहा सालीण तहा एयाणि वि नवर पच सवच्छराइ सेस त चेव।
२ वरट्ट (ठा० ७।६०)।
३. कोड्सग (व)।
४ मूलग० (अ, क, स)।
५ सं० पा०—एयाणि वि तहेव नवर सत्त सवच्छराइ।
६ तुलना—ठा० ३।१२५, ५।२०६, ७।६०।
७. आवलिया ति (क, ता, व)।
८. णिरवकट्ठस्स (ता)।
६. पाणूणि (अ, स)।
१० सत्तस० (क, ब)।

एएणं मुहुत्तपमाणेणं तीसमुहुत्ता अहोरत्तो, पण्णरस अहोरत्ता पक्खो, दो पक्खा मासो, दो मासा उडू[1], तिण्णि उडू अयणे, दो[2] अयणा संवच्छरे, 'पंच संवच्छराइं'[3] जुगे, वीस जुगाइं वाससयं, दस वाससयाइं वाससहस्सं, सयं वाससहस्साण वाससयसहस्सं, चउरासीइं वाससयसहस्साणि से एगे पुव्वंगे, चउरासीइ पुव्वंगा सयसहस्साइं से एगे पुव्वे, एवं तुडियगे, तुडिए, अडडंगे, अडडे, अववगे, अववे[4],हूहूयगे[5], हूहूए, उप्पलगे, उप्पले, पउमगे, पउमे, नलिणंगे, नलिणे, अत्थनिउरगे, अत्थनिउरे[6],अउयंगे, अउए[7], 'नउयगे, नउए, पउयंगे, पउए'[8] चूलियगे, चूलिया, सीसपहेलियगे, सीसपहेलिया। एताव ताव गणिए, एताव ताव गणियस्स विसए, तेण परं ओवमिए[9]॥

ओवमिय-काल-पदं

१३३. से किं तं ओवमिए ?
ओवमिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पलिओवमे य, सागरोवमे य॥

१३४. 'से किं तं पलिओवमे ? से किं तं सागरोवमे ?'[10]

गाहा—

सत्थेण सुतिक्खेण वि, छेत्तुं भेत्तुं व[11] जं किर न सक्का।
तं परमाणु सिद्धा, वदंति आदिं पमाणाणं॥१॥

अणंताणं परमाणुपोग्गलाणं समुदय-समिति-समागमेणं सा एगा उस्सण्हसण्हिया इ वा, सण्हसण्हिया इ वा, उड्ढरेणू[12] इ वा, तसरेणू इ वा, रहरेणू इ वा, वालग्गे[13] इ वा, लिक्खा इ वा, जूया इ वा, जवमज्झे इ वा, अंगुले इ वा। अट्ठ उस्सण्हसण्हियाओ सा एगा सण्हसण्हिया, अट्ठ सण्हसण्हियाओ सा एगा उड्ढरेणू, अट्ठ उड्ढरेणूओ सा एगा तसरेणू, अट्ठ तसरेणूओ सा एगा रहरेणू, अट्ठ रहरेणूओ से एगे देवकुरु-उत्तरकुरुगाणं मणुस्साणं वालग्गे; 'एवं हरिवास-रम्मग-हेमवय-एरन्नवयाणं, पुव्वविदेहाणं मणुस्साणं अट्ठ वालग्गा सा एगा

---

१. उडू (ता, व)।
२. बे (ता, व)।
३. पंचसवच्छरिए (अ, क, ता, ब, म, स)।
४. अपपे (व, स)।
५. हूहुय (अ, क, स)।
६. °निपूरे (क, ता, व)।
७. अतुए (अ, स); अपुए (क); अज्जुए (व)।
८. पडुए २, नउए २ (अ, ता, स); पज्जुए य° (क), पज्जुए य नज्जुए य (ब)।
९. उवमिए (अ, क, व, म, स)। तुलना—अ० सू० ४१७।
१०. से किं त पलिओवमे सागरोवमे २ (अ, स), से किं त पलितोवमे २ (क, ता)।
११. च (अ, क, ब, म, स, वृ)।
१२. उद्ध० (अ, क, ता, व, म)।
१३. वालग्गा (स)।

लिक्खा"[1], अट्ठ लिक्खाओ सा एगा जूया, अट्ठ जूयाओ से एगे जवमज्झे, अट्ठ जवमज्झा से एगे अंगुले।

एएण अंगुलपमाणेणं छ अंगुलाणि पादो, बारस अंगुलाइं विहत्थी[2], चउवीसं अंगुलाइं रयणी, अडयालीस अंगुलाइं कुच्छी, छन्नउति[3] अंगुलाणि से एगे दंडे इ वा, धणू इ वा, जूए इ वा, नालिया इ वा, अक्खे इ वा, मुसले इ वा।

एएण धणुप्पमाणेण दो धणुसहस्साइं गाउयं, चत्तारि गाउयाइं जोयणं।

एएण जोयणप्पमाणेण जे पल्ले जोयणं आयाम-विक्खंभेणं, जोयणं उड्ढं उच्चत्तेण, तं तिउणं[4], सविसेसं परिरएणं—से णं एगाहिय-बेहिय-तेहिय[5], उक्कोसं सत्तरत्तप्परूढाणं समट्ठे[6] संनिचिए भरिए[7] वालग्गकोडीणं।

ते णं वालग्गे नो अग्गी दहेज्जा, नो वातो हरेज्जा, नो कुच्छेज्जा[8], नो परिविद्धंसेज्जा, नो पूतित्ताए हव्वमागच्छेज्जा।

तओ[9] णं वाससए-वाससए गते[10] एगमेगं वालग्गं अवहाय[11] जावतिएणं कालेणं से पल्ले खीणे निरए निम्मले निट्ठिए निल्लेवे अवहडे विसुद्धे भवइ। से त्तं पलिओवमे।

गाहा—

२. एएसि पल्लाणं, कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया।
तं सागरोवमस्स उ, एक्कस्स भवे परिमाणं॥

---

१. प्रस्तुतपाठे भरतैरवतयोर्मनुष्याणामुल्लेखो नास्ति, अनुयोगद्वारसूत्रे विद्यते। तस्य पूर्णपाठः इत्थमस्ति—
अट्ठ देवकुरु-उत्तरकुरुगाण मणुस्साण वालग्गा हरिवास-रम्मगवासाण मणुस्साणं से एगे वालग्गे।
अट्ठ हरिवास-रम्मगवासाणम णुस्साण वालग्गा हेमवय-हेरण्णवयाण मणुस्साण से एगे वालग्गे।
अट्ठ हेमवय-हेरण्णवयाण मणुस्साण वालग्गा पुव्वविदेह-अवर विदेहाण मणुस्साण से एगे वालग्गे।
अट्ठ पुव्वविदेह-अवरविदेहाण मणुस्साण वालग्गा भरहेरवयाणं मणुस्साण से एगे वालग्गे।
अट्ठ भरहेरवयाणं मणुस्साण वालग्गा सा एगा लिक्खा (अ० सू० ३९९)।

२. वितत्थी (अ)।

३. छण्हउइ (ता)।

४ तिओण (अ)।

५ षष्ठीबहुवचनलोपाद् एकाहिकद्व्याहिकत्र्याहिकाणाम् (वृ)।

६. ससट्ठे (अ, म)।

७. हरिए (ता)।

८. कुत्थेज्जा (अ, व, म)।

९. तए (अ, क)।

१०. × (अ, ता, म, स)।

११. अवहाय २ (ता)।

एएण सागरोवमपमाणेणं चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-सुसमा १. तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमा २ दो[1] सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-दूसमा[2] ३. एगा सागरोवमकोडाकोडी बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणिया कालो दूसम-सुसमा ४. एक्कवीस वाससहस्साइं कालो दूसमा ५ एक्कवीस वाससहस्साइं कालो दूसम-दूसमा ६ ।

पुणरवि उस्सप्पिणीए एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दूसम-दूसमा १. एक्कवीस वाससहस्साइं कालो दूसमा[3] २. °एगा सागरोवमकोडाकोडी बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणिया कालो दूसम-सुसमा ३ दो सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-दूसमा ४. तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमा° ५. चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-सुसमा ६ ।

दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी, दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो उस्सप्पिणी, वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी उस्सप्पिणी य ॥

सुसम-सुसमाए भरहवास-पदं

१३५. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे इमीसे ओसप्पिणीए सुसम-सुसमाए समाए उत्तिमट्ठपत्ताए[4], भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभाव-पडोयारे[5] होत्था ?

गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था, से जहानामए—आलिंगपुक्खरे ति वा, एवं उत्तरकुरुवत्तव्वया नेयव्वा जाव[6] तत्थ णं बहवे भारया मणुस्सा मणुस्सीओ य आसयंति सयंति चिट्ठंति निसीयंति तुयट्टंति हसंति रमंति ललंति । तीसे णं समाए भारहे वासे तत्थ-तत्थ देसे-देसे तहिं-तहिं बहवे उद्दाला कोद्दाला जाव[7] कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूला जाव[8] छव्विहा मणुस्सा अणुसज्जित्था, तं जहा—पम्हगंधा, मियगंधा, अममा, तेतली[9], सहा, सणिचारी ॥

१३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[10] ॥

---

१. दुण्णि (क) ।
२. दुसमा (ता, स) ।
३. सं० पा०—दूसमा जाव चत्तारि ।
४. उत्तमट्ठ० (स) ।
५. पडोगारे (ता, ब, म) ।
६. जी० ३; जं० २ ।
७. जी० ३; जं० २ ।
८. जी० ३; जं० २ ।
९. तेयतली (ब) ।
१०. भ० १।५१ ।

अट्ठमो उद्देसो

पुढवी-आदिसु गेहादिपुच्छा-पद

१३७. कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा जाव[1] ईसीपब्भारा ॥

१३८. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१३९. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए अहे गामा इ वा ? जाव[2] सण्णिवेसा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१४०. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे ओराला बलाहया संसेयंति ? संमुच्छंति ? वासं वासंति ?
हंता अत्थि । तिण्णि वि पकरेंति—देवो वि पकरेति, असुरो वि पकरेति, नागो वि पकरेति[3] ॥

१४१. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बादरे थणियसद्दे ?
हंता अत्थि । तिण्णि वि पकरेंति[4] ॥

१४२. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे बादरे अगणिकाए ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, नन्नत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं ॥

१४३. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे चंदिम[5]-°सूरिय-गहगण-नक्खत्त° तारारूवा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१४४. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे चंदाभा ति वा ? सूराभा ति वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।
एवं दोच्चाए पुढवीए भाणियव्वं, एवं तच्चाए वि भाणियव्वं, नवरं—देवो वि पकरेति, असुरो वि पकरेति, नो नागो पकरेति । चउत्थीए वि एवं, नवरं—देवो एक्को पकरेति, नो असुरो, नो नागो । एवं हेट्ठिल्लासु सव्वासु देवो[6] पकरेति ।

---

१. ठा० ८।१०८ ।
२. भ० १।४९ ।
३. द्रष्टव्यम्—भ० ६।७९ ।
४. द्रष्टव्यम्—भ० ६।८१ ।
५. सं० पा०—चंदिम जाव तारारूवा ।
६. देवो एक्को (अ, क, व, म, स) ।

१४५. अत्थि णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं अहे गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१४६. अत्थि णं भंते ! ओराला वलाहया[1] ?
हंता अत्थि ।
देवो पकरेति, असुरो वि पकरेति, नो नाओ ।
एवं थणियसद्दे वि ।।

१४७. अत्थि णं भंते ! वादरे पुढवीकाए ? वादरे अगणिकाए ?
णो इणट्ठे समट्ठे, नन्नत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं ।।

१४८. अत्थि णं भंते ! चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१४९. अत्थि णं भंते ! गामा इ वा ? जाव[2] सण्णिवेसा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१५०. अत्थि णं भंते ! चंदाभा ति वा ? सूराभा ति वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।
एवं सणंकुमार-माहिंदेसु, नवरं—देवो एगो पकरेति । एवं बंभलोए वि । एवं बंभलोगस्स[3] उवरि सव्वेहिं देवो पकरेति । पुच्छियव्वो य वादरे आउकाए, वादरे अगणिकाए, वादरे वणस्सइकाए । अण्णं त चेव ।

संगहणी-गाहा

तमुकाए कप्पपणए, अगणी पुढवी य अगणि-पुढवीसु ।
आऊ तेऊ वणस्सई, कप्पुवरिमकण्हराईसु ।।१।।

आउयबंध-पदं

१५१. कतिविहे णं भंते ! आउयबंधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते, त जहा—जातिनामनिहत्ताउए, गतिनामनिहत्ताउए, ठितिनामनिहत्ताउए, ओगाहणानामनिहत्ताउए, पएसनामनिहत्ताउए, अणुभागनामनिहत्ताउए । दंडओ जाव[4] वेमाणियाणं ।।

१५२. जीवा णं भंते ! किं जातिनामनिहत्ता ? गतिनामनिहत्ता[5] ? °ठितिनामनिहत्ता ? ओगाहणानामनिहत्ता ? पएसनामनिहत्ता ?° अणुभागनामनिहत्ता ?
गोयमा ! जातिनामनिहत्ता वि जाव अणुभागनामनिहत्ता वि । दंडओ जाव[6] वेमाणियाणं ।।

---

१. पू०—भ० ६।७८ ।
२. भ० १।४९ ।
३. बम्ह० (क, व) ।
४. पू० प० २ ।
५. सं० पा०—गतिनामनिहत्ता जाव अणुभाग०
६. पू० प० २ ।

१५३. जीवा णं भंते ! किं जातिनामनिहत्ताउया ? जाव[1] अणुभागनामनिहत्ताउया ? गोयमा ! जातिनामनिहत्ताउया वि जाव अणुभागनामनिहत्ताउया वि। दंडओ जाव[2] वेमाणियाणं ॥

१५४. एवं एए दुवालस दंडगा भाणियव्वा—
जीवा णं भंते ! किं १. जातिनामनिहत्ता ? २. जातिनामनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ३. जातिनामनिउत्ता ? ४. जातिनामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ५ जातिगोयनिहत्ता ? ६. जातिगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ७ जातिगोयनिउत्ता ? ८ जातिगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ९ जातिनामगोयनिहत्ता ? १०. जातिनामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ११ जातिनामगोयनिउत्ता ?
१२ जातिनामगोयनिउत्ताउया ?
जाव[3] ७२. अणुभागनामगोयनिउत्ताउया ?

---

१. भ० ६।१५१। २. पू० प० २।
३. एतद् पदं त्रयोदशभंगात् द्वासप्ततितमपर्यन्तानां भंगानां संग्राहकमस्ति—

जीवा णं भंते ! किं १३ गतिनामनिहत्ता ? १४. गतिनामनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं १५. गतिनामनिउत्ता ? १६ गतिनामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं १७. गतिगोयनिहत्ता ? १८. गतिगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं १९. गतिगोयनिउत्ता ? २०. गतिगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं २१ गतिनामगोयनिहत्ता ? २२. गतिनामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं २३. गतिनामगोयनिउत्ता ? २४. गतिनामगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं २५. ठितिनामनिहत्ता ? २६. ठितिनामनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं २७. ठितिनामनिउत्ता ? २८. ठितिनामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं २९. ठितिगोयनिहत्ता ? ३०. ठितिगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ३१. ठितिगोयनिउत्ता ? ३२. ठितिगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ३३ ठितिनामगोयनिहत्ता ? ३४. ठितिनामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ३५. ठितिनामगोयनिउत्ता ? ३६. ठितिनामगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ३७. ओगाहणानामनिहत्ता ? ३८. ओगाहणानामनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ३९. ओगाहणानामनिउत्ता ? ४०. ओगाहणानामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ४१. ओगाहणागोयनिहत्ता ? ४२. ओगाहणागोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ४३ ओगाहणागोयनिउत्ता? ४४. ओगाहणागोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ४५. ओगाहणानामगोयनिहत्ता ? ४६. ओगाहणानामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ४७. ओगाहणानामगोयनिउत्ता ? ४८. ओगाहणानामगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ४९. पएसनामनिहत्ता ? ५०. पएसनामनिहत्ताउया ?

गोयमा ! जातिनामगोयनिउत्ताउया वि जाव अणुभागनामगोयनिउत्ताउया वि । दंडओ जाव[1] वेमाणियाणं ॥

लवणादिसमुद्द-पदं

१५५. लवणे णं भंते ! समुद्दे किं उस्सिओदए[2] ? पत्थडोदए ? खुभियजले ? अखुभियजले ?
गोयमा ! लवणे णं समुद्दे उस्सिओदए, नो पत्थडोदए, खुभियजले, नो अखुभियजले ॥

१५६. [3]जहा णं भंते ! लवणसमुद्दे उस्सिओदए, नो पत्थडोदए; खुभियजले, नो अखुभियजले; तहा णं बाहिरगा समुद्दा किं उस्सिओदगा ? पत्थडोदगा ? खुभियजला ? अखुभियजला ?
गोयमा ! बाहिरगा समुद्दा नो उस्सिओदगा, पत्थडोदगा; नो खुभियजला, अखुभियजला पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठंति ॥

१५७. अत्थि णं भंते ! लवणसमुद्दे बहवे ओराला बलाहया संसेयंति ? समुच्छंति ? वासं वासंति ?
हंता अत्थि ॥

१५८. जहा णं भंते ! लवणसमुद्दे बहवे ओराला बलाहया संसेयंति, समुच्छंति, वासं वासंति, तहा णं बाहिरगेसु वि समुद्देसु बहवे ओराला बलाहया संसेयंति ? समुच्छंति ? वासं वासंति ?

जीवा णं भंते ! किं ५१. पएसनामनिउत्ता ? ५२. पएसनामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ५३ पएसगोयनिहत्ता ? ५४. पएसगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ५५. पएसगोयनिउत्ता ? ५६. पएसगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ५७. पएसनामगोयनिहत्ता ? ५८. पएसनामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ५९. पएसनामगोयनिउत्ता ? ६०. पएसनामगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६१. अणुभागनामनिहत्ता ? ६२. अणुभागनामनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६३. अणुभागनामनिउत्ता ? ६४ अणुभागनामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६५. अणुभागगोयनिहत्ता ? ६६ अणुभागगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६७. अणुभागगोयनिउत्ता ? ६८. अणुभागगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६९ अणुभागनामगोयनिहत्ता ? ७०. अणुभागनामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ७१. अणुभागनामगोयनिउत्ता ? ७२. अणुभागनामगोयनिउत्ताउया ?

१. पू० प० २ ।
२. उसिओदए (क, म, स) ।
३. सं० पा०—एत्तो आढत्तं जहा जीवाभिगमे जाव से ।

नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१५९. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—बाहिरगा णं समुद्दा पुण्णा जाव[1] समभरघडत्ताए चिट्ठति ?

गोयमा ! बाहिरगेसु ण समुद्देसु बहवे उदगजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमति, विउक्कमति, चयति, उवचयति०। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—बाहिरया णं समुद्दा[2] पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठति, सठाणग्रो एगविहिविहाणा, वित्थारग्रो अणेगविहिविहाणा, दुगुणा, दुगुणप्पमाणा[3] जाव[4] अस्सि तिरियलोए असखेज्जा दीव-समुद्दा सयभूरमणपज्जवसाणा पण्णत्ता समणाउसो !

१६०. दीव-समुद्दा ण भंते ! केवतिया नामधेज्जेहि पण्णत्ता ।

गोयमा ! जावतिया लोए सुभा नामा, सुभा रूवा, सुभा गंधा, सुभा रसा, सुभा फासा, एवतिया ण दीव-समुद्दा नामधेज्जेहि पण्णत्ता । एव नेयव्वा सुभा नामा, उद्धारो, परिणामो, सव्वजीवाणं (उप्पाग्रो[5] ?) ॥

१६१. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति[6] ॥

नवमो उद्देसो

कम्मप्पगडिबंध-पदं

१६२. जीवे ण भंते ! नाणावरणिज्ज कम्मं बधमाणे कति कम्मप्पगडीग्रो बधति ?

गोयमा ! सत्तविहबधए वा, अट्ठविहबंधए वा, छव्विहबधए वा। बधुद्देसो पण्णवणाए नेयव्वो[7] ॥

---

१. भ० ६।१५६ ।

२. दीव-समुद्दा (अ, क, ता, ब, म, स); जीवाभिगमे तृतीयप्रतिपत्तौ 'समुद्दा इत्येवपदमस्ति, तदेवाऽत्र प्रासगिकम् ।

३. ०माणाओ (अ, क, ता, ब, म, स) ।

४. अस्य पूरकपाठ. जीवाभिगमस्य तृतीयप्रतिपत्तौ लभ्यते । स चैवमस्ति—
'पडुप्पाएमाणा-पडुप्पाएमाणा पवित्थरमाणा-पवित्थरमाणा ओभासमाणवीइया बहुउप्पलपउमकुमुयणलिणसुभगसोगंधियपोडरीयमहापोडरीयसयपत्तसहस्सपत्तफुल्लकेसरोवचिया पत्तेय-पत्तेय पउमवरवेइयापरिक्खित्ता पत्तेय-पत्तेय वणसंडपरिक्खित्ता ।

५. सव्वजीवाण ति—सर्वं जीवानां द्वीप-समुद्रेषूत्पादो नेतव्य —इति सूचित वृत्तिकृता। तदनुसृत्यात्र 'सव्वजीवाणं उप्पाओ' इतिपाठो युज्यते ।

६ भ० १।५१ ।

७. प० २४ ।

महिड्ढीयदेव-विकुव्वणा-पदं

१६३. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता[2] पभू एगवण्णं एगरूवं विउव्वित्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१६४. देवे णं भते । बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगवण्णं एगरूवं विउव्वित्तए ?
हंता पभू ॥

१६५. से णं भते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ?
गोयमा ! नो इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति, तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति, नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति।
एवं एएणं गमेणं जाव[3] १. एगवण्णं एगरूवं २. एगवण्ण अणेगरूव ३ अणेगवण्णं एगरूवं ४. अणेगवण्ण अणेगरूवं—चउभंगो ॥

१६६. देवे ण भते ! महिड्ढीए जाव[4] महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू कालगं[5] पोग्गलं नीलगपोग्गलत्ताए[6] परिणामेत्तए ? नीलगं पोग्गलं वा कालगपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे। परियाइत्ता पभू ॥

१६७. से णं भंते ! कि इहगए पोग्गले[7] °परियाइत्ता परिणामेति ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ?
गोयमा ! नो इहगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ।
एव एएणं गमेणं जाव[8] १. एगवण्णं एगरूवं २. एगवण्णं अणेगरूवं ३. अणेगवण्णं एगरूवं ४. अणेगवण्णं अणेगरूवं—चउभंगो° ।
एवं कालगपोग्गल लोहियपोग्गलत्ताए। एवं कालएण जाव सुक्किलं। एवं नीलएणं जाव सुक्किल। एवं 'लोहिएण जाव सुक्किलं'[9]। एवं हालिद्दएणं जाव सुक्किलं। एवं[10] एयाए परिवाडीए गध-रस फासा[11] ।

---

१. भ० ३।४।
२. अपरियादिइत्ता (अ, ता, ब, म)।
३. भ० ६।१६३, १६४।
४. भ० ३।४।
५. कालत (क)।
६. णीलपोग्ग० (अ, क, ता)।
७. सं० पा०—तं चेव नवरं परिणामेति त्ति भाणियव्व।
८. भ० ६।१६३, १६४।
९. लोहियपोग्गल जाव सुक्किलत्ताए (अ, स); लोहियपोग्गलं जाव सुक्किलं (म)।
१०. तं एव (अ, क, ता, व, म)।
११. कक्खडफासपोग्गल मउय-फासपोग्गलत्ताए, एव दो दो गरुयलहुय-सीयउसिण-णिद्धलुक्ख-वण्णाई सव्वत्थ परिणामेइ। आलावगा दो दो पोग्गले अपरियाइत्ता, परियाइत्ता(अ,ब,म,स)।

अविसुद्धलेसादि देवाणं जाणणा-पासणा-पदं

१६८. १. अविसुद्धलेसे ण भंते ! देवे असमोहएण[1] अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं, देविं, अण्णयर[2] जाणइ-पासइ ?

णो तिणट्ठे समट्ठे[3]।

एव—२. अविसुद्धलेसे देवे असमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेसं देवं ३. अविसुद्धलेसे देवे समोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस देवं ४. अविसुद्धलेसे देवे समोहएण अप्पाणेणं विसुद्धलेस देव ५. अविसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस देव ६. अविसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेसं देवं ७. विसुद्धलेसे देवे असमोहएण अप्पाणेणं अविसुद्धलेस देव ८ विसुद्धलेसे देवे असमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस देवं ॥

१६९. ९. विसुद्धलेसे ण भते ! देवे समोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस देवं जाणइ-पासइ ?

हंता जाणइ-पासइ ।

एव—१०. विसुद्धलेसे देवे समोहएण अप्पाणेणं विसुद्धलेस देव ११. विसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएणं अप्पाणेण अविसुद्धलेस देवं १२. विसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेस देव ॥

१७०. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

---

१. असंमो० (अ, ता, म, स) ।

२. अणगारं (क, व) ।

३. समट्ठे एव हेट्ठिल्लएहिं अट्ठहिं न जाणइ न पासइ उवरिल्लएहि चउहिं जाणइ-पासइ (क, ता, वृ); स्वीकृतपाठस्य वृत्तिकृता वाचनान्तरत्वेन उल्लेख. कृतोस्ति—वाचनान्तरे तु सर्वमेवेद साक्षाद्दृश्यते (वृ) । 'अ, व, म, स' सकेतितादर्शेषु द्वयोर्वाचनयोमिश्रणं दृश्यते । तत्र द्वादशभगानन्तरं 'एव हेट्ठिल्लएहिं' इत्यादि पाठोस्ति ।

४. भ० १।५१ ।

दसमो उद्देसो

सुह-दुह-उवदंसण-पदं

१७१. अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति जाव[1] परूवेति जावतिया रायगिहे नयरे जीवा, एवइयाणं जीवाण नो चक्किया केइ सुह वा दुह वा जाव कोलट्ठिगमायमवि, निप्फावमायमवि, कलमायमवि, मासमायमवि, मुग्गमायमवि, जूयामायमवि[2], लिक्खामायमवि अभिनिवट्टेत्ता[3] उवदसेत्तए ॥

१७२. से कहमेय भते ! एव ?
गोयमा ! ज ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव[4] मिच्छ ते एवमाहसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[5] परूवेमि सव्वलोए वि य ण सव्वजीवाण नो चक्किया केइ सुह वा[6] •दुह वा जाव कोलट्ठिगमायमवि, निप्फावमायमवि, कलमायमवि, मासमायमवि, मुग्गमायमवि, जूयामायमवि, लिक्खामायमवि अभिनिवट्टेत्ता° उवदसेत्तए ॥

१७३. से केणट्ठण ? गोयमा ! अयण्ण जबुद्दीवे दीवे जाव[7] विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते । देवे णं महिड्ढीए जाव[8] महाणुभागे एग मह सविलेवण गधसमुग्गग गहाय त अवद्दालेति, अवद्दालेत्ता जाव इणामेव कट्टु केवलकप्प जबुद्दीव दीव तिर्हि अच्छरानिवाएहि तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छेज्जा । से नूण गोयमा ! से केवलकप्पे जबुद्दीवे दीवे तेहिं[9] घाणपोग्गलेहि फुडे ?
हता फुडे ।
चक्किया णं गोयमा ! केइ[10] तेसि घाणपोग्गलाण कोलट्ठिमायमवि[11], •निप्फावमायमवि, कलमायमवि, मासमायमवि, मुग्गमायमवि, जूयामायमवि, लिक्खामायमवि अभिनिवट्टेत्ता° उवदसेत्तए ?
नो तिणट्ठे समट्ठे । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नो चक्किया केइ सुहं वा जाव उवदसेत्तए ।

जीव-चेयणा-पदं

१७४. जीवे ण भते ! जीवे ? जीवे जीवे ?
गोयमा ! जीवे ताव नियमा जीवे, जीवे वि नियमा जीवे ॥

---

१. भ० १।४२० ।
२. जूय० (क, ब), ऊया० (ता) ।
३. ° त्तेत्ता (ता) ।
४. भ० १।४२१ ।
५. भ० १।४२१ ।
६. सं० पा०—त चेव जाव उवदसेत्तए ।
७. भ० ६।७५ ।
८. भ० ३।४ ।
९. तिर्हि (अ, स) ।
१०. केयति (स) ।
११. स० पा०—कोलट्ठिमायमवि जाव उवदसेत्तए

१७५. जीवे ण भंते ! नेरइए ? नेरइए जीवे ?
गोयमा ! नेरइए ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय नेरइए, सिय अनेरइए ॥

१७६ जीवे ण भते ! असुरकुमारे ? असुरकुमारे जीवे ?
गोयमा ! असुरकुमारे ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय असुरकुमारे, सिय नोअसुरकुमारे ॥

१७७ एवं दडओ भाणियव्वो[1] जाव[2] वेमाणियाण ॥

१७८. जीवति भंते ! जीवे ? जीवे जीवति ?
गोयमा ! जीवति ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय जीवति, सिय नो जीवति.॥

१७६. जीवति भते ! नेरइए ? नेरइए जीवति ?
गोयमा ! नेरइए ताव नियमा जीवति, जीवति पुण सिय नेरइए, सिय अनेरइए ॥

१८०. एव दडओ नेयव्वो जाव[3] वेमाणियाणं ॥

१८१ भवसिद्धिए ण भते ! नेरइए ? नेरइए भवसिद्धिए ?
गोयमा ! भवसिद्धिए सिय नेरइए, सिय अनेरइए । नेरइए वि य सिय भवसिद्धीए, सिय अभवसिद्धीए ॥

१८२. एवं दडओ जाव[4] वेमाणियाणं ॥

वेदणा-पदं

१८३. अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति जाव[5] परूवेति—एव खलु सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता एगंतदुक्ख वेदण वेदेति ॥

१८४ से कहमेयं भते ! एव ?
गोयमा ! ज ण ते अण्णउत्थिया जाव[6] मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[7] परूवेमि—अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एगंतदुक्ख वेदण वेदेति, आहच्च साय । अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एगतसायं वेदणं वेदेति, आहच्च अस्साय[8] । अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता वेमायाए वेदण वेदेति—आहच्च सायमसायं ॥

१८५ से केणट्ठेण ?
गोयमा ! नेरइया एगंतदुक्ख वेदणं वेदेति, आहच्च साय । भवणवइ-वाणमतर-जोइस-वेमाणिया एगतसायं वेदणं वेदेति, आहच्च अस्साय । पुढविक्काइया जाव[9] मणुस्सा वेमायाए वेदण वेदेति—आहच्च सायमसायं । से तेणट्ठेण ॥

---

१. नेतव्वो (क, ता, ब) ।
२. पू० प० २ ।
३. पू० प० २ ।
४. पू० प० २ ।
५. भ० १।४२० ।
६. भ० १।४२१ ।
७. भ० १।४२१ ।
८. असाय वेदणं वेदेंति (अ, ता, म, स) ।
९. पू० प० २ ।

नेरइयादीणं आहार-पदं

१८६. नेरइया णं भंते ! जे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति तं किं आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ? अणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ? परंपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ?
गोयमा ! आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति, नो अणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति, नो परंपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ।
जहा नेरइया तहा जाव[1] वेमाणियाण दंडओ ॥

केवलिस्सनाण-पदं

१८७. केवली णं भंते ! आयाणेहिं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१८८. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! केवली णं पुरत्थिमे णं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ जाव[2] निव्वुडे दंसणे केवलिस्स । से तेणट्ठेणं ।

संगहणी-गाहा

जीवाण य सुहं दुक्खं, जीवे जीवति तहेव भविया य ।
एगंतदुक्ख वेयण-अत्तमायाय केवली ॥१॥

१८९ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

---

१. पू० प० २ ।
२. भ० ५।६७ ।
३. भ० १।५१ ।

सत्तमं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. आहार २. विरति ३. थावर, ४. जीवा ५. पक्खी य ६. आउ ७. अणगारे।
८. छउमत्थ ९. असंवुड, १०. अण्णउत्थि दस सत्तमंमि सए ॥ १ ॥

अणाहारग-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव[1] एवं वदासी—जीवे णं भंते! कं[2] समयमणाहारए भवइ?
गोयमा! पढमे समए सिय आहारए सिय अणाहारए, बितिए समए सिय आहारए सिय अणाहारए, ततिए समए सिय आहारए सिय अणाहारए, चउत्थे समए नियमा आहारए। एवं दंडओ—जीवा य एगिंदिया य चउत्थे समए[3], सेसा ततिए समए[4] ॥

सव्वप्पाहारग-पदं

२ जीवे णं भंते! कं समयं सव्वप्पाहारए भवति?
गोयमा! पढमसमयोववन्नए वा चरिमसमयभवत्थे[5] वा, एत्थ णं जीवे सव्वप्पाहारए भवति। दंडओ भाणियव्वो जाव[6] वेमाणियाणं ॥

---

१. भ० १।४-१०।
२. किं (अ)।
३. 'नियमा आहारए' इति शेषम्।
४. 'नियमा आहारए' इति शेषम्।
५. °समए° (स)।
६. पू० प० २।

लोगसंठाण-पदं

३ किंसंठिए णं भंते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! सुपइट्ठगसंठिए लोए पण्णत्ते—हेट्ठा विच्छिण्णे[1], °मज्झे संखित्ते, उप्पिं विसाले ; अहे पलियंकसंठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए°, उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठिए ।
तंसि[2] च णं सासयंसि लोगंसि हेट्ठा विच्छिण्णंसि जाव उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठियंसि उप्पण्णनाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ-पासइ, अजीवे वि जाणइ-पासइ, तओ पच्छा सिज्झइ[3] °बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणं° अंतं करेइ ॥

समणोवासगस्स किरिया-पदं

४. समणोवासगस्स णं भंते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए[4] अच्छमाणस्स[5] तस्स णं भंते ! किं रियावहिया[6] किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! नो रियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ॥

५. से केणट्ठेणं[7] °भंते ! एवं वुच्चइ—नो रियावहिया किरिया कज्जइ ?° संपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! समणोवासयस्स णं सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स आया अहिगरणी भवइ, आयाहिगरणवत्तियं च णं तस्स नो रियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ । से तेणट्ठेणं ॥

समणोवासगस्स अणाउट्टिहिंसा-पदं

६. समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव तसपाणसमारंभे पच्चक्खाए भवइ, पुढविसमारंभे अपच्चक्खाए भवइ । से य पुढविं खणमाणे अण्णयरं तसं पाणं विहिंसेज्जा, से णं भंते ! तं वयं अतिचरति ?
नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु से तस्स अतिवायाए आउट्टति ॥

७. समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव वणप्फइसमारंभे पच्चक्खाए । से य पुढविं खणमाणे अण्णयरस्स रुक्खस्स मूलं छिंदेज्जा, से णं भंते ! तं वयं अतिचरति ?
नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु से तस्स अतिवायाए आउट्टति ॥

---

१. सं० पा०—विच्छिण्णे जाव उप्पिं ।
२. तंसि (अ); तंसि तेसिं (ता), तंस्सि (म) ।
३. सं० पा०—सिज्झइ जाव अंतं ।
४. समणोवासए (क, स) ।
५. अत्थ° (अ, ब, म, स) ।
६. इरिया° (क, ता) ।
७. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव संपराइया ।

समणपडिलाभेण लाभ-पदं

८. समणोवासए णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-'खाइम-साइमेणं'[1] पडिलाभेमाणे किं लब्भइ ?
गोयमा ! समणोवासए णं तहारूवं समणं वा[2] •माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं॰ पडिलाभेमाणे तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा समाहिं उप्पाएति, समाहिकारए ण तामेव[3] समाहिं पडिलभइ ॥

९. समणोवासए ण भंते ! तहारूवं समणं वा[4] •माहण वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेण॰ पडिलाभेमाणे किं चयति ?
गोयमा ! जीवियं चयति, दुच्चयं[5] चयति, दुक्करं करेति, दुल्लहं लहइ, बोहिं बुज्झइ, तओ पच्छा सिज्झति जाव[6] अंतं करेति ॥

अकम्मस्स गति-पदं

१०. अत्थि णं भंते ! अकम्मस्स गती पण्णायति ?
हंता अत्थि ॥

११. कहण्णं भंते ! अकम्मस्स गती पण्णायति ?
गोयमा ! निस्संगयाए, निरंगणयाए, गतिपरिणामेणं, बंधणछेदणयाए[7], निरिंधणयाए, पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

१२. कहण्णं भंते ! निस्संगयाए, निरंगणयाए, गतिपरिणामेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ?
से जहानामए केइ पुरिसे सुक्कं तुंबं निच्छिड्डं निरुवहयं आणुपुव्वीए परिकम्मेमाणे-परिकम्मेमाणे दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढेत्ता अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं लिपइ, लिंपित्ता उण्हे दलयति, भूतिं-भूतिं सुक्कं समाणं अत्थाहमतारमपोरिसियंसि[8] उदगंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवाणं गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुसभारियत्ताए सलिलतलमतिवइत्ता अहे धरणितलपइट्ठाणे भवइ ?
हंता भवइ ।
अहे णं से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवाणं परिक्खएणं धरणितलमतिवइत्ता उप्पिं सलिलतलपइट्ठाणे भवइ ?

---

१. खातिम-सातिमेणं (अ, व, स) ।
२. सं० पा०—समणं वा जाव पडिलाभे° ।
३. तमेव (क्व०) ।
४. सं० पा०—समणं वा जाव पडिलाभे° ।
५. दुचय (स) ।
६. भ० ७।३ ।
७. बंधणोच्छेदणताए (ता) ।
८. इह मकारो प्राकृतप्रभवो (वृ) ।

हंता भवइ ।
एवं खलु गोयमा ! निस्संगयाए, निरंगणयाए, गतिपरिणामेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

१३. कहण्णं भंते ! बंधणछेदणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति[1] ?
गोयमा ! से जहानामए कलसिंबलिया इ वा, मुग्गसिंबलिया इ वा, माससिंबलिया इ वा, सिबलिसिंबलिया[2] इ वा, एरंडमिंजिया इ वा उण्हे दिन्ना[3] सुक्का समाणी फुडित्ता णं एगंतमंतं गच्छइ । एवं खलु गोयमा ! बंधणछेदणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

१४. कहण्णं भंते ! निरिंधणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति ?
गोयमा से जहानामए धूमस्स इंधणविप्पमुक्कस्स उड्ढं वीससाए निव्वाघाएणं गती पवत्तति । एवं खलु गोयमा ! निरिंधणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

१५. कहण्णं भंते ! पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ?
गोयमा ! से जहानामए कंडस्स कोदंडविप्पमुक्कस्स लक्खाभिमुही निव्वाघाएणं गती पवत्तइ । एवं खलु गोयमा ! पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ।
एवं खलु गोयमा ! निस्संगयाए[4], निरंगणयाए[5], °गतिपरिणामेणं, बंधणछेदणयाए, निरिंधणयाए°, पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

दुक्खिस्स दुक्खफासादि-पदं

१६. दुक्खी भंते ! दुक्खेणं फुडे ? अदुक्खी दुक्खेणं फुडे ?
गोयमा ! दुक्खी दुक्खेणं फुडे, नो अदुक्खी दुक्खेणं फुडे ॥

१७. दुक्खी भंते ! नेरइए दुक्खेणं फुडे ? अदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे ?
गोयमा ! दुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे, नो अदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे ॥

१८. एवं दंडओ जाव[6] वेमाणियाणं ॥

१९. एवं पंच दंडगा नेयव्वा—१. दुक्खी दुक्खेणं फुडे २. दुक्खी दुक्खं परियायइ ३. दुक्खी दुक्खं उदीरेइ ४. दुक्खी दुक्खं वेदेति ५. दुक्खी दुक्खं निज्जरेति ॥

इरियावहिय-संपराइय-किरिया-पदं

२०. अणगारस्स णं भंते ! अणाउत्तं गच्छमाणस्स वा, चिट्ठमाणस्स[7] वा, निसीयमाणस्स वा, तुयट्टमाणस्स वा, अणाउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं गेण्ह-

---

१. पण्णत्ता (अ, क, ता, ब, म, स) ।
२. सेवलिसेंबलिया (ता) ।
३. दित्ता (स) ।
४. नीसंगयाए (अ, क, ब, म, स) ।
५. सं० पा०—निरंगणयाए जाव पुव्व° ।
६. पू० प० २ ।
७. सर्वेष्वपि पदेषु 'अणाउत्तं' इति पदं गम्यम् ।

गेण्हमाणस्स वा, निक्खिवमाणस्स वा तस्स णं भंते ! किं[1] इरियावहिया किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! नो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ॥

२१. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिन्ना[2] भवंति तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ[3], जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिन्ना भवंति तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ[4]। अहासुत्तं रीयमाणस्स इरियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ। से णं उस्सुत्तमेव रीयति[5]। से तेणट्ठेणं ॥

सइंगालादिदोसदुट्ठ-पाणभोयण-पदं

२२. अह भंते ! सइंगालस्स, सधूमस्स, संजोयणादोसदुट्ठस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं पडिग्गाहेत्ता मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! सइंगाले पाण-भोयणे।
जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं पडिग्गाहेत्ता महयाअप्पत्तियकोहकिलामं करेमाणे आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! सधूमे पाण-भोयणे।
जे णं निग्गंथे वा[6] •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं° पडिग्गाहेत्ता गुणुप्पायणहेउं[7] अन्नदव्वेण सद्धिं संजोएत्ता आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! संजोयणादोसदुट्ठे पाण-भोयणे।
एस णं गोयमा ! सइंगालस्स, सधूमस्स, संजोयणादोसदुट्ठस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते ॥

२३. अह भंते ! वीतिंगालस्स, वीयधूमस्स, संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा[8] •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-

---

१. × (क, ता, ब)।
२. विच्छिन्ना (व)।
३. कज्जइ नो संपराइया किरिया कज्जइ (म)।
४. कज्जइ नो इरियावहिया किरिया कज्जइ (म, स)।
५. रीयति (अ, क, व, म, स)।
६. म० पा०—निग्गंथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता।
७. गुणुप्पायण° (अ, स); गुणुप्पायणा° (ता)
८. म० पा०—निग्गंथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता।

साइमं॰पडिग्गाहेत्ता अमुच्छिए[1] •अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने आहारमा॰-हारेइ, एस णं गोयमा ! वीतिंगाले पाण-भोयणे ।

जे णं निग्गंथे वा[2] •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण पाण खाइम साइमं॰ पडिग्गाहेत्ता णो महयाअप्पत्तियं[3] •कोहकिलाम करेमाणे आहारमा॰हारेइ, एस णं गोयमा ! वीयधूमे पाण-भोयणे ।

जे णं निग्गथे वा[4] •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइम॰ पडिग्गाहेत्ता जहा लद्धं तहा आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! संजोयणादोस-विप्पमुक्के पाण-भोयणे ।

एस णं गोयमा ! वीतिंगालस्स, वीयधूमस्स, संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते ॥

२४. अह भंते ! खेत्तातिक्कंतस्स, कालातिक्कंतस्स, मग्गातिक्कतस्स, पमाणातिक्कं-तस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

गोयमा ! जे णं निग्गथे वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं अणुग्गए सूरिए पडिग्गाहेत्ता उग्गए सूरिए आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! खेत्तातिक्कते[5] पाण-भोयणे ।

जे णं निग्गथे वा[6] •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असणं-पाण-खाइम॰-साइमं पढमाए पोरिसीए पडिग्गाहेत्ता पच्छिमं पोरिसिं उवाइणावेत्ता[7] आहारमाहारेइ एस णं गोयमा ! कालातिक्कंते पाण-भोयणे ।

जे णं निग्गथे वा[8] •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम॰-साइम पडिग्गाहेत्ता पर अद्धजोयणमेराए वीइक्कमावेत्ता[9] आहारमाहारेइ, एस ण गोयमा ! मग्गातिक्कते पाण-भोयणे ।

जे ण निग्गथे[10] वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्ज[11] •असण-पाण-खाइम॰साइमं पडिग्गाहेत्ता पर बत्तीसाए कुक्कुडिअडगपमाणमेत्ताणं कवलाणं आहारमाहारेइ, एस ण गोयमा ! पमाणातिक्कते पाण-भोयणे ।

अट्ठ कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अप्पाहारे[12], दुवालस कुक्कुडिअडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अवड्ढोमोयरिए[13], सोलस

---

१. स॰ पा॰—अमुच्छिए जाव आहारेइ ।
२. सं॰ पा॰—निग्गथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता ।
३. स॰ पा॰—महयाअप्पत्तिय जाव आहारेइ ।
४. स॰ पा॰—निग्गथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता ।
५. क्षेत्रं—सूर्यसबन्धितापक्षेत्र दिनमित्यर्थः । तद-तिक्रान्तं यत् तत् क्षेत्रातिक्रान्तम् (वृ) ।
६. सं॰ पा॰—निग्गथे वा जाव साइमं ।
७. उवायणा॰ (अ, म) ।
८. स॰ पा॰—निग्गथे वा जाव साइम ।
९. वीइक्कमावइत्ता (स) ।
१०. निग्गयो (क, ता, स) ।
११. स॰ पा॰—एसणिज्ज जाव साइम ।
१२. सावुर्भवतीति गम्यम् ।
१३. अवड्ढोमोयरिया (अ, ता) ।

कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे दुभागप्पत्ते, चउव्वीसं कुक्कुडिअंडगपमाण[1]•मेत्ते कवले° आहारमाहारेमाणे ओमोदरिए[2], बत्तीस कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे पमाणपत्ते, एत्तो एक्केण वि घासेणं ऊणगं आहारमाहारेमाणे समणे निग्गंथे नो पकामरसभोईति वत्तव्व सिया। एस ण गोयमा ! खेत्तातिक्कंतस्स, कालातिक्कंतस्स, मग्गातिक्कंतस्स, पमाणातिक्कंतस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते ॥

२५. अह भंते ! सत्थातीतस्स, सत्थपरिणामियस्स[3], एसियस्स, वेसियस्स, सामुदाणियस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा निक्खित्तसत्थमुसले ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे ववगय-चुय-चइय-चत्तदेहं, जीवविप्पजढं, अकयं, अकारियं, असंकप्पियं, अणाहूयं, अकीयकडं, अणुद्दिट्ठं, नवकोडीपरिसुद्धं, दसदोसविप्पमुक्कं, उग्गमुप्पायणेसणासुपरिसुद्धं, वीतिंगालं, वीतधूमं, संजोयणादोसविप्पमुक्कं, असुरसुरं[4], अचवचवं, अदुयं, अविलंबियं, अपरिसाडिं, अक्खोवंजण-वणाणुलेवणभूयं, संजमजायामायावत्तियं, संजमभारवहणट्ठयाए बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! सत्थातीतस्स, सत्थपरिणामियस्स[5] •एसियस्स, वेसियस्स, सामुदाणियस्स° पाण-भोयणस्स अट्ठे[6] पण्णत्ते ॥

२६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[7] ॥

बीओ उद्देसो

सुपच्चक्खाण-दुपच्चक्खाण-पदं

२७. से नूणं भंते ! सव्वपाणेहिं, सव्वभूएहिं, सव्वजीवेहिं, सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवति ? दुपच्चक्खायं भवति ?
गोयमा ! सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सिय सुपच्चक्खायं भवति, सिय दुपच्चक्खायं भवति ॥

---

१. सं० पा०—°पमाणे जाव आहार° ।
२. ओमोदरिया (अ, ता, स); ओमोदरियाए (ब)।
३. °पारि° (ता)।
४. असुरुससुर (ता)।
५. सं० पा०—सत्थपरिणामियस्स जाव पाण ।
६. अयमट्ठे (अ)।
७. भ० १।५१ ।

२८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सव्वपाणेहिं जाव[1] सव्वसत्तेहिं[2] •पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सिय सुपच्चक्खायं भवति° ? सिय दुपच्चक्खायं भवति ?
गोयमा ! जस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स णो एवं अभिसमन्नागय भवति—इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा, इमे थावरा, तस्स ण सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमिति वदमाणस्स नो सुपच्चक्खायं भवति, दुपच्चक्खायं भवति।

एव खलु से दुपच्चक्खाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमिति वदमाणे नो सच्चं भास भासइ, मोस भास भासइ। एव खलु से मुसावाई सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि तिविहं तिविहेण असजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, सकिरिए, असंवुडे, एगंतदंडे, एगतवाले यावि भवति।

जस्स ण सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमिति वदमाणस्स एवं अभिसमन्नागयं भवति—इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा, इमे थावरा, तस्स ण सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवति, नो दुपच्चक्खायं भवति।

एव खलु से सुपच्चक्खाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणे सच्चं भासं भासइ, नो मोसं भासं भासइ। एवं खलु से सच्चवादी सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहि तिविह तिविहेणं सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, अकिरिए, सवुडे, एगतपडिए यावि भवति। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ[3]—•सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सिय सुपच्चक्खाय भवति°, सिय दुपच्चक्खाय भवति ॥

पच्चक्खाण-पदं

२९. कतिविहे णं भते ! पच्चक्खाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा—मूलगुणपच्चक्खाणे य, उत्तरगुणपच्चक्खाणे य ॥

३०. मूलगुणपच्चक्खाणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे य, देसमूलगुणपच्चक्खाणे य ॥

३१. सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं[4],

१. भ० ७।२७।
२. सं० पा०—सव्वसत्तेहिं जाव सिय।
३. स० पा०—वुच्चइ जाव सिय।
४. स० पा०—वेरमणं जाव सव्वाओ।

•सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमण°, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण ।।

३२. देसमूलगुणपच्चक्खाणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, तं जहा—थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं[1], •थूलाओ मुसावायाओ वेरमण, थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, थूलाओ मेहुणाओ वेरमणं°, थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं ।।

३३. उत्तरगुणपच्चक्खाणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणे य, देसुत्तरगुणपच्चक्खाणे य ।।

३४. सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दसविहे पण्णत्ते, त जहा—

गाहा—

१, २. अणागयमइक्कतं ३. कोडीसहिय ४. नियटिय चेव ।
५, ६. सागारमणागारं ७. परिमाणकड ८. निरवसेसं ।
९. संकेय[2] चेव १०. अद्धाए, पच्चक्खाणं भवे दसहा ।।१।।

३५ देसुत्तरगुणपच्चक्खाणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—१. दिसिव्वयं[3] २. उवभोगपरिभोगपरिमाणं ३. अणत्थदडवेरमण[4] ४. सामाइयं ५. देसावगासियं ६. पोसहोववासो ७ अतिहिसविभागो[5] । अपच्छिममारणंतियसलेहणाभूसणाराहणता[6] ।।

पच्चक्खाणि-अपच्चक्खाणि-पदं

३६. जीवा ण भते! कि मूलगुणपच्चक्खाणी? उत्तरगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी?
गोयमा ! जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी वि, उत्तरगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि ।।

३७ नेरइया ण भते ! किं मूलगुणपच्चक्खाणी ? पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया नो मूलगुणपच्चक्खाणी, नो उत्तरगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी ।।

---

१. स० पा०—वेरमण जाव थूलाओ ।
२. साएत (ता, म); साकेय (स, वृ); सकेयण (ठा० १०।१०१) केतः चिन्हं सहकेतेन वर्तते सकेतम्—दीर्घता च प्राकृतत्वात् (वृ) ।
३ दिसुव्वतं (ता) ।
४. अणट्ठा° (ता) ।
५. अहासविभाग (म) ।
६. सलेखनामविगणय्य सप्त देशोत्तरगुणा इत्युक्तम्, अस्याश्चैतेषु पाठो देशोत्तरगुणधारिणाऽपीयमन्ते विधातव्येत्यस्यार्थस्य ख्यापनार्थः (वृ) ।

३८. एवं जाव[1] चउरिंदिया ॥

३९. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य जहा जीवा, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ॥

४०. एएसि णं भंते ! जीवाणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं, उत्तरगुणपच्चक्खाणीणं, अपच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहिंतो[2] ●अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?○ विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा ॥

४१. एएसि णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा।
गोयमा ! सव्वत्थोवा[3] पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ॥

४२. एएसि णं भंते ! मणुस्साणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं पुच्छा।
गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी संखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ॥

४३. जीवा णं भंते ! किं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी ? देसमूलगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?
गोयमा ! जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी वि, देसमूलगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि ॥

४४. नेरइयाणं पुच्छा।
गोयमा ! नेरइया नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, नो देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी ॥

४५. एवं जाव[4] चउरिंदिया ॥

४६. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा।
गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी[5], अपच्चक्खाणी वि ॥

४७. [6]●मणुस्साणं भंते ! किं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी ? देसमूलगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?
गोयमा ! मणुस्सा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी वि, देसमूलगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि○ ॥

---

१. पू० प० २।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
३. सव्वत्थोवा जीवा (अ)।
४. पू० प० २।
५. ० पच्चक्खाणी वि (क, ता, म, स)।
६. सं० पा०—मणुस्सा जहा जीवा।

४८ वाणमतर-जोइस-वेमाणिया जहा नेरइया ॥

४९. एएसि ण भते ! जीवाणं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणीणं, देसमूलगुणपच्चक्खाणीणं, अपच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणतगुणा ॥

५०. [2]•एएसि णं भते ! पचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वत्थोवा पचिंदियतिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अप्पच्चक्खाणी असखेज्जगुणा ॥

५१. एएसि ण भते ! मणुस्साणं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणीणं पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी सखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा° ॥

५२. जीवा ण भते ! कि सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी ? देसुत्तरगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?
गोयमा ! जीवा सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी वि,[3] •देसुत्तरगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि° ।
पचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य एव चेव । सेसा अपच्चक्खाणी जाव[4] वेमाणिया ॥

५३. एएसि ण भते ! जीवाणं सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणीण अप्पाबहुगाणि तिण्णि वि जहा पढमे दडए जाव[5] मणुस्साण ॥

५४ जीवा ण भते ! कि सजया ? असजया ? सजयासजया ?
गोयमा ! जीवा सजया वि,[6] •असंजया वि, संजयासजया वि ।° एवं जहेव पण्णवणाए तहेव भाणियव्व जाव[7] वेमाणिया । अप्पाबहुगं तहेव तिण्ह वि भाणियव्वं[8] ॥

५५. जीवा ण भते ! कि पच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ? पच्चक्खाणा-पच्चक्खाणी ?

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२. स० पा०—एव अप्पाबहुगाणि तिण्णि वि जहा पढमिल्ले दडए, नवरं—सव्वत्थोवा पचिंदियतिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा ।
३. स० पा०—तिण्णि वि।
४. पू० प० २ ।
५. भ० ७।४०-४२ ।
६. स० पा०—तिण्णि वि ।
७. प० ३२ ।
८ भ० ७।४०-४२ ।

गोयमा ! जीवा पच्चक्खाणी वि,[1] •अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी वि ॥

५६. एवं मणुस्साण वि[2] । पंचिंदियतिरिक्खजोणिया आदिल्लविरहिया । सेसा सव्वे अपच्चक्खाणी जाव[3] वेमाणिया ॥

५७. एएसि णं भंते ! जीवाणं पच्चक्खाणीण[4] •अपच्चक्खाणीण पच्चक्खाणापच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा° ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा ।
पंचिंदियतिरिक्खजोणिया सव्वत्थोवा पच्चक्खाणापच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा । मणुस्सा सव्वत्थोवा पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी संखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा[5] ॥

सासय-असासय-पदं

५८. जीवा णं भंते ! किं सासया ? असासया ?
गोयमा ! जीवा सिय सासया, सिय असासया ॥

५९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवा सिय सासया ? सिय असासया ?
गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया, भावट्ठयाए असासया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ[6]—•जीवा सिय सासया°, सिय असासया ॥

६०. नेरइया णं भंते ! किं सासया ? असासया ?
एवं जहा जीवा तहा नेरइया वि । एवं जाव[7] वेमाणिया सिय सासया, सिय असासया ॥

६१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[8] ॥

---

१. सं० पा०—तिण्णि वि ।
२. वि तिण्णि वि (अ, स) ।
३. पू० प० २ ।
४. सं० पा०—पच्चक्खाणीणं जाव विसेसाहिया
५. तुलना—भ० ६।६४ ।
६. सं० पा०—वुच्चइ जाव सिय ।
७. पू० प० २ ।
८. भ० १।५१ ।

तइओ उद्देसो

वणस्सइ-आहार-पदं

६२. वणस्सइक्काइया ण भंते ! क[1] काल सव्वप्पाहारगा वा, सव्वमहाहारगा वा भवति ?
गोयमा ! पाउस-वरिसारत्तेसु ण एत्थ णं वणस्सइकाइया सव्वमहाहारगा भवति, तदाणतर[2] च ण सरदे[3], तदाणतर च ण हेमंते, तदाणतर च ण वसते, तदाणतरं च ण गिम्हे। गिम्हासु णं वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवति ॥

६३. जइ ण भते ! गिम्हासु वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवति, कम्हा णं भते ! गिम्हासु वहवे वणस्सइकाइया पत्तिया, पुप्फिया, फलिया, हरियगरेरिज्जमाणा, सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठति ?
गोयमा ! गिम्हासु णं वहवे उसिणजोणिया जीवा य, पोग्गला य वणस्सइकाइयत्ताए वक्कमति, चयति[4], उववज्जति। एव खलु गोयमा ! गिम्हासु वहवे वणस्सइकाइया पत्तिया, पुप्फिया[5], •फलिया, हरियगरेरिज्जमाणा, सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा° चिट्ठति ॥

६४. से नूण भते ! मूला मूलजीवफुडा, कदा कदजीवफुडा[6], •खधा खधजीवफुडा, तया तयाजीवफुडा, साला सालजीवफुडा, पवाला पवालजीवफुडा, पत्ता पत्तजीवफुडा, पुप्फा पुप्फजीवफुडा, फला फलजीवफुडा°, बीया बीयजीवफुडा ?
हंता गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा जाव बीया बीयजीवफुडा ॥

६५. जइ ण भते ! मूला मूलजीवफुडा जाव[7] बीया बीयजीवफुडा, कम्हा णं भंते ! वणस्सइकाइया आहारेंति ? कम्हा परिणामेति ?
गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा पुढवीजीवपडिबद्धा तम्हा आहारेति, तम्हा परिणामेति। कदा कदजीवफुडा मूलजीवपडिबद्धा, तम्हा आहारेति, तम्हा परिणामेति। एव जाव बीया बीयजीवफुडा फलजीवपडिबद्धा तम्हा आहारेति, तम्हा परिणामेति ॥

---

१. किं (क, म)।
२. तद° (व)।
३ सरए (अ)।
४. विउक्कमंति (अ, क); विउक्कमति चयति (स)।
५. स० पा०—पुप्फिया जाव चिट्ठति।
६. स० पा०—कदजीवफुडा जाव बीया।
७. भ० ७।६४।

अणंतकाय-पदं

६६. अह भंते ! आलुए, मूलए, सिंगबेरे, हिरिलि, सिरिलि, सिस्सिरिलि[1], किट्टिया[2], छिरिया, छीरविरालिया[3], कण्हकंदे, वज्जकंदे, सूरणकदे, खेलुडे[4] भद्दमोत्था[5], पिंडहलिद्दा[6], लोही, णीहू, थीहू, थिभगा[7], अस्सकण्णी, सीहकण्णी, सिउंढी[8], मुसंढी, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते अणंतजीवा विविहसत्ता[9] ?
हंता गोयमा ! आलुए, मूलए जाव अणंतजीवा विविहसत्ता ।।

अप्पकम्म-महाकम्म-पदं

६७. सिय भंते ! कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए ? नीललेसे नेरइए महाकम्मतराए ?
हंता सिय[10] ।।

६८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए ? नीललेसे नेरइए महाकम्मतराए ?
गोयमा ! ठिति पडुच्च । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव महाकम्मतराए ।।

६९. सिय भंते ! नीललेसे नेरइए अप्पकम्मतराए ? काउलेसे नेरइए महाकम्मतराए ?
हंता सिय ।।

७०. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—नीललेसे नेरइए अप्पकम्मतराए ? काउलेसे नेरइए महाकम्मतराए ?
गोयमा ! ठिति पडुच्च । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव महाकम्मतराए ।।

७१. एवं असुरकुमारे वि, नवरं—तेउलेसा अब्भहिया । एव जाव[11] वेमाणिया । जस्स जइ लेस्साओ तस्स तत्तिया भाणियव्वाओ । जोइसियस्स न भण्णइ जाव—

७२. सिय भंते ! पम्हलेस्से वेमाणिए अप्पकम्मतराए ? सुक्कलेस्से वेमाणिए महाकम्मतराए ?
हंता सिय ।।

७३. से केणट्ठेणं ?[12] °गोयमा ! ठिति पडुच्च । से तेणट्ठेणं गोयमा !° जाव महाकम्मतराए ।।

---

१. सिस्सेरिलि (ता) ।
२. किट्टिया (अ, ता) ।
३. छीरि° (अ) ।
४. खल्लूडे (अ); खल्लुए (ता) ।
५. अद्दमोत्था (अ, म, स) ।
६. भिंड° (क) ।
७. विभंगा (अ); थिरुगा (म, स) ।
८. सीहंढी (अ); सीदडी (क); सदिट्ठी (ब); सीदवी (म); सादठी (स) ।
९. विचित्तविहिसत्ता (वृपा) ।
१०. सिया (अ, व) ।
११. पू० प० २ ।
१२. स० पा०—सेस जहा नेरइयस्स ।

वेदणा-निज्जरा-पदं

७४. से नूणं भंते ! जा वेदणा सा निज्जरा ? जा निज्जरा सा वेदणा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

७५ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जा वेदणा न सा निज्जरा ? जा निज्जरा न सा वेदणा ?
गोयमा ! कम्मं[1] वेदणा, नोकम्मं निज्जरा। से तेणट्ठेणं गोयमा[2] ! •एवं वुच्चइ—जा वेदणा न सा निज्जरा, जा निज्जरा° न सा वेदणा ॥

७६. नेरइया ण भते ! जा वेदणा सा निज्जरा ? जा निज्जरा सा वेदणा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

७७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयाणं जा वेदणा न सा निज्जरा ? जा निज्जरा न सा वेदणा ?
गोयमा ! नेरइयाणं कम्मं वेदणा, नोकम्मं निज्जरा। से तेणट्ठेण गोयमा[3] ! •एवं वुच्चइ—नेरइयाणं जा वेदणा न सा निज्जरा, जा निज्जरा° न सा वेदणा ॥

७८. एव जाव[4] वेमाणियाण ॥

७९. से नूणं भते ! जं वेदेसु तं निज्जरेसु ? जं निज्जरेसु तं वेदेसु ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

८०. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—जं वेदेसु नो तं निज्जरेसु ? जं निज्जरेसु नो त वेदेसु ?
गोयमा ! कम्मं वेदेसु, नोकम्म निज्जरेसु। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो त वेदेसु ॥

८१. एवं[5] नेरइया वि, एवं जाव वेमाणिया ॥

८२. से नूणं भते ! ज वेदेंति त निज्जरेंति ? ज निज्जरेंति त वेदेंति ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

८३ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जाव नो तं वेदेंति ?
गोयमा ! कम्म वेदेंति, नोकम्मं निज्जरेंति। से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव नो तं वेदेंति ॥

८४. एवं नेरइया वि जाव वेमाणिया ॥

८५. से नूण भते ! ज वेदिस्सति तं निज्जरिस्संति ? ज निज्जरिस्सति त वेदिस्सति ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

---

१. कम्म (अ, क, म)।
२. स० पा०—गोयमा जाव न।
३. स० पा०—गोयमा जाव न।
४. पू० प० २।
५ नेरइया ण भते ! ज वेदेसु त निज्जरेंसु एव (अ, क, ता, व, म, स)।

८६. से केणट्ठेणं जाव नो तं वेदिस्संति ?
गोयमा ! कम्मं वेदिस्संति, नोकम्मं निज्जरिस्संति। से तेणट्ठेणं जाव नो तं निज्जरिस्संति ॥

८७. एव नेरइया वि जाव वेमाणिया ॥

८८. से नूणं भंते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए से वेदणासमए ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

८९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जे वेदणासमए न से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए न से वेदणासमए ?
गोयमा ! जं समयं वेदेति नो तं समयं निज्जरेति, जं समयं निज्जरेति नो त समय वेदेति—अण्णम्मि समए वेदेति, अण्णम्मि समए निज्जरेति। अण्णे से वेदणासमए, अण्णे से निज्जरासमए। से तेणट्ठेण जाव न से वेदणासमए, न से निज्जरासमए ॥

९०. नेरइया णं भंते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए से वेदणासमए ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

९१. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—नेरइया णं जे वेदणासमए न से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए न से वेदणासमए ?
गोयमा ! नेरइया ण ज समय वेदेति नो त समयं निज्जरेति, ज समय निज्जरेति नो तं समय वेदेति—अण्णम्मि समए वेदेति, अण्णम्मि समए निज्जरेति। अण्णे से वेदणासमए, अण्णे से निज्जरासमए। से तेणट्ठेणं जाव न से वेदणासमए ॥

९२. एव जाव वेमाणियाणं ॥

सासय-असासय-पदं

९३. नेरइया णं भंते ! किं सासया ? असासया ?
गोयमा ! सिय सासया, सिय असासया ॥

९४. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया सिय सासया ? सिय असासया ?
गोयमा ! अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए सासया, वोच्छित्तिनयट्ठयाए असासया। से तेणट्ठेण जाव सिय सासया, सिय असासया ॥

९५. एवं जाव वेमाणिया जाव सिय असासया ॥

९६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

---

१. भ० १।५१।

चउत्थो उद्देसो

संसारत्थजीव-पदं

९७. रायगिहे नयरे जाव[1] एव वयासि—कतिविहा ण भते ! ससारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहा ससारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता, त जहा—पुढविकाइया जाव तसकाइया । एव जहा जीवाभिगमे जाव[2] एगे जीवे एगेण समएण एगं किरिय पकरेइ, त जहा—सम्मत्तकिरिय वा, मिच्छत्तकिरिय वा[3] ॥

९८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

पंचमो उद्देसो

जोणीसगह-पदं

९९. रायगिहे जाव एवं वयासी—खहयरपंचिदियतिरिक्खजोणियाणं भते ! कतिविहे जोणीसगहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे जोणीसगहे पण्णत्ते, तं जहा—अडया, पोयया, संमुच्छिमा । एवं जहा जीवाभिगमे जाव[5] नो चेव ण ते विमाणे वीतीवएज्जा, एमहालया ण गोयमा ! ते विमाणा पण्णत्ता[6] ॥

१००. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[7] ॥

---

१. भ० १।४-१० ।

२. जी० ३ ।

३. अतोग्रे एका सग्रहगाथा लभ्यते—
जीवा छव्विह पुढवी,
जीवाण ठिती भवट्ठिती काये ।
निल्लेवण अणगारे,
किरिया सम्मत्त-मिच्छत्ता ॥
(अ, ता, व, म, स, वृपा) ।

४. भ० १।५१ ।

५. जी० ३ ।

६. अतोग्रे एका सग्रहगाथा लभ्यते—
जोणीसगह-लेसा,
दिट्ठी नाणे य जोग-उवओगे ।
उववाय-ट्ठिति-समुग्घाय-चवण-जाती-कुल-
विहीओ ॥ (वृपा) ।

७. भ० १।५१ ।

छट्ठो उद्देसो

आउयपकरण-वेयणा-पदं

१०१. रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए[2], से णं भंते ! किं इहगए नेरइयाउयं पकरेइ ? उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ ? उववन्ने नेरइयाउयं पकरेइ ?
गोयमा ! इहगए नेरइयाउयं पकरेइ, नो उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ, नो उववन्ने नेरइयाउयं पकरेइ । एवं असुरकुमारेसु वि, एवं जाव[3] वेमाणिएसु ।।

१०२. जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! किं इहगए नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ ? उववज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ ? उववन्ने नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ ?
गोयमा ! नो इहगए नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उववज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उववन्ने वि नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ । एवं जाव वेमाणिएसु ।।

१०३. जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! किं इहगए महावेदणे ? उववज्जमाणे महावेदणे ? उववन्ने महावेदणे ?
गोयमा ! इहगए सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, उववज्जमाणे सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, अहे णं उववन्ने भवइ तओ पच्छा एगंतदुक्खं वेदणं वेदेति, आहच्च सायं ।।

१०४. जीवे णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, पुच्छा ।
गोयमा ! इहगए सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, उववज्जमाणे सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, अहे णं उववन्ने भवइ तओ पच्छा एगंतसातं वेदणं वेदेति, आहच्च असायं[4] । एवं जाव[5] थणियकुमारेसु ।।

१०५. जीवे णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, पुच्छा ।
गोयमा ! इहगए सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, एवं उववज्जमाणे वि, अहे णं उववन्ने भवइ तओ पच्छा वेमायाए वेदणं वेदेति । एवं जाव[6] मणुस्सेसु । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु जहा असुरकुमारेसु ।।

१०६. जीवा णं भंते ! किं आभोगनिव्वत्तियाउया ? अणाभोगनिव्वत्तियाउया ?
गोयमा ! नो आभोगनिव्वत्तियाउया, अणाभोगनिव्वत्तियाउया । एवं नेरइया वि, एवं जाव[7] वेमाणिया ।।

---

१. भ० १।४-१० ।
२. उववज्जंति (व) ।
३. पू० प० २ ।
४. अस्सायं (अ, स) ।
५. पू० प० २ ।
६. पू० प० २ ।
७. पू० प० २ ।

कक्कस-अकक्कसवेयणीय-पदं

१०७. अत्थि णं भंते ! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
हंता अत्थि ॥

१०८. कहण्णं भंते ! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
गोयमा ! पाणाइवाएणं जाव[1] मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु गोयमा ! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ॥

१०९. अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
एवं चेव । एवं जाव[2] वेमाणियाणं ॥

११०. अत्थि णं भंते ! जीवाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
हंता अत्थि ॥

१११. कहण्णं भंते ! जीवाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव[3] परिग्गहवेरमणेणं, कोहविवेगेणं जाव[3] मिच्छादंसणसल्लविवेगेणं—एवं खलु गोयमा ! जीवाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ॥

११२. अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
णो इणट्ठे समट्ठे । एवं जाव वेमाणियाणं, नवरं—मणुस्साणं जहा जीवाणं ॥

सायासाय-वेयणीय-पदं

११३. अत्थि णं भंते ! जीवाणं सातावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
हंता अत्थि ॥

११४. कहण्णं भंते ! जीवाणं सातावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
गोयमा ! पाणाणुकंपयाए, भूयाणुकंपयाए, जीवाणुकंपयाए, सत्ताणुकंपयाए, बहूणं पाणाणं[4] °भूयाणं जीवाणं° सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए अपरियावणयाए—एवं खलु गोयमा ! जीवाणं सातावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति । एवं नेरइयाण वि, एवं जाव वेमाणियाणं ॥

११५. अत्थि णं भंते ! जीवाणं असातावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
हंता अत्थि ॥

११६. कहण्णं भंते ! जीवाणं असातावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
गोयमा ! परदुक्खणयाए, परसोयणयाए, परजूरणयाए, परतिप्पणयाए, पर-

---

१. भ० १।३८४ ।
२. पू० प० २ ।
३. भ० १।३८५ ।
४. ठा० १।११५-१२५ ।
५. सं० पा०—पाणाणं जाव सत्ताणं ।

पिट्टणयाए, परपरियावणयाए, बहूणं पाणाणं[1] •भूयाणं जीवाणं० सत्ताण दुक्ख-णयाए, सोयणयाए[2], •जूरणयाए, तिप्पणयाए, पिट्टणयाए०, परियावणयाए—एव खलु गोयमा ! जीवाणं असातावेयणिज्जा कम्मा कज्जति । एव नेरइयाण वि, एव जाव वेमाणियाण ।।

दुस्समदुस्समा-पदं

११७ जबुद्दीवे णं भते ! दीवे[3] इमीसे ओसप्पिणीए दुस्सम-दुस्समाए समाए उत्तम-कट्ठपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ?

गोयमा ! कालो भविस्सइ हाहाभूए, भंभब्भूए[4] कोलाहलभूए[5] । समाणुभावेण[6] य ण खर-फरुस-धूलिमइला दुव्विसहा वाउला भयकरा वाया सवट्टगा य वाहिति । इह अभिक्खं धूमाहिति य दिसा समता रउस्सला[7] रेणुकलुस-तमपडल-निरालोगा । समयलुक्खयाए य ण अहिय चंदा सीय मोच्छति[8] । अहिय[9] सूरिया तवइस्सति । अदुत्तरं च ण अभिक्खणं बहवे अरसमेहा विरसमेहा खारमेहा खत्तमेहा[10] अग्गिमेहा विज्जुमेहा विसमेहा असणिमेहा—अपिवणिज्जोदगा,[11] वाहिरोगवेदणोदीरणा-परिणामसलिला, अमणुण्णपाणियगा चडानिलपहय-तिक्खधारा-निवायपउर वास वासिहिति, जेण भारहे वासे गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडब-दोणमुह-पट्टणासमगयं[12] जणवय, चउप्पयगवेलए, खहयरे य पक्खि-सघे, गामारण्ण-पयारनिरए तसे य पाणे, बहुप्पगारे रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय-वल्लि-तण-पव्वग-हरितोसहि-पवालकुरमादीए य तण-वणस्सइकाइए विद्धसेहिति, पव्वय-गिरि-डोगरुत्थल[13]-भट्ठिमादीए वेयड्ढगिरिवज्जे विरावेहिति,सलिलबिल-गड्ड-दुग्गविसमनिण्णुन्नयाइ च गंगा-सिधुवज्जाइ समीकरेहिति ।।

११८. तीसे ण भते ! समाए भरहस्स वासस्स भूमीए केरिसए आगारभाव-पडोयारे भविस्सति ?

गोयमा ! भूमी भविस्सति इंगालब्भूया मुम्मुरब्भूया छारियभूया तत्तकवेल्लय-ब्भूया[14] तत्तसमजोतिभूया[15] धूलिबहुला रेणुबहुला पकबहुला पणगबहुला चलणि-

१. स० पा०—पाणाण जाव सत्ताण ।
२. स० पा०—सोयणयाए जाव परियावणयाए ।
३. दीवे भारहे वासे (अ, क, व, म, स) ।
४. भभाभूए (अ, क, म); भभेभूए (व) ।
५. कोलाहलग० (क, व, म) ।
६. समयाणु० (स, वृ) ।
७. रयोसला (क, ता, ब, म); रओसला (स) ।
८. मोच्छिति (अ, क, ता, ब, म, स) ।
६. अहित (क, व, म) ।
१०. खट्टमेहा (म), खत्तमेहा (वृपा) ।
११. अजवणिज्जोदगा (अ, ब, स, वृपा), अप्पि-वणिज्जोदया (क, म); अवणिज्जोदगा (ता)
१२. ०समा० (ब, स) ।
१३. डोगरथल (अ, क, ता, वृपा) ।
१४. कवल्लय० (क); कवल्लग० (ता) ।
१५. प्रस्तुतागमस्य ३।४८ सूत्रे तथा स्थानागस्य

बहुला[1] बहूणं धरणिगोयराणं सत्ताणं दुन्निक्कमा[2] यावि भविस्सति।

११६. तीसे णं भंते ! समाए भरहे[3] वासे मणुयाणं केरिसए आगारभाव-पडोयारे भविस्सइ ?

गोयमा ! मणुया भविस्संति दुरूवा दुवण्णा[4] दुग्गंधा दुरसा दुफासा अणिट्ठा अकंता[5] •अप्पिया असुभा अमणुण्णा॰ अमणामा हीणस्सरा दीणस्सरा[6] अणिट्ठस्सरा •अकंतस्सरा अप्पियस्सरा असुभस्सरा अमणुण्णस्सरा॰ अमणामस्सरा अणादेज्जवयणपच्चायाया, निल्लज्जा, कूड-कवड-कलह-वह-बंध-वेरनिरया, मज्जायातिक्कमप्पहाणा, अकज्जनिच्चुज्जता, गुरुनियोग-विणयरहिया य, विकलरूवा, परूढनह-केस-मंसु-रोमा, काला, खर-फरुस-झामवण्णा, फुट्टसिरा, कविलपलियकेसा, बहुण्हारुसंपिणद्ध[7]-दुद्दंसणिज्जरूवा, संकुडितवलीतरंगपरिवेढियंगमंगा, जरापरिणतव्व थेरगनरा, पविरलपरिसडियदंतसेढी, उब्भडघडामुहा[8] विसमणयणा, वंकनासा, वंक[9]-वलीविगय-भेसणमुहा, कच्छु-कसराभिभूया, खरतिक्खनखकंडूइय[10]-विक्खयतणू[11], दद्दु-किडिभ-सिब्भ[12]-फुडियफरुसच्छवी, चित्तलंगा, टोलगति[13]-विसमसंधिबंधण-उक्कुडुअट्ठिगविभत्त-दुब्बला कुसंघयणं-कुप्पमाण-कुसंठिया, कुरूवा, कुट्ठाणासण-कुसेज्ज-कुभोइणो, असुइणो, अणेगवाहि-परिपीलियगमंगा, खलत-विब्भलगती[14], निरुच्छाहा, सत्तपरिवज्जिया, विगयचेट्ठ-नट्ठतेया, अभिक्खणं सीय-उण्ह-खर-फरुसवायविज्झडियमलिणपंसुरउगुंडियं-गमंगा[15], बहुकोह-माण-माया, बहुलोभा, असुह-दुक्खभागी, उस्सण्णं धम्मसण्ण-सम्मत्तपरिभट्ठा, उक्कोसेणं रयणिप्पमाणमेत्ता, सोलस-वीसतिवासपरमाउसो, 'पुत्तनत्तुपरिवाल-पणयबहुला'[16] गंगा-सिंधूओ महानदीओ, वेयड्ढं च पव्वयं

(८।१०) सूत्रे 'तत्त' पद पृथग् गृहीत, वृत्तावपि च तथैव व्याख्यातमस्ति। जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति (२ वक्षस्कार) वृत्तौ अत्र च 'तत्त' पदं समस्तं गृहीतमस्ति, व्याख्यातमपि च तथैव।

१. चलनप्रमाणः कर्दमस्खलनी (वृ)।

२ दोन्निक्कमा (अ, स)।

३. भारहे (अ, क, स)।

४. दुव्वण्णा (ता, ब, म)।

५. सं॰ पा॰—अकंता जाव अमणामा।

६. सं॰ पा॰—अणिट्ठस्सरा जाव अमणामस्सरा

७. ॰ण्हारुणि॰ (अ, ब, स), ॰ण्हारुणिसविणद्ध (ता)।

८. ॰घडमुहा (अ, म), ॰घडोमुहा (क, ब); ॰घाडामुहा (ता वृपा), घडग=घडा। अत्र एकपदे सन्धिर्जात।

९. बंग (क, ता, ब, म, वृपा)।

१०. ॰कडूइय (ता, ब, स)।

११. विक्कय (अ, क)।

१२. सिंभ (ता, स)।

१३. टोलागति (ता, ब, म, वृपा)।

१४. वभल (अ); वेभल (क, ता)।

१५. ॰रयपुंडियगमंगा (अ)।

१६. ॰परियार॰ (अ); ॰परियाल॰ (ब, स); ॰परिपालणवहुला (क, वृपा)।

निस्साए बात्तरिं[1] निम्रोदा[2] वीय वीयमेत्ता[3] विलवासिणो भविस्संति ।।

१२०. ते ण भते ! मणुया क आहार आहारेहिति ?
गोयमा ! तेण कालेण तेण समएणं गगा-सिधूओ महानदीओ रहपहवित्थराओ अक्खसोयप्पमाणमेत्त जल वोज्झिहिति, से वि य ण जले बहुमच्छकच्छभाइण्णे, णो चेव ण आउबहुले भविस्सति । तए ण ते मणुया सूरुग्गमणमुहुत्तसि य सूरत्थमणमुहुत्तसि य बिलेहितो निद्धाहिति, निद्धाइत्ता मच्छ-कच्छभे थलाइ गाहेहिति, गाहेत्ता सीतातवतत्तएहिं मच्छ-कच्छएहिं एक्कवीस वाससहस्साइ वित्ति कप्पेमाणा विहरिस्सति ।।

१२१. ते णं भते ! मणुया निस्सीला निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा, उस्सण्ण[4] मंसाहारा मच्छाहारा खोद्दाहारा कुणिमाहारा कालमासे काल किच्चा कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! उस्सण्ण नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिति ।।

१२२. ते ण भते ! सीहा, वग्घा, वगा, दीविया, अच्छा, तरच्छा, परस्सरा, निस्सीला तहेव जाव[5] कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! उस्सण्ण नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिति ।।

१२३. ते ण भते ! ढका, कका, विलका[6], मद्दुगा, सिही निस्सीला तहेव जाव[7] कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! उस्सण्ण नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिति ।।

१२४ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति[8] ।।

सत्तमो उद्देसो

संवुडस्स किरिया-पदं

१२५ सवुडस्स ण भते ! अणगारस्स आउत्त गच्छमाणस्स[9], °आउत्त चिट्ठमाणस्स, आउत्त निसीयमाणस्स°, आउत्त तुयट्टमाणस्स, आउत्त वत्थ पडिग्गह कवल

---

१. बाहत्तरि (ता, ब) ।
२. नियोया (ता) ।
३. बीयामेत्ता (अ, क, व, म, स) ।
४. ओस्सण्ण (अ, स) ।
५. भ० ७।१२१ ।
६ पिलका (अ) ।
७. भ० ७।१२१ ।
८ भ० १।५१ ।
९. स० पा०—गच्छमाणस्स जाव आउत्त ।

पादपुछणं गेण्हमाणस्स वा निक्खिवमाणस्स वा, तस्स णं भंते ! किं इरिया-वहिया[1] किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! संवुडस्स णं अणगारस्स आउत्तं गच्छमाणस्स जाव तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ ॥

१२६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—संवुडस्स णं अणगारस्स आउत्तं गच्छमाणस्स जाव नो संपराइया, किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा भवंति, तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ[2], •जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवंति, तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ। अहासुत्तं रीयमाणस्स इरिया-वहिया किरिया कज्जइ॰, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ। से णं अहासुत्तमेव रीयइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—संवुडस्स णं अणगारस्स आउत्तं गच्छमाणस्स जाव नो संपराइया किरिया कज्जइ[3] ॥

काम-भोग-पदं

१२७. रूवी भंते ! कामा ? अरूवी कामा ?
गोयमा ! रूवी कामा, नो अरूवी कामा ॥

१२८. सचित्ता भंते ! कामा ? अचित्ता कामा ?
गोयमा ! सचित्ता वि कामा, अचित्ता वि कामा ॥

१२९. जीवा भंते ! कामा ? अजीवा कामा ?
गोयमा ! जीवा वि कामा, अजीवा वि कामा ॥

१३०. जीवाणं भंते ! कामा ? अजीवाणं कामा ?
गोयमा ! जीवाणं कामा, नो अजीवाणं कामा ॥

१३१. कतिविहा णं भंते ! कामा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा कामा पण्णत्ता, तं जहा—सद्दा य, रूवा य ॥

१३२. रूवी[4] भंते ! भोगा ? अरूवी भोगा ?
गोयमा ! रूवी भोगा, नो अरूवी भोगा ॥

१३३. सचित्ता भंते ! भोगा ? अचित्ता भोगा ?
गोयमा ! सचित्ता वि भोगा, अचित्ता वि भोगा ॥

१३४. जीवा भंते ! भोगा[5] ? •अजीवा भोगा ?॰
गोयमा ! जीवा वि भोगा, अजीवा वि भोगा ॥

---

१. रिया॰ (व)।
२. सं॰ पा॰—तहेव जाव उस्सुत्तं।
३. तुलना—भ॰ ७।२०, २१।
४. रूविं (अ, क, ता, ब, म, स)।
५. सं॰ पा॰—भोगा पुच्छा।

१३५. जीवाणं भंते ! भोगा ? अजीवाण भोगा ?
गोयमा ! जीवाणं भोगा, नो अजीवाण भोगा ॥

१३६. कतिविहा ण भते ! भोगा पण्णता ?
गोयमा ! तिविहा भोगा पण्णत्ता, त जहा—गधा, रसा, फासा ॥

१३७. कतिविहा ण भते ! काम-भोगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा काम-भोगा पण्णता, त जहा—सद्दा, रूवा, गधा, रसा, फासा ॥

१३८. जीवा ण भते ! कि कामी ? भोगी ?
गोयमा ! जीवा कामी वि, भोगी वि ॥

१३९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जीवा कामी वि ? भोगी वि ?
गोयमा ! सोइदिय-चक्खिदियाइ पडुच्च कामी, घाणिदिय-जिब्भिदिय-फासिदियाइ पडुच्च भोगी। से तेणट्ठेण गोयमा[1] ! •एव वुच्चइ-जीवा कामी वि°, भोगी वि ॥

१४०. नेरइया ण भते ! किं कामी ? भोगी ?
एव चेव जाव[2] थणियकुमारा ॥

१४१. पुढविकाइयाण—पुच्छा ।
गोयमा ! पुढविकाइया नो कामी, भोगी ॥

१४२. से केणट्ठेण जाव भोगी ?
गोयमा ! फासिदिय पडुच्च। से तेणट्ठेण जाव भोगी। एव जाव वणस्सइ-काइया। वेइदिया एव चेव, नवर—जिब्भिदियफासिदियाइ पडुच्च। तेइदिया वि एवं चेव, नवर—घाणिदिय-जिब्भिदिय-फासिदियाइ पडुच्च ॥

१४३. चउरिदियाण—पुच्छा ।
गोयमा ! चउरिदिया कामी वि, भोगी वि ॥

१४४. से केणट्ठेण जाव भोगी वि ?
गोयमा ! चक्खिदिय पडुच्च कामी, घाणिदिय-जिब्भिदिय-फासिदियाइं पडुच्च भोगी। से तेणट्ठेण जाव भोगी वि। अवसेसा जहा जीवा जाव वेमाणिया ॥

१४५. एएसि ण भते ! जीवाणं 'कामभोगीण, नोकामीणं, नोभोगीण, भोगीण'[3] य कयरे कयरेहिंतो[4] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?

---

१. स० पा०—गोयमा जाव भोगी ।
२. × (अ), एव जाव (क, व, म, स); पू० प० २ ।
३. कामीण भोगीण नोकामीण नोभोगीण य (क, ता) ।
४. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा कामभोगी, नोकामी नोभोगी अणंतगुणा, भोगी अणंतगुणा[1] ॥

दुब्बलसरीरस्स भोगपरिच्चाय-पदं

१४६. छउमत्थे ण भंते ! मणूसे जे[2] भविए अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जित्तए, से नूणं भते ! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेणं, कम्मेण, बलेणं, वीरिएण, पुरिसक्कार-परक्कमेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुजमाणे विहरित्तए ? से नूणं भते ! एयमट्ठ एवं वयह[3] ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । पभू ण से उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइ विपुलाइ भोगभोगाइं भुजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे, महापज्जवसाणे भवइ ॥

१४७. आहोहिए[4] ण भते ! मणूसे जे भविए अण्णयरेसु देवलोएसु[5] •देवत्ताए उववज्जित्तए, से नूण भते ! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेण, कम्मेणं, वलेणं, वीरिएण, पुरिसक्कार-परक्कमेण विउलाइ भोगभोगाइं भुजमाणे विहरित्तए ? से नूणं भंते ! एयमट्ठ एव वयह ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । पभू णं से उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइं विपुलाइं भोगभोगाइं भुजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे°, महापज्जवसाणे भवइ ॥

१४८. परमाहोहिए ण भते ! मणूसे जे भविए तेणेव[6] भवग्गहणेणं सिज्झित्तए जाव[7] अंत करेत्तए, से नूण भते ! से खीणभोगी[8] •नो पभू उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं वीरिएण पुरिसक्कार-परक्कमेण विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ? से नूण भते ! एयमट्ठ एव वयह ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । पभू णं से उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइं विपुलाइं भोगभोगाइं भुजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे, महापज्जवसाणे भवइ° ॥

---

१. मणत० (ता) ।
२ मणुस्से (ता) ।
३ वदहा (ता, व) ।
४. अहोहिएए (ता, व) ।
५. स० पा०—एव चेव जहा छउमत्थे जाव महा° ।
६. तेणं चेव (क, ता, व, म) ।
७. भ० १।४४ ।
८. सं० पा०—सेस जहा छउमत्थस्स ।

१४९. केवली णं भंते ! मणूसे जे भविए तेणेव भवग्गहणेणं[1] •सिज्झित्तए जाव[2] अंतं करेत्तए, से नूणं भंते ! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार-परक्कमेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? से नूणं भंते ! एयमट्ठं एवं वयह ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे। पभू णं से उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे°, महापज्जवसाणे भवति ॥

अकामनिकरण-वेदणा-पदं

१५०. जे इमे भंते ! असण्णिणो पाणा, तं जहा—पुढविकाइया जाव[3] वणस्सइकाइया, छट्ठा य एगतिया तसा—एए णं अंधा, मूढा, तमपविट्ठा, तमपडल-मोहजाल-पडिच्छन्ना अकामनिकरणं वेदणं वेदेंतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! जे इमे असण्णिणो पाणा जाव वेदणं वेदेंतीति वत्तव्वं सिया।

१५१. अत्थि णं भंते ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेति ?
हंता ! अत्थि ॥

१५२. कहण्णं भंते ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेति ?
गोयमा ! जे णं नो पभू विणा पदीवेणं अंधकारंसि रूवाइं पासित्तए, जे णं नो पभू पुरओ रूवाइं अणिज्झाइत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू मग्गओ रूवाइं अणवयक्खित्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू पासओ रूवाइं अणवलोएत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू उड्ढं रूवाइं अणालोएत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू अहे रूवाइं अणालोएत्ता णं पासित्तए, एस णं गोयमा ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेति ॥

पकामनिकरण-वेदणा-पदं

१५३. अत्थि णं भंते ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेति ?
हंता अत्थि ॥

१५२. कहण्णं भंते ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेति ?
गोयमा ! जे णं नो पभू समुद्दस्स पारं गमित्तए, जे णं नो पभू समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं पासित्तए, जे णं नो पभू देवलोगं गमित्तए, जे णं नो पभू देव-

---

१. सं० पा०—एवं चेव जहा परमाहोहिए जाव महा° ।
२. भ० १।४४ ।
३. भ० १।४३७ ।

लोगगयाइं रूवाइं पासित्तए, एस ण गोयमा ! पभू वि पकामनिकरण वेदण वेदेति ॥

१५५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[1] ॥

अट्ठमो उद्देसो

मोक्ख-पदं

१५६. छउमत्थे ण भते ! मणूसे तीयमणतं सासयं समय केवलेण सजमेणं, [2]•केवलेण सवरेण, केवलेण बभचेरवासेण, केवलाहि पवयणमायाहि सिज्झिसु ? बुज्झिसु ? मुच्चिसु ? परिणिव्वाइंसु ? सव्वदुक्खाण अत करिसु ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे जाव[3]—

१५७. से नूण भते ! उप्पण्णणाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली अलमत्थु त्ति वत्तव्वं सिया ?

हता गोयमा ! उप्पण्णणाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली अलमत्थु त्ति वत्तव्व सिया[4]• ॥

हत्थि-कुथु-जीव-समाणत्त-पद

१५८. से नूण भते ! हत्थिस्स य कुथुस्स य समे चेव जीवे ?

हता गोयमा ! हत्थिस्स य कुथुस्स य समे चेव जीवे ।

[5]•से नूण भते ! हत्थीओ कुथू अप्पकम्मतराए चेव अप्पकिरियतराए चेव अप्पासवतराए चेव एव अप्पाहारतराए चेव अप्पनीहारतराए चेव अप्पुस्सासतराए चेव अप्पनीसासतराए चेव अप्पिड्ढितराए चेव अप्पमहतराए चेव अप्पज्जुइतराए चेव ?

कुथूओ हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव महासवतराए चेव महाहारतराए चेव महानीहारतराए चेव महाउस्सासतराए चेव महानीसासतराए चेव महिड्ढितराए चेव महामहतराए चेव महज्जुइतराए चेव ?

---

१. भ० १।५१ ।

२. स० पा०—एव जहा पढमसए चउत्थे उद्देसए तहा भाणियव्व जाव अलमत्थु ।

३. भ० १।२०१-२०८ ।

४. तुलना—भ० १।२००-२०६; ५।११५ ।

५. स० पा०—एव जहा रायपसेणइज्जे जाव खुड्डिय ।

हंता गोयमा हत्थीओ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव कुंथूओ वा हत्थी महाकम्मतराए चेव,

हत्थीओ कुंथू अप्पकिरियतराए चेव कुंथूओ वा हत्थी महाकिरियतराए चेव,

हत्थीओ कुंथू अप्पासवतराए चेव कुंथूओ वा हत्थी महासवतराए चेव,

एवं आहार-नीहार-उस्सास-नीसास-इड्ढि-महज्जुइएहिं हत्थीओ कुंथू अप्पतराए चेव कुंथूओ वा हत्थी महातराए चेव ॥

१५९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे ?

गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया—दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा निवाया निवायगंभीरा। अह णं केइ पुरिसे जोइं व दीवं व गहाय तं कूडागारसालं अंतो-अंतो अणुपविसइ, तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समंता घण-निचिय-निरंतर-निच्छिड्डाइं दुवार-वयणाइं पिहेति, तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए तं पईवं पलीवेज्जा।

तए णं से पईवे तं कूडागारसालं अंतो-अंतो ओभासइ उज्जोवेइ तवति पभासेइ, नो चेव णं बाहिं।

अह णं से पुरिसे तं पईवं इड्डुरएणं पिहेज्जा, तए णं से पईवे तं इड्डुरयं अंतो अंतो ओभासेइ उज्जोवेइ तवति पभासेइ, नो चेव णं इड्डुरगस्स बाहिं, नो चेव णं कूडागारसालं, नो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं।

एवं—गोकिलिंजेणं पच्छियापिडएणं गंडमाणियाए आढएणं अद्धाढएणं पत्थएणं अद्धपत्थएणं कुलवेणं अद्धकुलवेणं चाउब्भाइयाए अट्ठभाइयाए सोलसियाए बत्तीसियाए चउसट्ठियाए।

अह णं पुरिसे तं पईवं दीवचपएणं पिहेज्जा। तए णं से पदीवे दीवचंपगस्स अंतो-अंतो ओभासति उज्जोवेइ तवति पभासेइ, नो चेव णं दीवचंपगस्स बाहिं, नो चेव णं चउसट्ठियाए बाहिं, नो चेव णं कूडागारसालं, नो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं।

एवामेव गोयमा ! जीवे वि जं जारिसयं पुव्वकम्मनिबद्धं बोंदिं निव्वत्तेइ तं असंखेज्जेहिं जीवपदेसेहिं सचित्तीकरेइ—खुड्डियं वा महालियं वा।° से तेणट्ठेणं गोयमा[1] ! °एवं वुच्चइ—हत्थिस्स य कुंथुस्स य° समे चेव जीवे[2] ॥

सुह-दुक्ख-पदं

१६०. नेरइयाणं भंते ! पावे कम्मे जे य कडे, जे य कज्जइ, जे य कज्जिस्सइ सव्वे से दुक्खे, जे निज्जिण्णे से सुहे ?

---

१. स० पा०—गोयमा जाव समे।

२. एतच्च सर्वमपि वाचनान्तरे साक्षाल्लिखितमेव दृश्यते (वृ)।

हंता गोयमा ! नेरइयाण पावे कम्मे[1] •जे य कडे, जे य कज्जइ, जे य कज्जिस्सइ सव्वे से दुक्खे, जे निज्जिण्णे से° सुहे । एवं जाव[2] वेमाणियाणं ॥

दसविहसण्णा-पदं

१६१. कति ण भंते ! सण्णाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! दस सण्णाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा, कोहसण्णा, माणसण्णा, मायासण्णा, लोभसण्णा, लोगसण्णा, ओहसण्णा । एव जाव वेमाणियाण ॥

नेरइयाणं दसविहवेदणा-पदं

१६२. नेरइया दसविह वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरति, त जहा—सीयं, उसिणं, खुह, पिवास, कंडु, परज्झ, जर, दाह, भय, सोग ॥

हत्थि-कुथूणं अपच्चक्खाणकिरिया-पदं

१६३. से नूणं भते ! हत्थिस्स य कुथुस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ?
हंता गोयमा ! हत्थिस्स य कथुस्स य[3] •समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया° कज्जइ ॥

१६४. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ[4]—•हत्थिस्स य कुथुस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया° कज्जइ ?
गोयमा ! अविरति पडुच्च । से तेणट्ठेण[5] •गोयमा ! एव वुच्चइ—हत्थिस्स य कुथुस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया° कज्जइ ।

अहाकम्मादि-पदं

१६५ अहाकम्म ण भंते ! भुजमाणे किं बंधइ ? कि पकरेइ ? कि चिणाइ ? कि उवचिणाइ ?
[6]•गोयमा ! अहाकम्मं ण भुजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ सिढिलबधणबद्धाओ धणियबधणबद्धाओ पकरेइ°[7] जाव सासए पडिए, पडियत्त असासय ।

१६६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[8] ॥

---

१. स० पा०—कम्मे जाव सुहे ।
२. पू० प० २ ।
३. स० पा०—कुथुस्स य जाव कज्जइ ।
४. स० पा०—वुच्चइ जाव कज्जइ ।
५. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव कज्जइ ।
६. स० पा—एव जहा पढमे सए नवमे उद्देसए तहा भाणियव्व ।
७ भ० १।४३६-४४० ।
८. भ० १।५१ ।

नवमो उद्देसो

असंवुड-अणगारस्स विउव्वणा-पदं

१६७. असंवुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगवण्णं एगरूवं विउव्वित्तए ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१६८. असंवुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगवण्णं एगरूवं[1] °विउव्वित्तए ?°
हंता पभू ।।

१६९. से णं भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ?
गोयमा ! इहगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, नो तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, नो अण्णत्थगए पोग्गले[2] °परियाइत्ता° विकुव्वइ ।
एवं २. एगवण्णं अणेगरूवं[3] ३ °अणेगवण्णं एगरूवं ४. अणेगवण्णं अणेगरूवं— चउभंगो ।।

१७०. असंवुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू कालगपोग्गलं नीलगपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ? नीलगपोग्गलं वा कालगपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । परियाइत्ता पभू जाव[4]—

१७१. असंवुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू निद्धपोग्गलं लुक्खपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ? लुक्खपोग्गलं वा निद्धपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । परियाइत्ता पभू ।।

१७२. से णं भंते किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ?
गोयमा ! इहगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, नो तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति° ।।

---

१. सं० पा०—एगरूवं जाव हंता ।
२. सं० पा०—पोग्गले जाव विकुव्वइ ।
३. सं० पा०—चउभंगो जहा छट्ठसए नवमे उद्देसए तहा इह वि भाणियव्वं, नवरं अणगारे इहगयं च इहगते चेव पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, सेसं तं चेव जाव लुक्खपोग्गलं निद्धपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए । हंता पभू । से भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता जाव नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ।
४. भ० ६।१६३-१६७ ।

महासिलाकंटयसंगाम-पदं

१७३ नायमेय अरहया, सुयमेय अरहया, विण्णायमेयं अरहया—महासिलाकंटए संगामे। महासिलाकंटए णं भंते! संगामे वट्टमाणे के जइत्था? के पराजइत्था[1]? गोयमा! वज्जी, विदेहपुत्ते जइत्था[2], नव मल्लई, नव लेच्छई—कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो पराजइत्था॥

१७४ तए णं से कोणिए राया महासिलाकंटगं संगामं उवट्ठियं जाणित्ता कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! उदाइं[3] हत्थिरायं पडिकप्पेह, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह, सण्णाहेत्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह॥

१७५ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा कोणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया जाव[4] मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता खिप्पामेव छेयायरियोवएस-मति-कप्पणा-विकप्पेहिं सुनिउणेहिं[5] उज्जलणेवत्थ-हव्व-परिवच्छियं सुसज्जं जाव[6] भीमं संगामियं अओज्झं[7] उदाइं हत्थिरायं पडिकप्पेंति, हय-गय[8]-•रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं॰ सण्णाहेंति, सण्णाहेत्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[9]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु॰ कूणियस्स रण्णो तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति॥

१७६. तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सण्णद्ध-बद्ध-वम्मियकवए उप्पीलियसरासण-पट्टिए[10] पिणद्धगेवेज्ज[11]-विमलवरबद्धचिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे सकोरेंटमल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामरवालवीजियंगे[12] मंगलजयसद्दकयालोए[13] जाव[14] जेणेव उदाई हत्थिराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदाइं हत्थिरायं दुरूढे॥

---

१ पराजितत्था (ता)।
२ जदित्था (क, ता)।
३ उदायिं (क, ता, ब, म); उदातिं (स)।
४. भ० ३।११०।
५ सुणिउणेहिं एवं जहा ओववाइए जाव (अ, क, ता, ब, म, स)। वाचनान्तरे त्विद-साक्षाल्लिखितमेव दृश्यते (वृ)।
६. ओ० सू० ५७।
७. अउज्झं (ब, स)।
८ सं० पा०—गय जाव सण्णाहेंति।
९ सं० पा०—करयल जाव कूणियस्स।
१०. °पट्टीए (अ, क, ब, म, स)।
११ पिणिद्ध° (ता, म, स)।
१२. °वीतियंगे (अ, स); °वीतितंगे (क, ब)।
१३ जत° (ब); °कयलोए एवं जहा उववाइए (अ, क, ता, ब, म, स)।
१४. ओ० सू० ६३।

१७७. तए णं से कूणिए राया[1] हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे[2] जाव[3] सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमाणीहिं हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभडचडगरविंदपरिक्खित्ते जेणेव महासिलाकंटए संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता महासिलाकंटगं संगामं ओयाए। पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया एगं महं अभेज्जकवयं वइरपडिरूवगं विउव्वित्ता णं चिट्ठइ। एवं खलु दो इंदा संगामं संगामेंति, तं जहा—देविंदे य, मणुइंदे य। 'एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया जइत्तए', एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया पराजिणित्तए॥

१७८. तए णं से कूणिए राया महासिलाकंटगं संगामं संगामेमाणे नव मल्लई, नव लेच्छई—कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-द्धयपडागे किच्छपाणगए[5] दिसोदिसिं पडिसेहित्था॥

१७९. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—महासिलाकंटए संगामे?
गोयमा! महासिलाकंटए णं संगामे वट्टमाणे जे तत्थ आसे वा हत्थी वा जोहे वा सारही वा तणेण वा कट्ठेण वा पत्तेण वा सक्कराए वा अभिहम्मति, सव्वे से जाणेइ महासिलाए अहं[6] अभिहए। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—महासिलाकंटए संगामे॥

१८०. महासिलाकंटए णं भंते! संगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ?
गोयमा! चउरासीइं जणसयसाहस्सीओ वहियाओ॥

१८१ ते णं भंते! मणुया निस्सीला[7] •निग्गुणा निम्मेरा° निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा रुट्ठा परिकुविया समरवहिया अणुवसंता कालमासे कालं किच्चा कहिं गया? कहिं उववण्णा?
गोयमा! उस्सण्णं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववण्णा॥

रहमुसलसंगाम-पदं

१८२. नायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया—रहमुसले संगामे[8]। रहमुसले णं भंते! संगामे वट्टमाणे के जइत्था? के पराजइत्था?
गोयमा! वज्जी, विदेहपुत्ते, चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया जइत्था; नव मल्लई, नव लेच्छई पराजइत्था॥

---

१. णरिंदे (क, ता, व, म)।
२. °वच्छे एवं जहा उववाइए (अ, क, ता, व, म, स)।
३. ओ० सू० ६५।
४. × (अ, व, म, स)।
५. किच्छोवगयपाणे (ना० १।८।१६६)।
६. ह (क, व, म)।
७. स० पा०—निस्सीला जाव निप्पच्चक्खाण।
८. संगामे रह २ (ता)।

१८३. तए णं से कूणिए राया रहमुसलं संगामं उवट्ठियं[1] ●जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! भूयाणंदं हत्थिरायं पडिकप्पेह, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह, सण्णाहेत्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह ।।

१८४ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा कोणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया जाव[2] मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता खिप्पामेव छेयायरियोवएस-मति-कप्पणा-विकप्पेहिं सुनिउणेहिं उज्जलणेवत्थ-हव्वपरिवच्छियं सुसज्जं जाव[3] भीमं संगामियं अओज्झं भूयाणंदं हत्थिरायं पडिकप्पेंति, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेंति, सण्णाहेत्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु कूणियस्स रण्णो तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

१८५ तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सण्णद्ध-बद्ध-वम्मियकवए उप्पीलियसरासण-पट्टिए पिणद्धगेवेज्ज-विमलवरबद्धचिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामरवालवीजियंगे, मंगलजयसद्दकयालोए जाव[4] जेणेव भूयाणंदे हत्थिराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भूयाणंदं हत्थिरायं दुरूढे ।।

१८६ तए णं से कूणिए राया हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे जाव[5] सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमाणीहिं हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभडचडगरविंदपरिक्खित्ते जेणेव रहमुसले संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहमुसलं संगामं ओयाए। पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया एगं महं अभेज्जकवयं वइरपडिरूवगं विउव्वित्ता णं चिट्ठइ° । मग्गओ य से चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया[6] एगं महं आयसं किढिणपडिरूवगं[7] विउव्वित्ता णं चिट्ठइ। एवं खलु तओ इंदा संगामं संगामेंति, तं जहा—देविंदे य, मणुइंदे य, असुरिंदे य। एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया जइत्तए[8],

---

१. स० पा०—सेस जहा महासिलाकंटए नवरं भूयाणंदे हत्थिराया जाव रहमुसलं संगामं ओयाए। पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया एवं तहेव जाव चिट्ठइ ।

२. ३।११० ।

३ ओ० सू० ५७ ।

४. ओ० सू० ६३ ।

५. ओ सू० ६५ ।

६. असुरराया (अ, स) ।

७. कढिण° (अ), किड्ढिण° (क, स) ।

८. स० पा०—तहेव जाव दिसोदिसिं ।

•एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया पराजिणित्तए ॥

१८७ तए णं से कूणिए राया रहमुसल संगामं संगामेमाणे नव मल्लई, नव लेच्छई—कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-द्धयपडागे किच्छपाणगए° दिसोदिसिं पडिसेहित्था ॥

१८८ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—रहमुसले संगामे ?
गोयमा ! रहमुसले णं संगामे वट्टमाणे एगे रहे अणासए, असारहिए, अणारोहए, समुसले महया जणक्खयं, जणवहं, जणप्पमद्दं, जणसंवट्टकप्पं रुहिरकद्दमं करेमाणे सव्वओ समंता परिधावित्था। से तेणट्ठेणं[1] •गोयमा ! एवं वुच्चइ°—रहमुसले संगामे ॥

१८९ रहमुसले णं भंते ! संगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ?
गोयमा ! छण्णउतिं जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ॥

१९० ते णं भंते ! मणुया निस्सीला[2] •निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा रुट्ठा परिकुविया समरवहिया अणुवसंता कालमासे कालं किच्चा कहिं गया ? कहिं° उववन्ना ?
गोयमा ! तत्थ णं दससाहस्सीओ एगाए मच्छियाए[3] कुच्छिंसि उववन्नाओ। एगे देवलोगेसु उववन्ने। एगे सुकुले पच्चायाए। अवसेसा उस्सण्णं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववन्ना ॥

१९१ कम्हा णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया, चमरे य असुरिंदे असुरकुमारराया कूणियस्स रण्णो साहेज्जं[4] दलइत्था ?
गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया पुव्वसंगतिए, चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया परियायसंगतिए। एवं खलु गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया, चमरे य असुरिंदे असुरकुमारराया कूणियस्स रण्णो साहेज्जं दलइत्था ॥

वरुण-नागनत्तुय-पदं

१९२. बहुजणे णं भंते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[5] परूवेइ—एवं खलु बहवे मणुस्सा अण्णयरेसु उच्चावएसु संगामेसु 'अभिमुहा चेव पहया'[6] समाणा कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ॥

१९३ से कहमेयं भंते ! एवं ?
गोयमा ! जण्णं से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ[7] •जाव[8] परूवेइ—एवं

---

१ सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव रह° ।
२. सं० पा०—निस्सीला जाव उववन्ना।
३. मच्छीए (म)।
४. साहिज्ज (क); साहज्ज (ता, म)।
५. भ० १।४२०।
६. अभिहता चेव पहता (क, स), अभिहया (ता)
७. सं० पा०—एवमाइक्खइ जाव उववत्तारो।
८. भ० १।४२०।

खलु बहवे मणुस्सा अण्णयरेसु उच्चावएसु संगामेसु अभिमुहा चेव पहया समाणा कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए° उववत्तारो भवंति, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु। अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव[1] परूवेमि—एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं वेसाली नामं नगरी होत्था—वण्णओ[2]। तत्थ णं वेसालीए नगरीए वरुणे नामं नागनत्तुए परिवसइ—अड्ढे जाव[3] अपरिभूए, समणोवासए, अभिगयजीवाजीवे जाव[4] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं 'ओसह-भेसज्जेणं'[5] पडिलाभेमाणे छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति॥

१९४ तए णं से वरुणे नागनत्तुए अण्णया कयाइ रायाभिओगेणं[6], गणाभिओगेणं, बलाभिओगेणं रहमुसले संगामे आणत्ते समाणे छट्ठभत्तिए अट्ठमभत्तं अणुवट्टेति, अणुवट्टेत्ता कोडुंबियपुरिसे[7] सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव[8] उवट्ठावेह[9], हय-गय-रह-पवर[10]-°जोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह°, सण्णाहेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह॥

१९५. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[11] पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सच्छत्तं सज्झयं जाव[12] चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठावेंति, हय-गय-रह[13]-°पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं° सण्णाहेंति, सण्णाहेत्ता जेणेव वरुणे नागनत्तुए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता जाव[14] तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति॥

१९६ तए णं से वरुणे नागनत्तुए जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति, [15]°उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सण्णद्ध-बद्ध-वम्मियकवए[16] सकोरेंटमल्ल[17]-

---

१. भ० १।४२१।
२. ओ० सू० १।
३. भ० २।९४।
४. भ० २।९४।
५. वृत्तौ उद्धृते पाठे एतन्नास्ति। भ० २।९४ सूत्रादसौ पाठः पूरितस्तत्रापि 'क' प्रतौ एतत् नास्ति।
६. रायाहियोगेण (अ, स); रायनियोगेण (ता)
७. कोदुंबिय° (ता); कोटुंबिय° (स)।
८. युक्तमेव रथसामग्र्या इति गम्यम् (वृ)।
९. उवट्ठवेह (अ)।
१०. सं० पा०—पवर जाव सण्णाहेत्ता।
११. भ० ७।१७५।
१२. राय० सू० ६८१; वाचनान्तरे तु साक्षादेव दृश्यते (वृ)।
१३. सं० पा०—रह जाव सण्णाहेंति।
१४. भ० ७।१७५।
१५. सं० पा०—जहा कूणिओ जाव पायच्छित्ते।
१६. पू० भ० ७।१७६।
१७. सं० पा०—सकोरेंटमल्ल जाव धरिज्ज°।

•दामेण छत्तेणं° धरिज्जमाणेणं, अणेगगणनायग[1]-•दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह°-दूय-संधिपालसद्धिं[2] संपरिवुडे मज्जणघराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ[3], दुरुहित्ता हय-गय-रह[4]-•पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं° संपरिवुडे, महयाभडचडगरविंदपरिक्खित्ते[5] जेणेव रहमुसले संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहमुसलं संगामं ओयाए ।।

१९७. तए णं से वरुणे नागनत्तुए रहमुसलं संगामं ओयाए समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ—कप्पति मे रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स जे पुव्विं पहणइ से पडिहणित्तए[6], अवसेसे नो कप्पतीति; अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ अभिगेण्हेत्ता रहमुसलं संगामं संगामेति ।।

१९८. तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स एगे पुरिसे सरिसए 'सरित्तए सरिव्वए'[7] सरिसभंडमत्तोवगरणे रहेणं पडिरहं हव्वमागए ।।

१९९. तए णं से पुरिसे वरुणं नागनत्तुयं एवं वदासी—पहण भो वरुणा ! नागनत्तुया ! पहण भो वरुणा ! नागनत्तुया !

२००. तए णं से वरुणे नागनत्तुए तं पुरिसं एवं वदासी—नो खलु मे कप्पइ देवाणुप्पिया ! पुव्विं अहयस्स पहणित्तए, तुमं चेव णं पुव्विं पहणाहि ।।

२०१. तए णं से पुरिसे वरुणेणं नागनत्तुएणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते[8] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसइ, परामुसित्ता उसुं परामुसइ, परामुसित्ता ठाणं ठाति, ठिच्चा आययकण्णाययं उसुं करेइ, करेत्ता वरुणं नागनत्तुयं गाढप्पहारीकरेइ ।।

२०२. तए णं से वरुणे नागनत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे आसुरुत्ते[9] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसइ, परामुसित्ता उसुं परामुसइ, परामुसित्ता आययकण्णाययं उसुं करेइ, करेत्ता तं पुरिसं एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवेइ ।।

२०३. तए णं से वरुणे नागनत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रहं परावत्तेइ, परावत्तेत्ता रहमुसलाओ संगामाओ पडिनिक्खमति,

---

१. स० पा०—अणेगगणनायग जाव दूय ।
२. संधिवाल० (अ, क, ब, म); संधिवालग० (ता) ।
३. द्रुहेति (क); द्रुहति (ता, ब) ।
४. स० पा०—रह जाव संपरिवुडे ।
५. °गर जाव परिक्खित्ते (अ, क, ता, ब, म, स)
६. पडिपह० (ता) ।
७. सरिसत्तए सरिसव्वए (क) ।
८. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि° ।
९. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि० ।

पडिनिक्खमित्ता एगतमंतं[1] अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रह ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता तुरए मोएइ, मोएत्ता तुरए विसज्जेइ, विसज्जेत्ता दब्भसथारग सथरइ, सथरित्ता दब्भसथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे सपलियकनिसण्णे करयल[2] •परिग्गहिय दसनह सिरसावत्तं मत्थए अजलि° कट्टु एवं वयासी—नमोत्थु ण अरहताणं भगवंताण जाव[3] सिद्धिगतिनामधेय ठाण सपत्ताण, नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आदिगरस्स जाव[4] सिद्धिगतिनामधेय ठाणं सपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स, वदामि ण भगवत तत्थगयं इहगए, पासउ[5] मे से भगव तत्थगए[6] •इहगय ति कट्टु° वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—पुव्वि पि ण मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, एव जाव[7] थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, इयाणि पि ण अह तस्सेव भगवओ महावीरस्स अतिए सव्वं पाणाइवाय पच्चक्खामि जावज्जीवाए[8] • जाव[9] मिच्छादसणसल्ल पच्चक्खामि जावज्जीवाए। सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं—चउव्विह पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए। ज पि य इमं सरीर इट्ठ कत पियं जाव[10] मा णं वाइय-पित्तिय-सेभिय-सण्णिवाइय विविहा रोगायका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु° एयं पि ण चरिमेहि ऊसास-नीसासेहि वोसिरिस्सामि त्ति कट्टु सण्णाहपट्ट मुयइ, मुइत्ता सल्लुद्धरण करेइ, करेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए[11] कालगए ॥

वरुणनागनत्तुय-मित्त-पदं

२०४. तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स एगे पियबालवयंसए रहमुसल संगाम सगामेमाणे एगेण पुरिसेण गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे[12] •अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे° अधारणिज्जमिति कट्टु वरुण नागनत्तुयं रहमुसलाओ सगामाओ पडिनिक्खममाण पासइ, पासित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता जहा वरुणे जाव[13] तुरए विसज्जेति, पडसथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे[14]

---

१ एगत (क)।
२. स० पा०—करयल जाव कट्टु।
३. ओ० सू० २१।
४. ओ० सू० २१।
५. पासइ (ता)।
६. स० पा०—तत्थगए जाव वंदइ।
७. भ० ७।३२।
८. स० पा०—एव जहा खदओ जाव एवं।
९. भ० १।३८४।
१०. भ० २।५२।
११. पुव्वि (ता)।
१२. स० पा०—अत्थामे जाव अधारणिज्जमिति
१३. भ० ७।२०३।
१४. स० पा०—पुरत्थाभिमुहे जाव अंजलि।

•संपलियंकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए° अजलि कट्टु एवं वयासी—जाइ णं भंते ! मम पियबालवयसस्स वरुणस्स नाग-नत्तुयस्स सीलाइं वयाइं गुणाइं वेरमणाइं पच्चक्खाण-पोसहोववासाइ, ताइ णं 'ममं पि'[1] भवतु त्ति कट्टु सण्णाहपट्टं मुयइ[2], मुइत्ता सल्लुद्धरणं करेइ, करेत्ता आणुपुव्वीए कालगए ।।

२०५. तए ण त वरुण नागनत्तुय कालगयं जाणित्ता अहासन्निहिएहि वाणमतरेहि देवेहि दिव्वे सुरभिगधोदगवासे वुट्ठे, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए[3], दिव्वे य गीय-गंधव्वनिनादे कए या वि होत्था ।।

२०६. तए ण तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स तं दिव्व देविड्ढि दिव्व देवज्जुति दिव्व देवाणुभाग सुणित्ता य पासित्ता य बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[4] परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! बहवे मणुस्सा[5] •अण्णयरेसु उच्चावएसु संगामेसु अभिमुहा चेव पहया समाणा कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए° उववत्तारो भवति ।।

२०७. वरुणे ण भंते ! नागनत्तुए कालमासे कालं किच्चा कहि गए ? कहि उववन्ने ? गोयमा ! सोहम्मे कप्पे, अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववन्ने । तत्थ ण अत्थेग-तियाणं देवाण चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता । तत्थ ण वरुणस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

२०८. से णं भंते ! वरुणे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण, भवक्खएण, ठिइक्ख-एण[6] •अणंतर चय चइत्ता कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं° अतं करेहिति ।।

२०९. वरुणस्स ण भंते ! नागनत्तुयस्स पियबालवयंसए कालमासे कालं किच्चा कहि गए ? कहि उववन्ने ?
गोयमा ! सुकुले पच्चायाते ।।

२१०. से णं भंते ! तओहितो अणंतर उव्वट्टित्ता कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जि-हिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[7] अंतं काहिति ।।

२११. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति[8] ।।

---

१. मम वि (व) ।
२. ओमुयति (अ, क, ता, व) ।
३. निवाडिते (अ, क, ता) ।
४. भ० १।४२० ।
५. स० पा०—मणुस्सा जाव उववत्तारो ।
६. स० पा०—ठिइक्खएण जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंत ।
७. भ० ७।२०८ ।
८. भ० १।५१ ।

दसमो उद्देसो

कालोदाइ-पभितीणं पचत्थिकाए संदेह-पदं

२१२ तेण कालेणं तेण समएण रायगिहे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[1]। गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव[2] पुढविसिलापट्टओ। तस्स ण गुणसिलयस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अण्णउत्थिया परिवसंति, तं जहा—कालोदाई, सेलोदाई, सेवालोदाई[3], उदए, नामुदए[4], नम्मुदए, अण्णवालए, सेलवालए[5], संखवालए, सुहत्थी गाहावई॥

२१३. तए ण तेसि अण्णउत्थियाण अण्णया कयाइ[6] एगयओ सहियाण[7] समुवागयाण सण्णिविट्ठाण सण्णिसण्णाण अयमेयारूवे[8] मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एव खलु समणे नायपुत्ते पच अत्थिकाए पण्णवेति, त जहा—धम्मत्थिकाय जाव पोग्गलत्थिकायं[9]।

तत्थ ण समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए पण्णवेति, त जहा—धम्मत्थिकाय, अधम्मत्थिकाय, 'आगासत्थिकाय, पोग्गलत्थिकाय'[10]। एग च णं समणे नायपुत्ते जीवत्थिकाय अरूविकाय जीवकायं पण्णवेति।

तत्थ णं समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरूविकाए पण्णवेति, तं जहा—धम्मत्थिकाय, अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकाय, जीवत्थिकायं। एग च ण समणे नायपुत्ते पोग्गलत्थिकाय रूविकायं अजीवकाय पण्णवेति। से कहमेयं मण्णे एव?

२१४. तेण कालेण तेण समएणं समणे भगव महावीरे जाव[11] गुणसिलए चेइए समोसढे जाव[12] परिसा पडिगया॥

---

१. ओ० सू० १।
२. ओ० सू० २-१३।
३. सेवलो° (ता)।
४. णामुए (ता); णोमुदए (व)।
५. × (अ, ता, म)।
६. कयाई (क), कदायी (ता, ब, म), कयाइ (स)।
७. × (क, ता, ब, म, स)।
८. अतमेतारूवे (ता)।
९. आगासत्थिकाय (अ, क, ता, ब, म, स); भ० ७।२१८ सूत्रे कालोदायिना प्रतिपादितस्य भगवत सिद्धान्तस्य भगवता स्ववचनेन स्वीकृतिः क्रियते। तत्र 'त सच्चे ण एसमट्ठे कालोदाई! अह पचत्थिकायं पण्णवेमि, त जहा—धम्मत्थिकाय जाव पोग्गलत्थिकाय' एतदनुसारेण एष पाठो युक्तोस्ति, तेन एतदनुसारेणासौ स्वीकृतः।
१०. पोग्गलत्थिकाय आगासत्थिकायं (ता)।
११. भ० १।७।
१२. भ० १।८।

२१५. तेण कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नाम अणगारे 'गोयमे गोत्तेण'[1] जाव[2] भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्त-पाणं पडिग्गाहित्ता रायगिहाओ[3] °नगराओ पडिनिक्खमइ, अतुरियमचवलमसंभंत[4] जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ° रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे तेसिं अण्णउत्थियाणं अदूरसामंतेणं वीईवयति ।।

२१६. तए णं ते अण्णउत्थिया भगवं गोयमं अदूरसामंतेणं वीईवयमाणं पासंति, पासित्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमा कहा अविप्पकडा[5], अयं च णं गोयमे अम्हं अदूरसामंतेणं वीईवयइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं गोयमं एयमट्ठं पुच्छित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे नायपुत्ते पंच अत्थिकाए पण्णवेति, तं जहा—धमत्थिकायं जाव पोग्गलत्थिकायं[6] । तं चेव जाव[7] रूविकायं अजीवकायं पण्णवेति । से कहमेयं गोयमा ! एवं ?

कालोदाइस्स समाहाणपुव्वं पव्वज्जा-पदं

२१७. तए णं से भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—नो खलु वयं देवाणुप्पिया ! अत्थिभावं नत्थि त्ति वदामो, नत्थिभावं अत्थि त्ति वदामो । अम्हे णं देवाणुप्पिया ! सव्वं अत्थिभावं अत्थि त्ति वदामो, सव्वं नत्थिभावं नत्थि त्ति वदामो । तं चेयसा[8] खलु तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं सयमेव पच्चुवेक्खह त्ति कट्टु ते अण्णउत्थिए एवं वदासी[9], वदित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव[10] भत्त-पाणं पडिदसेति, पडिदसेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासण्णे जाव[11] पज्जुवासति ।।

२१८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे महाकहापडिवण्णे या वि होत्था । कालोदाई य तं देसं हव्वमागए । कालोदाईति ! समणे भगवं महावीरे कालोदाइं

---

१. गोयमगोत्ते णं (अ, ता) ।
२. एवं जहा वितियसते णियंठुद्देसए जाव (अ, क, ता, ब, म, स); भ० २।१०६-१०९ ।
३. सं० पा०—रायगिहाओ जाव अतुरियमचवलमसंभंत जाव रियं ।
४. भ० २।११० सूत्रे '०मसंभंते' इति पाठः स्वीकृतोस्ति ।
५. अविउप्पकडा (अ, क, ब, म, वृपा) ।
६. आगासत्थिकायं (अ, क, ब, म, स) ।
७. भ० ७।२१३ ।
८. वेदसा (अ, ता, म, वृपा) ।
९. वदति (ता,ब, म) ।
१०. एवं जहा नियंठुद्देसए जाव (अ, क, ता, ब, म, स), भ० २।११० ।
११ भ० ३।१३ ।

एवं वयासी—से नूण भे कालोदाई ! अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं समुवागयाणं सण्णिविट्ठाण सण्णिसण्णाण अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे नायपुत्ते पच अत्थिकाए पण्णवेति तहेव जाव[1] से कहमेय मण्णे एव ? से नूण कालोदाई ! अत्थे समत्थे ?

हता अत्थि । त सच्चे ण एसमट्ठे कालोदाई ! अह पचत्थिकायं पण्णवेमि, त जहा—धम्मत्थिकाय जाव पोग्गलत्थिकाय ।

तत्थ ण अह चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए[2] पण्णवेमि, [3]°त जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकाय, पोग्गलत्थिकाय । एग च णं अह जीवत्थिकाय अरूवीकाय जीवकाय पण्णवेमि ।

तत्थ ण अह चत्तारि अत्थिाए अरूवीकाए पण्णवेमि, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकाय, जीवत्थिकाय ।° एगं च ण अह पोग्गलत्थिकाय रूविकाय पण्णवेमि ॥

२१९ तए ण से कालोदाई समण भगव महावीरं एव वदासी—एयंसि णं भंते ! धम्मत्थिकायंसि, अधम्मत्थिकायंसि, आगासत्थिकायंसि अरूविकायंसि अजीवकायंसि चक्किया केइ आसइत्तए वा ? सइत्तए वा ? चिट्ठइत्तए[4] वा ? निसीइत्तए वा ? तुयट्टित्तए वा ?

णो तिणट्ठे समट्ठे । कालोदाई ! एगंसि ण पोग्गलत्थिकायंसि रूविकायंसि अजीवकायंसि चक्किया केइ आसइत्तए वा, सइत्तए वा[5], °चिट्ठइत्तए वा, निसीइत्तए वा°, तुयट्टित्तए वा ॥

२२०. एयसि ण भते ! पोग्गलत्थिकायंसि रूविकायसि अजीवकायसि जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसजुत्ता कज्जंति ?

णो तिणट्ठे समट्ठे । कालोदाई ! एयंसि ण जीवत्थिकायसि अरूविकायसि जीवाण पावा कम्मा पावफलविवागसजुत्ता कज्जति । एत्थ णं से कालोदाई सबुद्धे समण भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिय धम्मं निसामेत्तए । एव जहा खदए तहेव पव्वइए, तहेव एक्कारस अंगाइ अहिज्जइ जाव[6] विचित्तेहिं तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२२१. तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ, गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

---

१. भ० ७।२१३ ।
२ अजीवताए (क), अजीवत्थिकाए (स) ।
३. स० पा०—तहेव जाव एग ।
४. चिट्ठित्तए (अ, व, ता) ।
५. सं० पा०—सइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए ।
६. भ० २।५०-६३ ।

कालोदाइस्स कम्मादिविसए पसिण-पदं

२२२. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नगरे, गुणसिलए चेइए। तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ जाव[1] समोसढे, परिसा जाव[2] पडिगया ॥

२२३. तए णं से कालोदाई अणगारे अण्णया कयाइ जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—अत्थि ण भते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसजुत्ता कज्जति ?

हता अत्थि ॥

२२४. कहण्णं भते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसजुत्ता कज्जंति ?

कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुण्ण थालीपागसुद्ध अट्ठारसवजणाकुल विससमिस्सं भोयण भुजेज्जा, तस्स ण भोयणस्स आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे-परिणममाणे दुरूवत्ताए, दुवण्णत्ताए, दुगधत्ताए जाव[3] दुक्खत्ताए—नो सुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। एवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणाइवाए जाव[4] मिच्छादसणसल्ले, तस्स[5] ण आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा 'विपरिणममाणे-विपरिणममाणे'[6] दुरूवत्ताए दुवण्णत्ताए दुगधत्ताए जाव दुक्खत्ताए—नो सुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति । एव खलु कालोदाई ! जीवाण पावा कम्मा 'पावफलविवागसजुत्ता कज्जति'[7] ।

२२५. अत्थि णं भते ! जीवाण कल्लाणा कम्मा कल्लाणफलविवागसंजुत्ता कज्जति ?

हता अत्थि ॥

२२६. कहण्ण भते ! जीवाण कल्लाणा कम्मा[8] °कल्लाणफलविवागसजुत्ता° कज्जंति ?

कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुण्णं थालीपागसुद्ध अट्ठारसवजणाकुल ओसहमिस्स भोयण भुजेज्जा, तस्स ण भोयणस्स आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे-परिणममाणे सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए जाव[9] सुहत्ताए—नो दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। एवामेव कालोदाई ! जीवाण पाणाइवायवेरमणे जाव[10] परिग्गहवेरमणे कोहविवेगे जाव[11] मिच्छादसणसल्लविवेगे, तस्स

---

१. भ० १।७।
२. भ० १।८।
३. जहा महस्सवए जाव (अ, क, ता, ब, म, स); भ० ६।२०।
४. भ० १।३८४।
५. तस्य प्राणातिपातादेः (वृ)।
६. परिणममाणे-परिणममाणे (अ, क, ता, म)।
७. फलविवाग जाव कज्जति (अ); फल जाव कज्जंति (क, ता)।
८. स० पा०—कम्मा जाव कज्जति।
९. भ० ६।२२।
१०. भ० १।३८५।
११. ठा० १।११५-१२५।

ण आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे-परिणममाणे सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए जाव सुहत्ताए—नो दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमइ। एवं खलु कालोदाई! जीवाण कल्लाणा कम्मा[1] •कल्लाणफलविवागसजुत्ता° कज्जंति ।।

२२७. दो भते! पुरिसा सरिसया[2] •सरित्तया सरिव्वया° सरिसभडमत्तोवगरणा अण्णमण्णेण सद्धि अगणिकाय समारंभति। तत्थ ण एगे पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, एगे पुरिसे अगणिकाय निव्वावेइ। एएसि णं भते! दोण्हं पुरिसाण कयरे पुरिसे महाकम्मतराए चेव? महाकिरियतराए चेव? महासवतराए चेव? महावेयणतराए चेव? कयरे वा पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव[3]? •अप्पकिरियतराए चेव? अप्पासवतराए चेव?° अप्पवेयणतराए चेव? जे वा से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, जे वा से पुरिसे अगणिकाय निव्वावेइ?

कालोदाई! तत्थ ण जे से पुरिसे अगणिकाय उज्जालेइ, से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव[4], •महाकिरियतराए चेव, महासवतराए चेव°, महावेयणतराए चेव। तत्थ ण जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ, से ण पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव[5], •अप्पकिरियतराए चेव अप्पासवतराए चेव°, अप्पवेयणतराए चेव ।।

२२८. से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ—तत्थ ण जे से पुरिसे[6] •अगणिकाय उज्जालेइ, से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव? महाकिरियतराए चेव? महासवतराए चेव? महावेयणतराए चेव? तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकाय निव्वावेइ, से णं पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव? अप्पकिरियतराए चेव? अप्पासवतराए चेव°? अप्पवेयणतराए चेव?

कालोदाई! तत्थ ण जे से पुरिसे अगणिकाय उज्जालेइ, से णं पुरिसे बहुतरागं पुढविक्काय समारभति, बहुतराग आउक्कायं समारभति, अप्पतराग तेउक्कायं समारभति, बहुतरागं वाउकायं समारभति, बहुतराग वणस्सइकाय समारभति, बहुतराग तसकाय समारभति।

तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ, से णं पुरिसे अप्पतरागं पुढविकाय समारभति, अप्पतरागं आउक्कायं समारभति, बहुतरागं तेउक्काय समारभति, अप्पतरागं वाउकायं समारभति, अप्पतराग वणस्सइकायं समारभति, अप्पतरागं तसकायं समारभति। से तेणट्ठेणं कालोदायी![7] •एव वुच्चइ—तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकाय उज्जालेइ, से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव, महा-

---

१. सं० पा०—कम्मा जाव कज्जति।
२. सं० पा०—सरिसया जाव सरिसभंड°।
३. सं० पा०—चेव जाव अप्पवेयण°।
४. स० पा०—चेव जाव महावेयण°।
५. स० पा०—चेव जाव अप्पवेयण°।
६ स० पा०—पुरिसे जाव अप्पवेयण°।
७. सं० पा०—कालोदायी जाव अप्पवेयण°।

किरियतराए चेव, महासवतराए चेव, महावेयणतराए चेव। तत्थ ण जे से पुरिसे अगणिकाय निव्वावेइ, से णं पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव, अप्पकिरियतराए चेव, अप्पासवतराए चेव°, अप्पवेयणतराए चेव ॥

२२९. अत्थि ण भंते ! अच्चित्ता वि पोग्गला ओभासति ? उज्जोवेति ? तवेति ? पभासेति ?

हंता अत्थि ॥

२३०. कयरे णं भते ! ते अच्चित्ता वि पोग्गला ओभासति[1] ? •उज्जोवेति ? तवेति? ° पभासेंति ?

कालोदाई ! कुद्धस्स[2] अणगारस्स तेय-लेस्सा निसट्ठा समाणी दूरं गता दूरं निपतति, देसं गता देसं निपतति, जहिं-जहिं च ण सा निपतति तहिं-तहिं च ण ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासंति[3], •उज्जोवेंति, तवेंति°, पभासेंति। एतेण कालोदाई ! ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासंति[4], •उज्जोवेंति, तवेंति°, पभासेंति ॥

२३१. तए ण से कालोदाई अणगारे समणं भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम[5]-•दसम-दुवालसेहिं, मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं° अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

२३२. [6]•तए ण से कालोदाई ! अणगारे जाव[7] चरमेहि उस्सास-नीसासेहि सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

२३३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[8] ॥

---

१. सं० पा०—ओभासंति जाव पभासेंति।
२. विभक्तिपरिणामात्क्रुद्धेन (वृ)।
३. स० पा०—ओभासति जाव पभासेंति।
४. स० पा०—ओभासंति जाव पभासेंति।
५. स० पा०—छट्ठट्ठम जाव अप्पाणं।
६. स० पा०—जहा पढमसए कालासवेसियपुत्ते जाव सव्वदुक्ख°।
७. भ० १।४३३।
८. भ० १।५१।

अट्ठमं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. पोग्गल २ आसीविस ३. रुक्ख ४. किरिय ५. आजीव ६, ७. फासुकमदत्ते ।
८ पडिणीय ९. बंध १०. आराहणा य दस अट्ठममि सते ॥१॥

पोग्गलपरिणति-पद

१. रायगिहे जाव[1] एवं वदासी—कतिविहा णं भंते ! पोग्गला पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—पयोगपरिणया, मीसापरिणया[2], वीससापरिणया ॥

(१) पयोगपरिणति-पद

२. पयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदियपयोगपरिणया[3], •बेइंदियपयोगपरिणया, तेइंदियपयोगपरिणया, चउरिंदियपयोगपरिणया•, पंचिंदियपयोगपरिणया ॥

३. एगिंदियपयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया[4], •आउकाइयएगिंदियपयोगपरिणया, तेउकाइयएगिंदियपयोगपरिणया, वाउकाइयएगिंदियपयोगपरिणया•, वणस्सइकाइयएगिंदियपयोगपरिणया ॥

---

१. भ० १।४-१० ।
२. मीसगा° (अ, म); मीस° (क, ब, म) ।
३. सं० पा०—एगिंदियपयोगपरिणया जाव पंचिंदि° ।
४. सं० पा०—पुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया जाव वणस्सइ° ।

४. पुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया, बादरपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया य। आउकाइयएगिंदियपयोगपरिणया एव चेव। एवं दुयओ[1] भेदो जाव वणस्सइकाइया य ॥

५. बेइंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! अणेगविहा पण्णत्ता। एवं तेइंदिय-चउरिंदियपयोगपरिणया वि ॥

६. पंचिंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—नेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया, तिरिक्ख-मणुस्स-देवपंचिंदियपयोगपरिणया ॥

७. नेरइयपंचिंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—रयणप्पभपुढविनेरइयपंचिंदियपयोग-परिणया[2] वि जाव[3] अहेसत्तमपुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया वि ॥

८. तिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—जलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोग-परिणया, थलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणया, खहचरतिरिक्ख-जोणियपंचिंदियपयोगपरिणया ॥

९. जलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—समुच्छिमजलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदिय-पयोगपरिणया, गब्भवक्कंतियजलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणया ॥

१०. थलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—चउप्पयथलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदिय-पयोगपरिणया, परिसप्पथलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणया ॥

११. चउप्पयथलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—समुच्छिमचउप्पयथलचरतिरिक्खजोणिय-पंचिंदियपयोगपरिणया, गब्भवक्कंतियचउप्पयथलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदिय-पयोगपरिणया ॥

१२. एवं एएणं अभिलावेणं परिसप्पा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उरपरिसप्पा य भुयपरिसप्पा य। उरपरिसप्पा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—समुच्छिमा य गब्भ-वक्कंतिया य। एवं भुयपरिसप्पा वि। एवं खहयरा वि ॥

१३. मणुस्सपंचिंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा।

---

१. दुपओ (क, ब, स, वृपा)।
२. रयणप्पभा° (अ, स)।
३. भ० २।७७।

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—संमुच्छिममणुस्सपचिंदियपयोगपरिणया, गब्भवक्कतियमणुस्सपचिंदियपयोगपरिणया ॥

१४. देवपचिंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा ।
गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—भवणवासिदेवपचिंदियपयोगपरिणया, एव जाव[1] वेमाणिया ॥

१५ भवणवासिदेवपचिंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा ।
गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, त जहा—असुरकुमारदेवपचिंदियपयोगपरिणया जाव[1] थणियकुमारदेवपचिंदियपयोगपरिणया ॥

१६ एव एएण अभिलावेण अट्ठविहा वाणमतरा—पिसाया जाव[2] गधव्वा । जोतिसिया पचविहा पण्णत्ता, त जहा—चदविमाणजोतिसिया जाव[3] ताराविमाणजोतिसियदेवपचिंदियपयोगपरिणया । वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—कप्पोवगवेमाणिया कप्पातीतगवेमाणिया । कप्पोवगवेमाणिया दुवालसविहा पण्णत्ता, त जहा—सोहम्मकप्पोवगवेमाणिया जाव[4] अच्चुयकप्पोवगवेमाणिया । कप्पातीतगवेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—गेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया, अणुत्तरोववातियकप्पातीतगवेमाणिया । गेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया नवविहा पण्णत्ता, त जहा—हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया जाव[5] उवरिम-उवरिमगेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया ॥

१७ अणुत्तरोववातियकप्पातीतगवेमाणियदेवपचिंदियपयोगपरिणया ण भते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, त जहा—विजयअणुत्तरोववातिय[7] °कप्पातीतगवेमाणियदेवपंचिदियपयोग° परिणया जाव[6] सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातियकप्पातीतगवेमाणियदेवपचिंदियपयोगपरिणया[8] ॥

(२) पज्जत्तापज्जत्तं पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

१८ सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया णं भते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा[10]—पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय[11] °एगिंदियपयोग°

१ भ० २।११६ ।
२. पू० प० २ ।
३. ठा० ८।११६ ।
४. ठा० ५।५२ ।
५. अ० सू० २८७ ।
६. ठा० ९।३८ ।
७. स०पा०—विजयअणुत्तरोववतिय जाव परिणया
८. भ० ६।१२१ ।
९. °जाव परिणया (अ, क, ता, व, म, स) ।
१०. अतोग्रे 'केति अपज्जत्तग पढम भणति पच्छा पज्जत्तग' इति पाठोऽस्ति । वृत्तौ नासौ व्याख्यातोऽस्ति । असौ मतभेदसूचक. पाठो वृत्त्युत्तरकाल मूले प्रक्षिप्तोभूदितिसभाव्यते ।
११. स० पा०—पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय जाव परिणया; एगपदे सन्धिरत्र, तेन 'पज्जत्तग' इति परिपदस्य 'पज्जत्ता' इति रूप जातम् ।

परिणया य, अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय[1]•एगिंदियपयोग॰परिणया य। बादरपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया एव चेव, एवं जाव वणस्सइकाइया। एक्केका दुविहा सुहुमा य, बादरा य, पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणियव्वा॥

१९. बेइंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगबेइंदियपयोगपरिणया य, अपज्जत्तग जाव परिणया य। एव तेइंदिया वि, एव चउरिंदिया वि॥

२०. रयणप्पभपुढविनेरइयपयोगपरिणयाणं पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगरयणप्पभ जाव परिणया य, अपज्जत्तग जाव परिणया य। एव जाव अहेसत्तमा॥

२१. संमुच्छिमजलचरतिरिक्ख—पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तग अपज्जत्तग। एव गब्भवक्कंतिया वि। समुच्छिमचउप्पयथलचरा एव चेव। एवं गब्भवक्कतिया वि। एव जाव संमुच्छिमखहयरगब्भवक्कतिया य। एक्केक्के पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणियव्वा॥

२२. समुच्छिममणुस्सपंचिंदिय—पुच्छा।
गोयमा! एगविहा पण्णत्ता—अपज्जत्तगा चेव॥

२३. गब्भवक्कतियमणुस्सपचिंदिय पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगगब्भवक्कतिया वि, अपज्जत्तगगब्भवक्कतिया वि॥

२४. असुरकुमारभवणवासिदेवाण पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगअसुरकुमार, अपज्जत्तगअसुरकुमार। एवं जाव[2] थणियकुमारा पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य॥

२५. एव एतेण अभिलावेण दुयएण भेदेण पिसाया जाव[3] गधव्वा। चदा जाव[4] ताराविमाणा। सोहम्मकप्पोवगा जाव[5]च्चुतो। हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जकप्पातीत जाव[6] उवरिमउवरिमगेवेज्ज। विजयअणुत्तरोववाइय जाव[7] अपराजिय।

२६ सव्वट्ठसिद्धकप्पातीत—पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय, अपज्जत्तासव्वट्ठ जाव परिणया वि॥

---

१. स० पा०—॰पुढविकाइय जाव परिणया।
२. पू० प० ३।
३. ठा० ८।११६।
४. ठा० ५।५२।
५. भ० सू० २८७।
६. ठा० ९।२८।
७ भ० ६।१२१।

(३) सरीरं पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

२७. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मा-सरीरप्पयोगपरिणया[1]। जे पज्जत्तासुहुम जाव परिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया। एव जाव चउरिंदिया पज्जत्ता, नवर—जे पज्ज-त्तावादरवाउकाइयएगिंदियप्पयोगपरिणया ते ओरालिय-वेउव्विय-तेया-कम्मा-सरीरप्पयोगपरिणया[2]। सेस त चेव ॥

२८ जे अपज्जत्तरयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया ते वेउव्विय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया। एव पज्जत्तगा वि। एव जाव अहेसत्तमा ॥

२९. जे अपज्जत्तासंमुच्छिमजलचर जाव परिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मासरीर जाव परिणया। एव पज्जत्तगा वि। गब्भवक्कतियअपज्जत्ता एव चेव। पज्जत्तगा ण एव चेव, नवर—सरीरगाणि चत्तारि जहा बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाण। एव जहा जलचरेसु चत्तारि आलावग भणिया एव चउप्पया[3]-उरपरिसप्प-भुयपरिसप्प खहयरेसु वि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा ॥

३० जे समुच्छिममणुस्सपंचिदियपयोगपरिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मासरीर-प्पयोगपरिणया[4]। एव गब्भवक्कतिया वि। अपज्जत्तगा वि, पज्जत्तगा वि एव चेव, नवर—सरीरगाणि पच भाणियव्वाणि ॥

३१. जे अपज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासि जहा नेरइया तहेव। एव पज्जत्तगा वि। एव दुयएण भेदेण जाव थणियकुमारा। एवं पिसाया जाव गधव्वा। चदा जाव ताराविमाणा। सोहम्मकप्पो जावच्चुओ। हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जग जाव उवरिम-उवरिमगेवेज्जग। विजयअणुत्तरोववाइय जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय। एक्केक्के दुयओ भेदो भाणियव्वो जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[5]-°कप्पातीतगवेमाणियदेवपंचिदियपयोग°परिणया ते वेउव्विय-तेया-कम्मा-सरीरप्पयोगपरिणया ॥

(४) इदिय पडुच्च पयोगपरिणति-पद

३२ जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया ते फासिंदियपयोगपरिणया जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय एव चेव। जे अपज्जत्ताबादरपुढविकाइय एवं चेव। एव पज्जत्तगा वि। एव चउक्कएणं भेदेण जाव वणस्सतिकाइया ॥

---

१. कम्म° (अ, व, म), कम्मग°(स), अत्रापि स्वीकृतपाठे एकपदे सन्धि।
२. °जाव परिणया (अ, क, ता, व, म, स)।
३. चतुष्पद (क, व)।
४. °जाव परिणया (अ, क, ता, व, म, स)।
५. अपज्जत्ता° (अ, क, ता, व, म, स); स० पा०—°वाइय जाव परिणया।

३३. जे अपज्जत्ताबेइंदियपयोगपरिणया ते जिब्भिदिय-फासिंदियपयोगपरिणया, जे पज्जत्ताबेइंदिय एवं चेव। एवं जाव चउरिंदिया, नवरं—एक्केक्कं इंदियं वड्ढेयव्वं ॥

३४. जे[1] अपज्जत्तरयणप्पभपुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया ते सोइंदिय-चक्खिदिय-घाणिंदिय-जिब्भिदिय-फासिंदियपयोगपरिणया। एवं पज्जत्तगा वि। एवं सव्वे भाणियव्वा तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवा जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[2] •कप्पातीतगवेमाणियदेवपंचिंदियपयोग°परिणया ते सोइंदिय-चक्खिदिय[3]•घाणिंदिय-जिब्भिदिय-फासिंदियपयोग°परिणया ॥

(५) सरीरं इंदियं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३५. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालिय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया ते फासिंदियपयोगपरिणया। जे पज्जत्तासुहुम° एवं चेव। बादरअपज्जत्ता एवं चेव। एवं पज्जत्तगा वि।
एवं एतेणं अभिलावेणं जस्स जति इंदियाणि सरीराणि य तस्स ताणि भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[4]•कप्पातीतगवेमाणिय° देवपंचिंदियवेउव्विय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया ते सोइंदिय-चक्खिदिय जाव फासिंदियप्पयोगपरिणया ॥

(६) वण्णादि पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३६. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयएगिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नील-लोहिय[5]-हालिद्द-सुक्किलवण्णपरिणया वि; गंधओ सुब्भिगंधपरिणया वि, दुब्भिगंधपरिणया वि, रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अंबिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि; फासओ कक्खडफासपरिणया वि[6], •मउयफासपरिणया वि, गरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीतफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि°, लुक्खफासपरिणया वि; संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणया वि, वट्ट-तंस-चउरंस-आयत-संठाणपरिणया वि।
जे पज्जत्तासुहुमपुढवि० एवं चेव। एवं जहाणुपुव्वीए नेयव्वं जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि ॥

---

१. जाव (क, ता, ब)।
२. स० पा०—°वाइय जाव परिणया।
३. स० पा०—चक्खिदय जाव परिणया।
४. अपज्जत्ता० (अ, क, ब, स); स० पा०—°वाइय जाव देव०।
५. लोहिग (ता, ब, म)।
६. स० पा०—वि जाव लुक्ख०।

(७) सरीरं वण्णादिं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३७. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयएगिंदियओरालिय-तेया-कम्मासरीरपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि ।
जे पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय एव चेव । एवं जहाणुपुव्वीए नेयव्वं, जस्स जइ सरीराणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीतगवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्विय-तेया-कम्मासरीरपयोगपरिणया[1] ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसठाणपरिणया वि ॥

(८) इंदियं वण्णादिं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३८. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयएगिंदियफासिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि ।
जे पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय एव चेव । एव जहाणुपुव्वीए जस्स जति इंदियाणि तस्स तति भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[2]-•कप्पातीतगवेमाणिय॰देवपंचिंदियसोतिंदिय जाव फासिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसठाणपरिणया वि ॥

(९) सरीरं इंदियं वण्णादिं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३९. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयएगिंदियओरालिय-तेया-कम्मा-फासिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि ।
जे पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय एव चेव । एव जहाणुपुव्वीए जस्स जति सरीराणि इदियाणि य तस्स तति भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीतगवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्विय-तेया-कम्मा-सोइंदिय जाव फासिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाण परिणया वि । 'एते नव दंडगा'[3] ॥

मीसपरिणति-पदं

४० मीसापरिणया[4] णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदियमीसापरिणया जाव पंचिंदियमीसापरिणया ॥

४१. एगिंदियमीसापरिणया ण भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
एवं जहा पयोगपरिणएहिं नव दंडगा भणिया, एव मीसापरिणएहिं वि नव

---

१. °जाव परिणया (अ, क, ता, ब, म, स) ।
२. स० पा०—°वाइय जाव देव° ।
३ एवं नव दंडगा भणिया (अ, स) ।
४. मीस° (अ) ।

दडगा भाणियव्वा, तहेव सव्व निरवसेस, नवरं—अभिलावो 'मीसापरिणया' भाणियव्वं, सेस त चेव जाव[1] जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव आयतसठाणपरिणया वि ॥

वीससापरिणति-पदं

४२ वीससापरिणया ण भते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, त जहा—वण्णपरिणया, गधपरिणया, रसपरिणया, फासपरिणया, सठाणपरिणया ।
जे वण्णपरिणया ते पचविहा पण्णत्ता, त जहा—कालवण्णपरिणया जाव[2] सुक्किलवण्णपरिणया ।
जे गधपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुब्भिगधपरिणया[3], दुब्भिगधपरिणया[4] ।
जे रसपरिणया ते पचविहा पण्णत्ता, त जहा—तित्तरसपरिणया जाव[5] महुररसपरिणया ।
जे फासपरिणया ते अट्ठविहा पण्णत्ता, त जहा—कक्खडफासपरिणया जाव[6] लुक्खफासपरिणया ।
जे सठाणपरिणया ते पचविहा पण्णत्ता, त जहा—परिमंडलसठाणपरिणया जाव[7] आयतसठाणपरिणया ।
जे वण्णओ कालवण्णपरिणया ते गधओ सुब्भिगधपरिणया वि, दुब्भिगधपरिणया वि ।
एव जहा पण्णवणाए तहेव निरवसेस जाव[8] जे सठाणओ आयतसठाणपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव लुक्खफासपरिणया वि ॥

एगं दव्वं पडुच्च पोग्गलपरिणति-पदं

४३. एगे भते ! दव्वे कि पयोगपरिणए ? मीसापरिणए ? वीससापरिणए ?
गोयमा ! पयोगपरिणए वा, मीसापरिणए वा, वीससापरिणए वा ॥

पयोगपरिणति-पद

४४. जइ पयोगपरिणए कि मणपयोगपरिणए[9] ? वइपयोगपरिणए[10] ? कायपयोग परिणए[11] ?

---

१. भ० ८।३-३६ ।
२. भ० ८।३६ ।
३. सुगधपरिणया वि(अ, स), सुरभि ° (ता, ब) ।
४. दुगधपरिणया वि(अ, स), दुरभि ° (ता, ब) ।
५. भ० ८।३६ ।
६. भ० ८।३६ ।
७. भ० ८।३६ ।
८. प० १ ।
९. मणप्प ° (ता, म) ।
१०. वयप ° (क), वयप्प ° (ब, म) ।
११. कायप्प ° (अ, क, ता, ब, म, स) ।

गोयमा ! मणपयोगपरिणए वा, वइपयोगपरिणए वा, कायपयोगपरिणए वा ॥

मणपयोगपरिणति-पदं

४५ जइ मणपयोगपरिणए कि सच्चमणपयोगपरिणए ? मोसमणपयोगपरिणए ? सच्चामोसमणपयोगपरिणए ? असच्चामोसमणपयोगपरिणए ?
गोयमा ! सच्चमणपयोगपरिणए वा, मोसमणपयोगपरिणए वा, सच्चामोसमणपयोगपरिणए वा, असच्चामोसमणपयोगपरिणए वा ॥

४६. जइ सच्चमणपयोगपरिणए कि आरंभसच्चमणपयोगपरिणए ? अणारंभसच्चमणपयोगपरिणए ? सारंभसच्चमणपयोगपरिणए ? असारंभसच्चमणपयोगपरिणए ? समारंभसच्चमणपयोगपरिणए ? असमारंभसच्चमणपयोगपरिणए ?
गोयमा ! आरंभसच्चमणपयोगपरिणए वा जाव असमारंभसच्चमणपयोगपरिणए वा ॥

४७. जइ मोसमणपयोगपरिणए किं आरंभमोसमणपयोगपरिणए ?
एवं जहा सच्चेण तहा मोसेण वि। एवं सच्चामोसमणपयोगेण वि। एवं असच्चामोसमणपयोगेण वि ॥

वइपयोगपरिणति-पदं

४८. जइ वइपयोगपरिणए किं सच्चवइपयोगपरिणए ? मोसवइपयोगपरिणए ?
एवं जहा मणपयोगपरिणए तहा वइपयोगपरिणए वि जाव असमारंभवइपयोगपरिणए वा ॥

कायपयोगपरिणति-पदं

४९. जइ कायपयोगपरिणए कि ओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ? ओरालियमीसासरीरकायपयोगपरिणए ? वेउव्वियसरीरकायपयोगपरिणए ? वेउव्वियमीसासरीरकायपयोगपरिणए ? आहारगसरीरकायपयोगपरिणए ? आहारगमीसासरीरकायपयोगपरिणए ? कम्मासरीरकायपयोगपरिणए ?
गोयमा ! ओरालियसरीरकायपयोगपरिणए वा जाव कम्मासरीरकायपयोगपरिणए वा ॥

५० जइ ओरालियसरीरकायपयोगपरिणए किं एगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ? जाव[1] पंचिंदियओरालिय[2] °सरीरकायपयोग° परिणए ?

---

१. एव जाव (अ, स)।

२ स० पा०—पंचिंदियओरालिय जाव परिणए।

गोयमा ! एगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए वा जाव[1] पंचिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए वा ॥

५१. जइ एगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए कि पुढविक्काइयएगिंदिय[2]•ओरालियसरीरकायपयोग°परिणए ? जाव वणस्सइकाइयएगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ?

गोयमा ! पुढविक्काइयएगिंदिय[3]•ओरालियसरीरकायपयोग°परिणए वा जाव वणस्सइकाइयएगिंदिय[4]•ओरालियसरीरकायपयोग°परिणए वा ॥

५२. जइ पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए[5] किं सुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए ? बादरपुढविक्काइय जाव परिणए ?

गोयमा ! सुहुमपुढविकाइयएगिंदिय जाव परिणए वा, बादरपुढविक्काइय जाव परिणए वा ॥

५३ जइ सुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए कि पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए ? अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए ?

गोयमा ! पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए वा, अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए वा। एव बादरा वि। एव जाव वणस्सइकाइयाणं चउक्कओ भेदो। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाण दुयओ भेदो—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य ॥

५४ जइ पंचिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए कि तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ? मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए ?

गोयमा ! तिरिक्खजोणिय जाव परिणए वा, मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए वा ॥

५५. जइ तिरिक्खजोणिय जाव परिणए कि जलचरतिरिक्खजोणिय जाव परिणए ? थलचर-खहचर जाव परिणए ?

एव चउक्कओ भेदो-जाव खहचराण ॥

५६. जइ मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए कि समुच्छिममणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए ? गब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए ?

गोयमा ! दोसु वि ॥

५७ जइ गब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए कि पज्जत्तागब्भवक्कंतिय जाव परिणए ? अपज्जत्तागब्भवक्कंतिय जाव परिणए ?

---

१. बेइंदिय जाव परिणए वा (अ, क, व, म, स); बेइंदिय जाव (ता)।

२. स० पा०—°एगिंदिय जाव परिणए।

३. स० पा०—°एगिंदिय जाव परिणए।

४. स० पा०—°एगिंदिय जाव परिणए।

५. °सरीर जाव परिणए (अ,क, ता, व,म, स)।

गोयमा ! पज्जत्तागब्भवक्कंतिय जाव परिणए वा, अपज्जत्तागब्भवक्कंतिय जाव परिणए वा ॥

५८. जइ ओरालियमीसासरीरकायपयोगपरिणए किं एगिंदियओरालियमीसासरीर-कायपयोगपरिणए ? बेइंदिय जाव परिणए ? जाव पंचिंदियओरालिय जाव परिणए ?

गोयमा ! एगिंदियओरालियमीसासरीरकायपयोगपरिणए एवं जहा ओरालिय-सरीरकायपयोगपरिणएणं आलावगो भणिओ तहा ओरालियमीसासरीरकाय-पयोगपरिणएण वि आलावगो भाणियव्वो, नवरं—बादरवाउक्काइय-गब्भव-क्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणीय-गब्भवक्कंतियमणुस्साणं[1]—एएसिणं पज्जत्ता-पज्जत्तगाणं, सेसाणं अपज्जत्तगाणं ॥

५९. जइ वेउव्वियसरीरकायपयोगपरिणए किं एगिंदियवेउव्वियसरीरकायपयोग-परिणए ? पंचिंदियवेउव्वियसरीर जाव परिणए ?

गोयमा ! एगिंदिय जाव परिणए वा, पंचिंदिय जाव परिणए वा ॥

६०. जइ एगिंदिय जाव परिणए किं वाउक्काइयएगिंदिय जाव परिणए ? अवा-उक्काइयएगिंदिय जाव परिणए ?

गोयमा ! वाउक्काइयएगिंदिय जाव परिणए, नो अवाउक्काइयएगिंदिय जाव परिणए। एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे[2] वेउव्वियसरीरं भणियं तहा इह वि भाणियव्वं जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पा-तीतावेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरकायपयोगपरिणए वा, अपज्जत्ता-सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणए वा ॥

६१ जइ वेउव्वियमीसासरीरकायपयोगपरिणए किं एगिंदियमीसासरीरकायपयोग-परिणए ? जाव पंचिंदियमीसासरीरकायपयोगपरिणए ?

एवं जहा वेउव्वियं तहा वेउव्वियमीसगं पि, नवरं—देव-नेरइयाणं अपज्जत्त-गाणं, सेसाणं पज्जत्तगाणं[3] जाव नो पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणए, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपंचिंदियवेउव्वियमीसासरीर-कायपयोगपरिणए ॥

६२. जइ आहारगसरीरकायपयोगपरिणए किं मणुस्साहारगसरीरकायपयोगपरिणए? अमणुस्साहारग जाव परिणए ?

एवं जहा ओगाहणसंठाणे जाव इड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्ज-वासाउय जाव परिणए, नो अणिड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तसंखेज्ज-वासाउय जाव परिणए ॥

---

१. °मणुस्साण य (अ, क, ता, ब)।

२. एतन्नामके प्रज्ञापनाया एकविंशतितमे पदे।

३ पज्जत्तगाण तहेव(अ, स),अत्र द्वयोर्मिश्रणम्; तहेव (क, ता, म)।

६३. जइ आहारगमीसासरीरकायपयोगपरिणए किं मणुस्साहारगमीसासरीरकाय-पयोगपरिणए ?
एवं जहा आहारगं तहेव मीसगं पि निरवसेसं भाणियव्वं ॥

६४. जइ कम्मासरीरकायपयोगपरिणए किं एगिंदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए ? जाव पंचिंदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए ?
गोयमा ! एगिंदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए, एवं जहा ओगाहणसंठाणे कम्मगस्स भेदो तहेव इह वि जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[1]°कप्पातीतगवेमाणिय°देवपंचिंदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए वा, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणए वा ॥

मीसपरिणति-पदं

६५. जइ मीसापरिणए किं मणमीसापरिणए ? वइमीसापरिणए[2] ? कायमीसा-परिणए ?
गोयमा ! मणमीसापरिणए वा, वइमीसापरिणए वा, कायमीसापरिणए वा ॥

६६. जइ मणमीसापरिणए किं सच्चमणमीसापरिणए ? मोसमणमीसापरिणए ? जहा पयोगपरिणए तहा मीसापरिणए वि भाणियव्वं निरवसेसं जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदियकम्मासरीरगमीसापरिणए वा, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव कम्मासरीरमीसापरिणए वा ॥

वीससापरिणति-पदं

६७. जइ वीससापरिणए किं वण्णपरिणए ? गंधपरिणए ? रसपरिणए ? फास-परिणए ? संठाणपरिणए ?
गोयमा ! वण्णपरिणए वा, गंधपरिणए वा रसपरिणए वा, फासपरिणए वा, संठाणपरिणए वा ॥

६८. जइ वण्णपरिणए किं कालवण्णपरिणए जाव[3] सुक्किलवण्णपरिणए ?
गोयमा ! कालवण्णपरिणए वा जाव सुक्किलवण्णपरिणए वा ॥

६९. जइ गंधपरिणए किं सुब्भिगंधपरिणए ? दुब्भिगंधपरिणए ?
गोयमा ! सुब्भिगंधपरिणए वा, दुब्भिगंधपरिणए वा ॥

७०. जइ रसपरिणए किं तित्तरसपरिणए ? पुच्छा।
गोयमा ! तित्तरसपरिणए वा जाव महुररसपरिणए वा ॥

७१. जइ फासपरिणए किं कक्खडफासपरिणए जाव लुक्खफासपरिणए ?
गोयमा ! कक्खडफासपरिणए जाव लुक्खफासपरिणए ॥

---

१. स० पा०—°वाइय जाव देव° ।
२. वय° (अ, स); वति° (क) ।
३. नील जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।

७२ जइ सठाणपरिणए—पुच्छा ।
गोयमा ! परिमडलसठाणपरिणए वा जाव आयतसठाणपरिणए वा ॥

दोण्णि दव्वाइं पडुच्च पोग्गलपरिणति-पद

७३. दो भते दव्वा ! किं पयोगपरिणया ? मीसापरिणया ? वीससापरिणया ?
गोयमा ! १ पयोगपरिणया वा २ मीसापरिणया वा ३. वीससापरिणया वा ४. अहवेगे पयोगपरिणए, एगे मीसापरिणए ५. अहवेगे पयोगपरिणए, एगे वीससापरिणए ६ अहवेगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ॥

७४. जइ पयोगपरिणया कि मणपयोगपरिणया ? वइपयोगपरिणया ? कायपयोगपरिणया ?
गोयमा ! १ मणपयोगपरिणया वा २. वइपयोगपरिणया वा ३ कायपयोगपरिणया वा ४ अहवेगे मणपयोगपरिणए, एगे वइपयोगपरिणए ५. अहवेगे मणपयोगपरिणए, एगे कायपयोगपरिणए ६. अहवेगे वइपयोगपरिणए, एगे कायपयोगपरिणए ॥

७५ जइ मणपयोगपरिणया कि सच्चमणपयोगपरिणया ? असच्चमणपयोगपरिणया ? सच्चमोसमणपयोगपरिणया ? असच्चमोसमणपयोगपरिणया ?
गोयमा ! १ सच्चमणपयोगपरिणया वा जाव असच्चमोसमणपयोगपरिणया वा ५. अहवेगे सच्चमणपयोगपरिणए, एगे मोसमणपयोगपरिणए ६. अहवेगे सच्चमणपयोगपरिणए, एगे सच्चमोसमणपयोगपरिणए ७ अहवेगे सच्चमणपयोगपरिणए, एगे असच्चमोसमणपयोगपरिणए ८ अहवेगे मोसमणपयोगपरिणए, एगे सच्चमोसमणपयोगपरिणए ९. अहवेगे मोसमणपयोगपरिणए, एगे असच्चमोसमणपयोगपरिणए १० अहवेगे सच्चमोसमणपयोगपरिणए, एगे असच्चमोसमणपयोगपरिणए ॥

७६ जइ सच्चमणपयोगपरिणया कि आरभसच्चमणपयोगपरिणया ? जाव[1] असमारभसच्चमणपयोगपरिणया ?
गोयमा ! आरभसच्चमणपयोगपरिणया वा जाव असमारभसच्चमणपयोगपरिणया वा, अहवेगे आरंभसच्चमणपयोगपरिणए, एगे अणारंभसच्चमणपयोगपरिणए । एव एएण गमेण दुयासजोएण[2] नेयव्व, सव्वे सजोगा जत्थ जत्तिया उट्ठेति ते भाणियव्वा जाव सव्वट्ठसिद्धगत्ति ॥

७७. जइ मीसापरिणया कि मणमीसापरिणया ?
एव मीसापरिणया वि ॥

---

१. भ० ८।४६ ।   २. दुय० (व) ।

७८. जइ वीससापरिणया किं वण्णपरिणया ? गंधपरिणया ?
एवं वीससापरिणया वि जाव अहवेगे चउरंससठाणपरिणए, एगे आयतसंठाण-परिणए ॥

तिण्णि दव्वाइं पडुच्च पोग्गलपरिणति-पदं

७९. तिण्णि भंते ! दव्वा किं पयोगपरिणया ? मीसापरिणया ? वीससापरिणया ?
गोयमा ! १. पयोगपरिणया वा २. मीसापरिणया वा ३. वीससापरिणया वा ४. अहवेगे पयोगपरिणए, दो मीसापरिणया ५. अहवेगे पयोगपरिणए, दो वीससापरिणया ६ अहवा दो पयोगपरिणया, एगे मीसापरिणए[1] ७. अहवा दो पयोगपरिणया, एगे वीससापरिणए ८ अहवेगे मीसापरिणए, दो वीससापरिणया ९. अहवा दो मीसापरिणया, एगे वीससापरिणए १०. अहवेगे पयोगपरिणए, एगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ॥

८०. जइ पयोगपरिणया किं मणपयोगपरिणया ? वइपयोगपरिणया ? कायपयोग-परिणया ?
गोयमा ! मणपयोगपरिणया वा, एवं एक्कासयोगो[2], दुयासयोगो[3], तियासयोगो[4] य भाणियव्वो ॥

८१. जइ मणपयोगपरिणया किं सच्चमणपयोगपरिणया ? असच्चमणपयोगपरिणया? सच्चमोसमणपयोगपरिणया ? असच्चमोसमणपयोगपरिणया ?
गोयमा ! सच्चमणपयोगपरिणया वा जाव असच्चामोसमणपयोगपरिणया वा, अहवेगे सच्चमणपयोगपरिणए, दो मोसमणपयोगपरिणया। एवं दुयासंयोगो, तियासंयोगो भाणियव्वो एत्थ वि तहेव जाव अहवेगे तंससंठाणपरिणए, एगे चउरंससंठाणपरिणए, एगे आयतसंठाणपरिणए ॥

चत्तारि दव्वाइं पडुच्च पोग्गलपरिणति-पदं

८२. चत्तारि भंते ! दव्वा किं पयोगपरिणया ? मीसापरिणया ? वीससापरिणया ?
गोयमा ! १. पयोगपरिणया वा २. मीसापरिणया वा ३. वीससापरिणया वा ४. अहवेगे पयोगपरिणए, तिण्णि[5] मीसापरिणया ५. अहवेगे पयोगपरिणए, तिण्णि वीससापरिणया ६. अहवा दो पयोगपरिणया, दो मीसापरिणया ७. अहवा दो पयोगपरिणया, दो वीससापरिणया ८ अहवा तिण्णि पयोगपरिणया, एगे मीसापरिणए ९. अहवा तिण्णि पयोगपरिणया, एगे वीससापरिणए १०. अहवेगे मीसापरिणए, तिण्णि वीससापरिणया ११. अहवा दो मीसापरिणया, दो

---

१. मीससा° (स)।
२. एक्क° (ब)।
३. दुय° (ब)।
४. तिय° (ब)।
५. तिण्णिओ (ता)।

वीससापरिणया १२. अहवा तिण्णि मीसापरिणया, एगे वीससापरिणए १३. अहवेगे पयोगपरिणए, एगे मीसापरिणए, दो वीससापरिणया १४. अहवेगे पयोगपरिणए, दो मीसापरिणया, एगे वीससापरिणए १५. अहवा दो पयोगपरिणया, एगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ॥

८३. जइ पयोगपरिणया किं मणपयोगपरिणया ? वइपयोगपरिणया ? कायपयोगपरिणया ?

एव एएणं कमेणं पच छ सत्त जाव दस संखेज्जा असंखेज्जा अणता य दव्वा भाणियव्वा—दुयासजोएणं तियासजोएण जाव दससजोएणं बारससंजोएण उवजुजिऊण[1] जत्थ जत्तिया संजोगा उट्ठेति ते सव्वे भाणियव्वा; एए पुण जहा नवमसए[2] पवेसणए भणिहामो तहा उवजुजिऊण भाणियव्वा जाव असंखेज्जा अणंता एव चेव, नवरं—एक्कं पदं अब्भहियं जाव अहवा अणता परिमडलसठाणपरिणया जाव अणंता आयतसठाणपरिणया ॥

८४. एएसि ण भते ! पोग्गलाण पयोगपरिणयाण, मीसापरिणयाणं, वीससापरिणयाणं य कयरे कयरेहितो[3] °अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला पयोगपरिणया, मीसापरिणया अणतगुणा, वीससापरिणया अणतगुणा ॥

८५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

बीओ उद्देसो

आसीविस-पद

८६. कतिविहा णं भते ! आसीविसा पण्णत्ता ?

गोयमा ! दुविहा आसीविसा पण्णत्ता, त जहा—जातिआसीविसा य, कम्मआसीविसा य ॥

८७. जातिआसीविसा ण भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?

---

१. उवजुज्जित्तण (क); उववज्जिऊण (ता); उवजुत्तिऊण (व), उवजुज्जिऊणं (स) ।
२. भ० ९।८६-१३२ ।
३. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
४. भ० १।५१ ।

गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—विच्छुयजातिआसीविसे, मडुक्कजाति-आसीविसे, उरगजातिआसीविसे, मणुस्सजातिआसीविसे[1] ॥

८८. विच्छुयजातिआसीविसस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पभू णं विच्छुयजातिआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं[2] विसट्टमाणं पकरेत्तए। विसए से विसट्ठयाए, नो चेव णं संपत्तीए करेंसु[3] वा, करेति वा, करिस्सति वा ॥

८९. मडुक्कजातिआसीविसस्स [4]°णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?°
गोयमा ! पभू णं मडुक्कजातिआसीविसे भरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं [5]°विसट्टमाणं पकरेत्तए। विसए से विसट्ठयाए, नो चेव णं संपत्तीए करेंसु वा, करेति वा°, करिस्सति वा ॥

९०. [6]°उरगजातिआसीविसस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पभू णं उरगजातिआसीविसे जंबुद्दीवप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं विसट्टमाणं पकरेत्तए। विसए से विसट्ठयाए, नो चेव णं संपत्तीए करेंसु वा, करेति वा°, करिस्संति वा ॥

९१. मणुस्सजातिआसीविसस्स [7]°णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पभू णं मणुस्सजातिआसीविसे समयखेत्तप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं विसट्टमाणं पकरेत्तए। विसए से विसट्ठयाए, नो चेव णं संपत्तीए करेंसु वा, करेति वा,° करिस्सति वा ॥

९२. जइ कम्मआसीविसे किं नेरइयकम्मआसीविसे ? तिरिक्खजोणियकम्मआसीविसे ? मणुस्सकम्मआसीविसे ? देवकम्मआसीविसे ?
गोयमा ! नो नेरइयकम्मासीविसे, तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे वि, मणुस्स-कम्मासीविसे वि, देवकम्मासीविसे वि ॥

९३. जइ तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं एगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ?
गोयमा ! नो एगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे जाव नो चउरिंदियतिरि-क्खजोणियकम्मासीविसे, पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे।
जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं समुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजो-

---

१. मणुय० (ता)।
२. विसपरिणय (ठा० ४।५१४)।
३. इह चैकवचनप्रक्रमेपि बहुवचननिर्देशो वृश्चिकाशीविषाणां बहुत्वज्ञापनार्थम् (वृ)।
४. सं० पा० पुच्छा।
५. सं० पा०—सेसं तं चेव जाव करिस्सति।
६. सं० पा०—एवं उरगजातिआसीविसस्स वि, नवरं—जंबुद्दीवप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं, सेसं तं चेव जाव करिस्सति।
७. सं० पा०—वि एवं चेव, नवरं—समयखेत्तप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं, सेसं तं चेव जाव करिस्सति।

णियकम्मासीविसे ? गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ?
एवं जहा वेउव्वियसरीरस्स भेदो जाव[1] पज्जत्तासंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतिय-पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे, नो अपज्जत्तासंखेज्जवासाउय जाव कम्मासीविसे ॥

९४. जइ मणुस्सकम्मासीविसे किं समुच्छिमणुस्सकम्मासीविसे ? गब्भवक्कंतिय-मणुस्सकम्मासीविसे ?
गोयमा ! नो समुच्छिमणुस्सकम्मासीविसे, गब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे, एवं जहा वेउव्वियसरीरं जाव पज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमागब्भवक्कंतिय-मणुस्सकम्मासीविसे[2], नो अपज्जत्ता जाव कम्मासीविसे ॥

९५. जइ देवकम्मासीविसे किं भवणवासिदेवकम्मासीविसे जाव वेमाणियदेवकम्मा-सीविसे ?
गोयमा ! भवणवासिदेवकम्मासीविसे, वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियदेवकम्मा-सीविसे वि ।
जइ भवणवासिदेवकम्मासीविसे किं असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे जाव थणियकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे ?
गोयमा ! असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे वि जाव थणियकुमारभवण-वासिदेवकम्मासीविसे वि ।
जइ असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे[3] किं पज्जत्ताअसुरकुमारभवण-वासिदेवकम्मासीविसे ? अपज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे ?
गोयमा ! नो पज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्ता-असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे । एवं जाव थणियकुमाराणं ।
जइ वाणमंतरदेवकम्मासीविसे किं पिसायवाणमंतरदेवकम्मासीविसे ? एवं सव्वेसिं अपज्जत्तगाणं । जोइसियाणं सव्वेसिं अपज्जत्तगाणं ।
जइ वेमाणियदेवकम्मासीविसे किं कप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे[4] ? कप्पा-तीयावेमाणियदेवकम्मासीविसे ?
गोयमा ! कप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, नो कप्पातीयावेमाणियदेवकम्मा-सीविसे ।
जइ कप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे किं सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मा-सीविसे जाव अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ?

---

१. प० २१ ।
२. °कम्मभूमग° (स) ।
३. असुरकुमार जाव कम्म° (अ, क, ता, ब, म, स) ।
४. कप्पोवग° (अ, क, ता, म, स) ।

गोयमा ! सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे वि जाव सहस्सारकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे वि, नो आणयकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे जाव नो अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ।

जइ सोहम्मकप्पोवा[1] •वेमाणियदेव॰कम्मासीविसे कि पज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ? अपज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ?

गोयमा ! नो पज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, एव जाव नो पज्जत्तासहस्सारकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्तासहस्सारकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ॥

छउमत्थ-केवलि-पद

९६. दस ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ, त जहा—१ धम्मत्थिकाय २. अधम्मत्थिकाय ३. आगासत्थिकायं ४. जीव असरीरपडिबद्ध ५. परमाणुपोग्गल ६. सद्दं ७. गध ८. वात ९. अय जिणे भविस्सइ वा न वा भविस्सइ १०. अय सव्वदुक्खाणं अत करेस्सइ वा न वा करेस्सइ ।

एयाणि चेव उप्पण्णनाणदसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेण जाणइ-पासइ, तं जहा—धम्मत्थिकाय[2], •अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकाय, जीव असरीरपडिबद्ध, परमाणुपोग्गलं, सद्द, गध, वात, अय जिणे भविस्सइ वा न वा भविस्सइ, अय सव्वदुक्खाण अत॰ करेस्सइ वा न वा करेस्सइ ॥

नाण-पदं

९७. कतिविहे णं भते ! नाणे पण्णत्ते ?

गोयमा ! पचविहे नाणे पण्णत्ते, त जहा—आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे, मणपज्जवनाणे, केवलनाणे ॥

९८. से कि त आभिणिबोहियनाणे ?

आभिणिबोहियनाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—ओग्गहो, ईहा, अवाओ, धारणा । एव जहा 'रायप्पसेणइज्जे' नाणाणं भेदो तहेव इह भाणियव्वो जाव[3] सेत्तं केवलनाणे[4] ॥

---

१. स० पा०—सोहम्मकप्पोवा जाव कम्मासीविसे ।

२. स० पा०—धम्मत्थिकाय जाव करेस्सइ ।

३. राय० सू० ७४१-७४५ ।

४. यच्च वाचनान्तरे श्रुतज्ञानाधिकारे यथा नन्द्यामङ्गप्ररूपणेत्यभिधाय 'जाव भवियअभविया तत्तो सिद्धा असिद्धा य' इत्युक्त तस्यायमर्थः—श्रुतज्ञानसूत्रावसाने किल नन्द्या श्रुतविषय दर्शयतेदमभिहितम्—'इच्चेयमि दुवालसगे गणिपिडए अणता भावा अणता

९९. अण्णाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—मइअण्णाणे, सुयअण्णाणे, विभंगनाणे ॥

१००. से किं तं मइअण्णाणे ?
मइअण्णाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—ओग्गहो[1], •ईहा, अवाओ°, धारणा ॥

१०१. से किं तं ओग्गहे ?
ओग्गहे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अत्थोग्गहे य वंजणोग्गहे य । एवं जहेव आभिणिबोहियनाणं तहेव, नवरं—एगट्ठियवज्जं[2] जाव[3] नोइंदियधारणा । सेत्तं धारणा, सेत्तं मइअण्णाणे ॥

१०२. से किं तं सुयअण्णाणे ?
सुयअण्णाणे—जं इमं अण्णाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं सच्छंदबुद्धि-मइ-विगप्पियं, तं जहा—भारहं, रामायणं जहा नंदीए जाव[4] चत्तारि वेदा संगोवंगा । सेत्तं सुयअण्णाणे ॥

१०३. से किं तं विभंगनाणे ?
विभंगनाणे अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—गामसंठिए, नगरसंठिए, जाव[5] सण्णिवेससंठिए, दीवसंठिए, समुद्दसंठिए, वाससंठिए, वासहरसंठिए, पव्वयसंठिए, रुक्खसंठिए, थूभसंठिए, हयसंठिए, गयसंठिए, नरसंठिए, किन्नरसंठिए, किंपुरिससंठिए, महोरगसंठिए, गंधव्वसंठिए, उसभसंठिए, पसुसंठिए, पसयसंठिए, विहगसंठिए, वानरसंठिए—नाणासंठाणसंठिए[6] पण्णत्ते ॥

जीवाणं नाणि-अण्णाणित्त-पदं

१०४. जीवा णं भंते ! किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! जीवा नाणी वि, अण्णाणी वि ।
जे नाणी ते अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया तिण्णाणी, अत्थेगतिया चउनाणी, अत्थेगतिया एगनाणी । जे दुण्णाणी[7] ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी

अभावा जाव अणंता भवसिद्धिया अणंता अभवसिद्धिया अणंता सिद्धा अणंता असिद्धा पण्णत्ते' ति, अस्य च सूत्रस्य या संग्रहगाथा—
भावमभावा हेऊमहेउ कारणमकारणा जीवा ।
अजीव भवियाऽभविया, तत्तो सिद्धा
असिद्धा य ॥
इत्येवरूपा, तस्या. खण्डमिदमेतदन्त
श्रुतज्ञानसूत्रमिहाध्येयमिति (वृ) ।

१ स० पा०—ओग्गहो जाव धारणा ।

२. १ ओगेण्हणया २ उवधारणया ३. सवणया ४ अवलंबणया ५. मेहा (नंदी सू० ४३); इत्यादीनि पंच-पंचैकार्थिकान्यवग्रहादीनामधीतानि, मत्यज्ञाने तु न तान्यध्येयानीति भाव. (वृ) ।

३. नंदी सू० ४०-४८ ।

४. नंदी सू० ६७ ।

५. भ० १।४९ ।

६. नाणासंठिए (ता, व) ।

७. दुयाणाणी (क, ता, व, म, स) ।

य। जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, अहवा अभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, मणपज्जवनाणी। जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मणपज्जवनाणी। जे एगनाणी ते नियमा केवलनाणी।

जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी। जे दुअण्णाणी ते मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य। जे तिअण्णाणी ते मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभंगनाणी॥

१०५. नेरइया णं भंते! किं नाणी? अण्णाणी?

गोयमा! नाणी वि, अण्णाणी वि।

जे नाणी ते नियमा तिण्णाणी, तं जहा—आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी। जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी। एवं तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए॥

१०६ असुरकुमारा ण भंते! कि नाणी? अण्णाणी?

जहेव नेरइया तहेव, तिण्णि नाणाणि नियमा, तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए। एवं जाव[1] थणियकुमारा॥

१०७ पुढविक्काइया ण भते! किं नाणी? अण्णाणी?

गोयमा! नो नाणी, अण्णाणी। जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी-मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य। एवं जाव वणस्सइकाइया॥

१०८. बेइंदियाणं पुच्छा।

गोयमा! नाणी वि अण्णाणी वि।

जे नाणी ते नियमा दुण्णाणी, त जहा—आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी य। जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य। एव तेइंदिय-चउरिंदिया वि॥

१०९. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा।

गोयमा! नाणी वि, अण्णाणी वि।

जे नाणी ते अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया तिण्णाणी।

जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी। एव तिण्णि नाणाणि, तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए। मणुस्सा जहा जीवा, तहेव पंच नाणाणि, तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए। वाणमंतरा जहा नेरइया। जोइसिय-वेमाणियाणं तिण्णि नाणाणि, तिण्णि अण्णाणाणि नियमा॥

११०. सिद्धाणं भते! पुच्छा।

गोयमा! नाणी, नो अण्णाणी; नियमा एगनाणी—केवलनाणी॥

---

१. पू० प० २।

अंतरालगति पडुच्च—

१११. 'निरयगतिया णं'[1] भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । तिण्णि नाणाइं नियमा, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए ॥

११२ तिरियगतिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! दो नाणा, दो अण्णाणा नियमा[2] ॥

११३ मणुस्सगतिया णं भंते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! तिण्णि नाणाइं भयणाए, दो अण्णाणाइं नियमा । देवगतिया जहा निरयगतिया ॥

११४ सिद्धगतिया णं भंते ! जीवा कि नाणी ?
जहा[3] सिद्धा ॥

इंदिय पडुच्च—

११५ सइंदिया णं भंते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! चत्तारि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए ॥

११६. एगिंदिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ?
जहा पुढविकाइया । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिया णं दो नाणा, दो अण्णाणा नियमा । पंचिंदिया जहा सइंदिया ॥

११७ अणिंदिया णं भंते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

काय पडुच्च—

११८. सकाइया णं भंते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! पंच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए । पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया नो नाणी, अण्णाणी, नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइ-अण्णाणी य सुयअण्णाणी य । तसकाइया जहा सकाइया ॥

११९ अकाइया णं भंते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

सुहुम-बादर पडुच्च—

१२०. सुहुमा णं भंते ! जीवा कि नाणी ?
जहा पुढविक्काइया ॥

---

१. निरयगतियाए (वृ) ।
२. नियम (ता) ।
३. भ० ८।११० ।

१२१. बादरा णं भंते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सकाइया ॥

१२२ नोसुहुमा-नोबादरा ण भंते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

पज्जत्तापज्जत्तं पडुच्च—

१२३. पज्जत्ता ण भते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सकाइया ॥

१२४. पज्जत्ता ण भते ! नेरइया कि नाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा नियमा। जहा नेरइया एवं थणियकुमारा। पुढविकाइया जहा एगिदिया। एव जाव चउरिंदिया ॥

१२५. पज्जत्ता णं भते ! पचिंदियतिरिक्खजोणिया कि नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—भयणाए। मणुस्सा जहा सकाइया। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ॥

१२६. अपज्जत्ता णं भंते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—भयणाए।

१२७ अपज्जत्ता ण भंते ! नेरइया कि नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा नियमा, तिण्णि अण्णाणा भयणाए। एवं जाव थणियकुमारा। पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया जहा एगिदिया ॥

१२८. बेइंदियाणं पुच्छा।
दो नाणा, दो अण्णाणा—नियमा। एव जाव पचिंदियतिरिक्खजोणियाण ॥

१२९. अपज्जत्तगा णं भते ! मणुस्सा कि नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणाइं भयणाए, दो अण्णाणाइं नियमा। वाणमतरा जहा नेरइया। अपज्जत्तगाण जोइसिय-वेमाणियाणं तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—नियमा ॥

१३० नोपज्जत्तगा-नोअपज्जत्तगा ण भते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

भवत्थं पडुच्च—

१३१ निरयभवत्था ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा निरयगतिया ॥

१३२. तिरियभवत्था णं भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—भयणाए ॥

१३३. मणुस्सभवत्था ?
जहा सकाइया ॥

१३४. देवभवत्था णं भंते !
जहा निरयभवत्था। अभवत्था जहा सिद्धा ॥

भवसिद्धियाभवसिद्धियं पडुच्च—

१३५ भवसिद्धिया णं भते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सकाइया ॥

१३६. अभवसिद्धियाण पुच्छा।
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी; तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए ॥

१३७ नोभवसिद्धिया-नोअभवसिद्धिया ण भते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

सण्णि-असण्णि पडुच्च—

१३८. सण्णीण पुच्छा।
जहा सइंदिया। असण्णी जहा बेइंदिया। नोसण्णी-नोअसण्णी जहा सिद्धा ॥

लद्धि-पदं

१३९. कतिविहा णं भंते लद्धी पण्णत्ता ?
गोयमा ! दसविहा लद्धी पण्णत्ता, त जहा—१. नाणलद्धी २ दसणलद्धी ३. चरित्तलद्धी ४ चरित्ताचरित्तलद्धी ५ दाणलद्धी ६ लाभलद्धी ७. भोगलद्धी ८ उवभोगलद्धी ९. वीरियलद्धी १०. इंदियलद्धी ॥

१४०. नाणलद्धी ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, तं जहा—आभिणिबोहियनाणलद्धी जाव[1] केवलनाणलद्धी ॥

१४१. अण्णाणलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—मइअण्णाणलद्धी, सुयअण्णाणलद्धी, विभगनाणलद्धी ॥

१४२. दसणलद्धी णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सम्मदंसणलद्धी, मिच्छादंसणलद्धी, सम्मामिच्छादंसणलद्धी ॥

१४३ चरित्तलद्धी णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, तं जहा—सामाइयचरित्तलद्धी, छेदोवट्ठावणियचरित्तलद्धी, परिहारविसुद्धिचरित्तलद्धी, सुहुमसपरायचरित्तलद्धी, अहक्खायचरित्तलद्धी ॥

---

१. भ० ८।९७।

१४४. चरित्ताचरित्तलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एगागारा पण्णत्ता । एवं जाव उवभोगलद्धी एगागारा पण्णत्ता ॥

१४५. वीरियलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—बालवीरियलद्धी, पंडियवीरियलद्धी, बालपंडियवीरियलद्धी ॥

१४६. इंदियलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियलद्धी जाव[1] फासिंदियलद्धी ॥

नाणलद्धिं पडुच्च-नाणि-अण्णाणित्त-पद

१४७. नाणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्थेगतिया दुण्णाणी, एवं पंच नाणाइं भयणाए ॥

१४८. तस्स अलद्धीया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी । अत्थेगतिया दुअण्णाणी, तिण्णि अण्णाणा भयणाए ॥

१४९. आभिणिबोहियनाणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्थेगतिया दुण्णाणी, चत्तारि नाणाइं भयणाए ॥

१५०. तस्स अलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते नियमा एगनाणी—केवलनाणी जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए । एवं सुयनाणलद्धिया वि । तस्स अलद्धिया वि जहा आभिणिबोहियनाणस्स अलद्धीया[2] ॥

१५१. ओहिनाणलद्धियाणं पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्थेगतिया तिण्णाणी, अत्थेगतिया चउनाणी । जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी । जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मणपज्जवनाणी ॥

१५२. तस्स अलद्धियाणं पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । एवं ओहिनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए ॥

१५३. मणपज्जवनाणलद्धियाणं पुच्छा ।

---

१. भ० २।७७ ।

२. लद्धीया (अ, ब, म, स); अर्थसमीक्षया एतत्पदमशुद्धं प्रतिभाति ।

गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। अत्थेगतिया तिण्णाणी, अत्थेगतिया चउ-नाणी। जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, मणपज्जवनाणी। जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी मणपज्जवनाणी।

१५४. तस्स अलद्धीयाण पुच्छा।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि। मणपज्जवनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए।

१५५ केवलनाणलद्धिया ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। नियमा एगनाणी—केवलनाणी॥

१५६ तस्स अलद्धियाण पुच्छा।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि। केवलनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए॥

१५७. अण्णाणलद्धियाण पुच्छा।
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी। तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए॥

१५८ तस्स अलद्धियाण पुच्छा।
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। पंच नाणाइ भयणाए। जहा अण्णाणस्स य लद्धिया अलद्धिया य भणिया, एवं मइअण्णाणस्स सुयअण्णाणस्स य लद्धिया अलद्धिया य भाणियव्वा। विभगनाणलद्धियाणं तिण्णि अण्णाणाइं नियमा। तस्स अलद्धियाण पच नाणाइ भयणाए, दो अण्णाणाइं नियमा।

दंसणं पडुच्च—

१५९ दसणलद्धिया णं भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि। पच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए॥

१६०. तस्स अलद्धिया णं भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! तस्स अलद्धिया नत्थि।
सम्मदसणलद्धियाण पच नाणाइ भयणाए। तस्स अलद्धियाण तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए॥
मिच्छादंसणलद्धियाण तिण्णि अण्णाणाइ भयणाए। तस्स अलद्धियाण पंच नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइ—भयणाए।
सम्मामिच्छादसणलद्धिया, अलद्धिया य जहा मिच्छादंसणलद्धिया अलद्धिया तहेव भाणियव्वा॥

चरित्तं-पडुच्च—

१६१. चरित्तलद्धिया णं भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! पच नाणाइं भयणाए॥

तस्स अलद्धीयाणं मणपज्जवनाणवज्जाइ चत्तारि नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइ-भयणाए।

१६२. सामाइयचरित्तलद्धिया ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी—केवलवज्जाइ चत्तारि नाणाइ भयणाए। तस्स अलद्धियाण पच नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइ—भयणाए। एव जहा सामाइयचरित्तलद्धिया अलद्धीया य भणिया, एव जाव अहक्खायचरित्तलद्धीया अलद्धीया य भाणियव्वा, नवर—अहक्खायचरित्तलद्धीयाण[1] पच नाणाइ भयणाए ॥

चरित्ताचरित्तं पडुच्च—

१६३. चरित्ताचरित्तलद्धिया ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया तिण्णाणी। जे दुण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य। जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी ॥

दाणाइं पडुच्च—

१६४ तस्स अलद्धियाणं पच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए।
दाणलद्धियाण पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए ॥

१६५ तस्स अलद्धीयाण पुच्छा।
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। नियमा एगनाणी—केवलनाणी। एव जाव वीरियस्स 'लद्धीया अलद्धीया'[2] य भाणियव्वा।

बालाइवीरियं पडुच्च—

बालवीरियलद्धियाणं तिण्णि नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए। तस्स अलद्धियाण पच नाणाइ भयणाए।

पडियवीरियलद्धियाण पच नाणाइ भयणाए। तस्स अलद्धीयाण मणपज्जवनाणवज्जाइ नाणाइ, अण्णाणाणि य भयणाए।

बालपडियवीरियलद्धियाण तिण्णि नाणाइ भयणाए। तस्स अलद्धीयाण पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए ॥

इंदियं पडुच्च—

१६६. इदियलद्धिया ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! चत्तारि नाणाइं, तिण्णि य अण्णाणाइं—भयणाए ॥

१६७. तस्स अलद्धियाणं पुच्छा।
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। नियमा एगनाणी—केवलनाणी ॥

---

१. °लद्धीए (अ, क, ता, ब, म, स)। २. लद्धी अलद्धी (अ, क, ता, ब, म, स)।

१६८. सोइंदियलद्धिया णं जहा इंदियलद्धिया ।।

१६९ तस्स अलद्धियाणं पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया एगनाणी । जे दुण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी । जे एगनाणी ते केवलनाणी । जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य । चक्खिदिय-घाणिदियाण लद्धीया अलद्धीया य जहेव सोइंदियस्स ।।

१७० जिब्भिदियलद्धियाण चत्तारि नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइ—भयणाए ।।

१७१ तस्स अलद्धियाण पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते नियमा एगनाणी—केवलनाणी । जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य । फासिदियलद्धीया अलद्धीया य जहा इदियलद्धिया अलद्धिया य ।।

उवउत्ताण नाणि-अण्णाणित्त-पद

१७२. सागारोवउत्ता ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए ।।

१७३. आभिणिवोहियनाणसागारोवउत्ता ण भते ?
चत्तारि नाणाइ भयणाए । एव सुयनाणसागारोवउत्ता वि । ओहिनाणसागारोवउत्ता जहा ओहिनाणलद्धिया । मणपज्जवनाणसागारोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणलद्धीया । केवलनाणसागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धीया ।
मइअण्णाणसागारोवउत्ताण तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए । एव सुयअण्णाणसागारोवउत्ता वि । विभंगनाणसागारोवउत्ताणं तिण्णि अण्णाणाइ नियमा ।।

१७४. अणागारोवउत्ता ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए । एव चक्खुदसण-अचक्खुदंसणअणागारोवउत्ता वि, नवर—चत्तारि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए ।।

१७५. ओहिदसणअणागारोवउत्ताण पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते अत्थेगतिया तिण्णाणी, अत्थेगतिया चउनाणी । जे तिण्णाणी ते आभिणिवोहियनाणी, सुयनाणी, ओहीनाणी । जे चउनाणी ते आभिणिवोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी । जे अण्णाणी ते नियमा तिअण्णाणी, त जहा—मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभगनाणी । केवलदसणअणागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धिया ।।

जोगं पडुच्च—

१७६ सजोगी ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
जहा[1] सकाइया । एव मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी वि । अजोगी जहा सिद्धा ।।

१. भ० ८।११८ ।

लेस्सं पडुच्च—

१७७. सलेस्सा णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सकाइया ॥

१७८. कण्हलेस्सा णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा[1] सइंदिया । एवं जाव पम्हलेस्सा, सुक्कलेस्सा जहा सलेस्सा । अलेस्सा जहा सिद्धा ॥

कसायं पडुच्च—

१७९. सकसाई णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सइंदिया । एवं जाव लोभकसाई ॥

१८०. अकसाई णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
पंच नाणाइं भयणाए ॥

वेदं पडुच्च—

१८१. सवेदगा णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सइंदिया । एवं इत्थिवेदगा वि, एवं पुरिसवेदगा वि, एवं नपुंसग वेदगा वि । अवेदगा जहा अकसाई ॥

आहारगं पडुच्च—

१८२. आहारगा णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सकसाई, नवरं—केवलनाणं पि ॥

१८३. अणाहारगा णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
मणपज्जवनाणवज्जाइं नाणाइं, अण्णाणाइं तिण्णि—भयणाए ॥

नाणाणं विसय-पदं

१८४. आभिणिबोहियनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।
दव्वओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वदव्वाइं जाणइ-पासइ ।
खेत्तओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ-पासइ ।
[2]कालओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वं कालं जाणइ-पासइ ।
भावओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ-पासइ[3] ॥

---

१. भ० ८।११५ ।
२. स० पा०—एवं कालओ वि, एवं भावओ वि ।
३. नन्दीसूत्रे अस्मिन् विषये विवक्षाभेदोस्ति—दव्वओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वदव्वाइं जाणइ, न पासइ । खेत्तओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ, न पासइ ।

१८५. सुयनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।
दव्वओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ-पासइ।
[1]•खेत्तओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वखेत्त जाणइ-पासइ।
कालओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वकालं जाणइ-पासइ।°
भावओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वभावे जाणइ-पासइ॥

१८६. ओहिनाणस्स ण भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।
दव्वओ ण ओहिनाणी[2] •जहण्णेण अणताइ रूविदव्वाइं जाणइ-पासइ। उक्कोसेण सव्वाइ रूविदव्वाइ जाणइ-पासइ।
खेत्तओ ण ओहिनाणी जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभागं जाणइ-पासइ। उक्कोसेण असखेज्जाइं अलोगे लोयमेत्ताइ खंडाइ जाणइ-पासइ।
कालओ ण ओहिनाणी जहण्णेणं आवलियाए असखेज्जइभाग जाणइ-पासइ। उक्कोसेणं असखेज्जाओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ अईयमणागय च काल जाणइ-पासइ।
भावओ ण ओहिनाणी जहण्णेण अणंते भावे जाणइ-पासइ। उक्कोसेण वि अणते भावे जाणइ-पासइ, सव्वभावाणमणतभागं जाणइ-पासइ°॥

१८७. मणपज्जवनाणस्स णं भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।
दव्वओ णं उज्जुमती अणंते अणतपदेसिए[3] •खधे जाणइ-पासइ। ते चेव विउलमई अब्भहियतराए विउलतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणइ-पासइ।
खेत्तओ ण उज्जुमई अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डागपयरे, उड्ढ जाव जोइसस्स उवरिमतले, तिरिय जाव अंतोमणुस्सखेत्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पण्णरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु

कालओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्व कालं जाणइ, न पासइ।
भावओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्वे भावे जाणइ, न पासइ (सू० ५४)।

१. स० पा०—एव खेत्तओ वि, कालओ वि।
२. स० पा०—ओहिनाणी रुविदव्वाइ जाणइ-पासइ जहा नदीए जाव भावओ।
३ स० पा०—जहा नदीए जाव भावओ।

छप्पण्णए अतरदीवगेसु सण्णीण पचिदियाणं पज्जत्तयाणं मणोगए भावे जाणइ-पासइ ।
त चेव विउलमई अड्ढाइज्जेहिमंगुलेहि अब्भहियतर विउलतर विसुद्धतरं वितिमिरतर खेत्त जाणइ-पासइ ।
कालओ ण उज्जुमई जहण्णेण पलिओवमस्स, असखिज्जयभागं, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असखिज्जयभाग अतीयमणागय वा काल जाणइ-पासइ ।
त चेव विउलमई अब्भहियतराग विउलतराग विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ ।
भावओ णं उज्जुमई अणते भावे जाणइ-पासइ, सव्वभावाण अणंतभागं जाणइ-पासइ ।
त चेव विउलमई अब्भहियतराग विउलतराग विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ-पासइ°॥

१८८. केवलनाणस्स णं भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।
दव्वओ ण केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणइ-पासइ ।
[1]•खेत्तओ ण केवलनाणी सव्व खेत्त जाणइ-पासइ ।
कालओ ण केवलनाणी सव्व काल जाणइ-पासइ ।
भावओ णं केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ-पासइ° ॥

१८९. मइअण्णाणस्स णं भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।
दव्वओ ण मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगयाइं दव्वाइ जाणइ-पासइ[2] ।
•खेत्तओ णं मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगय खेत्तं जाणइ-पासइ ।
कालओ णं मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगयं काल जाणइ-पासइ ।°
भावओ ण मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगए भावे जाणइ-पासइ ॥

१९०. सुयअण्णाणस्स ण भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।
दव्वओ णं सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगयाइ दव्वाइं आघवेइ, पण्णवेइ, परूवेइ[3]।

---

१. स० पा०—एव जाव भावओ ।
२. स० पा०—पासइ जाव भावओ ।
३. वाचनान्तरे पुनरिदमधिकमवलोक्यते 'दसेति निदसेति उवदसेति' (वृ) ।

[1]•खेत्तओ ण सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगयं खेत्त आघवेइ, पण्णवेइ, परूवेइ। कालओ ण सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगय काल आघवेइ, पण्णवेइ, परूवेइ°। भावओ ण सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगए भावे आघवेइ[2], •पण्णवेइ, परूवेइ° ॥

१९१. विभंगनाणस्स णं भंते! केवतिए विसए पण्णत्ते?
गोयमा! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।
दव्वओ णं विभगनाणी विभंगनाणपरिगयाइं दव्वाइं जाणइ-पासइ।
[3]•खेत्तओ णं विभगनाणी विभगनाणपरिगय खेत्त जाणइ-पासइ।
कालओ ण विभगनाणी विभगनाणपरिगय काल जाणइ-पासइ।°
भावओ ण विभगनाणी विभंगनाणपरिगए भावे जाणइ-पासइ ॥

नाणीणं संठिइ-पद

१९२. नाणी ण भंते! नाणी ति कालओ केवच्चिरं होइ?
गोयमा! नाणी दुविहे पण्णत्ते, त जहा—१ सादीए वा अपज्जवसिए २ सादीए वा सपज्जवसिए। तत्थ ण जे से सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइं सातिरेगाइं ॥

१९३. आभिणिबोहियनाणी ण भंते! आभिणिबोहिय[4] •नाणी ति कालओ केवच्चिरं होइ?
गोयमा! एव चेव[5] ॥

१९४. एवं[6] सुयनाणी वि ॥

१९५. ओहिनाणी वि एवं[7] चेव, नवरं—जहण्णेणं एक्कं समय ॥

१९६. मणपज्जवनाणी ण भंते! मणपज्जवनाणी ति कालओ केवच्चिर होइ?
गोयमा! जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेणं देसूण पुव्वकोडि ॥

१९७. केवलनाणी ण भंते! केवलनाणी ति कालओ केवच्चिर होइ?
गोयमा! सादीए अपज्जवसिए ॥

१९८. अण्णाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी णं भंते! पुच्छा।

---

१. स० पा०—एव खेत्तओ कालओ।
२. स० पा०—त चेव।
३. स० पा०—एव जाव भावओ।
४. स० पा०—एव नाणी आभिणिबोहियनाणी जाव केवलनाणी अण्णाणी मइअण्णाणी सुयअण्णाणी विब्भगनाणी एएसि दसण्ह वि [अट्ठण्ह वि (अ)] सचिट्ठणा जहा कायठितीए अतर सव्व जहा जीवाभिगमे अप्पाबहुगाणि तिण्णि जहा बहुवत्तव्वयाए।
५. भ० ८।१९२।
६. भ० ८।१९२।
७. भ० ८।१९२।

गोयमा ! अण्णाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी य तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—१. अणादीए वा अपज्जवसिए २. अणादीए वा सपज्जवसिए ३. सादीए वा सपज्जवसिए। तत्थ णं जे से सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं अणंतं काल—अणंता ओसप्पिणी उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥

१९९. विभंगनाणी णं भंते ! पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं ॥

नाणीणं अंतर-पदं

२००. आभिणिबोहियनाणिस्स णं भंते ! अंतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव[1] अवड्ढं पोग्गल-परियट्टं देसूणं ॥

२०१. सुयनाणि-ओहिनाणि-मणपज्जवनाणीणं एवं चेव ॥

२०२. केवलनाणिस्स पुच्छा।
गोयमा ! नत्थि अतर ॥

२०३. मइअण्णाणिस्स सुयअण्णाणिस्स य पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइ साइरेगाइं ॥

२०४. विभंगनाणिस्स पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो ॥

नाणीणं अप्पाबहुयत्त-पदं

२०५. एतेसि णं भंते ! जीवाणं आभिणिबोहियनाणीणं, सुयनाणीणं, ओहिनाणीण मणपज्जवनाणीणं केवलनाणीण य कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवनाणी, ओहिनाणी असंखेज्जगुणा, आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी दो वि तुल्ला विसेसाहिया, केवलनाणी अणत-गुणा ॥

२०६. एतेसि णं भंते ! जीवाणं मइअण्णाणीण, सुयअण्णाणीणं, विभगनाणीण य कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा विभगनाणी, मइअण्णाणी सुयअण्णाणी दो वि तुल्ला अणंतगुणा ॥

---

१. भ० ८।१९८।

२०७. एतेसि ण भते ! जीवाण आभिणिबोहियनाणीण सुयनाणीणं ओहिनाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीणं मतिअण्णाणीणं सुयअण्णाणीण विभंगनाणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवनाणी, ओहिनाणी असखेज्जगुणा, आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी य दो वि तुल्ला विसेसाहिया, विभगनाणी असखेज्जगुणा, केवलनाणी अणतगुणा, मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य दो वि तुल्ला अणतगुणा° ॥

नाणपज्जव-पद

२०८. केवतिया णं भंते ! आभिणिबोहियनाणपज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणता आभिणिबोहियनाणपज्जवा पण्णत्ता ॥

२०९. केवतिया णं भते ! सुयनाणपज्जवा पण्णत्ता ?
एवं चेव ॥

२१०. एव जाव केवलनाणस्स । एव मइअण्णाणस्स सुयअण्णाणस्स ॥

२११. केवतिया ण भते ! विभगनाणपज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणता विभगनाणपज्जवा पण्णत्ता ॥

नाणपज्जवाणं अप्पाबहुयत्त-पदं

२१२. एतेसि ण भते ! आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं, सुयनाणपज्जवाणं, ओहिनाणपज्जवाण, मणपज्जवनाणपज्जवाणं, केवलनाणपज्जवाण य कयरे कयरेहितो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा मणपज्जवनाणपज्जवा, ओहिनाणपज्जवा अणंतगुणा, सुयनाणपज्जवा अणतगुणा, आभिणिबोहियनाणपज्जवा अणंतगुणा, केवलनाणपज्जवा अणतगुणा ॥

२१३. एएसि णं भते ! मइअण्णाणपज्जवाणं, सुयअण्णाणपज्जवाणं, विभगनाणपज्जवाण य कयरे कयरेहिंतो[2] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा विभंगनाणपज्जवा, सुयअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा, मइअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा ॥

२१४. एएसि ण भते ! आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं जाव केवलनाणपज्जवाणं, मइअण्णाणपज्जवाण, सुयअण्णाणपज्जवाण, विभंगनाणपज्जवाण य कयरे कयरेहिंतो[3] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा°? विसेसाहिया वा ?

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा मणपज्जवनाणपज्जवा, विभंगनाणपज्जवा अणंतगुणा, ओहिनाणपज्जवा अणंतगुणा, सुयअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा, सुयनाणपज्जवा विसेसाहिया, मइअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा, आभिणिबोहियनाणपज्जवा विसेसाहिया, केवलनाणपज्जवा अणंतगुणा ॥

२१५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

——

तइओ उद्देसो

वणस्सइ-पदं

२१६. कतिविहा णं भंते ! रुक्खा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—संखेज्जजीविया, असंखेज्जजीविया, अणंतजीविया ॥

२१७. से किं तं संखेज्जजीविया ?
संखेज्जजीविया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—
ताल[2] तमाले तक्कलि, तेयलि[3] •साले य सालकल्लाणे ।
सरले जावति केयइ, कदलि तह चम्मरुक्खे य ॥१॥
भुयरुक्ख हिंगुरुक्खे, लवंगरुक्खे य होति बोधव्वे ।
पूयफली खज्जूरी, बोधव्वा नालिएरी य° ॥२॥
जे यावण्णे तहप्पगारा । सेत्तं संखेज्जजीविया ॥

२१८. से किं तं असंखेज्जजीविया ?
असंखेज्जजीविया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगट्ठिया य बहुबीयगा य ॥

२१९. से किं तं एगट्ठिया ?
एगट्ठिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—
निंबंब जंबु[4] •कोसंब, साल अंकोल्ल पीलु सेलू य ।
सल्लइ मोयइ मालुय, बउल पलासे करंजे य ॥१॥
पुत्तंजीवयरिट्ठे, बिभेलए हरडए य भल्लाए ।
उंबभरिया[5] खीरिणि, बोधव्वे धायइ पियाले ॥२॥

---

१. भ० १।५१ ।
२. ताले (अ, क, ता, ब, म, स) ।
३. सं० पा०—जहा पण्णवणाए जाव नालिएरी ।
४ सं० पा०—जहा पण्णवणापदे जाव फला ।
५ प्रज्ञापनावृत्तौ 'उंबेभरिका' इति दृश्यते । भ० २२।२ सूत्रे 'उंबभरिका' इतिपदमस्ति ।

पूइयर्निबारग सेण्हा, तह सीसवा य असणे य।
पुण्णाग नागरुक्खे, सीवण्णि तहा असोगे य।।३।।

जे यावण्णे तहप्पगारा। एएसि ण मूला वि असखेज्जजीविया, कंदा वि खधा वि तया वि साला वि पवाला वि। पत्ता पत्तेयजीविया। पुप्फा अणेगजीविया। फला एगट्ठिया। सेत्त एगट्ठिया॥

२२० से कि तं बहुबीयगा ?

बहुबीयगा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—

अत्थिय तिदु कविट्ठे, अबाडग माउलिग बिल्ले य।
आमलग फणस दाडिम, आसोत्थे उबर वडे य।।१।।
नग्गोह नदिरुक्खे, पिप्परि सयरी पिलुक्खरुक्खे य।
काउबरी कुत्थुभरि, बोधव्वा देवदाली य।।२।।
तिलए लउए छत्तोह, सिरीसे सत्तिवण्ण दहिवण्णे।
लोद्ध धव चंदणज्जुण, नीमे कुडए कयबे य।।३।।

जे यावण्णे तहप्पगारा। एएसि ण मूला वि असखेज्जजीविया, कंदा वि खंधा वि तया वि साला वि पवाला वि। पत्ता पत्तेयजीविया। पुप्फा अणेगजीविया।° फला बहुबीयगा। सेत्त बहुबीयगा। सेत्त असखेज्जजीविया॥

२२१ से कि त अणतजीविया ?

अणतजीविया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—आलुए, मूलए, सिगबेरे—एव जहा— सत्तमसए जाव[1] सिउढी[2], मुसुढी। जेयावण्णे तहप्पगारा। सेत्तं अणतजीविया॥

जीवपएसाणं-अंतर-पद

२२२ अह भते ! कुम्मे, कुम्मावलिया, गोहा, गोहावलिया, गोणा, गोणावलिया, मणुस्से, मणुस्सावलिया, महिसे, महिसावलिया—एएसि ण दुहा वा तिहा वा सखेज्जहा वा छिन्नाण जे अतरा ते वि ण तेहि जोवपएसेहि फुडा ?

हता फुडा॥

२२३ पुरिसे ण भते ! अतरे हत्थेण वा पादेण वा अगुलियाए वा सलागाए[3] वा कट्ठेण वा किलिचेण[4] वा आमुसमाणे वा समुसमाणे वा आलिहमाणे वा विलिहमाणे वा अण्णयरेण वा तिक्खेण सत्थजाएण आछिदमाणे वा विछिदमाणे वा,

---

१. भ० ७।६६।

२. सीउण्हे (अ), सीउण्ही (क), सीउण्णी (ता), सीकण्हे (स)।

३ सलागए (अ); × (ता)।

४. कलिंचेण (अ, ता, व, म, स)।

अगणिकाएण वा समोडहमाणे तेसिं जीवपएसाणं किंचि आबाहं वा विवाहं वा उप्पाएइ ? छविच्छेदं वा करेइ ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ[1] ॥

चरिम-अचरिम-पदं

२२४. कइ ण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा जाव[2] अहेसत्तमा, ईसीपब्भारा ॥

२२५. इमा ण भते ! रयणप्पभापुढवी किं चरिमा ? अचरिमा ?
चरिमपदं निरवसेसं भाणियव्वं जाव[3]—

२२६. वेमाणिया णं भंते ! फासचरिमेणं किं चरिमा ? अचरिमा ?
गोयमा ! चरिमा वि, अचरिमा वि ॥

२२७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

चउत्थो उद्देसो

किरिया-पदं

२२८. रायगिहे जाव[5] एवं वयासी—कति णं भंते ! किरियाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—काइया, अहिगरणिया, पाओसिया, पारियावणिया, पाणाइवायकिरिया—एवं किरियापदं निरवसेस भाणियव्वं जाव[6] सव्वत्थोवाओ मिच्छादसणवत्तियाओ किरियाओ, अप्पच्चक्खाणकिरियाओ विसेसाहियाओ, पारिग्गहियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ, आरंभियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ, मायावत्तियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ ॥

२२९. सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति[7] ॥

---

१. सकमइ (म, स) ।
२. भ० २।७५ ।
३. प० १० ।
४. भ० १।५१ ।
५. भ० १।४-८ ।
६. प० २२ ।
७. भ० १।५१ ।

पंचमो उद्देसो

आजीवियसदब्भे समणोवासय-पद

२३०. रायगिहे जाव[1] एव वयासी—आजीविया णं भंते ! थेरे भगवते एव वयासी—समणोवासगस्स[2] ण भते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स केइ भड अवहरेज्जा, से ण भते ! त भड अणुगवेसमाणे कि सभड[3] अणुगवेसइ ? परायग भड अणुगवेसइ ?
गोयमा ! सभंड अणुगवेसइ, नो परायग भड अणुगवेसइ ॥

२३१ तस्स ण भते ! तेहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि से भंडे अभडे भवइ[4] ?
हता भवइ ॥

२३२. से केण खाइ ण अट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सभंड अणुगवेसइ, नो परायग भड अणुगवेसइ ?
गोयमा ! तस्स ण एव भवइ—नो मे हिरण्णे, नो मे सुवण्णे, नो मे कसे, नो मे दूसे, नो मे विपुलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-मादीए सतसारसावदेज्जे[5], ममत्तभावे[6] पुण से अपरिण्णाए भवइ। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सभड अणुगवेसइ, नो परायग भड अणुगवेसइ ॥

२३३. समणोवासगस्स ण भते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स केइ[7] जाय चरेज्जा, से ण भते ! कि जाय चरइ ? अजाय चरइ ?
गोयमा ! जाय चरइ ? नो अजाय चरइ ॥

२३४. तस्स ण भते ! तेहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं सा जाया अजाया भवइ ?
हता भवइ ॥

२३५. से केण खाइ ण अट्ठेण भते एव वुच्चइ—जाय चरइ ? नो अजाय चरइ ?
गोयमा ! तस्स ण एव भवइ—नो मे माता, नो मे पिता, नो मे भाया, नो मे भगिणी, नो मे भज्जा, नो मे पुत्ता, नो मे धूया, नो मे सुण्हा, पेज्जबधणे पुण से अव्वोच्छिन्ने[8] भवइ। से तेणट्ठेण गोयमा[9] ! °एव वुच्चइ—जायं चरइ°, नो अजाय चरइ ॥

---

१ भ० १।४-८।
२ एव वक्ष्यमाणप्रकारमवादिषु, यच्च ते तान् प्रत्यवादिषुस्तद्गौतम स्वयमेव पृच्छन्नाह (वृ)।
३. सयभड (अ), स भड (ता, म), सय भड (स)।
४ हवइ (ता)।
५. °सापदेज्जे (ता), सावतेज्जे (व)।
६ ममत्ति° (क, ता, व)।
७. केवइ (ता)।
८. अवो° (अ)।
९. स० पा०—गोयमा जाव नो।

२३६. समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव थूलए पाणाइवाए अपच्चक्खाए[1] भवइ, से णं भंते ! पच्छा पच्चाइक्खमाणे किं करेइ ?
गोयमा ! तीयं पडिक्कमति, पडुप्पन्नं संवरेति, अणागयं पच्चक्खाति ॥

२३७. तीयं पडिक्कममाणे किं १. तिविहं तिविहेणं पडिक्कमति ? २ तिविहं दुविहेणं पडिक्कमति ? ३. तिविहं एगविहेण पडिक्कमति ? ४. दुविहं तिविहेण पडिक्कमति ? ५. दुविहं दुविहेणं पडिक्कमति ? ६. दुविहं एगविहेण पडिक्कमति ? ७. एगविहं तिविहेण पडिक्कमति ? ८. एगविहं दुविहेणं पडिक्कमति ? ९. एगविहं एगविहेण पडिक्कमति ?
गोयमा ! तिविहं वा[2] तिविहेण पडिक्कमति, तिविहं वा दुविहेणं पडिक्कमति, एवं[3] चेव जाव एगविहं वा एगविहेणं पडिक्कमति।
१. तिविहं तिविहेण पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा।
२. तिविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा ३. अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा ४ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा।
५. तिविहं एगविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा ६. अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा ७ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ कायसा।
८. दुविहं तिविहेण पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ मणसा वयसा कायसा ९. अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा १०. अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा।
११. दुविहं दुविहेण पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, मणसा वयसा १२. अहवा न करेइ, न कारवेइ मणसा कायसा १३ अहवा न करेइ, न कारवेइ वयसा कायसा १४ अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा १५. अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा १६. अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा १७. अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा १८. अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा १९. अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा।
२०. दुविहं एक्कविहेण पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ मणसा २१. अहवा न करेइ, न कारवेइ वयसा २२. अहवा न करेइ, न कारवेइ कायसा २३. अहवा

---

१. वाचनान्तरे तु 'अपच्चक्खाए' इत्यस्य स्थाने 'पच्चक्खाए' त्ति 'पच्चाइक्खमाणे' इत्यस्य च स्थाने 'पच्चक्खावेमाणे' त्ति दृश्यते (वृ)।
२. × (स)।
३. त (अ, क, ता, स)।

न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा २४. अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा २५. अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ कायसा २६. अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा २७ अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा २८ अहवा न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ कायसा।

२९. एगविह तिविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, मणसा वयसा कायसा ३०. अहवा न कारवेइ मणसा वयसा कायसा ३१. अहवा करेंत नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा।

३२ एक्कविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ मणसा वयसा ३३. अहवा न करेइ मणसा कायसा ३४ अहवा न करेइ वयसा कायसा ३५ अहवा न कारवेइ मणसा वयसा ३६ अहवा न कारवेइ मणसा कायसा ३७ अहवा न कारवेइ वयसा कायसा ३८. अहवा करेंत नाणुजाणइ मणसा वयसा ३९ अहवा करेंत नाणुजाणइ मणसा कायसा ४०. अहवा करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा।

४१. एगविह एगविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ मणसा ४२. अहवा न करेइ वयसा ४३ अहवा न करेइ कायसा ४४. अहवा न कारवेइ मणसा ४५ अहवा न कारवेइ वयसा ४६. अहवा न कारवेइ कायसा ४७. अहवा करेंतं नाणुजाणइ मणसा ४८. अहवा करेंत नाणुजाणइ वयसा ४९. अहवा करेंतं नाणुजाणइ कायसा॥

२३८. पडुप्पन्न सवरेमाणे कि तिविहं तिविहेण संवरेइ ?
एव जहा पडिक्कममाणेण एगूणपन्न भंगा भणिया एवं सवरमाणेण वि एगूणपन्न भगा भाणियव्वा॥

२३९. अणागय पच्चक्खमाणे कि तिविहं तिविहेणं पच्चक्खाइ ?
एव एते[1] चेव भगा एगूणपन्न[2] भाणियव्वा जाव अहवा करेंतं नाणुजाणइ कायसा॥

२४०. समणोवासगस्स ण भते ! पुव्वामेव थूलए मुसावाए अपच्चक्खाए भवइ, से णं भते ! पच्छा पच्चाइक्खमाणे किं करेइ ?
एवं जहा पाणाइवायस्स सोयाल भगसयं भणियं, तहा मुसावायस्स वि भाणियव्व। एव अदिन्नादाणस्स वि[3], एव थूलगस्स वि मेहुणस्स, थूलगस्स वि परिग्गहस्स जाव अहवा करेत नाणुजाणइ कायसा।
एते खलु एरिसगा समणोवासगा भवंति, नो खलु एरिसगा आजीविओवासगा भवति॥

---

१. × (अ, म); ते (क, व, स)।
२. × (ता)।
३ वि भाणितव्व (ता)।

२४१. आजीवियसमयस्स णं अयमट्ठे—अक्खीणपडिभोइणो सव्वे सत्ता; से हंता, छेत्ता, भेत्ता, लुंपित्ता, विलुंपित्ता, उद्दवइत्ता आहारमाहारेंति ॥

२४२. तत्थ खलु इमे दुवालस आजीवियोवासगा भवंति, तं जहा—१ ताले २ तालपलंबे ३. उव्विहे ४. संविहे ५. अववहे ६. उदए[1] ७. नामुदए ८. णम्मुदए[2] ९. अणुवालए १०. संखवालए ११. अयंपुले १२ कायरए[3]—इच्चेते दुवालस आजीविओवासगा अरहंतदेवतागा[4], अम्मापिउसुस्सूसगा, पंचफलपडिक्कंता, [तं जहा—उंबरेहिं, वडेहिं, बोरेहिं, सतरेहिं, पिलक्खूहिं][5] पलंडुल्हसुणकंद-मूलविवज्जगा[6], अणिल्लंछिएहिं[7] अणक्कभिन्नेहिं गोणेहिं तसपाणविवज्जिएहिं छेत्तेहिं[8] वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति। एए वि ताव एवं इच्छंति किमंग ! पुण जे इमे समणोवासगा भवंति, जेसिं नो कप्पंति इमाइं पन्नरस कम्मादाणाइं सयं करेत्तए वा, कारवेत्तए वा, करेंतं वा अन्नं न समणुजाणेत्तए, तं जहा—इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्जे, लक्खवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, जंतपीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे[9], दवग्गिदावणया, सर-दह-तलागपरिसोसणया[10], असतीपोसणया। इच्चेते समणोवासगा सुक्का, सुक्काभिजातीया भवित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ॥

२४३. कतिविहा णं भंते ! देवलोगा पण्णत्ता ?,
गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरा जोइसिया, वेमाणिया ॥

२४४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[11] ॥

---

१. उवए (म)।
२. णमुदए (स)।
३. कातरिए (ता, ब, म)।
४. °देवयागा (क्व०)।
५. असौ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते।
६. पलंडूल्हसण° (स)।
७. अणे° (क, ता, स)।
८. वित्तेहिं (अ), छत्तेहिं (क, म), चित्तेहिं (स)
९. निलछण° (अ); णेल्लछण° (ता)।
१०. तलाय° (अ, स)।
११. भ° १।५१।

छट्ठो उद्देसो

समणोवासगकयस्स दाणस्स परिणाम-पदं

२४५. समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेमाणस्स किं कज्जइ ?
गोयमा ! एगंतसो से निज्जरा कज्जइ, नत्थि य से पावे कम्मे कज्जइ ॥

२४६. समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असण-पाण[1]•-खाइम-साइमेणं° पडिलाभेमाणस्स किं कज्जइ ?
गोयमा ! बहुतरिया[2] से निज्जरा कज्जइ, अप्पतराए से पावे कम्मे कज्जइ ॥

२४७. समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं अस्संजय-विरय[3]-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मं फासुएण वा, अफासुएण वा, एसणिज्जेण वा, अणेसणिज्जेण वा असण-पाण[4]-•खाइम-साइमेणं पडिलाभेमाणस्स° किं कज्जइ ?
गोयमा ! एगंतसो से पावे कम्मे कज्जइ, नत्थि से काइ[5] निज्जरा कज्जइ ॥

उवनिमंतितपिंडादि-परिभोगविहि-पदं

२४८. निग्गंथं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं केइ दोहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा—एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि, एगं थेराणं दलयाहि । से य तं पडिग्गाहेज्जा[6], थेरा य से अणुगवेसियव्वा सिया । जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे[7] सिया, नो चेव णं अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तं नो अप्पणा भुंजेज्जा, नो अण्णेसिं दावए, एगंते अणावाए अचित्ते बहुफासुए थंडिल्ले पडिलेहेत्ता पमज्जित्ता परिट्ठावेयव्वे[8] सिया ॥

२४९. निग्गंथं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं केइ तिहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा—एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि, दो थेराणं दलयाहि । से य ते पडिग्गाहेज्जा, थेरा य से अणुगवेसियव्वा •[9]सिया । जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे सिया, नो चेव णं अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा ते नो अप्पणा भुंजेज्जा, नो अण्णेसिं दावए, एगंते अणावाए अचित्ते बहुफासुए थंडिल्ले पडिलेहेत्ता पमज्जित्ता° परिट्ठावेयव्वा सिया । एवं जाव दसहिं पिंडेहिं

---

१. स० पा०—पाण जाव पडिलाभेमाणस्स ।
२. बहुतरिता (क, व, म) ।
३. अविरय (अ, क, ब, म) ।
४. स० पा०—पाण जाव किं ।
५. कावि (क, ब) ।
६. पडिगाहेज्जा (अ, स), पडिग्गहेज्जा (ब) ।
७ अणुप्पतातव्वे (ता) ।
८. परिट्ठवेयव्वे (अ, स) ।
९ स० पा०—सेसं तं चेव जाव परिट्ठावेयव्वा ।

उवनिमंतेज्जा, नवरं—एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि, नव थेराणं दलयाहि। सेसं तं चेव जाव परिट्ठावेयव्वा सिया ॥

२५०. निग्गथं च णं गाहावइ[1]°कुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं° केइ दोहिं पडिग्गहेहिं उवनिमंतेज्जा—एगं आउसो ! अप्पणा पडिभुंजाहि, एगं थेराणं दलयाहि। से य तं पडिग्गाहेज्जा, °[2]थेरा य से अणुगवेसियव्वा सिया। जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे सिया, नो चेव णं अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तं नो अप्पणा परिभुंजेज्जा, नो अण्णेसिं दावए, एगंते अणावाए अचित्ते बहुफासुए थंडिल्ले पडिलेहेत्ता पमज्जित्ता° परिट्ठावेयव्वे सिया। एवं जाव दसहिं पडिग्गहेहिं।

एवं जहा पडिग्गहवत्तव्वया भणिया, एवं गोच्छग-रयहरण-चोलपट्टग-कंबल-लट्ठि-संथारगवत्तव्वया य भाणियव्वा जाव दसहिं संथारएहिं उवनिमंतेज्जा जाव परिट्ठावेयव्वा सिया ॥

आलोयणाभिमुहस्स आराहय-पदं

२५१. निग्गंथेण य गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविट्ठेणं अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स णं एवं भवति—इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, विउट्टामि[3], विसोहेमि, अकरणयाए अब्भुट्ठेमि, अहारियं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जामि, तओ पच्छा थेराणं अंतियं[4] आलोएस्सामि जाव तवोकम्मं पडिवज्जिस्सामि।

१. से य संपट्ठिए असंपत्ते, थेरा य पुव्वामेव[5] अमुहा सिया। से णं भंते ! किं आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए।

२. से य संपट्ठिए असंपत्ते, अप्पणा य पुव्वामेव अमुहे सिया। से णं भंते ! किं आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए।

३. से य संपट्ठिए असंपत्ते, थेरा य कालं करेज्जा। से णं भंते ! किं आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए।

---

१. सं० पा०—गाहावइ जाव केइ।

२. सं० पा०—तहेव जाव तं नो अप्पणा परिभुंजेज्जा, नो अण्णेसिं दावए, सेसं तं चेव जाव परिट्ठवेयव्वे।

३. विउट्टेमि (ता)।

४. अंतिए (अ)।

५. × (अ, ता, ब, म)।

४. से य संपट्ठिए असपत्ते, अप्पणा य पुव्वामेव कालं करेज्जा। से णं भंते! किं आराहए? विराहए?

गोयमा! आराहए, नो विराहए।

५. से य सपट्ठिए सपत्ते, थेरा य अमुहा सिया। से ण भंते! किं आराहए? विराहए?

गोयमा! आराहए, नो विराहए।

६. से य सपट्ठिए सपत्ते अप्पणा य [1]अमुहे सिया। से ण भंते! कि आराहए? विराहए?

गोयमा! आराहए, नो विराहए।

७. से य सपट्ठिए सपत्ते, थेरा य कालं करेज्जा। से णं भते! कि आराहए? विराहए?

गोयमा! आराहए, नो विराहए।

८. से य सपट्ठिए सपत्ते अप्पणा य काल करेज्जा। से णं भते कि आराहए? विराहए?

गोयमा! आराहए, नो विराहए° ॥

२५२. निग्गथेण य वहिया वियारभूमिं[2] वा विहारभूमि वा निक्खतेण अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स णं एव भवति—इहेव ताव अह एयस्स ठाणस्स आलोएमि—एव एत्थ वि ते चेव अट्ठ आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए॥

२५३. निग्गथेण य गामाणुगाम दूइज्जमाणेणं अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स ण एव भवइ—इहेव ताव अह एयस्स ठाणस्स आलोएमि—एवं एत्थ वि ते चेव अट्ठ आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए॥

२५४. निग्गथीए य गाहावइकुल पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठाए अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तीसे ण एव भवइ—इहेव ताव अह एयस्स ठाणस्स आलोएमि जाव तवोकम्म पडिवज्जामि, तओ पच्छा पवत्तिणीए[3] अतिय आलोएस्सामि जाव तवोकम्म पडिवज्जिस्सामि।

सा य सपट्ठिया असपत्ता, पवत्तिणी य अमुहा सिया। सा णं भते! कि आराहिया? विराहिया?

गोयमा! आराहिया, नो विराहिया।

सा य सपट्ठिया जहा निग्गथस्स तिण्णि गमा भणिया एवं निग्गंथीए वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जाव आराहिया, नो विराहिया॥

---

१. स० पा०—एव सपत्तेण वि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा जहेव असपत्तेण।

२. विचार° (ता, म), वितार (व)°।

३. पवित्तिणीए (अ, ता, व, स)।

२५५. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—आराहए ? नो विराहए ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं उण्णालोमं वा, गयलोमं वा, सण-लोमं वा, कप्पासलोमं वा, तणसूयं वा दुहा वा तिहा वा सखेज्जहा वा छिदित्ता अगणिकायंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! छिज्जमाणे छिण्णे, पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, 'दज्झमाणे दड्ढे'[1] त्ति वत्तव्वं सिया ?
हंता भगवं ! छिज्जमाणे छिण्णे[2], •पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, दज्झमाणे° दड्ढे त्ति वत्तव्वं सिया।
से जहा वा केइ पुरिसे वत्थं अहतं वा, धोतं वा, तंतुग्गयं वा मजिट्ठ[3]-दोणीए पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते, पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, रज्जमाणे रत्ते त्ति वत्तव्वं सिया ?
हंता भगवं ! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते[4], •पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, रज्जमाणे° रत्ते त्ति वत्तव्वं सिया। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—आराहए, नो विराहए॥

जोति-जलण-पदं

२५६. पदीवस्स णं भंते ! झियायमाणस्स किं पदीवे झियाइ ? लट्ठी झियाइ ? वत्ती झियाइ ? तेल्ले झियाइ ? दीवचंपए झियाइ ? जोती झियाइ ?
गोयमा ! नो पदीवे झियाइ[5], •नो लट्ठी झियाइ, नो वत्ती झियाइ, नो तेल्ले झियाइ°, नो दीवचंपए झियाइ, जोती झियाइ॥
२५७. अगारस्स[6] णं भंते ! झियायमाणस्स किं अगारे झियाइ ? कुड्डा झियाइ ? कडणा झियाइ ? धारणा झियाइ ? बलहरणे झियाइ ? वंसा झियाइ ? मल्ला झियाइ ? वागा झियाइ ? छित्तरा झियाइ ? छाणे झियाइ ? जोती झियाइ ?
गोयमा ! नो अगारे झियाइ, नो कुड्डा झियाइ जाव नो छाणे झियाइ, जोती झियाइ॥

किरिया-पदं

२५८. जीवे णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए, सिय अकिरिए॥

---

१. डज्झमाणे डज्झे (ता, व)।
२. सं० पा०—छिण्णे जाव दड्ढे।
३. मजिट्ठा (अ, स)।
४. सं० पा०—उक्खित्ते जाव रत्ते।
५. सं० पा०—झियाइ जाव नो।
६. आगारे (अ, म, स)।

२५६. नेरइए णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए ॥
२६०. असुरकुमारे ण भते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ?
एव चेव । एव जाव वेमाणिए, नवरं—मणुस्से जहा जीवे ॥
२६१. जीवे ण भते ! ओरालियसरीरेहितो कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए जाव सिय अकिरिए ॥
२६२. नेरइए ण भंते ! ओरालियसरीरेहितो कतिकिरिए ?
एवं एसो वि[1] जहा[2] पढमो दंडओ तहा[3] भाणियव्वो जाव वेमाणिए, नवरं—मणुस्से जहा[4] जीवे ॥
२६३ जीवा ण भते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया ?
गोयमा ! सिय तिकिरिया जाव सिय अकिरिया ॥
२६४. नेरइया ण भते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया ?
एवं एसो वि जहा पढमो दडओ तहा भाणियव्वो जाव वेमाणिया, नवरं—मणुस्सा जहा जीवा ॥
२६५. जीवा ण भते ! ओरालियसरीरेहितो कतिकिरिया ?
गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पचकिरिया वि, अकिरिया वि ॥
२६६ नेरइया णं भंते ! ओरालियसरीरेहितो कतिकिरिया ?
गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पंचकिरिया वि । एवं जाव वेमाणिया, नवर—मणुस्सा जहा जीवा ॥
२६७. जीवे ण भते ! वेउव्वियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय अकिरिए ॥
२६८. नेरइए ण भते ! वेउव्वियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए । एवं जाव वेमाणिए, नवरं—मणुस्से जहा जीवे । एवं जहा ओरालियसरीरेणं चत्तारि दंडगा भणिया तहा वेउव्वियसरीरेण वि चत्तारि दडगा भाणियव्वा, नवरं—पंचमकिरिया न भण्णइ, सेस तं चेव । एव जहा वेउव्विय तहा आहारगं पि, तेयगं पि कम्मगं पि भाणियव्व—एक्केक्के चत्तारि दंडगा भाणियव्वा जाव—
२६९. वेमाणिया णं भते ! कम्मगसरीरेहितो कतिकिरिया ?
गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि ॥
२७०. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति[5] ॥

---

१. × (अ, क, ता, म, स) ।
२. भ० ८।२५९ ।
३. तहा इमो वि अपरिसेसो (अ, क, ता, व, स)
४. भ० ८।२५८ ।
५. भ० १।५१ ।

सत्तमो उद्देसो

अण्णउत्थियसंवाद-पदं

अदत्तं पडुच्च –

२७१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे—वण्णओ[1], गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव[2] पुढविसिलावट्टओ। तस्स णं गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अण्णउत्थिया परिवसंति। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव[3] समोसढे जाव[4] परिसा पडिगया॥

२७२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना कुलसंपन्ना °[5]बलसंपन्ना विणयसंपन्ना नाणसंपन्ना दंसण-संपन्ना चरित्तसंपन्ना लज्जासंपन्ना लाघवसंपन्ना ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जियनिद्दा जिइंदिया जिय-परीसहा° जीवियास-मरणभयविप्पमुक्का समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूर-सामंते उड्ढंजाणू अहोसिरा झाणकोट्ठोवगया संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति[6]॥

२७३. तए णं ते अण्णउत्थिया जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ते थेरे भगवंते एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो तिविहं तिविहेणं अस्संजय-[7]विरय-पडिहय[8]-°पच्चक्खायपावकम्मा, सकिरिया, असंवुडा, एगंतदंडा° एगंतबाला या वि भवह॥

२७४. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो! अम्हे तिविहं तिविहेणं अस्संजय-विरय[9]-°पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा, सकिरिया, असंवुडा, एगंतदंडा°, एगंतबाला या वि भवामो?

२७५. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—तुब्भे[10] णं अज्जो! अदिन्नं गेण्हह, अदिन्नं भुंजह, अदिन्नं सातिज्जह। तए णं ते तुब्भे अदिन्नं गेण्हमाणा, अदिन्नं भुंजमाणा, अदिन्नं सातिज्जमाणा तिविहं तिविहेणं अस्संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतबाला या वि भवह॥

---

१. ओ० सू० १।
२. ओ० सू० २-१३।
३. भ० १।७।
४. भ० १।८।
५. सं० पा०—जहा बितियसए जाव जीवियास।
६. जाव विहरंति (अ, क, ता, म, स)।
७. अविरय-अपडिहय (अ, क, ब, म, स)।
८. सं० पा०—जहा सत्तमसए बितिए उद्देसए जाव एगंतबाला।
९. सं० पा०—विरय जाव एगंतबाला।
१०. तुम्हे (ब)।

२७६. तए ण ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—केण कारणेण अज्जो ! अम्हे अदिन्न गेण्हामो, अदिन्न भुजामो, अदिन्न सातिज्जामो, जए[1] णं अम्हे अदिन्न गेण्हमाणा[2], •अदिन्नं भुजमाणा° अदिन्न सातिज्जमाणा तिविह तिविहेण अस्सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतबाला या वि भवामो ?

२७७. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—तुब्भण्ण[3] अज्जो ! दिज्जमाणे अदिन्ने, पडिग्गाहेज्जमाणे अपडिग्गाहिए, निस्सिरिज्जमाणे[4] अणिसिट्ठे। तुब्भण्ण अज्जो ! दिज्जमाण पडिग्गहग असपत्त एत्थ ण अतरा केइ अवहरेज्जा गाहावइस्स ण त, नो खलु त तुब्भ, तए ण तुब्भे अदिन्न गेण्हह[5], •अदिन्न भुजह°, अदिन्न सातिज्जह। तए ण तुब्भे अदिन्न गेण्हमाणा जाव[6] एगतबाला या वि भवह ॥

२७८. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—नो खलु अज्जो ! अम्हे अदिन्न गेण्हामो, अदिन्न भुजामो, अदिन्न सातिज्जामो। अम्हे ण अज्जो ! दिन्न गेण्हामो, दिन्न भुजामो, दिन्न सातिज्जामो। तए ण अम्हे दिन्न गेण्हमाणा, दिन्न भुजमाणा, दिन्न सातिज्जमाणा तिविह तिविहेण सजय-विरय-पडिहय-•[7]पच्चक्खायपावकम्मा, अकिरिया, सवुडा° एगतपडिया या वि भवामो ॥

२७९. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—केण कारणेण अज्जो ! तुम्हे दिन्न गेण्हह[8], •दिन्न भुजह°, दिन्न सातिज्जह, जए[9] ण तुब्भे दिन्न गेण्हमाणा जाव[10] एगतपडिया या वि भवह ?

२८०. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—अम्हृण्ण अज्जो ! दिज्जमाणे दिन्ने, पडिग्गाहिज्जमाणे पडिग्गाहिए, निस्सिरिज्जमाणे निसिट्ठे। अम्हृण्णं अज्जो ! दिज्जमाण पडिग्गहग असपत्त एत्थ ण अतरा केइ अवहरेज्जा, अम्हृण्ण त, नो खलु त गाहावइस्स, तए ण अम्हे दिन्न गेण्हामो, दिन्न भुजामो, दिन्नं सातिज्जामो तए ण अम्हे दिन्न गेण्हमाणा[11],•दिन्नं भुजमाणा,°दिन्न सातिज्जमाणा तिविह तिविहेण सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंत-

---

१. तए (अ, क, ता, ब, म, स)।
२. स० पा०—गेण्हमाणा जाव अदिन्न।
३. तुम्हाण (म, स)।
४. निसरिज्ज° (क)।
५. स० पा०—गेण्हह जाव अदिन्न।
६. भ० ८।२७६।
७. सं० पा०—जहा सत्तमसए जाव एगतपडिया
८. स० पा०—गेण्हह जाव दिन्नं।
९. तए (अ, क, ता, ब, म, स)।
१०. भ० ८।२७८।
११. सं० पा०—गेण्हमाणा जाव दिन्नं।

पंडिया या वि भवामो। तुब्भे णं अज्जो! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेण अस्सजय-विरयपडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतबाला या वि भवह ॥

२८१. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एवं वयासी—केण कारणेण अज्जो! अम्हे तिविह तिविहेण अस्संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतबाला या वि भवामो ?

२८२. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—तुब्भे ण अज्जो! अदिन्नं गेण्हह, अदिन्नं भुंजह, अदिन्नं सातिज्जह, तए ण तुब्भे अदिन्न गेण्हमाणा जाव एगतबाला या वि भवह ॥

२८३. तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एवं वयासी—केण कारणेण अज्जो! अम्हे अदिन्न गेण्हामो जाव एगतबाला या वि भवामो ?

२८४. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—तुब्भण्णं अज्जो! दिज्ज-माणे अदिन्ने •[1]पडिग्गाहेज्जमाणे अपडिग्गाहिए, निस्सिरिज्जमाणे अणिसिट्ठे। तुब्भण्ण अज्जो! दिज्जमाण पडिग्गहग असपत्त एत्थ णं अंतरा केइ अवह-रेज्जा°, गाहावइस्स णं त, नो खलु तं तुब्भ। तए णं तुब्भे अदिन्न गेण्हह जाव[2] एगंतबाला या वि भवह ॥

हिंसं पडुच्च—

२८५ तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—तुब्भे ण अज्जो! तिविहं तिविहेण अस्संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतबाला या वि भवह ॥

२८६. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो! अम्हे तिविह तिविहेण जाव एगंतबाला यावि भवामो ?

२८७. तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो! रीय रीयमाणा पुढवि पेच्चेह अभिहणह वत्तेह लेसेह संघाएह सघट्टेह परितावेह किलामेह उद्दवेह, तए णं तुब्भे पुढवि पेच्चेमाणा अभिहणमाणा[3] •वत्तेमाणा लेसेमाणा संघाएमाणा संघट्टेमाणा परितावेमाणा किलामेमाणा° उद्दवेमाणा तिविह तिविहेण अस्संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतबाला या वि भवह ॥

२८८. तए ण ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—नो खलु अज्जो! अम्हे रीयं रीयमाणा पुढवि पेच्चामो अभिहणामो जाव उद्दवेमो। अम्हे ण अज्जो!

---

१. स० पा०—तं चेव जाव गाहावइस्स।

२. तं चेव जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।

३. स० पा०—अभिहणमाणा जाव उद्दवेमाणा।

रीयं रीयमाणा कायं वा, जोयं वा, रियं वा पडुच्च देसं देसेणं वयामो, पदेसं पदेसेणं वयामो, तेणं अम्हे देसं देसेणं वयमाणा, पदेसं पदेसेणं वयमाणा नो पुढविं पेच्चेमो अभिहणामो जाव उद्दवेमो, तए णं अम्हे पुढविं अपेच्चेमाणा अणभिहणमाणा जाव अणोद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतपंडिया या वि भवामो। तुब्भे णं अज्जो! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं अस्संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतबाला या वि भवह॥

२८९. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—केणं कारणेणं अज्जो! अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला या वि भवामो?

२९०. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो! रीयं रीयमाणा पुढविं पेच्चेह जाव उद्दवेह, तए णं तुब्भे पुढविं पेच्चेमाणा जाव उद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला या वि भवह॥

गम्ममाणगयं पडुच्च—

२९१. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—तुब्भण्णं अज्जो! गम्ममाणे अगते, वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कंते, रायगिहं नगरं संपाविउकामे असंपत्ते॥

२९२. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—नो खलु अज्जो! अम्हं गम्ममाणे अगते, वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कंते, रायगिहं नगरं संपाविउकामे असंपत्ते। अम्हण्णं अज्जो! गम्ममाणे गए, वीतिक्कमिज्जमाणे वीतिक्कंते, रायगिहं नगरं संपाविउकामे संपत्ते। तुब्भण्णं अप्पणा चेव गम्ममाणे अगते, वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कंते, रायगिहं[1] °नगरं संपाविउकामे° असंपत्ते तए णं ते थेरा भगवंतो अण्णउत्थिए एवं पडिभणति,[2] पडिभणित्ता गइप्पवायं नामं अज्झयणं पण्णवइंसु॥

२९३. कतिविहे णं भंते! गइप्पवाए पण्णत्ते?
गोयमा! पंचविहे गइप्पवाए पण्णत्ते, तं जहा—पयोगगई, ततगई, बंधणछेयण-गई, उववायगई, विहायगई[3]। एत्तो आरब्भ[4] पयोगपयं निरवसेसं भाणियव्वं जाव[5] सेत्तं विहायगई।

२९४. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[6]॥

---

१. स० पा०—रायगिहं जाव असंपत्ते।
२. पडिहणइ (अ, क, ता, ब, म, स)।
३. विहागती (ता)।
४. आरद्धं (क, ता, ब, म)।
५. प० १६।
६. भ० १।५१।

अट्ठमो उद्देसो

पडिणीय-पदं

२९५. रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—गुरू णं भंते ! पडुच्च[2] कति पडिणीया[3] पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—आयरियपडिणीए, उवज्झाय-पडिणीए, थेरपडिणीए ॥

२९६. गति[4] ण भंते ! पडुच्च कति पडिणीया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, त जहा—इहलोगपडिणीए, परलोग-पडिणीए, दुहओलोगपडिणीए[5] ॥

२९७ समूहण्णं भंते ! पडुच्च कति पडिणीया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, त जहा—कुलपडिणीए, गणपडिणीए, संघपडिणीए ॥

२९८. अणुकंपं पडुच्च °[6]कति पडिणीया पण्णत्ता?°
गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—तवस्सिपडिणीए, गिलाणपडिणीए, सेहपडिणीए ॥

२९९ सुयण्णं भंते । पडुच्च °[7]कति पडिणीया पण्णत्ता?°
गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—सुत्तपडिणीए, अत्थपडिणीए, तदुभयपडिणीए ॥

३००. भावण्णं भंते ! पडुच्च °[8]कति पडिणीया पण्णत्ता?°
गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—नाणपडिणीए, दंसणपडिणीए, चरित्तपडिणीए ॥

पंचववहार-पदं

३०१. कतिविहे णं भंते ! ववहारे[9] पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे ववहारे पण्णत्ते, तं जहा—आगमे, सुतं, आणा, धारणा, जीए ।

---

१. भ० १।४-१० ।
२. पडुच्चा (क, म) ।
३. पडणिया (ता, म), तुलना—ठा० ३।४८८-४९३ ।
४. अत्र णकारयोगे अनुस्वारलोपः ।
५. दुहालोग° (अ, व, म); उभयपडि° (क); दुहलोग° (ता) ।
६. सं० पा०—पुच्छा ।
७. सं० पा०—पुच्छा ।
८. स० पा०—पुच्छा ।
९. तुलना—ठा० ५।१२४; व० १० ।

जहा से तत्थ आगमे सिया आगमेणं ववहारं पट्ठवेज्जा ।
णो य से तत्थ आगमे सिया, जहा से तत्थ सुए सिया, सुएणं ववहारं पट्ठवेज्जा ।
णो य से तत्थ सुए सिया, जहा से तत्थ आणा सिया, आणाए ववहारं पट्ठवेज्जा ।
णो य से तत्थ आणा सिया, जहा से तत्थ धारणा सिया, धारणाए ववहारं पट्ठवेज्जा ।
णो य से तत्थ धारणा सिया, जहा से तत्थ जीए सिया, जीएणं ववहारं पट्ठवेज्जा ।
इच्चेएहिं पंचहिं ववहारं पट्ठवेज्जा, तं जहा—आगमेणं, सुएणं आणाए, धारणाए, जीएणं ।
जहा-जहा से आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा-तहा ववहारं पट्ठवेज्जा ।
से किमाहु भंते ! आगमबलिया समणा निग्गंथा ?
इच्चेतं पंचविहं ववहारं जदा-जदा जहिं-जहिं 'तदा-तदा'[1] तहिं-तहिं अणिस्सिओवस्सितं सम्मं ववहरमाणे समणे निग्गंथे आणाए आराहए भवइ[2] ॥

बंध-पदं

३०२. कतिविहे णं भंते ! बंधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—इरियावहियबंधे[3] य, संपराइयबंधे य ॥

इरियावहियबंध-पदं

३०३. इरियावहियं[4] णं भंते ! कम्मं किं नेरइओ बंधइ ? तिरिक्खजोणिओ बंधइ ? तिरिक्खजोणिणी बंधइ ? मणुस्सो बंधइ ? मणुस्सी बंधइ ? देवो बंधइ ? देवी बंधइ ?
गोयमा ! नो नेरइओ बंधइ, नो तिरिक्खजोणिओ बंधइ, नो तिरिक्खजोणिणी बंधइ, नो देवो बंधइ, नो देवी बंधइ । पुव्व पडिवन्नए पडुच्च मणुस्सा य मणुस्सीओ य बंधंति, पडिवज्जमाणए पडुच्च १. मणुस्सो वा बंधइ २ मणुस्सी वा बंधइ ३ मणुस्सा वा बंधंति ४. मणुस्सीओ वा बंधंति ५ अहवा मणुस्सो य मणुस्सी य बंधइ ६ अहवा मणुस्सो य मणुस्सीओ य बंधंति ७ अहवा मणुस्सा य मणुस्सी य बंधंति ८. अहवा मणुस्सा य मणुस्सीओ य बंधंति ॥

---

१. तहा-तहा (अ, स) ।
२. हन्त ! आहुरेवेति गुरुवचन गम्यमिति, अन्ये तु 'से किमाहु भंते !' इत्याद्येव व्याख्यान्ति—अथ किमाहुर्भदन्त ! आगमबलिकाः श्रमणा निर्ग्रन्थाः ! पञ्चविधव्यवहारस्य फलमिति शेष ; अत्रोत्तरमाह—'इच्चेय' मित्यादि(वृ) ।
३. °वधिय° (म); °वहिया° (स) ।
४. °वहिया (अ, क, स); °वहिय (ता) ।

३०४. तं भंते ! किं इत्थी बंधइ ? पुरिसो बंधइ ? नपुंसगो बधइ ? इत्थीओ ? बंधंति ? पुरिसा बंधंति ? नपुसगा बधंति ? नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुसगो बंधइ ?

गोयमा ! नो इत्थी बंधइ, नो पुरिसो बंधइ[1] •नो नपुसगो बंधइ, नो इत्थीओ बंधंति, नो पुरिसा बधति, नो नपुसगा बंधंति, नोइत्थी नोपुरिसो• नोनपुसगो बंधइ—पुव्वपडिवन्नए पडुच्च अवगयवेदा बधति, पडिवज्जमाणए पडुच्च अवगयवेदो वा बंधइ अवगयवेदा वा बधंति ॥

३०५. जइ भंते ! अवगयवेदो वा बंधइ, अवगयवेदा वा बधति त भते ! कि १. इत्थीपच्छाकडो बधइ ? २. पुरिसपच्छाकडो बंधइ ? ३. नपुसगपच्छाकडो बंधइ ? ४. इत्थीपच्छाकडा बधंति ? ५. पुरिसपच्छाकडा बंधंति ? ६. नपुसगपच्छाकडा बधति ? उदाहु इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बंधइ ४ ? उदाहु इत्थीपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य । बंधइ ४ ? उदाहु पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बंधइ ४ ? उदाहु इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बंधइ ८ एव एते छव्वीस भंगा जाव उदाहु इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडा य बधति ?

गोयमा ! १. इत्थीपच्छाकडो वि बंधइ २. पुरिसपच्छाकडो वि बंधइ ३. नपुसगपच्छाकडो वि बंधइ ४ इत्थीपच्छाकडा वि बंधति ५. पुरिसपच्छाकडा वि बधंति ६. नपुसगपच्छाकडा वि बधंति ७ अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बधइ, एवं एए चेव छव्वीसं भगा भाणियव्वा जाव[2] २६. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडा य बधति ॥

३०६. त भंते ! कि १. बधी बधइ बधिस्सइ ? २. बधी बधइ न बधिस्सइ ? ३ बधी न बधइ बधिस्सइ ? ४. बंधी न बधइ न बधिस्सइ ? ५. न बधी बंधइ बंधिस्सइ ? ६. न बंधी बधइ न बधिस्सइ ? ७ न बधी न बधइ बधिस्सइ ? ८. न बधी न बधइ न बधिस्सइ ?

गोयमा ! भवागरिसं पडुच्च अत्थेगतिए बधी बधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए बधी बंधइ न बधिस्सइ, एवं त चेव सव्व जाव अत्थेगतिए न बधी न बधइ न बंधिस्सइ ।

---

१. स० पा०—बधइ जाव नोनपुसगो ।

२. ८. अहवाइत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडा य बधति ९. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडो य बधइ १०. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य बधति ११. अहवा इत्थीपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बंधइ १२. अहवा इत्थीपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडा य बंधति १३. अहवा इत्थीपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडो य बंधइ १४. अहवा इत्थीपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडा य बधति

गहणागरिसं पडुच्च अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, एवं जाव[1] अत्थेगतिए न बंधी बंधइ बंधिस्सइ, नो चेव णं न बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, अत्थेगतिए न बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए न बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ।।

३०७. तं भंते ! किं सादीयं सपज्जवसियं बंधइ ? सादीयं अपज्जवसियं बंधइ ? अणादीयं सपज्जवसियं बंधइ ? अणादीयं अपज्जवसियं बंधइ ?
गोयमा ! सादीयं सपज्जवसियं बंधइ, नो सादीयं अपज्जवसियं बंधइ, नो अणादीयं सपज्जवसियं बंधइ, नो अणादीयं अपज्जवसियं बंधइ ।।

३०८. तं भंते ! किं देसेणं देसं बंधइ ? देसेणं सव्वं बंधइ ? सव्वेणं देसं बंधइ ? सव्वेणं सव्वं बंधइ ?
गोयमा ! नो देसेणं देसं बंधइ, नो देसेणं सव्वं बंधइ,नो सव्वेणं देसं बंधइ, सव्वेणं सव्वं बंधइ ।।

संपराइयबंध-पदं

३०९. संपराइयं णं भंते ! कम्मं किं नेरइओ बंधइ ? तिरिक्खजोणिओ बंधइ ? जाव[2] देवी बंधइ ?
गोयमा ! नेरइओ वि बंधइ, तिरिक्खजोणिओ वि बंधइ, तिरिक्खजोणिणी वि बंधइ, मणुस्सो वि बंधइ, मणुस्सी वि बंधइ, देवो वि बंधइ, देवी वि बंधइ ।।

३१०. तं भंते ! किं इत्थी बंधइ ? पुरिसो बंधइ ? तहेव जाव[3] नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुंसगो बंधइ ?
गोयमा ! इत्थी वि बंधइ, पुरिसो वि बंधइ जाव नपुंसगा वि बंधंति, 'अहवा एते'[4] य अवगयवेदो य बंधइ, अहवा एते य अवगयवेदा य बंधंति ।।

---

१५. अहवा पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ १६ अहवा पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति १७ अहवा पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ १८. अहवा पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति १९. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ २०. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति २१. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ २२. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति २३. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ २४ अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति २५. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ ।

१. अत्र जाव-पदेन त्रयो भङ्गा गृहीता. ।
२. भ० ८।३०३ ।
३. भ० ८।३०४ ।
४. अहवेए (अ, ब, स); अहवेते (ता, म) ।

३११ 'जइ भंते ! अवगयवेदो य बंधइ, अवगयवेदा य बंधंति'[1] तं भंते ! किं इत्थीपच्छाकडो बंधइ ? पुरिसपच्छाकडो बंधइ ? एवं जहेव इरियावहिय-बधगस्स तहेव निरवसेसं जाव अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति ।।

३१२. त भंते ! कि १. बधी बंधइ बधिस्सइ ? २. बधी बंधइ न बंधिस्सइ ? ३. बधी न बधइ बंधिस्सइ ? ४. बंधी न बंधइ न बधिस्सइ ?
गोयमा ! १. अत्थेगतिए बंधी बंधइ बधिस्सइ २. अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ ३. अत्थेगतिए बधी न बंधइ बधिस्सइ ४. अत्थेगतिए बधी न बंधइ न बंधिस्सइ ।।

३१३. तं भंते ! कि सादीयं सपज्जवसियं बंधइ ? पुच्छा तहेव ।
गोयमा ! सादीयं वा सपज्जवसियं बंधइ, अणादीयं वा सपज्जवसिय बंधइ, अणादीयं वा अपज्जवसिय बंधइ, नो चेव णं सादीय अपज्जवसियं बधइ ।।

३१४. तं भंते ! किं देसेणं देसं बधइ ? एवं जहेव इरियावहियबंधगस्स जाव[2] सव्वेण सव्वं बधइ ।।

कम्मप्पगडीसु परीसहसमवतार-पदं

३१५ कइ णं भंते ! कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं दंसणाव-रणिज्जं वेदणिज्जं मोहणिज्जं आउगं नाम गोयं[3] अतराइयं ।।

३१६. कइ ण भते ! परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बावीसं परीसहा पण्णत्ता, तं जहा—दिगिंछापरीसहे, पिवासा-परीसहे[4] •सीतपरीसहे उसिणपरीसहे दंसमसगपरीसहे अचेलपरीसहे अरइ-परीसहे इत्थिपरीसहे चरियापरीसहे निसीहियापरीसहे सेज्जापरीसहे अक्कोस-परीसहे वहपरीसहे जायणापरीसहे अलाभपरीसहे रोगपरीसहे तणफासपरीसहे जल्लपरीसहे सक्कारपुरक्कारपरीसहे 'पण्णापरीसहे नाणपरीसहे[5]°दंसण-परीसहे'[6] ।।

३१७ एए ण भते ! बावीसं परीसहा कतिसु कम्मप्पगडीसु समोयरंति ?
गोयमा ! चउसु कम्मप्पगडीसु समोयरंति, तं जहा—नाणावरणिज्जे, वेदणिज्जे, मोहणिज्जे, अतराइए ।।

---

१. × (व) ।
२. भ० ८।३०८ ।
३. गोदं (व) ।
४. सं० पा०—पिवासापरिसहे जाव दसण° ।
५. अन्नाणपरिसहे (उत्त० २।३) ।
६. नाणपरीसहे दंसणपरीसहे पण्णापरीसहे (स० २२।१) ।

३१८. नाणावरणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ?
गोयमा ! दो परीसहा समोयरंति, तं जहा—पण्णापरीसहे नाणपरीसहे[1] य ॥

३१९. वेदणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ?
गोयमा ! एक्कारस परीसहा समोयरंति, तं जहा—

पंचेव आणुपुव्वी, चरिया सेज्जा वहे य रोगे य ।
तणफास—जल्लमेव य, एक्कारस वेदणिज्जम्मि ॥१॥

३२०. दंसणमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परिसहा समोयरंति ?
गोयमा ! एगे दंसणपरीसहे समोयरइ ॥

३२१. चरित्तमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ?
गोयमा ! सत्त परीसहा समोयरंति, तं जहा—

अरती अचेल इत्थी, निसीहिया जायणा य अक्कोसे ।
सक्कार-पुरक्कारे, चरित्तमोहम्मि सत्तेते ॥१॥

३२२. अंतराइए णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ?
गोयमा ! एगे अलाभपरीसहे समोयरइ ॥

३२३. सत्तविहबंधगस्स णं भंते ! कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बावीसं परीसहा पण्णत्ता । वीसं पुण वेदेइ—जं समयं सीयपरीसहं वेदेइ नो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ, जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ नो तं समयं निसीहियापरीसहं वेदेइ, जं समयं निसीहियापरीसहं वेदेइ नो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ ॥

३२४. 'एवं अट्ठविहबंधगस्स वि'[2] ॥

३२५. छव्विहबंधगस्स णं भंते ! सरागछउमत्थस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोद्दस परीसहा पण्णत्ता । बारस पुण वेदेइ—जं समयं सीयपरीसहं वेदेइ नो तं समयं उसिणपरीसहं[3] वेदेइ, जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ नो तं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ, जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ नो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ ॥

---

१. अण्णाण° (अ) ।
२. अट्ठविहबंधगस्स णं भंते ! कति परिसहा प० गो० बावीसं परीसहा, तं छुहापरीसहे पिवासा परीसहे सीयपरीसहे उसिणपरीसहे दंसमसगपरीसहे जाव अलाभपरीसहे, एवं अट्ठविहबंधगस्स वि (क, ब, म); अट्ठविहबंधगस्स णं भंते ! कति परीसहा प० गो० बावीस परीसहा प० एवं अट्ठविधबंधगस्स (ता, स) ।
३. उसुण° (ता) ।

३२६. एक्कविहबंधगस्स णं भंते ! वीयरागछउमत्थस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एवं चेव—जहेव छव्विहबंधगस्स ॥

३२७. एगविहबंधगस्स णं भंते ! सजोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एक्कारस परीसहा पण्णत्ता । नव पुण वेदेइ । सेसं जहा छव्विहबंधगस्स ॥

३२८. अबंधगस्स णं भंते ! अयोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एक्कारस परीसहा पण्णत्ता । नव पुण वेदेइ—जं समयं सीयपरीसहं वेदेइ नो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ, जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ नो तं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ, जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ नो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ ॥

सूरिय-पदं

३२९. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ? मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति ? अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ?
हंता गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य[1] °मूले य दीसंति, मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति°, अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ॥

३३०. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि, मज्झंतियमुहुत्तंसि य, अत्थमणमुहुत्तंसि य सव्वत्थ समा उच्चत्तेणं ?
हंता गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमण[2]°मुहुत्तंसि, मज्झंतियमुहुत्तंसि य, अत्थमणमुहुत्तंसि य सव्वत्थ समा° उच्चत्तेणं ॥

३३१. जइ णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि, मज्झंतियमुहुत्तंसि य, अत्थमणमुहुत्तंसि[3] °य सव्वत्थ समा° उच्चत्तेणं, से केणं खाइ अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि[4] दूरे य मूले य दीसंति ? जाव अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ?
गोयमा ! लेसापडिघाएणं उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, लेसाभितावेणं मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति, लेसापडिघाएणं अत्थमणमुहुत्तंसि

---

१. स० पा०—तं चेव जाव अत्थमण° ।
२. स० पा०—उग्गमण जाव उच्चत्तेणं ।
३. स० पा०—अत्थमणमुहुत्तंसि जाव उच्चत्तेणं । 'अ, ता, ता, म, स' संकेतितादर्शेषु 'अत्थमणमुहुत्तंसि मूले जाव उच्चत्तेणं' इति पाठोऽस्ति । अत्र 'मूले' इति पदं नावश्यकं प्रतिभाति ।
४. °मुहुत्तंसि य (अ, क, ता, ब, म, स)।

दूरे य मूले य दीसति। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तसि दूरे य मूले य दीसति जाव अत्थमण[1]•मुहुत्तसि दूरे य मूले य० दीसंति ॥

३३२. जबुद्दीवे णं भंते! दीवे सूरिया कि तीयं खेत्तं गच्छंति? पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छति? अणागय खेत्त गच्छति?
गोयमा! नो तीय खेत्तं गच्छति, पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छंति, नो अणागयं खेत्तं गच्छति ॥

३३३. जबुद्दीवे णं भंते! दीवे सूरिया किं तीय खेत्तं ओभासंति? पडुप्पन्नं खेत्तं ओभासति? अणागय खेत्त ओभासति?
गोयमा! नो तीय खेत्त ओभासति, पडुप्पन्नं खेत्तं ओभासंति, नो अणागयं खेत्त ओभासति ॥

३३४. तं भते! किं पुट्ठ ओभासति? अपुट्ठं ओभासंति?
गोयमा! पुट्ठ ओभासति, नो अपुट्ठ ओभासंति जाव[2] नियमा छद्दिसि ॥

३३५. जंबुद्दीवे ण भते! दीवे सूरिया कि तीयं खेत्तं उज्जोवेति?
एव चेव जाव नियमा छद्दिसि ॥

३३६ एव तवेंति, एव भासति जाव नियमा छद्दिसि ॥

३३७. जंबुद्दीवे णं भते! दीवे सूरियाणं कि तीए खेत्ते किरिया कज्जइ? पडुप्पन्ने खेत्ते किरिया कज्जइ? अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ?
गोयमा! नो तीए खेते किरिया कज्जइ, पडुप्पन्ने खेत्ते किरिया कज्जइ, नो अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ ॥

३३८. सा भते! किं पुट्ठा कज्जइ? अपुट्ठा कज्जइ?
गोयमा! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ जाव[3] नियमा छद्दिसि ॥

३३९. जबुद्दीवे णं भते! दीवे सूरिया केवतिय खेत्त उड्ढ तवति? केवतियं खेत्त अहे तवंति? केवतिय खेत्त तिरिय तवति?
गोयमा! एग जोयणसयं उड्ढं तवति, अट्ठारस जोयणसयाइ अहे तवंति, सीयालीस जोयणसहस्साइ दोण्णिय तेवट्ठे जोयणसए एक्कवीस च सट्ठिभाए जोयणस्स तिरिय तवंति ॥

जोइसियाणं उववत्ति-पदं

३४०. अतो णं भते! माणुसुत्तरपव्वयस्स जे चदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-ताराख्वा ते ण भते! देवा कि उड्ढोववन्नगा?

---

१. स० पा०—अत्थमण जाव दीसति।
२. भ० १।२५९-२६६।
३ भ० १।२५९-२६६।

जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव[1]—

३४१. इंदट्ठाणे णं भंते ! केवतियं कालं विरहिए उववाएणं ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ॥

३४२. बहिया णं भंते ! माणुसुत्तरपव्वयस्स जे चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-तारारूवा ते णं भंते ! देवा किं उड्ढोववन्नगा ?
जहा जीवाभिगमे जाव[2]—

३४३. इंदट्ठाणे णं भंते ! केवतियं कालं उववाएणं विरहिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ॥

३४४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

नवमो उद्देसो

बंध-पदं

३४५. कतिविहे णं भंते ! बंधे पण्णत्ते !
गोयमा ! दुविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—पयोगबंधे य, वीससाबंधे य ॥

वीससाबंध-पदं

३४६. वीससाबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सादीयवीससाबंधे य, अणादीयवीससाबंधे य ॥

३४७. अणादियवीससाबंधे[4] णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे, अधम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे, आगासत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे ॥

३४८. धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबंधे, नो सव्वबंधे । एवं अधम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि, एवं आगासत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि ॥

---

१. जी० ३ ।
२. जी० ३ ।
३. भ० १।५१ ।
४. अणातीत° (ता) ।

३४९. धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वद्धं । एव अधम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि, एव आगासत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि[1] ॥

३५०. सादीयवीससाबधे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त जहा—बंधणपच्चइए, भायणपच्चइए, परिणामपच्चइए ॥

३५१. से कि त बधणपच्चइए ?
बधणपच्चइए—जण्णं परमाणुपोग्गलदुप्पदेसिय-तिप्पदेसिय जाव दसपदेसिय-सखेज्जपदेसिय-असखेज्जपदेसिय-अणतपदेसियाण खधाणं वेमायनिद्धयाए, वेमायलुक्खयाए, वेमायनिद्धलुक्खयाए बधणपच्चएण[2] बधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्ज काल । सेत्तं बंधणपच्चइए ॥

३५२. से किं त भायणपच्चइए ?
भायणपच्चइए—जण्णं जुण्णसुर-जुण्णगुल-जुण्णतदुलाण भायणपच्चएणं[3] बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सखेज्जं कालं । सेत्तं भायणपच्चइए ॥

३५३ से किं त परिणामपच्चइए ?
परिणामपच्चइए—जण्णं अब्भाणं, अब्भरुक्खाणं जहा ततियसए जाव[4] अमोहाण परिणामपच्चएण[5] बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं एक्क समयं, उक्कोसेणं छम्मासा । सेत्त परिणामपच्चइए । सेत्तं सादीयवीससाबधे । सेत्तं वीससाबंधे ॥

पयोगबंध-पदं

३५४. से कि तं पयोगबंधे ?
पयोगबंधे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए वा अपज्जवसिए, सादीए वा अपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिए ।
तत्थ णं जे से अणादीए अपज्जवसिए से णं अट्ठण्हं जीवमज्झपएसाणं, तत्थ वि ण तिण्हं-तिण्हं अणादीए अपज्जवसिए, सेसाणं सादीए । तत्थ णं जे से सादीए अपज्जवसिए से ण सिद्धाण । तत्थ णं जे से सादीए सपज्जवसिए से णं

---

१. अस्य सूत्रस्यानन्तर 'ता' प्रतौ एतावानतिरिक्त पाठोऽस्ति—'धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबधस्स ण भते ! केवइय कालं अतर होइ गो नत्थि अतर एव तिण्हवि सेस्त अणादीयवीससाबधे ।'
२. °पच्चइएण (अ) ।
३. °पच्चइएणं (अ, स) ।
४. भ० ३।२५३ ।
५. °पच्चइएणं (अ, स) ।

चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—आलावणबंधे, अल्लियावणबंधे, सरीरबंधे, सरीरप्पयोगबंधे ॥

आलावणं पडुच्च—

३५५. से किं तं आलावणबंधे ?

आलावणबंधे—जण्णं तणभाराण वा, कट्ठभाराण वा, पत्तभाराण वा, पलालभाराण वा[1], वेत्तलता-वाग-वरत्त-रज्जु-वल्लि-कुस-दब्भमादीएहिं आलावणबंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं । सेत्तं आलावणबंधे ॥

अल्लियावणं पडुच्च—

३५६. से किं तं अल्लियावणबंधे ?

अल्लियावणबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—लेसणाबंधे, उच्चयबंधे, समुच्चयबंधे, साहणणाबंधे[2] ॥

३५७. से किं तं लेसणाबंधे ?

लेसणाबंधे—जण्णं कुड्डाणं, कोट्टिमाणं[3], खंभाणं, पासायाणं, कट्ठाणं, चम्माणं, घडाणं, पडाणं, कडाणं छुहा-चिक्खल्ल-सिलेस-लक्ख-महुसित्थमाईएहिं लेसणएहिं बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं । सेत्तं लेसणाबंधे ॥

३५८. से किं तं उच्चयबंधे ? उच्चयबंधे—जण्णं तणरासीण वा, कट्ठरासीण वा, पत्तरासीण वा, तुसरासीण वा, भुसरासीण वा गोमयरासीण वा, अवगररासीण वा, उच्चत्तेणं बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं । सेत्तं उच्चयबंधे ॥

३५९. से किं तं समुच्चयबंधे ?

समुच्चयबंधे—जण्णं अगड-तडाग-नदी-दह-वावी-पुक्खरिणी-दीहियाणं गुंजालियाणं, सराणं, सरपंतियाणं, सरसरपंतियाणं, बिलपंतियाणं देवकुल-सभ-प्पव-थूभ-खाइयाणं, फरिहाणं[4], पागारट्टालग-चरिय-दार-गोपुर-तोरणाणं, पासाय-घर-सरण-लेण-आवणाणं, सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह[5]-महापह-पहमादीणं, छुहा-चिक्खल्ल-सिला[6]-समुच्चएणं बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं । सेत्तं समुच्चयबंधे ॥

---

१. वा वेल्लभाराण वा (अ, स) ।
२. साहणबंधे (ता); सहणाण° (म, स) ।
३. कुट्टिमाण (क) ।
४. परिहाण (क, व, म) ।
५. चउमुह (क, ता) ।
६. सिलेस (अ, स); सेला (ता) ।

३६०. से किं तं साहणणाबंधे ?
साहणणाबधे दुविहे पण्णत्ते, त जहा— देससाहणणाबधे य, सव्वसाहणणाबधे य ॥

३६१ से कि त देससाहणणाबधे ?
देससाहणणाबधे—जण्ण सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-सदमाणी-लोही-लोहकडाह-कडच्छुय[1]-आसण-सयण-खंभ-भडमत्तोवगरणमादीणं देस-साहणणाबधे[2] समुप्पज्जइ, जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सखेज्जं कालं। सेत्त देससाहणणाबधे ॥

३६२. से कि त सव्वसाहणणाबंधे ?
सव्वसाहणणाबधे—से ण खीरोदगमाईण। सेत्त सव्वसाहणणाबंधे । सेत्तं साहणणाबधे। सेत्त अल्लियावणबधे ॥

सरीरं पडुच्च—

३६३ से कि तं सरीरबधे ?
सरीरबधे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पुव्वपयोगपच्चइए[3] य, पडुप्पन्नपयोग-पच्चइए[4] य ॥

३६४ से किं त पुव्वपयोगपच्चइए ?
पुव्वपयोगपच्चइए—जण्ण नेरइयाणं ससारत्थाण सव्वजीवाण तत्थ-तत्थ तेसु-तेसु कारणेसु समोहण्णमाणाण[5] जीवप्पदेसाण[6] बधे समुप्पज्जइ। सेत्त पुव्व-पयोगपच्चइए ॥

३६५. से कि त पडुप्पन्नपयोगपच्चइए ?
पडुप्पन्नपयोगपच्चइए—जण्ण केवलनाणिस्स अणगारस्स केवलिसमुग्घाएणं समोहयस्स ताओ समुग्घायाओ पडिनियत्तमाणस्स अतरा मथे वट्टमाणस्स तेया-कम्माण बधे समुप्पज्जइ। कि कारण ? ताहे से पएसा एगत्तीगया भवंति[7]। सेत्त पडुप्पन्नपयोगपच्चइए। सेत्त सरीरबधे ॥

---

१. कडेच्छुय (ता, ब, म), कडुच्छुया (भ० ५।१८९)
२. देससाघणणाएबधे (ता)।
३. तुव्वप्पओग° (ता)।
४. पच्चुप्पण्ण° (ता, ब, म)।
५. समोहण° (स)।
६ इह जीवप्रदेशानामित्युक्तावपि शरीरबन्धाधिकारात्तात्स्थ्यात्तद्व्यपदेश इति न्यायेन जीवप्रदेशाश्रिततैजसकार्मणशरीरप्रदेशानामिति द्रष्टव्य, शरीरिबन्ध इत्यत्र तु पक्षे समुद्घातेन विक्षिप्य सङ्कोचितानामुपसर्जनीकृततैजसादिशरीरप्रदेशाना जीवप्रदेशानामेवेति (वृ)।
७. शरीरिबन्ध इत्यत्र तु पक्षे तेयाकम्माए बधे समुप्पज्जइ (वृ)।

सरीरप्पयोगं पडुच्च—

३६६. से किं तं सरीरप्पयोगबंधे ?
सरीरप्पयोगबंधे पचविहे पण्णत्ते, तं जहा–ओरालियसरीरप्पयोगबधे, वेउव्वियसरीरप्पयोगबधे, आहारगसरीरप्पयोगबंधे, तेयासरीरप्पयोगबधे, कम्मासरीरप्पयोगबंधे ॥

ओरालियसरीरप्पयोगं पडुच्च—

३६७. ओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबधे, बेइंदियओरालियसरीरप्पयोगबधे जाव पंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबधे ॥

३६८. एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबधे, एव एएण अभिलावेणं भेदो जहा ओगाहणसठाणे ओरालियसरीरस्स तहा भाणियव्वो जाव[1] पज्जत्तागब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे य, अप्पज्जत्तागब्भवक्कंतियमणुस्स[2]•पंचिंदियओरालियसरीरप्पयोग°-बधे य ॥

३६९. ओरालियसरीरप्पयोगबधे ण भंते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए पमादपच्चया कम्मं च जोग च भवं च आउयं च पडुच्च ओरालियसरीरप्पयोगनामकम्मस्स उदएण ओरालियसरीरप्पयोगबंधे ॥

३७०. एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबधे ण भंते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
एवं चेव । पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे एव चेव, एव जाव वणस्सइकाइया । एव बेइंदिया, एवं तेइंदिया, एव चउरिंदिया ॥

३७१. तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबधे ण भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? एवं चेव ॥

३७२. मणुस्स पंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए पमादपच्चया[3] •कम्मं च जोगं च भवं च° आउय च पडुच्च मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगनामकम्मस्स उदएणं मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबधे ॥

३७३. ओरालियसरीरप्पयोगबधे णं भंते ! किं देसबधे ? सव्वबधे ?

---

१. प० २१ ।
२. सं० पा०—°मणुस्स जाव बधे ।
३. सं० पा०—पमादपच्चया जाव आउय ।

गोयमा ! देसबंधे वि, सव्वबंधे वि ॥

३७४. एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
एवं चेव । एवं पुढविक्काइया एवं जाव—

३७५. मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबंधे वि, सव्वबंधे वि ॥

३७६. ओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं समयूणाइं[1] ॥

३७७. एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं समयूणाइं ॥

३७८. पुढविक्काइयएगिंदियपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं खुड्डागं[2] भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं समयूणाइं । एवं सव्वेसिं सव्वबंधो एक्कं समयं, देसबंधो जेसिं नत्थि वेउव्वियसरीरं तेसिं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं जा जस्स ठिती सा समयूणा कायव्वा, जेसिं पुण अत्थि वेउव्वियसरीरं तेसिं देसबंधो जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं जा जस्स ठिती सा समयूणा कायव्वा जाव मणुस्साणं देसबंधे जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं समयूणाइं ।

३७९. ओरालियसरीरबंधंतरं णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडिसमयाहियाइं । देसबंधंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं तिसमयाहियाइं ॥

३८०. एगिंदियओरालियपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं समयाहियाइं । देसबंधंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

३८१. पुढविक्काइयएगिंदियपुच्छा ।
सव्वबंधंतरं जहेव एगिंदियस्स तहेव भाणियव्वं । देसबंधंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तिण्णि समया । जहा पुढविक्काइयाणं एवं जाव चउरिंदियाणं वाउक्काइयवज्जाणं, नवरं—सव्वबंधंतरं उक्कोसेणं जा जस्स ठिती सा समया-

---

१. समयऊणाइं (क) ।
२. खुड्डागं (क) प्राय. सर्वत्र ।

हिया कायव्वा। वाउक्काइयाणं सव्वबंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं ति-समयूणं, उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं समयाहियाइं। देसबंधंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं॥

३८२. पंचिंदियतिरिक्खजोणियओरालियपुच्छा।
सव्वबंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी सम-याहिया। देसबंधंतरं जहा एगिंदियाणं तहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, एवं मणुस्साण वि निरवसेसं भाणियव्वं जाव उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं॥

३८३. जीवस्स णं भंते! एगिंदियत्ते, नोएगिंदियत्ते, पुणरवि एगिंदियत्ते एगिंदिय-ओरालियसरीरप्पयोगबंधंतरं कालओ केवच्चिरं होइ?
गोयमा! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं दो खुड्डाइं भवग्गहणाइं तिसमयूणाइं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं। देसबंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवास-मब्भहियाइं॥

३८४. जीवस्स णं भंते! पुढविक्काइयत्ते, नोपुढविक्काइयत्ते, पुणरवि पुढविक्काइयत्ते पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधंतरं कालओ केवच्चिरं होइ?
गोयमा! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं दो खुड्डाइं भवग्गहणाइं तिसमयूणाइं[1], उक्को-सेणं अणंतं कालं—अणंताओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा—असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, ते णं पोग्गलपरियट्टा आवलियाए असंखेज्जइभागो। देसबंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव आवलियाए असंखेज्जइभागो। जहा पुढविक्काइयाणं एवं वणस्सइकाइयवज्जाणं जाव मणुस्साणं। वणस्सइकाइयाणं[2] दोण्णि खुड्डाइं एवं चेव, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं—असंखेज्जाओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ असंखेज्जा लोगा, एवं देसबंधंतरं पि उक्कोसेणं पुढविकालो॥

३८५. एएसि णं भंते! जीवाणं ओरालियसरीरस्स देसबंधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबंध-गाण य कयरे कयरेहिंतो[3] °अप्पा वा? बहुया वा? तुल्ला वा°? विसेसाहिया वा?
गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा ओरालियसरीरस्स सव्वबंधगा, अबंधगा विसेसा-हिया, देसबंधगा असंखेज्जगुणा॥

---

१. एवं चेव (अ, क, ता, ब, म); तिसमयूणाइं एवं चेव (स); अत्र द्वयोर्मिश्रणं जातम्। 'एवं चेव' त्ति करणात् 'तिसमयूणाइं' ति द्व्यम्।
२. तरुकालो वण° (ता)।
३. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

वेउव्वियसरीरप्पयोगं पडुच्च—

३८६. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे य पचेंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे य ॥

३८७. जइ एगिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे किं वाउक्काइयएगिंदियसरीरप्पयोगबंधे ? अवाउक्काइयएगिंदियसरीरप्पयोगबंधे ?
एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे वेउव्वियसरीरभेदो तहा भाणियव्वो जाव[1] पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे य, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्ध[2] °अणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे य ॥

३८८. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए[3] °पमादपच्चया कम्मं च जोगं च भवं च° आउयं 'च लद्धिं वा'[4] पडुच्च वेउव्वियसरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे ॥

३८९. वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगपुच्छा ।
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए एवं चेव जाव लद्धिं पडुच्च वाउक्काइयएगिंदियवेउव्विय[5] °सरीरप्पयोग° बंधे ॥

३९० रयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए जाव आउयं वा पडुच्च रयणप्पभापुढवि[6] °नेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोग° बंधे, एवं जाव अहेसत्तमाए ॥

३९१. तिरिक्खजोणियपंचिंदियवेउव्वियसरीरपुच्छा ।
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए जहा वाउक्काइयाणं । मणुस्सपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे एवं चेव । असुरकुमारभवणवासिदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे जहा रयणप्पभापुढविनेरइयाणं । एवं जाव थणियकुमारा । एवं वाणमंतरा । एवं जोइसिया । एवं सोहम्मकप्पोवया[7] वेमाणिया । एवं जाव अच्चुयगेवेज्जकप्पातीया वेमाणिया । अणुत्तरोववाइयकप्पातीया वेमाणिया एवं चेव ।

---

१. प० २१ ।
२. स० पा०—°सिद्ध जाव पयोगबंधे ।
३. स० पा०—सद्दव्वयाए जाव आउयं ।
४. वा लद्धिं (अ); वा लद्धिं वा (क, ता, ब, म, स) ।
५. स० पा०—°वेउव्विय जाव बंधे ।
६ स० पा०—°पुढवि जाव बंधे ।
७. °कप्पोवा (ता) ।

३९२. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबंधे वि, सव्वबंधे वि ।
वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे वि एवं चेव । रयणप्पभापुढविनेरइया एवं चेव । एवं जाव अणुत्तरोववाइया ॥

३९३. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधे जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो समया । देसबंधे जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं ॥

३९४. वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

३९५. रयणप्पभापुढविनेरइयपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं दसवाससहस्साइं तिसमयूणाइं, उक्कोसेणं सागरोवमं समयूणं । एवं जाव अहे सत्तमा, नवरं—देसबंधे जस्स जा जहण्णिया ठिती सा तिसमयूणा कायव्वा जाव उक्कोसिया सा समयूणा । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण मणुस्साण य जहा वाउक्काइयाणं, असुरकुमार-नागकुमार जाव अणुत्तरोववाइयाणं जहा नेरइयाणं, नवरं—जस्स जा ठिती सा भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववाइयाणं सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं तिसमयूणाइं[1], उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं ॥

३९६. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधंतरं णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ[2] •ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा—असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, ते णं पोग्गलपरियट्टा° आवलियाए असंखेज्जइभागो । एवं देसबंधंतरं पि ॥

३९७. वाउक्काइयवेउव्वियसरीरपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं । एवं देसबंधंतरं पि ॥

३९८. तिरिक्खजोणियपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधंतरं—पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडीपुहत्तं । एवं देसबंधंतरं पि । एवं मणूसस्स वि[3] ॥

---

१. तिसमऊणाइं (क, ता, ब) ।
२. सं० पा०—अणंताओ जाव आवलियाए ।
३. मणुयस्स (क, म); मणुस्सा (ता, ब) ।

३९९. जीवस्स णं भंते ! वाउक्काइयत्ते, नोवाउकाइयत्ते, पुणरवि वाउकाइयत्ते वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइ-कालो । एवं देसबंधतरं पि ॥

४००. जीवस्स णं भंते ! रयणप्पभापुढविनेरइयत्ते, नोरयणप्पभापुढविनेरइयत्ते, पुणरवि रयणप्पभापुढविनेरइयत्ते—पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधतरं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो । देसबंधतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो । एवं जाव अहेसत्तमाए, नवरं—जा जस्स ठिती जहण्णिया सा सव्वबंधतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा, सेसं तं चेव । पंचिंदियतिरिक्खजोणिय-मणुस्साणं य जहा वाउक्काइयाणं । असुर-कुमार-नागकुमार जाव सहस्सारदेवाणं—एएसिं जहा रयणप्पभापुढविनेर-इयाणं, नवरं—सव्वबंधतरं जस्स जा ठिती जहण्णिया सा अंतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा, सेसं तं चेव ॥

४०१. जीवस्स णं भंते ! आणयदेवत्ते[1], नोआणयदेवत्ते, पुणरवि आणयदेवत्ते पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधतरं जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो । देसबंधतरं जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो । एवं जाव अच्चुए, नवरं—जस्स जा ठिती सा सव्वबंधतरं जहण्णेणं वासपुहत्तमब्भहिया कायव्वा, सेसं तं चेव ॥

४०२. गेवेज्जाकप्पातीतापुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधतरं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो । देसबंधतरं जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो ॥

४०३. जीवस्स णं भंते ! अणुत्तरोववाइयपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधतरं जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं । देसबंधतरं जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं ॥

४०४. एएसि णं भंते ! जीवाणं वेउव्वियसरीरस्स देसबंधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो[2] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधगा, देसबंधगा असंखेज्जगुणा, अबंधगा अणंतगुणा ।

---

१. आणया° (अ) ।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

आहारगसरीरप्पयोगं पडुच्च –

४०५. आहारगसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते ॥

४०६. जइ एगागारे पण्णत्ते किं मणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे ? अमणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे ?
गोयमा ! मणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे, नो अमणुस्साहारगसरीप्पयोगबंधे। एवं एएणं अभिलावेण जहा ओगाहणसंठाणे जाव[1] इड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमागब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे, नो अणिड्ढिपत्तपमत्त[2]•संजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमागब्भवक्कंतियमणुस्सा°हारगसरीरप्पयोगबंधे ॥

४०७. आहारगसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए[3] •पमादपच्चया कम्मं च जोगं च भवं च आउयं च° लद्धिं वा पडुच्च[4] आहारगसरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं आहारगसरीरप्पयोगबंधे ॥

४०८. आहारगसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबंधे वि, सव्वबंधे वि ॥

४०९. आहारगसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

४१० आहारगसरीरप्पयोगबंधंतरं[5] णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा—अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं। एवं देसबंधंतरं पि ॥

४११. एएसि णं भंते ! जीवाणं आहारगसरीरस्स देसबंधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो[6] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सव्वबंधगा, देसबंधगा संखेज्जगुणा, अबंधगा अणंतगुणा ॥

---

१. प० २१।
२. सं० पा०—°पमत्त जाव आहारग°।
३. सं० पा०—सद्दव्वयाए जाव लद्धिं।
४. पडुच्चा (ता, ब)।
५. °बंधंतरे (अ, क, स)।
६. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

तेयासरीरप्पयोगं पडुच्च—

४१२ तेयासरीरप्पयोगबंधे ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—एगिंदियतेयासरीरप्पयोगबधे, बेइदिय-तेयासरीरप्पयोगबधे जाव पंचिंदियतेयासरीरप्पयोगबधे ॥

४१३. एगिंदियतेयासरीरप्पयोगबधे ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
एव एएणं अभिलावेण भेदो जहा ओगाहणसठाणे जाव[1] पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीतवेमाणियदेवपंचिदियतेयासरीरप्पयोगबधे य, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्ध अणुत्तरोववाइय[2]•कप्पातीतवेमाणियदेवपंचिदियतेयासरीरप्पयोग°-बधे य ॥

४१४. तेयासरीरप्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए[3] •पमादपच्चया कम्म च जोगं च भव च° आउय वा[4] पडुच्च तेयासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण तेयासरीरप्प-योगबधे ॥

४१५ तेयासरीरप्पयोगबधे णं भते ! किं देसबधे ? सव्वबधे ?
गोयमा ! देसबधे, नो सव्वबधे ॥

४१६ तेयासरीरप्पयोगबधे णं भते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—अणादीए[5] वा अपज्जवसिए, अणादीए वा सपज्जवसिए ॥

४१७. तेयासरीरप्पयोगबधतर णं भते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! अणादीयस्स अपज्जवसियस्स नत्थि अतरं, अणादीयस्स सपज्जव-सियस्स नत्थि अतर ॥

४१८. एएसि ण भते ! जीवाण तेयासरीरस्स देसबधगाणं, अबधगाण य कयरे कयरे-हिंतो[6] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा तेयासरीरस्स अबधगा, देसबधगा अणतगुणा ॥

कम्मासरीरप्पयोगं पडुच्च—

४१९. कम्मासरीरप्पयोगबधे ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! अट्ठविहे पण्णत्ते, तं जहा—नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबधे जाव अतराइयकम्मासरीरप्पयोगबधे ॥

---

१. प० २१ ।
२. स० पा०—°वाइय जाव बधे ।
३. स० पा०—सद्दव्वयाए जाव आउयं ।
४ च (ता, ब, म) ।
५. अणादिए (ता) ।
६. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

४२०. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे ण भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! नाणपडिणीययाए, नाणणिण्हवणयाए, नाणंतराएण, नाणप्पदोसेणं, नाणच्चासातणयाए[1], नाणविसंवादणाजोगेणं नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगनामाए[2] कम्मस्स उदएणं नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबधे ॥

४२१. दरिसणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! दंसणपडिणीययाए, •[3]दसणणिण्हवणयाए, दसणतराएण, दसणप्पदोसेणं, दंसणच्चासातणयाए°, दंसणविसंवादणाजोगेणं दसणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण[4] •दरिसणावरणिज्जकम्मासरीर°प्पयोगबंधे ॥

४२२. सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! पाणाणुकंपयाए, भूयाणुकंपयाए, •[5]जीवाणुकपयाए, सत्ताणुकपयाए, बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए° अपरियावणयाए सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण सायावेयणिज्जकम्मा[6]•सरीरप्पयोग°बधे ॥

४२३. असायावेयणिज्ज[7]•कम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भते ! कस्स कम्मस्स उदएण° ? गोयमा ! परदुक्खणयाए, परसोयणयाए, •[8]परजूरणयाए, परतिप्पणयाए, परपिट्टणयाए, परपरियावणयाए, बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जूरणयाए तिप्पणयाए पिट्टणयाए° परियावणयाए असायावेयणिज्जकम्मा[9]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण असायावेयणिज्जकम्मासरीर°प्पयोगबंधे ॥

४२४. मोहणिज्जकम्मासरीर[10]•प्पयोगबधे णं भते ! कस्स कम्मस्स उदएण° ? गोयमा ! तिव्वकोहयाए, तिव्वमाणयाए, तिव्वमाययाए तिव्वलोभयाए, तिव्वदंसणमोहणिज्जयाए, तिव्वचरित्तमोहणिज्जयाए मोहणिज्जकम्मासरीर[11]•प्पयोगनामाए कम्मस उदएणं मोहणिज्जकम्मासरीर°प्पयोगबधे ॥

---

१. °सादणाए (अ); सादणताए (क, ब, म); °सातणाताए (ता)।
२. नाणावरणिज्ज° (अ, स)।
३. स० पा०—एवं जहा नाणावरणिज्जं, नवरं—दंसणनामं घेतव्वं जाव दंसण°।
४. सं० पा०—उदएणं जाव पयोग°।
५. स० पा०—एवं जहा सत्तमसए दुस्समउद्देसए जाव अपरिया°।
६. सं० पा०—°कम्मा जाव बधे।
७. सं० पा०—पुच्छा।
८. सं० पा०—जहा सत्तमसए दुस्समाउद्देसए जाव परिया°।
९. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग°।
१०. सं० पा०—पुच्छा।
११. स० पा०—°सरीर जाव पयोग°।

४२५. नेरइयाउयकम्मासरीर[1]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?० गोयमा ! महारंभयाए, महापरिग्गहयाए, 'पंचिंदियवहेणं, कुणिमाहारेणं'[2] नेरइयाउयकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं नेरइयाउयकम्मासरीरप्पयोगबंधे ॥

४२६ तिरिक्खजोणियाउयकम्मासरीर[3]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?० गोयमा ! माइल्लयाए, नियडिल्लयाए, अलियवयणेणं, कूडतुल[4]-कूडमाणेणं तिरिक्खजोणियाउयकम्मा[5]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं तिरिक्खजोणियाउयकम्मासरीर०प्पयोगबंधे ॥

४२७. मणुस्साउयकम्मासरीर[6]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?० गोयमा ! पगइभद्दयाए, पगइविणीययाए, साणुक्कोसयाए[7], अमच्छरियाए मणुस्साउयकम्मा[8]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं मणुस्साउयकम्मासरीर०प्पयोगबंधे ॥

४२८. देवाउयकम्मासरीर[9]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?० गोयमा ! सरागसंजमेणं, संजमासंजमेणं, बालतवोकम्मेणं[10], अकामनिज्जराए देवाउयकम्मा[11]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं देवाउयकम्मासरीर०प्पयोगबंधे ॥

४२९. सुभनामकम्मासरीर[12]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?० गोयमा ! काउज्जुययाए[13], 'भावुज्जुययाए, भासुज्जुययाए',[14] अविसंवादणाजोगेणं सुभनामकम्मा[15]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं सुभनामकम्मासरीरप्पयोगबंधे ॥

४३०. असुभनामकम्मासरीर[16]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! कायअणुज्जुययाए, भावअणुज्जुययाए, 'भासअणुज्जुययाए विसंवाद-

---

१. सं० पा०—पुच्छा ।
२. कुणिमाहारेण, पचिंदियवहेण (क, ब, म) ।
३. सं० पा०—पुच्छा ।
४. °तोल (अ); °तुल्ल (स) ।
५ सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
६. सं० पा०—पुच्छा ।
७. साणुक्कोसियाए (अ); साणुक्कोसणयाए (क)
८. सं० पा०—पुच्छा ।
९. सं० पा०—पुच्छा ।
१०. बालतवेण (व) ।
११. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
१२. सं० पा०—पुच्छा ।
१३. कायजुययाए (अ); कायउज्जुययाए (स) ।
१४. भासुज्जुययाए भावुज्जुययाए (ता) ।
१५. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
१६. सं० पा०—पुच्छा ।

णाजोगेणं[1] असुभनामकम्मा[2]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं असुभनाम-कम्मासरीर°प्पयोगबंधे ॥

४३१. उच्चागोयकम्मासरीर[3]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?°
गोयमा ! जातिअमदेणं, कुलअमदेणं, बलअमदेणं, रूवअमदेणं, तवअमदेणं, 'सुयअमदेणं, लाभअमदेणं',[4] इस्सरियअमदेणं[5] उच्चागोयकम्मा[6]•सरीरप्पयोग-नामाए कम्मस्स उदएणं उच्चागोयकम्मासरीर°प्पयोगबंधे ॥

४३२. नीयागोयकम्मासरीर[7]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?°
गोयमा ! जातिमदेणं, कुलमदेणं, बलमदेणं[8], •रूवमदेणं, तवमदेणं, सुयमदेणं, लाभमदेणं°, इस्सरियमदेणं[9] नीयागोयकम्मा[10]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं नीयागोयकम्मासरीर°प्पयोगबंधे ॥

४३३. अंतराइयकम्मासरीर[11]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?°
गोयमा ! दाणंतराएणं, लाभंतराएणं, भोगंतराएणं, उवभोगंतराएणं, वीरियं-तराएणं, अंतराइयकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं अंतराइयकम्मा-सरीरप्पयोगबंधे ॥

पयोगबंधस्स देसबंध-सव्वबंध-पदं

४३४. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबंधे, नो सव्वबंधे । एवं जाव अंतराइयं ॥

४३५. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए[12]•वा अपज्जवसिए, अणादीए वा सपज्जवसिए° । एवं जाव अंतराइयस्स ॥

४३६. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधंतरं णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! अणादीयस्स[13]•अपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं, अणादीयस्स सपज्ज-वसियस्स नत्थि अंतरं° । एवं जाव अंतराइयस्स ॥

४३७. एएसि णं भंते ! जीवाणं नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स देसबंधगाणं, अबंधगाणं

---

१. वायअणुज्जुययाए भावअणुज्जुयाए (ता) ।
२. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
३. सं० पा०—पुच्छा ।
४. लाभअमदेणं, सुयअमदेणं (अ) ।
५. ठिस्सरिय° (म) ।
६. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
७. सं० पा०—पुच्छा ।
८. सं० पा०—बलमदेण जाव इस्सरिय° ।
९. तिस्सरिय° (म) ।
१०. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
११. सं० पा०—पुच्छा ।
१२. सं० पा०—एवं जहा तेयगस्स संचिट्ठणा तहेव ।
१३. सं० पा०—एवं जहा तेयगसरीरस्स अंतरं तहेव ।

य कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स अबंधगा देसबंधगा, अणंतगुणा° । एवं आउयवज्जं जाव अंतराइयस्स ।।

४३८. आउयस्स पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आउयस्स कम्मस्स देसबंधगा, अबंधगा संखेज्जगुणा ।।

४३९. जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरस्स सव्वबंधे, से णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए ।।
आहारगसरीरस्स[2] किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए ।।
तेयासरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! बंधए, नो अबंधए ।
जइ बंधए किं देसबंधए ? सव्वबंधए ?
गोयमा ! देसबंधए, नो सव्वबंधए ।
कम्मासरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
[3]•गोयमा ! बंधए, नो अबंधए ।
जइ बंधए किं देसबंधए ? सव्वबंधए ?
गोयमा ! ° देसबंधए, नो सव्वबंधए ।।

४४०. जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरस्स देसबंधे, से णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए । एवं जहेव सव्वबंधेणं भणियं तहेव देसबंधेण वि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स ।।

४४१. जस्स णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए । आहारगसरीरस्स एवं चेव । तेयगस्स कम्मगस्स य जहेव ओरालिएण समं भणियं तहेव भाणियव्वं जाव[4] देसबंधए, नो सव्वबंधए ।।

४४२. जस्स णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स देसबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?

---

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव अप्पाबहुगं जहा तेयगस्स ।
२. आहारासरीरस्स (ता, व) ।
३. सं० पा०—जहेव तेयगस्स जाव देसबंधए ।
४. भ० ८।४३९ ।

गोयमा ! नो बंधए, अबंधए। एवं जहेव सव्वबंधेणं भणियं तहेव देसबंधेण वि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स ॥

४४३. जस्स णं भंते ! आहारगसरीरस्स सव्वबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए। एवं वेउव्वियस्स वि। तेया-कम्माणं जहेव ओरालिएणं समं भणियं तहेव भाणियव्वं[1] ॥

४४४. जस्स णं भंते ! आहारगसरीरस्स देसबंधे, से णं भते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए। एवं जहा आहारगस्स सव्वबधेणं भणिय तहा देस-बंधेण वि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स ॥

४४५. जस्स णं भंते ! तेयासरीरस्स देसबधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! बंधए वा, अबंधए वा।
जइ बंधए कि देसबंधए ? सव्वबंधए ?
गोयमा ! देसबंधए वा, सव्वबंधए वा ?
वेउव्वियसरीस्स कि बंधए ? अबंधए ?
एवं चेव। एवं आहारगस्स[2] वि।
कम्मगसरीरस्स कि बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! बंधए, नो अबंधए।
जइ बंधए कि देसबंधए ? सव्वबंधए ?
गोयमा ! देसबंधए, नो सव्वबंधए ॥

४४६. जस्स णं भंते ! कम्मासरीरस्स देसबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए। जहा तेयगस्स वत्तव्वया भणिया तहा कम्मगस्स वि भाणियव्वा जाव—
तेयासरीरस्स[3] °कि बंधए ? अबधए ?
गोयमा ! बंधए, नो अबधए।
जइ बंधइ कि देसबधए ? सव्वबंधए ?
गोयमा !° देसबंधए, नो सव्वबंधए ॥

४४७. एएसि णं भंते ! जीवाणं[4] ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेयाकम्मासरीरगाणं

---

१. भ० ८।४३६।
२. आहारगसरीरस्स (अ, स)।
३. स० पा०—तेयासरीरस्स जाव देसबधए।
४. सव्वजीवाणं (अ, स)।

देसबंधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! १. सव्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सव्वबंधगा २. तस्स चेव देसबंधगा संखेज्जगुणा ३. वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधगा असखेज्जगुणा ४. तस्स चेव देसबंधगा असखेज्जगुणा ५ तेया-कम्मगाणं[2] अबंधगा अणंतगुणा ६ ओरालियसरीरस्स सव्वबधगा अणंतगुणा ७. तस्स चेव अबधगा विसेसाहिया ८. तस्स चेव देसबधगा असखेज्जगुणा ९. तेया-कम्मगाणं देसबंधगा विसेसाहिया १० वेउव्वियसरीरस्स अबधगा विसेसाहिया ११. आहारगसरीरस्स अबधगा विसेसाहिया ॥

४४८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[3] ॥

दसमो उद्देसो

सुय-सील-पद

४४९. रायगिहे नगरे जाव[4] एव वयासी—अण्णउत्थिया णं भते ! एवमाइक्खति जाव[5] एवं परूवेति—एवं खलु १ सीलं सेयं २ सुयं सेयं ३. 'सुयं सील सेयं'[6] ॥

४५० से कहमेयं भते ! एव ?

गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव[7] जे ते एवमाहंसु, मिच्छा ते एवमाहसु । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[8] परूवेमि—

एवं खलु मए चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—१. सीलसंपन्ने नामं एगे नो सुयसपन्ने २ सुयसपन्ने नाम एगे नो सीलसंपन्ने ३. एगे सीलसंपन्ने वि सुयसपन्ने वि ४. एगे नो सीलसपन्ने नो सुयसपन्ने ।

तत्थ णं जे से पढमे पुरिसजाए से णं पुरिसे सीलवं असुयवं—उवरए, अविण्णायधम्मे । एस ण गोयमा ! मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते ।

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२. °गाण दोण्ह वि तुल्ला (अ, ता, स) ।
३. भ० १।५१ ।
४. भ० १।४-१० ।
५. भ० १।४२० ।
६. सुय सेयं सील सेयं (क, ता, ब, म, वृ) ।
७. भ० ८।४४९ ।
८. भ० १।४२१ ।

तत्थ णं जे से दोच्चे पुरिसजाए से णं पुरिसे असीलवं सुयवं—अणुवरए, विण्णायधम्मे। एस णं गोयमा ! मए पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते।

तत्थ णं जे से तच्चे पुरिसजाए से णं पुरिसे सीलवं सुयवं—उवरए, विण्णायधम्मे। एस णं गोयमा ! मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते।

तत्थ णं जे से चउत्थे पुरिसजाए से णं पुरिसे असीलवं असुयवं—अणुवरए, अविण्णायधम्मे। एस णं गोयमा ! मए पुरिसे सव्वविराहए पण्णत्ते।

आराहणा-पदं

४५१. कतिविहा णं भंते ! आराहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा आराहणा पण्णत्ता, तं जहा—नाणाराहणा, दंसणाराहणा, चरित्ताराहणा ॥

४५२. नाणाराहणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसिया, मज्झिमा, जहण्णा ॥

४५३. दंसणाराहणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
[1]•गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसिया, मज्झिमा, जहण्णा ॥

४५४. चरित्ताराहणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता !
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसिया, मज्झिमा, जहण्णा ॥°

४५५. जस्स णं भंते ! उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा ? जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया नाणाराहणा ?
गोयमा ! 'जस्स उक्कोसिया'[2] नाणाराहणा तस्स दंसणाराहणा उक्कोसा वा अजहण्णुक्कोसा वा। जस्स पुण उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा, जहण्णा वा, अजहण्णमणुक्कोसा वा ॥

४५६. जस्स णं भंते ! उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा ? जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स उक्कोसिया नाणाराहणा ?
[3]•गोयमा ! जस्स उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसा वा अजहण्णुक्कोसा वा। जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा, जहण्णा वा, अजहण्णमणुक्कोसा वा° ॥

४५७. जस्स णं भंते ! उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा ? जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा ?

---

१. सं० पा०—एव चेव तिविहा वि, एव चरित्ताराहणा वि।

२. जस्सुक्कोसिया (अ, ता, ब)।

३. सं० पा०—जहा उक्कोसिया नाणाराहणा य दंसणाराहणा य भणिया तहा उक्कोसिया नाणाराहणा य चरित्ताराहणा य भाणियव्वा।

गोयमा ! जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसा[1] वा, जहण्णा वा, अजहण्णमणुक्कोसा वा। जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स दंसणाराहणा नियमा उक्कोसा ॥

४५८. उक्कोसियण्णं[2] भंते ! नाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव[3] सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति[4], अत्थेगतिए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जति ॥

४५९. उक्कोसियण्णं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं °[5]सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, अत्थेगतिए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जति° ॥

४६० उक्कोसियण्णं भंते ! चरित्ताराहणं आराहेत्ता °[6]कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति,° अत्थेगतिए कप्पातीएसु उववज्जति ॥

४६१. मज्झिमियण्णं भंते ! नाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, तच्चं पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥

४६२. मज्झिमियण्णं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता °[7]कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, तच्चं पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥

४६३. मज्झिमियण्णं भंते ! चरित्ताराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, तच्चं पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ° ॥

---

१. उक्कोसिया (व, स)।
२. उक्कोसिया णं (अ, क, व, स); उक्कोसियं णं (ता)।
३. भ० १।४४।
४. करेति, अत्थेगतिए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव अंतं करेति (क, ब, म, स)।
५. सं० पा०—एवं चेव।
६. सं० पा०—एवं चेव नवरं अत्थेगतिए।
७. सं० पा०—एवं चेव एवं मज्झिमियं चरित्ता-राहणं पि।

४६४. जहण्णियण्णं भंते ! नाणाराहणं आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, सत्तट्ठ भवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ ॥

४६५. [1]॰जहण्णियण्णं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंत करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंत करेति, सत्तट्ठ भवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ ॥

४६६. जहण्णियण्णं भते ! चरित्ताराहण आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेणं भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, सत्तट्ठ भवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ॰ ॥

पोग्गलपरिणाम-पदं

४६७. कतिविहे णं भंते ! पोग्गलपरिणामे पण्णते ?
गोयमा ! पंचविहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा—वण्णपरिणामे, गंधपरिणामे, रसपरिणामे, फासपरिणामे, संठाणपरिणामे ॥

४६८. वण्णपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—कालवण्णपरिणामे जाव[2] सुक्किलवण्णपरिणामे। एवं एएणं अभिलावेणं गंधपरिणामे दुविहे, रसपरिणामे पंचविहे, फासपरिणामे अट्ठविहे ॥

४६९. संठाणपरिणामे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—परिमंडलसंठाणपरिणामे जाव[3] आयतसंठाणपरिणामे ॥

पोग्गलपएसस्स दव्वादीहिं भंग-पदं

४७०. एगे[4] भंते ! पोग्गलत्थिकायपदेसे कि १. दव्वं ? २. दव्वदेसे ? ३. दव्वाइं ? ४. दव्वदेसा ? ५. उदाहु दव्वं च दव्वदेसे य ? ६. उदाहु दव्वं च दव्वदेसा य ? ७. उदाहु दव्वाइं च दव्वदेसे य ? ८. उदाहु दव्वाइं च दव्वदेसा य ?

---

१. सं० पा०—एवं दंसणाराहणं पि, एवं चरित्ताराहणं पि।
२. भ० ८।३६।
३. भ० ८।३६।
४. एगे णं (अ)।

गोयमा ! १. सिय दव्वं २ सिय दव्वदेसे ३. नो दव्वाइं ४. नो दव्वदेसा ५. नो दव्व च दव्वदेसे य ६ नो दव्वं च दव्वदेसा य ७. नो दव्वाइं च दव्वदेसे य ८. नो दव्वाइ च दव्वदेसा य ॥

४७१. दो भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा कि दव्व ? दव्वदेसे ?—पुच्छा[1]।
गोयमा ! सिय दिव्वं, सिय दव्वदेसे, सिय दव्वाइं, सिय दव्वदेसा, सिय दव्वं च दव्वदेसे य[2]। सेसा पडिसेहेयव्वा ॥

४७२. तिण्णि भते पोग्गलत्थिकायपदेसा कि दव्वं ? दव्वदेसे ?—पुच्छा।
गोयमा ! सिय दव्व, सिय दव्वदेसे, एव सत्त भंगा भाणियव्वा जाव सिय दव्वाइं च दव्वदेसे य, नो दव्वाइ च दव्वदेसा य ॥

४७३. चत्तारि भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा कि दव्वं ?—पुच्छा।
गोयमा ! सिय दव्व, सिय दव्वदेसे, अट्ठ वि भगा भाणियव्वा जाव सिय दव्वाइं च दव्वदेसा य। जहा चत्तारि भणिया एव पच, छ, सत्त जाव असखेज्जा ॥

४७४. अणंता भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा कि दव्व ?
एवं चेव जाव सिय दव्वाइ च दव्वदेसा य ॥

पएस-परिमाण-पदं

४७५. केवतिया ण भते ! लोयागासपदेसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा लोयागासपदेसा पण्णत्ता ॥

४७६. एगमेगस्स ण भते ! जीवस्स केवइया जीवपदेसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जावतिया लोयागासपदेसा, एगमेगस्स ण जीवस्स एवतिया जीवपदेसा पण्णत्ता ॥

कम्माणं अविभागपलिच्छेद-पदं

४७७. कति णं भते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, त जहा—नाणावरणिज्जं जाव[3] अंतराइयं ॥

४७८ नेरइयाणं भते ! कति कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ। एवं सव्वजीवाणं अट्ठ कम्मपगडीओ ठावेयव्वाओ जाव वेमाणियाणं ॥

---

१. पुच्छा तहेव (अ, क, ता, ब, म, स)।
२. य नो दव्व च दव्वदेसा य (अ, क, ता, ब, म, स)।
३. भ० ६।३३।

४७९. नाणावरणिज्जस्स ण भंते ! कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ।।

४८०. नेरइयाणं भते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ।।

४८१. एव सव्वजीवाण जाव वेमाणियाण—पुच्छा ।
गोयमा ! अणता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता । एवं जहा नाणावरणिज्जस्स अविभागपलिच्छेदा भणिया तहा अट्ठण्ह वि कम्मपगडीण भाणियव्वा जाव वेमाणियाण अतराइयस्स[1] ।।

४८२. एगमेगस्स ण भते ! जीवस्स एगमेगे जीवपदेसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिएहि अविभागपलिच्छेदेहि आवेढिय-परिवेढिए ?
गोयमा ! सिय आवेढिय-परिवेढिए, सिय नो आवेढिय-परिवेढिए । जइ आवेढिय-परिवेढिए नियमा अणतेहि ।।

४८३. एगमेगस्स णं भते ! नेरइयस्स एगमेगे जीवपदेसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिएहि[2] अविभागपलिच्छेदेहि आवेढिय-परिवेढिए ?
गोयमा ! नियम अणंतेहि । जहा नेरइयस्स एव जाव वेमाणियस्स, नवरं—मणूसस्स जहा जीवस्स ।।

कम्माणं परोप्परं नियमा-भयणा-पदं

४८४. एगमेगस्स ण भते । जीवस्स एगमेगे जीवपदेसे दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिएहिं अविभागपलिच्छेदेहि आवेढिय-परिवेढिए ?-
गोयमा ! नियम अणतेहि । जहा जीवस्स एव जाव वेमाणियस्स, नवर—मणूसस्स जहा जीवस्स । एव जहेव नाणावरणिज्जस्स तहेव दडगो भाणियव्वो जाव वेमाणियस्स । एव जाव अतराइयस्स भाणियव्व, नवर—वेयणिज्जस्स, आउयस्स, नामस्स, गोयस्स—एएसि चउण्ह वि कम्माण मणूसस्स जहा नेरइयस्स तहा भाणियव्वं । सेसं तं चेव ।।

४८५. जस्स णं भते ! नाणावरणिज्ज तस्स दरिसणावरणिज्ज ? जस्स दसणावरणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं ?
गोयमा ! जस्स ण नाणावरणिज्ज तस्स दंसणावरणिज्ज नियम अत्थि, जस्स णं दरिसणावरणिज्ज तस्स वि नाणावरणिज्ज नियम अत्थि ।।

४८६. जस्स ण भंते ! नाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्ज ? जस्स वेयणिज्ज तस्स नाणावरणिज्जं ?

---

१. अतरातियस्स (अ, स); अतरादियस्स (ता)   २. केवईहि (ता) ।

गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं नियमं[1] अत्थि जस्स पुण वेयणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि ॥

४८७. जस्स णं भंते ! नाणावरणिज्जं तस्स मोहणिज्जं ? जस्स मोहणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं ?
गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्जं तस्स मोहणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण मोहणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं नियमं अत्थि ॥

४८८. जस्स णं भंते ! नाणावरणिज्जं तस्स आउयं ? [2]°जस्स आउयं तस्स नाणावरणिज्जं ?
गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्जं तस्स आउयं नियमं अत्थि, जस्स पुण आउयं तस्स नाणावरणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि ।° एवं नामेण वि, एवं गोएण वि समं, अंतराइएण जहा दरिसणावरणिज्जेण समं तहेव नियमं परोप्परं भाणियव्वाणि ॥

४८९. जस्स णं भंते ! दरिसणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं ? जस्स वेयणिज्जं तस्स दरिसणावरणिज्जं ?
जहा नाणावरणिज्जं उवरिमेहिं सत्तहिं कम्मेहिं समं भणियं तहा दरिसणावरणिज्जं पि उवरिमेहिं छहिं कम्मेहिं समं भाणियव्वं जाव अंतराइएणं ॥

४९०. जस्स णं भंते ! वेयणिज्जं तस्स मोहणिज्जं ? जस्स मोहणिज्जं तस्स वेयणिज्जं ?
गोयमा ! जस्स वेयणिज्जं तस्स मोहणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण मोहणिज्जं तस्स वेयणिज्जं नियमं अत्थि ॥

४९१. जस्स णं भंते ! वेयणिज्जं तस्स आउयं ? जस्स आउयं तस्स वेयणिज्जं ?
एवं एयाणि परोप्परं नियमं । जहा आउएण समं एवं नामेण वि गोएण वि समं भाणियव्वं ॥

४९२. जस्स णं भंते ! वेयणिज्जं तस्स अंतराइयं ? [3]°जस्स अंतराइयं तस्स वेयणिज्जं ?°
गोयमा ! जस्स वेयणिज्जं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराइयं तस्स वेयणिज्जं नियमं अत्थि ॥

४९३. जस्स णं भंते ! मोहणिज्जं तस्स आउयं ? जस्स आउयं तस्स मोहणिज्जं ?
गोयमा ! जस्स मोहणिज्जं तस्स आउयं नियमं अत्थि, जस्स पुण आउयं तस्स[4] मोहणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि । एवं नामं गोयं अंतराइयं च भाणियव्वं ॥

---

१. नितमं (ब) ।
२. सं० पा०—एवं जहा वेयणिज्जेण समं भणियं तहा आउएण वि समं भाणियव्वं ।
३. सं० पा०—पुच्छा ।
४. तस्स पुण (अ, क, ता, ब, म, स) ।

४६४. जस्स णं भंते ! आउयं तस्स नामं ? [1]जस्स नामं तस्स आउयं ?०
गोयमा ! दो वि परोप्परं नियम। एवं गोत्तेण वि समं भाणियव्वं ॥

४६५. जस्स णं भंते ! आउयं तस्स अंतराइयं ? [2]जस्स अंतराइयं तस्स आउयं ?०
गोयमा ! जस्स आउयं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराइयं तस्स आउयं नियम अत्थि ॥

४६६. जस्स णं भंते ! नामं तस्स गोयं [3]जस्स गोयं तस्स नामं ?०
गोयमा ! दो वि एए परोप्परं नियमा अत्थि ॥

४६७. जस्स णं भंते ! नामं तस्स अंतराइयं ? [4]जस्स अंतराइयं तस्स नामं ?०
गोयमा जस्स नामं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराइयं तस्स नामं नियम अत्थि ॥

४६८. जस्स णं भंते ! गोयं तस्स अंतराइयं ? [5]जस्स अंतराइयं तस्स गोयं ?०
गोयमा ! जस्स गोयं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराइयं तस्स गोयं नियम अत्थि ॥

पोग्गलि-पोग्गल-पदं

४६९. जीवे णं भंते ! किं पोग्गली ? पोग्गले ?
गोयमा ! जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि ॥

५००. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि ?
गोयमा ! से जहानामए छत्तेणं छत्ती, दंडेण दंडी, घडेणं घडी, पडेण पडी, करेणं करी, एवामेव गोयमा ! जीवे वि सोइंदिय-चक्खिदिय-घाणिदिय-जिब्भिदिय-फासिदियाइं पडुच्च पोग्गली, जीवं पडुच्च पोग्गले। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि ॥

५०१. नेरइए णं भंते ! किं पोग्गली ! पोग्गले ?
एवं चेव। एवं जाव वेमाणिए, नवरं—जस्स जइ इंदियाइं तस्स तइ भाणियव्वाइं ॥

५०२. सिद्धे णं भंते ! किं पोग्गली ? पोग्गले ?
गोयमा ! नो पोग्गली, पोग्गले ॥

---

१. सं० पा०—पुच्छा।
२. सं० पा०—पुच्छा।
३. सं० पा०—पुच्छा।
४. सं० पा०—पुच्छा।
५. सं० पा०—पुच्छा।

५०३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[1]—•सिद्धे नो पोग्गली•, पोग्गले ?

गोयमा ! जीवं पडुच्च । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिद्धे नो पोग्गली, पोग्गले ॥

५०४. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

---

१. स० पा०—वुच्चइ जाव पोग्गले ।

२. भ० १।५१ ।

नवमं सतं

पढमो उद्देसो

१ जंबुद्दीवे २. जोइस, ३०. अतरदीवा ३१. असोच्च ३२. गंगेय।
३३. कुडग्गामे ३४. पुरिसे, णवमम्मि सतम्मि चोत्तीसा ॥१॥

जंबुद्दीव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं मिहिला नामं नगरी होत्था—वण्णओ[1]। माणिभद्दे[2] चेतिए—वण्णओ[3]। सामी समोसढे, परिसा निग्गता जाव[4] भगवं गोयमे पज्जुवासमाणे एवं वदासी—कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे ! किसंठिए णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे ?
'एवं जबुद्दीवपण्णत्ती भाणियव्वा जाव[5] एवामेव सपुव्वावरेणं जबुद्दीवे दीवे चोद्दस सलिला-सयसहस्सा छप्पन्नं च सहस्सा भवंतीति मक्खाया'[6] ॥

२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[7] ॥

---

१. ओ० सू० १।
२. माणभद्दे (ता, म)।
३. ओ० सू०—२-१३।
४. भ० १।८-१०।
५. ज० १-६।
६. वाचनान्तरे पुनरिद दृश्यते—जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए तहा नेयव्व जोइसविहूणं जाव—
खडा जोयण वासा,
पव्वय कूडाण तित्थ सेढीओ।
विजय द्दह सलिलाओ,
य पिंडए होति सगहणी ॥ (वृ)।
७. भ० १।५१।

बीओ उद्देसो

जोइस-पदं

३. रायगिहे जाव[1] एव वयासी—जबुद्दीवे ण भते ! दीवे केवइया चदा पभासिसु वा ? पभासेति वा ? पभासिस्सति वा ?
एव जहा जीवाभिगमे जाव[2]—

एग च सयसहस्स, तेत्तीस खलु भवे सहस्साइं।
नव य सया पन्नासा, तारागणकोडिकोडीण[3] ॥१॥

सोभिसु[4], सोभिति, सोभिस्सति ॥

४. लवणे ण भते ! समुद्दे केवतिया चदा पभासिसु वा ? पभासेति वा ? पभासिस्सति वा ?
एव जहा जीवाभिगमे जाव[5] ताराओ। धायइसडे, कालोदे, पुक्खरवरे, अब्भतपुक्खरद्धे[6], मणुस्सखेत्ते—एएसु सव्वेसु जहा जीवाभिगमे जाव[7]—एगससीपरिवारो, तारागणकोडिकोडीण ॥

५. पुक्खरोदे ण भंते ! समुद्दे केवतिया चदा पभासिसु वा ? पभासेति वा ? पभासिस्सति वा ?
एव सव्वेसु दीव-समुद्देसु जोतिसियाण[8] भाणियव्व जाव[9] सयभूरमणे जाव सोभिसु वा, सोभिति वा, सोभिस्सति वा ॥

६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[10] ॥

---

१ भ०१।४-१०।
२. जी० ३।
३. °कोडाकोडीण (ता, व, म)।
४. सोभ सोभिसु (व, म)।
५. जी० ३।
६. अब्भितर° (स)।
७. जी० ३।
८. जोतिस (क, ता, ब, म)।
९. जी० ३।
१०. भ० १।५१।

३-३० उद्देसा

अंतरदीव-पदं

७. रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—कहि णं भंते। दाहिणिल्लाणं एगूरुयमणुस्साणं[2] एगूरुयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं 'चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्दं उत्तरपुरत्थिमे ण तिण्णि जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ ण दाहिणिल्लाणं एगूरुयमणुस्साण एगूरुयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते—तिण्णि जोयणसयाइं आयाम-विक्खभेण, नव एगूणवन्ने जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते। दोण्ह् वि पमाण वण्णओ य। एवं एएणं कमेणं'[3] 'एवं जहा जीवाभिगमे जाव[4] सुद्धदंतदीवे जाव देवलोगपरिग्गहा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो !'[5]
एवं अट्ठावीसंपि अंतरदीवा सएणं-सएणं आयाम-विक्खभेणं भाणियव्वा, नवरं —दीवे-दीवे उद्देसओ, एवं सव्वे वि अट्ठावीसं उद्देसगा ॥

८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

एगतीसइमो उद्देसो

असोच्चा उवलद्धि-पदं

१. रायगिहे जाव[7] एवं वयासी—असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा, केवलिसावगस्स वा, केवलिसावियाए वा, केवलिउवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पक्खियस्स वा, तप्पक्खियसावगस्स वा, तप्पक्खियसावियाए वा, तप्पक्खियउवासगस्स वा, तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज[8] सवणयाए ?

---

१. भ० १।४-१०।
२. एगरूय० (अ); एगुरुय० (ब, म); एगोरुय० (स)।
३. X (क ता)।
४. जी० ३।
५. वाचनान्तरे त्विदं दृश्यते एवं जहा जीवाभिगमे उत्तरकुरुवत्तव्वयाए नेयव्वो णाणत्तं अट्ठधणुसया उस्सेहो चाउसट्ठिपिट्ठकरंडया अणुसज्जणा नत्थि (वृ)।
६. भ० १।५१।
७. भ० १।४-१०।
८. लभेज्जा (अ, म, स)।

गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए ॥

१०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव नो लभेज्ज सवणयाए ?
गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्मं लभेज्ज सवणयाए, जस्स ण नाणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे 'नो कडे'[1] भवइ से णं असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म नो लभेज्ज सवणयाए। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ— 'असोच्चा ण'[2] जाव नो लभेज्ज सवणयाए ॥

११. असोच्चा ण भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बोहिं बुज्झेज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं बोहि बुज्झेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा ॥

१२. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं बोहि नो बुज्झेज्जा ?
गोयमा ! जस्स ण दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल बोहि बुज्झेज्जा, जस्स ण दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल बोहि नो बुज्झेज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा ॥

१३. असोच्चा ण भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवल मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, अत्थेगतिए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं नो पव्वएज्जा ॥

१४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय नो पव्वएज्जा ?
गोयमा ! जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवति से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वएज्जा, जस्स ण धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवति से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा

१. कडे नो (ता)। २. तं चेव (अ, क, ता, ब, म, स)।

केवलं मुंडे भवित्ता[1] °अगाराओ अणगारियं° नो पव्वएज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं नो पव्वएज्जा॥

१५. असोच्चा णं भंते! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बंभचेर-वासं आवसेज्जा[2]?

गोयमा! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं नो आवसेज्जा॥

१६. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं बंभचेरवासं नो आवसेज्जा?

गोयमा! जस्स णं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा, जस्स णं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बंभचेरवासं नो आवसेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं बंभचेरवासं नो आवसेज्जा॥

१७. असोच्चा णं भंते! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा?

गोयमा! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, अत्थेगतिए केवलेणं संजमेणं नो संजमेज्जा॥

१८. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलेणं संजमेणं नो संजमेज्जा?

गोयमा! जस्स णं जयणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, जस्स णं जयणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव[3] तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं संजमेणं नो संजमेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलेणं संजमेणं नो संजमेज्जा॥

१९. असोच्चा णं भंते! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा?

गोयमा! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलेणं संवरेणं[4] संवरेज्जा, अत्थेगतिए केवलेणं संवरेणं नो संवरेज्जा॥

---

१. सं० पा०—भवित्ता जाव नो।
२. आवासेज्जा (ता, ब)।
३. जाव अत्थेगतिए (अ, क, ता, ब, म, स)।
४. जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।

२०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलेणं संवरेणं नो संवरेज्जा ?
गोयमा ! जस्स णं अज्झवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, जस्स णं अज्झवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं संवरेणं नो संवरेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलेणं संवरेणं नो संवरेज्जा ॥

२१. असोच्चा णं भंते केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलं आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

२२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! जस्स णं आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, जस्स णं आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

२३. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं सुयनाणं उप्पाडेज्जा ?
[1]●गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं सुयनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलं सुयनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

२४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं सुयनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

---

१. स० पा०—एवं जहा आभिणिबोहियनाणस्स वत्तव्वया भणिया तहा सुयनाणस्स वि भाणियव्वा, नवरं—सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे। एवं चेव केवलं ओहिनाणं भाणियव्वं, नवरं—ओहिनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे। एवं केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा, नवरं—मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे।

गोयमा ! जस्स णं सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खम्रोवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल सुयनाण उप्पाडेज्जा, जस्स णं सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माण खम्रोवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल सुयनाण नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल सुयनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

२५. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासिए वा केवल ओहिनाणं उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं ओहिनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल ओहिनाण नो उप्पाडेज्जा ॥

२६. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवल ओहिनाण नो उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! जस्स णं ओहिनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खम्रोवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं ओहिनाणं उप्पाडेज्जा, जस्स णं ओहिनाणावरणिज्जाण कम्माण खम्रोवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल ओहिनाण नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल ओहिनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

२७. असोच्चा ण भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल मणपज्जवनाण नो उप्पाडेज्जा ॥

२८. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवल मणपज्जवनाणं नो उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! जस्स णं मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माण खम्रोवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा, जस्स ण मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माण खम्रोवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल मणपज्जवनाणं नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवल मणपज्जवनाण नो उप्पाडेज्जा° ॥

२९. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाण उप्पाडेज्जा ?

[1]•गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाण नो उप्पाडेज्जा ।।

३०. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवलनाण नो उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! जस्स ण केवलनाणावरणिज्जाण कम्माणं खए कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाण उप्पाडेज्जा, जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाण कम्माण खए नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाण नो उप्पाडेज्जा° । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवलनाण नो उप्पाडेज्जा ।।

३१. असोच्चा[2] णं भते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा—१. केवलिपण्णत्त धम्मं लभेज्ज सवणयाए २. केवलं बोहि बुज्झेज्जा ३. केवलं मुडे भवित्ता आगाराओ अणगारिय पव्वएज्जा ४ केवल बंभचेरवास आवसेज्जा ५ केवलेण संजमेण सजमेज्जा ६. केवलेण सवरेण सवरेज्जा ७. केवल आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा[3] ८ •केवल सुयनाणं उप्पाडेज्जा ६. केवलं ओहिनाणं उप्पाडेज्जा° १० केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा ११. केवलनाणं उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासिए वा—१. अत्थेगतिए केवलिपण्णत्त धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए २ अत्थेगतिए केवल बोहि बुज्झेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बोहि नो बुज्झेज्जा ३ अत्थेगतिए केवलं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, अत्थेगतिए[4] •केवल मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° नो पव्वएज्जा ४. अत्थेगतिए केवल बभचेरवास आवसेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवास नो आवसेज्जा ५. अत्थेगतिए केवलेण सजमेण सजमेज्जा, अत्थेगतिए केवलेण सजमेण नो सजमेज्जा ६. [5]•अत्थेगतिए केवलेण सवरेण सवरेज्जा, अत्थेगतिए केवलेण सवरेण नो सवरेज्जा° ७ अत्थेगतिए केवलं आभिणिबोहियनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए[6] •केवल आभिणीबोहियनाण° नो उप्पा-

---

१. सं० पा०—एव चेव, नवर—केवलनाणावरणिज्जाएं कम्माण खए भाणियव्वे, सेस त चेव ।

२. एकत्रिंशद्-द्वात्रिंशत् सूत्रयो पूर्वपादित एव विषय. पुनरुक्तोस्ति । वृत्तिकृतात्र एका टिप्पणीकृतास्ति पूर्वोक्तानेवार्थान् पुनः समुदायेनाह (वृ), किन्तु समग्रविषयस्य पौनरुक्त्यदर्शनेन द्वयोर्वाचनयोः सम्मिश्रणं प्रतीयते ।

३. स० पा०—उप्पाडेज्जा जाव केवलं ।

४. स० पा०—अत्थेगतिए जाव नो ।

५. स० पा०—एव सवरेण वि ।

६. स० पा०—अत्थेगतिए जाव नो ।

३६. से णं भंते ! कयरम्मि संठाणे होज्जा ?
गोयमा ! छण्हं संठाणाणं अण्णयरे सठाणे होज्जा ॥

४०. से णं भंते ! कयरम्मि उच्चत्ते होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण सत्तरयणीए, उक्कोसेणं पचधणुसतिए होज्जा ॥

४१. से णं भंते ! कयरम्मि आउए होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण सातिरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेण पुव्वकोडिआउए होज्जा ॥

४२. से णं भंते ! कि सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा।
जइ सवेदए होज्जा कि इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिस-नपुसगवेदए होज्जा ? 'नपुसगवेदए होज्जा ?'[1]
गोयमा ! नो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, 'नो नपुंसगवेदए होज्जा'[2], पुरिस-नपुसगवेदए वा होज्जा ॥

४३. से णं भते ! कि सकसाई[3] होज्जा ? अकसाई होज्जा ?
गोयमा ! सकसाई होज्जा, नो अकसाई होज्जा।
जइ सकसाई होज्जा से ण भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु— संजलणकोह-माण-माया लोभेसु होज्जा ॥

४४. तस्स ण भते ! केवइया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ॥

४५. ते णं भंते ! कि पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! पसत्था, नो अप्पसत्था ॥

४६. से णं भते ! तेहि पसत्थेहि अज्झवसाणेहिं वड्ढमाणेहि अणंतेहि नेरइयभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि तिरिक्खजोणियभवग्गहणेहिंतो अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि मणुस्सभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि देवभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ। जाओ वि य से इमाओ नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवगतिनामाओ चत्तारि उत्तरपगडीओ, तासि च णं ओवग्गहिए[4] अणंताणुबधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पच्चक्खाणावरणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता सजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पचविह नाणावरणिज्ज, नवविह दरिसणावरणिज्ज, पचविह अतराइयं, ताल-

---

१. × (क, ब, म)।
२. × (क, ब, म)।
३. सकसादी (ब, ता)।
४. उवग्गहिए (क, म, स)।

मत्थाकडं[1] च णं मोहणिज्जं कट्टु कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स[2] अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदसणे समुपज्जति ।।

४७ से णं भंते ! केवलिपण्णत्तं धम्मं आघवेज्ज वा ? पण्णवेज्ज वा ? परूवेज्ज वा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे, नण्णत्थ[3] एगनाएण वा, एगवागरणेण वा ।।

४८. से णं भंते ! पव्वावेज्ज वा ? मुंडावेज्ज वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, उवदेसं पुण करेज्जा ।।

४९. से णं भंते ! सिज्झति जाव[4] सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
हंता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।।

५०. से णं भंते ! किं उड्ढं होज्जा ? अहे होज्जा ? तिरियं होज्जा ?
गोयमा ! उड्ढं वा होज्जा, अहे वा होज्जा, तिरियं वा होज्जा । उड्ढं होमाणे[5] सद्दावइ-वियडावइ-गंधावइ-मालवंतपरियाएसु वट्टवेयड्ढपव्वएसु होज्जा, साहरणं पडुच्च सोमणसवणे वा पंडगवणे वा होज्जा । अहे होमाणे गड्डाए वा दरीए वा होज्जा, साहरणं पडुच्च पायाले वा भवणे वा होज्जा । तिरियं होमाणे पण्णरससु कम्मभूमीसु होज्जा, साहरणं पडुच्च 'अड्ढाइज्जदीव-समुद्द'[6]-तदेक्कदेसभाए होज्जा ।।

५१. ते णं भंते ! एगसमए णं केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं दस । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए जाव अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ।।

---

१. °मत्थ° (अ, क); मत्था—अत्र एकपदे सन्धिर्जातः । वृत्तौ अस्य व्याख्या एवमस्ति —मस्तक—मस्तकशूची कृत्त—छिन्न यस्यासौ मस्तककृत्तः, तालश्चासौ मस्तककृत्तश्च तालमस्तककृत्तः, छान्दसत्वाच्चैवं निर्देशः, तालमस्तककृत्त इव यत्तत्तालमस्तककृत्तम् (वृ) ।

२. पविट्ठस्स (अ, क, ता, म) ।

३. अण्णत्थ (ता) ।

४. भ० १।४४ ।

५. होज्जमाणे (व, स) ।

६. अड्ढाइज्जे दीवसमुद्दे (अ, स) ।

सोच्चा उवलद्धि-पदं

५२. सोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा,[1] °केवलिसावगस्स वा, केवलिसावियाए वा, केवलिउवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पक्खियस्स वा, तप्पक्खियसावगस्सवा, तप्पक्खियसावियाए वा, तप्पक्खियउवासगस्स वा, तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए ?
गोयमा ! सोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए ।।

५३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सोच्चा णं जाव नो लभेज्ज सवणयाए ?
गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं सोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं सोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सोच्चा णं जाव नो लभेज्ज सवणयाए° ।।

५४. एवं 'जा चेव'[2] असोच्चाए वत्तव्वया 'सा चेव'[3] सोच्चाए वि भाणियव्वा, नवरं —अभिलावो सोच्चे त्ति, सेसं तं चेव निरवसेसं जाव जस्स णं मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए कडे भवइ से णं सोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, केवलं बोहिं बुज्झेज्जा जाव[4] केवलनाणं उप्पाडेज्जा ।।

५५. तस्स णं अट्ठमंअट्ठमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स पगइभद्दयाए, [5]°पगइउवसंतयाए, पगइपयणुकोह-माण-माया-लोभयाए, मिउमद्दवसपन्नयाए, अल्लीणयाए, विणीययाए, अण्णया कयावि सुभेणं अज्झवसाणेणं, सुभेणं परिणामेणं, लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं-विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापोहमग्गण°गवेसणं करेमाणस्स ओहिनाणे समुप्पज्जइ । से णं तेणं ओहिनाणेणं समुप्पन्नेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं जाणइ-पासइ ।।

---

१. सं० पा०—वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए ? गोयमा ! सोच्चा णं केवलिस्स वा जाव अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं ।

२. जच्चेव (क, ता, म); जहेव (स) ।

३. सच्चेव (क, ता, ब, म) ।

४. भ० ९।११-३२ ।

५. सं० पा०—तहेव जाव गवेसणं ।

५६. से ण भते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! छसु लेस्सासु होज्जा, तं जहा—कण्हलेस्साए जाव[1] सुक्कलेस्साए ॥

५७. से ण भते ! कतिसु नाणेसु होज्जा ?
गोयमा ! तिसु वा, चउसु वा होज्जा। तिसु होमाणे[2] आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा, चउसु होमाणे आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाण-मणपज्जवनाणेसु होज्जा ॥

५८. से ण भते ! कि सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ?
[3]•गोयमा ! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा।
जइ सजोगी होज्जा, कि मणजोगी होज्जा ? वइजोगी होज्जा ? कायजोगी होज्जा ?
गोयमा ! मणजोगी वा होज्जा, वइजोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा ॥

५९. से ण भते ! कि सागारोवउत्ते होज्जा ? अणागारोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारोवउत्ते वा होज्जा ॥

६०. से ण भंते ! कयरम्मि सघयणे होज्जा ?
गोयमा ! वइरोसभनारायसघयणे होज्जा ॥

६१. से ण भते ! कयरम्मि सठाणे होज्जा ?
गोयमा ! छण्ह सठाणाण अण्णयरे सठाणे होज्जा ॥

६२. से ण भते ! कयरम्मि उच्चत्ते होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीए, उक्कोसेण पचधणुसतिए होज्जा ॥

६३. से ण भते ! कयरम्मि आउए होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण सातिरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउए होज्जा° ॥

६४. से णं भंते ! कि सवेदए [4]•होज्जा ? अवेदए होज्जा ?°
गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा।
जइ अवेदए होज्जा कि उवसतवेदए होज्जा ? खीणवेदए होज्जा ?
गोयमा ! नो उवसतवेदए होज्जा, खीणवेदए होज्जा।
जइ सवेदए होज्जा कि इत्थीवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? 'पुरिस-नपुसगवेदए'[5] होज्जा ?
गोयमा ! इत्थीवेदए वा होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, पुरिस-नपुसगवेदए वा होज्जा ॥

---

१. भ० १।१०२।
२. होज्जमाणे (अ, क,)।
३. स० पा०—एवं जोगो, उवओगो, सघयण, सठाण, उच्चत्त, आउयं च—एयाणि सव्वाणि जहा असोच्चाए तहेव भाणियव्वाणि।
४. सं० पा०—पुच्छा।
५. नपुंसगवेदए (अ, म)।

६५. से णं भंते ! कि सकसाई होज्जा ? अकसाई होज्जा ?
गोयमा ! सकसाई वा होज्जा, अकसाई वा होज्जा।
जइ अकसाई होज्जा कि उवसंतकसाई होज्जा ? खीणकसाई होज्जा ?
गोयमा ! नो उवसंतकसाई होज्जा, खीणकसाई होज्जा।
जइ सकसाई होज्जा से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु वा तिसु वा दोसु वा एक्कम्मि वा होज्जा। चउसु होमाणे चउसु—संजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु—संजलण-माण-माया-लोभेसु होज्जा, दोसु होमाणे दोसु—संजलणमाया-लोभेसु होज्जा, एगम्मि होमाणे एगम्मि—संजलणलोभे होज्जा ॥

६६. तस्स णं भंते ! केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा [1]°अज्झवसाणा पण्णत्ता ॥

६७. ते णं भंते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! पसत्था, नो अप्पसत्था ॥

६८. से णं भंते ! तेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वड्ढमाणेहिं अणंतेहिं नेरइय-भवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं तिरिक्खजोणियभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं मणुस्सभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं देवभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ। जाओ वि य से इमाओ नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवगतिनामाओ चत्तारि उत्तरपगडीओ, तासिं च णं ओवग्गहिए अणंताणुबंधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पच्चक्खाणावरणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता संजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पंचविहं नाणावरणिज्जं, नवविहं दरिसणावरणिज्जं, पंचविहं अंतराइयं तालमत्थाकडं च णं मोहणिज्जं कट्टु कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे° केवलवरनाण-दंसणे समुप्पज्जइ ॥

६९. से णं भंते ! केवलिपण्णत्तं धम्मं आघवेज्ज वा ? पण्णवेज्ज वा ? परूवेज्ज वा ?
हंता आघवेज्ज वा, पण्णवेज्ज वा, परूवेज्ज वा ॥

७०. से णं भंते ! पव्वावेज्ज वा ? मुंडावेज्ज वा ?
हंता पव्वावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा[2] ॥

---

१. सं० पा०—एवं जहा असोच्चाए तहेव जाव केवल°।

२. वा तस्स णं भंते ! सिस्सा वि पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा हंता पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा (क, ता, ब)।

७१. से णं भंते ! सिज्झति बुज्झति जाव[1] सव्वदुक्खाणं अंतं करेइ ?
हंता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

७२. तस्स णं भंते ! सिस्सा वि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?
हंता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ॥

७३. तस्स णं भंते ! पसिस्सा वि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?
'हंता सिज्झति'[2] जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ॥

७४. से णं भंते ! किं उड्ढं होज्जा ? जहेव असोच्चाए जाव[3] अड्ढाइज्जदीवसमुद्द-तदेक्कदेसभाए होज्जा ॥

७५. ते णं भंते ! एगसमए णं केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं अट्ठसयं। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सोच्चा णं केवलिस्स वा जाव[4] तप्पक्खियउवासियाए[5] वा अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

७६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

बत्तीसइमो उद्देसो

पासावच्चिज्जगंगेय-पसिण-पदं

७७. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियग्गामे नामं नयरे होत्था—वण्णओ[7]। दूतिपलासए चेइए[8]। सामी समोसढे। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया ॥

७८. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे गंगेए नामं अणगारे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वदासी—

---

१. भ० १।४४।
२. एवं चेव (अ, क, ता, ब, म, स)।
३. भ० ९।५०।
४. भ० ९।५१।
५. केवलिउवासियाए (अ, क, ता, स)।
६. भ० १।५१।
७. ओ० सू० १।
८. चेइए वण्णओ (ता)।

संतर-निरंतर-उववज्जणादि-पदं

७६. संतरं[1] भंते ! नेरइया उववज्जंति ? निरंतरं नेरइया उववज्जंति ?
गंगेया ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति, निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति ॥

८०. संतरं भंते ! असुरकुमारा उववज्जंति ? निरंतरं असुरकुमारा उववज्जंति ?
गंगेया ! संतरं पि असुरकुमारा उववज्जंति, निरंतरं पि असुरकुमारा उववज्जंति । एवं जाव थणियकुमारा ॥

८१. संतरं भंते ! पुढविक्काइया उववज्जंति ? निरंतरं पुढविक्काइया उववज्जंति ?
गंगेया ! नो संतरं पुढविक्काइया उववज्जंति, निरंतरं पुढविक्काइया उववज्जंति । एवं जाव वणस्सइकाइया । बेइंदिया जाव वेमाणिया एते जहा नेरइया ॥

८२. संतरं भंते ! नेरइया उव्वट्टंति ? निरंतरं नेरइया उव्वट्टंति ?
गंगेया ! संतरं पि नेरइया उव्वट्टंति, निरंतरं पि नेरइया उव्वट्टंति । एवं जाव थणियकुमारा ॥

८३. संतरं भंते ! पुढविक्काइया उव्वट्टंति ?—पुच्छा ।
गंगेया ! नो संतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति, निरंतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति । एवं जाव वणस्सइकाइया—नो संतरं, निरंतरं उव्वट्टंति ॥

८४. संतरं भंते ! बेइंदिया उव्वट्टंति ? निरंतरं बेइंदिया उव्वट्टंति ?
गंगेया ! संतरं पि बेइंदिया उव्वट्टंति, निरंतरं पि बेइंदिया उव्वट्टंति । एवं जाव वाणमंतरा ॥

८५. संतरं भंते ! जोइसिया चयंति ?—पुच्छा ।
गंगेया ! संतरं पि जोइसिया चयंति, निरंतरं पि जोइसिया चयंति । एवं वेमाणिया वि ॥

पवेसण-पदं

८६. कतिविहे णं भंते ! पवेसणए पण्णत्ते ?
गंगेया ! चउव्विहे पवेसणए पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयपवेसणए, तिरिक्खजोणियपवेसणए, मणुस्सपवेसणए, देवपवेसणए ॥

८७. नेरइयपवेसणए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गंगेया ! सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए[2] जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए ॥

---

१. सांतरं (क, ता, म) । २. रयणप्पभ° (क, ता) ।

८८. एगे भंते ! नेरइए नेरइयपवेसणएणं पविसमाणे किं रयणप्पभाए होज्जा, सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ॥

८९. दो भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव एगे रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। एवं एक्केका पुढवी छड्डेयव्वा जाव अहवा एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1] ॥

९०. तिण्णि भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, एवं जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया, तहा सव्वपुढवीणं भाणियव्वं जाव अहवा दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2] ॥
अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए

१. द्विसयोगजा भङ्गा. २१।
२. द्विसयोगजा भङ्गा ४२।

होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1] ॥

९१. चत्तारि भंते! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा?—पुच्छा।

गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एव जहेव रयणप्पभाए उवरिमाहिं समं चारियं तहा सक्करप्पभाए वि उवरिमाहिं सम चारेयव्वं, एवं एक्केक्काए समं चारेयव्वं जाव अहवा तिण्णि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा, एव जाव एगे रय-

---

१. त्रिसंयोगजा भङ्गाः ३५।

२. द्विसंयोगजा भङ्गा ६३।

णप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो पकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। एवं एएण गमएण जहा तिण्ह तियासंजोगो[1] तहा भाणियव्वो जाव अहवा दो धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, 'अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा'[3], अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए

---

१. तिय० (अ, म, स)।

२ त्रिसयोगजा भङ्गा १०५।

३. एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा। एवं जहा रयणप्पभाए उवरिमाओ पुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि उवरिमाओ चारियव्वाओ जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1] ॥

९२. पंच भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए दोण्णि सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा। एवं जहा रयणप्पभाए समं उवरिमपुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि समं चारेयव्वाओ जाव अहवा चत्तारि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। एवं एक्केक्काए समं चारेयव्वाओ जाव अहवा चत्तारि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव

---

१. चतुःसंयोगजा भङ्गा: ३५।   २. द्विसयोगजा भङ्गा: ८४।

अहेसत्तमाए । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए तिण्णि पंकप्पभाए होज्जा। एवं एएण कमेण जहा चउण्ह तियासजोगो[1] भणितो तहा पचण्ह वि तियासजोगो भाणियव्वो, नवर—तत्थ एगो संचारिज्जइ, इह[2] दोण्णि, सेसं त चेव जाव अहवा तिण्णि धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्त-माए होज्जा[3]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहेसत्तमाए। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए दो धूमप्पभाए होज्जा, एवं जहा चउण्ह चउक्कसजोगो भणिओ तहा पंचण्ह वि चउक्कसजोगो भाणियव्वो नवर—अब्भहियं एगो संचारेयव्वो, एवं जाव अहवा दो पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[4]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे

---

१. तिय० (क)।
२. इमाहिं (अ, क, व, म, स); इमेहिं (ता)।
३. त्रिसयोगजा भङ्गा: २१०।
४. चतु सयोगजा भङ्गा १४०।

अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1] ॥

९३. छब्भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा ।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए पंच सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए पंच वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए पच अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए । एवं एएणं कमेणं जहा पचण्ह दुयासंजोगो तहा छण्ह वि भाणियव्वो, नवरं—एक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो जाव अहवा पंच तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2] ।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि पंकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा । एव एएणं कमेणं जहा पंचण्हं तियासंजोगो भणिओ तहा छण्ह वि भाणियव्वो,

---

१. पञ्चसंयोगजा भङ्गाः २१ । २. द्विसयोगजा भङ्गाः १०५ ।

नवर—एक्को अहिओ उच्चारेयव्वो, सेस तं चेव[1]। चउक्कसंजोगो वि तहेव[2], पंचगसंजोगो वि तहेव, नवरं—एक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो जाव पच्छिमो भंगो, अहवा दो वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[3]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए 'एगे सक्करप्पभाए'[4] एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[5]॥

९४. सत्त भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए छ सक्करप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं जहा छण्ह दुयासंजोगो तहा सत्तण्ह वि भाणियव्वं, नवरं—एगो अब्भहिओ संचारिज्जइ, सेसं तं चेव[6]। तियासंजोगो[7], चउक्कसंजोगो[8], पंचसंजोगो[9],छक्कसंजोगो[10] य छण्हं जहा तहा सत्तण्ह वि भाणियव्वं, नवरं—एक्केक्को अब्भहिओ[11] संचारेयव्वो जाव छक्कगसंजोगो अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[12]। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा॥

९५. अट्ठ भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए सत्त सक्करप्पभाए होज्जा। एवं दुयासंजोगो[13] जाव

---

१. त्रिसंयोगजा भङ्गा: ३५०।
२. चतुःसंयोगजा भङ्गा: ३५०।
३. पञ्चसंयोगजा भङ्गा: १०५।
४. जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।
५. षट्संयोगजा भङ्गा: ७।
६. द्विसंयोगजा भङ्गा: १२६।
७. त्रिसंयोगजा भङ्गा: ५२५।
८. चतुःसंयोगजा भङ्गा: ७००।
९. पंचा° (क); पञ्चसंयोगजा भङ्गा: ३१५।
१०. छक्का° (क, ब)।
११. अहिओ (अ); अहितो (क); अधितो (ता)।
१२. षट्संयोगजा भङ्गा: ४२।
१३. द्विसंयोगजा भङ्गा: १४७, त्रिसंयोगजा भङ्गा: ७३५, चतुःसंयोगजा भङ्गा: १२२५, पञ्चसंयोगजा भङ्गा: ७३५।

छक्कसंजोगो य जहा सत्तण्ह भणिओ तहा अट्ठण्ह वि भाणियव्वो, नवर—एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो, सेसं तं चेव जाव छक्कगसजोगस्स अहवा तिण्णि सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1]।

अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे तमाए दो अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। एव सचारेयव्व जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2]॥

९६. नव भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए अट्ठ सक्करप्पभाए होज्जा। एव दुयासजोगो[3] जाव सत्तगसजोगो[4] य जहा अट्ठण्हं भणिय तहा नवण्ह पि भाणियव्व, नवर—एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो, सेस त चेव पच्छिमो आलावगो—अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[5]॥

९७. दस भते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा।

गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए नव सक्करप्पभाए होज्जा। एवं दुयासजोगो[6] जाव सत्तसजोगो य जहा नवण्ह, नवरं—एक्केक्को अब्भहिओ सचारेयव्वो, सेस त चेव पच्छिमो[7] आलावगो—अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[8]॥

९८. संखेज्जा भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा।

गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे

---

१. षट्सयोगजा भङ्गा. १४७।
२. सप्तसयोगजा भङ्गा. ७।
३. द्विसयोगजा भङ्गाः १६८, त्रिसयोगजा भङ्गा· ९८०, चतु·सयोगजा भङ्गाः १९६०, पञ्चसयोगजा भङ्गाः १४७०, षट्सयोगजा भङ्गाः ३९२।
४. वडॆंसगसजोगो (अ)।
५. सप्तसयोगजा भङ्गा २८।
६. द्विसंयोगजा भङ्गा. १८९, त्रिसयोगजा भङ्गा. १२६०, चतुसयोगजा भङ्गा· २९४०, पञ्चसयोगजा भङ्गा. २६४६, षट्-सयोगजा भङ्गा. ८८२।
७. अपच्छिमो (अ, क, ता, म, स)।
८. सप्तसयोगजा भङ्गा. ८४।

रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा। एवं एएण कमेण एक्केक्को सचारेयव्वो जाव अहवा दस रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा। एव जाव अहवा दस रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव जहा रयणप्पभा उवरिमपुढवीहि सम चारिया एव सक्करप्पभा वि उवरिमपुढवीहि समं चारेयव्वा, एव एक्केक्का पुढवी उवरिमपुढवीहि सम चारेयव्वा जाव अहवा सखेज्जा तमाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा पकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव एएण कमेण एक्केक्को सचारेयव्वो सक्करप्पभाए जाव अहवा एगे रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव एएण कमेण एक्केक्को रयणप्पभाए सचारेयव्वो जाव अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए सखेज्जा पकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो वालुयप्पभाए संखेज्जा पंकप्पभाए होज्जा, एव एएण कमेण तियासजोगो, चउक्कसजोगो जाव सत्तगसजोगो य जहा दसण्ह तहेव भाणियव्वो। पच्छिमो आलावगो सत्तसंजोगस्स—अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए जाव संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा॥

९९ असखेज्जा भते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा?—पुच्छा।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।
अहवा एगे रयणप्पभाए असंखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एवं दुयासजोगो जाव सत्तगसंजोगो[1] य जहा संखेज्जाणं भणिओ तहा असंखेज्जाण वि भाणियव्वो, नवरं—असंखेज्जओ अब्भहिओ भाणियव्वो, सेसं तं चेव जाव सत्तगसंजोगस्स पच्छिमो आलावगो अहवा असंखेज्जा रयणप्पभाए असंखेज्जा सक्करप्पभाए जाव असंखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

१००. उक्कोसेणं भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा।
गंगेया ! सव्वे वि ताव रयणप्पभाए होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा, एवं जाव अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए पंकप्पभाए धूमाए होज्जा, एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा तिण्हं तियासंजोगो भणिओ तहा भाणियव्व जाव अहवा रयणप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा। अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा चउण्हं चउक्कगसंजोगो भणितो तहा भाणियव्व जाव अहवा रयणप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होज्जा। अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव पंकप्पभाए तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव पंकप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए य होज्जा, एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा पंचण्हं पंचगसंजोगो तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयणप्पभाए पंकप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव धूमप्पभाए तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव धूमप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव पंकप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पंकप्पभाए जाव

---

१. सत्ता°, (अ ता, ब)।

अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य जाव अहेसत्तमाए य होज्जा ॥

१०१. एयस्स ण भते ! रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणगस्स सक्करप्पभापुढविनेरइयपवेसणगस्स जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणगस्स कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?• विसेसाहिया वा ?
गगेया ! सव्वत्थोवे अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए, तमापुढविनेरइयपवेसणए असखेज्जगुणे, एव पडिलोमग[2] जाव रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए असखेज्जगुणे ॥

१०२. तिरिक्खजोणियपवेसणए णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गगेया ! पचविहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिदियतिरिक्खजोणियपवेसणए जाव पचिदियतिरिक्खजोणियपवेसणए ॥

१०३. एगे भते ! तिरिक्खजोणिए तिरिक्खजोणियपवेसणएणं पविसमाणे कि एगिंदिएसु होज्जा जाव पचिदिएसु होज्जा ?
गगेया ! एगिदिएसु वा होज्जा जाव पचिदिएसु वा होज्जा ॥

१०४. दो भते ! तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियपवेसणएणं—पुच्छा।
गगेया ! एगिदिएसु वा होज्जा जाव पचिदिएसु वा होज्जा। अहवा एगे एगिंदिएसु होज्जा एगे वेइदिएसु होज्जा, एव जहा नेरइयपवेसणए तहा तिरिक्खजोणियपवेसणए वि भाणियव्वे जाव असखेज्जा ॥

१०५. उक्कोसा भते ! तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियपवेसणएण—पुच्छा।
गगेया ! सव्वे वि ताव एगिदिएसु होज्जा, अहवा एगिदिएसु वा[3] बेइदिएसु वा होज्जा। एव जहा नेरइया चारिया तहा तिरिक्खजोणिया वि चारेयव्वा। एगिदिया अमुयतेसु दुयासजोगो, तियासजोगो, चउक्कसजोगो[4], पचसजोगो[5] उवजुंजिऊण[6] भाणियव्वो जाव अहवा एगिदिएसु वा, बेइदिएसु वा जाव पचिंदिएसु वा होज्जा ॥

१०६. एयस्स ण भते ! एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स जाव पचिदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो[7] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?• विसेसाहिया वा ?
गगेया ! सव्वथोवे पचिदियतिरिक्खजोणियपवेसणए, चउरिंदियतिरिक्ख-

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
२. उप्पडि० (क, ता, व)।
३. य, (अ, ता); या (क)।
४. चउक्का० (अ, क, व)।
५. पचा० (क, व)।
६. उववज्जिऊण (अ); उवउज्जित्तण (क), उवउज्जिऊण (ता, स)।
७. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

जोणियपवेसणए विसेसाहिए, तेइंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, वेइंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए ।।

१०७. मणुस्सपवेसणए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गंगेया ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—समुच्छिममणुस्सपवेसणए, गब्भवक्कंतिय-मणुस्सपवेसणए य ।।

१०८ एगे भंते ! मणुस्से मणुस्सपवेसणएणं पविसमाणे किं समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा? गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा ?
गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा ।।

१०९. दो भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा। अहवा एगे संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा एगे गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, एव एएणं कमेणं जहा नेरइयपवेसणए तहा मणुस्सपवेसणए वि भाणियव्वे जाव दस ।।

११०. संखेज्जा भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा। अहवा एगे समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, अहवा दो संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, एवं एक्केक्कं उस्सारितेसु जाव अहवा संखेज्जा संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा ।।

१११. असंखेज्जा भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गंगेया ! सव्वे वि ताव संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा । अहवा असंखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु एगे गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, अहवा असंखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु दो गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, एव जाव असंखेज्जा संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा ।।

११२. उक्कोसा भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गंगेया ! सव्वे वि ताव समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा । अहवा समुच्छिममणुस्सेसु य गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु य होज्जा ।।

११३. एयस्स णं भंते ! संमुच्छिममणुस्सपवेसणगस्स गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?

---

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गंगेया ! सव्वत्थोवे गब्भवक्कतियमणुस्सपवेसणए संमुच्छिममणुस्सपवेसणए असंखेज्जगुणे ॥

११४. देवपवेसणए ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गगेया ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—भवणवासिदेवपवेसणए जाव वेमाणिय-देवपवेसणए ॥

११५. एगे भते ! देवे देवपवेसणएणं पविसमाणे कि भवणवासीसु होज्जा ? वाणमंतर जोइसिय-वेमाणिएसु होज्जा ?
गगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिएसु वा होज्जा ॥

११६. दो भते ! देवा देवपवेसणएणं—पुच्छा ।
गगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिएसु वा होज्जा । अहवा एगे भवणवासीसु एगे वाणमतरेसु होज्जा, एवं जहा तिरिक्खजोणिय-पवेसणए तहा देवपवेसणए वि भाणियव्वे जाव असखेज्ज त्ति ॥

११७ उक्कोसा भते ! —पुच्छा ।
गगेया ! सव्वे वि ताव जोइसिएसु होज्जा, अहवा जोइसिय-भवणवासीसु य होज्जा, अहवा जोइसिय-वाणमंतरेसु य होज्जा, अहवा जोइसिय-वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वाणमंतरेसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु ए वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य वाणमतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वाणमतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा ॥

११८. एयस्स ण भते ! भवणवासिदेवपवेसणगस्स, वाणमंतरदेवपवेसणगस्स, जोइसियदेवपवेसणगस्स, वेमाणियदेवपवेसणगस्स य कयरे कयरेहितो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गगेया ! सव्वत्थोवे वेमाणियदेवपवेसणए, भवणवासिदेवपवेसणए असखेज्ज-गुणे, वाणमतरदेवपवेसणए असखेज्जगुणे, जोइसियदेवपवेसणए संखेज्जगुणे ॥

११९. एयस्स ण भते ! नेरइयपवेसणगस्स तिरिक्खजोणियपवेसणगस्स मणुस्सपवेसण-गस्स देवपवेसणगस्स य कयरे कयरेहितो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गगेया ! सव्वत्थोवे मणुस्सपवेसणए, नेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे, देवपवेसणए असखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणियपवेसणए असखेज्जगुणे ॥

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया । २. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

संतर-निरंतर-उववज्जणादि-पदं

१२०. संतरं[1] भंते ! नेरइया उववज्जंति निरंतरं नेरइया उववज्जंति संतरं असुरकुमारा उववज्जंति निरंतरं असुरकुमारा उववज्जंति जाव संतरं वेमाणिया उववज्जंति निरंतरं वेमाणिया उववज्जंति ?

संतरं नेरइया उव्वट्टंति निरंतरं नेरइया उव्वट्टंति जाव संतरं वाणमंतरा उव्वट्टंति निरंतरं वाणमंतरा उव्वट्टंति ? संतरं जोइसिया चयंति निरंतरं जोइसिया चयंति संतरं वेमाणिया चयंति निरंतरं वेमाणिया चयंति ?

गंगेया ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति जाव संतरं पि थणियकुमारा उववज्जंति निरंतरं पि थणियकुमारा उववज्जंति, नो संतरं पुढविक्काइया उववज्जंति निरंतरं पुढविक्काइया उववज्जंति, एवं जाव वणस्सइकाइया। सेसा जहा नेरइया जाव संतरं पि वेमाणिया उववज्जंति निरंतरं पि वेमाणिया उववज्जंति ।

संतरं पि नेरइया उव्वट्टंति निरंतरं पि नेरइया उव्वट्टंति, एवं जाव थणियकुमारा । नो संतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति निरंतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति, एवं जाव वणस्सइकाइया । सेसा जहा नेरइया, नवरं—जोइसिय-वेमाणिया चयंति अभिलावो जाव संतरं पि वेमाणिया चयंति निरंतरं पि वेमाणिया चयंति ॥

सतो असतो उववज्जणादि-पदं

१२१. सतो[2] भंते ! नेरइया उववज्जंति, असतो[3] नेरइया उववज्जंति, सतो असुर-कुमारा उववज्जंति जाव सतो वेमाणिया उववज्जंति, असतो वेमाणिया उववज्जंति ? सतो नेरइया उव्वट्टंति, असतो नेरइया उव्वट्टंति, सतो असुर-कुमारा उव्वट्टंति जाव सतो वेमाणिया चयंति, असतो वेमाणिया चयंति ?

---

१. सांतरं (क, ता, ब, म) ।

२. अस्मिन् प्रकरणे द्वयोर्वाचनायोर्मिश्रणं दृश्यते । प्रथमा वाचना किञ्चित् संक्षिप्तास्ति, द्वितीया च किञ्चिद् विस्तृता । एतन् मिश्रणं वृत्ति-रचनात्. उत्तरकालमेव जातं सम्भाव्यते, तेनैव वृत्तिकृता नास्मिन् विषये किञ्चिद् लिखितम् । आदर्शेषु च प्राप्यते । अस्माभि-र्वृत्तिमनुसृत्य एका वाचना स्वीकृता, द्वितीया च पाठान्तरे न्यस्ता, यथा—

'सतो भंते ! नेरइया उववज्जति ? असतो नेरइया उववज्जति ? गंगेया ! सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति । एवं जाव वेमाणिया ।

'सतो भंते ! नेरइया उव्वट्टति ? असतो नेरइया उव्वट्टति ? गंगेया ! सतो नेरइया उव्वट्टति, नो असतो नेरइया उव्वट्टति । एवं जाव वेमाणिया, नवरं—जोइसिय-वेमाणिएसु चयंति भाणियव्वं ।'

३. असओ (ता) ।

गंगेया ! सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जंति, सतो असुरकुमारा उववज्जति, नो असतो असुरकुमारा उववज्जति जाव सतो वेमाणिया उववज्जति, नो असतो वेमाणिया उववज्जति, सतो नेरइया उव्वट्टति, नो असतो नेरइया उव्वट्टति जाव सतो वेमाणिया चयंति, नो असतो वेमाणिया चयति ।।

१२२. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति जाव सतो वेमाणिया चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ?

से नूण भे[1] गगेया ! पासेणं अरहया पुरिसादाणीएण सासए लोए बुइए अणादीए अणवदग्गे [2]•परित्ते परिवुडे हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्झे सखित्ते, उप्पि विसाले; अहे पलियंकसठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पि उद्धमुइगाकार-सठिए। तसि च ण सासयसि लोगसि अणादियसि अणवदग्गसि परित्तसि परिवुडसि हेट्ठा विच्छिण्णसि, मज्झे संखित्तंसि, उप्पि विसालसि, अहे पलियंकसठियसि, मज्झे वरवइरविग्गहियसि, उप्पि उद्धमुइगाकारसठियसि अणता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयति, परित्ता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयति ।

से भूए उप्पण्णे विगए परिणए, अजीवेहि लोक्कइ पलोक्कइ°, जे लोक्कइ से लोए। से तेणट्ठेण गगेया! एव वुच्चइ—जाव सतो वेमाणिया चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ।।

सतो परतो वा जाणणा-पदं

१२३. सय[3] भते ! एतेव[4] जाणह, उदाहु असय, असोच्चा एतेव जाणह, उदाहु सोच्चा—सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति जाव सतो वेमाणिया, चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ?

गगेया ! सय एतेव जाणामि, नो असयं, असोच्चा एतेव जाणामि, नो सोच्चा—सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति जाव सतो वेमाणिया चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ।।

१२४ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—[5]•सयं एतेवं जाणामि, नो असय, असोच्चा एतेवं जाणामि, नो सोच्चा—सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति जाव सतो वेमाणिया चयंति°, नो असतो वेमाणिया चयति ?

---

१. ते (अ)।
२. स० पा०—जहा पचमसए जाव जे।
३. सतं (क, ता)।
४. एव (अ, क); एते एवं (ता); एय एवं (व)
५. स० पा०—त चेव जाव नो।

गंगेया ! केवली णं पुरत्थिमे णं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ। दाहिणे णं, [1]•पच्चत्थिमे णं, उत्तरे णं, उड्ढं, अहे मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ।
सव्वं जाणइ केवली, सव्वं पासइ केवली।
सव्वओ जाणइ केवली, सव्वओ पासइ केवली।
सव्वकालं जाणइ केवली, सव्वकालं पासइ केवली।
सव्वभावे जाणइ केवली, सव्वभावे पासइ केवली।
अणंते नाणे केवलिस्स, अणंते दंसणे केवलिस्स।
निव्वुडे नाणे केवलिस्स, निव्वुडे दंसणे केवलिस्स°। से तेणट्ठेणं गंगेया ! एवं वुच्चइ—सयं एतेवं जाणामि, नो असयं असोच्चा एतेवं जाणामि, नो सोच्चा—तं चेव जाव नो असतो वेमाणिया चयंति॥

सयं असयं उववज्जणा-पदं

१२५. सयं भंते ! नेरइया नेरइएसु उववज्जंति ? असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति ?
गंगेया ! सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति॥

१२६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[2]—•सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु° उववज्जंति ?
गंगेया ! कम्मोदएणं, कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारियत्ताए, कम्मगुरुसंभारियत्ताए; असुभाणं कम्माणं उदएणं, असुभाणं कम्माणं विवागेणं, असुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति। से तेणट्ठेणं गंगेया[3] ! •एवं वुच्चइ—सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु° उववज्जंति॥

१२७. सयं भंते ! असुरकुमारा—पुच्छा।
गंगेया ! सयं असुरकुमारा[4] •असुरकुमारेसु° उववज्जंति, नो असयं असुरकुमारा[5] •असुरकुमारेसु° उववज्जंति॥

१२८. से केणट्ठेणं तं चेव जाव उववज्जंति ?
गंगेया ! कम्मोदएणं[6], कम्मविगतीए[7], कम्मविसोहीए, कम्मविसुद्धीए; सुभाणं कम्माणं उदएणं, सुभाणं कम्माणं विवागेणं सुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं

---

१. सं० पा०—एवं जहा सद्दुद्देसए जाव निव्वुडे नाणे केवलिस्स।
२. सं० पा०—वुच्चइ जाव उववज्जंति।
३. सं० पा०—गंगेया जाव उववज्जंति।
४. सं० पा०—असुरकुमारा जाव उववज्जंति।
५. सं० पा०—असुरकुमारा जाव उववज्जंति।
६. कम्मोदएणं कम्मोवसमेणं (अ, क, वृपा)।
७. कम्मचियत्ताए (ता)।

असुरकुमारा असुरकुमारत्ताए उववज्जंति, नो असयं असुरकुमारा[1] •असुरकुमारत्ताए° उववज्जति। से तेणट्ठेण जाव उववज्जति। एव जाव थणियकुमारा॥

१२९. सयं भंते! पुढविक्काइया—पुच्छा।
गंगेया! सय पुढविक्काइया[2] •पुढविक्काइएसु° उववज्जति नो असयं पुढविक्काइया[3] •पुढविक्काइएसु° उववज्जति॥

१३०. से केणट्ठेणं जाव उववज्जति?
गंगेया! कम्मोदएण, कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारियत्ताए, कम्मगुरुसंभारियत्ताए; सुभासुभाणं कम्माण उदएण, सुभासुभाण कम्माण विवागेणं, सुभासुभाण कम्माण फलविवागेण सय पुढविक्काइया[4] •पुढविक्काइएसु° उववज्जति, नो असयं पुढविक्काइया[5] •पुढविक्काइएसु° उववज्जति। से तेणट्ठेणं जाव उववज्जति॥

१३१. एव जाव मणुस्सा॥

१३२. वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा। से तेणट्ठेणं गंगेया! एवं वुच्चइ—सय वेमाणिया[6] •वेमाणिएसु° उववज्जंति, नो असयं[7] •वेमाणिया वेमाणिएसु° उववज्जति॥

गंगेयस्स संबोधि-पद

१३३ तप्पभिर्इं च ण से गंगेये अणगारे समण भगव महावीर पच्चभिजाणइ सव्वण्णु सव्वदरिसिं। तए ण से गंगेये अणगारे समणं भगव महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—इच्छामि णं भंते! तुब्भं अंतियं चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइय [8]•सपडिक्कमण धम्म उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।
अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं॥

१३४. तए ण से गंगेये अणगारे समण भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइय सपडिक्कमण धम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरति॥

१३५ तए णं से गंगेये अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता

---

१. सं० पा०—असुरकुमारा जाव उववज्जति।
२. सं० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जति।
३. सं० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जति।
४. सं० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जति।
५. सं० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जति।
६. सं० पा०—वेमाणिया जाव उववज्जंति।
७. सं० पा०—असयं जाव उववज्जति।
८. सं० पा०—एव जहा कालासवेसियपुत्तो तहेव भाणियव्व जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणयं अदंतवणयं अच्छत्तयं अणोवाहणयं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोओ बंभचेरवासो परघरप्पवेसो लद्धावलद्धी उच्चावया गामकंटगा बावीसं परिसहोवसग्गा अहियासिज्जति, तमट्ठं आराहेइ, आराहेत्ता चरमेहि उस्सास-नीसासेहि सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

१३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[१] ॥

तेत्तीसइमो उद्देसो

उसभदत्त-देवाणंदा-पदं

१३७ तेणं कालेणं तेणं समएणं माहणकुंडग्गामे नयरे होत्था—वण्णओ[२]। बहुसालए चेइए—वण्णओ[३]। तत्थ णं माहणकुंडग्गामे नयरे उसभदत्ते नामं माहणे परिवसइ—अड्ढे दित्ते वित्ते जाव[४] बहुजणस्स अपरिभूए रिव्वेद[५]-जजुव्वेद[६]-सामवेद-अथव्वणवेद-[७]°इतिहासपंचमाणं निघंटुछट्ठाणं—चउण्हं वेदाणं सगोवंगाणं सरहस्साणं सारए धारए पारए सडंगवी सट्ठिततविसारए, संखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोतिसामयणे°, अण्णेसु य बहूसु बंभण्णएसु नयेसु सुपरिनिट्ठिए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे[८] उवलद्धपुण्णपावे जाव[९] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तस्स णं उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदा नामं माहणी होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव[१०] पियदंसणा सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥

१३८. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। परिसा पज्जुवासइ ॥

---

१. भ० १।५१।
२. ओ० सू० १।
३. ओ० सू० २-१३।
४. भ० २।९४।
५. रिउवेद (अ, स); रिउव्वेद (क); रुव्वेद (म)
६. यजुवेद (अ); यजुव्वेद (म)।
७. सं० पा०—जहा खंदओ जाव अण्णेसु।
८. अधिगत° (ता); अहिगय° (ब, म)।
९. भ० २।९४।
१०. ओ० सू० १५।

१३९. तए ण से उसभदत्ते माहणे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ[1] •तुट्ठचित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण ° हियए जेणेव देवाणंदा माहणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता देवाणद माहणि एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए ! समणे भगव महावीरे आदिगरे जाव[2] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएण चक्केण जाव[3] सुहसुहेण विहरमाणे बहुसालए चेइए अहापडिरूव[4] •ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे ° विहरइ।
त महप्फल खलु देवाणुप्पिए ! तहारूवाणं अरहताणं भगवताण नामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स[5] धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? त गच्छामो ण देवाणुप्पिए ! समणं भगवं महावीर वदामो नमसामो[6] •सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मगलं देवयं चेइय ° पज्जुवासमो। एय णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए[7] आणुगामियत्ताए भविस्सइ ॥

१४०. तए ण सा देवाणदा माहणी उसभदत्तेण माहणेणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ[8] •तुट्ठचित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण ° हियया करयल[9] •परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्त मत्थए अंजलि ° कट्टु उसभदत्तस्स माहणस्स एयमट्ठ विणएणं पडिसुणेइ ॥

१४१. तए ण से उसभदत्ते माहणे कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइय-समखुरवालिहाण-समलिहियसिगेहिं[10], जबूणयामयकलावजुत्त-पतिविसिट्ठेहिं[11], रययामयघटा-सुत्तरज्जुय-पवरकचणनत्थपग्गहोग्गहियएहिं, नीलुप्पलकयामेलएहिं, पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिरयण-घटियाजालपरिगय, सुजायजुग-जोत्तरज्जुयजुग-पसत्थसुविरचियनिमिय, पवरलक्खणोववेय-धम्मिय जाणप्पवर जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एतमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

१४२. तए ण ते कोडुबियपुरिसा उसभदत्तेण माहणेण एव वुत्ता समाणा हट्ठ[12] •तुट्ठचित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण ° हियया

१ स० पा०—हट्ठ जाव हियए।
२ भ० १।७।
३ ओ० सू० १९।
४. स० पा०—अहापडिरूव जाव विहरइ।
५. आयरियस्स (अ, स)।
६ स० पा०—नमसामो जाव पज्जुवासामो।
७. × (क, ता, ब, म), निस्सेयसाए (भ० २।३०)।
८. स० पा०—हट्ठ जाव हियया।
९. स० पा०—करयल जाव कट्टु।
१०. ° संगएहिं (ता, म)।
११. परिविसट्ठेहिं (अ, स), पविसिट्ठेहिं (क, ता)।
१२ स० पा०—हट्ठ जाव हियया।

करयल[१]•परिग्गहिय दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु० एवं सामी! तहत्ताणाए विणएण वयणं पडिसुणेंति[२], पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त जाव धम्मिय जाणप्पवर जुत्तामेव उवट्ठवेत्ता[३] तमाणत्तिय पच्चप्पिणति ।।

१४३. तए णं से उसभदत्ते माहणे ण्हाए जाव[४] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणप्पवर दुरूढे[५] ।।

१४४. तए णं सा देवाणंदा माहणी ण्हाया[६] जाव[७] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा बहूहिं खुज्जाहिं, चिलातियाहिं जाव[८] चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-थेरकंचुइज्ज-महत्तरगवंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं[९] जाणप्पवर दुरूढा ।।

१४५. तए ण से उसभदत्ते माहणे देवाणंदाए माहणीए सद्धिं धम्मिय जाणप्पवर दुरूढे समाणे नियगपरियालसपरिवुडे माहणकुंडग्गामं नगर मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए[१०] तित्थकरातिसए पासइ, पासित्ता धम्मिय जाणप्पवरं ठवेइ, ठवेत्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता समणं भगवं महावीर पचविहेण अभिगमेणं अभिगच्छाति, [त जहा—१. सच्चित्ताणं दव्वाणं

---

१. स० पा०—करयल।
२. जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।
३. उवट्ठवेत्ता जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।
४. भ० ३।३३।
५. द्रूढे (ता)।
६. वाचनान्तरे देवानन्दावर्णक एवं दृश्यते—अंतो अंतेउरसि ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता, किंच [किंते (ब)]-वरपादपत्तणेउर-मणिमेहला-हाररचित-उचिय-कडग-खुड्डाग-एकावली-कंठसुत्त-उरत्थगेवेज्ज-सोणिसुत्तग-नाणामणि-रयणभूसणविराइयंगी, चीणंसुयवत्थपवरपरिहिया, दुगुल्लसुकुमाल उत्तरिज्जा, सव्वोतुयसुरभिकुसुमवरियसिरया, वरचंदणवंदिता, वराभरणभूसितंगी, कालागरुधूवधूविया, सिरिसमाणवेसा (वृ)।
७. भ० ३।३३।
८. वामणीहिं वडभीहिं बब्बरीहि बउसियाहिं जोणियाहिं पल्हवियाहि ईसिगिणियाहिं चारु (वास) गिणियाहिं ल्हासियाहिं लउसियाहि आरबीहि दमिलीहिं सिंहलीहिं पुलिंदीहि पक्कणीहिं(पुक्कलीहिं) बहलीहिं मुरुंडीहिं सबरीहिं पारसीहिं णाणादेस-विदेसपरिपिंडियाहिं सदेसनेवत्थगहियवेसाहि इंगित-चिंतित-पत्थिय-वियाणियाहि कुसलाहिं विणीयाहिं (अ, ता, ब, स), इदं च सर्वं वाचनान्तरे साक्षादेवास्ति (वृ)।
९. जाव धम्मिय (अ, क, ता, ब, म, स)।
१०. चुत्तीसाए (म)।

विप्रोसरणयाए '•२. अचित्ताणं दव्वाणं अविप्रोसरणयाए ३. एगसाडिएणं उत्तरासंगकरणेणं ४ चक्खुप्फासे अजलिप्पग्गहेणं ५. मणसो एगत्तीकरणेण][2] जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता• तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ।।

१४६. तए णं सा देवाणंदा माहणी धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता बहूहि खुज्जाहि जाव[3] चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-थेरकचुइज्ज-महत्तरगवदपरिक्खित्ता समण भगव महावीरं पचविहेण अभिगमेण अभिगच्छइ, [तं जहा—१. सचित्ताण दव्वाणं विप्रोसरणयाए २. अचित्ताणं दव्वाण अविमोयणयाए ३. विणयोणयाए गायलट्ठीए ४. चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं ५. मणस्स एगत्तीभावकरणेण][4] जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता उसभदत्तं माहण पुरओ कट्टु ठिया चेव सपरिवारा सुस्सूसमाणी नमसमाणी अभिमुहा विणएण पंजलिकडा[5] पज्जुवासइ ।।

१४७. तए णं सा देवाणदा माहणी आगयपण्हया पप्पुयलोयणा[6] सवरियवलयबाहा कचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलवग पिव समूसवियरोमकूवा समणं भगवं महावीर अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ।।

१४८ भतेति ! भगव गोयमे समणं भगव महावोर वदइ नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कि ण भते ! एसा देवाणदा माहणी आगयपण्हया "•पप्पुयलोयणा सवरियवलयबाहा कचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलवगं पिव समूसविय° रोमकूवा देवाणुप्पिय अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ?

गोयमादि[8] ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी—एवं खलु गोयमा ! देवाणदा माहणी ममं अम्मगा, अहण्ण देवाणंदाए माहणीए अत्तए । 'तण्ण एसा'[9] देवाणदा माहणी तेण पुव्वपुत्तसिणेहरागेण आगयपण्हया[10] •पप्पुयलोयणा, सवरियवलयबाहा कचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलवग पिव° समूसवियरोमकूवा मम अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ।।

---

१. स० पा०—एवं जहा बितियसए जाव तिविहाए ।
२. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्याश प्रतीयते ।
३. भ० ६।१४४ ।
४. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्याश प्रतीयते ।
५. पंजलिउडा (अ) ।
६. पप्फुय° (अ, ता, स); पप्फुल्ल° (क) ।
७. सं० पा०—त चेव जाव रोमकूवा ।
८ गोयमादी (क, ता, व, म) ।
९. तए ण सा (अ, म) ।
१०. स० पा०—आगयपण्हया जाव समूसविय° ।

१४९. तए णं समणे भगवं महावीरे उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदाए माहणीए तीसे य महतिमहालियाए इसिपरिसाए[1] •मुणिपरिसाए जइपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए अणेगसयवदाए अणेगसयवदपरियालाए ओहबले अइबले महब्बले अपरिमियबल-वीरिय-तेय-माहप्प-कंति-जुत्ते सारय-नवत्थणिय-महुरगभीर-कोंचणिग्घोस-दुंदुभिस्सरे उरे वित्थडाए कंठे वट्टियाए सिरे समाइण्णाए अगरलाए अमम्मणाए सुव्वत्तक्खर-सण्णिवाइयाए पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयणणीहारिणा सरेण अद्धमागहाए भासाए भासइ—धम्मं परिकहेइ° जाव[2] परिसा पडिगया ।।

१५०. तए णं से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिय[3] धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो[4]• आयाहिण पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वदासी—एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! [5]•अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! ° —से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ[6], •करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्त-पलित्ते णं भंते ! लोए जराए मरणेण य ।

[7]•से जहानामाए केइ गाहावई अगारंसि झियायमाणंसि जे से तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे मोल्लगरुए, तं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमइ । एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा पुरा य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ।

एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झ वि आया एगे भंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेस्सासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे, मा णं सीयं, मा णं उण्हं, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं चोरा, मा णं वाला, मा णं दंसा, मा णं मसया, मा णं वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सन्निवाइय विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एस मे नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ।

---

१. स० पा०—इसिपरिसाए जाव ।
२. ओ० सू० ७१-७९ ।
३. अंतिए (ता) ।
४. स० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता ।
५. स० पा०—जहा खंदओ जाव से ।
६. स० पा०—करेइ जाव नमंसित्ता ।
७. स० पा०—एवं एएणं कमेणं जहा खंदओ तहेव पव्वइओ ।

त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! सयमेव पव्वाविय, सयमेव मुंडाविय, सयमेव सेहाविय, सयमेव सिक्खाविय, सयमेव आयारगोयर विणय-वेणइय-चरण-करण जायामायावत्तिय धम्ममाइक्खिय ॥

१५१. तए ण समणे भगव महावीरे उसभदत्त माहण सयमेव पव्वावेइ, सय मेव मुडावेइ, सयमेव सेहावेइ, सयमेव सिक्खावेइ, सयमेव आयार-गोयरं विणय-वेणइय चरण-करण जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खइ—एव देवाणुप्पिया गतव्वं, एवं चिट्ठियव्व, एव निसीइयव्व, एवं तुयट्टियव्व, एव भुजियव्व, एव भासियव्वं एव उट्ठाय-उट्ठाय पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहिं सजमेणं सजमियव्व अस्सि च ण अट्ठे णो किंचि वि पमाइयव्वं ।

तए णं से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स इम एयारूवं धम्मियं उवएस सम्म सपडिवज्जइ °जाव[1] सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता[2] बहूहि चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम[3]-°दुवालसेहि, मासद्धमासखमणेहिं° विचित्तेहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसेत्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरति नग्गभावे जाव[4] तमट्ठ आराहेइ, आराहेत्ता[5] °चरमेहि उस्सास-नीसासेहि सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

१५२ तए ण सा देवाणदा माहणी समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण[6] °करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता° नमसित्ता एव वयासी—एवमेय भते ! तहमेय भते ! एव जहा उसभदत्तो तहेव जाव धम्ममाइक्खियं ॥

१५३. तए ण समणे भगव महावीरे देवाणद माहणि सयमेव पव्वावेइ, पव्वावेत्ता सयमेव अज्जचदणाए अज्जाए[7] सीसिणित्ताए दलयइ ॥

१५४ तए ण सा अज्जचदणा अज्जा देवाणद माहणि सयमेव[8] मुडावेति, सयमेव सेहावेति । एवं जहेव उसभदत्तो तहेव अज्जचदणाए अज्जाए इम एयारूवं धम्मियं उवदेसं सम्मं सपडिवज्जइ, तमाणाए तह गच्छइ जाव[9] सजमेणं सजमति ॥

१५५ तए ण सा देवाणदा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अतिय सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइ अहिज्जइ, [10]°अहिज्जित्ता बहूहि चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवाल-

---

१. भ० २।५३-५७ ।
२. जाव (अ, क, ता, ब, स) ।
३. सं० पा०—दसम जाव विचित्तेहि ।
४. भ० १।४३३ ।
५. स० पा०—आराहेत्ता जाव सव्व° ।
६. स० पा०—पयाहिणं जाव नमसित्ता ।
७. × (ब, म) ।
८. सयमेव पव्वावेति सयमेव (क, ब, म) ।
९. भ० २।५४ ।
१०. स० पा०—सेस त चेव जाव सव्व° ।

सेहिं, मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता चरमेहिं उस्सास-नीसासेहिं सिद्धा बुद्धा मुक्का परिनिव्वुडा° सव्वदुक्खप्पहीणा ।।

जमालि-पदं

१५६. तस्स णं माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स पच्चत्थिमे णं एत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नाम नयरे होत्था—वण्णओ[1] । तत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नयरे जमाली नाम खत्तियकुमारे परिवसइ—अड्ढे दित्ते जाव[2] बहुजणस्स अपरिभूते, उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसतिबद्धेहिं णाडएहिं वरतरुणीसपउत्तेहिं[3] उवनच्चिज्जमाणे-उवनच्चिज्जमाणे, उवगिज्जमाणे-उवगिज्जमाणे, उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे, पाउस-वासारत्त-सरद-हेमंत-वसंत-गिम्ह-पज्जंते छप्पि उऊ[4] जहाविभवेणं माणेमाणे, कालं गालेमाणे, इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ।।

१५७. तए णं खत्तियकुण्डग्गामे नयरे सिंघाडग-तिक-चउक्क-चच्चर[5]-°चउम्मुह-महापह-पहेसु महया जणसद्दे इ वा जणवूहे इ वा जणवोले इ वा जणकलकले इ वा जणुम्मी इ वा जणुक्कलिया इ वा जणसण्णिवाए इ वा बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ°, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ, एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव[6] सव्वण्णू सव्वदरिसी माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स बहिया बहुसालए चेइए अहापडिरूवं[7] °ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ।

तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए जहा ओववाइए जाव[8] एगाभिमुहे खत्तियकुण्डग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति[9], निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए, तेणेव उवागच्छंति एवं जहा ओववाइए जाव[10] तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासंति ।।

---

१. ओ० सू० १ ।
२. भ० २।९४ ।
३. णाणाविहवरतरुणी° (अ, व, स) ।
४. उडू (अ); उदू (ता, ब, स) ।
५. सं० पा०—चच्चर जाव बहुजणसद्दे इ वा जाव एवं ।
६. ओ० सू० १६ ।
७. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ ।
८. ओ० सू० ५२, वाचनान्तर पृ० १४७ ।
९. निग्गच्छइ (क, ता) ।
१०. ओ० सू० ५२, ६६ ।

१५८. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स तं महयाजणसद्दं वा जाव जणसन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झत्थिए[1] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—किण्णं अज्ज खत्तियकुडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा, खदमहे इ वा, मुगुदमहे इ वा, नागमहे इ वा, जक्खमहे इ वा, भूयमहे इ वा, कूवमहे इ वा, तडागमहे इ वा, नईमहे इ वा, दहमहे इ वा, पव्वयमहे इ वा, रूक्खमहे इ वा, चेइयमहे इ वा, थूभमहे इ वा, जण्णं एते वहवे उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, णाया[2], कोरव्वा, खत्तिया, खत्तियपुत्ता, भडा, भडपुत्ता,[3] •जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई लेच्छईपुत्ता अण्णे य वहवे राईसर-तलवर-माडंविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभितयो ण्हाया कयवलिकम्मा जहा ओववाइए जाव[4] खत्तियकुडग्गामे नयरे मज्झंमज्झेण निग्गच्छति ?—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कचुइ[5]-पुरिसं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वदासी—किण्ण देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छति ?

१५९. तए ण से कचुइ-पुरिसे जमालिणा खत्तियकुमारेण एव वुत्ते समाणे हट्टतुट्ठे समणस्स भगवओ महावीरस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल[6]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° जमालि खत्तियकुमार जएण विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एव वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नयरे इदमहे इ वा जाव[7] निग्गच्छति । एव खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज समणे भगव महावीरे आदिगरे जाव[8] सव्वण्णू सव्वदरिसी माहणकुडग्गामस्स नयरस्स वहिया वहुसालए चेइए अहापडिरूव ओग्गह[9] •ओगिण्हित्ता सजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ, तए ण एते वहवे उग्गा, भोगा जाव[10] निग्गच्छति ॥

१६०. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे कचुइ[11]-पुरिसस्स अतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घटं आसरह जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

---

१. स०पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
२. नाता (क, व, म) ।
३. स०पा०—जहा ओववाइए जाव सत्यवाह° ।
४. ओ० सू० ५२ ।
५ कंचुइज्ज (अ, क, ता, व) ।
६ सं० पा०—करयल ।
७. भ० ९।१५८ ।
८ ओ० सू० १९ ।
९ स० पा०—ओग्गहं जाव विहरइ ।
१०. ओसू सू० ५२; जाव अप्पेगइया वदणवत्तिय जाव (अ, क, ता, व, म) ।
११. कचुति (अ, क, व, स) ।

१६१. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिणा खत्तियकुमारेणं एवं वुत्ता समाणा[1] •चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेंति, उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति।

१६२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे जाव[2] चंदणुक्खित्तगायसरीरे[3] सव्वालंकारविभूसिए मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ[4], दुरुहित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं[5] छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, महयाभडचडकर-पहकरवंदपरिक्खित्ते खत्तियकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे, जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हेइ, निगिण्हेत्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता पुप्फतंबोलाउहमादियं पाहणाओ[6] य विसज्जेति, विसज्जेत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइब्भूए अंजलिमउलियहत्थे[7] जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता[8] •वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ॥

१६३. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स, तीसे य महतिमहालियाए इसि[9] •परिसाए मुणिपरिसाए जइपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए अणेगसयवंदाए अणेगसयवंदपरियालाए ओहबले अइबले महब्बले अपरिमियबल-वीरिय-तेय-माहप्प-कंति-जुत्ते सारय-नवत्थणिय-महुरगंभीर-कोंचणिग्घोस-दुंदुभिस्सरे उरे वित्थडाए कंठे वट्टियाए सिरे समाइण्णाए अगरलाए अमम्मणाए सुव्वत्तक्खर-सण्णिवाइयाए पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयणणीहारिणा सरेणं अद्धमागहाए भासाए भासइ—धम्मं परिकहेइ° जाव[10] परिसा पडिगया॥

---

१. सं० पा०—समाणा जाव पच्चप्पिणंति।

२. जाव ओववाइए परिसावण्णओ तहा भाणियव्वं जाव (अ, क, ता, ब, म, स); मज्जनगृहप्रकरणे परिवारवर्णनस्य सूचना स्वाभाविकी नास्ति, अतः प्रतीयते अत्र पाठसंक्षेपीकरणे कश्चिद् विपर्ययो जातः। न च एतद्रूपेणासौ पाठः औपपातिके लभ्यते, अतएवासौ पाठान्तरत्वेन स्वीकृतः। द्रष्टव्यम्—ओ० सू० ६३।

३. चंदणोकिण्ण° (ता, म); चंदणोक्खिण्ण° (व)

४. दूहइ (अ, ता, ब); दूहति (क)।

५. सकोरंट° (म, स)।

६. वाहणाओ (अ, म); पाणहाओ (क); वाणहाओ (स)।

७. अंजलितमउ° (ता)।

८. सं० पा०—करेत्ता जाव तिविहाए।

९. सं० पा०—इसि जाव धम्मकहा।

१०. ओ० सू० ७१-७९।

१६४. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ[1]•तुट्ठचित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण॰हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगव महावीरं तिक्खुत्तो[2] •आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता॰ नमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते ! निग्गथ पावयण, पत्तियामि ण भंते ! निग्गंथं पावयण, रोएमि ण भते ! निग्गथ पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भते ! निग्गथं पावयण, एवमेय भते ! तहमेय भते ! अवितहमेय भते ! असदिद्धमेय भते[3] ! •इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! ॰—से जहेय तुब्भे वदह, ज नवरं—देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए णं अह देवाणुप्पियाण अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वयामि । अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध ॥

१६५. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगव महावीर तिक्खुत्तो[4] •आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता॰ नमसित्ता तमेव चाउग्घट आसरह दुरुहइ, दुरुहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सकोरेंट[5]•मल्लदामेण छत्तेण॰ धरिज्जमाणेण महयाभडचडगर[6]•पहकरवद॰परिक्खित्ते, जेणेव खत्तियकुडग्गामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खत्तियकुडग्गाम नयर मज्झमज्झेण जेणेव सए गेहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रह ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अब्भितरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापियरो जएण विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एव वयासी—एव खलु अम्मताओ[7] ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मे निसते, से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए अभिरुइए ॥

१६६. तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो एवं वयासी—धन्ने सि णं तुमं जाया ! कयत्थे सि ण तुम जाया ! कयपुण्णे सि ण तुमं जाया ! कयलक्खणे सि ण तुम जाया ! जण्ण तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मे निसते, से वि य ते धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए ॥

---

१. स॰ पा॰—हट्ठ जाव हियए ।
२. स॰ पा॰—तिक्खुत्तो जाव नमसित्ता ।
३. स॰ पा॰—भते जाव से ।
४. स॰ पा॰—तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता ।
५. सं॰ पा॰—सकोरेंट जाव धरिज्जमाणेणं ।
६. स॰ पा॰—चडगर जाव परिक्खित्ते ।
७. अम्मयाओ (अ, स); अम्माताओ (व) ।

१६७ तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो दोच्चं पि एवं वयासी—एवं खलु मए अम्मताओ ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसते[1], •से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए•, अभिरुइए। तए णं अहं अम्मताओ ! संसारभउव्विग्गे, भीते जम्मण[2]-मरणेण, तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ॥

१६८. तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुण्णं अमणामं अस्सुयपुव्वं गिरं सोच्चा निसम्म सेयागयरोमकूवपगलंतचिलिणगत्ता[3], सोगभरपवेवियंगमंगी नित्तेया दीणविमणवयणा, करयलमलिय व्व कमलमाला, तक्खणओलुग्गदुब्बलसरीरलायण्णसुन्ननिच्छाया[4], गयसिरीया पसिढिलभूसण[5]-पडंतखुण्णियसंचुण्णियधवलवलय[6]-पब्भट्ठउत्तरिज्जा, मुच्छावसणट्ठचेतगरुई[7], सुकुमालविकिण्णकेसहत्था, परसुणियत्त[8] व्व चंपगलया, निव्वत्तमहे व्व इंदलट्ठी, विमुक्कसंधिबंधणा कोट्टिमतलंसि[9] धसत्ति सव्वंगेहिं[9] संनिवडिया[10] ॥

१६९. तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया ससंभमोवत्तियाए[11] तुरियं कंचण-भिंगारमुहविणिग्गय - सीयलजलविमलधारपरिसिच्चमाणनिव्वावियगायलट्ठी[12], उक्खेवय-तालियंट-वीयणगजणियवाएणं, सफुसिएणं अंतेउरपरिजणेणं आसासिया समाणी रोयमाणी कंदमाणी सोयमाणी विलवमाणी जमालिं खत्तिय-कुमारं एवं वयासी—तुमं सि णं जाया ! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणब्भूए जीविऊसविए[13] हिययनंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव[14] दुल्लभे सवणयाए[15], किमंग ! पुण पासणयाए ? तं नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुब्भं खणमवि विप्पयोगं, तं अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो तओ पच्छा अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स

१. स० पा०—निसते जाव अभिरूइए।
२. जम्मजरा (क्व०)।
३. °विलीणगत्ता (अ, ब, स)।
४. °लावण्ण° (ना० १।१।१०५)।
५. पसढिल° (अ, क, ता, म)।
६. °खुम्मिय° (ना० १।१।१०५)।
७. °गुरुई (अ, ता, ब, स)।
८. °णितत्त (ता); °णिकत्त (ब)।
९. सव्वगेहिं धसत्ति (ना० १।१।१०५)।
१०. निवडिया (अ, ता, स)।
११. ° वत्तियाए (क, ता), चेट्या इति गम्यम् (वृ)।
१२. सीयलविमलजल° (अ); सीतलविमल° (क); °सीतलविमलधारपरिसिच्चमाणनिव्व॰वित° (ता); °निव्ववित° (ब), सीयल-विमलजलधारपरिसिच्चमाणनिव्ववित° (स)
१३. जीवियउस्सासिए (वृपा, ना० १।१।१०६)।
१४. विव (क).
१५. समणयाए (अ)।

भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि ॥

१७०. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ ! जण्णं तुब्भे ममं एवं वदह—तुमं सि णं जाया ! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते तं चेव जाव[1] पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ ! माणुस्सए भवे अणेगजाइ-जरा-मरण-रोग-सारीरमाणसपकामदुक्खवेयण-वसणसतोवद्दवाभिभूए अधुवे अणितिए असासए संझब्भरागसरिसे जलबुब्बुदसमाणे कुसग्गजलबिंदु-सन्निभे सुविणदंसणोवमे[2] विज्जुलयाचंचले अणिच्चे सडण-पडण-विद्धंसणधम्मे, पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस[3] णं जाणइ अम्मताओ ! के पुव्विं गमणयाए, के पच्छा गमणयाए ? तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स[4] °भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ॥

१७१. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—इमं च ते जाया ! सरीरगं पविसिट्ठरूवं[5] लक्खण-वंजण-गुणोववेयं उत्तमबल-वीरियसत्त-जुत्तं विण्णाणवियक्खणं ससोहग्गगुणसमूसियं[6] अभिजायमहक्खमं विविहवाहि-रोगरहियं, निरुवहय-उदत्त[7]-लट्ठपंचिंदियपडुं[8] पढमजोव्वणत्थं अणेगउत्तमगुणेहिं संजुत्तं, तं अणुहोहि ताव जाया ! नियगसरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे, तओ पच्छा अणुभूय नियगसरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीर-स्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि ॥

१७२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ ! जण्णं तुब्भे ममं एवं वदह—इमं च णं ते जाया ! सरीरगं तं चेव जाव[9] पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ ! माणुस्सगं सरीरं दुक्खाययणं, विविहवाहिसयसंनिकेतं, अट्ठियकट्ठुट्ठियं, छिराण्हारुजाल-ओणद्धसंपिणद्धं, मट्टियभंडं व दुब्बलं, असुइसंकिलिट्ठं, अणिट्ठविय-सव्वकालसंठप्पयं, जराकुणिम-जज्जरघरं व सडण-पडण-विद्धंसणधम्मं, पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहि-यव्वं भविस्सइ। से केस णं जाणइ अम्मताओ ! के पुव्विं [10]°गमणयाए, के पच्छा गमणयाए ? तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे

---

१. भ० ९।१६६।
२. सुविणगसदं° (क, म); सुविणगद° (स)।
३. के (ता, ना० १।१।१०७)।
४. सं० पा०—समणस्स जाव पव्वइत्तए।
५. पइवि° (ता, व)।
६. °समूविय (ता)।
७. उयग्ग (ता)।
८. लट्ठ° (स)।
९. भ० ९।१६६।
१०. सं० पा०—तं चेव जाव पव्वइत्तए।

समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ॥

१७३. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—इमाओ य ते जाया! विपुलकुलबालियाओ[1] कलाकुसल-सव्वकाललालिय-सुहोचियाओ[2], मद्दवगुणजुत्त-निउणविणओवयारपंडिय-वियक्खणाओ, मंजुलमियमहुरभणिय-विहसिय-विप्पेक्खिय-गति-विलास-चिट्ठियविसारदाओ, अविकलकुल-सीलसालिणीओ[3], विसुद्धकुलवंससंताणतंतुवद्धण-प्पगब्भुब्भवपभाविणीओ[4], मणाणुकूल-हियइच्छियाओ, अट्ठ तुज्झ गुणवल्लहाओ उत्तमाओ, निच्चं भावाणुरत्तसव्वंग-सुंदरीओ[5]। तं भुंजाहि ताव जाया! एताहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगी विसय-विगयवोच्छिण्ण-कोउहल्ले अम्हेहिं कालगएहिं[6] °समाणेहिं परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइहिसि ॥

१७४. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ! जण्णं तुब्भे ममं एयं वदह—इमाओ ते जाया! विपुलकुल-बालियाओ जाव[7] पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ! माणुस्सगा कामभोगा[8] उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-पूय-सुक्क-सोणिय-समुब्भवा, अमणु-ण्णदुरुय[9]-मुत्त-पूइय-पुरीसपुण्णा, मयगंधुस्सास[10]-असुभनिस्सासउव्वेयणगा, बीभच्छा[11], अप्पकालिया, लहुसगा[12], 'कलमलाहिवासदुक्खा बहुजणसाहारणा'[13], परिकिलेसकिच्छदुक्खसज्झा, अबुहजणणिसेविया, 'सदा साहुगरहणिज्जा'[14],

---

१. °बालियाओ (स), सरिसियाओ, सरित्तयाओ, सरिव्वयाओ, सरिसलावण्णरूव—जोव्वण-गुणोववेयाओ, सरिसएहिंतो कुलेहिंतो आणि-एल्लियाओ (अ, क, ब, म, स); असौ पाठ 'ता' संकेतिते आदर्शे नास्ति तथा वृत्तावपि नास्ति व्याख्यात. । नायाधम्मकहाओ (१।१। १०८) असौ विद्यते । तस्य वाचनान्तरे चैष पाठो नास्ति । वाचनान्तरगतश्च पाठ प्रस्तुतभगवतीपाठसदृशोस्ति ।

२. सुहोइयाओ (ब) ।

३. °णियाओ (ब) ।

४. प्पगब्भभप्पभा° (अ), पगब्भवयभा° (क, वृ), पगब्भवपभा° (ता); पगब्भुब्भवपभा-विणीओ (वृपा) ।

५. °सुंदरीओ भारियाओ (ब, म, स) ।

६. सं० पा०—कालगएहिं जाव पव्वइहिसि ।

७. भ० ९।१७३ ।

८. कामभोगा असुई, असासया, वंतासवा, पित्ता-सवा, खेलासवा, सुक्कासवा, सोणियासवा (अ, ब, म, स) ।

९. °दुरूव (अ, क, ब, स) ।

१०. मद° (ता); मत° (ब) ।

११. बीभत्था (ब) ।

१२. लहूसगा (अ, क, ब, म) ।

१३. °दुक्खबहुजण° (क, ता, ब, म) ।

१४. साधुजणगरहणिज्जा (ता) ।

अणंतसंसारवद्धणा, कडुगफलविवागा चुडल्लिव अमुच्चमाण[1], दुक्खाणुबंधिणो, सिद्धिगमणविग्घा। से केस णं जाणइ अम्मताओ! के पुव्वि गमणयाए? के पच्छा गमणयाए? तं इच्छामि ण अम्मताओ[2]! •तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए॥

१७५. तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो एव वयासी—इमे य ते जाया! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुबहू हिरण्णे य[3], सुवण्णे य, कसे य, दूसे य, विउलधण-कणग[4]-•रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवालरत्तरयण°-सतसार-सावएज्जे, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पकाम दाउ, पकाम भोत्तु, परिभाएउ, त अणुहोहि ताव जाया! विउले माणुस्सए इड्ढि-सक्कारसमुदए, तओ पच्छा अणुहूयकल्लाणे, वड्ढियकुलवस[5]•ततुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइहिसि॥

१७६. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एव वयासी—तहा वि ण तं अम्मताओ! जण्ण तुब्भे मम एव वदह—इम च ते जाया! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए जाव[6] पव्वइहिसि, एव खलु अम्मताओ! हिरण्णे य, सुवण्णे य जाव सावएज्जे अग्गिसाहिए, चोरसाहिए, रायसाहिए, मच्चुसाहिए, दाइय-साहिए, अग्गिसामण्णे[7], •चोरसामण्णे, रायसामण्णे, मच्चुसामण्णे°, दाइय-सामण्णे, अधुवे, अणितिए, असासए, पुव्वि वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस ण जाणइ[8]•अम्मताओ! के पुव्वि गमणयाए, के पच्छा गमणयाए? त इच्छामि ण अम्मताओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए॥

१७७ तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मताओ जाहे नो सचाएति विसयाणुलो-माहि बहूहि आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य, आघवेत्तए वा पण्णवेत्तए वा सण्णवेत्तए वा विण्णवेत्तए वा, ताहे विसयपडि-कूलाहि सजमभयुव्वेयणकरीहिं[9] पण्णवणाहि पण्णवेमाणा एव वयासी—एवं

---

१. इह प्रथमाबहुवचनलोपो दृश्य. (वृ)।
२. स० पा०—अम्मताओ जाव पव्वइत्तए।
३. या (क, ता, ब, म) सर्वत्र।
४. स० पा०—कणग जाव सतसार°।
५. स० पा०—वड्ढियकुलवस जाव पव्वइहिसि।
६. भ० ९।१७५।
७. स० पा०—अग्गिसामण्णे जाव दाइयसामण्णे।
८. स० पा०—त चेव जाव पव्वइत्तए।
९. °भयुव्वेवक° (ता); भयुव्वेवणक° (ब)।

खलु जाया ! निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले[1] •पडिपुण्णे नेयाउए ससुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे अवितहे अविसधि सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, एत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिनिवायति° सव्वदुक्खाण अत करेति ।

अहीव एगतदिट्ठीए, खुरो इव एगतधाराए, लोहमया जवा चावेयव्वा, वालुया-कवले इव निस्साए, गगा वा महानदी पडिसोयंगमणयाए, महासमुद्दो वा भुयाहि दुत्तरो, तिक्खं कमियव्व, गरुय[2] लंबेयव्व, असिधारग वय चरियव्व ।

नो[3] खलु कप्पइ जाया ! समणाण निग्गथाणं अहाकम्मिए इ वा, उद्देसिए इ वा, मिस्सजाए[4] इ वा, अज्झोयरए[5] इ वा, पूइए इ वा, कीते इ वा, पामिच्चे इ वा, अच्छेज्जे इ वा, अणिसट्ठे इ वा, अभिहडे इ वा, कतारभत्ते इ वा, दुब्भिक्खभत्ते इ वा, गिलाणभत्ते इ वा, वद्दलियाभत्ते इ वा, पाहुणगभत्ते इ वा, सेज्जायरपिडे इ वा, रायपिंडे इ वा, मूलभोयणे इ वा, कदभोयणे इ वा, फलभोयणे इ वा, बीयभोयणे इ वा, हरियभोयणे इ वा, भोत्तए वा पायए वा ।

तुम सि च ण जाया ! सुहसमुचिए नो चेव ण दुहसमुचिए, नाल सीयं, नाल उण्हं, नालं खुहा, नालं पिवासा, नाल चोरा, नाल वाला, नाल दसा, नाल मसगा, नाल वाइय-पित्तिय-सेभिय-सन्निवाइए विविहे रोगायंके, परिस्सहोवसग्गे उदिण्णे अहियासेत्तए । त नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुब्भं खणमवि विप्पयोगं, तं अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो तओ पच्छा अम्हेहिं[6] •कालगएहि समाणेहि परिणयवए, वड्ढियकुलवंसततुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइहिसि ॥

१७८. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एव वयासी—तहा वि ण त अम्मताओ[7] ! जण्णं तुब्भे ममं एव वदह— एवं खलु जाया ! निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले त चेव जाव[8] पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ ! निग्गथे पावयणे कीवाणं कायराण कापुरिसाण इहलोगपडिबद्धाण परलोगपरमुहाण विसयतिसियाणं दुरणुचरे पागयजणस्स, धीरस्स निच्छियस्स ववसियस्स नो खलु एत्थं किचि वि दुक्कर करणयाए, तं इच्छामि ण अम्मताओ ! तुब्भेहि

१. स० पा०—जहा आवस्सए जाव सव्व° ।
२. गुरुय (अ) ।
३. णो य (अ, ता, ब) ।
४. मीसजाए (ता); मिस्साजाए (ब) ।
५. उज्झो° (अ, स) ।
६. स० पा०—अम्हेहिं जाव पव्वइहिसि ।
७. अम्मयाओ (अ, स) ।
८. भ० ९।१७७ ।

अ०भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स[1] •अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं॰ पव्वइत्तए ॥

१७९. तए ण त जमालि खत्तियकुमारं अम्मापियरो जाहे नो सचाएंति विसयाणुलोमाहि य, विसयपडिकूलाहि य बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवेत्तए वा[2] •पण्णवेत्तए वा सण्णवेत्तए वा॰ विण्णवेत्तए वा, ताहे अकामाइ चेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स निक्खमण अणुमण्णित्था ॥

१८०. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! खत्तियकुडग्गाम नयरं सब्भितरवाहिरियं आसिय-सम्मज्जिओवलित्तं जहा ओववाइए जाव[3] सुगंधवरगधगधिय गधवट्टिभूय करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह। ते वि तहेव पच्चप्पिणति ॥

१८१. तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया दोच्चं पि कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स महत्थ महग्घं महरिह विपुल निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह। तए णं ते कोडुवियपुरिसा तहेव जाव उवट्ठवेंति[4] ॥

१८२. तए ण त जमालिं खत्तियकुमार अम्मापियरो सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुहं निसीयावेंति, निसीयावेत्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाण कलसाणं, •[5]अट्ठसएणं रुप्पमयाण कलसाण, अट्ठसएण मणिमयाण कलसाण, अट्ठसएण सुवण्णरुप्पामयाणं कलसाण, अट्ठसएण सुवण्णमणिमयाण कलसाण, अट्ठसएण रुप्पमणिमयाणं कलसाण, अट्ठसएण सुवण्णरुप्पमणिमयाण कलसाण॰, अट्ठसएण भोमेज्जाणं कलसाण सव्विड्ढीए[6] •सव्वजुतीए सव्ववलेणं सव्वसमुदएण सव्वादरेण सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसभमेण सव्वपुप्फगधमल्लालकारेणं सव्वतुडियसद्द-सण्णिणाएण महया इड्ढीए महया जुईए महया वलेण महया समुदएण महया वरतुडिय-जमगसमग-प्पवाइएण सख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइग-दुदुहि-णिग्घोसणाइय॰रवेणं महया-महया निक्खमणाभिसेगेण अभिसिंचति, अभिसिंचित्ता करयल[7]•परिग्गहिय दसनहं सिरसावत्त

---

१. स० पा०—महावीरस्स जाव पव्वइत्तए।

२. स० पा०—वा जाव विण्णवेत्तए।

३. ओ० सू० ५५।

४. पच्चप्पिणति (अ, क, ता, ब, म, स); नायाधम्मकहाओ (१।१।११६, ११७) सूत्रानुसारेण एनत्पदं स्वीकृतम्। 'पच्चप्पिणति' इति पद अत्र नावश्यक प्रतिभाति।

५ म० पा०—एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव अट्ठसएण।

६. स० पा०—सविड्ढीए जाव रवेणं।

७ स० पा०—करयल जाव जएणं।

मत्थए अंजलि कट्टु॰ जएण विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—भण जाया ! किं देमो? किं पयच्छामो ? 'किणा व'[1] ते अट्ठो ?

१८३. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—इच्छामि णं अम्म-ताओ ! कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणिय[2], कासवगं च सद्दाविय[3] ॥

१८४. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइं गहाय[4] 'दोहिं सयसहस्सेहिं'[5] कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणेह, सयसहस्सेण कासवगं सद्दावेह ॥

१८५. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयल[6]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तहत्ताणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति॰, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइं [7]•गिण्हंति, गिण्हित्ता दोहिं सयसहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणेंति, सयसहस्सेणं॰ कासवगं सद्दावेंति ॥

१८६. तए णं से कासवए जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दा-विए समाणे हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे[8] •कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पा-वेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकिय॰सरीरे, जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल[9]-•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु॰ जमालिस्स खत्तियकुमा-रस्स पियरं जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावेत्ता एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं मए करणिज्जं ?

१८७. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तं कासवगं एवं वयासी—तुमं देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेणं जत्तेणं चउरंगुलवज्जे निक्खमणपाओग्गे अग्गकेसे कप्पेहि ॥

१८८. तए णं से कासवगे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ते समाणे

---

१. किं णा वा (ब, स); किं णा व (म)।
२. आणिउ (ता. ब)।
३. सद्दावेउं (ता); सद्दावितु (ब)।
४. गहेत्ता (ता)।
५. दोहिं सयसहस्सेण (अ, क); एगसतसहस्सेणं (ता), सयसहस्सेण (ब, म, स); बहुवचनान्तं पदं नायाधम्मकहाओ (१।१।१२२) सूत्रस्या-धारेण स्वीकृतम्।
६. स॰ पा॰—करयल जाव पडिसुणेत्ता।
७. स॰ पा॰—तहेव जाव कासवगं।
८. स॰ पा॰—कयबलिकम्मे जाव सरीरे।
९. स॰ पा॰—करयल।

हट्ठतुट्ठे करयल[1]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु॰ एवं सामी ! तहत्ताणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सुरभिणा गंधोदएणं हत्थपादे पक्खालेइ, पक्खालेत्ता सुद्धाए अट्ठपडलाए[2] पोत्तीए मुहं बंधइ, बंधित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेणं जत्तेणं चउरंगुलवज्जे निक्खमणपाओग्गे अग्गकेसे कप्पेइ ॥

१८९. तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं अग्गकेसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ, पक्खालेत्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिं मल्लेहिं अच्चेति, अच्चेत्ता 'सुद्धे वत्थे'[3] बंधइ, बंधित्ता रयणकरंडगंसि पक्खिवति, पक्खिवित्ता हार-वारिधार-सिंदुवार-छिण्णमुत्ता-वलिप्पगासाइं सुयवियोगदूसहाइं[4] अंसूइं विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी एवं वयासी—एस णं अम्हं जमालिस्स खत्तियकुमारस्स बहूसु तिहीसु य पव्वणीसु य उस्सवेसु य जण्णेसु य छणेसु य अपच्छिमे दरिसणे भविस्सतीति कट्टु ऊसीसगमूले ठवेति ॥

१९०. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो दोच्चं पि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेति, रयावेत्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सेया[5]-पीयएहिं कलसेहिं ण्हावेंति, ण्हावेत्ता पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेंति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपंति, अणुलिंपित्ता नासानिस्सासवायवोज्झं चक्खुहरं वण्ण-फरिसजुत्तं[6] हयलालापेलवातिरेगं धवलं कणगखचितंतकम्मं महरिहं हंसलक्खणपडसाडगं परिहिंति, परिहित्ता हारं पिणद्धेति[7], पिणद्धेत्ता अद्धहारं पिणद्धेति[8], पिणद्धेत्ता [9]•एगावलिं पिणद्धेति, पिणद्धेत्ता मुत्तावलिं पिणद्धेति, पिणद्धेत्ता रयणावलिं पिणद्धेति, पिणद्धेत्ता एवं—अंगयाइं केयूराइं कडगाइं तुडियाइं कडिसुत्तगं दसमुद्दाणंतगं विकच्छसुत्तगं[10] मुरविं कंठमुरविं पालंबं कुंडलाइं चूडामणिं[11]॰ चित्तं रयणसंकडुक्कडं मउडं पिणद्धेति, किं बहुणा ? गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघातिमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगं पिव अलंकिय-विभूसियं करेंति[12] ॥

---

१. सं॰ पा॰—करयल जाव एवं ।
२. चउप्फलाए (ना॰ १।१।१२५) ।
३. सुद्धवत्थेण (अ, स) ।
४. °दूसहदूसहाइं (क, ब, म) ।
५. सीया (अ, ब, म, स) ।
६. °सजुत्तं (अ) ।
७. पिणिहेंति (ता, ब) ।
८. पिणहेंति (ब) ।
९. सं॰ पा॰—एवं जहा सूरियाभस्स अलंकारो तहेव जाव चित्तं ।
१०. वच्छसुत्तं (भ॰ वृ॰); वेकच्छसुत्तं (वृपा) ।
११. वाचनान्तरे त्वयमलंकारवर्णकः साक्षाल्लिखित एव दृश्यते (वृ) ।
१२. वाचनान्तरे पुनरिदमधिकं 'दद्दरमलयसुगंधिगंधिएहिं गायाइं भुकुंडेंति' त्ति दृश्यते (वृ) ।

१९१. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखभसयसण्णिविट्ठं, लील-ट्ठियसालभंजियागं जहा रायप्पसेणइज्जे विमाणवण्णओ जाव[1] मणिरयणघटिया-जालपरिक्खित्तं[2] पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाण-त्तियं पच्चप्पिणह । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति ।।

१९२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे केसालंकारेणं, वत्थालंकारेणं, मल्लालंकारेणं, आभरणालंकारेणं—चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकारिए समाणे पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीयं दुरुहइ[3], दुरुहित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।।

१९३. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[4] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा हंसलक्खणं पडसाडगं गहाय सीयं अणुप्पदा-हिणीकरेमाणी सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणवरंसि सण्णिसण्णा ।।

१९४. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मधाती ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[5] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा रयहरणं पडिग्गहं च गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स वामे पासे भद्दासणवरंसि सण्णिसण्णा ।।

१९५. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिंगारागार-चारुवेसा संगय-गय[6]-•हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउण-जुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण°-रूव-जोव्वण-विलासकलिया[7] सरदब्भ[8]-हिम-रयय-कुमुद-कुंदेंदुप्पगासं सकोरेंटमल्ल-दामं धवलं आयवत्तं गहाय सलीलं 'ओधरेमाणी-ओधरेमाणी'[9] चिट्ठति ।।

---

१. राय० सू० १७ ।
२. वाचनान्तरे पुनरयं वर्णकः साक्षाद्दृश्यत एव (वृ) ।
३. द्रुहति (क, ता, व) ।
४. भ० ३।३३ ।
५. भ० ३।३३ ।
६. सं० पा०—संगयगय जाव रूव ।
७. विलासकलिया सुंदरथण (अ, ब, म, स); एषु आदर्शेषु 'विलासकलिया' इति पदस्याग्रे 'सुंदरथण' इति संक्षिप्तपाठो विद्यते, किन्तु एष पाठः 'विलासकलिया' इति पदस्यादौ विद्यमानोस्ति, तेन नात्र युज्यते । वृत्तिकृतापि उक्तपदानन्तरमसौ पाठः स्वीकृतः, किन्तु एतस्मिन् स्वीकारे पाठस्य पुनरुक्तिर्जायते, यथा—'रूवजोव्वणविलासकलिया' सुन्दरथ-णजहणवयणकरचरणणयणलावण्णरूवजोव्व-णगुणोववेय' त्ति सूचितम् (वृ), अस्माकं पाठानुसन्धानप्रयुक्ते प्रतिद्वये एष पाठो नास्ति । एषा वाचना सम्यक् प्रतीयते ।
८. × (अ, ब, म, स) ।
९. उवधरेमाणीओ उवधरेमाणीओ (अ); उवरि धरेमाणीओ २ (स) ।

१९६ तए ण तस्स जमालिस्स (खत्तियकुमारस्स ?) उभओ पासिं दुवे वरतरुणीओ सिंगारागार[1]•चारुवेसाओ संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसलाओ सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास॰कलियाओ नाणामणि-कणग-रयण-विमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ, चिल्लियाओ, संखंक-कुंद-दगरय-अमय-महिय-फेणपुंजसण्णिकासाओ धवलाओ चामराओ[2] गहाय सलीलं वीयमाणीओ-वीयमाणीओ चिट्ठंति ॥

१९७. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स उत्तरपुरत्थिमे णं एगा वरतरुणी सिंगारागार[3]•चारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास॰कलिया सेत रययामयं विमलसलिलपुण्णं मत्तगयमहामुहाकितिसमाणं भिंगारं गहाय चिट्ठइ ॥

१९८ तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणपुरत्थिमे णं एगा वरतरुणी सिंगारागार[4]•चारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास॰कलिया चित्तकणगदंडं तालवेंटं गहाय चिट्ठइ ॥

१९९. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सरिसयं सरित्तयं सरिव्वयं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयं, एगाभरणवसण[5]-गहियनिज्जोयं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं सद्दावेह ॥[6]

२००. तए ण ते कोडुंबियपुरिसा जाव[6] पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सरिसयं सरित्तयं[7] •सरिव्वयं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयं एगाभरणवसण-गहियनिज्जोयं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं॰ सद्दावेंति ॥

२०१. तए ण ते कोडुंबियवरतरुणपुरिसा[8] जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता एगाभरणवसण-गहियनिज्जोया जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[9]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं

१. सं॰ पा॰—सिंगारागार जाव कलिया ।
२. सेयवरचामराओ (क) ।
३. सं॰ पा॰—सिंगारागार जाव कलिया ।
४. सं॰ पा॰—सिंगारागार जाव कलिया ।
५. एगारिसाभरण॰ (अ) ।
६. भ॰ ९।१८५ ।
७. सं॰ पा॰—सरित्तयं जाव सद्दावेंति ।
८. अस्मिन् पदे 'वरतरुण' इति पाठ नायाधम्मकहाओ (१।१।१४०) सूत्रानुसारेण स्वीकृत ।
९. सं॰ पा॰—करयल जाव वद्धावेत्ता ।

मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति,° वद्धावेत्ता एवं वयासी—संदिसतु णं देवाणुप्पिया ! जं अम्हेहिं करणिज्जं ॥

२०२. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया ते कोडुबियवरतरुणसहस्सं[1] एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया कय[2]•बलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता एगाभरणवसण°-गहियनिज्जोया जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहेह ॥

२०३. तए णं ते कोडुबियवरतरुणपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ता समाणा जाव[3] पडिसुणेत्ता ण्हाया जाव[4] एगाभरणवसण-गहियनिज्जोगा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहंति ॥

२०४. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, तं जहा—सोत्थिय-सिरिवच्छ[5]-•णंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ°-दप्पणा। तदाणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगारं[6],•दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसण-रइय-आलोय-दरिसणिज्जा, वाउद्धय-विजयवेजयंती य ऊसिया°गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया।

•[7]तदाणंतरं च णं वेरुलिय-भिसंत-विमलदंडं पलंबकोरंटमल्लदामोवसोभियं चंदमंडलणिभं समूसियं विमलं आयवत्तं, पवरं सीहासणं वरमणिरयणपाद-पीढं सपाउयाजोयसमाउत्तं बहुकिंकर-कम्मकर-पुरिस-पायत्त-परिक्खित्तं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं।

तदाणंतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा चामरग्गाहा पासग्गाहा चावग्गाहा पोत्थयग्गाहा फलगग्गाहा पीढग्गाहा वीणग्गाहा कूवग्गाहा हडप्पग्गाहा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया।

तदाणंतरं च णं बहवे दंडिणो मुंडिणो सिहंडिणो जडिणो पिंछिणो हासकरा डमरकरा दवकरा चाडुकरा कंदप्पिया कोक्कुइया किड्डकरा य वायंता य गायंता य णच्चंता य हसंता य भासंता य सासंता य सावेंता य रक्खंता य° आलोयं च करेमाणा जय-जय सद्दं पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया।

---

१. °सहस्सं पि (अ, क, ब, म, स)।
२. सं० पा०—कय जाव गहिय°।
३. भ० ९।१८५।
४. भ० ९।२०१।
५. सं० पा०—सिरिवच्छ जाव दप्पणा।
६. सं० पा०— जहा ओववाइए जाव गगण°; अनेन च यदुपात्तं तद्वाचनान्तरे साक्षादेवास्ति (वृ)।
७ सं० पा०—एवं जहा ओववाइए तहेव भाणियव्वं जाव आलोयं, एतच्च वाचनान्तरे प्राय साक्षाद्दृश्यत एव (वृ); वृत्तिकृता वाचनान्तरे अधिकपाठस्यापि सूचना कृतास्ति।

तदाणंतरं च ण वहवे उग्गा भोगा खत्तिया इक्खागा नाया कोरव्वा जहा ओव-वाइए जाव[1] महापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ य मग्गतो य पासओ य अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ॥

२०५. तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया ण्हाए कयवलिकम्मे[2] •कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सव्वालकार॰ विभूसिए हत्थिक्खधवरगए सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहि उद्धव्वमाणीहि-उद्धुव्वमाणीहि हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडे महयाभडचडगर-विदपरिक्खित्ते[3] 'जमालि खत्तियकुमार'[4] पिट्ठओ अणुगच्छइ ॥

२०६. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ मह आसा आसवरा[5], उभओ पासि नागा नागवरा, पिट्ठओ रहा, रहसगेल्लो ॥

२०७. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अब्भुग्गतभिगारे, परिग्गहियतालियटे[6], ऊस-वियसेतछत्ते, पवीइयसेतचामरवालवीयणीए, सव्विड्ढीए जाव[7] दुदहि-णिग्घोस-णादितरवेण[8] खत्तियकुडग्गाम नयर मज्झमज्झेण जेणेव माहणकुडग्गामे नयरे, जेणेव वहुसालए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव पाहारेत्थ गमणाए ॥

२०८. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स खत्तियकुडग्गाम नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छमाणस्स सिघाडग-तिय-चउक्क[9]-•चच्चर-चउम्मुह-महापह॰ पहेसु वहवे अत्थत्थिया[10]•कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया किव्विसिया कारोडिया कारवाहिया सखिया चक्किया नगलिया मुहमगलिया वद्धमाणा पूसमाणया खडियगणा ताहि इट्ठाहि कताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि मणाभिरामाहि हिययगमणिज्जाहि वग्गूहि जयविजयमगलसएहि अणवरय॰ अभिनदता य अभि-त्थुणता य एव वयासी—जय-जय नदा ! धम्मेण, जय-जय नदा ! तवेण, जय-

---

१. ओ० सू० ५२ ।
२. स० पा०—कयवलिकम्मे जाव विभूसिए ।
३. ॰गर जाव परिक्खित्ते (अ, क, ता, व, म, स) ।
४. जमालिस्स खत्तियकुमारस्स (अ, स) ।
५. आसवारा (वृपा) ।
६. ॰तालयटे (क, ता) ।
७. भ० ६।१८२ ।
८. अतोग्रे 'अ, व, म, स' इति सकेतितेषु आदर्शेषु एतावान् अधिक पाठो लभ्यते—
'तदाणतर च ण वहवे लट्ठिग्गाहा कुतग्गाहा जाव पुत्थयग्गाहा जाव वीणग्गाहा, तदाण-तर च ण अट्ठसय गयाण, अट्ठसय तुरयाण, अट्ठसय रहाण, तदाणतर च ण लउड-असि-कोतहत्थाण वहूण पायत्ताणीण पुरओ सप-ट्ठिय, तदाणतर च ण वहवे राईसर-तलवर जाव सत्थवाहप्पभियओ पुरओ सपट्ठिया ।' असौ पाठ. अत पूर्ववर्ती विद्यते । लिपिदोषेण प्रमादेन वा अत्र प्रवेश प्राप्त । प० वेचर-दाससम्पादितभगवत्यामपि इत्थमेव अस्ति ।
९. स० पा०—चउक्क जाव पहेसु ।
१०. स० पा०—जहा ओववाइए जाव अभिनदता

जय नंदा ! भद्दं ते[1] अभग्गेहिं[2] नाण-दंसण-चरित्तेहिमुत्तमेहिं[3], अजियाइं जिणाहि इंदियाइ, जियं पालेहि समणधम्म, जियविग्घो वि य वसाहि त देव! सिद्धिमज्झे, निहणाहि य रागदोसमल्ले तवेण धितिधणियबद्धकच्छे, मद्दाहि य अट्ठ कम्मसत्तू झाणेण उत्तमेण सुक्केण, अप्पमत्तो हराहि आराहणपडाग च धीर ! तेलोक्करगमज्झे, पावय वितिमिरमणुत्तर केवल च नाण, गच्छ य मोक्ख पर पदं जिणवरोवदिट्ठेण सिद्धिमग्गेण अकुडिलेण हता परीसहचमू अभिभविय[4] गामकटकोवसग्गा ण, धम्मे ते अविग्घमत्थु त्ति कट्टु अभिनदति य अभिथुणति य ॥

२०९ तए ण से जमाली खत्तियकुमारे नयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे-पेच्छिज्जमाणे [5]•हिययमालासहस्सेहिं अभिणदिज्जमाणे-अभिणदिज्जमाणे मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे-विच्छिप्पमाणे वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे-अभिथुव्वमाणे कतिसोहग्गगुणेहिं पत्थिज्जमाणे-पत्थिज्जमाणे बहूणं नरनारिसहस्साण दाहिणहत्थेणं अजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे मंजुमजुणा घोसेण आपडिपुच्छमाणे-आपडिपुच्छमाणे भवणपतिसहस्साइ समइच्छमाणे-समइच्छमाणे खत्तियकुडग्गामे नयरे मज्झमज्झेण° निग्गच्छइ,निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए तित्थगरातिसए पासइ, पासित्ता पुरिससहस्सवाहिणि सीय ठवेइ, पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ ॥

२१०. तए णं त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो पुरओ काउ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो[6] •आयाहिण-पयाहिण करेति, करेत्ता वदति नमसंति, वदित्ता° नमसित्ता एवं वयासी—एव खलु भते ! जमाली खत्तियकुमारे अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कते[7] •पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए समए बहुमए अणुमए भडकरडगसमाणे रयणे रयणब्भूए जीविऊसविए हिययनदिजणणे उबरपुप्फ पिव दुल्लभे सवणयाए°, किमग ! पुण पासणयाए ? से जहानामए उप्पले इ वा, पउमे इ वा जाव[8] सहस्सपत्ते इ वा पके जाए जले सवुड्ढे नोवलिप्पति पकरएण, नोवलिप्पति जलरएणं, एवामेव जमाली वि खत्तियकुमारे कामेहिं जाए, भोगेहिं सवुड्ढे

१: भवतादिति गम्यते (वृ) ।
२. अभिग्गहेहिं (अ) ।
३. चरित्तमुत्तमेहिं (अ, क, म, स); चरित्तमुत्तेहिं (ता) ।
४. अभिभविया (अ, क, म); अभिभविता (ता); अभिसमिया (व) ।
५. स० पा०—एव जहा ओववाइए कूणिओ जाव निग्गच्छइ ।
६. स० पा०— तिक्खुत्तो जाव नमसित्ता ।
७. स० पा०—कते जाव किमग ।
८. ओ० सू० १५० ।

नोवलिप्पति कामरएणं, नोवलिप्पति भोगरएण, नोवलिप्पति मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-परिजणेण । एस ण देवाणुप्पिया ! संसारभयुव्विग्गे भीए जम्मण-मरणेण, इच्छइ[1] देवाणुप्पियाण अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए[2] । तं एय ण देवाणुप्पियाण अम्हे सीसभिक्ख दलयामो, पडिच्छतु ण देवाणुप्पिया ! सीसभिक्ख ।।

२११ 'तए णं समणे भगव महावीरे जमालि खत्तियकुमार एव वयासी'[3]—अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध ।।

२१२. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समण भगवं महावीर तिक्खुत्तो[4] °आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता° नमसित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसिभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्लालकार ओमुयइ ।।

२१३ तए ण सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हसलक्खणेण पडसाडएण आभरण-मल्लालंकारं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारि[5]°धार-सिंदुवार-छिन्नमुत्तावलि-प्पगासाइ असूणि° विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी जमालि खत्तियकुमारं एव वयासी—'जइयव्व जाया ! घडियव्व[6] जाया ! परक्कमियव्वं जाया ! अस्सि च ण अट्ठे णो पमाएतव्व ति कट्टु जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ।।

२१४. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे सयमेव पचमुट्ठिय लोयं करेइ, करेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, [7]°उवागच्छित्ता समण भगव महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—आलित्ते ण भते ! लोए, पलित्ते ण भते ! लोए, आलित्त-पलित्ते ण भते ! लोए जराए मरणेण य ।

---

१. × (अ, क, ता, ब, म, स) ।

२. पव्वतेति (अ), पव्वयति (क); पव्वइतइ (ता), पव्वतिति (ब); पव्वतित (म); पव्वतिते (स) अत्र 'इच्छइ, पव्वइत्तए' एते द्वे अपि पदे नायाधम्मकहाओ (१।१।१४५) सूत्रस्याधारेण स्वीकृते स्त. । सर्वेषु अपि आदर्शेषु लिपिदोषेण पाठपरिवर्तन जातम् । तन्मध्यवर्तिपाठाना नहि कश्चिदर्थोऽवगम्यते ।

३ × (अ, क, ब, म) ।

४. स० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमसित्ता ।

५ स० पा०—वारि जाव विणिम्मुयमाणी ।

६ घडियव्व जाया जइयव्व (अ, क, ता, ब, म, स) ।

७ स० पा०—एव जहा उसभदत्तो तहेव पव्वइओ नवर पचहिं पुरिससएहिं सद्धि तहेव जाव ।

से जहानामए केइ गाहावई अगारंसि भियायमाणंसि जे से तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे मोल्लगरुए, तं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमइ। एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा पुरा य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ।

एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झ वि आया एगे भंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेस्सासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे, मा णं सीयं, मा णं उण्हं, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं चोरा, मा णं वाला, मा णं दंसा, मा णं मसया, मा णं वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सन्निवाइय विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एस मे नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ।

तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! सयमेव पव्वावियं, सयमेव मुंडावियं, सयमेव सेहावियं, सयमेव सिक्खावियं, सयमेव आयार-गोयर विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खियं ॥

२१५. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिं खत्तियकुमारं पंचहिं पुरिससएहिं सद्धिं सयमेव पव्वावेइ° जाव[1] सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम[2]-•दसम-दुवालसेहिं° मासद्ध-मासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२१६. तए णं से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे पंचहिं अणगार-सएहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए ॥

२१७. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणइ, तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

२१८. तए णं से जमाली अणगारे समणं भगवं महावीरं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं[3] •बहिया जणवयविहारं° विहरित्तए ॥

२१९. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स दोच्चं पि, तच्चं पि एयमट्ठं नो आढाइ[4], •नो परिजाणइ°, तुसिणीए संचिट्ठइ ।

२२०. तए णं से जमाली अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ

---

१. भ० ३।५३.५७।

२. सं० पा०—छट्ठट्ठम जाव मासद्ध।

३. सं० पा०—सद्धिं जाव विहरित्तए।

४. सं० पा०—आढाइ जाव तुसिणीए।

पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पचहिं अणगारसएहिं सद्धिं बहिया जणवय-विहार विहरइ ॥

२२१. तेणं कालेण तेण समएण सावत्थी नाम नयरी होत्था—वण्णओ[1], कोट्ठए चेइए—वण्णओ जाव[2] वणसडस्स। तेण कालेणं तेणं समएण चंपा नाम नयरी होत्था—वण्णओ[3]। पुण्णभद्दे चेइए—वण्णओ जाव[4] पुढविसिलापट्टओ ॥

२२२. तए ण से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ पचहिं अणगारसएहिं सद्धिं सपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुग्गाम दुइज्जमाणे जेणेव सावत्थी नयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२२३. तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे[5] °गामाणुग्गाम दूइज्जमाणे° सुहसुहेण विहरमाणे जेणेव चपा नयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गह ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

२२४. तए ण तस्स जमालिस्स अणगारस्स तेहिं 'अरसेहि य'[6], विरसेहि य अतेहि य, पतेहि य, लूहेहि य, तुच्छेहि य, कालाइक्कतेहि य, पमाणाइक्कतेहि य[7] पाण-भोयणेहि अण्णया कयाइ सरीरगसि विउले रोगातके पाउब्भूए—उज्जले विउले[8] पगाढे कक्कसे कडुए चडे दुक्खे दुग्गे तिव्वे दुरहियासे। पित्तज्जरपरि-गतसरीरे, दाहवक्कतिए[9] या वि विहरइ ॥

२२५. तए णं से जमाली अणगारे वेयणाए अभिभूए समाणे समणे निग्गथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया! मम सेज्जा-संथारग सथरह ॥

२२६. तए ण ते समणा निग्गथा जमालिस्स अणगारस्स एतमट्ठ विणएणं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जमालिस्स अणगारस्स सेज्जा-सथारग सथरति ॥

२२७. तए ण से जमाली अणगारे बलियतर वेदणाए अभिभूए समाणे दोच्च पि समणे निग्गथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—मम[10] ण देवाणुप्पिया! सेज्जा-सथारए कि कडे? कज्जइ?

तते ण ते समणा निग्गथा जमालि अणगार एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पियाणं सेज्जा-सथारए कडे, कज्जइ ॥

---

१. ओ० सू० १।
२. ओ० सू० २-१३।
३. ओ० सू० १।
४. ओ० सू० २-१३।
५. स० पा०—चरमाणे जाव सुहसुहेण।
६. अरसेहि या (क, ता, व) सर्वत्र।
७. य सीओएहि य (अ), य सीएहिं (व); य सीतेहि य (स)।
८. वितुले (व, म); तिउले (स, वृ); विउले (वृपा)।
९. दाहवुक्कतिए (व)।
१०. मम (अ, स)।

२२८. तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[1] °चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—जण्णं समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव[2] एवं परूवेइ—एवं खलु चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए[3], °वेदिज्जमाणे वेदिए, पहिज्जमाणे पहीणे, छिज्जमाणे छिण्णे, भिज्जमाणे भिण्णे, दज्झमाणे दड्ढे, मिज्जमाणे मए°, निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे, तण्णं मिच्छा। इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए। जम्हा णं सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए। तम्हा चलमाणे वि अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिण्णे—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता समणे निग्गंथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—जण्णं देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एवं खलु चलमाणे चलिए[4] °जाव निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे, तण्णं मिच्छा। इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए। जम्हा णं सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए। तम्हा चलमाणे वि अचलिए° जाव निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिण्णे॥

२२९. तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स अत्थेगतिया समणा निग्गंथा एयमट्ठं सद्दहंति पत्तियंति रोयंति, अत्थेगतिया समणा निग्गंथा एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोयंति। तत्थ णं जे ते समणा निग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं सद्दहंति पत्तियंति रोयंति, ते णं जमालिं चेव अणगारं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति। तत्थ णं जे ते समणा निग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोयंति, ते णं जमालिस्स अणगारस्स अंतियाओ कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुग्गामं दूइज्जमाणा जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति॥

२३०. तए णं से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ[5] ताओ रोगायंकाओ विप्पमुक्के हट्ठे जाए, अरोए बलियसरीरे सावत्थीओ नयरीओ कोट्ठगाओ चेइयाओ

---

१. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
२. भ० १।४२०।
३. सं० पा०—उदीरिए जाव निज्जरिज्जमाणे।
४. सं० पा०—तं चेव जाव।
५. कयाति (अ, ब, स), कदायी (ता)।

पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—जहा णं देवाणुप्पियाणं बहवे अंतेवासी समणा निग्गंथा छउमत्थावक्कमणेणं[1] अवक्कंता, नो खलु अहं तहा छउमत्थावक्कमणेणं[2] अवक्कंते, अहं णं उप्पन्ननाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेणं अवक्कंते ॥

२३१. तए णं भगवं गोयमे जमालिं अणगारं एवं वयासी—नो खलु जमाली ! केवलिस्स नाणे वा दंसणे वा सेलंसि वा 'थंभंसि वा'[3] थूभंसि वा आवरिज्जइ वा निवारिज्जइ वा, जदि णं तुमं जमाली ! उप्पन्ननाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवलि भवित्ता केवलिअवक्कमणेणं अवक्कंते, तो णं इमाइं दो वागरणाइं वागरेहि—सासए लोए जमाली ! असासए लोए जमाली ? सासए जीवे जमाली ! असासए जीवे जमाली ?

२३२. तए णं से जमाली अणगारे भगवया गोयमेणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए[4] •वितिगिच्छिए भेदसमावण्णे° कलुससमावण्णे जाए या वि होत्था, नो संचाएति भगवओ गोयमस्स किंचि वि पमोक्खमाइक्खित्तए, तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

२३३. जमालीति ! समणे भगवं महावीरे जमालिं अणगारं एवं वयासी—अत्थि णं जमाली ! ममं बहवे अंतेवासी समणा निग्गंथा छउमत्था, जे णं पभू एयं वागरणं वागरित्तए, जहा णं अहं, नो चेव[5] णं एतप्पगारं भासं भासित्तए, जहा णं तुमं।

सासए लोए जमाली[6] ! जं न कयाइ नासि, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य—धुवे, नितिए सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए निच्चे ।

असासए लोए जमाली ! जं ओसप्पिणी भवित्ता उस्सप्पिणी भवइ, उस्सप्पिणी भवित्ता ओसप्पिणी भवइ ।

सासए जीवे जमाली ! जं न कयाइ नासि[7], •न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य—धुवे, नितिए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए° निच्चे ।

---

१. छउमत्था भवेत्ता छउमत्था° (अ, क, म, स)
२. छउमत्था भवेत्ता छउमत्था° (अ, क, म, स)
३. X (अ, ब, म) ।
४. सं° पा°—कंखिए जाव कलुस° ।
५. च्चेव (ता) ।
६. X (क, ता) ।
७. सं° पा°—नासि जाव निच्चे ।

असासए जीवे जमाली ! जण्णं नेरइए भवित्ता तिरिक्खजोणिए भवइ, तिरिक्खजोणिए भवित्ता मणुस्से भवइ, मणुस्से भवित्ता देवे भवइ ।।

२३४. तए ण से जमाली अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव[1] एवं परूवेमाणस्स एतमट्ठ नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एतमट्ठ असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे दोच्चं पि समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ आयाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता बहूहि असब्भावुब्भावणाहि मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाण च पर च तदुभय च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसेत्ता तीस भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता तस्स ठाणस्स[2] अणालोइयपडिक्कते कालमासे काल किच्चा लतए कप्पे तेरससागरोवमठितीएसु देवकिव्विसिएसु देवेसु देवकिव्विसियत्ताए उववन्ने ।।

२३५. तए ण भगव गोयमे जमालि अणगार कालगय जाणित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी कुसिस्से जमाली नामं अणगारे से ण भते ! जमाली अणगारे कालमासे काल किच्चा कहि गए ? कहि उववन्ने ?

गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगव गोयम एव वयासी—एवं खलु गोयमा ! मम अतेवासी कुसिस्से जमाली नाम अणगारे, से ण तदा मम एवमाइक्खमाणस्स एव भासमाणस्स एव पण्णवेमाणस्स एव परूवेमाणस्स एतमट्ठ नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एतमट्ठ असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे, दोच्च पि मम अतियाओ आयाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता बहूहि असब्भावुब्भावणाहि [3]•मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाण च पर च तदुभय च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता, अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेत्ता, तीसं भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालमासे काल किच्चा लतए कप्पे तेरससागरोवमठितीएसु देवकिव्विसिएसु देवेसु° देवकिव्विसियत्ताए उववन्ने ।।

२३६. कतिविहा ण भते ! देवकिव्विसिया पण्णत्ता ?

गोयमा ! तिविहा देवकिव्विसिया पण्णत्ता, त जहा—तिपलिओवमट्ठिइया, तिसागरोवमट्ठिइया, तेरससागरोवमट्ठिइया ।।

२३७. कहि ण भते ! तिपलिओवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसति ?

---

१. भ० १।४२० ।

२. ट्ठाणस्स (ता, म, स) ।

३. स० पा०—त चेव जाव देव° ।

गोयमा ! उप्पिं जोइसियाण, हिट्ठिं[1] सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु, एत्थ णं तिपलिओवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति ।।

२३८. कहिं ण भंते ! तिसागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति ?
गोयमा ! उप्पिं सोहम्मीसाणाणं कप्पाण, हिट्ठिं सणकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु, एत्थ ण तिसागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति ।।

२३९. कहिं ण भंते ! तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति ?
गोयमा ! उप्पिं बंभलोगस्स कप्पस्स, हिट्ठिं लतए कप्पे, एत्थ णं तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया देवा परिवसंति ।।

२४० देवकिब्बिसिया ण भंते ! केसु कम्मादाणेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति ?
गोयमा ! जे इमे जीवा आयरियपडिणीया, उवज्झायपडिणीया, कुलपडिणीया, गणपडिणीया, संघपडिणीया, आयरिय-उवज्झायाण अयसकारा[2] अवण्णकारा अकित्तिकारा बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं, मिच्छत्ताभिनिवेसेहिं य अप्पाण परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवकिब्बिसिएसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति, तं जहा—तिपलिओवमट्ठितिएसु वा, तिसागरोवमट्ठितिएसु वा, तेरससागरोवमट्ठितिएसु वा ।।

२४१. देवकिब्बिसिया ण भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएण, 'भवक्खएणं, ठितिक्खएण'[3] अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ?
गोयमा ! जाव चत्तारि पंच नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइं संसारं अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झंति बुज्झंति[4] °मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्वदुक्खाणं° अंतं करेंति, अत्थेगतिया अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टंति ।।

२४२. जमाली ण भंते ! अणगारे अरसाहारे विरसाहारे अंताहारे पंताहारे लूहाहारे तुच्छाहारे अरसजीवी विरसजीवी[5] °अंतजीवी पंतजीवी लूहजीवी° तुच्छजीवी उवसंतजीवी पसंतजीवी विवित्तजीवी ?
हंता गोयमा ! जमाली णं अणगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवी ।।

२४३ जति ण भंते ! जमाली अणगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवी

---

१. हिव्विं (ता) सर्वत्र, हव्वि (म) ।
२. °करा (अ, स); सर्वत्र, अयसकारगा (वृ) ।
३. ठितिक्खएण भवक्खएण (ता) ।
४. सं० पा०—बुज्झति जाव अंत ।
५. सं० पा०—विरसजीवी जाव तुच्छजीवी ।

कम्हा णं भंते ! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरस-सागरोवमट्ठितिएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ?
गोयमा ! जमाली णं अणगारे आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए, आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए[1] •अकित्तिकारए वहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं, मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणे॰ वुप्पाएमाणे वहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे[2] •तेरससागरोवमट्ठितिएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए॰ उववन्ने ॥

२४४. जमाली णं भंते ! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं[3] •भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? ॰कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! चत्तारि पंच तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइं संसारं अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झिहिति[4] •बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं॰ अंतं काहिति ॥

२४५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[5] ॥

चोत्तीसइमो उद्देसो

एगस्स वधे अणेगवध-पदं

२४६. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव[6] एवं वयासी—पुरिसे णं भंते ! पुरिसं हणमाणे किं पुरिसं हणइ[7] ? नोपुरिसे हणइ ?
गोयमा ! पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ ॥

२४७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ ?

---

१. सं॰ पा॰—अवण्णकारए जाव वुप्पाएमाणे ।
२. सं॰ पा॰—कप्पे जाव उववन्ने ।
३. सं॰ पा॰—आउक्खएणं जाव कहिं ।
४. सं॰ पा॰—सिज्झिहिति जाव अंतं ।
५. भ॰ १।५१ ।
६. भ॰ १।४-१० ।
७. छणइ (वृपा) ।

गोयमा ! तस्स ण एवं भवइ—एवं खलु अहं एग पुरिसं हणामि, से णं एगं पुरिस हणमाणे 'अणेगे जीवे'[1] हणइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ ।।

२४८. पुरिसे णं भते ! आस हणमाणे किं आस हणइ ? नोआसे[2] हणइ ?
गोयमा ! आस पि हणइ, नोआसे वि हणइ ।।
से केणट्ठेण ?
अट्ठो तहेव । एवं हत्थि, सीह, वग्घ जाव[3] चिल्ललग[4] ।।

इसिस्स वधे अणंतवध-पदं

२४९. पुरिसे ण भते ? इसिं हणमाणे किं इसि हणइ ? नोइसि हणइ ?
गोयमा ! इसिं पि हणइ, नोइसि पि हणइ ।।

२५०. से केणट्ठेण भते ? एव वुच्चइ[5]—•इसि पि हणइ,° नोइसिं पि हणइ ?
गोयमा ! तस्स ण एवं भवइ—एव खलु अह एग इसिं हणामि, से णं एगं इसिं हणमाणे 'अणते जीवे'[6] हणइ । से तेणट्ठेण [7]•गोयमा ! एवं वुच्चइ—इसिं पि हणइ, नोइसि पि हणइ° ।।

वेर-बंध-पदं

२५१. पुरिसे ण भते ! पुरिस हणमाणे किं पुरिसवेरेण पुट्ठे ? 'नोपुरिसवेरेणं पुट्ठे ?'[8]
गोयमा ! नियम-ताव पुरिसवेरेण पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेण य

---

१. अणेगा जीवा (अ, क, ता, म, स) ।
२. नोआस (ब), नोआसे वि (म) ।
३. प० १ ।
४ चित्तलग (ब), अतोग्रे 'क, ता, वृ' एषु—'एते सव्वे इक्कगमा' इति पाठोस्ति, 'अ, ब, म, स'—एतेषु आदर्शेषु 'चिल्ललग इति पाठानन्तर एष पाठोस्ति—'पुरिसे ण भते ! अण्णयर तस पाण हणमाणे किं अण्णयर तस पाण हणइ, नोअण्णतरे तसे पाणे हणइ ? गोयमा ! अण्णयर पि तस पाण हणइ, नोअण्णतरे वि तसे पाणे हणइ । से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—अण्णयरं पि तस पाण, हणइ नोअण्णयरे वि तसे पाणे हणइ ? गोयमा ! तस्स ण एव भवइ—एव खलु अह एगं अण्णयर तस पाण हणामि, से ण एग अण्णयरं तसं पाणं हणमाणे अणेगे जीवे हणइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! त चेव । एए सव्वे वि एक्कगमा' । वृत्तावपि नासौ॰ याख्यात, अतोस्माभिरसौ पाठान्तरत्वेन स्वीकृत. ।
५ स० पा०—वुच्चइ जाव नोइसिं ।
६. अणता जीवा (अ, क, ता, ब, म) ।
७. स० पा०—निक्खेवो ।
८. × (ता) ।

पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेहि य पुट्ठे। एव आसं जाव चिल्ललगं जाव अहवा चिल्ललगवेरेण[1] य नोचिल्ललगवेरेहि य पुट्ठे ॥

२५२. पुरिसे णं भते ! इसि हणमाणे कि इसिवेरेण पुट्ठे ? नोइसिवेरेणं पुट्ठे ?
गोयमा ! नियमं[2] इसिवेरेण य[3] नोइसिवेरेहि य पुट्ठे ॥

पुढविक्काइयादीणं आण-पाण-पदं

२५३. पुढविक्काइए णं भंते ! पुढविक्काय चेव आणमइ वा ? पाणमइ वा ? ऊससइ वा ? नीससइ वा ?
हंता गोयमा ! पुढविक्काइए पुढविक्काइय चेव आणमइ वा जाव नीससइ वा ॥

२५४. पुढविक्काइए णं भंते ! आउक्काइयं आणमइ वा जाव नीससइ वा ?
हता गोयमा ! पुढविक्काइए ण आउक्काइय आणमइ वा जाव नीससइ वा। एवं तेउक्काइयं, वाउक्काइय, एव वणस्सइकाइय ॥

२५५. आउक्काइए णं भते ! पुढविक्काइय आणमइ वा [4]°जाव नीससइ वा ?
हता गोयमा ! आउक्काइए णं पुढविक्काइय आणमइ वा जाव नीससइ वा° ॥

२५६ आउक्काइए णं भंते ! आउक्काइयं चेव आणमइ वा ?
एवं चेव । एव तेउ-वाउ-वणस्सइकाइय ॥

२५७ तेउक्काइए ण भंते ! पुढविक्काइय आणमइ वा ? एव जाव वणस्सइकाइए णं भंते ! वणस्सइकाइय चेव आणमइ वा ? तहेव ॥

किरिया-पदं

२५८. पुढविक्काइए ण भते ! पुढविक्काइयं चेव आणममाणे वा, पाणममाणे वा ऊससमाणे वा, नीससमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥

२५९. पुढविक्काइए ण भते ! आउक्काइयं आणममाणे वा ?
एव चेव । एवं जाव वणस्सइकाइय । एव आउक्काएण वि सव्वे[5] भाणियव्वा । एवं तेउक्काइएण वि, एव वाउक्काइएण वि जाव—

---

१. चित्तला° (व), चिल्लला° (म) ।
२. नियम ताव (क); नितमं (ब) ।
३. य जाव (ता); एतत् सम्यक्नास्ति । ऋषि-पक्षे तु ऋषिवैरेण नो नोऋषिवैरैश्चेत्येवमेक एव (वृ) ।
४. स० पा०—एवं चेव ।
५. सव्वे वि (ता, स) ।

२६०. वणस्सइकाइए ण भते ! वणस्सइकाइयं चेव ग्राणममाणे वा—पुच्छा ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥

२६१. वाउक्काइए ण भते ! रुक्खस्स मूलं 'पचालेमाणे वा'[1] पवाडेमाणे वा कति-किरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए। एव कंदं, एव जाव[2]—

२६२ बीय पचालेमाणे वा—पुच्छा ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए ॥

२६३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[3] ॥

---

१. × (क)।
२. भ० ८।२१६।
३. भ० १।५१।

दसमं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. दिस २ सवुडअणगारे[1], ३ आइड्ढी[2] ४ सामहत्थि ५. देवि ६. सभा।
७-३४ उत्तरअंतरदीवा, दसमम्मि सयम्मि चउत्तीसा ॥१॥

दिसा-पदं

१. रायगिहे[3] जाव[4] एव वयासी—किमियं भंते ! 'पाईणा ति'[5] पवुच्चइ ?
गोयमा ! जीवा चेव, अजीवा चेव ॥

२. किमियं भंते ! पडीणा ति पवुच्चइ ?
गोयमा ! एव चेव। एवं दाहिणा, एवं उदीणा, एवं उड्ढा, एवं अहो[6] वि ॥

३. कति णं भंते ! दिसाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! दस दिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—१. पुरत्थिमा २. पुरत्थिमदाहिणा ३. दाहिणा ४. दाहिणपच्चत्थिमा ५ पच्चत्थिमा ६. पच्चत्थिमुत्तरा ७. उत्तरा ८. उत्तरपुरत्थिमा ९. उड्ढा १०. अहो[7] ॥

४. एयासि णं भते ! दसण्हं दिसाणं कति नामधेज्जा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दस नामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—

---

१. संवुडमणगारे (अ, क, ब, म)।
२. आयड्ढी (अ, स)।
३. रायगिधे (ता)।
४. भ० १।४-१०।
५. पाईणत्ति (क, स); पादीणा ति (ता)।
६. अहा (अ, क, ब, म); अधो (ता)।
७. अहा (अ, क, ब, म); अधा (ता)।

इंदा अग्गेयी जम्मा[1], य नेरई वारुणी य वायव्वा ।
सोमा ईसाणी या, विमला य तमा य बोद्धव्वा ॥१॥

५. इंदा णं भंते ! दिसा किं १. जीवा २. जीवदेसा ३. जीवपदेसा ४ अजीवा ५. अजीवदेसा ६ अजीवपदेसा ?
गोयमा ! जीवा वि, [2]•जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि°, अजीवपदेसा वि ।
जे जीवा ते नियमा एगिंदिया बेइंदिया[3] •तेइंदिया चउरिंदिया° पंचिंदिया, अणिंदिया ।
जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा ।
जे जीवपदेसा ते नियमा[4] एगिंदियपदेसा बेइंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा ।
जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवा य, अरूविअजीवा य ।
जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणुपोग्गला ।
जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—१. नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे २. धम्मत्थिकायस्स पदेसा ३. नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे ४ अधम्मत्थिकायस्स पदेसा ५ नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे ६ आगासत्थिकायस्स पदेसा ७. अद्धासमए ॥

६. अग्गेयी णं भंते ! दिसा किं जीवा, जीवदेसा, जीवपदेसा—पुच्छा ।
गोयमा ! नोजीवा, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि ।
जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसे, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसा, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा । अहवा एगिंदियदेसा य तेइंदियस्स य देसे । एवं चेव तियभंगो भाणियव्वो । एवं जाव अणिंदियाणं तियभंगो । जे जीवपदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा । अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियस्स पदेसा, अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियाण य पदेसा । एवं आइल्लविरहिओ जाव अणिंदियाणं ।
जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवा[5] य, अरूविअजीवा य ।
जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा जाव परमाणुपोग्गला ।

---

१ जमा (ख) ।
२. सं० पा०—तं चेव जाव अजीवपदेसा ।
३. सं० पा०—बेइंदिया जाव पंचिंदिया ।
४. नियम (ता), × (व) ।
५. रूविं अजीवा (ता, व) ।

जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, एवं अधम्मत्थिकायस्स वि जाव आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए[1] ॥

७. जम्मा णं भंते ! दिसा किं जीवा ?
जहा इंदा 'तहेव निरवसेसं'[2]। नेरती[3] य जहा अग्गेयी। वारुणी जहा इंदा। वायव्वा जहा अग्गेयी। सोमा जहा इंदा। ईसाणी जहा अग्गेयी। विमलाए जीवा जहा अग्गेयीए, अजीवा जहा इंदाए। एवं तमाए वि, नवरं—अरूवी छव्विहा, अद्धासमयो न भण्णति ॥

सरीर-पदं

८. कति णं भंते ! सरीरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए[4] °वेउव्विए आहारए तेयए° कम्मए ॥

९. ओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
एवं ओगाहणासंठाणं निरवसेसं भाणियव्वं जाव[5] अप्पाबहुगं ति ॥

१०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

बीओ उद्देसो

संवुडस्स किरिया-पदं

११. रायगिहे जाव[7] एवं वयासी—संवुडस्स णं भंते ! अणगारस्स वीयीपथे ठिच्चा पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स, मग्गओ रूवाइं अवयक्खमाणस्स, पासओ रूवाइं अवलोएमाणस्स, उड्ढं रूवाइं ओलोएमाणस्स, अहे रूवाइं आलोएमाणस्स तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?

---

१. अद्धासमए। विदिसासु नत्थि जीवा, देसे भंगो य होइ सव्वत्थ (अ, ब, म, स)।
२. तहा निरवसेसा (क)।
३. निरुती (क)।
४. स० पा०—ओरालिए जाव कम्मए।
५. प० २१।
६. भ० १।५१।
७. भ० १।४-१०।

गोयमा ! संवुडस्स णं अणगारस्स वीयीपंथे ठिच्चा[1] •पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स, मग्गओ रूवाइं अवयक्खमाणस्स, पासओ रूवाइं अवलोएमाणस्स, उड्ढं रूवाइं ओलोएमाणस्स, अहे रूवाइं आलोएमाणस्स॰ तस्स णं नो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ॥

१२ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—संवुडस्स णं जाव संपराइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा [2]•वोच्छिण्णा भवंति तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवंति तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ। अहासुत्तं रीयमाणस्स इरियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ॰। से णं उस्सुत्तमेव रीयति। से तेणट्ठेणं जाव संपराइया किरिया कज्जइ ॥

१३. संवुडस्स णं भंते ! अणगारस्स अवीयीपंथे ठिच्चा पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स जाव[3] तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ ?—पुच्छा। गोयमा ! संवुडस्स णं अणगारस्स अवीयीपंथे ठिच्चा जाव तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ ॥

१४ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—संवुडस्स णं जाव इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ ?

[4]•गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा भवंति तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवंति तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ। अहासुत्तं रीयमाणस्स इरियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ।॰ से णं अहासुत्तमेव रीयति। से तेणट्ठेणं जाव नो संपराइया किरिया कज्जइ ॥

जोणी-पदं

१५. कतिविहा णं भंते ! जोणी पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा—सीया, उसिणा, सीतोसिणा। एवं जोणीपदं निरवसेसं भाणियव्वं[5] ॥

वेदणा-पदं

१६. कतिविहा णं भंते ! वेयणा पण्णत्ता ?

---

१. सं॰ पा॰—ठिच्चा जाव तस्स।
२. सं॰ पा॰—एवं जहा सत्तमसए पढमउद्देसए जाव से।
३. भ॰ १०।११।
४. सं॰ पा॰—जहा सत्तमसए सत्तमुद्देसए जाव से।
५. प॰ ९।

गोयमा ! तिविहा वेयणा पण्णत्ता, तं जहा—सीया, उसिणा, सीग्रोसिणा। एवं वेयणापदं भाणियव्व जाव[1]—

१७. नेरइया णं भंते ! कि दुक्ख वेयणं वेदेति ? सुह वेयणं वेदेति ? ग्रदुक्खमसुह वेयण वेदेति ?

गोयमा ! दुक्ख पि वेयणं वेदेति, सुह पि वेयण वेदेति, ग्रदुक्खमसुह पि वेयणं वेदेति ॥

भिक्खुपडिमा-पदं

१८. मासियण्ण[2] भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स ग्रणगारस्स[3], निच्च 'वोसट्ठकाए, चियत्त-देहे'[4] जे केइ परीसहोवसग्गा उप्पज्जति, त जहा—दिव्वा वा माणुसा वा तिरि-क्खजोणिया वा ते उप्पन्ने सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ ग्रहियासेइ। एव मासिया भिक्खुपडिमा निरवसेसा भाणियव्वा, जहा दसाहि जाव[5] ग्राराहिया भवइ ॥

ग्रकिच्चट्ठाणपडिसेवण-पदं

१९. भिक्खू य ग्रण्णयरं ग्रकिच्चट्ठाण पडिसेवित्ता[6] से ण तस्स ठाणस्स ग्रणालोइय-पडिक्कते काल करेइ नत्थि तस्स ग्राराहणा, से ण तस्स ठाणस्स ग्रालोइय-पडिक्कंते काल करेइ ग्रत्थि तस्स ग्राराहणा ॥

२०. भिक्खू य ग्रण्णयर ग्रकिच्चट्ठाण पडिसेवित्ता तस्स णं एवं भवइ—पच्छा वि ण ग्रह चरिमकालसमयसि एयस्स ठाणस्स ग्रालोएस्सामि[7], °पडिक्कमिस्सामि[8], निंदिस्सामि, गरिहिस्सामि, विउट्टिस्सामि, विसोहिस्सामि, ग्रकरणयाए ग्रब्भु-ट्ठिस्सामि, ग्रहारिय पायच्छित्त तवोकम्म° पडिवज्जिस्सामि, से ण तस्स ठाणस्स ग्रणालोइय[9]°पडिक्कते काल करेइ° नत्थि तस्स ग्राराहणा, से ण तस्स ठाणस्स ग्रालोइय-पडिक्कते कालं करेइ ग्रत्थि तस्स ग्राराहणा ॥

२१. भिक्खू य ग्रण्णयरं ग्रकिच्चट्ठाण पडिसेवित्ता तस्स णं एवं भवइ—जइ ताव समणोवासगा वि कालमासे काल किच्चा ग्रण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उवव-त्तारो भवंति, किमंग ! पुण ग्रह ग्रणपन्नियदेवत्तणंपि[10] नो लभिस्सामि त्ति

---

१. प० ३५।
२. मासिय ण भते (क, ता, स)।
३. अयमाचारो भवतीति शेष.।
४. वोसट्ठे काए चियत्ते देहे (वृ)।
५. दसा° ७।
६. प्रतिषेविता भवतीति गम्यम्। वाचनान्तरे त्वस्य स्थाने पडिसेविज्ज त्ति दृश्यते (वृ)।
७. स० पा०—आलोएस्सामि जाव पडिवज्जि-स्सामि।
८. पडिक्कमामि (ब)।
९. स० पा०—अणालोइय जाव नत्थि।
१०. ग्रणवण्णि° (ब)।

कट्टु से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा।

२२. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[1]॥

तइओ उद्देसो

आइड्ढीए परिड्ढीए वीइवयण-पदं

२३. रायगिहे जाव[2] एव वयासी—आइड्ढीए[3] ण भते! देवे जाव चत्तारि, पच देवावासंतराइ वीतिक्कते[4], तेण परं परिड्ढीए?
हता गोयमा! आइड्ढीए ण [5]°देवे जाव चत्तारि, पच देवावासतराइ वीतिक्कते, तेण पर परिड्ढीए।° एवं असुरकुमारे वि, नवरं—असुरकुमारावासंतराइं, सेस त चेव। एव एएण कमेण जाव थणियकुमारे, एव वाणमंतरे, जोइसिए वेमाणिए जाव तेण पर परिड्ढीए॥

देवाणं विणयविहि-पदं

२४. अप्पिड्ढीए ण भते! देवे महिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?
नो इणट्ठे समट्ठे॥

२५. समिड्ढीए ण भंते! देवे समिड्ढीयस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?
नो इणट्ठे समट्ठे, पमत्तं पुण वीइवएज्जा॥

२६ [6]से भंते! किं विमोहित्ता पभू? अविमोहित्ता पभू?
गोयमा! विमोहित्ता पभू, नो अविमोहित्ता पभू॥

२७. से भंते! किं पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा? पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा?
गोयमा! पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा, नो पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा॥

---

१. भ० १।५१।
२ भ० १।४-१०।
३. आतड्ढिए (अ, स); आतिड्ढीए (क, व, म), आयड्ढीए (ता)
४. वीईवयइ (वृपा)।
५. स० पा०—तं चेव।
६. से ण (व, म, स)।

२८. महिड्ढीए णं भते ! देवे अप्पिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
हंता वीइवएज्जा ॥

२९. से भते ! कि विमोहित्ता पभू ? अविमोहित्ता पभू ?
गोयमा ! विमोहित्ता वि पभू, अविमोहित्ता वि पभू ॥

३०. से भते ! कि पुव्वि विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा ? पुव्वि वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ?
गोयमा ! पुव्वि वा विमोहेत्ता पच्छा वीइवएज्जा, पुव्वि वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ॥

३१. अप्पिड्ढिए[1] णं भते ! असुरकुमारे महिड्ढियस्स असुरकुमारस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एव असुरकुमारेण वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जहा ओहिएण देवेण भणिया । एवं जाव थणियकुमारेण । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिएण एवं चेव ॥

३२. अप्पिड्ढिए णं भंते ! देवे महिड्ढियाए देवीए मज्झंमज्झेण वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

३३. समिड्ढिए[2] ण भते ! देवे समिड्ढियाए देवीए मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?
एव तहेव देवेण य देवीए य दडओ भाणियव्वो जाव वेमाणियाए ॥

३४. अप्पिड्ढिया ण भते ! देवी महिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?
एवं एसो वि ततिओ[3] दडओ भाणियव्वो जाव—

३५. महिड्ढिया वेमाणिणी अप्पिड्ढियस्स वेमाणियस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?
हता वीइवएज्जा ॥

३६. अप्पिड्ढिया ण भते ! देवी महिड्ढियाए देवीए मज्झंमज्झेण वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं समिड्ढिया देवी समिड्ढियाए देवीए तहेव । महिड्ढिया वि देवी अप्पिड्ढियाए देवीए तहेव । एव एक्केक्के तिण्णि-तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जाव—

३७. महिड्ढिया[4] णं भते ! वेमाणिणी अप्पिड्ढियाए वेमाणिणीए मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?
हता वीइवएज्जा ॥

३८. सा भते ! कि विमोहित्ता पभू ? अविमोहित्ता पभू ?

---

१. अप्पड्ढीए (क्व०) ।
२. समड्ढीए (अ) ।
३. तिओ (अ, स,) ।
४. महड्ढिया (क्व) ।

गोयमा ! विमोहित्ता वि पभू, अविमोहित्ता वि पभू। तहेव जाव पुव्विं वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा। एए चत्तारि दंडगा ॥

आसस्स 'खु-खु' करण-पदं

३९ आसस्स णं भंते ! धावमाणस्स किं 'खु-खु' त्ति करेति ?
गोयमा ! आसस्स णं धावमाणस्स हिययस्स य जगयस्स[1] य अंतरा एत्थ णं 'कव्वडए नाम'[2] वाए समुच्छइ[3], जेण आसस्स धावमाणस्स 'खु-खु' त्ति करेति ॥

पण्णवणी-भासा-पदं

४०. अह भंते ! आसइस्सामो, सइस्सामो, चिट्ठिस्सामो, निसिइस्सामो, तुयट्टिस्सामो[4]—पण्णवणी णं एस भासा ? न एसा भासा मोसा ?
हंता गोयमा ! आसइस्सामो, [5]°सइस्सामो, चिट्ठिस्सामो, निसिइस्सामो, तुयट्टिस्सामो—पण्णवणी णं एसा भासा°, न एसा भासा मोसा ॥
४१ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

---

१. जगयस्स (अ, क, स,); जातस्स (ता)।
२. कक्कडनाम (ता); कव्वडए नाम (स)।
३ समुत्थइ (अ, ता, व, म, स)।
४. अतोग्रे गाथाद्वय लभ्यते—
आमंतणी आणवणी,
जायणी तह पुच्छणी य पण्णवणी।
पच्चक्खाणी भासा, भासा इच्छाणुलोमा य ॥
अणभिग्गहिया भासा,
भासा य अभिग्गहम्मि बोद्धव्वा।
संसयकरणी भासा, वोयडमव्वोयडा चेव ॥
(अ, क, ता, व, म, स); अस्मिन् संग्रहगाथाद्वये 'असच्चामोसा' भाषाया द्वादशप्रकारा निरूपिताः सन्ति। प्रज्ञापनायाः भाषापदे एवमेवास्ति। अत्र प्रज्ञापनीभाषाप्रकरणे प्रासङ्गिकरूपेण अमू संग्रहगाथे लिखिते आस्ताम्। केनचित् प्रतिलिपिकर्त्रा मूले प्रक्षिप्ते। उत्तरकाले तथैव अनुगते, वृत्तिकृतापि तथैव व्याख्याते।
५. स० पा०—त चेव जाव न।
६. भ० १।५१।

चउत्थो उद्देसो

तावत्तीसगदेव-पदं

४२. तेण कालेण तेण समएणं वाणियग्गामे नयरे होत्था—वण्णओ[1]। दूतिपलासए चेइए। सामी समोसढे जाव[2] परिसा पडिगया॥

४३. तेण कालेण तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नाम अणगारे जाव[3] उड्ढजाणू[4] °अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ॥

४४. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सामहत्थी नाम अणगारे पगइभद्दए [5]°पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउ-मद्दवसंपन्ने अल्लीणे विणीए समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढ-जाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ॥

४५. तए ण से सामहत्थी अणगारे जायसड्ढे जाव[6] उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भगव गोयम तिक्खुत्तो जाव[7] पज्जुवासमाणे एव वयासी—

४६. अत्थि ण भंते! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा[8] देवा-ताव-त्तीसगा देवा?

हंता अत्थि॥

४७. से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ—चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो ताव-त्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा?

एवं खलु सामहत्थी! तेण कालेण तेण समएण इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे कायंदी नाम नयरी होत्था—वण्णओ[9]। तत्थ ण कायंदीए नयरीए तायत्तीस[10] सहाया[11] गाहावई समणोवासया परिवसंति—अड्ढा जाव[12] बहुजणस्स अपरि-भूता अभिगयजीवाजीवा, उवलद्धपुण्णपावा[13] जाव[14] अहापरिग्गहिएहि तवो-कम्मेहि अप्पाण भावेमाणा विहरंति॥

---

१. ओ० सू० १।
२. भ० १।७,८।
३. भ० १।९।
४. सं० पा०—उड्ढजाणू जाव विहरइ।
५. सं० पा०—जहा रोहे जाव उड्ढजाणू जाव विहरइ।
६. भ० १।१०।
७. भ० १।१०।
८. तायत्तीसगा (क्व०)।
९. ओ० सू० १।
१०. तावत्तीस (क, ता, व, म)।
११. साहाया (अ)।
१२. भ० २।९४।
१३. उवलद्धपुण्ण वण्णओ(अ, क, ता, ब, म, स)।
१४. भ० २।९४।

४८. तए ण ते तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासया पुव्वि उग्गा उग्गविहारी, सविग्गा सविग्गविहारी भवित्ता तओ पच्छा पासत्था पासत्थविहारी, ओसन्ना ओसन्नविहारी, कुसीला कुसीलविहारी, अहाच्छदा अहाच्छदविहारी बहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणित्ता, अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता, तीसं भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कता कालमासे काल किच्चा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसग-देवत्ताए उववण्णा ॥

४९. जप्पभिइ च ण भते ! ते कायदगा तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, तप्पभिइ च ण भते ! एव वुच्चइ—चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

तए ण भगव गोयमे सामहत्थिणा अणगारेण एव वुत्ते समाणे सकिए कखिए वितिगिच्छिए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता सामहत्थिणा अणगारेण सद्धि जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—

५० अत्थि ण भते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

हता अत्थि ॥

५१ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—एवं त चेव सव्व भाणियव्व जाव जप्पभिइ च ण भते ! ते कायदगा तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, तप्पभिइ च ण भते ! एव वुच्चइ—चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

नो इणट्ठे समट्ठे। गोयमा ! चमरस्स ण असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्ती-सगाण देवाण सासए नामधेज्जे पण्णत्ते—ज न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ[1], °भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए° निच्चे, अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए अण्णे चयति, अण्णे उववज्जति ॥

५२. अत्थि ण भते ! बलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

हता अत्थि ॥

---

१. स० पा०—भविस्सइ जाव निच्चे ।

५३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—बलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो[1] ताव-त्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे बेभेले नामं सण्णिवेसे होत्था—वण्णओ[2]। तत्थ णं बेभेले सण्णिवेसे तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया परिवसंति – जहा चमरस्स जाव[3] तावत्तीसग-देवत्ताए उववण्णा ॥

५४ जप्पभिइं च णं भंते ! ते बेभेलगा तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा बलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, सेसं तं चेव जाव[4] निच्चे, अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए अण्णे चयंति, अण्णे उववज्जंति ॥

५५. अत्थि णं भंते ! धरणस्स नागकुमारिदस्स नागकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
हंता अत्थि ॥

५६. से केणट्ठेणं जाव तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
गोयमा ! धरणस्स नागकुमारिदस्स नागकुमाररण्णो तावत्तीसगाणं देवाणं सासए नामधेज्जे पण्णत्ते—जं न कयाइ नासी जाव अण्णे चयंति, अण्णे उवव-ज्जंति। एवं भूयाणंदस्स वि, एवं जाव[5] महाघोसस्स ॥

५७. अत्थि णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो [6]•तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?•
हंता अत्थि ॥

५८. से केणट्ठेणं जाव तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पालए[7] नामं सण्णिवेसे होत्था—वण्णओ। तत्थ णं पालए सण्णिवेसे तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया जहा चमरस्स जाव[8] विहरंति ॥

५९. तए णं ते तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया पुव्विं पि पच्छा वि उग्गा उग्गविहारी, संविग्गा संविग्गविहारी बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउ-णित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा[9] •सक्कस्स देविंदस्स

---

१. जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।
२. ओ० सू० १, एतद्वर्णनं 'नंदणवण-सन्निभ-प्पगासे' एतावदेवग्राह्यम्।
३. भ० १०।४७-४८।
४. भ० १०।४९-५१।
५. भ० ३।२७४।
६. स० पा०—पुच्छा।
७. वालाए (अ); पालाए (ब); पालासए (म)।
८. भ० १०।४७।
९. स० पा०—किच्चा जाव उववन्ना।

देवरण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए° उववन्ना । जप्पभिइं च णं भंते ! ते पालगा[1] तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा, सेस जहा चमरस्स जाव अण्णे उववज्जति ॥

६०. अत्थि ण भंते ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

एव जहा सक्कस्स, नवर—चपाए नयरीए जाव[2] उववण्णा जप्पभिइ च ण भंते ! ते चपिज्जा तायत्तीस सहाया, सेस त चेव जाव अण्णे उववज्जति ॥

६१. अत्थि णं भंते ! सणकुमारस्स देविंदस्स [3]°देवरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?°

हता अत्थि ॥

६२. से केणट्ठेण ?

जहा धरणस्स तहेव, एव जाव पाणयस्स, एव अच्चुयस्स जाव अण्णे उववज्जति ॥

६३. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति[4] ॥

पंचमो उद्देसो

देवाणं तुडिएण सद्धिं दिव्वभोग-पदं

६४. तेण कालेणं तेणं समएण रायगिहे नाम नयरे । गुणसिलए चेइए जाव[5] परिसा पडिगया । तेणं कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी थेरा भगवंतो जाइसपन्ना जहा अट्ठमे सए सत्तमुद्देसए जाव[6] सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरति । तए ण ते थेरा भगवतो जायसड्ढा जायससया जहा गोयमसामी जाव[7] पज्जुवासमाणा एवं वयासी—

६५. चमरस्स णं भंते असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?

---

१. वालगा (अ, म), पालागा (क, व); पालासगा (स) ।
२. भ० १०।५७-५६।
३. स० पा०—पुच्छा ।
४. भ० १।५१।
५ भ० १।४-८।
६ भ० ८।२७२।
७ भ० १।१०।

अज्जो ! पच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—काली, रायी, रयणी, विज्जू, मेहा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ठट्ठ देवीसहस्सं[1] परिवारो पण्णत्तो ॥

६६. पभू ण भते ! ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं अट्ठट्ठ देवीसहस्साइ परियार विउव्वित्तए ?

एवामेव सपुव्वावरेण चत्तालीसं देवीसहस्सा । सेत्त तुडिए ॥

६७. पभू ण भते ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सीहासणसि तुडिएण सद्धि दिव्वाइं भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ?

नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६८. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—नो पभू चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचाए रायहाणीए जाव[2] विहरित्तए ?

अज्जो ! चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचचाए रायहाणीए,सभाए सुहम्माए, माणवए चेइयखभे वइरामएसु गोल-वट्ट-समुग्गएसु बहूओ जिणसकहाओ सन्निक्खित्ताओ चिट्ठति, जाओ ण चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अण्णेसि च बहूण असुरकुमाराण देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ वदणिज्जाओ नमंसणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाण मंगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जाओ भवति[3] । से तेणट्ठेण अज्जो ! एव वुच्चइ—नो पभू चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया[4] •चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सिहासणसि तुडिएण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे° विहरित्तए ॥

६९. पभू ण अज्जो ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सीहासणसि चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं, तायत्तीसाए[5] •तावत्तीसगेहि, चउहि लोगपालेहि, पचहि अग्गमहिसीहि सपरिवाराहि चउसट्ठीए आयरक्खदेवसाहस्सीहि°, अण्णेहि[6] य बहूहि असुरकुमारेहि देवेहि य, देवीहि य सद्धि सपरिवुडे महयाहय[7]•नट्ट-गीय-वाइय-तती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ° भुजमाणे विहरित्तए ?

केवल परियारिड्ढीए, नो चेव णं मेहुणवत्तिय ॥

---

१. °सहस्सा (ता, स) ।
२. भ० १०।६७।
३. भवति तेसिं पणिहाए णो पभू (अ, स) ।
४. स० पा०—असुरकुमारराय जाव विहरित्तए ।
५. स० पा०—तायत्तीसाए जाव अण्णेहि ।
६. अण्णेसिं (अ, स) ।
७ स० पा०—महयाहय जाव भुजमाणे ।

७०. चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्ग-महिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कणगा, कणगलता, चित्तगुत्ता, वसुंधरा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं[1] देवीसहस्सं परिवारे[2] पण्णत्ते ॥

७१. पभू णं ताओ 'एगामेगा देवी'[3] अण्णं एगमेगं देवीसहस्सं परियारं विउव्वित्तए ?
एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तारि देवीसहस्सा। सेत्तं तुडिए ॥

७२. पभू णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमे महाराया सोमाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, सोमंसि सीहासणंसि तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? अवसेसं जहा चमरस्स, नवरं—परियारो जहा[4] सूरियाभस्स। सेसं तं चेव जाव[5] नो चेव णं मेहुणवत्तियं ॥

७३. चमरस्स णं भंते[6] ! °असुरिंदस्स असुरकुमार° रण्णो जमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ ?
एवं चेव[7], नवरं—जमाए रायहाणीए, सेसं जहा सोमस्स। एवं वरुणस्स वि, नवरं—वरुणाए रायहाणीए। एवं वेसमणस्स वि, नवरं—वेसमणाए राय-हाणीए। सेसं तं चेव जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं[8] ॥

७४. बलिस्स णं भंते ! वइरोयणिंदस्स—पुच्छा।
अज्जो ! पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुंभा[9], निसुंभा, रंभा, निरंभा, मदणा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ठट्ठ देवीसहस्सं परिवारो, सेसं जहा चमरस्स, नवरं—बलिचंचाए रायहाणीए, परियारो जहा[10] मोउद्देसए। सेसं तं चेव जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं ॥

७५. बलिस्स णं भंते ! वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—मीणगा, सुभद्दा, विज्जुया[11], असणी। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारो, सेसं जहा चमरसोमस्स एवं जाव वरुणस्स[12] ॥

---

१. एगमेगंसि (स)।
२. परियारो (ता)।
३. एगमेगाओ देवीओ (अ) एगमेगाए देवीए (स)।
४. राय० सू० ७।
५. भ० १०।६७-६९।
६. सं० पा०—भंते जाव रण्णो।
७. भ० १०।७०-७२।
८. °वत्तिय (व)।
९. सुभा (अ, ब, स)।
१०. भ० ३।१२।
११. विजया (स)।
१२. वेसमणस्स (अ, स)।

७६. धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—अला[1], सक्का[2], सतेरा[3], सोदामिणी, इदा, घणविज्जुया । तत्थ ण एगमेगाए देवीए छ-छ देवीसहस्स[4] परिवारो पण्णत्तो ॥

७७. पभू ण ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं छ-छ देविसहस्साइ परियार विउव्वित्तए ? एवामेव सपुव्वावरेण छत्तीसाइ देविसहस्साइं । सेत्त तुडिए ॥

७८ पभू णं भते ! धरणे ? सेसं तं चेव[5], नवरं—धरणाए रायहाणीए, धरणसि सीहासणसि, सओ परियारो[6] । सेसं तं चेव ॥

७९. धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो कालवालस्स[7] महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं जहा—असोगा, विमला, सुप्पभा, सुदंसणा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारो, अवसेस जहा[8] चमरलोगपालाणं । एवं सेसाण तिण्ह वि ॥

८०. भूयाणंदस्स भंते !—पुच्छा ।
अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रूया रूयसा, सुरूया, रूयगावती, रूयकता, रूयप्पभा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए ऐगमेगं देवीसहस्स परिवारे, अवसेसं जहा धरणस्स ॥

८१. भूयाणंदस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो नागचित्तस्स—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुणंदा, सुभद्दा, सुजाया, सुमणा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्सं परिवारे, अवसेस जहा चमरलोगपालाणं । एव सेसाण तिण्ह वि लोगपालाण ।
जे दाहिणिल्ला इंदा तेसिं जहा धरणिंदस्स, लोगपालाण वि तेसि जहा धरणस्स लोगपालाण । उत्तरिल्लाणं इदाण[9] जहा भूयाणंदस्स, लोगपालाण वि तेसि जहा भूयाणदस्स लोगपालाण, नवर—इदाण सव्वेसि रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि, परियारो जहा[10] मोउद्देसए । लोगपालाणं सव्वेसि रायहा-

१. आला (ब); इला (क्व०) ।
२. मक्का (ता, ब, म); सुक्का (स), कमा (ना० २।३।९) ।
३. सतारा (अ, स) ।
४. ०सहस्सा (अ, ता, ब, म, स) ।
५. भ० १०।६७-६९ ।
६. भ० ३।१४।
७. काललोगपालस्स (अ); लोगपालस्स काललोगपालस्स (स) ।
८. भ० १०।७०-७२।
९. × (ता, ब) ।
१०. भ० ३।१४, १५ ।

णीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि, परियारो जहा[1] चमरस्स लोग-पालाणं ॥

८२. कालस्स ण भते ! पिसायिंदस्स पिसायरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—कमला, कमलप्पभा, उप्पला, सुदसणा। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारो, सेसं जहा[2] चमरलोगपालाण। परिवारो तहेव, नवरं—कालाए रायहाणीए, कालसि सीहासणसि, सेस त चेव। एव महाकालस्स वि ॥

८३. सुरूवस्स ण भते ! भूतिदस्स भूतरण्णो—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रूववई, बहुरूवा, सुरूवा, सुभगा। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेसं जहा कालस्स। एव पडिरूवस्स वि ॥

८४ पुण्णभद्दस्स ण भते ! जक्खिदस्स—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पुण्णा, बहुपुत्तिया, उत्तमा, तारया। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्स परिवारे, सेसं जहा कालस्स। एव माणिभद्दस्स वि ॥

८५. भीमस्स णं भंते ! रक्खसिदस्स—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पउमा, वसुमती[3], कणगा, रयणप्पभा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस जहा कालस्स। एवं महाभीमस्स वि ॥

८६. किन्नरस्स ण—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—वडेसा, केतुमती, रतिसेणा, रइप्पिया। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस त चेव। एव किंपुरिसस्स वि ॥

८७. सप्पुरिसस्स ण—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रोहिणी, नवमिया, हिरी, पुप्फवती। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्सं परिवारे, सेसं त चेव। एवं महापुरिसस्स वि ॥

८८ अतिकायस्स ण—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—भुयगा[4], भुयगवती,

---

१. भ० १०।७०-७३।
२. भ० १०।७१, ७२।
३ पउमवती (अ, स), पउमावती (क, म)।
४. भुयगा (स)।

महाकच्छा, फुडा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेसं त चेव । एवं महाकायस्स वि ॥

८६. गीयरइस्स णं—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुघोसा, विमला, सुस्सरा, सरस्सई । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्स परिवारे, सेस तं चेव । एवं गीयजसस्स वि । सव्वेसि एएसि जहा कालस्स, नवर—सरिसनामियाओ रायहाणीओ सीहासणाणि य, सेस त चेव ॥

६० चंदस्स णं भते ! जोइसिदस्स जोइसरण्णो - पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—चदप्पभा, दोसिणाभा[1], अच्चिमाली, पभकरा । एव जहा[2] जीवाभिगमे जोइसियउद्देसए तहेव सूरस्स वि सूरप्पभा, आयवा[3], अच्चिमाली, पभंकरा । सेस त चेव जाव[4] नो चेव ण मेहुणवत्तिय ॥

६१. इंगालस्स णं भते ! महग्गहस्स कति अग्गमहिसीओ—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—विजया, वेजयती, जयती, अपराजिया । तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्स परिवारे, सेस[5] जहा चदस्स, नवर—इगालवडेसए विमाणे, इगालगसि सीहासणसि, सेस त चेव । एवं वियालगस्स वि । एवं अट्ठासीतिए वि महग्गहाण[6] भाणियव्वं जाव[7] भावकेउस्स, नवरं—वडेसगा सीहासणाणि य सरिसनामगाणि, सेस त चेव ॥

६२. सक्कस्स णं भते ! देविदस्स देवरण्णो—पुच्छा ।
अज्जो ! अट्ठ अग्गमहिसिओ पण्णत्ताओ, त जहा—पउमा, सिवा, सची[8], अजू, अमला, अच्छरा, नवमिया, रोहिणी । तत्थ ण एगमेगाए देवीए सोलस-सोलस देवीसहस्सा परिवारो पण्णत्तो ॥

६३. पभू ण ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं सोलस-सोलस देवीसहस्साइ परिवारं विउव्वित्तए ?
एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठावीसुत्तर देवीसयसहस्स । सेत्तं तुडिए ॥

६४. पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे, सोहम्मवडेसए विमाणे, सभाए सुहम्माए, सक्कसि सीहासणसि तुडिएण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ

---

१. ओसिणाभा (ता, स) ।
२. जी० ३ ।
३. आयच्चा (अ, स) .
४. भ० १०।६७-६६ ।
५ सेस त चेव (अ, स) ।
६. महागहाण (अ, क, ब, स) ।
७. ठा० २।३२५ ।
८. सेया (अ, स); सुयी (क, ता, म) ।

भुजमाणे विहरित्तए। सेस जहा चमरस्स, नवरं—परियारो जहा[1] मोउद्देसए ॥

९५. सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ—पुच्छा।

अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रोहिणी, मदणा, चित्ता, सोमा। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्स परिवारे, सेस जहा[2] चमरलोगपालाण, नवर—सयपभे विमाणे, सभाए सुहम्माए, सोमसि सीहासणसि, सेसं त चेव। एव जाव वेसमणस्स, नवर—विमाणाइं जहा[3] ततियसए ॥

९६ ईसाणस्स ण भते!—पुच्छा।

अज्जो! अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हा, कण्हराई, रामा, रामरक्खिया, वसू, वसुगुत्ता, वसुमित्ता, वसुधरा। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस जहा[4] सक्कस्स ॥

९७. ईसाणस्स ण भते! देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ—पुच्छा।

अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पुहवी, राई, रयणी, विज्जू। तत्थ ण एगमेगाए देवोए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेसं जहा सक्कस्स लोगपालाण, एव जाव वरुणस्स, नवर—विमाणा जहा[5] चउत्थसए, सेस त चेव जाव[6] नो चेव ण मेहुणवत्तिय ॥

९८. सेव भते! सेवं भते! त्ति[7] ॥

छट्ठो उद्देसो

सुहम्मा सभा-पदं

९९. कहि णं भते! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता?

गोयमा! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण इमीसे रयणप्पभाए पुढ-

१ भ० ३।१६।
२ भ० १०।७०-७२।
३ भ० ३।२५०, २५१, २५६, २६१, २६६।
४. भ० १०।९२-९४।
५. भ० ४।२-४।
६ भ० १०।९७-९९।
७ भ० १।५१।

वीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो उड्ढं एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव[1] पंच वडेंसगा पण्णत्ता, तं जहा—असोगवडेंसए[2], °सत्तवण्णवडेंसए, चंपगवडेंसए, चूयवडेंसए° मज्झे, सोहम्मवडेंसए। से णं सोहम्मवडेंसए महाविमाणे अद्धतेरस-जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं,

एवं जह सूरियाभे, तहेव माणं[3] तहेव उववाओ।
सक्कस्स य अभिसेओ, तहेव जह सूरियाभस्स।
अलंकारअच्चणिया, तहेव जाव[4] आयरक्ख त्ति ॥१॥

दो सागरोवमाइं ठिती ॥

सक्क-पदं

१००. सक्के णं भंते! देविंदे देवराया केमहिड्ढिए जाव[5] केमहासोक्खे[6]।
गोयमा! महिड्ढिए जाव महासोक्खे। से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससय-सहस्साणं जाव[7] दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ। एमहिड्ढिए जाव एमहासोक्खे सक्के देविंदे देवराया ॥

१०१. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[8] ॥

७-३४ उद्देसा

अंतरदीव-पदं

१०२. कहि णं भंते! उत्तरिल्लाणं एगूरुयमणुस्साणं[9] एगूरुयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते? एवं जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव[10] सुद्धदंतदीवो त्ति। एए अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा ॥

१०३. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव[11] अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

---

१. राय० सू० १२४, १२५।
२. सं० पा०—असोगवडेंसए जाव मज्झे।
३. पमाणं (अ, क, ता, म, स)।
४. राय० सू० १२६-६६६।
५. भ० ३।४।
६. केमहेसक्खे (ब, स)।
७. भ० ३।१६।
८. भ० १।५१।
९. एगुरुय° (अ, म, स)।
१०. जी० ३।
११. भ० १।५१।

एक्कारसं सतं

पढमो उद्देसो

१. उप्पल २. सालु ३. पलासे ४. कुमी ५ नाली य ६. पउम ७. कण्णी य[1] ।
८. नलिण ९ सिव १०. लोग ११,१२. कालालभिय दस दो य एक्कारे[2] ॥१॥

उप्पलजीवाण उववायादि-पदं

१ तेणं कालेण तेण समएणं रायगिहे जाव[3] पज्जुवासमाणे एव वयासी—उप्पले णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
गोयमा ! एगजीवे, नो अणेगजीवे । तेण पर जे अण्णे जीवा उववज्जति ते णं नो एगजीवा अणेगजीवा ॥

२. ते णं भंते ! जीवा कतोहिंतो उववज्जति—कि नेरइएहिंतो उववज्जति ? 'तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ? मणुस्सेहिंतो उववज्जति'[4] ? देवेहिंतो उववज्जंति ?

---

१. या (ब) ।

२. अतोग्रे प्रमोद्देशकद्वारसंग्रहगाथा लभ्यन्ते, ताश्च इमा—

उववाओ परिमाण,
अवहारुच्चत्त बंध वेदे य ।
उदए उदीरणाए,
लेसा दिट्ठी य नाणे य ॥
जोगुवओगे वण्ण,
रसमाई ऊसासगे य आहारे ।
विरई किरिया बंधे,
सन्न कसायित्थि बंधे य ॥
सन्निंदिय अणुबंधे,
संवेहाहार ठिइ समुग्घाए ।
चयण मूलादीसु य,
उववाओ सव्वजीवाण ॥ (वृपा) ॥

३. भ० १।४-१० ।

४. तिरि मणु (अ, क, ता, ब, म, स) ।

गोयमा ! नो नेरइएहितो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति, मणुस्सेहितो उववज्जति देवेहितो वि उववज्जंति। एवं उववाओ भाणियव्वो जहा वक्कतीए वणस्सइकाइयाण जाव[1] ईसाणेति ॥

३. ते णं भंते ! जीवा एगसमए ण केवइया उववज्जति ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा वा[2] असखेज्जा वा उववज्जति ॥

४. ते णं भते ! जीवा समए-समए अवहीरमाणा-अवहीरमाणा केवतिकालेण अवहीरति ?
गोयमा ! ते णं असखेज्जा समए-समए 'अवहीरमाणा-अवहीरमाणा'[3] असखेज्जाहि ओसप्पिणि[4]-उस्सप्पिणीहि अवहीरति, नो चेव ण अवहिया सिया ॥

५. तेसि णं भते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण सातिरेग जोयणसहस्स ॥

६. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि बधगा ? अबधगा ?
गोयमा ! नो अबधगा, बंधए वा, बधगा वा ॥

७. एव जाव अतराइयस्स, नवर—आउयस्स—पुच्छा।
गोयमा ! १ बधए वा २. अबधए वा ३ बंधगा वा ४. अबधगा वा ५. अहवा बधए य अबधए य ६. अहवा बधए य अबधगा य ७ अहवा बधगा य अबधए य ८. अहवा बधगा य अबधगा य—एते अट्ठ भगा ॥

८. ते ण भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि वेदगा ? अवेदगा ?
गोयमा ! नो अवेदगा, वेदए वा, वेदगा वा। एव जाव अतराइयस्स ॥

९. ते णं भते ! जीवा कि सायावेदगा ? असायावेदगा ?
गोयमा ! सायावेदए वा, असायावेदए वा—अट्ठ भगा ॥

१०. ते ण भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि उदई ? अणुदई ?
गोयमा ! नो अणुदई, उदई वा, उदइणो वा। एव जाव अंतराइयस्स ॥

११. ते णं भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि उदीरगा ? अणुदीरगा ?
गोयमा ! नो अणुदीरगा, उदीरए वा, उदीरगा वा। एव जाव अतराइयस्स, नवरं—वेदणिज्जाउएसु अट्ठ भगा ॥

१२. ते णं भंते ! जीवा कि कण्हलेसा ? नीललेसा ? काउलेसा ? तेउलेसा ?

---

१. प० ६।
२. वा उवव (ता)।
३. अवहीरेमाणा २ (स)।
४. ०प्पिणीहिं (ब, म)।

गोयमा ! कण्हलेसे वा[1] •नीललेसे वा काउलेसे वा° तेउलेसे वा, कण्हलेस्सा वा नीललेस्सा वा काउलेस्सा वा तेउलेस्सा वा, अहवा कण्हलेसे य नीललेसे य। एवं एए दुयासंजोग-तियासंजोग-चउक्कसजोगेणं[2] असीती भंगा[3] भवंति ॥

१३. ते णं भंते ! जीवा किं सम्मद्दिट्ठी ? मिच्छादिट्ठी ? सम्मामिच्छादिट्ठी ?
गोयमा ! नो सम्मद्दिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी वा मिच्छादिट्ठिणो वा ॥

१४. ते णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी वा, अण्णाणिणो वा ॥

१५. ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
गोयमा ! नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी वा, कायजोगिणो वा ॥

१६. ते णं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता ?
गोयमा ! सागारोवउत्ते वा, अणागारोवउत्ते वा—अट्ठ भंगा ॥

१७. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा कतिवण्णा, कतिगंधा, कतिरसा, कतिफासा, पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचवण्णा, पंचरसा, दुगंधा, अट्ठफासा पण्णत्ता। ते पुण अप्पणा अवण्णा, अगंधा, अरसा, अफासा पण्णत्ता ॥

१८. ते णं भंते ! जीवा किं 'उस्सासगा ? निस्सासगा ? नोउस्सासनिस्सासगा ?'[4]
गोयमा ! १ उस्सासए वा २ निस्सासए वा ३. नोउस्सासनिस्सासए वा ४. उस्सासगा वा ५ निस्सासगा वा ६ नोउस्सासनिस्सासगा वा १-४ अहवा उस्सासए य निस्सासए य १-४ अहवा उस्सासए य नो उस्सासनिस्सासए य १-४ अहवा निस्सासए य नोउस्सासनिस्सासए य १-८ अहवा उस्सासए य निस्सासए य नोउस्सासनिस्सासए य—अट्ठ भंगा। एते[5] छव्वीस भंगा भवंति ॥

१९. ते णं भंते ! जीवा किं आहारगा ? अणाहारगा ?
गोयमा ! आहारए वा, अणाहारए वा—अट्ठ भंगा ॥

२०. ते णं भंते ! जीवा किं विरया ? अविरया ? विरयाविरया ?
गोयमा ! नो विरया, नो विरयाविरया, अविरए वा अविरया वा ॥

२१. ते णं भंते ! जीवा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! नो अकिरिया, सकिरिए वा, सकिरिया वा ॥

---

१. स० पा०—वा जाव तेउलेसे।
२ चउक्कसजोगेण य (अ, क, ता, म, स); चतुक्कासजोगेण य (व)।
३. द्रष्टव्यम्—भ० १।२१८ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
४ उस्सासा निस्सासा नोउस्सासानिस्सासा (क, ता, म)।
५. एव (ता)।

२२. ते णं भंते ! जीवा किं सत्तविहबंधगा ? अट्ठविहबंधगा ?
गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा—अट्ठ भंगा ॥

२३. ते णं भंते ! जीवा किं आहारसण्णोवउत्ता ? भयसण्णोवउत्ता ? मेहुणसण्णोवउत्ता ? परिग्गहसण्णोवउत्ता ?
गोयमा ! आहारसण्णोवउत्ता—असीती भंगा[1] ॥

२४. ते णं भंते ! जीवा किं कोहकसाई ? माणकसाई ? मायाकसाई ? लोभकसाई ? असीती भंगा[2] ॥

२५. ते णं भंते ! जीवा किं इत्थिवेदगा ? पुरिसवेदगा ? नपुंसगवेदगा ?
गोयमा ! नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदए वा, नपुंसगवेदगा वा ॥

२६. ते णं भंते ! जीवा किं इत्थिवेदबंधगा ? पुरिसवेदबंधगा ? नपुंसगवेदबंधगा ?
गोयमा ! इत्थिवेदबंधए वा, पुरिसवेदबंधए वा, नपुंसगवेदबंधए वा—छव्वीस भंगा[3] ॥

२७. ते णं भंते ! जीवा किं सण्णी ? असण्णी ?
गोयमा! नो सण्णी, असण्णी वा असण्णिणो वा ।

२८. ते णं भंते ! जीवा किं सइंदिया ? अणिंदिया ?
गोयमा ! नो अणिंदिया, सइंदिए वा, सइंदिया वा ॥

२९. से णं भंते ! उप्पलजीवेत्ति[4] कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ॥

३०. से णं भंते ! उप्पलजीवे पुढविजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ॥

३१. से णं भंते ! उप्पलजीवे, आउजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा !
एवं चेव । एवं जहा पुढविजीवे भणिए तहा जाव वाउजीवे भाणियव्वे ॥

३२. से णं भंते ! उप्पलजीवे सेसवणस्सइजीवे[5], से पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ?

१, २. द्रष्टव्यम्—भ० ११२१८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
३. भ० ११।१८।
४. °जीवे (ब) ।
५. से वण० (अ, क, ब, म, स) ।

गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अणताइं भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अणंत काल तरुकाल[1], एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा[2] ॥

३३ से ण भते ! उप्पलजीवे बेइदियजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतिय कालं सेवेज्जा ? केवतिय काल गतिरागति करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेण सखेज्जाइं भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण सखेज्जं काल, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा। एव तेइदियजीवे, एवं चउरिंदियजीवे वि ॥

३४. से ण भते ! उप्पलजीवे पचिदियतिरिक्खजोणियजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति —पुच्छा।
गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइं, कालादेसेण जहण्णेणं दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण पुव्वकोडिपुहत्त, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव मणुस्सेण वि समं जाव एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ॥

३५ ते ण भते ! जीवा किमाहारमाहारेति ?
गोयमा ! दव्वओ अणतपदेसियाइ दव्वाइ, खेत्तओ असखेज्जपदेसोगाढाइं, कालओ अण्णयरकालट्ठिइयाइ, भावओ वण्णमंताइं गंधमंताइं रसमताइ फासमंताइ एव जहा आहारुद्देसए वणस्सइकाइयाण आहारो तहेव जाव[3] सव्वप्पणयाए आहारमाहारेति, नवरं—नियमा छद्दिसि, सेस तं चेव ॥

३६ तेसि ण भते ! जीवाण केवतिय काल ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण दस वाससहस्साइ ॥

३७ तेसि ण भते ! जीवाणं कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणतियसमुग्घाए ॥

३८. ते ण भते ! जीवा मारणतियसमुग्घाएण कि समोहता मरति ? असमोहता मरति ?
गोयमा ! समोहता वि मरति, असमोहता वि मरति ॥

३९. ते ण भते ! जीवा अणंतर उव्वट्टित्ता कहिं गच्छति ? कहि उववज्जति—किं

---

१. × (क, ता, म)। वि (ब)।
२. एव चेव नवरमणत काल जाव कालाएसेण ३. प० २८।१।

नेरइएसु उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति ? एवं जहा वक्कंतीए उव्वट्टणाए वणस्सइकाइयाणं तहा भाणियव्वं[1] ॥

४०. अह भंते ! सव्वपाणा, सव्वभूता, सव्वजीवा, सव्वसत्ता उप्पलमूलत्ताए, उप्पलकंदत्ताए, उप्पलनालत्ताए, उप्पलपत्तत्ताए, उप्पलकेसरत्ताए, उप्पलकण्णियत्ताए, उप्पलथिभगत्ताए[2] उववन्नपुव्वा ?
हंता गोयमा ! असति अदुवा अणंतखुत्तो ॥

४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

बीओ उद्देसो

सालुयादिजीवाणं उववायादि पदं

४२. सालुए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
गोयमा ! एगजीवे। एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा जाव[4] अणंतखुत्तो, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहत्तं, सेसं तं चेव ॥

४३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[5] ॥

---

१. प० ६।
२. ०विभंगत्ताए (अ)।
३. भ० १।५१।
४. भ० ११।१-४०।
५. भ० १।५१।

तइओ उद्देसो

४४. पलासे णं भंते ? एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं गाउयपुहत्ता[1]। देवेहितो[2] न उववज्जति ॥

४५. लेसासु—ते णं भंते ! जीवा कि कण्हलेस्सा ? नीललेस्सा ? काउलेस्सा ?
गोयमा ! कण्हलेस्से वा नीललेस्से वा काउलेस्से वा—छव्वीसं भंगा[3], सेसं तं चेव ॥

४६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

चउत्थो उद्देसो

४७. कुंभिए णं भंते ! एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं जहा पलासुद्देसए तहा भाणियव्वे, नवरं—ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वासपुहत्तं, सेसं तं चेव ॥

४८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[5] ॥

---

१. °पुहुत्त (अ, व)।
२. देवा एएसु (अ, व), देवेसु (ता, म); देवा एएसु चेव (स); वृत्तिकृतापि ११।२ सूत्रस्य सन्दर्भे एव व्याख्या कृतास्ति। अस्माभिरपि तस्य सन्दर्भे एव पाठः स्वीकृतः।
३. भ० ११।१८।
४. भ० १।५१।
५. भ० १।५१।

पंचमो उद्देसो

४९. नालिए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं कुंभिउद्देसगवत्तव्वया निरवसेसं भाणियव्वा ।।

५०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ।।

छट्ठो उद्देसो

५१. पउमे णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा ।।

५२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ।।

सत्तमो उद्देसो

५३. कण्णिए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं चेव निरवसेसं भाणियव्वं ।।

५४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ।।

---

१. भ० १।५१।
२. भ० १।५१।
३. भ० १।५१।

अट्ठमो उद्देसो

५५. नलिणे णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं चेव निरवसेसं जाव[1] अणंतखुत्तो ॥

५६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

नवमो उद्देसो

सिवरायरिसि-पदं

५७. तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे[3] नामं नगरे होत्था—वण्णओ[4] । तस्स णं हत्थिणापुरस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे, एत्थ णं सहसंबवणे नामं उज्जाणे होत्था—सव्वोउय[5]-पुप्फ-फलसमिद्धे रम्मे णंदणवणसन्निभप्पगासे[6] सुहसीतलच्छाए मणोरमे सादुप्फले अकंटए, पासादीए[7] °दरिसणिज्जे अभिरूवे ° पडिरूवे ॥

५८ तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे सिवे नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत—मलय-मंदर-महिंदसारे—वण्णओ[8] । तस्स णं सिवस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था—सुकुमालपाणिपाया—वण्णओ[9] । तस्स णं सिवस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए अत्तए सिवभद्दे नामं कुमारे होत्था—सुकुमालपाणिपाए, जहा सूरियकंते जाव[10] रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठारं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे-पच्चुवेक्खमाणे विहरइ ॥

---

१. भ० ११।१-४०।
२. भ० १।५१।
३. हत्थिणागपुरे (अ, म); हत्थिणपुरे (क); हत्थिणाउरे (ता) ।
४. ओ० सू० १।
५. सव्वोदुय (क, म) ।
६. °सन्निगासे (अ, क, ब, स) ।
७. स० पा०—पासादीए जाव पडिरूवे ।
८. ओ० सू० १४।
९. ओ० सू० १५।
१०. राय० सू० ६७३,६७४।

५६. तए णं तस्स सिवस्स रण्णो अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि रज्जधुर चिंतेमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[1] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं [2]•सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणफलवित्तिविसेसे, जेणाहं हिरण्णेणं वड्ढामि सुवण्णेणं वड्ढामि, धणेणं वड्ढामि, धण्णेणं वड्ढामि°, पुत्तेहिं वड्ढामि, पसूहिं वड्ढामि, रज्जेणं वड्ढामि, एवं रट्ठेणं बलेणं वाहणेणं कोसेणं कोट्ठागारेणं पुरेणं अंतेउरेणं वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण[3]-•मणि-मोत्तिय-संखसिल-प्पवाल-रत्तरयण°-संतसारसावएज्जेणं[4] अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, तं किं णं अहं पुरा पोराणाणं[5] •सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं° 'एगंतसो खयं'[6] उवेहमाणे[7] विहरामि ? तं जावताव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि जाव[8] अतीव-अतीव अभिवड्ढामि जाव मे सामंतरायाणो वि वसे वट्टंति, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[9] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं[10] तंबियं तावसभंडगं घडावेत्ता सिवभद्दं कुमारं रज्जे ठावेत्ता तं सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं तंबियं तावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकूले वाणपत्था तावसा भवंति, [तं जहा—होत्तिया पोत्तिया[11] कोत्तिया जहा ओववाइए जाव[12] आयावणाहिं पंचग्गि-

१. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था

२. सं० पा०—जहा तामलिस्स जाव पुत्तेहिं।

३. सं० पा०—रयण जाव संत०।

४. °सावदेज्जेणं (क, ब, म, स)।

५. सं० पा—पोराणाणं जाव एगंतसोक्खयं।

६. एगंतसोक्खयं (अ)।

७. उव्वेह० (स)।

८. तं चेव जाव (अ, क, ब, म, स)।

९. भ० २।६६।

१०. कडेच्छुयं (क, ता, ब, म)।

११. सोत्तिया (क, ब, वृपा)।

१२. केषुचिदादर्शेषु विस्तृतः पाठोस्ति। तदनन्तरं 'जहा ओववाइए' इति संक्षिप्तपाठस्य सूचनमप्यस्ति। एतद् द्वयोर्वाचनयोः सम्मिश्रणेन जातम्। केवलं 'व' संकेतितादर्शे एकैव विस्तृतवाचना लभ्यते। सा च इत्थमस्ति—होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जण्णई सड्ढई थालई हुंबउट्ठा [हुंचउट्ठा (अ) हुंपउट्ठा (क, ब), उट्टिया (ता)] दंतुक्खलिया उम्मज्जगा सम्मज्जगा निमज्जगा संपक्खाला 'उद्धकंडुयगा अहोकंडुयगा' ['×' (क, ब, म)] दाहिणकूलगा उत्तरकूलगा संखधमगा कूलधमगा मियलुद्धगा हत्थितावसा जलाभिसेयकढिणगत्ता अंबुवासिणो वाउवासिणो सेवालवासिणो [वेलवासिणो (स)] अंबुभक्खिणो वाउभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा पत्ताहारा तयाहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडिय-पंडु-पत्तपुप्फफलाहारा उद्दंडा रुक्खमूलिया मंडलिया बिलवासिणो [वलिवासिणो (क); पलवासिणो (ब); वणवासिणो (म)] दिसापोक्खिया, आतावणेहिं पंचग्गितावेहिं

तावेहिं इंगालसोल्लियं कंदुसोल्लिय कट्ठुसोल्लियं पिव अप्पाण करेमाणा विहरंति]¹ तत्थ ण जे ते दिसापोक्खी तावसा तेसि अतिय मुडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइत्तए, पव्वइते वि य णं समाणे अयमेयारूव अभिग्गह अभिगिण्हिस्सामि—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण दिसाचक्कवालेण तवोकम्मेण उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय² •सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स॰ विहरित्तए, त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव³ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते सुबहु लोहीलोह⁴•कडाह-कडच्छुय तबिय तावसभडगं॰ घडावेत्ता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया! हत्थिणापुर नगर सब्भितरबाहिरिय आसिय-सम्मज्जिओवलित्त जाव⁵ सुगंधवरगधगधिय गधवट्टिभूय करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। ते वि तमाणत्तिय पच्चप्पिणति ॥

६०. तए ण से सिवे राया दोच्च पि कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी —खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया! सिवभद्दस्स कुमारस्स महत्थ महग्घ महरिह विउल रायाभिसेय उवट्ठवेह। तए ण ते कोडुबियपुरिसा तहेव उवट्ठवेति ॥

६१ तए ण से सिवे राया अणेगगणनायग-दडनायग⁶-•राईसर-तलवर-माडबिय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-॰ सधिपाल-सद्धि सपरिवुडे सिवभद्दं कुमार सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुह, निसियावेइ, निसियावेत्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाण कलसाण जाव⁷ अट्ठसएण भोमेज्जाण कलसाणं सव्विड्ढीए जाव⁸ दुदुहि-णिग्घोसणाइयरवेण महया-महया रायाभिसेगेण अभिसिचइ, अभिसि-

---

इगालसोल्लिय कदु (डु)सोल्लियं कट्ठुसोल्लिय पिव अप्पाण करेमाणा विहरति।

'ओववाइय' सूत्रस्य (९४) पूर्णपाठः एवमस्ति—'होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जण्णई सड्ढई थालई हुबउट्ठा दतुक्खलिया उम्मज्जगा सम्मज्जगा निमज्जगा सपक्खाला दक्खिणकूलगा उत्तरकूलगा सखधमगा कूलधमगा मिगलुद्धगा हत्थितावसा उद्दडगा दिसापोक्खिणो वाकवासिणो चेलवासिणो जलवासिणो रुक्खमूलिया अबुभक्खिणो वाउभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कदाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडिय-कंद-मूल-तय-पत्त-पुप्फ-फलाहारा जलाभिसेय-कढिण-गाया आयावणाहिं पंचग्गितावेहिं इंगालसोल्लिय कदुसोल्लिय कट्ठुसोल्लिय पिव अप्पाणं करेमाणा।'

१ असौ कोष्ठकवर्ती पाठ: व्याख्यात: प्रतीयते।
२. स० पा०—पगिज्झिय जाव विहरित्तए।
३. भ० २।६६।
४. स० पा०—लोह जाव घडावेत्ता।
५. ओ० सू० ५५।
६ स० पा०—दडनायग जाव सधिपाल।
७. भ० ९।१८२।
८. भ० ९।१८२।

चित्ता पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचदणेण गायाइं अणुलिपति एवं जहेव जमालिस्स अलकारो तहेव जाव[1] कप्परुक्खगं पिव अलंकिय-विभूसियं करेइ, करेत्ता करयल[2]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अंजलि° कट्टु सिवभद्दं कुमारं जएणं विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं [3]•मणुण्णाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहिं हिययगमणिज्जाहिं वग्गूहिं जयविजयमगलसएहिं अणवरय अभिणदतो य अभित्थुणंतो य एवं वयासी—जय-जय नदा ! जय-जय भद्दा ! भद्द ते, अजिय जिणाहि जियं पालयाहि, जियमज्झे वसाहि । इदो इव देवाण, चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाण, चंदो इव ताराणं, भरहो इव मणुयाण बहूइ वासाइ बहूइं वाससयाइं बहूइं वाससहस्साइ बहूइं वाससयसहस्साइ अणहसमग्गो हट्ठतुट्ठो° परमाउं पालयाहि, इट्ठजणसंपरिवुडे हत्थिणापुरस्स नगरस्स, अण्णेसि च बहूणं गामागर-नगर-[4]•खेड-कव्वड-दोणमुह-मडब-पट्टण-आसम-निगम-सवाह-सण्णिवेसाण आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्त महत्तरगत्त आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय-तती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेण विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे° विहराहि ति कट्टु जयजयसद्दं पउजति ॥

६२. तए णं से सिवभद्दे कुमारे राया जाते—महया हिमवत-महंत-मलय-मंदर-महिदसारे, वण्णओ जाव[5] रज्ज पसासेमाणे विहरइ ॥

६३. तए णं से सिवे राया अण्णया कयाइ सोभणसि तिहि-करण-दिवस-मुहुत्त-नक्खत्तसि विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-[6]•सयण-संबंधि°-परिजण 'रायाणो य खत्तिए य'[7] आमतेति, आमतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए [8]•कयबलिकम्मे कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मंगल्लाइं वत्थाइ पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकिय° सरीरे भोयणवेलाए[9] भोयणमडवंसि सुहासणवरगए तेणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबंधि[10]-परिजणेणं राएहि य खत्तिएहि सद्धिं विपुल असण-पाण-खाइम-साइम [11]•आसादेमाणे वीसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ ।

---

१. भ० ९।१९० ।
२. स० पा०—करयल जाव कट्टु ।
३. स० पा०—जहा ओववाइए कूणियस्स जाव परमाउ ।
४. स० पा०—नगर जाव विहराहि ।
५. ओ० सू० १४ ।
६. सं० पा०—नियग जाव परिजणं ।
७ रायाणो य खत्तिया (अ, क, म, स), रायाणो रायखत्तिए य (ता, ब) ।
८. स० पा०—ण्हाए जाव सरीरे ।
९. × (ता, ब) ।
१०. जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।
११. सं० पा०—एव जहा तामली जाव सक्कारेइ

जिमियभुत्तुरागए वि य णं समाणं आयंते चोक्खे परमसुइब्भूए तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य° सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तं मित्त-नाइ-[1] •नियग-सयण-संबंधि-° परिजणं रायाणो य खत्तिए य सिवभद्दं च रायाणं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं[2] •तंबियं तावसं° भंडगं गहाय जे इमे गंगाकूलगा वाणपत्था तावसा भवंति, तं चेव जाव[3] तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए, पव्वइए वि य णं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हति—'कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं[4] •अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय विहरित्तए'— अयमेयारूवं° अभिग्गहं[5] अभिगिण्हित्ता पढमं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

६४. तए णं से सिवे रायरिसी पढमछट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण[6]-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता पुरत्थिमं दिसं पोक्खेइ, पुरत्थिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं[7] रायरिसिं-अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउ त्ति कट्टु पुरत्थिमं दिसं पसरइ[8], पसरित्ता जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव हरियाणि य ताइं गेण्हइ, गेण्हित्ता किढिण-संकाइयगं भरेइ, भरेत्ता दब्भे य कुसे य समिहाओ य पत्तामोडं च गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं ठवेइ, ठवेत्ता वेदिं वड्ढेइ, वड्ढेत्ता उवलेवण संमज्जणं करेइ, करेत्ता दब्भकलसाहत्थगए[9] जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता 'गंगं महानदिं'[10] ओगाहेइ, ओगाहेत्ता जलमज्जणं करेइ, करेत्ता जलकीडं करेइ, करेत्ता जलाभिसेयं करेइ, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए देवय-पिति-कयकज्जे दब्भकलसाहत्थगए[11] गंगाओ महा-

---

१. सं० पा०—नाइ जाव परिजणं ।
२. सं० पा०—कडच्छुयं जाव भंडगं ।
३. भ० ११।५६ ।
४. सं० पा०—तं चेव जाव अभिग्गहं ।
५. अभिग्गहं अभिगिण्हइ (अ, क, ता, ब, म, स); द्रष्टव्यम्—भ० ३।३३ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
६. कढिण (अ) ।
७. सिवे (ब, स) ।
८. सरइ (ता, म) ।
९. दब्भकलस° (अ), दब्भसगब्भकलसा (सग) हत्थगए (ता, वृपा) ।
१०. गंगामहानदी (क, ब, म) ।
११. दब्भसगब्भकलसा (अ, क, ता, ब, म, स) ।

नदीओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाएहि य वेदिं[1] रएति[2], रएत्ता सरएणं अरणिं महेइ, महेत्ता अग्गिं पाडेइ, पाडेत्ता अग्गिं संधुक्केइ, संधुक्केत्ता समिहाकट्ठाइं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अग्गिं उज्जालेइ, उज्जालेत्ता "अग्गिस्स दाहिणे पासे, सत्तगाइं समादहे," [तं जहा—

सकहं वक्कलं ठाणं, सिज्जाभंडं कमंडलुं ।
दंडदारुं तहप्पाणं, अहे ताइं समादहे ॥१॥][3]

महुणा य घएण य तंदुलेहि य अग्गिं हुणइ, हुणित्ता चरुं साहेइ, साहेत्ता बलिवइस्सदेवं[4] करेइ, करेत्ता अतिहिपूयं करेइ, करेत्ता तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेति ॥

६५. तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

६६. तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चे छट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता [5]°वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता° दाहिणगं दिसं पोक्खेइ, दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, सेसं तं चेव जाव[6] तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥

६७. तए णं से सिवे रायरिसी तच्चं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

६८. तए णं से सिवे रायरिसि [7]°तच्चे छट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता पच्चत्थिमं दिसं पोक्खेइ°, पच्चत्थिमाए दिसाए वरुणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, सेसं तं चेव जाव[8] तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥

६९. तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

७० तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थे छट्ठक्खमण[9]°पारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता° उत्तरदिसं पोक्खेइ,

---

१. वेतिं (अ, क, म, स) ।
२. रयावेइ (ता) ।
३. असौ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांश: प्रतीयते ।
४. बलिविस्सदेवं (अ, क, ता); बलिं विस्सदेवं (ब); बलिविस्सादेवं (म); बलिविइस्सदेवं (स) ।
५. सं० पा०—एवं जहा पढमपारणगं नवरं ।
६. भ० ११।६४ ।
७. सं० पा०—सेसं तं चेव नवरं ।
८. भ० ११।६४ ।
९. सं० पा०—एवं तं चेव नवरं ।

उत्तराए दिसाए वेसमणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, सेसं तं चेव जाव[1] तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥

७१. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं[2] •तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए॰ आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए[3] •पगइउवसंतयाए पगइपयणुकोहमाण-मायालोभयाए मिउमद्दवसपन्नयाए अल्लीणयाए॰ विणीययाए अण्णया कयाइ तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स विब्भंगे नामं नाणे[4] समुप्पन्ने। से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं पासति अस्सिं लोए सत्त दीवे सत्त समुद्दे, तेण परं न जाणइ, न पासइ ॥

७२ तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[5] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे॰ समुप्पज्जित्था—अत्थि णं मम अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुय[6] •तंबिय तावस॰भंडग किढिण-संकाइयगं च गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग[7]-•चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह॰-पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव[8] एवं परूवेइ- अत्थि णं देवाणुप्पिया! मम अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए[9] •सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना॰ दीवा य समुद्दा य ॥

७३. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग[10]-•चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह॰-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[11] परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया! मम अतिसेसे

---

१. भ० ११।६४।
२. सं० पा०—दिसाचक्कवालेण जाव आयावेमाणस्स।
३. सं० पा०—पगइभद्दयाए जाव विणीययाए।
४. अण्णाणे (अ, क, ता, ब, म)।
५. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
६. कडुच्छुय (अ, स); कडेच्छुय (क, ब); सं० पा०—कडच्छुय जाव भंडग।
७. सं० पा०—तिग जाव पहेसु।
८. भ० ११।४२०।
९. सं० पा०—लोए जाव दीवा।
१०. सं० पा०—तिग जाव पहेसु।
११. भ० ११।४२०।

नाणदसणे[1] •समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा°, तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य । से कहमेयं मन्ने एवं ?

७४. तेणं कालेणं तेण समएण सामी समोसढे, परिसा[2] •निग्गया। धम्मो कहिओ परिसा° पडिगया ।।

७५. तेणं कालेण तेणं समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इदभूई नामं अणगारे जहा बितियसए नियंठुद्देसए जाव[3] घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ, बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसि एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! [4]•ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण पर° वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य । से कहमेय मन्ने एव ?

७६. तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म जायसड्ढे [5]•जाव[6] समणं भगवं महावीर वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—एव खलु भंते ! अहं तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे हत्थिणापुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद्द निसामेमि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा°, तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य ।।

७७. से कहमेय भते ! एव ?

गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयम एव वयासी—जण्णं गोयमा ! 'एवं खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेण उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए पगइउवसतयाए पगइपयणुकोहमाणमायालोभयाए मिउमद्दवसपन्नयाए अल्लीणयाए विणीययाए अण्णया कयाइ तयावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमेणं ईहापूहमग्गणगवेसण करेमाणस्स विब्भंगे नाम नाणे

---

१. स० पा०—नाणदसणे जाव तेण ।
२. सं० पा०—परिसा जाव पडिगया ।
३. भ० २।१०६-१०९ ।
४. स० पा०—त चेव जाव वोच्छिन्ना ।
५. स० पा०—जहा नियंठुद्देसए जाव तेण ।
६. भ० २।११० ।

समुप्पन्ने ।' 'तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव' भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-°तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं° वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य ।

तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म °हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा°, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य, तण्णं मिच्छा । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—एवं खलु जंबुद्दीवादीया दीवा, लवणादीया समुद्दा संठाणओ एगविहिविहाणा, वित्थारओ अणेगविहिविहाणा एवं जहा जीवाभिगमे जाव सयंभूरमणपज्जवसाणा अस्सिं तिरियलोए असंखेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो !

७८ 'अत्थि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे दव्वाइं—सवण्णाइं पि, अवण्णाइं पि सगंधाइं पि अगंधाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइं पि अफासाइं पि, अण्णमण्णबद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं °अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं अण्णमण्ण° घडत्ताए चिट्ठंति ? हंता अत्थि' ॥

७९ 'अत्थि णं भंते ! लवणसमुद्दे दव्वाइं—सवण्णाइं पि अवण्णाइं पि, सगंधाइं पि अगंधाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइं पि अफासाइं पि अण्णमण्णबद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं °अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं अण्णमण्ण° घडत्ताए चिट्ठंति ? हंता अत्थि' ॥

---

१. अस्य पाठस्य स्थाने सर्वेषु आदर्शेषु निम्ननिर्दिष्ट. पाठोस्ति—'से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ', किन्तु पौर्वापर्यसमालोचनया नास्य सङ्गतिर्जायते । 'से बहुजणे' इत्यादिपाठः 'भंडनिक्खेवं करेइ' (७२) अतः उत्तरवर्ती (७३) वर्तते । अस्य पूर्वविन्यासो नैव युक्तः स्यात् । संभाव्यते संक्षेपीकरणे क्वचिद् विपर्यासो जात. । आस्माभिरस्य पाठस्य सङ्गतिरुत्तरवर्तिना ८३ सूत्रेण संपादितास्ति ।

२. भ० ११।६३-७२ ।

३. स० पा०—तं चेव जाव वोच्छिन्ना ।

४. स० पा०—तं चेव जाव तेणं ।

५. भ० ६।१५६।

६. स० पा०—अण्णमण्णपुट्ठाइं जाव घडत्ताए ।

७. × (अ, क, ब, म) ।

८. स० पा०—अण्णमण्णपुट्ठाइं जाव घडत्ताए ।

९. × (ता) ।

८०. अत्थि णं भंते ! धायइसंडे दीवे दव्वाइं सवण्णाइं पि [1]•अवण्णाइं पि, सगंधाइं पि अगंधाइं पि, सरसाइ पि अरसाइ पि, सफासाइ पि अफासाइ पि अण्णमण्ण-बद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइ अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति ?
हंता अत्थि° । एव जाव—

८१. [2]•अत्थि णं भंते ! सयंभूरमणसमुद्दे दव्वाइं—सवण्णाइं पि अवण्णाइ पि, सगंधाइं पि, अगंधाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइ पि अफासाइ पि अण्णमण्णबद्धाइ अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णवद्धपुट्ठाइं अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति?
हता अत्थि° ॥

८२. तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए[3] एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समण भगव महावीर वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥

८३. तए ण हत्थिणापुरे नगरे सिघाडग[4]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[5] परूवेइ जण्ण देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे नाण[6]•दंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य° समुद्दा य। तं नो इणट्ठे समट्ठे, समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एवं खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं तं चेव जाव[7] भडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिघाडग[8]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एव खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य° समुद्दा य। तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म जाव[9] तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य तण्ण मिच्छा, समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ—एवं खलु जबुद्दीवादीया दीवा लवणादीया समुद्दा तं चेव जाव[10] असखेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो !

८४. तए णं से सिवे रायरिसी बहुजणस्स अतिय एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था। तए ण

---

१. स० पा०—एव चेव ।
२. स० पा०—सयभूरमणसमुद्दे जाव हता ।
३. अतिय (अ, क, स) ।
४. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।
५. भ० १।४२० ।
६. सं० पा०—नाण जाव समुद्दा ।
७ भ० ११।७७।
८. स० पा०—सिंघाडग जाव समुद्दा ।
९. भ० ११।७३।
१०. भ० ११।७७।

तस्स सिवस्स रायरिसिस्स संकियस्स कंखियस्स[1] •वितिगिच्छियस्स भेदसमावन्नस्स॰ कलुससमावन्नस्स से विभंगे नाणे[2] खिप्पामेव परिवडिए ॥

८५. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[3] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे॰ समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे तित्थगरे आदिगरे जाव[4] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं जाव[5] सहसंबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं[6] •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे॰ विहरइ, तं महप्फलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स [7]•वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स॰ गहणयाए? तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि जाव[8] पज्जुवासामि, एयं णे इहभवे य परभवे य[9] •हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए॰ भविस्सइ त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तावसावसहं अणुप्पविसइ अणुप्पविसित्ता सुबहुं लोही-लोहकडाह[10]-•कडच्छुयं तंबियं तावसभंडगं॰ किढिण-संकाइयगं च गेण्हइ गेण्हित्ता तावसावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पडिवडियविब्भंगे हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो[11] वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने नातिदूरे[12]•सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं॰पंजलिकडे[13] पज्जुवासइ ॥

८६. तए णं समणे भगवं महावीरे सिवस्स रायरिसिस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए[14] धम्मं परिकहेइ जाव[15] आणाए आराहए भवइ ॥

८७. तए णं से सिवे रायरिसी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म जहा खंदओ जाव[16] उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सुबहुं लोही-लोहकडाह[17]-•कडच्छुयं तंबियं तावसभंडगं॰ किढिण-संकाइयगं च

---

१. सं॰ पा॰—कंखियस्स जाव कलुस॰।
२. अण्णाणे (क, स)।
३. सं॰ पा॰—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
४. भ॰ १।७।
५. ओ॰ सू॰ १६।
६. सं॰ पा॰—अहापडिरूवं जाव विहरइ।
७. सं॰ पा॰—जहा ओववाइए जाव गहणयाए।
८. भ॰ २।३०।
९. सं॰ पा॰—य जाव भविस्सइ।
१०. सं॰ पा॰—लोहकडाह जाव किढिण।
११. तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं (स)।
१२. सं॰ पा॰—नातिदूरे जाव पंजलिकडे।
१३. पंजलियडे (ता)।
१४. पू॰—ओ॰ सू॰ ७१।
१५. ओ॰ सू॰ ७१-७७।
१६. भ॰ २।५२।
१७. सं॰ पा॰—लोहकडाह जाव किढिण।

एगंते एडेइ, एडेत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं जहेव उसभदत्तो तहेव पव्वइओ, तहेव एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, तहेव सव्व जाव[1] सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

८८. भंतेति ! भगव गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—जीवा णं भते ! सिज्झमाणा कयरम्मि संघयणे सिज्झति ?
गोयमा ! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झति, एव जहेव ओववाइए तहेव ।
'संघयण सठाण, उच्चत आउय च परिवसणा ।'[2]
एवं सिद्धिगडिया निरवसेसा भाणियव्वा जाव[3]—
अव्वाबाह सोक्ख, अणुहोंति सासय सिद्धा ॥

८९. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति[4] ॥

दसमो उद्देसो

खेत्तलोय-पदं

९०. रायगिहे जाव[5] एवं वयासी—कतिविहे णं भंते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे लोए पण्णत्ते, तं जहा—दव्वलोए, खेत्तलोए, काललोए, भावलोए ॥

९१. खेत्तलोए ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त जहा—अहेलोयखेत्तलोए[6], तिरियलोयखेत्तलोए, उड्ढलोयखेत्तलोए ॥

९२. अहेलोयखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—रयणप्पभापुढविअहेलोयखेत्तलोए[7] जाव[8] अहेसत्तमापुढविअहेलोयखेत्तलोए ॥

---

१. भ० ९।१५०,१५१।
२. एतत् सग्रहगाथार्धं औपपातिके नोपलभ्यते । इदं च कुतश्चिद् अन्यस्थानाद् उद्धृतमस्ति ।
३. ओ० सू० १९५।
४. भ० १।५१।
५. भ० १।४-१०।
६. अहो° (अ, क, म, स); अधे° (ता) ।
७. रयणप्पभ° (ता) ।
८. भ० २।७५।

९३. तिरियलोयखेत्तलोए ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! असंखेज्जविहे पण्णत्ते, त जहा—जबुद्दीवे दीवे तिरियलोयखेत्तलोए जाव सयभूरमणसमुद्दे तिरियलोयखेत्तलोए ॥

९४. उड्ढलोयखेत्तलोए णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पन्नरसविहे पण्णत्ते, त जहा—सोहम्मकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए[1] •ईसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभलोय-लतय - महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण°-अच्चुयकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए, गेवेज्जविमाणउड्ढलोयखेत्तलोए, अणुत्तरविमाणउड्ढलोयखेत्तलोए, ईसिपब्भारपुढविउड्ढलोयखेत्तलोए ॥

९५. अहेलोयखेत्तलोए ण भते ! किसठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! तप्पागारसठिए पण्णत्ते ॥

९६ तिरियलोयखेत्तलोए ण भते ! किसठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! झल्लरिसठिए पण्णत्ते ॥

९७ उड्ढलोयखेत्तलोए णं भते ! किसठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! उड्ढमुइगाकारसठिए पण्णत्ते ॥

लोयसंठाण-पद

९८. लोए ण भंते ! किसठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! सुपइट्ठगसठिए पण्णत्ते[2], त जहा—हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्झे सखित्ते, [3]•उप्पि विसाले; अहे पलियकसठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पि उद्धमुइगाकारसठिए।
तसि च ण सासयसि लोगसि हेट्ठा विच्छिण्णसि जाव उप्पि उद्धमुइंगाकारसठियसि उप्पण्णनाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ-पासइ, अजीवे वि जाणइ-पासइ, तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाण° अत करेइ ॥

अलोयसठाण-पद

९९. अलोए ण भते ! किसठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! झुसिरगोलसठिए[4] पण्णत्ते ॥

---

१. स० पा०—सोहम्मकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए जाव अच्चुय० ।
२. लोए पण्णत्ते (अ, क, ब, म, स) ।
३. स० पा०—जहा सत्तमसए पढमुद्देसए जाव अत ।
४. सुसिरगोलकसठिए (ब) ।

लोयालोए जीवाजीव-मग्गणा-पदं

१००. अहेलोयखेत्तलोए णं भंते ! कि १. जीवा २. जीवदेसा ३. जीवपदेसा ४. अजीवा ५. अजीवदेसा ६. अजीवपदेसा ?

[1]•गोयमा ! जीवा वि, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि।

जे जीवा ते नियमा एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया, अणिंदिया।

जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा।

जे जीवपदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा बेइंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा।

जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवा य, अरूविअजीवा य।

जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणुपोग्गला।

जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—१. नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे २. धम्मत्थिकायस्स पदेसा ३. नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे ४. अधम्मत्थिकायस्स पदेसा ५. नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे ६. आगासत्थिकायस्स पदेसा° ७ अद्धासमए॥

१०१. तिरियलोयखेत्तलोए ण भंते ! कि जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेसा ?

एवं चेव। एवं उड्ढलोयखेत्तलोए वि, नवरं—अरूवी छव्विहा, अद्धासमयो नत्थि॥

१०२. लोए ण भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेसा ?

जहा बितियसए अत्थिउद्देसए लोयागासे[2], नवरं—अरूवि अजीवा सत्तविहा[3] •पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए नोअधम्मत्थिकायस्स देसे°, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए, सेसं तं चेव॥

१०३. अलोए णं भंते ! कि जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेसा ?

एवं जहा अत्थिकायउद्देसए अलोयागासे, तहेव निरवसेसं जाव[4] सव्वागासे अणंतभागूणे॥

---

१. सं० पा०—एवं जहा इंदा दिसा तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव अद्धासमए।

२. भ० २।१३६, १०१४।

३. सं० पा०—सत्तविहा जाव अधम्मत्थि•।

४. भ० २।१४०।

१०४. अहेलोगखेत्तलोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे किं १ जीवा २. जीवदेसा ३. जीवपदेसा ४. अजीवा ५. अजीवदेसा ६. अजीवपदेसा ?
गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि ।
जे जीवदेसा ते नियमं १. एगिंदियदेसा २ अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसे ३. अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा । एवं मज्झिल्लविरहिओ[1] जाव[2] अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियाण य देसा । जे जीवपदेसा ते नियमं १. एगिंदियपदेसा २ अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियस्स पदेसा ३. अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियाण य पदेसा, एवं आइल्लविरहिओ[3] जाव पंचिंदिएसु, अणिंदिएसु तियभंगो ।
जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूवी अजीवा य, अरूवी अजीवा य । रूवी तहेव । जे अरूवी अजीवा ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसे, [4]°नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसे°, अद्धासमए ॥

१०५ तिरियलोगखेत्तलोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे किं जीवा ?
एवं जहा[5] अहेलोगखेत्तलोगस्स तहेव, एवं उड्ढलोगखेत्तलोगस्स वि, नवरं—अद्धासमयो नत्थि । अरूवी चउव्विहा ॥

१०६ [6]°लोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे किं जीवा° ?
जहा अहेलोगखेत्तलोगस्स एगम्मि आगासपदेसे ॥

१०७ अलोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे—पुच्छा ।
गोयमा ! नो जीवा, नो जीवदेसा, [7]°नो जीवप्पदेसा, नो अजीवा नो अजीवदेसा, नो अजीवप्पदेसा, एगे अजीवदव्वदेसे अगरुयलहुए° अणंतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासस्स अणंतभागूणे ॥

१०८ दव्वओ णं अहेलोगखेत्तलोए 'अणंता जीवदव्वा, अणंता अजीवदव्वा'[8], अणंता

---

१ 'अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसा' इत्येवं रूपो यो मध्यमभङ्गः तद्विरहितोसौ त्रिकभङ्गः । मध्यमभङ्गकस्य असम्भवात् तथाहि द्वीन्द्रियस्स एकत्राकाशप्रदेशे बहवो देशा न सन्ति, देशस्यैवभावात् (वृ) ।

२. जाव अणिंदिएसु जाव (अ, क, ता, व, म) ।

३. 'अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियस्स य पदेसे' इत्येवरूपाद्यभङ्गकविरहितः त्रिकभङ्गः, तथाहि नास्त्येव एकत्राकाशप्रदेशे केवलसमुद्घातं विना एकस्य जीवस्य एकप्रदेश. सम्भवोऽसङ्ख्यातानामेव भावात् (वृ) ।

४ सं० पा०—एवं अधम्मत्थिकायस्स वि ।

५. भ० ११।१०४।

६. सं० पा०—लोगस्स ।

७. सं० पा०—तं चेव जाव अणंतेहिं ।

८ अणंताइं जीवदव्वाइं अणंताइं अजीवदव्वाइं (क, व, म) ।

जीवाजीवदव्वा। एवं तिरियलोयखेत्तलोए वि, 'एवं उड्ढलोयखेत्तलोए वि (एवं लोए वि ?)'[1]। दव्वओ णं अलोए नेवत्थि जीवदव्वा, नेवत्थि अजीवदव्वा, नेवत्थि जीवाजीवदव्वा, एगे अजीवदव्वदेसे[2] •अगरुयलहुए अणंतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते॰ सव्वागासस्स अणंतभागूणे।

कालओ ण अहेलोयखेत्तलोए न कयाइ नासि[3], •न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु य, भवइ य, भविस्सइ य—धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए॰ निच्चे, एवं[4] •तिरियलोयखेत्तलोए, एवं उड्ढलोयखेत्तलोए, एवं लोए एवं॰ अलोए।

भावओ ण अहेलोयखेत्तलोए अणता वण्णपज्जवा, [5]•अणंता गंधपज्जवा, अणंता रसपज्जवा, अणता फासपज्जवा, अणता संठाणपज्जवा, अणंता गरुयलहुयपज्जवा,॰ अणता अगरुयलहुयपज्जवा, एवं[6] •तिरियलोयखेत्तलोए, एवं उड्ढलोयखेत्तलोए, एवं॰ लोए। भावओ ण अलोए नेवत्थि वण्णपज्जवा,[7] •नेवत्थि गंधपज्जवा, नेवत्थि रसपज्जवा, नेवत्थि फासपज्जवा, नेवत्थि संठाणपज्जवा॰, नेवत्थि गरुयलहुयपज्जवा[8], एगे अजीवदव्वदेसे[9] •अगरुयलहुए अणतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं सजुत्ते सव्वागासस्स॰ अणतभागूणे॥

लोयस्स परिमाण-पद

१०६. लोए णं भंते! केमहालए पण्णत्ते?

गोयमा! अयण्णं जबुद्दीवे दीवे सव्वदीव[10]-•समुद्दाण सव्वब्भंतराए जाव[11] एगं जोयणसयसहस्स आयाम-विक्खंभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलससहस्साइं

---

१. पूर्वक्रमानुसारेणात्रलोकसूत्रमपेक्षितमस्ति, किन्तु कस्मिन्नपि आदर्शे नैव लभ्यते। कारणमत्र न ज्ञायते। अपेक्षितसूत्रस्य पाठस्य क्रम एव स्यात्—'एव उड्ढलोयखेत्तलोए वि, एव लोए वि'।

२. सं॰ पा॰—अजीवदव्वदेसे जाव सव्वागासस्स

३. सं॰ पा॰—नासि जाव निच्चे।

४. सं॰ पा॰—एव जाव अलोए।

५. सं॰ पा॰—जहा खदए जाव अणता।

६. सं॰ पा॰—एव जाव लोए।

७. सं॰ पा॰—वण्णपज्जवा जाव नेवत्थि।

८. अगरुयलहुय॰ (अ, क, ब, म, स, वृ); अलोके अगुरुलघुपर्यवाणा भावात् अत्र 'नेवत्थि गरुयलहुयपज्जवा' एतत्पर्यन्त एव पाठो युज्यते 'ता' प्रतौ एवमेवास्ति। वृत्तिकृता 'जाव नेवत्थि अगरुयलहुयपज्जवा' इति पाठो लब्धस्तेन अर्थसङ्गतिकरणाय एव व्याख्या कृता—अगुरुलघुपर्यवोपेतद्रव्याणा पुद्गलानां तत्राभावात् (वृ)। यदि वृत्तिकृता शुद्ध. पाठो लब्धोभविष्यत् तदा अस्या व्याख्याया नावश्यकताभविष्यत्।

९. सं॰ पा॰—अजीवदव्वदेसे जाव अणंतभागूणे।

१०. सं॰ पा॰—सव्वदीव जाव परिक्खेवेण।

११. ठा॰ १।२४८।

दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस अंगुलाइं अद्धगुलगं च किंचिविसेसाहिए° परिक्खेवेण।
तेणं कालेणं तेणं समएणं छ देवा महिड्ढीया जाव[1] महासोक्खा[2] जंबुद्दीवे दीवे मंदरे पव्वए मंदरचूलियं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठेज्जा। अहे णं चत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ चत्तारि बलिपिंडे गहाय जंबुद्दीवस्स दीवस्स चउसु वि दिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा ते चत्तारि बलिपिंडे जमगसमगं बहियाभिमुहे[3] पक्खिवेज्जा। पभू णं गोयमा! तओ एगमेगे देवे ते चत्तारि बलिपिंडे धरणितलमसपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए। ते णं गोयमा! देवा ताए उक्किट्ठाए[4] •तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धुयाए दिव्वाए° देवगईए एगे देवे पुरत्थाभिमुहे पयाते 'एगे देवे दाहिणाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे उत्तराभिमुहे पयाते, एगे देवे उड्ढाभिमुहे पयाते'[5] एगे देवे अहोभिमुहे पयाते।
तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससहस्साउए दारए पयाते। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति। तए णं तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवति, नो चेव णं[6] •ते देवा लोगंतं° संपाउणंति। तए णं तस्स दारगस्स अट्ठिमिंजा पहीणा भवंति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति। तए णं तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवंसे पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति। तए णं तस्स दारगस्स नामगोए वि पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति।
तेसिं णं भंते! देवाणं किं गए बहुए? अगए बहुए? गोयमा! गए बहुए, नो अगए बहुए, गयाओ से अगए असंखेज्जइभागे, अगयाओ से गए असंखेज्जगुणे। लोए णं गोयमा! एमहालए पण्णत्ते॥

अलोयस्स परिमाण-पदं

११०. अलोए णं भंते! केमहालए पण्णत्ते?
गोयमा! अयण्णं समयखेत्ते पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, •[7]एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य अउणापन्नजोयणसए किंचि विसेसाहिए° परिक्खेवेणं।

---

१. भ० ३।४।
२. महेसक्खा (अ, ता, व, स); महासुक्खा (क)।
३. बहिभिमुहे (क, ता)।
४. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव देवगईए।
५. एवं दाहिणाभिमुहे एवं पच्चत्थाभिमुहे एवं उत्तराभिमुहे एवं उड्ढाभिमुहे (अ, क, ता, व, म, स)।
६. सं० पा०—णं जाव संपाउणंति।
७. सं० पा०—जहा खंदए जाव परिक्खेवेणं।

तेणं कालेणं तेणं समएणं दस देवा महिड्ढिया •[1]जाव[2] महासोक्खा जंबुद्दीवे दीवे मदरे पव्वए मंदरचूलियं सव्वओ समंता° संपरिक्खित्ताणं संचिट्ठेज्जा, अहे णं अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ अट्ठ बलिपिडे गहाय माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स चउसु वि दिसासु चउसु वि विदिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा ते अट्ठ बलिपिडे जमगसमगं बहियाभिमुहे[3] पक्खिवेज्जा। पभू णं गोयमा! तओ एगमेगे देवे ते अट्ठ बलिपिंडे धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए। ते णं गोयमा! देवा ताए उक्किट्ठाए[4] •तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए° देवगईए लोगते ठिच्चा असब्भावपट्ठवणाए एगे देवे पुरत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे दाहिणपुरत्थाभिमुहे पयाते, [5]•एगे देवे दाहिणाभिमुहे पयाते, एगे देवे दाहिणपच्चत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्थउत्तराभिमुहे पयाते, एगे देवे उत्तराभिमुहे पयाते एगे देवे° उत्तरपुरत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे उड्ढाभिमुहे पयाते, एगे देवे अहोभिमुहे पयाते।

तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससयसहस्साउए दारए पयाते। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं सपाउणंति। [6]•तए ण तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणंति। तए णं तस्स दारगस्स अट्ठिमिंजा पहीणा भवंति, नो चेव णं ते देवा अलोयतं संपाउणति। तए णं तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवसे पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणंति। तए ण तस्स दारगस्स नामगोए वि पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणति।°

तेसि णं भते! देवाणं किं गए बहुए? अगए बहुए? गोयमा! नो गए बहुए, अगए बहुए, गयाओ से अगए अणंतगुणे, अगयाओ से गए अणंतभागे। अलोए णं गोयमा! एमहालए पण्णत्ते॥

लोगागासे जीवपदेस-पदं

१११. लोगस्स णं भंते! एगम्मि आगासपदेसे जे एगिंदियपदेसा जाव पंचिंदियपदेसा अणिंदियपदेसा अण्णमण्णबद्धा अण्णमण्णपुट्ठा[7] •अण्णमण्णबद्धपुट्ठा° अण्णमण्ण-

---

१. स० पा०—तहेव जाव संपरिक्खित्ताण।

२. भ० ३।४।

३. बाहियाभिमुहीओ (अ, क, ता, व, म, स); अस्य पूर्ववर्तिलोकसूत्रे 'बहियामुहे' इति पाठोस्ति। अत्र सदृशे एव प्रकरणे केनचिद् लिपिदोषादिकारणेन परिवर्तनं दृश्यते। अस्माभि. पूर्वसूत्रानुसारी पाठ स्वीकृत.।

४. स० पा०—उक्किट्ठाए जाव देवगईए।

५. स० पा०—एवं जाव उत्तर°।

६. स० पा०—तं चेव जाव तेसि।

७. स० पा०—अण्णमण्णपुट्ठा जाव अण्णमण्ण°

घडत्ताए चिट्ठंति ? अत्थि णं भंते ! अण्णमण्णस्स किंचि आवाहं वा वावाहं वा उप्पायंति ? छविच्छेदं वा करेंति ?

नो इणट्ठे समट्ठे ॥

११२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—लोगस्स णं एगम्मि आगासपदेसे जे एगिंदिय-पदेसा जाव अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति, नत्थि णं भंते ! अण्णमण्णस्स किंचि आवाहं वा[1] •वावाहं वा उप्पायंति ? छविच्छेदं वा° करेंति ?

गोयमा ! से जहानामए नट्टिया सिया—सिंगारागारचारुवेसा[2] •संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास°कलिया रंगट्ठाणंसि जणसयाउलंसि (जणसहस्साउलंसि ?) जणसयसहस्साउलंसि बत्तीसइविहस्स नट्टस्स अण्णयरं नट्टविहिं उवदंसेज्जा, से नूणं गोयमा ! ते पेच्छगा तं नट्टियं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएंति ?

हंता समभिलोएंति ।

ताओ णं गोयमा ! दिट्ठीओ तंसि नट्टियंसि सव्वओ समंता सन्निपडियाओ ?

हंता सन्निपडियाओ[3] । अत्थि णं गोयमा ! ताओ दिट्ठीओ तीसे नट्टियाए किंचि वि आबाहं वा वावाहं वा उप्पायंति ? छविच्छेदं वा करेंति ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

'सा वा'[4] नट्टिया तासिं दिट्ठीणं किंचि आवाहं वा वावाहं वा उप्पाएति ? छविच्छेदं वा करेइ ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

ताओ वा दिट्ठीओ अण्णमण्णाए दिट्ठीए किंचि आवाहं वा वावाहं वा उप्पाएंति ? छविच्छेदं वा करेंति ?

नो इणट्ठे समट्ठे । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—[5]•लोगस्स णं एगम्मि आगासपदेसे जे एगिंदियपदेसा जाव अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति, नत्थि णं अण्णमण्णस्स आवाहं वा वावाहं वा उप्पायंति°, छविच्छेदं वा करेंति ॥

११३ लोगस्स णं भंते एगम्मि आगासपदेसे जहण्णपए जीवपदेसाणं, उक्कोसपए जीवपदेसाणं सव्वजीवाण य कयरे कयरेहिंतो[6] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

---

१. सं० पा०—आवाहं वा जाव करेंति ।

२. सं० पा०—सिंगारागारचारुवेसा जाव कलिया ।

३. सन्निवडियाओ (ब) ।

४. अहवा सा (अ, स) ।

५. सं० पा०—तं चेव जाव छविच्छेदं ।

६. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा लोगस्स एगम्मि आगासपदेसे जहण्णपए जीवपदेसा, सव्वजीवा असंखेज्जगुणा, उक्कोसपए जीवपदेसा विसेसाहिया ॥

११४ सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

एक्कारसमो उद्देसो

सुदंसणसेट्ठि-पदं

११५. तेणं कालेण तेणं समएणं वाणियग्गामे नाम नगरे होत्था—वण्णओ[2]। दूतिपलासे चेइए—वण्णओ जाव[3] पुढविसिलापट्टओ। तत्थ णं वाणियग्गामे नगरे सुदंसणे नामं सेट्ठी परिवसइ—अड्ढे जाव[4] बहुजणस्स अपरिभूए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव[5] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। सामी समोसढे जाव[6] परिसा पज्जुवासइ ॥

११६ तए णं से सुदंसणे सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे ण्हाए कय[7]°बलिकम्मे कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेण पायविहारचारेणं महयापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते वाणियग्गाम नगर मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव दूतिपलासे[8] चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पचविहेण अभिगमेण अभिगच्छइ, [तं जहा—सच्चित्ताणं दव्वाण विओसरणयाए][9] जहा उसभदत्तो जाव[10] तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥

११७. तए णं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स सेट्ठिस्स तीसे य महतिमहालियाए[11] परिसाए[12] धम्मं परिकहेइ जाव[13] आणाए आराहए भवइ ॥

---

१. भ० १।५१।
२. ओ० सू० १।
३. ओ० सू० २-१३।
४. भ० २।९४।
५. भ० २।९४।
६. ओ० सू० १६-५२।
७. सं० पा०—कय जाव पायच्छित्ते ।
८. दूतिपलासए (अ) ।
९. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।
१०. भ० ९।१४५।
११. °महालयाए (स) ।
१२. पू०—ओ० सू० ७१।
१३. ओ० सू० ७१-७७।

११८. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो[1] °आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—

११९. कतिविहे णं भंते ! काले पण्णत्ते ?
सुदंसणा ! चउव्विहे काले पण्णत्ते, तं जहा—पमाणकाले, अहाउनिव्वत्तिकाले, मरणकाले, अद्धाकाले ॥

१२०. से किं तं पमाणकाले ?
पमाणकाले दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दिवसप्पमाणकाले, राइप्पमाणकाले[2] य । चउपोरिसिए दिवसे, चउपोरिसिया राई भवइ । उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ॥

१२१. जदा णं भंते ! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं कतिभागमुहुत्तभागेण परिहायमाणी-परिहायमाणी जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ? जदा णं जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं कतिभागमुहुत्तभागेण परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ?
सुदंसणा ! जदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं बावीससयभागमुहुत्तभागेण परिहायमाणी-परिहायमाणी जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ । जदा वा जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं बावीससयभागमुहुत्तभागेण परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ॥

१२२. कदा णं भंते ! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ? कदा वा जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ?
सुदंसणा ! जदा णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ । जदा णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्तिया राई भवई, जहण्णिए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ ॥

---

१. स० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता । २. रत्ति° (अ, क, व, म) ।

१२३ कदा णं भंते ! उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवई ? कदा वा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ ?
सुदसणा ! आसाढपुण्णिमाए उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ । पोसपुण्णिमाए[1] णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ॥

१२४ अत्थि णं भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवति ?
हंता अत्थि ॥

१२५ कदा णं भते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवति ?
सुदसणा ! चेत्तासोयपुण्णिमासु[2], एत्थ[3] ण दिवसा य राईओ य समा चेव भवति—पण्णरसमुहुत्ते दिवसे पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ। चउभागमुहुत्तभागूणा चउमुहुत्ता[4] दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ। सेत्तं पमाणकाले ॥

१२६. से किं त अहाउनिव्वत्तिकाले ?
अहाउनिव्वत्तिकाले—जण्ण जेण नेरइएण वा तिरिक्खजोणिएण वा मणुस्सेण वा देवेण वा अहाउय निव्वत्तिय। 'सेत्तं अहाउनिव्वत्तिकाले'[5] ॥

१२७. से कि त मरणकाले ?
मरणकाले—जीवो वा सरीराओ सरीरं वा जीवाओ[6]। सेत्तं मरणकाले ॥

१२८ से कि त अद्धाकाले ?
'अद्धाकाले—से ण'[7] समयट्ठयाए[8] आवलियट्ठयाए जाव[9] उस्सप्पिणीट्ठयाए। एस णं सुदसणा ! अद्धा दोहाराछेदेण[10] छिज्जमाणी जाहे विभाग नो हव्वमागच्छइ, सेत्त समए समयट्ठयाए। असखेज्जाणं समयाणं समुदयसमिइसमागमेण सा एगा आवलियत्ति पवुच्चइ। सखेज्जाओ आवलियाओ उस्सासो जहा सालिउद्देसए जाव[11]—

एएसि ण पल्लाणं, कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया।
त सागरोवमस्स उ, एगस्स भवे परिमाणं ॥१॥

---

१. पोसस्स पुण्णिमाए (म)।
२. ०मासु ए (क, ता, स)।
३. तत्थ (अ, स)।
४. चउभागमुहुत्ता (अ)।
५. सेत्त पालेमाणे अहाउनिव्वत्तिकाले (अ, म, स); सेत्त पालेमाणे अहाउनिव्वत्तिकाले। सेत्त अहाउनिव्वत्तिकाले (ता)।
६. वियुज्यते इति शेष. (वृ)।
७. अद्धाकाले अणेगविहे पण्णत्ते (अ, स)।
८. समयद्धयाए (अ) सर्वत्र।
९. अ० सू० ४१५।
१०. दोहारच्छेदेण (क, व); दोहाराछेयणेण (वृ)
११. भ० ६।१३२-१३४।

१२९. एएहि ण भंते ! पलिओवम-सागरोवमेहिं किं पयोयण ?
सुदंसणा ! एएहिं पलिओवम-सागरोवमेहि नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवाण आउयाइ मविज्जति ॥

१३० नेरइयाण भते ! केवइयं काल ठिई पण्णत्ता ?
एव ठिइपद निरवसेस भाणियव्वं जाव[1] अजहण्णमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१३१ अत्थि ण भते ! एएसिं पलिओवम-सागरोवमाण खएति वा अवचएति वा ?
हता अत्थि ॥

१३२ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थि णं एएसिं पलिओवमसागरोवमाणं 'खएति वा'[2] अवचएति वा ?
एवं खलु सुदंसणा ! तेण कालेणं तेणं समएण हत्थिणापुरे नाम नगरे होत्था—वण्णओ[3]। सहसववणे उज्जाणे—वण्णओ[4]। तत्थ ण हत्थिणापुरे नगरे बले नाम राया होत्था—वण्णओ[5]। तस्स ण वलस्स रण्णो पभावई नामं देवी होत्था—सुकुमालपाणिपाया वण्णओ जाव[6] पचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥

१३३. तए ण सा पभावई देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगसि वासघरंसि अब्भितरओ सचित्तकम्मे, बाहिरओ दूमिय-घट्ठ-मट्ठे विचित्तउल्लोग-चिल्लियतले[7] मणिरयणपणासियधयारे बहुसमसुविभत्तदेसभाए पचवण्ण-सरससुरभि-मुक्क-पुप्फपुजोवयारकलिए कालागरु-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क-धूव[8]-मघमघेत[9]-गधुद्धुयाभिरामे सुगधवरगधिए गधवट्टिभूए,
तसि तारिसगसि सयणिज्जंसि—सालिगणवट्टिए उभओ विब्बोयणे दुहओ उण्णए 'मज्झे णय-गभीरे'[10] गगापुलिणवालुय-उद्दालसालिसए ओयविय[11]-खोमियदुगुल्लपट्ट-पडिच्छयणे[12] सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसवुए सुरम्मे आइणग-रूय-वूर-नवणीय-तूलफासे[13] सुगंधवरकुसुम-चुण्ण-सयणोवयारकलिए अद्धरत्तकाल-

---

१. प० ४।
२. जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।
३. ओ० सू० १।
४. भ० ११।५७।
५. ओ० सू० १४।
६ ओ० सू० १५।
७. चिलग (अ)।
८. धूम (ता)।
९. ०मघत (स)।
१० मज्झेण गभीरे (ता), मज्झेण य गंभीरे (वृपा); पण्णत्तगडविब्बोयणे त्ति क्वचित् दृश्यते (वृ)।
११. उयचिय (म, स), उवचिय (क्व०)।
१२. पलिच्छण्ण (ता)।
१३. तुल्ल० (म)।

मयसि[1] सुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी अयमेयारूव ओराल कल्लाण सिव धण्ण मगल्लं सस्सिरीय महासुविणं[2] पासित्ता णं पडिबुद्धा।

हार-रयय-खीरसागर-ससंककिरण-दगरय-रययमहासेल-पडरतरोरुरमणिज्ज[3]-पेच्छणिज्ज थिर-लट्ठ-पउट्ठ-वट्ट-पीवर-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-तिक्खदाढाविडविय-मुहं परिकम्मियजच्चकमलकोमल-माइयसोभतलट्ठओट्ठ[4] 'रत्तुप्पलपत्तमउय-सुकुमालतालुजीह'[5] मूसागयपवरकणगतावियआवत्तायत-वट्ट-तडिविमलसरि-सनयणं विसालपीवरोरुं पडिपुण्णविपुलखधं मिउविसयसुहुमलक्खण-पसत्थ-विच्छिन्न[6]-केसरसडोवसोभियं ऊसिय[7]-सुनिम्मिय-सुजाय-अप्फोडियलगूल[8] सोम सोमाकारं लीलायंतं जंभायंतं[9], नहयलाओ ओवयमाणं, नियगवयणमतिवयत[10] सीहं सुविणे पासित्ता ण 'पडिबुद्धा समाणी'[11] हट्ठतुट्ठ[12]•चित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण॰हियया धाराहयकलवग पिव समूसवियरोमकूवा[13] त सुविणं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवलमसंभताए अविलबियाए रायहससरिसीए गईए जेणेव वलस्स रण्णो सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वलं रायं ताहि इट्ठाहि कंताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि ओरालाहि कल्लाणाहि सिवाहि धन्नाहि मंगल्लाहि सस्सिरीयाहि मिय-महुर-मजुलाहि गिराहि संलवमाणी-सलवमाणी पडिवोहेइ, पडिवोहेत्ता वलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभ-त्तिचित्तसि[14] भद्दासणंसि निसीयति, निसीयित्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवर-गया वलं रायं ताहि इट्ठाहि कंताहि जाव मिय-महुर-मजुलाहि गिराहि सलव-माणी-संलवमाणी एवं वयासी—एवं खलु अह देवाणुप्पिया! अज्ज तसि तारिसगंसि सयणिज्जसि सालिगणवट्टिए त चेव जाव नियगवयणमइवयत सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्ण देवाणुप्पिया! एयस्स ओरालस्स जाव महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ?

---

१. अड्ढ॰ (ता, म)।
२. महासुविणं सुविणे (क, ता, व, म, स, वृ)।
३. पंडुर ॰(अ, ब, स,)।
४. ॰उट्ठ (अ, क, व, स)।
५. वाचनान्तरे—रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालु-निल्लालियग्गजीहं महुगुलियाभिसतपिंगलच्छ (वृ)।
६. विक्किण्ण (ता, वृपा)।
७. ऊसंसिय (ता)।
८. अप्फोडियतलनगोल (ख)।
९. × (अ, ख, ता, म)।
१०. नियगवयणकमलसरमइवयत (ता, म)।
११. पडिवुद्धा तए ण सा पभावती देवी अयमेया-रूव ओराल जाव सस्सिरीय महासुमिण सुविणे पासित्ता ण पडिवुद्ध समाणी (क, ख, ता, व, स)।
१२. स॰ पा॰—हट्ठतुट्ठ जाव हियया।
१३. समूससित॰ (व)।
१४. रयणविचित्तंसि (ता)।

१३४ तए ण से बले राया पभावईए देवीए अंतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[1] •चित्तमाणदिए णदिए पीइमाणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण° हियए धाराहयनीवसुरभिकुसुम[2]-चचुमालइयतणुए[3] ऊसवियरोमकूवे त सुविणं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता ईह पविसइ, पविसित्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएण बुद्धिविण्णाणेण तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहण करेइ, करेत्ता पभावइ देवि ताहि इट्ठाहि कताहि जाव[4] मगल्लाहि मिय-महुर[5]-सस्सिरीयाहि वग्गूहि सलवमाणे-सलवमाणे एव वयासी—ओराले ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, कल्लाणे ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव[6] सस्सिरीए ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, 'आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मगल्लकारए ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे'[7], अत्थलाभो देवाणुप्पिए ! भोगलाभो देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए ! 'रज्जलाभो देवाणुप्पिए !'[8] एव खलु तुम देवाणुप्पिए ! नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण अद्धट्ठमाण य राइदियाण वीइक्कताण अम्ह कुलकेउ कुलदीव कुलपव्वय कुलवडेसय कुलतिलग कुलकित्तिकर कुलनदिकर कुलजसकर कुलाधार कुलपायव कुलविवद्धणकर सुकुमालपाणिपाय अहीणपडिपुण्णपचिदियसरीर[9] •लक्खण-वजण-गुणोववेय माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वगसुदरग° ससिसोमाकार कत पियदसण सुरूव देवकुमारसमप्पभ दारग पयाहिसि ।

से वि य ण दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय-[10]परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कते वित्थिण्ण-विउलबल-वाहणे रज्जवई राया भविस्सइ । त ओराले ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्ग-तुट्ठि[11]-•दीहाउ-कल्लाण°-मगल्लकारए णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे त्ति कट्टु पभावति देविं ताहि इट्ठाहि जाव वग्गूहि दोच्च पि तच्चं पि अणुबूहति ॥

१३५ तए ण सा पभावती देवी बलस्स रण्णो अंतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा[12] करयल[13]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° एव वयासी—एवमेय देवाणुप्पिया ! तहमेय देवाणुप्पिया ! अवितहमेय देवाणुप्पिया ! असदिद्धमेय देवाणुप्पिया ! इच्छियमेय देवाणुप्पिया ! पडिच्छियमेय देवाणु-

---

१. स० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।
२ °नीम° (ता, ब) ।
३. °तणुय (अ, क, ख, ता, म, स) ।
४. भ० ११।१३३।
५. महुररिभियगभीर (ना० १।१।२०) ।
६. भ० ११।१३३।
७. × (अ) ।
८. × (म) ।
९ स० पा०—°पंचिदियसरीरं जाव ससि° ।
१० विण्णाय (अ, ता, स) ।
११. सं० पा०—तुट्ठि जाव मगल्लकारए ।
१२. हट्ठतुट्ठ (अ, ता, स) ।
१३ स० पा०—करयल जाव एव ।

प्पिया ! इच्छिय-पडिच्छियमेय देवाणुप्पिया ! से जहेय तुब्भे वदह त्ति कट्टु त सुविण सम्म पडिच्छइ[1], पडिच्छित्ता बलेण रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवल[2] •मसभताए अविलबियाए रायहससरिसीए° गईए जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जसि निसीयति, निसीयित्ता एव वयासी—मा मे से उत्तमे पहाणे मगल्ले सुविणे अण्णेहि पावसुमिणेहि पडिहम्मिस्सइ त्ति कट्टु देवगुरुजणसबद्धाहि[3] पसत्थाहि मगल्लाहि धम्मियाहि[4] कहाहि सुविणजागरिय पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

१३६. तए ण से बले राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अज्ज सविसेस बाहिरिय उवट्ठाणसाल गधोदयसित्त[5]-सुइय-समज्जिओवलित्त सुगधवरपचवण्णपुप्फोवयारकलिय कालागरु-पवरकुदुरुक्क[6] •-तुरुक्क-धूव-मघमघेत-गधुद्धयाभिरामं सुगधवरगधिय° गधवट्टिभूय करेह य कारवेह[7] य, करेत्ता य कारवेत्ता य सीहासण रएह, रएत्ता ममेतमाणत्तिय[8] पच्चप्पिणह ॥

१३७. तए ण ते कोडुबियपुरिसा जाव[9] पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सविसेस बाहिरिय उवट्ठाणसाल[10] •गधोदयसित्त-सुइय-समज्जिओवलित्त सुगधवरपचवण्णपुप्फोवयारकलिय कालागरु-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेत-गधुद्धयाभिराम सुगधवरगधिय गधवट्टिभूय करेत्ता य कारवेत्ता य सीहासण रएत्ता तमाणत्तिय° पच्चप्पिणति ॥

१३८. तए ण से बले राया पच्चूसकालसमयसि सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ[11] पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, अट्टणसाल अणुपविसइ, जहा ओववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे जाव[12] ससिव्व पियदसणे नरवई[13] जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवाग-

---

१. संपडिच्छइ (ख, स) ।
२. सं० पा०—अतुरियमचवल जाव गईए ।
३. देवतगुरु° (ता) ।
४. × (अ) ।
५. गधोदय (ब) ।
६. स० पा०—पवरकुदुरुक्क जाव गध° ।
७. करावेह (ख, स) ।
८. ममेत जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
९. भ० ६।१४२।
१०. स० पा०—उवट्ठाणसाल जाव पच्चप्पिणति ।
११. पायवीढाओ (ख, ब, म) ।
१२. ओ० सू० ६३ ।
१३. नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ २ (अ, क, ख, ता, ब, म, स); औपपातिकानुसारेण स्वीकृतपाठ. एव समीचीन । आदर्शेषु परिवर्तन सक्षेपीकरणेन जातम् । पाठसक्षेपे प्राय एव भवत्येव ।

च्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीयित्ता अप्पणो उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अट्ठ भद्दासणाइं सेयवत्थपच्चत्थुयाइं[1] सिद्धत्थगकयमंगलोवयाराइं रयावेइ, रयावेत्ता अप्पणो अदूरसामंते नाणामणि-रयणमंडियं अहियपेच्छणिज्जं महग्घ-वरपट्टणुग्गयं सण्हपट्टभत्तिसयचित्तताणं[2] ईहामिय-उसभ[3]-°तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय°-भत्तिचित्तं अब्भिंतरियं जवणियं अंछावेइ, अंछावेत्ता नाणामणिरयणभत्तिचित्तं अत्थरय-मउयमसूरगोत्थयं सेयवत्थपच्चत्थुयं[4] अंगसुहफासयं[5] सुमउयं पभावतीए देवीए भद्दासणं रयावेइ, रयावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासि—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तत्थधारए विविहसत्थकुसले सुविणलक्खणपाढए सद्दावेह ॥

१३९ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[6] पडिसुणेत्ता बलस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता सिग्घं तुरियं चवलं चंडं वेइयं हत्थिणपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव तेसिं सुविणलक्खणपाढगाणं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ते सुविणलक्खणपाढए सद्दावेंति ॥

१४० तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठा ण्हाया कय[7]°बलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकिय°सरीरा सिद्धत्थगहरियालियाकयमंगलमुद्धाणा सएहिं-सएहिं गेहेहिंतो निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता हत्थिणपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव बलस्स रण्णो भवणवरवडेंसए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भवणवरवडेंसगपडिदुवारंसि एगओ मिलंति, मिलित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[8]°परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° बलरायं जएणं विजएणं वद्धावेंति। तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलेणं रण्णा वंदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिया समाणा पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वण्णत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति ॥

१४१ तए णं से बले राया पभावतिं देविं जवणियंतरियं ठावेइ, ठावेत्ता पुप्फ-फल पडिपुण्णहत्थे परेणं विणएणं ते सुविणलक्खणपाढए एवं वयासी—एवं खलु

---

१. °पच्चुत्थुयाइं (म)।
२. सण्हबहुभत्ति° (व, म)।
३. सं० पा०—उसभ जाव भत्तिचित्तं।
४. °पच्चुत्थयं (ब, म, स)।
५. °फासुयं (ख, व)।
६. भ० ६।१४२।
७. सं० पा०—कय जाव सरीरा।
८. सं० पा०—करयल।

देवाणुप्पिया ! पभावती देवी अज्ज तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव[1] सीहं सुविणं पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्णं देवाणुप्पिया ! एयस्स ओरालस्स जाव[2] महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

१४२. तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा तं सुविणं ओगिण्हंति, ओगिण्हित्ता ईहं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेंति, करेत्ता अण्णमण्णेण सद्धिं संचालेंति[3], संचालेत्ता तस्स सुविणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा बलस्स रण्णो पुरओ सुविणसत्थाइं उच्चारेमाणा-उच्चारेमाणा एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा, तीसं महासुविणा—बावत्तरिं सव्वसुविणा दिट्ठा। तत्थ णं देवाणुप्पिया ! तित्थगरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तित्थगरंसि वा चक्कवट्टिंसि वा गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति, तं जहा—

गय उसह[4] सीह अभिसेय दाम ससि दिणयरं झयं कुंभं ।
पउमसर[5] सागर विमाणभवण[6] रयणुच्चय सिहिं च[7] ॥१॥

वासुदेवमायरो वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे सत्त महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति। बलदेवमायरो बलदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति। मंडलियमायरो मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं णं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरं एगं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुज्झंति। इमे य णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए एगे महासुविणे दिट्ठे, तं ओराले णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव[8] आरोग्ग-तुट्ठि[9]-•दीहाउ कल्लाण•-मंगल्लकारए णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिया ! भोगलाभो देवाणुप्पिया ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिया ! रज्जलाभो देवाणुप्पिया ! एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं[10] •अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं• वीइक्कंताणं तुम्हं कुलकेउं जाव[11] देवकुमारसमप्पभं दारगं पयाहिति।

---

१. भ० ११।१३३।
२. भ० ११।१३३।
३. संलवंति (ता)।
४. वसह (क, ता, म)।
५. पदुमसर (ता)।
६. 'विमाणभवण' त्ति एकमेव, तत्र विमानाकारं भवनं विमानभवनं, अथवा देवलोकाद्योऽवतरति तन्माता विमानं पश्यति यस्तु नरकात् तन्माता भवनमिति (वृ)।
७. इह च गाथायां केषुचित्पदेष्वनुस्वारस्याश्रवणं गाथाऽनुलोम्याद् दृश्यम् (वृ)।
८. भ० ११।१३४।
९. सं० पा०—तुट्ठि जाव मंगल्लकारए।
१०. सं० पा०—बहुपडिपुण्णाणं जाव वीइक्कंताणं।
११. भ० ११।१३४।

से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे[1] •विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिण्ण-विउलबल-वाहणे° रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा। तं ओराले णं देवाणुप्पिया! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण[2]-•मंगल्लकारए पभावतीए देवीए सुविणे° दिट्ठे ॥

१४३. तए णं से बले राया सुविणलक्खणपाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे करयल[3]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं° कट्टु ते सुविणलक्खणपाढगे एवं वयासी—एवमेयं देवाणुप्पिया[4]! •तहमेयं देवाणुप्पिया! अवितहमेयं देवाणुप्पिया! असंदिद्धमेयं देवाणुप्पिया! इच्छियमेयं देवाणुप्पिया! पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया! इच्छिय-पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया! ° से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ[5], पडिच्छित्ता सुविणलक्खणपाढए विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइम-पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, दलयित्ता पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जेत्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव पभावती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव[6] मिय-महुर-सस्सिरीयाहिं वग्गूहिं संलवमाणे-संलवमाणे एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए! सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा, तीसं महासुविणा—बावत्तरिं सव्वसुविणा दिट्ठा। तत्थ णं देवाणुप्पिए! तित्थगरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तित्थगरंसि वा चक्कवट्टिंसि वा गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति तं चेव जाव[7] मंडलियमायरो मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं णं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरं एगं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुज्झंति। इमे य णं तुमे देवाणुप्पिए! एगे महासुविणे दिट्ठे, तं ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे जाव[8] रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा, तं ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे जाव[9] आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मंगल्लकारए णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे त्ति कट्टु पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव मिय-महुर-सस्सिरीयाहिं वग्गूहिं दोच्चं पि तच्चं पि अणुबूहइ ॥

---

१. सं० पा०—उम्मुक्कबालभावे जाव रज्जवई।
२. सं० पा०—कल्लाण जाव दिट्ठे।
३. सं० पा०—करयल जाव कट्टु।
४. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव से।
५. सपडिच्छइ (क, ता, म, स)।
६. भ० ११।१३४।
७. भ० ११।१४२।
८. भ० ११।१४२।
९. भ० ११।१३४।

१४४. तए णं सा पभावती देवी बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा करयल[1]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एयमेयं देवाणुप्पिया! जाव[2] तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता बलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभत्ति[3]•चित्ताओ भद्दासणाओ° अब्भुट्ठेइ, अतुरियमचवल[4]•मसंभताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए° गईए जेणेव सए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयं भवणमणुपविट्ठा॥

१४५. तए णं सा पभावती देवी ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[5] सव्वालंकारविभूसिया तं गब्भं नातिसीतेहिं नातिउण्हेहिं नातितित्तेहिं नातिकडुएहिं नातिकसाएहिं नातिअंबिलेहिं नातिमहुरेहिं उउभयमाणसुहेहिं[6] भोयण-च्छायण-गंध-मल्लेहिं जं तस्स गब्भस्स हियं मितं पत्थं गब्भपोसणं तं देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विवित्त-मउएहिं[7] सयणासणेहिं पइरिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला संपुण्णदोहला[8] सम्माणियदोहला अविमाणियदोहला वोच्छिण्णदोहला विणीय-दोहला ववगयरोग-सोग-मोह-भय-परित्तासा तं गब्भं 'सुहंसुहेणं परिवहति'[9]॥

१४६. तए णं सा पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं लक्खण-वंजण-गुणोववेयं[10] •माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंग°ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं दारयं पयाया॥

१४७. तए णं तीसे पभावतीए देवीए अंगपडियारियाओ पभावतिं देविं पसूयं जाणेत्ता जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[11]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडि-पुण्णाणं जाव[12] सुरूवं दारगं पयाया। तं एयण्णं[13] देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियं निवेदेमो। पियं भे भवतु॥

१४८. तए णं से बले राया अंगपडियारियाणं अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[14]-•चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए

१. सं० पा०—करयल जाव एवं।
२. भ० ११।१३५।
३. सं० पा०—°भत्ति जाव अब्भुट्ठेइ।
४. सं० पा०—अतुरियमचवल जाव गईए।
५. भ० ७।१७६।
६. तदु° (ख); उतु° (ता, म); उडु° (ब)।
७. विचित्त° (अ, ख, ता, ब, स)।
८. सपन्न° (अ); °डोहला (ता)।
९. वाचनान्तरे—सुहंसुहेणं आसयइ सुयइ चिट्ठइ निसीयइ तुयट्टइ त्ति दृश्यते (वृ)।
१०. सं० पा०—गुणोववेयं जाव ससि°।
११. सं० पा०—करयल।
१२. भ० ११।१३४।
१३. एतणं (अ, स); एत (ता)।
१४. सं०पा०—हट्ठतुट्ठ जाव धाराहयनीव जाव रूवे।

धाराहयनीवसुरभिकुसुम-चंचुमालइयतणुए ऊसवियरोम°कूवे तासिं अंगपडिया-रियाणं मउडवज्जं जहामालियं[1] ओमोयं दलयइ[2], दलयित्ता सेतं रययामयं विमलसलिलपुण्णं भिंगारं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता मत्थए धोवइ, धोवित्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, दलयित्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्मा-णेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१४९ तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हत्थिणापुरे नयरे चारगसोहणं करेह, करेत्ता माणुम्माण-वड्ढणं[3] करेह, करेत्ता हत्थिणापुरं नगरं सब्भिंतरबाहिरियं आसिय-संमज्जिओ-वलित्तं जाव[4] गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य जूवसहस्सं वा चक्कसहस्सं वा पूयामहामहिमसजुत्तं[5] उस्सवेह, उस्सवेत्ता ममेतमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

१५०. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा बलेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव[6] तमाण-त्तियं पच्चप्पिणंति ॥

१५१ तए णं से बले राया जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव जाव[7] मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदेज्जं अमेज्जं अभडप्पवेसं[8] अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणियावरनाडइज्जकलियं अणेगतालाचराणुचरियं अणुद्धुयमुइंगं[9] अमिलायमल्लदामं[10] पमुइयपक्कीलियं सपुरजणजाणवयं दसदिवसे ठिइवडियं करेति ॥

१५२. तए णं से बले राया दसाहियाए ठिइवडियाए वट्टमाणीए सइए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य जाए य दाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य, सइए य सय-साहस्सिए य लंभे[11] पडिच्छेमाणे य पडिच्छावेमाणे य एवं यावि विहरइ ॥

१५३. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइवडियं करेइ, तइए दिवसे चंदसूरदसावणियं[12] करेइ, छट्ठे दिवसे जागरियं करेइ, एक्कारसमे दिवसे वीइ-

---

१. जहाजमालितं (ता)।
२. दलति (ता)।
३. °वड्ढं (ता)।
४. ओ० सू० ५५।
५. °महिमसक्कारं वा (अ, म, स); आयाम-जावदिसक्कारं वा (क), °सजुत्तं वा आया-मेजाहससक्खा (ख); पूता° (ता), पूया-महिमसक्कारं वा (व)।
६. भ० ११।१४९।
७. ओ० सू० ६३।
८. °पावेस (ख), अहड° (ता)।
९. अणुद्धत° (क); अणद्धुत्त° (व)।
१०. अमिलाण° (ता)।
११. लाभे (क, ब). लभो (ता)।
१२. °दसणियं (क); औपपातिकाद्यागमेषु 'दस-णियं' इति पाठः प्रायेण स्वीकृतोस्ति। तत्र स्वीकृतपाठो नोपलब्धः। अर्थदृष्ट्यासौ समी-चीनोस्ति।

क्कंते निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते 'वारसमे दिवसे'[1] विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता °मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजणं रायाणो य° खत्तिए य आमंतेति, आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाया त चेव जाव[3] सक्कारेति सम्माणेति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ[4]-°नियग-सयण-सवधि-परिजणस्स° राईण य खत्तियाण य पुरओ अज्जय-पज्जय पिउपज्जयागयं वहुपुरिसपरंपरप्परूढ कुलाणुरूवं कुलसरिसं कुलसंताणतंतुवद्धणकरं अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेति—जम्हा णं अम्हं इमे दारए वलस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए, त होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं 'महव्वले-महव्वले'[5]। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेति महव्वले त्ति ॥

१५४. तए णं से महव्वले दारए पंचधाईपरिग्गहिए, [तं जहा—खीरधाईए],[6] एवं जहा दढपइण्णस्स जाव[7] निव्वाय[8]-निव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढति ॥

१५५. तए णं तस्स महव्वलस्स दारगस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं ठिइवडिय वा चंद-सूरदंसावणियं वा जागरियं वा नामकरणं वा परंगामणं वा पचंकामणं[9] वा पजेमामणं[10] वा पिंडवद्धणं वा पजंपावणं[11] वा कण्णवेहणं वा संवच्छरपडिलेहणं[12] वा चोलोयणगं[13] वा उवणयणं वा, अण्णाणि य वहूणि गब्भाधाण[14]-जम्मणमादियाइं कोउयाइं करेति ॥

१५६. तए णं तं महव्वलं कुमारं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासगं जाणित्ता सोभणंसि

---

१. वारसाहदिवसे (अ, क, ख, म, स); वारसादिवसे (ता); वारहदिवसे (व); 'रायपसेणइय' सूत्रस्य ८०२ सूत्रानुसारेणासौ पाठः स्वीकृतः। विशेषाववोधाय द्रष्टव्य 'ओववाइय' सूत्रस्य १४४ सूत्रस्य प्रथम पादटिप्पणम् ।

२. सं० पा०—जहा सिवो जाव खत्तिए।

३. भ० ११।६३ ।

४. सं० पा०—नाइ जाव राईण ।

५. महव्वले (अ, क, ख, व, म, स) ।

६. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।

७. ओ० वाचनान्तर पृष्ठ १५१, १५२; राय० सू० ८०४ ।

८. निवात (अ, ता, व, म); नियात (ख) ।

९. पयचंकमाण (अ); पचंकम्मावणं (ख, व); पचक्कामवण (ता); पयिचकामण (म) । पयचकमण (स) ।

१०. जेमावण (क, व, म, स) ।

११. पजपमाण (क, ख); पजपामण (व) ।

१२. °पलेहणं (ख), °वलेहणगं (ता) ।

१३. चोलायणग (अ); चोलोपणग (क, ख,); चोलगाणि (ता); चोलोयणं (व) ।

१४. गब्भदाण (अ, ख); गब्भायाण (ता); गब्भादाण (व, वृ); 'गब्भाहाण' पदस्य हकारदकारयोर्लिपिसादृश्यात् 'गब्भादाण' रूपे परिवर्तनं जातमिति सभाव्यते ।

तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेति, एवं जहा दढप्पइण्णे जाव[1] अलभोगसमत्थे जाए यावि होत्था ॥

१५७. तए ण त महब्बलं कुमार उम्मुक्कबालभावं जाव[2] अलंभोगसमत्थ विजाणित्ता अम्मापियरो अट्ठ पासायवडेसए कारेति[3]—अब्भुग्गय-मूसिय-पहसिए इव वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे जाव[4] पडिरूवे । तेसि ण पासायवडेसगाण बहुमज्झदेस-भागे, एत्थ ण महेग भवण कारेति—अणेगखभसयसनिविट्ठ वण्णओ जहा राय-प्पसेणइज्जे पेच्छाघरमडवसि जाव[5] पडिरूवे ॥

१५८ तए णं त महब्बल कुमार अम्मापियरो अण्णया कयाइ सोभणसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तसि ण्हाय कयबलिकम्मं कयकोउय-मगल-पायच्छित्त सव्वा-लकारविभूसिय पमक्खणग-ण्हाण-गीय-वाइय-पसाहण-अट्ठगतिलग-ककण-अवि-हववहुउवणीय[6] मगलसुजपिएहि य वरकोउयमंगलोवयार-कयसतिकम्म सरि-सियाण सरित्तयाण सरिव्वयाण सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वणगुणोववेयाणं 'विणीयाण कयकोउय-मगलपायच्छित्ताण'[7] सरिसएहि रायकुलेहिंतो आणिल्लि-याण[8] अट्ठण्ह रायवरकन्नाण एगदिवसेण पाणि गिण्हाविसु ॥

१५९ तए ण तस्स महाबलस्स कुमारस्स अम्मापियरो अयमेयारूव पीइदाण दलयति, तं जहा – अट्ठ हिरण्णकोडीओ, अट्ठ सुवण्णकोडीओ, अट्ठ मउडे मउडप्पवरे, अट्ठ 'कुडलजोए कुडलजोयप्पवरे'[9] अट्ठ हारे हारप्पवरे, अट्ठ अद्धहारे अद्धहारप्पवरे, अट्ठ एगावलीओ एगावलिप्पवराओ, एव मुत्तावलीओ, एव कणगावलीओ, एवं रयणावलीओ, अट्ठ कडगजोए कडगजोयप्पवरे, एव तुडियजोए, अट्ठ खोमजुय-लाइ खोमजुयलप्पवराइ, एव वडगजुयलाइ,[10] एव पट्टजुयलाइ, एव दुगुल्ल-जुयलाइ, अट्ठ सिरीओ, अट्ठ हिरीओ, एव धिईओ, कित्तीओ, बुद्धीओ, लच्छीओ, अट्ठ नंदाइ, अट्ठ भद्दाइ, अट्ठ तले तलप्पवरे सव्वरयणामए, नियगवरभवणकेऊ अट्ठ झए झयप्पवरे, अट्ठ वए वयप्पवरे दसगोसाहस्सिएण वएणं, अट्ठ नाडगाइं नाडगप्पवराइ बत्तीसइबद्धेण नाडएण, अट्ठ आसे आसप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठ जाणाइ जाणप्पवराइ, अट्ठ जुगाइ जुगप्पवराइ, एव सिवियाओ[11], एव सद-

---

१. ओ० सू० १४६-१४८, राय० सू० ८०५-८०९ ।
२. राय० सू० ८१०।
३ करेति (अ, म, स) ।
४. राय० सू० १३७।
५. राय० सू० ३२।
६. अविधववधुओवणीत (ता) ।
७. × (ब) ।
८. आणिते (ति) ल्लियाण (क, ख, ता, ब, म) ।
९. कुडलजुए कुडलजुय० (अ, स) ।
१०. पडलगजुवलाइ (अ) ।
११. सिविया (अ), सिताओ (ता) ।

माणीओ[1], एव गिल्लीओ, थिल्लीओ, अट्ठ वियडजाणाइं वियडजाणप्पवराइं, अट्ठ रहे पारिजाणिए, अट्ठ रहे सगामिए, अट्ठ आसे आसप्पवरे, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे, अट्ठ गामे गामप्पवरे दसकुलसाहस्सिएण गामेण, अट्ठ दासे दासप्पवरे, एव दासीओ, एव किंकरे, एव कचुइज्जे, एव वरिसधरे, एव महत्तरए, अट्ठ सोवण्णिए ओलबणदीवे, अट्ठ रुप्पामए ओलबणदीवे, अट्ठ सुवण्णरुप्पामए ओलंबणदीवे, अट्ठ सोवण्णिए उक्कंवणदीवे[2], एवं चेव तिण्णि वि, अट्ठ सोवण्णिए पजरदीवे, एवं चेव तिण्णि वि, अट्ठ सोवण्णिए थाले, अट्ठ रुप्पामए थाले, अट्ठ सुवण्णरुप्पामए थाले, अट्ठ सोवण्णियाओ पत्तीओ[3] ३, अट्ठ सोवण्णियाइं थासगाइ३, अट्ठ सोवण्णियाइ मल्लगाइ३, अट्ठ सोवण्णियाओ तलियाओ[4]३, अट्ठ सोवण्णियाओ कविचियाओ[5]३, अट्ठ सोवण्णिए अवएडए[6]३, अट्ठ सोवण्णियाओ अवयक्काओ[7]३, अट्ठ सोवण्णिए पायपीढए३, अट्ठ सोवण्णियाओ भिसियाओ३, अट्ठ सोवण्णियाओ करोडियाओ३, अट्ठ सोवण्णिए पल्लके३, अट्ठ सोवण्णियाओ पडिसेज्जाओ३, अट्ठ हसासणाइ, अट्ठ कोचासणाइ, एव गरुलासणाइ, उन्नयासणाइ, पणयासणाइ, दीहासणाइ, भद्दासणाइ, पक्खासणाइ, मगरासणाइ, अट्ठ पउमासणाइ, अट्ठ दिसासोवत्थियासणाइं, अट्ठ तेल्ल-समुग्गे, [8]°अट्ठ कोट्ठ-समुग्गे, एवं पत्त-चोयग-तगर-एल-हरियाल-हिंगुलय-मणोसिल-अजण-समुग्गे°, अट्ठ सरिसव-समुग्गे, अट्ठ खुज्जाओ जहा ओववाइए जाव[9] अट्ठ पारिसीओ, अट्ठ छत्ते, अट्ठ छत्तधारीओ चेडीओ, अट्ठ चामराओ, अट्ठ चामरधारीओ चेडीओ अट्ठ तालियटे, अट्ठ तालियटधारीओ चेडीओ, 'अट्ठ करोडियाओ',[10] अट्ठ करोडियाधारीओ चेडीओ, अट्ठ खीरधाईओ[11], °अट्ठ मज्जणधाईओ, अट्ठ मडणधाईओ अट्ठ खेल्लावणधाईओ°, अट्ठ अकधाईओ, अट्ठ अंगमद्दियाओ, अट्ठ उम्मद्दियाओ अट्ठ ण्हावियाओ, अट्ठ पसाहियाओ, अट्ठ वण्णगपेसीओ, अट्ठ चुण्णगपेसीओ[12], अट्ठ कीडागारीओ[13], अट्ठ दवकारीओ[14], अट्ठ उवत्थाणियाओ, अट्ठ नाडइज्जाओ,

---

१. सदमाणी (अ), सदमाणियाओ (क, ता, ब, म)।
२. उक्कपणदीवे (क, ख, ता, ब, स)।
३. 'एव तिण्णि वि' इति पाठस्य सूचकमङ्कमिदं सर्वत्र।
४. चवलियाओ (ख), चवलियाओ अट्ठसोवण्णियाओ तिलियाओ (ता)।
५. कवचियाओ (अ, ख, ता, ब, म); कतिवियाओ (क)।
६ अवपडए (अ, स), अवयडए (ता)।
७. अवक्काओ (अ, क, ख, ता, म)।
८. स० पा०—जहा रायपसेणइज्जे जाव अट्ठ।
९. ओ० सू० ७०, भ० ९।१४४।
१०. × (अ, क, ख, ता, ब, म)।
११. स० पा०—खीरधाईओ जाव अट्ठ।
१२. × (ख)।
१३. कीलाकरीओ (ता)।
१४ उवकारीओ (क, ता)।

अट्ठ कोडुंबिणीओ, अट्ठ महाणसिणीओ[1], अट्ठ भंडागारिणीओ, अट्ठ अब्भाधारिणीओ, अट्ठ पुप्फधरणीओ, अट्ठ पाणिधरणीओ, अट्ठ बाहिरियाओ, अट्ठ सेज्जाकारीओ, अट्ठ अब्भितरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ बाहिरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ मालाकारीओ, अट्ठ पेसणकारीओ, अण्णं वा सुबहुं हिरण्णं वा सुवण्णं वा कंसं वा दूसं वा विउलधण-कणग[2]-•रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-°संतसारसावएज्जं, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं[3], पकामं परिभाएउं[4] ॥

१६० तए णं से महब्बले कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयइ, एगमेगं सुवण्णकोडिं दलयइ, एगमेगं मउडं मउडप्पवरं दलयइ, एवं तं चेव सव्वं जाव एगमेगं पेसणकारिं दलयइ, अण्णं वा सुबहुं हिरण्णं वा[5] •सुवण्णं वा कंसं वा दूसं वा विउलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसारसावएज्जं, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं, पकामं° परिभाएउं ॥

१६१. तए णं से महब्बले कुमारे उप्पिं पासायवरगए जहा जमाली जाव[6] पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ॥

१६२. तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए[7] धम्मघोसे नामं अणगारे जाइसपन्ने वण्णओ जहा केसिसामिस्स जाव[8] पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिणापुरे नगरे, जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

१६३. तए णं हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु महया जणसद्दे इ वा जाव[9] परिसा पज्जुवासइ ॥

१६४. तए णं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स तं महयाजणसद्दं वा जणवूहं वा जाव जण-सन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा एवं जहा[10] जमाली तहेव चिंता,

---

१. महाणसीओ (क, ता, ब)।
२. सं० पा०—कणग जाव संतसार।
३. परिभोत्तुं (क, ब, म, स)।
४. परिभाइउं (ख), परियाभाएउं (ता)।
५. सं० पा०—हिरण्णं वा जाव परिभाएउं।
६. भ० ९।१५६।
७. पदोप्पए (ख), पतोप्पए (ब, म)।
८. राय० सू० ६८६।
९. राय० सू० ६८७; ओ सू० ५२; भ० ९।१५७।
१०. भ० ९।१५८।

तहेव कंचुइज्ज-पुरिसं सद्दावेति, [1]•सद्दावेत्ता एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया! अज्ज हत्थिणापुरे नयरे इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति ।।

१६५. तए णं से कंचुइ-पुरिसे महब्बलेणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु महब्बलं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया! अज्ज हत्थिणापुरे नगरे इंदमहे इ वा जाव[2] निग्गच्छंति। एवं खलु देवाणुप्पिया! अज्ज विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे हत्थिणापुरस्स नगरस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तए णं एते बहवे उग्गा, भोगा जाव[3] निग्गच्छंति ।।

१६६. तए णं से महब्बले कुमारे° तहेव[4] रहवरेणं निग्गच्छति। धम्मकहा जहा[5] केसिसामिस्स। सो वि तहेव अम्मापियरं आपुच्छइ, नवरं—धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। तहेव वुत्तपडिवुत्तिया[6], नवरं—इमाओ य ते जाया! विउलरायकुलबालियाओ कलाकुसल-सव्वकाललालिय-सुहोचियाओ सेसं तं चेव जाव[7] ताहे अकामाइं चेव महब्बलकुमारं एवं वयासी—तं इच्छामो ते जाया! एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तए ।।

१६७. तए णं से महब्बले कुमारे अम्मापिउ-वयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

१६८. तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, एवं जहा सिवभद्दस्स तहेव रायाभिसेओ भाणियव्वो जाव[8] अभिसिंचति, करयलपरिग्गहियं[9] •दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° महब्बलं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—भण जाया! किं देमो? किं पयच्छामो? सेसं जहा जमालिस्स तहेव जाव[10]—

१६९. तए णं से महब्बले अणगारे धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ[11]-•छट्ठट्ठम-दसम-दुवाल-

---

१. सं० पा०—कंचुइज्जपुरिसो वि तहेव अक्खाति, नवरं—धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल जाव निग्गच्छइ। एवं खलु देवाणप्पिया! विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नाम अणगारे, सेसं तं चेव जाव सो वि तहेव।

२. भ० ९।१५८।

३. भ० ९।१५८।

४. अ० ९।१६०-१६२।

५. राय० सू० ६९३।

६. वुत्तपडिवत्तया (क्व)।

७. भ० ९।१६४-१७९।

८. भ० ११।५९-६२।

९. सं० पा०—करयपलरिग्गहियं।

१०. भ० ९।१८०-२१५।

११. सं० पा०—चउत्थ जाव विचित्तेहिं।

सेहिं मासद्ध-मासखमणेहिं° विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूरिय-[1]°गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं बहूइं जोयणाइं, बहूइं जोयणसयाइं, बहूइं जोयणसहस्साइं, बहूइं जोयणसयसहस्साइं, बहूओ जोयणकोडीओ, बहूओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंदे कप्पे वीईवइत्ता° बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं महब्बलस्स वि देवस्स दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। से णं तुमं सुदंसणा! बंभलोगे कप्पे दस सागरोवमाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्ता तओ[2] देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव वाणियग्गामे नगरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाए॥

१७०. तए णं तुमे सुदंसणा! उम्मुक्कबालभावेणं विण्णय-परिणयमेत्तेणं जोव्वणगमणुप्पत्तेणं तहारूवाणं थेराणं अंतियं केवलिपण्णत्ते धम्मे निसंते, से वि य धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए। तं सुट्ठु णं तुमं सुदंसणा! 'इदाणिं पि'[3] करेसि। से' तेणट्ठेणं सुदंसणा! एवं वुच्चइ—अत्थि णं एतेसिं पलिओवम-सागरोवमाणं खएति वा अवचएति वा॥

१७१ तए णं तस्स सुदंसणस्स सेट्ठिस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सुभेणं अज्झवसाणेणं सुभेणं[4] परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स 'सण्णीपुव्वे जातीसरणे'[5] समुप्पन्ने, एयमट्ठं सम्मं अभिसमेति॥

१७२. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणेणं भगवया महावीरेणं सभारियपुव्वभवे दुगुणाणीयसड्ढसंवेगे[6] आणंदसुपुण्णनयणे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवमेयं भंते[7]! °तहमेयं भंते! अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते! °—से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, सेसं जहा उसभदत्तस्स

---

१. सं० पा०—जहा अम्मडो जाव बंभलोए। औपपातिकादर्शेषु तद्वृत्तौ च नैष पाठो लभ्यते, तेन चिन्त्यमिदम्।

२. तओ चेव (अ); ताओ (ता, व, म); ताओ चेव (स)।

३ इदाणिं वि (अ, क, ख, ता, व)।

४. सोभणेणं (ता)।

५. सण्णीपुव्वजाती° (अ, क, ता, व, वृ)।

६. °सद्द° (म)।

७. सं० पा०—भंते जाव से।

जाव[1] सव्वदुक्खप्पहीणे, नवरं—चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ, बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, सेसं तं चेव ॥

१७३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

बारसमो उद्देसो

इसिभद्दपुत्त-पदं

१७४. तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नगरी होत्था—वण्णओ[3]। संखवणे चेइए—वण्णओ[4]। तत्थ णं आलभियाए नगरीए बहवे इसिभद्दपुत्तपामोक्खा समणोवासया परिवसंति—अड्ढा जाव[5] बहुजणस्स अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा जाव[6] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥

१७५. तए णं तेसिं समणोवासयाणं अण्णया कयाइ एगयओ समुवागयाणं सहियाणं सण्णिविट्ठाणं[7] सण्णिसण्णाणं अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे[8] समुप्पज्जित्था—देवलोगेसु णं अज्जो ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?

१७६. तए णं से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवट्ठिती-गहियट्ठे ते समणोवासए एवं वयासी—देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया, तिसमयाहिया जाव दससमयाहिया, संखेज्जसमयाहिया, असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ॥

१७७. तए णं ते समणोवासया इसिभद्दपुत्तस्स समणोवासगस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोयंति, एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोयमाणा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

---

१. भ० ६।१५१।
२. भ० १।५१।
३. ओ० सू० १।
४. ओ० सू० २-१३।
५. भ० २।९४।
६. भ० २।९४।
७. समुवविट्ठाण (अ), समुविट्ठाण (क, ब, म, वृ) समुवेट्ठाणं (ता); द्रष्टव्यम्—भ० ७।२१२।
८. मिहोकहासमुल्लावे अज्झत्थिए (अ, क, म); अज्झत्थिए (ब)।

१७८ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे जाव[1] समोसढे जाव[2] परिसा पज्जुवासइ। तए ण ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा, हट्ठतुट्ठा •[3]अण्णमण्ण सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे जाव[4] आलभियाए नगरीए अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ।

त महप्फल खलु भो देवाणुप्पिया ! तहारूवाण अरहताण भगवताण नामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? त गच्छामो ण देवाणुप्पिया ! समण भगवं महावीर वदामो नमसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाण मगल देवयं चेइय पज्जुवासामो।

एय णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अतिए एयमट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव सयाइ-सयाइ गिहाइ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा सएहि-सएहि गिहेहितो पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता एगयओ मेलायति, मेलायित्ता पायविहारचारेण आलभियाए नगरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव सखवणे चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर जाव[5] तिविहाए पज्जुवासणाए° पज्जुवासति। तए ण समणे भगव महावीरे तेसि समणोवासगाण तीसे य महतिमहालियाए परिसाए 'धम्म परिकहेइ'[6] जाव[7] आणाए आराहए भवइ॥

१७९ तए ण ते समणोवासया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वदासी—एव खलु भते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए अम्ह एवमाइक्खइ जाव[8] परूवेइ—देवलोएसु ण अज्जो ! देवाण जहण्णेण दस

---

१. भ० १।७।
२. ओ० सू० २२-५२।
३ स० पा०—एव जहा तुगियउद्देसए जाव पज्जुवासति।
४. ओ० सू० ५२।
५. भ० २।६७।
६ धम्मकहा (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
७. ओ० सू० ७१-७७।
८. भ० १।४२०।

वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया जाव[1] तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य।

१८०. से कहमेयं भंते ! एवं ?
अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी—जण्णं अज्जो ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तुब्भं एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया जाव तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—सच्चे ण एसमट्ठे, अहं 'पि ण'[2] अज्जो ! एवमाइक्खामि जाव[3] परूवेमि—देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहण्णेण दस वाससहस्साइं [4]•ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया, तिसमयाहिया जाव दससमियाहिया, संखेज्जसमयाहिया, असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता°। तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—'सच्चे णं एसमट्ठे'[5] ॥

१८१. तए ण ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म समण भगव महावीरं वंदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता[6] जेणेव इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता इसिभद्दपुत्तं समणोवासग वदति नमंसंति, वदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेति। तए णं ते समणोवासया पसिणाइ पुच्छति, पुच्छित्ता अट्ठाइ परियादियंति, परियादियित्ता समण भगवं महावीर वदति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥

१८२. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—पभू ण भते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवाणुप्पियाण अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे गोयमा ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए बहूहिं सीलव्वय-गुण[7]-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे बहूइं वासाइ समणोवासगपरियागं पाउणिहिति, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताणं झूसेहिति, झूसेत्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेहिति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणाभे

१. भ० ११।१७६।
२. पुण (अ, स)।
३. भ० १।४२१।
४. स० पा०—त चेव जाव तेण।
५. सच्चमेसे अट्ठे (क, ख, ता, ब, म)।
६. नमसित्ता उट्ठाते उट्ठेति २ (ता)।
७. गुणव्वय (ख, ब, म)।

विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं इसिभद्दपुत्तस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती भविस्सति॥

१८३. से णं भंते! इसिभद्दपुत्ते देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं[1] °अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति?° कहिं उववज्जिहिति? गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति[2] °बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिति॥

१८४ सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति भगवं गोयमे जाव[3] अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

१८५ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ आलभियाओ नगरीओ संखवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ॥

पोग्गल-परिव्वायग-पदं

१८६ तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नगरी होत्था—वण्णओ[4]। तत्थ णं संखवणे नामं चेइए होत्था—वण्णओ[5]। तस्स णं संखवणस्स चेइयस्स अदूरसामंते पोग्गले नामं परिव्वायए[6]—रिउव्वेद-जजुव्वेद जाव[7] बंभण्णएसु परिव्वायएसु य नएसु सुपरिनिट्ठिए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ[8] °पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणे विहरइ॥

१८७ तए णं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स छट्ठंछट्ठेणं[9] °अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए[10] °पगइउवसंतयाए पगइपयणुकोहमाणमायालोभाए मिउमद्दवसंपन्नयाए अल्लीणयाए विणीययाए अण्णया कयाइ तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स° विब्भंगे नामं नाणे[11] समुप्पन्ने। से णं तेणं विब्भंगेणं नाणेणं समुप्पन्नेणं बंभलोए कप्पे देवाणं ठितिं जाणइ-पासइ॥

१८८ तए णं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[12] °चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—अत्थि णं ममं अतिसेसे नाणदंसणे

---

१. सं० पा०—ठिइक्खएणं जाव कहिं।
२. सं० पा०—सिज्झिहिति जाव अंतं।
३ भ० १।५१।
४ ओ० सू० १।
५. ओ० सू० २-१३।
६. परिव्वायए परिवसति (अ, स)।
७. भ० २।२४।
८. सं० पा०—बाहाओ जाव आयावेमाणे।
९. सं० पा०—छट्ठंछट्ठेणं जाव आयावेमाणस्स
१०. सं० पा०—जहा सिवस्स जाव विब्भंगे।
११. अण्णाणे (अ)।
१२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

समुप्पन्ने, देवलोएसु ण देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण दससागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता। तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता 'तिदड च कुडिय च'[1] जाव[2] धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव आलभिया नगरी, जेणेव परिव्वायगावसहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भडनिक्खेव करेइ, करेत्ता आलभियाए नगरीए सिघाडग[3]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया! मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दसवाससहस्साइ [4]•ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया, जाव असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण दससागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता। तेण पर° वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य॥

१८९. तए णं [5]•पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आलभियाए नगरीए सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसुबहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एव खलु देवाणुप्पिया! पोग्गले परिव्वायए एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया! मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एव खलु देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दसवाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण दससागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता। तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य।° से कहमेय मन्ने एव ?

१९०. सामी समोसढे[6], •परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ, °परिसा पडिगया। भगव गोयमे तहेव भिक्खायरियाए तहेव बहुजणसद्द निसामेइ, निसामेत्ता तहेव सव्व भाणियव्व जाव[7] अह पुण गोयमा! एवमाइक्खामि, एव भासामि जाव परूवेमि—देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य॥

१९१. अत्थि ण भते! सोहम्मे कप्पे दव्वाइ—सवण्णाइ पि अवण्णाइं पि, [8]•सगधाइ पि अगंधाइ पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइ पि अफासाइ

१. तिदडकुडिय (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
२. भ० २।३१।
३. सं० पा०—सिघाडग जाव पहेसु।
४. सं० पा०—तहेव जाव वोच्छिण्णा।
५. सं० पा०—आलभियाए नगरीए एव एएणं अभिलावेण जहा सिवस्स त चेव जाव से।
६. स० पा०—समोसढे जाव परिसा।
७. भ० ११।७५-७७।
८. स० पा०—तहेव जाव हता।

पि अण्णमण्णवद्धाइ अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइ अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति ?०

हंता अत्थि ।

एव ईसाणे वि, एव जाव[1] अच्चुए, एव गेवेज्जविमाणेसु, अणुत्तरविमाणेसु वि, ईसिपब्भाराए वि जाव ?

हंता अत्थि ॥

१९२. तए ण सा महतिमहालिया परिसा जाव[2] जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥

१९३. तए ण आलभियाए नगरीए सिघाडग-तिग-[3]°चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ जण्णं देवाणुप्पिया ! पोग्गले परिव्वायए एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एव खलु देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं दससागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता । तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य । त नो इणट्ठे समट्ठे । समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ जाव[4] देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता । तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ॥

१९४ तए ण से पोग्गले परिव्वायए वहुजणस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म सकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था । तए ण तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स सकियस्स कखियस्स वितिगिच्छियस्स भेदसमावन्नस्स कलुससमावन्नस्स से विभगे नाणे खिप्पामेव पडिवडिए ॥

१९५. तए णं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगव महावीरे आदिगरे तित्थगरे जाव[5] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएण चक्केणं जाव[6] संखवणे चेइए

---

१. भ० ११।९४ ।

२. भ० ११।८२ ।

३. स० पा०—अवसेस जहा सिवस्स जाव सव्वदुक्खप्पहीणे, नवरं—तिदडकुडिय जाव धाउरत्तवत्थपरिहिए परिवडियविब्भगे आलभिय नगरिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ जाव उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ २ तिदडकुडिय च जहा खदओ जाव पव्वइओ सेस जहा सिवस्स जाव ।

४. भ० ११।८३, १९० ।

५. भ० १।७ ।

६. ओ० सू० १९।

अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तं महप्फलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि जाव[1] पज्जुवासामि, एयं णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तिदंडं च कुंडियं च जाव[2] धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पडिवडियविब्भंगे आलभियं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव संखवणे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे पज्जुवासइ ॥

१९६. तए णं समणे भगवं महावीरे पोग्गलस्स परिव्वायगस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ जाव[3] आणाए आराहए भवइ ॥

१९७. तए णं से पोग्गले परिव्वायए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म जहा खंदओ जाव[4] उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तिदंडं च कुंडियं च जाव[5] धाउरत्ताओ य एगंते एडेइ, एडेत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं जहेव उसभदत्तो तहेव[6] पव्वइओ, तहेव[7] एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, तहेव सव्वं जाव[8] सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

१९८. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि संघयणे सिज्झंति ?
गोयमा ! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति, एवं जहेव ओववाइए तहेव ।

---

१. भ० २।३० ।
२. भ० २।३१ ।
३. ओ० सू० ७१-७७ ।
४. भ० २।५२ ।
५. भ० २।३१ ।
६. भ० ९।१५०,१५१ ।
७. भ० ९।१५१ ।
८. भ० ९।१५१ ।

संघयण संठाण, उच्चत्त आउयं च परिवसणा ।
एव सिद्धिगंडिया निरवसेसा भाणियव्वा° जाव[1]—
अव्वाबाहं सोक्ख, अणुभवंति सासय सिद्धा ।।

१६६. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति[2] ।।

---

१. ओ० सू० १९५ ।   २. भ० १।५१ ।

बारसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. सखे २. जयति ३. पुढवि ४. पोग्गल ५. अइवाय ६. राहु ७ लोगे य।
८. नागे य ९. देव १०. आया, बारसमसए दसुद्देसा ॥१॥

संख-पोक्खली-पदं

१. तेणं कालेण तेण समएण सावत्थी नामं नगरी होत्था—वण्णओ[1]। कोट्ठए चेइए—वण्णओ[2]। तत्थ णं सावत्थीए नगरीए बहवे सखप्पामोक्खा समणोवासया परिवसति—अड्ढा जाव[3] बहुजणस्स अपरिभूया, अभिगयजीवाजीवा जाव[4] अहापरिग्गहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणा विहरति। तस्स ण संखस्स समणोवासगस्स उप्पला नाम भारिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव[5] सुरूवा, समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणी विहरइ। तत्थ ण सावत्थीए नगरीए पोक्खली नाम समणोवासए परिवसइ—अड्ढे, अभिगयजीवाजीवे जाव अहापरिग्गहिएहि तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

२. तेणं कालेण तेणं समएण सामी समोसढे। परिसा जाव[6] पज्जुवासइ। तए ण ते समणोवासगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जहा आलभियाए जाव[7] पज्जुवासंति। तए णं समणे भगव महावीरे तेसिं समणोवासगाण तीसे य महतिमहालियाए परिसाए 'धम्मं परिकहेइ'[8] जाव[9] परिसा पडिगया॥

३. तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समण भगवं महावीरं वदंति नमंसंति, वंदित्ता नमसित्ता पसि-

---

१. ओ० सू० १।
२. ओ० सू० २-१३।
३. भ० २।९४।
४. भ० २।९४।
५. ओ० सू० १५।
६. ओ० सू० ५२।
७. भ० ११।१७८।
८. धम्मकहा (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
९. ओ० सू० ७१-७९।

णाइ पुच्छति, पुच्छित्ता अट्ठाइ परियादियति[1], परियादियित्ता उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सावत्थी नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४ तए णं से संखे समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! विपुलं 'असणं पाणं खाइमं साइमं'[2] उवक्खडावेह । तए णं अम्हे तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्साएमाणा[3] विस्साएमाणा 'परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा'[4] पक्खियं पोसहं[5] पडिजागरमाणा विहरिस्सामो ॥

५ तए णं ते समणोवासगा संखस्स समणोवासगस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ॥

६. तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[6] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—नो खलु मे सेयं तं विपुलं असणं पाणं खाइमं[7] साइमं अस्साएमाणस्स विस्साएमाणस्स परिभाएमाणस्स परिभुंजेमाणस्स पक्खियं पोसहं[8] पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, सेयं खलु मे पोसहसालाए पोसहियस्स बंभचारिस्स ओमुक्कमणि[9]-सुवण्णस्स ववगयमाला[10]-वण्णग-विलेवणस्स निक्खित्तसत्थ-मुसलस्स एगस्स अबिइयस्स दब्भसंथारोवगयस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव सावत्थी नगरी, जेणेव सए गिहे, जेणेव उप्पला समणोवासिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उप्पलं समणोवासियं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं अणुपविस्सइ, अणुपविसित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी[11] •ओमुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमाला-वण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थ-मुसले एगे अबिइए दब्भसंथारोवगए° पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ ॥

७. तए णं ते समणोवासगा जेणेव सावत्थी नगरी जेणेव साइं-साइं गिहाइं, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणु-

---

१. पडियाइयति (ता) ।
२. असणपाणखाइमसाइमं (क, ख, ता, ब, म) ।
३. आसाएमाणा (स) ।
४. परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा (अ, क, ख, स); परिभुंजमाणा परियाभाएमाणा (ता) ।
५. पोसहियं (त) (ख, ता, म) ।
६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
७. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
८. पोसहियं (ख, ता, म,) ।
९. उम्मुक्क° (ब, म) ।
१०. °मल्लग (ता) ।
११. सं० पा०—बंभचारी जाव पक्खियं ।

प्पिया ! अम्हेहिं से विउले असण-पाण-खाइम-साइमे उवक्खडाविए, संखे य णं समणोवासए नो हव्वमागच्छइ, तं सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं संख समणोवासगं सद्दावेत्तए ॥

८ तए ण से पोक्खली समणोवासए 'ते समणोवासए'[1] एवं वयासी—अच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सुनिव्वुय[2]-वीसत्था, अहण्णं संखं समणोवासगं सद्दावेमि त्ति कट्टु तेसिं समणोवासगाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सावत्थीए नगरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव संखस्स समणोवासगस्स गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता संखस्स समणोवासगस्स गिहं अणुपविट्ठे ॥

९. तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता पोक्खलिं समणोवासगं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता आसणेणं उवनिमंतेइ[3], उवनिमंतेत्ता एवं वयासी—संदिसतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पयोयणं ?

१०. तए ण से पोक्खली समणोवासए उप्पलं समणोवासियं एवं वयासी—कहिण्णं[4] देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए ?

११. तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासयं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी[5] •ओमुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे निक्खित्तसत्थ-मुसले एगे अबिइए दब्भसंथारोवगए पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे° विहरइ ॥

१२ तए णं से पोक्खली समणोवासए जेणेव पोसहसाला, जेणेव संखे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता संखं समणोवासगं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं से विउले असण-पाण-खाइम-साइमे उवक्खडाविए, तं गच्छामो णं[6] देवाणुप्पिया ! तं विउलं असणं[7] •पाणं खाइमं° साइमं अस्साएमाणा[8] •विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा पक्खियं पोसहं° पडिजागरमाणा विहरामो ॥

१३. तए णं से संखे समणोवासए पोक्खलिं समणोवासगं एवं वयासी—नो खलु

---

१. × (ख, ता, ब, म)।
२. सुनिव्वुया (अ, स)।
३. निमंतेइ (ता)।
४. कहि ण (अ, क, ख, ता, ब, म)।
५. सं० पा०—बंभचारी जाव विहरइ।
६. × (क, ख, ता, ब, म)।
७. सं० पा०—असणं जाव साइमं।
८. सं० पा०—अस्साएमाणा जाव पडिजागरमाणा।

कप्पइ देवाणुप्पिया ! तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्साएमाणस्स[1] •विस्साएमाणस्स परिभाएमाणस्स परिभुंजेमाणस्स पक्खियं पोसहं° पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, कप्पइ मे पोसहसालाए पोसहियस्स[2] •बंभचारिस्स ओमुक्कमणि-सुवण्णस्स ववगयमाला-वण्णग-विलेवणस्स निक्खित्तसत्थ-मुसलस्स एगस्स अबिइयस्स दब्भसंथारोवगयस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स° विहरित्तए, 'तं छंदेणं'[3] देवाणुप्पिया ! तुब्भे तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्साएमाणा[4] •विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा° विहरह ॥

१४. तए णं से पोक्खली समणोवासए संखस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव ते समणोवासगा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते समणोवासए एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए जाव[5] विहरइ, तं छंदेणं देवाणुप्पिया ! तुब्भे विउलं असणं[6] •पाणं खाइमं साइमं अस्साएमाणा विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा° विहरह, संखे णं समणोवासए नो हव्वमागच्छइ । तए णं ते समणोवासगा तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्साएमाणा जाव विहरंति ॥

१५ तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे[7] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[8] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता जाव[9] पज्जुवासित्ता तओ पडिनियत्तस्स पक्खियं पोसहं पारित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर[10] परिहिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेणं सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं[11] •निग्गच्छइ,

---

१ सं० पा०—अस्साएमाणस्स जाव पडिजागरमाणस्स ।

२ सं० पा०—पोसहियस्स जाव विहरित्तए ।

३ तत्थ णं (अ), तं णं छंदेणं (ख) ।

४. सं० पा०—अस्साएमाणा जाव विहरह ।

५. भ० १२।६ ।

६. सं० पा०—असणं ४ जाव विहरह ।

७. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।

८. भ० २।६६ ।

९. भ० २।३१ ।

१०. × (ब) ।

११. सं० पा०—मज्झंमज्झेणं जाव पज्जुवासति अभिगमो नत्थि ।

निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए° पज्जुवासति ॥

१६. तए ण ते समणोवासगा कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[2] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सएहि-सएहि गिहेहितो पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता एगयओ मेलायति[3], मेलायित्ता [4]°पायविहारचारेण सावत्थीए नगरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगव महावीर जाव[5] तिविहाए पज्जुवासणाए° पज्जुवासति ॥

१७. तए ण समणे भगव महावीरे तेसि समणोवासगाण तीसे य महतिमहालियाए परिसाए 'धम्मं परिकहेइ'[6] जाव[7] आणाए आराहए भवइ ॥

१८ तए ण ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीर वदति नमसति, वंदित्ता नमसित्ता जेणेव सखे समणोवासए, तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सखं समणोवासयं एवं वयासी—तुमं ण देवाणुप्पिया ! हिज्जो अम्हे अप्पणा चेव एव वयासी—तुम्हे ण देवाणुप्पिया ! विउलं असण[8] °पाण खाइम साइम उवक्खडावेह । तए णं अम्हे त विपुल असण पाण खाइम साइम अस्साएमाणा विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुजेमाणा पक्खियं पोसह पडिजागरमाणा° विहरिस्सामो । तए णं तुमं पोसहसालाए[9] °पोसहिए बभचारी ओमुक्कमणिसुवण्णे ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे निक्खत्तसत्थ-मुसले एगे अबिइए दब्भसथारोवगए पक्खिय पोसह पडिजागरमाणे° विहरिए, त सुट्ठु ण तुम देवाणुप्पिया ! अम्हे हीलसि[10] ॥

१९. अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एव वयासी— मा ण अज्जो ! तुब्भे सख समणोवासग हीलह निदह खिसह गरहह अवमण्णह । सखे ण समणोवासए पियधम्मे चेव, दढधम्मे चेव, सुदक्खुजागरिय जागरिए ॥

---

१. भ० २।६६ ।
२. भ० २।६७ ।
३. मिलायति (अ, ख, व, स) ।
४. स० पा०—सेसं जहा पढम जाव पज्जुवासति ।
५. भ० २।६७ ।
६. धम्मकहा (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
७. ओ० सू० ७१-७७ ।
८. स० पा०—असणं जाव विहरिस्सामो ।
९. स० पा०—पोसहसालाए जाव विहरिए ।
१०. हीलेसि (म, स) ।

२०. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कतिविहा णं भंते ! जागरिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा जागरिया पण्णत्ता, तं जहा—बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खुजागरिया ॥

२१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तिविहा जागरिया पण्णत्ता, तं जहा—बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खुजागरिया ?
गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो उप्पण्णनाणदंसणधरा [1]•अरहा जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए॰ सव्वण्णू सव्वदरिसी एए णं बुद्धा[2] बुद्धजागरियं जागरंति।
जे इमे अणगारा भगवंतो रियासमिया[3] भासासमिया[4] •एसणासमिया आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिया उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिया मणसमिया वइसमिया कायसमिया मणगुत्ता वइगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता गुत्तिंदिया॰ गुत्तबंभचारी[5]—एए णं अबुद्धा अबुद्धजागरियं जागरंति।
जे इमे समणोवासगा अभिगयजीवाजीवा जाव[6] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति—एए णं सुदक्खुजागरियं जागरंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—तिविहा जागरिया[7] •पण्णत्ता, तं जहा—बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया॰, सुदक्खुजागरिया ॥

२२. तए णं से संखे समणोवासए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कोहवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?
संखा ! कोहवसट्टे णं जीवे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ [8]•धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ, हस्सकालठिइयाओ दीहकालठिइयाओ पकरेइ, मंदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ बहुप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, अस्सायावेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं॰ अणुपरियट्टइ ॥

२३. माणवसट्टे णं भंते ! जीवे [9]•किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं

---

१. सं॰ पा॰—जहा खंदए जाव सव्वण्णू ।
२. × (अ) ।
३. इरिया॰ (व म) ।
४. सं॰ पा॰—भासासमिया जाव गुत्तबंभचारी ।
५. ॰चारिणो (अ) ।
६. भ॰ २।९४ ।
७. सं॰ पा॰—जागरिया जाव सुदक्खु॰ ।
८. सं॰ पा॰—एवं जहा पढमसए असंवुडस्स अणगारस्स जाव अणुपरियट्टइ ।
९. सं॰ पा॰—एवं चेव, एवं मायवसट्टे वि एवं लोभवसट्टे वि जाव अणुपरियट्टइ ।

उवचिणाइ ? एवं चेव जाव[1] अणुपरियट्टइ ॥

२४. मायवसट्टे[2] णं भंते ! जीवे कि बंधइ ? कि पकरेइ ? किं चिणाइ ? कि उवचिणाइ ? एवं चेव जाव[3] अणुपरियट्टइ ॥

२५. लोभवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? कि पकरेइ ? कि चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एव चेव जाव[4]° अणुपरियट्टइ ॥

२६. तए ण ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म भीया तत्था तसिया ससारभउव्विग्गा समण भगव महावीर वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव सखे समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता संखं समणोवासग वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ सम्म विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेंति । तए ण ते समणोवासगा [5]°पसिणाइ पुच्छंति, पुच्छित्ता अट्ठाइं परियादियंति, परियादियित्ता समण भगवं महावीर वदति नमसति, वंदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥

२७. भंतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीरं वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—पभू ण भंते ! संखे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतिय [6]°मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा ! सखे समणोवासए बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अहापरिग्गहिएहि तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे बहूइ वासाइं समणोवासगपरियाग पाउणिहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताण झूसेहिति, झूसेत्ता सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेहिति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ ण अत्थेगतियाण देवाणं चत्तारि पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता । तत्थ ण सखस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइ ठिती भविस्सति ॥

२८. से ण भते ! संखे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएण अणंतरं चयं चइत्ता कहि गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिति ॥

२९. सेव भंते ! सेव भते ! त्ति जाव[7] विहरइ ॥

---

१. भ० १२।२२ ।
२. मायावयट्टे (ब, म) ।
३. भ० १२।२२ ।
४. भ० १२।२२ ।
५. सं० पा०—सेसं जहा आलभियाए जाव पडिगया ।
६. सं०पा०—सेसं जहा इसिभद्दपुत्तस्स जाव अंत ।
७. भ० १।५१ ।

बीओ उद्देसो

उदयणादीणं धम्मसवण-पदं

३०. तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसंबी नामं नगरी होत्था—वण्णओ[1]। चंदोतरणे[2] चेइए—वण्णओ[3]। तत्थ णं कोसंबीए नगरीए सहस्साणीयस्स रण्णो पोत्ते, सयाणीयस्स रण्णो पुत्ते, चेडगस्स रण्णो नत्तुए, मिगावतीए देवीए अत्तए, जयंतीए समणोवासियाए भत्तिज्जए उदयणे[4] नामं राया होत्था—वण्णओ[5]। तत्थ णं कोसंबीए नयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो सुण्हा, सयाणीयस्स रण्णो भज्जा, चेडगस्स रण्णो धूया, उदयणस्स रण्णो माया, जयंतीए समणोवासियाए भाउज्जा मिगावती नामं देवी होत्था[6]—सुकुमालपाणिपाया जाव[7] सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा जाव[8] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ। तत्थ णं कोसंबीए नगरीए सहस्साणीयस्स रण्णो धूया, सयाणीयस्स रण्णो भगिणी, उदयणस्स रण्णो पिउच्छा, मिगावतीए देवीए नणदा, वेसालियसावयाणं[9] अरहंताणं पुव्वसेज्जातरी[10] जयंती नामं समणोवासिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव सुरूवा अभिगयजीवाजीवा जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ॥

३१. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव[11] परिसा पज्जुवासइ॥

३२. तए णं से उदयणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे[12] कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कोसंबिं नगरिं सब्भितर-बाहिरियं आसित्त-सम्मज्जिओवलित्तं[13] करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। एवं जहा कूणिओ तहेव सव्वं जाव[14] पज्जुवासइ॥

३३. तए णं सा जयंती समणोवासिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठा जेणेव मिगावती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिगावतिं देविं एवं वयासी—[15]

---

१. ओ० सू० १।
२. चंदोत्तराए (अ), चंदोवरणे (ख), चंदोवतरणे (स)।
३. ओ० सू० २-१३।
४. उदायणे (अ), उद्दायणे (स)।
५. ओ० सू० १४।
६. होत्था वण्णओ (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
७. ओ० सू० १५।
८. भ० २।९४।
९. वेसालीसावयाणं (अ, क, ख, व, म, स)।
१०. °सिज्जायरी (अ, स)।
११. ओ० सू० २२-५२।
१२. हट्ठतुट्ठ (ता)।
१३. पू०—ओ० सू० ५५।
१४. ओ० सू० ५६-६९।
१५. सं० पा०—एवं जहा नवमसए उसभदत्तो जाव भविस्सइ।

•एवं खलु देवाणुप्पिए ! समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव[1] सव्वण्णू सव्व-दरिसी आगासगएणं चक्केण जाव[2] सुहंसुहेणं विहरमाणे चंदोतरणे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिए ! तहारूवाण अरहताण भगवंताण नामगोयस्स वि सवणयाए जाव[3] एयं णे इहभवे य, परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्से-साए आणुगामियत्ताए° भविस्सइ ॥

३४. तए णं सा मिगावती देवी जयतीए समणोवासियाए[4] •एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्प-माणहियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जयतीए समणोवासियाए एयमट्ठं विणएणं° पडिसुणेइ ॥

३५. तए णं सा मिगावती देवी कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइय जाव[5] धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह[6] •उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

३६. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा मिगावतीए देवीए एवं वुत्ता समाणा धम्मियं जाण-प्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेंति, उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ॥

३७. तए णं सा मिगावती देवी जयतीए समणोवासियाए सद्धिं ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[7] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा बहूहिं खुज्जाहिं जाव[8] चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-थेरकचुइज्ज-महत्तरगवंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ निग्गच्छइ, निग्ग-च्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[9] •धम्मिए जाणप्पवरं° दुरूढा[10] ॥

३८. तए णं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा[11] समाणी नियगपरियालसंपरिवुडा जहा उसभदत्तो जाव[12] धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ ॥

३९. तए णं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं बहूहिं जहा देवाणंदा

---

१. भ० १।७।
२. ओ० सू० १६।
३. भ० ६।१३६।
४. सं० पा०—जहा देवाणंदा जाव पडिसुणेइ।
५. भ० ६।१४१।
६. सं० पा०—उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति जाव पच्चप्पिणंति।
७. भ० २।६७।
८. भ० ६।१४४।
९. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव दुरूढा।
१०. दूढा (अ, क, ख, ता, ब, म)।
११. दूढा (अ, क, ख, ता, ब, म)।
१२. भ० ६।१४५।

जाव[1] वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उदयणं रायं पुरओ कट्टु ठिया[2] चेव[3] •सपरिवारा सुस्सूसमाणी नमंसमाणी अभिमुहा विणएणं पंजलिकडा॰ पज्जुवासइ ॥

४०. तए णं समणे भगवं महावीरे उदयणस्स रण्णो मिगावतीए देवीए जयंतीए समणोवासियाए तीसे य महतिमहालियाए परिसाए जाव[4] धम्मं परिकहेइ जाव[5] परिसा पडिगया, उदयणे पडिगए, मिगावती वि पडिगया ॥

जयंती-पसिण-पदं

४१. तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कहण्णं[6] भंते ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ?
जयंती ! पाणाइवाएणं[7] •मुसावाएणं अदिण्णादाणेणं मेहुणेणं परिग्गहेणं कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुन्न-परपरिवाय-अरतिरति-मायामोस-मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥

४२. कहण्णं भंते ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ?
जयंती ! पाणाइवायवेरमणेणं मुसावायवेरमणेणं अदिण्णादाणवेरमणेणं मेहुणवेरमणेणं परिग्गहवेरमणेणं कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुन्न-परपरिवाय-अरतिरति-मायामोस-मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥

४३. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं आउलीकरेंति ?
जयंती ! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा संसारं आउलीकरेंति ॥

४४. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं परित्तीकरेंति ?
जयंती ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा संसारं परित्तीकरेंति ॥

४५. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं दीहीकरेंति ?

---

१. भ० ६।१४६।
२. ठितिया (अ, क, ख, स)।
३. सं० पा०—चेव जाव पज्जुवासइ।
४. भ० ६।१४६।
५. ओ० सू० ७१-७६।
६. कह णं (क, ता, व); कह ण (ख, म); कहिण्णं (स)।
७. सं० पा०—पाणातिवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं एवं खलु जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति एवं जहा पढमसए जाव वीतिवयंति।

जयंती ! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा संसारं दीहीकरेंति ॥

४६. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं ह्रस्सीकरेंति ?
जयंती पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एव खलु जयंती ! जीवा संसारं ह्रस्सीकरेंति ॥

४७. कहण्णं भंते ! जीवा संसार अणुपरियट्टंति ?
जयंती ! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादसणसल्लेणं—एव खलु जयंती ! जीवा संसार अणुपरियट्टंति ॥

४८. कहण्णं भंते ! जीवा संसार वीतिवयंति ?
जयंती ! पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एव खलु जयंती ! जीवा संसारं° वीतिवयंति ॥

४९. भवसिद्धियत्तणं भंते ! जीवाण किं सभावओ ? परिणामओ ?
जयती ! सभावओ, नो परिणामओ ॥

५०. सव्वेवि णं भंते ! भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति ?
हंता जयती ! सव्वेवि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सति ॥

५१. जइ णं भंते ! सव्वे भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति, तम्हा णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५२. से केणं खाइणं[1] अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सव्वेवि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति, नो चेव णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ?
जयंति ! से जहानामए सव्वागाससेढी सिया—अणादीया अणवदग्गा परित्ता परिवुडा, सा णं परमाणुपोग्गलमेत्तेहिं खंडेहिं समए-समए अवहीरमाणी-अवहीरमाणी अणंताहि ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीहिं अवहीरंति, नो चेव ण अवहिया सिया। से तेणट्ठेणं जयंती ! एवं वुच्चइ—सव्वेवि ण भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति, नो चेव णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ॥

५३. सुत्तत्तं भंते ! साहू ? जागरियत्तं साहू ?
जयंती ! अत्थेगतियाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं जागरियत्त साहू ॥

५४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगतियाणं[2] °जीवाण सुत्तत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं जागरियत्त° साहू ?
जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया अहम्माणुया अहम्मिट्ठा अहम्मक्खाई अहम्मपलोई अहम्मपलज्जणा अहम्मसमुदायारा अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विह-

---

१. खाइएणं (ता); खातेणं (स)।

२. सं० पा०—अत्थेगतियाण जाव साहू।

रति, एएसि णं जीवाण सुत्तत्तं साहू । एए ण जीवा सुत्ता समाणा नो बहूणं पाणाणं भूयाण जीवाण सत्ताण दुक्खणयाए सोयणयाए[1] •जूरणयाए तिप्पणयाए पिट्टणयाए° परियावणयाए वट्टंति । एए णं जीवा सुत्ता समाणा अप्पाण वा परं वा तदुभय वा नो बहूहिं अहम्मियाहिं सजोयणाहि सजोएत्तारो भवति एएसि ण जीवाणं सुत्तत साहू ।

जयती ! जे इमे जीवा धम्मिया धम्माणुया[2] •धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मपलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा° धम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणा विहरति, एएसि ण जीवाण जागरियत्त साहू । एए णं जीवा 'जागरा समाणा'[3] बहूणं पाणाण[4] •भूयाण जीवाणं° सत्ताण अदुक्खणयाए[5] •असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए° अपरियावणयाए वट्टंति । एए[6] ण जीवा जागरा समाणा अप्पाण वा पर वा तदुभयं वा बहूहिं धम्मियाहि सजोयणाहिं सजोए-त्तारो भवति । एए ण जीवा जागरा समाणा धम्मजागरियाए अप्पाण जागर-इत्तारो भवति । एएसि णं जीवाण जागरियत्तं साहू । से तेणट्ठेण जयती ! एव वुच्चइ—अत्थेगतियाण जीवाणं सुत्तत्त साहू, अत्थेगतियाण जीवाणं जागरियत्तं साहू ॥

५५. बलियत्त भते ! साहू ? दुब्बलियत्त साहू ?
जयती ! अत्थेगतियाण जीवाण बलियत्तं साहू, अत्थेगतियाण जीवाण दुब्बलि-यत्त साहू ॥

५६. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ[7]—•अत्थेगतियाणं जीवाणं बलियत्त साहू, अत्थेग-तियाणं जीवाण दुब्बलियत्त° साहू ?
जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव[8] अहम्मेणं चेव वित्ति कप्पेमाणा विह-रति, एएसि ण जीवाण दुब्बलियत्त साहू । एए णं जीवा [9]•दुब्बलिया समाणा नो बहूण पाणाण भूयाण जीवाणं सत्ताण दुक्खणयाए जाव परियावणयाए वट्टंति । एए ण जीवा दुब्बलिया समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहिं अहम्मियाहि सजोयणाहि सजोएत्तारो भवति । एएसि णं जीवाणं दुब्ब-लियत्त साहू ।

---

१. सं०पा०—सोयणयाए जाव परियावणयाए।
२. स० पा०—धम्माणुया जाव धम्मेणं ।
३. जागरमाणा (अ, क, ख) ।
४. सं० पा०—पाणाण जाव सत्ताण ।
५. स० पा०—अदुक्खणयाए जाव अपरियावण-याए ।
६. ते (अ) ।
७. स० पा०—वुच्चइ जाव साहू ।
८. भ० १२।५४ ।
९. सं० पा०—एवं जहा सुत्तस्स तहा दुब्बलिय-वत्तव्वया भाणियव्वा, बलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियव्वं जाव संजोएत्तारो ।

जयंती ! जे इमे जीवा धम्मिया जाव धम्मेणं चेव वित्ति कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं बलियत्तं साहू । एए णं जीवा बलिया समाणा बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टंति । एए णं जीवा बलिया समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा बहूहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं° संजोएत्तारो भवंति । एएसि णं जीवाणं बलियत्तं साहू । से तेणट्ठेणं जयंती ! एवं वुच्चइ—°[1]अत्थेगतियाणं जीवाणं बलियत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं° साहू ॥

५७. दक्खत्तं भंते ! साहू ? आलसियत्तं साहू ?
जयंती ! अत्थेगतियाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं आलसियत्तं साहू ॥

५८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—°[2]अत्थेगतियाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं आलसियत्तं° साहू ?
जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं आलसियत्तं साहू । एए णं जीवा आलसा[3] समाणा नो बहूणं [4]°पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए जाव परियावणयाए वट्टंति । एए णं जीवा आलसा समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति । एएसि णं जीवाणं आलसियत्तं साहू ।
जयंति ! जे इमे जीवा धम्मिया जाव धम्मेणं चेव वित्ति कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं दक्खत्तं साहू । एए णं जीवा दक्खा समाणा बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टंति । एए णं जीवा दक्खा समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा बहूहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं° संजोएत्तारो भवंति । एए णं जीवा दक्खा समाणा बहूहिं आयरियवेयावच्चेहिं[5] उवज्झायवेयावच्चेहिं थेरवेयावच्चेहिं तवस्सिवेयावच्चेहिं गिलाणवेयावच्चेहिं सेहवेयावच्चेहिं कुलवेयावच्चेहिं गणवेयावच्चेहिं संघवेयावच्चेहिं साहम्मियवेयावच्चेहिं अत्ताणं संजोएत्तारो भवंति, एएसि णं जीवाणं दक्खत्तं साहू । से तेणट्ठेणं [6]°जयंती ! एवं वुच्चइ—अत्थेगतियाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं आलसियत्तं° साहू ॥

---

१. सं० पा०—तं चेव जाव साहू ।
२. सं० पा०—तं चेव जाव साहू ।
३. अलसा (अ, ब) ।
४. सं० पा०—जहा सुत्ता तहा आलसा भाणियव्वा, जहा जागरा तहा दक्खा भाणियव्वा जाव संजोएत्तारो ।
५. °वेदावच्चेहिं (अ, व) ।
६. सं० पा०—तं चेव जाव साहू ।

५९. सोइंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? [1]किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?
जयंती ! सोइंदियवसट्टे णं जीवे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ, हस्सकालठिइयाओ दीहकालठिइयाओ पकरेइ, मंदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ बहुप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, अस्सायावेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं° अणुपरियट्टइ ॥

६०. [2]°चक्खिदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव जाव अणुपरियट्टइ ॥

६१. घाणिंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव जाव अणुपरियट्टइ ॥

६२. रसिंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव जाव अणुपरियट्टइ ॥

६३. फासिंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव जाव° अणुपरियट्टइ ॥

६४. तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा सेसं जहा देवाणंदा तहेव पव्वइया जाव[3] सव्वदुक्खप्पहीणा ॥

६५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

तइओ उद्देसो

पुढवी-पदं

६६. रायगिहे जाव[5] एवं वयासी—कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पढमा, दोच्चा जाव सत्तमा ॥

---

१. सं० पा०—एवं जहा कोहवसट्टे तहेव जाव अणुपरियट्टइ ।
२. सं० पा०—एवं चक्खिदियवसट्टे वि एवं जाव फासिंदियवसट्टे वि जाव अणुपरियट्टइ ।
३. भ० ९।१५२-१५५ ।
४. भ० १।५१ ।
५. भ० १।४-१० ।

६७. पढमा णं भंते ! पुढवी किगोत्ता पण्णत्ता ?
गोयमा ! घम्मा नामेण, रयणप्पभा गोत्तेणं, एव जहा जीवाभिगमे पढमो नेरइयउद्देसओ सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो जाव[1] अप्पाबहुग ति ॥
६८. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति[2] ॥

चउत्थो उद्देसो

परमाणुपोग्गलाणं संघात-भेद-पदं

६९ रायगिहे जाव[3] एवं वयासी—दो भते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति, साहण्णित्ता कि भवइ ?
गोयमा ! दुप्पएसिए खधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ—एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ ॥
७०. तिण्णि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति, साहणित्ता कि भवइ ?
गोयमा ! तिपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे भवइ। तिहा कज्जमाणे तिण्णि परमाणुपोग्गला भवति ॥
७१. चत्तारि भते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति,[4] °साहणित्ता किं भवइ ?°
गोयमा ! चउपएसिए खधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि चउहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ; अहवा दो दुपएसिया खंधा भवति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे भवइ। चउहा कज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवति ॥
७२. पंच भते ! परमाणुपोग्गला [5]°एगयओ साहण्णति, साहणित्ता किं भवइ ?°
गोयमा ! पंचपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि चउहा वि पंचहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउपए-

---

१. जी० ३।
२. भ० १।५१।
३. भ० १।४-१०।
४. स० पा०—साहण्णति जाव पुच्छा।
५. सं० पा०—पुच्छा।

सिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। पंचहा कज्जमाणे पंच परमाणुपोग्गला भवंति॥

७३ छब्भंते! परमाणुपोग्गला [1]एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ?० गोयमा! छप्पएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि जाव छव्विहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा दो तिपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु-पोग्गला, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा तिण्णि दुपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणु-पोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। छहा कज्जमाणे छ परमाणुपोग्गला भवंति॥

७४ सत्त भंते! परमाणुपोग्गला [2]एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ?० गोयमा! सत्तपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव सत्तहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपए-सिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपए-

---

१. स० पा०—पुच्छा। २. स० पा०—पुच्छा।

सिया खंधा भवति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। सत्तहा कज्जमाणे सत्त परमाणुपोग्गला भवंति॥

७५. अट्ठ भंते! परमाणुपोग्गला [1]•एगयओ साहण्णंति, साहण्णित्ता किं भवइ?० गोयमा! अट्ठपएसिए खंधे भवइ[2]। •से भिज्जमाणे दुहा वि जाव अट्ठहा वि कज्जइ०—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा दो चउप्पएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला भवंति, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दोण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। अट्ठहा कज्जमाणे अट्ठ परमाणुपोग्गला भवंति॥

७६. नव भंते! परमाणुपोग्गला [3]•एगयओ साहण्णंति, साहण्णित्ता किं भवइ?० गोयमा[4]! •नवपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव नवहा[5] वि कज्जइ०—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे

१. सं० पा०—पुच्छा।
२. सं० पा०—भवइ जाव दुहा।
३. सं० पा०—पुच्छा।
४. सं० पा०—गोयमा जाव नवहा।
५. नवविहा (ता, स)।

भवइ, [1]॰अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ,॰ अहवा एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा तिण्णि तिपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ तिण्णि दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिण्णि दुप्पएसिया खंधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। नवहा कज्जमाणे नव परमाणुपोग्गला भवंति॥

७७. दस भंते! परमाणुपोग्गला[2] ॰एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ?

---

१. स० पा०—एवं एक्केक्कं संचारेंतेहिं जाव अहवा। २. स० पा—॰पोग्गला जाव दुहा।

गोयमा ! दसपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि कज्जइ°—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ नवपएसिए खंधे भवइ ; अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ अट्ठपएसिए खधे भवइ, [1]•अहवा एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ सत्तपएसिए खधे भवइ ; अहवा एगयओ चउप्पएसिए खधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ° ; अहवा दो पंचपएसिया खधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अट्ठपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ सत्तपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउप्पएसिए खधे, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दो तिपएसिया खधा, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खधे, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो चउप्पएसिया खधा भवंति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि तिपएसिया खधा भवंति; अहवा एगयओ तिण्णि दुपएसिया खधा, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ दो दुपएसिया खधा, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति। पचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खधा, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ; अहवा पंच दुपएसिया खंधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पच

1. सं० पा०—एवं एक्केक्कं सचारेतेण जाव अहवा।

परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा भवंति। अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। नवहा कज्जमाणे एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। दसहा कज्जमाणे दस परमाणुपोग्गला भवंति ॥

७८. संखेज्जा णं भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ ? गोयमा ! संखेज्जपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि संखेज्जहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा तिण्णि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; एवं जाव अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दसपएसिए

खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिण्णि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ तिण्णि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, अहवा चत्तारि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, एवं एएणं कमेणं पंचगसंजोगो वि भाणियव्वो जाव नवगसंजोगो। दसहा कज्जमाणे एगयओ नव परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ। एएणं कमेण एक्केक्को पूरेयव्वो जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ नव संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, अहवा दस संखेज्जपएसिया खंधा भवंति। संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति॥

७९. असंखेज्जा भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति[1], साहणित्ता किं भवइ? गोयमा! असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि, संखेज्जहा वि, असंखेज्जहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे भवइ, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति; एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा तिण्णि असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; एवं चउक्कगसंजोगो जाव दसगसंजोगो। एए जहेव संखेज्जपएसियस्स, नवरं—असंखेज्जगं एगं अहिगं भाणियव्वं जाव अहवा दस

---

१. साहणंति (अ, क, ख, म, स)।

असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति। संखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ संखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ सखेज्जा दुपएसिया खंधा, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ, एव जाव अहवा एगयओ सखेज्जा दसपएसिया खधा, एगयओ असखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ सखेज्जा सखेज्जपएसिया खधा, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ; अहवा सखेज्जा असखेज्जपएसिया खधा भवति। असखेज्जहा कज्जमाणे असखेज्जा परमाणुपोग्गला भवति ॥

८०. अणता ण भते ! परमाणुपोग्गला[1] °एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता° कि भवइ ?

गोयमा ! अणतपएसिए खधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि जाव दसहा वि 'सखेज्जहा वि असखेज्जहा वि'[2] अणतहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ जाव अहवा दो अणत-पएसिया खधा भवति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो अणतपएसिया खधा भवति; अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ दो अणतपएसिया खधा भवति, एव जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो अणतपएसिया खधा भवंति; अहवा एगयओ सखेज्जपएसिए खधे, एगयओ दो अणतपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ असंखेज्जपएसिए खधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खधा भवति, अहवा तिण्णि अणंतपएसिया खधा भवति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, एव चउक्कसजोगो जाव असखेज्जगसजोगो। एते सव्वे जहेव असखेज्जाणं भणिया तहेव अणताण वि भाणियव्व, नवर—एक्क अणतग अब्भहिय भाणियव्व जाव अहवा एगयओ सखेज्जा सखेज्जपएसिया खधा, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ सखेज्जा असखेज्जपएसिया खधा, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ; अहवा सखेज्जा अणतपएसिया खधा भवति। असखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ असखेज्जा दुपएसिया खधा, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ जाव अहवा

---

१. स० पा०—परमाणुपोग्गला जाव कि।

२. सखेज्जाअसखेज्ज (अ, क, ब, स), सखेज्जा-असखेज्जा (ख, म) सखेज्जाऽसखेज्जा (ता)।

एगयओ असंखेज्जा संखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ असंखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा असंखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति। अणतहा कज्जमाणे अणता परमाणुपोग्गला भवति ।।

पोग्गलपरियट्ट-पदं

८१. एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं साहणणा-भेदाणुवाएण अणताणता पोग्गलपरियट्टा समणुगतव्वा भवतीति मक्खाया ?
हंता गोयमा ! एएसि ण परमाणुपोग्गलाण साहणणा [1]•भेदाणुवाएण अणताणंता पोग्गलपरियट्टा समणुगंतव्वा भवतीति॰ मक्खाया ।।

८२. कइविहे ण भंते ! पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, त जहा—ओरालियपोग्गलपरियट्टे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे, तेयापोग्गलपरियट्टे, कम्मापोग्गलपरियट्टे, मणपोग्गलपरियट्टे, वइपोग्गलपरियट्टे, आणापाणुपोग्गलपरियट्टे[2] ।।

८३. नेरइयाण भते ! कतिविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तं जहा—ओरालियपोग्गलपरियट्टे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे जाव[3] आणापाणुपोग्गलपरियट्टे। एवं जाव[4] वेमाणियाणं ।।

८४. एगमेगस्स ण भते ! नेरइयस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणंता ।
केवइया पुरेक्खडा[5] ?
कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि। जस्सत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणता वा ।।

८५. एगमेगस्स ण भंते ! असुरकुमारस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा [6]•अतीता ?
अणता ।
केवइया पुरेक्खडा ?
कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि। जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणंता वा।॰ एव जाव वेमाणियस्स ।।

---

१. सं॰ पा॰—साहणणा जाव मक्खाया।
२. आणपाणु॰ (ख)।
३. भ॰ १२।८२।
४. पू॰ प॰ २।
५. पुरेक्कडा (अ); पुरक्खडा (क, ता)।
६. सं॰ पा॰—एव चेव जाव एवं।

८६. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवइया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणंता। एव जहेव ओरालियपोग्गलपरियट्टा तहेव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टावि भाणियव्वा। एव जाव[1] वेमाणियस्स। एव जाव[2] आणापाणुपोग्गलपरियट्टा। एते एगत्तिया सत्त दंडगा भवंति ॥

८७. नेरइयाणं भंते ! केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणता।
केवइया पुरेक्खडा ?
अणंता। एव जाव वेमाणियाणं। एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टावि। एव जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टा वेमाणियाणं। एवं एए पोहत्तिया सत्त चउव्वीसति-दडगा ॥

८८. एगमेगस्स ण भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
नत्थि एक्को वि।
केवतिया पुरेक्खडा ?
नत्थि एक्को वि ॥

८९ एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवतिया ओरालियपोग्गल-परियट्टा अतीता ?
एवं चेव। एव जाव थणियकुमारत्ते[3] ॥

९० एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स पुढविक्काइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गल-परियट्टा अतीता ?
अणंता।
केवतिया पुरेक्खडा ?
कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि। जस्सत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा। एव जाव मणुस्सत्ते। वाण-मतर-जोइसिय-वेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते ॥

९१. एगमेगस्स ण भते ! असुरकुमारस्स नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गल-परियट्टा° ?
एवं जहा नेरइयस्स वत्तव्वया भणिया, तहा असुरकुमारस्स वि भाणियव्वा जाव वेमाणियत्ते। एवं जाव थणियकुमारस्स। एव पुढविक्काइयस्स वि। एवं जाव वेमाणियस्स। सव्वेसि[4] एक्को गमो[5] ॥

---

१. पू० प० २।
२. भ० १२।८२।
३. °कुमारत्ते जहा असुरकुमारत्ते (अ, स)।
४. सव्वेसिं च (ता)।
५. गमओ (क, ता, व, म, स)।

९२. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवतिया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणंता ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
एकुत्तरिया[1] जाव अणंता वा । एवं जाव थणियकुमारत्ते ॥

९३. पुढविकाइयत्ते—पुच्छा ।
नत्थि एक्कोवि ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
नत्थि एक्कोवि[2] । एवं जत्थ वेउव्वियसरीरं[3] तत्थ एकुत्तरिओ, जत्थ नत्थि तत्थ जहा पुढविकाइयत्ते तहा भाणियव्वं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ।
तेयापोग्गलपरियट्टा, कम्मापोग्गलपरियट्टा य सव्वत्थ एकुत्तरिया भाणियव्वा, मणपोग्गलपरियट्टा सव्वेसु पंचिंदिएसु एगुत्तरिया, विगलिंदिएसु नत्थि । वइ-पोग्गलपरियट्टा एवं चेव, नवरं—एगिंदिएसु नत्थि भाणियव्वा । आणापाणु-पोग्गलपरियट्टा सव्वत्थ एकुत्तरिया जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ॥

९४. नेरइयाणं भंते ! नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
'नत्थि एक्कोवि'[4] ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
नत्थि एक्कोवि । एवं जाव थणियकुमारत्ते ॥

९५. पुढविकाइयत्ते—पुच्छा ।
अणंता ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
अणंता । एवं जाव मणुस्सत्ते । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियत्ते जहा नेरइयत्ते । एवं जाव वेमाणियाणं[5] वेमाणियत्ते । एवं सत्त वि पोग्गलपरियट्टा भाणियव्वा —जत्थ[6] अत्थि तत्थ[7] अतीता वि पुरेक्खडा वि अणंता भाणियव्वा, जत्थ[8] नत्थि तत्थ दोवि नत्थि भाणियव्वा जाव—

९६. वेमाणियाणं वेमाणियत्ते केवतिया आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणंता ।
केवतिया पुरेक्खडा ?

---

१. एगुत्तरिया (अ); एक्कुत्तरिया (क, ता) ।
२. तेक्कोवि (ब, म) ।
३. °सरीरं अत्थि (अ, स) ।
४. नत्थेक्कोवि (क, ख, म) ।
५. वेमाणियस्स (क, ता, ब) ।
६. जस्स (क, ता, ब, म) ।
७. तस्स (क, ता, ब, म) ।
८. जस्स (क, ख, ता, ब, म) ।

अणंता ॥

९७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—ओरालियपोग्गलपरियट्टे-ओरालियपोग्गल-परियट्टे ?

गोयमा ! जण्ण जीवेण ओरालियसरीरे वट्टमाणेण ओरालियसरीरपायोग्गाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए गहियाइं बद्धाइं पुट्ठाइं कडाइं पट्ठवियाइं निविट्ठाइं अभिनिविट्ठाइं अभिसमण्णागयाइं परियादियाइं परिणामियाइं निज्जिण्णाइं निसिरियाइं निसिट्ठाइं भवंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—ओरालियपोग्गलपरियट्टे-ओरालियपोग्गलपरियट्टे।

एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टेवि, नवरं—वेउव्वियसरीरे वट्टमाणेणं वेउव्वियसरीरप्पायोग्गाइं दव्वाइं वेउव्वियसरीरत्ताए गहियाइं, सेसं तं चेव सव्वं, एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे, नवरं—आणापाणुपायोग्गाइं सव्वदव्वाइं आणापाणुत्ताए गहियाइं, सेसं तं चेव ॥

९८. ओरालियपोग्गलपरियट्टे णं भंते ! केवइकालस्स निव्वत्तिज्जइ ?

गोयमा ! अणंताहिं 'ओसप्पिणीहिं उस्सप्पिणीहिं'[1] एवतिकालस्स निव्वत्तिज्जइ। एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे वि। एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टेवि ॥

९९. एयस्स णं भंते ! ओरालियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स य कयरे कयरेहिंतो[2] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवे कम्मगपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले, तेयापोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, ओरालियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, आणापाणुपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, मणपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वइपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे ॥

१००. एएसि णं भंते ! ओरालियपोग्गलपरियट्टाणं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टाण य कयरे कयरेहिंतो[3] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा, वइपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, मणपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, ओरालिय-

---

१. ओसप्पिणि-उस्स° (अ, ख, ब, म); उस्सपिणीहिं ओस° (क); उस्सप्पिणि-ओस° (स)।

२. स° पा°—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

३. स° पा°—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

पोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, तेयापोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, कम्मगपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा ।।

१०१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं जाव[1] विहरइ ।।

पंचमो उद्देसो

वण्णादि अवण्णादि च पडुच्च दव्ववीमंसा-पदं

१०२. रायगिहे जाव[2] एवं वयासी—अह भंते ! पाणाइवाए, मुसावाए, अदिण्णादाणे, मेहुणे, परिग्गहे—एस णं कतिवण्णे, कतिगंधे, कतिरसे, कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचवण्णे, दुगंधे, पंचरसे, चउफासे पण्णत्ते ।।

१०३. अह भंते ! कोहे, कोवे, रोसे, दोसे, अखमा, संजलणे, कलहे, चंडिक्के, भंडणे, विवादे—एस ण कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचवण्णे, 'दुगंधे, पंचरसे'[3], चउफासे पण्णत्ते ।।

१०४. अह भंते ! माणे, मदे, दप्पे, थंभे, गव्वे, अत्तुक्कोसे[4], परपरिवाए, उक्कोसे[5], अवक्कोसे[6], उण्णते, उण्णामे, दुण्णामे—एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचवण्णे, [7]°दुगंधे, पंचरसे, चउफासे, पण्णत्ते° ।।

१०५. अह भंते ! माया, उवही, नियडी, वलए[8], गहणे, णूमे, कक्के, कुरुए[9], जिम्हे[10], किब्बिसे, आयरणया, गूहणया, वंचणया, पलिउंचणया, सातिजोगे—एस ण कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचवण्णे [11]°दुगंधे पंचरसे चउफासे पण्णत्ते° ।।

१०६. अह भते ! लोभे, इच्छा, मुच्छा, कखा, गेही, तण्हा, भिज्झा, अभिज्झा, आसासणया, पत्थणया, लालप्पणया, कामासा, भोगासा, जीवियासा, मर-

---

१. भ० १।५१ ।
२. भ० १।४-१० ।
३. पंचरसे दुगंधे (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
४. अत्तुक्कासे (क, ख); अत्तुक्करिसे (ता) ।
५. उक्कासे (ख, वृपा) ।
६. अवक्कासे (ख, वृपा) ।
७. सं० पा०—जहा कोहे तहेव ।
८. वलये (अ, क, ख, व, म, स) ।
९. कुरूए (म) ।
१०. भिमे (अ, व, स); जिम्मे (क); भिम्मे (ख); पिम्हे (ता) ।
११. स० पा०—जहेव कोहे ।

णासा[1], नदिरागे[2]—एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[3]●गोयमा ! पंचवण्णे दुगंधे पचरसे चउफासे पण्णत्ते° ॥

१०७ अह भंते ! पेज्जे, दोसे, कलहे[4], ●अब्भक्खाणे, पेसुन्ने, परपरिवाए, अरतिरती, मायामोसे,° मिच्छादसणसल्ले—एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[5]●गोयमा ! पचवण्णे दुगंधे पचरसे चउफासे पण्णत्ते° ॥

१०८. अह भते ! पाणाइवायवेरमणे, जाव[6] परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव[7] मिच्छादंसणसल्लविवेगे—एस ण कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! अवण्णे, अगधे, अरसे, अफासे पण्णत्ते ॥

१०९ अह भंते ! उप्पत्तिया, वेणइया, कम्मया[8], पारिणामिया—एस णं कतिवण्णा जाव कतिफासा पण्णत्ता ?
[9]●गोयमा ! अवण्णा, अगधा, अरसा, अफासा पण्णत्ता° ॥

११०. अह भते ! ओग्गहे, ईहा, अवाए[10], धारणा—एस ण कतिवण्णा जाव कतिफासा पण्णत्ता ?
[11]●गोयमा ! अवण्णा, अगधा, अरसा°, अफासा पण्णत्ता ॥

१११. अह भते ! उट्ठाणे, कम्मे, बले, वीरिए, पुरिसक्कार-परक्कमे—एस ण कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[12]●गोयमा ! अवण्णे, अगधे, अरसे°, अफासे पण्णत्ते ॥

११२. सत्तमे णं भते ! ओवासतरे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[13]●गोयमा ! अवण्णे, अगधे, अरसे°, अफासे पण्णत्ते ॥

११३. सत्तमे ण भते ! तणुवाए कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[14]●गोयमा ! पचवण्णे, दुगधे, पचरसे° अट्ठफासे पण्णत्ते ।
एव जहा सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए, घणोदधी, पुढवी । छट्ठे ओवासतरे अवण्णे । तणुवाए जाव छट्ठी पुढवी—एयाइं अट्ठफासाइं । एव जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया तहा जाव पढमाए पुढवीए भाणियव्व । जबुद्दीवे दीवे जाव सयभुरमणे समुद्दे, सोहम्मे कप्पे जाव ईसिपब्भारा पुढवी,

---

१. इद च क्वचिन्न दृश्यते (वृ) ।
२. नदीरागे (क, व, म) ।
३. सं० पा०—जहेव कोहे ।
४. स० पा०—कलहे जाव मिच्छा° ।
५. सं० पा०—जहेव कोहे तहेव चउफासे ।
६. भ० १।३८५ ।
७. ठा० १।११५-१२५ ।
८. कम्मिया (अ, क, ख, ता, म) ।
९. स० पा०—त चेव जाव अफासा ।
१०. अपोहे (क), अपाए (व, म) ।
११. सं० पा०—एव चेव जाव अफासा ।
१२. सं० पा०—त चेव जाव अफासे ।
१३. स० पा०—एव चेव जाव अफासे ।
१४. सं० पा०—जहा पाणाइवाए नवरं अट्ठफासे ।

नेरइयावासा जाव वेमाणियावासा—एयाणि सव्वाणि अट्ठफासाणि ॥

११४. नेरइयाणं भंते ! कतिवण्णा जाव कतिफासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! वेउव्विय-तेयाइं पडुच्च[1] पंचवण्णा, 'दुगंधा, पंचरसा'[2], अट्ठफासा पण्णत्ता। कम्मगं पडुच्च पंचवण्णा, दुगंधा, पंचरसा, चउफासा पण्णत्ता। जीवं पडुच्च अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता। एवं जाव थणियकुमारा ॥

११५. पुढविक्काइयाणं—पुच्छा।
गोयमा ! ओरालिय-तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता। कम्मगं पडुच्च जहा नेरइयाणं। जीवं पडुच्च तहेव। एवं जाव चउरिंदिया, नवरं—वाउक्काइया ओरालिय-वेउव्विय-तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, सेसं जहा नेरइयाणं। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा वाउक्काइया ॥

११६. मणुस्साणं—पुच्छा।
ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता। कम्मगं जीवं च पडुच्च जहा नेरइयाणं वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया।
धम्मत्थिकाए जाव[3] पोग्गलत्थिकाए—एए सव्वे अवण्णा, नवरं—पोग्गलत्थिकाए पंचवण्णे, दुगंधे, पंचरसे, अट्ठफासे पण्णत्ते।
नाणावरणिज्जे जाव[4] अंतराइए—एयाणि चउफासाणि ॥

११७. कण्हलेसा णं भंते ! कतिवण्णा [5]°जाव कतिफासा पण्णत्ता ?°
दव्वलेसं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता। भावलेसं पडुच्च अवण्णा, अगंधा, अरसा, अफासा पण्णत्ता। एवं जाव[6] सुक्कलेस्सा।
सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी, चक्खुदंसणे, अचक्खुदंसणे, ओहिदंसणे, केवलदंसणे, आभिणिबोहियनाणे जाव[7] विभंगनाणे, आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा—एयाणि अवण्णाणि, अगंधाणि, अरसाणि, अफासाणि।
ओरालियसरीरे जाव तेयगसरीरे—एयाणि अट्ठफासाणि। कम्मगसरीरे[8] चउफासे। मणजोगे, वइजोगे य चउफासे, कायजोगे अट्ठफासे।
सागारोवओगे अणागारोवओगे य अवण्णे ॥

११८. सव्वदव्वा णं भंते ! कतिवण्णा [9]°जाव कतिफासा पण्णत्ता ?°

---

१. पडुच्चा (ता, ब, म)।
२. पंचरसा दुगंधा (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. भ० २।१२४।
४. भ० ६।३३।
५. सं० पा०—पुच्छा।
६. भ० १।१०२।
७. भ० २।१३७।
८. कम्मसरीरे (ब, म)।
९. सं० पा०—पुच्छा।

गोयमा ! अत्थेगतिया सव्वदव्वा पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता। अत्थेगतिया सव्वदव्वा पचवण्णा जाव चउफासा पण्णत्ता। अत्थेगतिया सव्वदव्वा एगवण्णा, एगगधा, एगरसा, दुफासा पण्णत्ता। अत्थेगतिया सव्वदव्वा अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता। एवं सव्वपएसा वि, सव्वपज्जवा वि। तीयद्धा अवण्णा जाव अफासा। एव अणागयद्धा वि, सव्वद्धा वि॥

११९. जीवे णं भते ! गब्भं वक्कममाणे कतिवण्णं, कतिगधं, कतिरसं, कतिफासं परिणामं[1] परिणमइ ?
गोयमा ! पंचवण्णं, दुगधं, पंचरसं, अट्ठफास परिणामं[2] परिणमइ॥

कम्मओ विभत्ति-पदं

१२०. कम्मओ णं भते ! जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ ? कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ ?
हता गोयमा ! कम्मओ णं [3]°जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ, कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभाव° परिणमइ॥

१२१ सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[4]॥

छट्ठो उद्देसो

चंद-सूर-गहण पदं

१२२. रायगिहे जाव[5] एवं वयासी—बहुजण ण भते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[6] एवं परूवेइ—एवं खलु राहू चंद गेण्हति, एव खलु राहू चद गेण्हति॥

१२३. से कहमेय भंते ! एव ?
गोयमा ! जण्ण से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव जे ते एवमाहंसु मिच्छ ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[7] एवं परूवेमि—एव खलु राहू देवे महिड्ढीए जाव[8] महेसक्खे[9] वरवत्थधरे वरमल्लधरे वरगंधधरे वराभरणधारी।

---

१. × (ता)।
२. × (ता)।
३. सं० पा०—तं चेव जाव परिणमइ।
४. भ० १।५१।
५. भ० १।४-१०।
६. भ० १।४२०।
७. भ० १।४२१।
८. भ० ३।४।
९. महेसक्के (व); महसोक्खे (म)।

राहुस्स णं देवस्स नव नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—सिंघाडए[1] जडिलए खतए[2] खरए दद्दुरे मगरे मच्छे कच्छभे[3] कण्हसप्पे।

राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवण्णा, पण्णत्ता, तं जहा—किण्हा, नीला, लोहिया, हालिद्दा, सुक्किला। अत्थि कालए राहुविमाणे खंजणवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि लोहिए राहुविमाणे मंजिट्ठवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्दवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि सुक्किलए राहुविमाणे भासरासिवण्णाभे पण्णत्ते।

जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं पुरत्थिमेणं आवरेत्ता णं पच्चत्थिमेणं वीतीवयइ तदा णं पुरत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, पच्चत्थिमेणं राहू। जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं पच्चत्थिमेणं आवरेत्ता णं पुरत्थिमेणं वीतीवयइ तदा णं पच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, पुरत्थिमेणं राहू। एवं जहा पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेणं य दो आलावगा भणिया एवं दाहिणेणं उत्तरेणं य दो आलावगा भाणियव्वा। एवं उत्तरपुरत्थिमेणं दाहिणपच्चत्थिमेणं य दो आलावगा भाणियव्वा। एवं दाहिणपुरत्थिमेणं उत्तरपच्चत्थिमेणं य दो आलावगा भाणियव्वा। एवं चेव जाव तदा णं उत्तरपच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, दाहिणपुरत्थिमेणं राहू। जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं आवरेमाणे-आवरेमाणे चिट्ठइ तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति—एवं खलु राहू चंदं गेण्हति, एवं खलु राहू चंदं गेण्हति। जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं[4] आवरेत्ता णं पासेणं वीतीवयइ तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति—एवं खलु चंदेण राहुस्स कुच्छी भिन्ना, एवं खलु चंदेण राहुस्स कुच्छी भिन्ना। जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं आवरेत्ता णं पच्चोसक्कइ तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति—एवं खलु राहुणा चंदे वंते, एवं खलु राहुणा चंदे वंते। जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं अहे सपक्खि सपडिदिसिं आवरेत्ता णं चिट्ठइ तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति—एवं खलु राहुणा चंदे घत्थे, एवं खलु राहुणा चंदे घत्थे॥

१२४. कतिविहे णं भंते! राहू पण्णत्ते?

गोयमा! दुविहे राहू पण्णत्ते, तं जहा—धुवराहू य, पव्वराहू य। तत्थ णं जे से धुवराहू से णं बहुलपक्खस्स पाडिवए पन्नरसतिभागेणं पन्नरसतिभागं

१. सघाडए (ब)।
२. खत्तए (अ); खतए (ख); खभए (स)।
३. अच्छभे (ब)।
४. चंदस्स लेसं (क, ब, म)।

चदलेस्सं आवरेमाणे-आवरेमाणे चिट्ठइ, तं जहा—पढमाए पढमं भागं, बितियाए बितियं भाग जाव पन्नरसेसु पन्नरसम भाग[1]। चरिमसमये चदे रत्ते भवइ, अवसेसे समये चदे 'रत्ते वा विरत्ते वा'[2] भवइ। तमेव[3] सुक्कपक्खस्स[4] उवदसेमाणे-उवदसेमाणे चिट्ठइ, पढमाए पढम भाग जाव पन्नरसेसु पन्नरसमं भाग। चरिमसमये चदे विरत्ते भवइ, अवसेसे समये चदे 'रत्ते वा विरत्ते वा'[5] भवइ। तत्थ ण जे से पव्वराहू से जहण्णेण 'छण्ह मासाण'[6] उक्कोसेण बायालीसाए मासाण चदस्स[7], अडयालीसाए सवच्छराण सूरस्स[8]॥

ससि-आइच्च-पद

१२५. से केणट्ठेणं भते! एव वुच्चइ—चंदे ससी, चदे ससी?
गोयमा! चदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो मियके विमाणे कता देवा, कताओ देवीओ, कताइं आसण-सयण-खभ-भडमत्तोवगरणाइं, अप्पणा वि य ण चदे जोइसिंदे जोइसराया (सोमे कते सुभए पियदसणे सुरूवे)। से तेणट्ठेण[9] °गोयमा! एवं वुच्चइ—चंदे ससी, चदे° ससी॥

१२६. से केणट्ठेण भते! एवं वुच्चइ—सूरे आदिच्चे, सूरे आदिच्चे?
गोयमा! सूरादिया ण समया इ वा आवलिया इ वा जाव[10] ओसप्पिणी इ वा उस्सप्पिणी इ वा। से तेणट्ठेणं[11] °गोयमा! एव वुच्चइ—सूरे आदिच्चे, सूरे° आदिच्चे॥

चंद-सूराणं कामभोग-पदं

१२७. चदस्स णं भते! जोइसिदस्स जोइसरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ?
जहा दसमसए जाव[12] नो चेव ण मेहुणवत्तिय। सूरस्स वि तहेव॥

१२८. चदिम-सूरिया णं भंते! जोइसिदा जोइसरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरति?
गोयमा! से जहानामए केइ पुरिसे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थाए भारियाए सद्धि अचिरवत्तविवाहकज्जे[13] अत्थगवेसणयाए सोलसवास-

---

१. 'आवरेत्ता णं चिट्ठइ' त्ति वाक्यशेष: (वृ)।
२. रत्ते य विरत्ते य (क)।
३. तामेव (क, ख, ता, व, म)।
४. प्रतिपदादिर्ब्विति गम्यते (वृ)।
५. रत्ते य विरत्ते य (अ, ख, ता); रत्ते य विरत्ते वा (क, व, म, स)।
६. छम्मासाए (ता)।
७. लेश्यामावृत्य तिष्ठतीति गम्यम् (वृ)।
८. लेश्यामावृत्य तिष्ठतीति गम्यम् (वृ)।
९. स० पा०—तेणट्ठेण जाव ससी।
१०. ठा० २।३८७-३८९।
११. स० पा०—तेणट्ठेण जाव आदिच्चे।
१२. भ० १०।९०।
१३. अचिरवत्तावाहुज्जे (ता)।

विप्पवासिए, से णं तओ लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि नियगं गिहं हव्वमागए, ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकार-विभूसिए मणुण्णं थालिपागसुद्धं[1] अट्ठारसवंजणाकुलं भोयणं भुत्ते समाणे तंसि तारिसगंसि वासघरंसि [2]•अब्भिंतरओ सचित्तकम्मे बाहिरओ दूमिय-घट्ठ-मट्ठे विचित्तउल्लोग-चिल्लियतले मणिरयणपणासियंधयारे, बहुसम-सुविभत्तदेसभाए पंचवण्ण-सरससुरभि-मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेंत-गंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवरगंधिए गंधवट्टिभूए।

तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि—सालिंगणवट्टिए उभओ बिब्बोयणे दुहओ उण्णए मज्झे णय-गंभीरे गंगापुलिणवालुय-उद्दालसालिसए ओयविय-खोमिय-दुगुल्लपट्ट-पडिच्छयणे सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे आइणग-रूय-बूर-नवणीय-तूलफासे सुगंधवरकुसुम-चुण्ण॰-सयणोवयारकलिए ताए तारिसियाए भारियाए सिंगारागारचारुवेसाए[3] •संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसलाए सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास॰कलियाए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणाणुकूलाए सद्धिं इट्ठे सद्दे फरिसे[4] •रसे रूवे गंधे॰ पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरेज्जा, से णं गोयमा! पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसयं सायासोक्खं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ?

ओरालं समणाउसो !

तस्स णं गोयमा! पुरिसस्स कामभोगेहितो वाणमंतराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहितो असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। असुरिंदवज्जियाणं भवणवासियाणं देवाणं कामभोगेहितो असुरकुमाराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। असुरकुमाराणं देवाणं कामभोगेहितो गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं जोतिसियाणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। गहगण-नक्खत्त[5]-•तारारूवाणं जोतिसियाणं॰ कामभोगेहितो चंदिम-सूरियाणं जोतिसियाणं जोतिसराईणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। चंदिम-सूरिया णं गोयमा! जोतिसिंदा जोतिसरायाणो एरिसे कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥

---

१. थालिपागसिद्धं (ब)।
२. सं॰ पा॰—वण्णओ महब्बले कुमारे जाव सयणो॰।
३. सं॰ पा॰—सिंगारागारचारुवेसाए जाव कलियाए।
४. सं॰ पा॰—फरिसे जाव पंचविहे।
५. पा॰ सं॰—नक्खत्त जाव काम॰।

१२९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता[1] °संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ॥

सत्तमो उद्देसो

जीवाणं सव्वत्थ जम्म-मच्चु-पदं

१३०. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव[2] एवं वयासी—केमहालए णं भंते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! महतिमहालए लोए पण्णत्ते—पुरत्थिमेणं असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ, दाहिणेणं असंखेज्जाओ [3]°जोयणकोडाकोडीओ°, एवं पच्चत्थिमेण वि, एवं उत्तरेण वि, एवं उड्ढं पि, अहे असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम-विक्खंभेणं ॥

१३१. एयंसि[4] णं भंते ! एमहालगंसि लोगंसि अत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१३२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—एयंसि णं एमहालगंसि लोगंसि नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे अया-सयस्स एगं महं अया-वयं करेज्जा. से णं तत्थ जहण्णेणं एक्कं वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं अया-सहस्सं पक्खिवेज्जा, ताओ णं तत्थ पउरगोयराओ पउरपाणियाओ जहण्णेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा, उक्कोसेणं छम्मासे परिवसेज्जा। अत्थि णं गोयमा ! तस्स अया-वयस्स केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जे णं तासिं अयाणं उच्चारेण वा पासवणेण वा खेलेण वा सिंघाणेण वा वंतेण वा पित्तेण वा पूएण वा सुक्केण वा सोणिएण वा चम्मेहिं वा रोमेहिं वा सिंगेहिं वा खुरेहिं वा नहेहिं वा अणोक्कंतपुव्वे[5] भवइ ?
नो इणट्ठे समट्ठे।
होज्जा वि णं गोयमा ! तस्स अया-वयस्स केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे,

---

१. सं० पा०—नमंसित्ता जाव विहरइ।
२. भ० १।४-१०।
३. सं० पा०—एवं चेव।
४. एयंसि (ता)।
५. अणक्कतपुव्वे (क, स)।

जे णं तासि अयाणं उच्चारेण वा जाव नहेहिं वा अणोक्कंतपुव्वे, नो चेव णं एयंसि एमहालगंसि लोगंसि लोगस्स य सासय भाव, संसारस्स य अणादिभाव, जीवस्स य णिच्चभाव, कम्मबहुत्त, जम्मण-मरणबाहुल्ल च पडुच्च अत्थि[1] केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ ण अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि। से तेणट्ठेण [2]•गोयमा ! एव वुच्चइ—एयसि ण एमहालगसि लोगसि नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ ण अय जीवे न जाए वा°, न मए वा वि ॥

असइं अदुवा अणंतखुत्तो उववज्जण-पदं

१३३. कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, जहा पढमसए पंचमउद्देसए तहेव आवासा ठावेयव्वा जाव[3] अणुत्तरविमाणेत्ति जाव[4] अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे ॥

१३४. अयण्णं[5] भंते ! जीवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावाससि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, नरगत्ताए, नेरइयत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा अणतखुत्तो ॥

१३५. सव्वजीवा वि ण भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससय-सहस्सेसु[6]•एगमेगसि निरयावाससि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, नरगत्ताए, नेरइयत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइ, अदुवा° अणतखुत्तो ॥

१३६. अयण्णं भंते ! जीवे सक्करप्पभाए पुढवीए पणुवीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावाससि° ? एव जहा रयणप्पभाए तहेव दो आलावगा भाणियव्वा। एवं जाव धूमप्पभाए ॥

१३७. अयण्णं भते ! जीवे तमाए पुढवीए पचूणे निरयावाससयसहस्से एगमेगंसि निरयावासंसि° ? सेस त चेव[7] ॥

१३८. अयण्ण भते ! जीवे अहेसत्तमाए पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु महानिरएसु एगमेगंसि निरयावाससि° ? सेस जहा रयणप्पभाए ॥

---

१. 'नत्थि' इति पद लभ्यते, किन्तु प्रस्तुतवाक्यारम्भे 'नो चेव ण' इति पाठोस्ति, तेनैतत न सङ्गच्छते। वृत्तौ सम्यक्पाठोस्ति। स एवास्माभि· स्वीकृतः।
२. सं० पा०—त चेव जाव न।
३. भ० १।२११-२५५।
४. भ० ५।२२२।
५. अय णं (अ, क, ता, म); अय ण (ख, व)।
६. स० पा०—तं चेव जाव अणंतखुत्तो।
७. भ० १२।१३४।

१३९ अयण्णं भंते ! जीवे चउसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असुर-कुमारावाससि पुढविक्काइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए देवत्ताए देवित्ताए आसण-सयण-भंडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुव्वे ?

हंता गोयमा[1] ! °असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो । सव्वजीवा वि णं भंते ! एवं चेव । एवं जाव थणियकुमारेसु । नाणत्तं आवासेसु, आवासा पुव्वभणिया ॥

१४० अयण्णं भंते ! जीवे असंखेज्जेसु पुढविक्काइयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविक्काइयावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए उववन्नपुव्वे ?

हंता गोयमा[2] ! ° असइं, अदुवा ° अणंतखुत्तो । एवं सव्वजीवा वि । एवं जाव वणस्सइकाइएसु ॥

१४१ अयण्णं भंते ! जीवे असंखेज्जेसु बेइंदियावाससयसहस्सेसु[3] एगमेगंसि बेइंदिया-वासंसि पुढविक्काइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, बेइंदियत्ताए उववन्न-पुव्वे ?

हंता गोयमा[4] ! °असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो । सव्वजीवा वि णं एवं चेव । एवं जाव मणुस्सेसु, नवरं—तेइंदिएसु[5] जाव वणस्सइकाइयत्ताए तेइंदियत्ताए, चउरिंदिएसु चउरिंदियत्ताए, पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु पंचिंदियतिरिक्खजोणि-यत्ताए, मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए, सेसं जहा बेइंदियाणं, वाणमंतर-जोइसिय-सोह-म्मीसाणेसु[6] य जहा असुरकुमाराणं ॥

१४२. अयण्णं भंते ! जीवे सणंकुमारे कप्पे बारससु[7] विमाणावाससयसहस्सेसु एगमे-गंसि वेमाणियावासंसि पुढविकाइयत्ताए [8]°जाव वणस्सइकाइयत्ताए देवत्ताए-आसण-सयण-भंडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुव्वे ?

हंता गोयमा ! असइं, अदुवा अणंतखुत्तो ।° एवं सव्वजीवा वि । एवं जाव आणयपाणएसु, एवं आरणच्चुएसु वि ॥

१४३ अयण्णं भंते ! जीवे तिसु वि अट्ठारसुत्तरेसु गेविज्जविमाणावाससयेसु एवं चेव ॥

१४४. अयण्णं भंते ! जीवे पंचसु अणुत्तरविमाणेसु एगमेगंसि अणुत्तरविमाणंसि पुढविकाइयत्ताए ?

तहेव जाव असइं, अदुवा अणंतखुत्तो, नो चेव णं देवत्ताए वा देवीत्ताए वा । एवं सव्वजीवा वि ॥

---

१. स० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो ।
२. स० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो ।
३. बेंदिया° (अ, क, ख, व, म, स) ।
४. स० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो ।
५. तेंदिएसु (ख, स) ।
६. सोहम्मीसाणे (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
७. बारसेसु (ख), बारस (ता) ।
८. स० पा०—सेसं जहा असुरकुमाराणं जाव अणंतखुत्तो नो चेव णं देवित्ताए ।

१४५. अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं माइत्ताए, पितित्ताए[1], भाइत्ताए, भगिणित्ताए भज्जत्ताए, पुत्तत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा अणतखुत्तो ॥

१४६. सव्वजीवा वि णं भंते ! इमस्स जीवस्स माइत्ताए,[2] °पितित्ताए, भाइत्ताए, भगिणित्ताए, भज्जत्ताए, पुत्तत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ॥

१४७. अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं अरित्ताए, वेरियत्ताए, घातगत्ताए, वहगत्ताए, पडिणीयत्ताए, पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा[3] ! °असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ॥

१४८. सव्वजीवा वि णं भंते ! [4]°इमस्स जीवस्स अरित्ताए, वेरियत्ताए, घातगत्ताए, वहगत्ताए, पडिणीयत्ताए, पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा° अणतखुत्तो ॥

१४९. अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं रायत्ताए, जुवरायत्ताए,[5] °तलवरत्ताए, माडंबियत्ताए, कोडुंबियत्ताए, इब्भत्ताए, सेट्ठित्ताए, सेणावइत्ताए,° सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा[6] ! °असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ॥

१५०. [7]°सव्वजीवा वि णं भंते ! इमस्स जीवस्स रायत्ताए, जुवरायत्ताए, तलवरत्ताए माडंबियत्ताए, कोडुंबियत्ताए, इब्भत्ताए, सेट्ठित्ताए, सेणावइत्ताए, सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा अणंतखुत्तो° ॥

१५१. अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं दासत्ताए, पेसत्ताए, भयगत्ताए[8], भाइल्लत्ताए[9] भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा[10] ! °असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ॥

१५२. [11]°सव्वजीवा वि णं भंते ! इमस्स जीवस्स दासत्ताए, पेसत्ताए, भयगत्ताए,

---

१. × (ख, म); पतित्ताए (ब, स)।
२. सं० पा०—माइत्ताए जाव उववन्नपुव्वा हंता गो जाव अणतखुत्तो।
३. सं० पा०—गोयमा जाव अणतखुत्तो।
४. सं० पा०—एवं चेव।
५. सं० पा०—जुवरायत्ताए जाव सत्थवाहत्ताए।
६. सं० पा०—गोयमा जाव अणतखुत्तो।
७. सं० पा०—सव्वजीवाण एव चेव।
८. भियगत्ताए (ख)।
९. भाइलत्ताए (ता); भाइल्लगत्ताए (क्व०)।
१०. सं० पा०—गोयमा जाव अणतखुत्तो।
११. सं० पा०—एवं सव्वजीवा वि अणतखुत्तो।

भाइल्लत्ताए, भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ॥
१५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[1] विहरइ ॥

अट्ठमो उद्देसो

देवाणं बिसरीरेसु उववाय-पदं

१५४ तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव[2] एवं वयासी—देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव[3] महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता बिसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा ?
हंता उववज्जेज्जा ॥
१५५. से णं तत्थ अच्चिय-वंदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे यावि भवेज्जा ?
हंता भवेज्जा ॥
१५६. से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिज्झेज्जा जाव[4] सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ?
हंता सिज्झेज्जा जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ॥
१५७. देवे णं भंते ! महिड्ढीए[5] °जाव महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता° बिसरीरेसु मणीसु उववज्जेज्जा ?
हंता उववज्जेज्जा । एवं चेव जहा नागाणं ॥
१५८. देवे णं भंते ! महिड्ढीए[6] °जाव महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता° बिसरीरेसु रुक्खेसु उववज्जेज्जा ?
हंता उववज्जेज्जा । एवं चेव, नवरं—इमं नाणत्तं जाव सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि भवेज्जा ?
हंता भवेज्जा । सेसं तं चेव जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ॥

पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं उववाय-पदं

१५९ अह भंते ! गोनंगूलवसभे[7], कुक्कुडवसभे, मंडुक्कवसभे—एए णं निस्सीला

---

१. भ० १।५१ ।
२. भ० १।४-१० ।
३. भ० १।३३९ ।
४. भ० १।४४ ।
५. सं० पा०—एवं चेव जाव बिसरीरेसु ।
६. स० पा०—महिड्ढीए जाव बिसरीरेसु ।
७. गोलंगूल° (क, ब); गोणंगल° (ख, ता) ।

निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाण-पोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं[1] सागरोवमट्ठितीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ?

समणे भगवं महावीरे वागरेइ—उववज्जमाणे उववन्ने त्ति वत्तव्वं सिया ॥

१६०. अह भंते ! सीहे वग्घे, [2]•वगे, दीविए अच्छे, तरच्छे•, परस्सरे—एए ण निस्सीला [3]•निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाण-पोसहोववासा कालमासे काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोस सागरोवमट्ठितीयसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ?

समणे भगवं महावीरे वागरेइ—उववज्जमाणे उववन्ने त्ति• वत्तव्वं सिया ॥

१६१. अह भंते ! ढंके कंके विलए[4] मद्दुए सिखी—एए ण निस्सीला [5]•निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाण-पोसहोववासा कालमासे काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं सागरोवमट्ठितीयसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ?

समणे भगवं महावीरे वागरेइ—उववज्जमाणे उववन्ने त्ति• वत्तव्वं सिया ॥

१६२. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति जाव[6] विहरइ ॥

नवमो उद्देसो

पंचविह-देव-पदं

१६३. कतिविहा णं भंते ! देवा पण्णत्ता ?

गोयमा ! पंचविहा देवा पण्णत्ता, तं जहा—भवियदव्वदेवा, नरदेवा, धम्मदेवा, देवातिदेवा[7], भावदेवा ॥

१६४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—भवियदव्वदेवा-भवियदव्वदेवा ?

गोयमा ! जे भविए[8] पचिदियतिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवेसु उववज्जित्तए[9] । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—भवियदव्वदेवा-भवियदव्वदेवा ॥

---

१. उक्कोसेण (क) ।

२. स० पा०—जहा ओसप्पिणी उद्देसए जाव परस्सरे ।

३. सं० पा०—एव चेव जाव वत्तव्व ।

४. पिलए (अ, ख, ता, स) ।

५. सं० पा०—सेसं तं चेव जाव वत्तव्व ।

६. भ० १।५१ ।

७. देवाधिदेवा (अ, क, ब, म, स); 'देवाहिदेव' त्ति क्वचिद् दृश्यते (वृ) ।

८. इह जातौ एकवचनमतो बहुवचनार्थे व्याख्येयम् (वृ) ।

९. ते यस्माद्भाविदेवभावा इति गम्यम् (वृ) ।

१६५ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—नरदेवा-नरदेवा ?
गोयमा ! जे इमे रायाणो चाउरंतचक्कवट्टी[1] उप्पण्णसमत्तचक्करयणप्पहाणा 'नवनिहिपइणो समिद्धकोसा बत्तीसरायवरसहस्साणुयातमग्गा'[2] सागरवरमेहलाहिवइणो मणुस्सिदा। से तेणट्ठेणं[3] •गोयमा ! एवं वुच्चइ°—नरदेवा-नरदेवा ॥

१६६ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—धम्मदेवा-धम्मदेवा ?
गोयमा ! जे इमे अणगारा भगवंतो[4] रियासमिया[5] जाव[6] गुत्तबंभयारी। से तेणट्ठेण[7] •गोयमा ! एवं वुच्चइ°—धम्मदेवा-धम्मदेवा ॥

१६७ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—देवातिदेवा[8]-देवातिदेवा ?
गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो[9] उप्पण्णनाण-दंसणधरा[10] •अरहा जिणा केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणया सव्वण्णू° सव्वदरिसी। से तेणट्ठेण[11] •गोयमा ! एवं वुच्चइ°—देवातिदेवा-देवातिदेवा ॥

१६८. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—भावदेवा-भावदेवा ?
गोयमा ! जे इमे भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया देवा[12] देवगतिनामगोयाइं कम्माइं वेदेंति। से तेणट्ठेण[13] •गोयमा ! एवं वुच्चइ°—भावदेवाभावदेवा ॥

पंचविह-देवाणं उववाय-पदं

१६९. भवियदव्वदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्ख-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख-मणुस्स-देवेहिंतो वि उववज्जंति। भेदो जहा वक्कंतीए सव्वेसु उववाएयव्वा जाव[14] अणुत्तरोववाइय त्ति, नवरं—असंखेज्जवासाउयअकम्मभूमगअंतरदीवगसव्वट्ठसिद्धवज्जं जाव अपराजियदेवेहिंतो वि उववज्जंति[15] ॥

---

१. ते यस्मात् इति वाक्यशेषः (वृ)।
२. चिन्हाङ्कित पाठो वृत्तौ नास्ति व्याख्यातः।
३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नरदेवा।
४ ते यस्मात् इति वाक्यशेषः (वृ)।
५ इरिया° (क)।
६. भ० २।५५।
७. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव धम्म°।
८ देवाधिदेवा (अ, क, ब, म, स)।
९. भगवंता (ख, ब, म); ते यस्मात् (वृ)।
१०. सं० पा०—उप्पन्ननाणदंसणधरा जाव सव्व°।
११. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव देवाति°।
१२. ते यस्मात् (वृ)।
१३ सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव भाव°
१४. प० ६।
१५ उववज्जंति नो सव्वट्ठसिद्धदेवेहिंतो उववज्जंति (क, ख, ता, ब, म)।

१७०. नरदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएहिंतो, नो मणुस्सेहिंतो, देवेहिंतो वि उववज्जंति ॥

१७१. जइ नेरइएहिंतो उववज्जति—किं रयणप्पभापुढविनेरइएहिंतो उववज्जति जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतो उववज्जति ?
गोयमा ! रयणप्पभापुढविनेरइएहिंतो उववज्जति, नो सक्करप्पभापुढविनेरइएहिंतो जाव नो अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतो उववज्जति ॥

१७२ जइ देवेहिंतो उववज्जति कि भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जति ? वाणमतर-जोइसिय-वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जति ?
गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतो वि उववज्जति, वाणमतरदेवेहिंतो, एवं सव्वदेवेसु उववाएयव्वा, वक्कतीए भेदेण जाव[1] सव्वट्ठसिद्धत्ति ॥

१७३. धम्मदेवा णं भते ! कओहितो उववज्जति—कि नेरइएहितो उववज्जति—पुच्छा ।
एवं वक्कतीभेदेणं सव्वेसु उववाएयव्वा जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, नवरं—तम-अहेसत्तम-तेउ-वाउ-असखेज्जवासाउयअकम्मभूमग-अतरदीवगवज्जेसु ॥

१७४. देवातिदेवा णं भते ! कओहितो उववज्जति – कि नेरइएहितो उववज्जति—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइएहितो उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएहितो, नो मणुस्सेहितो, देवेहितो वि उववज्जति ॥

१७५. जइ नेरइएहितो ? एव तिसु पुढवीसु उववज्जंति, सेसाओ खोडेयव्वाओ ॥

१७६. जइ देवेहितो ? वेमाणिएसु सव्वेसु उववज्जति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, सेसा खोडेयव्वा ॥

१७७. भावदेवा णं भंते ! कओहितो उववज्जति ? एव जहा वक्कतीए भवणवासीणं उववाओ तहा भाणियव्वो ॥

पंचविह-देवाणं ठिइ-पद

१७८. भवियदव्वदेवाणं भते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं ॥

१७९. नरदेवाण—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं सत्त वाससयाइ, उक्कोसेणं चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइ ॥

१८०. धम्मदेवाण—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

---

१. प० ६ ।

१८१. देवातिदेवाणं[1]—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं बावत्तरिं वासाइं, उक्कोसेण चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं ॥

१८२ भावदेवाणं—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥

पंचविह-देवाण विउव्वणा-पदं

१८३. भवियदव्वदेवा णं भंते ! किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए ? पुहत्तं पभू विउव्वित्तए ?
गोयमा ! एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए, पुहत्तं पि पभू विउव्वित्तए। एगत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवं वा जाव पंचिंदियरूवं वा, पुहत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवाणि वा जाव पंचिंदियरूवाणि वा, ताइं संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा, संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा, सरिसाणि वा असरिसाणि वा विउव्वंति, विउव्वित्ता तओ पच्छा[2] जहिच्छियाइं कज्जाइं करेंति। एवं नरदेवा वि, एवं धम्मदेवा वि ॥

१८४. देवातिदेवाणं[3]—पुच्छा।
गोयमा ! एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए, पुहत्तं पि पभू विउव्वित्तए, नो चेव णं संपत्तीए विउव्विंसु वा, विउव्वंति[4] वा, विउव्विस्संति वा।
भावदेवा जहा भवियदव्वदेवा ॥

पंचविह-देवाण उव्वट्टण-पदं

१८५ भवियदव्वदेवा णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति —किं नेरइएसु उववज्जंति जाव देवेसु उववज्जंति ?
गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएसु, नो मणुस्सेसु, देवेसु उववज्जंति।
'जइ देवेसु उववज्जंति° ?'[5] सव्वदेवेसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति ॥

१८६ नेरदेवा णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता—पुच्छा।
गोयमा ! नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएसु, नो मणुस्सेसु, नो देवेसु उववज्जंति।
जइ नेरइएसु उववज्जंति° ? सत्तसु वि पुढवीसु उववज्जंति ॥

१८७. धम्मदेवा णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएसु, नो मणुस्सेसु, देवेसु उववज्जंति ॥

---

१. देवाधि° (अ, क, व, म, स)।
२. पच्छा अप्पणो (अ, म, स)।
३. देवाधि° (अ, क, ख, ब, म, स)।
४. विउव्विति (व, म, स)।
५ × (व, म)।

१८८. जइ देवेसु उववज्जंति किं भवणवासि—पुच्छा।
गोयमा ! नो भवणवासिदेवेसु उववज्जंति, नो वाणमंतरदेवेसु उववज्जंति, नो जोइसियदेवेसु उववज्जंति, वेमाणियदेवेसु उववज्जंति। सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[1]°वेमाणियदेवेसु° उववज्जति, अत्थेगतिया सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ॥

१८९. देवातिदेवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छति ? कहिं उववज्जति ?
गोयमा ! सिज्झति जाव[2] सव्वदुक्खाण अत करेति ॥

१९०. भावदेवा णं भंते ! अणतर उव्वट्टित्ता – पुच्छा।
जहा[3] वक्कंतीए असुरकुमाराण उव्वट्टणा तहा भाणियव्वा ॥

पंचविह-देवाणं संचिट्ठणा-पद

१९१. भवियदव्वदेवे णं भते ! भवियदव्वदेवे त्ति कालओ केवच्चिरं[4] होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। एव जच्चेव[5] ठिई सच्चेव संचिट्ठणा वि जाव भावदेवस्स, नवरं—धम्मदेवस्स जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

पंचविह-देवाणं अंतर-पद

१९२. भवियदव्वदेवस्स णं भते ! केवतिय काल अतरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेणं अणत कालं—वणस्सइकालो ॥

१९३. नरदेवाण—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण सातिरेग सागरोवमं, उक्कोसेणं अणतं काल—अवड्ढ पोग्गलपरियट्टं देसूण ॥

१९४. धम्मदेवस्स ण—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमपुहत्त, उक्कोसेणं अणंत काल जाव अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूणं ॥

१९५. देवातिदेवाण—पुच्छा।
गोयमा ! नत्थि अंतरं ॥

१९६. भावदेवस्स णं—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो ॥

---

१. सं० पा०—°अणुत्तरोववाइय जाव उव°
२. भ० १।४४।
३. प० ६।
४ केवचिर (अ, क, ख, म)।
५. जहेव (व, स)।

पच्चविह-देवाणं अप्पाबहुयत्त-पदं

१९७. एएसि ण भंते ! भवियदव्वदेवाण, नरदेवाण[1], •धम्मदेवाणं, देवातिदेवाणं°, भावदेवाण य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा नरदेवा, देवातिदेवा सखेज्जगुणा, धम्मदेवा संखेज्जगुणा, भवियदव्वदेवा असखेज्जगुणा, भावदेवा असखेज्जगुणा ॥

१९८. एएसि णं भंते ! भावदेवाण भवणवासीण, वाणमंतराण, जोइसियाणं, वेमाणियाण[3]—सोहम्मगाणं जाव अच्चुयगाण, गेवेज्जगाणं, अणुत्तरोववाइयाण य कयरे कयरेहिंतो[4] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइया भावदेवा, उवरिमगेवेज्जा भावदेवा सखेज्जगुणा, मज्झिमगेवेज्जा सखेज्जगुणा, हेट्ठिमगेवेज्जा सखेज्जगुणा, अच्चुए कप्पे देवा संखेज्जगुणा जाव आणयकप्पे देवा सखेज्जगुणा,[5] •सहस्सारे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, महासुक्के कप्पे देवा असखेज्जगुणा, लतए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, बंभलोए कप्पे देवा असखेज्जगुणा, माहिंदे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, सणकुमारे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, ईसाणे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, सोहम्मे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, भवणवासिदेवा असखेज्जगुणा, वाणमतरा देवा असखेज्जगुणा°, जोतिसिया भावदेवा असखेज्जगुणा ॥

१९९. सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

दसमो उद्देसो

अट्ठविह-आय-पदं

२०० कतिविहा ण भंते ! आया[7] पण्णत्ता ?

गोयमा ! अट्ठविहा आया पण्णत्ता, तं जहा—दवियाया, कसायाया, जोगाया, उवओगाया, नाणाया, दसणाया, चरित्ताया, वीरियाया ॥

२०१. जस्स ण भंते ! दवियाया तस्स कसायाया ? जस्स कसायाया तस्स दवियाया ?

---

१. सं० पा०—नरदेवाण जाव भावदेवाणं ।

२. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

३. × (क, म); देवाणं (व) ।

४. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

५ स० पा०—एव जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पावहुयं जाव जोतिसिया ।

६. भ० १।५१ ।

७. आता (अ, ख, ता, ब, म, स) ।

गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण कसायाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि ॥

२०२. जस्स ण भंते ! दवियाया तस्स जोगाया ? [1]•जस्स जोगाया तस्स दवियाया ? गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स जोगाया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि° ॥

२०३. जस्स ण भंते ! दवियाया तस्स उवओगाया ? जस्स उवओगाया तस्स दवियाया ?—एव सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा ।
गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स उवओगाया नियम अत्थि । जस्स वि उवओगाया तस्स वि दवियाया नियम अत्थि । जस्स दवियाया तस्स नाणाया भयणाए । जस्स पुण नाणाया तस्स दवियाया नियम अत्थि । जस्स दवियाया तस्स दसणाया नियम अत्थि । जस्स वि दसणाया तस्स वि दवियाया नियम अत्थि । जस्स दवियाया तस्स चरित्ताया भयणाए, जस्स पुण चरित्ताया तस्स दवियाया नियम अत्थि । [2]•जस्स दवियाया तस्स वीरियाया भयणाए, जस्स पुण वीरियाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि° ॥

२०४. जस्स णं भंते ! कसायाया तस्स जोगाया—पुच्छा ।
गोयमा ! जस्स कसायाया तस्स जोगाया नियम अत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि । एव उवओगायाए वि सम कसायाया नेयव्वा । कसायाया य नाणाया य परोप्पर दो वि भइयव्वाओ । जहा कसायाया य उवओगाया य तहा कसायाया य दसणाया य, कसायाया य चरित्ताया य दो वि परोप्परं भइयव्वाओ । जहा कसायाया य जोगाया य तहा कसायाया य वीरियाया य भाणियव्वाओ[3] । एव जहा कसायायाए वत्तव्वया भणिया तहा जोगायाए वि उवरिमाहिं समं भाणियव्वाओ । जहा दवियायाए वत्तव्वया भणिया तहा उवओगायाए वि उवरिल्लाहिं सम भाणियव्वा[4] । जस्स नाणाया तस्स दंसणाया नियम अत्थि, जस्स पुण दसणाया तस्स नाणाया भयणाए । जस्स नाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण चरित्ताया तस्स नाणाया नियम अत्थि । नाणाया वीरियाया दो वि परोप्परं भयणाए । जस्स दसणाया तस्स उवरिमाओ दो वि भयणाए, जस्स पुण ताओ तस्स दंसणाया नियमं अत्थि । जस्स पुण चरित्ताया तस्स वीरियाया नियम अत्थि, जस्स पुण वीरियाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि ॥

---

१. स० पा०—एवं जहा दवियाया कसायाया भणिया तहा दवियाया जोगाया भाणियव्वा ।
२. सं० पा०—एव वीरियायाए वि सम ।
३. भणितव्वाओ (ख, ता) ।
४. नेयव्वा (ब) ।

अट्ठविह-आयाणं अप्पाबहुत्त-पद

२०५. एयासि ण भते ! दवियायाण, कसायायाणं जाव वीरियायाण य कयरे कयरेहितो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवाओ चरित्तायाओ, नाणायाओ अणतगुणाओ, कसायायाओ अणतगुणाओ, जोगायाओ विसेसाहियाओ, वीरियायाओ विसेसाहियाओ, उवओगदविय-दसणायाओ तिण्णि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥

नाणदंसणाणं अत्तणा भेदाभेद-पदं

२०६. आया भते ! नाणे ? 'अण्णे नाणे'[2] ?
गोयमा आया सिय नाणे सिय अण्णाणे, नाणे पुण नियम आया ॥
२०७ आया भते ! नेरइयाण नाणे ? अण्णे नेरइयाण नाणे ?
गोयमा ! आया नेरइयाण सिय नाणे, सिय अण्णाणे । नाणे पुण से नियम आया । एव जाव थणियकुमाराण ॥
२०८. आया भते ! पुढविकाइयाण अण्णाणे ? अण्णे पुढविकाइयाण अण्णाणे ?
गोयमा ! आया पुढविकाइयाण नियम अण्णाणे, अण्णाणे वि नियमं आया । एव जाव वणस्सइकाइयाण । बेइदिय-तेइदियाण जाव वेमाणियाणं जहा नेरइयाण ॥
२०९ आया भते ! दसणे ? अण्णे दसणे ?
गोयमा ! आया नियम दसणे, दसणे वि नियम आया ॥
२१० आया भते ! नेरइयाण दसणे ? अण्णे नेरइयाण दसणे ?
गोयमा ! आया नेरइयाण नियमं दसणे, दसणे वि से नियम आया । एव जाव वेमाणियाण निरतर दंडओ ॥

सियवाद-पदं

२११. आया भते ! रयणप्पभा पुढवी ? अण्णा रयणप्पभा पुढवी ?
गोयमा ! रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नोआया, सिय अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ॥
२१२ से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नोआया, सिय अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ?
गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे नोआया, तदुभयस्स आदिट्ठे[3] अवत्तव्वं—रयणप्पभा पुढवी आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेणं [4]•गोयमा !

---

१. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।
२. अण्णाणे (म, स) ।
३. आतिट्ठा (ता, व, म) ।
४. सं० पा०—तं चेव जाव नोआयाति ।

एवं वुच्चइ—रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नोआया, सिय अवत्तव्व—आयाति य° नोआयाति य ॥

२१३. आया भते ! सक्करप्पभा पुढवी ?
जहा रयणप्पभा पुढवी तहा सक्करप्पभावि । एव जाव अहेसत्तमा ॥

२१४. आया भते । सोहम्मे कप्पे—पुच्छा ।
गोयमा ! सोहम्मे कप्पे सिय आया सिय नोआया[1], °सिय अवत्तव्व—आयाति य° नोआयाति य ॥

२१५. से केणट्ठेणं भते ! जाव आयाति य नोआयाति य ?
गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे आया, परस्स आइट्ठे नोआया, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेण त चेव जाव आयाति य नोआयाति य । एवं जाव अच्चुए कप्पे ॥

२१६. आया भंते ! गेवेज्जविमाणे ? अण्णे गेवेज्जविमाणे ?
एवं जहा रयणप्पभा तहेव । एवं अणुत्तरविमाणा वि । एवं ईसिपब्भारा वि ॥

२१७. आया भते ! परमाणुपोग्गले ? अण्णे परमाणुपोग्गले ?
एवं जहा सोहम्मे तहा परमाणुपोग्गले वि भाणियव्वे ॥

२१८. आया भंते ! दुपएसिए खधे ? अण्णे दुपएसिए खंधे ?
गोयमा ! दुपएसिए खधे १. सिय आया २. सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ४. सिय आया य नोआया य ५. सिय आया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ६. सिय नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ॥

२१९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं त चेव जाव नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ?
गोयमा ! १. अप्पणो आदिट्ठे आया २. परस्स आदिट्ठे नोआया ३. तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं दुपएसिए खधे—आयाति य नोआयाति य ४. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे दुप्पएसिए खधे आया य नोआया य ५. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ६ देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खधे नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेणं तं चेव जाव नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ॥

२२०. आया भंते ! तिपएसिए खंधे ? अण्णे तिपएसिए खधे ?

---

१. सं० पा०—नोआया जाव नोआयाति ।

गोयमा ! तिपसिए खंधे १. सिय आया २. सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ४ सिय आया य नोआया य ५ सिय आया य नोआयाओ य ६. सिय आयाओ य नोआया य ७ सिय आया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ८. सिय आया य अवत्तव्वाइ—आयाओ[1] य नोआयाओ य ६. सिय आयाओ य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य १०. सिय नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ११. सिय नोआया य अवत्तव्वाइ—आयाओ य नोआयाओ य १२ सिय नोआयाओ य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य १३ सिय आया य नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ॥

२२१. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—तिपएसिए खंधे सिय आया—एव चेव उच्चारेयव्व जाव सिय आया य नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ? गोयमा ! १ अप्पणो आदिट्ठे आया २ परस्स आदिट्ठे नोआया ३. तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य नोआया य ५ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा तिपएसिए खंधे आया य नोआयाओ य ६. देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे तिपएसिए खंधे आयाओ य नोआया य ७ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ८. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वाइ—आयाओ य नोआयाओ य ६. देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आयाओ य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य[2] १० देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ११. देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंधे नोआया य अवत्तव्वाइ—आयाओ य नोआयाओ य १२ देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे नोआयाओ य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य १३ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—तिपएसिए खंधे सिय आया त चेव जाव नोआयाति य ॥

---

१. आयाइ (ता); प्राय. एकवचनम्।

२. य एए तिण्णि भगा (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

२२२. आया भंते ! चउप्पएसिए खंधे ? अण्णे [1]॰चउप्पएसिए खंधे ?॰
गोयमा ! चउप्पएसिए खंधे १. सिय आया २. सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४-७ सिय आया य नोआया य ८-११. सिय आया य अवत्तव्वं १२-१५. सिय नोआया य अवत्तव्वं[2] १६. सिय आया य नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १७ सिय आया य नोआया य अवत्तव्वाइं—आयाओ य नोआयाओ य १८. सिय आया य नोआयाओ य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १९. सिय आयाओ य नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ॥

२२३. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—चउप्पएसिए खंधे सिय आया य नोआया य अवत्तव्वं—तं चेव अट्ठे पडिउच्चारेयव्वं ?
गोयमा ! १. अप्पणो आदिट्ठे आया २ परस्स आदिट्ठे नोआया ३. तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४-७. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे चउभंगो ८-११. सब्भावेण तदुभयेण य चउभंगो १२-१५. असब्भावेण तदुभयेण य चउभंगो १६. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य नोआया य अवत्तव्वं - आयाति य नोआयाति य १७. देसे आदिट्ठे सब्भाव-पज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा चउप्पएसिए खंधे आया य नोआया य अवत्तव्वाइं—आयाओ य नोआयाओ य १८. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य नोआयाओ य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १९. देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आयाओ य नोआया य अवत्तव्वं- आयाति य नोआयाति य। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—चउप्पएसिए खंधे सिय आया सिय नोआया सिय अवत्तव्वं—निक्खेवे ते चेव भंगा उच्चारेयव्वा जाव आयाति य नोआयाति य ॥

२२४. आया भंते ! पंचपएसिए खंधे ? अण्णे पंचपएसिए खंधे ?
गोयमा ! पंचपएसिए खंधे १. सिय आया २. सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४-७. सिय आया य नोआया य ८-११. सिय आया य अवत्तव्वं १२-१५. नोआया य अवत्तव्वेण य[3] १६. [4]॰सिय आया य नोआया

---

१. सं० पा०—पुच्छा ।
२. एकवचन-बहुवचनभेदात् चत्वारश्चत्वारो भङ्गाः ।
३. एकवचन-बहुवचनभेदात् चत्वारश्चत्वारो भङ्गाः ।
४. स० पा०—तियगसंजोगे एक्को न पडइ;

य अवत्तव्वं १७. सिय आया य नोआया य अवत्तव्वाइं १८. सिय आया य नोआयाओ य अवत्तव्वं १९. सिय आया य नोआयाओ य अवत्तव्वाइं २०. सिय आयाओ य नोआया य अवत्तव्वं २१. सिय आयाओ य नोआया य अवत्तव्वाइं २२. सिय आयाओ य नोआयाओ य अवत्तव्वं °।।

२२५. से केणट्ठेणं भंते ! [1]°एवं वुच्चइ—पंचपएसिए खंधे सिय आया जाव सिय आयाओ य नोआयाओ य अवत्तव्वं ? °

गोयमा ! १. अप्पणो आदिट्ठे आया २. परस्स आदिट्ठे नोआया ३. तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं ४. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे—एवं दुयगसंजोगे सव्वे पडंति, तियगसंजोगे[2] एक्को न पडइ।

छप्पएसियस्स सव्वे पडंति। जहा छप्पएसिए एवं जाव अणंतपएसिए।।

२२६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[3] विहरइ।।

एकसंयोगजा: त्रयो भङ्गाः, द्विकसंयोगजाः द्वादश भङ्गाः, त्रिकसंयोगजा सप्त भङ्गाः. सर्वे मीलिता द्वाविंशतिर्भङ्गा पञ्चप्रदेशिकस्कन्धे भवन्ति। त्रिकसंयोगे अष्टमो भङ्गः 'सिय आयाओ य नोआयाओ य अवत्तव्वाइं' इतिरूपः पंचप्रदेशिकस्कन्धत्वात् न सम्भवति। अतः उक्तं 'तियगसजोगे एक्को न पडइ'।

१. स० पा०—त चेव पडिउच्चारेयव्वं।

२. तियगसजोगे (स); तिगसजोगे (व, म)।

३. भ० १।५१।

तेरसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. पुढवी २. देव ३. मणंतर, ४. पुढवी ५. आहारमेव ६. उववाए।
७. भासा ८,९. कम्मणगारे, केयाघडिया[1] १०. समुग्घाए ॥ १ ॥

संखेज्जवित्थडेसु नरएसु उववाय-पदं

१. रायगिहे जाव[2] एवं वयासी—कति ण भते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा ॥

२. इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तीस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।
ते ण भते ! कि सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! सखेज्जवित्थडा वि, असखेज्जवित्थडा वि ॥

३. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु १. एगसमएण केवतिया नेरइया उववज्जति ? २. केवतिया काउलेस्सा उववज्जति ? ३. केवतिया कण्हपक्खिया उववज्जति ? ४. केवतिया सुक्कपक्खिया उववज्जति ? ५. केवतिया सण्णी उववज्जति ? ६ केवतिया असण्णी उववज्जति ? ७. केवतिया भवसिद्धिया[3] उववज्जति ? ८. केवतिया अभवसिद्धिया उववज्जति ? ९. केवतिया आभिणिबोहियनाणी उववज्जति ? १०. केवतिया सुयनाणी उववज्जति ? ११. केवतिया ओहिनाणी उववज्जति ? १२. केवतिया मइअण्णाणी उववज्जति ? १३. केवतिया सुयअण्णाणी उववज्जति ? १४. केवतिया विब्भगनाणी उववज्जति ? १५. केवतिया चक्खुदसणी

---

१. केयाहडिया (अ, क, ख, ब, म) ।
२. भ० १।४-१० ।
३. भवसिद्धीया (अ, ब, म, स) ।

उववज्जंति ? १६. केवतिया अचक्खुदसणी उववज्जंति ? १७. केवतिया ओहिदंसणी उववज्जति ? १८ केवतिया आहारसण्णोवउत्ता उववज्जति ? १९. केवतिया भयसण्णोवउत्ता उववज्जति ? २०. केवतिया मेहुणसण्णोवउत्ता उववज्जति ? २१ केवतिया परिग्गहसण्णोवउत्ता उववज्जति ? २२. केवतिया इत्थिवेदगा उववज्जति ? २३. केवतिया पुरिसवेदगा उववज्जति ? २४ केवतिया नपुंसगवेदगा उववज्जति ? २५-२८ केवतिया कोहकसाई उववज्जति जाव केवतिया लोभकसाई उववज्जति ? २९-३३. केवतिया सोइंदियोवउत्ता उववज्जति जाव केवतिया फासिंदियोवउत्ता उववज्जति ? ३४. केवतिया नोइंदियोवउत्ता उववज्जति ? ३५. केवतिया मणजोगी उववज्जति ? ३६. केवतिया वइजोगी उववज्जति ? ३७. केवतिया कायजोगी उववज्जति ? ३८. केवतिया सागारोवउत्ता उववज्जति ? ३९ केवतिया अणागारोवउत्ता उववज्जति ?

गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु नरएसु जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा नेरइया उववज्जति । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा काउलेस्सा उववज्जति । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा कण्हपक्खिया उववज्जति । एवं सुक्कपक्खिया वि, 'एव सण्णी, एव असण्णी'[1], एव भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभंगनाणी । चक्खुदसणी न उववज्जति । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा अचक्खुदसणी उववज्जति एवं ओहिदसणी वि । आहारसण्णोवउत्ता वि जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता वि । इत्थीवेयगा न उववज्जति, पुरिसवेयगा न उववज्जंति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण संखेज्जा नपुसगवेयगा[2] उववज्जति । एव कोहकसाई जाव लोभकसाई । सोइंदियोवउत्ता न उववज्जति, एव जाव फासिंदिओवउत्ता न उववज्जति । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा नोइंदिओवउत्ता उववज्जति । मणजोगी न उववज्जति, एव वइजोगी वि । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा कायजोगी उववज्जति । एव सागारोवउत्ता वि, एव अणागारोवउत्ता[3] वि ॥

---

१. एव सण्णी वि असण्णी वि (अ), एव सण्णी असण्णी (क, ता); एवं सण्णी एव असण्णी वि (म) ।

२. नपुंसगवेदा (क, व, म); नपुंसगा (ख, ता) ।

३. अणगारोवउत्ता (अ, क, ख, ता, म) ।

संखेज्जवित्थडेसु नरएसु उव्वट्टण-पदं

४. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु[1] एगसमएणं केवतिया नेरइया उव्वट्टंति ? केवतिया काउलेस्सा उव्वट्टंति जाव केवतिया अणागारोवउत्ता उव्वट्टंति ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु एगसमएणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उव्वट्टंति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उव्वट्टंति । एवं जाव सण्णी । असण्णी न उव्वट्टंति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा भवसिद्धिया उव्वट्टंति । एवं जाव सुयअण्णाणी । विभंगनाणी न उव्वट्टंति, चक्खुदसणी न उव्वट्टंति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदसणी उव्वट्टंति । एवं जाव लोभकसाई । सोइंदियोवउत्ता न उव्वट्टंति, एवं जाव फासिंदियोवउत्ता न उव्वट्टंति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नोइंदियोवउत्ता उव्वट्टंति । मणजोगी न उव्वट्टंति, एवं वइजोगी वि । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उव्वट्टंति । एवं सागारोवउत्ता, अणागारोवउत्ता ॥

संखेज्जवित्थडेसु नरएसु सत्ता-पदं

५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु केवतिया नेरइया पण्णत्ता ? केवतिया काउलेस्सा जाव केवतिया अणागारोवउत्ता पण्णत्ता ? केवतिया अणंतरोववण्णगा पण्णत्ता ? केवतिया परंपरोववण्णगा पण्णत्ता ? केवतिया अणंतरोवगाढा पण्णत्ता ? केवतिया परंपरोवगाढा पण्णत्ता ? केवतिया अणंतराहारा पण्णत्ता ? केवतिया परंपराहारा पण्णत्ता ? केवतिया अणंतरपज्जत्ता पण्णत्ता ? केवतिया परंपरपज्जत्ता पण्णत्ता ? केवतिया चरिमा पण्णत्ता ? केवतिया अचरिमा पण्णत्ता ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु संखेज्जा नेरइया पण्णत्ता, संखेज्जा काउलेस्सा पण्णत्ता, एवं जाव संखेज्जा सण्णी पण्णत्ता । असण्णी सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता । संखेज्जा भवसिद्धिया पण्णत्ता । एवं जाव संखेज्जा परिग्गहसण्णोवउत्ता पण्णत्ता । इत्थि-वेदगा नत्थि, पुरिसवेदगा नत्थि, संखेज्जा नपुंसगवेदगा पण्णत्ता । एवं कोह-

---

१. निरतेसु (ता) ।

कसाई वि, माणकसाई जहा असण्णी, एवं जाव लोभकसाई। संखेज्जा सोइंदियो-वउत्ता पण्णत्ता, एवं जाव फासिंदियोवउत्ता। नोइंदियोवउत्ता जहा असण्णी। संखेज्जा मणजोगी पण्णत्ता। एवं जाव अणागारोवउत्ता। अणंतरोववण्णगा सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहा असण्णी। संखेज्जा परंपरोववण्णगा पण्णत्ता। एवं जहा अणंतरोववण्णगा तहा अणंतरोवगाढगा, अणंतराहारगा, अणंतरपज्जत्तगा। परंपरोवगाढगा जाव अचरिमा जहा परंपरोववण्णगा॥

६. इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवतिया नेरइया उववज्जंति जाव केवतिया अणागारोवउत्ता उववज्जंति?

गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं असंखेज्जा नेरइया उववज्जंति। एवं जहेव संखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा[1] तहा असंखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवरं—असंखेज्जा भाणियव्वा, सेसं तं चेव जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता[2], नवरं—संखेज्जवित्थडेसु असंखेज्जवित्थडेसु वि ओहिनाणी ओहिदंसणी य संखेज्जा उव्वट्टावेयव्वा, सेसं तं चेव॥

७. सक्करप्पभाए णं भंते! पुढवीए केवतिया निरयावास[3]°सयसहस्सा पण्णत्ता°?

गोयमा! पणुवीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

ते णं भंते! किं संखेज्जवित्थडा? असंखेज्जवित्थडा?

एवं जहा रयणप्पभाए तहा सक्करप्पभाए वि, नवरं—असण्णी तिसु वि गमएसु न भण्णंति, सेसं तं चेव॥

८. वालुयप्पभाए णं—पुच्छा।

गोयमा! पन्नरस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, सेसं जहा सक्करप्पभाए, णाणत्तं लेसासु, लेसाओ जहा[4] पढमसए॥

९. पंकप्पभाए णं—पुच्छा।

गोयमा! दस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, एवं जहा सक्करप्पभाए, नवरं—ओहिनाणी ओहिदंसणी य न उव्वट्टंति, सेसं तं चेव॥

१०. धूमप्पभाए णं—पुच्छा।

---

१. गमा (ता)।

२. पण्णत्ता नाणत्तं लेसासु लेसाओ जहा पढमसए (अ, क, ता, ब, म, स); रत्न-प्रभायां एकैव कापोतीलेश्या भवति, तेन नासौ पाठ सगच्छते।

३. स० पा०—पुच्छा।

४. भ० १।२४४।

गोयमा ! तिण्णि निरयावाससयसहस्सा, एवं जहा पंकप्पभाए ॥

११. तमाए णं भंते ! पुढवीए केवतिया निरयावास[1]•सयसहस्सा पण्णत्ता॰ ?
गोयमा ! एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते । सेसं जहा पंकप्पभाए ॥

१२ अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए कति अणुत्तरा महतिमहालया महानिरया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच अणुत्तरा[2] •महतिमहालया महानिरया पण्णत्ता, तं जहा—काले, महाकाले, रोरुए, महारोरुए॰, अपइट्ठाणे ।
ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा ? असंखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडा य ॥

१३. अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु[3] महानिरएसु संखेज्जवित्थडे नरए एगसमएणं केवतिया नेरइया उववज्जंति ?
एवं जहा पंकप्पभाए, नवरं—तिसु नाणेसु न उववज्जंति, न उव्वट्टंति, पण्णत्तएसु[4] तहेव अत्थि । एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि, नवरं—असंखेज्जा भाणियव्वा ।

१४. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मद्दिट्ठी नेरइया उववज्जंति ? मिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जंति ? सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जंति ?
गोयमा ! सम्मदिट्ठी वि नेरइया उववज्जंति, मिच्छदिट्ठी वि नेरइया उववज्जंति, नो सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जंति ॥

१५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मदिट्ठी नेरइया उव्वट्टंति ?
एवं चेव ॥

१६. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडा नरगा किं सम्मद्दिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया ? मिच्छदिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया ? सम्मामिच्छदिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया ?
गोयमा ! सम्मद्दिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, मिच्छदिट्ठीहिं वि नेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छदिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया विरहिया वा । एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा भाणियव्वा । एवं सक्करप्पभाए वि, एवं जाव तमाए वि ॥

१७. अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु जाव[5] संखेज्जवित्थडे नरए किं सम्मद्दिट्ठी नेरइया—पुच्छा ।

---

१. सं॰ पा॰—पुच्छा ।
२. सं॰ पा॰—अणुत्तरा जाव अपइट्ठाणे ।
३. महतिमहा जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
४. पण्णत्ताएसु (अ, ता, म, स); पण्णत्तेसु (क, ब) ।
५. भ॰ १३।१२ ।

गोयमा ! सम्मद्दिट्ठी नेरइया न उववज्जंति, मिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जंति, सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया न उववज्जंति। एवं उव्वट्टंति वि, अविरहिए जहेव रयणप्पभाए। एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा ॥

१८ से नूणं भंते ! कण्हलेस्से, नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति ?
हंता गोयमा ! कण्हलेस्से जाव उववज्जंति ॥

१९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—कण्हलेस्से जाव उववज्जंति ?
गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु-संकिलिस्समाणेसु कण्हलेसं परिणमइ, परिणमित्ता कण्हलेसेसु नेरइएसु उववज्जंति। से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति ॥

२०. से नूणं भंते ! कण्हलेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति ?
हंता गोयमा ! जाव उववज्जंति ॥

२१ से केणट्ठेणं जाव उववज्जंति ?
गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु वा विसुज्झमाणेसु वा नीललेस्सं परिणमइ, परिणमित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव उववज्जंति ॥

२२. से नूणं भंते ! कण्हलेस्से, नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता काउलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति ?
एवं जहा नीललेस्साए तहा काउलेस्साए वि भाणियव्वा जाव से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति ॥

२३ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

बीओ उद्देसो

२४ कतिविहा णं भंते ! देवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा देवा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया, वेमाणिया ॥

२५ भवणवासी णं भंते ! देवा कतिविहा पण्णत्ता ?

---

१. भ० १।५१।

गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, त जहा—असुरकुमारा—एव भेओ[1] जहा बितियसए देवुद्देसए जाव[2] अपराजिया, सव्वट्ठसिद्धगा ॥

२६. केवतिया णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोयट्ठि[3] असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।
ते णं भते ! किं सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि ॥

२७. चोयट्ठीए[4] ण भते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु एगसमएणं केवतिया असुरकुमारा उववज्जति जाव केवतिया तेउलेस्सा उववज्जंति ? केवतिया कण्हपक्खिया उववज्जति ? एव जहा रयणप्पभाए तहेव पुच्छा, तहेव[5] वागरण, नवर—दोहिं वेदेहिं उववज्जति, नपुसगवेयगा न उववज्जति, सेसं तं चेव । उव्वट्टतगा वि तहेव, नवरं—असण्णी उव्वट्टति । ओहिनाणी ओहिदंसणी य ण उव्वट्टति, सेस त चेव । पण्णत्तएसु[6] तहेव, नवर—सखेज्जगा इत्थिवेदगा पण्णत्ता, एव पुरिसवेदगा वि, नपुसगवेदगा नत्थि । कोहकसाई सिय अत्थि सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा पण्णत्ता । एव माणकसाई मायकसाई । सखेज्जा लोभकसाई पण्णत्ता, सेस तं चेव । तिसु वि गमएसु[7] चत्तारि लेस्साओ भाणियव्वाओ । एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि, नवर—तिसु वि गमएसु असखेज्जा भाणियव्वा जाव[8] असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता ॥

२८. केवतिया णं भते ! नागकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? एव जाव थणियकुमारा, नवरं—जत्थ जत्तिया भवणा[9] ॥

२९. केवतिया णं भते ! वाणमंतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा वाणमंतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।
ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा ? असंखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! सखेज्जवित्थडा, नो असखेज्जवित्थडा ॥

३०. संखेज्जेसु णं भते ! वाणमतरावाससयसहस्सेसु एगसमएण केवतिया वाणमतरा उववज्जति ?
एवं जहा असुरकुमाराणं सखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा[10] तहेव भाणियव्वा वाणमंतराण वि तिण्णि गमगा ॥

---

१. × (ता, ब) ।
२. भ० २।११७; प० २ ।
३. चोसट्ठि (स) ।
४. चोसट्ठीए (स) ।
५. भ० १३।३ ।
६. पण्णत्ताएसु (अ, क, ब, म, स) ।
७. गमएसु सखेज्जेसु (अ, स) ।
८. भ० १३।५ ।
९. भ० १।२१३ ।
१०. गमा (क, ख, ता, ब, म) ।

३१. केवतिया ण भते ! जोइसियविमाणावाससयसहस्सा[1] पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता।
ते ण भते ! कि सखेज्जवित्थडा° ?
एव जहा वाणमतराण तहा जोइसियाण वि तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवर—एगा तेउलेस्सा। उववज्जतेसु पण्णत्तेसु य असण्णी नत्थि, सेस त चेव॥

३२ सोहम्मे ण भते ! कप्पे केवतिया विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बत्तीस विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता।
ते ण भते ! किं सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! सखेज्जवित्थडा वि, असखेज्जवित्थडा वि॥

३३. सोहम्मे ण भते ! कप्पे बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु विमाणेसु एगसमएण केवतिया सोहम्मा देवा उववज्जति ? केवतिया तेउलेस्सा उववज्जति ?
एव जहा जोइसियाण तिण्णि गमगा तहेव तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवरं—तिसु वि सखेज्जा भाणियव्वा, ओहिनाणी ओहिदसणी य चयावेयव्वा, सेसं तं चेव। असखेज्जवित्थडेसु एव चेव तिण्णि गमगा, नवर—तिसु वि गमएसु असखेज्जा भाणियव्वा। ओहिनाणी ओहिदसणी य सखेज्जा चयति, सेस तं चेव। एव जहा सोहम्मे वत्तव्वया भणिया तहा ईसाणे वि छ गमगा भाणियव्वा। सणकुमारे एव चेव, नवर—इत्थीवेयगा उववज्जतेसु[2] पण्णत्तेसु य न भण्णति, असण्णी तिसु वि गमएसु न भण्णति, सेस त चेव। एव जाव सहस्सारे, नाणत्त विमाणेसु लेस्सासु य, सेस त चेव॥

३४ आणय-पाणएसु ण भते ! कप्पेसु केवतिया विमाणावाससया पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि विमाणावाससया पण्णत्ता।
तेण भते ! किं सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! सखेज्जवित्थडा वि, असखेज्जवित्थडा वि। एवं सखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा जहा सहस्सारे, असखेज्जवित्थडेसु उववज्जतेसु चयतेसु य एव चेव सखेज्जा भाणियव्वा, पण्णत्तेसु असखेज्जा, नवर—नोइदियोवउत्ता अणतरोववण्णगा अणतरोवगाढगा अणतराहारगा अणतरपज्जत्तगा य एएसि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा पण्णत्ता, सेसा असखेज्जा भाणियव्वा। 'आरण-अच्चुएसु'[3] एव चेव जहा आणय-पाणएसु, नाणत्त विमाणेसु। एव गेवेज्जगा वि॥

---

१. जोतिसियावाससहस्सा (अ, क, ख, ता, ब, म)।
२. न उववज्जति (स)।
३. आरणच्चुएसु (अ, क, ख, ब, म, स)।

३५. कति णं भंते ! अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ।
'ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा ? असंखेज्जवित्थडा ?
गोयमा'[1] ! संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडा य ।।

३६. पंचसु णं भंते ! अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवित्थडे विमाणे एगसमएण केवतिया अणुत्तरोववाइया उववज्जंति ? केवतिया सुक्कलेस्सा उववज्जंति—पुच्छा तहेव ।
गोयमा ! पंचसु णं अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवित्थडे अणुत्तरविमाणे एगसमएण जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण संखेज्जा अणुत्तरोववाइया उववज्जंति, एवं जहा गेवेज्जविमाणेसु संखेज्जवित्थडेसु, नवरं—किण्हपक्खिया, अभवसिद्धिया, तिसु अण्णाणेसु एए न उववज्जंति, न चयंति, न वि पण्णत्तएसु भाणियव्वा, अचरिमा वि खोडिज्जंति जाव संखेज्जा चरिमा पण्णत्ता, सेसं तं चेव । असंखेज्जवित्थडेसु वि एए न भण्णंति, नवरं—अचरिमा अत्थि, सेसं जहा गेवेज्जएसु असंखेज्जवित्थडेसु जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता ।।

३७. चोयट्ठीए णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु किं सम्मद्दिट्ठी असुरकुमारा उववज्जंति ? मिच्छदिट्ठी असुरकुमारा उववज्जंति ?
एवं जहा रयणप्पभाए तिण्णि आलावगा भणिया[2] तहा भाणियव्वा । एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा, एवं जाव गेवेज्जविमाणे, अणुत्तरविमाणेसु एवं चेव, नवरं—तिसु वि आलावएसु मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी य न भण्णंति, सेसं तं चेव ।।

३८. से नूणं भंते ! कण्हलेस्से नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति ?
हंता गोयमा ! एवं जहेव नेरइएसु पढमे उद्देसए[3] तहेव भाणियव्वं । नीललेस्साए वि जहेव नेरइयाणं, जहा नीललेस्साए एवं जाव पम्हलेस्सेसु, सुक्कलेस्सेसु एवं चेव, नवरं—लेस्सट्ठाणेसु विसुज्झमाणेसु-विसुज्झमाणेसु सुक्कलेस्सं परिणमंति, परिणमित्ता सुक्कलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति । से तेणट्ठेण जाव उववज्जंति ।।

३९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ।।

---

१. × (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
२. भ० १३।१४ ।
३. भ० १३।१८-२२ ।
४. भ० १।५१ ।

तइओ उद्देसो

४०. नेरइया ण भते ! अणंतराहारा, ततो निव्वत्तणया, एव परियारणापद[1] निरवसेस भाणियव्व ॥

४१ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

चउत्थो उद्देसो

नरय-नेरइयाणं अप्पमहंत-पद

४२. कति[3] ण भते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा ॥

४३. अहेसत्तमाए ण भते ! पुढवीए पंच अणुत्तरा महतिमहालया[4] °महानिरया पण्णत्ता, त जहा—काले, महाकाले, रोरुए, महारोरुए,° अपइट्ठाणे । ते णं नरगा छट्ठीए[5] तमाए पुढवीए नरएहितो महत्तरा[6] चेव, महावित्थिण्णतरा[7] चेव, महोगासतरा[8] चेव, महापइरिक्कतरा चेव, नो[9] तहा महप्पवेसणतरा[10] चेव, आइण्णतरा चेव, आउलतरा चेव, अणोमाणतरा[11] चेव । तेसु ण नरएसु नेरइया छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइएहितो महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव,

---

१. प० ३४ ।

२ भ० १।५१ ।

३ इह च द्वारगाथे क्वचिद् दृश्येते, तद्यथा—

१. नेरइय २. फास ३ पणिहि,
४. निरयंते चेव ५. लोयमज्झे य ।
६. दिसिविदिसाण य पवहा,
७. पवत्तणं अत्थिकाएहिं ॥१॥
८. अत्थी पएसफुसणा,
९ ओगाहणया य जीवमोगाढा ।
१०. अत्थि पएसनिसीयण,
११. बहुसमे लोयसंठाणे ॥२॥ (वृ) ।

४. स० पा०—महतिमहालया जाव अपइट्ठाणे ।

५. छठाए (अ, क, ख, ता, म) ।

६. महतरा (क, ब, म) ।

७. महाविच्छिण्णतरा (अ, स) ।

८. महावासतरा (अ, क); महोवासतरा (ख, ता), महावासतरा (म, स) ।

९. 'नो' शब्द. उत्तरपदद्वयेपि सम्बन्धनीय: (वृ) ।

१०. महापवेसणतरा (म, स) ।

११. अणोयणतरा (अ, ख, ता, म, स, वृपा) ।

महासवतरा[1] चेव, महावेदणतरा चेव, नो तहा अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेदणतरा चेव, अप्पिड्ढियतरा[2] चेव, अप्पजुतियतरा[3] चेव, नो तहा महिड्ढियतरा चेव, महज्जुतियतरा चेव।

छट्ठीए ण तमाए पुढवीए एगे पचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते। ते ण नरगा अहेसत्तमाए पुढवीए नरएहितो नो तहा महत्तरा चेव, महाविस्थिण्णतरा चेव, महोगासतरा चेव, महापइरिक्कतरा चेव, महप्पवेसणतरा चेव, आइण्णतरा चेव, आउलतरा चेव, अणोमाणतरा चेव। तेसु ण नरएसु नेरइया अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएहितो अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेदणतरा चेव, नो तहा महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महासवतरा चेव, महावेदणतरा चेव, महिड्ढियतरा चेव, महज्जुइयतरा चेव; नो 'तहा अप्पिड्ढियतरा'[4] चेव, अप्पजुइयतरा चेव।

छट्ठीए ण तमाए पुढवीए नरगा पचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नरएहितो महत्तरा चेव, महाविस्थिण्णतरा चेव, महोगासतरा चेव, महापइरिक्कतरा चेव, नो तहा महप्पवेसणतरा चेव, आइण्णतरा चेव, आउलतरा चेव, अणोमाणतरा चेव। तेसु ण नरएसु नेरइया पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइएहितो महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महासवतरा चेव, महावेदणतरा चेव, नो तहा अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेदणतरा चेव; अप्पिड्ढियतरा चेव, अप्पजुतियतरा चेव, नो तहा महड्ढियतरा चेव, महज्जुतियतरा चेव।

पचमाए ण धूमप्पभाए पुढवीए तिण्णि निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता। एव जहा छट्ठीए भणिया एव सत्त वि पुढवीओ परोप्पर भण्णति जाव रयणप्पभति जाव नो तहा महड्ढियतरा चेव, अप्पजुतियतरा चेव॥

नेरइयाणं फासाणुभव-पदं

४४. रयणप्पभापुढविनेरइया णं भते! केरिसयं पुढविफास पच्चणुब्भवमाणा विहरति?

गोयमा! अणिट्ठ जाव[5] अमणाम। एव जाव अहेसत्तमपुढविनेरइया। एव आउफासं, एव जाव वणस्सइफास॥

---

१. महस्सवतरा (क, ता, म)।
२. अप्पिड्ढतरा (ता, ब)।
३. अप्पज्जुत्तितरा (अ, ता, ब)।
४. तहप्पिड्ढियतरा (अ, क, ख, स); तहिप्पिड्ढयतरा (ता)।
५. भ० १।३५७।

नरयाणं बाहल्ल-खुड्डत्त-पद

४५ इमा ण भते ! रयणप्पभापुढवी दोच्च सक्करप्पभ पुढवि पणिहाय सव्वमह-तिया बाहल्लेण, सव्वखुड्डिया सव्वतेसु ?
[1]°हता गोयमा ! इमा णं रयणप्पभापुढवी दोच्चं पुढवि पणिहाय जाव सव्व-खुड्डिया सव्वतेसु ।
दोच्चा ण भते ! पुढवी तच्च पुढवि पणिहाय सव्वमहतिया बाहल्लेणं—पुच्छा ।
हता गोयमा ! दोच्चा ण पुढवी जाव सव्वखुड्डिया सव्वतेसु । एव एएणं अभिलावेण जाव छट्ठिया पुढवी अहेसत्तम पुढवि पणिहाय जाव सव्वखुड्डिया सव्वतेसु ° ।।

निरयपरिसामत-पदं

४६. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामतेसु[2] जे पुढविक्काइया [3]°जाव वणस्सइकाइया तेण जीवा महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महासवतरा चेव, महावेदणतरा चेव ?
हता गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामतेसु त चेव जाव महावेदणतरा चेव । एव ° जाव अहेसत्तमा ।।

लोगमज्झ-पदं

४७. कहि ण भते ! लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए ओवासतरस्स असखेज्जइभाग ओगाहेत्ता, एत्थ ण लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ।।

४८ कहि ण भते ! अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउत्थीए पकप्पभाए पुढवीए ओवासतरस्स सातिरेग अद्ध ओगाहेत्ता, एत्थ णं अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ।।

४६ कहि ण भते ! उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
गोयमा ! उप्पि सणकुमार-माहिंदाण कप्पाण हेट्ठि[4] बभलोए कप्पे रिट्ठविमाणे पत्थडे, एत्थ ण उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ।।

५० कहि ण भते ! तिरियलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए

---

१. स० पा०—एव जहा जीवाभिगमे बितिए नेरइयउद्देसए ।
२. निरयापरिसमतेसु (ता) ।
३. स० पा०—एव जहा नेरइयउद्देसए जाव ।
४. हत्थि (क); हव्वि (ख, ता); हिट्ठि (व); हट्ठि (म) ।

पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु[1], एत्थ णं तिरियलोगमज्झे अट्ठपएसिए रुयए पण्णत्ते, जओ णं इमाओ दस दिसाओ पवहंति, तं जहा—१. पुरत्थिमा २. पुरत्थिमदाहिणा ३. [2]•दाहिणा ४. दाहिणपच्चत्थिमा ५. पच्चत्थिमा ६. पच्चत्थिमुत्तरा ७. उत्तरा ८. उत्तरपुरत्थिमा ९ उड्ढा १० अहो ॥

५१ एयासि णं भंते ! दसण्हं दिसाणं कति नामधेज्जा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दस नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—

इंदा अग्गेयी जमा, य नेरई वारुणी य वायव्वा ।
सोमा ईसाणी या, विमला य तमा य बोद्धव्वा° ॥१॥

५२. इंदा णं भंते ! दिसा किमादीया, किंपवहा, कतिपदेसादीया, कतिपदेसुत्तरा, कतिपदेसिया, किंपज्जवसिया, किंसंठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! इंदा णं दिसा रुयगादीया, रुयगप्पवहा, दुपएसादीया, दुपएसुत्तरा, लोगं पडुच्च[3] असंखेज्जपएसिया, अलोगं पडुच्च अणंतपएसिया, लोगं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, अलोगं पडुच्च सादीया अपज्जवसिया, लोगं पडुच्च मुरवसंठिया, अलोगं पडुच्च सगडुद्धिसंठिया पण्णत्ता ॥

५३. अग्गेयी णं भंते ! दिसा किमादीया, किंपवहा, कतिपएसादीया, कतिपएस-वित्थिण्णा, कतिपएसिया, किंपज्जवसिया, किंसंठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! अग्गेयी णं दिसा रुयगादीया, रुयगप्पवहा, एगपएसादीया, एगपएस-वित्थिण्णा—अणुत्तरा, लोगं पडुच्च असंखेज्जपएसिया अलोगं पडुच्च अणंतपए-सिया, लोगं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, अलोगं पडुच्च सादीया अपज्जवसिया, छिण्णमुत्तावलिसंठिया पण्णत्ता । जमा जहा इंदा, नेरई जहा अग्गेयी । एवं जहा इंदा तहा दिसाओ चत्तारि[4], जहा अग्गेई तहा चत्तारि विदिसाओ ॥

५४. विमला णं भंते ! दिसा किमादीया, [5]•किंपवहा, कतिपएसादीया, कतिपएस-वित्थिण्णा, कतिपएसिया, किंपज्जवसिया, किंसंठिया पण्णत्ता° ?
गोयमा ! विमला णं दिसा रुयगादीया, रुयगप्पवहा, चउप्पएसादीया, दुपएस-वित्थिण्णा—अणुत्तरा, लोगं पडुच्च [6]•असंखेज्जपएसिया, अलोगं पडुच्च अणंतपएसिया, लोगं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, अलोगं पडुच्च सादीया अपज्जवसिया°, रुयगसंठिया पण्णत्ता । एवं तमा वि ॥

---

१. खुड्डाग° (ता, ब) ।
२. सं० पा०—एवं जहा दसमसए जाव नाम-धेज्जे त्ति ।
३. पडुच्चा (ता) सर्वत्र ।
४. चत्तारि वि (क, ख, ता, ब, म) ।
५. सं० पा०—पुच्छा जहा अग्गेयीए ।
६. सं० पा०—सेसं जहा अग्गेयीए नवरं रुयग-संठिया ।

लोय-पदं

५५. किमियं भंते ! लोएत्ति पवुच्चइ ?
गोयमा ! पंचत्थिकाया, एस णं एवतिए लोएत्ति पवुच्चइ, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए[1] °आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए °, पोग्गलत्थिकाए ॥

५६. धम्मत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ?
गोयमा ! धम्मत्थिकाएणं जीवाणं आगमण-गमण-भासुम्मेस[2]-मणजोग-वइजोग-कायजोगा, जे यावण्णे तहप्पगारा चला भावा सव्वे ते धम्मत्थिकाए पवत्तंति । गइलक्खणे णं धम्मत्थिकाए ॥

५७. अधम्मत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ?
गोयमा ! अधम्मत्थिकाएणं जीवाणं ठाण-निसीयण-तुयट्टण[3], मणस्स य एगत्तीभावकरणता, जे यावण्णे तहप्पगारा थिरा भावा सव्वे ते अधम्मत्थिकाए पवत्तति । ठाणलक्खणे णं अधम्मत्थिकाए ॥

५८. आगासत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं 'अजीवाण य'[4] किं पवत्तति ?
गोयमा ! आगासत्थिकाए णं जीवदव्वाण 'य अजीवदव्वाण य'[5] भायणभूए—

एगेण वि से पुण्णे, दोहि वि पुण्णे सयं पि माएज्जा ।
कोडिसएण वि पुण्णे, कोडिसहस्सं पि माएज्जा ॥१॥

अवगाहणालक्खणे णं आगासत्थिकाए ॥

५९. जीवत्थिकाए णं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ?
गोयमा ! जीवत्थिकाएणं जीवे अणंताणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं, अणंताणं सुयनाणपज्जवाणं [6]°अणंताणं ओहिनाणपज्जवाणं, अणंताणं मणपज्जवनाणपज्जवाणं, अणंताणं केवलनाणपज्जवाणं, अणंताणं मइअण्णाणपज्जवाणं, अणंताणं सुयअण्णाणपज्जवाणं, अणंताणं विभंगनाणपज्जवाणं, अणंताणं चक्खुदंसणपज्जवाणं, अणंताणं अचक्खुदंसणपज्जवाणं, अणंताणं ओहिदंसणपज्जवाणं, अणंताणं केवलदंसणपज्जवाणं ° उवयोगं गच्छति । उवयोगलक्खणे[7] णं जीवे ॥

६०. पोग्गलत्थिकाए णं [8]°भंते ! जीवाणं किं पवत्तति° ?

---

१. अहम्म° (अ, क, म, स); सं० पा०—अधम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए ।
२. भासुमोस (अ, स), भासुमेस (ख) ।
३. प्रथमाबहुवचनलोपदर्शनात् (वृ) ।
४. × (ख, ब, म) ।
५. × (ख) ।
६. सं० पा०—एवं जहा बितियसए अत्थिकायउद्देसए जाव उवयोगं ।
७. उवओग° (क, ता); उवजोग° (ब) ।
८. सं० पा०—पुच्छा ।

गोयमा ! पोग्गलत्थिकाएण जीवाणं ओरालिय-वेउव्विय-'आहारा-तेया कम्मा'[1]-सोइंदिय-चक्खिदिय-घाणिंदिय - जिब्भिदिय - फासिदिय-मणजोग-वइजोग-कायजोग-आणापाणूण च गहणं पवत्तति। गहणलक्खणे ण पोग्गलत्थिकाए ॥

धम्मत्थिकायादीणं परोप्परं फास-पदं

६१. एगे भते ! धम्मत्थिकायपदेसे केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ?
गोयमा ! जहण्णपदे तिहि, उक्कोसपदे छहि। केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? जहण्णपदे[2] चउहि, उक्कोसपदे सत्तहि। केवतिएहि आगासत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? सत्तहि। केवतिएहि जीवत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? अणतेहि। केवतिएहि पोग्गलत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? अणंतेहि। केवतिएहि अद्धासमएहि पुट्ठे ? सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियम अणतेहि ॥

६२. एगे भते ! अधम्मत्थिकायपदेसे केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ?
गोयमा ! जहण्णपदे चउहि, उक्कोसपदे सत्तहि। केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? जहण्णपदे तिहि, उक्कोसपदे छहि। सेस जहा धम्मत्थिकायस्स ॥

६३. एगे भते ! आगासत्थिकायपदेसे केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ?
गोयमा ! सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे जहण्णपदे एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसपदे सत्तहि। एव अधम्मत्थिकायपदेसेहि वि। केवतिएहि आगासत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? छहि। केवतिएहि जीवत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियम अणतेहि। एव पोग्गलत्थिकायपदेसेहि वि, अद्धासमएहि वि ॥

६४. एगे भते ! जीवत्थिकायपदेसे केवतिएहि धम्मत्थिकाय[3]°पदेसेहि पुट्ठे ?° जहण्णपदे चउहि, उक्कोसपदे सत्तहि। एव अधम्मत्थिकायपदेसेहि वि। केवतिएहि आगासत्थिकाय[4]°पदेसेहि पुट्ठे ?° सत्तहि। केवतिएहि जीवत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? अणतेहि। सेस जहा[5] धम्मत्थिकायस्स ॥

६५. एगे भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसे केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? एव जहेव[6] जीवत्थिकायस्स ॥

६६. दो भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ?
गोयमा ! जहण्णपदे छहि, उक्कोसपदे बारसहि। एवं अधम्मत्थिकायपदेसेहि वि। केवतिएहि आगासत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ? बारसहि। सेस जहा[7] धम्मत्थिकायस्स ॥

---

१. आहारए तेयकम्मए (ख)।
२. गोयमा ! जहण्णपदे (स) सर्वत्र।
३. स० पा०—पुच्छा।
४. स० पा०—पुच्छा।
५. भ० १३।६१।
६. भ० १३।६४।
७. भ० १३।६१।

६७ तिण्णि भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ? जहण्णपदे अट्ठहि, उक्कोसपदे सत्तरसहि। एव अधम्मत्थिकायपदेसेहि वि। केवतिएहि आगासत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ? सत्तरसहि। सेस जहा धम्मत्थिकायस्स। एव एएण गमेण भाणियव्वा[1] जाव दस, नवर—जहण्णपदे दोण्णि पक्खिवियव्वा, उक्कोसपदे पच। चत्तारि पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे दसहि, उक्कोसपदे बावीसाए। पच पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे बारसहि उक्कोसपदे सत्तावीसाए। छ पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे चोद्दसहि, उक्कोसपदे बत्तीसाए। सत्त पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे सोलसहि, उक्कोसपदे सत्ततीसाए। अट्ठ पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे अट्ठारसहि, उक्कोसपदे बायालीसाए। नव पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे वीसाए, उक्कोसपदे सीयालीसाए। दस पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे बावीसाए, उक्कोसपदे बावन्नाए। आगासत्थिकायस्स सव्वत्थ उक्कोसग भाणियव्व ॥

६८. सखेज्जा भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ? जहण्णपदे तेणेव सखेज्जएण दुगुणेण दुरूवाहिएण, उक्कोसपदे तेणेव सखेज्जएणं पचगुणेण दुरूवाहिएण। केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदेसेहि ? एव चेव। केवतिएहि आगासत्थिकायपदेसेहि ? तेणेव सखेज्जएण पंचगुणेण दुरूवाहिएण। केवतिएहि जीवत्थिकायपदेसेहि ? अणतेहि। केवतिएहि पोग्गलत्थिकायपदेसेहि? अणतेहि। केवतिएहि अद्धासमएहि ? सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे[2], °जइ पुट्ठे नियम° अणतेहि ॥

६९ असखेज्जा भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ? जहण्णपदे तेणेव असखेज्जएण दुगुणेण दुरूवाहिएण, उक्कोसपदे तेणेव असखेज्जएण पचगुणेण दुरूवाहिएण। सेस जहा सखेज्जाण जाव नियम अणतेहि ॥

७०. अणता भंते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ? एव जहा असंखेज्जा तहा अणता वि निरवसेस ॥

७१. एगे भते ! अद्धासमए केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? सत्तहि। केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे? एव चेव, एव आगासत्थिकाएहि वि। केवतिएहि जीवत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? अणतेहि, एव जाव अद्धासमएहि ॥

७२ धम्मत्थिकाए ण भते ! केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? 'नत्थि एक्केण'[3] वि। केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदेसेहि ? असंखेज्जेहि। केवतिएहि आगासत्थिकायपदेसेहि ? असखेज्जेहि। केवतिएहि जीवत्थिकाय-

---

१. भाणियव्व (म, स)।
२ स० पा०—पुट्ठे जाव अणतेहि।
३. नत्थिक्केण (अ, स, ता); नत्थि इक्केण (क)।

पदेसेहि ? अणतेहि। 'केवतिएहि पोग्गलत्थिकायपदेसेहि ? अणंतेहिं। केवतिएहि अद्धासमएहि ? सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमा अणतेहि'[1] ॥

७३. अधम्मत्थिकाए णं भंते ! केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? असखेज्जेहिं। केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदेसेहि ? नत्थि एक्केण वि। सेस जहा धम्मत्थिकायस्स। एव एएणं गमएण सव्वे[2] वि सट्ठाणए नत्थि एक्केण वि पुट्ठा; परट्ठाणए आदिल्लएहि तिहि असखेज्जेहि भाणियव्व, पच्छिल्लएसु तिसु[3] अणंता भाणियव्वा जाव अद्धासमयो त्ति जाव केवतिएहि अद्धासमएहि पुट्ठे ? नत्थि एक्केण वि ॥

धम्मत्थिकायादीणं ओगाढ-पदं

७४. जत्थ णं भंते ! एगे धम्मत्थिकायपदेसे ओगाढे, तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय-पदेसा ओगाढा ?
नत्थि एक्को वि। केवतिया अधम्मत्थिकायपदेशा ओगाढा ? एक्को। केवतिया आगासत्थिकायपदेसा ओगाढा? एक्को। केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ओगाढा? अणता। केवतिया पोग्गलत्थिकायपदेसा ओगाढा ? अणंता। केवतिया अद्धा-समया ओगाढा ? सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा अणता ॥

७५. जत्थ ण भंते ! एगे अधम्मत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय-पदेसा ओगाढा ?
एक्को। केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? 'नत्थि एक्को'[4] वि। सेस जहा धम्मत्थिकायस्स ॥

७६. जत्थ णं भंते ! एगे आगासत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय-पदेसा ओगाढा ?
सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा एक्को। एवं अधम्मत्थिकायपदेसा वि। केवतिया आगासत्थिकायपदेसा ? नत्थि एक्को वि। केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ? सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा अणता। एवं जाव अद्धासमया ॥

७७. जत्थ णं भते ! एगे जीवत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय-पदेसा ओगाढा ?
एक्को, एवं अधम्मत्थिकायपदेसा वि, एवं आगासत्थिकायपदेसा वि। केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ? अणंता। सेस जहा धम्मत्थिकायस्स ॥

७८. जत्थ णं भंते ! एगे पोग्गलत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय-पदेसा ओगाढा ?

---

१. एवं पोग्गलत्थि अद्धासमएहि य (ख, ता)।
२. सव्वेसिण (क); सव्वेण (ता, ब, म)।
३. × (ता)।
४. नत्थेक्को (ता); नत्थेक्के (ब, स)।

एवं जहा जीवत्थिकायपदेसे तहेव निरवसेस ।।

७६. जत्थ ण भते ! दो पोग्गलत्थिकायपदेसा ओगाढा तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय-पदेसा ओगाढा ?
सिय एक्को सिय दोण्णि, एवं अधम्मत्थिकायस्स वि, एवं आगासत्थिकायस्स वि । सेस जहा धम्मत्थिकायस्स ।।

८०. जत्थ णं भते ! तिण्णि पोग्गलत्थिकायपदेसा ओगाढा तत्थ केवतिया धम्म-त्थिकायपदेसा ओगाढा ?
सिय एक्को, सिय दोण्णि, सिय तिण्णि, एव अधम्मत्थिकायस्स वि, एव आगा-सत्थिकायस्स वि । सेस जहेव दोण्ह, एव एक्केक्को वड्ढियव्वो पदेसो आइल्ल-एहि तिहि अत्थिकाएहि, सेसेहि जहेव दोण्ह जाव दसण्ह सिय एक्को, सिय दोण्णि, सिय तिण्णि जाव सिय दस । सखेज्जाण सिय एक्को, सिय दोण्णि जाव सिय दस, सिय सखेज्जा । असखेज्जाण सिय एक्को जाव सिय सखेज्जा, सिय असंखेज्जा । जहा असखेज्जा एव अणता वि ।।

८१. जत्थ णं भते ! एगे अद्धासमए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा? एक्को । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? एक्को । केवतिया आगासत्थिकाय-पदेसा ? एक्को । केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ? अणता । एव जाव अद्धासमया ।।

८२ जत्थ ण भते ! धम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा? नत्थि एक्को वि । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? असखेज्जा । केवतिया आगासत्थिकायपदेसा ? असखेज्जा । केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ? अणता । एव जाव अद्धासमया ।।

८३ जत्थ ण भते ! अधम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ?
असखेज्जा । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? नत्थि एक्को वि । सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स । एव सव्वे—सट्ठाणे नत्थि एक्को वि भाणियव्वो, परट्ठाणे आदिल्लगा तिण्णि असखेज्जा भाणियव्वा, पच्छिल्लगा तिण्णि अणता भाणियव्वा जाव अद्धासमयो त्ति जाव केवतिया अद्धासमया ओगाढा ? नत्थि एक्को वि ।।

८४. जत्थ ण भते ! एगे पुढविक्काइए ओगाढे तत्थ ण केवतिया पुढविक्काइया ओगाढा ?
असखेज्जा । केवतिया आउक्काइया ओगाढा ? असंखेज्जा । केवतिया तेउकाइया ओगाढा ? असखेज्जा । केवतिया वाउकाइया ओगाढा ? असखेज्जा । केवतिया वणस्सइकाइया ओगाढा ? अणंता ।

८५ जत्थ ण भते ! एगे आउक्काइए ओगाढे तत्थ णं केवतिया पुढविक्काइया ओगाढा? असखेज्जा । केवतिया आउक्काइया ओगाढा ? असखेज्जा । एव जहेव

पुढविक्काइयाण वत्तव्वया तहेव सव्वेसिं निरवसेसं भाणियव्वं जाव वणस्सइकाइयाणं जाव केवतिया वणस्सइकाइया ओगाढा ? अणता ॥

८६. एयंसि[1] णं भंते ! धम्मत्थिकाय-अधम्मत्थिकाय-आगासत्थिकायंसि चक्किया केई आसइत्तए वा सइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीयत्तए वा तुयट्टित्तए वा ? नो इणट्ठे समट्ठे, अणता पुणत्थ[2] जीवा ओगाढा ॥

८७. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—एयसि ण धम्मत्थि[3]•काय-अधम्मत्थिकाय॰-आगासत्थिकायंसि नो चक्किया केई आसइत्तए वा[4] •सइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीयत्तए वा तुयट्टित्तए वा अणता पुणत्थ जीवा॰ ओगाढा ?

गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया—दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा[5] •णिवाया णिवायगंभीरा । अह ण केई पुरिसे पदीवसहस्सं गहाय कूडागारसालाए अतो-अंतो अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समता घण-निचिय-निरतर-णिच्छिड्डाइं॰ दुवारवयणाइं पिहेइ, पिहेत्ता तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण पदीवसहस्सं[6] पलीवेज्जा । से नूण गोयमा ! ताओ पदीवलेस्साओ अण्णमण्णसंबद्धाओ अण्णमण्णपुट्ठाओ अण्णमण्णसबद्धपुट्ठाओ[7] अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति ?

'हंता चिट्ठति'[8] ।

चक्किया ण गोयमा ! केई तासु पदीवलेस्सासु आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए वा ?

भगवं ! नो इणट्ठे समट्ठे । अणंता पुणत्थ[9] जीवा ओगाढा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव अणंता पुणत्थ जीवा ओगाढा ॥

लोय-पदं

८८. कहि ण भते ! लोए बहुसमे, कहि णं भते ! लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु[10], एत्थ णं लोए बहुसमे, एत्थ ण लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते ॥

---

१. एतेसि (क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. पुण तत्थ (अ, ख, म, स); पुणेत्थ (क) ।
३. सं॰ पा॰—धम्मत्थि जाव आगासत्थिकायंसि ।
४. सं॰ पा॰—वा जाव ओगाढा ।
५. सं॰ पा॰—जहा रायप्पसेणइज्जे जाव दुवारवयणाइं ।
६. दीव॰ (अ) ।
७. जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।
८. × (ब, म) ।
९. पुण तत्थ (अ, ख, ब, म, स) ।
१०. खुड्डाग॰ (ब) ।

८६. कहि ण भते ! विग्गहविग्गहिए[1] लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! विग्गहकडए, एत्थ ण विग्गहविग्गहिए लोए पण्णत्ते ॥

६०. किंसठिए ण भते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! सुपइट्ठियसठिए लोए पण्णत्ते—हेट्ठा विच्छिण्णे[2], मज्झे [3]•सखित्ते, उप्पि विसाले, अहे पलियकसठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पि उद्धमुइंगाकारसठिए। तसि च ण सासयसि लोगसि हेट्ठा विच्छिण्णसि जाव उप्पि उद्धमुइगाकारसठियसि उप्पण्णनाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ-पासइ, अजीवे वि जाणइ-पासइ, तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाण ° अंत करेति ॥

६१. एयस्स ण भते ! अहेलोगस्स, तिरियलोगस्स, उड्ढलोगस्स य कयरे कयरेहिंतो[4] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे तिरियलोए, उड्ढलोए असखेज्जगुणे, अहेलोए विसेसाहिए ॥

६२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[5] ॥

पंचमो उद्देसो

आहार-पद

६३ नेरइया ण भते ! कि सचित्ताहारा ? अचित्ताहारा ? मीसाहारा ?
गोयमा ! नो सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, नो मीसाहारा। एव असुरकुमारा, पढमो नेरइयउद्देसओ निरवसेसो भाणियव्वो[6] ॥

६४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[7] ॥

---

१. विग्गहिए (अ)।
२. वित्थिण्णे (अ, व, म)।
३. स० पा०—जहा सत्तमसए पढमुद्देसे जाव अत।
४. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया।
५. भ० १।५१।
६. प० २८।१।
७. भ० १।५१।

छट्ठो उद्देसो

संतर-निरंतर-उववज्जणादि-पदं

९५. रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—संतरं भंते ! नेरइया उववज्जंति ? निरंतरं नेरइया उववज्जंति ?
गोयमा ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति, निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति । एवं असुरकुमारा वि । एवं जहा गंगेये तहेव दो दंडगा जाव[2] संतरं पि वेमाणिया चयंति, निरंतरं पि वेमाणिया चयंति ॥

चमरचंच-आवास-पदं

९६. कहि णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो[3] चमरचंचे[4] नामं आवासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे—एवं जहा बितियसए सभाउद्देसए वत्तव्वया सच्चेव अपरिसेसा नेयव्वा[5] । तीसे णं चमरचंचाए रायहाणीए दाहिणपच्चत्थिमे णं छक्कोडिसए पणपन्नं च कोडीओ 'पणतीसं च सयसहस्साइं'[6] पन्नासं च सहस्साइं अरुणोदगसमुद्दं तिरियं वीइवइत्ता, एत्थ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचे नामं आवासे पण्णत्ते—चउरासीइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, दो जोयणसयसहस्सा पन्नट्ठिं च सहस्साइं छच्च बत्तीसे जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं । से णं एगेणं पागारेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते । से णं पागारे दिवड्ढं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं, एवं चमरचंचाए रायहाणीए वत्तव्वया भाणियव्वा सभाविहूणा जाव[7] चत्तारि पासायपंतीओ ।

---

१. भ० १।४-१० ।
२. भ० ९।८०-८५ ।
३. असुररण्णो (अ, ता, म, स) ।
४. चमरचंचा (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
५. भ० २।११८-१२१; नेयव्वा, नवरं—इमं नाणत्तं जाव तिगिच्छिकूडस्स उप्पायपव्वयस्स चमरचंचाए रायहाणीए चमरचंचस्स आवासपव्वयस्स, अण्णेसिं च बहूणं सेसं तं चेव जाव तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिया परिक्खेवेणं (अ, क, ख, ता, व, म स); अस्मिन् द्वितीयशतकस्य सभाख्योद्देशकस्य समर्पणमस्ति । एतत्समर्पणानुसारेण द्वितीयशतकस्य, 'जंबुद्दीवप्पमाणा' एतावत्पर्यन्तं पाठोत्र समायोजनार्हः, किन्तु 'नवरं इमं नाणत्तं' अस्याभिप्रायो नावगम्यते । 'नेयव्वा' अतः परवर्तिपाठो नावश्यकः प्रतिभाति, तेनासौ पाठान्तरत्वेन स्वीकृत. ।
६. तं चेव जाव (अ, क, ख, ता, व) ।
७. भ० २।१२१ ।

९७ चमरे णं भंते ! असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचे आवासे वसहिं उवेति ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

९८ से केण खाइ अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—चमरचंचे आवासे, चमरचंचे आवासे ? गोयमा ! से जहानामए—इह मणुस्सलोगंसि उवगारियलेणाइ वा, उज्जाणिय-लेणाइ वा, णिज्जाणियलेणाइ वा, धारावारियलेणाइ[1] वा, तत्थ णं बहवे मणुस्सा य मणुस्सीओ य आसयंति सयंति [2]•चिट्ठति निसीयंति तुयट्टंति हसंति रमंति ललंति कीलंति कित्तंति मोहेंति पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणाणं° कल्लाणफलवित्तिविसेसं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, अण्णत्थ पुण वसहिं उवेंति । एवामेव गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचे आवासे केवलं किड्डा-रतिपत्तियं, अण्णत्थ पुण वसहिं उवेति । से तेणट्ठेणं[3] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—चमरचंचे आवासे, चमर-चंचे° आवासे ॥

९९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[4] विहरइ ॥

१००. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुण-सिलाओ[5] •चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं° विहरइ ॥

उद्दायणकहा-पदं

१०१. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था—वण्णओ[6] । पुण्णभद्दे चेइए—वण्णओ[7] । तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे[8] •गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं° विहरमाणे जेणेव चंपा नगरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[9] •अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ॥

१०२. तेणं कालेणं तेणं समएणं सिंधूसोवीरेसु[10] जणवएसु वीतीभए[11] नामं नगरे होत्था —वण्णओ[12] । तस्स णं वीतीभयस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए,

---

१. वारधारिय° (अ, क, म), धारवारिय° (ख, व), धारिवारिय° (स) ।
२. सं० पा०—जहा रायप्पसेणइज्जे जाव कल्लाण° ।
३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव आवासे ।
४. भ० १।५१ ।
५. सं० पा०—गुणसिलाओ जाव विहरइ ।
६. ओ० सू० १ ।
७. ओ० सू० २-१३ ।
८. सं० पा०—चरमाणे जाव विहरमाणे ।
९. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव विहरइ ।
१०. सिंधु° (स) ।
११. वीभवे (ता), 'विदर्भे' ति केचित् (वृ) ।
१२. ओ० सू० १ ।

एत्थ णं मियवणे नामं उज्जाणे होत्था—सव्वोउय-पुप्फ-फलसमिद्धे—वण्णओ[1]। तत्थ णं वीतीभए नगरे उद्दायणे[2] नाम राया होत्था—महयाहिमवत-महत-मलय-मंदर-महिंदसारे—वण्णओ[3]। तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो पउमावती नाम देवी होत्था—सुकुमालपाणिपाया—वण्णओ[4]। तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो पभावती नामं देवी होत्था—वण्णओ जाव[5] विहरइ। तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए अभीयी[6] नाम कुमारे होत्था—सुकुमाल[7]•पाणिपाए अहीण-पडिपुण्ण-पचिंदिय-सरीरे लक्खण-वंजण-गुणोववेए माणुम्माण-पमाण-पडिपुण्ण-सुजायसव्वग-सुदरंगे ससिसोमाकारे कते पियदंसणे सुरूवे पडिरूवे। से णं अभीयी कुमारे जुवराया वि होत्था—उद्दायणस्स रण्णो रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठार च पुरं च अतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्ख-माणे°-पच्चुवेक्खमाणे विहरइ। तस्स ण उद्दायणस्स रण्णो नियए भाइणेज्जे[8] केसी नामं कुमारे होत्था—सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे। से ण उद्दायणे राया सिंधूसोवीरप्पामोक्खाणं सोलसण्हं जणवयाण, वीतीभयप्पामोक्खाण तिण्ह तेसट्ठीणं नगरागरसयाण[9], महसेणप्पामोक्खाण दसण्ह राईण बद्धमउडाण विदिन्नछत्त-चामर-वालवीयणाण, अण्णेसि च बहूण राईसर-तलवर[10]-•माडबिय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभिईण आहेवच्चं पोरेवच्चं[11] •सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं° कारेमाणे पालेमाणे समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव[12] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे विहरइ॥

१०३. तए णं से उद्दायणे राया अण्णया कयाइ जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, जहा संखे जाव[13] पोसहिए बंभचारी ओमुक्कमणिसुवण्णे ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे निक्खित्तसत्थ-मुसले एगे अबिइए दब्भसंथारोवगए पक्खिय पोसह पडिजागरमाणे विहरइ॥

१०४. तए णं तस्स उद्दायणस्स रण्णो पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[14] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे°

---

१. भ० ११।५७।
२. ओदायणे (अ); उदायणे (स) सर्वत्र।
३. ओ० सू० १४।
४. ओ० सू० १५।
५. ओ० सू० १५।
६. अभीति (अ, स,)।
७. सं० पा०—जहा सिवभद्दे जाव पच्चुवेक्खमाणे।
८. भायणेज्जे (अ, ख, म)।
९. नगरसयाण (अ, ब, म, वृपा)।
१०. स० पा०—तलवर जाव सत्थवाह°।
११. स० पा०—पोरेवच्च जाव कारेमाणे।
१२. भ० ३।९४।
१३. भ० १२।६।
१४. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

समुप्पज्जित्था—धन्ना णं ते गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणा-सम-सबाहसण्णिवेसा जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरइ, धन्ना णं ते राईसर-तलवर[1]-•माडविय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभितयो[2] जे णं समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति जाव[3] पज्जुवासंति। जइ णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं[4] •दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं° विहरमाणे इहमागच्छेज्जा, इह समोसरेज्जा, इहेव वीतीभयस्स नगरस्स बहिया मियवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा[5] •अप्पाणं भावेमाणे° विहरेज्जा, तो णं अहं समणं भगवं महावीरं वंदेज्जा नमंसेज्जा जाव पज्जुवासेज्जा॥

१०५ तए णं समणे भगवं महावीरे उद्दायणस्स रण्णो अयमेयारूवं अज्झत्थियं[6] •चिंतियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं° समुप्पन्नं वियाणित्ता चंपाओ नगरीओ पुण्णभद्दाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणु[7]•गामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं° विहरमाणे जेणेव सिंधूसोवीरे जणवए जेणेव वीतीभये नगरे, जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव[8] संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

१०६. तए णं वीतीभये नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु जाव[9] परिसा पज्जुवासइ॥

१०७ तए णं से उद्दायणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! वीयीभयं नगरं सब्भिंतरबाहिरियं जहा कूणिओ ओववाइए जाव[10] पज्जुवासइ। पउमावती-पामोक्खाओ देवीओ तहेव जाव[11] पज्जुवासंति। धम्मकहा॥

१०८ तए णं से उद्दायणे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव[12] नमंसित्ता एवं वयासी—एवमेयं भंते! तहमेयं भंते[13]! •अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! इच्छिय-पडिच्छिय-

---

१. स० पा०—तलवर जाव सत्थवाह°।
२. °प्पभिइओ (अ, स)।
३. भ० २।३०।
४ स० पा०—गामाणुगामं जाव विहरमाणे।
५. स० पा०—तवसा जाव विहरेज्जा।
६. स० पा०—अज्झत्थियं जाव समुप्पन्नं।
७. स० पा०—गामाणु जाव विहरमाणे।
८ भ० १।७।
९ ओ० सू० ५२।
१०. ओ० सू० ५५-६९।
११. ओ० सू० ७०।
१२. भ० १।१०।
१३. स० पा०—भंते जाव से।

मेयं भंते ! °—से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु जं नवरं—देवाणुप्पिया ! अभीयिकुमारं रज्जे ठावेमि, तए णं अहं देवाणुप्पियाण अंतिए मुंडे भवित्ता[1] °अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

१०९. तए णं से उद्दायणे राया समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव आभिसेक्कं हत्थि दुरुहइ[2], दुरुहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ मियवणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वीतीभये नगरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥

११०. तए णं तस्स उद्दायणस्स रण्णो अयमेयारूवे अज्झत्थिए[3] °चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अभीयीकुमारे मम एगे पुत्ते इट्ठे कंते[4] °पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणब्भूए जीविऊसविए हिययनंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए°, किमंग पुण पासणयाए ? तं जदि णं अहं अभीयीकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता[5] °अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि, तो णं अभीयीकुमारे रज्जे य रट्ठे य[6] °बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य पुरे य अंतेउरे य° जणवए य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सइ, तं नो खलु मे सेयं अभीयीकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता[7] °अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए, सेयं खलु मे नियगं भाइणेज्जं केसिं कुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ[8] °महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव वीयीभये नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वीयीभयं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गेहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आभिसेक्कं हत्थिं ठवेइ, ठवेत्ता आभिसेक्काओ हत्थीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति, निसीइत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वीयीभयं नगरं

---

१. स० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामि।
२. दुरुहइ (ता)।
३. अब्भत्थिए (अ, ता, स); स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
४. स० पा०—कंते जाव किमंग।
५. स० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामि।
६. स० पा०—रट्ठे य जाव जणवए।
७. स० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए।
८. स० पा०—भगवओ जाव पव्वइत्तए।

सब्भिंतरबाहिरियं[1] °आसिय-समज्जिओवलित्तं जाव[2] सुगंधवरगंधगंधिय गंध-वट्टिभूयं करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। ते वि तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ॥

१११. तए णं से उद्दायणे राया दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी —खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! केसिस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं एवं रायाभिसेओ जहा सिवभद्दस्स कुमारस्स तहेव भाणियव्वो जाव[3] परमाउं पालयाहि, इट्ठजणसंपरिवुडे सिंधूसोवीरपामोक्खाणं सोलसण्हं जणवयाणं वीयीभयपामोक्खाणं तिण्णि तेसट्ठीणं नगरागरसयाणं महसेणपामोक्खाणं दसण्हं राईणं, अण्णेसिं च बहूणं राईसर[4]-°तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिईणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर सेणावच्चं° कारेमाणे, पालेमाणे विहराहि त्ति कट्टु जयजयसद्दं पउंजंति ॥

११२ तए णं से केसी कुमारे राया जाए—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव[5] रज्जं पसासेमाणे विहरइ ॥

११३. तए णं से उद्दायणे राया केसिं रायाणं आपुच्छइ ॥

११४. तए णं से केसी राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ—एवं जहा जमालिस्स तहेव सब्भिंतरबाहिरियं तहेव जाव[6] निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेंति ॥

११५. तए णं से केसी राया अणेगगणनायग[7]-°दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिपाल-सद्धिं°-संपरिवुडे उद्दायणं रायं सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयावेंति, निसीयावेत्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं एवं जहा जमालिस्स जाव[8] महया-महया निक्खमणाभिसेगेणं अभिसिंचति, अभिसिंचित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—भण सामी! किं देमो? किं पयच्छामो? किणा वा ते अट्ठो?

११६. तए णं से उद्दायणे राया केसिं रायं एवं वयासी—इच्छामि णं देवाणुप्पिया! कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणियं, कासवगं च सद्दावियं—एवं जहा[9] जमालिस्स, नवरं—पउमावती अग्गकेसे पडिच्छइ पियविप्पयोगदूसहा ॥

११७. तए णं से केसी राया दोच्चं पि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेति, रयावेत्ता उद्दायणं रायं सेया-पीतएहिं कलसेहिं ण्हावेति, ण्हावेत्ता सेसं जहा जमालिस्स

---

१. सं० पा०—°बाहिरियं जाव पच्चप्पिणंति।
२. ओ० सू० ५५।
३. भ० ११।६१।
४. सं० पा०—राईसर जाव कारेमाणे।
५. ओ० सू० १४।
६. भ० ९।१८०, १८१।
७. सं० पा०—अणेगगणनायग जाव संपरिवुडे।
८. भ० ९।१८२।
९. भ० ९।१८४-१८९।

जाव[1] चउव्विहेणं अलंकारेण अलंकारिए समाणे पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे, तहेव[2] अम्मधाती, नवरं पउमावती हंसलक्खणं पडसाडगं गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता उद्दायणस्स रण्णो दाहिणे पासे भद्दासणवरंसि सण्णिसण्णा सेसं तं चेव जाव[3] छत्तादीए तित्थगरातिसए पासइ, पासित्ता पुरिससहस्सवाहिणि सीयं ठवेइ, पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ ॥

११८. [4]•तए णं सा पउमावती देवी हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणमल्लालंकारं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारिधार-सिंदुवार-छिन्न-मुत्तावलि-प्पगासाइं असूणि विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी उद्दायणं रायं एवं वयासी—जइयव्वं सामी! घडियव्वं सामी! परक्कमियव्वं सामी! अस्सिं च णं अट्ठे° नो पमादेयव्वं त्ति कट्टु केसी राया पउमावती य समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता[5] •जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं° पडिगया ॥

११९. तए णं से उद्दायणे राया सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ सेसं जहा उसभदत्तस्स जाव[6] सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

१२०. तए णं तस्स अभीयिस्स कुमारस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[7] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं उद्दायणस्स पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए, तए णं से उद्दायणे राया ममं अवहाय नियगं भाइणेज्जं केसिं कुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ[8] •महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए—इमेणं एयारूवेणं महया अप्पत्तिएणं मणोमाणसिएणं दुक्खेण अभिभूए समाणे अंतेउरपरियालसंपरिवुडे सभंडमत्तोवगरणमायाए वीतीभयाओ नयराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव कूणिए राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कूणियं रायं

---

१. भ० ६।१९०-१९२।
२. भ० ६।१९३, १९४।
३. भ० ६।१९५-२०६।
४. सं० पा०—तं चेव पउमावती पडिच्छइ जाव घडियव्वं सामी! जाव नो।
५. सं० पा०—नमंसित्ता जाव पडिगया।
६. भ० ६।१५०,१५१।
७. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
८. सं० पा०—भगवओ जाव पव्वइए।

उवसपज्जित्ताण विहरइ। तत्थ वि णं से विउलभोगसमितिसमन्नागए यावि होत्था। तए ण से अभीयीकुमारे समणोवासए यावि होत्था—अभिगयजीवाजीवे जाव[1] अहापरिग्गहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे विहरइ, उद्दायणम्मि रायरिसिम्मि समणुबद्धवेरे यावि होत्था ॥

१२१. इमीसे[2] रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामतेसु चोयट्ठिं[3] असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता। तए ण से अभीयीकुमारे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेएत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामतेसु चोयट्ठीए आयावाअसुरकुमारावाससयसहस्सेसु[4] अण्णयरसि आयावाअसुरकुमारावासंसि आयावाअसुरकुमारदेवत्ताए उववण्णो। तत्थ ण अत्थेगतियाण आयावगाण असुरकुमाराणं देवाणं एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता, तत्थ ण अभीयिस्स वि देवस्स एग पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ॥

१२२ से ण भते! अभीयीदेवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति?
गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[5] सव्वदुक्खाण अतं काहिति ॥

१२३ सेव भंते! सेव भते! त्ति[6] ॥

सत्तमो उद्देसो

भासा-पदं

१२४. रायगिहे जाव[7] एव वयासी—आया भंते! भासा? अण्णा भासा?
गोयमा! नो आया भासा, अण्णा भासा।
रूविं भते! भासा? अरूविं भासा?

---

१. भ० २।६४।

२. तेणं कालेण तेण समएण इमीसे (अ, क, ख, ता, ब, म, स); अयं पाठ. अप्रासङ्गिकोस्ति। शाश्वतपदार्थाना निरूपणे कालनिर्देशो नावश्यकोस्ति। केनापि कारणेन प्रवाहपाती लेख. सजात इति प्रतीयते, तेनात्र पाठान्तरत्वेनास्माभि स्वीकृत.।

३. चोसट्ठि (स)।

४. °सहस्सेसु असुरकुमारावासेसु (ता)।

५. भ० २।७३।

६. भ० १।५१।

७. भ० १।४-१०।

गोयमा ! रूवि भासा, नो अरूवि भासा।
सचित्ता[1] भंते ! भासा ? अचित्ता[2] भासा ?
गोयमा ! नो सचित्ता भासा, अचित्ता भासा।
जीवा भंते ! भासा ? अजीवा भासा ?
गोयमा ! नो जीवा भासा, अजीवा भासा।
जीवाणं भंते ! भासा ? अजीवाणं भासा ?
गोयमा ! जीवाणं भासा, नो अजीवाणं भासा।
पुव्वि भंते ! भासा ? भासिज्जमाणी भासा ? भासासमयवीतिक्कंता भासा ?
गोयमा ! नो पुव्वि भासा, भासिज्जमाणी भासा, नो भासासमयवीतिक्कता भासा।
पुव्वि भंते ! भासा भिज्जति ? भासिज्जमाणी भासा भिज्जति ? भासासमयवीतिक्कंता भासा भिज्जति ?
गोयमा ! नो पुव्वि भासा भिज्जति, भासिज्जमाणी भासा भिज्जति, नो भासासमयवीतिक्कता भासा भिज्जति ॥

१२५. कतिविहा णं भंते ! भासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा भासा पण्णत्ता, तं जहा—सच्चा, मोसा, सच्चामोसा असच्चामोसा ॥

मण-पदं

१२६. आया भंते ! मणे ? अण्णे मणे ?
गोयमा ! नो आया मणे, अण्णे मणे।
[3]•रूवि भंते ! मणे ? अरूवि मणे ?
गोयमा ! रूवि मणे, नो अरूवि मणे।
सचित्ते भंते ! मणे ? अचित्ते मणे ?
गोयमा ! नो सचित्ते मणे, अचित्ते मणे।
जीवे भंते ! मणे ? अजीवे मणे ?
गोयमा ! नो जीवे मणे, अजीवे मणे ॥
जीवाणं भंते ! मणे ? अजीवाणं मणे ?
गोयमा ! जीवाणं मणे•, नो अजीवाणं मणे।
पुव्वि भंते ! मणे ? मणिज्जमाणे मणे ? [4]•मणसमयवीतिक्कंते मणे ?

---

१. सच्चित्ता (क, ता, म)।
२. अच्चित्ता (क, ता, म)।
३. सं० पा०—जहा भासा तहा मणे वि जाव नो।
४. सं० पा०—एवं जहेव भासा।

गोयमा ! नो पुव्विं मणे, मणिज्जमाणे मणे, नो मणसमयवीतिक्कते मणे° ।
पुव्विं भंते ! मणे भिज्जति, मणिज्जमाणे मणे भिज्जति, मणसमयवीतिक्कते मणे भिज्जति ?[1]°
गोयमा ! नो पुव्विं मणे भिज्जति, मणिज्जमाणे मणे भिज्जति, नो मणसमयवीतिक्कते मणे भिज्जति° ।।

१२७. कतिविहे णं भंते ! मणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे मणे पण्णत्ते, तं जहा—सच्चे[2], °मोसे, सच्चामोसे°, असच्चामोसे ।।

काय-पदं

१२८. आया भंते ! काये ? अण्णे काये ?
गोयमा ! आया वि काये, अण्णे वि काये ।
रूविं भंते ! काये ? अरूविं काये[3] ?
गोयमा ! रूविं पि काये, अरूविं पि काये ।
[4]°सचित्ते भंते ! काये ? अचित्ते काये ?
गोयमा ! सचित्ते वि काये, अचित्ते वि काये ।
जीवे भंते ! काये ? अजीवे काये ?
गोयमा ! जीवे वि काये, अजीवे वि काये ।
जीवाणं भंते ! काये ? अजीवाणं काये ?
गोयमा ! जीवाणं वि काये, अजीवाणं वि काये ° ।
पुव्विं भंते ! काये[5] ? [6]°कायिज्जमाणे काये ? कायसमयवीतिक्कते काये° ?
गोयमा ! पुव्विं पि काये, कायिज्जमाणे वि काये, कायसमयवीतिक्कते वि काये ।
पुव्विं भंते ! काये भिज्जति ? [6]°कायिज्जमाणे काये भिज्जति ? कायसमयवीतिक्कते काये भिज्जति ?°
गोयमा ! पुव्विं पि काये भिज्जति[7], °कायिज्जमाणे वि काये भिज्जति, कायसमयवीतिक्कते वि° काये भिज्जति ।।

१२९. कतिविहे णं भंते ! काये पण्णत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे काये पण्णत्ते, तं जहा—ओरालिए[8], ओरालियमीसए, वेउव्विए, वेउव्वियमीसए, आहारए, आहारगमीसए, कम्मए ।।

---

१. स० पा०—एवं जहेव भासा ।
२. स० पा०—सच्चे जाव असच्चामोसे ।
३. काये पुच्छा (स) ।
४. स० पा०—एवं एक्केक्के पुच्छा । सचित्ते वि काये, अचित्ते वि काये । जीवे वि काए, अजीवे वि काए, जीवाणं वि काए, अजीवाणं वि काये ।
५. स० पा०—पुच्छा ।
६. स० पा०—पुच्छा ।
७. स० पा०—भिज्जति जाव काये ।
८. ओराले (स) ।

मरण-पदं

१३०. कतिविहे ण भंते ! मरणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे मरणे पण्णत्ते, तं जहा—आवीचियमरणे[1], ओहिमरणे[2], आतियतियमरणे[3], बालमरणे, पंडियमरणे ।।

१३१. आवीचियमरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, त जहा–दव्वावीचियमरणे, खेत्तावीचियमरणे, कालावीचियमरणे, भवावीचियमरणे, भावावीचियमरणे ।।

१३२. दव्वावीचियमरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयदव्वावीचियमरणे, तिरिक्ख-जोणियदव्वावीचियमरणे, मणुस्सदव्वावीचियमरणे, देवदव्वावीचियमरणे ।।

१३३. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयदव्वावीचियमरणे-नेरइयदव्वावीचिय-मरणे ?
गोयमा ! जण्ण नेरइया नेरइए दव्वे वट्टमाणा जाइ दव्वाइ नेरइयाउयत्ताए गहियाइ बद्धाइ पुट्ठाइ कडाइं पट्ठवियाइ 'निविट्ठाइ अभिनिविट्ठाइ'[4] अभिसम-ण्णागयाइ भवति ताइं दव्वाइ आवीचिमणुसमय[5] निरतर मरंति त्ति कट्टु । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइयदव्वावीचियमरणे, एवं जाव देवदव्वा-वीचियमरणे ।।

१३४. खेत्तावीचियमरणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयखेत्तावीचियमरणे जाव देवखेत्ता-वीचियमरणे ।।

१३५. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—नेरइयखेत्तावीचियमरणे-नेरइयखेत्तावीचिय-मरणे ?
गोयमा ! जण्ण नेरइया नेरइयखेत्ते वट्टमाणा जाइ दव्वाइं नेरइयाउयत्ताए गहियाइं एवं जहेव दव्वावीचियमरणे तहेव खेत्तावीचियमरणे वि । एव जाव भावावीचियमरणे ।।

१३६ ओहिमरणे ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वोहिमरणे, खेत्तोहिमरणे,[6] °कालोहि-मरणे, भवोहिमरणे°, भावोहिमरणे ।।

---

१. आवीयिय° (ब) ।
२. अवहि° (ब, म) ।
३. आदितिय° (अ, स); आदियतिय; (क, ख, ब) ।
४. × (ब) ।
५. आवीचियम° (क, स) ।
६. स० पा०—खेत्तोहिमरणे जाव भवो° ।

१३७. दव्वोहिमरणे ण भते कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयदव्वोहिमरणे जाव देवदव्वोहिमरणे ॥

१३८ से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—नेरइयदव्वोहिमरणे-नेरइयदव्वोहिमरणे ?
गोयमा ! 'जे ण'[1] नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइ दव्वाइ सपय मरंति, 'ते ण'[2] नेरइया ताइ दव्वाइ अणागए काले पुणो वि मरिस्सति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव दव्वोहिमरणे । एव तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवदव्वोहिमरणे[3] वि । एव एएण गमेण खेत्तोहिमरणे वि, कालोहिमरणे वि, भवोहिमरणे वि, भावोहिमरणे वि ॥

१३९. आतियतियमरणे ण भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वातियतियमरणे, खेत्तातियतियमरणे जाव भावातियतियमरणे ॥

१४०. दव्वातियतियमरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—नेरइयदव्वातियतियमरणे जाव देवदव्वातियतियमरणे ॥

१४१. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइयदव्वातियतियमरणे-नेरइयदव्वातियतियमरणे ?
गोयमा ! 'जे ण'[4] नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइं दव्वाइं संपयं मरंति, 'ते ण'[5] नेरइया ताइ दव्वाइ अणागए काले नो पुणो वि मरिस्सति । से तेणट्ठेणं जाव नेरइयदव्वातियतियमरणे । एव तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवदव्वातियतियमरणे । एव खेत्तातियतियमरणे वि, एवं जाव भावातियतियमरणे वि ॥

१४२. बालमरणेण भते ! कतिविहे पण्णत्ते !
गोयमा ! दुवालसविहे पण्णत्ते, तं जहा—१. वलयमरणे [6]°२ वसट्टमरणे ३ अतोसल्लमरणे ४ तब्भवमरणे ५. गिरिपडणे ६. तरुपडणे ७ जलप्पवेसे ८. जलणप्पवेसे ९ विसभक्खणे १०. सत्थोवाडणे ११ वेहाणसे° १२ गद्धपट्ठे ॥

१४३. पडियमरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पाओवगमणे य, भत्तपच्चक्खाणे य ॥

१४४. पाओवगमणे[7] णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

---

१. ज ण (अ, क, ख, ता, ब); जण्णं (म) ।
२. जं ण (अ, ता, ब, स); जे ण (ख), 'त' इति गम्यम् (वृ) ।
३. देवोहिमरणे (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
४. ज णं (अ, क, ता, स); जण्णं (म) ।
५. जे ण (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
६. स० पा०—जहा खंदए जाव गद्धपट्ठे ।
७. °गमणमरणेणं (ता); पाओवगमरणेणं(ब) ।

गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य। नियमं अपडिकम्मे ॥

१४५. भत्तपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
[1]गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य।° नियम सपडिकम्मे ॥

१४६. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति[2] ॥

अट्ठमो उद्देसो

कम्मपगडि-पदं

१४७. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ। एव बंधट्ठिइ-उद्देसो[3] भाणियव्वो निरवसेसो जहा[4] पण्णवणाए[5] ॥

१४८. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति[6] ॥

नवमो उद्देसो

भावियप्प-विउव्वणा-पदं

१४९. रायगिहे जाव[7] एव वयासी—से जहानामए केइ पुरिसे केयाघडियं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा केयाघडियाकिच्चहत्थगएण अप्पाणेणं उड्ढं वेहास उप्पएज्जा ?
हंता उप्पएज्जा ॥

---

१. स० पा०—एव त चेव नवर नियमं सपडिकम्मे।
२. भ० १।५१।
३. उद्देसओ (क, ता, ब, म)।
४. प० २४।
५. इह च वाचनान्तरे संग्रहणीगाथास्ति, सा चेयं—
पयडीण भेयठिई, बधोवि य इंदियाणुवाएण।
केरिसय जहन्नठिइ, बधइ उक्कोसियं वावि ॥
(वृ)।
६. भ० १।५१।
७. भ० १।४-१०।

१५०. अणगारे णं भंते! भावियप्पा केवतियाइं पभू केयाघडियाकिच्चहत्थगयाइं[1] रूवाइं विउव्वित्तए?
गोयमा! से जहानामए जुवतिं जुवाणे हत्थेणं हत्थे [2]गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ जाव[3] पभू णं गोयमा! अणगारे णं भावियप्पा केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं बहूहिं इत्थिरूवेहिं आइण्णं वितिकिण्णं उवत्थडं संथडं फुडं अवगाढावगाढं करेत्तए। एस णं गोयमा! अणगारस्स भावियप्पणो अयमेयारूवे विसए, विसयमेत्ते बुइए, नो चेव णं संपत्तीए विउव्विंसु वा विउव्वति वा विउव्विस्सति वा॥

१५१. से जहानामए केइ पुरिसे हिरण्णपेलं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा हिरण्णपेलहत्थकिच्चगएणं[4] अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा?
सेसं तं चेव एवं सुवण्णपेलं, एवं रयणपेलं, वइरपेलं, वत्थपेलं[5], आभरणपेलं, एवं वियलकडं[6], सुंबकडं[7], चम्मकडं[8], कंबलकडं[9], एवं अयभारं, तंबभारं, तउय-भारं, सीसगभारं, हिरण्णभारं, सुवण्णभारं, वइरभारं॥

१५२. से जहानामए वग्गुली सिया, दो वि पाए उल्लंबिया-उल्लंबिया उड्ढंपादा अहोसिरा चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा वग्गुलीकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा?
एवं जण्णोवइयवत्तव्वया भाणियव्वा जाव[10] विउव्विस्सति वा॥

१५३ से जहानामए जलोया सिया, उदगंसि कायं उव्विहिया-उव्विहिया गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, सेसं जहा वग्गुलीए॥

१५४ से जहानामए बीयंबीयगसउणे[11] सिया, दो वि पाए समतुरंगेमाणे-समतुरंगेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, सेसं तं चेव॥

१५५ से जहानामए पक्खिविरालए सिया, रुक्खाओ रुक्खं डेवेमाणे-डेवेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, सेसं तं चेव॥

---

१ [illegible] (क, ख, ता, ब, म, स)।
२ म० पा० [illegible]
जाव गो।
३. भ० ३।८।
४ [illegible] (ता), [illegible] (स०)।
५ [illegible] (क, ब, म)।
६. [illegible] (क, ख, ब, म); [illegible] (स)।
७ [illegible] (अ); [illegible] (ख, ब); [illegible] (ता); [illegible] (क), [illegible] (म)।
८ [illegible] (क, ख, स), [illegible] (ता, [illegible] (म)।
९ [illegible] (क, [illegible]); [illegible] (ता [illegible] (म)।
१०. भ० ३।[illegible]।
११. [illegible] (क, ता)।

१५६. से जहानामए जीवंजीवगसउणे सिया, दो वि पाए समतुरंगेमाणे-समतुरंगेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, सेस त चेव ॥

१५७. से जहानामए हंसे सिया, तीराओ तीरं अभिरममाणे-अभिरममाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा हंसकिच्चगएण अप्पाणेण, त चेव ॥

१५८. से जहानामए समुद्दवायसए सिया, वीईओ वीइ डेवेमाणे-डेवेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, तहेव ॥

१५९. से जहानामए केइ पुरिसे चक्कं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा चक्कहत्थकिच्चगएणं अप्पाणेण, सेसं जहा[1] केयाघडियाए। एवं छत्त, एवं चम्म[2] ॥

१६०. से जहानामए केइ पुरिसे रयणं गहाय गच्छेज्जा, एव चेव। एवं वइरं, वेरुलियं जाव[3] रिट्ठ। एव उप्पलहत्थगं, एवं पउमहत्थग, कुमुदहत्थग, [4]°नलिणहत्थग, सुभगहत्थग, सुगंधियहत्थगं, पोंडरीयहत्थग, महापोंडरीयहत्थगं, सयपत्तहत्थग°, से जहानामए केइ पुरिसे सहस्सपत्तग गहाय गच्छेज्जा, एवं चेव ॥

१६१. से जहानामए केइ पुरिसे भिस अवद्दालिय-अवद्दालिय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भिसकिच्चगएण अप्पाणेण, त चेव ॥

१६२. से जहानामए मुणालिया सिया, उदगंसि काय उम्मज्जिया-उम्मज्जिया चिट्ठेज्जा, एवामेव, सेसं जहा[5] वग्गुलीए ॥

१६३. से जहानामए वणसडे सिया—किण्हे किण्होभासे जाव[6] महामेहनिकुरबभूए[7], पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा वणसंडकिच्चगएणं अप्पाणेण उड्ढं वेहास उप्पएज्जा ? सेस त चेव ॥

१६४. से जहानामए पुक्खरणी सिया—चउक्कोणा, समतीरा, अणुपुव्वसुजायवप्प-गंभीरसीयलजला जाव[8] सद्दुन्नइयमहुरसरणादिया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा पोक्खरणीकिच्चगएण अप्पाणेण उड्ढ वेहास उप्पएज्जा ?
हंता उप्पएज्जा ॥

१६५. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा केवतियाइं पभू पोक्खरणीकिच्चगयाइं रूवाइं विउव्वित्तए ? सेसं त चेव जाव विउव्विस्सति वा ॥

---

१. भ० १३।१४९,१५०।
२. चमरं (म)।
३. भ० ३।४।
४. सं० पा०—एव जाव से।
५. भ० १३।१५२।
६. ओ० सू० ४।
७ °निउयम्बभूए (ख); °निकुरंबभूए (ता, ब)।
८. ओ० सू० ६, भ० वृत्ति।

१६६. से भंते! किं मायी विउव्वति? अमायी विउव्वति?
गोयमा! मायी विउव्वति, नो अमायी विउव्वति। मायी णं तस्स ठाणस्स अणालोइय[1]°पडिक्कंते कालं करेइ, नत्थि तस्स आराहणा। अमायी णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेइ°, अत्थि तस्स आराहणा॥

१६७. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव[2] विहरइ॥

दसमो उद्देसो

छाउमत्थियसमुग्घाय-पदं

१६८. कति णं भंते! छाउमत्थियसमुग्घाया पण्णत्ता?
गोयमा! छ छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेयणासमुग्घाए, एवं छाउमत्थियसमुग्घाया नेयव्वा, जहा पण्णवणाए जाव[3] आहारगसमुग्घाएत्ति॥

१६९. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव[4] विहरइ॥

---

१. सं० पा० [illegible] जाव नत्थि।
२. भ० १।५१।
३. प० ३६।
४. भ० १।५१।

चोद्दसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. चर २. उम्माद ३ सरीरे, ४. पोग्गल ५. अगणी तहा ६. किमाहारे।
७,८. ससिट्ठमंतरे[1] खलु, ९. अणगारे १०. केवली चेव ॥ १ ॥

लेस्साणुसारि-उववाय-पदं

१. रायगिहे जाव[2] एवं वयासी—अणगारे ण भंते ! भावियप्पा चरम देवावासं वीतिक्कंते, परमं देवावासमसपत्ते, एत्थ ण अंतरा कालं करेज्जा, तस्स ण भंते ! कहिं गती ? कहिं उववाए पण्णत्ते ?
गोयमा ! जे से तत्थ परिपस्सओ[3] तल्लेसा देवावासा, तहि तस्स गती, तहि तस्स उववाए पण्णत्ते। से य तत्थ गए विराहेज्जा कम्मलेस्सामेव[4] पडिपडति[5], से य तत्थ गए नो विराहेज्जा, तामेव लेस्सं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

२. अणगारे ण भंते ! भावियप्पा चरमं असुरकुमारावासं वीतिक्कते, परमं असुर[6]॰कुमारावासमसंपत्ते, एत्थ णं अतरा काल करेज्जा, तस्स ण भते ! कहिं गती ? कहिं उववाए पण्णत्ते ?
गोयमा ! जे से तत्थ परिपस्सओ तल्लेसा असुरकुमारावासा, तहिं तस्स गती, तहिं तस्स उववाए पण्णत्ते। से य तत्थ गए विराहेज्जा कम्मलेस्सामेव पडिपडति, से य तत्थ गए नो विराहेज्जा, तामेव लेस्सं उवसंपज्जित्ताण विहरइ।॰
एवं जाव थणियकुमारावास, जोइसियावासं, एव वेमाणियावासं जाव विहरइ ॥

---

१. ससट्ठ॰ (अ, क, ख, ब, म, स)।
२. भ॰ १।४-१०।
३. पलियस्सओ (ख); परियस्सतो (ब, म)।
४. ॰मेवा (क, व)।
५. परिपडइ (ता)।
६. सं॰ पा॰—एवं चेव।

नेरइयादीणं गतिविसय-पदं

३. नेरइयाण भंते ! कह सीहा गती ? कहं सीहे गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से जहानामए—केइपुरिसे तरुणे बलवं जुगवं[1] •जुवाणे अप्पातंके थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पास-पिट्ठंतरोरुपरिणते तलजमलजुयल-परिघनिभ-बाहू चम्मेट्ठग-दुहण-मुट्ठिय-समाहत-निचित-गत्तकाए उरस्सबलसमण्णागए लघण-पवण-जइण-वायाम-समत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेहावी निउणे° निउणसिप्पोवगए आउटिय[2] बाहु पसारेज्जा, पसारियं वा बाहुं आउटेज्जा[3], विक्खिण्ण वा मुट्ठि साहरेज्जा, साहरिय वा मुट्ठि विक्खिरेज्जा, उम्मिसिय[4] वा अच्छि निम्मिसेज्जा, निम्मिसिय वा अच्छि उम्मिसेज्जा, 'भवे एयारूवे'[5] ? नो इणट्ठे समट्ठे। नेरइया ण एगसमइएण[6] वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उववज्जति। नेरइयाणं गोयमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पण्णत्ते। एव जाव वेमाणियाणं, नवर—एगिदियाण चउसमइए विग्गहे भाणियव्वे। सेसं त चेव ॥

नेरइयादीणं अणंतरोववन्नगादि-पदं

४ नेरइया ण भंते ! कि अणतरोववन्नगा ? परपरोववन्नगा ? अणंतर-परंपर-अणुववन्नगा ?
गोयमा ! नेरइया अणतरोववन्नगा वि, परपरोववन्नगा वि, अणंतर-परंपर-अणुववन्नगा वि ॥

५ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ[7]—•नेरइया अणतरोववन्नगा वि, परंपरोववन्नगा वि°, अणतर-परपर-अणुववन्नगा वि ?
गोयमा ! जे ण नेरइया पढमसमयोववन्नगा ते ण नेरइया अणंतरोववन्नगा, जे ण नेरइया अपढमसमयोववन्नगा ते ण नेरइया परपरोववन्नगा, जे ण नेरइया विग्गहगइसमावन्नगा ते ण नेरइया अणतर-परपर-अणुववन्नगा। से तेणट्ठेण जाव अणतर-परपर-अणुववन्नगा वि। एव निरतर जाव वेमाणिया ॥

६. अणतरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउय पकरेंति ? तिरिक्ख-मणुस्स-देवाउय पकरेंति ?
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेंति जाव नो देवाउय पकरेंति ॥

---

१. स० पा०—जुगवं जाव निउण° ।
२. आउट्टिय (अ, ख, स), आउदिय (क); आदिउट्टिय (ता) ।
३ आउट्टेज्जा (ता) ।
४. अणिमिसिय (अ, क, ता, व, म, स); उण्णिसियं (ख) ।
५. भवे एयारूवे सिया (अ), भवेयारूवे (क, ख, ता, व, म) ।
६. °समएण (अ) ।
७. स० पा०—वुच्चइ जाव अणतर ।

७. परंपरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति जाव देवाउयं पकरेंति ?
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति ॥

८. अणंतर-परंपर-अणुववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति— पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति । एवं जाव वेमाणिया, नवरं—पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य परंपरोववन्नगा चत्तारि वि आउयाइं पकरेंति । सेसं तं चेव ॥

९. नेरइया णं भंते ! किं अणंतरनिग्गया ? परंपरनिग्गया ? अणंतर-परंपर-अनिग्गया ?
गोयमा ! नेरइया अणंतरनिग्गया वि, 'परंपरनिग्गया वि'[1], अणंतर-परंपर-अनिग्गया वि ॥

१०. से केणट्ठेणं जाव अणंतर-परंपर-अनिग्गया वि ?
गोयमा ! जे णं नेरइया पढमसमयनिग्गया ते णं नेरइया अणंतरनिग्गया, जे णं नेरइया अपढमसमयनिग्गया ते णं नेरइया परंपरनिग्गया, जे णं नेरइया विग्गहगतिसमावन्नगा ते णं नेरइया अणंतर-परंपर-अनिग्गया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव अणंतर-परंपर-अनिग्गया वि । एवं जाव वेमाणिया ॥

११. अणंतरनिग्गया णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति जाव देवाउयं पकरेंति ?
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति ॥

१२. परंपरनिग्गया णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइयाउयं पि पकरेंति जाव देवाउयं पि पकरेंति ॥

१३. अणंतर-परंपर-अनिग्गया णं भंते ! नेरइया—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति । निरवसेसं जाव वेमाणिया ॥

१४. नेरइया णं भंते ! किं अणंतरखेदोववन्नगा[2] ? परंपरखेदोववन्नगा ? अणंतर-परंपर-खेदाणुववन्नगा ?
गोयमा ! नेरइया अणंतरखेदोववन्नगा वि, परंपरखेदोववन्नगा वि, अणंतर-

---

१. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

२. °खेत्तोववन्नगा (क, व); खेतोववन्नगा (ता) ।

परंपर-खेदाणुववन्नगा वि। एवं एएणं अभिलावेण ते[1] चेव चत्तारि दंडगा भाणियव्वा॥

१५. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव[2] विहरइ॥

बीओ उद्देसो

उम्माद-पदं

१६. कतिविहे णं भंते! उम्मादे पण्णत्ते?
गोयमा! दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे[3] य, मोहणिज्जस्स य[4] कम्मस्स उदएणं। तत्थ णं जे से जक्खाएसे से णं सुहवेयणतराए चेव सुहविमोयणतराए चेव। तत्थ णं जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं से णं दुहवेयणतराए चेव दुहविमोयणतराए चेव॥

१७. नेरइयाणं भंते! कतिविहे उम्मादे पण्णत्ते?
गोयमा! दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदएणं॥

१८. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—नेरइयाणं दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स 'य कम्मस्स'[5] उदएणं?
गोयमा! देवे वा से असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, से णं तेसिं असुभाणं पोग्गलाणं पक्खिवणयाए जक्खाएसं उम्मादं पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा कम्मस्स उदएणं मोहणिज्जं उम्मायं पाउणेज्जा। से तेणट्ठेणं[6] °गोयमा! एवं वुच्चइ—नेरइयाणं दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स य कम्मस्स° उदएणं[7]॥

१९. असुरकुमाराणं भंते! कतिविहे उम्मादे पण्णत्ते?
[8]°गोयमा! दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स कम्मस्स य उदएणं॥

२०. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—असुरकुमाराणं दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदएणं?

---

१. तं (व)।
२. भ० १।५१।
३. जक्खादेसे (ता), जक्खायेसे (व), जक्खावेसे (क्व०)।
४. व (ता); वा (स)।
५. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
६. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव उदएणं।
७. उम्मादे (अ)।
८. सं० पा०—एवं जहेव नेरइयाणं नवरं देवे।

गोयमा ! ० देवे वा से महिड्ढियतराए असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, से णं तेसिं असुभाणं पोग्गलाणं पक्खिवणयाए जक्खाएसं उम्मादं पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा [1]कम्मस्स उदएणं मोहणिज्जं उम्मायं पाउणिज्जा० । से तेणट्ठेणं जाव उदएणं । एवं जाव थणियकुमाराणं । पुढविक्काइयाणं जाव मणुस्साणं—एएसिं जहा नेरइयाणं, वाणमंतर-जोइस-वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ॥

वुट्टिकायकरण-पदं

२१. अत्थि णं भंते ! पज्जण्णे[2] कालवासी वुट्ठिकायं पकरेति[3] ?
हंता अत्थि ॥

२२. जाहे णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया वुट्ठिकायं काउकामे भवइ से कहमियाणिं पकरेति ?
गोयमा ! ताहे चेव णं से सक्के देविंदे देवराया अब्भिंतरपरिसए देवे सद्दावेइ। तए णं ते अब्भिंतरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा मज्झिमपरिसए देवे सद्दावेंति । तए णं ते मज्झिमपरिसगा[4] देवा सद्दाविया समाणा बाहिरपरिसए देवे सद्दावेंति । तए णं ते बाहिरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरबाहिरगे देवे सद्दावेंति । तए णं ते बाहिरबाहिरगा देवा सद्दाविया समाणा आभिओगिए देवे सद्दावेंति । तए णं ते [5]आभिओगिया देवा० सद्दाविया समाणा वुट्ठिकाइए देवे सद्दावेंति । तए णं ते वुट्ठिकाइया देवा सद्दाविया समाणा वुट्ठिकायं पकरेंति। एवं खलु गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया वुट्ठिकायं पकरेति ॥

२३. अत्थि णं भंते ! असुरकुमारा वि देवा वुट्ठिकायं पकरेंति ?
हंता अत्थि ॥

२४. किंपत्तियं णं भंते ! असुरकुमारा देवा वुट्ठिकायं पकरेंति ?
गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो—एएसि णं जम्मणमहिमासु वा निक्खमण-महिमासु वा नाणुप्पायमहिमासु वा परिनिव्वाणमहिमासु वा, एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा वुट्ठिकायं पकरेंति । एवं नागकुमारा वि, एवं जाव थणियकुमारा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया एवं चेव ॥

तमुक्कायकरण-पदं

२५. जाहे णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया तमुक्कायं काउकामे भवति से कह-मियाणिं पकरेति ?

---

१. सं० पा०—सेसं तं चेव ।
२. पज्जुण्णे (क, ता, म) ।
३. इह स्थाने शक्रोपि तं प्रकरोतीति दृश्यम् (वृ)।
४. °परिसोववण्णगा (अ, ख, व) ।
५. सं० पा०—ते जाव सद्दाविया ।

गोयमा! ताहे चेव ण से ईसाणे देविदे देवराया अब्भितरपरिसए देवे सद्दावेति। तए ण ते अब्भितरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा [1]॰मज्झिमपरिसए देवे सद्दावेति। तए णं ते मज्झिमपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरपरिसए देवे सद्दावेति। तए ण ते बाहिरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरबाहिरगे देवे सद्दावेति। तए ण ते बाहिरबाहिरगा देवा सद्दाविया समाणा आभिओगिए देवे सद्दावेति॰। तए ण ते आभिओगिया देवा सद्दाविया समाणा तमुक्काइए देवे सद्दावेति। तए णं ते तमुक्काइया देवा सद्दाविया समाणा तमुक्कायं पकरेति। एव खलु गोयमा! ईसाणे देविंदे देवराया तमुक्काय पकरेति॥

२६ अत्थि ण भते! असुरकुमारा वि देवा तमुक्कायं पकरेति?
हता अत्थि॥

२७. किपत्तिय ण भते! असुरकुमारा देवा तमुक्काय पकरेति?
गोयमा! किड्डा-रतिपत्तियं वा पडिणीयविमोहणट्ठयाए वा गुत्तीसारक्खणहेउ वा अप्पणो वा सरीरपच्छायणट्ठयाए, एव खलु गोयमा! असुरकुमारा वि देवा तमुक्काय पकरेति। एवं जाव[2] वेमाणिया॥

२८ सेव भते! सेव भते! त्ति जाव[3] विहरइ॥

तइओ उद्देसो

विणयविहि-पदं

२९ [4]देवे ण भते! महाकाए महासरीरे अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेण[5] वीइवएज्जा?
गोयमा! अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा॥

३० से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ—अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा?
गोयमा! दुविहा देवा पण्णत्ता, त जहा—मायीमिच्छादिट्ठीउववन्नगा य,

---

१. स॰ पा॰—एव जहेव सक्कस्स जाव तए।
२. भ॰ १४।२३।
३. भ॰ १।५१।
४ उद्देशकस्य प्रारम्भे क्वचिदिय द्वारगाथा दृश्यते—
महक्काए सक्कारे,
सत्थेण वीईवयंति देवा उ।
वास चेव य ठाणा,
नेरइयाण तु परिणामे॥
५. मज्झेण मज्झेणं (अ, क, ख, ता, व)।

अमायीसम्मदिट्ठीउववन्नगा य। तत्थ णं जे से मायीमिच्छदिट्ठीउववन्नए[1] देवे से णं अणगारं भावियप्पाणं पासइ, पासित्ता नो वदइ, नो नमंसइ, नो सक्कारेइ, नो सम्माणेइ, नो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं[2] पज्जुवासइ। से णं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा। तत्थ णं जे से अमायीसम्मद्दिट्ठी-उववन्नए देवे से णं अणगारं भावियप्पाणं पासइ, पासित्ता वंदइ नमंसइ[3] °सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासइ। से णं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं नो वीइवएज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ[4]—°अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए° नो वीइवएज्जा॥

३१. असुरकुमारे णं भंते! महाकाए महासरीरे अणगारस्स भावियप्पणो मज्झं-मज्झेणं वीइवएज्जा? एवं चेव। एवं देवदंडओ भाणियव्वो जाव[5] वेमाणिए॥

३२. अत्थि णं भंते! नेरइयाणं सक्कारे इ वा? सम्माणे इ वा? किइकम्मे इ वा? अब्भुट्ठाणे इ वा? अंजलिपग्गहे इ वा? आसणाभिग्गहे इ वा? आस-णाणुप्पदाणे इ वा? एतस्स[6] पच्चुग्गच्छणया[7]? ठियस्स पज्जुवासणया? गच्छंतस्स पडिसंसाहणया?
नो इणट्ठे समट्ठे॥

३३. अत्थि णं भंते! असुरकुमाराणं सक्कारे इ वा? सम्माणे इ वा जाव गच्छंतस्स पडिसंसाहणया वा?
हंता अत्थि। एवं जाव थणियकुमाराणं। पुढविकाइयाणं जाव चउरिंदियाणं—एएसिं[8] जहा नेरइयाणं॥

३४. अत्थि णं भंते! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं सक्कारे इ वा जाव गच्छंतस्स पडिसंसाहणया वा?
हंता अत्थि। नो चेव णं आसणाभिग्गहे इ वा, आसणाणुप्पयाणे इ वा॥

३५. [9]°अत्थि णं भंते! मणुस्साणं सक्कारे इ वा? सम्माणे इ वा? किइकम्मे इ वा? अब्भुट्ठाणे इ वा? अंजलिपग्गहे इ वा? आसणाभिग्गहे इ वा? आस-णाणुप्पदाणे इ वा? एंतस्स पच्चुग्गच्छणया? ठियस्स पज्जुवासणया? गच्छं-तस्स पडिसंसाहणया?
हंता अत्थि।° वाणमंतर-जोइस-वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं॥

---

१. °मिच्छद्दिट्ठी° (अ, क, ख, ब, म, स)।
२. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. सं० पा०—नमंसइ जाव पज्जुवासइ।
४. सं० पा०—वुच्चइ जाव नो।
५. भ० १४।२३।
६. इंतस्स (अ)।
७. पच्चप्पत्थणया (अ)।
८. एसिं (क, ख, ता, ब, म)।
९. सं० पा०—मणुस्साणं जाव वेमाणियाणं।

३६. अप्पिड्ढिए[1] णं भंते ! देवे महिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

३७ समिड्ढिए[2] णं भंते ! देवे समिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पमत्तं पुण वीइवएज्जा ॥

३८. से णं भंते ! किं सत्थेणं अक्कमित्ता पभू ? अणक्कमित्ता पभू ?
गोयमा ! अक्कमित्ता पभू, नो अणक्कमित्ता पभू ॥

३९. से णं भंते ! किं पुव्विं सत्थेणं अक्कमित्ता पच्छा वीइवएज्जा ? पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा सत्थेणं अक्कमेज्जा ?
गोयमा ! पुव्विं सत्थेणं अक्कमित्ता पच्छा वीइवएज्जा, नो पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा सत्थेणं अक्कमिज्जा । एवं एएणं अभिलावेणं जहा दसमसए आइड्ढी-उद्देसए[3] तहेव निरवसेसं चत्तारि दंडगा भाणियव्वा जाव[4] महिड्ढिया वेमाणिणी अप्पिड्ढियाए वेमाणिणीए ॥

४०. रयणप्पभपुढविनेरइया णं भंते ! केरिसयं पोग्गलपरिणामं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ?
गोयमा ! अणिट्ठं[5] °अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं° अमणामं । एवं जाव अहेसत्तमापुढविनेरइया ॥

४१ [6]°रयणप्पभपुढविनेरइया णं भंते ! केरिसयं वेदनापरिणामं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ?
गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणामं ।° एवं जहा जीवाभिगमे बितिए नेरइयउद्देसए जाव[7]—

४२ अहेसत्तमापुढविनेरइया णं भंते ! केरिसयं परिग्गहसण्णापरिणामं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ?
गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणामं ॥

४३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[8] ॥

---

१. अप्पिड्ढीए (अ, क, ता, ब, म, स) ।
२. समिड्ढीए (अ, क, ब, म); समड्ढीए (ता, स) ।
३. आतिड्ढीयउद्देसए (ता, ब, म) ।
४. भ० १०।२८-३८ ।
५. सं० पा०—अणिट्ठं जाव अमणामं ।
६. सं० पा०—एवं वेदणापरिणामं ।
७. जी० ३ ।
८. भ० १।५१ ।

चउत्थो उद्देसो

पोग्गल-जीव-परिणाम-पदं

४४. [1]एस ण भंते ! पोग्गले तीतमणंत सासय समयं लुक्खी ? समय अलुक्खी ? समयं लुक्खी वा अलुक्खी वा ? पुव्वि च णं करणेणं अणेगवण्णं अणेगरूव परिणाम परिणमइ ? अहे से परिणामे निज्जिण्णे भवइ, तओ पच्छा एगवण्णे एगरूवे सिया ?

हंता गोयमा ! एस णं पोग्गले तीतमणतं सासय समयं तं चेव जाव एगरूवे सिया ॥

४५. एस णं भते ! पोग्गले पडुप्पन्न सासय समयं लुक्खी ? एव चेव ॥

४६. [2]•एस णं भंते ! पोग्गले अणागयमणत सासय समय लुक्खी ? एव चेव° ॥

४७. एस णं भंते ! खंधे तीतमणतं सासयं समयं लुक्खी ? एव चेव खधे वि जहा पोग्गले ॥

४८. एस णं भंते ! जीवे तीतमणतं सासयं समय दुक्खी ? समय अदुक्खी ? समय दुक्खी वा अदुक्खी वा ? पुव्वि च ण करणेणं अणेगभावं अणेगभूय परिणाम परिणमइ ? अहे से वेयणिज्जे निजिण्णे भवइ, तओ पच्छा एगभावे एगभूए सिया ?

हता गोयमा ! एस णं जीवे तीतमणतं सासय समयं जाव एगभूए सिया । एव पडुप्पन्न सासयं समयं, एव अणागयमणंतं सासय समय ॥

४९. परमाणुपोग्गले ण भते ! किं सासए ? असासए ?

गोयमा ! सिय सासए, सिय असासए ॥

५०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय सासए, सिय असासए ?

गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासए, वण्णपज्जवेहिं[3] •गधपज्जवेहि रसपज्जवेहिं° फासपज्जवेहिं असासए । से तेणट्ठेणं[4] •गोयमा ! एव वुच्चइ°—सिय सासए, सिय असासए ॥

५१. परमाणुपोग्गले णं भते ! कि चरिमे ? अचरिमे ?

गोयमा ! दव्वादेसेण नो चरिमे, अचरिमे । खेत्तादेसेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे । कालादेसेण सिय चरिमे, सिय अचरिमे । भावादेसेण सिय चरिमे, सिय अचरिमे ॥

---

१. इह पुनरुद्देशकार्थसंग्रहगाथा क्वचिद् दृश्यते, सा चेय—

१. पोग्गल २. खंधे ३. जीवे,
४. परमाणू ५. सासए य चरमे य ।
६. दुविहे खलु परिणामे,
अज्जीवाण च जीवाण ॥

२. सं० पा०—एव अणागयमणतं पि ।

३. सं० पा० —वण्णपज्जवेहिं जाव फास° ।

४. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव सिय ।

५२ कतिविहे णं भते ! परिणामे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे परिणामे पण्णत्ते, त जहा—जीवपरिणामे य, अजीवपरिणामे य। एव परिणामपय[1] निरवसेस भाणियव्व ।।

५३. सेव भंते ! सेव भते ! त्ति जाव[2] विहरइ ।।

पंचमो उद्देसो

अगणिकायस्स अतिक्कमण-पदं

५४. [3]नेरइए ण भते ! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेण[4] वीइवएज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ।।

५५ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—विग्गहगतिसमावन्नगा य, अविग्गहगतिसमावन्नगा य। तत्थ ण जे से विग्गहगतिसमावन्नए नेरइए से ण अगणिकायस्स मज्झंमज्झेण वीइवएज्जा।
से ण तत्थ झियाएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थ कमइ। तत्थ ण जे से अविग्गहगतिसमावन्नए नेरइए से ण अगणिकायस्स मज्झमज्झेण नो वीइवएज्जा। से तेणट्ठेण जाव नो वीइवएज्जा ।।

५६. असुरकुमारे ण भते ! अगणिकायस्स [5]°मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?°
गोयमा ! अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ।।

५७ से केणट्ठेण जाव नो वीइवएज्जा ?
गोयमा ! असुरकुमारा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—विग्गहगतिसमावन्नगा य, अविग्गहगतिसमावन्नगा य। तत्थ ण जे से विग्गहगतिसमावन्नए असुरकुमारे से ण—एव जहेव नेरइए जाव कमइ। तत्थ ण जे से अविग्गहगतिसमावन्नए

---

१. प० १३।

२. भ० १।५१।

३. इह च क्वचिदुद्देशकार्थसग्रहगाथा दृश्यते, सा चेय—
नेरइय अगणिमज्झे,
दस ठाणा तिरिय पोग्गले देवे।
पव्वयभित्ती उल्लघणा,
य पल्लघणा चेव ।।

४. मज्झेणं मज्झेण (अ, क, ख, ता, ब)।

५. स० पा०—पुच्छा।

असुरकुमारे से णं अत्थेगतिए अगणिकायस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा।
जे णं वीइवएज्जा से ण तत्थ झियाएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थ कमइ। से तेणट्ठेण। एवं जाव थणियकुमारा। एगिंदिया जहा नेरइया॥

५८. बेइंदिया ण भंते ! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
जहा असुरकुमारे तहा बेइंदिएवि, नवरं—
जे णं वीइवएज्जा से णं तत्थ झियाएज्जा ?
हंता झियाएज्जा। सेसं तं चेव। एवं जाव चउरिंदिए॥

५९. पंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! अगणिकायस्स [1]°मज्झमज्झेण वीइवएज्जा° ?
गोयमा ! अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा॥

६०. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—विग्गहगतिसमावन्नगा य, अविग्गहगतिसमावन्नगा य। विग्गहगतिसमावन्नए जहेव नेरइए जाव नो खलु तत्थ सत्थं कमइ। अविग्गहगतिसमावन्नगा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—इड्ढिप्पत्ता य, अणिड्ढिप्पत्ता य। तत्थ ण जे से इड्ढिप्पत्ते पंचिंदियतिरिक्खजोणिए से णं अत्थेगतिए अगणिकायस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा।
जे णं वीइवएज्जा से ण तत्थ झियाएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ। तत्थ णं जे से अणिड्ढिप्पत्ते पंचिंदियतिरिक्खजोणिए से णं अत्थेगतिए अगणिकायस्स मज्झंमज्झेण वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा।
जे णं वीइवएज्जा से ण तत्थ झियाएज्जा ?
हंता झियाएज्जा। से तेणट्ठेणं जाव नो वीइवएज्जा। एवं मणुस्से वि। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिए जहा असुरकुमारे॥

पच्चणुब्भव-पदं

६१. नेरइया दस ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं जहा—अणिट्ठा सद्दा, अणिट्ठा रूवा, अणिट्ठा गंधा, अणिट्ठा रसा, अणिट्ठा फासा, अणिट्ठा गती, अणिट्ठा ठिती, अणिट्ठे लावण्णे[2], अणिट्ठे जसे कित्ती, अणिट्ठे उट्ठाण-कम्म[3]-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमे॥

---

१. सं० पा०—पुच्छा।
२. लायण्णे (ता)।
३. कम्मए (ता)।

६२. असुरकुमारा दस ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, तं जहा—इट्ठा सद्दा, इट्ठा रूवा जाव इट्ठे उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमे। एव जाव थणियकुमारा॥

६३. पुढविक्काइया छट्ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा—इट्ठाणिट्ठा फासा, इट्ठाणिट्ठा गती, एव जाव पुरिसक्कार-परक्कमे। एव जाव वणस्सइकाइया॥

६४. बेइंदिया[1] सत्तट्ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, तं जहा—इट्ठाणिट्ठा रसा, सेस जहा एगिदियाण॥

६५ तेइंदिया अट्ठट्ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा—इट्ठाणिट्ठा गधा, सेसं जहा बेइंदियाणं॥

६६ चउरिंदिया नवट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा—इट्ठाणिट्ठा रूवा, सेस जहा तेइंदियाण॥

६७. पचिंदियतिरिक्खजोणिया दस ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा—इट्ठाणिट्ठा सद्दा जाव पुरिसक्कार-परक्कमे। एव मणुस्सा वि, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा॥

देवस्स उल्लंघण-पल्लंघण-पदं

६८ देवे णं भते! महिड्ढीए जाव[2] महेसक्खे[3] बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू तिरियपव्वय वा तिरियभित्तिं वा उल्लंघेत्तए वा पल्लघेत्तए वा?

[4]नो इणट्ठे समट्ठे॥

६९. देवे ण भते! महिड्ढीए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू तिरिय[5]°पव्वय वा तिरियभित्तिं वा उल्लघेत्तए वा° पल्लंघेत्तए वा?

हता पभू॥

७० सेव भते! सेवं भते! त्ति[6]॥

---

१. बेदिया (ब)।
२. भ० १।३३६।
३. महेसक्के (ब)।
४. णो नो (अ, स)।
५. सं० पा०—तिरिय जाव पल्लघेत्तए।
६. भ० १।५१।

छट्ठो उद्देसो

नेरइयादीणं किमाहारादि-पदं

७१. रायगिहे जाव[1] एवं वयासि—नेरइया ण भंते ! किमाहारा, किंपरिणामा, किंजोणिया[2], किंठितीया पण्णत्ता ?
गोयमा ! नेरइया ण पोग्गलाहारा, पोग्गलपरिणामा, पोग्गलजोणिया, पोग्गल-ट्ठितीया, कम्मोवगा, कम्मनियाणा, कम्मट्ठितीया, कम्मुणामेव[3] विप्परिया-समेंति । एवं जाव वेमाणिया ॥

७२. नेरइया णं भंते ! किं वीचीदव्वाइं[4] आहारेंति ? अवीचीदव्वाइं आहारेंति ?
गोयमा ! नेरइया वीचीदव्वाइं पि आहारेंति, अवीचीदव्वाइं पि आहारेंति ॥

७३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया वीची[5] •दव्वाइं पि आहारेंति, अवीची-दव्वाइं पि° आहारेंति ?
गोयमा ! जे णं नेरइया एगपएसूणाइं पि दव्वाइं आहारेंति, ते णं नेरइया वीचीदव्वाइं आहारेंति, जे णं नेरइया पडिपुण्णाइं दव्वाइं आहारेंति, ते णं नेरइया अवीचीदव्वाइं आहारेंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ[6]—•नेरइया वीचीदव्वाइं पि आहारेंति, अवीचीदव्वाइं पि° आहारेंति। एवं जाव वेमाणिया[7] ॥

देविंदाणं भोग-पदं

७४. जाहे णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजिउकामे[8] भवइ से कहमियाणिं पकरेति ?
गोयमा ! ताहे चेव णं से सक्के देविंदे देवराया एगं महं नेमिपडिरूवगं विउव्वइ—एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं जाव[9] अद्धंगुलं च किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं। तस्स णं नेमिपडिरूवगस्स[10] उवरिं[11] बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव[12] मणीणं फासो। तस्स णं नेमिपडिरूवगस्स बहुमज्झदेसभागे, एत्थ[13] णं महं एगं पासायवडेंसगं विउव्वइ—

---

१. भ० १।४-१० ।
२. किंजोणीया (अ, व, म) ।
३. कम्मणामेव (व) ।
४. वीचि° (अ, क, ख, व, म, स) ।
५. सं० पा०—तं चेव जाव आहारेंति ।
६. सं० पा०—वुच्चइ जाव आहारेंति ।
७. °णिया आहारेंति (स) ।
८. भोजिउकामे (ख); भुंजउकामे (स) ।
९. भ० ६।७५ ।
१०. नेमिरूवस्स (ख, ता, व) ।
११ अवरिं (ख, ता, म); अवरि (व) ।
१२. राय० सू० २४-३१ ।
१३. तत्थ (अ, क, ता, व, म, स) ।

पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं, अब्भुग्गय-मूसिय-पहसियमिव वण्णओ जाव[1] पडिरूवे। तस्स णं पासायवडेसगस्स उल्लोए पउमलयाभत्तिचित्ते जाव[2] पडिरूवे। तस्स णं पासायवडेसगस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे जाव मणीणं फासो, मणिपेढिया अट्ठजोयणिया जहा[3] वेमाणियाण। तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं महं 'एगे देवसयणिज्जे'[4] विउव्वइ, सयणिज्जवण्णओ जाव[5] पडिरूवे। तत्थ णं से सक्के देविंदे देवराया अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, दोहि य अणिएहिं[6]—नट्टाणिएण य गंधव्वाणिएण य सद्धिं महयाहयनट्ट[7]-•गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइंगपडुप्पवाइय-रवेणं॰ दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ॥

७५. जाहे ईसाणे देविंदे देवराया दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजिउकामे भवइ से कहमियाणिं पकरेति ?

जहा सक्के तहा ईसाणे वि निरवसेसं। एवं सणंकुमारे वि, नवरं—पासायवडेंसओ छ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, तिण्णि जोयणसयाइं विक्खंभेणं, मणिपेढिया तहेव अट्ठजोयणिया। तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं, एत्थ णं महेगं सीहासणं विउव्वइ, सपरिवारं भाणियव्वं[8]। तत्थ णं सणंकुमारे देविंदे देवराया बावत्तरीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव[9] चउहि य बावत्तरीहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं य बहूहिं सणंकुमारकप्पवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं य देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडे महयाहयनट्ट जाव[10] विहरइ। एवं जहा सणंकुमारे तहा जाव पाणओ अच्चुओ, नवरं—जो जस्स परिवारो सो तस्स भाणियव्वो[11]। पासायउच्चत्तं—जं सएसु-सएसु कप्पेसु विमाणाणं उच्चत्तं, अद्धद्धं वित्थारो जाव[12] अच्चुयस्स नवजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धपंचमाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं। 'तत्थ णं'[13] अच्चुए देविंदे देवराया दसहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव विहरइ, सेसं तं चेव॥

७६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[14]॥

---

१. राय० सू० १३७।
२. राय० सू० ३४।
३. राय० सू० ३६।
४. विभक्तिव्यत्ययेन 'एगं देवसयणिज्जं'।
५. राय० सू० २४५।
६. अणिएहिं त (अ)।
७. सं० पा०—महयाहयनट्ट जाव दिव्वाइं।
८. राय० सू० ३७-४४।
९. प० २।
१०. भ० १४।७४।
११. प० २।
१२. भ० ११।९४।
१३. एत्थ णं गो (अ)।
१४. भ० १।५१।

सत्तमो उद्देसो

गोयमस्स आसासण-पदं

७७. रायगिहे जाव[1] परिसा पडिगया। गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी - चिरसंसिट्ठोसि मे गोयमा ! चिरसंथुओसि मे गोयमा ! चिरपरिचिओसि मे गोयमा ! चिरजुसिओसि[2] मे गोयमा ! चिराणुगओसि मे गोयमा ! चिराणुवत्तीसि मे गोयमा ! अणंतरं देवलोए अणंतरं माणुस्सए भवे, किं परं मरणा कायस्स भेदा इओ चुता दो वि तुल्ला एगट्ठा अविसेसमणाणत्ता भविस्सामो ॥

७८. जहा णं भंते ! वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति-पासंति ?
हंता गोयमा ! जहा णं वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति-पासंति ॥

७९. से केणट्ठेणं[3] •भंते ! एवं वुच्चइ—वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति°-पासंति ?
गोयमा ! अणुत्तरोववाइयाणं अणंताओ मणोदव्ववग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमण्णागयाओ भवंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ[4]—•वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति°-पासंति ॥

तुल्लय-पदं

८०. कतिविहे णं भंते ! तुल्लए पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे तुल्लए पण्णत्ते, तं जहा—दव्वतुल्लए, खेत्ततुल्लए, कालतुल्लए, भवतुल्लए, भावतुल्लए, संठाणतुल्लए ॥

८१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—दव्वतुल्लए-दव्वतुल्लए ?
गोयमा ! परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलस्स दव्वओ तुल्ले, परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलवइरित्तस्स दव्वओ नो तुल्ले। दुपएसिए खंधे दुपएसियस्स खंधस्स दव्वओ तुल्ले, दुपएसिए खंधे दुपएसियवइरित्तस्स खंधस्स दव्वओ नो तुल्ले। एवं जाव दसपएसिए। तुल्लसंखेज्जपएसिए खंधे तुल्लसंखेज्जपएसियस्स खंधस्स दव्वओ तुल्ले, तुल्लसंखेज्जपएसिए खंधे तुल्लसंखेज्जपएसियवइरित्तस्स खंधस्स दव्वओ नो तुल्ले, एवं तुल्लअसंखेज्जपएसिए वि, एवं तुल्ल-

---

१. भ० १।४-८।
२. चिरज्झुसिओसि (ता, म)।
३. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव पासंति।
४. सं० पा०—वुच्चइ जाव पासंति।

अणंतपएसिए वि। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—दव्वतुल्लए-दव्वतुल्लए।
से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ—खेत्ततुल्लए-खेत्ततुल्लए ?
गोयमा! एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढस्स पोग्गलस्स खेत्तओ तुल्ले, एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढवइरित्तस्स पोग्गलस्स खेत्तओ नो तुल्ले, एवं जाव दसपएसोगाढे। तुल्लसंखेज्जपएसोगाढे[1] •पोग्गले तुल्लसखेज्जपएसोगाढस्स पोग्गलस्स खेत्तओ तुल्ले, तुल्लसखेज्जपएसोगाढे पोग्गले तुल्लसखेज्जपएसोगाढवइरित्तस्स पोग्गलस्स खेत्तओ नो तुल्ले°, एवं तुल्लअसखेज्जपएसोगाढे वि। से तेणट्ठेणं[2] •गोयमा! एवं वुच्चइ°—खेत्ततुल्लए-खेत्ततुल्लए।
से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ—कालतुल्लए-कालतुल्लए ?
गोयमा! एगसमयठितीए पोग्गले एगसमयठितीयस्स पोग्गलस्स कालओ तुल्ले, एकसमयठितीए पोग्गले एगसमयठितीयवइरित्तस्स पोग्गलस्स कालओ नो तुल्ले, एव जाव दससमयट्ठितीए, तुल्लसखेज्जसमयट्ठितीए एवं चेव, एव तुल्लअसखेज्जसमयट्ठितीए वि। से तेणट्ठेण[3] •गोयमा! एव वुच्चइ°—कालतुल्लए-कालतुल्लए।
से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ—भवतुल्लए-भवतुल्लए ?
गोयमा! नेरइए नेरइयस्स भवट्ठयाए तुल्ले, नेरइयवइरित्तस्स भवट्ठयाए नो तुल्ले, तिरिक्खजोणिए एव चेव, एव मणुस्से, एव देवे वि। से तेणट्ठेणं[4] •गोयमा! एव वुच्चइ°—भवतुल्लए-भवतुल्लए।
से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ—भावतुल्लए-भावतुल्लए ?
गोयमा! एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालगस्स[5] पोग्गलस्स भावओ तुल्ले, एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालावइरित्तस्स[6] पोग्गलस्स भावओ नो तुल्ले, एव जाव दसगुणकालए, एव तुल्लसखेज्जगुणकालए पोग्गले, एव तुल्लअसखेज्जगुणकालए वि, एव तुल्लअणतगुणकालए वि। जहा कालए, एव नीलए, लोहियए, हालिद्दए, सुक्किलए। एव सुब्भिगधे, एव दुब्भिगधे। एव तित्ते जाव[7] महुरे। एव कक्खडे जाव[8] लुक्खे। ओदइए भावे ओदइयस्स भावस्स भावओ तुल्ले, ओदइए भावे ओदइयभाववइरित्तस्स भावस्स भावओ नो तुल्ले, एव ओवसमिए, खइए, खओवसमिए, पारिणामिए। सन्निवाइए भावे सन्निवाइयस्स

---

१. स० पा०—तुल्लसखेज्ज।
२. स० पा०—तेणट्ठेण जाव खेत्ततुल्लए।
३. स पा०—तेणट्ठेण जाव कालतुल्लए।
४. स० पा०—तेणट्ठेण जाव भवतुल्लए।
५. °कालस्स (अ, क, व, स)।
६. °काल° (अ, ख, स), स्वीकृतपाठे एकपदे सन्धि।
७. भ० ८।३६।
८. भ० ८।३६;

भावस्स भावओ तुल्ले, सन्निवाइए भावे सन्निवाइयभाववइरित्तस्स भावस्स भावओ नो तुल्ले। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—भावतुल्लए-भावतुल्लए।

से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—सठाणतुल्लए-सठाणतुल्लए ?

गोयमा ! परिमंडले सठाणे परिमंडलस्स संठाणस्स सठाणओ तुल्ले परिमडले सठाणे परिमडलसठाणवइरित्तस्स सठाणस्स सठाणओ नो तुल्ले, एव वट्टे, तसे, चउरसे, आयए। समचउरंससठाणे समचउरसस्स सठाणस्स सठाणओ तुल्ले समचउरसे सठाणे समचउरंससठाणवइरित्तस्स सठाणस्स संठाणओ नो तुल्ले, 'एव परिमंडले वि'[1], एव[2] •साई खुज्जे वामणे° हुडे। से तेणट्ठेण[3] •गोयमा ! एव वुच्चइ °—सठाणतुल्लए-संठाणतुल्लए ॥

भत्तपच्चक्खायस्स आहार-पदं

८२. भत्तपच्चक्खायए ण भते ! अणगारे मुच्छिए[4] •गिद्धे गढिए °अज्झोववन्ने आहारमाहारेति, अहे णं वीससाए काल करेइ, तओ पच्छा अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए[5] अणज्झोववन्ने आहारमाहारेति ?

हता गोयमा ! भत्तपच्चक्खायए णं अणगारे [6]•मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने आहारमाहारेति, अहे ण वीससाए काल करेइ, तओ पच्छा अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने आहारमाहारेति° ॥

८३. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—भत्तपच्चक्खायए ण [7]•अणगारे मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने आहारमाहारेति, अहे णं वीससाए कालं करेइ, तओ पच्छा अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने आहारमाहारेति ? °

गोयमा ! भत्तपच्चक्खायए ण अणगारे मुच्छिए[8] •गिद्धे गढिए° अज्झोववन्ने आहारे[9] भवइ, अहे ण वीससाए काल करेइ, तओ पच्छा अमुच्छिए[10] •अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने° आहारे भवइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव आहारमाहारेति ॥

लवसत्तम देव-पदं

८४. अत्थि णं भंते ! लवसत्तमा देवा, लवसत्तमा देवा ?

हता अत्थि ॥

---

१. × (अ, ख); एव जाव परिमडले वि (क, ता, व, म)।
२. सं० पा०—एव जाव हुडे।
३. स० पा०—तेणट्ठेण जाव संठाणतुल्लए।
४. सं० पा०—मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने।
५. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
६. सं० पा०—त चेव।
७. स० पा०—त चेव।
८. स० पा०—मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने।
९. अत्रकपदे सन्धिस्तेन 'आहारए' इति स्थाने 'आहारे' इति प्रयोगो दृश्यते।
१०. स० पा०—अमुच्छिए जाव आहारे।

८५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—लवसत्तमा देवा, लवसत्तमा देवा ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव[1] निउणसिप्पोवगए सालीण वा, वीहीण वा, गोधूमाण वा, जवाण वा, जवजवाण वा पक्काण[2], परियाताणं, हरियाणं, हरियकंडाण तिक्खेण नवपज्जणएण[3] असिअएण पडिसाहरिया-पडिसाहरिया पडिसखिविया-पडिसखिविया जाव इणामेव-इणामेव त्ति कट्टु सत्त लवे[4] लुएज्जा, जदि[5] ण गोयमा ! तेसिं देवाण एवतिय काल आउए पहुप्पते[6] तो ण ते देवा तेण चेव भवग्गहणेणं सिज्झता[7] •बुज्झता मुच्चता परिनिव्वायंता सव्वदुक्खाण• अंत करेता। से तेणट्ठेण[8] •गोयमा ! एवं वुच्चइ•—लवसत्तमा देवा, लवसत्तमा देवा ॥

अणुत्तरोववाइयदेव-पदं

८६. अत्थि ण भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा, अणुत्तरोववाइया देवा ?
हंता अत्थि ॥

८७. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—अणुत्तरोववाइया देवा, अणुत्तरोववाइया देवा ?
गोयमा ! अणुत्तरोववाइयाण देवाणं अणुत्तरा सद्दा[9], •अणुत्तरा रूवा, अणुत्तरा गधा, अणुत्तरा रसा, अणुत्तरा•फासा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—अणुत्तरोववाइया देवा, अणुत्तरोववाइया देवा ॥

८८. अणुत्तरोववाइया ण भंते ! देवा केवतिएण कम्मावसेसेणं अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववन्ना ?
गोयमा ! जावतिय छट्ठभत्तिए समणे निग्गथे कम्म निज्जरेति एवतिएणं कम्मावसेसेण अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववन्ना ॥

८९. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति[10] ॥

---

१. भ० १४।३।
२ पिक्काण (म, स)।
३. नवपज्जएण (क, ता, स), नवपज्जवएण (म)।
४. लए (अ, क ख, ता, व), लवए (म, स)।
५. जति (अ, ख, म, स)।
६ वहुप्पते (अ, क); वहुप्पते (ख, व, म, स), पहुप्पते (ता)।
७ सिज्झेज्जा (ता); स० पा०—सिज्झता जाव अंते।
८. स० पा०—तेणट्ठेण जाव लवसत्तमा।
९ स० पा०—सद्दा जाव फासा।
१०. भ० १।५१।

अट्ठमो उद्देसो

अबाहाए अंतर-पदं

९०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाए य[1] पुढवीए केवतिए[2] अबाहाए[3] अंतरे पण्णत्ते ?
गोयमा ! असखेज्जाइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

९१. सक्करप्पभाए णं भते ! पुढवीए वालुयप्पभाए य पुढवीए केवतिए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? एव चेव । एवं जाव तमाए अहेसत्तमाए य ॥

९२. अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए अलोगस्स य केवतिए अबाहाए अनरे पण्णत्ते ?
गोयमा ! असखेज्जाइं जोयणसहस्साइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

९३. इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए पुढवीए जोतिसस्स य केवतिए [4]°अबाहाए अतरे पण्णत्ते ? °
गोयमा ! सत्तनउए जोयणसए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

९४. जोतिसस्स ण भते ! सोहम्मीसाणाण य कप्पाणं केवतिए [5]°अबाहाए अतरे पण्णत्ते ? °
गोयमा ! असखेज्जाइं जोयण[6]°सहस्साइं अबाहाए° अंतरे पण्णत्ते ॥

९५. सोहम्मीसाणाणं भंते ! सणकुमार-माहिंदाण य केवतिए अबाहाए अतरे पण्णत्ते ? एवं चेव ॥

९६. सणंकुमार-माहिंदाणं भंते ! बंभलोगस्स कप्पस्स य केवतिए अबाहाए अतरे पण्णत्ते ? एवं चेव ॥

९७. बंभलोगस्स णं भंते ! लंतगस्स य कप्पस्स केवतिए अबाहाए अतरे पण्णत्ते ? एवं चेव ॥

९८. लंतयस्स ण भते ! महासुक्कस्स य कप्पस्स केवतिए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? एव चेव । एवं महासुक्कस्स कप्पस्स सहस्सारस्स य, एव सहस्सारस्स आणय-'पाणयाण य कप्पाण'[7], एवं आणय-पाणयाण[8] आरणच्चुयाण य कप्पाण, एव आरच्चुयाण गेवेज्जविमाणाण य, एवं गेवेज्जविमाणाण अणुत्तरविमाणाण य ॥

---

१. × (अ, क, व, म) ।
२. केवतियं (अ, क, ख, ता, व, म, स) प्राय. ।
३. आवाहाए (अ, क, ता, स) सर्वत्र, अवाहे (ख); आवाहए (व, म) ।
४. सं० पा०—पुच्छा ।
५. सं० पा०—पुच्छा ।
६. स० पा०—जोयण जाव अतरे ।
७, पाणयकप्पाण (क, स) ।
८ पाणयाण कप्पाण (अ, क, म) ।

९९. अणुत्तरविमाणाणं भंते ! ईसिपब्भाराए[1] य पुढवीए केवतिए [2]•अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ?०
गोयमा ! दुवालस जोयणे अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।।

१०० ईसिपब्भाराए णं भंते ! पुढवीए अलोगस्स य केवतिए अबाहाए [3]•अंतरे पण्णत्ते ?०
गोयमा ! देसूण जोयण अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

रुक्खाणं पुणब्भव-पद

१०१ एस ण भते ! सालरुक्खे उण्हाभिहए तण्हाभिहए दवग्गिजालाभिहए कालमासे काल किच्चा कहि गमिहिति[4] ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! इहेव रायगिहे नगरे सालरुक्खत्ताए पच्चायाहिती[5] । से ण तत्थ[6] अच्चिय-वदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहिय-पाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि भविस्सइ ।।

१०२ से ण भते ! तओहिंतो अणतर उव्वट्टित्ता कहि गमिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[7] सव्वदुक्खाण अत काहिति ।।

१०३. एस ण भते ! साललट्ठिया[8] उण्हाभिहया तण्हाभिहया दवग्गिजालाभिहया कालमासे काल किच्चा[9] •कहि गमिहिति ?० कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले[10] महेसरिए नगरीए सामलिरुक्खत्ताए पच्चायाहिति । से[11] ण तत्थ अच्चिय-वदिय[12]-•पूइय-सक्कारिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे० लाउल्लोइयमहिए यावि भविस्सइ ।।

१०४ से ण भते ! तओहितो अणतर उव्वट्टित्ता [13]•कहिं गमिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाण० अत काहिति ।।

---

१. ईसि० (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
२ स० पा०—पुच्छा ।
३. स० पा०—पुच्छा ।
४. गच्छिहिति (अ, क, ख, स)
५. पच्चाहिति (ता, व, म) ।
६ तत्था (क, ता, व) ।
७ भ० २।७३ ।
८. सालिलट्ठिल्लिया (ख); साललट्ठिल्लिया (ता)
९. स० पा०—किच्चा जाव कहिं ।
१० विंज्झ० (क, ख, ता, व) ।
११ सा (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
१२ स० पा०—वदिय जाव लाउल्लोइय० ।
१३ स० पा०—सेस जहा सालरुक्खस्स जाव अंत ।

१०५. एस णं भंते ! उंबरलट्ठिया[1] उण्हाभिहया तण्हाभिहया दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा[2] •कहिं गमिहिति ?• कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पाडलिपुत्ते नगरे पाडलिरुक्खत्ताए पच्चायाहिति । से णं तत्थ अच्चिय-वंदिय[3]-•पूइय-सक्कारिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि• भविस्सइ ।।

१०६. से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता[4] •कहिं गमिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाण• अंतं काहिति ।।

अम्मड-अंतेवासि-पदं

१०७ तेणं कालेणं तेणं समएणं अम्मडस्स परिव्वायगस्स सत्त अंतेवासिसया गिम्हकालसमयंसि[5] •जेट्ठामूलमासंमि गंगाए महानदीए उभओकूलेणं कंपिल्लपुराओ नगराओ पुरिमतालं नयरं संपट्ठिया विहाराए ।।

१०८. तए णं तेसिं परिव्वायगाणं तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसंतरमणुपत्ताणं से पुव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुंजमाणे झीणे ।।

१०९. तए णं ते परिव्वाया झीणोदगा समाणा तण्हाए पारब्भमाणा-पारब्भमाणा उदगदातारमपस्समाणा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसंतरमणुपत्ताणं से पुव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुंजमाणे झीणे । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए उदगदातारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए उदगदातारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेंति, करेत्ता उदगदातारमलभमाणा दोच्चं पि अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—इहण्णं देवाणुप्पिया ! उदगदातारो नत्थि तं नो खलु कप्पइ अम्हं अदिण्णं गिण्हित्तए, अदिण्णं साइज्जित्तए, तं मा णं अम्हे इयाणिं आवइकालं पि अदिण्णं गिण्हामो, अदिण्णं साइज्जामो, मा णं अम्हं तवलोवे भविस्सइ । तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! तिदंडए य कुंडियाओ य कंचणियाओ य करोडियाओ य भिसियाओ य छण्णालए य अंकुसए य केसरियाओ य पवित्तए य गणेत्तियाओ य छत्तए य वाहणाओ य धाउरत्ताओ य एगंते एडित्ता गंगं

१. उंबरि० (अ, स) ।
२. सं० पा०—किच्चा जाव कहिं ।
३. सं० पा०—वंदिय जाव भविस्सइ ।
४. सं० पा०—सेसं तं चेव जाव अंतं ।
५. सं० पा०—एवं जहा ओववाइए जाव आराहगा ।

महानइं ओगाहित्ता वालुयासथारए सथरित्ता सलेहणा-भूसियाणं भत्तपाण-पडियाइक्खियाण पाओवगयाण काल अणवकंखमाणाण विहरित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अतिए एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता तिदडए य कुडियाओ य कचणियाओ य करोडियाओ य भिसियाओ य छण्णालए य अकुसए य केसरियाओ य पवित्तए य गणेत्तियाओ य छत्तए य वाहणाओ य धाउरत्ताओ य एगते एडेति, एडेत्ता गग महानइं ओगाहेति, ओगाहेत्ता वालुयासथारए सथरति, सथरित्ता वालुयासथारयं दुरुहति, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहा सपलियकनिसण्णा करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एव वयासी—

नमोत्थु ण अरहताण जाव[1] सिद्धिगइनामधेय ठाणं सपत्ताण।

नमोत्थु ण समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव[2] सपाविउकामस्स।

नमोत्थु ण अम्मडस्स परिव्वायगस्स अम्ह धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स।

पुव्वि ण अम्हेहि अम्मडस्स परिव्वायगस्स अतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, मुसावाए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, इयाणि अम्हे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए सव्वं पाणाइवाय पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्व मुसावाय पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्व अदिण्णादाण पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्व मेहुण पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्व परिग्गह पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्व कोह माण माय लोह पेज्ज दोस कलह अब्भक्खाणं पेसुण्ण परपरिवाय अरइरइ मायामोसं मिच्छादसणसल्ल अकरणिज्जं जोग पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्व असण पाण खाइमं साइम—चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामो जावज्जीवाए।

ज पि य इमं सरीर इट्ठ कत पिय मणुण्णं मणामं पेज्जं वेसासियं समय बहुमय अणुमय भड-करडग-समाण मा ण सीय, मा ण उण्ह, मा ण खुहा, मा ण पिवासा, मा ण वाला, मा ण चोरा, मा ण दसा, मा ण मसगा, मा ण वाइय-पित्तिय-सिभिय-सन्निवाइय[1] विविहा रोगायका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एयपि णं चरिमेहि ऊसासनीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु सलेहणा-भूसिया भत्तपाण-पडियाइक्खिया पाओवगया काल अणवकखमाणा विहरति।

तए ण ते परिव्वाया बहूइ भत्ताइ अणसणाए छेदेति, छेदित्ता आलोइय-पडिक्कता समाहिपत्ता कालमासे काल किच्चा बभलोए कप्पे देवत्ताए उववण्णा। तहि तेसि गई, तहि तेसि ठिई, तहि तेसि उववाए पण्णत्ते।

---

१. ओ० सू० २१।
२. ओ० सू० २१।

१. विभक्तिरहित पदम्।

तेसि णं भंते ! देवाणं केवतियं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।
अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं इड्ढी इ वा जुई इ वा जसे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा ?
हंता अत्थि।
ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ?
हंता अत्थि ॥°

अम्मड-चरिया-पदं

११०. बहुजणे णं भंते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए [1]°आहारमाहरेइ, घरसए वसहिं उवेइ।
से कहमेयं भंते ?
एवं खलु गोयमा ! जं णं से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहिं उवेइ, सच्चे णं एसमट्ठे अहंपि णं गोयमा ! एवमाइक्खामि एवं भासामि एवं पण्णवेमि एवं परूवेमि—एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहिं उवेइ ॥

१११. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहिं उवेइ ?
गोयमा ! अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स पगइभद्दयाए पगइउवसंतयाए पगइपतणु-कोहमाणमायालोहयाए मिउमद्दवसंपण्णयाए अल्लीणयाए विणीययाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं अण्णया कयाइ तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाण-लद्धी समुप्पण्णा।
तए णं से अम्मडे परिव्वायए तीए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणल-द्धीए समुप्पण्णाए जणविम्हावणहेउं कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहिं उवेइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहिं उवेइ ॥

---

१. सं० पा०—एवं जहा ओववाइए अम्मडस्स वत्तव्वया जाव।

११२ पहू ण भंते ! अम्मडे परिव्वायए देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा ! अम्मडे णं परिव्वायए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे आसव-संवर-निज्जर-किरियाहिगरण-बंध-मोक्खकुसले असहेज्ज[1] देवासुरनाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, इणमो निग्गंथे पावयणे निस्संकिए निक्कंखिए निव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे अभिगयट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते, अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठे, सेसे अणट्ठे, चउद्दसअट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं अणुपालेमाणे, समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण पीढफलगसेज्जा-संथारएण पडिलाभेमाणे सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ° जाव[2] दढप्पइण्णो अंतं काहिति ।।

अव्वाबाहदेव-सत्ति-पद

११३. अत्थि णं भंते ! अव्वाबाहा देवा, अव्वाबाहा देवा ?
हंता अत्थि ।।

११४ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अव्वाबाहा देवा, अव्वाबाहा देवा ?
गोयमा ! पभू णं एगमेगे अव्वाबाहे देवे एगमेगस्स पुरिसस्स एगमेगंसि अच्छिपत्तंसि दिव्वं देविड्ढिं, दिव्वं देवज्जुतिं, दिव्वं देवाणुभागं, दिव्वं बत्तीसतिविहं नट्टविहिं उवदंसेत्तए, नो चेव णं तस्स पुरिसस्स किंचि आबाहं वा बाबाहं[3] वा उप्पाएइ, छविच्छेयं वा करेइ, एसुहुमं[4] च णं उवदंसेज्जा । से तेणट्ठेणं[5] °गोयमा ! एवं वुच्चइ °—अव्वाबाहा देवा, अव्वाबाहा देवा ।।

सक्कस्स सत्ति-पदं

११५ पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया पुरिसस्स सीसं सपाणिणा[6] असिणा छिंदित्ता कमंडलुंसि[7] पक्खिवित्तए ?
हंता पभू ।।

११६. से कहमिदाणिं पकरेति ?
गोयमा ! छिंदिया-छिंदिया च णं पक्खिवेज्जा, भिंदिया-भिंदिया च णं

१. विभक्तिरहित पदम् ।
२. ओ० सू० १२१-१५४ ।
३. पबाहं (क, वृ); वाबाहं (वृपा) ।
४. एस्सुमुहं (ता, व, म) ।
५. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव अव्वाबाहा ।
६. सापाणिणा (ख, ता, व) ।
७. कमडलुंमि (अ, क, म); कमंडलुंपि (ख, ब, स) ।

पक्खिवेज्जा, कोट्टिया-कोट्टिया च णं पक्खिवेज्जा, चुण्णिया-चुण्णिया च ण पक्खिवेज्जा, तओ पच्छा खिप्पामेव पडिसंघाएज्जा, नो चेव णं तस्स पुरिसस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएज्जा, छविच्छेयं पुण करेइ, एसुहुम च णं पक्खिवेज्जा ॥

जंभगदेव-पद

११७. अत्थि ण भंते ! जंभगा देवा, जंभगा देवा ?
हंता अत्थि ॥

११८. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—जभगा देवा, जभगा देवा ?
गोयमा ! जभगा णं देवा निच्च पमुदित-पक्कीलिया कदप्परतिमोहणसीला। जे णं ते देवे कुद्धे पासेज्जा, से णं पुरिसे महत अयसं पाउणेज्जा। जे णं ते देवे तुट्ठे पासेज्जा, से ण महंत जस पाउणेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—जंभगा देवा, जंभगा देवा ॥

११९. कतिविहा ण भते ! जभगा देवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, त जहा—अन्नजभगा, पाणजभगा, वत्थजंभगा, लेणजभगा, सयणजभगा, पुप्फजंभगा, फलजभगा, 'पुप्फ-फल-जभगा'[1], विज्जा-जभगा अवियत्तिजभगा[2] ॥

१२०. जंभगा ण भते ! देवा कहि वसहि उवेंति ?
गोयमा ! सव्वेसु चेव दीहवेयड्ढेसु, चित्त-विचित्त-जमगपव्वएसु, कचणपव्वएसु य, एत्थ ण जंभगा देवा वसहि उवेंति ॥

१२१. जंभगाण भते ! देवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! एग पलिओवम ठिती पण्णत्ता ॥

१२२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[3] विहरइ ॥

नवमो उद्देसो

सरूवि-सकम्मलेस्स-पदं

१२३. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा अप्पणो कम्मलेस्सं न जाणइ, न पासइ, तं पुण जीवं सरूवि[4] सकम्मलेस्सं जाणइ-पासइ ?

---

१. मतजभगा (वृपा)।
२. अहिवइजभगा (वृपा)
३. भ० १।५१।
४. सरूव (अ)।

हंता गोयमा ! अणगारे णं भावियप्पा अप्पणो[1] °कम्मलेस्स न जाणइ, न पासइ, त पुण जीव सरूवि सकम्मलेस्स जाणइ °-पासइ ॥

१२४. अत्थि ण भते ! सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेति[2] उज्जोएंति तवेति पभासेति ?
हता अत्थि ॥

१२५. कयरे ण भते ! सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेति जाव पभासेति ?
गोयमा ! जाओ इमाओ चदिम-सूरियाणं देवाणं विमाणेहितो लेस्साओ बहिया अभिनिस्सडाओ[3] पभावेति[4], एए ण गोयमा ! ते सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेति उज्जोएति तवेति पभासेति ॥

अत्ताणत्त-पोग्गल-पद

१२६ नेरइयाण भते ! कि अत्ता पोग्गला ? अणत्ता पोग्गला ?
गोयमा ! नो अत्ता पोग्गला, अणत्ता पोग्गला ॥

१२७ असुरकुमाराण भते ! कि अत्ता पोग्गला ? अणत्ता पोग्गला ?
गोयमा ! अत्ता पोग्गला, नो अणत्ता पोग्गला । एवं जाव[5] थणियकुमाराणं ॥

१२८. पुढविकाइयाण [6]°भते ! कि अत्ता पोग्गला ? अणत्ता पोग्गला ?°
गोयमा ! अत्ता वि पोग्गला, अणत्ता वि पोग्गला । एव जाव[7] मणुस्साणं । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणियाण जहा असुरकुमाराणं ॥

इट्ठाणिट्ठादि-पोग्गल-पदं

१२९. नेरइयाणं भते ! कि इट्ठा पोग्गला ? अणिट्ठा पोग्गला ?
गोयमा ! नो इट्ठा पोग्गला, अणिट्ठा पोग्गला । जहा अत्ता भणिया एवं इट्ठा वि, कता वि, पिया वि, मणुण्णा वि भाणियव्वा । एए[8] पच दंडगा ॥

देवाणं भासासहस्स-पदं

१३०. देवे ण भते ! महिड्ढिए जाव[9] महेसक्खे रूवसहस्स विउव्वित्ता पभू भासासहस्सं भासित्तए ?
हता पभू ॥

१३१. सा ण भते ! किं एगा भासा ? भासासहस्सं ?
गोयमा ! एगा णं सा भासा, नो खलु तं भासासहस्सं ॥

---

१. स० पा०—अप्पणो जाव पासइ ।
२. तोभासति (क, म) ।
३. अभिनिस्सडाओ (क); अभिनिस्सदाओ (ता)
४. पयावेति (ता), पभावेति एव (म, स) ।
५. पू० प० २ ।
६. स० पा०—पुच्छा ।
७. पू० प० २ ।
८. एव (अ, क, व, म, स) ।
९. भ० १।३३९ ।

सूरिय-पदं

१३२. तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे अचिरुग्गयं बालसूरियं जासुमणाकुसुम-पुंजप्पकासं लोहितगं पासइ, पासित्ता जायसड्ढे जाव[1] समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ[2], °उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे णातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे पज्जुवासमाणे° एवं वयासी—किमिदं भंते ! सूरिए ? किमिदं भंते ! सूरियस्स अट्ठे ?

गोयमा ! सुभे सूरिए, सुभे सूरियस्स अट्ठे ॥

१३३. किमिदं भंते ! सूरिए ? किमिदं भंते ! सूरियस्स पभा ?

[3]°गोयमा ! सुभे सूरिए, सुभा सूरियस्स पभा ॥

१३४. किमिदं भंते सूरिए ? किमिदं भंते ! सूरियस्स छाया ?

गोयमा ! सुभे सूरिए, सुभा सूरियस्स छाया ॥

१३५. किमिदं भंते ! सूरिए ? किमिदं भंते ! सूरियस्स लेस्सा ?

गोयमा ! सुभे सूरिए, सुभा सूरियस्स लेस्सा° ॥

समणाणं तेयलेस्सा-पदं

१३६. जे इमे भंते ! अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति, ते[4] णं कस्स तेयलेस्सं वीईवयंति ?

गोयमा ! मासपरियाए समणे निग्गंथे वाणमंतराणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ। दुमासपरियाए समणे निग्गंथे असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ।

एवं एएणं[5] अभिलावेणं—तिमासपरियाए समणे निग्गंथे असुरकुमाराणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ।

चउम्मासपरियाए समणे निग्गंथे गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं जोतिसियाणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ।

पंचमासपरियाए समणे निग्गंथे चंदिम-सूरियाणं जोतिसिंदाणं जोतिसराईणं तेयलेस्सं वीईवयइ।

छम्मासपरियाए[6] समणे निग्गंथे सोहम्मीसाणाणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ।

---

१. भ० १।१० ।
२. सं० पा०—उवागच्छइ जाव नमंसित्ता जाव एवं ।
३. सं० पा०—एवं चेव एवं छाया एवं लेस्सा ।
४. एते (क, ता, व, म, स), तए (ख) ।
५. तेतेण (व) ।
६. छमास° (स) ।

सत्तमासपरियाए समणे निग्गथे सणकुमार-माहिंदाणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ।
अट्ठमासपरियाए समणे निग्गथे बभलोग-लंतगाण देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ।
नवमासपरियाए समणे निग्गथे महासुक्क-सहस्साराण देवाण तेयलेस्सं वीईवयइ।
दसमासपरियाए समणे निग्गंथे आणय-पाणय-आरणच्चुयाणं देवाणं तेयलेस्स वीईवयइ।
एक्कारसमासपरियाए समणे निग्गथे गेवेज्जगाण देवाण तेयलेस्सं वीईवयइ।
बारसमासपरियाए समणे निग्गथे अणुत्तरोववाइयाण देवाणं तेयलेस्स वीईवयइ।
तेण परं सुक्के सुक्काभिजाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झति[1] •बुज्झति मुच्चति परिनिव्वायति सव्वदुक्खाण° अंत करेति॥

१३७. सेव भंते ! सेव भते ! त्ति जाव[2] विहरइ॥

दसमो उद्देसो

केवलि-पदं

१३८. केवली ण भंते ! छउमत्थं[3] जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ॥

१३९. जहा ण भंते ! केवली छउमत्थं जाणइ-पासइ, तहा ण सिद्धे वि छउमत्थं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ॥

१४०. केवली ण भंते ! आहोहियं[4] जाणइ-पासइ ? एवं चेव। एवं परमाहोहियं[5], एवं केवलिं, एव सिद्धं जाव—

१४१ जहा ण भंते ! केवली सिद्धं जाणइ-पासइ, तहा ण सिद्धे वि सिद्धं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ॥

---

१. स० पा०—सिज्झति जाव अंत।
२ भ० १।५१।
३. छदुमत्थ (ता); छतुमत्थ (ब)।
४. आधोधिय (अ, स), आवोधीयं (क); आहोधिय (ख); अधोविय (ता); आधोविय (ब), आधोहिय (म)।
५. परमावधिय (अ), परमावोहियं (क); परमोविय (ख); परमहोहियं (ता); परमाधोविय (ब); परमाधोहियं (म, स)।

१४२. केवली णं भंते ! भासेज्ज वा ? वागरेज्जा वा ?
हंता भासेज्ज वा, वागरेज्ज वा ॥

१४३. जहा णं भंते ! केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा, तहा णं सिद्धे वि भासेज्ज वा वागरेज्ज वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१४४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहा णं केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा नो तहा णं सिद्धे भासेज्ज वा वागरेज्ज वा ?
गोयमा ! केवली णं सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे, सिद्धे णं अणुट्ठाणे[1] •अकम्मे अबले अवीरिए° अपुरिसक्कारपरक्कमे। से तेणट्ठेणं[2] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जहा णं केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा नो तहा णं सिद्धे भासेज्ज वा° वागरेज्ज वा ॥

१४५. केवली णं भंते ! उम्मिसेज्ज वा ? निम्मिसेज्ज वा ?
हंता उम्मिसेज्ज वा, निम्मिसेज्ज वा ॥

१४६. जहा णं भंते ! केवली उम्मिसेज्ज वा, निम्मिसेज्ज वा, तहा णं सिद्धे वि उम्मिसेज्ज वा निम्मिसेज्ज वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे। एवं चेव[3]। एवं आउंटेज्ज[4] वा पसारेज्ज वा, एवं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएज्जा ॥

१४७. केवली णं भंते ! इमं रयणप्पभं पुढविं रयणप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ॥

१४८. जहा णं भंते ! केवली इमं रयणप्पभं पुढविं रयणप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ, तहा णं सिद्धे वि इमं रयणप्पभं पुढविं रयणप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ॥

१४९. केवली णं भंते ! सक्करप्पभं पुढविं सक्करप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ ? एवं चेव। एवं जाव अहेसत्तमं ॥

१५०. केवली णं भंते ! सोहम्मं कप्पं सोहम्मकप्पे त्ति जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ। एवं चेव। एवं ईसाणं, एवं जाव अच्चुयं ॥

१५१. केवली णं भंते ! गेवेज्जविमाणं गेवेज्जविमाणे त्ति जाणइ-पासइ ? एवं चेव। एवं अणुत्तरविमाणे वि ॥

१५२. केवली णं भंते ईसिपब्भारं पुढविं ईसिपब्भारपुढवीति जाणइ-पासइ ? एवं चेव ॥

---

१. स० पा०—अणुट्ठाणे जाव अपुरिसक्कार°।
२. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव वागरेज्ज।
३. भ० १४।१४४।
४. आउट्टेज्ज (अ, स); आउट्टावेज्ज (क म); आउंट्टावेज्ज (ख, ता); आउंटावेज्ज (ब)।

१५३. केवली णं भंते ! परमाणुपोग्गलं परमाणुपोग्गले त्ति जाणइ-पासइ ? एवं चेव । एवं दुपएसियं खंधं, एवं जाव—

१५४. जहा णं भंते ! केवली अणंतपएसियं खंधं अणंतपएसिए खंधे त्ति जाणइ-पासइ, तहा णं सिद्धे वि अणंतपएसियं[1] °खंधं अणंतपएसिए खंधे त्ति जाणइ°-पासइ ? हंता जाणइ-पासइ ॥

१५५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

---

१. पा०—अणंतपएसियं जाव पासइ ।

२. १।५१ ।



पन्नरसमं सतं

नमो सुयदेवयाए भगवईए[1]

गोसालग-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नगरी होत्था—वण्णओ[2]। तीसे णं सावत्थीए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे[3] दिसीभाए, तत्थ णं कोट्ठए नामं चेइए होत्था—वण्णओ[4]। तत्थ ण सावत्थीए नगरीए हालाहला[5] नामं कुंभकारी आजीविओवासिया परिवसति—अड्ढा जाव[6] बहुजणस्स अपरिभूया, आजीवियसमयंसि लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ता, अयमाउसो! आजीवियसमये अट्ठे, अय परमट्ठे, सेसे अणट्ठे त्ति आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ॥

२. तेणं कालेणं तेणं समएण गोसाले मंखलिपुत्ते चउव्वीसवासपरियाए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे आजीवियसमएण अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

३ तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अण्णदा कदायि इमे छ दिसाचरा[7] अंतियं पाउब्भवित्था, तं जहा—साणे, कलंदे[8], कण्णियारे, अच्छिदे, अग्गिवेसायणे, अज्जुणे गोमायुपुत्ते[9]॥

४. तए ण ते छ दिसाचरा अट्ठविहं[10] पुव्वगयं मग्गदसमं 'सएहिं-सएहिं'[11] मतिदंसणेहिं निज्जूहंति[12], निज्जूहित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं उवट्ठाइंसु॥

---

१. एतद् वृत्तौ व्याख्यातं नास्ति।
२. ओ० सू० १।
३. ०पुरच्छिमे (स)।
४. ओ० सू० २-१३।
५. हालाहाला (ता, स)।
६. भ० २।९४।
७. दिक्चरा भगवच्छिष्याः पार्श्वस्थीभूता इति टीकाकारः 'पासावच्चिज्ज' त्ति चूर्णिकारः (वृ)।
८. कणंदे (क, ता, म)।
९. गोतमपुत्ते (क, ब, म)।
१०. निमित्तमिति शेषः (वृ)।
११. सतेहिं २ (अ, क, ब, म, स)।
१२. निजूहंति (ता, स); निज्जु ति (ब, म)।

५. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं इमाइं छ अणइक्कमणिज्जाइं वागरणाइं वागरेति, तं जहा—

लाभं अलाभं सुहं दुक्खं, जीवियं मरणं तहा ॥

६. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेण सावत्थीए नगरीए अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी, असव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, अजिणे जिणसद्दं पगासेमाणे[1] विहरइ ॥

७. तए णं सावत्थीए नगरीए सिंघाडग-[2]°तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ[3], °एवं भासइ, एवं पण्णवेइ°, एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी[4], °अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे जिणसद्दं° पगासेमाणे विहरइ। से कहमेयं मन्ने एवं ?

८. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव[5] परिसा पडिगया ॥

९. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती नामं अणगारे गोयमे गोत्तेणं[6] °सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसभ-नारायसंघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउलतेयलेस्से° छट्ठंछट्ठेणं [7]°अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

१०. तए णं भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणाइं पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे छट्ठक्खमणपारणगंसि सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घर-समुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए।

---

१. पभासेमाणे (त, ता)।
२. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।
३. सं० पा०—एवमाइक्खइ जाव एवं।
४. सं० पा०—जिणप्पलावी जाव पगासेमाणे।
५. भ० १।७,८।
६. सं० पा०—गोत्तेणं जाव छट्ठंछट्ठेणं।
७. सं० पा०—एवं जहा बितियसए नियंठुद्देसए जाव अडमाणे।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

११. तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता अतुरियमचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव सावत्थी नगरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडइ ॥

१२. तए णं भगवं गोयमे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए॰ अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ, बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव[1] जिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ । से कहमेयं मन्ने एवं ?

१३. तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जायसड्ढे[2] ॰जाव[3] समुप्पन्नकोउहल्ले अहापज्जत्तं समुदाणं गेण्हइ, गेण्हित्ता सावत्थीओ नगरीओ पडिनिक्खमइ, अतुरियमचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलि-यडे॰ पज्जुवासमाणे एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते ! [4] ॰छट्ठक्खमणपारणगंसि तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खयरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेमि, बहुजणो अण्ण-मण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणु-प्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणे॰ जिणसद्दं पगासे-माणे विहरइ । से कहमेयं भंते ! एवं ? तं इच्छामि णं भंते ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स उट्ठाणपारियाणियं[5] परिकहियं ॥

१४. गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—जण्णं गोयमा ! से बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ । तण्णं मिच्छा । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—

---

१. भ० १५।६ ।

२. सं० पा०—जायसड्ढे जाव भत्तपाणं पडिदंसेइ जाव पज्जुवासमाणे ।

३. भ० १।१० ।

४. सं० पा०—छट्ठं तं चेव जाव जिणसद्दं ।

५. ॰परियाणिणं (अ,व,स); ॰पारियाणं (ता) ।

एव खलु एयस्स गोसालस्स मंखलीपुत्तस्स मखली नाम मखे पिता होत्था। तस्स ण मखलिस्स मंखस्स भद्दा नाम भारिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव[1] पडिरूवा। तए णं सा भद्दा भारिया अण्णदा कदायि गुव्विणी यावि होत्था॥

१५. तेण कालेण तेणं समएणं सरवणे नामं सण्णिवेसे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे जाव[2] नदणवण-सन्निभप्पगासे, पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे। तत्थ णं सरवणे सण्णिवेसे गोवहुले नाम माहणे परिवसइ—अड्ढे जाव[3] वहुजणस्स अपरिभूए, रिउव्वेद जाव[4] वंभण्णएसु परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था। तस्स ण गोवहुलस्स माहणस्स गोसाला यावि होत्था॥

१६ तए णं से मखली मंखे अण्णया कदायि भद्दाए भारियाए गुव्विणीए सद्धि चित्त-फलगहत्थगए मखत्तणेण अप्पाण भावेमाणे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सरवणे सण्णिवेसे जेणेव गोवहुलस्स माहणस्स गोसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोवहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेससि भडनि-क्खेव करेइ, करेत्ता सरवणे सण्णिवेसे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसहीए सव्वओ समता मग्गण-गवेसणं करेइ, वसहीए सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेमाणे अण्णत्थ वसहि अलभमाणे तस्सेव गोवहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेससि वासावास उवागए॥

१७. तए ण सा भद्दा भारिया नवण्ह मासाण वहुपडिपुण्णाण अद्धट्ठमाण य राइदियाण वीतिक्कताण सुकुमालपाणिपायं जाव[5] पडिरूवग दारग पयाया॥

१८. तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीतिक्कते[6] •निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे सपत्ते• 'वारसमे दिवसे'[7] अयमेयारूवं गोण्ण गुणनिप्फन्नं नामधेज्ज करेंति—जम्हा ण अम्ह इमे दारए गोवहुलस्स माहणस्स गोसालाए जाए त होउ ण अम्ह इमस्स दारगस्स नामधेज्ज गोसाले-गोसाले त्ति। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापितरो नामधेज्ज करेंति गोसाले त्ति॥

१९ तए ण से गोसाले दारए उम्मुक्कवालभावे विण्णय[8]-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सयमेव पाडिएक्क[9] चित्तफलग करेइ, करेत्ता चित्तफलगहत्थगए मखत्तणेणं अप्पाण भावेमाणे विहरइ॥

---

१ ओ० सू० १५।
२. ओ० सू० १।
३. भ० २।९४।
४. भ० २।२४।
५. भ० ११।१३४।
६. स० पा०—वीतिक्कते जाव वारसमे।
७. वारसाहदिवसे (अ, क, ख, ता, व); वारसहे दिवसे (म); वारसाहे दिवसे (स); द्रष्टव्यम्—भ० ११।१५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
८. विण्णाय (अ, स)।
९. पडिएक्कं (क, ता, व)।

भगवओ विहार-पदं

२०. तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! तीसं वासाइं अगारवासमज्झावसित्ता[1] अम्मा-पिईहिं देवत्तगएहिं[2] समत्तपइण्णे एवं जहा भावणाए जाव[3] एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए[4] ॥

२१. तए णं अहं गोयमा ! पढमं वासं अद्धमासं अद्धमासेणं खममाणे अट्ठियगामं निस्साए पढमं अंतरवासं[5] वासावासं उवागए[6]। दोच्चं वासं मासं मासेणं खममाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे, जेणेव नालंदा बाहिरिया, जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हामि, ओगिण्हित्ता तंतुवायसालाए एगदेसंसि[7] वासावासं उवागए ॥

पढम-मासखमण-पदं

२२. तए णं अहं गोयमा ! पढमं मासखमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥

२३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं[8] दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे, जेणेव नालंदा बाहिरिया, जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तंतुवायसालाए एगदेसंसि भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय[9]-°मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसहीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, वसहीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणे° अण्णत्थ कत्थ वि वसहिं अलभमाणे तीसे य तंतुवायसालाए एगदेसंसि वासावासं उवागए, जत्थेव णं अहं गोयमा !

२४. तए णं अहं गोयमा ! पढम-मासक्खमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं[10] बाहिरियं मज्झंमज्झेणं[11] निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे

---

१. आगारवासमज्झे वसित्ता (अ, ख, ब, म, स), अगारवासमज्झे वसित्ता (क), अगारवासे वसित्ता (ता); अगारवास—गृहवासमध्युष्य इति वृत्तिगतव्याख्यानुसारेण प्रस्तुतपाठः स्वीकृतः ।
२. देवत्तिगएहिं (क, ख, ता म); देवत्तेगतेहिं (ब, स) ।
३. आयारचूला १५।२६-२९ ।
४. पव्वइत्तए (ता, स) ।
५. अंतरावासं (क, म, वृपा) ।
६. उवगए (ता) ।
७. एगदेसंमि (ब) ।
८. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
९. सं० पा०—नीय जाव अण्णत्थ ।
१०. नालंदा (अ) ।
११. मज्झेणं २ (क, ख, ता, ब, म) ।

उच्च-नीय[1]-•मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे विजयस्स गाहावइस्स गिहं अणुपविट्ठे ॥

२५. तए णं से विजए गाहावई ममं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ[2]•चित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए° खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता अंजलिमउलियहत्थे ममं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ॥

२६. तए णं तस्स विजयस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, संसारे परित्तीकए, गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुंदुभीओ, अंतरा वि य णं आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

२७. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग[3]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ[4] •एवं भासइ एवं पण्णवेइ° एवं परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया! विजये गाहावई, कयत्थे णं देवाणुप्पिया! विजये गाहावई, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया! विजये गाहावई, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया! विजये गाहावई, कया णं लोया देवाणुप्पिया! विजयस्स गाहावइस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया! माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स, जस्स णं गिहंसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया णं लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स, विजयस्स गाहावइस्स ॥

२८. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव विजयस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासइ विजयस्स गाहावइस्स गिहंसि वसुहारं वुट्ठं, दसद्धवण्णं कुसुमं निवडियं, ममं च णं विजयस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनिक्खममाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं

---

१. सं० पा०—नीय जाव अडमाणे।
२. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ।
३. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।
४. सं० पा०—एवमाइक्खइ जाव एवं।

तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमं-सित्ता ममं एवं वयासी—तुब्भे णं भंते ! मम धम्मायरिया, अहण्ण तुब्भ धम्मंतेवासी ॥

२९. तए णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढामि, नो परि-जाणामि, तुसिणीए संचिट्ठामि ॥

दोच्च-मासखमण-पदं

३०. तए णं अहं गोयमा ! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव तंतुवायसाला[1], तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता दोच्चं मासखमणं[2] उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥

३१. तए णं अहं गोयमा ! दोच्च[3]-मासखमणपारणगंसि[4] तंतुवायसालाओ पडिनि-क्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्ग-च्छित्ता जेणेव रायगिहे नगरे[5] •तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे आणंदस्स गाहावइस्स गिहं अणुप्पविट्ठे ॥

३२. तए णं से आणंदे गाहावई ममं एज्जमाणं पासइ, [6]•पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए खिप्पामेव आस-णाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता अंजलिमउलियहत्थे ममं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं विउलाए खज्जगविहीए पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ॥

३३. तए णं तस्स आणंदस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, संसारे परित्तीकए, गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुंदुभीओ, अंतरा वि य णं आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

३४. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु

---

१. तंतवाय° (ता) सर्वत्र।
२. मासखवणं (ता)।
३. दोच्चं (अ, क, ब, म, स)।
४. मासक्खमणंसि (ता, ब, म, स)।
५. सं० पा०—नगरे जाव अडमाणे।
६. सं० पा०—एवं जहेव विजयस्स नवरं मम विउलाए खज्जगविहीए पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे सेसं तं चेव जाव तच्चं।

बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—धन्ने ण देवाणुप्पिया! आणंदे गाहावई, कयत्थे ण देवाणुप्पिया! आणंदे गाहावई, कयपुण्णे ण देवाणुप्पिया! आणंदे गाहावई, कयलक्खणे ण देवाणुप्पिया! आणंदे गाहावई, कया ण लोया देवाणुप्पिया! आणंदस्स गाहावइस्स, सुलद्धे ण देवाणुप्पिया! माणुस्सए जम्मजीवियफले आणंदस्स गाहावइस्स, जस्स णं गिहंसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया ण लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले आणंदस्स गाहावइस्स, आणंदस्स गाहावइस्स ॥

३५ तए ण से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव आणंदस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासइ आणंदस्स गाहावइस्स गिहंसि वसुहारं वुट्ठं, दसद्धवण्णं कुसुमं निवडियं, ममं च ण आणंदस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनिक्खममाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं एवं वयासी—तुब्भे ण भंते! ममं धम्मायरिया, अहण्णं तुब्भं धम्मंतेवासी ॥

३६ तए ण अहं गोयमा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढामि, नो परिजाणामि, तुसिणीए संचिट्ठामि ॥

तच्च-मासखमण-पदं

३७. तए ण अहं गोयमा! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता° तच्चं मासखमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥

३८. तए ण अहं गोयमा! तच्च[1]-मासखमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता [2]°नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे सुणंदस्स गाहावइस्स गिहं अणुपविट्ठे ॥

३९ तए ण से सुणंदे गाहावई [3]°ममं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए

१. तच्च (क, ख, ब)।
२. सं० पा०—तहेव जाव अडमाणे।
३ सं० पा० —एवं जहेव विजयगाहावई नवरं सव्वकामगुणिएणं भोयणेणं पडिलाभेइ सेसं तं चेव जाव चउत्थं।

णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंग करेइ, करेत्ता अंजलिमउलियहत्थे मम सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता मम विउलेण सव्वकामगुणिएण भोयणेण पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ॥

४०. तए णं तस्स सुणंदस्स गाहावइस्स तेण दव्वसुद्धेण दायगसुद्धेण पडिगाहगसुद्धेण तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेण मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, ससारे परित्तीकए, गिहंसि य से इमाइ पच दिव्वाइ पाउब्भूयाइ, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुदुभीओ, अतरा वि य ण आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

४१. तए णं रायगिहे नगरे सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एव पण्णवेइ एव परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया ! सुणदे गाहावई, कयत्थे ण देवाणुप्पिया ! सुणदे गाहावई, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुणदे गाहावई, कयलक्खणे ण देवाणुप्पिया ! सुणदे गाहावई, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! सुणंदस्स गाहावइस्स, सुलद्धे ण देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले सुणदस्स गाहावइस्स, जस्स ण गिहसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइ पच दिव्वाइ पाउब्भूयाइं, त जहा—वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, त धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया ण लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्म-जीवियफले सुणंदस्स गाहावइस्स, सुणदस्स गाहावइस्स ॥

४२. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म समुप्पन्नससए समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव सुणदस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासइ सुणदस्स गाहावइस्स गिहसि वसुहार वुट्ठ, दसद्धवण्ण कुसुम निवडिय, मम च ण सुणदस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनिक्खममाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे जेणेव मम अतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता मम वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता मम एव वयासी—तुब्भे ण भते ! मम धम्मायरिया, अहण्ण तुब्भ धम्मतेवासी ॥

४३ तए णं अह गोयमा ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढामि, नो परिजाणामि, तुसिणीए सचिट्ठामि ॥

चउत्थ-मासखमण-पद

४४. तए णं अह गोयमा ! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता

नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता॰ चउत्थं मासखमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥

४५. तीसे णं नालंदाए बाहिरियाए अदूरसामंते, एत्थ णं कोल्लाए नामं सण्णिवेसे होत्था—सण्णिवेसवण्णओ[1]। तत्थ णं कोल्लाए सण्णिवेसे बहुले नामं माहणे परिवसइ—अड्ढे जाव[2] बहुजणस्स अपरिभूए, रिउव्वेय जाव[3] बंभण्णएसु परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था ॥

४६. तए णं से बहुले माहणे कत्तियचाउम्मासियपाडिवगंसि विउलेणं महुघयसंजुत्तेणं परमण्णेणं माहणे आयामेत्था ॥

४७. तए णं अहं गोयमा! चउत्थ-मासखमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता कोल्लाए सण्णिवेसे उच्च-नीय[4]-॰मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए॰ अडमाणे बहुलस्स माहणस्स गिहं अणुप्पविट्ठे ॥

४८. तए णं से बहुले माहणे ममं एज्जमाणं[5]॰पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता अंजलिमउलियहत्थे ममं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं विउलेणं महुघयसंजुत्तेणं परमण्णेणं पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ॥

४९. तए णं तस्स बहुलस्स माहणस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, संसारे परित्तीकए, गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुंदुभीओ, अंतरा वि य णं आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

५०. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु

---

१. भ० १५।१५।

२. भ० २।९४।

३. भ० २।२४।

४. सं० पा०—नीय जाव अडमाणे।

५. सं० पा०—तहेव जाव ममं विउलेणं महुघयसंजुत्तेणं परमण्णेणं पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे सेसं जहा विजयस्स जाव बहुले माहणे २।

बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयत्थे ण देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कया ण लोया देवाणुप्पिया ! बहुलस्स माहणस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले बहुलस्स माहणस्स, जस्स ण गिहंसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पच दिव्वाइं पाउब्भूयाइ, त जहा—वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया ण लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले बहुलस्स माहणस्स, बहुलस्स माहणस्स° ॥

५१. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम ततुवायसालाए अपासमाणे रायगिहे नगरे सब्भितरबाहिरियाए मम सव्वओ समता मग्गण-गवेसणं करेइ, मम कत्थवि[1] सुतिं वा खुतिं वा पवत्तिं वा अलभमाणे जेणेव ततुवायसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता साडियाओ य पाडियाओ[2] य कुडियाओ य वाहणाओ[3] य चित्तफलगं च माहणे आयामेइ, आयामेत्ता सउत्तरोट्ठ भडं[4] कारेइ, कारेत्ता ततुवायसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता नालदं बाहिरिय मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छइ ॥

५२. तए णं तस्स कोल्लागस्स सण्णिवेसस्स बहिया बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—धन्ने ण देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, [5]°कयत्थे ण देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयपुण्णे ण देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयलक्खणे ण देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कया ण लोया देवाणुप्पिया ! बहुलस्स माहणस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्म°जीवियफले बहुलस्स माहणस्स, बहुलस्स माहणस्स ॥

गोसालस्स सिस्सरूवेण अंगीकरण-पदं

५३. तए ण तस्स गोसालस्स मखलिपुत्तस्स बहुजणस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए[6] °चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—जारिसिया ण मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स इड्ढी जुती[7] जसे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, नो खलु अत्थि तारिसिया अण्णस्स कस्सइ तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढी जुती[8] °जसे बले वीरिए पुरिसक्कार°-परक्कमे लद्धे पत्ते

---

१. कत्थति (अ, क, ख, ब, म), कत्थइ (ता) ।
२. × (ता); भंडियाओ (वृपा) ।
३. पाहणाओ (क, ख, ता, ब, म) ।
४. मुंड (अ, ता) ।
५. स० पा०—त चेव जाव जीवियफले ।
६. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
७. जुत्ती (क, ब, म) ।
८. स० पा०—जती जाव परक्कमे ।

अभिसमण्णागए, तं निस्सदिद्धं[1] ण एत्थ[2] मम धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगव महावीरे भविस्सतीति कट्टु कोल्लाए सण्णिवेसे सब्भितरवाहिरिए[3] ममं सव्वओ समंता मग्गण-गवेसण करेइ, मम सव्वओ[4] °समंता मग्गण-गवेसणं° करेमाणे 'कोल्लागस्स सण्णिवेसस्स'[5] वहिया पणियभूमीए मए सद्धि अभिसमण्णागए ।।

५४. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते हट्ठतुट्ठे ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण[6] °करेइ, करेत्ता मम वदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमसित्ता एवं वयासी—तुब्भे णं भते ! मम धम्मायरिया, अहण्ण तुब्भ अतेवासी ।।

५५ तए ण अह गोयमा ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स एयमट्ठ पडिसुणेमि ।।

५६ तए ण अहं गोयमा ! गोसालेण मंखलिपुत्तेण सद्धि पणियभूमीए छव्वासाइं लाभ अलाभ सुह दुक्खं सक्कारमसक्कार पच्चणुब्भवमाणे अणिच्चजागरियं[7] विहरित्था ।।

तिलथंभय-पद

५७ तए ण अह गोयमा ! अण्णया कदायि पढमसरदकालसमयंसि अप्पवुट्ठिकायंसि गोसालेण मखलिपुत्तेण सद्धि सिद्धत्थगामाओ नगराओ कुम्मगामं नगर संपट्ठिए विहाराए। तस्स ण सिद्धत्थगामस्स नगरस्स कुम्मगामस्स नगरस्स य अंतरा, एत्थ ण महं एगे तिलथभए पत्तिए पुप्फिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ।।

५८ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते त तिलथभग पासइ, पासित्ता ममं वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एस णं भते ! तिलथभए किं निप्फज्जिस्सइ नो निप्फज्जिस्सइ ? एए य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

तए ण अह गोयमा ! गोसाल मखलिपुत्त एवं वयासी—गोसाला ! एस णं तिलथभए निप्फज्जिस्सइ, नो न निप्फज्जिस्सइ। एते य सत्ततिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथभगस्स एगाए तिलसंगलियाए[8] सत्त तिला पच्चायाइस्सति ।।

५९ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम एव आइक्खमाणस्स एयमट्ठ नो सद्दहइ, नो पत्तियइ, नो रोएइ, एयमट्ठ असद्दहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे, मम पणिहाए[9]

---

१. निस्सदिद्ध (ख, म), निस्सदिद्धे (स)।
२ एत्थ (अ, ता, व, म)।
३ सब्भंतर° (अ, ख)।
४. सं० पा०—सव्वओ जाव करेमाणे।
५. कोल्लागसण्णिवेसस्स (अ, स)।
६. सं० पा०—पयाहिणं जाव नमसित्ता।
७. कुर्वन्निति वाक्यशेष. (वृ)।
८ °सुग° (ता)।
९. पणिहाय (ता)।

'अयं णं मिच्छावादी भवउ' त्ति कट्टु मम अंतियाओ सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त तिलथंभगं सलेट्ठुयाय चेव उप्पाडेइ, उप्पाडेत्ता एगंते एडेइ। तक्खणमेत्त च णं गोयमा! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूए। तए ण से दिव्वे अब्भवद्दलए खिप्पामेव पतणतणाति[1], खिप्पामेव पविज्जुयाति, खिप्पामेव नच्चोदगं णातिमट्टिय पविरलपफुसिय[2] रयरेणुविणासण दिव्व सलिलोदगं वास वासति, जेण से तिलथभए आसत्थे पच्चायाते बद्धमूले, तत्थेव पतिट्ठिए। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तस्सेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाता॥

वेसियायण-बालतवस्सि-पदं

६०. तए ण अहं गोयमा! गोसालेण मखलिपुत्तेण सद्धि जेणेव कुम्मग्गामे नगरे तेणेव उवागच्छामि। तए ण तस्स कुम्मग्गामस्स नगरस्स बहिया वेसियायणे नाम बालतवस्सी छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरइ। आइच्चतेयतवियाओ य से छप्पदीओ सव्वओ समता अभिनिस्सवति, पाण-भूय-जीव-सत्त-दयट्ठयाए च ण पडियाओ-पडियाओ 'तत्थेव-तत्थेव'[3] भुज्जो-भुज्जो पच्चोरुभेइ॥

६१. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते वेसियायण बालतवस्सि पासइ, पासित्ता मम अंतियाओ सणिय-सणिय पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेसियायण बालतवस्सि एव वयासी—कि भव मुणी? मुणिए? उदाहु जूयासेज्जायरए?

६२. तए ण से वेसियायणे बालतवस्सी गोसालस्स मखलिपुत्तस्स एयमट्ठ नो आढाति, नो परियाणति, तुसिणीए सचिट्ठइ॥

६३. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते वेसियायण बालतवस्सि दोच्च पि तच्च पि एव वयासी—कि भव मुणी? मुणिए? 'उदाहु जूयासेज्जायरए?'[4]

६४. तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी गोसालेण मखलिपुत्तेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते[5] •रुट्ठे कुविए चडिक्किए॰ मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता तेयासमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता गोसालस्स मखलिपुत्तस्स वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरइ॥

---

१. ॰तणाए (अ, ख), ॰तणाएति (स)।
२. ॰पप्फुसिय (अ, ब)।
३. तत्थेवा २ (क, ता, ब, म)।
४. जाव सेज्जायरए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)
५. स॰ पा॰—आसुरुत्ते जाव मिसि॰।

६५. तए णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स अणुकंपणट्ठयाए वेसियायणस्स वालतवस्सिस्स उसिणतेयपडिसाहरणट्ठयाए[1] एत्थ ण अंतरा सीयलिय तेयलेस्स निसिरामि, जाए सा मम सीयलियाए तेयलेस्साए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणा[2] तेयलेस्सा पडिहया ।।

६६ तए ण से वेसियायणे बालतवस्सी मम सीयलियाए तेयलेस्साए साउसिणं[3] तेयलेस्स पडिहय जाणित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा अकीरमाण पासित्ता साउसिणं तेयलेस्सं पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता मम एवं वयासी—से गतमेय भगव ! गत-गतमेय भगव !

६७. तए ण गोसाले मखलिपुत्ते मम एवं वयासी—कि ण भते ! एस[4] जूयासिज्जायरए तुब्भे एव वयासी—से गतमेय भगव ! गत-गतमेय भगव ?

६८. तए ण अहं गोयमा ! गोसाल मखलिपुत्त एव वयासी—तुम णं गोसाला ! वेसियायण बालतवस्सि पाससि, पासित्ता मम अतियाओ सणियं-सणियं पच्चोसक्कसि, जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता वेसियायण बालतवस्सि एव वयासी—कि भव मुणी ? मुणिए ? उदाहु जूयासेज्जायरए ? तए ण से वेसियायणे बालतवस्सी तव एयमट्ठं नो आढाति, नो परिजाणति, तुसिणीए सचिट्ठइ । तए णं तुमं गोसाला ! वेसियायणं बालतवस्सि दोच्च पि तच्च पि एव वयासी—कि भवं मुणी ? मुणिए ? 'उदाहु जूयासेज्जायरए ?'[5] तए ण से वेसियायणे बालतवस्सी तुम दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव पच्चोसक्कति, पच्चोसक्कित्ता तव वहाए सरीरगसि तेयलेस्स निस्सिरइ । तए ण अहं गोसाला ! तव अणुकपणट्ठयाए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणतेयपडिसाहरणट्ठयाए[6] एत्थ णं अतरा सीयलिय तेयलेस्स निसिरामि[7], जाए सा ममं सीयलियाए तेयलेस्साए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणा तेयलेस्सा पडिहया । तए ण से वेसियायणे बालतवस्सी मम सीयलियाए तेयलेस्साए साउसिण तेयलेस्सं॰ पडिहय जाणित्ता तव य सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेद वा अकीरमाण

---

१. तेयपडि॰ (क, म), सा तेय॰ (ख, व, स), साउसिणतेय॰ (ता), अत्र अनेके पाठभेदा दृश्यन्ते । शीतलतेजोलेश्यासन्दर्भे 'उसिण' पदमावश्यकमस्ति । ६८ सूत्रे अस्यैव प्रसङ्गस्य पुनरुक्तौ 'ता' प्रतौ 'उसिणतेय' इति पाठो दृश्यते । तेनापि 'उसिण' पदस्य पुष्टिर्जायते ।

२. उसुणा (क, ख, ता, व), साउसिणा (स) ।

३ त उसिण (अ, ता), सीओसिए (स) ।

४. एसे (ख, ता, व) ।

५ जाव सेज्जायरए (अ, क, ख, ता, ब, स) ।

६. सायतेय॰ (अ, ख, व), तेय॰ (क, म), सीओसिणतेय॰ (स) ।

७. स॰ पा॰—निसिरामि जाव पडिहय ।

पासित्ता साउसिणं तेयलेस्स पडिसाहरति, पडिसाहरित्ता ममं एवं वयासी—से गतमेय भगव ! गत-गतमेयं भगव !

६६. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम अतियाओ एयमट्ठ सोच्चा निसम्म भीए[1] •तत्थे तसिए उव्विग्गे° संजायभए ममं वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कहण्ण भते ! संखित्तविउलतेयलेस्से भवति ?

७० तए णं अह गोयमा ! गोसाल मखलिपुत्त एवं वयासी—जेणं गोसाला ! एगाए सणहाए कुम्मासपिडियाए एगेण य वियडासएणं छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उड्ढ वाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[2] •सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे° विहरइ। से ण अतो छण्ह मासाण सखित्तविउलतेयलेस्से भवइ ॥

७१. तए णं से गोसाले मखलिपुत्ते मम एयमट्ठ सम्म विणएण पडिसुणेति ॥

तिलथंभय-निप्फत्तीए गोसालस्स अवक्कमण-पदं

७२. तए ण अह गोयमा ! अण्णदा कदायि गोसालेणं मखलिपुत्तेण सद्धि कुम्मगामाओ नगराओ सिद्धत्थगाम नगर सपट्ठिए[3] विहाराए। जाहे य मो तं देस हव्वमागया जत्थ ण से तिलथभए। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एव वयासी—तुब्भे णं भते। तदा मम एवमाइक्खह जाव परूवेह—गोसाला ! एस णं तिलथभए निप्फज्जिस्सइ, नो न निप्फज्जिस्सइ। [4]•एते य सत्त तिल-पुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथभगस्स एगाए तिलसगलियाए सत्त तिला° पच्चायाइस्सति, तण्णं मिच्छा। इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ—एस णं से तिलथभए नो निप्फन्ने, अन्निप्फन्नमेव। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता नो एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया ॥

७३. तए ण अह गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—तुम ण गोसाला ! तदा ममं एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठ नो सद्दहसि, नो पत्तियसि, नो रोएसि, एयमट्ठ असद्दहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे, मम पणिहाए 'अयण्ण मिच्छावादी भवउ' त्ति कट्टु मम अतियाओ सणिय-सणिय पच्चो-सक्कसि, पच्चोसक्कित्ता जेणेव से तिलथभए तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता[5] •त तिलथभगं सलेट्ठुयाय चेव उप्पाडेसि, उप्पाडेत्ता• एगतमते एडेसि। तक्ख-णमेत्त गोसाला ! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूए। तए ण से दिव्वे अब्भवद्दलए

---

१. स० पा०—भीए जाव संजायभए।
२. स० पा०—पगिज्झिय जाव विहरइ।
३. संपत्थिए (अ, क, ख, व, म); पत्थिए (ता)।
४ स० पा—तं चेव जाव पच्चायाइस्सति।
५. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव एगतमते।

खिप्पामेव पतणतणाति, खिप्पामेव [1]•पविज्जुयाति, खिप्पामेव नच्चोदगं णाति-मट्टियं पविरलपफुसियं रयरेणुविणासणं दिव्वं सलिलोदगं वासं वासति, जेण से तिलथंभए आसत्थे पच्चायाते बद्धमूले, तत्थेव पतिट्ठिए। ते य सत्त तिलपुप्फ-जीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया। तं एस णं गोसाला ! से तिलथंभए निप्फन्ने, नो अनिप्फन्न-मेव। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथंभयस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया। एवं खलु गोसाला ! वणस्सइ-काइया पउट्टपरिहारं परिहरंति॥

७४ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते मम एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहइ, नो पत्तियइ, नो रोएइ, एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे[2] अरोए-माणे जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताओ तिलथंभयाओ तं तिलसंगलियं खुड्डइ, खुड्डित्ता करयलंसि सत्त तिले पप्फोडेइ॥

७५. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स ते सत्त तिले गणमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[3] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु सव्वजीवा वि पउट्टपरिहारं परिहरंति—'एस णं गोयमा ! गोसालस्स मंखलि-पुत्तस्स पउट्टे[4]', एस णं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स ममं अंतियाओ आयाए अवक्कमणे पण्णत्ते॥

गोसालस्स तेयलेस्सुप्पत्ति-पदं

७६. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते एगाए सणहाए कुम्मासपिंडियाए एगेण य वियडासएणं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[5] •सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे° विहरइ। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते अंतो छण्हं मासाणं संखित्तविउलतेयलेसे जाए॥

गोसालस्स पुव्वकहा-उवसंहार-पदं

७७. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अण्णदा कदायि इमे छ दिसाचरा अंतियं पाउब्भवित्था, तं जहा—साणे[6], [7]•कलंदे, कण्णियारे, अच्छिदे, अग्गिवेसायणे, अज्जुणे, गोमायुपुत्ते। तए णं ते छ दिसाचरा अट्ठविहं पुव्वगयं मग्गदसमं सएहिं-सएहिं मतिदंसणेहिं निज्जूहंति, निज्जूहित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं उवट्ठाइंसु।

---

१ सं० पा०—तं चेव जाव तस्स।
२ जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३ सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
४. × (ता)।
५. सं० पा०—पगिज्झिय जाव विहरइ।
६. साले (ब)।
७ सं० पा०—तं चेव सव्वं जाव अजिणे।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोय-मेत्तेणं सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं इमाइं छ अणइक्कमणिज्जाइं वागरणाइं वागरेति, तं जहा—

लाभं अलाभं सुहं दुक्खं, जीवियं मरणं तहा।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सावत्थीए नगरीए अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केव-लिप्पलावी, असव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी °, अजिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ, तं नो खलु गोयमा! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी[1], °अरहा अरह-प्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे ° जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ, गोसाले णं मंखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी[2], °अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी, असव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, अजिणे जिणसद्दं ° पगासेमाणे विहरइ॥

७८. तए णं सा महतिमहालया महच्चपरिसा [3]°समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं ° पडिगया॥

गोसालस्स अमरिस-पदं

७९. तए णं सावत्थीए नगरीए सिंघाडग[4]-°तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु ° बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—जण्णं देवाणुप्पिया! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ तं मिच्छा। समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एवं खलु तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स मंखली नामं मंखे पिता होत्था। तए णं तस्स मंखस्स एवं चेव तं सव्वं भाणियव्वं जाव[5] अजिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ, तं नो खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरइ, गोसाले मंखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी जाव विहरइ, समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ॥

८०. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[6] °रुट्ठे कुविए चंडिक्किए ° मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चो-रुहित्ता सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं[7] जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारा-

---

१. स० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं।
२. स० पा०—जिणप्पलावी जाव पगासेमाणे।
३. स० पा०—अहा सिवे जाव पडिगया।
४. स० पा०—सिंघाडग जाव बहुजणो।
५. भ० १५।१४-७६।
६. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि°।
७ लेखसंक्षेपकरणेन 'निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता' इति पाठो न दृश्यते। द्रष्टव्यम्—१५।२४।

वणे[1] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि[2] आजीवियसंघसंपरिवुडे[3] महया अमरिसं वहमाणे एवं चावि विहरइ ॥

गोसालस्स आणंदथेरसमक्खं अक्कोसपदंसण-पद

८२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी आणंदे नामं थेरे पगइभद्दए जाव[4] विणीए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

८२. तए णं से आणंदे थेरे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए एवं जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छइ, तहेव जाव[5] उच्च-नीय-मज्झिमाइं[6] °कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंते वीइवयइ ॥

८३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरं हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—एहि ताव आणंदा ! इओ एगं महं उवमियं निसामेहि ॥

८४ तए णं से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे, जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ ॥

८५. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरं एवं वयासी—एवं खलु आणंदा ! इत्तो चिरातीयाए अद्धाए केइ उच्चावया[7] वणिया अत्थत्थी अत्थलुद्धा अत्थगवेसी अत्थकंखिया अत्थपिवासा अत्थगवेसणयाए णाणाविहविउलपणियभंडमायाए सगडीसागडेणं सुबहुं भत्तपाणं पत्थयणं[8] गहाय एगं महं अगामियं[9] अणोहियं छिन्नावायं दीहमद्धं अडविं अणुप्पविट्ठा ॥

८६. तए णं तेसिं वणियाणं तीसे अगामियाए अणोहियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए किंचि देसं अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुज्जमाणे-परिभुज्जमाणे झीणे[10] ॥

८७ तए णं ते वणिया झीणोदगा[11] समाणा तण्हाए परब्भमाणा[12] अण्णमण्णं सद्दावेंति,

---

१. कुंभकारावदणे (ता)।
२. कुंभकारावदणंसि (ता)।
३. °संघपरिवुडे (ता, व, म)।
४. भ० १।२८८।
५. भ० २।१०७-१०९।
६. म० पा०—मज्झिमाइं जाव अडमाणे।
७. उच्चावगा (म, ता, व, स)।
८. पत्थायणं (ता)।
९ आगामियं (अ, म, स), अकामियं (क, ख, ता)।
१०. खीणे (अ, क, म, न)।
११. खीणोदगा (म, स)।
१२. परिभवमाणा (अ, न), परिब्भममाणा (ता); परब्भवमाणा (न)।

सद्दावेत्ता एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए[1] •अणोहियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए॰ अडवीए किंचि देस अणुप्पत्ताण समाणाण से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेण परिभुज्जमाणे-परिभुज्जमाणे झीणे, त सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगस्स सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेत्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता तीसे ण अगामियाए जाव अडवीए उदगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेंति, उदगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसण करेमाणा एगं मह वणसड आसादेति—किण्हं किण्होभासं जाव[2] महामेहनिकुरबभूयं[3] पासादीयं[4] •दरिसणिज्जं अभिरूवं॰ पडिरूवं ।

तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ ण महेगं वम्मीयं[5] आसादेति । तस्स ण वम्मीयस्स चत्तारि वप्पूओ[6] अब्भुग्गयाओ, अभिनिसढाओ, तिरियं सुसपग्गहियाओ, अहे पन्नगद्धरूवाओ, पन्नगद्धसंठाणसंठियाओ, पासादियाओ[7] •दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ॰ पडिरूवाओ ॥

८८ तए ण ते वणिया हट्ठतुट्ठा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमीसे अगामियाए[8] •अणोहियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए उदगस्स॰ सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेमाणेहिं इमे वणसंडे आसादिए—किण्हे किण्होभासे । इमस्स ण वणसडस्स बहुमज्झदेसभाए इमे वम्मीए आसादिए । इमस्स ण वम्मीयस्स चत्तारि वप्पूओ अब्भुग्गयाओ[9], •अभिनिसढाओ, तिरियं सुसपग्गहियाओ, अहे पन्नगद्धरूवाओ, पन्नगद्धसंठाणसंठियाओ, पासादियाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ॰ पडिरूवाओ तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स पढम वप्पुं[10] भिंदित्तए, अवियाइं ओरालं उदगरयणं अस्सादेस्सामो ॥

८९. तए ण ते वणिया अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता तस्स वम्मीयस्स पढमं वप्पुं भिंदंति । ते णं तत्थ अच्छं पत्थं जच्चं तणुयं फालियवण्णाभं ओरालं उदगरयणं आसादेंति । तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठा पाणियं पिबंति, पिबित्ता वाहणाइं पज्जेंति, पज्जेत्ता भायणाइं भरेंति, भरेत्ता दोच्चं पि अण्णमण्णं एवं वदासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं इमस्स वम्मीयस्स

---

१. सं॰ पा॰—अगामियाए जाव अडवीए ।
२. ओ॰ सू॰ ४ ।
३. ॰निकुरुबभूयं (क, ख, ता, ब, म) ।
४. सं॰ पा॰—पासादीयं जाव पडिरूवं ।
५. वम्मियं (अ, क) ।
६. वपू (अ, क): वपूओ (ख, म) ।
७. सं॰ पा॰—पासादियाओ जाव पडिरूवाओ ।
८. सं॰ पा॰—अगामियाए जाव सव्वओ ।
९. सं॰ पा॰—अब्भुग्गयाओ जाव पडिरूवाओ ।
१०. वप्पिं (अ, स); वपुं (क, ब, म) ।

पढमाए वप्पूए' भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणु-प्पिया! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स दोच्चं पि वप्पुं भिंदित्तए, अवियाइं एत्थ ओरालं सुवण्णरयणं अस्सादेस्सामो ॥

९० तए णं ते वणिया अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तस्स वम्मीयस्स दोच्चं पि वप्पुं भिंदंति। ते णं तत्थ अच्छं जच्चं तावणिज्जं' महत्थं महग्घं महरिहं ओरालं सुवण्णरयणं अस्सादेंति। तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठा भायणाइं भरेंति, भरेत्ता पवहणाइं भरेंति, भरेत्ता तच्चं पि अण्णमण्णं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पूए भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए', दोच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स तच्चं पि वप्पुं भिंदित्तए, अवियाइं एत्थ ओरालं मणिरयणं अस्सादेस्सामो ॥

९१ तए णं ते वणिया अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तस्स वम्मीयस्स तच्चं पि वप्पुं भिंदंति। ते णं तत्थ विमलं निम्मलं नित्तलं निक्कलं महत्थं महग्घं महरिहं ओरालं मणिरयणं अस्सादेंति। तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठा भायणाइं भरेंति, भरेत्ता पवहणाइं भरेंति, भरेत्ता चउत्थं पि अण्णमण्णं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पूए भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, दोच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिए, तच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले मणिरयणे अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स चउत्थं पि वप्पुं' भिंदित्तए, अवियाइं उत्तमं महग्घं महरिहं ओरालं वइररयणं अस्सादेस्सामो ॥

९२ तए णं तेसिं वणियाणं एगे वणिए हियकामए सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेसिए हिय-सुह-निस्सेसकामए ते वणिए एवं वयासी—एवं खलु देवाणु-प्पिया! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पूए भिन्नाए ओराले उदगरयणे' °अस्सादिए, दोच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिए°, तच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले मणिरयणे अस्सादिए, तं होउ अलाहि पज्जत्तं णे, एसा चउत्थी वप्पू' मा भिज्जउ, चउत्थी णे वप्पू सउवसग्गा यावि होत्था ॥

९३. तए णं ते वणिया तस्स वणियस्स हियकामगस्स सुहकामगस्स' °पत्थकामगस्स आणुकंपियस्स निस्सेसियस्स° हिय-सुह-निस्सेसकामगस्स एवमाइक्खमाणस्स

१ वप्पाए (अ, म, स)।
२. तवणिज्जं (अ, क, व, म, स)।
३. आसादिए (म, स)।
४. वप्प (अ, म, स)।
५. सं० पा०—उदगरयणे जाव तच्चाए।
६. वप्पा (ता)।
७. सं० पा०—सुहकामगस्स जाव हिय।

जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति, 'नो पत्तियंति'[1] नो रोयंति, एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा[2] अरोएमाणा तस्स वम्मीयस्स चउत्थ पि वप्पु भिंदंति। ते णं तत्थ उग्गविस चंडविस घोरविसं महाविसं 'अतिकायं महाकायं'[3] मसिमूसाकालगं नयणविसरोसपुण्णं अंजणपुज-निगरप्पगास रत्तच्छं जमलजुयल-[4] चंचलचलतजीहं धरणितलवेणिभूयं उक्कड-फुड-कुडिल-जडुल-कक्खड-विकड-फडाडोवकरणदच्छं लोहागर-धम्ममाण-धमधमेंतघोसं अणागलियचडतिव्वरोसं 'समुहं तुरिय चवल'[5] धमंत दिट्ठीविसं सप्पं संघट्टेंति ॥

६४. तए ण से दिट्ठीविसे सप्पे तेहि वणिएहि संघट्टिए समाणे आसुरुत्ते[6] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे सणियं-सणियं उट्ठेइ, उट्ठेत्ता सरसरसरस्स वम्मीयस्स सिहरतलं दुहति[7], दुहित्ता आदिच्चं निज्झाति, निज्झाइत्ता ते वणिए अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएति ॥

६५. तए ण ते वणिया तेणं दिट्ठीविसेण सप्पेणं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोइया समाणा खिप्पामेव सभंडमत्तोवगरणमायाए एगाहच्च कूडाहच्चं भासरासी कया यावि[8] होत्था। तत्थ ण जे से वणिए तेसि वणियाण हिय-कामए[9] •सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेसिए° हिय-सुह-निस्सेसकामए से णं आणुकपियाए देवयाए सभंडमत्तोवगरणमायाए नियग नगर साहिए ॥

६६. एवामेव आणंदा ! तव वि धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं समणेणं नायपुत्तेणं ओराले परियाए अस्सादिए, ओराला कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगा सदेवमणुयासुरे लोए पुव्वति, गुव्वति[10], थुव्वंति[11]—इति खलु समणे भगव महावीरे, इति खलु समणे भगवं महावीरे। तं जदि मे से अज्ज किंचि वि वदति तो णं तवेण तेएणं एगाहच्च कूडाहच्चं भासरासिं करेमि, जहा वा वालेणं ते वणिया। तुमं च ण आणंदा ! सारक्खामि संगोवामि जहा वा से वणिए तेसि वणियाणं हियकामए जाव[12] निस्सेसकामए आणुकंपियाए देवयाए सभंड[13]•मत्तोवगरणमायाए नियगं नगर° साहिए। त गच्छ[14] ण तुम आणंदा ! तव धम्मायरियस्स धम्मोवए-सगस्स समणस्स नायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि ॥

---

१. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
२. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. अतिकायमहाकाय (क, ख, ता, म)।
४. °जुवल (अ, ख, ब, स)।
५. समुहि तुरियचवलं (अ, क, ख, ता, ब); समुदियतुरियचवल (वृ)।
६. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि°।
७. दुहेति (क, ता, म); दुरुहति (स)।
८. वि (क, ता, ब)।
९. स० पा० हियकामए जाव हिय।
१०. × (अ, क, ख, ता); गुवति (ब, म)।
११. तुवति (क, ख), × (ब, म), 'थुवंति' त्ति क्वचित्, क्वचित् 'परिभमती' ति दृश्यते (वृ)।
१२. भ० १५।९२।
१३. स० पा०—सभंड जाव साहिए।
१४. गच्छाहि (ब, म)।

आणंदथेरस्स भगवओ निवेदण-पदं

६७. तए णं से आणंदे थेरे गोसालेण मखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे भीए जाव[1] सजाय-भए गोसालस्स मखलिपुत्तस्स अंतियाओ हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता सिग्घं तुरियं सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते! छट्ठक्खमणपारणगंसि तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय[2]-•मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए[3] •कुंभकारावणस्स अदूरसामंते °वीइवयामि, तए णं गोसाले मखलिपुत्ते ममं हालाहलाए[4] •कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणं° पासित्ता एवं वयासी—एहि ताव आणंदा! इओ एगं महं उवमियं निसामेहि।

तए णं अहं गोसालेणं मखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे, जेणेव गोसाले मखलिपुत्ते, तेणेव उवागच्छामि।

तए णं से गोसाले मखलिपुत्ते ममं एवं वयासी—एवं खलु आणंदा! इओ चिरातीयाए अद्धाए केइ उच्चावया वणिया एवं तं चेव सव्वं निरवसेसं भाणियव्वं जाव[5] नियगं नगरं साहिए। तं गच्छ णं तुमं आणंदा! तव धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स[6] •समणस्स नायपुत्तस्स एयमट्ठं° परिकहेहि॥

६८. तं पभू णं भंते! गोसाले मखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्तए? विसए णं भंते! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स[7] •तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं° करेत्तए? समत्थे णं भंते! गोसाले[8] •मखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं° करेत्तए?

पभू णं आणंदा! गोसाले मखलिपुत्ते तवेणं[9] •तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं° करेत्तए। विसए णं आणंदा! गोसालस्स[10] •मखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं° करेत्तए। समत्थे णं आणंदा! गोसाले[11]

---

१. भ० १५।६६।
२. सं० पा०—नीय जाव अडमाणे।
३. सं० पा०—कुंभकारीए जाव वीइवयामि।
४. सं० पा०—हालाहलाए जाव पासित्ता।
५. भ० १५।८५-६५।
६. सं० पा०—धम्मोवएसगस्स जाव परिकहेहि।
७. सं० पा०—मखलिपुत्तस्स जाव करेत्तए।
८. सं० पा०—गोसाले जाव करेत्तए।
९. सं० पा०—तवेणं जाव करेत्तए।
१०. सं० पा०—गोसालस्स जाव करेत्तए।
११. सं० पा०—गोसाले जाव करेत्तए।

•मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं॰ करेत्तए, नो चेव णं अरहंते भगवंते, पारियावणियं[1] पुण करेज्जा। जावतिए णं आणदा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स 'तवे तेए'[2], एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव तवे तेए अणगाराणं भगवंताणं, खंतिखमा पुण अणगारा भगवंतो। जावइए णं आणदा! अणगाराणं भगवंताणं तवे तेए एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव तवे तेए थेराणं भगवंताणं, खंतिखमा पुण थेरा भगवंतो। जावतिए णं आणंदा! थेराणं भगवंताणं तवे तेए एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव तवे तेए अरहंताणं भगवंताणं, खंतिखमा पुण अरहंता भगवंतो। तं पभू णं आणदा! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं[3] •एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं॰ करेत्तए, विसए णं आणदा[4]! •गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं॰करेत्तए, समत्थे णं आणदा[5]! •गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं॰ करेत्तए, नो चेव णं अरहंते भगवंते, पारियावणियं पुण करेज्जा॥

आणंदथेरेण गोयमाईणं अणुण्णवण-पदं

९९. तं गच्छ णं तुमं आणंदा! गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं एयमट्ठं परिकहेहि—मा णं अज्जो! तुब्भं केई गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेउ, धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेउ, गोसाले णं मंखलिपुत्ते समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने॥

१००. तए णं से आणंदे थेरे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव गोयमादी समणा निग्गंथा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोयमादी समणे निग्गंथे आमंतेति, आमंतेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अज्जो! छट्ठक्खमणपारणगंसि समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं तं चेव सव्वं जाव[6] 'गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं'[7] एयमट्ठं परिकहेहि, तं मा णं

१. परियावणियं (अ, स)।
२. तवतेए (स) सर्वत्र।
३. सं॰ पा॰—तेएणं जाव करेत्तए।
४. सं॰ पा॰—आणदा जाव करेत्तए।
५. सं॰ पा॰—आणंदा जाव करेत्तए।
६. भ॰ १५।८२-९९।
७. नायपुत्तस्स (अ, क, ख, ता, ब, म, स); सर्वेष्वपि आदर्शेषु 'नायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि' इति पाठोस्ति, किन्तु प्रसङ्गपर्यालोचनया नैष संगच्छते। 'नायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि' इति गोशालकस्य उक्तिरस्ति—द्रष्टव्यं १५।९६। यदि एतदन्तः पाठोत्र विवक्षितः स्यात्तदा आनन्दस्य भगवतो निवेदनम्, भगवतश्च आनन्दस्य गौतमादिश्रमणेभ्यः तदर्थज्ञापनस्य निर्देशन—एतत् सर्वं तस्मिन् पाठे नैव प्राप्तं भवेत्। कथं च आनन्दः भगवतः निर्देशमश्रावयित्वा गौतमादिभ्यः 'तं मा णं अज्जो' इत्यादि निर्देशं कुर्यात्? एतत् न स्वाभाविकम्। तेन प्रतीयते अत्र पाठसंक्षेपीकरणे

अज्जो ! तुब्भं केई गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ[1], •धम्मियाए पडिसारणयाए पडिसारेउ, धम्मिएण पडोयारेण पडोयारेउ, गोसाले ण मखलिपुत्ते समणेहि निग्गथेहि° मिच्छं विप्पडिवन्ने ॥

गोसालस्स भगवंत पइ अक्कोसपुव्वं ससिद्धंतनिरूवण-पदं

१०१. जाव च ण आणंदे थेरे गोयमाईण समणाण निग्गथाण एयमट्ठं परिकहेइ, ताव च ण से गोसाले मखलिपुत्ते हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता आजीवियसघसंपरिवुडे महया अमरिसं वहमाणे सिग्घं तुरियं[2] सावत्थि नगरिं मज्झंमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते ठिच्चा समण भगव महावीरं एवं वदासी—सुट्ठु णं आउसो कासवा ! मम एवं वयासी, साहू ण आउसो कासवा ! ममं एव वयासी—गोसाले मखलिपुत्ते ममं धम्मतेवासी, गोसाले मखलिपुत्ते ममं धम्मतेवासी ।

जे ण से गोसाले मंखलिपुत्ते तव धम्मतेवासी से ण सुक्के सुक्काभिजाइए भवित्ता कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु[3] देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने, अहण्णं उदाई नाम कुडियायणीए[4] अज्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता इमं सत्तमं पउट्टपरिहारं परिहरामि ।

जे वि आइं आउसो कासवा ! अम्हं समयंसि केइ सिज्झिसु वा सिज्झति वा सिज्झिस्सति वा सव्वे ते चउरासीतिं महाकप्पसयसहस्साइं, सत्त दिव्वे, सत्त सजूहे, सत्त सण्णिगब्भे, सत्त पउट्टपरिहारे, पच कम्मणि[5] सयसहस्साइं सट्ठिं च सहस्साइं छच्च सए तिण्णि य कम्मसे अणुपुव्वेण खवइत्ता तओ पच्छा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिनिव्वायति[6] सव्वदुक्खाणमंतं करेंसु वा करेंति वा करिस्सति वा ।

से जहा वा गगा महानदी जओ पवूढा, जहिं वा पज्जुवत्थिया[7], एस णं अद्धा पचजोयणसयाइं आयामेणं, अद्धजोयणं विक्खभेणं, पच धणुसयाइं उव्वेहेणं ।

लिपिकरणे वा कश्चिद् विपर्ययो जातः । प्रसङ्गानुसारेण 'जाव' पदस्यानन्तरं 'गोयमाईण समणाण निग्गथाणं एयमट्ठं परिकहेहि' इति पाठ. उपयुज्यते ।

१. स० पा०—पडिचोएउ जाव मिच्छं ।

२. तुरियं जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स); दृष्टव्यम्—भ० १५।६७ ।

३. अण्णतरेसु चेव (ता) ।

४. कडियायणिए (क, म); कुडियणिए (ता) ।

५ कम्मुणि (अ, ख, ता); कम्माणि (क); कर्मणामित्यर्थः (वृ) ।

६. परिनिव्वाइति (अ, ख, स) ।

७. पज्जवत्थिया (अ, क, स); पज्जुपत्थिया (ता) ।

एएणं गगापमाणेणं सत्त गंगाओ सा एगा महागंगा। सत्त महागंगाओ सा एगा सादीणगंगा। सत्तसादीणगंगाओ सा एगा मदुगंगा[1]। सत्त मदुगंगाओ सा एगा लोहियगगा। सत्त लोहियगगाओ सा एगा आवतीगगा[2]। सत्त आवतीगंगाओ सा एगा परमावती। एवामेव सपुव्वावरेणं एग गगासयसहस्सं सत्तर सहस्सा छच्च अगुणपन्न[3] गगासया भवतीति मक्खाया।

तासि दुविहे उद्धारे पण्णत्ते, तं जहा—सुहुमबोदिकलेवरे चेव, बायरबोदिकलेवरे चेव। तत्थ ण जे से सुहुमबोदिकलेवरे से ठप्पे। तत्थ ण जे से बायरबोंदिकलेवरे तओ ण वाससए गए, वाससए गए एगमेग गंगाबालुयं अवहाय जावतिएण कालेण से कोट्ठे खीणे णीरए निल्लेवे निट्ठिए भवति सेत्तं सरे सरप्पमाणे। एएणं सरप्पमाणेणं तिण्णि सरसयसाहस्सीओ से एगे महाकप्पे, चउरासीति महाकप्पसयसहस्साइं से एगे महामाणसे।

१. अणताओ सजूहाओ जीवे चय चइत्ता उवरिल्ले माणसे सजूहे देवे उववज्जति। से ण तत्थ[4] दिव्वाइ भोगभोगाइ भुंजमाणे विहरइ, विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएणं ठिइक्खएण अणतर चयं चइत्ता पढमे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

२. से ण तओहिंतो अणतरं उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणसे सजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइ भोगभोगाइ भुंजमाणे विहरइ, विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउक्खएण[5] •भवक्खएण ठिइक्खएण अणतरं चयं॰ चइत्ता दोच्चे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

३. से णं तओहिंतो अणतरं उव्वट्टित्ता हेट्ठिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव चइत्ता तच्चे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

४. से ण तओहिंतो जाव उव्वट्टित्ता उवरिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइ भोगभोगाइं जाव चइत्ता चउत्थे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

५. से ण तओहिंतो अणतर उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणुसुत्तरे सजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव चइत्ता पचमे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

६. से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता हिट्ठिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव चइत्ता छट्ठे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

---

१. महुगगा (ब); मद्धुगगा (म); मच्चुगगा (क्व॰)।
२. अवतीगगा (क, ख, ब, म)।
३. गुणपण्णं (अ. स); अगुणपण्णा (ता)।
४. तत्था (ता)।
५. स॰ पा॰—आउक्खएण जाव चइत्ता।

७. से णं तओहितो अणंतरं उव्वट्टित्ता—बंभलोगे नाम से कप्पे पण्णत्ते—पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिण्णे, जहा ठाणपदे जाव पच वडेसगा पण्णत्ता, तं जहा—असोगवडेसए जाव[1] पडिरूवा—से ण तत्थ देवे उववज्जइ। से ण तत्थ दस सागरोवमाइं दिव्वाइ भोगभोगाइ जाव चइत्ता सत्तमे सण्णि-गब्भे जीवे पच्चायाति।

से ण तत्थ नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणं राइदियाण वीतिक्कताणं सुकुमालगभद्दलए मिउ-कुडलकुचिय[2]-केसए मट्ठगंडतल-कण्णपीढए देवकुमार-सप्पभए दारए पयाति। से ण अहं कासवा! तए णं अहं आउसो कासवा! कोमारियपव्वज्जाए कोमारएणं बंभचेरवासेणं अविद्धकण्णए चेव संखाणं पडिलभामि, पडिलभित्ता इमे सत्त पउट्टपरिहारे परिहरामि, त जहा—१ एणेज्जस्स २ मल्लरामस्स ३. मंडियस्स[3] ४. रोहस्स ५. भारद्दाइस्स ६ अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स ७ गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स।

तत्थ ण जे से पढमे पउट्टपरिहारे से णं रायगिहस्स नगरस्स बहिया मडिकुच्छिसि चेइयंसि उदाइस्स कुडियायणस्स सरीर विप्पजहामि, विप्पज-हित्ता एणेज्जगस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता बावीसं वासाइ पढम पउट्टपरिहार परिहरामि।

तत्थ ण जे से दोच्चे पउट्टपरिहारे से णं उद्दंडपुरस्स नगरस्स बहिया चंदोयर-णसि चेइयसि एणेज्जगस्स सरीरग विप्पजहामि, विप्पजहित्ता मल्लरामस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता एकवीस वासाइं दोच्च पउट्टपरिहारं परिहरामि।

तत्थ ण जे से तच्चे पउट्टपरिहारे से ण चंपाए नगरीए बहिया अगमंदिरसि चेइयसि मल्लरामस्स सरीरग विप्पजहामि, विप्पजहित्ता मडियस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता वीस वासाइं तच्च पउट्टपरिहार परिहरामि।

तत्थ ण जे से चउत्थे पउट्टपरिहारे से णं वाणारसीए नगरीए बहिया काममहा-वणसि चेइयसि मडियस्स सरीरग विप्पजहामि, विप्पजहित्ता रोहस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता एकूणवीस वासाइं चउत्थ पउट्टपरिहारं परिहरामि।

तत्थ णं जे से पचमे पउट्टपरिहारे से णं आलभियाए नगरीए बहिया पत्तकाल-गसि[4] चेइयंसि रोहस्स सरीरग विप्पजहामि, विप्पजहित्ता भारद्दाइस्स सरीरगं

---

१. प० २।
२. कुतल० (ता)।
३. मंडिसस्स (क, ता, ब)।
४. कालगयंसि (स)।

अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता अट्ठारस वासाइ पचम पउट्टपरिहारं परिहरामि।

तत्थ ण जे से छट्ठे पउट्टपरिहारे से णं वेसालीए नगरीए बहिया कोडियायणसि[1] चेइयसि भारद्दाइस्स[2] सरीर विप्पजहामि, विप्पजहित्ता अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरग अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता सत्तरस वासाइ छट्ठ पउट्टपरिहार परिहरामि।

तत्थ णं जे से सत्तमे पउट्टपरिहारे से णं इहेव सावत्थीए नगरीए हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणसि अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरग विप्पजहामि, विप्पजहित्ता गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरग अल थिर धुव धारणिज्ज सीयसह उण्हसहं खुहासह विविहदंसमसगपरीसहोवसग्गसह थिरसघयण ति कट्टु तं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता सोलस वासाइं इम सत्तम पउट्टपरिहार परिहरामि। एवामेव आउसो कासवा! एगेण तेत्तीसेण वाससएण सत्त पउट्टपरिहारा परिहरिया भवतीति मक्खाया, त सुट्ठु ण आउसो कासवा! मम एवं वयासी—साहू णं आउसो कासवा! मम एव वयासी—गोसाले मखलिपुत्ते मम धम्मतेवासी, गोसाले मखलिपुत्ते मम धम्मतेवासी॥

भगवया गोसालगवयणस्स पडियार-पद

१०२. तए ण समणे भगव महावीरे गोसाल मखलिपुत्त एवं वयासी—गोसाला! से जहानामए तेणए सिया, गामेल्लएहि परब्भमाणे[3]-परब्भमाणे कत्थ य गड्ड वा दरि वा दुग्गं वा णिण्ण[4] वा पव्वय वा विसम वा अणस्सादेमाणे[5] एगेण मह उण्णालोमेण वा सणलोमेण वा कप्पासपम्हेण[6] वा तणसूएण वा अत्ताण आवरेत्ताण चिट्ठेज्जा, से ण अणावरिए आवरियमिति अप्पाण मण्णइ, अप्पच्छण्णे य पच्छण्णमिति अप्पाणं मण्णइ, अणिलुक्के णिलुक्कमिति अप्पाण मण्णइ, अपलाए पलायमिति अप्पाणं मण्णइ, एवामेव तुम पि गोसाला! अणण्णे सते अण्णमिति अप्पाण उपलभसि, त मा एव गोसाला! नारिहसि गोसाला! सच्चेव ते सा छाया नो अण्णा॥

गोसालस्स पुणरक्कोस-पदं

१०३. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे समण भगवं महावीर उच्चावयाहि

---

१. कडियायणसि (स)।
२. भारद्दाइयस्स (अ, ता, स)।
३. परिब्भमाणे (ता); पारब्भमाणे (म); परज्झमाणे (स)।
४. णिण (क, ता); णिल्ल (म)।
५. अणासा° (ता)।
६. °पोम्हेण (क, ख); °पोमेण (ता)।

आओसणाहिं आओसइ, उच्चावयाहि उद्धसणाहि उद्धसेति, उच्चावयाहि 'निब्भछणाहि निब्भछेति'[1], उच्चावयाहि निच्छोडणाहि निच्छोडेति, निच्छोडेत्ता एव वयासी — नट्ठे सि कदाइ, विणट्ठे सि कदाइ, भट्ठे सि कदाइ, नट्ठ-विणट्ठ-भट्ठे सि कदाइ, अज्ज न भवसि, नाहि ते ममाहितो सुहमत्थि[2] ।।

गोसालेण सव्वाणुभूतिस्स भासरासीकरण-पदं

१०४ तेण कालेणं तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी पाईणजाणवए[3] सव्वाणुभूती नाम अणगारे पगइभद्दए[4] °पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाण-मायालोभे मिउमद्दवसपन्ने अल्लीणे° विणीए धम्मायरियाणुरागेण एयमट्ठ असद्दहमाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव गोसाले मखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसाल मखलिपुत्ते एव वयासी—जे वि ताव गोसाला ! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिय एगमवि आरिय[5] धम्मिय सुवयणं निसामेति, से वि ताव वदति नमसति[6] °सक्कारेति सम्माणेति° कल्लाणं मगल देवय चेइय पज्जुवासति, किमग पुण तुम गोसाला ! भगवया चेव पव्वाविए, भगवया चेव मुडाविए, भगवया चेव सेहाविए, भगवया चेव सिक्खाविए, भगवया चेव बहुस्सुतीकए, भगवओ[7] चेव मिच्छ विप्पडिवन्ने ? त मा एव गोसाला ! नारिहसि गोसाला ! सच्चेव ते सा छाया नो अण्णा ।।

१०५. तए णं से गोसाले मखलिपुत्ते सव्वाणुभूतिणा अणगारेणं एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे सव्वाणुभूति अणगार तवेणं तेएणं एगाहच्च कूडाहच्च भासरासि करेति ।।

१०६. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते सव्वाणुभूति अणगार तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्च भासरासि करेत्ता दोच्च पि समण भगव महावीरं उच्चावयाहिं आओसणाहि आओसइ[8], °उच्चावयाहि उद्धसणाहि उद्धसेति, उच्चावयाहि निब्भछणाहिं निब्भछेति, उच्चावयाहिं निच्छोडणाहि निच्छोडेति, निच्छोडेत्ता एवं वयासी—नट्ठे सि कदाइ, विणट्ठे सि कदाइ, भट्ठे सि कदाइ, नट्ठ-विणट्ठ-भट्ठे सि कदाइ, अज्ज न भवसि, नाहि ते ममाहितो° सुहमत्थि ।।

गोसालेण सुनक्खत्तस्स परितावण-पदं

१०७. तेणं कालेणं तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी कोसलजाण-

---

१. णिब्भच्छणाहिं णिब्भच्छेइ (ता) ।
२. सुहनत्थि (अ, स) ।
३. पदीण° (क, म); पडीण° (ता, व) ।
४. स० पा०—पगइभद्दए जाव विणीए ।
५. यारिय (अ, ता, व, म) ।
६. स० पा०—नमंसति जाव कल्लाण ।
७. भगवया (क, ख, ता, व) ।
८. सं० पा०—आओसइ जाव सुहमत्थि ।

वए सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए जाव[1] विणीए धम्मायरियाणुरागेणं [2]•एयमट्ठं असद्दहमाणे उठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव गोसाले मखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसालं मखलिपुत्त एवं वयासी—जे वि ताव गोसाला ! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतियं एगमवि आरिय धम्मियं सुवयण निसामेति, से वि ताव वदति नमंसति सक्कारेति सम्माणेति कल्लाण मंगलं देवय चेइयं पज्जुवासति, किमंग पुण तुमं गोसाला ! भगवया चेव पव्वाविए, भगवया चेव मुंडाविए, भगवया चेव सेहाविए, भगवया चेव सिक्खाविए, भगवया चेव बहुस्सुतीकए, भगवओ चेव मिच्छं विप्पडिवन्ने ? तं मा एवं गोसाला ! नारिहसि गोसाला ! ° सच्चेव ते सा छाया नो अण्णा ॥

१०८. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते सुनक्खत्तेण अणगारेण एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे सुनक्खत्तं अणगारं तवेण तेएणं परितावेइ ॥

१०९. तए णं से सुनक्खत्ते अणगारे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेण तेएण परिताविए समाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुभेति, आरुभेत्ता समणा य समणीओ य खामेइ, खामेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए ॥

गोसालेण भगवओ वहाए तेयनिसिरण-पद

११०. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सुनक्खत्तं अणगारं तवेण तेएणं परितावेत्ता तच्चं पि समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहिं आओसणाहिं आओसइ, [3]•उच्चावयाहिं उद्धसणाहिं उद्धसेति, उच्चावयाहिं निब्भछणाहिं निब्भंछेति, उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडेति, निच्छोडेत्ता एवं वयासी—नट्ठे सि कदाइ, विणट्ठे सि कदाइ, भट्ठे सि कदाइ, नट्ठ-विणट्ठ-भट्ठे सि कदाइ, अज्ज न भवसि, नाहि ते ममाहितो° सुहमत्थि ॥

१११. तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मखलिपुत्तं एवं वयासी—जे वि ताव गोसाला! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा [4]•अंतियं एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं निसामेति, से वि ताव वंदति नमंसति सक्कारेति सम्माणेति कल्लाणं मंगलं देवय चेइयं° पज्जुवासति, किमंग पुण गोसाला ! तुमं मए चेव पव्वाविए[5],

---

१. भ० १५।१०४।

२. सं० पा०—जहा सव्वाणुभूती तहेव जाव सच्चेव।

३. सं० पा०—सव्वं तं चेव जाव सुहमत्थि।

४. सं० पा०—तं चेव जाव पज्जुवासति।

५. सं० पा०—पव्वाविए जाव मए।

•मए चेव मुंडाविए, मए चेव सेहाविए, मए चेव सिक्खाविए॰, मए चेव बहुस्सुतीकए, ममं चेव मिच्छं विप्पडिवन्ने ? त मा एवं गोसाला[1] ! •नारिहसि गोसाला ! सच्चेव ते सा छाया॰ नो अण्णा ॥

११२. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते समणेणं भगवया महावीरेण एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे तेयासमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता सत्तट्ठ पयाइ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगसि तेयं निसिरति—से जहानामए वाउक्कलिया[2] इ वा वायमडलिया इ वा सेलसि[3] वा कुड्डसि वा थभसि वा थूभसि वा आवारिज्जमाणी[4] वा निवारिज्जमाणी वा सा णं तत्थ नो कमति नो पक्कमति एवामेव गोसालस्स वि मंखलिपुत्तस्स तवे तेए समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगंसि निसिट्ठे समाणे से ण तत्थ नो कमति नो पक्कमति अचियचि करेति, करेत्ता आयाहिण-पयाहिण करेति, करेत्ता उड्ढं वेहास उप्पइए, से णं तओ पडिहए पडिनियत्तमाणे[5] तमेव गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुडहमाणे-अणुडहमाणे अतो-अतो अणुप्पविट्ठे ॥

११३. तए ण से गोसाले मंखलिपुत्ते सएण तेएण अण्णाइट्ठे समाणे समणं भगवं महावीर एव वयासी—तुम ण आउसो कासवा ! मम तवेण तेएण अण्णाइट्ठे समाणे अतो छण्ह मासाण पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव काल करेस्ससि ॥

११४. तए ण समणे भगव महावीरे गोसाल मखलिपुत्त एवं वयासी—नो खलु अह गोसाला ! तव तवेणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अतो छण्ह[6] •मासाण पित्तज्जर-परिगयसरीरे दाहवक्कतीए छउमत्थे चेव॰ काल करेस्सामि, अहण्णं अण्णाइं सोलस वासाइं जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि। तुम ण गोसाला ! अप्पणा चेव सएणं तेएण अण्णाइट्ठे समाणे अतो सत्तरत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए[7] छउमत्थे चेव काल करेस्ससि ॥

सावत्थीए जणपवाद-पदं

११५. तए ण सावत्थीए नगरीए सिंघाडग[8]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह॰-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—एव खलु

---

१. स॰ पा॰—गोसाला जाव नो।
२. वाओ॰ (ता); वातु॰ (म)।
३. तृतीयार्थे सप्तमी (वृ)।
४. आवरि॰ (अ, क, ख, व, म, स)।
५. पडिणियत्तेमाणे (स)।
६. स॰ पा॰—छण्ह जाव कालं।
७. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
८. सं॰ पा॰—सिंघाडग जाव पहेसु।

देवाणुप्पिया ! सावत्थीए नगरीए वहिया कोट्ठए चेइए दुवे जिणा संलवंति—एगे वदंति तुम पुव्वि काल करेस्ससि, एगे वदंति तुम पुव्वि काल करेस्ससि। तत्थ ण के पुण सम्मावादी[1] ? के मिच्छावादी ?
तत्थ ण जे से अहप्पहाणे जणे से वदति—समणे भगव महावीरे सम्मावादी, गोसाले मखलिपुत्ते मिच्छावादी ॥

गोसालेण समणाण पसिणवागरण-पदं

११६. अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमतेत्ता एव वयासी—अज्जो ! से जहानामए तणरासी इ वा कट्ठरासी इ वा पत्तरासी इ वा तयारासी इ वा तुसरासी इ वा भुसरासी इ वा गोमयरासी इ वा अवकररासी इ वा अगणिझामिए[2] अगणिझूसिए अगणिपरिणामिए हयतेए गयतेए नट्ठतेए भट्ठतेए लुत्ततेए विणट्ठतेए जाए[3], एवामेव गोसाले मंखलिपुत्ते मम वहाए सरीरगसि तेयं निसिरित्ता हयतेए गयतेए[4] •नट्ठतेए भट्ठतेए लुत्ततेए° विणट्ठतेए जाए, त छंदेण अज्जो ! तुब्भे गोसाल मखलिपुत्त धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएह, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेह, धम्मिएणं पडोयारेण पडोयारेह, अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं करेह ॥

११७. तए ण ते समणा निग्गथा समणेणं भगवया महावीरेणं एव वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीर वंदति नमंसंति, वदित्ता नमंसित्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता गोसाल मखलिपुत्त धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएंति, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेति, धम्मिएण पडोयारेण पडोयारेति, अट्ठेहि य हेऊहि य[5] •कारणेहि य निप्पट्ठपसिण°वागरण[6] करेति[7] ॥

११८. तए णं से गोसाले मखलिपुत्ते समणेहि निग्गथेहि धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोइज्जमाणे[8], •धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारिज्जमाणे, धम्मिएणं पडोयारेण य पडोयारेज्जमाणे, अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य° निप्पट्ठपसिणवागरणे कीरमाणे आसुरुत्ते[9] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे नो सचाएति समणाण निग्गंथाण सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाह वा उप्पाएत्तए, छविच्छेद वा करेत्तए ॥

---

१. सम्मावाती (अ, क, ख, ब, स)।
२. °ज्झामिए (ता, म)।
३. जाव (अ, म, स)।
४. सं० पा०—गयतेए जाव विणट्ठतेए।
५. स० पा०—हेऊहि य जाव वागरण।
६. °वाकरण (अ)।
७. वाकरेति (अ); वा वागरेति (ता)।
८. सं० पा०—पडिचोइज्जमाणे जाव निप्पट्ठ°
९. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि°।

गोसालस्स संघभेद-पदं

११९ तए णं ते आजीविया थेरा गोसालं मंखलिपुत्तं समणेहिं निग्गंथेहिं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएज्जमाणं, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारिज्जमाणं, धम्मिएणं पडोयारेण य पडोयारेज्जमाणं, अट्ठेहि य हेऊहि य[1] •पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं° कीरमाणं, आसुरुत्तं[2] •रुट्ठं कुवियं चंडिक्कियं° मिसिमिसेमाणं समणाणं निग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा अकरेमाणं पासंति, पासित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियाओ आयाए अवक्कमंति, अवक्कमित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति। अत्थेगतिया आजीविया थेरा गोसालं चेव मंखलिपुत्तं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति॥

गोसालस्स पडिगमण-पदं

१२० तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते जस्सट्ठाए हव्वमागए तमट्ठं असाहेमाणे[3], रुंदाइं पलोएमाणे, दीहुण्हाइं नीससमाणे, दाढियाए लोमाइं लुंचमाणे, अवडुं[4] कंडूयमाणे, पुयलिं पप्फोडेमाणे, हत्थे विणिद्धुणमाणे, दोहि वि पाएहिं भूमिं कोट्टेमाणे हा हा अहो! हओहमस्सि त्ति कट्टु समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सावत्थी नगरी, जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगए, मज्जपाणगं पियमाणे, अभिक्खणं गायमाणे, अभिक्खणं नच्चमाणे, अभिक्खणं हालाहलाए कुंभकारीए अंजलिकम्मं करेमाणे, सीयलएणं मट्टियापाणएणं आयंचिण-उदएणं गायाइं परिसिंचमाणे[5] विहरइ॥

गोसालेणं नाणासिद्धंत-परूवण-पदं

१२१. अज्जोति! समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी—जावतिए णं अज्जो! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं ममं वहाए सरीरगंसि तेये निसट्ठे से णं अलाहि पज्जत्ते सोलसण्हं जणवयाणं, तं जहा—१. अंगाणं २. वंगाणं ३. मगहाणं ४. मलयाणं ५. मालवगाणं[6] ६. अच्छाणं ७. वच्छाणं ८. कोच्छाणं

---

१. स० पा०—हेऊहि य जाव कीरमाणं।
२. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि°।
३. आसाहेमाणे (ख)।
४. अवटठुं (अ, स); अवडुयं (ता)।
५. परिसिंचमाणे २ (ता)।
६. मालवगाणं (ख); मालवताणं (ता)।

९. पाढाणं १०. लाढाणं ११. वज्जीणं १२. मोलीणं[1] १३. कासीणं १४. कोसलाणं १५ अवाहाणं १६. सुभुत्तराण[2] घाताए वहाए उच्छादणयाए भासीकरणयाए।

जं पि य अज्जो ! गोसाले मखलिपुत्ते हालाहलाए कुभकारीए कुंभकारावणंसि अबकूणगहत्थगए, मज्जपाण पियमाणे, अभिक्खण गायमाणे, अभिक्खणं नच्चमाणे, अभिक्खण[3] •हालाहलाए कुभकारीए° अंजलिकम्मं करेमाणे विहरइ, तस्स वि य णं वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइं अट्ठ चरिमाइं पण्णवेइ, तं जहा—
१. चरिमे पाणे २ चरिमे गेये ३. चरिमे नट्टे ४ चरिमे अंजलिकम्मे ५. चरिमे पोक्खलसवट्टए महामेहे ६ चरिमे सेयणए गधहत्थी ७. चरिमे महासिलाकटए सगामे ८. अह च णं इमीसे ओसप्पिणिसमाए[4] चउवोसाए तित्थगराणं[5] चरिमे तित्थगरे सिज्झिस्स जाव[6] अतं करेस्स।

ज पि य अज्जो ! गोसाले मंखलिपुत्ते सीयलएणं मट्टियापाणएणं आयंचिण-[7] उदएण गायाइ परिसिचमाणे विहरइ, तस्स वि णं वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइ चत्तारि पाणगाइं चत्तारि अपाणगाइं पण्णवेति॥

१२२. से कि त पाणए ?
पाणए चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—१. गोपुट्ठए २. हत्थमद्दियए ३. आतवतत्तए ४. सिलापब्भट्ठए। सेत्तं पाणए॥

१२३. से कि तं अपाणए ?
अपाणए चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—१. थालपाणए २. तयापाणए ३. सिंबलिपाणए[8] ४. सुद्धपाणए॥

१२४. से कि तं थालपाणए ?
थालपाणए—जे णं दाथालगं वा दावारग वा दाकुभगं वा दाकलसं वा सीतलगं उल्लगं[9] हत्थेहि परामुसइ, न य पाणियं पियइ। सेत्त थालपाणए॥

१२५. से किं तं तयापाणए ?
तयापाणए—जे ण अबं वा अंबाडग वा जहा पओगपदे जाव[10] बोर[11] वा तेंबरुय[12]

---

१. मालीण (अ, ख, ता, ब, म)।
२. सुभुत्तराण (अ, क, म); सुंभत्तराण (ख): संभुत्तराण (ता, ब); सुभत्तराण (स)।
३. स० पा०—अभिक्खणं जाव अजलिकम्मं।
४. ओसप्पिणीए (स)।
५. तित्थकराण (अ, क, ब, म, स); तित्थंकराणं (ख)।
६. भ० १।४४।
७. आदंचणि (अ, क, ख, ब, म)।
८. संवलि° (अ, ख), सेवलि° (ब); संवएलि° (म)।
९. ओलग्ग (ख)।
१०. प० १६।
११. पोरु (अ), पोर (क, ता, म); चोरं (ब)।
१२. तबरुय (अ, म); तबुरुय (ता); तेंवुरुयं (ब); तिंदुरुयं (स)।

वा तरुणगं आमग[1] आसगसि आवीलेति वा पवीलेति वा, न य पाणियं पियइ। सेत्तं तयापाणए॥

१२६ से किं तं सिवलिपाणए?
सिवलिपाणए—जे ण कलसंगलियं[2] वा मुग्गसगलिय वा माससगलिय वा सिंवलि-सगलिय वा तरुणियं आमिय आसगसि आवीलेति वा पवीलेति वा, न य पाणियं पियति। सेत्तं सिंवलिपाणए॥

१२७. से किं त सुद्धपाणए?
सुद्धपाणए—जे णं छम्मासे सुद्धखाइम खाइ, दो मासे पुढविसथारोवगए, दो मासे कट्ठसथारोवगए, दो मासे दब्भसथारोवगए, तस्स णं वहुपडिपुण्णाण छण्हं मासाण अंतिमराईए इमे दो देवा महिड्ढिया जाव[3] महेसक्खा अंतिय पाउब्भ-वंति, त जहा—पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य। तए णं ते देवा सीयलएहिं उल्लएहिं हत्थेहि गायाइं परामुसति, जे ण ते देवे साइज्जति, से णं आसीविसत्ताए कम्म पकरेति, जे ण ते देवे नो साइज्जति तस्स ण संसि[4] सरीरगसि अगणिकाए संभवति, से ण सएण तेएण सरीरगं झामेति, झामेत्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव अतं करेति। सेत्त सुद्धपाणए॥

अयंपुल-आजीविओवासय-पदं

१२८. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए अयंपुले नाम आजीविओवासए परिवसइ—अड्ढे, जहा हालाहला जाव[5] आजीवियसमएण अप्पाण भावेमाणे विहरइ। तए ण तस्स अयपुलस्स आजीविओवासगस्स अण्णया कदायि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुडुवजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[6] °चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—किंसंठिया णं हल्ला पण्णत्ता?

१२९. तए ण तस्स अयंपुलस्स आजीविओवासगस्स दोच्चं पि अयमेयारूवे अज्झत्थिए[7] °चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एव खलु ममं धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मखलिपुत्ते उप्पन्ननाणदसणधरे[8] °जिणे अरहा केवली° सव्वण्णू सव्वदरिसी इहेव सावत्थीए नगरीए हालाहलाए कुभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, त सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभाए रयणीए जाव[9] उट्ठियम्मि

---

१. आमलग (ता)।
२. °सिगलिय (क, ता)।
३. भ० १।३३६।
४ तसि (व, म, स)।
५. भ० १५।१।
६ सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
७ स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
८. स० पा०—उप्पन्ननाणदसणधरे जाव
९. भ० २।६६।

उट्ठेइ, उट्ठेत्ता गोसालं मंखलिपुत्तं वंदइ नमंसइ[1], •वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं° पडिगए ॥

गोसालस्स अप्पणो नीहरण-निद्देस-पदं

१३९. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते अप्पणो मरणं आभोएइ, आभोएत्ता आजीविए थेरे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! मम कालगयं जाणित्ता सुरभिणा गधोदएणं ण्हाणेह[2], ण्हाणेत्ता पम्हलसुकुमालाए गधकासाईए गायाइं लूहेह, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेण गायाइं अणुलिपह, अणुलिंपित्ता महरिहं हसलक्खणं पडसाडगं नियसेह, नियंसेत्ता सव्वालंकारविभूसिय करेह, करेत्ता पुरिससहस्सवाहिणि सीयं दुरुहेह[3], दुरुहेत्ता सावत्थीए नयरीए सिंघाडग[4]-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणा[5]-उग्घोसेमाणा एवं वदह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी[6], •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे° जिणसद्दं पगासेमाणे विहरित्ता इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थगराणं चरिमे तित्थगरे, सिद्धे जाव[7] सव्वदुक्खप्पहीणे—इड्ढिसक्कारसमुदएणं मम सरीरगस्स नीहरण करेह ॥

१४०. तए ण ते आजीविया थेरा गोसालस्स मखलिपुत्तस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेति ॥

गोसालस्स परिणाम-परिवत्तणपुव्वं कालधम्म-पदं

१४१. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सत्तरत्तंसि परिणममाणंसि पडिलद्ध-सम्मत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[8] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—नो खलु अहं जिणे जिणप्पलावी[9], •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे° जिणसद्द पगासेमाणे विहरिते[10] अहण्ण गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए समणमारए समणपडिणीए आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए बहूहि असब्भावुब्भावणाहि मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा

---

१. सं० पा०—नमंसइ जाव पडिगए ।

२. 'ण्हावेह' इति रूपं समीचीन प्रतिभाति, किन्तु 'ण्हावेइ, ण्हाणेइ' इति रूपद्वयमपि लभ्यते ।

३. द्रुहेह (अ, क, ख, ता) ।

४. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।

५. घोसेमाणा (अ, ख, ब) ;

६. स० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्द ।

७. भ० १।४३३ ।

८. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

९. स० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं ।

१०. विहरइ (क, ता, स) ।

वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहरित्ता सएणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अंतो सत्त-रत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्सं। समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी[1], •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्प-लावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे° जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ—एवं संपेहेति, संपेहेत्ता आजीविए थेरे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता उच्चावय[2]-सवह-साविए पकरेति, पकरेत्ता एवं वयासी—नो खलु अहं जिणे जिणप्पलावी जाव पगासे-माणे विहरिए। अहण्णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए[3] •समणमारए समणपडिणीए आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहरित्ता सएणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अंतो सत्तर-त्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए° छउमत्थे चेव कालं करेस्सं। समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ, तं तुब्भ णं देवाणुप्पिया! ममं कालगयं जाणित्ता वामे पाए सुंबेणं बंधेह[4], बंधेत्ता तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुभेह[5], उट्ठुभेत्ता सावत्थीए नगरीए सिंघाडग[6]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु आकड्ढ-विकड्ढिं करेमाणा महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वदह—नो खलु देवाणुप्पिया! गोसाले मंख-लिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरिए। एस णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगए। समणे भगवं महावीरे जिणे जिण-प्पलावी जाव विहरइ। महया अणिड्ढी-असक्कारसमुदएणं ममं सरीरगस्स नीहरणं करेज्जाह—एवं वदित्ता कालगए॥

गोसालस्स नीहरण-पदं

१४२ तए णं आजीविया थेरा गोसालं मंखलिपुत्तं कालगयं जाणित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स दुवाराइं पिहेंति, पिहेत्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स बहुमज्झदेसभाए सावत्थिं नगरिं आलिहंति, आलिहित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं वामे पदे सुंबेणं बंधंति, बंधित्ता तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुभंति, उट्ठुभित्ता सावत्थीए नगरीए सिंघाडग[7]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउ-म्मुह-महापह°-पहेसु आकड्ढ-विकड्ढिं करेमाणा णीयं-णीयं सद्देणं उग्घोसेमाणा-

---

१. सं० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं।
२. उच्चाविय (अ, म)।
३. सं० पा०—समणघायए जाव छउमत्थे।
४. बंधहा (अ, ब), बंधह (ख, म, स); बंधेहा (ता)।
५. उट्ठुभह (अ, ख, ब, स); उट्ठुभंस्स(ता); उच्छुभह (वृपा)
६. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।
७. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।

उग्घोसेमाणा एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरिए। एस णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगए। समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव[1] विहरइ—सवह-पडिमोक्खणगं करेंति, करेत्ता दोच्चं पि पूया-सक्कार-थिरीकरणट्ठयाए गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वामाओ पादाओ सुंबं मुयंति, मुइत्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स 'दुवार-वयणाइं'[2] अवगुणंति[3], अवंगुणित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेंति, तं चेव जाव[4] महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगस्स नीहरणं करेंति ॥

भगवओ रोगायंक-पाउब्भवण-पदं

१४३. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कदायि सावत्थीओ नगरीओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

१४४. तेणं कालेणं तेणं समएणं मेंढियगामे[5] नामं नगरे होत्था—वण्णओ[6]। तस्स णं मेंढियगामस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं साणकोट्ठए[7] नामं चेइए होत्था—वण्णओ जाव[8] पुढविसिलापट्टओ। तस्स णं साणकोट्ठगस्स चेइयस्स अदूरसामंते, एत्थ णं महेगे मालुयाकच्छए यावि होत्था—किण्हे किण्होभासे जाव[9] महामेहनिकुरंबभूए पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे चिट्ठति। तत्थ णं मेंढियगामे नगरे रेवती नामं गाहावइणी परिवसति—अड्ढा जाव[10] बहुजणस्स अपरिभूया ॥

१४५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे[11] °गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे° जेणेव मेंढियगामे नगरे जेणेव साणकोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ जाव[12] परिसा पडिगया ॥

१४६. तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विपुले रोगायंके पाउब्भूए—उज्जले[13] °विउले पगाढे कक्कसे कडुए चंडे दुक्खे दुग्गे[14] तिव्वे° दुरहियासे, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए[15] यावि विहरति, अवि याइं लोहिय-वच्चाइं

---

१. भ० १५।१४१।
२. दाराइं (ता)।
३. अवगुवंति (ता)।
४. भ० १५।१३६।
५. मेढिय° (क); मिंढिय° (ब)।
६. ओ० सू० १।
७. साल° (अ, क, ब, म, स)।
८. ओ० सू० २-१३।
९. ओ० सू० ४।
१०. भ० ३।६४।
११. सं० पा०—चरमाणे जाव जेणेव।
१२. भ० १।७, ८।
१३. सं० पा०—उज्जले जाव दुरहियासे।
१४. × (वृ); दुग्गे (वृपा)।
१५. दाहवक्कंतीए (अ, ख, ता, म, स)।

पि पकरेइ, चाउवण्ण[1] च ण वागरेति—एव खलु समणे भगव महावीरे गोसालस्स मखलिपुत्तस्स तवेण तेएण अण्णाइट्ठे[2] समाणे अतो छण्ह मासाण पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतिए छउमत्थे चेव काल करेस्सति ॥

सीहस्स माणसियदुक्ख-पद

१४७. तेण कालेणं तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी सीहे नामं अणगारे—पगइभद्दए जाव[3] विणीए मालुयाकच्छगस्स अदूरसामंते छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ[4] °पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे° विहरति ॥

१४८ तए ण तस्स सीहस्स अणगारस्स झाणतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[5] °चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु ममं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगसि विउले रोगायके पाउब्भूए—उज्जले जाव[6] छउमत्थे चेव काल करेस्सति, वदिस्सति य ण अण्णतित्थिया—छउमत्थे चेव कालगए—इमेण एयारूवेण महया मणोमाणसिएण दुक्खेण अभिभूए समाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छग अतो-अतो अणुपविसइ, अणुपविसित्ता महया-महया सद्देण कुहुकुहुस्स परुण्णे ॥

भगवया सीहस्स आसासण-पदं

१४९. अज्जोति ! समणे भगव महावीरे समणे निग्गथे आमतेति, आमतेत्ता एवं वयासी—एव खलु अज्जो ! मम अतेवासी सीहे नामं अणगारे पगइभद्दए [7]°जाव विणीए मालुयाकच्छगस्स अदूरसामते छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरति।

तए ण तस्स सीहस्स अणगारस्स झाणतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगसि विउले रोगायंके पाउब्भूए—उज्जले जाव छउमत्थे चेव कालं करेस्सति, वदिस्सति य णं अण्णतित्थिया—छउमत्थे चेव कालगए—इमेण एयारूवेणं महया मणोमाणसिएणं दुक्खेण अभिभूए समाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव

---

१. चाउव्वण्ण (व)।
२. आदिट्ठे (क, ता)।
३. भ० १।२८८।
४. सं० पा०—वाहाओ जाव विहरइ।
५. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था
६. भ० १५।१४६।
७. सं० पा०—तं चेव सव्वं भाणियव्व जाव परुण्णे।

मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छगं अंतो-अंतो अणु-पविसइ अणुपविसित्ता महया-महया सद्देण कुहुकुहुस्स° परुण्णे । त गच्छह ण अज्जो ! तुब्भे सीहं अणगारं सद्दाह[1] ॥

१५० तए णं ते समणा निग्गथा समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ता समाणा समण भगवं महावीर वदंति नमसंति, वदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ साणकोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव मालुयाकच्छए, जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सीहं अणगार एव वयासी—सीहा ! धम्मायरिया सद्दावेति ॥

१५१. तए णं से सीहे अणगारे समणेहि निग्गंथेहि सद्धि मालुयाकच्छगाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव साणकोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं जाव[2] पज्जुवासति ॥

१५२. सीहादि ! समणे भगवं महावीरे सीहं अणगार एव वयासी—से नूण ते सीहा ! झाणतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे[3] °अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विउले रोगायके पाउब्भूए—उज्जले जाव छउमत्थे चेव काल करेस्सति, वदिस्सति य ण अण्णतित्थिया—छउमत्थे चेव कालगए—इमेणं एयारूवेणं महया मणोमाणसिएणं दुक्खेण अभिभूए समाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभित्ता, जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छित्ता मालु-याकच्छग अतो-अतो अणुपविसित्ता महया-महया सद्देण कुहुकुहुस्स° परुण्णे । से नूणं ते सीहा ! अट्ठे समट्ठे ?

हता अत्थि ।

तं नो खलु अह सीहा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेण तेएण अण्णाइट्ठे समाणे अंतो छण्ह मासाण[4] °पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतिए छउमत्थे चेव° कालं करेस्स अहण्णं अद्ध सोलस वासाइ जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि, तं गच्छह णं तुम सीहा ! मेंढियगाम नगरं, रेवतीए गाहावतिणीए गिहं, तत्थ ण रेवतीए गाहावतिणीए ममं अट्ठाए दुवे 'कवोय-सरीरा'[5] उवक्खडिया, तेहि नो अट्ठो, अत्थि से अण्णे पारियासिए मज्जारकडए कुक्कुडमंसए, तमाहराहि, एएणं अट्ठो ॥

---

१. सद्दह (अ, क, ता) ।
२. भ० १।१० ।
३. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव परुण्णे ।
४. स० पा०—मासाण जाव कालं ।
५. कवोतासरीरा (क, ब); कतोयासरीरगा (ता) ।

सीहेण रेवईए भेसज्जाणयण-पदं

१५३ तए णं से सीहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ[1]-•चित्तमाणदिए णदिए पीइमाणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण॰हियए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अतुरियमचवलमसंभंतं[2] मुहपोत्तियं[3] पडिलेहेति, पडिलेहेत्ता[4]•भायणवत्थाइं पडिलेहेति, पडिलेहेत्ता भायणाइं पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता॰ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ साणकोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता अतुरिय[5]•मचवलमसंभंतं जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे॰ जेणेव मेंढियगामे नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मेंढियगामं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव रेवतीए गाहावइणीए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रेवतीए गाहावतिणीए गिहं अणुप्पविट्ठे ॥

१५४. तए णं सा रेवती गाहावतिणी सीहं अणगारं एज्जमाणं पासति, पासित्ता हट्ठतुट्ठा खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सीहं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पयोयणं ?

१५५. तए णं से सीहे अणगारे रेवतिं गाहावइणिं एवं वयासी—एवं खलु तुमे देवाणुप्पिए ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अट्ठाए दुवे कवोय-सरीरा उवक्खडिया, तेहिं नो अट्ठो, अत्थि ते अण्णे पारियासिए मज्जारकडए कुक्कुडमंसए एयमाहराहि, तेणं अट्ठो ॥

१५६ तए णं सा रेवती गाहावइणी सीहं अणगारं एवं वयासी—केस णं सीहा ! से नाणी वा तवस्सी वा, जेणं तव एस अट्ठे मम ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओ णं तुमं जाणासि ?

१५७. [6]•तए णं से सीहे अणगारे रेवइं गाहावइणिं एवं वयासी—एवं खलु रेवई ! मम धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे उप्पण्णनाणदंसणधरे अरहा

---

१. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।

२. भ० २।१०७ सूत्रे आदर्शेषु 'अतुरियमचवलमसभंतं' इति पाठोस्ति । अत्र च आदर्शेषु 'अतुरियमचवलमसंभंतं' इति पाठोस्ति । उभयमपि रूपं नास्ति अशुद्धमिति यथा प्राप्तमुपात्तम् ।

३. ॰पत्तिय (स) ।

४. सं० पा०—जहा गोयमसामी जाव जेणेव ।

५. सं० पा०—अतुरिय जाव जेणेव ।

६. सं० पा०—एवं जहा खंदए जाव जओ ।

जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी जेणं मम एस अट्ठे तव ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए°, जओ ण अहं जाणामि ॥

१५८. तए ण सा रेवती गाहावतिणी सीहस्स अणगारस्स अंतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म[1] हट्ठतुट्ठा जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पत्तगं[2] मोएति, मोएत्ता जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहस्स अणगारस्स पडिग्गहगंसि[3] तं सव्वं सम्म निस्सिरति ॥

१५९. तए णं तीए रेवतीए गाहावतिणीए तेण दव्वसुद्धेण[4] •दायगसुद्धेण पडिगाहग-सुद्धेणं तिविहेण तिकरणसुद्धेणं° दाणेण सीहे अणगारे पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, [5]•संसारे परित्तीकए, गिहसि य से इमाइ पंच दिव्वाइं पाउब्भू-याइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुदुभीओ, अतरा वि य ण आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

१६०. तए णं रायगिहे नगरे सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एव पण्णवेइ एव परूवेइ— धन्ना णं देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी, कयत्था ण देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी, कयपुण्णा ण देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी, कयलक्खणा ण देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! रेवतीए गाहा-वतिणीए, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले रेवतीए गाहाव-तिणीए, जस्स णं गिहसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, त जहा—वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ना कयत्था कयपुण्णा कयलक्खणा, कया ण लोया, सुलद्धे माणु-स्सए° जम्मजीवियफले रेवतीए गाहावतिणीए, रेवतीए गाहावतिणीए ॥

१६१. तए णं से सीहे अणगारे रेवतीए गाहावतिणीए गिहाओ पडिनिक्खमति, पडि-निक्खमित्ता मेढियगाम नगर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जहा गोयमसामी जाव[6] भत्तपाण पडिदसेति, पडिदसेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स पाणिसि त सव्व सम्म निस्सिरति ॥

भगवओ आरोग्ग-पदं

१६२. तए णं समणे भगवं महावीरे अमुच्छिए[7] •अगिद्धे अगढिए° अणज्झोववन्ने

१. निसम्मा (क, ता, ब)।
२. पत्तं (क, ख, ता, ब, म)।
३. पडिग्गहसि (ता)।
४. सं० पा०—दव्वसुद्धेणं जाव दाणेण।
५. स० पा०—जहा विजयस्स जाव जम्म-जीवियफले।
६. भ० २।११०।
७. स० पा०—अमुच्छिए जाव अणज्झोववन्ने।

विलमिव पन्नगभूएण अप्पाणेण तमाहार सरीरकोट्ठगसि पक्खिवति ।।

१६३. तए ण समणस्स भगवओ महावीरस्स तमाहार आहारियस्स समाणस्स से विपुले रोगायके खिप्पामेव उवसते, हट्ठे जाए, अरोगे[1], वलियसरीरे। तुट्ठा समणा, तुट्ठाओ समणीओ, तुट्ठा सावया, तुट्ठाओ सावियाओ, तुट्ठा देवा, तुट्ठाओ देवीओ, सदेवमणुयासुरे लोए तुट्ठे—हट्ठे जाए समणे भगव महावीरे, हट्ठे जाए समणे भगव महावीरे ।।

सव्वाणुभूतिस्स उववाय-पदं

१६४. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदति नमसति, वंदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी पाईणजाणवए[2] सव्वाणुभूती नामं अणगारे पगइभद्दए जाव[3] विणीए, से ण भते ! तदा गोसालेण मखलिपुत्तेण तवेण तेएण भासरासीकए समाणे कहिं गए ? कहि उववन्ने ?
एव खलु गोयमा ! मम अंतेवासी पाईणजाणवए सव्वाणुभूती नाम अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए, से ण तदा गोसालेणं मखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं भासरासीकए समाणे उड्ढ चदिम-सूरिय जाव[4] बभ-लतक-महासुक्के कप्पे वीइवइत्ता सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ ण अत्थेगतियाण देवाण अट्ठारस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता। तत्थ ण सव्वाणुभूतिस्स वि देवस्स अट्ठारस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता ।
से ण भते ! सव्वाणुभूती देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएण ठिइक्खएण[5] •अणतरं चय चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा !• महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[6] सव्वदुक्खाणं अत करेहिति ।।

सुनक्खत्तस्स उववाय-पदं

१६५. एव खलु देवाणुप्पियाणं अतेवासी कोसलजाणवए सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए। से ण भते ! तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएण परिताविए समाणे कालमासे काल किच्चा कहिं गए ? कहिं उववन्ने ?
एवं खलु गोयमा ! ममं अतेवासी सुनक्खत्ते नाम अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए, से णं तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं परिताविए समाणे जेणेव ममं अतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता सयमेव पच महव्वयाइं आरुभेति, आरुभेत्ता समणा य समणीओ य

---

१. आरोए (अ, म), आरोते (व) ।
२. पतीण° (अ, स); पदीण° (क, व); पडीण° (ख, ता) ।
३. भ० १।२८८ ।
४. भ० ११।१६६ ।
५. स० पा०—ठिइक्खएण जाव महाविदेहे ।
६. भ० २।७३ ।

खामेति, खामेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूरिय जाव[1] आणय-पाणयारणे कप्पे वीइवइत्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाण बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं सुनक्खत्तस्स वि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं [2]•ठिती पण्णत्ता।

से णं भंते! सुनक्खत्ते देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति?

गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणं॰ अंतं काहिति॥

गोसालस्स भवब्भमण-पदं

१६६ एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से गोसाले नामं मंखलिपुत्ते से णं भंते! गोसाले मंखलिपुत्ते कालमासे कालं किच्चा कहिं गए? कहिं उववन्ने?

एवं खलु गोयमा! ममं अंतेवासी कुसिस्से गोसाले नामं मंखलिपुत्ते समणघायए जाव[3] छउमत्थे चेव कालमासे काल किच्चा उड्ढं चंदिम-सूरिय जाव[4] अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाण देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ ण गोसालस्स वि देवस्स बावीसं सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता॥

१६७. से णं भंते! गोसाले देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएणं ठिइक्खएणं[5] •अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति॰? कहिं उववज्जिहिति?

गोयमा! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विझगिरिपायमूले पुंडेसु जणवएसु सयदुवारे नगरे संमुतिस्स रण्णो भद्दाए भारियाए कुच्छिसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिति। से णं तत्थ नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण[6] •अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं॰ वीइक्कंताणं जाव[7] सुरूवे दारए पयाहिति॥

१६८ जं रयणिं च णं से दारए जाइहिति, तं रयणि च णं सयदुवारे नगरे सब्भितर-बाहिरिए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वासिहिति॥

१६९. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते[8] •निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे॰ संपत्ते 'बारसमे दिवसे'[9] अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं

---

१. भ० १५।१६४।
२. स० पा०—सेसं जहा सव्वाणुभूतिस्स जाव अंतं।
३. भ० १५।१४१।
४. भ० १५।१६५।
५. सं० पा०—ठिइक्खएण जाव कहिं।
६. सं० पा०—बहुपडिपुण्णाण जाव वीइक्कंताणं।
७. भ० ११।१४६।
८. स० पा०—वीइक्कते जाव संपत्ते।
९. बारसाहदिवसे (अ, क, ख, ता, ब, म, स); द्रष्टव्यम्—भ० ११।१५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

नामधेज्जं काहिंति—जम्हा ण अम्हं इमसि दारगंसि जायसि समाणसि सयदुवारे नगरे सब्भिंतरबाहिरिए[1] •भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य ° रयणवासे वुट्ठे, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्ज महापउमे-महापउमे। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेहिंति महापउमे त्ति ॥

१७० तए णं तं महापउमं दारगं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासजायगं जाणित्ता सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तसि महया-महया रायाभिसेगेणं अभिसिंचेहिति। से णं तत्थ राया भविस्सति—महया हिमवत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे वण्णओ जाव[2] विहरिस्सइ ॥

१७१ तए णं तस्स महापउमस्स रण्णो अण्णदा कदायि दो देवा महिड्ढिया जाव[3] महेसक्खा सेणाकम्मं काहिंति, त जहा—पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य ॥

तए णं सयदुवारे नगरे वहवे राईसर-तलवर[4]-•माडविय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभितओ[5] अण्णमण्ण सद्दावेहिंति, सद्दावेत्ता एवं वदेहिंति—जम्हा णं देवाणुप्पिया! महापउमस्स रण्णो दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा सेणाकम्मं करेति, तजहा—पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य, तं होउ णं देवाणुप्पिया! अम्ह महापउमस्स रण्णो दोच्चे वि नामधेज्जे देवसेणे-देवसेणे। तए णं तस्स महापउमस्स रण्णो 'दोच्चे वि'[6] नामधेज्जे भविस्सति देवसेणे त्ति ॥

१७२ तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो अण्णया कयाइ सेते संखतल[7]-विमल-सन्निगासे चउद्दते हत्थिरयणे समुप्पज्जिस्सइ। तए णं से देवसेणे राया तं सेय संखतल-विमल-सन्निगासं चउद्दत हत्थिरयण दूरूढे[8] समाणे सयदुवारं नगरं मज्झंमज्झेणं अभिक्खणं-अभिक्खणं अतिजाहिति य निज्जाहिति य। तए णं सयदुवारे नगरे वहवे राईसर[9]-•तलवर-माडविय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभितओ अण्णमण्ण सद्दावेहिंति, सद्दावेत्ता वदेहिंति—जम्हा ण देवाणुप्पिया! अम्हं देवसेणस्स रण्णो सेते संखतल-विमल-सन्निगासे चउद्दते हत्थिरयणे समुप्पन्ने, तं होउ णं देवाणुप्पिया! अम्हं देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे विमलवाहणे-विमलवाहणे। तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे भविस्सति[10] विमलवाहणे त्ति ॥

---

१. सं० पा०—सब्भितरबाहिरिए जाव रयण-वासे।
२. ओ० सू० १४।
३. भ० ३।३९।
४. सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह°।
५. °प्पभितीओ (स)।
६. दोच्च पि (स)।
७. सखदल (क, ख, ता, वृ)।
८. दुरूढे (स)।
९. सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाह°।
१०. ठा० ६।६२ सूत्रानुसारेण एतत् पदं स्वीकृतम्।

१७३. तए णं से विमलवाहणे राया अण्णया कदायि समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवज्जिहिति—अप्पेगतिए आओसेहिति, अप्पेगतिए अवहसिहिति, अप्पेगतिए निच्छोडेहिति, अप्पेगतिए निब्भछेहिति[1], अप्पेगतिए बंधेहिति, अप्पेगतिए निरुंभेहिति[2], अप्पेगतियाणं छविच्छेदं करेहिति, अप्पेगतिए पमारेहिति, अप्पेगतिए उद्दवेहिति, अप्पेगतियाणं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं आच्छिंदिहिति विच्छिंदिहिति भिंदिहिति अवहरिहिति, अप्पेगतियाणं भत्तपाणं वोच्छिंदिहिति, अप्पेगतिए निन्नगरे करेहिति, अप्पेगतिए निव्विसए करेहिति ॥

१७४. तए णं सयदुवारे नगरे बहवे राईसर[3]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितओ अण्णमण्णं सद्दावेहिति, सद्दावेत्ता एवं॰ वदिहिंति—एवं खलु देवाणुप्पिया ! विमलवाहणे राया समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने—अप्पेगतिए आओसति[4] जाव निव्विसए करेति, तं नो खलु देवाणुप्पिया ! एयं अम्हं सेयं, नो खलु एयं विमलवाहणस्स रण्णो सेयं, नो खलु एयं रज्जस्स वा रट्ठस्स वा बलस्स वा वाहणस्स वा पुरस्स वा अंतेउरस्स वा जणवयस्स वा सेयं, जण्णं विमलवाहणे राया समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं विमलवाहणं रायं एयमट्ठं विण्णवेत्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेहिति[5], पडिसुणेत्ता जेणेव विमलवाहणे राया तेणेव उवागच्छिहिति[6], उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं[7] •दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु॰ विमलवाहणं रायं जएणं विजएणं वद्धावेहिति[8], वद्धावेत्ता एवं वदिहिंति[9]—एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ना अप्पेगतिए आओसति जाव अप्पेगतिए निव्विसए करेति, तं नो खलु एयं देवाणुप्पियाणं सेयं, नो खलु एयं अम्हं सेयं, नो खलु एयं रज्जस्स वा जाव जणवयस्स वा सेयं, जण्णं देवाणुप्पिया ! समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ना, तं विरमतु णं देवाणुप्पिया ! एयस्स अट्ठस्स अकरणयाए ॥

१७५. तए णं से विमलवाहणे राया तेहिं बहूहिं राईसर[10]•-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-

---

१. निब्भत्थेहिति (अ, क); निब्भच्छेहिति (ख, ता) ।
२. रुंभेहिति (अ, ता, ब, म) ।
३. सं॰ पा॰—राईसर जाव वदिहिंति ।
४. आउस्सइ (ब, स) ।
५. पडिसुणेंति (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
६. उवागच्छति (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
७. सं॰ पा॰—करयलपरिग्गहियं ।
८. वद्धावेंति (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
९. वदंति (अ, क, ख, ता); वदासी (ब, म, स) ।
१०. सं॰ पा॰—राईसर जाव सत्थवाह॰ ।

इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभिईहिं एयमट्ठं विण्णत्ते[1] समाणे नो धम्मो त्ति नो तवो त्ति मिच्छा-विणएण एयमट्ठं पडिसुणेहिति ॥

१७६. तस्स णं सयदुवारस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे, एत्थ णं सुभूमिभागे नाम उज्जाणे भविस्सइ—सव्वोउय-पुप्फ-फलसमिद्धे वण्णओ[2] ॥

१७७. तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए[3] सुमंगले नामं अणगारे जाइसपन्ने, जहा धम्मघोसस्स वण्णओ जाव[4] संखित्तविउलतेयलेस्से तिन्नाणोवगए सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं[5] °तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणे विहरिस्सति ॥

१७८. तए णं से विमलवाहणे राया अण्णदा कदायि रहचरियं काउं निज्जाहिति ॥

१७९. तए णं से विमलवाहणे राया सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते रहचरियं करेमाणे सुमंगलं अणगारं छट्ठंछट्ठेणं[6] °अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहं आयावणभूमीए° आयावेमाणं पासिहिति, पासित्ता आसुरुत्ते[7] °रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे सुमंगलं अणगारं रहसिरेणं नोल्लावेहिति ॥

१८०. तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा रहसिरेणं नोल्लाविए समाणे सणियं-सणियं उट्ठेहेति, उट्ठेत्ता दोच्चं पि उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[8] °सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणे विहरिस्सति ॥

१८१. तए णं से विमलवाहणे राया सुमंगलं अणगारं दोच्चं पि रहसिरेणं नोल्लावेहिति ॥

१८२. तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा दोच्चं पि रहसिरेणं नोल्लाविए समाणे सणियं-सणियं उट्ठेहिति, उट्ठेत्ता ओहिं पउंजेहिति, पउंजित्ता विमलवाहणस्स रण्णो तीतद्धं आभोएहिति, आभोएत्ता विमलवाहणं रायं एवं वइहिति—नो खलु तुमं विमलवाहणे राया, नो खलु तुमं देवसेणे राया, नो खलु तुमं महापउमे राया, तुमण्णं इओ तच्चे भवग्गहणे गोसाले नामं मंखलिपुत्ते होत्था—समणघायए जाव[9] छउमत्थे चेव कालगए, तं जइ ते तदा सव्वाणुभूतिणा अणगारेणं पभुणा वि होऊणं[10] सम्मं सहियं खमियं तितिक्खियं अहिया-

---

१. विण्णविए (ता)।

२. भ० ११।५७।

३. पओपए (ता)।

४. भ० ११।१६२; राय० सू० ६८६।

५. सं० पा०—अणिक्खित्तेणं जाव आयावेमाणे।

६. सं० पा०—छट्ठंछट्ठेणं जाव आयावेमाणं।

७. आसुरत्ते (अ); सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि°।

८. सं० पा०—पगिज्झिय जाव आसावेमाणे।

९. भ० १५।१४१।

१०. होइत्तणं (अ, च); होइऊण (ख), होइऊणं (म, स)।

सियं, जइ ते तदा सुनक्खत्तेणं अणगारेणं पभुणा वि होऊणं सम्मं सहियं[1] •खमियं तितिक्खियं° अहियासियं, जइ ते तदा समणेण भगवया महावीरेणं पभुणा वि[2] •होऊणं सम्मं सहियं खमियं तितिक्खियं° अहियासियं, त नो खलु ते अहं तहा सम्मं सहिस्सं[3] •खमिस्सं तितिक्खिस्सं° अहियासिस्सं, अहं ते नवरं— सहयं सरहं ससारहियं तवेण तेएण एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेज्जामि ॥

१८३. तए णं से विमलवाहणे राया सुमंगलेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते[4] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे सुमंगलं अणगारं तच्चं पि रहसिरेणं नोल्लावेहिति ॥

१८४. तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा तच्चं पि रहसिरेणं नोल्लाविए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता तेयासमुग्घाएणं समोहण्णिहिति, समोहणित्ता सत्तट्ठ पयाइं पच्चोसक्किहिति, पच्चोसक्कित्ता विमलवाहणं रायं सहयं सरहं ससारहियं तवेणं तेएणं[5] •एगाहच्चं कूडाहच्चं° भासरासिं करेहिति ॥

१८५. सुमंगले णं भंते ! अणगारे विमलवाहणं रायं सहयं जाव[6] भासरासिं करेत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! सुमंगले अणगारे विमलवाहणं रायं सहयं जाव भासरासिं करेत्ता बहूहिं छट्ठट्ठम-दसम[7]-•दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं° विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणेहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए[8] छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते उड्ढं चंदिम जाव[9] गेविज्जविमाणावाससयं वीइवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ णं देवाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता । तत्थ णं सुमंगलस्स वि देवस्स अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।
से णं भंते ! सुमंगले देवे ताओ देवलोगाओ[10] •आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! ° महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[11] सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति ॥

---

१. सं० पा०—सहियं जाव अहियासियं ।
२. सं० पा०—वि जाव अहियासियं ।
३. सं० पा०—सहिस्सं जाव अहियासिस्सं ।
४. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि° ।
५. सं० पा०—तेएणं जाव भासरासिं ।
६. भ० १५।१८४।
७. सं० पा०—दसम जाव विचित्तेहिं ।
८. अण जाव (अ, क, ख, ता, ब, स) ।
९. भ० १५।१६५ ।
१०. सं० पा०—देवलोगाओ जाव महाविदेहे ।
११. भ० २।७३ ।

१८६ विमलवाहणे णं भंते ! राया सुमंगलेणं अणगारेण सहये जाव[1] भासरासीकए समाणे कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?

गोयमा ! विमलवाहणे ण राया सुमगलेण अणगारेण सहये जाव भासरासीकए समाणे अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरयसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण ततो अणतरं उव्वट्टित्ता मच्छेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्च पि अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोस-कालट्ठिइयसि[2] नरयसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण तओणतर उव्वट्टित्ता दोच्चं पि मच्छेसु उववज्जिहिति । तत्थ ण वि सत्थवज्झे[3] •दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा छट्ठाए तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण तओहिंतो अणंतरं[4] उव्वट्टित्ता इत्थियासु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाह[5]•वक्कतीए कालमासे काल किच्चा° दोच्चं पि छट्ठाए तमाए पुढवीए उक्कोसकाल[6]•ट्ठिइयंसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण तओहिंतो अणंतर° उव्वट्टित्ता दोच्चं पि इत्थियासु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे[7] •दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा पचमाए धूमप्पभाए पुढवीए उक्कोसकाल[8]•ट्ठिइयसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण ततो अणतर° उव्वट्टित्ता उरएसु उववज्जिहिति । तत्थ वि ण सत्थ-वज्झे[9] •दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा दोच्चं पि पचमाए[10] •धूमप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण तओहिंतो अणतर° उव्वट्टित्ता दोच्च पि उरएसु उववज्जिहिति[11] । •तत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि[12] •नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण ततो अणतर° उव्वट्टित्ता सीहेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थ-वज्झे[13]• दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा दोच्च पि चउत्थीए पक[14]•-

---

१. भ० १५।१८४।
२. °ट्ठिईयसि (ता, म)।
३. स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
४. जाव (अ क, ख, ता, व, म, स)।
५. स० पा०—दाह जाव दोच्च।
६. स० पा०—उक्कोसकाल जाव उव्वट्टित्ता।
७. स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
८. स० पा०—उक्कोसकाल जाव उव्वट्टित्ता।
९. स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
१०. स० पा०—पचमाए जाव उव्वट्टित्ता।
११. स० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा।
१२. स० पा०—उक्कोसकालट्ठिइयसि जाव उव्वट्टित्ता।
१३. स० पा०—तहेव जाव किच्चा।
१४. स० पा०—पक जाव उव्वट्टित्ता।

प्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।
से णं तओहिंतो अणंतरं° उव्वट्टित्ता दोच्चं पि सीहेसु उववज्जिहिति[1]। •तत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उक्कोसकाल[2]•ट्ठिइयसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।
से ण ततो अणतर° उव्वट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिति। तत्थ वि ण सत्थ-वज्झे[3]• दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा दोच्च पि तच्चाए वालुय[4]-प्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।
से ण तओणतर° उव्वट्टित्ता दोच्च पि पक्खीसु उववज्जिहिति[5]। •तत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा दोच्चाए सक्करप्पभाए[6] •पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।
से णं ततो अणतर° उव्वट्टित्ता सिरीसवेसु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थ[7]•वज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा दोच्च पि दोच्चाए सक्करप्पभाए[8] •पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।
से ण तओणतरं° उव्वट्टित्ता दोच्चं पि सिरीसवेसु उववज्जिहिति[9]। •तत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति[10]।
•से ण ततो अणतर° उव्वट्टित्ता सण्णीसु उववज्जिहिति। तत्थ वि ण सत्थ-वज्झे[11] •दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा असण्णीसु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे[12] •दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा दोच्च पि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठिइयसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।
से ण ततो अणतरं[13] उव्वट्टित्ता जाइं इमाइ खहयरविहाणाइ भवति, तं जहा—चम्मपक्खीणं, लोमपक्खीण, समुग्गपक्खीण, विययपक्खीणं, तेसु अणेगसयसह-स्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।
सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल किच्चा जाइ इमाइ

१. सं० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा।
२. स० पा०—उक्कोसकाल जाव उव्वट्टित्ता।
३. स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
४. स० पा०—वालुय जाव उव्वट्टित्ता।
५. स० पा० —उववज्जिहिति जाव किच्चा।
६. स० पा०—सक्करप्पभाए जाव उव्वट्टित्ता।
७. स० पा०—सत्थ जाव किच्चा।
८. स० पा०—सक्करप्पभाए जाव उव्वट्टित्ता।
९. स० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा।
१०. स० पा०—उववज्जिहिति जाव उव्वट्टित्ता।
११ स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
१२. स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
१३. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।

भुयपरिसप्पविहाणाइं भवंति, तं जहा—गोहाणं, नउलाणं, जहा पण्णवणापए जाव[1] जाहगाण चउप्पाइयाणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो[2] •उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं॰ किच्चा जाइं इमाइं उरपरिसप्पविहाणाइ भवंति, तं जहा—अहीणं, अयगराणं, आसालियाणं, महोरगाणं, तेसु अणेगसयसह[3]•स्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं॰ किच्चा जाइं इमाइं चउप्पदविहाणाइ भवंति, तं जहा—एगखुराणं, दुखुराणं, गंडीपदाणं, सण-हप्पदाणं[4], तेसु अणेगसयसहस्स[5]•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे काल॰ किच्चा जाइं इमाइं जलयरविहाणाइ भवंति, त जहा—मच्छाणं, कच्छभाणं जाव[6] सुसुमाराणं, तेसु अणेगसयसहस्स[7]•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं॰ किच्चा जाइं इमाइं चउरिंदियविहाणाइं भवंति, त जहा—अंधियाणं, पोत्तियाणं, जहा पण्णवणापदे जाव[8] गोमयकीडाण, तेसु अणेगसय[9]•सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं॰ किच्चा जाइं इमाइं तेइंदियविहाणाइं भवंति, तं जहा—उवचियाणं जाव[10] हत्थिसोंडाणं, तेसु अणेग[11]•सयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति॥

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं॰ किच्चा जाइं इमाइं बेइंदियविहाणाइ भवंति, त जहा—पुलाकिमियाणं जाव[12] समुद्दलिक्खाणं, तेसु

१. प० १।
२. स० पा०—सेस जहा खहचराणं जाव किच्चा।
३. स० पा०—अणेगसयसह जाव किच्चा।
४. सणहप्फदाण (अ, ता, स)।
५. स० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा।
६. प० १।
७. स० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा।
८. प० १।
९. स० पा०—अणेगसय जाव किच्चा।
१०. प० १।
११. स० पा०—अणेग जाव किच्चा।
१२. प० १।

अणेगसय[१]•सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा० जाइं इमाइं वणस्सइविहाणाइं भवंति, त जहा—रुक्खाणं, गुच्छाणं जाव[२] कुहणाण, तेसु अणेगसय[३]•सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो० पच्चायाइस्सइ—उस्सन्नं च णं कडुयरुक्खेसु, कडुयवल्लीसु।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे[४] •दाहवक्कंतीए[५] कालमासे कालं० किच्चा जाइं इमाइं वाउक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा—पाईणवायाण जाव[६] सुद्धवायाण तेसु अणेगसयसहस्स[७]•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे काल० किच्चा जाइं इमाइं तेउक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा—इंगालाण जाव[८] सूरकंतमणिनिस्सियाण, तेसु अणेगसयसहस्स[९]•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे काल० किच्चा जाइं इमाइं आउक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा-ओसाण[१०] जाव[११] खातोदगाण, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ—उस्सन्नं च णं खारोदएसु खत्तोदएसु।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे[१२] •दाहवक्कतीए कालमासे काल० किच्चा जाइं इमाइं पुढविक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा—पुढवीण, सक्कराणं जाव[१३] सूरकताणं, तेसु अणेगसय[१४]•सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो० पच्चायाहिति—उस्सन्नं च णं खरबायरपुढविक्काइएसु।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे[१५] •दाहवक्कंतीए कालमासे काल० किच्चा रायगिहे नगरे बाहिं खरियत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे[१६]•दाहवक्कंतीए

१. स० पा०—अणेगसय जाव किच्चा।
२. प० १।
३. सं० पा०—अणेगसय जाव पच्चायाइस्सइ।
४. सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
५. 'दाहवक्कतीए' इति पाठः क्वचिद् युज्यते, किन्तु सर्वत्र प्रवाहपाती दृश्यते।
६. प० १।
७. सं० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा।
८. प० १।
९. स० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा।
१०. उस्साण (क, ख, ब)।
११. प० १।
१२. स० पा०—सत्थवज्झे जाव च्चिा।
१३. प० १।
१४. स० पा०—अणेगसय जाव पच्चायाहिति।
१५. सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
१६. स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।

कालमासे कालं॰ किच्चा दोच्चं पि रायगिहे नगरे अंतो खरियत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे[1] •दाहवक्कंतीए कालमासे कालं॰ किच्चा इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले बेभेले सण्णिवेसे माहणकुलंसि दारियत्ताए पच्चायाहिति।

तए णं तं दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं जोव्वणगमणुप्पत्तं पडिरूवएण[2] सुक्केण, पडिरूवएणं विणएण, पडिरूवयस्स भत्तारस्स भारियत्ताए दलइस्सति। सा णं तस्स भारिया भविस्सति—इट्ठा कंता जाव[3] अणुमया, भंडकरंडगसमाणा तेल्लकेला इव सुसंगोविया, चेलपेडा इव सुसंपरिग्गहिया, रयणकरंडओ विव सुसारक्खिया, सुसंगोविया, मा णं सीयं, मा णं उण्हं जाव[4] परिसहोवसग्गा फुसंतु। तए णं सा दारिया अण्णदा कदायि गुव्विणी ससुरकुलाओ कुलघरं निज्जमाणी अंतरा दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा दाहिणिल्लेसु अग्गिकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति।

से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति। तत्थ वि य णं विराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा दाहिणिल्लेसु असुरकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति।

से णं तओहिंतो अणंतरं[5] उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं [6]•लभिहिति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति।॰ तत्थ वि य णं विराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा दाहिणिल्लेसु नागकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति।

से णं तओहिंतो अणंतरं एवं एएणं अभिलावेणं दाहिणिल्लेसु सुवण्णकुमारेसु, एवं विज्जुकुमारेसु, एवं अग्गिकुमारवज्जं[7] जाव[8] दाहिणिल्लेसु थणियकुमारेसु। से णं 'तओहिंतो अणंतरं'[9] उव्वट्टित्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति[10] •लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति। तत्थ वि य णं विराहियसामण्णे जोइसिएसु देवेसु उववज्जिहिति।

से णं तओहिंतो अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति[11], •लभित्ता

---

१. सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
२. पडिरूविएण (अ, क, ख, ता, ब, म) सर्वत्र।
३. भ० २।५२।
४. भ० २।५२।
५. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
६. सं० पा०—तं चेव जाव तत्थ।
७. अग्गिकुमार (ता)।
८. पू० प० २।
९. तओ जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
१०. सं० पा०—लभिहिति जाव विराहियसामण्णे।
११. सं० पा०—लभिहिति जाव अविराहियसामण्णे।

केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइ-हिति। तत्थ वि य णं॰ अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति[1]।

से णं तओहिंतो अणंतर चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति। तत्थ वि णं अविराहियसामण्णे कालमासे काल किच्चा सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उवव-ज्जिहिति।

से णं तओहिंतो एवं जहा सणंकुमारे तहा बंभलोए, महासुक्के, आणए, आरणे।

से णं तओहितो[2] •अणंतरं चय चइत्ता माणुस्सं विग्गह लभिहिति, लभित्ता केवल बोहि बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइ-हिति। तत्थ वि य ण॰ अविराहियसामण्णे कालमासे काल किच्चा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति।

से ण तओहितो अणंतर चयं चइत्ता महाविदेहे वासे जाइ इमाइ कुलाइ भवति— अड्ढाइं जाव[3] अपरिभूयाइं, तहप्पगारेसु कुलेसु पुत्तत्ताए[4] पच्चायाहिति, एवं जहा ओववाइए दढप्पइण्णवत्तव्वया सच्चेववत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा जाव[5] केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिति॥

१८७. तए णं से दढप्पइण्णे केवली अप्पणो तीतद्धं आभोएहिइ, आभोएत्ता समणे निग्गंथे सद्दावेहिति, सद्दावेत्ता एवं वदिहिइ—एव खलु अह अज्जो! इओ चिरातीयाए अद्धाए गोसाले नामं मंखलिपुत्ते होत्था—समणघायए जाव[6] छउमत्थे चेव कालगए, तम्मूलग च ण अह अज्जो अणादीयं अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिए, त मा णं अज्जो! 'तुब्भं केयि'[7] भवतु आयरियपडिणीए उवज्झायपडिणीए आयरियउवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए, मा णं से वि एव चेव अणादीयं अणवदग्ग[8] •दीहमद्धं चाउरंत॰संसारकतार अणुपरियट्टिहिति, जहा णं अहं॥

---

१. अतो अग्रे 'म, स' सङ्केतितादर्शयो: निम्नवर्ती पाठो विद्यते— 'से ण तओहितो अणतर चय चइत्ता माणुस्स विग्गह लभिहिति, केवल बोहिं बुज्झिहिति, तत्थ वि य ण अविरहियसामण्णे कालमासे काल किच्चा ईसाणे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति', किन्तु सौधर्मादिदेवलोकेषु सप्तभवा दृश्यन्ते—षट्सु दाक्षिणात्येषु कल्पेषु सर्वार्थसिद्धेषु च तेन ईशानकल्पस्य पाठ: न सगच्छते।

२. सं॰ पा॰—तओहिंतो जाव अविराहियसामण्णे।

३. ओ॰ सू॰ १४१।

४. पुमत्ताए (ब)।

५. ओ॰ सू॰ १४२-१५३।

६. भ॰ १५।१४१।

७. तुम केवि (ता)।

८. स॰ पा॰—अणवदग्गं जाव ससार॰।

१८८. तए णं ते समणा निग्गंथा दढप्पइण्णस्स केवलिस्स अंतिय एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीया तत्था तसिया ससारभउव्विग्गा दढप्पइण्ण केवलिं वदिहिति नमंसिहिति, वदित्ता नमसित्ता तस्स ठाणस्स आलोएहिति[1] पडिक्कमिहिति निंदिहिति जाव[2] अहारिय पायच्छित्त तवोकम्म पडिवज्जिहिति ॥

१८९. तए ण से दढप्पइण्णे केवली बहूइ वासाइ केवलिपरियागं पाउणिहिति, पाउणित्ता अप्पणो आउसेस जाणेत्ता भत्त पच्चक्खाहिति, एवं जहा ओववाइए जाव[3] सव्वदुक्खाणमंत काहिति ॥

१९०. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[4] विहरइ ॥

---

१. आलोइएहिति (स)।
२. भ० ८।२५१।
३. ओ० सू० १५४।
४. भ० १।५१।

सोलसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. अहिगरणि २. जरा ३. कम्मे, ४. जावतियं ५. गंगदत्त ६. सुमिणे य ।
७.उवओग८.लोग९.बलि[1]१०.ओहि,११.दीव १२.उदही१३ दिसा१४.थणिते[2]।१।

वाउयाय-पदं

१. तेणं कालेण तेण समएणं रायगिहे जाव[3] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! अधिकरणिसि वाउयाए वक्कमति ?
हंता अत्थि ॥

२. से भंते ! कि पुट्ठे उद्दाइ ? अपुट्ठे उद्दाइ ?
गोयमा ! पुट्ठे उद्दाइ, नो अपुट्ठे उद्दाइ ॥

३. से भंते ! कि ससरीरी निक्खमइ ? असरीरी निक्खमइ ?
[4]°गोयमा ! सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥

४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! वाउयायस्स णं चत्तारि सरीरया पण्णत्ता, त जहा—ओरालिए, वेउव्विए, तेयए, कम्मए, । ओरालिय-वेउव्वियाइं विप्पजहाय तेयय-कम्मएहि निक्खमइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥°

---

१. बलि (क, ब); पलि (ता) ।

२. थणिया (ता, स) ।

३. भ० १।४-१० ।

४. सं० पा०—एवं जहा खदए जाव से तेणट्ठेणं नो असरीरी निक्खमइ; स्पृष्टः स्वकायशस्त्रादिना सशरीरश्च कडेवरान्निष्क्रामति कार्म्मणाद्यपेक्षया औदारिकाद्यपेक्षया त्वशरीरीति (वृ); पूरितः पाठः अस्य वृत्तिव्याख्यानस्य संवादी वर्तते । आदर्शानां संक्षिप्तपाठे 'नोअसरीरी' ति पाठो लभ्यते । असौ वृत्तिव्याख्यानात् भिन्नोस्ति ।

अगणिकाय-पदं

५. इंगालकारियाए णं भंते ! अगणिकाए केवतियं कालं संचिट्ठइ ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि राइंदियाइं । अण्णे वि तत्थ वाउयाए वक्कमति, न विणा वाउयाएणं अगणिकाए उज्जलति ॥

कतिकिरिय-पदं

६. पुरिसे णं भंते ! अयं अयकोट्ठंसि अयोमएणं संडासएणं उव्विहमाणे वा पव्विहमाणे वा कतिकिरिए ?

गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे अयं अयकोट्ठंसि अयोमएणं संडासएणं उव्विहति वा पव्विहति वा, ताव च णं से पुरिसे काइयाए जाव[1] पाणाइवायकिरियाए—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिं पि णं जीवाणं सरीरेहिंतो अए निव्वत्तिए, अयकोट्ठे निव्वत्तिए, संडासए निव्वत्तिए, इंगाला निव्वत्तिया, इंगालकड्ढणी निव्वत्तिया, भत्था निव्वत्तिया, ते वि णं जीवा काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥

७. पुरिसे णं भंते ! अयं अयकोट्ठाओ अयोमएणं संडासएणं गहाय अहिकरणिंसि उक्खिव्वमाणे वा निक्खिव्वमाणे वा कतिकिरिए ?

गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे अयं अयकोट्ठाओ[2] •अयोमएणं संडासएणं गहाय अहिकरणिंसि उक्खिवइ वा° निक्खिवइ वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिं पि णं जीवाणं सरीरेहिंतो अयो निव्वत्तिए, संडासए निव्वत्तिए, चम्मेट्ठे निव्वत्तिए, मुट्ठिए निव्वत्तिए, अधिकरणी निव्वत्तिया, अधिकरणिखोडी निव्वत्तिया, उदगदोणी निव्वत्तिया, अधिकरणसाला निव्वत्तिया, ते वि णं जीवा काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥

अधिकरणी-अधिकरण-पदं

८. जीवे णं भंते ! किं अधिकरणी ? अधिकरणं ?

गोयमा ! जीवे अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ॥

९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवे अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ?

---

१. भ० १।३६५ ।

२. सं० पा०—अयकोट्ठाओ जाव निक्खिवइ ।

गोयमा ! अविरतिं पडुच्च। से तेणट्ठेणं[1] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवे अधिकरणी वि°, अधिकरण पि ॥

१०. नेरइए णं भंते ! कि अधिकरणी ? अधिकरणं ?
गोयमा ! अधिकरणी वि, अधिकरणं पि। एव जहेव जीवे तहेव नेरइए वि। एवं निरंतरं जाव[2] वेमाणिए ॥

११. जीवे ण भंते ! कि साहिकरणी ? निरहिकरणी[3] ?
गोयमा ! साहिकरणी, नो निरहिकरणी ॥

१२. से केणट्ठेण—पुच्छा।
गोयमा ! अविरति पडुच्च। से तेणट्ठेणं जाव नो निरहिकरणी। एवं जाव वेमाणिए ॥

१३. जीवे णं भंते ! कि आयाहिकरणी ? पराहिकरणी ? तदुभयाहिकरणी ?
गोयमा ! आयाहिकरणी वि, पराहिकरणी वि, तदुभयाहिकरणी वि ॥

१४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जाव तदुभयाहिकरणी वि ?
गोयमा ! अविरति पडुच्च। से तेणट्ठेण जाव तदुभयाहिकरणी वि। एवं जाव वेमाणिए ॥

१५. जीवाणं भंते ! अधिकरणे कि आयप्पयोगनिव्वत्तिए ? परप्पयोगनिव्वत्तिए ? तदुभयप्पयोगनिव्वत्तिए ?
गोयमा ! आयप्पयोगनिव्वत्तिए वि, परप्पयोगनिव्वत्तिए वि, तदुभयप्पयोग-निव्वत्तिए वि ॥

१६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ?
गोयमा ! अविरति पडुच्च। से तेणट्ठेणं जाव तदुभयप्पयोगनिव्वत्तिए वि। एवं जाव वेमाणियाणं ॥

१७. कति णं भंते ! सरीरगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच सरीरगा पण्णत्ता, त जहा—ओरालिए[4], •वेउव्विए, आहारए, तेयए°, कम्मए ॥

१८. कति णं भते ! इंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच इदिया पण्णत्ता, तं जहा—सोइदिए[5], •चक्खिदिए, घाणिदिए, रसिदिए°, फासिदिए ॥

१९. कतिविहे णं भंते ! जोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे जोए पण्णत्ते, तं जहा—मणजोए, वइजोए, कायजोए ॥

---

१. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव अधिकरण।
२. पू० प० २।
३. निराधिकरणी (अ, ख, ता, ब, स)।
४. सं० पा०—ओरालिए जाव कम्मए।
५. स० पा०—सोइदिए जाव फासिदिए।

२०. जीवे णं भंते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी ? अधिकरणं ?
गोयमा ! अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ॥

२१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ?
गोयमा ! अविरतिं पडुच्च । से तेणट्ठेण जाव अधिकरणं पि ॥

२२. पुढविकाइएणं णं भंते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी ? अधिकरणं ?
एवं चेव । एवं जाव मणुस्से । एवं वेउव्वियसरीरं पि, नवरं—'जस्स अत्थि'[1] ॥

२३. जीवे णं भंते ! आहारगसरीरं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी—पुच्छा ।
गोयमा ! अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ॥

२४. से केणट्ठेणं जाव अधिकरणं पि ?
गोयमा ! पमायं पडुच्च । से तेणट्ठेणं जाव अधिकरणं पि । एवं मणुस्से वि । तेयासरीरं जहा ओरालियं, नवरं—सव्वजीवाणं भाणियव्वं । एवं कम्मगसरीरं पि ॥

२५. जीवे णं भंते ! सोइंदियं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी ? अधिकरणं ?
एवं जहेव ओरालियसरीरं तहेव सोइंदियं पि भाणियव्वं, नवरं—जस्स अत्थि सोइंदियं । एवं[2] चक्खिदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाण वि, नवरं—जाणियव्वं जस्स जं अत्थि ॥

२६. जीवे णं भंते ! मणजोगं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी ? अधिकरणं ?
एवं जहेव सोइंदियं तहेव निरवसेसं । वइजोगो एवं चेव, नवरं—एगिंदिय-वज्जाणं । एवं कायजोगो वि, नवरं—सव्वजीवाणं जाव वेमाणिए ।

२७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

बीओ उद्देसो

जीवाणं जरा-सोग-पदं

२८. रायगिहे जाव[4] एवं वयासी—जीवाणं भंते ! किं जरा ? सोगे ?
गोयमा ! जीवाणं जरा वि, सोगे वि ॥

---

१. जस्सत्थि (अ) ।
२. एवं सोइंदिय (अ, क, ख, ता, व, म) ।
३. भ० १।५१ ।
४. भ० १।४-१० ।

२६. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ[1]—•जीवाणं जरा वि०, सोगे वि ?
गोयमा ! जे णं जीवा सारीरं वेदणं वेदेति तेसि णं जीवाणं जरा, जे णं जीवा माणसं वेदण वेदेति तेसि णं जीवाणं सोगे। से तेणट्ठेणं[2] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवाणं जरा वि०, सोगे वि। एवं नेरइयाण वि। एवं जाव[3] थणियकुमाराणं ॥

३०. पुढविकाइयाणं भंते ! किं जरा ? सोगे ?
गोयमा ! पुढविकाइयाणं जरा, नो सोगे ॥

३१. से केणट्ठेणं[4] •भंते ! एवं वुच्चइ—पुढविकाइयाणं जरा०, नो सोगे ?
गोयमा ! पुढविकाइया णं सारीरं वेद ण वेदेति, नो माणसं वेदणं वेदेति। से तेणट्ठेण[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—पुढविकाइयाणं जरा०, नो सोगे। एवं जाव चउरिंदियाणं। सेसाणं जहा जीवाणं जाव वेमाणियाणं ॥

३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[6] पज्जुवासति ॥

सक्कस्स ओग्गह-अणुजाणणा-पदं

३३. तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे जाव[7] दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ। इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विपुलेणं ओहिणा आभोएमाणे-आभोएमाणे पासति, 'एत्थ णं'[8] समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे दीवे। एवं जहा ईसाणे तइयसए तहेव सक्के वि, नवरं—आभिओगे ण सद्दावेति, 'हरी पायत्ताणियाहिवई',[9] सुघोसा[10] घंटा, पालओ विमाणकारी, पालगं विमाणं, उत्तरिल्ले निज्जाणमग्गे, दाहिणपुरत्थिमिल्ले[11] रतिकरपव्वए, सेसं तं चेव जाव[12] नामगं सावेत्ता पज्जुवासति। धम्मकहा जाव[13] परिसा पडिगया ॥

३४. तए णं से सक्के देविंदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कतिविहे णं भंते ! ओग्गहे पण्णत्ते ?

---

१. सं० पा०—वुच्चइ जाव सोगे।
२. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव सोगे।
३. पू० प० २।
४. सं० पा०—केणट्ठेण जाव जरा।
५. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो।
६. भ० १।५१।
७. भ० ३।१०६।
८. यत्थ (क, ख, ब); यत्था (ता)।
९. पायत्ताणियाहिवई हरी (ख); हरी य पाय० (ब)।
१०. सुघोस णं (ता)।
११. दाहिणिल्ले (ता)।
१२. भ० ३।२७।
१३. ओ० सू० ७१-७६।

सक्का ! पंचविहे ओग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—देविंदोग्गहे, रायोग्गहे, गाहावइ-ओग्गहे, सागारियओग्गहे, साहम्मिओग्गहे[1]।

जे इमे भंते ! अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति एएसि णं ओग्गहं अणुजाणामीति कट्टु समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव[2] दिव्वं जाणविमाणं दुरुहति, दुरुहित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥

सक्क-संबंधि-वागरण-पदं

३५. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जण्णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया तुब्भे[3] एवं वदइ, सच्चे णं एसमट्ठे[4] ?

हंता सच्चे ॥

३६. सक्के णं भंते ! देविंदे देवराया किं सम्मावादी ? मिच्छावादी ?

गोयमा ! सम्मावादी, नो मिच्छावादी ॥

३७. सक्के णं भंते ! देविंदे देवराया किं सच्चं भासं भासति ? मोसं भासं भासति ? सच्चामोसं भासं भासति ? असच्चामोसं भासं भासति ?

गोयमा ! सच्चं पि भासं भासति जाव असच्चामोसं पि भासं भासति ॥

३८. सक्के णं भंते ! देविंदे देवराया किं सावज्जं भासं भासति ? अणवज्जं भासं भासति ?

गोयमा ! सावज्जं पि भासं भासति, अणवज्जं पि भासं भासति ॥

३९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सक्के देविंदे देवराया सावज्जं पि[5] •भासं भासति•, अणवज्जं पि भासं भासति ?

गोयमा ! जाहे णं सक्के देविंदे देवराया सुहुमकायं अणिज्जूहित्ता[6] णं भासं भासति ताहे णं सक्के देविंदे देवराया सावज्जं भासं भासति, जाहे णं सक्के देविंदे देवराया सुहुमकायं निज्जूहित्ता णं भासं भासति ताहे णं सक्के देविंदे देवराया अणवज्जं भासं भासति। से तेणट्ठेणं[7] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—सक्के देविंदे देवराया सावज्जं पि भासं भासति, अणवज्जं पि भासं• भासति ॥

४०. सक्के णं भंते ! देविंदे देवराया किं भवसिद्धीए ? अभवसिद्धीए ? सम्मदिट्ठीए ? मिच्छदिट्ठीए ? परित्तसंसारिए ? अणंतसंसारिए ? सुलभबोहिए ? दुल्लभबोहिए ? आराहए ? विराहए ? चरिमे ? अचरिमे ?

---

१. साहम्मियओग्गहे (अ, स)।
२. तामेव (ता, म)।
३. तुब्भे णं (अ, म)।
४. एतमट्ठं (ता)।
५. सं० पा०—सावज्जं पि जाव अणवज्जं।
६. अणिजूहित्ता (अ)।
७. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव भासति।

गोयमा ! सक्के णं देविंदे देवराया भवसिद्धीए, नो अभवसिद्धीए। सम्मदिट्ठीए, नो मिच्छदिट्ठीए। परित्तससारिए, नो अणतससारिए। सुलभबोहिए, नो दुल्लभवोहिए। आराहए, नो विराहए। चरिमे, नो अचरिमे। एव जहा मोउ-द्देसए सणंकुमारे जाव[1] नो अचरिमे ॥

चेय-अचेयकड-कम्म-पदं

४१. जीवाणं भते ! कि चेयकडा[2] कम्मा कज्जंति ? अचेयकडा कम्मा कज्जंति ?
गोयमा ! जीवाण चेयकडा[3] कम्मा कज्जंति, नो अचेयकडा कम्मा कज्जंति ॥

४२. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ[4]—°जीवाण चेयकडा कम्मा कज्जंति, नो अचेय-कडा कम्मा° कज्जति ?
गोयमा ! जीवाणं आहारोवचिया पोग्गला, बोंदिचिया पोग्गला, कलेवरचिया पोग्गला तहा तहा णं ते पोग्गला परिणमति, नत्थि अचेयकडा कम्मा समणाउसो ! दुट्ठाणेसु, दुसेज्जासु, दुन्निसीहियासु तहा तहा णं ते पोग्गला परिणमति, नत्थि अचेयकडा कम्मा समणाउसो ! आयंके से वहाए होति, सकप्पे से वहाए होति, मरणते से वहाए होति तहा तहा णं ते पोग्गला परिणमंति, नत्थिअचेयकडा कम्मा समणाउसो ! से तेणट्ठेण[5] °गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवाणं चेयकडा कम्मा कज्जति, नो अचेयकडा° कम्मा कज्जति। एवं नेरइयाण वि। एवजाव[6] वेमाणियाण ॥

४३. सेवं भंते ! सेवं भते ! त्ति जाव[7] विहरइ ॥

तइओ उद्देसो

कम्म-पदं

४४. रायगिहे जाव[8] एवं वयासी—कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तजहा—नाणावरणिज्जं जाव[9] अंतराइयं, एव जाव[10] वेमाणियाणं ॥

---

१. भ० ३।७३।
२. चेत° (व)।
३. चेदे° (ता)।
४. सं० पा०—वुच्चइ जाव कज्जति।
५. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव कज्जति।
६. पू० प० २।
७. भ० १।५१।
८. भ० १।४-१०।
९. भ० ६।३३।
१०. पू० प० २।

४५. जीवे णं भंते ! नाणावरणिज्जं कम्मं वेदेमाणे कति कम्मपगडीओ वेदेति ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ—एवं जहा पण्णवणाए वेदावेउद्देसओ[1] सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो। वेदाबंधो[2] वि तहेव, बंधावेदो[3] वि तहेव, बंधाबंधो[4] वि तहेव भाणियव्वो जाव वेमाणियाणं ति[5] ॥

४६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

अंसिया-छेदणे वेज्जस्स किरिया-पदं

४७. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदायि रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

४८. तेणं कालेणं तेणं समएणं उल्लुयतीरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[6]। तस्स णं उल्लुयतीरस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए, एत्थ णं एगजंबुए[7] नामं चेइए होत्था—वण्णओ[8]। तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे[9] •गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे° एगजंबुए समोसढे जाव[10] परिसा पडिगया ॥

४९. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं[11] •तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणस्स तस्स णं पुरत्थिमेणं अवड्ढं दिवसं नो कप्पति हत्थं वा पादं वा बाहं वा ऊरुं वा आउंटावेत्तए[12] वा पसारेत्तए वा, पच्चत्थिमेणं से अवड्ढं दिवसं कप्पति हत्थं वा[13] •पादं वा बाहं वा° ऊरुं वा आउंटावेत्तए वा पसारेत्तए वा। तस्स णं अंसियाओ लंबंति। तं च वेज्जे अदक्खु। ईसिं पाडेति, पाडेत्ता अंसियाओ छिंदेज्जा। से नूणं भंते ! जे छिंदति तस्स किरिया कज्जति, जस्स छिज्जति नो तस्स किरिया कज्जति, णण्णत्थेगेणं धम्मंतराएणं[14] ?

---

१. प० २७।
२. प० २६।
३. प० २५।
४. प० २४।
५. इह संग्रहगाथा क्वचिद् दृश्यते—
वेयावेओ पढमो, वेयावंधो य बीयओ होइ।
बंधावेओ तइओ, चउत्थओ बंधबंधो उ ॥
(वृ)।
६. ओ० सू० १।
७. एगजंबूए (स)।
८. ओ० सू० २-१३।
९. सं० पा०—चरमाणे जाव एगजंबुए।
१०. भ० ११७७।
११. सं० पा०—अणिक्खित्तेणं जाव आयावेमाणस्स।
१२. आउट्टा° (क, ता); आउंट्टा° (स)।
१३. सं० पा०—हत्थं वा जाव ऊरुं।
१४. °राइएणं (स)।

हंता गोयमा ! जे छिंदति[1] °तस्स किरिया कज्जति, जस्स छिज्जति नो तस्स किरिया कज्जति, णण्णत्थेगेणं° धम्मंतराएणं ॥

५०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

चउत्थो उद्देसो

नेरइयाणं निज्जरा-पदं

५१. रायगिहे जाव[3] एव वयासी—

जावतियं णं भंते ! अन्नगिलायए समणे निग्गथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरइया वासेण वा वासेहिं वा वाससएण[4] वा खवयंति ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

जावतियं णं भंते ! चउत्थभत्तिए समणे निग्गथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरइया वाससएण वा वाससएहिं वा वाससहस्सेण[5] वा खवयति ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

जावतियं ण भते ! छट्ठभत्तिए समणे निग्गथे कम्म निज्जरेति एवतियं कम्म नरएसु नेरइया वाससहस्सेण वा वाससहस्सेहिं वा वाससयसहस्सेण वा खवयति ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

जावतियं णं भते ! अट्ठमभत्तिए समणे निग्गथे कम्म निज्जरेति एवतिय कम्मं नरएसु नेरइया वाससयसहस्सेण वा वाससयसहस्सेहि वा वासकोडीए वा खवयति ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

जावतियं णं भंते ! दसमभत्तिए समणे निग्गंथे कम्म निज्जरेति एवतियं कम्म नरएसु नेरइया वासकोडीए वा वासकोडीहि वा वासकोडाकोडीए वा खवयति ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५२. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जावतिय अन्नगिलायए समणे निग्गथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्म नरएसु नेरइया वासेण वा वासेहिं वा वाससएण वा नो खवयति, जावतियं चउत्थभत्तिए—एवं तं चेव पुव्वभणियं उच्चारेयव्वं जाव वासकोडाकोडीए वा नो खवयंति ?

---

१. स० पा०—छिंदति जाव धम्मतराएण ।

२. भ० १।५१ ।

३. भ० १।४।१० ।

४. वाससएहि (अ, क, ता, म, स) ।

५. वाससहस्सेहिं (क, ता, ब) ।

गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे जुण्णे जराजज्जरियदेहे सिढिलतयावलि-तरंग-संपिणद्धगत्ते[1] पविरल-परिसडिय-दंतसेढी उण्हाभिहए तण्हाभिहए आउरे झुसिए[2] पिवासिए दुब्बले किलंते एगं मह कोसंब-गंडियं सुक्क[3] जडिल[4] गंठिल्लं चिक्कणं वाइद्ध अपत्तियं मुंडेण परसुणा अक्कमेज्जा, तए णं से पुरिसे महंताइं-महंताइं सद्दाइं करेइ, नो महंताइं-महंताइं दलाइं अवद्दालेइ, एवामेव गोयमा ! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइं, चिक्कणीकयाइं, [5]•सिलिट्ठीकयाइं, खिलीभूताइ भवंति । संपगाढं पि य णं ते वेदणं वेदेमाणा नो महानिज्जरा॰ नो महापज्जवसाणा भवंति ।

से जहानामए केइ पुरिसे अहिकरणिं आउडेमाणे महया[6]-•महया सद्देणं, महया-महया घोसेणं, महया-महया परंपराघाएणं नो संचाएइ, तीसे अहिगरणीए केइ अहाबायरे पोग्गले परिसाडित्तए, एवामेव गोयमा ! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइ, चिक्कणीकयाइ, सिलट्ठीकयाइ खिलीभूताइ भवंति । संपगाढं पि य ण ते वेदण वेदेमाणा नो महानिज्जरा॰ नो महापज्जवसाणा भवंति ।

से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे बलव जाव[7] मेहावी निउणसिप्पोवगए एग महं सामलि-गंडियं उल्ल अजडिलं अगंठिल्ल अचिक्कण अवाइद्ध सपत्तियं तिक्खेण परसुणा अक्कमेज्जा, तए ण से पुरिसे नो महंताइं-महंताइ सद्दाइं करेति, महं-ताइ-महंताइ दलाइ अवद्दालेति, एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं अहाबादराइं कम्माइं सिढिलीकयाइं, निट्ठियाइ कयाइं, विप्परिणामियाइ[8] खिप्पामेव परिविद्धत्थाइ भवंति जावतियं तावतियं[9] •पि ण ते वेदण वेदेमाणा महानिज्जरा॰ महापज्जवसाणा भवंति ।

से जहा वा केइ पुरिसे सुक्कतणहत्थगं जायतेयंसि पक्खिवेज्जा—[10]•से नूणं गोयमा ! से सुक्के तणहत्थगए जायतेयंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जति ?

हंता मसमसाविज्जति ।

एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं अहाबायराइं कम्माइं, सिढिलीकयाइं, निट्ठियाइ कयाइं, विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइ भवंति । जावतियं तावतियं पि णं ते वेदणं वेदेमाणा महानिज्जरा महापज्जवसाणा भवंति ।

---

१. सविण॰ (ख, ता) ।
२ झुंभित (क, ख, म); जुज्झिते (व); झूरितः इति टीकाकार. (वृ) ।
३. सुक्ख (अ, ख, ता, ब) ।
४. जटिल (अ) ।
५. सं॰ पा॰—एव जहा छट्ठसए जाव नो ।
६. सं॰ पा॰ महया जाव नो ।
७. भ॰ १४।३ ।
८. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
९. सं॰ पा॰—तावतिय जाव महापज्जवसाणा ।
१०. सं॰ पा॰—एव जहा छट्ठसए तहा अयोक-वल्ले वि जाव महापज्जवसाणा ।

से जहानामए केइ पुरिसे तत्तंसि अयकवल्लसि उदगविंदु पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! से उदगबिंदू तत्तसि अयकवल्लसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव विद्धंसमागच्छइ ?

हंता विद्धंसमागच्छइ ।

एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं अहाबायराइं कम्माइं सिढिलीकयाइं, निट्ठियाइं कयाइं, विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइं भवंति । जावतियं तावतियं पि णं ते वेदणं वेदेमाणा महानिज्जरा° महापज्जवसाणा भवंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जावतियं अन्नगिलायए[1] समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति तं चेव जाव वासकोडाकोडीए वा नो खवयति ॥

५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[2] विहरइ ॥

पंचमो उद्देसो

सक्कस्स उक्खित्तपसिणवागरण-पदं

५४. तेणं कालेणं तेणं समएणं उल्लुयतीरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[3]। एगजंबुए चेइए—वण्णओ[4]। तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव[5] परिसा पज्जुवासति । तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी—एवं जहेव बितियउद्देसए तहेव दिव्वेणं जाणविमाणेणं आगओ जाव[6] जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[7] °समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—

देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव[8] महेसक्खे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता[9] पभू आगमित्तए ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू आगमित्तए ? हंता पभू ।

---

१. अन्नइलायए (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. भ० १।५१ ।
३. ओ० सू० १ ।
४. ओ० सू० २-१३ ।
५. ओ० सू० २२-५२ ।
६. भ० १६।३३ ।
७. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव नमंसित्ता ।
८. भ० १।३३९ ।
९. अपरियादिइत्ता (क, ख, ब) ।

देवे ण भते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे एवं एएणं अभिलावेण गमित्तए वा, भासित्तए वा, विआगरित्तए वा, उम्मिसावेत्तए वा, निमिसावेत्तए वा, आउंटावेत्तए वा, ठाण वा सेज्ज वा निसीहिय वा चेइत्तए वा, विउव्वित्तए वा, परियारेत्तए वा जाव हंता पभू—इमाइ अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता सभतियवदणएण[1] वदति, वंदित्ता तमेव दिव्वं जाणविमाण द्रुहति[2], द्रुहित्ता जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए ।।

गंगदत्तदेवस्स संदब्भे परिणममाण-परिणय-पदं

५५ भतेति ! भगव गोयमे समणं भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—अण्णदा ण भते ! सक्के देविदे देवराया देवाणुप्पियं वंदति नमंसति सक्कारेति जाव[3] पज्जुवासति, किण्ण भते ! अज्ज सक्के देविंदे देवराया देवाणुप्पियं अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइ पुच्छइ, पुच्छित्ता संभतियवदणएणं वदइ नमंसइ जाव[4] पडिगए ?

गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएणं महासुक्के कप्पे महासामाणे विमाणे दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा एगविमाणंसि देवत्ताए उववन्ना, त जहा—मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए य, अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नए य ।

तए ण से मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए देवे तं अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नगं देवं एवं वयासी—परिणममाणा पोग्गला नो परिणया, अपरिणया; परिणमंतीति पोग्गला नो परिणया, अपरिणया ।

तए णं से अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नए देवे त मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगं देवं एवं वयासी—परिणममाणा पोग्गला परिणया, नो अपरिणया; परिणमतीति पोग्गला परिणया, नो अपरिणया । त मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगं एव पडिहणइ[5], पडिहणित्ता ओहिं पउजइ, पउजित्ता मम ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता अयमेयारूवे[6] °अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एव खलु समणे भगव महावीरे जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे उल्लुयतीरस्स नगरस्स वहिया एगजबुए चेइए अहापडिरूवं[7] °ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ, त सेय खलु मे समणं भगव महावीर वंदित्ता जाव[8] पज्जुवासित्ता इम एयारूव वागरण पुच्छित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, संपेहेत्ता

१. °वदएण (अ, ख, व, म) ।
२. दुरुहइ (स) ।
३. भ० २।३० ।
४. भ० १६।५४ ।
५. पडिभणइ (ता) ।
६. स० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।
७. स० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ ।
८. भ० २।३० ।

चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं [1]•तिहि परिसाहि, सत्तहिं अणिएहि, सत्तहिं अणियाहिवईहि, सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं बहूहि महासामाणविमाणवासीहि वेमाणिएहि देवेहि देवीहि य सद्धि संपरिवुडे° जाव[2] दुदुहि-निग्घोस-नाइयरवेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे, जेणेव भारहे वासे, जेणेव उल्लुयतीरे[3] नगरे, जेणेव एगजंबुए चेइए, जेणेव ममं अंतिय तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तए ण से सक्के देविंदे देवराया तस्स देवस्स तं दिव्व देविड्ढि दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभागं दिव्व तेयलेस्सं असहमाणे ममं अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइ पुच्छित्ता सभंतियवदणएणं वंदित्ता जाव पडिगए ।।

५६. जाव च ण समणे भगवं महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठं परिकहेति तावं च णं से देवे तं देस हव्वमागए। तए ण से देवे समणं भगवं महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एवं खलु भंते ! महासुक्के कप्पे महासामाणे[4] विमाणे एगे मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए देवे ममं एवं वयासी—परिणममाणा पोग्गला नो परिणया, अपरिणया; परिणमंतीति पोग्गला नो परिणया, अपरिणया। तए ण अहं तं मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगं देवं एव वयासी—परिणममाणा पोग्गला परिणया, नो अपरिणया; परिणमंतीति पोग्गला परिणया, नो अपरिणया, से कहमेयं भते ! एवं ?

५७. गंगदत्तादि[5] ! समणे भगवं महावीरे गगदत्तं देवं एवं वयासी—अहं पि णं गंगदत्ता ! एवमाइक्खामि भासेमि पण्णवेमि परूवेमि—परिणममाणा पोग्गला[6] •परिणया, नो अपरिणया; परिणमतीति पोग्गला परिणया°, नो अपरिणया, सच्चमेसे अट्ठे ।।

५८. तए णं से गंगदत्ते देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समण भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने जाव[7] पज्जुवासति[8] ।।

गंगदत्तदेवस्स अप्पविसए पसिण-पदं

५९. तए णं समणे भगव महावीरे गंगदत्तस्स देवस्स तीसे य[9] •महतिमहालियाए परिसाए° धम्मं परिकहेइ जाव[10] आराहए भवति ।।

---

१. स० पा०—नरियारो जहा सूरियाभस्स जाव।
२. राय० सू० ५८।
३. उल्लुया° (ख, ब, म)।
४. महासमाणे (अ, क, ता, ब)।
५. °दी (ता, ब, म)।
६. स० पा०—पोग्गला जाव नो।
७. भ० १।१०।
८. पज्जुवासति (म)।
९. सं० पा०—तीसे य जाव धम्म।
१०. ओ० सू० ७१-७७।

६०. तए णं से गंगदत्ते देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—अहण्णं भंते ! गंगदत्ते देवे किं भवसिद्धिए ? अभव-सिद्धिए ? [1]°सम्मदिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी ? परित्तसंसारिए ? अणंतसंसारिए ? सुलभबोहिए ? दुल्लभबोहिए ? आराहए ? विराहए ? चरिमे ? अचरिमे ? गंगदत्ताइ ! समणे भगव महावीरे गगदत्तं देव एवं वयासी—गगदत्ता ! तुमण्ण भवसिद्धिए, नो अभवसिद्धिए। सम्मदिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी। परित्त-ससारिए, नो अणतससारिए। सुलभबोहिए, नो दुल्लभबोहिए। आराहए, नो विराहए। चरिमे, नो अचरिमे ।।

गंगदत्तदेवेण नट्ट-उवदंसण-पदं

६१. तए ण से गगदत्ते देवे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठचित्त-माणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए समणं भगवं महावीर वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—तुब्भे णं भंते ! सव्वं जाणह सव्वं पासह, सव्वओ जाणह सव्वओ पासह, सव्वं कालं जाणह सव्वं काल पासह, सव्वे भावे जाणह सव्वे भावे पासह।
जाणंति ण देवाणुप्पिया ! मम पुव्वि वा पच्छा वा ममेयरूवं दिव्वं देविड्ढि दिव्व देवजुइ दिव्व देवाणुभाव लद्ध पत्त अभिसमण्णागयं ति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाण भत्तिपुव्वग गोयमातियाण समणाण निग्गथाण दिव्व देविड्ढि दिव्वं देवजुइ दिव्व देवाणुभाव दिव्व बत्तीसतिवद्ध नट्टविहिं उवदसित्तए ।।

६२. तए ण समणे भगव महावीरे गगदत्तेण देवेण एव वुत्ते समाणे गगदत्तस्स देवस्स एयमट्ठ नो आढाइ, नो परियाणइ, तुसिणीए सचिट्ठति ।।

६३. तए ण से गगदत्ते देवे समण भगव महावीर दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—तुब्भे ण भते ! सव्व जाणह सव्व पासह, सव्वओ जाणह सव्वओ पासह, सव्वं काल जाणह सव्वं काल पासह, सव्वे भावे जाणह सव्वे भावे पासह।
जाणंति ण देवाणुप्पिया ! मम पुव्वि वा पच्छा वा ममेयरूवं दिव्वं देविड्ढि दिव्वं देवजुइ दिव्व देवाणुभाव लद्ध पत्तं अभिसमण्णागयं ति, त इच्छामि णं देवाणुप्पियाण भत्तिपुव्वग गोयमातियाण समणाणं निग्गथाण दिव्वं देविड्ढि दिव्वं देवजुइ दिव्व देवाणुभाव दिव्वं बत्तीसतिबद्ध नट्टविहि उवदसित्तए त्ति कट्टु° जाव बत्तीसतिबद्ध नट्टविहिं उवदसेति, उवदसेत्ता जाव[2] तामेव दिसं पडिगए ।।

---

१. सं० पा०—एव जहा सूरियाभो। २. राय० सू० ६५-१२०।

६४. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं[1] •वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—गंगदत्तस्स णं भंते ! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती[2] •दिव्वे देवाणुभावे कहिं गते ? कहिं° अणुप्पविट्ठे ?
गोयमा ! सरीरं गए, सरीरं अणुप्पविट्ठे, कूडागारसालादिट्ठंतो जाव[3] सरीरं अणुप्पविट्ठे। अहो णं भंते ! गंगदत्ते देवे महिड्ढिए[4] •महज्जुइए महब्बले महायसे° महेसक्खे ॥

गंगदत्तदेवस्स पुव्वभव-पदं

६५. गंगदत्तेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुती से दिव्वे देवाणुभागे किण्णा लद्धे[5] ? •किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? पुव्वभवे के आसी ? किं नामए वा ? किं वा गोत्तेणं ?
कयरंसि वा गामंसि वा नगरंसि वा निगमंसि वा रायहाणीए वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा मडंबंसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आगरंसि वा आसमंसि वा संवाहंसि वा सण्णिवेसंसि वा ?
किं वा दच्चा ? किं वा भोच्चा ? किं वा किच्चा ? किं वा समायरित्ता ?
कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म जण्णं गंगदत्तेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुती से दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए ?

६६. गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणापुरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[6]। सहसंबवणे उज्जाणे—वण्णओ[7]। तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे गंगदत्ते नामं गाहावती परिवसति—अड्ढे जाव[8] बहुजणस्स अपरिभूए ॥

६७. तेणं कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा आदिगरे जाव[9] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं[10], •आगासगएणं छत्तेणं, आगासियाहिं चामराहिं, आगासफालियामएणं सपायवीढेणं सीहासणेणं, धम्मज्झएणं पुरओ° पकड्ढिज्जमाणेणं-पकड्ढिज्जमाणेणं सीसगणसंपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणु-

---

१. सं० पा०—महावीरं जाव एवं ।
२. सं० पा०—देवज्जुती जाव अणुप्पविट्ठे ।
३. राय० सू० १२३ ।
४. सं० पा०—महिड्ढिए जाव महेसक्खे ।
५. सं० पा०—लद्धे जाव गंगदत्तेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए ।
६. ओ० सू० १ ।
७. भ० ११।५७ ।
८. भ० २।९४ ।
९. भ० १।७ ।
१०. सं० पा०—चक्केणं जाव पकड्ढिज्ज° ।

गामं[1] •दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव हत्थिणापुरे नगरे° जेणेव सहसववणे उज्जाणे जाव[2] विहरति। परिसा निग्गया जाव[3] पज्जुवासति ॥

६८ तए ण से गगदत्ते गाहावती इमोसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे ण्हाए[4] कयवलिकम्मे जाव[5] अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेण हत्थिणापुर[6] नगरं मज्झमज्झेण[7] निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसववणे उज्जाणे जेणेव मुणिसुव्वए अरहा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मुणिसुव्वयं अरहं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ जाव[8] तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासति ॥

६९. तए ण मुणिसुव्वए अरहा गगदत्तस्स गाहावतिस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्म परिकहेइ जाव[9] परिसा पडिगया ॥

७०. तए ण से गगदत्ते गाहावती मुणिसुव्वयस्स अरहओ अतियं धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता मुणिसुव्वय अरह वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते ! निग्गथ पावयण जाव[10] से जहेयं तुब्भे वदह, ज नवर देवाणुप्पिया ! जेट्ठपुत्त कुडुवे ठावेमि, तए ण अह देवाणुप्पियाण अतिय मुडे[11] •भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि । अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध ॥

७१ तए ण से गगदत्ते गाहावई मुणिसुव्वएण अरहया एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे मुणिसुव्वय अरह वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता मुणिसुव्वयस्स अरहओ अतियाओ सहसववणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता, जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता विउलं असण-पाण[12]-•खाइम-साइम° उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग[13]-•सयण-सबधि-परियणं° आमतेति, आमतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए जहा पूरणे जाव[14] जेट्ठपुत्त कुडुबे ठावेति । त मित्त-नाइ[15]-•नियग-सयण-सवधि-परियण° जेट्ठपुत्तं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता पुरिससहस्सवाहणि सीयं दुरुहति, दुरुहित्ता मित्त-नाइ-

---

१. स० पा०—गामाणुगाम जाव जेणेव ।
२. भ० १।७।
३. ओ० सू० ५२।
४. जाव (ख, स)।
५ भ० २।९७।
६ हत्थिणपुर (अ, म); हत्थिणाउर (ता, व); हत्थिणागपुर (स)।
७. मज्झेण २ (अ, ख, ता, ब, म)।
८. ओ० सू० ६९।
९. ओ० सू० ७१-७९।
१०. भ० २।५२।
११. स० पा०—मुडे जाव पव्वयामि ।
१२ स० पा०—पाण जाव उवक्खडावेति ।
१३. स० पा०—नियग जाव आमतेति ।
१४ भ० ३।१०२।
१५. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते ।

नियग[1]-•सयण-संबंधि°-परिजणेणं जेट्ठपुत्तेण य समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव[2] दुदुहि-निग्घोसनादितरवेणं हत्थिणागपुरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादिते तित्थगरातिसए पासति । एव जहा उद्दायणे जाव[3] सयमेव आभरणे ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेति, करेत्ता जेणेव मुणिसुव्वए अरहा एवं जहेव उद्दायणे तहेव पव्वइए, तहेव एक्कारस अगाइ अहिज्जइ जाव[4] मासियाए संलेहणाए अत्ताण भूसेइ, भूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा महासुक्के कप्पे महासामाणे विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि जाव[5] गंगदत्तदेवत्ताए उववन्ने ।।

७२. तए णं से गगदत्ते देवे अहुणोववन्नमेत्तए समाणे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तभावं गच्छति, [तं जहा—आहारपज्जत्तीए जाव[6] भासा-मणपज्जत्तीए][7] एवं खलु गोयमा ! गगदत्तेण देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी[8] •सा दिव्वा देवज्जुती से दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए ।।

७३. गगदत्तस्स ण भते ! देवस्स केवतिय काल ठिति पण्णत्ता ?
गोयमा ! सत्तरस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

७४. गंगदत्ते ण भते ! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण[9] •भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! ° महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[10] सव्वदुक्खाण अत काहिति ।।

७५. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति[11] ।।

छट्ठो उद्देसो

सुविण-पदं

७६. कतिविहे ण भंते ? सुविणदसणे[12] पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे सुविणदंसणे पण्णत्ते, तं जहा—अहातच्चे, पताणे, चितासुविणे, तव्विवरीए, अव्वत्तदंसणे[13] ।।

---

१. स० पा०—नियग जाव परिजणेण ।
२. भ० ६।१८२ ।
३. भ० १३।११७ ।
४. भ० ११।११८; ६।१५०, १५१ ।
५. भ० ३।१७ ।
६. भ० ३।१७ ।
७. असौ कोष्ठकवर्तिपाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।
८. सं० पा०—देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए ।
९. स० पा०—आउक्खएणं जाव महाविदेहे ।
१०. भ० २।७३ ।
११. भ० १।५१ ।
१२. सुमिए° (अ) ।
१३. अवत्त° (अ, क, ख, ब) ।

७७. सुत्ते णं भंते ! सुविणं पासति ? जागरे सुविणं पासति ? सुत्तजागरे सुविणं पासति ?
गोयमा ! नो सुत्ते सुविण पासति, नो जागरे सुविण पासति, सुत्तजागरे सुविणं पासति ॥

७८. जीवा णं भंते ! कि सुत्ता ? जागरा ? सुत्तजागरा ?
गोयमा ? जीवा सुत्ता वि, जागरा वि, सुत्तजागरा वि ॥

७९. नेरइयाण भते ! किं सुत्ता—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया सुत्ता, नो जागरा, नो सुत्तजागरा । एवं जाव[1] चउरिंदिया ॥

८० पचिंदियतिरिक्खजोणिया ण भते ! किं सुत्ता—पुच्छा ।
गोयमा ! सुत्ता, नो जागरा, सुत्तजागरा वि । मणुस्सा जहा जीवा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ॥

८१. सवुडे ण भंते ! सुविणं पासति ? असंवुडे सुविण पासति ? सवुडासंवुडे सुविणं पासति ?
गोयमा ! सवुडे वि सुविणं पासति, असंवुडे वि सुविणं पासति, संवुडासवुडे वि सुविण पासति । सवुडे सुविणं पासति अहातच्चं पासति । असवुडे सुविणं पासति तहा वा त होज्जा, अण्णहा वा तं होज्जा । संवुडासवुडे सुविणं पासति [2]°तहा वा तं होज्जा, अण्णहा वा तं होज्जा° ॥

८२. जीवा णं भते ! कि सवुडा ? असंवुडा ? संवुडासंवुडा ?
गोयमा ! जीवा सवुडा वि, असंवुडा वि, संवुडासंवुडा वि । एव जहेव सुत्ताणं दडओ तहेव भाणियव्वो ॥

८३. कति णं भंते ! सुविणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बायालीस सुविणा पण्णत्ता ॥

८४. कति णं भते ! महासुविणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तीसं महासुविणा पण्णत्ता ॥

८५. कति णं भंते ! सव्वसुविणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बावत्तरिं सव्वसुविणा पण्णत्ता ॥

८६. तित्थगरमायरो णं भंते ! तित्थगरंसि गब्भं वक्कममाणंसि कति महासुविणे[3] पासित्ता णं पडिबुज्झंति ?
गोयमा ! तित्थगरमायरो तित्थगरंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति, तं जहा—गय-उसभ जाव[4] सिहिं च ॥

---

१. पू० प० २ ।
२. सं० पा०—एवं चेव ।
३. महासुविणे सुविणे (अ, क, ख, ता, ब) ।
४. भ० ११।१४२ ।

८७. चक्कवट्टिमायरो ण भंते ! चक्कवट्टिंसि गब्भ वक्कममाणंसि कति महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झति ?
गोयमा ! चक्कवट्टिमायरो चक्कवट्टिंसि गब्भं[1] वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं[2] •इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति, तं जहा— गय-उसभ° जाव सिंहिं च ॥

८८. वासुदेवमायरो णं —पुच्छा ।
गोयमा ! वासुदेवमायरो[3] •वासुदेवंसि गब्भं° वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे सत्त महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति ॥

८९. बलदेवमायरो—पुच्छा ।
गोयमा ! बलदेवमायरो जाव एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति ॥

९०. मंडलियमायरो णं भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! मंडलियमायरो जाव एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरं एगं महासुविणं 'पासित्ता णं'[4] पडिबुज्झंति ॥

भगवओ महासुविण-दंसण-पदं

९१. समणे भगवं महावीरे छउमत्थकालियाए अंतिमराइयंसि इमे दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तं जहा—
१. एगं च णं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुविणे पराजियं पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
२. एगं च णं महं सुक्किलपक्खगं पुंसकोइलगं[5] सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
३. एगं च णं महं चित्तविचित्तपक्खगं[6] पुंसकोइलगं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
४. एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
५. एगं च णं महं सेयं गोवग्गं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
६. एगं च णं महं पउमसरं सव्वओ समंता कुसुमियं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
७. एगं च णं 'महं सागरं'[7] उम्मीवीयीसहस्सकलियं भूयाहिं तिण्णं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
८. एगं च णं महं दिणयरं तेयसा जलंतं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

---

१. जाव (अ, ख, म); जाव गब्भं (क, ता, व, स) ।
२. सं० पा०—एवं जहा तित्थगरमायरो जाव ।
३. सं० पा०—वासुदेवमायरो जाव वक्कम° ।
४. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
५. पूसकोइल (अ, क, ख, ता, ब) ।
६. चित्तपक्खगं (क, ता) ।
७. महासागर (अ) ।

९ एगं च णं महं हरिवेरुलियवण्णाभेणं नियगेणं अतेणं माणुसुत्तरं पव्वयं सव्वओ समंता आवेढिय परिवेढिय सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

१० एगं च णं महं मंदरे पव्वए मंदरचूलियाए उवरिं सीहासणवरगयं अप्पाणं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

१. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुविणे पराजियं पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्णं समणेणं भगवया महावीरेणं मोहणिज्जे कम्मे मूलाओ उग्घाइए ।

२. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सुक्किल[1]•पक्खगं पुंसकोइलगं सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे सुक्कज्झाणोवगए विहरति ।

३ जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं चित्तविचित्त[2]•पक्खगं पुंसकोइलगं सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे विचित्तं ससमयपर-समइयं दुवालसंगं गणिपिडगं आघवेति पण्णवेति परूवेति दंसेति निदंसेति उवदंसेति, तं जहा—आयारं, सूयगडं जाव[3] दिट्ठिवायं[4] ।

४. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे दुविहे धम्मे पण्णवेति, तं जहा—अगार-धम्मं वा, अणगारधम्मं वा ।

५ जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सेयं गोवग्ग[5]•सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स चाउव्वण्णाइण्णे समणसंघे, तं जहा—समणा, समणीओ, सावया, सावियाओ ।

६ जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं पउमसरं[6] •सव्वओ समंता कुसुमियं सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे चउव्विहे देवे पण्णवेति, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरे, जोतिसिए, वेमाणिए ।

७. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सागरं[7] •उम्मीवीयीसहस्सकलियं भूयाहिं तिण्णं सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणेणं भगवया महावीरेणं अणा-दीए अणवदग्गे[8] •दीहमद्धे चाउरंते° संसारकंतारे तिण्णे[9] ।

८. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं दिणयरं[10] •तेयसा जलंतं सुविणे पासित्ता

---

१. सं० पा०—सुक्किल जाव पडिबुद्धे ।
२. सं० पा०—चित्तविचित्त जाव पडिबुद्धे ।
३ भ० २०।७५ ।
४. दिट्टिवात (अ, ब); दिट्ठिवाद (ता) ।
५. सं० पा०—गोवग्ग जाव पडिबुद्धे ।
६. सं० पा०—पउमसर जाव पडिबुद्धे ।
७. सं० पा०—सागर जाव पडिबुद्धे ।
८. अणवतग्गे (ब); सं० पा०—अणवदग्गे जाव संसार° ।
९. नित्थिण्णे (अ) ।
१०. सं० पा०—दिणयर जाव पडिबुद्धे ।

ण° पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अणते अणुत्तरे[1] •निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे° केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने ।

९. जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह हरिवेरुलिय[2]•वण्णाभेण नियगेणं अंतेणं माणुसुत्तर पव्वय सव्वओ समता आवेढिय परिवेढिय सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ओराला कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोया सदेवमणुयासुरे लोए परिभमति—इति खलु समणे भगव महावीरे, इति खलु समणे भगव महावीरे ।

१०. जण्णं समणे भगव महावीरे मदरे पव्वए मंदरचूलियाए[3] •उवरिं सीहासण-वरगय अप्पाण सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्ण समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए केवली[4] धम्मं आघवेति[5] •पण्णवेति परूवेति दसेति निदसेति° उवदसेति ।।

सुविण-फल-पदं

९२ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एगं महं हयपतिं वा गयपतिं वा[6] •नरपतिं वा किन्नरपति वा किंपुरिसपति वा महोरगपति वा गंधव्वपति वा° वसभपति वा पासमाणे पासति, दुरुहमाणे दुरुहति, दूरूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव[7] सव्वदुक्खाणं अतं करेति ।।

९३. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एगं महं दामिणिं[8] पाईणपडिणायतं दुहओ समुद्दे पुट्ठं पासमाणे पासति, सवेल्लेमाणे संवेल्लेइ, संवेल्लियमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव[9] बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।।

९४. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं मह रज्जु पाईणपडिणायतं दुहओ लोगंते पुट्ठं पासमाणे पासति, छिंदमाणे छिंदति, छिन्नमिति[10] अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अंतं करेति ।।

९५. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं किण्हसुत्तगं वा[11] •नीलसुत्तगं वा लोहिय-सुत्तगं वा हालिद्दसुत्तगं वा° सुक्किलसुत्तगं वा पासमाणे पासति, उग्गोवेमाणे

---

१. स० पा०—अणुत्तरे जाव केवल° ।
२. सं० पा०—हरिवेरुलिय जाव पडिबुद्धे ।
३. सं० पा०—मदरचूलियाए जाव पडिबुद्धे ।
४. केवलीण (क); केवलिपण्णत्तं (ठा० १०।१०३)
५. स० पा०—आघवेति जाव उवदसेति ।
६ स० पा०—गयपतिं वा जाव वसभपतिं ।
७ भ० १।४४ ।
८. दाम (ख) ।
९. तक्खणामेव अप्पाण (ख); तक्खणा चेव (ता)
१०. छिदणमिति (ता) ।
११. सं० पा०—किण्हसुत्तगं वा जाव सुक्किल° ।

उग्गोवेति, उग्गोवितमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्ग-हणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अंतं करेति ॥

९६ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं अयरासि वा तंवरासि वा तउयरासिं वा सीसगरासिं वा पासमाणे पासति, दुरूहमाणे दुरुहति, दुरूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, दोच्चे भवग्गहणे सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अंत करेति ॥

९७ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं हिरण्णरासि वा सुवण्णरासिं वा रयण-रासिं वा वइररासि वा पासमाणे पासति, दुरुहमाणे[1] दुरुहति, दुरूढमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अंत करेति ॥

९८ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग मह तणरासि वा [2]°कट्ठरासि वा पत्तरासि वा तयरासिं वा तुसरासिं वा भुसरासि वा गोमयरासिं वा° अवकररासि वा पासमाणे पासति, विक्खिरमाणे विक्खिरति, विक्खिण्णमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अंतं करेति ॥

९९ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग मह सरथभ वा वीरणथभवा वसीमूलथभं वा वल्लीमूलथभ वा पासमाणे पासति, उम्मूलेमाणे उम्मूलेति, उम्मूलितमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्व-दुक्खाण अत करेति ॥

१००. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एग मह खीरकुभ वा दधिकुभं वा घयकुभं वा मधुकुभ वा पासमाणे पासति, उप्पाडेमाणे उप्पाडेति, उप्पाडितमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥

१०१ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं सुरावियडकुभ वा सोवीरवियडकुभं वा तेल्लकुभ वा वसाकुभ वा पासमाणे पासति, भिंदमाणे भिंदति, भिन्नमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, दोच्चे भवग्गहणे सिज्झति जाव सव्व-दुक्खाणं अत करेति ॥

१०२ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग मह पउमसरं कुसुमिय पासमाणे पासति, ओगाहमाणे ओगाहति, ओगाढमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥

१०३. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं सागर उम्मीवीयीसहस्सकलियं[3] पासमाणे

---

१. दुरूहमाणे (अ, ख, स) ।

२. स० पा०—जहा तेयनिसग्गे जाव अवकररासिं ।

३. उम्मीवीयी जाव कलियं (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

पासति, तरमाणे तरति, तिण्णमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति ॥

१०४. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग मह भवण सव्वरयणामय पासमाणे पासति, अणुप्पविसमाणे अणुप्पविसति, अणुप्पविट्ठमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥

१०५. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं विमाण सव्वरयणामय पासमाणे पासति, द्रुहमाणे द्रुहति, द्रूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥

गंध-पोग्गल-पदं

१०६. अह भते ! कोट्ठपुडाण वा जाव[1] केयइपुडाण वा अणुवायसि उब्भिज्जमाणाण वा[2] °निब्भिज्जमाणाण वा उक्किरिज्जमाणाण वा विक्किरिज्जमाणाण वा° ठाणाओ वा ठाणं सकामिज्जमाणाण कि कोट्ठे वाति जाव केयई[3] वाति ?
गोयमा ! नो कोट्ठे वाति जाव नो केयई वाति, घाणसहगया पोग्गला वाति[4] ॥

१०७. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[5] ॥

सत्तमो उद्देसो

१०८. कतिविहे ण भंते ! उवओगे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे उवओगे पण्णत्ते, एव जहा उवओगपदं[6] पण्णवणाए तहेव निरवसेस नेयव्व[7], पासणयापदं[8] च नेयव्व[9] ॥

१०९. सेवं भते ! सेवं भंते ! त्ति[10] ॥

---

१. राय० सू० ३० ।
२. स० पा०—उब्भिज्जमाणाण वा जाव ठाणाओ, रायपसेणइयसुत्ते (३०) 'उब्भिज्जमाणाण' इत्यादीनि पदानि किञ्चिदधिकानि भिन्नान्यपि च लभ्यन्ते ।
३. केयती (अ, क, म, स) ।
४. वाति (अ, क, ब, म, स) ।
५. भ० १।५१ ।
६. प० २९ ।
७. भाणियव्व (स) ।
८. पासणापद (अ, क, ख, ता, ब, म), प० ३० ।
९. निरवसेस नेयव्व (स) ।
१०. भ० १।५१ ।

अट्ठमो उद्देसो

लोगस्स चरिमंते जीवाजीवादिमग्गणा-पदं

११०. केमहालए[1] णं भंते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! महतिमहालए लोए पण्णत्ते, जहा बारसमसए तहेव जाव[2] असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं ॥

१११ लोयस्स णं भंते ! पुरत्थिमिल्ले चरिमंते किं जीवा, जीवदेसा, जीवपदेसा, अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपदेसा ?
गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि। जे जीवदेसा ते नियमं एगिंदियदेसा य, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसे—एवं जहा दसमसए अग्गेयी दिसा तहेव[3], नवरं—देसेसु अणिंदियाणं आइल्लविरहिओ। जे अरूवी अजीवा ते छव्विहा, अद्धासमयो नत्थि। सेसं तं चेव निरवसेसं[4] ॥

११२ लोगस्स णं भंते ! दाहिणिल्ले चरिमंते किं जीवा ? एवं चेव। एवं पच्चत्थिमिल्ले वि, उत्तरिल्ले वि ॥

११३ लोगस्स णं भंते ! उवरिल्ले चरिमंते किं जीवा—पुच्छा।
गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि जाव अजीवपदेसा वि। जे जीवदेसा ते नियमं[5] एगिंदियदेसा य अणिंदियदेसा य, अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियदेसा य बेइंदियस्स[6] य देसे, अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा, एवं मज्झिल्लविरहिओ जाव पंचिंदियाणं। जे जीवप्पदेसा ते नियमं एगिंदियप्पदेसा य अणिंदियप्पदेसा य, अहवा एगिंदियप्पदेसा य अणिंदियप्पदेसा य बेइंदियस्स पदेसा य, अहवा एगिंदियप्पदेसा य अणिंदियप्पदेसा य बेइंदियाण य पदेसा, एवं आदिल्लविरहिओ जाव पंचिंदियाणं। अजीवा जहा[7] दसमसए तमाए तहेव निरवसेसं ॥

११४. लोगस्स णं भंते ! हेट्ठिल्ले चरिमंते किं जीवा—पुच्छा।
गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि जाव अजीवपदेसा वि, जे जीवदेसा ते नियमं एगिंदियदेसा, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसे, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा, एवं मज्झिल्लविरहिओ जाव अणिंदियाणं। पदेसा आइल्ल-

---

१. किमहालए (अ, क, ख, ता, म, स)।
२. भ० १२।१३०, २।४५।
३. भ० १०।६।
४. सव्वं (अ, क, ता, ब, म)।
५. नितमं (ब)।
६. वेदियस्स (म, स)।
७. भ० १०।७।

विरहिया सव्वेसि जहा पुरत्थिमिल्ले चरिमंते तहेव। अजीवा जहेव उवरिल्ले चरिमंते तहेव ॥

११५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते कि जीवा पुच्छा। गोयमा ! नो जीवा, एवं जहेव लोगस्स तहेव चत्तारि वि चरिमंता जाव उत्तरिल्ले, उवरिल्ले तहेव, जहा[1] दसमसए विमला दिसा तहेव निरवसेसं। हेट्ठिल्ले चरिमते जहेव लोगस्स हेट्ठिल्ले चरिमते तहेव, नवरं—देसे पंचिंदिएसु तियभगो त्ति सेस त चेव। एवं जहा रयणप्पभाए चत्तारि चरिमंता भणिया एव सक्करप्पभाए वि। उवरिम-हेट्ठिल्ला जहा रयणप्पभाए हेट्ठिल्ले। एवं जाव अहेसत्तमाए। एवं सोहम्मस्स वि जाव अच्चुयस्स। गेवेज्जविमाणाण एवं चेव, नवर—उवरिम-हेट्ठिल्लेसु चरिमतेसु देसेसु पंचिंदियाण वि मज्झिल्लविरहिओ चेव, सेस तहेव। एवं जहा गेवेज्जविमाणा तहा अणुत्तरविमाणा वि, ईसिपब्भारा वि ॥

परमाणुपोग्गलस्स गति-पदं

११६. परमाणुपोग्गले णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ पच्चत्थिमिल्लं चरिमतं एगसमएणं गच्छति ? पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमताओ पुरत्थिमिल्लं चरिमंतं एगसमएण गच्छति ? दाहिणिल्लाओ चरिमंताओ उत्तरिल्लं[2] •चरिमंतं एगसमएणं° गच्छति ? उत्तरिल्लाओ चरिमंताओ दाहिणिल्लं[3] •चरिमंतं एगसमएणं° गच्छति ? उवरिल्लाओ चरिमताओ हेट्ठिल्ल चरिमतं एगसमएणं[4] गच्छति ? हेट्ठिल्लाओ चरिमताओ उवरिल्लं चरिमत एगसमएणं गच्छति ? हता गोयमा ! परमाणुपोग्गले णं लोगस्स पुरत्थिमिल्लं तं चेव जाव उवरिल्लं चरिमंतं एगसमएण गच्छति ॥

किरिया-पदं

११७. पुरिसे ण भते ! वासं वासति, वासं नो वासतीति हत्थं वा पायं वा बाहुं वा ऊरु वा आउंटावेमाणे[5] वा पसारेमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च ण से पुरिसे वास वासति, वास नो वासतीति हत्थं वा पायं वा बाहुं वा ऊरु वा आउंटावेति वा पसारेति वा, तावं च णं से पुरिसे काइयाए[6] •अहिगरणियाए पाओसियाए पारितावणियाए पाणातिवायकिरियाए°—पंचहि किरियाहि पुट्ठे ॥

---

१. भ० १०।७।
२. स० पा०—उत्तरिल्लं जाव गच्छति।
३. सं० पा०—दाहिणिल्लं जाव गच्छति।
४. एव जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
५. आउंटारेमाणे (ता) सर्वत्रापि।
६. सं० पा०—काइयाए जाव पर्चाहि।

अलोए गतिनिसेध-पदं

११८. देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव[1] महेसक्खे लोगते ठिच्चा पभू अलोगसि हत्थं वा पायं वा वाहं वा ऊरु वा आउटावेत्तए वा पसारेत्तए वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

११९ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—देवे णं महिड्ढिए जाव महेसक्खे लोगते ठिच्चा नो पभू अलोगसि हत्थ वा[2] •पाय वा वाहं वा ऊरु वा आउंटावेत्तए वा° पसारेत्तए वा ?
गोयमा ! जीवाणं आहारोवचिया पोग्गला, वोदिचिया पोग्गला, कलेवरचिया पोग्गला । पोग्गलामेव पप्प जीवाण य अजीवाण य गतिपरियाए आहिज्जइ । अलोए ण नेवत्थि जीवा, नेवत्थि पोग्गला । से तेणट्ठेणं[3] •गोयमा ! एव वुच्चइ—देवे महिड्ढिए जाव महेसक्खे लोगते ठिच्चा नो पभू आलोगंसि हत्थं वा पायं वा वाहं वा ऊरु वा आउटावेत्तए वा° पसारेत्तए वा ॥

१२० सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

नवमो उद्देसो

बलिस्स सभा-पद

१२१. कहिण्ण[5] भते ! वलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण तिरियमसंखेज्जे जहेव चमरस्स जाव[6] बायालीस जोयणसहस्साइ ओगाहित्ता, एत्थ ण बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो रुयगिंदे नाम उप्पायपव्वए पण्णत्ते । सत्तरस एक्कवीसे जोयणसए—एव पमाण जहेव तिगिच्छिकूडस्स पासायवडेसगस्स वि त चेव पमाण, सीहासण सपरिवार वलिस्स परियारेण, अट्ठो तहेव[7], नवर—

---

१. भ० १।३३९ ।
२. स० पा०—हत्थ वा जाव पसारेत्तए ।
३. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव पसारेत्तए ।
४. भ० १।५१ ।
५. कहि ण (अ, क, ख, ता, व, म) ।
६. भ० २।११८ ।
७. यथा तिगिच्छिकूटस्य नामान्वर्थाभिधायकं वा[illegible] तथाऽस्यापि वाच्य, केवल तिगिच्छिकूटान्व[illegible] प्रश्नस्योत्तरे यस्मात्तिगिच्छिप्रभाण्युत्पलादी तत्र सन्ति तेन तिगिच्छिकूट इत्युच्यत इत्यु[illegible] इह तु रुचकेन्द्रप्रभाणि तानि सन्तीति वा[illegible] रुचकेन्द्रस्तु रत्नविशेष इति, तत्पुनर[illegible]

रुयगिदप्पभाइं-रुयगिदप्पभाइ-रुयगिदप्पभाइं। सेसं तं चेव जाव बलिचंचाए रायहाणीए अण्णेसिं च जाव रुयगिदस्स ण उप्पायपव्वयस्स उत्तरे ण छक्कोडिसए तहेव जाव चत्तालीस जोयणसहस्साइ ओगाहित्ता, एत्थ ण बलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो बलिचचा नामं रायहाणी पण्णत्ता। एग जोयणसयसहस्स पमाण, तहेव जाव बलिपेढस्स उववाओ जाव आयरक्खा सव्वं तहेव निरवसेस, नवरं—सातिरेग सागरोवम ठिती पण्णत्ता। सेसं त चेव जाव[1] बली वइरोयणिदे, बली वइरोयणिदे ॥

१२२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव[2] विहरइ ॥

दसमो उद्देसो

ओहि-पदं

१२३. कतिविहा[3] णं भंते ! ओही पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा ओही पण्णत्ता। ओहीपद निरवसेसं भाणियव्वं[4] ॥

१२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव[5] विहरइ ॥

इक्कारसमो उद्देसो

दीवकुमारादि-पदं

१२५. दीवकुमारा ण भंते ! सव्वे समाहारा ? सव्वे समुस्सासनिस्सासा ?
नो इणट्ठे समट्ठे। एव जहा पढमसए बितियउद्देसए दीवकुमाराणं वत्तव्वया तहेव जाव[6] समाउया, समुस्सासनिस्सासा[7] ॥

सूत्रमेवमध्येय—'से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—रुयगिदे-रुयगिदे उप्पायपव्वए ? गोयमा ! रुयगिदे ण बहूणि उप्पलाणि पउमाइं कुमुयाइं जाव रुयगिदवण्णाइं रुयगिदलेसाइं रुयगिदप्पभाइ, से तेणट्ठेण रुयगिदे-रुयगिदे उप्पायपव्वए' त्ति (वृ)।

१. भ० २।११८-१२१।

२. १।५१।

३. कतिविहे (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

४. प० ३३।

५. भ० १।५१।

६. भ० १।७४, ७५।

७. °निस्सासा। एव नागा वि (अ, ता, ब, म, स)।

१२६. दीवकुमाराणं भंते ! कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा[1], •नीललेस्सा, काउलेस्सा°, तेउलेस्सा ॥

१२७. एएसि णं भंते ! दीवकुमाराणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा° ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा दीवकुमारा तेउलेस्सा, काउलेस्सा असंखेज्जगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ॥

१२८ एएसि णं भंते ! दीवकुमाराणं कण्हलेसाणं जाव तेउलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पिड्ढिया वा ? महिड्ढिया वा ?
गोयमा ! कण्हलेस्साहिंतो नीललेस्सा महिड्ढिया जाव सव्वमहिड्ढिया तेउलेस्सा ॥

१२९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव[3] विहरइ ॥

१२-१४ उद्देसा

१३०. उदहिकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा ? एवं चेव ॥

१३१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१३२. एवं दिसाकुमारा वि ॥

१३३. एवं थणियकुमारा वि ॥

१३४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव[4] विहरइ ॥

---

१. सं० पा०—कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा ।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. भ० १।५१ ।
४. भ० १।५१ ।

सत्तरसमं सतं

पढमो उद्देसो

नमो सुयदेवयाए भगवईए

१. कुंजर २.संजय ३.सेलेसि, ४.किरिय ५.ईसाण ६,७. पुढवि ८,९. दग १०,११. वाऊ।
१२. एगिंदिय १३. नाग १४. सुवण्ण, १५. विज्जु १६,१७. वातग्गि[1] सत्तरसे ॥१॥

हत्थिराय-पदं

१. रायगिहे जाव[2] एवं वयासी—उदायी णं भंते ! हत्थिराया कओहितो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदायिहत्थिरायत्ताए उववन्ने ?
गोयमा ! असुरकुमारेहिंतो देवेहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदायिहत्थिरायत्ताए उववन्ने ॥

२. उदायी णं भंते ! हत्थिराया कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा! इमोसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्ठितियंसि[3] निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ॥

३. से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[4] सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति ॥

४. भूयाणंदे णं भंते ! हत्थिराया कओहितो अणंतरं उव्वट्टित्ता भूयाणंदे हत्थिरायत्ताए उववन्ने ? एवं जहेव उदायी जाव अंतं काहिति ॥

---

१. वायुग्गि (अ, म, स) ।
२. भ० १।४-१० ।
३. °द्वितीयसि (अ, ख, ब, म) ।
४. भ० २।७३ ।

किरिया-पदं

५. पुरिसे णं भंते ! तलमारुहइ[1], आरुहित्ता तलाओ तलफलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च ण से पुरिसे तलमारुहइ, आरुहित्ता तलाओ तलफलं पचालेइ वा पवाडेइ वा तावं च ण से पुरिसे काइयाए जाव[2] पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे । जेसिं पि ण जीवाणं सरीरेहिंतो तले निव्वत्तिए, तलफले निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव पचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥

६. अहे णं भंते ! से तलफले अप्पणो गरुयत्ताए[3] °भारियत्ताए गरुयसंभारियत्ताए अहे वीससाए° पच्चोवयमाणे जाइं तत्थ पाणाइ जाव[4] जीवियाओ ववरोवेति, तए[5] णं भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च ण से[6] तलफले अप्पणो गरुयत्ताए जाव जीवियाओ ववरोवेति ताव च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे । जेसिं पि ण जीवाणं सरीरेहिंतो तले निव्वत्तिए ते वि ण जीवा काइयाए जाव चउहि किरियाहिं पुट्ठा । जेसिं पि ण जीवाण सरीरेहिंतो तलफले निव्वत्तिए ते[7] ण जीवा काइयाए जाव पचहिं किरियाहि पुट्ठा । जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे वट्टंति ते वि य ण जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥

७. पुरिसे ण भते ! रुक्खस्स मूलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! जाव च णं से पुरिसे रुक्खस्स मूलं पचालेइ वा पवाडेइ वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पचहिं किरियाहिं पुट्ठे । जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए जाव[8] बीए निव्वत्तिए, ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहिं पुट्ठा ॥

८. अहे णं भते ! से मूले अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति, तए[9] णं भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

---

१. तलमारुभइ (अ, ख, ता, ब, म); ताल° (क) ।
२. भ० १६।११७ ।
३ स० पा०—गरुयत्ताए जाव पच्चोवयमाणे ।
४. ×(अ); भ० ५।१३४ ।
५. ततो (ब) ।
६. से पुरिसे (अ, क, ख, ता, ब, म, स); अत्र 'पुरिसे' इति पद अशुद्धमस्ति । एतत् च लिपिदोषादागतम् । वृत्तौ तत्तालफलमिति लभ्यते । भ० ५।१३५ सूत्रे 'जावं च ण से उसू' इति पाठोस्ति । तत्साद्दश्यादत्रापि 'जावं च ण से तलफले' इति पाठः सङ्गतोस्ति ।
७ ते वि (अ, क, ख, ता, ब, म, स); अत्र 'अपि' पद प्रवाहपाति आगतम् । वृत्तौ फल-निर्वर्त्तकास्तु पचक्रिया एव इति व्याख्यायां 'तु' पदेन पूर्वप्रकरणाद् भेदः सूचित. । अस्मिन्नर्थे 'अपि' पदस्य प्रयोगः सङ्गतो न स्यात् ।
८. भ० ७।६४ ।
९. ततो (क, ता, म) ।

गोयमा ! जावं च णं से मूले अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे । 'जेसि पि य ण जीवाणं सरीरेहिंतो कंदे[1] निव्वत्तिए जाव बीए निव्वत्तिए ते वि ण जीवा काइयाए जाव चउहिं किरियाहि पुट्ठा'[2] । जेसि पि य ण जीवाण सरीरेहितो मूले निव्वत्तिए ते णं जीवा काइयाए जाव पंचहि किरियाहि पुट्ठा । जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे वट्टंति ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहि पुट्ठा ॥

९. पुरिसे णं भंते ! रुक्खस्स कंदे पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे रुक्खस्स कंदं पचालेइ वा पवाडेइ वा ताव च णं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहि किरियाहि पुट्ठे । जेसि पि य णं जीवाणं सरीरेहितो मूले निव्वत्तिए जाव बीए निव्वत्तिए ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहि किरियाहि पुट्ठा ॥

१०. अहे णं भंते ! से कंदे अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति, तए णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?
गोयमा ! जाव च ण से कदे अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहि पुट्ठे । जेसि पि य ण जीवाणं सरीरेहितो मूले निव्वत्तिए, खंधे निव्वत्तिए जाव बीए निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव चउहि किरियाहि पुट्ठा । जेसि पि य ण जीवाण सरीरेहितो कदे निव्वत्तिए ते[3] ण जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहि पुट्ठा । जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे वट्टंति ते वि य ण जीवा काइयाए जाव पंचहि किरियाहिं पुट्ठा । जहा कदे, एव जाव बीय ॥

११. कति णं भते ! सरीरगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए जाव[4] कम्मए ॥

१२. कति ण भते ! इंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच इदिया पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदिए जाव[5] फासिदिए ॥

१३. कतिविहे णं भते ! जोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे जोए पण्णत्ते, तं जहा—मणजोए, वइजोए, कायजोए ॥

१४. जीवे णं भते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणे कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए । एवं पुढविकाइए वि । एवं जाव मणुस्से ॥

---

१. मूले (ख, ता, ब) ।
२. ×(अ) ।
३. ते वि (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
४. भ० १०।८ ।
५. भ० २।७७ ।

१५ जीवा णं भंते ! ओरालियसरीर निव्वत्तेमाणा कतिकिरिया ?
गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पंचकिरिया वि। एवं पुढविकाइया वि। एव जाव मणुस्सा। एव वेउव्वियसरीरेण वि दो दंडगा, नवरं—जस्स अत्थि वेउव्वियं। एव जाव कम्मगसरीर। एवं सोइंदिय जाव फासिंदियं। एवं मणजोगं, वइजोगं, कायजोगं, जस्स ज अत्थि त भाणियव्वं। एए एगत्त-पुहत्तेण छव्वीस दडगा ॥

भाव-पदं

१६. कतिविहे ण भते ! भावे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे भावे पण्णत्ते, तं जहा—ओदइए[1], ओवसमिए[2] •खइए, खओवसमिए, पारिणामिए°, सन्निवाइए ॥

१७. से कि त ओदइए ?
ओदइए भावे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—उदए य, उदयनिप्फन्ने[3] य। एवं एएणं अभिलावेण जहा अणुओगदारे छन्नामं[4] तहेव निरवसेस भाणियव्वं जाव[5] सेत्तं सन्निवाइए भावे ॥

१८. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति[6] ॥

बीओ उद्देसो

धम्माधम्म-ठित-पदं

१९. से नूण भते ! संजत-विरत-पडिहत-पच्चक्खातपावकम्मे धम्मे ठिते ? अस्संजत-अविरत-अपडिहत-अपच्चक्खातपावकम्मे अधम्मे ठिते ? संजतासंजते धम्माधम्मे ठिते ?
हता गोयमा ! सजत-विरत[7]-•पडिहत-पच्चक्खातपावकम्मे धम्मे ठिते, अस्संजत-अविरत-अपडिहत-अपच्चक्खातपावकम्मे अधम्मे ठिते, संजतासंजते° धम्माधम्मे ठिते ॥

---

१. उदतिए (अ, क, व, म)।
२. स० पा०—ओवसमिए जाव सन्निवाइए।
३. निप्पन्ने (अ, म); निप्पन्ने (स)।
४. छण्णाम (अ, व, म)।
५. अ० २७३-२९७।
६. भ० १।५१।
७. सं० पा०—विरत जाव धम्माधम्मे।

२०. एयंसि[1] णं भंते ! धम्मंसि वा, अधम्मंसि वा, धम्माधम्मंसि वा चक्किया केइ आसइत्तए वा[2], •सइत्तए वा, चिट्ठइत्तए वा, निसीइत्तए वा• तुयट्टित्तए वा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

२१. से केण खाइं अट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जाव संजतासंजते धम्माधम्मे ठिते ?
गोयमा ! संजत-विरत[3]-•पडिहत-पच्चक्खाता• पावकम्मे धम्मे ठिते, धम्मं चेव उवसंपज्जित्ताणं विहरति । अस्संजत[4]-•अविरत-अपडिहत-अपच्चक्खात•-पावकम्मे अधम्मे ठिते, अधम्म चेव उवसंपज्जित्ताणं विहरति । संजतासंजते धम्माधम्मे ठिते, धम्माधम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति । से तेणट्ठेणं जाव धम्माधम्मे ठिते ॥

२२. जीवा णं भंते ! किं धम्मे ठिता ? अधम्मे ठिता ? धम्माधम्मे ठिता ?
गोयमा ! जीवा धम्मे वि ठिता, अधम्मे वि ठिता, धम्माधम्मे वि ठिता ॥

२३. नेराइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया नो धम्मे ठिता, अधम्मे ठिता, नो धम्माधम्मे ठिता । एवं जाव चउरिंदियाणं ॥

२४. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नो धम्मे ठिता, अधम्मे ठिता, धम्माधम्मे वि ठिता । मणुस्सा जहा जीवा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ॥

बालपंडिय-पदं

२५. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति—एवं खलु समणा पंडिया, समणोवासया बालपंडिया, जस्स णं एगपाणाए वि दंडे अणिक्खित्ते से णं एगंतबाले त्ति वत्तव्वं सिया ॥

२६. से कहमेयं भंते ! एवं ?
गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव एगंतबाले त्ति वत्तव्वं सिया, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—एवं खलु समणा पंडिया, समणोवासगा बालपंडिया, जस्स णं एगपाणाए वि दंडे निक्खित्ते से णं नो एगंतबाले त्ति वत्तव्वं सिया ॥

२७. जीवा णं भंते ! किं बाला ? पंडिया ? बालपंडिया ?
गोयमा ! बाला वि, पंडिया वि, बालपंडिया वि ॥

२८. नेरइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया बाला, नो पंडिया, नो बालपंडिया । एवं जाव चउरिंदिया ॥

---

१. एतेसिं (अ, क, ब, म, स); अत्र षष्ठीबहुवचनान्त पदं शुद्धं न प्रतिभाति ।
२. सं० पा०—आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए ।
३. सं० पा०—विरत जाव पावकम्मे ।
४. सं० पा०—अस्संजत जाव पावकम्मे ।

२९. पंचिंदियतिक्ख जोणियाणं—पुच्छा।
गोयमा! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया बाला, नो पंडिया, बालपंडिया वि। मणुस्सा जहा जीवा। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया॥

जीवस्स जीवायाए एगत्त-पदं

३०. अण्णउत्थिया णं भंते! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति—एवं खलु पाणातिवाए, मुसावाए जाव[1] मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया। पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव[2] मिच्छादसणसल्लविवेगे वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया। उप्पत्तियाए[3] °वेणइयाए कम्मयाए° पारिणामियाए वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया। ओग्गहे, ईहा-अवाए धारणाए वट्टमाणस्स[4] °अण्णे जीवे, अण्णे° जीवाया। उट्ठाणे[5] °कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार°-परक्कमे वट्टमाणस्स[6] °अण्णे जीवे, अण्णे° जीवाया। नेरइयत्ते तिरिक्ख-मणुस्स-देवत्ते वट्टमाणस्स[7] °अण्णे जीवे, अण्णे° जीवाया। नाणावरणिज्जे जाव अंतराइए वट्टमाणस्स[8] °अण्णे जीवे, अण्णे° जीवाया। एवं कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए, सम्मदिट्ठीए मिच्छदिट्ठीए सम्मामिच्छदिट्ठीए, एव चक्खुदसणे अचक्खुदंसणे ओहिदंसणे केवलदंसणे, आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे ओहिनाणे मणपज्जवनाणे केवलनाणे, मतिअण्णाणे सुयअण्णाणे विभंगनाणे, आहारसण्णाए भयसण्णाए मेहुणसण्णाए परिग्गहसण्णाए, एवं ओरालियसरीरे वेउव्वियसरीरे आहारगसरीरे तेयगसरीरे कम्मगसरीरे, एवं मणजोगे वइजोगे कायजोगे सागारोवओगे, अणागारोवओगे वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया॥

३१. से कहमेयं भंते! एवं?
गोयमा! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु। अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—एवं खलु पाणातिवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स सच्चेव जीवे, सच्चेव जीवाया जाव अणागारोवओगे वट्टमाणस्स सच्चेव जीवे, सच्चेव जीवाया॥

रूवि-अरूवि-पदं

३२. देवे णं भते! महिड्ढिए जाव[9] महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता पभू अरूविं[10] विउव्वित्ता ण चिट्ठित्तए?
नो इणट्ठे समट्ठे॥

---

१. भ० १।३८४।
२. भ० १।३८५।
३. सं० पा०—उप्पत्तियाए जाव पारिणामियाए।
४. स० पा०—वट्टमाणस्स जाव जीवाया।
५. स० पा०—उट्ठाणे जाव परक्कमे।
६. ७, ८. स० पा०—वट्टमाणस्स जाव जीवाया।
९. भ० १।३३९।
१०. रूपातीतममूर्त्तमात्मानमिति गम्यते (वृ)।

३३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—देवे णं[1] •महिड्ढिए जाव महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता॰ नो पभू अरूविं विउव्वित्ता णं चिट्ठित्तए ?
गोयमा ! अहमेयं जाणामि, अहमेयं पासामि, अहमेयं बुज्झामि, अहमेयं अभिसमण्णागच्छामि[2], 'मए एयं'[3] नायं, मए एयं दिट्ठं, मम एयं बुद्धं, मए एयं अभिसमण्णागयं—जण्णं तहागयस्स जीवस्स सरूविस्स, सकम्मस्स, सरागस्स, सवेदस्स[4], समोहस्स, सलेसस्स, ससरीरस्स, ताओ सरीराओ अविप्पमुक्कस्स एवं पण्णायति, तं जहा—कालत्ते वा जाव सुक्किलत्ते वा, सुब्भिगंधत्ते वा, दुब्भिगंधत्ते वा, तित्तत्ते वा जाव महुरत्ते वा, कक्खडत्ते वा जाव लुक्खत्ते वा। से तेणट्ठेणं गोयमा[5] ! •एवं वुच्चइ—देवे णं महिड्ढिए जाव महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता नो पभू अरूविं विउव्वित्ता णं॰ चिट्ठित्तए ॥

३४. सच्चेव णं भंते ! से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता पभू रूविं विउव्वित्ता णं चिट्ठित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे[6] ॥

३५. •से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—सच्चेव णं से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता नो पभू रूविं विउव्वित्ता णं॰ चिट्ठित्तए ?
गोयमा ! अहमेयं जाणामि[7], •अहमेयं पासामि, अहमेयं बुज्झामि, अहमेयं अभिसमण्णागच्छामि, मए एयं नायं, मए एयं दिट्ठं, मम एयं बुद्धं, मए एयं अभिसमण्णागयं॰—जण्णं तहागयस्स जीवस्स अरूविस्स, अकम्मस्स, अरागस्स, अवेदस्स, अमोहस्स, अलेसस्स, असरीरस्स, ताओ सरीराओ विप्पमुक्कस्स नो एवं पण्णायति, तं जहा—कालत्ते वा[8] •जाव सुक्किलत्ते वा, सुब्भिगंधत्ते वा, दुब्भिगंधत्ते वा, तित्तत्ते वा जाव महुरत्ते वा, कक्खडत्ते वा जाव॰ लुक्खत्ते वा। से तेणट्ठेणं[9] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—सच्चेव णं से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता नो पभू रूविं विउव्वित्ता णं॰ चिट्ठित्तए ॥

३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[10] ॥

---

१. सं॰ पा॰—णं जाव नो।
२. अभिसमागच्छामि (अ, क, ख, ता, ब, म, वृ)।
३. मएतं (ता) सर्वत्र।
४. सवेदणस्स (ता, स)।
५. सं॰ पा॰—गोयमा जाव चिट्ठित्तए।
६. सं॰ पा॰—समट्ठे जाव चिट्ठित्तए।
७. सं॰ पा॰—जाणामि जाव जण्णं।
८. सं॰ पा॰—कालत्ते वा जाव लुक्खत्ते।
९. सं॰ पा॰—तेणट्ठेणं जाव चिट्ठित्तए।
१०. भ॰ १।५१।

तइओ उद्देसो

एयणा-पदं

३७. सेलेसिं पडिवन्नए णं भंते ! अणगारे सया समियं एयति वेयति[1] •चलति फंदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ° तं तं भावं परिणमति ?
नो इणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थेगेण परप्पयोगेण ॥

३८. कतिविहा णं भंते ! एयणा[2] पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वेयणा, खेत्तेयणा, कालेयणा, 'भवेयणा, भावेयणा'[3] ॥

३९. दव्वेयणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—नेरइयदव्वेयणा, तिरिक्खजोणियदव्वेयणा, मणुस्सदव्वेयणा, देवदव्वेयणा ॥

४० से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयदव्वेयणा-नेरइयदव्वेयणा ?
गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइयदव्वे वट्टिंसु वा, वट्टंति वा, वट्टिस्संति वा ते णं तत्थ नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा नेरइयदव्वेयणं एइंसु[4] वा, एयंति वा, एइस्सति वा । से तेणट्ठेणं जाव नेरइयदव्वेयणा ।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तिरिक्खजोणियदव्वेयणा-तिरिक्खजोणियदव्वेयणा ?
[5]•गोयमा ! जण्णं तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियदव्वे वट्टिंसु वा, वट्टंति वा, वट्टिस्सति वा ते णं तत्थ तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियदव्वे वट्टमाणा तिरिक्खजोणियदव्वेयणं एइंसु वा, एयंति वा, एइस्सति वा । से तेणट्ठेणं जाव तिरिक्खजोणियदव्वेयणा ।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सदव्वेयणा-मणुस्सदव्वेयणा ?
गोयमा ! जण्णं मणुस्सा मणुस्सदव्वे वट्टिंसु वा, वट्टंति वा, वट्टिस्सति वा ते णं तत्थ मणुस्सा मणुस्सदव्वे वट्टमाणा मणुस्सदव्वेयणं एइंसु वा, एयंति वा, एइस्सति वा । से तेणट्ठेणं जाव मणुस्सदव्वेयणा ।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—देवदव्वेयणा-देवदव्वेयणा ?
गोयमा ! जण्णं देवा देवदव्वे वट्टिंसु वा, वट्टंति वा, वट्टिस्संति वा ते णं तत्थ देवा देवदव्वे वट्टमाणा देवदव्वेयणं एइंसु वा, एयंति वा, एइस्सति वा । से तेणट्ठेणं जाव° देवदव्वेयणा ॥

---

१. स० पा०—वेयति जाव तं ।
२. एतणा (ता, व) ।
३. भावेयणा, भवेयणा (म) ।
४. एयंसु (अ, व, म) ।
५. स० पा०—एवं चेव, नवरं—तिरिक्खजोणियदव्वे भाणियव्वं, सेसं तं चेव, एवं जाव देवदव्वेयणा ।

४१. खेत्तेयणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—नेरइयखेत्तेयणा जाव देवखेत्तेयणा ॥

४२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयखेत्तेयणा-नेरइयखेत्तेयणा ?
एवं चेव, नवरं—नेरइयखेत्तेयणा भाणियव्वा, एवं जाव देवखेत्तेयणा। एवं कालेयणा वि, एवं भवेयणा वि, एवं भावेयणा वि, एव जाव देवभावेयणा ॥

चलणा-पदं

४३. कतिविहा णं भंते ! चलणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा चलणा पण्णत्ता, तं जहा—सरीरचलणा, इंदियचलणा, जोगचलणा ॥

४४. सरीरचलणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालियसरीरचलणा जाव कम्मग-सरीरचलणा ॥

४५. इंदियचलणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियचलणा जाव फासिंदियचलणा ॥

४६. जोगचलणा ण भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—मणजोगचलणा, वइजोगचलणा, कायजोग-चलणा ॥

४७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—ओरालियसरीरचलणा-ओरालियसरीर-चलणा ?
गोयमा ! जण्णं जीवा ओरालियसरीरे वट्टमाणा ओरालियसरीरपायोग्गाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए परिणामेमाणा ओरालियसरीरचलणं चलिंसु वा, चलंति वा, चलिस्संति वा। से तेणट्ठेणं जाव ओरालियसरीरचलणा।
से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—वेउव्वियसरीरचलणा-वेउव्वियसरीरचलणा ?
एवं चेव, नवर वेउव्वियसरीरे वट्टमाणा। एवं जाव कम्मगसरीरचलणा।
से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—सोइंदियचलणा—सोइंदियचलणा ?
गोयमा ! जण्णं जीवा सोइंदिये वट्टमाणा सोइंदियपायोग्गाइं दव्वाइं सोइंदियत्ताए परिणामेमाणा सोइंदियचलणं चलिंसु वा, चलंति वा, चलिस्संति वा। से तेणट्ठेणं जाव सोइंदियचलणा। एवं जाव फासिंदियचलणा।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—मणजोगचलणा-मणजोगचलणा ?
गोयमा! जण्णं जीवा मणजोगे वट्टमाणा मणजोगपाओग्गाइं दव्वाइं मणजोगत्ताए परिणामेमाणा मणजोगचलणं चलिंसु वा, चलंति वा, चलिस्संति वा। से तेणट्ठेणं जाव मणजोगचलणा। एवं वइजोगचलणा वि। एवं कायजोगचलणा वि ॥

संवेगादि-पदं

४८. अह भंते ! संवेगे, निव्वेए, गुरुसाहम्मियसुस्सूसणया, आलोयणया, निंदणया, गरहणया, खमावणया[1], 'विउसमणया'[2], सुयसहायता[3] भावे अप्पडिबद्धया, विणिवट्टणया, विवित्तसयणासणसेवणया, सोइंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे, जोगपच्चक्खाणे, सरीरपच्चक्खाणे, कसायपच्चक्खाणे, संभोगपच्चक्खाणे, उवहिपच्चक्खाणे, भत्तपच्चक्खाणे, खमा, विरागया, भावसच्चे, जोगसच्चे, करणसच्चे, मणसमन्नाहरणया[4], वइसमन्नाहरणया, कायसमन्नाहरणया, कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, नाणसंपन्नया, दंसणसंपन्नया, चरित्तसंपन्नया, वेदणअहियासणया, मारणंतियअहियासणया—एए णं[5] किंपज्जवसाणफला पण्णत्ता समणाउसो !

गोयमा ! संवेगे, निव्वेए जाव मारणंतियअहियासणया एए णं सिद्धिपज्जवसाणफला पण्णत्ता समणाउसो !

४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[6] विहरइ ॥

चउत्थो उद्देसो

किरिया-पदं

५०. तेण कालेणं तेण समएणं रायगिहे नगरे जाव[7] एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ ?

हंता अत्थि ॥

५१. सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?

गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ [8]जाव[9] निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउदिसिं, सिय पंचदिसिं ॥

५२. सा भंते ! किं कडा कज्जइ ? अकडा कज्जइ ?

गोयमा ! कडा कज्जइ, नो अकडा कज्जइ ॥

---

१. खमासणया (अ); खमायणया (क, ख, ता, ब, म, वृ)।

२. एतत् च क्वचिद् न दृश्यते (वृ)।

३. सुयसहायता विओसरणता (ता); सुहसाहयया विउसमणया (ब)।

४. मणसमाधा (हा) रणया (उत्त० २९।१)।

५. णं भंते पदा (अ, क)।

६. भ० १।५१।

७. भ० १।४-१०।

८. सं० पा०—एव जहा पढमसए छट्ठुद्देसए जाव नो।

९. भ० १।२५९-२६६।

५३. सा भंते ! किं अत्तकडा कज्जइ ? परकडा कज्जइ ? तदुभयकडा कज्जइ ?
गोयमा ! अत्तकडा कज्जइ, नो परकडा कज्जइ, नो तदुभयकडा कज्जइ ।।

५४. सा भंते ! कि आणुपुव्वि कडा कज्जइ ? अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ ?
गोयमा आणुपुव्वि कडा कज्जइ, नो अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ। जा य कडा कज्जइ, जा य कज्जिस्सइ, सव्वा सा आणुपुव्वि कडा०, नो अणाणुपुव्वि कडा त्ति वत्तव्वं सिया। एवं जाव वेमाणियाणं, नवरं—जीवाण एगिंदियाण य निव्वाघाएण छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसि, सिय चउदिसि, सिय पंच-दिसि। सेसाणं नियमं छद्दिसि ।।

५५. अत्थि णं भंते ! जीवाणं मुसावाएणं किरिया कज्जइ ?
हंता अत्थि ।।

५६. सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?
जहा पाणाइवाएण दंडओ एवं मुसावाएण वि। एवं अदिन्नादाणेण वि, मेहुणेण[1] वि, परिग्गहेण वि। एवं एते पंच दंडगा ।।

५७. जं समयं णं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ सा भंते ! कि पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ? एवं तहेव जाव[2] वत्तव्वं सिया जाव वेमाणियाणं। एवं जाव परिग्गहेण। एवं एते वि पच दडगा ।।

५८. ज देसं ण भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ ? एव चेव जाव परिग्गहेणं। एते वि पंच दडगा ।।

५९. जं पएसं णं भंते ! जीवाणं पाणातिवाएणं किरिया कज्जइ सा भंते ! कि पुट्ठा कज्जइ ? एवं तहेव दंडओ। एवं जाव परिग्गहेणं। एवं एते वीसं दंडगा ।।

दुक्ख-वेदणा-पदं

६०. जीवाणं भंते ! किं अत्तकडे दुक्खे ? परकडे दुक्खे ? तदुभयकडे दुक्खे ?
गोयमा ! अत्तकडे दुक्खे, नो परकडे दुक्खे, नो तदुभयकडे दुक्खे। एवं जाव वेमाणियाणं ।।

६१. जीवा णं भते ! किं अत्तकडं दुक्खं वेदेंति ? परकड दुक्खं वेदेति ? तदुभयकडं दुक्खं वेदेंति ?
गोयमा ! अत्तकडं दुक्खं वेदेंति, नो परकडं दुक्खं वेदेति, नो तदुभयकडं दुक्खं वेदेंति। एवं जाव वेमाणियाणं ।।

६२. जीवाणं भंते ! कि अत्तकडा वेयणा ? परकडा वेयणा ? [3]•तदुभयकडा वेयणा० ?

---

१. मेघुणेण (व)।
२. १७।५१-५४।
३. सं० पा०—पुच्छा।

गोयमा ! अत्तकडा वेयणा, नो परकडा वेयणा, नो तदुभयकडा वेयणा। एवं जाव वेमाणियाणं ॥

६३. जीवा ण भते ! कि अत्तकडं वेयण वेदेति ? परकडं वेयणं वेदेति ? तदुभयकड वेयणं वेदेति ?
गोयमा ! जीवा अत्तकडं वेयणं वेदेति, नो परकडं वेयणं वेदेति, नो तदुभयकड वेयण वेदेति। एवं जाव वेमाणियाणं ॥

६४. सेवं भते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

पंचमो उद्देसो

ईसाण-पदं

६५. कहि ण भंते ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारा-रूवाण जहा ठाणपदे जाव[2] मज्झे ईसाणवडेसए। से ण ईसाणवडेसए महाविमाणे अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइ—एवं जहा दसमसए सक्कविमाणवत्तव्वया सा इह वि ईसाणस्स निरवसेसा भाणियव्वा जाव[3] आयरक्ख त्ति। ठिती सातिरेगाइं दो सागरोवमाइ, सेस तं चेव जाव[4] ईसाणे देविंदे देवराया, ईसाणे देविंदे देवराया ॥

६६. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति[5] ॥

छट्ठो उद्देसो

पुढविक्काइयादीणं देस-सव्व-मारणंतियसमुग्घाय-पदं

६७. पुढविक्काइए णं भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! किं पुव्वि

---

१. भ० १।५१।
२. प० २।
३. भ० १०।९९।
४. भ० १०।१००।
५. भ० १।५१।

उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा ? पुव्वि संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा ? गोयमा ! पुव्वि वा उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा, पुव्वि वा संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा ॥

६८. से केणट्ठेणं जाव पच्छा उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! पुढविक्काइयाणं तओ समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए । मारणंतियसमुग्घाएण समोहण्णमाणे देसेण वा समोहण्णति, सव्वेण वा समोहण्णति, देसेण वा समोहण्णमाणे पुव्वि संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा, सव्वेणं समोहण्णमाणे पुव्वि उववज्जेत्ता पच्छा संपाउणेज्जा । से तेणट्ठेणं जाव पच्छा उववज्जेज्जा ॥

६९. पुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए[1] समोहए, समोहणित्ता जे भविए ईसाणे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए॰ ? एवं चेव ईसाणे वि । एवं जाव अच्चुय-गेवेज्जविमाणे, अणुत्तरविमाणे, ईसिपब्भाराए य एवं चेव ॥

७०. पुढविक्काइए णं भंते ! सक्करप्पभाए पुढवीए समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए॰ ? एवं जहा रयणप्पभाए पुढविक्काइओ उववाइओ एवं सक्करप्पभाए वि पुढविक्काइओ उववाएयव्वो जाव ईसिपब्भाराए । एव जहा रयणप्पभाए वत्तव्वया भणिया, एवं जाव अहेसत्तमाए समोहए ईसिपब्भाराए उववाएयव्वो, सेसं तं चेव ॥

७१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

सत्तमो उद्देसो

७२. पुढविक्काइए णं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कि पुव्वि उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा ? सेस तं चेव ? जहा रयणप्पभाए पुढविक्काइए सव्वकप्पेसु जाव ईसिपब्भाराए ताव उववाइओ, एवं सोहम्मपुढविक्काइओ वि सत्तसु वि पुढवीसु उववाएयव्वो जाव अहेसत्तमाए । एवं जहा सोहम्मपुढविक्काइओ सव्वपुढवीसु उववाइओ, एवं जाव ईसिपब्भारापुढविक्काइओ सव्वपुढवीसु उववाएयव्वो जाव अहेसत्तमाए ॥

७३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

---

१. पुढवीए जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. भ० १।५१ ।
३. भ० १।५१ ।

अट्ठमो उद्देसो

७४. आउक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं जहा पुढविक्काइओ तहा आउक्काइओ वि सव्वकप्पेसु जाव ईसिपब्भाराए तहेव उववाएयव्वो। एवं जहा रयणप्पभआउक्काइओ उववाइओ तहा जाव अहेसत्तमआउक्काइओ उववाएयव्वो जाव ईसिपब्भाराए ॥

७५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

नवमो उद्देसो

७६. आउक्काइए णं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते० ? सेसं तं चेव, एव जाव अहेसत्तमाए। जहा सोहम्मआउक्काइओ एवं जाव ईसिपब्भाराआउक्काइओ जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो ॥

७७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

दसमो उद्देसो

७८. वाउक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए जाव जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते० ? जहा पुढविक्काइओ तहा वाउक्काइओ वि, नवरं—वाउक्काइयाणं चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए जाव[3] वेउव्वियसमुग्घाए। मारणंतियसमुग्घाए णं समोहण्णमाणे देसेण वा समोहण्णइ, सेसं तं चेव जाव अहेसत्तमाए समोहओ ईसिपब्भाराए उववाएयव्वो ॥

७९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

---

१. भ० १।५१।
२. भ० १।५१।
३. भ० २।७४।
४. भ० १।५१।

इक्कारसमो उद्देसो

८०. वाउक्काइए णं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणवाए, तणुवाए, घणवायवलएसु, तणुवायवलएसु वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते० ? सेस त चेव। एव जहा सोहम्मे वाउक्काइओ सत्तसु वि पुढवीसु उववाइओ एवं जाव ईसिपब्भारावाउक्काइओ अहेसत्तमाए जाव उववाएयव्वो ॥

८१. सेवं भते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

बारसमो उद्देसो

एगिंदिय-पदं

८२ एगिंदिया णं भंते ! सव्वे समाहारा० ? एवं जहा पढमसए बितियउद्देसए पुढविक्काइयाणं वत्तव्वया भणिया सा चेव एगिंदियाणं इह भाणियव्वा जाव[2] समाउया, समोववन्नगा ॥

८३. एगिंदियाण भंते ! कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा[3] °नीललेस्सा काउलेस्सा° तेउलेस्सा ॥

८४. एएसि णं भते ! एगिंदियाण कण्हलेस्साणं[4] °नीललेस्साणं काउलेस्साणं तेउलेस्साण य कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिंदिया तेउलेस्सा, काउलेस्सा अणतगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ॥

८५. एएसि णं भते ! एगिंदियाण कण्हलेसाण इड्ढी० ? जहेव[5] दीवकुमाराणं ॥

८६. सेवं भते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

---

१. भ० १।५१ ।
२. भ० १।७६-८१ ।
३. स० पा०—कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा ।
४. सं० पा०—कण्हलेस्साणं जाव विसेसाहिया ।
५. भ० १६।१२८ ।
६. भ० १।५१ ।

१३-१७ उद्देसा

नागकुमारादि-पदं

८७. नागकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा० ? जहा सोलसमसए दीवकुमारुद्देसे तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव[1] इड्ढी ॥

८८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव[2] विहरइ ॥

८९. सुवण्णकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा० ? एवं चेव ॥

९०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

९१. विज्जुकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा० ? एवं चेव ॥

९२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

९३. वायुकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा० ? एवं चेव ॥

९४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[5] ॥

९५. अग्गिकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा० ? एवं चेव ॥

९६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

---

१. भ० १६।१२५-१२८।
२. भ० १।५१।
३. भ० १।५१।
४. भ० १।५१।
५. भ० १।५१।
६. भ० १।५१।

अट्ठारसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. पढमे[1] २. विसाह ३. मायंदिए य ४. पाणाइवाय ५. असुरे य।
६. गुल ७. केवलि ८. अणगारे, ९. भविए तह १०. सोमिलट्ठारसे[2] ॥१॥

पढम-अपढम-पद

१. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे जाव[3] एव वयासी—जीवे णं भते ! जीव-भावेण कि पढमे ? अपढमे ?
गोयमा ! नो पढमे, अपढमे। एव नेरइए जाव वेमाणिए ॥

२. सिद्धे ण भते ! सिद्धभावेण कि पढमे ? अपढमे ?
गोयमा ! पढमे, नो अपढमे ॥

३. जीवा णं भंते ! जीवभावेणं कि पढमा ? अपढमा ?
गोयमा ! नो पढमा, अपढमा। एवं जाव वेमाणिया ॥

४. सिद्धा णं—पुच्छा।
गोयमा ! पढमा, नो अपढमा ॥

५. आहारए णं भते ! जीवे आहारभावेण कि पढमे ? अपढमे ?
गोयमा ! नो पढमे, अपढमे। एव जाव वेमाणिए। पोहत्तिए एवं चेव ॥

६. अणाहारए णं भते ! जीवे अणाहारभावेणं—पुच्छा।
गोयमा ! सिय पढमे, सिय अपढमे ॥

७. नेरइए णं भंते ! जीवे अणाहारभावेणं—पुच्छा। एवं नेरइए जाव वेमाणिए नो पढमे, अपढमे। सिद्धे पढमे, नो अपढमे ॥

---

१. पढमा (अ, क, ख, ता, ब, म)।

२. उद्देशकद्वारसग्रहणी चेयं गाथा क्वचिद्दृश्यते—
जीवाहारग भवसन्निलेसादिट्ठी य सजयकसाए।
णाणे जोगुवओगे, तेए य सरीरपज्जत्ती ॥ (वृ); 'अ' प्रतावपि एषा गाथा लभ्यते।

३. भ० १।४-१०।

८ अणाहारगा णं भंते ! जीवा अणाहारभावेणं—पुच्छा ।
गोयमा ! पढमा वि, अपढमा वि । नेरइया जाव वेमाणिया नो पढमा, अपढमा । सिद्धा पढमा, नो अपढमा—एक्केक्के पुच्छा भाणियव्वा ॥

९. भवसिद्धीए एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए, एवं अभवसिद्धीए वि । नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीए णं भंते ! जीवे नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीयभावेणं—पुच्छा । गोयमा ! पढमे, नो अपढमे । नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीए णं भंते ! सिद्धे नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीयभावेणं—पुच्छा । एवं पुहत्तेण वि दोण्ह वि ॥

१० सण्णी णं भंते ! जीवे सण्णीभावेणं किं पढमे—पुच्छा ।
गोयमा ! नो पढमे, अपढमे । एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणिए । एवं पुहत्तेण वि । असण्णी एवं चेव एगत्त-पुहत्तेणं, नवरं जाव वाणमंतरा । नोसण्णी-नोअसण्णी जीवे मणुस्से सिद्धे पढमे, नो अपढमे । एवं पुहत्तेण वि ।

११ सलेसे णं भंते !— पुच्छा ।
गोयमा ! जहा आहारए, एवं पुहत्तेण वि । कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा एवं चेव, नवरं—जस्स जा लेसा अत्थि । अलेसे णं जीव-मणुस्स-सिद्धे जहा नोसण्णी-नो असण्णी ॥

१२. सम्मदिट्ठीए णं भंते ! जीवे सम्मदिट्ठिभावेणं किं पढमे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय पढमे, सिय अपढमे । एवं एगिंदियवज्जं जाव वेमाणिए । सिद्धे पढमे, नो अपढमे । पुहत्तिया जीवा पढमा वि, अपढमा वि । एवं जाव वेमाणिया । सिद्धा पढमा, नो अपढमा । मिच्छादिट्ठीए एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारगा । सम्मामिच्छदिट्ठी एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी, नवरं—जस्स अत्थि सम्मामिच्छत्तं ॥

१३. संजए जीवे मणुस्से य एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी । असंजए जहा आहारए । संजयासंजए जीवे पंचिंदियतिरिक्खजोणिय-मणुस्सा एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी । नोसंजए नो असंजए नोसंजयासंजए जीवे सिद्धे य एगत्त-पुहत्तेणं पढमे, नो अपढमे ॥

१४ सकसायी, कोहकसायी जाव लोभकसायी—एए एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए । अकसायी जीवे सिय पढमे, सिय अपढमे । एवं मणुस्से वि । सिद्धे पढमे, नो अपढमे । पुहत्तेणं जीवा मणुस्सा वि पढमा वि अपढमा वि । सिद्धा पढमा, नो अपढमा ॥

१५. नाणी एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी । आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जव-नाणी एगत्त-पुहत्तेणं एवं चेव, नवरं—जस्स जं अत्थि । केवलनाणी जीवे मणुस्से सिद्धे य एगत्त-पुहत्तेणं पढमा, नो अपढमा । अण्णाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभंगनाणी य एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए ॥

१६. सजोगी, मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए, नवरं—जस्स जो जोगो अत्थि। अजोगी जीव मणुस्स-सिद्धा एगत्त-पुहत्तेणं पढमा, नो अपढमा ॥

१७. सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता एगत्त-पुहत्तेणं जहा अणाहारए ॥

१८. सवेदगो जाव नपुंसगवेदगो एगत्त-पुहत्तेण जहा आहारए, नवर— जस्स जो वेदो अत्थि। अवेदओ एगत्त-पुहत्तेण तिसु वि पदेसु जहा अकसायी ॥

१९. ससरीरी जहा आहारए, एव जाव कम्मगसरीरी, जस्स जं अत्थि सरीरं, नवरं—आहारगसरीरी[1] एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी। असरीरी जीवो सिद्धो य एगत्त-पुहत्तेणं 'पढमो, नो अपढमो'[2] ॥

२०. पंचहि पज्जत्तीहि पचहिं अपज्जत्तीहिं एगत्त-पुहत्तेण जहा आहारए, नवरं—जस्स जा अत्थि जाव वेमाणिया नो पढमा, अपढमा। इमा लक्खणगाहा—

जो जेण पत्तपुव्वो, भावो सो तेण अपढमओ होइ।
सेसेसु होइ पढमो, अपत्तपुव्वेसु भावेसु ॥१॥

चरिम-अचरिम-पदं

२१. जीवे णं भंते ! जीवभावेणं कि चरिमे ? अचरिमे ?
गोयमा ! नो चरिमे, अचरिमे ॥

२२. नेरइए णं भंते ! नेरइयभावेणं—पुच्छा।
गोयमा ! सिय चरिमे, सिय अचरिमे। एवं जाव वेमाणिए। सिद्धे जहा जीवे ॥

२३. जीवा णं—पुच्छा।
गोयमा ! नो चरिमा, अचरिमा। नेरइया चरिमा वि, अचरिमा वि। एवं जाव वेमाणिया। सिद्धा जहा जीवा ॥

२४. आहारए सव्वत्थ एगत्तेण सिय चरिमे, सिय अचरिमे; पुहत्तेणं चरिमा वि, अचरिमा वि। अणाहारओ जीवो सिद्धो य एगत्तेण वि पुहत्तेण वि 'नो चरिमो, अचरिमो'[3]। सेसट्ठाणेसु एगत्त-पुहत्तेण जहा आहारओ ॥

२५. भवसिद्धीओ जीवपदे एगत्त-पुहत्तेण चरिमे, नो अचरिमे। सेसट्ठाणेसु जहा आहारओ। अभवसिद्धीओ सव्वत्थ एगत्त-पुहत्तेणं नो चरिमे, अचरिमे। नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीयजीवा सिद्धा य एगत्त-पुहत्तेणं जहा अभवसिद्धीओ ॥

---

१. आहारासरीरी (क, ख, ता)।
२. पढमा नो अपढमा (अ, क, ख, ता, ब, म)।
३. नो चरिमा अचरिमा (क, ख, ता, ब, म)।

२६ सण्णी जहा आहारओ, एवं असण्णी वि । नोसण्णी-नोअसण्णी जीवपदे सिद्धपदे य अचरिमे, मणुस्सपदे चरिमे एगत्त-पुहत्तेण ॥

२७. सलेस्सो जाव सुक्कलेस्सो जहा आहारओ, नवर—जस्स जा अत्थि । अलेस्सो जहा नोसण्णी-नोअसण्णी ॥

२८. सम्मदिट्ठी जहा अणाहारओ । मिच्छादिट्ठी जहा आहारओ । सम्मामिच्छदिट्ठी एगिंदिय-विगलिंदियवज्ज सिय चरिमे, सिय अचरिमे । पुहत्तेणं चरिमा वि, अचरिमा वि ॥

२९ संजओ जीवो मणुस्सो य जहा आहारओ । अस्संजओ वि तहेव । सजयासंजए वि तहेव, नवरं—जस्स ज अत्थि । नोसजय-नोअसजय-नोसजयासजओ जहा नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीओ ॥

३०. सकसायी जाव लोभकसायी सव्वट्ठाणेसु जहा आहारओ । अकसायी जीवपदे सिद्धे य नो चरिमे, अचरिमे । मणुस्सपदे सिय चरिमे, सिय अचरिमे ॥

३१. नाणी जहा सम्मद्दिट्ठी सव्वत्थ । आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी जहा आहारओ, नवर—जस्स ज अत्थि । केवलनाणी जहा नोसण्णी-नोअसण्णी । अण्णाणी जाव विभगनाणी जहा आहारओ ॥

३२. सजोगी जाव कायजोगी जहा आहारओ, जस्स जो जोगो अत्थि । अजोगी जहा नोसण्णी-नोअसण्णी ॥

३३. सागारोवउत्तो अणागारोवउत्तो य जहा अणाहारओ ॥

३४. सवेदओ जाव नपुसगवेदओ जहा आहारओ । अवेदओ जहा अकसायी ॥

३५.ससरीरी जाव कम्मगसरीरी जहा आहारओ, नवर—जस्स ज अत्थि । असरीरी जहा नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीओ ॥

३६. पचहि पज्जत्तीहिं पचहिं अपज्जत्तीहि जहा आहारओ, सव्वत्थ एगत्त-पुहत्तेणं दंडगा भाणियव्वा । इमा लक्खणगाहा—

जो ज पाविहिति पुणो, भाव सो तेण अचरिमो होइ ।
अच्चतविओगो जस्स, जेण भावेण सो चरिमो ॥१॥

३७. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[1] विहरइ ॥

---

१. भ० १।५१ ।

बीओ उद्देसो

सक्कस्स कत्तिय-सेट्ठिनाम-पुव्वभव-पदं

३८. तेण कालेणं तेणं समएणं विसाहा नाम नगरी होत्था—वण्णओ[1]। बहुपुत्तिए चेइए—वण्णओ[2]। सामी समोसढे जाव[3] पज्जुवासइ। तेणं कालेणं तेण समएण सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे—एवं जहा सोलसमसए बितियउद्देसए तहेव दिव्वेण जाणविमाणेणं आगओ, नवरं—एत्थं आभियोगा वि अत्थि जाव[4] बत्तीसतिविहं नट्टविहिं उवदसेत्ता जाव पडिगए॥

३९. भंतेति! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं[5] •वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता॰ एवं वयासी—जहा तइयसए ईसाणस्स तहेव कूडागारदिट्ठंतो, तहेव पुव्वभवपुच्छा जाव[6] अभिसमन्नागए?

४०. गोयमादि! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा! तेण कालेणं तेणं समएण इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणापुरे नाम नगरे होत्था—वण्णओ[7]। सहसंबवणे[8] उज्जाणे—वण्णओ[9]। तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे कत्तिए नाम सेट्ठी परिवसति अड्ढे जाव[10] बहुजणस्स अपरिभूए, नेगमपढमासणिए, नेगमट्ठसहस्सस्स बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कोडुंबेसु य [11]•मंतेसु य रहस्सेसु य गुज्झेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू, मेढिभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए॰ चक्खुभूए, नेगमट्ठसहस्सस्स सयस्स य कुडुंबस्स आहेवच्चं[12] •पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं॰ कारेमाणे पालेमाणे, समणोवासए, अहिगयजीवाजीवे जाव[13] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

४१. तेणं कालेणं तेणं समएण मुणिसुव्वए अरहा आदिगरे जहा सोलसमसए तहेव जाव समोसढे जाव[14] परिसा पज्जुवासइ॥

४२. तए णं से कत्तिए सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे एवं जहा एक्कारसमसए सुदंसणे तहेव निग्गओ जाव[15] पज्जुवासति॥

---

१. ओ॰ सू॰ १।
२. ओ॰ सू॰ २-१३।
३. ओ॰ सू॰ २२-५२।
४. भ॰ १६।३३; ३।२७।
५. सं॰ पा॰—महावीरं जाव एवं।
६. भ॰ ३।२८-३०।
७. ओ॰ सू॰ १।
८. सहस्संबवणे (स)।
९. भ॰ ११।५७।
१०. भ॰ २।९४।
११. सं॰ पा॰—एवं जहा रायपसेणइज्जे चित्ते जाव चक्खुभूए।
१२. सं॰ पा॰—आहेवच्चं जाव कारेमाणे।
१३. भ॰ २।९४।
१४. भ॰ १६।६७,६८।
१५. भ॰ ११।११६।

४३. तए णं मुणिसुव्वए अरहा कत्तियस्स सेट्ठिस्स [1]•तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ° जाव[2] परिसा पडिगया ॥

४४ तए ण से कत्तिए सेट्ठी मुणिसुव्वयस्स[3] •अरहओ अतियं धम्मं सोच्चा° निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता मुणिसुव्वय[4] •अरह वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमं-सित्ता° एव वयासी—एवमेयं भते ! जाव[5]—से जहेयं तुब्भे वदह ज, नवर—देवाणुप्पिया ! नेगमट्ठसहस्स आपुच्छामि, जेट्ठपुत्त च कुडुबे ठावेमि, तए णं अह देवाणुप्पियाणं अतियं पव्वयामि ।
अहासुह देवाणुप्पिया[6] ! मा पडिबधं ॥

४५. तए ण से कत्तिए सेट्ठी जाव[7] पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव सए गेहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नेगमट्ठसहस्सं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए मुणिसुव्वयस्स अरहओ अतियं धम्मे निसते, से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए । तए णं अह देवाणुप्पिया ! ससारभयुव्विग्गे जाव[8] पव्वयामि, त तुब्भे णं देवाणु-प्पिया ! किं करेह, कि ववसह, किं[9] भे हियइच्छिए, किं[10] भे सामत्थे ?

४६. तए ण त नेगमट्ठसहस्स पि[11] कत्तिय सेट्ठि एव वयासी—जइ णं तुब्भे देवाणु-प्पिया ! ससारभयुव्विग्गा जाव पव्वयह[12], अम्ह देवाणुप्पिया ! के अण्णे आलबे वा, आहारे वा, पडिबधे वा ? अम्हे वि ण देवाणुप्पिया ! संसारभयु-व्विग्गा भीया जम्मणमरणाण देवाणुप्पिएहि सद्धि मुणिसुव्वयस्स अरहओ अतियं मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय[13] पव्वयामो[14] ॥

४७. तए ण से कत्तिए सेट्ठी तं नेगमट्ठसहस्स एव वयासी—जदि णं देवाणुप्पिया ! ससारभयुव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं मए सद्धि मुणिसुव्वयस्स[15] •अरहओ अतियं मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वयह, त गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएसु गिहेसु, विपुलं असणं[16] •पाण खाइमं साइमं° उवक्खडावेह,

---

१. स० पा०—धम्मकहा ।
२. ओ० सू० ७१-७६ ।
३. स० पा०—मुणिसुव्वयस्स जाव निसम्म ।
४. स० पा०—मुणिसुव्वय जाव एवं ।
५. भ० २।५२ ।
६. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
७. भ० १६।७१ ।
८. भ० १८।४६ ।
९. के (क, ख, ता, व, म) ।
१०. के (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
११ तं (ख) ।
१२. पव्वाति (अ), पव्वादि (क, ख, ता, व), पव्वादि (म); पव्वाहिति (स) । नायाधम्म-कहाओ (५।६०) सूत्रानुसारेण एतत् क्रिया-पद स्वीकृतम् ।
१३. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
१४. पव्वामो (अ, ख, ता, व, म) ।
१५. सं० पा०—मुणिसुव्वयस्स जाव पव्वयह ।
१६. स० पा०—असणं जाव उवक्खडावेह ।

मित्त-नाइ[1]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेह, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालं-कारेण य सक्कारेह सम्माणेह, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स पुरओ॰ जेट्ठपुत्ते कुडुंबे ठावेह, ठावेत्ता तं मित्त-नाइ[2]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं॰ जेट्ठपुत्ते आपुच्छह, आपुच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरुहह, दुरुहित्ता मित्त-नाइ[3]-•नियग-सयण-संबंधि॰-परिजणेण जेट्ठपुत्तेहि य समणुगम्ममाणमग्गा सव्विड्ढीए जाव[4] दुंदुहि-निग्घोसनादियरवेण अकालपरिहीणं चेव मम अंतियं पाउब्भवह ॥

४८. तए णं तं नेगमट्ठसहस्सं पि कत्तियस्स सेट्ठिस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव साइं-साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता विपुलं असणं[5] •पाणं खाइमं साइमं॰ उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ[6]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ॰, तस्सेव मित्त-नाइ[7]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स॰ पुरओ जेट्ठपुत्ते कुडुंबे ठावेति, ठावेत्ता तं मित्त-नाइ[8]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं॰ जेट्ठपुत्ते य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरुहति, दुरुहित्ता मित्त-नाइ[9]-•नियग-सयण-संबंधि॰ परिजणेणं जेट्ठपुत्तेहि य समणुगम्ममाणमग्गा सव्विड्ढीए जाव[10] दुंदुहि-निग्घोसनादियरवेणं अकालपरिहीणं चेव कत्तियस्स सेट्ठिस्स अंतियं पाउब्भवंति ॥

४९. तए णं से कत्तिए सेट्ठी विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति जहा गंगदत्तो जाव[11] सीयं दुरुहति, दुरुहित्ता मित्त-नाइ[12]-•नियग-सयण-संबंधि॰-परिजणेणं जेट्ठपुत्तेणं नेगमट्ठसहस्सेण य समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव[13] दुंदुहि-निग्घोसनादियरवेणं हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, जहा गंगदत्तो जाव[14] आलित्ते णं भंते! लोए, पलित्ते णं भंते! लोए, आलित्त-पलित्ते णं भंते! लोए जाव[15] आणुगामियत्ताए भविस्सति, तं इच्छामि णं भंते! नेगमट्ठसहस्सेण सद्धिं सयमेव पव्वावियं जाव[16] धम्ममाइक्खियं ॥

---

१. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते।
२. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते।
३. सं० पा०—नाइ जाव परिजणेणं।
४. भ० ९।१८२।
५. सं० पा०—असणं जाव उवक्खडावेति।
६. सं० पा०—नाइ जाव तस्सेव।
७. सं० पा०—नाइ जाव पुरओ।
८. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते।
९. सं० पा०—नाइ जाव परिजणेण।
१०. भ० ९।१८२;
११. भ० १६।७१।
१२. सं० पा०—नाइ जाव परिजणेणं।
१३. भ० ९।१८२।
१४. भ० १६।७१; ९।२१४।
१५. भ० ९।२१४।
१६. भ० २।५२।

५०. तए ण मुणिसुव्वए अरहा कत्तियं सेट्ठिं नेगमट्ठसहस्सेणं सद्धि सयमेव पव्वावेति जाव[1] धम्ममाइक्खइ—एव देवाणुप्पिया! गतव्व, एवं चिट्ठियव्वं जाव[2] संजमियव्व ॥

५१. तए णं से कत्तिए सेट्ठी नेगमट्ठसहस्सेण सद्धि मुणिसुव्वयस्स अरहओ इमं एयारूवं धम्मिय उवदेसं सम्म पडिवज्जइ, तमाणाए तहा गच्छति जाव[3] सजमेति ॥

५२. तए ण से कत्तिए सेट्ठी नेगमट्ठसहस्सेण सद्धि अणगारे जाए—ईरियासमिए जाव[4] गुत्तबभयारी ॥

५३. तए ण से कत्तिए अणगारे मुणिसुव्वयस्स अरहओ तहारूवाण थेराण अतियं सामाइयमाइयाइ चोद्दस पुव्वाइ अहिज्जइ, अहिज्जिता बहूहि चउत्थ छट्ठट्ठम[5]-°दसम-दुवालसेहि, मासद्धमासखमणेहि विचित्तेहि तवोकम्मेहि° अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइ दुवालस वासाइ सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण झोसेइ, झोसेत्ता सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेति, छेदेत्ता आलोइय[6]-°पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे° काल किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि[7] °देवदूसतरिए अगुलस्स असखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए° सक्के देविदत्ताए उववन्ने ॥

५४. तए ण से सक्के देविदे देवराया अहुणोववण्णमेत्तए सेस जहा गगदत्तस्स जाव[8] सव्वदुक्खाणं अत काहिति, नवरं – ठिती दो सागरोवमाइ, सेस तं चेव ॥

५५. सेवं भते! सेव भते! त्ति[9] ॥

तइओ उद्देसो

मागंदियपुत्त-पदं

५६. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नगरे होत्था—वण्णओ। गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव[10] परिसा पडिगया। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ

---

१. भ० २।५३।
२. भ० २।५३।
३. भ० २।५४।
४. भ० २।५५।
५. सं० पा०—छट्ठट्ठम जाव अप्पाण।
६. सं० पा०—आलोइय जाव कालं।
७. स० पा०—देवसयणिज्जंसि जाव सक्के।
८. भ० १६।७२-७५।
९. भ० १।५१।
१०. भ० १।२-५।

महावीरस्स[1] अंतेवासी मागंदियपुत्ते नाम अणगारे पगइभद्दए—जहा मंडियपुत्ते जाव[2] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—

५७. से नूणं भंते ! काउलेस्से पुढविकाइए काउलेस्सेहिंतो पुढविकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं लभति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झति, बुज्झित्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव[3] सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
हंता मागंदियपुत्ता ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

५८. से नूणं भंते ! काउलेस्से[4] आउकाइए काउलेस्सेहिंतो आउकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं लभति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
हंता मागंदियपुत्ता ! जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

५९. से नूणं भंते ! काउलेस्से वणस्सइकाइए [5]•काउलेसेहिंतो वणस्सइकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं लभति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झति, बुज्झित्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
हंता मागंदियपुत्ता !° जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

६०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति मागंदियपुत्ते अणगारे समणं भगवं महावीरं[6] •वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता जेणेव समणा निग्गंथा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणे निग्गंथे एवं वयासी—एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए तहेव जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति । एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से आउक्काइए तहेव जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति । एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए तहेव जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

६१. तए णं ते समणा निग्गंथा मागंदियपुत्तस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोएंति, एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोएमाणा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते ! मागंदियपुत्ते अणगारे अम्हं एवमाइक्खति जाव परूवेति—एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति । एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से आउक्काइए जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ! एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए वि जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

६२. से कहमेयं भंते ! एवं ?

---

१. महावीरस्स जाव (स) ।
२. भ० ३।१३४; १।२८८, २८९ ।
३. भ० १।४४ ।
४. काउलेसे (अ, स) ।
५. स० पा०—एवं चेव जाव ।
६. स० पा०—महावीरं जाव नमंसित्ता ।

अज्जोति ! समणे भगव महावीरे ते समणे निग्गथे आमतित्ता एव वयासी—जण्ण अज्जो ! मागदियपुत्ते अणगारे तुब्भे एवमाइक्खति जाव परूवेति—एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति । एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से आउकाइए जाव सव्वदुक्खाण अत करेति । एव खलु अज्जो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए वि जाव सव्वदुक्खाण अत करेति । सच्चे ण एसमट्ठे । अह पि ण अज्जो ! एवमाइक्खामि एवं भासेमि एव पण्णवेमि एव परूवेमि—एव खलु अज्जो ! कण्हलेसे पुढविकाइए कण्हलेसेहितो पुढविकाइएहितो जाव सव्वदुक्खाण अत करेति । एव खलु अज्जो ! नीललेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाण अत करेति । एव काउलेस्से वि । जहा पुढविकाइए एव आउकाइए वि, एवं वणस्सइकाइए वि । सच्चे ण एसमट्ठे ॥

६३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति समणा निग्गथा समण भगव महावीर वंदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता जेणेव मागदियपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मागदियपुत्त अणगार वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेति ॥

६४. तए ण से मागदियपुत्ते अणगारे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—

६५ अणगारस्स ण भते ! भावियप्पणो सव्व कम्म वेदेमाणस्स सव्व कम्म निज्जरेमाणस्स सव्व मार मरमाणस्स सव्व सरीरं विप्पजहमाणस्स, चरिम कम्म वेदेमाणस्स चरिम कम्म निज्जरेमाणस्स चरिम मार मरमाणस्स चरिमं सरीर विप्पजहमाणस्स, मारणतिय कम्म वेदेमाणस्स मारणतिय कम्म निज्जरेमाणस्स मारणतिय मारं मरमाणस्स मारणतिय सरीर विप्पजहमाणस्स जे चरिमा निज्जरापोग्गला सुहुमा ण ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्व लोग पि ण ते ओगाहित्ता ण चिट्ठति ?

हता मागदियपुत्ता ! अणगारस्स ण भावियप्पणो सव्वं कम्मं वेदेमाणस्स जाव जे चरिमा निज्जरापोग्गला सुहुमा ण ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्व लोग पि ण ते ओगाहित्ता ण चिट्ठति ॥

निज्जरापोग्गल-जाणणादि-पदं

६६. छउमत्थे णं भते ! मणुस्से तेसिं निज्जरापोग्गलाण किंचि आणत्त वा नाणत्तं वा [1]ओमत्त वा तुच्छत्त वा गरुयत्तं वा लहुयत्त वा जाणइ-पासइ ?

मागदियपुत्ता ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

---

१. स० पा०—एव जहा इदियउद्देसए पढमे जाव वेमाणिया, जाव तत्थ ण जे ते उवउत्ता ते जाणति-पासति, आहारेंति । से तेणट्ठेणं निक्खेवो भाणियव्वो ।

६७. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—छउमत्थे ण मणुस्से तेसि निज्जरापोग्गलाणं नो किंचि आणत्त वा नाणत्त वा ओमत्त वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणइ-पासइ ?

मागंदियपुत्ता ! देवे वि य ण अत्थेगइए जे ण तेसि निज्जरापोग्गलाणं नो किंचि आणत्त वा नाणत्त वा ओमत्त वा तुच्छत्त वा गरुयत्तं वा लहुयत्त वा जाणइ-पासइ। से तेणट्ठेण मागंदियपुत्ता ! एव वुच्चइ—छउमत्थे णं मणुस्से तेसि निज्जरापोग्गलाण नो किंचि आणत्तं वा नाणत्त वा ओमत्त वा तुच्छत्तं वा गरुयत्त वा लहुयत्त वा जाणइ-पासइ, सुहुमा ण ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वलोग पि य ण ते ओगाहित्ता चिट्ठति ।।

६८. नेरइया णं भंते ! ते निज्जरापोग्गले किं जाणति-पासति ? आहारेंति ? उदाहु न जाणति न पासति, न आहारेंति ?

मागंदियपुत्ता ! नेरइया ण ते निज्जरापोग्गले न जाणति न पासति, आहारेंति। एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया ।।

६९. मणुस्सा ण भंते ! ते निज्जरापोग्गले किं जाणति-पासति ? आहारेंति ? उदाहु न जाणति न पासति, न आहारेंति ?

मागंदियपुत्ता ! अत्थेगइया जाणति-पासति, आहारेंति । अत्थेगइया न जाणति न पासति, आहारेंति ।।

७०. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया जाणति-पासति, आहारेंति ? अत्थेगइया न जाणति न पासति, आहारेंति ?

मागंदियपुत्ता ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सण्णिभूया य, असण्णिभूया य। तत्थ णं जे ते असण्णिभूया ते णं न जाणंति न पासंति, आहारेंति। तत्थ णं जे ते सण्णिभूया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उवउत्ता य, अणुवउत्ता य । तत्थ णं जे ते अणुवउत्ता ते ण न जाणति न पासति, आहारेंति । तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते ण जाणति-पासंति, आहारेंति । से तेणट्ठेण मागंदियपुत्ता ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया न जाणति न पासंति, आहारेंति । अत्थेगइया जाणति-पासति, आहारेंति । वाणमंतर-जोइसिया जहा नेरइया ।।

७१. वेमाणिया णं भंते ! ते निज्जरापोग्गले किं जाणति-पासति ? आहारेंति ?

मागंदियपुत्ता ! जहा मणुस्सा, नवर—वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—मायिमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य, अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा य । तत्थ णं जे ते मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगा ते णं न जाणंति न पासंति, आहारेंति । तत्थ णं जे ते अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—अणतरोववन्नगा य परंपरोववन्नगा य । तत्थ णं जे ते अणंतरोववन्नगा ते ण न जाणंति न पासति, आहारेंति । तत्थ णं जे ते परंपरोववन्नगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य, अपज्जत्तगा य । तत्थ ण जे ते अपज्जत्तगा ते णं न जाणंति

न पासंति, आहारेंति । तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उवउत्ता य, अणुवउत्ता य । तत्थ णं जे ते अणुवउत्ता ते णं न जाणंति न पासंति, आहारेंति । तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते णं जाणंति-पासंति, आहारेंति । से तेणट्ठेणं मागंदियपुत्ता ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया न जाणंति न पासंति, आहारेंति । अत्थेगइया जाणंति-पासंति, आहारेंति° ॥

बंध-पदं

७२. कतिविहे णं भंते ! बंधे पण्णत्ते ?
मागंदियपुत्ता ! दुविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वबंधे य, भावबंधे य ॥

७३. दव्वबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
मागंदियपुत्ता दुविहे ! पण्णत्ते, तं जहा—पयोगबंधे य, वीससाबंधे य ॥

७४. वीससाबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सादीयवीससाबंधे य, अणादीयवीससाबंधे य ॥

७५. पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सिढिलबंधणबंधे य, धणियबंधणबंधे य ॥

७६. भावबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—मूलपगडिबंधे य, उत्तरपगडिबंधे य ॥

७७. नेरइयाणं भंते ! कतिविहे भावबंधे पण्णत्ते ?
मागंदियपुत्ता ! दुविहे भावबंधे पण्णत्ते, तं जहा—मूलपगडिबंधे य, उत्तरपगडिबंधे य । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

७८. नाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स कतिविहे भावबंधे पण्णत्ते ?
मागंदियपुत्ता ! दुविहे भावबंधे पण्णत्ते, तं जहा—मूलपगडिबंधे य, उत्तरपगडिबंधे य ॥

७९. नेरइयाणं भंते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कतिविहे भावबंधे पण्णत्ते ?
मागंदियपुत्ता ! दुविहे भावबंधे पण्णत्ते, तं जहा—मूलपगडिबंधे य, उत्तरपगडिबंधे य । एवं जाव वेमाणियाणं । जहा नाणावरणिज्जेणं दंडओ भणियो एवं जाव अंतराइएणं भाणियव्वो ॥

कम्म-नाणत्त-पदं

८०. जीवाणं भंते ! पावे कम्मे जे य कडे[1], °जे य कज्जइ[2]°, जे य कज्जिस्सइ, अत्थि याइ तस्स केइ नाणत्ते ?
हंता अत्थि ॥

---

१. स० पा०—कडे जाव जे ।
२. जे य कडमाणे (ता) ।

८१. से केणट्ठेणं भंत्ते ! एवं वुच्चइ—जीवाणं पावे कम्मे जे य कडे[1], •जे य कज्जइ°, जे य कज्जिस्सइ, अत्थि याइ तस्स नाणत्ते ?
मागंदियपुत्ता ! से जहानामए—केइ पुरिसे धणुं परामुसइ, परामुसित्ता उसु परामुसइ, परामुसित्ता ठाणं ठाइ, ठाइत्ता आययकण्णायतं उसु करेति, करेत्ता उड्ढं वेहास उव्विहइ, से नूणं मागंदियपुत्ता ! तस्स उसुस्स उड्ढं वेहास उव्वीढस्स समाणस्स एयति वि नाणत्तं[2], •वेयति वि नाणत्त, चलति वि नाणत्तं, फंदइ वि नाणत्तं, घट्टइ वि नाणत्तं, खुब्भइ वि नाणत्तं, उदीरइ वि नाणत्तं° तं तं भावं परिणमति वि नाणत्त ?
हंता भगव ! एयति वि नाणत्त जाव तं त भाव परिणमति वि नाणत्त।
से तेणट्ठेणं मागंदियपुत्ता ! एव वुच्चइ - एयति वि नाणत्त जाव तं तं भावं परिणमति वि नाणत्तं ॥

८२. नेरइयाण भते ! पावे कम्मे जे य कडे° ? एवं चेव। एवं जाव वेमाणियाण ॥

८३. नेरइया णं भते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हति, तेसि ण भते ! पोग्गलाण सेयकालंसि कतिभाग आहारेति ? कतिभागं निज्जरेंति ?
मागंदियपुत्ता ! असंखेज्जइभागं आहारेति, अणंतभागं निज्जरेति ॥

८४. चक्किया ण भंते ! केइ तेसु निज्जरापोग्गलेसु आसइत्तए वा जाव[3] तुयट्टित्तए वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे। अणाहारणमेय वुइय समणाउसो ! एवं जाव वेमाणियाणं ॥

८५. सेवं भते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

चउत्थो उद्देसो

जीवाणं परिभोगापरिभोग-पदं

८६. तेणं कालेणं तेणं समएण रायगिहे जाव[5] भगवं गोयमे एवं वयासी—अह भते ! पाणाइवाए, मुसावाए जाव[6] मिच्छादंसणसल्ले, पाणाइवायवेरमणे जाव[7]

---

१. सं० पा०—कडे जाव जे।
२. स० पा०—नाणत्तं जाव तं।
३. भ० ७।२१९।
४. भ० १।५१।
५ भ० १।४-१०।
६. भ० १।३८४।
७. भ० १।३८५।

मिच्छादंसणसल्लवेरमणे, पुढविक्काइए जाव वणस्सइकाइए, धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवे असरीरपडिवद्धे, परमाणुपोग्गले, सेलेसिं पडिवन्नए अणगारे, सव्वे य वादरबोदिधरा कलेवरा—एए ण दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाण परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ?

गोयमा ! पाणाइवाए जाव एए णं दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य अत्थेगइया जीवाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति, अत्थेगइया जीवाणं परिभोगत्ताए[1] नो हव्वमागच्छति ।।

८७. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—पाणाइवाए जाव नो हव्वमागच्छंति ?

गोयमा ! पाणाइवाए जाव मिच्छादसणसल्ले, पुढविकाइए जाव वणस्सइकाइए, सव्वे य वादरबोदिधरा कलेवरा—एए ण दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाण परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति । पाणाइवायवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए जाव परमाणुपोग्गले, सेलेसिं पडिवन्नए अणगारे—एए ण दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाण परिभोगत्ताए नो हव्वमागच्छति । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—पाणाइवाए जाव नो हव्वमागच्छति ।।

कसाय-पदं

८८. कति ण भंते ! कसाया पण्णत्ता ?

गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता, त जहा—कसायपद निरवसेस भाणियव्व जाव[2] निज्जरिस्सति लोभेण ।।

जुम्म-पदं

८९. कति ण भते ! जुम्मा पण्णत्ता ?

गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, त जहा—कडजुम्मे, तेयोगे[3], दावरजुम्मे[4], कलिओगे[5] ।।

९०. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—जाव कलिओगे ?

गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे चउपज्जवसिए सेत्त कडजुम्मे । जे णं रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे तिपज्जवसिए सेत्तं तेयोगे । जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे दुपज्जवसिए सेत्तं दावरजुम्मे । जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे एगपज्जवसिए सेत्त कलिओगे । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ जाव कलिओगे ।।

---

१. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

२. प० १४ ।

३. तेयोए (अ), तेजोए (क); तेयोते (ख, व); तेयोदे (ता), तेजोगे (म), तियोगे (स) ।

४. वादरजुम्मे (अ, क); वादरजुण्णे (ता) ।

५. कलिओए (ख); कलिओदे (ता) ।

९१. नेरइया णं भंते ! किं कडजुम्मा ? तेयोगा ? दावरजुम्मा ? कलिओगा ?
गोयमा ! जहण्णपदे कडजुम्मा, उक्कोसपदे तेयोगा, अजहण्णुक्कोसपदे सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा। एव जाव थणियकुमारा ॥

९२. वणस्सइकाइया ण—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णपदे अपदा, उक्कोसपदे य अपदा, अजहण्णुक्कोसपदे सिय कडजुम्मा जाव सिय कलिओगा ॥

९३. बेदिया[1] णं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णपदे कडजुम्मा, उक्कोसपदे दावरजुम्मा, अजहण्णमणुक्कोसपदे सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा। एवं जाव चउरिंदिया। सेसा एगिंदिया जहा बेदिया। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया। सिद्धा जहा वणस्सइकाइया ॥

९४. इत्थीओ णं भंते ! किं कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णपदे कडजुम्माओ, उक्कोसपदे कडजुम्माओ, अजहण्णमणुक्कोसपदे सिय कडजुम्माओ जाव सिय कलिओगाओ। एवं असुरकुमारित्थीओ वि जाव थणियकुमारित्थीओ। एव तिरिक्खजोणित्थीओ, एवं मणुसित्थीओ, एवं वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियदेवित्थीओ ॥

अंधगवण्हिजीवाणं वर-पर-पदं

९५. जावतिया णं भंते ! वरा अंधगवण्हिणो जीवा तावतिया परा अंधगवण्हिणो जीवा ?
हंता गोयमा ! जावतिया वरा अंधगवण्हिणो जीवा तावतिया परा अंधगवण्हिणो जीवा ॥

९६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

पंचमो उद्देसो

वेउव्वियावेउव्विय-असुरकुमारादि-पदं

९७. दो भंते ! असुरकुमारा एगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारदेवत्ताए उववन्ना, तत्थ ण एगे असुरकुमारे देवे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, एगे असुरकुमारे देवे से ण नो पासादीए नो दरिसणिज्जे नो अभिरूवे नो पडिरूवे, से कहमेयं भंते ! एवं ?

---

१. बेइंदिया (ब)। २. भ० १।५१।

गोयमा ! असुरकुमारा देवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—वेउव्वियसरीरा य, अवेउव्वियसरीरा य। तत्थ ण जे से वेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे से णं पासादीए जाव पडिरूवे। तत्थ णं जे से अवेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे से णं नो पासादीए जाव नो पडिरूवे ॥

९८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तत्थ णं जे से वेउव्वियसरीरे तं चेव जाव नो पडिरूवे ?

गोयमा ! से जहानामए—इह मणुयलोगंसि दुवे पुरिसा भवंति—एगे पुरिसे अलंकियविभूसिए, एगे पुरिसे अणलंकियविभूसिए। एएसि ण गोयमा ! दोण्हं पुरिसाणं कयरे पुरिसे पासादीए जाव पडिरूवे, कयरे पुरिसे नो पासादीए जाव नो पडिरूवे। जे वा से पुरिसे अलंकियविभूसिए, जे वा से पुरिसे अणलंकियविभूसिए ?

भगवं ! तत्थ ण जे से पुरिसे अलंकियविभूसिए से णं पुरिसे पासादीए जाव पडिरूवे। तत्थ णं जे से पुरिसे अणलंकियविभूसिए से णं पुरिसे नो पासादीए जाव नो पडिरूवे। से तेणट्ठेण जाव नो पडिरूवे ॥

९९. दो भंते ! नागकुमारा देवा एगंसि नागकुमारावासंसि० ? एवं चेव जाव थणियकुमारा। वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया एवं चेव ॥

नेरइयादीणं महाकम्मादि-पदं

१००. दो भंते ! नेरइया एगंसि नेरइयावासंसि नेरइयत्ताए उववन्ना। तत्थ णं एगे नेरइए महाकम्मतराए चेव[1], °महाकिरियतराए चेव, महासवतराए चेव°, महावेयणतराए चेव, एगे नेरइए अप्पकम्मतराए चेव[2], °अप्पकिरियतराए चेव, अप्पासवतराए चेव°, अप्पवेयणताए चेव, से कहमेयं भंते ! एवं ?

गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगा[3] य, अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नगा य। तत्थ णं जे से मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए नेरइए से णं महाकम्मतराए चेव जाव महावेयणतराए चेव। तत्थ णं जे से अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नए नेरइए से णं अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेयणतराए चेव ॥

१०१. दो भंते ! असुरकुमारा० ? एवं चेव। एवं एगिंदिय-विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणिया ॥

नेरइयादीणं आउय-पदं

१०२. नेरइए णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! कयरं आउयं पडिसंवेदेति ?

---

१. सं० पा०—चेव जाव महावेयण° ।
२. सं० पा०—चेव जाव अप्पवेयण° ।
३. मादिमिच्छ° (व) ।

गोयमा ! नेरइयाउयं पडिसंवेदेति, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाउए से पुरओ कडे चिट्ठति। एवं मणुस्सेसु वि, नवरं—मणुस्साउए से पुरओ कडे चिट्ठति ॥

१०३. असुरकुमारे णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए, [1]•से णं भंते ! कयरं आउयं पडिसंवेदेति ?•

गोयमा ! असुरकुमाराउयं पडिसंवेदेति, पुढविकाइयाउए से पुरओ कडे चिट्ठति। एवं जो जहिं भविओ उववज्जित्तए तस्स तं पुरओ कडं चिट्ठति, जत्थ ठिओ त पडिसंवेदेति जाव वेमाणिए, नवरं—पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जति, पुढविकाइयाउयं पडिसंवेदेति, अण्णे य से पुढविकाइयाउए पुरओ कडे चिट्ठति। एवं जाव मणुस्सो सट्ठाणे उववाएतव्वो, परट्ठाणे तहेव ॥

असुरकुमारादीणं विउव्वणा-पदं

१०४. दो भंते ! असुरकुमारा एगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारदेवत्ताए उववन्ना। तत्थ णं एगे असुरकुमारे देवे उज्जुय विउव्विस्सामीति उज्जुयं विउव्वइ, वंकं विउव्विस्सामीति वंकं विउव्वइ, जं जहा इच्छइ तं तहा विउव्वइ। एगे असुरकुमारे देवे उज्जुयं विउव्विस्सामीति वंकं विउव्वइ, वक विउव्विस्सामीति उज्जुयं विउव्वइ, जं जहा इच्छति नो त तहा विउव्वइ, से कहमेयं भंते ! एवं ?

गोयमा ! असुरकुमारा देवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—मायिमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य, अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा य। तत्थ णं जे से मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए असुरकुमारे देवे से णं उज्जुयं विउव्विस्सामीति वक विउव्वइ जाव नो त तहा विउव्वइ। तत्थ णं जे से अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नए असुरकुमारे देवे से णं उज्जुयं विउव्विस्सामीति उज्जुयं विउव्वइ जाव तं तहा विउव्वइ ॥

१०५. दो भंते ! नागकुमारा० ? एवं चेव। एवं जाव थणियकुमारा। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया एवं चेव ॥

१०६. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति[2] ॥

छट्ठो उद्देसो

नेच्छइय-ववहार-नय-पदं

१०७. फाणियगुले णं भंते ! कतिवण्णे कतिगंधे कतिरसे कतिफासे पण्णत्ते ?

---

१. सं० पा० —पुच्छा।

२. भ० १।५१।

गोयमा ! एत्थ णं दो नया भवंति, तं जहा—नेच्छइयनए[1] य, वावहारियनए य। वावहारियनयस्स गोड्डे[2] फाणियगुले, नेच्छइयनयस्स पचवण्णे दुगधे पंचरसे अट्ठफासे पण्णत्ते ॥

१०८ भमरे ण भते ! कतिवण्णे [3]•कतिगंधे कतिरसे कतिफासे पण्णत्ते° ?
गोयमा ! एत्थ ण दो नया भवति, तं जहा—नेच्छइयनए य, वावहारियनए य। वावहारियनयस्स कालए भमरे, नेच्छइयनयस्स पंचवण्णे जाव अट्ठफासे पण्णत्ते ॥

१०९. सुयपिच्छे ण भंते ! कतिवण्णे कतिगधे कतिरसे कतिफासे पण्णत्ते ?
एव चेव, नवर वावहारियनयस्स नीलए सुयपिच्छे, नेच्छइयनयस्स पचवण्णे [4]•जाव अट्ठफासे पण्णत्ते° । एवं एएण अभिलावेण लोहिया मजिट्ठिया, पीतिया हालिद्दा[5], सुक्किलए संखे, सुब्भिगधे कोट्ठे, दुब्भिगधे मयगसरीरे, तित्ते निंबे, कडुया सुंठी, कसाए[6] कविट्ठे, अंबा अंबिलिया, महुरे खडे, कक्खडे वइरे, मउए नवणीए, गरुए[7] अए, लहुए उलुयपत्ते[8], सीए हिमे, उसिणे[9] अगणिकाए, णिद्धे तेल्ले ॥

११०. छारिया णं भते !—पुच्छा।
गोयमा ! एत्थ दो नया भवंति, तं जहा—नेच्छइयनए य, वावहारियनए य। वावहारियनयस्स लुक्खा छारिया, नेच्छइयनयस्स पचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता ॥

परमाणु-खंधाण वण्णादि-पदं

१११. परमाणुपोग्गले ण भते ! कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! एगवण्णे, एगगंधे, एगरसे, दुफासे पण्णत्ते ॥

११२ दुपएसिए ण भते ! खंधे कतिवण्णे [10]•जाव कतिफासे पण्णत्ते ?°
गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय एगगधे, सिय दुगधे, सिय एगरसे सिय दुरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते ॥

११३ [11]•तिपएसिए ण भते ! खधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?

---

१. निच्छइय° (अ, क, व, स)।
२ गोड्डु (अ); गोडे (स)।
३. स० पा०—पुच्छा।
४. स० पा०—सेस त चेव।
५ हलिद्दा (अ, क, ता, व, म)।
६. कसाए तुयरए (अ, क, ख, ता, व म)।
७. गुरुए (अ, व)।
८. लउयपत्ते (ता)।
९. उसुणे (अ, क, ख, ता, व)।
१०. स० पा०—पुच्छा।
११. सं० पा०—एव तिपएसिए वि, नवरं—सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे। एव रसेसु वि, सेस जहा दुपएसियस्स। एवं चउपएसिए वि, नवर—सिय एगवण्णे

गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय तिरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते ।।

११४. चउपएसिए ण भंते ! खंधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, सिय चउवण्णे, सिय एगगधे, सिय दुगधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय तिरसे, सिय चउरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते ।।

११५. पचपएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, सिय चउवण्णे, सिय पंचवण्णे, सिय एगगधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय तिरसे, सिय चउरसे, सिय पचरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते ।° जहा पंचपएसिओ एवं जाव असखेज्जपएसिओ ।।

११६. सुहुमपरिणए ण भंते ! अणंतपएसिए खंधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ? जहा पचपएसिए तहेव निरवसेस ।।

११७. बादरपरिणए णं भते ! अणतपएसिए खंधे कतिवण्णे [1]°जाव कतिफासे पण्णत्ते ? °
गोयमा ! सिय एगवण्णे, जाव सिय पंचवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगधे, सिय एगरसे जाव सिय पंचरसे, सिय चउफासे जाव सिय अट्ठफासे पण्णत्ते ।।

११८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ।।

सत्तमो उद्देसो

केवलि-भासा-पदं

११९. रायगिहे जाव एवं वयासी—अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति—एवं खलु केवली जक्खाएसेणं आइस्सइ[3], एव खलु केवली जक्खाएसेणं आइट्ठे[4] समाणे आहच्च दो भासाओ भासति, तं जहा—मोसं वा, सच्चामोसं वा, से कहमेयं भते ! एवं ?

जाव सिय चउवण्णे । एवं रसेसु वि, सेसं त चेव । एव पंचपएसिए वि, नवर—सिय एगवण्णे जाव सिय पचवण्णे, एवं रसेसु वि, गधफासा तहेव ।

१. स० पा०—पुच्छा ।
२. भ० १।५१ ।
३. आतिस्सति (स) ।
४. आदिट्ठे (ता); आतिढे (स) ।

गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया जाव[1] जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि भासेमि पण्णवेमि परूवेमि—नो खलु केवली जक्खाएसेण आइस्सइ, नो खलु केवली जक्खाएसेणं आइट्ठे समाणे आहच्च दो भासाओ भासति, त जहा—मोस वा, सच्चामोसं वा । केवली णं असावज्जाओ अपरोवघाइयाओ आहच्च दो भासाओ भासति, त जहा—सच्चं वा, असच्चामोस वा ॥

उवहि-पदं

१२०. कतिविहे णं भंते ! उवही पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा—कम्मोवही, सरीरोवही, वाहिरभंडमत्तोवगरणोवही ॥

१२१. नेरइया ण भते !— पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे उवही पण्णत्ते, त जहा—कम्मोवही य, सरीरोवही य । सेसाण तिविहे उवही एगिदियवज्जाण जाव वेमाणियाणं । एगिदियाण दुविहे उवही पण्णत्ते, त जहा—कम्मोवही य, सरीरोवही य ॥

१२२. कतिविहे णं भते ! उवही पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा—सच्चित्ते, अचित्ते, मीसाए[2] । एवं नेरइयाण वि । एवं निरवसेसं जाव वेमाणियाणं ॥

परिग्गह-पदं

१२३. कतिविहे ण भते ! परिग्गहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—कम्मपरिग्गहे, सरीरपरिग्गहे वाहिरगभंडमत्तोवगरणपरिग्गहे ॥

१२४. नेरइयाण भते ! कतिविहे परिग्गहे पण्णत्ते ? एवं जहा उवहिणा दो दंडगा भणिया तहा परिग्गहेण वि दो दडगा भाणियव्वा ॥

पणिहाण-पदं

१२५ कतिविहे ण भते ! पणिहाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणपणिहाणे, वइपणिहाणे, कायपणिहाणे ॥

१२६ नेरइयाणं भते ! कतिविहे पणिहाणे पण्णत्ते ? एवं चेव । एवं जाव थणियकुमाराणं ॥

१२७. पुढविकाइयाणं—पुच्छा ।

---

१. भ० १।४२१ । २. मीसे (व) ।

गोयमा ! एगे कायपणिहाणे पण्णत्ते । एवं जाव वणस्सइकाइयाण ॥

१२८. बेइंदियाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे पणिहाणे, पण्णते तं जहा—वइपणिहाणे य, कायपणिहाणे य । एव जाव चउरिंदियाण । सेसाणं तिविहे वि जाव वेमाणियाणं ॥

१२९. कतिविहे ण भंते ! दुप्पणिहाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते, त जहा—मणदुप्पणिहाणे, जहेव पणिहाणेणं दडगो भणिओ तहेव दुप्पणिहाणेण वि भाणियव्वो ॥

१३०. कतिविहे णं भते ! सुप्पणिहाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणसुप्पणिहाणे, वइसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे ॥

१३१. मणुस्साण भंते ! कतिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते ? एवं चेव ॥

१३२. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति जाव[1] विहरइ ॥

१३३. तए ण समणे भगवं महावीरे[2] •अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता• वहिया जणवयविहार विहरइ ॥

कालोदाइ-पभितीणं पंचत्थिकाए संदेह-पदं

१३४. तेणं कालेणं तेण समएणं रायगिहे नामं नगरे । गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव पुढविसिलापट्टओ । तस्स णं गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामते बहवे अण्णउत्थिया परिवसंति, तं जहा—कालोदाई, सेलोदाई,[3]•सेवालोदाई, उदए, नामुदए, नम्मुदए, अण्णवालए, सेलवालए, सखवालए, सुहत्थी गाहावई ॥

१३५. तए णं तेसि अण्णउत्थियाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाण समुवागयाण सण्णिविट्ठाणं सण्णिसण्णाण अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे नायपुत्ते पंच अत्थिकाए पण्णवेति, त जहा—धम्मत्थिकायं जाव पोग्गलत्थिकायं ।
तत्थ णं समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए पण्णवेति, त जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, पोग्गलत्थिकाय । एग च णं समणे नायपुत्ते जीवत्थिकायं अरूविकायं जीवकाय पण्णवेति ।
तत्थ णं समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरूविकाए पण्णवेति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकाय, जीवत्थिकायं । एगं च णं

---

१. भ० १।५१ ।
२. सं० पा०—महावीरे जाव वहिया ।
३. सं० पा०—एव जहा सत्तमसए अण्णउत्थियउद्देसए जाव से ।

समणे नायपुत्ते पोग्गलत्थिकाय रूविकाय अजीवकायं पण्णवेति ।° से कहमेयं मन्ने एव ?

१३६. तत्थ ण रायगिहे नगरे मद्दुए नामं समणोवासए परिवसति—अड्ढे जाव बहुजणस्स अपरिभूए, अभिगयजीवाजीवे जाव[1] विहरइ ।।

१३७. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कदायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे[2] °गामाणुगाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव° समोसढे परिसा जाव[3] पज्जुवासति ।।

१३८. तए ण मद्दुए समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ[4] °चित्तमाणदिए णदिए पीईमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण° हियए ण्हाए जाव[5] अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पादविहारचारेण रायगिह नगर मज्झमज्झेण[6] निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता तेसिं अण्णउत्थियाणं अदूरसामंतेण वीईवयइ ।।

१३९. तए ण ते अण्णउत्थिया मद्दुयं समणोवासय अदूरसामंतेण वीईवयमाणं पासति, पासित्ता अण्णमण्ण सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमा कहा अविप्पकडा[7], इम च ण मद्दुए समणोवासए अम्ह अदूरसामतेण वीईवयइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह मद्दुयं समणोवासय एयमट्ठं पुच्छित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अतियं एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव मद्दुए समणोवासए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मद्दुय समणोवासय एवं वदासी—एव खलु मद्दुया ! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे नायपुत्ते पच अत्थिकाए पण्णवेइ, [8]°तं जहा—धम्मत्थिकायं जाव पोग्गलत्थिकाय । त चेव जाव[9] रूविकाय अजीवकाय पण्णवेइ ।° से कहमेय मद्दुया ! एवं ?

मद्दुय-समणोवासएण समाहाण-पदं

१४०. तए ण से मद्दुए समणोवासए ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—जति कज्जं कज्जति जाणामो-पासामो, अहे कज्जं न कज्जति न जाणामो न पासामो ।।

१४१ तए ण ते अण्णउत्थिया मद्दुय समणोवासयं एवं वयासी—केस ण तुम मद्दुया ! समणोवासगाणं भवसि, जे णं तुमं एयमट्ठ न जाणसि न पाससि ?

---

१. भ० २।९४ ।
२. स० पा०—चरमाणे जाव समोसढे ।
३. ओ० सू० २२-५२ ।
४. स० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।
५. भ० २।९७ ।
६. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
७. अविउप्पकडा (क, ब, म, स); अविदुप्पडा (ता) ।
८. स० पा०—जहा सत्तमे सए अण्णउत्थिय-उद्देसए जाव से ।
९. भ० ७।२१३ ।

१४२. तए णं से मद्दुए समणोवासए ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—
अत्थि णं आउसो ! वाउयाए वाति ?
हंता अत्थि ।
तुब्भे णं आउसो ! वाउयायस्स वायमाणस्स रूवं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
अत्थि णं आउसो ! घाणसहगया पोग्गला ?
हंता अत्थि ।
तुब्भे णं आउसो ! घाणसहगयाण पोग्गलाणं रूवं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
अत्थि णं आउसो ! अरणिसहगए अगणिकाए ?
हंता अत्थि ।
तुब्भे णं आउसो ! अरणिसहगयस्स अगणिकायस्स रूवं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
अत्थि णं आउसो ! समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं ?
हंता अत्थि ।
तुब्भे णं आउसो ! समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
अत्थि णं आउसो ! देवलोगगयाइं रूवाइं ?
हंता अत्थि ।
तुब्भे णं आउसो ! देवलोगगयाइं रूवाइं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
एवामेव आउसो ! अहं वा तुब्भे वा अण्णो वा छउमत्थो जइ जो जं न जाणइ न पासइ तं सव्वं न भवति, एवं भे सुबहुए लोए न भविस्सती ति कट्टु ते अण्णउत्थिए एवं पडिभणइ[1], पडिभणित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं जाव[2] पज्जुवासति ॥

भगवया मद्दुयस्स पसंसा-पदं

१४३. मद्दुयादी ! समणे भगवं महावीरे मद्दुयं समणोवासगं एवं वयासी—सुट्ठु णं मद्दुया ! तुमं ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहु णं मद्दुया ! तुमं ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, जे णं मद्दुया ! अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा वागरणं वा अण्णायं अदिट्ठं अस्सुतं अमुयं अविण्णायं बहुजणमज्झे आघवेति पण्णवेति[3] •परूवेति

१. पडिहणति (अ, ख, म, स) ।
२. भ० २।६७ ।
३. सं० पा०—पण्णवेति जाव उवदसेति ।

दंसेति निदसेति॰ उवदसेति, से णं अरहंताणं आसादणाए[1] वट्टति, अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स आसादणाए वट्टति, केवलीणं आसादणाए वट्टति, केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स आसादणाए वट्टति, तं सुट्ठु णं तुमं मद्दुया ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहु णं तुम मद्दुया[2] ! •ते अण्णउत्थिए॰ एव वयासी ॥

१४४. तए ण मद्दुए समणोवासए समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगव महावीरं वदति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता णच्चासण्णे[3] •णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे॰ पज्जुवासइ ॥

१४५. तए णं समणे भगव महावीरे मद्दुयस्स समणोवासगस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्म परिकहेइ जाव[4] परिसा पडिगया ॥

१४६. तए णं मद्दुए समणोवासए समणस्स भगवओ महावीरस्स[5] •अतिए धम्म सोच्चा॰ निसम्म हट्ठतुट्ठे पसिणाइ पुच्छति, पुच्छित्ता अट्ठाइं परियादियति, परियादिइत्ता उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वदित्ता[6] •नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं॰ पडिगए ॥

१४७. भंतेति ! भगव गोयमे समणे भगव महावीर वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—पभू ण भते ! मद्दुए समणोवासए देवाणुप्पियाण अतिय[7] •मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय॰ पव्वइत्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एव जहेव सखे तहेव अरुणाभे जाव[8] अंतं काहिति ॥

विकुव्वणाए एगजीव-संबध-पदं

१४८. देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव[9] महेसक्खे रूवसहस्सं विउव्वित्ता पभू अण्णमण्णेणं सद्धि संगाम संगामित्तए ?
हंता पभू ।
ताओ णं भते ! बोदीओ किं एगजीवफुडाओ ? अणेगजीवफुडाओ ?
गोयमा ? एगजीवफुडाओ, नो अणेगजीवफुडाओ ।
'ते ण भंते ! तासि'[10] बोदीण अंतरा कि एगजीवफुडा ? अणेगजीवफुडा ?
गोयमा ! एगजीवफुडा, नो अणेगजीवफुडा ॥

---

१. आसायणाए (ख); आसातणाए (ता) ।
२. स॰ पा॰—मद्दुया जाव एव ।
३. स॰ पा॰—णच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ ।
४. ओ॰ सू॰ ७१-७९ ।
५. सं॰ पा॰—महावीरस्स जाव निसम्म ।
६. स॰ पा॰—वदित्ता जाव पडिगए ।
७. सं॰ पा॰—अतिय जाव पव्वइत्तए ।
८. भ॰ १२।२७,२८ ।
९. भ॰ १।३३९ ।
१०. ते ण भते ! तेसिं (अ, क, ख, ता, व); तेसि ण भते (म, स) ।

१४९. पुरिसे णं भंते ! अंतरे हत्थेण वा [1]•पादेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा कट्ठेण वा किलिंचेण वा आमुसमाणे वा संमुसमाणे वा आलिहमाणे वा विलिहमाणे वा, अण्णयरेण वा तिक्खेणं सत्थजाएणं आछिंदमाणे वा विछिंदमाणे वा, अगणिकाएण वा समोडहमाणे तेसिं जीवपएसाणं किंचि आवाहं वा विबाहं वा उप्पाएइ ? छविच्छेदं वा करेइ ?
नो इणट्ठे समट्ठे° । नो खलु तत्थ सत्थं कमति ॥

देवासुर-संगाम-पद

१५०. अत्थि णं भंते ! देवासुराणं संगामे, देवासुराणं संगामे ?
हंता अत्थि ॥

१५१. देवासुरेसु णं भंते ! संगामेसु वट्टमाणेसु किण्णं तेसिं देवाणं पहरणरयणत्ताए परिणमति ?
गोयमा ! जण्णं ते देवा तणं वा कट्ठं वा पत्तं वा सक्करं वा परामुसंति[2] तण्णं तेसिं देवाणं पहरणरयणत्ताए परिणमति ।
जहेव देवाणं तहेव असुरकुमाराणं ? नो इणट्ठे समट्ठे । असुरकुमाराणं निच्चं विउव्विया पहरणरयणा पण्णत्ता ॥

देवस्स दीवसमुद्द-अणुपरियट्टण-पदं

१५२. देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे पभू लवणसमुद्दं अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छित्तए ?
हंता पभू ॥

१५३. देवे णं भंते ! महिड्ढिए [3]•जाव महेसक्खे पभू धायइसंडं दीवं अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छित्तए ?°
हंता पभू । एवं जाव[4] रुयगवरं दीवं[5] •अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छित्तए ?°
हंता पभू । तेण परं वीईवएज्जा, नो चेव णं अणुपरियट्टेज्जा ॥

देवाणं कम्मक्खवण-काल-पदं

१५४. अत्थि णं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससएहिं खवयंति ?
हंता अत्थि ॥

---

१. सं० पा०—एवं जहा अट्ठमसए ततिए उद्देसए जाव नो ।
२. परामसति (ख, ता, व) ।
३. सं० पा०—एवं धायइसंडं दीवं जाव हंता ।
४. जी० ३ ।
५. सं० पा०—दीवं जाव हंता ।

१५५. अत्थि णं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेणं पंचहि वाससएहिं खवयंति ?
हंता अत्थि ॥

१५६. अत्थि णं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेणं पंचहि वाससयसहस्सेहिं खवयंति ?
हंता अत्थि ॥

१५७. कयरे णं भंते ! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा जाव पंचहिं वाससएहिं खवयंति ? कयरे णं भंते ! ते देवा जाव पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति ? कयरे णं भंते ! ते देवा जाव पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ?
गोयमा ! वाणमंतरा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससएणं खवयंति । असुरिंद-वज्जिया भवणवासी देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससएहिं खवयंति । असुर-कुमारा देवा अणंते कम्मंसे तीहिं वाससएहिं खवयंति । गह-नक्खत्त-तारारूवा जोइसिया देवा अणंते कम्मंसे चउहिं वाससएहिं[1] खवयंति । चंदिम-सूरिया जोइसिंदा जोतिसरायाणो अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससएहिं खवयंति ।
सोहम्मीसाणगा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससहस्सेणं खवयंति । सणंकुमार-माहिंदगा देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससहस्सेहिं खवयंति । एवं एएणं अभिलावेणं बंभलोग-लंतगा देवा अणंते कम्मंसे तीहिं वाससहस्सेहिं खवयंति । महासुक्क-सहस्सारगा देवा अणंते कम्मंसे चउहिं वाससहस्सेहिं खवयंति । आणय-पाणय-आरण-अच्चुयगा देवा अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति ।
हिट्ठिमगेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससयसहस्सेणं खवयंति । मज्झिम-गेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति । उवरिम-गेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे तीहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति । विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियगा देवा अणंते कम्मंसे चउहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति । सव्वट्ठसिद्धगा देवा अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ।
एए णं गोयमा ! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससएहिं खवयंति । एए णं गोयमा ! ते देवा जाव पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति । एए णं गोयमा ! ते देवा जाव पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ॥

१५८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

अट्ठमो उद्देसो

ईरियं पडुच्च गोयमस्स संवाद-पदं

१५९. रायगिहे जाव एवं वयासी—अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो पुरओ दुहओ जुगमायाए पेहाए रीयं रीयमाणस्स पायस्स[1] अहे कुक्कुडपोते वा वट्टापोते वा कुलिंगच्छाए[2] वा परियावज्जेज्जा, तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! अणगारस्स णं भावियप्पणो[3] •पुरओ दुहओ जुगमायाए पेहाए रीयं रीयमाणस्स पायस्स अहे कुक्कुडपोते वा वट्टपोते वा कुलिंगच्छाए वा परिया-वज्जेज्जा°, तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ ॥

१६०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ° ?
[4]•गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा भवंति तस्स णं रियावहिया किरिया कज्जइ, जस्स णं कोहमाण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवंति तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ। अहासुत्त रीयमाणस्स रियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ। से णं अहासुत्तं रीयती। से तेणट्ठेणं° ॥

१६१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव[5] विहरइ ॥

१६२. तए णं समणे भगवं महावीरे[6] •अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसि-लाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं° विहरइ ॥

अण्णउत्थियाणं आरोव-पदं

१६३. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे। गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव पुढविसिलापट्टओ। तस्स णं गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अण्णउत्थिया परिवसति। तए णं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव[7] परिसा पडिगया ॥

१६४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती

---

१. पातस्स (ता)।
२. °छाते (ख, ब, म, स)।
३. सं० पा०—भावियप्पणो जाव तस्स।
४. सं० पा०—जहा सत्तमसए संवुडुद्देसए जाव अट्ठो निक्खित्तो।
५. भ० १।५१।
६. स० पा०—महावीरे बहिया जाव विहरइ।
७. भ० ८।२७१।

नामं अणगारे जाव[1] उड्ढं जाणू[2] •अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ॥

१६५. तए णं ते अण्णउत्थिया जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो! तिविहं तिविहेणं अस्संजय[3]-•विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा, सकिरिया, असंवुडा, एगंतदंडा°, एगंत-बाला यावि भवह[4]?

१६६ तए णं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—केणं कारणेणं अज्जो! अम्हे तिविहं तिविहेणं अस्संजय जाव एगंतबाला यावि भवामो?

१६७. तए णं ते अण्णउत्थिया भगवं गोयमं एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो! रीयं रीयमाणा पाणे पेच्चेह, अभिहणह जाव[5] उद्दवेह[6], तए णं तुब्भे पाणे पेच्चेमाणा जाव उद्दवेमाणा[7] तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवह ॥

१६८. तए णं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—नो खलु अज्जो! अम्हे रीयं रीयमाणा पाणे पेच्चेमो जाव उद्दवेमो, अम्हे णं अज्जो! रीयं रीयमाणा कायं च जोयं च रीयं च पडुच्च दिस्सा[8]-दिस्सा पदिस्सा[9]-पदिस्सा वयामो, तए णं अम्हे दिस्सा-दिस्सा वयमाणा पदिस्सा-पदिस्सा वयमाणा नो पाणे पेच्चेमो जाव नो उद्दवेमो, तए णं अम्हे पाणे अपेच्चेमाणा जाव अणोद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंतपंडिया यावि भवामो। तुब्भे णं अज्जो! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवह ॥

१६९. तए णं ते अण्णउत्थिया भगवं गोयमं एवं वयासी—केणं कारणेणं अज्जो! अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवामो?

१७०. तए णं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो! रीयं रीयमाणा पाणे पेच्चेह जाव उद्दवेह, तए णं तुब्भे पाणे पेच्चेमाणा जाव उद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवह ॥

१७१. तए णं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं पडिभणइ[10], पडिभणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे णातिदूरे जाव[11] पज्जुवासति ॥

---

१. भ० १।९।
२. सं० पा०—उड्ढजाणू जाव विहरइ।
३. सं० पा०—अस्संजय जाव एगंत°।
४. तुलना—भ० ८।२८५-२९०।
५. भ० ८।२८७।
६. उवद्दवेह (ख)।
७. उवद्दवेमाणा (ख)।
८. दिस्स (अ, ता, ब, म)।
९. पदिस्स (अ, ख, ता, व, म)।
१०. पडिहणइ (अ, क, ख, व, म, स)।
११. भ० १।१०।

१७२. गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—सुट्ठु णं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वदासी, साहु णं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एव वदासी। अत्थि णं गोयमा ! ममं बहवे अंतेवासी समणा निग्गथा छउमत्था, जे णं नो पभू एयं वागरणं वागरेत्तए, जहा ण तुमं। तं सुट्ठु णं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहु ण तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी ॥

१७३. तए णं भगवं गोयमे समणेण भगवया महावीरेणं एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

परमाणुपोग्गलादीणं जाणणा-पासणा-पदं

१७४. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से[1] परमाणुपोग्गलं कि जाणति-पासति ? उदाहु न जाणति न पासति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए जाणति न पासति, अत्थेगतिए न जाणति न पासति ॥

१७५. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से दुपएसियं खंधं कि जाणति-पासति ? [2]•उदाहु न जाणति न पासति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए जाणति न पासति, अत्थेगतिए न जाणति न पासति।° एवं जाव असंखेज्जपएसियं ॥

१७६. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से अणंतपएसियं खंधं किं [3]•जाणति-पासति ? उदाहु न जाणति न पासति ?•
गोयमा ! अत्थेगतिए जाणति-पासति, अत्थेगतिए जाणति न पासति, अत्थेगतिए न जाणति पासति, अत्थेगतिए न जाणति न पासति ॥

१७७. आहोहिए[4] णं भंते ! मणुस्से परमाणुपोग्गलं कि जाणति-पासति ? उदाहु न जाणति न पासति ? जहा छउमत्थे एवं आहोहिए वि जाव अणंतपएसियं ॥

१७८. परमाहोहिए ण भंते ! मणुस्से परमाणुपोग्गल जं समयं जाणति तं समयं पासति ? जं समयं पासति तं समयं जाणति ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१७९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—परमाहोहिए णं मणुस्से परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणति नो तं समयं पासति ? ज समयं पासति नो तं समयं जाणति ?
गोयमा ! सागारे से नाणे भवइ, अणागारे से दंसणे भवइ। से तेणट्ठेणं[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—परमाहोहिए णं मणुस्से परमाणुपोग्गलं ज समयं

---

१. मणूसे (अ, क, ता, व, म)
२. स० पा०—एव चेव।
३. स० पा०—पुच्छा।
४. अहोहिए (ख, स)।
५. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो।

जाणति नो त समयं पासति, जं समयं पासति° नो त समयं जाणति। एवं जाव अणंतपदेसिय ॥

१८०. केवली ण भते ! मणुस्से परमाणुपोग्गल [२]°ज समय जाणति तं समयं पासति ? जं समयं पासति त समयं जाणति ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१८१. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—केवली ण मणुस्से परमाणुपोग्गल ज समयं जाणति नो तं समयं पासति ? जं समयं पासति नो तं समयं जाणति ?
गोयमा ! सागारे से नाणे भवइ, अणागारे से दसणे भवइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—केवली ण मणुस्से परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणति नो त समयं पासति, ज समय पासति नो त समयं जाणति। एवं° जाव अणतपएसियं ॥

१८२. सेव भते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

नवमो उद्देसो

भवियदव्व-पद

१८३. रायगिहे जाव एव वयासी—अत्थि णं भंते ! भवियदव्वनेरइया-भवियदव्व-नेरइया ?
हंता अत्थि ॥

१८४. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—भवियदव्वनेरइया-भवियदव्वनेरइया ?
गोयमा ! जे भविए पंचिदिए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा नेरइएसु उववज्जित्तए। से तेणट्ठेण। एव जाव थणियकुमाराण ॥

१८५. अत्थि णं भते ! भवियदव्वपुढविकाइया-भवियदव्वपुढविकाइया ?
हता अत्थि ॥

१८६. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! जे भविए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवे वा पुढविकाइएसु उववज्जित्तए। से तेणट्ठेण। आउक्काइय-वणस्सइकाइयाणं एवं चेव। तेउ-वाउ-बेइदिय-तेइदिय-चउरिंदियाण य जे भविए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा

---

२. स० पा०—जहा परमाहोहिए तहा केवली वि जाव।

तेउ-वाउ-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिएसु उववज्जित्तए। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण जे भविए नेरइए वा तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवे वा पचिंदियतिरिक्खजोणिए वा पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए। एवं मणुस्सा वि। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया ण जहा नेरइया ॥

१८७ भवियदव्वनेरइयस्स ण भते! केवतिय कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी ॥

१८८ भवियदव्वअसुरकुमारस्स ण भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ। एवं जाव थणियकुमारस्स ॥

१८९. भवियदव्वपुढविकाइयस्स ण—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण सातिरेगाइ दो सागरोवमाइ। एवं आउक्काइयस्स वि। तेउ-वाउकाइयस्स वि जहा नेरइयस्स। वणस्सइकाइयस्स जहा पुढविकाइयस्स। बेइंदियस्स तेइंदियस्स चउरिंदियस्स जहा नेरइयस्स। पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइ। एव मणुस्सस्स वि। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियस्स जहा असुरकुमारस्स ॥

१९०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

दसमो उद्देसो

भावियप्पणो असिधारादि-ओगाहणादि-पदं

१९१. रायगिहे जाव एव वयासि—अणगारे णं भते ! भावियप्पा असिधार वा खुरधार वा ओगाहेज्जा ?
हंता ओगाहेज्जा ॥
से णं तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे। नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१९२. [1]•अणगारे णं भंते ! भावियप्पा अगणिकायस्स मज्झंमज्झेण वीइवएज्जा ?
हंता वीइवएज्जा।
से णं भंते ! तत्थ झियाएज्जा ?

---

१. स० पा०—एव जहा पंचमसए परमाणुपोग्गलवत्तव्वया जाव अणगारेणं।

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१९३. अणगारे ण भंते ! भावियप्पा पुक्खलसंवट्टगस्स महामेहस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
हंता वीइवएज्जा ।
से ण भंते ! तत्थ उल्ले सिया ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१९४. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा गंगाए महाणदीए पडिसोयं हव्वमागच्छेज्जा ?
हंता हव्वमागच्छेज्जा ।
से ण भंते ! तत्थ विणिहायमावज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१९५. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा उदगावत्तं वा उदगबिंदुं वा ओगाहेज्जा ?
हंता ओगाहेज्जा ।
से णं भंते ! तत्थ परियावज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे° । नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

परमाणुपोग्गलादीणं वाउकाय-फास-पदं

१९६. परमाणुपोग्गले णं भंते ! वाउयाएणं फुडे ? वाउयाए वा परमाणुपोग्गलेणं फुडे ?
गोयमा ! परमाणुपोग्गले वाउयाएणं फुडे, नो वाउयाए परमाणुपोग्गलेणं फुडे ॥

१९७. दुप्पएसिए णं भंते ! खंधे वाउयाएणं फुडे ? वाउयाए वा दुप्पएसिएणं खंधेण फुडे ? एवं चेव । एवं जाव असंखेज्जपएसिए ॥

१९८. अणंतपएसिए णं भंते ! खंधे वाउयाएणं फुडे—पुच्छा ।
गोयमा ! अणंतपएसिए खंधे वाउयाएणं फुडे, वाउयाए अणंतपएसिएणं खंधेणं सिय फुडे, सिय नो फुडे ॥

१९९. वत्थी भंते ! वाउयाएणं फुडे ? वाउयाए वा वत्थिणा फुडे ?
गोयमा ! वत्थी वाउयाएणं फुडे, नो वाउयाए वत्थिणा फुडे ॥

दव्वाणं वण्णादि-पदं

२०० अत्थि ण भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे दव्वाइं वण्णओ 'काल-नील'[1]-लोहिय-हालिद्द-सुक्किलाइं, गंधओ सुब्भिगंधाइं, दुब्भिगंधाइं, रसओ तित्त-कडुय-कसाय-अंबिल-महुराइं, फासओ कक्खड-मउय-गरुय-लहुयं-सीय-उसिण-

१. काला नीला (अ, क, ख, ता, म) ।

निद्ध-लुक्खाइं, अण्णमण्णबद्धाइं, अण्णमण्णपुट्ठाइं, 'अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं'[1], अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति ?
हंता अत्थि। एवं जाव अहेसत्तमाए॥

२०१. अत्थि णं भंते! सोहम्मस्स कप्पस्स अहेदव्वाइं ? एवं चेव। एवं जाव ईसिपब्भाराए पुढवीए॥

२०२. सेवं भंते! सेवं भंते! जाव[2] विहरइ॥

२०३. तए णं समणे भगवं महावीरे[3] •अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता° बहिया जणवयविहारं विहरइ॥

सोमिलमाहण-पदं

२०४. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नगरे होत्था—वण्णओ। दूतिपलासए चेइए—वण्णओ। तत्थ णं वाणियगामे नगरे सोमिले नामं माहणे परिवसति अड्ढे जाव[4] बहुजणस्स अपरिभूए, रिव्वेद[5] जाव[6] सुपरिनिट्ठिए, पचण्ह खंडियसयाणं, 'सयस्स य'[7], कुडुंबस्स आहेवच्चं[8] •पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे° विहरइ। तए णं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव[9] परिसा पज्जुवासति॥

२०५. तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे[10] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे नायपुत्ते पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे[11] इहमागए[12] •इहसपत्ते इहसमोसढे इहेव वाणियगामे नगरे °दूतिपलासए चेइए अहापडिरूवं[13] •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ। त गच्छामि णं समणस्स नायपुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामि, इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं[14] •हेऊइं पसिणाइं कारणाइं° वागरणाइं पुच्छिस्सामि, त जइ मे से इमाइं एयारूवाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं वागरेहिंति ततो णं वंदीहामि नमंसीहामि जाव पज्जुवासीहामि, अह मे से इमाइं अट्ठाइ जाव

---

१. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
२. भ० १।५१।
३. सं० पा०—महावीरे जाव बहिया।
४. भ० २।६४।
५. रुव्वेद (अ, म); रिउव्वेद (क, स)।
६. भ० २।२४।
७. सायस्स (अ, क, ख, ता, म)।
८. सं० पा०—आहेवच्च जाव विहरइ।
९. भ० १८।१३७।
१०. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था।
११. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
१२. सं० पा०—इहमागए जाव दूतिपलासए।
१३. स० पा०—अहापडिरूव जाव विहरइ।
१४. स० पा०—अट्ठाइं जाव वागरणाइ।

वागरणाइं नो वागरेहिती तो ण एएहिं चेव अट्ठेहि य जाव वागरणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं करेस्सामी ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए जाव[1] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेण एगेण खंडियसएणं सद्धिं संपरिवुडे वाणियगामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव दूतिपलासए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—

२०६ जत्ता[2] ते भंते ? जवणिज्जं (ते भंते ?) ? अव्वाबाहं (ते भंते ?) ? फासुयविहारं (ते भंते ?) ?
सोमिला ! जत्ता वि मे, जवणिज्जं पि मे, अव्वाबाहं पि मे, फासुयविहारं पि मे ॥

२०७ किं ते भंते ! जत्ता ?
सोमिला ! जं मे तव-नियम-संजय-सज्झाय-झाणावस्सगमादीएसु जोगेसु जयणा, सेत्तं जत्ता ॥

२०८ किं ते भंते ! जवणिज्जं ?
सोमिला ! जवणिज्जे[3] दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—इंदियजवणिज्जे य, नोइंदियजवणिज्जे य ॥

२०९ से किं तं इंदियजवणिज्जे ?
इंदियजवणिज्जे—जं मे सोइंदिय-चक्खिंदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं निरुवहयाइं वसे वट्टंति, सेत्तं इंदियजवणिज्जे ॥

२१०. से किं तं नोइंदियजवणिज्जे ?
नोइंदियजवणिज्जे—जं मे कोह-माण-माया[4]-लोभा वोच्छिण्णा नो उदीरेंति, सेत्तं नोइंदियजवणिज्जे, सेत्तं जवणिज्जे ॥

२११ किं ते भंते ! अव्वाबाहं ?
सोमिला ! जं मे वातिय-पित्तिय-संभिय-सन्निवाइया[5] विविहा रोगायंका सरीरगया दोसा उवसंता नो उदीरेंति, सेत्तं अव्वाबाहं ॥

२१२ किं ते भंते ! फासुयविहारं ?
सोमिला ! जण्णं आरामेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु सभासु पवासु इत्थी-पसु-पंडगविवज्जियासु वसहीसु फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, सेत्तं फासुयविहारं ॥

---

१. भ० २।६७ ।
२. तुलना—नायाधम्मकहाओ १।५।७१-७६ ।
३. जमणिज्जे (अ, ख, ता, म) ।
४. माय (क, ख, ता) ।
५. सन्निवाइय (अ, ख) ।

२१३. सरिसवा[1] ते भंते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?
सोमिला ! सरिसवा (मे ?) भक्खेया वि अभक्खेया वि ॥

२१४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सरिसवा मे भक्खेया वि अभक्खेया वि ?
से नूणं भे सोमिला ! बंभण्णएसु नएसु दुविहा सरिसवा पण्णत्ता, तं जहा—मित्तसरिसवा य, धन्नसरिसवा य।
तत्थ णं जेते मित्तसरिसवा ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—'सहजायया, सहवड्ढियया, सहपंसुकीलियया'[2], ते ण समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ ण जेते धन्नसरिसवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सत्थपरिणया य, असत्थपरिणया य। तत्थ णं जेते असत्थपरिणया ते णं समणाण निग्गथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—एसणिज्जा य, अणेसणिज्जा य। तत्थ ण जेते अणेसणिज्जा ते समणाण निग्गथाण अभक्खेया। तत्थ णं जेते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जाइया य, अजाइया य। तत्थ णं जेते अजाइया ते णं समणाणं निग्गथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—लद्धा य, अलद्धा य। तत्थ णं जेते अलद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ ण जेते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया। से तेणट्ठेणं सोमिला ! एवं वुच्चइ[3]—॰सरिसवा मे भक्खेया वि॰ अभक्खेया वि ॥

२१५. मासा ते भंते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?
सोमिला ! मासा मे भक्खेया वि, अभक्खेया वि ॥

२१६. से केणट्ठेणं[4] ॰भंते ! एवं वुच्चइ—मासा मे भक्खेया वि॰ अभक्खेया वि ?
से नूणं भे[5] सोमिला ! बंभण्णएसु नएसु दुविहा मासा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वमासा य, कालमासा य।
तत्थ णं जेते कालमासा ते णं सावणादीया आसाढपज्जवसाणा दुवालस पण्णत्ता, तं जहा—सावणे, भद्दवए, आसोए[6], कत्तिए, मग्गसिरे, पोसे, माहे, फग्गुणे, चेत्ते, वइसाहे, जेट्ठामूले, आसाढे। ते णं समणाणं निग्गंथाण अभक्खेया।
तत्थ णं जेते दव्वमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अत्थमासा य, धण्णमासा य।

---

१. सरिसवया (ना० १।५।७३)।
२. सहजायए सहवड्ढियए सहपंसुकीलियए (अ, क, ख, ता, ब, म)।
३. सं० पा०—वुच्चइ जाव अभक्खेया।
४. सं० पा०—केणट्ठेण जाव अभक्खेया।
५. भते (अ, ता, ब, म); × (ख)।
६. अस्सोए (अ, क, ता, ब, म)

तत्थ ण जेते अत्थमासा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुवण्णमासा य, रुप्पमासा य। ते ण समणाणं निग्गंथाण अभक्खेया।

तत्थ ण जेते धण्णमासा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा— सत्थपरिणया य, असत्थ-परिणया य। एवं जहा धण्णसरिसवा जाव से तेणट्ठेण जाव अभक्खेया वि ॥

२१७. कुलत्था ते भते ! कि भक्खेया ? अभक्खेया ?

सोमिला ! कुलत्था मे भक्खेया वि अभक्खेया वि ॥

२१८. से केणट्ठेण जाव अभक्खेया वि ?

से नूणं भे सोमिला ! बभण्णएसु नएसु दुविहा कुलत्था पण्णत्ता, त जहा—इत्थिकुलत्था य, धण्णकुलत्था य।

तत्थ ण जेते इत्थिकुलत्था ते तिविहा पण्णत्ता, त जहा—'कुलवधुया इ वा, कुलमाउया इ वा, कुलधुया'[1] इ वा। ते ण समणाण निग्गथाण अभक्खेया।

तत्थ ण जेते धण्णकुलत्था एवं जहा धण्णसरिसवा। से तेणट्ठेणं जाव अभक्खेया वि ॥

२१९. एगे भवं ? दुवे भवं ? अक्खए भव ? अव्वए भवं ? अवट्ठिए भवं ? अणेगभूय-भाव-भविए भव ?

सोमिला ! एगे वि अह जाव अणेगभूय-भाव-भविए वि अह ॥

२२०. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ[2]—•एगे वि अहं जाव अणेगभूय-भाव°-भविए वि अहं ?

सोमिला ! दव्वट्ठयाए एगे अहं, नाणदसणट्ठयाए दुविहे अह, पएसट्ठयाए अक्खए वि अह, अव्वए वि अह, अवट्ठिए वि अहं, उवयोगट्ठयाए अणेगभूय-भाव-भविए वि अह। से तेणट्ठेणं जाव अणेगभूय-भाव-भविए वि अह ॥

२२१. एत्थ ण से सोमिले माहणे सबुद्धे समणं भगव महावीर वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—जहा खदओ जाव[3] से जहेय तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अतिए वहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितओ[4] '•मुडा भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वयति, नो खलु अहं तहा संचाएमि[5], अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए दुवालस-विह सावगधम्म पडिवज्जिस्सामि° जाव दुवालसविह सावगधम्मं पडिवज्जति, पडिवज्जित्ता समणं भगव महावीर वंदति[6] •नमसति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस° पडिगए ॥

---

१. कुलकण्णया इ वा कुलमाउया इ वा कुल-वहुया (अ, क, ता, ब, स)।

२. स० पा०—वुच्चइ जाव भविए।

३. भ० २।५०-५२।

४. पू०—राय० सू० ६९५।

५. स० पा०—एवं जहा रायपसेणइज्जे चित्तो।

६. पू०—राय० सू० ६९५।

७. स० पा० —वदति जाव पडिगए।

२२२. तए णं से सोमिले माहणे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[1] अहा-परिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२२३. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पभू णं भंते ! सोमिले माहणे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे । जहेव संखे तहेव निरवसेसं जाव[2] सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति ॥

२२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[3] विहरइ ॥

---

१. भ० २।९४ ।
२. भ० १२।२७,२८ ।
३. भ० १।५१ ।

एगूणवीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१. लेस्सा य २. गब्भ ३. पुढवी, ४. महासवा ५. चरम ६. दीव ७ भवणा य।
८. निव्वत्ति ९. करण १०. वणचरसुरा य एगूणवीसइमे ॥१॥

लेस्सा-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—कति णं भंते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! छल्लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—एवं जहा पण्णवणाए चउत्थो लेसुद्देसओ भाणियव्वो[1] निरवसेसो ॥

२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

३. कति णं भंते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ? एवं जहा पण्णवणाए गब्भुद्देसो सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो[2] ॥

४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. प० १७१४।   २. प० १७१६।

तइओ उद्देसो

पुढविकाइय-पदं

५. [1]रायगिहे जाव एव वयासी—सिय भंते ! जाव[2] चत्तारि पंच पुढविक्काइया एगयओ साधारणसरीरं बंधति, बधित्ता तओ पच्छा आहारेति वा परिणामेति वा सरीरं वा बंधंति ?
नो इणट्ठे समट्ठे। पुढविक्काइयाणं पत्तेयाहारा पत्तेयपरिणामा पत्तेयं सरीरं बंधति, बधित्ता तओ पच्छा आहारेति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधति ॥

६. तेसि णं भते ! जीवाण कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा, तेउलेस्सा ॥

७. ते ण भते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी[3] ? सम्मामिच्छदिट्ठी ?
गोयमा ! नो सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, नो सम्माभिच्छदिट्ठी ॥

८. ते णं भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी, नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मतिअण्णाणी य, सुयअण्णाणी य ॥

९. ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
गोयमा ! नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी ॥

१०. ते णं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता ?
गोयमा ! सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि ॥

११. ते णं भते ! जीवा किमाहारमाहारेति ?
गोयमा ! दव्वओ ण अणंतपदेसियाइ दव्वाइं—एवं जहा पण्णवणाए पढमे आहारुद्देसए जाव[4] सव्वप्पणयाए[5] आहारमाहारेति ॥

१२. ते णं भंते ! जीवा जमाहारेति त चिज्जति, जं नो आहारेति तं नो चिज्जति, चिण्णे वा से ओद्दाइ पलिसप्पति वा ?
हता गोयमा ! ते णं जीवा जमाहारेति तं चिज्जति, जं नो आहारेति जाव पलिसप्पति वा ॥

---

१. इह चेयं द्वारगाथा क्वचिद् दृश्यते—
सिय लेसदिट्ठिणाणे,
जोगुवओगे तहा किमाहारो।
पाणाइवाय उप्पायठिई,
समुग्घाय उव्वट्टी (वृ)।

२. यावत्करणाद् द्वौ वा त्रयो वा (वृ)।

३. मिच्छादिट्ठी (क, ख, ता, ब, म, स)।

४. प० २८।१।

५. सव्वपयाए (ब)।

१३. तेसि ण भंते ! जीवाण एव सण्णाति वा पण्णाति वा मणोति वा वईति वा अम्हे ण आहारमाहारेमो ?
नो इणट्ठे समट्ठे, आहारेंति पुण ते ॥
१४ तेसि ण भंते ! जीवाण एव सण्णाति वा[1] °पण्णाति वा मणोति वा° वईति वा अम्हे ण इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पडिसवेदेति पुण ते ॥
१५. ते ण भंते ! जीवा किं पाणाइवाए उवक्खाइज्जंति, मुसावाए, अदिण्णादाणे जाव[2] मिच्छादसणसल्ले उवक्खाइज्जति ?
गोयमा ! पाणाइवाए वि उवक्खाइज्जति जाव मिच्छादसणसल्ले वि उवक्खाइ-ज्जति । जेसि पि णं जीवाणं ते जीवा एवमाहिज्जति तेंसि पि णं जीवाणं नो विण्णाए नाणत्ते ॥
१६. ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जति—किं नेरइएहिंतो उववज्जति० ?
एव जहा वक्कतीए पुढविक्काइयाण उववाओ तहा भाणियव्वो[3] ॥
१७. तेसि ण भंते ! जीवाणं केवतियं काल ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण बावीस वाससहस्साइ ॥
१८. तेसि ण भंते ! जीवाण कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणतियसमुग्घाए ॥
१९. ते ण भंते ! जीवा मारणतियसमुग्घाएण किं समोहया मरति ? असमोहया मरति ?
गोयमा ! समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरति ॥
२०. ते णं भंते ! जीवा अणतर उव्वट्टित्ता कहिं गच्छति ? कहिं उववज्जति ?
एव उव्वट्टणा जहा वक्कतीए[4] ॥

आउक्काइयादि-पदं

२१. सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच आउक्काइया एगयओ साहारणसरीरं बधति, बधित्ता तओ पच्छा आहारेति० ?
एव जो पुढविक्काइयाण गमो सो चेव भाणियव्वो जाव उव्वट्टति, नवरं—ठिती सत्त वाससहस्साइ उक्कोसेण, सेस तं चेव ॥
२२. सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच तेउक्काइया० ? एवं चेव, नवरं—उववाओ

---

१. स० पा०—सण्णाति या जाव वईति ।
२. भ० १।३८४ ।
३. प० ६ ।
४. प० ६ ।

ठिती उव्वट्टणा य जहा[1] पण्णवणाए सेसं तं चेव। वाउकाइयाण एव चेव, नाणत्त नवर – चत्तारि समुग्घाया ॥

२३. सिय भते ! जाव चत्तारि पंच वणस्सइकाइया—पुच्छा।
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । अणता वणस्सइकाइया एगयओ साहारणसरीरं बंधंति, बधित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीर वा बंधंति। सेसं जहा तेउकाइयाण जाव उव्वट्टंति, नवरं—आहारो नियमं छद्दिसि, ठिती जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त, सेस तं चेव ॥

थावरजीवाणं ओगाहणाए अप्पाबहुत्त-पद

२४. एएसि णं भंते ! पुढविकाइयाण आउ-तेउ-वाउ-वणस्सइकाइयाणं सुहुमाण बादराण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणं जहण्णुक्कोसियाए ओगाहणाए कयरे कयरे-हिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! १. सव्वत्थोवा सुहुमनिओयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा २. सुहुमवाउक्काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ३. सुहुमतेउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ४. सुहुम-आउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ५. सुहुम-पुढविक्काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ६. बादर-वाउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ७. बादर-तेउक्काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ८. बादर-आउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ९. बादरपुढवि-काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा १०,११. पत्तेय-सरीरबादरवणस्सइकाइयस्स बादरनिओयस्स एएसि ण पज्जत्तगाणं एएसि णं अपज्जत्तगाणं जहण्णिया ओगाहणा दोण्ह वि तुल्ला असंखेज्जगुणा १२. सुहुमनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा १३. तस्सेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १४. तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १५. सुहुमवाउकाइयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा १६. तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १७. तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १८-२० एवं सुहुमतेउक्काइयस्स वि २१-२३ एव सुहुमआउक्का-इयस्स वि २४-२६ एवं सुहुमपुढविकाइयस्स वि २७-२९ एव बादरवाउका-इयस्स वि ३०-३२. एवं बादरतेउकाइयस्स वि ३३-३५ एवं बादरआउकाइ-यस्स वि ३६-३८ एवं बादरपुढविकाइयस्स वि सव्वेसि तिविहेणं गमेण भाणि-यव्वं, ३९ बादरनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा

१. प० ४,६।
२. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

४० तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया ४१. तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया ४२. पत्तेयसरीरबादरवणस्सइ-काइयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ४३ तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ४४ तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ॥

थावरजीवाण सव्वसुहुम-सव्वबादर-पदं

२५ एयस्स णं भते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स वणस्सइकाइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काए सव्वसुहुमतराए ?
गोयमा ! वणस्सइकाए सव्वसुहुमे, वणस्सइकाए सव्वसुहुमतराए ॥

२६ एयस्स ण भते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काये सव्वसुहुमतराए ?
गोयमा ! वाउक्काए सव्वसुहुमे, वाउक्काए सव्वसुहुमतराए ॥

२७. एयस्स ण भते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउक्काइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काये सव्वसुहुमतराए ?
गोयमा ! तेउक्काए सव्वसुहुमे, तेउक्काए सव्वसुहुमतराए ॥

२८. एयस्स ण भते ! पुढविक्काइयस्स आउक्काइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काये सव्वसुहुमतराए ?
गोयमा ! आउक्काए सव्वसुहुमे, आउक्काए सव्वसुहुमतराए ॥

२९ एयस्स ण भते ! पुढविक्काइयस्स आउक्काइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स वणस्सइकाइयस्स य कयरे काये सव्ववादरे ? कयरे काये सव्ववादरतराए ?
गोयमा ! वणस्सइकाए सव्ववादरे, वणस्सइकाए सव्ववादरतराए ॥

३०. एयस्स णं भते ! पुढविकाइयस्स आउकाइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स य कयरे काए सव्ववादरे ? कयरे काए सव्ववादरतराए ?
गोयमा ! पुढविक्काए सव्ववादरे, पुढविक्काए सव्ववादरतराए ॥

३१. एयस्स ण भंते ! आउक्काइयस्स तेउक्काइयस्स वाउकाइयस्स य कयरे काए सव्वबादरे ? कयरे काए सव्ववादरतराए ?
गोयमा ! आउक्काए सव्वबादरे, आउक्काए सव्वबादरतराए ॥

३२ एयस्स ण भते ! तेउकाइयस्स वाउकाइस्स य कयरे काए सव्वबादरे ? कयरे काए सव्ववादरतराए ?
गोयमा ! तेउक्काए सव्वबादरे, तेउक्काए सव्वबादरतराए ॥

पुढवि-सरीरस्स महालयत्त-पदं

३३. केमहालए णं भते ! पुढविसरीरे पण्णत्ते ?
गोयमा ! अणंताण सुहुमवणस्सइकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमवाउ-

सरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमवाउसरीराणं[1] जावइया सरीरा से एगे सुहुमतेउसरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमतेउकाइयसरीराणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमे आउसरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमआउक्काइयसरीराणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमे पुढवि-सरीरे, असखेज्जाणं सुहुमपुढविकाइयसरीराण जावइया सरीरा से एगे बादर-वाउसरीरे, असखेज्जाणं बादरवाउक्काइयाण जावइया सरीरा से एगे बादर-तेउसरीरे, असखेज्जाण बादरतेउकाइयाण जावइया सरीरा से एगे बादरआउ-सरीरे, असंखेज्जाण बादरआउकाइयाण जावइया सरीरा से एगे बादरपुढवि-सरीरे। एमहालए णं गोयमा ! पुढविसरीरे पण्णत्ते ॥

पुढविकाइयस्स सरीरोगाहणा-पदं

३४. पुढविकाइयस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! से जहानामए रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स वण्णगपेसिया तरुणी बलव जुगवं जुवाणी अप्पायंका [2]°थिरग्गहत्था दढपाणि-पाय-पास-पिट्ठंतरोरु-परिणता तलजमलजुयल-परिघनिभबाहू उरस्सबलसमण्णागया लघण-पवण-जइण-वायाम-समत्था छेया दक्खा पत्तट्ठा कुसला मेहावी निउणा° निउण-सिप्पोवगया तिक्खाए वइरामईए सण्हकरणीए तिक्खेण वइरामएण वट्टावर-एणं एगं महं पुढविकाइयं जतुगोलासमाणं गहाय पडिसाहरिय-पडिसाहरिय पडिसखिविय-पडिसखिविय जाव इणामेवत्ति कट्टु तिसत्तक्खुत्तो ओप्पीसेज्जा, तत्थ णं गोयमा ! अत्थेगतिया पुढविक्काइया आलिद्धा अत्थेगतिया पुढविक्का-इया नो आलिद्धा, अत्थेगतिया संघट्टिया अत्थेगतिया नो सघट्टिया, अत्थेग-तिया परियाविया अत्थेगतिया नो परियाविया, अत्थेगतिया उद्दविया अत्थेग-तिया नो उद्दविया, अत्थेगतिया पिट्ठा अत्थेगतिया नो पिट्ठा, पुढविकाइयस्स णं गोयमा ! एमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ॥

पुढविकाइयस्स वेदणा-पदं

३५. पुढविकाइए ण भते ! अक्कंते समाणे केरिसियं वेदणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ?
गोयमा ! से जहानामए—केइ पुरिसे तरुणे बलवं [3]°जुगवं जुवाणे अप्पातंके थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पास-पिट्ठंतरोरुपरिणते तलजमलजुयल-परिघनिभ-बाहू चम्मेट्ठग-दुहण-मुट्ठिय-समाहत-विचितगत्तकाए उरस्सबलसमण्णागए लंघण-पवण-जइण-वायाम-समत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेहावी निउणे°

---

१. सुहुमवाउकाइयाणं ति क्वचित्पाठः (वृ)।
२. स० पा०—वण्णओ जाव निउणसिप्पोवगया, नवरं—चम्मेट्ठ-दुहण-मुट्ठियसमाहयणिचिय-गत्तकाया न भण्णति, सेसं त चेव जाव निउण°।
३. स० पा०—बलव जाव निउण°।

निउणसिप्पोवगए एगं पुरिसं जुण्ण जरा-जज्जरिय-देहं[1] •आउरं झूसियं पिवासियं° दुब्बल किलंतं जमलपाणिणा मुद्धाणंसि अभिहणेज्जा, से णं गोयमा! पुरिसे तेणं पुरिसेण जमलपाणिणा मुद्धाणसि अभिहए समाणे केरिसियं वेदणं पच्चणुब्भवमाणे विहरति ?
अणिट्ठ समणाउसो !
तस्स ण गोयमा ! पुरिसस्स वेदणाहिंतो पुढविकाइए अक्कते समाणे एत्तो अणिट्ठतरिय चेव अकंततरिय[2] •अप्पियतरियं असुहतरियं अमणुण्णतरिय° अमणामतरिय चेव वेदणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ।।

आउकाइयादीणं वेदणा-पदं

३६ आउयाए ण भते ! संघट्टिए समाणे केरिसियं वेदण पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ? गोयमा ! जहा पुढविकाइए एव चेव । एव तेउयाए वि । एवं वाउयाए वि । एवं वणस्सइकाए वि जाव[3] विहरइ ।।
३७. सेव भंते ! सेव भते ! त्ति ।।

चउत्थो उद्देसो

महासवादि-पदं

३८. सिय भते ! नेरइया महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।
३९ सिय भते ! नेरइया महासवा महाकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
हता सिया ।।
४०. सिय भते ! नेरइया महासवा महाकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।
४१. सिय भते ! नेरइया महासवा महाकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
गोयमा! नो इणट्ठे समट्ठे ।।
४२. सिय भते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

---

१. स० पा०—देहं जाव दुब्बल ।
२. स० पा०—अकततरिय जाव अमणामतरियं ।
३. भ० १९।३५ ।

४३. सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥
४४. सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो[1] इणट्ठे समट्ठे ॥
४५. सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
४६ सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
४७. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
४८. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
४९. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
५० सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
५१. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
५२. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
५३. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एते सोलस भंगा ॥
५४. सिय भंते ! असुरकुमारा महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं चउत्थो भंगो भाणियव्वो, सेसा पण्णरस भंगा खोडे-यव्वा । एवं जाव थणियकुमारा ॥
५५. सिय भंते ! पुढविक्काइया महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
हंता सिया । एवं जाव—
५६. सिय भंते ! पुढविक्काइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
हंता सिया । एवं जाव मणुस्सा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुर-कुमारा ॥
५७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. सदृशप्रकरणेपि पूर्ववर्तिसूत्रेषु 'गोयमा' इति पद लभ्यते । अस्मिन्नुत्तरवर्तिसूत्रेषु च एतत् पद न दृश्यते ।

पंचमो उद्देसो

चरम-परम-पदं

५८. अत्थि णं भंते ! चरमा[1] वि नेरइया ? परमा वि नेरइया ?
हंता अत्थि ॥

५९. से नूणं भंते ! चरमेहिंतो नेरइएहिंतो परमा नेरइया महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महस्सवतरा चेव, महावेयणतरा चेव; परमेहिंतो वा नेरइएहिंतो चरमा नेरइया अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पस्सवतरा चेव, अप्पवेयणतरा चेव ?
हंता गोयमा ! चरमेहितो नेरइएहितो परमा जाव महावेयणतरा चेव, परमेहिंतो वा नेरइएहिंतो चरमा नेरइया जाव अप्पवेयणतरा चेव ॥

६०. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जाव अप्पवेयणतरा चेव ?
गोयमा ! ठिंति पडुच्च । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव अप्पवेयणतरा चेव ॥

६१. अत्थि णं भंते ! चरमा वि असुरकुमारा ? परमा वि असुरकुमारा ? एवं चेव, नवरं—विवरीयं भाणियव्वं, परमा अप्पकम्मा, चरमा महाकम्मा[2]। सेसं तं चेव जाव थणियकुमारा ताव एमेव। पुढविकाइया जाव मणुस्सा एते जहा नेरइया । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥

वेदणा-पदं

६२. कतिविहा णं भंते ! वेदणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा वेदणा पण्णत्ता, तं जहा—निदा य, अनिदा य ॥

६३ नेरइया णं भंते ! किं निदायं वेदणं वेदेंति ? अनिदायं वेदणं वेदेंति ?
गोयमा ! निदायं पि वेदणं वेदेंति, अनिदायं पि वेदणं वेदेंति । जहा पण्णवणाए जाव[3] वेमाणियत्ति ॥

६४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. चरिमा (अ, ख, ब, म) ।
२. बहुकम्मा (अ, ब) ।
३. प० ३५ ।

छट्ठो उद्देसो

दीवसमुद्द-पदं

६५. कहि णं भंते ! दीवसमुद्दा ? केवतिया णं भंते ! दीवसमुद्दा ? किंसंठिया णं भंते ! दीवसमुद्दा ? एवं जहा जीवाभिगमे दीवसमुद्दुद्देसो सो चेव इह वि जोइसमंडिउद्देसगवज्जो[1] भाणियव्वो जाव परिणामो, जीवउववाओ जाव[2] अणंतखुत्तो ॥

६६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

सत्तमो उद्देसो

असुरकुमारादीणं भवणादि-पदं

६७. केवतिया णं भंते ! असुरकुमारभवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोयट्ठि[3] असुरकुमारभवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

६८. ते णं भंते ! किमया पण्णत्ता ?
गोयमा ! सव्वरयणामया अच्छा सण्हा जाव[4] पडिरूवा । तत्थ णं बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमंति, विउक्कमंति, चयंति, उववज्जंति । सासया णं ते भवणा दव्वट्ठयाए, वण्णपज्जवेहिं जाव[5] फासपज्जवेहिं असासया । एवं जाव थणियकुमारावासा ॥

६९. केवतिया णं भंते ! वाणमंतरभोमेज्जनगरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा वाणमंतरभोमेज्जनगरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

७०. ते णं भंते ! किमया पण्णत्ता ? सेसं तं चेव ॥

७१. केवतिया णं भंते ! जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

७२. ते णं भंते ! किमया पण्णत्ता ?
गोयमा ! सव्वफालिहामया अच्छा, सेसं तं चेव ॥

---

१. जोइसियमंडि° (क, स) ।
२. जी° ३ ।
३. चोवट्ठि (क, ता); चउसट्ठिं (स) ।
४. भ० २।११८ ।
५. भ० २।४७ ।

७३. सोहम्मे ण भंते ! कप्पे केवतिया विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥
७४. ते णं भते ! किमया पण्णत्ता ?
गोयमा ! सव्वरयणामया अच्छा, सेसं त चेव जाव अणुत्तरविमाणा, नवरं—जाणेयव्वा जत्थ जत्तिया भवणा विमाणा वा ॥
७५ सेवं भते ! सेव भंते ! त्ति ॥

अट्ठमो उद्देसो

जीवादि-निव्वत्ति-पदं

७६ कतिविहा णं भंते ! जीवनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा जीवनिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—एगिदियजीवनिव्वत्ती जा पंचिंदियजीवनिव्वत्ती ॥
७७. एगिंदियजीवनिव्वत्ती ण भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइयएगिंदियजीवनिव्वत्ती जाव वणस्सइकाइयएगिंदियजीवनिव्वत्ती ॥
७८. पुढविकाइयएगिंदियजीवनिव्वत्ती णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविकाइयएगिंदियजीवनिव्वत्ती य, बादरपुढविकाइयएगिंदियजीवनिव्वत्ती य। एव एएण अभिलावेणं भेदो जहा वड्डगबंधो तेयगसरीरस्स जाव[1]—
७९ सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातियकप्पातीतवेमाणियदेवपंचिंदियजीवनिव्वत्ती णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातिय[2]-°कप्पातीतवेमाणिय° देवपंचिंदियजीवनिव्वत्ती य, अपज्जत्तगसव्वट्ठसिद्धाणुत्तरोववातियकप्पातीतवेमाणियदेवपंचिंदियजीवनिव्वत्ती य ॥
८०. कतिविहा ण भंते ! कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठविहा कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—नाणावरणिज्जकम्मनिव्वत्ती जाव अंतराइयकम्मनिव्वत्ती ॥
८१. नेरइयाणं भते ! कतिविहा कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता ?

---

१. भ० ८।४१३।
२ स० पा०—°अणुत्तरोववातिय जाव देव°।

गोयमा ! अट्ठविहा कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—नाणावरणिज्जकम्म-निव्वत्ती जाव अंतराइयकम्मनिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाण ॥

८२. कतिविहा णं भंते ! सरीरनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा सरीरनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—ओरालियसरीरनिव्वत्ती जाव कम्मासरीरनिव्वत्ती ॥

८३. नेरइयाणं भते ! कतिविहा सरीरनिव्वत्ती पण्णत्ता ? एवं चेव । एवं जाव वेमाणियाण, नवरं—नायव्वं जस्स जइ सरीराणि ॥

८४. कतिविहा णं भते ! सव्विदियनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा सव्विदियनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियनिव्वत्ती जाव फासिदियनिव्वत्ती । एव[1] नेरइयाण जाव थणियकुमाराणं ॥

८५. पुढविकाइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! एगा फासिदियनिव्वत्ती पण्णत्ता । एवं जस्स 'जति इदियाणि'[2] जाव वेमाणियाणं ॥

८६. कतिविहा णं भंते ! भासानिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा भासानिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—सच्चभासानिव्वत्ती, मोसभासानिव्वत्ती, सच्चामोसभासा निव्वत्ती, असच्चामोसभासानिव्वत्ती । एवं एगिदियवज्जं जस्स जा भासा जाव वेमाणियाणं ॥

८७. कतिविहा णं भंते ! मणनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा मणनिव्वत्ती पण्णत्ता त जहा—सच्चमणनिव्वत्ती जाव असच्चामोसमणनिव्वत्ती । एवं एगिदियविगलिदियवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥

८८. कतिविहा ण भंते ! कसायनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा कसायनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—कोहकसायनिव्वत्ती जाव लोभकसायनिव्वत्ती । एव जाव वेमाणियाणं ॥

८९. कतिविहा णं भंते ! वण्णनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा वण्णनिव्वत्ती तं जहा—कालावण्णनिव्वत्ती जाव सुक्किला-वण्णनिव्वत्ती । एव निरवसेस जाव वेमाणियाणं । एव गधनिव्वत्ती दुविहा जाव वेमाणियाणं । रसनिव्वत्ती पचविहा जाव वेमाणियाणं । फासनिव्वत्ती अट्ठविहा जाव वेमाणियाणं ॥

९०. कतिविहा ण भंते ! संठाणनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहा संठाणनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—समचउरंससंठाणनिव्वत्ती जाव हुंडसंठाणनिव्वत्ती ॥

---

१. एवं जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) । २. जतिंदियाणि (ता) ।

९१. नेरइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! एगा हुंडसंठाणनिव्वत्ती पण्णत्ता ॥

९२. असुरकुमाराणं—पुच्छा ।
गोयमा ! एगा समचउरंससंठाणनिव्वत्ती पण्णत्ता । एव जाव थणियकुमाराणं ॥

९३ पुढविकाइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! एगा मसूरचदसंठाणनिव्वत्ती[1] पण्णत्ता । एवं जस्स जं संठाणं जाव वेमाणियाणं ॥

९४. कतिविहा ण भंते ! सण्णानिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा सण्णानिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—आहारसण्णानिव्वत्ती जाव परिग्गहसण्णानिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

९५ कतिविहा णं भते ! लेस्सानिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहा लेस्सानिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—कण्हलेस्सानिव्वत्ती जाव सुक्कलेस्सानिव्वत्ती । एव जाव वेमाणियाणं, जस्स जति लेस्साओ ॥

९६. कतिविहा ण भते ! दिट्ठीनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा दिट्ठीनिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—सम्मादिट्ठिनिव्वत्ती, मिच्छादिट्ठिनिव्वत्ती, सम्मामिच्छादिट्ठिनिव्वत्ती । एव जाव वेमाणियाणं, जस्स जतिविहा दिट्ठी ॥

९७ कतिविहा णं भते ! नाणनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा नाणनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—आभिणिबोहियनाणनिव्वत्ती जाव केवलनाणनिव्वत्ती । एवं एगिंदियवज्जं जाव वेमाणियाण, जस्स जति नाणा ॥

९८. कतिविहा णं भते ! अण्णाणनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा अण्णाणनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—मइअण्णाणनिव्वत्ती, सुयअण्णाणनिव्वत्ती, विभंगनाणनिव्वत्ती । एवं जस्स जति अण्णाणा जाव वेमाणियाण ॥

९९. कतिविहा णं भते ! जोगनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा जोगनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—मणजोगनिव्वत्ती, वइजोगनिव्वत्ती, कायजोगनिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जतिविहो जोगो ॥

१०० कतिविहा णं भते ! उवओगनिव्वत्ती पण्णत्ता ?

---

१. मसूरचंदा° (क); मसूराचंदा° (ता, ब) ।

गोयमा ! दुविहा उवओगनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—सागारोवओगनिव्वत्ती, अणागारोवओगनिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाणं[1] ॥

१०१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

नवमो उद्देसो

करण-पदं

१०२. कतिविहे णं भंते ! करणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वकरणे, खेत्तकरणे, कालकरणे, भवकरणे, भावकरणे ॥

१०३. नेरइयाणं भंते ! कतिविहे करणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वकरणे जाव भावकरणे । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

१०४. कतिविहे णं भंते ! सरीरकरणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे सरीरकरणे पण्णत्ते, तं जहा—ओरालियसरीरकरणे जाव कम्मासरीरकरणे । एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जति सरीराणि ॥

१०५. कतिविहे णं भंते ! इंदियकरणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे इंदियकरणे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियकरणे जाव फासिंदियकरणे । एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जति इंदियाइं । एवं एएणं कमेणं भासाकरणे चउव्विहे, मणकरणे चउव्विहे, कसायकरणे चउव्विहे, समुग्घायकरणे सत्तविहे, सण्णाकरणे चउव्विहे, लेसाकरणे छव्विहे, दिट्ठीकरणे तिविहे, वेदकरणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—इत्थिवेदकरणे, पुरिसवेदकरणे, नपुंसगवेदकरणे । एए सव्वे नेरइयादी दंडगा जाव वेमाणियाणं, जस्स जं अत्थि तं तस्स सव्वं भाणियव्वं ॥

१०६. कतिविहे णं भंते ! पाणाइवायकरणे पण्णत्ते ?

---

१. अतोग्रे 'अ, क, ब, स' प्रतिपु सङ्ग्रहणीगाथे दृश्येते—
जीवाण निव्वत्ती,
कम्मप्पगडी सरीरनिव्वत्ती ।
सव्विंदियनिव्वत्ती,
भासा य मणे कसाया य ॥१॥
वण्ण रस गंध फासे,
संठाणविही य होइ बोद्धव्वा ।
लेसा दिट्ठी नाणे,
उवओगे चेव जोगे य ॥२॥

गोयमा ! पंचविहे पाणाइवायकरणे पण्णत्ते, त जहा—एगिंदियपाणाइवायकरणे जाव पचिंदियपाणाइवायकरणे । एवं निरवसेसं जाव वेमाणियाणं ॥

१०७. कतिविहे णं भते ! पोग्गलकरणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पोग्गलकरणे पण्णत्ते, तं जहा—वण्णकरणे, गधकरणे, रसकरणे, फासकरणे, सठाणकरणे ॥

१०८. वण्णकरणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, तं जहा—कालावण्णकरणे जाव सुक्किलवण्णकरणे । एव भेदो—गधकरणे दुविहे, रसकरणे पचविहे, फासकरणे अट्ठविहे ॥

१०९. संठाणकरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, तं जहा—परिमंडलसठाणकरणे जाव[1] आयतसंठाणकरणे ॥

११० सेव भते ! सेवं भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

दसमो उद्देसो

१११. वाणमतरा ण भते ! सव्वे समाहारा० ? एवं जहा सोलसमसए दीवकुमारुद्देसओ जाव[2] अप्पिड्ढिय त्ति ॥

११२. सेवं भंते ! सेवं भते ! त्ति ॥

---

१. भ० ८।३६ ।

२. भ० १६।१२५-१२८ ।

वीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१. बेइंदिय २. मागासे, ३. पाणवहे ४. उवचए य ५. परमाणू।
६. अंतर ७. बंधे ८. भूमी, ९. चारण १०. सोवक्कमा जीवा ॥१॥

बेइंदियादि-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच बेंदिया एगयओ साहरणसरीरं बधंति, बंधित्ता तओ पच्छा आहारेति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति ?
नो इणट्ठे समट्ठे। बेंदिया णं पत्तेयाहारा पत्तेयपरिणामा पत्तेयसरीरं बधंति, बंधित्ता तओ पच्छा आहारेति वा परिणामेति वा सरीरं वा बंधंति ॥

२. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तओ लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा। एवं जहा एगूणवीसतिमे सए तेउक्काइयाणं जाव[1] उव्वट्टंति, नवरं—सम्मदिट्ठी वि मिच्छदिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छदिट्ठी, दो नाणा दो अण्णाणा नियमं, नो मणजोगी, वइजोगी वि कायजोगी वि, आहारो नियमं छद्दिसिं।

३. तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सण्णाति वा पण्णाति वा मणेति वा वईति वा—अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे रसे, इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पडिसवेदेंति पुण ते। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं, सेसं तं चेव। एवं तेइंदिया वि, एवं चउरिंदिया वि, नाणत्तं इंदिएसु ठितीए य, सेसं तं चेव, ठिती जहा[2] पण्णवणाए ॥

४. सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच पंचिंदिया एगयओ साहरणसरीरं बंधंति ? एवं जहा बेंदियाणं, नवरं—छल्लेसा, दिट्ठी तिविहा वि, चत्तारि नाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए, तिविहो जोगो ॥

---

१. भ० १९।२२। २. प० ४।

५. तेसि ण भंते ! जीवाणं एवं सण्णाति वा पण्णाति वा मणेति वा वईति वा—अम्हे णं आहारमाहारेमो ?
गोयमा ! अत्थेगतियाणं एवं सण्णाति वा पण्णाति वा मणेति वा वईति वा—अम्हे णं आहारमाहारेमो। अत्थेगतियाण नो एवं सण्णाति वा जाव वईति वा—अम्हे णं आहारमाहारेमो, आहारेंति पुण ते।

६. तेसि ण भंते ! जीवाण एव सण्णाति वा जाव वईति वा—अम्हे ण इट्ठाणिट्ठे सद्दे, इट्ठाणिट्ठे रूवे, इट्ठाणिट्ठे गंधे, इट्ठाणिट्ठे रसे, इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो ?
गोयमा ! अत्थेगतियाण एव सण्णाति वा जाव वईति वा—अम्हे ण इट्ठाणिट्ठे सद्दे जाव इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो। अत्थेगतियाण नो एव सण्णाति वा जाव वईति वा—अम्हे ण इट्ठाणिट्ठे सद्दे जाव इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो, पडिसवेदेंति पुण ते।

७. ते ण भंते ! जीवा किं पाणाइवाए उवक्खाइज्जति—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिया पाणातिवाए वि उवक्खाइज्जति जाव मिच्छादंसणसल्ले वि उवक्खाइज्जति अत्थेगतिया नो पाणाइवाए उवक्खाइज्जंति, नो मुसावाए जाव नो मिच्छादसणसल्ले उवक्खाइज्जति। जेसि पि ण जीवाणं ते जीवा एवमाहिज्जंति तेसि पि ण जीवाण अत्थेगतियाण विण्णाए णाणत्ते। अत्थेगतियाणं नो विण्णाए णाणत्ते। उववाओ सव्वओ जाव सव्वट्ठसिद्धाओ। ठिती जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइं। छस्समुग्घाया केवलिवज्जा, उव्वट्टणा सव्वत्थ गच्छति जाव सव्वट्ठसिद्ध ति, सेस जहा वेदियाणं॥

८. एएसि ण भंते ! बेइंदियाण जाव पंचिंदियाण य कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया, चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइंदिया विसेसाहिया, वेइंदिया विसेसाहिया॥

९. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति जाव[2] विहरइ॥

बीओ उद्देसो

अत्थिकाय-पदं

१०. कतिविहे णं भंते ! आगासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे आगासे पण्णत्ते, तं जहा—लोयागासे य, अलोयागासे य॥

११. लोयागासे णं भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा० ?—एवं जहा वितियसए

---

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया। २. भ०१।५१।

अत्थिउद्देसे तहेव इह वि भाणियव्वं, नवरं—अभिलावो जाव[1] धम्मत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव ओगाहित्ता णं चिट्ठति । एवं जाव पोग्गलत्थिकाए ॥

१२. अहेलोए णं भते ! धम्मत्थिकायस्स केवतिय ओगाढे ?
गोयमा ! सातिरेगं अद्ध ओगाढे । एवं एएणं अभिलावेणं जहा बितियसए जाव[2]—

१३. ईसिपब्भारा णं भते ! पुढवी लोयागासस्स किं सखेज्जइभागं ओगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जइभागं ओगाढा, असंखेज्जइभागं ओगाढा, नो संखेज्जे भागे ओगाढा, नो असंखेज्जे भागे ओगाढा, नो सव्वलोयं ओगाढा । सेसं तं चेव ॥

अत्थिकायस्स अभिवयण-पदं

१४. धम्मत्थिकायस्स णं भते ! केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मे इ वा, धम्मत्थिकाये इ वा, पाणाइवायवेरमणे इ वा, मुसावायवेरमणे इ वा, एवं जाव परिग्गहवेरमणे इ वा, कोहविवेगे इ वा जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे इ वा, रियासमिती इ वा, भासासमिती इ वा, एसणासमिती इ वा, आयाणभंडमत्तनिक्खेवसमिती इ वा, उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिती[3] इ वा, मणगुत्ती इ वा, वइगुत्ती इ वा, कायगुत्ती इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते धम्मत्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१५. अधम्मत्थिकायस्स णं भंते ! केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—अधम्मे इ वा, अधम्मत्थिकाए इ वा, पाणाइवाए इ वा)जाव मिच्छादंसणसल्ले इ वा, रियाअस्समिती इ वा जाव उच्चारपासवण[4]°खेलसिंघाणजल्ल°पारिट्ठावणियाअस्समिती इ वा, मणअगुत्ती इ वा, वइअगुत्ती इ वा, कायअगुत्ती इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते अधम्मत्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१६. आगासत्थिकायस्स णं [5]°भंते ! केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता ?°
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—आगासे इ वा, आगासत्थि-

---

१. भ० २।१३९-१४५ ।
२. भ० २।१४७-१५३ ।
३. °खेलजल्लसिंघाण° (ख, म, स) ।
४. स० पा०—उच्चारपासवण जाव पारिट्ठावणिया° ।
५. सं० पा०—पुच्छा ।

काए इ वा, गगणे इ वा, नभे इ वा, समे इ वा, विसमे इ वा, खहे इ वा, विहे इ वा, वीयी इ वा, विवरे इ वा, अवरे इ वा, अंवरसे इ वा, छिड्डे इ वा, भुसिरे इ वा, मग्गे इ वा, विमुहे इ वा, 'अट्टे इ वा, वियट्टे इ वा'[1], आधारे इ वा, वोमे इ वा, भायणे इ वा, अतलिक्खे[2] इ वा, सामे इ वा, ओवासंतरे इ वा, अगमे इ वा, फलिहे इ वा, अणते इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते आगासत्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१७. जीवत्थिकायस्स णं भंते ! केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—जीवे इ वा, जीवत्थिकाए इ वा, पाणे इ वा, भूए इ वा, सत्ते इ वा, विण्णू इ वा, 'वेया इ वा'[3], चेया इ वा, जेया इ वा, आया इ वा, रगणे[4] इ वा, हिंदुए[5] इ वा, पोग्गले इ वा, माणवे इ वा, कत्ता इ वा, विकत्ता इ वा, जए इ वा, जतू इ वा, जोणी[6] इ वा, सयभू इ वा, ससरीरी इ वा, नायए इ वा, अतरप्पा इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते जीवत्थिकायस्स[7] अभिवयणा ॥

१८. पोग्गलत्थिकायस्स णं भंते ! [8]°केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता° ?
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—पोग्गले इ वा, पोग्गलत्थिकाए इ वा, परमाणुपोग्गले इ वा, दुपएसिए इ वा, तिपएसिए इ वा जाव असंखेज्ज-पएसिए इ वा, अणतपएसिए इ वा खधे, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे पोग्गल-त्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१९. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

पाणाइवायादीणं आयाए परिणति-पदं

२०. अह भंते ! पाणाइवाए, मुसावाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, पाणातिवायवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, उप्पत्तिया[9] °वेणइया कम्मया° पारिणामिया,

---

१. अद्दे इ वा, वियद्दे (स, वृ); अट्टे इ वा, वियट्टे (वृपा)।
२. अंतरिक्खे (ख, स)।
३. ×(अ, क, ख)।
४. रंगणा (अ, क, ख, ता, म)।
५. हिंडुए (क्व°)।
६. जोणियं (त)।
७. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
८. स० पा०—पुच्छा।
९. स० पा०—उप्पत्तिया जाव पारिणामिया।

ओग्गहे[1] •ईहा अवाए° धारणा, उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे, नेरइयत्ते, असुरकुमारत्ते जाव वेमाणियत्ते, नाणावरणिज्जे जाव अंतराइए, कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा, सम्मदिट्ठी मिच्छदिट्ठी सम्मामिच्छदिट्ठी, चक्खुदंसणे अचक्खुदंसणे ओहिदंसणे केवलदसणे, आभिणिबोहियनाणे जाव विभंगनाणे, आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा, ओरालियसरीरे वेउव्वियसरीरे आहारगसरीरे तेयगसरीरे कम्मगसरीरे, मणजोगे वइजोगे कायजोगे, सागारोवओगे, अणागारोवओगे, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते नण्णत्थ आयाए परिणमंति ?

हंता गोयमा ! पाणाइवाए जाव सव्वे ते नण्णत्थ आयाए परिणमंति ॥

गब्भं वक्कममाणस्स वण्णादि-पदं

२१. जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे 'कतिवण्णं कतिगंधं'[2] [3]•कतिरसं कतिफासं परिणाम परिणमइ ?

गोयमा ! पचवण्णं, दुगंध, पंचरसं, अट्ठफासं परिणाम परिणमइ ॥

२२. कम्मओ ण भंते ! जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ ? कम्मओ ण जए नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ ?

हंता गोयमा ! कम्मओ ण जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ°, कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ ॥

२३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[4] विहरइ ॥

चउत्थो उद्देसो

इंदियोवचय-पदं

२४. कतिविहे णं भंते ! इंदियोवचए पण्णत्ते ?

गोयमा ! पंचविहे इंदियोवचए पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियोवचए, एवं बितिओ इंदियउद्देसओ निरवसेसो भाणियव्वो जहा[5] पण्णवणाए ॥

२५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव[6] विहरइ ॥

---

१. स० पा०—ओग्गहे जाव धारणा ।
२. कतिवण्णे कतिगंधे (अ, क, ख, ता, म) ।
३. स० पा०—एव जहा बारसमसए पचमुद्देसे जाव कम्मओ ।
४. भ० १।५१ ।
५. प० १५।२ ।
६. भ० १।५१ ।

पंचमो उद्देसो

परमाणु-खंधाणं वण्णादिभंग-पदं

२६. परमाणुपोग्गले णं भंते ! कतिवण्णे, कतिगंधे, कतिरसे, कतिफासे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगवण्णे, एगगंधे, एगरसे, दुफासे पण्णत्ते[1]। जइ एगवण्णे ? सिय कालए, सिय नीलए, सिय लोहियए, सिय हालिद्दए, सिय सुक्किलए। जइ एगगंधे ? सिय सुब्भिगंधे, सिय दुब्भिगंधे। जइ एगरसे ? सिय तित्ते, सिय कडुए, सिय कसाए, सिय अंबिले, सिय महुरे। जइ दुफासे ? १. सिय सीए य निद्धे य, २. सिय सीए य लुक्खे य, ३. सिय उसिणे य निद्धे य, ४. सिय उसिणे य लुक्खे य ॥

२७. दुप्पएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ? [2]॰गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे॰, सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? सिय कालए जाव सिय सुक्किलए। जइ दुवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य, २. सिय कालए य लोहितए य, ३. सिय कालए य हालिद्दए य, ४. सिय कालए य सुक्किलए य, ५. सिय नीलए य लोहियए य, ६. सिय नीलए य हालिद्दए य, ७. सिय नीलए य सुक्किलए य, ८. सिय लोहियए य हालिद्दए य, ९. सिय लोहियए य सुक्किलए य, १०. सिय हालिद्दए य सुक्किलए य, एवं एए दुयासंजोगे दस भंगा। जइ एगगंधे ? सिय सुब्भिगंधे, सिय दुब्भिगंधे। जइ दुगंधे ? सुब्भिगंधे य दुब्भिगंधे य। रसेसु जहा वण्णेसु। जइ दुफासे ? सिय सीए य निद्धे य, एवं जहेव परमाणुपोग्गले ४। जइ तिफासे ? १. सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, ३. सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे, ४. सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे। जइ चउफासे ? १. देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए नव भंगा फासेसु ॥

२८ तिपएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे॰ ? जहा अट्ठारसमसए छट्ठुद्देसे जाव[3] चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? सिय कालए जाव सुक्किलए।
जइ दुवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य, २. सिय कालए य नीलगा य, ३. सिय कालगा य नीलए य, १. सिय कालए य लोहियए य, २. सिय कालए य लोहियगा य, ३. सिय कालगा य लोहियए य, एवं हालिद्दएण वि समं ३, एवं सुक्किलेण वि समं ३, सिय नीलए य लोहियए य एत्थ वि भंगा ३, एवं

---

१. पं तं (अ, म)।
२. सं॰ पा॰—एवं जहा अट्ठारसमसए छट्ठुद्देसए जाव सिय।
३. भ॰ १८।११३।

हालिद्दएण वि समं भंगा ३, एवं सुक्किलेण वि समं भंगा ४, सिय लोहियए य हालिद्दए य भंगा ३, एवं सुक्किलेण वि समं ३, सिय हालिद्दए य सुक्किलए य भंगा ३, एवं सव्वे ते दस दुयासंजोगा भगा तीस भवंति ।

जइ तिवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य, २. सिय कालए य नीलए य हालिद्दए य, ३. सिय कालए य नीलए य सुक्किलए य, ४. सिय कालए य लोहियए य हालिद्दए य, ५. सिय कालए य लोहियए य सुक्किलए य, ६. सिय कालए य हालिद्दए य सुक्किलए य, ७. सिय नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, ८. सिय नीलए य लोहियए य सुक्किलए य, ९. सिय नीलए य हालिद्दए य सुक्किलए य, १०. सिय लोहियए स हालिद्दए य सुक्किलए य, एवं एए दस तियासंजोगा ।

जइ एगगंधे ? सिय सुब्भिगंधे, सिय दुब्भिगधे । जइ दुगधे ? सुब्भिगंधे य दुब्भिगधे य भंगा ३ । रसा जहा वण्णा ।

जइ दुफासे ? सिय सीए य निद्धे य, एव जहेव दुपएसियस्स तहेव चत्तारि भंगा । जइ तिफासे ? १. सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. सव्वे सीए देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३. सव्वे सीए देसा निद्धा देसे लुक्खे, सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि भंगा तिण्णि, सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे भंगा तिण्णि, सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे भंगा तिण्णि ।

जइ चउफासे ? १. देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३. देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४. देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे, ५. देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसा लुक्खा, ६. देसे सीए देसा उसिणा देसा निद्धा देसे लुक्खे, ७. देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, ८. देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, ९. देसा सीया देसे उसिणे देसा निद्धा देसे लुक्खे, एवं एए तिपएसिए फासेसु पणवीसं भंगा ॥

२९. चउप्पएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे० ? जहा अट्ठारसमसए जाव[1] सिय चउफासे पण्णत्ते । जइ एगवण्णे ? सिय कालए य जाव सुक्किलए । जइ दुवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य, २. सिय कालए य नीलगा य, ३. सिय कालगा य नीलए य, ४. सिय कालगा य नीलगा य, सिय कालए य लोहियए य एत्थ वि चत्तारि भंगा, सिय कालए य हालिद्दए य ४, सिय कालए य सुक्किलए य ४, सिय नीलए य लोहियए य ४, सिए नीलए य हालिद्दए य ४, सिय नीलए य सुक्किलए य ४, सिय लोहियए य हालिद्दए य ४, सिय लोहियए य सुक्किलए य ४,

---

१. भ० १८।११४ ।

सिय हालिद्दए य सुक्किलए य ४, एवं एए दस दुयसजोगा भंगा पुण चत्तालीसं। जइ तिवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य, २ सिय कालए य नीलए य लोहियगा य, ३. सिय कालए य नीलगा य लोहियए य, ४. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य, एए भगा ४, एवं कालानीलाहालिद्दएहिं भंगा ४, कालनीलसुक्किल ४, काललोहियहालिद्द ४, काललोहियसुक्किल ४, कालहालिद्दसुक्किल ४, नीललोहिसहालिद्दगाणं भंगा ४, नीललोहियसुक्किल ४, नीलहालिद्दसुक्किल ४, लोहियहालिद्दसुक्किलगाण भगा ४, एवं एए दसतियासजोगा, एक्केक्के संजोए चत्तारि भंगा, 'सव्वे एते'[1] चत्तालीसं भंगा।

जइ चउवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य सुक्किलए य, ३. सिय कालए य नीलए य हालिद्दए य सुक्किलए य, ४. सिय कालए य लोहियए हालिद्दए य सुक्किलए य, ५. सिय नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, एवमेते चउक्कगसजोगे पच भगा। एए सव्वे नउइ भगा।

जइ एगगधे ? सिय सुब्भिगधे, सिय दुब्भिगंधे। जइ दुगधे ? सुब्भिगंधे य दुब्भिगधे य रसा जहा वण्णा।

जइ दुफासे ? जहेव परमाणुपोग्गले ४। जइ तिफासे ? १ सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. सव्वे सीए देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३ सव्वे सीए देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४. सव्वे सीए देसा निद्धा देसा लुक्खा, सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं भगा ४, सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे ४, सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे ४, एए तिफासे सोलस भंगा।

जइ चउफासे ? १ देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३. देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४ देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसा लुक्खा, ५. देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे, ६ देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसा लुक्खा, ७. देसे सीए देसा उसिणा देसा निद्धा देसे लुक्खे, ८. देसे सीए देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा, ९. देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं एए चउफासे सोलस भंगा भाणियव्वा जाव देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा, सव्वे एते फासेसु छत्तीसं भगा॥

३०. पचपएसिए णं भंते ! खधे कतिवण्णे० ? जहा अट्ठारसमसए जाव[1] सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्णा जहेव चउप्पएसिए। जइ तिवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य, २. सिय कालए य नीलए

---

१. सव्वेते (अ, क, ख, व, म, स)।   १. भ० १८।११५।

य लोहियगा य, ३. सिय कालए य नीलगा य लोहियए य, ४. सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य, ५. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य, ६ सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य, ७. सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य, सिय कालए य नीलए य हालिद्दए य, एत्थ वि सत्त भंगा, एवं कालग-नीलग-सुक्किलएसु सत्त भगा, कालग-लोहिय-हालिद्देसु ७, कालग-लोहिय-सुक्किलेसु ७, कालग-हालिद्द-सुक्किलेसु ७, नीलग-लोहिय-हालिद्देसु ७, नीलग-लोहिय-सुक्किलेसु सत्त भगा, नीलग-हालिद्द-सुक्किलेसु ७, लोहिय-हालिद्द-सुक्किलेसु वि सत्त भगा, एवमेते तियासंजोएणं सत्तरि भगा।

जइ उचवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियय य हालिद्दए २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगे य, ४. सिय कालए य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दगे य, ५. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, एए पंच भंगा, सिय कालए य नीलए य लोहियए य सुक्किलए य एत्थ वि पच भंगा, एवं कालग-नीलग-हालिद्द-सुक्किलेसु वि पच भगा, कालग-लोहिय-हालिद्द-सुक्किलएसु वि पच भगा, नीलग-लोहिय-हालिद्द-सुक्किलेसु वि पंच भंगा, एवमेते चउक्कगसंजोएणं पणुवीसं भगा।

जइ पंचवण्णे ? कालए ण नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, सव्वमेते एक्कग[1]-दुयग-तियग-चउक्क-पंचगसंजोएण ईयाल भंगसयं भवति। गंधा जहा चउप्पएसियस्स। रसा जहा वण्णा। फासा जहा चउप्पएसियस्स॥

३१. छप्पएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे० ? एव जहा पंचपए सिए जाव सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्णा जहा पचपएसियस्स।

जइ तिवण्णे ! सिय कालए य नीलए य लोहियए य, एव जहेव पंचपएसियस्स सत्त भगा जाव सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य, सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य, एए अट्ठ भगा, एवमेते दस तियासंजोगा, एक्केक्कए सजोगे अट्ठ भगा, एवं सव्वे वि तियगसजोगे असीति भगा।

जइ चउवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए हालिद्दगा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियगा त हालिद्दए य, ४. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य, ५. सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य, ६. सिय कालए य नीलगा य लोहिए य हालिद्दगा य, ७. सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य, ८. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, ९. सिय

---

1. एक्केक्का (अ, म); एक्केक्क (क, ता, ब)।

कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य, १०. सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य, ११. सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य, एए एक्कारस भगा, एवमेते 'पंच चउक्कसंजोगा'[1] कायव्वा, एक्केक्कसंजोए एक्कारस भंगा, सव्वे एते चउक्कसजोएणं पणपण्णं भगा।

जइ पंचवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, सुक्किलए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलगा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किलए य, ४. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, ५ सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, ६. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, एव एए छब्भंगा भाणियव्वा, एवमेते सव्वे वि एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पचगसंजोगेसु छासीय भगसयं भवति। गंधा जहा पचपएसियस्स। रसा जहा एयस्सेव वण्णा। फासा जहा चउप्पएसियस्स॥

३२. सत्तपएसिए णं भते ! खधे कतिवण्णे० ? जहा पंचपएसिए जाव सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? एव एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्णा जहा छप्पएसियस्स। जइ चउवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य, एवमेते चउक्कगसंजोगेण पन्नरस भगा भाणियव्वा जाव सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य, एवमेते पच चउक्का-संजोगा नेयव्वा, एक्केक्के संजोए पन्नरस भंगा, सव्वमेते पंचसत्तरि भंगा भवति।

जइ पंचवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, २ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलगा य, ३. सिय कालए य नोलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किलए य, ४. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किलगा य, ५. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, ६. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगे य सुक्किलगा य, ७. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलए य, ८. सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, ९ सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलगा य, १०. सिय कालए य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दगा य सुक्किलए य, ११. सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, १२. सिय कालगा य नीलगे य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, १३. सिय कालगा य नीलए

१. पंचचउक्का० (क, ख, ब), पचगचउक्का (ता)।

य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किलगा य, १४. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किलए य, १५. सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलए य, १६. सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, एए सोलस भंगा, एवं सव्वमेते एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसंजोगेणं दो सोला[1] भंगसया भवंति। गंधा जहा चउप्पएसियस्स। रसा जहा एयस्स चेव वण्णा। फासा जहा चउप्पएसियस्स॥

३३. अट्ठपएसिए णं भंते ! खंधे—पुच्छा।
गोयमा ! सिय एगवण्णे जहा सत्तपएसियस्स जाव सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? एवं एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्णा जहेव सत्तपएसिए।
जइ चउवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य, एवं जहेव सत्तपएसिए जाव, १५. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगे य, १६. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगा य, एए सोलस भंगा, एवमेते पंच चउक्कसंजोगा, एवमेते असीति भंगा।
जइ पंचवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियगे य हालिद्दगे य सुक्किलगा य, एवं एएणं कमेणं भंगा चारेयव्वा जाव १५. सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलगे य, एसो पन्नरसमो भंगो, १६. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किलए य १७. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्दगे य सुक्किलगा य, १८. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्दगा य सुक्किलए य, १९. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्दगा य सुक्किलगा य, २०. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, २१. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलगा य, २२. सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलए य, २३. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किलए य, २४. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किलगा य, २५. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दगा य सुक्किलए य, २६. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, एए पंचसंजोएणं छव्वीसं भंगा भवति, एवमेव सपुव्वावरेण एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसंजोएहि दो एक्कतीसं भंगसया भवंति। गंधा जहा सत्तपएसियस्स। रसा जहा एयस्स चेव वण्णा। फासा जहा चउप्पएसियस्स॥

---

१. सोलस (स)।

३४. नवपएसिए ण भंते ! खधे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय एगवण्णे जहा अट्ठपएसिए जाव सिय चउफासे पण्णत्ते । जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्ण-चउवण्णा जहेव अट्ठपएसियस्स । जइ पचवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, २ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलगा य, एव परिवाडीए एक्कतीस भगा भाणियव्वा जाव सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलए य, एए एकत्तीसं भगा, एव एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पचगसजोएहि दो छत्तीसा भगसया भवंति । गधा जहा अट्ठपएसियस्स । रसा जहा एयस्स चेव वण्णा । फासा जहा चउपएसियस्स ॥

३५ दसपएसिए ण भते ! खधे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय एगवण्णे जहा नवपएसिए जाव सिय चउफासे पण्णत्ते । जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्ण-चउवण्णा जहेव नवपएसियस्स । पचवण्णे वि तहेव, नवरं—बत्तीसतिमो भगो भण्णति, एवमेते एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसजोएसु दोण्णि सत्ततीसा भगसया भवंति । गधा जहा नवपएसियस्स । रसा जहा एयस्स चेव वण्णा । फासा जहा चउप्पएसियस्स । जहा दसपएसिओ एव सखेज्जपएसिओ वि । एव असंखेज्जपएसिओ वि । सुहुमपरिणओ अणंतपएसिओ वि एव चेव ॥

३६ बायरपरिणए ण भते ! अणतपएसिए खधे कतिवण्णे० ? एवं जहा अट्ठारसमसए जाव[1] सिय अट्ठफासे पण्णत्ते । वण्ण-गध-रसा जहा दसपएसियस्स ।
जइ चउफासे ? १. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, २. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, ३. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, ४. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, ५ सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, ६. सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, ७. सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, ८ सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, ९ सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, १०. सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, ११. सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, १२. सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, १३. सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, १४ सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, १५. सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, १६. सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, एए सोलस भगा ।
जइ पचफासे ? १ सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लक्खे,

---
१. भ० १८।११७ ।

२. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसा निद्धा देसा लुक्खा, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, एव एए कक्खडेण सोलस भंगा, सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं मउएण वि सोलस भंगा, एवं बत्तीसं भंगा, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे, एए बत्तीसं भंगा, सव्वे कक्खडे सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे गरुए देसे लहुए, एत्थ वि बत्तीसं भंगा, सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए, एत्थ वि बत्तीसं भंगा, एव सव्वे एते पचफासे अट्ठावीस भगसय भवति।

जइ छप्फासे ? १ सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, एवं जाव १६. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा, एए सोलस भंगा, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भगा, सव्वे मउए सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भंगा, सव्वे मउए सव्वे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भगा, एए चउसट्ठि भंगा, सव्वे कक्खडे सव्वे सीए देसे गरुए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं जाव सव्वे मउए सव्वे उसिणे देसा गरुया देसा लहुया देसा णिद्धा देसा लुक्खा, एत्थ वि चउसट्ठि भगा, १. सव्वे कक्खडे सव्वे निद्धे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे जाव सव्वे मउए सव्वे लुक्खे देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा, एए चउसट्ठि भंगा, सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे कक्खडे देसे मउए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं जाव सव्वे लहुए सव्वे उसिणे देसा कक्खडा देसा मउया देसा निद्धा देसा लुक्खा, एए चउसट्ठि भगा, सव्वे गरुए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे जाव सव्वे लहुए सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा सीया देसा उसिणा, एए चउसट्ठि भगा, सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए जाव सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया, एए चउसट्ठि भगा, सव्वे एते छप्फासे तिण्णि चउरासीया भगसया भवति।

जइ सत्तफासे ? १. सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसा लुक्खा ४, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसा उसिणा

देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे एते सोलस भगा भाणियव्वा, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसा लहुया देसे सोए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव गरुएण एगत्तेण, लहुएण पुहत्तेण, एते वि सोलस भगा, सव्वे कक्खडे देसा गरुया देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए वि सोलस भगा भाणियव्वा, सव्वे कक्खडे देसा गरुया देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए वि सोलस भगा भाणियव्वा, एवमेते चउसट्ठि भंगा कक्खडेण सम। सव्वे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव मउएण वि सम चउसट्ठि भगा भाणियव्वा[1]। सव्वे गरुए देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव गरुएण वि समं चउसट्ठि भगा कायव्वा। सव्वे लहुए देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं लहुएण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा। सव्वे सीए देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं सीतेण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा। सव्वे उसिणे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव उसिणेण वि सम चउसट्ठि भंगा कायव्वा। सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे, एवं निद्धेण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा। सव्वे लुक्खे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे, एव लुक्खेण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा जाव सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा, एव सत्तफासे पच बारसुत्तरा भगसया भवति।

जइ अट्ठफासे ? देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, एए चत्तारि चउक्का सोलस भगा। देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव एते गरुएण एगत्तएण, लहुएण पुहत्तएण सोलस भगा कायव्वा। देसे कक्खडे देसे मउए देसा गरुया देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए वि सोलस भंगा कायव्वा। देसे कक्खडे देसे मउए देसा गरुया देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एते वि सोलस भगा कायव्वा। सव्वेवेते चउसट्ठि भंगा कक्खड-मउएहि

१. नेयव्वा (अ, क, ता, व, म)।

एगत्तएहिं। ताहे कक्खडेणं एगत्तएणं, मउएणं पुहत्तएणं, एते चउसट्ठिं भंगा कायव्वा। ताहे कक्खडेणं पुहत्तएणं, मउएणं एगत्तएणं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा। ताहे एतेहिं चेव दोहि वि पुहत्तेहि चउसट्ठि भंगा कायव्वा जाव देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा एसो अपच्छिमो भंगो। सव्वे एते अट्ठफासे दो छप्पन्ना भगसया भवंति। एवं एते बादरपरिणए अणंतपएसिए खंधे सव्वेसु संजोएसु बारस छन्नउया भंगसया भवंति॥

परमाणु-पदं

३७. कतिविहे णं भंते! परमाणू पण्णत्ते?
गोयमा! चउव्विहे परमाणू पण्णत्ते, तं जहा—दव्वपरमाणू, खेत्तपरमाणू, कालपरमाणू, भावपरमाणू॥

३८. दव्वपरमाणू णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?
गोयमा! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अच्छेज्जे, अभेज्जे, अडज्झे, अगेज्झे॥

३९. खेत्तपरमाणू णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?
गोयमा! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अणद्धे, अमज्झे, अपदेसे, अविभाइमे॥

४०. कालपरमाणू [1]णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?
गोयमा! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे॥

४१. भावपरमाणू णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?
गोयमा! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—वण्णमंते, गंधमंते, रसमंते, फासमंते॥

४२. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव[2] विहरइ॥

छट्ठो उद्देसो

पुढविआदीणं आहार-पदं

४३. पुढविक्काइए णं भंते! इमोसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते! किं पुव्वि उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा? पुव्वि आहारेत्ता पच्छा उववज्जेज्जा?
गोयमा! पुव्वि वा उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा एवं जहा सत्तरसमसए

---

१. सं० पा०—पुच्छा। २. भ० १।५१।

छट्ठुद्देसे जाव[1] से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—पुव्विं वा जाव उववज्जेज्जा, नवर—तेहि सपाउणणा, इमेहि आहारो भण्णति, सेस तं चेव ।।

४४. पुढविक्काइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए ईसाणे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव चेव । एव जाव ईसीपब्भाराए उववाएयव्वो ।।

४५ पुढविक्काइए ण भंते ! सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे जाव ईसीपब्भाराए, एवं एतेणं कमेणं जाव तमाए अहेसत्तमाए य पुढवीए अतरा समोहए समाणे जे भविए सोहम्मे जाव ईसीपब्भाराए उववाएयव्वो ।।

४६ पुढविक्काइए ण भते ! सोहम्मीसाणाण सणकुमार-माहिंदाण य कप्पाण अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! किं पुव्विं उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा० ? सेस त चेव जाव से तेणट्ठेण जाव निक्खेवओ ।।

४७. पुढविक्काइए ण भते ! सोहम्मीसाणाण सणकुमार-महिंदाण य कप्पाण अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव चेव । एव जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो । एव सणकुमार-माहिंदाण बभलोगस्स य कप्पस्स अंतरा समोहए, समोहणित्ता पुणरवि जाव अहेसत्तमाए उवावाएयव्वो । एव बभलोगस्स लंतगस्स य कप्पस्स अंतरा समोहए, पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एव लतगस्स महासुक्कस्स कप्पस्स य अतरा समोहए, पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एव महासुक्कस्स सहस्सारस्स य कप्पस्स अंतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एवं सहस्सारस्स आणय-पाणय-कप्पाण य अतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एव आणय-पाणयाण आरणच्चु-याण य कप्पाण अतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एवं आरणच्चुयाणं गेवेज्ज-विमाणाण य अतरा जाव अहेसत्तमाए । एव गेवेज्जविमाणाणं अणुत्तरविमा-णाण य अतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एवं अणुत्तरविमाणाण ईसीपब्भा-राए य पुणरवि जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो ।।

४८. आउक्काइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? सेस जहा पुढविक्काइयस्स जाव से तेणट्ठेण । एवं पढम-दोच्चाणं अंतरा समोहए जाव ईसीपब्भाराए उववाएयव्वो । एव एएण कमेण जाव तमाए अहेसत्तमाए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जाव ईसीपब्भाराए उववाएयव्वो आउक्काइयत्ताए ।।

---

१. भ० १७।६७,६८ ।

४९. आउयाए णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं सणंकुमार-माहिंदाण य कप्पाणं अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहि-घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? सेस त चेव। एव एएहि चेव अंतरा समोहओ जाव अहेसत्तमाए पुढवीए घणोदहि-घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववाएयव्वो। एव जाव अणुत्तरविमाणाण ईसीपब्भाराए य पुढवीए अतरा समोहए जाव अहेसत्तमाए घणोदहि-घणोदहिवलएसु उववाएयव्वो ॥

५०. वाउक्काइए ण भंते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं जहा सत्तरसमसए वाउक्काइयउद्देसए तहा इह वि, नवर—अंतरेसु समोहणा नेयव्वा, सेसं त चेव जाव अणुत्तरविमाणाण ईसीपब्भाराए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए घणवाय-तणुवाए घणवाय-तणुवायवलएसु वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, सेसं त चेव जाव से तेणट्ठेण जाव[1] उववज्जेज्जा ॥

५१. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

सत्तमो उद्देसो

बंध-पदं

५२. कतिविहे णं भंते ! बधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—जीवप्पयोगबंधे, अणंतरबधे, परंपरबंधे ॥

५३. नेरइयाणं भते ! कतिविहे बधे पण्णत्ते ? एवं चेव। एव जाव वेमाणियाण ॥

५४. नाणावरणिज्जस्स णं भते ! कम्मस्स कतिविहे बधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे बधे पण्णत्ते, तं जहा—जीवप्पयोगबंधे, अणंतरबंधे, परंपरबंधे ॥

५५. नेरइयाणं भते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कतिविहे बधे पण्णत्ते ? एव चेव। एवं जाव वेमाणियाण। एवं जाव अंतराइयस्स ॥

---

१. भ० १७।७८-८०।

२. वाचनान्तराभिप्रायेण तु पृथिव्यब्वायु-विषयत्वादुद्देशकत्रयमिदमतोऽष्टम. (वृ)।

५६. नाणावरणिज्जोदयस्स ण भते ! कम्मस कतिविहे वधे पण्णत्त ?
गोयमा ! तिविहे वधे पण्णत्ते एव चेव । एव नेरइयाण वि । एव जाव वेमाणियाणं । एवं जाव अतराइओदयस्स ॥

५७. इत्थीवेदस्स ण भते ! कम्मस्स कतिविहे वधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे वधे पण्णत्ते एव चेव ॥

५८. असुरकुमाराण भते ! इत्थीवेदस्स कम्मस्स कतिविहे वधे पण्णत्ते ? एव चेव । एव जाव वेमाणियाण, नवर—जस्स इत्थिवेदो अत्थि । एव पुरिसवेदस्स वि । एव नपुसगवेदस्स वि जाव वेमाणियाण, नवर—जस्स जो अत्थि वेदो ॥

५९ दसणमोहणिज्जस्स ण भते ! कम्मस्स कतिविहे वधे पण्णत्ते ? एव चेव । निरतर जाव वेमाणियाणं । एव चरित्तमोहणिज्जस्स वि जाव वेमाणियाणं । एव एएण कमेण ओरालियसरीरस्स जाव कम्मगसरीरस्स आहारसण्णाए जाव परिग्गहसण्णाए, कण्हलेसाए जाव सुक्कलेसाए, सम्मदिट्ठीए मिच्छादिट्ठीए सम्मामिच्छादिट्ठीए, आभिणिवोहियनाणस्स जाव केवलनाणस्स, मइअण्णाणस्स सुयअण्णाणस्स विभगनाणस्स, एव आभिणिवोहियनाणविसयस्स भते ! कतिविहे वधे पण्णत्ते जाव केवलनाणविसयस्स, मइअण्णाणविसयस्स सुयअण्णाणविसयस्स विभगनाणविसयस्स—एएसि सव्वेसि पदाण तिविहे वधे पण्णत्ते । सव्वेवेते चउव्वीस दडगा भाणियव्वा, नवर—जाणियव्वं जस्स जं अत्थि । जाव—

६०. वेमाणियाण भते ! विभगनाणविसयस्स कतिविहे वधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे वधे पण्णत्ते, त जहा—जीवप्पयोगवधे, अणतरवधे, परपरवधे ॥

६१. सेव भते ! सेवं भते ! जाव[1] विहरइ[2] ॥

---

१. भ० १।५१ ।
२. इह सग्रहगाथे—
जीवप्पओगवधे, अणतरपरपरे च वोद्धव्वे ।
पगडी उदए वेए, दसणमोहे चरित्ते य ॥१ ।
ओरालियवेउव्विय-आहारगतेयकम्मए चेव ।
सण्णा लेस्सा दिट्ठी, नाणानाणेसु तव्विसए ।२।
(वृ) ।

अट्ठमो उद्देसो

समयखेत्ते ओसप्पिणि-उस्सप्पिणि-पदं

६२. कति णं भंते ! कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! पन्नरस कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पंच भरहाइ, पंच एरवयाइं, पंच महाविदेहाइं ॥

६३. कति ण भते ! अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तीसं अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पच हेमवयाइं, पच हेरण्णवयाइं, पंच हरिवासाइ, पच रम्मगवासाइं, पच 'देवकुराओ, पच उत्तरकुराओ'[1] ॥

६४. एयासु ण भते ! तीसासु अकम्मभूमीसु अत्थि ओसप्पिणीति वा उस्सप्पिणीति वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६५. एएसु ण भते ! पचसु भरहेसु, पचसु एरवएसु अत्थि ओसप्पिणीति वा उस्सप्पिणीति वा ?
हता अत्थि । एएसु ण पचसु महाविदेहेसु नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो !

पचमहव्वइय-चाउज्जाम-धम्म-पदं

६६. एएसु णं भते ! पचसु महाविदेहेसु अरहता भगवतो पंचमहव्वइय[2] सपडिक्कमणं धम्मं पण्णवयति ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
एएसु णं पचसु भरहेसु, पंचसु एरवएसु, पुरिम-पच्छिमगा दुवे अरहंता भगवंतो पचमहव्वइय[3] सपडिक्कमण धम्म पण्णवयति, अवसेसा णं अरहता भगवतो चाउज्जाम धम्मं पण्णवयंति । एएसु णं पचसु महाविदेहेसु अरहंता भगवतो चाउज्जामं धम्म पण्णवयति ॥

तित्थगर-पदं

६७. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए कति तित्थगरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउवीसं तित्थगरा पण्णत्ता, तं जहा—उसभ-अजिय-सभव-अभिनंदण-

---

१. देवकुरूओ पच उत्तरकुरूओ (अ, क, ख, ब, म) ।
२. पचमहव्वइय पचाणुव्वइय (ता, स) ।
३. पचमहव्वइय पचाणुव्वइय (ता) ।

सुमति-सुप्पभ-सुपास-ससि-पुप्फदंत-सीयल-सेज्जस-वासुपुज्ज-विमल-अणत-धम्म-सति-कुथु-अर-मल्लि-मुणिसुव्वय-नमि-नेमि-पास-वद्धमाणा ॥

६८ एएसि ण भंते ! चउवीसाए तित्थगराण कति जिणतरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तेवीसं जिणतरा पण्णत्ता ॥

जिणतरेसु कालियसुय-पदं

६९ एएसि णं भंते ! तेवीसाए जिणतरेसु कस्स कहिं कालियसुयस्स वोच्छेदे पण्णत्ते ?
गोयमा ! एएसु ण तेवोसाए जिणतरेसु पुरिम-पच्छिमएसु अट्ठसु-अट्ठसु जिणतरेसु एत्थ णं कालियसुयस्स अव्वोच्छेदे पण्णत्ते, मज्झिमएसु सत्तसु जिणतरेसु एत्थ णं कालियसुयस्स वोच्छेदे पण्णत्ते, सव्वत्थ वि ण वोच्छिण्णे दिट्ठिवाए ॥

पुव्वगय-पदं

७०. जंबुद्दीवे ण भते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाण केवतिय काल पुव्वगए अणुसज्जिस्सति ?
गोयमा ! जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए मम एगं वाससहस्स पुव्वगए अणुसज्जिस्सति ॥

७१. जहा ण भते ! जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाण एगं वाससहस्स पुव्वगए अणुसज्जिस्सति, तहा ण भते ! जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए अवसेसाणं तित्थगराण केवतिय काल पुव्वगए अणुसज्जित्था ?
गोयमा ! अत्थेगतियाणं सखेज्ज काल, अत्थेगतियाण असखेज्ज काल ॥

तित्थ-पदं

७२. जंबुद्दीवे ण भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाणं केवतिय काल तित्थे अणुसज्जिस्सति ?
गोयमा ! जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए मम एगवीस वाससहस्साइं तित्थे अणुसज्जिस्सति ॥

७३ जहा ण भंते ! जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे वासे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाणं एक्कवीसं वाससहस्साइ तित्थे अणुसज्जिस्सति, तहा ण भते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेस्साण[1] चरिमतित्थगरस्स केवतिय काल तित्थे अणुसज्जिस्सति ?

---

१. भविष्यता महापद्मादीना जिनानाम् (वृ) ।

गोयमा ! जावतिए णं उसभस्स अरहओ कोसलियस्स जिणपरियाए एवइयाइं संखेज्जाइं आगमेस्साणं चरिमतित्थगरस्स तित्थे अणुसज्जिस्सति ।।

७४. तित्थं भंते ! तित्थं ? तित्थगरे तित्थं ?

गोयमा ! अरहा ताव नियमं तित्थकरे, तित्थं पुण चाउवण्णे[1] समणसंघे, तं जहा—समणा, समणीओ, सावया, सावियाओ ।।

७५. पवयणं भंते ! पवयणं ? पावयणी पवयणं ?

गोयमा ! अरहा ताव नियमं पावयणी, पवयणं पुण दुवालसंगे गणिपिडगे, तं जहा—आयारो[2] °सूयगडो ठाणं समवाओ विआहपण्णत्ती णाया-धम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ पण्हावागरणाइं विवाग-सुयं° दिट्ठिवाओ ।।

उग्गादीणं निग्गंथधम्माणुगमण-पदं

७६. जे इमे भंते ! उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, नाया[3], कोरव्वा—एए णं अस्सिं धम्मे ओगाहंति, ओगाहित्ता अट्ठविहं कम्मरयमलं पवाहेंति, पवाहेत्ता तओ पच्छा सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?

हंता गोयमा ! जे इमे उग्गा, भोगा,[4] °राइण्णा, इक्खागा, नाया, कोरव्वा—एए णं अस्सिं धम्मे ओगाहंति, ओगाहित्ता अट्ठविहं कम्मरयमलं पवाहेंति, पवाहेत्ता तओ पच्छा सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं° अंतं करेंति, अत्थेगतिया अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ।।

७७. कतिविहा णं भंते ! देवलोया पण्णत्ता ?

गोयमा ! चउव्विहा देवलोया पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरा, जोतिसिया, वेमाणिया ।।

७८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

नवमो उद्देसो

विज्जा-जंघा-चारण-पदं

७९. कतिविहा णं भंते ! चारणा पण्णत्ता ?

---

१. चाउवण्णाइण्णे (व, स, वृ); चाउवण्णे (वृपा) ।
२. सं० पा०—आयारो जाव दिट्ठिवाओ ।
३. नाता (अ, क, ब) ।
४. सं० पा०—तं चेव जाव अंतं ।

गोयमा ! दुविहा चारणा पण्णत्ता, तं जहा—विज्जाचारणा य, जंघाचारणा य ॥

८०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—विज्जाचारणे[1]-विज्जाचारणे ?
गोयमा ! तस्स णं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं विज्जाए उत्तरगुणलद्धिं खममाणस्स विज्जाचारणलद्धी नाम लद्धी समुप्पज्जइ। से तेणट्ठेणं[2] °गोयमा ! एवं वुच्चइ°—विज्जाचारणे-विज्जाचारणे ॥

८१. विज्जाचारणस्स णं भंते ! कहं सीहा गती, कहं सीहे गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे जाव[3] किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं। देवे णं महिड्ढीए जाव[4] महेसक्खे जाव इणामेव-इणामेव त्ति कट्टु[5] केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छरानिवाएहिं तिक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छेज्जा, विज्जाचारणस्स णं गोयमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पण्णत्ते ॥

८२. विज्जाचारणस्स णं भंते ! तिरियं केवतिए गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं माणुसुत्तरे पव्वए समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता बितिएणं उप्पाएणं नंदीसरवरे दीवे समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता तओ पडिनियत्तति, पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इहं चेइयाइं वंदति। विज्जाचारणस्स णं गोयमा ! तिरियं एवतिए गतिविसए पण्णत्ते ॥

८३. विज्जाचारणस्स णं भंते ! उड्ढं केवतिए गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं नंदणवणे समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता बितिएणं उप्पाएणं पंडगवणे समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता तओ पडिनियत्तति, पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इहं चेइयाइं वंदति। विज्जाचारणस्स णं गोयमा ! उड्ढं एवतिए गतिविसए पण्णत्ते। से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते[6] कालं करेति नत्थि तस्स आराहणा। से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेति अत्थि तस्स आराहणा ॥

८४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जंघाचारणे-जंघाचारणे ?
गोयमा ! तस्स णं अट्ठमंअट्ठमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमा-

---

१. विज्जाचारणा (अ, क, ख, म, स)।
२. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव विज्जाचारणे।
३. भ० ६।७५।
४. भ० १।३३१।
५. तुलना—भ० ६।१७३।
६. अणालोतिय° (स)।

णस्स जंघाचारणलद्धी नाम लद्धी समुप्पज्जति। से तेणट्ठेणं[1] •गोयमा ! एवं वुच्चइ॰—जघाचारणे-जंघाचारणे॥

८५. जघाचारणस्स णं भंते ! कह सीहा गती, कह सीहे गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे[2] •जाव किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं। देवे णं महिड्ढीए जाव महेसक्खे जाव इणामेव-इणामेव त्ति कट्टु केवलकप्पं जबुद्दीव दीव तिहिं अच्छरानिवाएहि॰ तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छेज्जा, जघाचारणस्स णं गोयमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पण्णत्ते[3]॥

८६. जघाचारणस्स ण भते ! तिरियं केवतिए गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से णं इओ एगेण उप्पाएण रुयगवरे दीवे समोसरणं करेति, करेत्ता तहि चेइयाइ वंदति, वदित्ता तओ पडिनियत्तमाणे बितिएण उप्पाएणं नदीसरवरदीवे समोसरण करेति, करेत्ता तहि चेइयाइ वदति, वदित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इहं चेइयाइ वदति, जघाचारणस्स ण गोयमा ! तिरियं एवतिए गतिविसए पण्णत्ते॥

८७. जघाचारणस्स ण भते ! उड्ढ केवतिए गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से ण इओ एगेण उप्पाएण पडगवणे समोसरणं करेति, करेत्ता तहि चेइयाइं वंदति, वदित्ता तओ पडिनियत्तमाणे वितिएण उप्पाएणं नंदणवणे समोसरणं करेति, करेत्ता तहि चेइयाइं वदति, वदित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इह चेइयाइ वंदति, जघाचारणस्स णं गोयमा ! उड्ढ एवतिए गतिविसए पण्णत्ते। से ण तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कते काल करेइ नत्थि तस्स आराहणा। से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते कालं करेति अत्थि तस्स आराहणा॥

८८ सेव भते ! सेव भते ! जाव[4] विहरइ॥

दसमो उद्देसो

आउय-पदं

८९. जीवा णं भते किं सोवक्कमाउया ? निरुवक्कमाउया ?
गोयमा ! जीवा सोवक्कमाउया वि, निरुवक्कमाउया वि॥

---

१. स॰ पा॰—तेणट्ठेणं जाव जघाचारणे।
२. सं॰ पा॰—एव जहेव विज्जाचारणस्स नवरं तिसत्तखुत्तो।
३. पण्णत्ते, सेस त चेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
४. भ॰ १।५१।

९०. नेरइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया नो सोवक्कमाउया, निरुवक्कमाउया । एवं जाव थणिय-कुमारा । पुढविक्काइया जहा जीवा । एव जाव मणुस्सा । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ।

उववज्जण-उव्वट्टण-पदं

९१. नेरइया ण भते ! कि आतोवक्कमेणं[1] उववज्जति ? परोवक्कमेण उवव-ज्जति ? निरुवक्कमेण उववज्जति ?
गोयमा ! आतोवक्कमेण वि उववज्जंति, परोवक्कमेण वि उववज्जंति, निरुव-क्कमेण वि उववज्जति । एव जाव वेमाणिया ॥

९२ नेरइया ण भते ! कि आतोवक्कमेण उव्वट्टंति ? परोवक्कमेण उव्वट्टति ? निरुवक्कमेण उव्वट्टति ?
गोयमा ! नो आतोवक्कमेणं उव्वट्टंति, नो परोवक्कमेणं उव्वट्टति, निरुवक्क-मेणं उव्वट्टति । एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइया जाव मणुस्सा तिसु उव्वट्टति । सेसा जहा नेरइया, नवर—जोइसिय-वेमाणिया चयति ॥

९३. नेरइया ण भते ! कि आइड्ढीए उववज्जति ? परिड्ढीए[2] उववज्जति ?
गोयमा ! आइड्ढीए उववज्जति, नो परिड्ढीए उववज्जति। एवं जाव वेमाणिया ॥

९४. नेरइया णं भते ! कि आइड्ढीए उव्वट्टंति ? परिड्ढीए उव्वट्टति ?
गोयमा ! आइड्ढीए उव्वट्टति, नो परिड्ढीए उव्वट्टति । एव जाव वेमाणिया, नवरं—जोइसिया वेमाणिया य चयंतीति अभिलावो ॥

९५. नेरइया णं भते ! किं आयकम्मुणा उववज्जति ? परकम्मुणा उववज्जति ?
गोयमा ! आयकम्मुणा उववज्जति, नो परकम्मुणा उववज्जति । एव जाव वेमाणिया । एव उव्वट्टणादडओ वि ॥

९६ नेरइया ण भते ! कि आयप्पओगेणं उववज्जति ? परप्पओगेण उववज्जति ?
गोयमा ! आयप्पओगेण उववज्जति, नो परप्पओगेण उववज्जति । एव जाव वेमाणिया । एवं उव्वट्टणादडओ वि ॥

कतिसंचियादि-पदं

९७ नेरइयाण भंते ! किं कतिसचिया ? अकतिसचिया ? अवत्तव्वगसंचिया ?

---

१. आतमना—स्वयमेवायुष उपक्रम आत्मोपक्रम-स्तेन मृत्वेति शेष (वृ) ।
२. परिड्ढीए (क) ।

गोयमा ! नेरइया कतिसंचिया वि, अकतिसंचिया वि, अवत्तव्वगसंचिया वि ॥

९८ से केणट्ठेणं जाव अवत्तव्वगसचिया वि ?

गोयमा ! जे णं नेरइया सखेज्जएण पवेसणएणं पविसति ते णं नेरइया कति-सचिया, जे ण नेरइया असखेज्जएणं पवेसणएणं पविसति ते णं नेरइया अकतिसचिया, जे ण नेरइया एक्कएण पवेसणएण पविसति ते णं नेरइया अवत्त-व्वगसचिया। से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव अवत्तव्वगसंचिया वि। एवं जाव थणियकुमारा ॥

९९. पुढविक्काइयाणं—पुच्छा ।

गोयमा ! पुढविकाइया नो कतिसंचिया, अकतिसचिया, नो अवत्तव्वग-सचिया ॥

१०० से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जाव नो अवत्तव्वगसचिया ?

गोयमा ! पुढविकाइया असखेज्जएण पवेसणएणं पविसति । से तेणट्ठेणं जाव नो अवत्तव्वगसचिया । एव जाव वणस्सइकाइया[1] । बेदिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया ॥

१०१. सिद्धाण—पुच्छा ।

गोयमा ! सिद्धा कतिसचिया, नो अकतिसचिया, अवत्तव्वगसचिया वि ॥

१०२. से केणट्ठेणं जाव अवत्तव्वगसचिया वि ?

गोयमा ! जे णं सिद्धा सखेज्जएण पवेसणएणं पविसति ते ण सिद्धा कति-सचिया, जे ण सिद्धा एक्कएण पवेसणएण पविसति ते ण सिद्धा अवत्तव्वग-संचिया । से तेणट्ठेणं जाव अवत्तव्वगसचिया वि ॥

१०३. एएसि णं भते ! नेरइयाण कतिसचियाण अकतिसचियाण अवत्तव्वगसचियाण य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?• विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया अवत्तव्वगसचिया, कतिसचिया सखेज्जगुणा, अकतिसचिया असखेज्जगुणा । एव एगिदियवज्जाण जाव वेमाणियाण अप्पा-बहुग । एगिदियाण नत्थि अप्पाबहुग ॥

१०४ एएसि ण भते ! सिद्धाण कतिसचियाण अवत्तव्वगसचियाण य कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?• विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा कतिसचिया, अवत्तव्वगसचिया सखेज्जगुणा ॥

---

१. वनस्पतयस्तु यद्यप्यनन्ता उत्पद्यन्ते तथाऽपि प्रवेशनक विजातीयेभ्य आगताना यस्त-त्रोत्पादस्तद्विवक्षित, असङ्ख्याता एव विजातीयेभ्य उद्वृत्तास्तत्रोत्पद्यन्त इति सूत्रे उक्तम् (वृ) ।

२. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

३. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

छक्कसमज्जियादि-पदं

१०५. नेरइयाणं भंते ! किं छक्कसमज्जिया ? नोछक्कसमज्जिया ? छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया ? छक्केहि समज्जिया ? छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया ?
गोयमा ! नेरइया छक्कसमज्जिया वि, नोछक्कसमज्जिया वि, छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया वि, छक्केहि समज्जिया वि, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया वि ।।

१०६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया छक्कसमज्जिया वि जाव छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया वि ?
गोयमा ! जे णं नेरइया छक्कएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया छक्क-समज्जिया । जे णं नेरइया जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया नोछक्कसमज्जिया । जे णं नेरइया एगेणं छक्कएणं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं नेरइया छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया । जे णं नेरइया नेगेहिं छक्केहिं पवेसणएहिं[1] पविसंति ते णं नेरइया छक्केहि सम-ज्जिया । जे णं नेरइया नेगेहिं छक्केहिं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया । से तेणट्ठेणं तं चेव जाव समज्जिया वि । एवं जाव थणियकुमारा ।।

१०७. पुढविक्काइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! पुढविक्काइया नो छक्कसमज्जिया, नो नोछक्कसमज्जिया, नो छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया, छक्केहिं समज्जिया, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया वि ।।

१०८. से केणट्ठेणं जाव समज्जिया वि ?
गोयमा ! जे णं पुढविक्काइया नेगेहिं छक्कएहिं पवेसणएहिं पविसंति ते णं पुढविक्काइया छक्केहि समज्जिया । जे णं पुढविक्काइया नेगेहिं छक्कएहि य अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचएणं पवेसण-एणं पविसंति ते णं पुढविक्काइया छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया । से तेण-ट्ठेणं जाव समज्जिया वि । एवं जाव वणस्सइकाइया । बेंदिया जाव वेमाणिया, सिद्धा जहा नेरइया ।।

१०९. एएसि णं भंते ! नेरइयाणं छक्कसमज्जियाणं, नोछक्कसमज्जियाणं, छक्केण य नोछक्केण य समज्जियाणं, छक्केहि समज्जियाणं, छक्केहि य नोछक्केण य

१. पवेसणएण (अ, क, व, स), पवेसणग (ख, म) ।

समज्जियाण य कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?० विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया छक्कसमज्जिया, नोछक्कसमज्जिया संखेज्जगुणा छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया सखेज्जगुणा, छक्केहि समज्जिया असखेज्ज-गुणा, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा। एव जाव थणिय-कुमारा ।।

११०. एएसि णं भते ! पुढविकाइयाणं छक्केहि समज्जियाण, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जियाण य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?० विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविक्काइया छक्केहि समज्जिया, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया सखेज्जगुणा । एवं जाव वणस्सइकाइयाणं । बेइदियाण जाव वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं ।।

१११. एएसि ण भंते ! सिद्धाणं छक्कसमज्जियाणं नोछक्कसमज्जियाण जाव छक्केहि य नोछक्केण य समज्जियाण य कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?० विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया, छक्केहिं सम-ज्जिया संखेज्जगुणा, छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्कसम-ज्जिया संखेज्जगुणा, नोछक्कसमज्जिया सखेज्जगुणा ।।

बारससमज्जियादि-पद

११२. नेरइया णं भंते ! कि बारससमज्जिया ?, नोबारससमज्जिया ? बारसएण य नोबारसएण य समज्जिया ? बारसएहि समज्जिया ? बारसएहि य नोबारस-एण य समज्जिया ?

गोयमा ! नेरइया बारससमज्जिया वि जाव बारसएहि य नोबारसएण य सम-ज्जिया वि ।।

११३. से केणट्ठेणं जाव समज्जिया वि ?

गोयमा ! जे ण नेरइया बारसएण पवेसणएण पविसंति ते ण नेरइया बारस-समज्जिया । जे णं नेरइया जहण्णेणं एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेण एक्कारसएण पवेसणएण पविसति ते ण नेरइया नोबारससमज्जिया । जे ण नेरइया बारसएण अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेण एक्कारसएण पवेसणएणं पविसति ते ण नेरइया बारसएण य नोबारसएण य

१. स० पा० —कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

३. स० पा० – कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

समज्जिया। जे ण नेरइया नेगेहिं वारसएहिं पवेसणएहिं पविसंति ते णं नेरइया वारसएहिं समज्जिया। जे णं नेरइया नेगेहिं वारसएहिं अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएण पविसंति ते ण नेरइया बारसएहि य नोबारसएण य समज्जिया। से तेणट्ठेण जाव समज्जिया वि। एवं जाव थणियकुमारा॥

११४. पुढविक्काइयाणं—पुच्छा।
गोयमा! पुढविक्काइया नोवारससमज्जिया, नो नोवारससमज्जिया, नो वारसएण य नोबारसएण य समज्जिया, बारसएहिं समज्जिया, बारसेहि य नोबारसेण य समज्जिया वि॥

११५. से केणट्ठेण जाव समज्जिया वि?
गोयमा! जे ण पुढविक्काइया नेगेहिं वारसएहिं पवेसणएहिं पविसंति ते णं पुढविक्काइया वारसएहि समज्जिया। जे णं पुढविक्काइया नेगेहि बारसएहिं अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएण पविसंति ते ण पुढविक्काइया वारसएहि य नोवारसएण य समज्जिया। से तेणट्ठेण जाव समज्जिया वि। एव जाव वणस्सइकाइया। बेइंदिया जाव सिद्धा जहा नेरइया॥

११६. एएसि ण भंते! नेरइयाण वारससमज्जियाणं[1]—सव्वेसिं अप्पाबहुगं जहा छक्कसमज्जियाण, नवर—बारसाभिलावो, सेसं त चेव॥

चुलसीतिसमज्जियादि-पद

११७. नेरइया ण भंते! किं चुलसीतिसमज्जिया? नोचुलसीतिसमज्जिया? चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया? चुलसीतीहिं समज्जिया? चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया?
गोयमा! नेरइया चुलसीतिसमज्जिया वि जाव चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया वि॥

११८. से केणट्ठेण जाव समज्जिया वि?
गोयमा! जे ण नेरइया चुलसीतीएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया चुलसीतिसमज्जिया। जे ण नेरइया जहण्णेण एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेण तेसीतिपवेसणएण पविसंति ते ण नेरइया नोचुलसीतिसमज्जिया। जे णं नेरइया चुलसीतीए णं अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेण तेसीतीएण पवेसणएण पविसंति ते णं नेरइया चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया। जे णं नेरइया नेगेहिं चुलसीतीएहिं पवेसणएहिं पविसंति

---

१ पू०—भ० २०।१०९।

ते णं नेरइया चुलसीतीएहिं समज्जिया। जे णं नेरइया नेगेहिं चुलसीतीएहि य अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा[1] •दोहि वा तीहि वा°, उक्कोसेणं तेसीतीएण पवेसणएणं[2] पविसति ते णं नेरइया चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया। से तेणट्ठेणं जाव समज्जिया वि। एवं जाव थणियकुमारा। पुढविक्काइया तहेव पच्छिल्लएहि दोहि, नवरं—अभिलाओ चुलसीतीओ। एव जाव वणस्सइ-काइया। बेंदिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया॥

११९. सिद्धाणं—पुच्छा।
गोयमा! सिद्धा चुलसीतिसमज्जिया वि, नोचुलसीतिसमज्जिया वि, चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया वि, नो चुलसीतीहिं समज्जिया, नो चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया॥

१२०. से केणट्ठेणं जाव समज्जिया?
गोयमा! जे णं सिद्धा चुलसीतीएणं पवेसणएण पविसति ते ण सिद्धा चुलसीति समज्जिया। जे ण सिद्धा जहण्णेणं एक्केणं वा दोहिं वा तीहि वा, उक्कोसेण तेसीतीएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा नोचुलसीतिसमज्जिया। जे ण सिद्धा चुलसीतीएणं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेणं तेसीतीएण पवेसणएण पविसंति ते णं सिद्धा चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया। तेणट्ठेण जाव समज्जिया॥

१२१. एएसि ण भंते! नेरइयाणं चुलसीतिसमज्जियाणं नोचुलसीतिसमज्जियाणं[3]। —सव्वेसि अप्पाबहुग जहा छक्कसमज्जियाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं—अभिलाओ चुलसीतीओ॥

१२२. एएसि णं भते! सिद्धाणं चुलसीतिसमज्जियाणं, नोचुलसीतिसमज्जियाणं, चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जियाण य कयरे कयरेहिंतो[4] •अप्पा वा? बहुया वा? तुल्ला वा°? विसेसाहिया वा?
गोयमा! सव्वत्थोवा सिद्धा चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया, चुलसीतिसमज्जिया अणतगुणा, नोचुलसीतिसमज्जिया अणतगुणा॥

१२३. सेव भते! सेवं भते! त्ति जाव[5] विहरइ॥

---

१. सं० पा०—एक्केण वा जाव उक्कोसेणं।
२. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. पू०—भ० २०।१०६।
४. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
५. भ० १।५१।

एगवीसइमं सतं

पढमो वग्गो

पढमो उद्देसो

१. सालि २ कल ३ अयसि ४. वसे, ५. इक्खू ६. दब्भे य ७. अब्भ ८. तुलसी य ।
अट्ठेए दस वग्गा, असीतिं[1] पुण होंति उद्देसा ॥१॥

सालिआदिजीवाण उववायादि-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—अह भंते ! साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवाणं—एएसि णं भंते ! जीवा मूलत्ताए वक्कमंति, ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? मणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? देवेहिंतो उववज्जंति ? जहा[2] वक्कंतीए तहेव उववाओ, नवरं—देववज्जं ॥

२. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति । अवहारो जहा[3] उप्पलुद्देसे ॥

३. तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहत्तं ॥

४. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा ? अबंधगा ? जहा[4] उप्पलुद्देसे । एवं वेदे वि, उदए वि, उदीरणा[5] वि ॥

५. ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा छव्वीसं भंगा, दिट्ठी जाव इंदिया जहा[6] उप्पलुद्देसे ॥

---

१. असीति (क, ब, स) ।
२. प० ६ ।
३. भ० ११।४ ।
४. भ० ११।६-११ ।
५. उदीरणाए (अ, क, ख, ता, ब, स) ।
६. भ० ११।१३-२८ ।

६. ते णं भंते ! साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवगमूलगजीवे कालओ केवच्चिरं[1] होति ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ॥
७. से णं भंते ! साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवगमूलगजीवे पुढवीजीवे, पुणरवि साली-वीही-जव-जवजवगमूलगजीवे केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ? एवं जहा उप्पलुद्देसे। एएणं अभिलावेणं जाव[2] मणुस्स-जीवे, आहारो जहा[3] उप्पलुद्देसे, ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहत्तं, समुग्घाया, समोहया, उव्वट्टणा य जहा[4] उप्पलुद्देसे ॥
८. अह भंते ! सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवगमूलग-जीवत्ताए उववण्णपुव्वा ?
हंता गोयमा ! असति अदुवा अणंतखुत्तो ॥
९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२-१० उद्देसो

१०. अह भंते ! साली-वीही[5]-°गोधूम-जव-°-जवजवाणं—एएसि णं जे जीवा कंदत्ताए वक्कमंति ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति ? एवं कदाहि-गारेण सच्चेव मूलुद्देसो अपरिसेसो भाणियव्वो जाव असति अदुवा अणंतखुत्तो ॥
११. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
१२. एवं खंधे वि उद्देसओ नेयव्वो। एवं तयाए वि उद्देसो भाणियव्वो। साले वि उद्देसो भाणियव्वो। पवाले वि उद्देसो भाणियव्वो। पत्ते वि उद्देसो भाणि-यव्वो। एए सत्त वि उद्देसगा अपरिसेसं जहा मूले तहा नेयव्वा। एवं पुप्फे वि उद्देसओ, नवरं—देवा उववज्जंति जहा[6] उप्पलुद्देसे। चत्तारि लेस्साओ, असीति भंगा। ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं अंगुलपुहत्तं, सेसं तं चेव ॥
१३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
१४. जहा पुप्फे एवं फले वि उद्देसओ अपरिसेसो भाणियव्वो। एवं बीए वि उद्देसओ। एए दस उद्देसगा ॥

---

१. केवचिरं (अ, क, ख, व)।
२. भ० ११।३०-३४।
३. भ० ११।३५।
४. भ० ११।३७-३९।
५. सं० पा०—वीही जाव जवजवाण।
६. भ० ११।२।

बीओ वग्गो

१५ अह भंते ! कल-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-निप्फाव-कुलत्थ-आलिसदग-सतीण[1]-पलिमथगाण[2]—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति ते णं भते ! जीवा कओहिंतो उववज्जत्ति ? एव मूलादीया दस उद्देसगा भाणियव्वा जहेव सालीण निरवसेसं तहेव ॥

तइयो वग्गो

१६. अह भते ! अयसि-कुसुभ-कोद्दव-कंगु-रालग-वरा-कोदूसा-सण-सरिसव-मूलग-बीयाण एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति ते ण भते ! जीवा कओहिंतो उववज्जति ? एव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा जहेव सालीणं निरवसेस तहेव भाणियव्वा ॥

चउत्थो वग्गो

१७. अह भते ! वस-वेणु-कणक-कक्कावंस-चारुवस[3]-दडा[4]-कुडा[5]-विमा-कंडा-वेलुया-कल्लाणाण[6]—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा जहेव सालीण, नवर—देवो सव्वत्थ वि न उववज्जति । तिण्णि लेसाओ । सव्वत्थ वि छव्वीसं भगा, सेस त चेव ॥

---

१. सढिए (अ), सव्विए (क), सद्दिए (ख); सडिण (ता, स); सतिए (व), सदिण (म)
२. पलिमिथगाणं (अ, ता); पसिलिवगाण (क), पलिमित्थगाणं (ख, ब, म) ।
३. यारुरवस (अ); यारुवंस (व); वगरवंस (म) ।
४. उडा (ता); दडगा (व) ।
५. कुडा (अ, ता, स) ।
६. कल्लाणीण (अ, क, ता, व, म) ।

पंचमो वग्गो

१८. अह भंते ! उक्खु-उक्खुवाडिय-वीरण-इक्कड-भमास-सुंब[1]-सर-वेत्त-तिमिर-सतपोरग[2]-नलाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं जहेव वंसवग्गो तहेव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा, नवरं—खंधुद्देसे देवो उववज्जति। चत्तारि लेस्साओ, सेसं तं चेव ॥

छट्ठो वग्गो

१९. अह भंते ! सेडिय[3]-भंतिय[4]-कोंतिय-दब्भ-कुस-पव्वग-पोदइल[5] अज्जुण आसाढग-रोहियंस-सुय[6]-वखीर[7]-भुस[8]-एरंड-कुरुकुंद[9]-करकर सुंठ- विभंगु महुरतण[10]-थुरग[11]-सिप्पिय-सुंकलितणाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं जहेव वंसवग्गो ॥

सत्तमो वग्गो

२०. अह भंते ! अब्भरुह[12]-वोयाण[13]-हरितग-तंदुलेज्जग-तण-वत्थुल-पोरग[14]-मज्जार-पाइ[15]-विल्लि[16]-पालक्क-दगपिप्पलिय- दव्वि-सोत्थिक-सायमंडुक्कि[17]-मूलग-सरिसव-अंबिलसाग-जियंतगाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं जहेव वंसवग्गो ॥

---

१. मुंडे (अ); सुंठे (क, ख, ता)।
२. सतवोरग (ख)।
३. सेढिय (स)।
४. भतिय (अ); भात्तिय (क); भति (ता); भंतेय (ब)।
५. पदेइल (अ); वोदइल (ता)।
६. मुत (क, ख, ब, स)।
७. पक्खीर (ता)।
८. भूस (अ, क, ता, ब)।
९. कुडकुरुकुद (ता)।
१०. बहुरयण (क, ब); महुरयण (ख)।
११. छुरग (ता)।
१२. अज्भरुह (क, ख, ता, ब)।
१३. वेताण (अ); वायाण (ख)।
१४. वोरग (अ), चोरग (स)।
१५. याइ (ख, म)।
१६. विलि (ता); चिल्लि (ब)।
१७. सायमंदुक्कि (ख, ता, म)।

अट्ठमो वग्गो

२१ अह भते ! कुलसी-कण्ह-दराल-फणेज्जा-अज्जा-भूयणा[1]-चोरा-जीरा-दमणा-मरुया-इदीवर-सयपुप्फाण—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति० ? एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं जहा वसाण । एवं एएसु अट्ठसु वग्गेसु असीतिं उद्देसगा भवति ॥

---

१. चूयणा (स) ।

बावीसमं सतं

पढमो वग्गो

१,२. तालेगट्ठिय ३. बहुबीयगा य ४. गुच्छा य ५. गुम्म ६. वल्ली य।
छद्दस वग्गा एए, सट्ठि पुण होंति उद्देसा ॥१॥

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—अह भंते! ताल-तमाल-तक्कलि-तेतलि[1]-साल-सरला-'सारकल्लाण-जावति-केयइ'[2]-कदलि- कंदलि-चम्मरुक्ख- भुयरुक्ख[3]-हिंगुरुक्ख-लवंगरुक्ख-पूयफलि-खज्जूरि-नालिएरीणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति, ते णं भंते! जीवा कओहितो उववज्जंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा जहेव सालीणं, नवरं—इमं नाणत्तं—मूले कंदे खंधे तयाए साले य एएसु पंचसु उद्देसगेसु देवो न उववज्जति। तिण्णि लेसाओ। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं। उवरिल्लेसु पंचसु उद्देसएसु देवो उववज्जति। चत्तारि लेसाओ। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहत्तं। ओगाहणा मूले कंदे धणुहपुहत्तं, खंधे तयाए साले य गाउयपुहत्तं, पवाले पत्ते धणुहपुहत्तं, पुप्फे हत्थपुहत्तं, फले बीए य अंगुलपुहत्तं। सव्वेसिं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं। सेसं जहा सालीणं। एवं एए दस उद्देसगा॥

---

१. तेवलि (अ, म)।
२. सारकल्लाणं जाव केवइ (अ, क, ख, ता, ब, म, स); अत्र सर्वेष्वादर्शेषु 'सारकल्लाण जाव केवइ' इति पाठो लभ्यते। भ० ८।२१७ तथा प्रज्ञापनायाः प्रथमपदे यथा पाठोस्ति तदाधारेण ज्ञायते लिपिभ्रमोऽसौ जातः। वस्तुतः 'सारकल्लाण जावति केयइ' इति पाठः समीचीनोस्ति। अत्र जाव शब्दस्य किमपि प्रयोजनं नावगम्यते।
३. गुबरुक्ख (अ); गुयरुक्ख (क, ख); गुदरुख (ता)। × (ब); गुत्तरुक्ख (म) गुतरुक्ख (स)।

बीओ वग्गो

२. अह भंते ! निबंब जंबु-कोसंब-साल[1]-अकोल्ल-पीलु-सेलु-सल्लइ-मोयइ-मालुय-बउल-पलास-करंज-पुत्तजीवग-अरिट्ठ-विहेलग[2]-हरितग-भल्लाय-उबभरिय[3]-खीरणि-धायइ-पियाल-पूइयणिंबारग-सेण्हय[4]-पासिय[5]-सीसव-असण[6]-पुण्णाग-नाग-रुक्ख-सीवण्णि[7]-असोगाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा निरवसेसं जहा तालवग्गो ।।

तइओ वग्गो

३. अह भंते ! अत्थिय-तिंदुय-बोर-कविट्ठ—अंबाडग-माउलिंग[8]-बिल्ल[9]-आमलग-फणस-दाडिम[10]-आसोत्थ[11]-उंबर-वड-नग्गोह-नंदिरुक्ख-पिप्पलि-सतरि[12]-पिलक्खुरुक्ख-काउंबरिय-कुत्थुंभरिय[13]-देवदालि-तिलग-लउय-छत्तोह-सिरीस-सत्तिवण्ण[14]-दहिवण्ण-लोद्ध-धव-चंदण-अज्जुण-नीम[15]-कुडग-कलंबाण—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति, ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा तालवग्गसरिसा नेयव्वा जाव बीयं ।।

---

१. ताल (क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. वेहेलग (ता) ।
३. उवरिभरीय (अ) ।
४. सेण्हग (ता), सिण्हग (ब), सण्हय (स) ।
५. पोसिय (अ), पसिय (म) ।
६. अयसि (अ, क, ख, ता, ब, म, स); सर्वासु प्रतिषु 'अयसि' इति पाठो लिखितोस्ति, किन्तु प्रज्ञापनाया. (प० १) अनुसारेण 'असण' इति पद गृहीतम् ।
७. सीवण्ण (अ, क, ख, ता, म, स) ।
८. मातुलुंग (अ, क, ख, ब, म) ।
९. बेल्ल (ब) ।
१०. दालिम (ख, ता, स) ।
११. असोत्थ (अ, म); असोट्ठ (क, ख, ब); असोह (ता) ।
१२. सतरा (अ); सतर (क, ख, स); सेतर (ब)
१३. कोच्छुंभरिय (ख); कुच्छुंभरिय (स) ।
१४. सत्तवण्ण (स) ।
१५. नीब (ख) ।

चउत्थो वग्गो

४ अह भंते ! वाइंगणि-अल्लइ-पोडइ, एवं जहा पण्णवणाए गाहाणुसारेण नेयव्वं जाव[1] गज-पाडला-दासि[2]-अंकोल्लाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा नेयव्वा जाव बीयं ति निरवसेसं जहा वंसवग्गो ॥

पंचमो वग्गो

५. अह भंते ! सेरियक[3]-नवमालिय-कोरेंटग-बंधुजीवग-मणोज्जा[4], जहा पण्णवणाए पढमपदे गाहाणुसारेणं जाव[5] नवणीतिय[6]-कुंद-महाजाईणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा निरवसेसं जहा सालीणं ॥

छट्ठो वग्गो

६. अह भंते ! पूसफलि-कालिंगी-तुंबी-तउसी-एलावालुंकी, एवं पदाणि छिंदियव्वाणि पण्णवणागाहाणुसारेणं जहा तालवग्गे जाव[7] दधिफोल्लइ-काकलि-मोकलि[8]-अक्कबोंदीणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा जहा तालवग्गो, नवरं—फलउद्देसे ओगाहणाए जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहत्तं । ठिती सव्वत्थ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहत्तं, सेसं तं चेव । एवं छसु वि वग्गेसु सट्ठि उद्देसगा भवंति ॥

---

१. प० १, गुच्छवग्गो ।
२. पालुलावासि (अ); पाडलावासि (ख, स); पायलायसि (ब); पातुलावासि (म) ।
३. सिरियका (क); सरियक (ता); सरियक (ब) ।
४. मणोजा (अ, म) ।
५. प० १, गुम्मवग्गो ।
६. नवणीय (ख, ब, म); नलणीय (स) ।
७. प० १, वल्लिवग्गो ।
८. मोक्कलि (ख, ब, स) ।

तेवीसइमं सतं

पढमो वग्गो

१. आलुय २. लोही ३ अवए, ४ पाढा तह ५. मासवण्णि-वल्ली य।
पंचेते दसवग्गा, पन्नास होंति उद्देसा ॥१॥

१ रायगिहे जाव एवं वयासी—अह भंते ! आलुय-मूलग-सिंगबेर-हलिद्दा[1]-रुरु-कंडरिय- जारु- छीरबिरालि- किट्ठि- कुंदु[2]- कण्हाकडभु[3]- मधु-पुयलइ[4]- महुसिंगि-निरुहा[5]-सप्पसुगंधा[6]-छिण्णरुह-बीयरुहाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा वंसवग्गसरिसा, नवरं—परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति। अवहारो—गोयमा ! ते णं अणंता समये-समये अवहीरमाणा-अवहीरमाणा अणंताहिं ओसप्पिणीहिं उस्सप्पिणीहिं एवतिकालेणं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिया[7] सिया। ठिती जहण्णेणं वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं, सेसं तं चेव ॥

बीओ वग्गो

२ अह भंते ! लोही-णीहू[8]-थीहू[9]-थिभगा-अस्सकण्णी-सीहकण्णी-सिउंढी-मुसुंढीणं[10] —एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा जहेव आलुवग्गो, नवरं—ओगाहणा तालवग्गसरिसा, सेसं तं चेव ॥

३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. हालिद्दा (अ, म), हलिद्द (ख, ता, स), हालिद्द (व)।
२. कुथु (अ, क, व); कुथु (ता)।
३. कण्हकडउ (अ, स), कण्हकडलु (व)।
४. धुपलइ (अ)।
५. नोरुहा (ख)।
६. सुपासगधा (अ)।
७. अवहरिया (स)।
८. णेहू (व)।
९. वीहू (अ, व); वीहू (स)।
१०. मुसठीण (ता)।

तइओ वग्गो

४. अह भंते ! आय-काय-कुहुण-कुदुरुक्क-उव्वेहलिया[1]-सफा-सज्जा-छत्ता-वंसाणिय-कुराण[2]—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा निरवसेसं जहा आलुवग्गो, नवरं—ओगाहणा तालवग्गसरिसा, सेसं तं चेव ॥

५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

चउत्थो वग्गो

६. अह भंते ! पाढा-मियवालुंकि-मधुररसा-रायवल्लि-पउमा-मोढरि-दंति-चंडीण—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा आलुयवग्गसरिसा, नवरं - ओगाहणा जहा वल्लीणं, सेसं तं चेव ॥

७ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

पंचमो वग्गो

८. अह भंते ! मासपण्णी-मुग्गपण्णी-जीवग-सरिसव-करेणुय-काओलि-खीरकाकोलि-भंगि-णहि- किमिरासि- भद्दमुत्थ- णंगलइ-पयुय[3]-किण्हा[4]-'पउल-हढ'[5]-हरेणुया-लोहीण—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं आलुयवग्गसरिसा। एवं एत्थ पंचसु वि वग्गेसु पन्नासं उद्देसगा भाणियव्वा। सव्वत्थ देवा न उववज्जंति। तिण्णि लेसाओ ॥

९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. उव्वेहलिया तिव्वेहलिया (ता)।

२. कुरवाणं (ता)।

३. पहुय (क); पेसुय (ख); पेयुय (ब, म)।

४. किण्णा (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

५. पउयलघाढे (अ, क); पउयलपाढे (ख, म, स); पउयलवाढे (ब)।

चउवीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१. उववाय २. परीमाणं, ३,४. संघयणुच्चत्तमेव ५ संठाण।
६ लेस्सा ७ दिट्ठी ८. नाणे, अण्णाणे ९. जोग १०. उवओगे ॥१॥
११ सण्णा १२ कसाय १३. इंदिय, १४ समुग्घाया १५ वेदणा य १६ वेदे य।
१७. आउं १८. अज्झवसाणा, १९. अणुबंधो २०- कायसंवेहो ॥२॥
जीवपदे[1] जीवपदे, जीवाण दंडगम्मि उद्देसो।
चउवीसतिमम्मि सए, चउव्वीस होंति उद्देसा ॥३॥

नेरइयादीसु उववायादि-गमग-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—नेरइया णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति? तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति? मणुस्सेहिंतो उववज्जंति? देवेहिंतो उववज्जंति?
गोयमा! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो वि उववज्जंति, नो देवेहिंतो उववज्जंति॥

२. जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति?
गोयमा! नो एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, नो बेंदिय, नो तेइंदिय, नो चउरिंदिय, पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति॥

३. जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति? असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति?
गोयमा! सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति॥

---

१. इयं च गाथा पूर्वोक्तद्वारगाथाद्वयात् क्वचित् पूर्वं दृश्यत इति (वृ)।

४. जइ असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं जलचरेहिंतो उववज्जंति ? थलचरेहिंतो उववज्जंति ? खहचरेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! जलचरेहिंतो उववज्जति, थलचरेहितो वि उववज्जति, खहचरेहिंतो वि उववज्जंति ॥

५. जइ जलचर-थलचर-खहचरेहितो उववज्जति –किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तएहितो उववज्जति ?
गोयमा ! पज्जत्तएहितो उववज्जति, नो अपज्जत्तएहितो उववज्जति ॥

६ पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! कतिसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! एगाए रयणप्पभाए पुढवीए उववज्जेज्जा ॥

७ पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए ण भंते ! जे भविए रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

८. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति ॥

९. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा[1] किंसंघयणी[2] पण्णत्ता ?
गोयमा ! छेवट्टसघयणी[3] पण्णत्ता ॥

१०. तेसि ण भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्स ॥

११. तेसि णं भते ! जीवाण सरीरगा किंसंठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! हुंडसंठिया[4] पण्णत्ता ॥

१२. तेसि ण भते ! जीवाणं कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तिण्णि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा ॥

१३. ते ण भते ! जीवा कि सम्मदिट्ठी ? मिच्छादिट्ठी ? सम्मामिच्छादिट्ठी ?
गोयमा ! नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी ॥

१४. ते ण भंते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी, नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी य, सुयअण्णाणी य ॥

---

१. सरीरा (ता)।
२. सघयणा (ख, ता, स)।
३. छेवट्ठ° (ता)।
४. हुंडसंठिया (स)।

१५. ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
गोयमा ! नो मणजोगी, वइजोगी वि, कायजोगी वि ।।

१६. ते णं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता ?
गोयमा ! सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि ।।

१७. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति सण्णाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि सण्णाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा ।।

१८. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति कसाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा—कोहकसाए, माणकसाए, मायाकसाए, लोभकसाए ।।

१९. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति इंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचेंदिया पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदिए जाव फासिंदिए ।।

२०. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए ।।

२१. ते णं भंते ! जीवा किं सायावेयगा ? असायावेयगा ?
गोयमा ! सायावेयगा वि, असायावेयगा वि ।।

२२. ते णं भंते ! जीवा किं इत्थीवेदगा ? पुरिसवेदगा ? नपुंसगवेदगा ?
गोयमा ! नो इत्थीवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा ।।

२३. तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी ।।

२४. तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ।।

२५. ते णं भंते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! पसत्था वि, अप्पसत्था वि ।।

२६. से णं भंते ! पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी ।।

२७. से णं भंते ! पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए रयणप्पभाए पुढवीए नेरइए, पुणरवि पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडिमब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १।।

२८ पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जहण्णकालट्ठिती-एसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवइकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

२९. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं सच्चेव वत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा जाव[1] अणुबंधो त्ति ।।

३०. से णं भंते ! पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहण्णकालट्ठितीयरयण-प्पभापुढविनेरइए, पुणरवि पज्जत्ताअसण्णि[2] °पंचिंदियतिरिक्खजोणिए त्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं° गतिरागतिं करेज्जा ?

गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा २।।

३१. पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं जे भविए उक्कोसकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

३२. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसं तं चेव जाव[3] अणुबंधो ।।

३३. से णं भंते ! पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए उक्कोसकालट्ठितीयरयण-प्पभापुढविनेरइए, पुणरवि पज्जत्ता[4] °असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए त्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं° करेज्जा ?

गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडिमब्भहियं,[5] एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३।।

३४. जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

---

१. भ० २४।८-२६ ।

२. सं० पा०—पज्जत्ताअसण्णि जाव गतिरागतिं ।

३. भ० २४।८-२६ ।

४. सं० पा०—पज्जत्ता जाव करेज्जा ।

५. पुव्वकोडिमब्भहियं (अ, क, ख, व, म, स) ।

गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइ-भागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

३५. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सेस तं चेव, नवरं[1]—इमाइं तिण्णि नाणत्ताइं—आउं, अज्झवसाणा, अणुबंधो य। जहण्णेणं ठिती अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

३६. तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ॥

३७ ते णं भंते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! नो पसत्था, अप्पसत्था अणुबंधो अंतोमुहुत्तं, सेसं तं चेव ॥

३८ से णं भंते ! जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए रयण-प्पभाए जाव[2] गतिरागति करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं अंतोमुहुत्त-मब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, 'एवतियं कालं'[3] गतिरागतिं करेज्जा ४॥

३९ जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जहण्णकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठिती-एसु उववज्जेज्जा ॥

४०. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सेसं तं चेव, ताइं चेव तिण्णि नाणत्ताइं जाव[4]—

४१. से णं भंते ! जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ता[5] °असण्णिपंचिंदियतिरिक्ख° जोणिए जहण्णकालट्ठितीयरयणप्पभापुढविनेरइए पुणरवि जाव गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण वि दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा,[6] °एवतियं कालं गतिरागतिं° करेज्जा ५॥

४२. जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

---

१. नवरिं (व)।
२. भ० २४।२७।
३. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
४. भ० २४।८-२६, ३५-३७।
५. स० पा०—°पज्जत्ता जाव जोणिए।
६. स० पा०—सेवेज्जा जाव करेज्जा।

गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

४३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेसं तं चेव, ताइं चेव तिण्णि नाणत्ताइ जाव[1]—

४४. से णं भंते ! जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए उक्कोसकालट्ठितीयरयणप्पभाए जाव[2] गतिरागति करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेण दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभाग अतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असखेज्जइभागं अतोमुहुत्तमब्भहिय, एवतियं कालं[3] °सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति° करेज्जा ६॥

४५. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए णं भते ! जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवतियकालट्ठितीएसु[4] उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठितीएसु[5] उववज्जेज्जा ॥

४६. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेस जहेव ओहियगमएणं तहेव अणुगतव्व, नवरं—इमाइ दोण्णि नाणत्ताइ—ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। एवं अणुबधो वि। अवसेसं त चेव[6] ॥

४७. से णं भते ! उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए[7] रयणप्पभाए जाव[8] गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जइभाग पुव्वकोडीए अब्भहियं, एवतियं[9] °काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति° करेज्जा ७॥

४८. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! जे भविए जहण्णकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतियकालट्ठितीएसु[10] उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

---

१. भ० २४।८-२६, ३५-३७।
२. भ० २४ २७।
३. स० पा०—काल जाव करेज्जा।
४. °काल जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
५. असखेज्जइ जाव (अ क, ख, ता, ब, म, स)
६. भ० २४।८-२६।
७. °असण्णि जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
८. भ० २४।२७।
९. सं० पा०—एवतियं जाव करेज्जा।
१०. केवति जाव (अ, क ख, ता, व, म, स)।

४९ ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सेस तं चेव, जहा सत्तमगमए जाव[1]—

५० से ण भते ! उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए[2] जहण्णकालट्ठितीयरयणप्पभाए जाव[3] गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, एवतिय[4] °कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं° करेज्जा ८॥

५१. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए[5] ण भंते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु[6] उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतियकालट्ठितीएसु[7] उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

५२. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? सेसं जहा सत्तमगमए जाव[8] —

५३ से ण भते ! उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए[9] उक्कोसकालट्ठितीयरयणप्पभाए जाव[10] गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पुव्वकोडीए अब्भहियं, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पुव्वकोडीए अब्भहिय, एवतिय काल सेवेज्जा, 'एवतिय काल'[11] गतिरागति करेज्जा ९। एव एते ओहिया तिण्णि गमगा, जहण्णकालट्ठितीएसु तिण्णि गमगा, उक्कोसकालट्ठितीएसु तिण्णि गमगा, सव्वेते नव गमगा भवति ॥

५४ जइ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति —कि सखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो[12] उववज्जति ? असखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति ?

---

१ भ० २४।४६।
२. °ट्ठितीय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
३. भ० २४।२७।
४. स० पा०—एवतिय जाव करेज्जा।
५. °पज्जत्ता जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
६. रयण जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
७. °काल जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
८ भ० २४।४६।
९ °पज्जत्ता जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
१० भ० २४।२७।
११ जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
१२ °तिरिक्ख जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

गोयमा ! संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, नो असंखेज्जवासाउय[1]॰सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो॰ उववज्जंति ॥

५५. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो[2] उववज्जति—किं जलचरेहिंतो उववज्जति—पुच्छा !
गोयमा ! जलचरेहिंतो उववज्जंति, जहा असण्णी जाव[3] पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जति ॥

५६. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! कतिसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! सत्तसु पुढवीसु उववज्जेज्जा, तं जहा—रयणप्पभाए जाव अहेसत्तमाए ॥

५७. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए ण भंते ! जे भविए रयणप्पभपुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

५८. ते णं भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? जहेव[4] असण्णी ॥

५९. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंघयणी पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहसंघयणी पण्णत्ता, तं जहा—वइरोसभनारायसघयणी, उसभनारायसंघयणी जाव[5] छेवट्टसंघयणी[6]। सरीरोगाहणा जहेव असण्णीणं जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं ॥

६०. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहसंठिया पण्णत्ता, तं जहा—समचउरंसा, निग्गोहा जाव[7] हुडा ॥

६१. तेसि णं भंते ! जीवाण कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! छल्लेस्साओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा। दिट्ठी तिविहा वि। तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए। जोगो तिविहो वि। सेसं जहा असण्णीणं जाव[8] अणुबंधो, नवर—पच समुग्घाया आदिल्लगा। वेदो तिविहो वि, अवसेसं तं चेव जाव—

---

१. सं० पा०—असखेज्जवासाउय जाव उववज्जति।
२. ॰पचिंदिय जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
३. भ० २४।४,५।
४. भ० २४।८।
५. ठा० ६।३०।
६. सेवट्ट॰ (अ, ख, व, म); छेवट्ठ॰ (ता)।
७. भ० १४।८१।
८. भ० २४।१६-२६।

६२. से णं भंते ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए[1] रयणप्पभाए जाव गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १॥

६३. पज्जत्तसंखेज्ज[2]•वासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! ° जे भविए जहण्णकाल[3]•ट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए°, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा॥

६४. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं सो चेव पढमो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[4] कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा २॥

६५. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। अवसेसो परिमाणादीओ भवादेसपज्जवसाणो सो चेव पढमगमो नेयव्वो जाव[5] कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३॥

६६ जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभपुढविनेरइएसु[6] उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवति-कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा॥

६७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसो सो चेव गमओ, नवरं—इमाइं अट्ठ नाणत्ताइं—१. सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण धणुपुहत्तं २. लेस्साओ तिण्णि आदिल्लाओ ३. नो

---

१. °वासाउय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
२. सं० पा०—पज्जत्तसंखेज्ज जाव जे।
३. सं० पा०—जहण्णकाल जाव से।
४. भ० २४।५८-६२।
५. भ० २४।५७-६२।
६. °पुढवि जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छदिट्ठी ४. नो नाणी, दो अण्णाणा नियमं ५. समुग्घाया आदिल्ला तिण्णि ६. आउं ७. अज्झवसाणा ८. अणुवधो य जहेव असण्णीण। अवसेसं जहा पढमगमए जाव[1] कालादेसेणं जहण्णेण दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरा-गति करेज्जा ४॥

६८ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

६९. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एव सो चेव चउत्थो गमयो निरवसेसो भाणियव्वो जाव[2] कालादेसेण जहण्णेण दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण चत्तालीस वाससहस्साइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ५॥

७०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण सागरोवमट्ठितीएसु, उक्को-सेण वि सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

७१ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एव सो चेव चउत्थो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[3] कालादेसेण जहण्णेणं सागरोवम अतोमुहुत्त-मब्भहिय, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा ६॥

७२. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए[4] ण भंते ! जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवति-कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

७३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेसो परिमाणादीओ भवादेसपज्जवसाणो सो[5] चेव पढमगमओ नेयव्वो,[6] नवरं–ठिती जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। एव अणुबधो वि, सेस तं चेव। काला-देसेणं जहण्णेण पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा ७॥

---

१. भ० २४।५८-६२।
२. भ० २४।६७।
३. भ० २४।६७।
४. ०वासाउय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
५. एएसिं (अ, क, ख, ता व, स)।
६. भ० २४।५८-६२।

७४. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

७५. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सो चेव सत्तमो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[1] भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ८ ॥

७६. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए[2] णं भंते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठितीएसु[3] °रयणप्पभापुढविनेरइएसु° उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

७७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सो चेव सत्तमगमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[4] भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं पुव्वकोडीए अब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ९ । एवं एते नव गमका । उक्खेव-निक्खेवओ नवसु वि जहेव[5] असण्णीणं ॥

७८. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिसागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

७९. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं जहेव रयणप्पभाए उववज्जंतगस्स लद्धी सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा जाव[6] भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं बारस सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । एवं रयणप्पभपुढविगमसरिसा नव वि गमगा भाणियव्वा, नवरं—सव्वगमएसु वि नेरइयट्ठिती-संवेहेसु सागरोवमा भाणियव्वा, एवं जाव छट्ठपुढवि त्ति, नवरं—नेरइयठिई जा जत्थ पुढवीए जहण्णुक्कोसिया सा तेणं

---

१. भ० २४।७३ ।
२. °पज्जत्त जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
३. सं० पा०—उक्कोसकालट्ठितीएसु जाव उववज्जित्तए ।
४. भ० २४।७३ ।
५. असज्ञि-प्रकरणं ४ सूत्रात् ५३ पर्यन्तं विद्यते ।
६. भ० २४।५८-६२ ।

चेव कमेण चउगुणा कायव्वा। वालुयप्पभाए पुढवीए अट्ठावीस सागरोवमाइं चउगुणिया भवति, पंकप्पभाए चत्तालीसं, धूमप्पभाए अट्ठसट्ठि, तमाए अट्ठासीइं। संघयणाइं—वालुयप्पभाए पंचविहसघयणी, तं जहा—वइरोसहनारायसंघयणी जाव[1] खीलियासंघयणी[2], पंकप्पभाए चउव्विहसघयणी, धूमप्पभाए तिविहसघयणी, तमाए दुविहसंघयणी, त जहा—वइरोसभनारायसघयणी य, उसभनारायसघयणी य, सेस त चेव ॥

८०. पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिए[3] ण भते! जे भविए अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा?

गोयमा! जहण्णेण बावीससागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

८१. ते ण भते! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति? एवं जहेव रयणप्पभाए नव गमका, लद्धी वि सच्चेव, नवर—वइरोसभनारायसंघयणी। इत्थिवेदगा न उववज्जति, सेस त चेव जाव[4] अणुबधो त्ति। सवेहो भवादेसेणं जहण्णेण तिण्णि भवग्गहणाइ, उक्कोसेण सत्त भवग्गहणाइं। कालादेसेण जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठिं सागरोवमाइ चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १ ॥

८२. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव वत्तव्वया जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेणं जहण्णेण कालादेसो वि तहेव जाव[5] चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा २ ॥

८३. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव लद्धी जाव[6] अणुबधो त्ति। भवादेसेण जहण्णेण तिण्णि भवग्गहणाइ, उक्कोसेणं पच भवग्गहणाइ। कालादेसेणं जहण्णेण तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा ३ ॥

८४. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, सच्चेव रयणप्पभपुढविजहण्णकालट्ठितीयवत्तव्वया भाणियव्वा जाव[7] भवादेसो त्ति, नवर—पढमं संघयणं, नो इत्थिवेदगा। भवादेसेण जहण्णेण तिण्णि भवग्गहणाइ, उक्कोसेण सत्त भवग्गह-

१. ठा० ६।३०।
२. कीलिया° (अ)।
३. °वासाउय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
४. भ० २४।५८-६२।
५. भ० २४।६३,६४।
६. भ० २४।६५।
७. भ० २४।६६,६७।

णाइं । कालादेसेण जहण्णेणं बावीस सागरोवमाइ दोहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ४ ।।

८५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एव सो चेव चउत्थो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[1] कालादेसो त्ति ५ ।।

८६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव लद्धी जाव[2] अणुवधो त्ति । भवादेसेण जहण्णेण तिण्णि भवग्गहणाइ, उक्कोसेणं पच भवग्गहणाइं, कालादेसेण जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ दोहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं तिहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ६ ।।

८७. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जहण्णेणं बावीससागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

८८. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेसा सच्चेव सत्तमपुढविपढमगमवत्तव्वया भाणियव्वा जाव[3] भवादेसो त्ति, नवरं—ठिती अणुवधो य जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी, सेस त चेव । कालादेसेण जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठिं सागरोवमाइ चउहिं पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७ ।।

८९. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव लद्धी सवेहो वि तहेव[4] सत्तमगमगसरिसो ८ ।।

९०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, 'एस चेव'[5] लद्धी जाव[6] अणुबधो त्ति । भवादेसेण जहण्णेण तिण्णि भवग्गहणाइ, उक्कोसेण पच भवग्गहणाइ । कालादेसेण जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ दोहि पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ तिहि पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ९ ।।

९१. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जति—कि सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति ? असण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ?

गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो असण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति ।।

९२. जइ सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति—किं सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो

---

१. भ० २४।८४ ।
२. भ० २४।८४ ।
३. भ० २४।८१ ।
४. भ० २४।८७,८८ ।
५. एवं सच्चेव (अ) ।
६. भ० २४।८७,८८ ।

उववज्जंति ? असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो[2] उववज्जंति ?
गोयमा ! संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति, नो असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो[2] उववज्जंति ॥

९३. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो[3] उववज्जति—किं पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति ? अपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति ?
गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति, नो अपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति ॥

९४. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! कतिसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! सत्तसु पुढवीसु उववज्जेज्जा, तं जहा—रयणप्पभाए जाव अहेसत्तमाए ॥

९५. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

९६. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । संघयणा छ, सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलपुहत्तं, उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं । एवं सेसं जहा सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं जाव[4] भवादेसो त्ति, नवरं—चत्तारि नाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए । छ समुग्घाया केवलिवज्जा । ठिती अणुबंधो य जहण्णेणं मासपुहत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी, सेसं तं चेव । कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं मासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १॥

९७. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं मासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा २॥

---

१. असंखेज्ज जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
२. असंखेज्जवासाउय जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
३. संखेज्जवासाउय जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
४. भ० २४।५९-६२ ।

९८. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं मासपुहत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरा-गतिं करेज्जा ३॥

९९. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—इमाइं पंच नाणत्ताइं—१. सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलपुहत्तं, उक्कोसेण वि अंगुलपुहत्तं २ तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए ३ पंच समुग्घाया आदिल्ला ४, ५ ठिती अणुबंधो य जहण्णेणं मासपुहत्तं, उक्कोसेण वि मास-पुहत्तं, सेसं तं चेव जाव[1] भवादेसोत्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं मासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं मासपुहत्तेहिं अब्भहियाइं एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ४॥

१०० सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया चउत्थगमगसरिसा[2], नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं मासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तालीसं वाससहस्साइं चउहिं मासपुहत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ५॥

१०१ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव गमगो, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं मासपुहत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं मासपुहत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गति-रागतिं करेज्जा ६॥

१०२ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, सो चेव पढमगमओ नेयव्वो[3], नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंचधणुसयाइं। ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। एवं अणुबंधो वि। काला-देसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ७॥

१०३ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव सत्तमगमगवत्तव्वया[4], नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ८॥

१०४ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव सत्तमगमगवत्तव्वया, नवरं—

---

१. भ० २४।९५,९६।
२ भ० २४।९९।
३. भ० २४।९५,९६।
४. भ० २४।१०२।

कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं पुव्वकोडीए अब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ६।।

१०५. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते! जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइएसु[1] उववज्जित्तए, से णं भंते! केवतिकालट्ठितीएसु[2] उववज्जेज्जा?

गोयमा! जहण्णेणं सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिसागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा।।

१०६. ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति? सो चेव रयणप्पभपुढविगमओ नेयव्वो, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं रयणिपुहत्तं, उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं। ठिती जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी। एवं अणुबंधो वि। सेसं तं चेव जाव[3] भवादेसो त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं वासपुहत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं बारस सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं एसा ओहिएसु तिसु गमएसु मणूसस्स लद्धी, नाणत्तं-नेरइयट्ठितिं[4] कालादेसेणं संवेहं च जाणेज्जा १-३।।

१०७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव लद्धी, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं रयणिपुहत्तं, उक्कोसेण वि रयणिपुहत्तं। ठिती जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेण वि वासपुहत्तं। एवं अणुबंधो वि। सेसं जहा[5] ओहियाणं। संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो ४-६।।

१०८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ। तस्स वि तिसु वि गमएसु इमं नाणत्तं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंचधणुसयाइं। ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। एवं अणुबंधो वि। सेसं जहा[6] पढमगमए, नवरं—नेरइयठिइं कायसंवेहं च जाणेज्जा ७-९। एवं जाव छट्ठपुढवी, नवरं—तच्चाए आढवेत्ता एक्केक्कं संघयणं परिहायति जहेव तिरिक्खजोणियाणं। कालादेसो वि तहेव, नवरं—मणुस्सट्ठिती जाणियव्वा[7]।।

१०९. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते! जे भविए अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा?

---

१. नेरइएसु जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
२. केवति जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
३. भ० २४।९६।
४. ०ट्ठिती (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
५. भ० २४।१०५,१०६।
६. भ० २४।१०५,१०६।
७. भाणियव्वा (क, म)।

गोयमा ! जहण्णेणं बावीससागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण तेत्तीससागरोवम-ट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

११०. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेसो सो चेव सक्क-रप्पभापुढविगमग्रो नेयव्वो, नवर—पढमं सघयणं, इत्थिवेदगा न उववज्जंति, सेसं तं चेव जाव[1] अणुबधो त्ति । भवादेसेण दोभवग्गहणाइ । कालादेसेणं जहण्णेणं बावीस सागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण तेत्तीस सागरो-वमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरा-गति करेज्जा १॥

१११ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—नेरइयट्ठिर्ति सवेह च जाणेज्जा २॥

११२. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—सवेह च जाणेज्जा ३॥

११३ सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीग्रो जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव वत्तव्वया, नवर—सरीरोगाहणा जहण्णेणं रयणिपुहत्तं, उक्कोसेण वि रयणि-पुहत्त । ठिती जहण्णेण वासपुहत्त, उक्कोसेण वि वासपुहत्त । एव अणुबधो वि । संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो ४-६॥

११४. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीग्रो जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव वत्तव्वया, नवर—सरीरोगाहणा जहण्णेण पचधणुसयाइं, उक्कोसेण वि पचधणु-सयाइ । ठिती जहण्णंण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । एवं अणुबधो वि । नवसु वि एतेसु गमएसु नेरइयट्ठिर्ति संवेह च जाणेज्जा । सव्वत्थ भवग्गहणाइ दोण्णि जाव नवमगमए । कालादेसेण जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ उक्कोसेण वि तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, एव-तिय काल सेवेज्जा एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७-९॥

११५ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[2] विहरइ ॥

वीओ उद्देसो

११६ रायगिहे जाव एवं वयासी—असुरकुमारा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जति—कि नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जंति ?

---

१. भ० २४।१०६ । २. भ० १।५१ ।

गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, मणुस्सेहिंतो उववज्जति, नो देवेहिंतो उववज्जंति। एवं जहेव नेरइयउद्देसए जाव[1]—

११७. पज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

११८. ते ण भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? एव रयणप्पभागमगसरिसा नव वि गमा भाणियव्वा[2], नवरं—जाहे अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ भवति ताहे अज्झवसाणा पसत्था, नो अप्पसत्था तिसु वि गमएसु। अवसेसं तं चेव १-९॥

११९. जइ सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—कि सखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो[3] उववज्जति ? असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहितो[4] उववज्जति ?
गोयमा ! सखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति, असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जति ॥

१२०. असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

१२१. ते ण भंते ! जीवा एगसमएणं—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा उववज्जंति। वइरोसभनारायसघयणी। ओगाहणा जहण्णेणं धणुपुहत्तं, उक्कोसेण छ गाउयाइं। समचउरंससंठिया[5] पण्णत्ता। चत्तारि लेस्साओ आदिल्लाओ। नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। नो नाणी, अण्णाणी, नियम दुअण्णाणी—मतिअण्णाणी सुयअण्णाणी य। जोगो तिविहो वि। उवओगो दुविहो वि। चत्तारि सण्णाओ। चत्तारि कसाया। पंच इंदिया। तिण्णि समुग्घाया आदिल्ला[6]। समोहया वि मरति, असमोहया वि मरति। वेदणा दुविहा वि—सायावेदगा, असायावेदगा। वेदो दुविहो वि—इत्थिवेदगा वि पुरिसवेदगा

---

१. भ० २४।२-६।
२. भ० २४।८-५३।
३. °सण्णि जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
४. °वासाउय जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)
५. समचउरंससठाणसठिया (स)।
६ आदिल्लगा (अ, क, व, म, स)।

वि, नो नपुसगवेदगा। ठिती जहण्णेणं सातिरेगा पुव्वकोडी, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ। अज्भवसाणा पसत्था वि अप्पसत्था वि। अणुबधो जहेव ठिती। कायसवेहो भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण सातिरेगा पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्कोसेण छप्पलिओवमाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १॥

१२२ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो--एस चेव वत्तव्वया, नवर—असुरकुमारट्ठिति सवेह च जाणेज्जा २॥

१२३ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा—एस चेव वत्तव्वया, नवर—ठिती से जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइ। एवं अणुबधो वि। कालादेसेण जहण्णेण छप्पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा, सेस त चेव ३॥

१२४. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण सातिरेगपुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा॥

१२५. ते ण भते! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति? अवसेस त चेव जाव भवादेसो त्ति, नवरं—ओगाहणा जहण्णेण धणुपुहत्त, उक्कोसेणं सातिरेग धणुसहस्स। ठिती जहण्णेण सातिरेगा पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि सातिरेगा पुव्वकोडी। एव अणुबधो वि। कालादेसेण जहण्णेण सातिरेगा पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्कोसेण सातिरेगाओ दो पुव्वकोडीओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ४॥

१२६ सो चेव[1] जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—असुरकुमारट्ठिइ सवेह च जाणेज्जा ५॥

१२७. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं सातिरेगपुव्वकोडिआउएसु, उक्कोसण वि सातिरेगपुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा, सेस त चेव, नवर—कालादेसेण जहण्णेण सातिरेगाओ दो पुव्वकोडीओ, उक्कोसेण वि सातिरेगाओ दो पुव्वकोडीओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ६॥

१२८ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, सो चेव पढमगमगो भाणियव्वो,[2] नवर—ठिती जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइ। एव अणुबधो वि। कालादेसेण जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइं दसहि वाससहस्सेहि अब्भहियाइं, उक्कोसेण छ पलिओवमाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७॥

---

१. चेव अप्पणा (अ, क, ख, ता, ब, म)। २. भ० २४।१२०,१२१।

१२६. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—असुरकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा ८ ॥

१३०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिपलिओवमाइं, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं छप्पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ९ ॥

१३१. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं जलचरेहिंतो उववज्जंति? एवं जाव[1]—

१३२. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा?
गोयमा! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सातिरेगसागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

१३३. ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति? एवं एतेसिं रयणप्पभपुढविगमगसरिसा नव गमगा नेयव्वा,[2] नवरं जाहे अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ भवइ ताहे तिसु वि गमएसु, इमं नाणत्तं—चत्तारि लेस्साओ, अज्झवसाणा पसत्था, नो अप्पसत्था। सेसं तं चेव। संवेहो सातिरेगेण सागरोवमेण कायव्वो १-९ ॥

१३४. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति? असण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति?
गोयमा! सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो असण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ॥

१३५. जइ सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति? असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति?
गोयमा! संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो[3] उववज्जंति, 'असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो वि'[4] उववज्जंति ॥

१३६. असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा?
गोयमा! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। एवं असंखेज्जवासाउयतिरिक्खजोणियसरिसा आदिल्ला तिण्णि गमगा नेयव्वा, नवरं—सरीरोगाहणा पढमबितिएसु गमएसु जहण्णेणं सातिरेगाइं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं, सेसं तं चेव। तइयगमे ओगा-

---

१. भ० २४।४,५।
२. भ० २४।५८-७७।
३. °वासाउय जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)
४. °वासाउय जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

हणा जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं। सेसं जहेव तिरिक्खजोणियाणं १-३ ॥

१३७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि जहण्णकालट्ठितीयतिरिक्खजोणियसरिसा तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवरं—सरीरोगाहणा तिसु वि गमएसु जहण्णेणं सातिरेगाइं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेण वि सातिरेगाइं पंचधणुसयाइं। सेसं त चेव ४-६ ॥

१३८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि ते चेव पच्छिल्ला[1] तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवरं—सरीरोगाहणा तिसु वि गमएसु जहण्णेण तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं। अवसेसं त चेव ७-९ ॥

१३९ जइ सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति ? अपज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति ?
गोयमा! पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति, नो अपज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति ॥

१४०. पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण सातिरेगसागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

१४१. ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं जहेव एतेसिं रयणप्पभाए उववज्जमाणाणं नव गमगा तहेव इह वि नव गमगा भाणियव्वा[2], नवरं—संवेहो सातिरेगेण सागरोवमेण कायव्वो। सेसं त चेव १-९ ॥

१४२. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

१४३ रायगिहे जाव एवं वयासी—नागकुमाराणं भंते! कओहिंतो उववज्जति—किं नेरइएहिंतो उववज्जति ? तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जति ?
गोयमा! नो नेरइएहिंतो उववज्जति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, मणुस्सेहिंतो उववज्जति, नो देवेहिंतो उववज्जति ॥

---

१. पच्छिल्लगा (क, ख, ता, स)। २. भ० २४।९६-१०४।

१४४. जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो०? एवं जहा असुरकुमाराणं वत्तव्वया तहा एतेसिं पि जाव[1] असण्णित्ति १-९ ।।

१४५ जइ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—किं संखेज्जवासाउय०? असखेज्जवासाउय०?
गोयमा ! सखेज्जवासाउय, असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति ।।

१४६ असखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए ण भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण देसूणदुपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

१४७. ते ण भते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? अवसेसो सो चेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स गमगो भाणियव्वो जाव[2] भवादेसो त्ति । कालादेसेण जहण्णेण सातिरेगा पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्कोसेणं देसूणाइ पंच पलिओवमाइ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १ ।।

१४८. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—नागकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा २।।

१४९. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, तस्स वि एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठिती जहण्णेण देसूणाइ दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइ । सेसं तं चेव जाव[3] भवादेसो त्ति । कालादेसेण जहण्णेणं देसूणाइं चत्तारि पलिओवमाइं, उक्कोसेण देसूणाइं पच पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा ३।।

१५०. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स जहण्णकालट्ठितियस्स तहेव निरवसेसं ४-६ ।।

१५१. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तहेव तिण्णि गमगा जहा असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स, नवरं—नागकुमारट्ठिति सवेह च जाणेज्जा । सेसं त चेव ७-९ ।।

१५२. जइ सखेज्जवासाउयसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं पज्जत्तसंखेज्जवासाउय०? अपज्जत्तसंखेज्जवासाउय०?
गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउय, नो अपज्जत्तसंखेज्जवासाउय ।।

१५३. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए ण भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

---

१. भ० २४।११६-११८ ।
२. भ० २४।१२१ ।
३. भ० २४।१२३ ।

गोयमा ! जहण्णेण दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं। एवं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स वत्तव्वया तहेव इह वि नवसु वि गमएसु, नवरं—नागकुमारट्ठिति संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव १-९ ॥

१५४. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं सण्णिमणुस्सेहिंतो॰? असण्णिमणुस्सेहिंतो॰? गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहिंतो, नो असण्णिमणुस्सेहिंतो, जहा असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स जाव[1]—

१५५ असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं। एवं जहेव[2] असंखेज्जवासाउयाणं तिरिक्खजोणियाणं नागकुमारेसु आदिल्ला तिण्णि गमगा तहेव इमस्स वि, नवरं—पढमबितिएसु गमएसु सरीरोगाहणा जहण्णेणं सातिरेगाइं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं। तइयगमे ओगाहणा जहण्णेणं देसूणाइं दो गाउयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं। सेसं तं चेव १-३ ॥

१५६ सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स तिसु वि गमएसु जहा तस्स चेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स तहेव निरवसेसं ४-६ ॥

१५७ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, तस्स तिसु वि गमएसु जहा तस्स चेव उक्कोसकालट्ठितियस्स असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स, नवरं—नागकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव ७-९ ॥

१५८. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं पज्जत्तसंखेज्ज॰ ? अपज्जत्तसंखेज्ज॰ ?

गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्ज, नो अपज्जत्तसंखेज्ज ॥

१५९ पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं देसूणदोपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। एवं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स सच्चेव लद्धी निरवसेसा नवसु गमएसु, नवरं—नागकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा १-९ ॥

१६०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. भ० २४।१३५।
२. भ० २४।१४७-१४९।

४-११ उद्देसा

१६१. अवसेसा सुवण्णकुमारादी जाव थणियकुमारा एए अट्ठ वि उद्देसगा जहेव नागकुमारा तहेव निरवसेसा भाणियव्वा ॥

१६२. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

दुवालसमो उद्देसो

१६३. पुढविक्काइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जति—किं नेरइएहिंतो उववज्जति ? तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जति ?
गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहिंतो[1] उववज्जंति ॥

१६४. जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति—किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो एवं जहा वक्कंतीए उववाओ जाव[2]—

१६५. जइ बायरपुढविक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं पज्जत्ता-बादर जाव उववज्जंति, अपज्जत्ताबादरपुढवि० ?
गोयमा ! पज्जत्ताबादरपुढवि, अपज्जत्ताबादरपुढवि जाव उववज्जंति ॥

१६६. पुढविक्काइए णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

१६७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं—पुच्छा ।
गोयमा ! अणुसमयं अविरहिया असंखेज्जा उववज्जति । छेवट्टसंघयणी[3] । सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभाग । मसूराचंदासंठिया । चत्तारि लेस्साओ । णो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । नो नाणी, अण्णाणी, दो अण्णाणा नियमं । नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी । उवओगो दुविहो वि । चत्तारि सण्णाओ । चत्तारि कसाया । एगे फासिंदिए पण्णत्ते । तिण्णि समुग्घाया । वेदणा दुविहा । नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा । ठिती जहण्णेणं

---

१. देवेहिंतो वि (अ) ।
२. प० ६ ।
३. सेवट्ट० (अ, म); सेवट्ठ० (क, ख); छेवट्ठ० (ता) ।

अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं। अज्झवसाणा पसत्था वि[1], अपसत्था वि। अणुबधो जहा ठिती॥

१६८. से ण भंते ! पुढविक्काइए पुणरवि पुढविकाइएत्ति केवतिय काल सेवेज्जा? केवतिय काल गतिरागति करेज्जा?
गोयमा! भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेणं असखेज्जाइ भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेण असखेज्ज काल एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १॥

१६९ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, एव चेव वत्तव्वया निरवसेसा २॥

१७० सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु। सेस त चेव जाव अणुबधो त्ति, नवर—जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जेज्जा। भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण 'छावत्तर वाससयसहस्स'[2], एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ३॥

१७१ सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, सो चेव पढमिल्लओ गमओ भाणियव्वो[3] नवर—लेस्साओ तिण्णि। ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त। अप्पसत्था अज्झवसाणा। अणुबधो जहा ठिती। सेस त चेव ४॥

१७२ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो सच्चेव चउत्थगमगवत्तव्वया भाणियव्वा[4] ५॥

१७३. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा जाव भवादेसेण जहण्णेणं दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेणं बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीइं वाससहस्साइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा ६॥

१७४. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, एव तइयगमगसरिसो निरवसेसो भाणियव्वो[5], नवर—अप्पणा से ठिई जहण्णेण बावीसं वाससहस्साइं, उक्कोसेण वि बावीसं वाससहस्साइं ७॥

---

१. × (ता)।
२. छावत्तरिं वाससहस्सुत्तर सयसहस्स (स)।
३. भ० २४।१६६,१६७।
४. भ० २४।१७१।
५. भ० २४।१७०।

१७५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्त। एवं जहा सत्तमगमगो जाव¹ भवादेसो। कालादेसेण जहण्णेणं बावीस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीई वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा ८॥

१७६ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु, एस चेव सत्तमगमगवत्तव्वया जाणियव्वा² जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं चोयालीसं वाससहस्साइं, उक्कोसेण छावत्तरं वाससयसहस्सं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा ९॥

१७७. जइ आउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति—किं सुहुमआउ० ? बादरआउ० ? एवं चउक्कओ भेदो भाणियव्वो जहा पुढविक्काइयाणं॥

१७८ आउक्काइए णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवइकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु उक्कोसेण बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। एवं पुढविक्काइयगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा, नवरं—थिवुगाबिंदुसंठिए। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण सत्त वाससहस्साइं। एवं अणुबंधो वि। एवं तिसु वि गमएसु। ठिती संवेहो तइयछट्ठसत्तमट्ठमनवमेसु गमएसु—भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइं, सेसेसु चउसु गमएसु जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं। ततियगमए कालादेसेणं जहण्णेण बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं सोलसुत्तरं वाससयसहस्सं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा। छट्ठे गमए कालादेसेण जहण्णेण बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण अट्ठासीतिं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा। सत्तमे गमए कालादेसेण जहण्णेण सत्त वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण सोलसुत्तरं वाससयसहस्सं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा। अट्ठमे गमए कालादेसेणं जहण्णेणं सत्त वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण अट्ठावीसं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा। नवमे गमए भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइं,

१. भ० २४।१७४। २. भ० २४।१७४।

कालादेसेणं जहण्णेणं एकूणतीसं वाससहस्साइं, उक्कोसेणं सोलसुत्तरं वाससय-सहस्स, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा। एवं नवसु वि गमएसु आउक्काइयठिई जाणियव्वा १-९॥

१७९. जइ तेउक्काइएहिंतो उववज्जति० ? तेउक्काइयाण वि एस चेव वत्तव्वया, नवर—नवसु वि गमएसु तिण्णि लेस्साओ। तेउक्काइया णं सुईकलावसठिया। ठिई जाणियव्वा। तइयगमए कालादेसेणं जहण्णेण बावीस वाससहस्साइं अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीतिं वाससहस्साइं बारसहि राइदिएहिं अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एवं सवेहो उवजुजिऊण भाणियव्वो १-९॥

१८०. जइ वाउक्काइएहिंतो०? वाउक्काइयाण वि एव चेव नव गमगा जहेव तेउक्का-इयाण, नवरं—पडागासठिया पण्णत्ता। सवेहो वाससहस्सेहिं कायव्वो। तइय-गमए कालादेसेण जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्को-सेणं एग वाससयसहस्स। एव सवेहो उवजुजिऊण[1] भाणियव्वो १-९॥

१८१. जइ वणस्सइकाइएहिंतो उववज्जति० ? वणस्सइकाइयाण आउकाइयगमग-सरिसा नव गमगा भाणियव्वा, नवर - नाणासठिया। सरीरोगाहणा पढमएसु पच्छिल्लएसु य तिसु गमएसु जहण्णेणं अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण सातिरेग जोयणसहस्सं, मज्झिल्लएसु तिसु तहेव जहा पुढविकाइयाणं। सवेहो ठिती य जाणियव्वा। तइयगमे कालादेसेणं जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठावीसुत्तरं वाससयसहस्स, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव सवेहो उवजुंजिऊण भाणि-यव्वो १-९॥

१८२. जइ बेदिएहिंतो उववज्जति—किं पज्जत्ताबेदिएहिंतो उववज्जति ? अपज्जत्ता-बेदिएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! पज्जत्ताबेदिएहिंतो उववज्जति, अपज्जत्ताबेदिएहिंतो वि उव-वज्जति ॥

१८३. बेदिए ण भते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवतिकाल-ट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु ॥

१८४. ते ण भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असं-खेज्जा वा उववज्जंति। छेवट्टसंघयणी। ओगाहणा जहण्णेणं अगुलस्स असंखेज्ज-इभाग, उक्कोसेणं बारस जोयणाइं। हुंडसठिया। तिण्णि लेसाओ। सम्मदिट्ठी

---

१. उववज्जिऊण (अ, ता, म), उवजुञ्जिऊण (क); उवउज्जित्तण (व)।

वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। दो नाणा, दो अण्णाणा नियम। नो मणजोगी, वइजोगी कायजोगी वि। उवओगो दुविहो वि। चत्तारि सण्णाओ। चत्तारि कसाया। दो इंदिया पण्णत्ता, त जहा—जिब्भिदिए य फासिंदिए य। तिण्णि समुग्घाया। सेस जहा पुढविक्काइयाण, नवर—ठिती जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण बारस सवच्छराइ। एव अणुबधो वि। सेस त चेव। भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण सखेज्जाइ भवग्गहणाइ। कालादेसेणं जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण सखेज्जं काल, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १॥

१८५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया सव्वा २॥

१८६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो एस चेव बेंदियस्स लद्धी, नवरं—भवादेसेणं जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइ अडयालीसाए सवच्छरेहि अब्भहियाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ३॥

१८७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि एस चेव वत्तव्वया तिसु वि गमएसु, नवरं—इमाइ सत्त नाणत्ताइ—१. सरीरोगाहणा जहा पुढविकाइयाणं २. नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी ३. दो अण्णाणा नियमं ४. नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी ५. ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वि अतोमुहुत्त ६. अज्झवसाणा अपसत्था ७. अणुबधो जहा ठिती। सवेहो तहेव-आदिल्लेसु दोसु गमएसु, तइयगमए भवादेसो तहेव अट्ठ भवग्गहणाइ। कालादेसेणं जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा ४-६॥

१८८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, एयस्स वि ओहियगमगसरिसा तिण्णि गमगा भाणियव्वा,[1] नवर—तिसु वि गमएसु ठिती जहण्णेण बारस सवच्छराइ, उक्कोसेण वि बारस सवच्छराइ। एव अणुबधो वि। भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ। कालादेसेण उवजुंजिऊण भाणियव्व जाव नवमे गमए जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ बारसहि सवच्छरेहि अब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीति वाससहस्साइं अडयालीसाए सवच्छरेहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा ७-९॥

१८९. जइ तेइंदिएहितो उववज्जंति० ? एवं चेव नव गमगा भाणियव्वा, नवरं—आदिल्लेसु तिसु वि गमएसु सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभागं,

---

१. भ० २४।१८४-१८६।

उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं[1]। तिण्णि इंदियाइं। ठिती जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण एगूणपन्नं राइंदियाइं। तइयगमए कालादेसेण जहण्णेण बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीतिं वाससहस्साइं छण्णउयराइंदियसयमब्भहियाइं,[2] एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। मज्झिमा तिण्णि गमगा तहेव, पच्छिमा वि तिण्णि गमगा तहेव, नवरं—ठिती जहण्णेणं एगूणपन्नं राइंदियाइं; उक्कोसेण वि एगूणपन्नं राइंदियाइं। सवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो १-९॥

१९०. जइ चउरिंदिएहिंतो उववज्जंति०? एवं चेव चउरिंदियाण वि नव गमगा भाणियव्वा, नवरं—एतेसु चेव ठाणेसु नाणत्ता जाणियव्वा। सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण य छम्मासा। एवं अणुबंधो वि। चत्तारि इंदियाइं। सेसं तहेव जाव नवमगमए—कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं छहिं मासेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीतिं वाससहस्साइं चउवीसाए मासेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १-९॥

१९१. जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति? असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति? गोयमा! सण्णिपंचिंदिय, असण्णिपंचिंदिय॥

१९२. जइ असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं जलचरेहिंतो उववज्जंति जाव[3] किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति? अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति?

गोयमा! पज्जत्तएहिंतो वि उववज्जंति, अपज्जत्तएहिंतो वि उववज्जंति॥

१९३. असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा?

गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु॥

१९४. ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति? एवं जहेव बेइंदियस्स ओहियगमए लद्धी तहेव,[4] नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं। पंच इंदिया। ठिती अणुबंधो य जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी। सेसं तं चेव। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतीए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ,

---

१. कोसा (ता)।
२. छण्णउइ° (स)।
३. भ० २४।४,५।
४. भ० २४।१८४।

एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा। नवसु वि गमएसु कायसंवेहो—भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं उवजुंजिऊण भाणियव्वं, नवरं—मज्झिमएसु तिसु गमएसु जहेव[1] बेइंदियस्स, पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु जहा एतस्स चेव पढमगमएसु, नवरं—ठिती अणुबंधो य जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेसं तं चेव जाव नवमगमएसु—जहण्णेणं पुव्वकोडी बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतीए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १-९॥

१९५. जइ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं संखेज्जवासाउय० ? असंखेज्जवासाउय० ?

गोयमा ! संखेज्जवासाउय, नो असंखेज्जवासाउय।

१९६. जइ संखेज्जवासाउय० किं जलयरेहिंतो० ? सेसं जहा असण्णीणं जाव[2]—

१९७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं जहा[3] रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स सण्णिस्स तहेव इह वि, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं। सेसं तहेव जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतीए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं संवेहो नवसु वि गमएसु जहा असण्णीणं तहेव निरवसेसो[4]। लद्धी से आदिल्लएसु तिसु वि गमएसु एस चेव, मज्झिल्लएसु तिसु वि गमएसु एस चेव, नवरं—इमाइं नव नाणत्ताइं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं। तिण्णि लेसाओ। मिच्छादिट्ठी। दो अण्णाणा। कायजोगी। तिण्णि समुग्घाया। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। अप्पसत्था अज्झवसाणा। अणुबंधो जहा ठिती। सेसं तं चेव। पच्छिल्लएसु तिसु वि गमएसु जहेव पढमगमए, नवरं—ठिती अणुबंधो य—जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेसं तं चेव १-९॥

१९८. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? असण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ?

गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, असण्णिमणुस्सेहिंतो वि उववज्जंति॥

१९९. असण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? एवं जहा असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणि-

---

१. भ० २४।१८७।
२. भ० २४।१९२,१९३।
३. भ० २४।५८-६२।
४. निरवसेसं (ख, ता, ब)।

यस्स जहण्णकालट्ठितीयस्स तिण्णि गमगा तहा एयस्स वि ओहिया तिण्णि गमगा भाणियव्वा तहेव निरवसेस १-३। सेसा छ न भण्णति ।।

२००. जइ सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति—कि संखेज्जवासाउय० ? असखेज्जवासाउय० ?
गोयमा ! सखेज्जवासाउय, नो असखेज्जवासाउय ।।

२०१ जइ सखेज्जवासाउय० किं पज्जत्तासंखेज्जवासाउय० ? अपज्जत्तासखेज्जवासाउय० ?
गोयमा ! पज्जत्तासखेज्जवासाउय, अपज्जत्तासंखेज्जवासाउय जाव उववज्जति ।।

२०२. सण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जति ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु ।।

२०३ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एवं जहेव रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स तहेव तिसु वि गमएसु लद्धी, नवर—ओगाहणा जहण्णेणं अगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेण पचधणुसयाइं। ठिती जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी। एव अणुबधो। सवेहो नवसु गमएसु जहेव सण्णिपंचिंदियस्स। मज्झिल्लएसु तिसु गमएसु लद्धी जहेव सण्णिपचिंदियस्स मज्झिल्लएसु तिसु। सेस त चेव निरवसेसं। पच्छिल्ला तिण्णि गमगा जहा एयस्स चेव ओहिया गमगा, नवर— ओगाहणा जहण्णेण पच धणुसयाइ, उक्कोसेण वि पंच धणुसयाइ। ठिती अणुबधो य जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेस तहेव[1] १-९।।

२०४. जइ देवेहितो उववज्जति—कि भवणवासिदेवेहितो उववज्जति ? वाणमंतरदेवेहितो, जोइसियदेवेहितो, वेमाणियदेवेहितो उववज्जति ?
गोयमा ! भवणवासिदेवेहितो वि उववज्जति जाव वेमाणियदेवेहितो वि उववज्जति ।।

२०५. जइ भवणवासिदेवेहितो उववज्जति—कि असुरकुमारभवणवासिदेवेहितो उववज्जति जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहितो उववज्जति ?
गोयमा ! असुरकुमारभवणवासिदेवेहितो उववज्जंति जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहितो उववज्जति ।।

२०६. असुरकुमारेण भते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

---

१. तहेव नवर पच्छिल्लएसु गमएसु संखेज्जा उववज्जति नो असखेज्जा उववज्जंति (अ, ख, ता, ब, म)।

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु ॥
२०७. ते णं भंते ! जीवा [1]॰एगसमएणं केवतिया उववज्जति ॰?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जति ॥

२०८. तेसि णं भते ! जीवाण सरीरगा किसघयणी पण्णत्ता ?
गोयमा ! छण्ह संघयणाण असंघयणी जाव[2] परिणमति ॥

२०९. तेसि णं भते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा ?
गोयमा ! दुविहा सरीरोगाहणा[3] पण्णत्ता, त जहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य। तत्थ ण जा सा भवधारणिज्जा सा जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सत्त रयणीओ। तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेण अगुलस्स सखेज्जइभागं, उक्कोसेण जोयणसयसहस्सं ॥

२१०. तेसि ण भते ! जीवाणं सरीरगा किसठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य। तत्थ ण जे ते भवधारणिज्जा ते समचउरससंठिया पण्णत्ता। तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया ते नाणासठिया[4] पण्णत्ता। लेस्साओ चत्तारि। दिट्ठी तिविहा वि। तिण्णि नाणा नियम, तिण्णि अण्णाणा भयणाए। जोगो तिविहो वि। उवओगो दुविहो वि। चत्तारि सण्णाओ। चत्तारि कसाया। पंच इंदिया। पच समुग्घाया। वेयणा दुविहा वि। इत्थिवेदगा वि पुरिसवेदगा वि, नो नपुसगवेदगा। ठिती जहण्णेण दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं सातिरेग सागरोवमं। अज्झवसाणा असखेज्जा पसत्था वि अप्पसत्था वि। अणुबधो जहा ठिती। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइ, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण सातिरेग सागरोवम बावीसाए वाससहस्सेहि अब्भहियं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा। एवं नव वि गमा नेयव्वा, नवर—मज्झिल्लएसु पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु असुरकुमाराणं ठिइविसेसो जाणियव्वो, सेसा ओहिया चेव लद्धी कायसवेह च जाणेज्जा। सव्वत्थ दो भवग्गहणाइ जाव नवमगमए कालादेसेण जहण्णेण सातिरेग सागरोवम बावीसाए वाससहस्सेहि अब्भहियं, उक्कोसेण वि सातिरेगं सागरोवमं बावीसाए वाससहस्सेहि अब्भहिय, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा १-९ ॥

---

१ स० पा०—पुच्छा।
२. भ० १।२४५, २२४।
३. × (क, ख, ता, म, स)।
४. नाणासठाणसठिया (स)।

२११. णागकुमारेणं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु० ? एस चेव वत्तव्वया जाव[1] भवादेसो त्ति, नवरं—ठिती जहण्णेण दसवाससहस्साइं, उक्कोसेण देसूणाइं दो पलिओवमाइं। एवं अणुबंधो वि। कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण देसूणाइं दो पलिओवमाइं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाइं। एवं नव वि गमगा असुरकुमारगमगसरिसा, नवरं—ठितिं कालादेसं च जाणेज्जा १-९। एवं जाव थणियकुमाराणं॥

२१२. जइ वाणमंतरेहिंतो उववज्जंति—किं पिसायवाणमंतरदेवेहिंतो जाव गंधव्ववाणमंतरदेवेहिंतो ?

गोयमा ! पिसायवाणमंतरदेवेहिंतो जाव गंधव्ववाणमंतरदेवेहिंतो॥

२१३. वाणमंतरदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए० ? एतेसिं पि असुरकुमारगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा[2], नवरं—ठितिं कालादेसं च जाणेज्जा। ठिती जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेण पलिओवमं। सेसं तहेव १-९॥

२१४. जइ जोइसियदेवेहिंतो उववज्जंति—किं चंदविमाणजोइसियदेवेहिंतो उववज्जंति जाव ताराविमाणजोइसियदेवेहिंतो[3]० ?

गोयमा ! चंदविमाण जाव ताराविमाण॥

२१५. जोइसियदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए० ? लद्धी जहा असुरकुमाराणं, नवरं—एगा तेउलेस्सा पण्णत्ता। तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा नियमं। ठिती जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेण पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं। एवं अणुबंधो वि। कालादेसेणं जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेण पलिओवमं वाससयसहस्सेणं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठितिं कालादेसं च जाणेज्जा १-९॥

२१६. जइ वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति—किं कप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो० ? कप्पातीतावेमाणियदेवेहिंतो० ?

गोयमा ! कप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो, नो कप्पातीतावेमाणियदेवेहिंतो॥

२१७. जइ कप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति—किं सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो जाव अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो० ?

गोयमा ! सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो ईसाणकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो, नो सणंकुमार जाव नो अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो॥

---

१. भ० २४।२०६-२१०।
२. भ० २४।२०६-२१०।
३. तारविमाण० (अ, क, ख, ता, ब, म)।

२१८. सोहम्मदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? एवं जहा जोइसियस्स गमगो, नवरं—ठिती अणुबंधो य जहण्णेण पलिओवमं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठितिं कालादेसं च जाणेज्जा ॥

२१९. ईसाणदेवे णं भंते ! जे भविए० ? एवं ईसाणदेवेण वि नव गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठिती अणुबंधो जहण्णेणं सातिरेगं पलिओवमं, उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं। सेसं तं चेव १-९ ॥

२२०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[1] विहरइ ॥

तेरसमो उद्देसो

२२१. आउक्काइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? एवं जहेव पुढविक्काइय-उद्देसए जाव[2]—

२२२. पुढविक्काइए णं भंते ! जे भविए आउक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सत्तवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। एवं पुढविक्काइयउद्देसगसरिसो भाणियव्वो[3], नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तहेव ॥

२२३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१. भ० १।५१।
२. भ० २४।१६३-१६५।
३. भ० २४।१६७-२१९।

चोद्दसमो उद्देसो

२२४. तेउक्काइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जति० ? एवं[1] पुढविक्काइयउद्देसगसरिसो[2] उद्देसो भाणियव्वो, नवर—ठिति संवेहं च जाणेज्जा। देवेहिंतो न उववज्जंति। सेसं त चेव ॥

२२५ सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति जाव[3] विहरइ ॥

पण्णरसमो उद्देसो

२२६. वाउक्काइया ण भंते ! कओहिंतो उववज्जति० ? एवं जहेव तेउक्काइयउद्देसओ तहेव, नवरं—ठिति संवेहं च जाणेज्जा ॥

२२७. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

सोलसमो उद्देसो

२२८. वणस्सइकाइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? एवं पुढविक्काइयसरिसो उद्देसो, नवर—जाहे वणस्सइकाइओ वणस्सइकाइएसु उववज्जति ताहे पढमबितिय-चउत्थ-पचमेसु गमएसु परिमाण अणुसमय अविरहियं अणता उववज्जंति। भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अणताइं भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेण दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अणंत कालं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। सेसा पंच गमा अट्ठभवग्गहणिया तहेव, नवर—ठिति संवेहं च जाणेज्जा ॥

२२९. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

---

१. एवं जहेव (अ, म)।

२. उद्देसासरिसो (ता, व, स)।

३. भ० १।५१।

सत्तरसमो उद्देसो

२३०. बेदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? जाव[1]—

२३१. पुढविक्काइए णं भंते ! जे भविए बेंदिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवति-कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? सच्चेव पुढविकाइयस्स लद्धी जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं सखेज्जाइ भवग्गहणाइं—एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा। एवं तेसु चेव चउसु गमएसु संवेहो, सेसेसु पचसु तहेव अट्ठ भवा। एव जाव चउरिंदिएण समं चउसु संखेज्जा भवा, पंचसु अट्ठ भवा। पचिंदियतिरिक्खजोणियमणुस्सेसु सम तहेव अट्ठ भवा। देवेसु न[2] उववज्जति। ठिति संवेहं च जाणेज्जा॥

२३२. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति॥

अट्ठारसमो उद्देसो

२३३. तेइंदिया णं भते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? एवं तेइंदियाणं जहेव बेइंदियाणं उद्देसो, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। तेउक्काइएसु सम ततियगमे उक्को-सेणं अट्ठुत्तराइं बेराइंदियसयाइं, बेइंदिएहिं सम ततियगमे उक्कोसेण अडया-लीस सवच्छराइं छन्नउयराइंदियसतमब्भहियाइं, तेइंदिएहिं सम ततियगमे उक्कोसेण बाणउयाइं तिण्णि राइंदियसयाइं। एव सव्वत्थ जाणेज्जा जाव सण्णिमणुस्स त्ति॥

२३४. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति॥

एगूणवीसइमो उद्देसो

२३५. चउरिंदिया ण भते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? जहा तेइंदियाण उद्देसओ तहेव चउरिंदियाणं वि, नवरं—ठिति संवेह च जाणेज्जा॥

२३६. सेव भते ! सेवं भंते ! त्ति॥

---

१. भ० २४।१६३-१६५।

२. न चेव (अ, क, म)।

वीसइमो उद्देसो

२३७. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? मणुस्सेहिंतो देवेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो, मणुस्सेहिंतो वि, देवेहिंतो वि उववज्जंति ॥

२३८. जइ नेरइएहिंतो उववज्जंति—किं रयणप्पभपुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति जाव अहेसत्तमपुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! रयणप्पभपुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति जाव अहेसत्तमपुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति ॥

२३९. रयणप्पभपुढविनेरइए णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा ॥

२४०. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? एवं जहा[1] असुरकुमाराणं वत्तव्वया, नवरं—संघयणे पोग्गला अणिट्ठा अकंता जाव परिणमंति। ओगाहणा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सत्त धणूइं तिण्णि रयणीओ छच्चंगुलाइं। तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं, उक्कोसेणं पण्णरस धणूइं अड्ढाइज्जाओ रयणीओ ॥

२४१. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा य, उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा ते हुंडसंठिया पण्णत्ता। तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया ते वि हुंडसंठिया पण्णत्ता। एगा काउलेस्सा पण्णत्ता। समुग्घाया चत्तारि। नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा। ठिती जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं सागरोवमं। एवं अणुबंधो वि। सेसं तहेव। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १ ॥

---

१. भ० २४।२०७,२०८।

२४२. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु। अवसेसं तहेव, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं तहेव, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं सेसा वि सत्त गमगा भाणियव्वा जहेव नेरइयउद्देसए सण्णिपचिंदिएहिं समं। नेरइयाणं 'मज्झिमएसु तिसु गमएसु'[1] पच्छिमएसु य तिसु गमएसु ठितिनाणत्तं भवति। सेसं तं चेव। सव्वत्थ ठितिं संवेहं च जाणेज्जा २-९॥

२४३. सक्करप्पभापुढविनेरइए णं भंते! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए० ? एवं जहा रयणप्पभाए नव गमगा तहेव सक्करप्पभाए वि, नवरं—सरीरोगाहणा जहा[2] ओगाहणसंठाणे[3]। तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणा नियमं। ठिती अणुबंधा पुव्वभणिया। एवं नव वि गमगा उवजुंजिऊण भाणियव्वा १-९। एवं जाव छट्ठपुढवी, नवरं—ओगाहणा-लेस्सा-ठिति-अणुबंधा संवेहो य जाणियव्वा॥

२४४. अहेसत्तमपुढवीनेरइए णं भंते! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए० ? एवं चेव नव गमगा, नवरं—ओगाहणा-लेस्सा-ठिति-अणुबंधा जाणियव्वा। संवेहो भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं छब्भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। आदिल्लएसु छसु वि गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं छ भवग्गहणाइं। पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं चत्तारि भवग्गहणाइं। लद्धी नवसु वि गमएसु जहा पढमगमए, नवरं—ठितीविसेसो कालादेसो य बितियगमएसु जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। तइयगमए जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। चउत्थगमए जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। पंचमगमए जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं। छट्ठगमए जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं।

---

१. मज्झिमएसु गमएसु (अ); मज्झिमएसु य तिसु गमएसु (क, ब); मज्झिमगमएसु (ख, ता); मज्झमएसु य तिसु वि गमएसु (स)।

२. प० २१।

३. ओगाहणासंठाणे (अ, म)।

उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। सत्तमगमए जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। अट्ठमगमए जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं। नवमगमए जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १-९॥

२४५ जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो० ? एवं उववाओ जहा पुढविकाइयउद्देसए जाव[1]—

२४६. पुढविकाइए णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा ॥

२४७ ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं परिमाणादीया अणुबंधपज्जवसाणा जच्चेव अप्पणो सट्ठाणे वत्तव्वया सच्चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु वि उववज्जमाणस्स भाणियव्वा, नवरं—नवसु वि गमएसु परिमाणे जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति। भवादेसेण वि नवसु वि गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। सेसं तं चेव। कालादेसेणं उभओ ठितीए करेज्जा १-९॥

२४८. जइ आउक्काइएहिंतो उववज्जंति० ? एवं आउक्काइयाण वि। एवं जाव चउरिंदिया उववाएयव्वा, नवरं—सव्वत्थ अप्पणो लद्धी भाणियव्वा। नवसु वि गमएसु भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं उभओ ठितिं करेज्जा सव्वेसिं सव्वगमएसु। जहेव पुढविक्काइएसु उववज्जमाणाणं लद्धी तहेव सव्वत्थ ठितिं संवेहं च जाणेज्जा १-९॥

२४९ जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! सण्णिपंचिंदिय, असण्णिपंचिंदिय, भेओ जहेव पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स जाव[2]—

२५०. असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

---

१. भ० २४।१६४,१६५। २. भ० २४।१९२।

२५१. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसं जहेव पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स असण्णिस्स तहेव निरवसेसं जाव भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। बितियगमए एस चेव लद्धी, नवरं--कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १,२॥

२५२. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

२५३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं जहा रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स असण्णिस्स तहेव निरवसेसं जाव[1] कालादेसो त्ति, नवरं—परिमाणे जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति। सेसं तं चेव ३॥

२५४. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा ॥

२५५. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसं जहा एयस्स पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु तहा इह वि मज्झिमेसु तिसु गमएसु जाव[2] अणुबंधो त्ति। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ ४॥

२५६. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अट्ठ अंतोमुहुत्ता, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ५॥

२५७. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं पुव्वकोडिआउएसु, उक्कोसेण वि पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जाणेज्जा ६॥

२५८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ सच्चेव पढमगमगवत्तव्वया, नवरं—ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेसं तं चेव। कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ७॥

---

१. भ० २४।३२,३३। २. भ० २४।१९४।

२५९ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया जहा[1] सत्तमगमे, नवरं—कालदेसेण जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ८॥

२६०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं। एवं जहा रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स असण्णिस्स नवमगमए तहेव निरवसेसं जाव[2] कालादेसो त्ति, नवरं—परिमाणं जहा[3] एयस्सेव ततियगमे। सेसं तं चेव ९॥

२६१. जइ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं संखेज्जवासाउय० ? असंखेज्जवासाउय० ?

गोयमा ! संखेज्जवासाउय, नो असंखेज्जवासाउय॥

२६२. जइ संखेज्जवासाउय जाव किं पज्जत्तसंखेज्जवासाउय० ? अपज्जत्तसंखेज्जवासाउय० ? दोसु वि॥

२६३ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा॥

२६४ ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसं जहा[4] एयस्स चेव सण्णिस्स रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स पढमगमए, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण जोयणसहस्सं। सेसं तं चेव जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडी पुहत्तमब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १॥

२६५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ २॥

२६६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति। ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं।

---

१. भ० २४।२५८।
२. भ० २४।५२,५३।
३. भ० २४।२५३।
४. भ० २४।५८-६२।

सेसं तं चेव जाव—अणुबंधो त्ति। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेण तिण्णि पलिश्रोवमाइ श्रतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं ३ ॥

२६७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जातो जहण्णेण अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा। लद्धी से जहा[1] एयस्स चेव सण्णिपचिंदियस्स पुढविक्काएसु उववज्जमाणस्स मज्झिल्लएसु तिसु गमएसु सच्चेव इह वि मज्झिमेसु तिसु गमएसु कायव्वा। सवेहो जहेव[2] एत्थ चेव असण्णिस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु ४-६ ॥

२६८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ जहा पढमगमओ, नवर—ठिती अणुवधो जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। कालादेसेणं जहण्णेण पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीपुहत्तमब्भहियाइं ७ ॥

२६९. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर कालादेसेण—जहण्णेण पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाओ ८ ॥

२७०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओमट्ठितीएसु। अवसेस त चेव, नवरं—परिमाण ओगाहणा य जहा एयस्सेव तइयगमए। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा ९ ॥

२७१. जइ मणुस्सेहितो उववज्जंति—कि सण्णिमणुस्सेहितो० ? असण्णिमणुस्सेहितो० ?
गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहितो वि, असण्णिमणुस्सेहितो वि उववज्जति ॥

२७२. असण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा। लद्धी से तिसु वि गमएसु जहेव[3] पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स। संवेहो जहा एत्थ चेव असण्णिपचिंदियस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु तहेव निरवसेसो भाणियव्वो १-३ ॥

---

१. भ० २४।१९७।
२. भ० २४।२५५-२५७।
३. भ० २४।१९९।

२७३ जइ सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति—कि सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो० ? असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो० ?
गोयमा ! संखेज्जवासाउय, नो असखेज्जवासाउय ॥

२७४ जइ सखेज्जवासाउय० कि पज्जत्त० ? अपज्जत्त० ?
गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउय, अपज्जत्तसखेज्जवासाउय ॥

२७५. सण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

२७६ ते ण भते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? लद्धी से जहा एयस्सेव सण्णिमणुस्सस्स पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स पढमगमए जाव[1]—भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइ १ ॥

२७७. सो चेव जहण्णकालट्ठितिएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ २ ॥

२७८. सो चेव उक्कोसकालट्ठितिएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु, सच्चेव वत्तव्वया, नवर—ओगाहणा जहण्णेण अगुलपुहत्तं, उक्कोसेण पच धणुसयाइ । ठिती जहण्णेण मासपुहत्तं, उक्कोसेण पुव्वकोडी । एवं अणुबधो वि । भवादेसेणं दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं मासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ,—एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा ३ ॥

२७९. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, जहा[2] सण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणियस्स पचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु वत्तव्वया भणिया एस चेव एयस्स वि मज्झिमेसु तिसु गमएसु निरवसेसा भाणियव्वा, नवरं—परिमाण उक्कोसेण संखेज्जा उववज्जंति । सेसं तं चेव ४-६ ॥

२८०. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जातो, सच्चेव पढमगमगवत्तव्वया, नवर—ओगाहणा जहण्णेण पंच धणुसयाइ, उक्कोसेण वि पच धणुसयाइं । ठिती अणुबधो जहण्णेण पुव्वकोडी, उवकोसेण वि पुव्वकोडी । सेसं तहेव

१. भ० २४।२०३ । २. भ० २४।२६७ ।

जाव भवादेसो त्ति कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइं, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा ७ ॥

२८१. सो चेव जहण्णकालट्ठितिएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेण जहण्णेण पुव्वकोडो अतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाओ ८॥

२८२. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइ, एस चेव लद्धी जहेव सत्तमगमे। भवादेसेण दो भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा ९॥

२८३. जइ देवेहितो उववज्जंति – किं भवणवासिदेवेहितो उववज्जति? वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियदेवेहितो० ?
गोयमा! भवणवासिदेवेहितो जाव वेमाणियदेवेहितो वि ॥

२८४. जइ भवणवासिदेवेहिंतो—किं असुरकुमारभवणवासिदेवेहितो जाव थणिय-कुमारभवणवासिदेवेहितो० ?
गोयमा! असुरकुमार जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहिंतो ॥

२८५. असुरकुमारे ण भंते! जे भविए पचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से ण भंते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा! जहण्णेणं अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जे-ज्जा। असुरकुमाराणं लद्धी नवसु वि गमएसु जहा[1] पुढविक्काइएसु उववज्ज-माणस्स। एव जाव ईसाणदेवस्स तहेव लद्धी। भवादेसेणं सव्वत्थ अट्ठ भवग्ग-हणाइं, उक्कोसेण जहण्णेण दोण्णि भवग्गहणाइ। ठिति सवेहं च सव्वत्थ जाणेज्जा १-९॥

२८६. नागकुमारे णं भंते! जे भविए ०? एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठिति सवेहं च जाणेज्जा १-९। एवं जाव थणियकुमारे ॥

२८७. जइ वाणमतरेहितो० किं पिसाय ०? तहेव जाव—

२८८. वाणमंतरे णं भते! जे भविए पचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए ०? एव चेव, नवरं—ठिति सवेहं च जाणेज्जा १-९॥

२८९. जइ जोतिसिय ०? उववाओ तहेव जाव—

२९०. जोतिसिए णं भंते! जे भविए पचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए ०? एस चेव वत्तव्वया जहा पुढविक्काइयउद्देसए। भवग्गहणाइं नवसु वि गमएसु

---

1. भ० २४।२०७-२१०।

अट्ठ जाव कालादेसेणं जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं चउहिं य वाससयसहस्सेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं नवसु वि गमएसु, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा १-९।।

२९१. जइ वेमाणियदेवेहिंतो ० किं कप्पोवावेमाणिय ०? कप्पातीतावेमाणिय ०? गोयमा ! कप्पोवावेमाणिय, नो कप्पातीतावेमाणिय ।।

२९२. जइ कप्पोवा जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो वि उववज्जति, नो आणय जाव नो अच्चुयकप्पोवावेमाणिय ।।

२९३. सोहम्मदेवे णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु। सेसं जहेव[1] पुढविक्काइयउद्देसए नवसु वि गमएसु, नवरं—नवसु वि गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। ठितिं कालादेसं च जाणेज्जा १-९। एवं ईसाणदेवे वि। एवं एएणं कमेणं अवसेसा वि जाव सहस्सारदेवेसु उववाएयव्वा, नवरं—ओगाहणा जहा[2] ओगाहणसंठाणे, लेस्सा सणंकुमार-माहिंद-बंभलोएसु एगा पम्हलेस्सा, सेसाणं एगा सुक्कलेस्सा। वेदे नो इत्थिवेदगा, पुरिसवेदगा, नो नपुंसगवेदगा। आउ-अणुबंधा जहा[3] ठितिपदे। सेसं जहेव ईसाणगाणं कायसंवेहं च जाणेज्जा ।।

२९४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

एगवीसतिमो उद्देसो

२९५. मणुस्सा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति जाव देवेहिंतो उववज्जंति ?

गोयमा ! णेरइएहिंतो वि उववज्जंति 'जाव देवेहिंतो वि उववज्जंति'[4]। एवं उववाओ जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणिउद्देसए जाव[5] तमापुढविनेरइएहिंतो वि उववज्जंति, नो अहेसत्तमपुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति ।।

---

१. भ० २४।२१८।
२. प० २१।
३. प० ४।
४. X (अ, क, ख, ता, ब, म)।
५. भ० २४।२३८।

२९६. रयणप्पभपुढविनेरइए ण भते ! से भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं मासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडिआउएसु। अवसेसा वत्तव्वया जहा[1] पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंतस्स तहेव, नवरं—परिमाणे जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जति। जहा तहि अंतोमुहुत्तेहि तहा इह मासपुहत्तेहि सवेह करेज्जा। सेस तं चेव १-९।
जहा रयणप्पभाए 'तहा सक्करप्पभाए वि वत्तव्वया'[2], नवरं—जहण्णेणं वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडी आउएसु। ओगाहणा-लेस्सा-नाण-ट्ठिती-अणुबध-सवेह-नाणत्त च जाणेज्जा जहेव[3] तिरिक्खजोणियउद्देसए। एव जाव तमापुढविनेरइए॥
२९७. जइ तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—कि एगिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति जाव पचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति ?
गोयमा ! एगिदियतिरिक्खजोणिएहितो भेदो जहा पचिदियतिरिक्खजोणिय-उद्देसए, नवर—तेउ-वाऊ पडिसेहेयव्वा। सेसं त चेव। जाव[4]—
२९८. पुढविक्काइए णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवति-कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तट्ठितीएसु उक्कोसेण पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा॥
२९९. ते णं भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एवं जहेव पचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणस्स पुढविक्काइयस्स वत्तव्वया सा चेव इह वि उववज्जमाणस्स भाणियव्वा[5] नवसु वि गमएसु, नवरं—ततिय-छट्ठ-नवमेसु गमएसु परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा उववज्जंति। जाहे अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ भवति ताहे पढमगमए अज्झवसाणा पसत्था वि अप्पसत्था वि बितियगमए अप्पसत्था, ततियगमए पसत्था भवति। सेसं त चेव निरवसेसं १-९॥
३००. जइ आउक्काइए० ? एवं आउक्काइयाण वि। एवं वणस्सइकाइयाण वि। एव जाव चउरिंदियाण वि। असण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिय-सण्णिपचिंदियतिरिजोणिय-असण्णिमणुस्स-सण्णिमणुस्सा य एते सव्वे वि जहा पचिंदियतिरिक्ख-

---

१. भ० २४।२४०-२४२।
२. वि वत्तव्वया तहा सक्करप्पभाए वि (अ, क, व); वि वत्तव्वया तहा सक्करप्पभाए वि वत्तव्वया (स)।
३. भ० २४।२४३।
४. भ० २४।२४५।
५. भ० २४।२४७।

जोणियउद्देसए तहेव भाणियव्वा[1], नवरं—एयाणि चेव परिमाण-अज्झवसाण-नाणत्ताणि जाणिज्जा पुढविकाइयस्स एत्थ चेव उद्देसए भणियाणि। सेसं तहेव निरवसेसं १-९॥

३०१. जइ देवेहिंतो उववज्जंति—किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति ? वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतो वि जाव वेमाणियदेवेहिंतो वि उववज्जंति ॥

३०२. जइ भवणवासिदेवेहिंतो—किं असुरकुमार जाव थणियकुमार० ?
गोयमा ! असुरकुमार जाव थणियकुमार ॥

३०३. असुरकुमारे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवति-कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं मासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उवव-ज्जेज्जा। एवं जच्चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियउद्देसए वत्तव्वया सच्चेव एत्थ वि भाणियव्वा, नवरं—जहा तहिं जहण्णगं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु तहा इह मास-पुहत्तट्ठितीएसु। परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति। सेसं तं चेव १-९। एवं जाव[2] ईसाणदेवो त्ति। एयाणि चेव नाणत्ताणि। सणंकुमारादीया जाव सहस्सारो त्ति जहेव[3] पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिउद्देसए, नवरं—परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्को-सेणं संखेज्जा उववज्जंति। उववाओ जहण्णेणं वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा। सेसं तं चेव। संवेहं वासपुहत्तं पुव्वकोडीसु करेज्जा। सणंकुमारे ठिती चउगुणिया 'अट्ठावीससागरोवमा भवंति'[4] माहिंदे ताणि चेव सातिरेगाणि, बम्हलोए चत्तालीसं, लंतए छप्पन्नं, महासुक्के अट्ठसट्ठिं, सहस्सारे बावत्तरिं सागरोवमाइं। एसा उक्कोसा ठिती भणिया। जहण्णट्ठितिं पि चउगुणेज्जा ॥

३०४. आणयदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवति-कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीठितीएसु उवव-ज्जेज्जा ॥

३०५. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं जहेव सहस्सार-देवाणं वत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा-ठिति-अणुबंधे य जाणेज्जा। सेसं तं चेव। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं छ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं

---

१. भ० २४।२४८-२८२।
२. भ० २४।२८५-२९३।
३. भ० २४।२९३।
४. अट्ठावीस सागरोवमा भवंति (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण सत्तावन्न सागरोवमाइ तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव नव वि गमा, नवर—ठिति अणुबध सवेह च जाणेज्जा १-९। एवं जाव अच्चुयदेवो, नवर—ठिति अणुबध सवेह च जाणेज्जा। पाणयदेवस्स ठिती तिगुणिया सट्ठि सागरोवमाइ, आरणगस्स तेवट्ठि सागरोवमाइं, अच्चुयदेवस्स छावट्ठि सागरोवमाइ ॥

३०६. जइ कप्पातीतावेमाणियदेवेहितो उववज्जंति—कि गेवेज्जाकप्पातीता० ? अणुत्तरोववातियकप्पातीता० ?
गोयमा ! गेवेज्जाकप्पातीता, अणुत्तरोववातियकप्पातीता ॥

३०७. जइ गेवेज्जा०—कि हेट्ठिम-हेट्ठिम गेवेज्जगकप्पातीता जाव उवरिम-उवरिम गेवेज्जा० ?
गोयमा ! हेट्ठिम-हेट्ठिम गेवेज्जा जाव उवरिम-उवरिम गेवेज्जा ॥

३०८. गेवेज्जगदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडीट्ठितीएसु। अवसेसं जहा आणयदेवस्स वत्तव्वया, नवर—ओगाहणा[1]—एगे भवधारणिज्जे सरीरए। से जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेण दो रयणीओ। सठाण[2]—एगे भवधारणिज्जे सरीरे। से समचउरंससठिए पण्णत्ते। पंच समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा - वेदणासमुग्घाए जाव तेयगसमुग्घाए, नो चेव ण वेउव्वियतेयगसमुग्घाएहि समोहणिसु वा, समोहणति वा, समोहणिस्संति वा। ठिती अणुबधो जहण्णेण बावीसं सागरोवमाइ, उक्कोसेण एक्कतीस सागरोवमाइ। सेस तं चेव। कालादेसेण जहण्णेण बावीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण तेणउति सागरोवमाइ तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा। एव सेसेसु वि अट्ठगमएसु, नवरं—ठिति सवेहं च जाणेज्जा १-९॥

३०९. जइ अणुत्तरोववाइयकप्पातीतावेमाणियदेवेहितो उववज्जति—कि विजयअणुत्तरोववाइय० ? वेजयंतअणुत्तरोववाइय जाव सव्वट्ठसिद्ध० ?
गोयमा ! विजयअणुत्तरोववाइय जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय ॥

३१०. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? एव जहेव गेवेज्जगदेवाणं, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं एगा रयणी।

---

१. ओगाहणा गो (अ, क, ख, ता, ब, म, स)। २. सठाणं गो (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

सम्मदिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी, नो सम्मामिच्छदिट्ठी। नाणी, नो अण्णाणी, नियमं तिण्णाणी, त जहा—आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी। ठिती जहण्णेण एक्कतीस सागरोवमाइ, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइं। सेस तं चेव। भवादेसेणं जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण चत्तारि भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेण एक्कतीस सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ दोहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा। एव सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवर—ठिति अणुवध सवेध च जाणेज्जा। सेस एवं चेव १-९॥

३११ सव्वट्ठसिद्धगदेवे ण भंते! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए०? सा चेव विजयादिदेववत्तव्वया भाणियव्वा, नवर—ठिती अजहण्णमणुक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइ। एव अणुवंधो वि। सेसं तं चेव। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेण जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा १॥

३१२ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेणं जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा २॥

३१३ सो चेव उक्को कालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, उक्कोसेण वि तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा ३। एते चेव तिण्णि गमगा, सेसा न भण्णति॥

३१४. सेव भते! सेव भते! त्ति॥

बावीसइमो उद्देसो

३१५ वाणमंतरा णं भते! कओहितो उववज्जति—किं नेरइएहिंतो उववज्जति? तिरिक्ख०? एवं जहेव[1] नागकुमारउद्देसए असण्णी तहेव निरवसेस॥

३१६. जइ सण्णिपचिंदिय[2]तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति—कि सखेज्जवासाउय०? असखेज्जवासाउय०?

---

१. भ० २४।१४३, १४४।

२. स० पा०—सण्णिपचिंदिय जाव असखेज्जवासाउय।

गोयमा ! संखेज्जवासाउय, असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति० ॥

३१७. सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए वाणमंतरेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठितीएसु। सेसं तं चेव जहा नागकुमारउद्देसए जाव[1] कालादेसेणं जहण्णेणं सातिरेगा पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा १ ॥

३१८. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, जहेव[2] नागकुमाराणं बितियगमे वत्तव्वया २ ॥

३१९. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं पलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमट्ठितीएसु। एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठिती से जहण्णेण पलिओवमं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइ। संवेहो जहण्णेण दो पलिओवमाइ, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइ, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा। मज्झिमगमगा तिण्णि वि जहेव[3] नागकुमारेसु पच्छिमेसु तिसु गमएसु तं चेव जहा[4] नागकुमारुद्देसए, नवरं—ठिति संवेहं च जाणेज्जा। संखेज्जवासाउय तहेव,[5] नवरं—ठिती अणुबंधो संवेहं च उभओ ठितीए जाणेज्जा ३-९ ॥

३२०. जइ मणुस्सेहितो उववज्जंति० ? असखेज्जवासाउयाणं जहेव[6] नागकुमाराणं उद्देसे तहेव वत्तव्वया, नवरं—तइयगमए ठिती जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं। ओगाहणा जहण्णेणं गाउय, उक्कोसेण तिण्णि गाउयाइं। सेस तहेव। संवेहो से जहा एत्थ चेव उद्देसए असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियाणं। संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से जहेव[7] नागकुमारुद्देसए, नवरं—वाणमंतरे ठिति संवेहं च जाणेज्जा १-९ ॥

३२१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. भ० २४।१४७।
२. भ० २४।१४८।
३. भ० २४।१५०।
४. भ० २४।१५१।
५. भ० २४।१५२,१५३।
६. भ० २४।१५४-१५७।
७. भ० २४।१५८,१५९।

तेवीसइमो उद्देसो

३२२. जोइसिया णं भंते! कओहिंतो उववज्जति - किं नेरइएहिंतो० ? भेदो जाव[1] सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, नो असण्णिपंचिंदियतिरिक्ख ॥

३२३ जइ सण्णि० किं संखेज्ज० ? असंखेज्ज० ?
गोयमा ! संखेज्जवासाउय, असंखेज्जवासाउय ॥

३२४. असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते! जे भविए जोतिसिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमवाससयसहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा, अवसेस जहा[2] असुरकुमारुद्देसए, नवर—ठिती जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवम, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। एव अणुबंधो वि। सेस तहेव, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेण दो अट्ठभागपलिओवमाइ, उक्कोसेण चत्तारि पलिओवमाइं वाससयसहस्समब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा १ ॥

३२५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु। एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेण जाणेज्जा २ ॥

३२६ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—ठिती जहण्णेण पलिओवम वाससयसहस्समब्भहिय, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ। एव अणुबंधो वि। कालादेसेण जहण्णेण दो पलिओवमाइं दोहि वाससयसहस्सेहि अब्भहियाइ, उक्कोसेण चत्तारि पलिओवमाइ वाससयसहस्समब्भहियाइ ३ ॥

३२७ सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ जहण्णेण अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

३२८. ते ण भते! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति? एस चेव वत्तव्वया, नवर—ओगाहणा जहण्णेण धणुपुहत्त, उक्कोसेण सातिरेगाइ अट्ठारसधणुसयाइ। ठिती जहण्णेण अट्ठभागपलिओवम, उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवम। एवं अणुबंधो वि। सेस तहेव। कालादेसेण जहण्णेण दो अट्ठभागपलिओवमाइ, उक्कोसेण वि दो अट्ठभागपलिओवमाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। जहण्णकालट्ठितियस्स एस चेव एक्को गमो[3] ४ ॥

---

१. भ० २४।१-३।
२ भ० २४।१२१।
३. पञ्चमषष्ठगमयोरत्रैवान्तर्भावात् (वृ)।

३२९. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, सा चेव ओहिया वत्तव्वया, नवरं—ठिती जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइ, उकोक्सेण वि तिण्णि पलिओवमाइ। एवं अणुबंधो वि। सेस तं चेव। एवं पच्छिमा तिण्णि गमगा नेयव्वा[1], नवर—ठिति संवेहं च जाणेज्जा ७-९। एते सत्त गमगा॥

३३०. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदिय० ? संखेज्जवासाउयाणं जहेव[2] असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव नव वि गमा भाणियव्वा, नवरं—जोतिसियठिति सवेह च जाणेज्जा। सेसं तहेव निरवसेसं[3] १-९॥

३३१. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति० ? भेदो तहेव जाव[4]—

३३२. असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए जोइसिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? एवं जहा असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियस्स जोइसिएसु चेव उववज्जमाणस्स सत्त गमगा तहेव मणुस्साण वि, नवरं—ओगाहणाविसेसो पढमेसु तिसु गमएसु ओगाहणा जहण्णेण सातिरेगाइं नव धणुसयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं। मज्झिमगमए जहण्णेण सातिरेगाइं नव धणुसयाइं, उक्कोसेण वि सातिरेगाइं नव धणुसयाइं। पच्छिमेसु तिसु गमएसु जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेणं वि तिण्णि गाउयाइं। सेसं तहेव निरवसेसं जाव[5] सवेहो त्ति॥

३३३. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो० ? संखेज्जवासाउयाणं जहेव[6] असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव नव गमगा भाणियव्वा, नवर—जोतिसियठिति संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव निरवसेस १-९॥

३३४. सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति॥

चउवीसइमो उद्देसो

३३५. सोहम्मदेवा ण भंते ! कओहिंतो उववज्जति—कि नेरइएहिंतो उववज्जंति ? भेदो जहा[7] जोइसियउद्देसए॥

३३६. असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए ण भंते ! जे भविए सोहम्मगदेवेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेजा ?

---

१. भाणियव्वा (अ, क)।
२. भ० २४।१३१-१३३।
३. निरवसेस भाणियव्व (स)।
४. भ० २४।१३४,१३५।
५. भ० २४।३२४-३२९।
६. भ० २४।१३९-१४२।
७. भ० २४।३२२,३२३।

गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमट्ठितीएसु उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

३३७. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जंति ? अवसेस जहा[1] जोइसिएसु उववज्जमाणस्स, नवरं—सम्मदिट्ठी वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। नाणी वि, अण्णाणी वि, दो नाणा दो अण्णाणा नियमं। ठिती जहण्णेणं पलिओवम, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं। एवं अणुवधो वि । सेसं तहेव। कालादेसेणं जहण्णेणं दो पलिओवमाइ, उक्कोसेणं छप्पलिओवमाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा १ ॥

३३८ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेण दो पलिओवमाइ, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागतिं करेज्जा २ ॥

३३९. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु, एस चेव वत्तव्वया, नवर—ठिती जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइं। सेसं तहेव। कालादेसेण जहण्णेण छप्पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागतिं करेज्जा ३ ॥

३४० सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ जहण्णेणं पलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमट्ठितीएसु, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं धणुपुहत्त, उक्कोसेणं दो गाउयाइं। ठिती जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेण वि पलिओवम। सेसं तहेव। कालादेसेण जहण्णेणं दो पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि दो पलिओवमाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ४-६ ॥

३४१ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, आदिल्लगमगसरिसा तिण्णि गमगा नेयव्वा, नवरं—ठिति कालादेसं च जाणेज्जा ७-९ ॥

३४२. जइ सखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदिय० ? सखेज्जवासाउयस्स जहेव[2] असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स तहेव नव वि गमा, नवर—ठिति सवेह च जाणेज्जा। जाहे य अप्पणा जहण्णकालट्ठितिओ भवति ताहे तिसु वि गमएसु सम्मदिट्ठी वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। दो नाणा दो अण्णाणा नियम। 'सेस त चेव'[3] १-९ ॥

३४३. जइ मणुस्सेहितो उववज्जति० ? भेदो जहेव जोतिसिएसु उववज्जमाणस्स, जाव[4]—

१. भ० २४।३२४।
२. भ० २४।१३१-१३३।
३ तहेव (ता)।
४. भ० २४।३३१।

३४४. असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं जहेव असंखेज्जवासाउयस्स सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणियस्स सोहम्मे कप्पे उववज्जमाणस्स तहेव सत्त गमगा, नवरं—आदिल्लएसु दोसु गमएसु ओगाहणा जहण्णेणं गाउयं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं। ततियगमे जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं। चउत्थगमए जहण्णेण गाउयं, उक्कोसेण वि गाउयं। पच्छिमएसु तिसु गमएसु जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं, सेसं तहेव निरवसेसं ॥

३४५. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो० ? एवं संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्साणं जहेव[1] असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव नव गमगा भाणियव्वा, नवरं सोहम्मदेवट्ठिति संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव १-९ ॥

३४६. ईसाणदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? ईसाणदेवाणं एस चेव सोहम्मगदेवसरिसा वत्तव्वया, नवरं—असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स जेसु ठाणेसु सोहम्मे उववज्जमाणस्स पलिओवमठिती तेसु ठाणेसु इह सातिरेगं पलिओवमं कायव्वं। चउत्थगमे ओगाहणा जहण्णेणं धणुपुहत्तं, उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो गाउयाइं। सेसं तहेव ॥

३४७. असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सस्स वि तहेव ठिती जहा[2] पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स असंखेज्जवासाउयस्स। ओगाहणा वि जेसु ठाणेसु गाउयं तेसु ठाणेसु इहं सातिरेगं गाउयं। सेसं तहेव ॥

३४८. संखेज्जवासाउयाणं तिरिक्खजोणियाणं मणुस्साण य जहेव सोहम्मेसु उववज्जमाणाणं तहेव निरवसेसं नव वि गमगा, नवरं—ईसाणठितिं संवेहं च जाणेज्जा ॥

३४९. सणंकुमारदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? उववाओ जहा[3] सक्करप्पभापुढविनेरइयाणं, जाव—

३५०. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए सणंकुमारदेवेसु उववज्जित्तए० ? अवसेसा परिमाणादीया भवादेसपज्जवसाणा सच्चेव वत्तव्वया भाणियव्वा जहा[4] सोहम्मे उववज्जमाणस्स, नवरं - सणंकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। जाहे य अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ भवति ताहे तिसु वि गमएसु पंच लेस्साओ आदिल्लाओ कायव्वाओ। सेसं तं चेव ॥

३५१. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति० ? मणुस्साणं जहेव सक्करप्पभाए उववज्जमाणाणं तहेव नव वि गमा भाणियव्वा[5], नवरं—सणंकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा ॥

---

१. भ० २४।१३९-१४१।
२. भ० २४।३३६-३४१।
३. भ० २४।७८,१०५।
४. भ० २४।३४२।
५. भ० २४।१०५-१०८।

३५२. माहिंदगदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जति ०? जहा सणंकुमारगदेवाणं वत्तव्वया तहा माहिंदगदेवाण वि भाणियव्वा[1], नवरं—माहिंदगदेवाणं ठिती सातिरेगा भाणियव्वा सच्चेव। एवं बंभलोगदेवाण वि वत्तव्वया, नवरं—बंभलोगट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। एवं जाव सहस्सारो, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। लंतगादीणं जहण्णकालट्ठितियस्स तिरिक्खजोणियस्स तिसु वि गमएसु छप्पि लेस्साओ कायव्वाओ। संघयणाइं बंभलोग-लंतएसु पंच आदिल्लगाणि, महासुक्क-सहस्सारेसु चत्तारि। तिरिक्खजोणियाण वि मणुस्साण वि। सेसं तं चेव॥

३५३ आणयदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जति० ? उववाओ जहा सहस्सारदेवाणं, नवरं—तिरिक्खजोणिया खोडेयव्वा, जाव—

३५४ पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए आणयदेवेसु उववज्जित्तए ०? मणुस्साण य वत्तव्वया जहेव सहस्सारेसु उववज्जमाणाणं, नवरं—तिण्णि संघयणाणि, सेसं तहेव जाव अणुबंधो। भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं सत्त भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं दोहिं वासपुहत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं सत्तावन्नं सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव। एवं जाव अच्चुयदेवा, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। चउसु वि संघयणा तिण्णि आणयादीसु॥

३५५ गेवेज्जगदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जति ०? एस चेव वत्तव्वया, नवरं—दो संघयणा। ठितिं संवेहं च जाणेज्जा॥

३५६ विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजितदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जति ०? एस चेव वत्तव्वया निरवसेसा जाव अणुबंधो त्ति, नवरं—पढमं संघयणं। सेसं तहेव। भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं दोहिं वासपुहत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। मणूसलद्धी[2] नवसु वि गमएसु जहा गेवेज्जेसु उववज्जमाणस्स, नवरं—पढमसंघयणं॥

३५७. सव्वट्ठगसिद्धगदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जति ०? उववाओ जहेव विजयादीणं, जाव—

---

१. भ० २४।३४६-३५१। २. मणूसे लद्धी (स)।

३५८. से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। अवसेसा जहा विजयाइसु उववज्जंताणं, नवर— भवादेसेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, कालादेसेण जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइ दोहि वासपुहत्तेहि अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १॥

३५९. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवर— ओगाहणा-ठितीओ रयणिपुहत्त-वासपुहत्ताणि। सेसं तहेव। सवेह च जाणेज्जा २॥

३६०. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवरं— ओगाहणा जहण्णेणं पंच धणुसयाइं, उक्कोस्सेण वि पंच धणुसयाइं। ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेसं तहेव जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, उक्कोसेण वि तेत्तीस सागरोवमाइं दोहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३। एते तिण्णि गमगा सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं ॥

३६१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव[1] विहरइ ॥

---

[1]. भ० १।५१।

पंचवीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१. लेसा य २. दव्व ३. सठाण ४. जुम्म ५. पज्जव ६. नियठ ७. समणा य।
८. ओहे ९,१०. भवियाभविए, ११. सम्मा १२. मिच्छे य उद्देसा ॥१॥

लेस्सा-पदं

१. तेण कालेण तेणं समएण रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—कति ण भते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! छल्लेसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेसा जहा पढमसए वितिए उद्देसए तहेव लेस्साविभागो। अप्पाबहुगं च जाव[2] चउव्विहाण देवाण चउव्विहाण देवीण मीसग अप्पाबहुगति ॥

जोगस्स अप्पाबहुग-पदं

२. कतिविहा ण भते ! ससारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोद्दसविहा संसारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—१. सुहुमा अप्पज्जत्तगा २ सुहुमा पज्जत्तगा ३. बादरा अप्पज्जत्तगा ४. बादरा पज्जत्तगा ५ बेइदिया अप्पज्जत्तगा ६. बेइदिया पज्जत्तगा [3]°७ तेइदिया अप्पज्जत्तगा ८. तेइदिया पज्जत्तगा ९. चउरिंदिया अप्पज्जत्तगा १०. चउरिंदिया पज्जत्तगा° ११. असण्णिपंचिदिया अप्पज्जत्तगा १२. असण्णिपचिंदिया पज्जत्तगा १३ सण्णिपचिंदिया अप्पज्जत्तगा १४. सण्णिपचिंदिया पज्जत्तगा ॥

३ एतेसि णं भते ! चोद्दसविहाण ससारसमावण्णगाण जीवाणं जहण्णुक्कोसगस्स जोगस्स कयरे कयरेहिंतो[4] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

---

१. भ० १।४-१०।
२. भ० १।२०२; प० १७।२।
३. सं० पा०—एव तेइंदिया एव चउरिंदिया।
४. सं० पा० कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

गोयमा ! १. सव्वत्थोवे सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए २ बादरस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ३. वेदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ४. एवं तेइदियस्स ५. एव चउरिदियस्स ६ असण्णिस्स पंचिदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ७ सण्णिस्स पचिदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ८. सुहुमस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ९ बादरस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे १० सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे ११ बादरस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे १२. सुहुमस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे १३. बादरस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे १४. बेदियस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे १५. एवं तेदियस्स, एव जाव १८ सण्णिपंचिदियस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे १९. वेदियस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे २०. एव तेदियस्स वि, एव जाव २३. सण्णिपचिदियस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे २४. वेदियस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे २५ एव तेइदियस्स वि, एवं जाव २८ सण्णिपचिदियस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे ॥

समजोगि-विसमजोगि-पदं

४. दो भंते ! नेरइया पढमसमयोववन्नगा कि समजोगी ? विसमजोगी[1] ?
गोयमा ! सिय समजोगी, सिय विसमजोगी ॥

५. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—सिय समजोगी, सिय विसमजोगी ?
गोयमा ! आहारयाओ[2] वा से अणाहारए, अणाहारयाओ वा से आहारए सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए। जइ हीणे असंखेज्जइभागहीणे वा, सखेज्ज-इभागहीणे वा, संखेज्जगुणहीणे वा, असखेज्जगुणहीणे वा। अह अब्भहिए असखेज्जइभागमब्भहिए वा, सखेज्जइभागमब्भहिए वा, सखेज्जगुणमब्भहिए वा, असंखेज्जगुणमब्भहिए वा। से तेणट्ठेण[3] °गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय समजोगी°, सिय विसमजोगी। एव जाव वेमाणियाण ॥

जोग-पदं

६. कतिविहे णं भते ! जोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पण्णरसविहे जोए पण्णत्ते, तं जहा—१ सच्चमणजोए २. मोसमण-

---

१. किं विसमजोगी (अ,म); असमजोगी (ता)।
२. आहारओ (अ,ख); आहाराओ (क,व,म)।
३. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव सिय।

जोए[1] ३ सच्चामोसमणजोए ४. असच्चामोसमणजोए ५. सच्चवइजोए ६. मोसवइजोए ७ सच्चामोसवइजोए ८ असच्चामोसवइजोए ९. ओरालियसरीरकायजोए १०. ओरालियमीसासरीरकायजोए ११. वेउव्वियसरीरकायजोए १२ वेउव्वियमीसासरीरकायजोए १३. आहारगसरीरकायजोए १४ आहारगमीसासरीरकायजोए १५ कम्मासरीरकायजोए ॥

७ एयस्स[2] ण भंते ! पण्णरसविहस्स जहण्णुक्कोसगस्स जोगस्स कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! १. सव्वत्थोवे कम्मासरीरस्स[4] जहण्णए जोए २ ओरालियमीसगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ३. वेउव्वियमीसगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ४ ओरालियसरीरस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ५. वेउव्वियसरीरस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ६. कम्मासरीरस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे ७ आहारगमीसगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ८. तस्स चेव उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे ९,१० ओरालियमीसगस्स, वेउव्वियमीसगस्स य—एएसि णं उक्कोसए जोए दोण्हवि तुल्ले असखेज्जगुणे ११. असच्चामोसमणजोगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे १२. आहारासरीरस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे १३-१९ तिविहस्स मणजोगस्स चउव्विहस्स वइजोगस्स—एएसि ण सत्तण्ह वि तुल्ले जहण्णए जोए असखेज्जगुणे २०. आहारासरीरस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे २१-३०. ओरालियसरीरस्स, वेउव्वियसरीरस्स, चउव्विहस्स य मणजोगस्स, चउव्विहस्स य वइजोगस्स—एएसि ण दसण्ह वि तुल्ले उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे ॥

८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

दव्व-पदं

९. कतिविहा णं भंते ! दव्वा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा दव्वा पण्णत्ता, तं जहा—जीवदव्वा य, अजीवदव्वा य ॥

१०. अजीवदव्वा णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?

---

१. असच्चमणजोए । (अ, क, व, म) ।
२. तस्स (क) ।
३. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
४. कम्मग° (क, ख, व, म); कम्मसरीरगस्स (ता) ।

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवदव्वा य, अरूविअजीवदव्वा य ॥

११ [1]•अरूविअजीवदव्वा ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, त जहा—धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए ॥

१२. रूविजीवदव्वा ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउविहा पण्णत्ता, तं जहा—खधा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणुपोग्गले ॥

१३. ते ण भते ! कि सखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणता ?
गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ॥

१४. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—नो सखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणता ?
गोयमा ! अणता परमाणुपोग्गला, अणता दुपदेसिया खंधा जाव अणता दसपदेसिया खधा, अणता सखेज्जपदेसिया खधा, अणता असखेज्जपदेसिया खधा, अणंता अणतपदेसिया खंधा।° से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—ते ण नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ॥

१५. जीवदव्वा णं भंते ! कि सखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणता ?
गोयमा ? नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणता ॥

१६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवदव्वा णं नो संखेज्जा, नो असखेज्जा, अणंता ?
गोयमा ! असखेज्जा नेरइया जाव असखेज्जा वाउक्काइया, अणंता वणस्सइकाइया, असंखेज्जा बेदिया, एवं जाव वेमाणिया, अणता सिद्धा। से तेणट्ठेणं जाव अणंता ॥

जीवाणं अजीवपरिभोग-पदं

१७ जीवदव्वाणं भते ! अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ? अजीवदव्वाणं जीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ?
गोयमा ! जीवदव्वाणं अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति, नो अजीवदव्वाणं जीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥

१८. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ[2]—•जीवदव्वाणं अजीवदव्वा परिभोगत्ताए

---

१. स० पा०—एव एएण अभिलावेण जहा अजीवपज्जवा जाव से।
२. स० पा०—वुच्चइ जाव हव्वमागच्छति।

हव्वमागच्छति, नो अजीवदव्वाण जीवदव्वा परिभोगत्ताए° हव्वमागच्छति ?
गोयमा ! जीवदव्वा णं अजीवदव्वे परियादियति परियादिइत्ता ओरालिय वेउव्विय आहारग तेयग कम्मग, सोइदिय जाव फासिंदिय, मणजोग वइजोग कायजोग, आणापाणुत्त[1] च निव्वत्तयति । से तेणट्ठेण[2] °गोयमा ! एवं वुच्चइ —जीवदव्वाण अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति, नो अजीवदव्वाण जीवदव्वा परिभोगत्ताए° हव्वमागच्छति ॥

१९. नेरइयाण भते ! अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ? अजीवदव्वाण नेरइया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ?
गोयमा ! नेरइयाण अजीवदव्वा परिभोगत्ताए[3] हव्वमागच्छति, नो अजीवदव्वाण नेरइया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ॥

२० से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! नेरइया अजीवदव्वे परियादियति, परियादिइत्ता वेउव्विय-तेयग-कम्मग, सोइदिय जाव फासिंदिय, (मणजोग वइजोग कायजोग ?)[4] आणापाणुत्त च निव्वत्तयति । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइयाण अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति, नो अजीवदव्वाण नेरइया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति । एव जाव वेमाणिया, नवर—सरीरइदियजोगा भाणियव्वा जस्स जे अत्थि ।

अवगाह-पदं

२१. से नूण भते ! असखेज्जे लोए अणताइ दव्वाइ आगासे भइयव्वाइ ?
हता गोयमा ! असखेज्जे लोए[5] °अणताइं दव्वाइ आगासे° भइयव्वाइ ॥

पोग्गलाण चयादि-पदं

२२. लोगस्स ण भते ! एगम्मि आगासपदेसे कतिदिसि पोग्गला चिज्जति ?
गोयमा ! निव्वाघाएण छद्दिसि, वाघाय पडुच्च सिय तिदिसि, सिय चउदिसि, सिय पचदिसि ॥

२३. लोगस्स णं भते ! एगम्मि आगासपदेसे कतिदिसि पोग्गला छिज्जति ? एवं चेव । एवं उवचिज्जति, एव अवचिज्जति ॥

---

१. आणापाणत्त (अ) ।
२. स० पा०—तेणट्ठेण जाव हव्वमागच्छति ।
३. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
४. कोष्ठकवर्ती पाठ आदर्शेषु नोपलभ्यते, किन्तु पूर्वसूत्रानुसारेण असौ युज्यते ।
५. सं० पा०—लोए जाव भइयव्वाइं ।

पोग्गलगहण-पदं

२४. जीवे णं भंते ! जाइ दव्वाइ ओरालियसरीरत्ताए गेण्हइ ताइ किं ठियाइ गेण्हइ ? अट्ठियाइ गेण्हइ ?
गोयमा ! ठियाइ पि गेण्हइ, अट्ठियाइं पि गेण्हइ ॥

२५ ताइ भंते ! किं दव्वओ गेण्हइ ? खेत्तओ गेण्हइ ? कालओ गेण्हइ ? भावओ गेण्हइ ?
गोयमा ! दव्वओ वि गेण्हइ, खेत्तओ वि गेण्हइ, कालओ वि गेण्हइ, भावओ वि गेण्हइ। ताइ दव्वओ अणतपदेसियाइं दव्वाइं, खेत्तओ असखेज्जपदेसोगाढाइ—एवं जहा पण्णवणाए पढमे आहारुद्देसए जाव[1] निव्वाघाएण छद्दिसि, वाघाय पडुच्च सिय तिदिसि, सिय चउदिसि, सिय पचदिसि ॥

२६. जीवे ण भते ! जाइं दव्वाइ वेउव्वियसरीरत्ताए गेण्हइ ताइ किं ठियाइ गेण्हइ ? अट्ठियाइं गेण्हइ ? एव चेव, नवरं—नियम छद्दिसि। एवं आहारगसरीरत्ताए वि ॥

२७. जीवे ण भते ! जाइं दव्वाइ तेयगसरीरत्ताए गेण्हइ—पुच्छा।
गोयमा ! ठियाइ गेण्हइ, नो अट्ठियाइ गेण्हइ। सेसं जहा ओरालियसरीरस्स। कम्मगसरीरे एव चेव। एव जाव भावओ वि गेण्हइ ॥

२८. जाइ दव्वाइं दव्वओ गेण्हइ ताइ किं एगपदेसियाइं गेण्हइ ? दुपदेसियाइ गेण्हइ ? एव जहा भासापदे जाव[2] आणुपुव्वि गेण्हइ, नो अणाणुपुव्वि गेण्हइ ॥

२९. ताइ भते ! कतिदिसि गेण्हइ ?
गोयमा ! निव्वाघाएण जहा ओरालियस्स ॥

३०. जीवे ण भते ! जाइ दव्वाइ सोइंदियत्ताए गेण्हइ ०? जहा वेउव्वियसरीर। एवं जाव जिब्भिदियत्ताए। फासिदियत्ताए जहा ओरालियसरीरं। मणजोगत्ताए जहा कम्मगसरीर, नवरं—नियम छद्दिसि। एवं वइजोगत्ताए वि। कायजोगत्ताए[3] जहा ओरालियसरीरस्स ॥

३१. जीवे ण भते ! जाइ दव्वाइं आणापाणुत्ताए गेण्हइ ०? जहेव ओरालियसरीरत्ताए जाव सिय पंचदिसि ॥

३२. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥[4]

---

१. प० २८।१।
२. प० ११।
३. कायजोगत्ताए वि (क, स)।
४. त्ति केइ चउवीसदंडएण एताणि पदाणि भण्णति जस्स ज अत्थि (अ, क, ख, ता, ब, म, स); असौ पाठ. वाचनान्तराभिधायकोस्ति। उद्देशकपूर्तौ लिखितस्यास्य मूले प्रवेशो जात इति सम्भाव्यते।

तइओ उद्देसो

संठाण-पदं

३३. कति णं भंते ! संठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! छ संठाणा पण्णत्ता, तं जहा—परिमंडले, वट्टे, तसे, चउरसे, आयते, अणित्थथे ॥

३४. परिमंडला णं भंते ! सठाणा दव्वट्ठयाए कि सखेज्जा ? असखेज्जा ? अणता ?
गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणंता ॥

३५. वट्टा णं भंते ! संठाणा ०? एवं चेव । एवं जाव अणित्थंथा । एवं पएसट्ठयाए वि । 'एवं दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए वि'[1] ॥

३६ एएसि णं भते ! परिमंडल-वट्ट-तंस-चउरस-आयत-अणित्थथाण सठाणाण दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?० विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा परिमडलसंठाणा दव्वट्ठयाए, वट्टा संठाणा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, चउरंसा संठाणा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, तसा सठाणा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, आयता सठाणा दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, अणित्थथा सठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा। पएसट्ठयाए—सव्वत्थोवा परिमडला सठाणा पएसट्ठयाए, वट्टा संठाणा पएसट्ठयाए सखेज्जगुणा, जहा दव्वट्ठयाए तहा पएसट्ठयाए वि जाव अणित्थंथा संठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। दव्वट्ठपएसट्ठयाए —सव्वत्थोवा परिमंडला संठाणा दव्वट्ठयाए, सो चेव दव्वट्ठयाए गमओ भाणियव्वो जाव अणित्थंथा संठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, अणित्थथेहिंतो संठाणेहिंतो दव्वट्ठयाए परिमडला सठाणा पएसट्ठयाए असखेज्जगुणा, वट्टा सठाणा पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, सो चेव पएसट्ठयाए गमओ भाणियव्वो जाव अणित्थथा सठाणा पएसट्ठयाए असखेज्जगुणा ॥

रयणप्पभादिसंदब्भे संठाण-पदं

३७. कति णं भंते ! संठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच संठाणा पण्णत्ता, तं जहा—परिमंडले जाव आयते ॥

३८. परिमंडला ण भंते ! संठाणा कि सखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ?
गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ॥

३९. वट्टा णं भते ! संठाणा कि संखेज्जा ०? एवं चेव । एवं जाव आयता ॥

४०. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए परिमडला सठाणा किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ?

---

१. X (अ, क, ता, व, म, स) ।
२ सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ॥

४१. वट्टा णं भंते ! संठाणा कि संखेज्जा ०? एव चेव । एव जाव आयता ॥

४२. सक्करप्पभाए णं भते ! पुढवीए परिमडला सठाणा ०? एवं चेव । एवं जाव आयता । एवं जाव अहेसत्तमाए ॥

४३. सोहम्मे णं भंते ! कप्पे परिमडला सठाणा ०? एवं जाव अच्चुए ॥

४४. गेवेज्जविमाणे णं भते ! परिमडला सठाणा० ? एवं चेव । एवं अणुत्तरविमाणेसु वि । एवं ईसिपब्भाराए वि ॥

४५. जत्थ णं भंते ! एगे परिमडले सठाणे जवमज्झे तत्थ परिमंडला संठाणा कि सखेज्जा ? असखेज्जा ? अणता ?

गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ॥

४६. वट्टा णं भंते ! सठाणा कि सखेज्जा० ? एवं चेव । एव जाव आयता ॥

४७. जत्थ णं भंते ! एगे वट्टे सठाणे जवमज्झे तत्थ परिमडला सठाणा० ? एवं चेव । वट्टा सठाणा एवं चेव । एवं जाव आयता । एव एक्केक्केणं संठाणेण पंच वि चारेयव्वा 'जाव आयतेण'[1] ॥

४८. जत्थ ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एगे परिमंडले सठाणे जवमज्झे तत्थ णं परिमडला संठाणा कि सखेज्जा—पुच्छा ।

गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ।

४९. वट्टा ण भंते ! सठाणा कि संखेज्जा० ? एवं चेव । एव जाव आयता ॥

५०. जत्थ णं भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एगे वट्टे संठाणे जवमज्झे तत्थ ण परिमडला सठाणा कि संखेज्जा—पुच्छा ।

गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता । वट्टा सठाणा एव चेव । एव जाव आयता । एवं पुणरवि एक्केक्केणं सठाणेण पच वि चारेयव्वा जहेव हेट्ठिल्ला जाव आयतेणं । एव जाव अहेसत्तमाए । एव कप्पेसु वि जाव ईसीपब्भाराए पुढवीए ॥

पएसावगाहतो सठाणनिरूवण-पदं

५१. वट्टे णं भते ! सठाणे कतिपदेसिए कतिपदेसोगाढे पण्णत्ते ?

गोयमा ! वट्टे संठाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—घणवट्टे य, पतरवट्टे य ।

तत्थ णं जे से पतरवट्टे से दुविहे पण्णत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य । तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं पचपदेसिए पचपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे । तत्थ णं जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं बारसपदेसिए बारसपदेसोगाढे, उक्कोसेणं अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे ।

---

१. × (अ, क, ब, म, स) ।

तत्थ णं जे से घणवट्टे से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य। तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं सत्तपदेसिए सत्तपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते। तत्थ णं जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं बत्तीसपदेसिए बत्तीसपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते॥

५२ तंसे णं भंते! संठाणे कतिपदेसिए कतिपदेसोगाढे पण्णत्ते?
गोयमा! तंसे णं संठाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—घणतंसे य, पतरतंसे य।
तत्थ णं जे से पतरतंसे से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य। तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं तिपदेसिए तिपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते। तत्थ णं जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं छप्पदेसिए छप्पदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते।
तत्थ णं जे से घणतंसे से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य। तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं पणतीसपदेसिए पणतीसपदेसोगाढे, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे[1]। तत्थ णं जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं चउप्पदेसिए चउप्पदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे[2]॥

५३. चउरंसे णं भंते! संठाणे कतिपदेसिए—पुच्छा।
गोयमा! चउरंसे संठाणे दुविहे पण्णत्ते,[3] °तं जहा—घणचउरंसे य, पतरचउरंसे य।
तत्थ णं जे से पतरचउरंसे से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य°। तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं नवपदेसिए नवपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते। तत्थ णं जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं चउपदेसिए चउपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे[4]।
तत्थ णं जे से घणचउरंसे से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य। तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं सत्तावीसइपदेसिए सत्तावीसइपदेसोगाढे, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे[5]। तत्थ णं जे से

---

१. तं चेव (अ, ख, ता, व, म, स)।
२. तं चेव (अ, ख, व, म, स), एवं चेव (ता)।
३. सं० पा०—भेदो जहेव वट्टस्स जाव तत्थ।
४. तं चेव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
५. तहेव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।

जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं अट्ठपदेसिए अट्ठपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे[1] ॥

५४. आयते ण भते ! सठाणे कतिपदेसिए कतिपदेसोगाढे पण्णत्ते ?
गोयमा ! आयते णं सठाणे तिविहे पण्णत्ते, त जहा—सेढिआयते, पतरायते, घणायते ।
तत्थ ण जे से सेढिआयते से दुविहे पण्णत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य । तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं तिपदेसिए तिपदेसोगाढे, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे[2] । तत्थ णं जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण दुपदेसिए दुपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणंतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे[3] ।
तत्थ ण जे से पतरायते से दुविहे पण्णत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य जुम्मपदेसिए य । तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण पण्णरसपदेसिए पण्णरसपदेसोगाढे, उक्कोसेणं 'अणंतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे'[4] । तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण छप्पदेसिए छप्पदेसोगाढे, उक्कोसेणं 'अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे'[5] ।
तत्थ ण जे से घणायते से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य । तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं पणयालीसपदेसिए पणयालीसपदेसोगाढे, उक्कोसेणं 'अणंतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे'[6] । तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं बारसपदेसिए बारसपदेसोगाढे, उक्कोसेणं 'अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे'[7] ॥

५५. परिमडले ण भंते ! संठाणे कतिपदेसिए—पुच्छा ।
गोयमा ! परिमंडले ण सठाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—घणपरिमडले य, पतरपरिमंडले य ।
तत्थ णं जे से पतरपरिमडले से जहण्णेण वीसइपदेसिए वीसइपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे[8] ।
तत्थ णं जे से घणपरिमडले से जहण्णेण चत्तालीसइपदेसिए चत्तालीसइपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते ॥

संठाणाणं कडजुम्मादि-पदं

५६. परिमंडले ण भते ! संठाणे दव्वट्ठयाए कि कडजुम्मे ? तेओए ? दावरजुम्मे[9] ? कलिओए ?

---

१. तहेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. तं चेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
३. तहेव (अ, क, ख, ता ब, म, स) ।
४,५. अणत तहेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
६,७. अणत तहेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
८. तहेव (अ, क, ख, ता, म, स) ।
९. बादरजुम्मे (अ, क, ख, ता म) सर्वत्र ।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोए, नो दावरजुम्मे, कलियोए[1] ॥

५७ वट्टे ण भते ! संठाणे दव्वट्ठयाए० ? एवं चेव । एवं जाव आयते ॥

५८. परिमडला ण भते ! सठाणा दव्वट्ठयाए कि कडजुम्मा, तेयोया—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा, सिय तेओगा, सिय दावरजुम्मा, सिय कलियोगा; विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेओगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा । एवं जाव आयता ॥

५९. परिमडले ण भते ! सठाणे पएसट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे, सिय तेयोगे, सिय दावरजुम्मे, सिय कलियोगे । एवं जाव आयते ॥

६०. परिमडला ण भंते ! सठाणा पदेसट्ठयाए कि कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेण कडजुम्मा वि, तेओगा वि, दावरजुम्मा वि, कलियोगा वि । एवं जाव आयता ॥

६१. परिमडले ण भते ! सठाणे कि कडजुम्मपदेसोगाढे जाव कलियोगपदेसोगाढे ?
गोयमा ! कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, नो कलियोगपदेसोगाढे ॥

६२ वट्टे ण भते ! सठाणे कि कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे, सिय तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, सिय कलियोगपदेसोगाढे ॥

६३. तंसे णं भंते ! सठाणे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे, सिय तेयोगपदेसोगाढे, सिय दावरजुम्मपदेसोगाढे, नो कलियोगपदेसोगाढे ॥

६४. चउरसे ण भते ! संठाणे० ? जहा वट्टे तहा चउरसे वि ॥

६५ आयते णं भते ! पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे जाव सिय कलियोगपदेसोगाढे ॥

६६. परिमडला ण भते ! संठाणा कि कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा ॥

६७. वट्टा ण भते ! सठाणा कि कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि, तेयोगपदेसोगाढा वि, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, कलियोगपदेसोगाढा वि ॥

---

१. कलिओदे (ता) ।

६८. तंसा णं भंते ! संठाणा किं कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा वि, तेयोगपदेसोगाढा वि, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, कलियोगपदेसोगाढा वि । चउरंसा जहा वट्टा ।।

६९. आयता णं भंते ! संठाणा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि ।।

७०. परिमडले ण भंते ! संठाणे कि कडजुम्मसमयठितीए[1] ? तेयोगसमयठितीए ? दावरजुम्मसमयठितीए ? कलियोगसमयठितीए ?
गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयठितीए जाव सिय कलियोगसमयठितीए । एव जाव आयते ।।

७१. परिमंडला णं भते ! संठाणा कि कडजुम्मसमयठितीया—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मसमयठितीया जाव सिय कलियोगसमयठितीया; विहाणादेसेणं कडजुम्मसमययठितीया वि जाव कलियोगसमयठितीया वि । एवं जाव आयता ।।

७२. परिमंडले णं भते ! सठाणे कालवण्णपज्जवेहि कि कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! सिय कडजुम्मे । एव एएण अभिलावेणं जहेव ठितीए । एवं नीलवण्णपज्जवेहि[2] । एवं पचहि वण्णेहिं, दोहि गंधेहि, पचहि रसेहि, अट्ठहि फासेहि जाव लुक्खफासपज्जवेहि ।।

सेढि-पद

७३. सेढीओ णं भंते ! दव्वट्ठयाए कि सखेज्जाओ ? असंखेज्जाओ ? अणंताओ ?
गोयमा ! नो सखेज्जाओ, नो असखेज्जाओ, अणताओ ।।

७४. पाईणपडीणायताओ[3] ण भते ! सेढीओ दव्वट्ठयाए कि सखेज्जाओ० ? एव चेव । एव दाहिणुत्तरायताओ वि । एव उड्ढमहायताओ वि ।।

७५. लोगागाससेढीओ णं भंते ! दव्वट्ठयाए कि सखेज्जाओ ? असखेज्जाओ ? अणताओ ?
गोयमा ! नो संखेज्जाओ, असंखेज्जाओ, नो अणंताओ ।।

७६ पाईणपडीणायताओ ण भंते ! लोगागाससेढीओ दव्वट्ठयाए कि संखेज्जाओ० ? एवं चेव । एवं दाहिणुत्तरायताओ वि । एवं उड्ढमहायताओ वि ।।

---

१. ०ट्ठितिए (अ, ब, म) ।
२. नीलावण्ण ०(क, ख, ब) ।
३. पादीण० (ख); पातीणपडिणताओ (ता) ।

७७. अलोगागाससेढीओ णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं संखेज्जाओ ? असंखेज्जाओ ? अणंताओ ?'[1]
गोयमा ! नो संखेज्जाओ, नो असंखेज्जाओ, अणंताओ। एवं पाईणपडीणायताओ वि। एवं दाहिणुत्तरायताओ वि। एवं उड्ढमहायताओ वि ।।

७८. सेढीओ णं भंते ! पएसट्ठयाए किं संखेज्जाओ० ? जहा दव्वट्ठयाए तहा पएसट्ठयाए वि जाव[2] उड्ढमहायताओ वि। सव्वाओ अणंताओ ।।

७९. लोगागाससेढीओ णं भंते ! पएसट्ठयाए किं संखेज्जाओ—पुच्छा।
गोयमा ! सिय संखेज्जाओ, सिय असंखेज्जाओ, नो अणंताओ। एवं पाईणपडीणायताओ वि। दाहिणुत्तरायताओ वि एवं चेव। उड्ढमहायताओ[3] नो संखेज्जाओ, असंखेज्जाओ, नो अणंताओ ।।

८०. अलोगागाससेढीओ णं भंते ! पदेसट्ठयाए—पुच्छा।
गोयमा ! सिय संखेज्जाओ, सिय असंखेज्जाओ, सिय अणंताओ ।।

८१ पाईणपडीणायताओ णं भंते ! अलोगागाससेढीओ—पुच्छा।
गोयमा ! नो संखेज्जाओ, नो असंखेज्जाओ, अणंताओ। एवं दाहिणुत्तरायताओ वि ।।

८२. उड्ढमहायताओ—पुच्छा।
गोयमा ! सिय संखेज्जाओ, सिय असंखेज्जाओ, सिय अणंताओ ।।

८३ सेढीओ णं भंते ! किं सादीयाओ सपज्जवसियाओ ? सादीयाओ अपज्जवसियाओ ? अणादीयाओ सपज्जवसियाओ ? अणादीयाओ अपज्जवसियाओ ?
गोयमा ! नो सादीयाओ सपज्जवसियाओ, नो सादीयाओ अपज्जवसियाओ, नो अणादीयाओ सपज्जवसियाओ, अणादीयाओ अपज्जवसियाओ। एवं जाव उड्ढमहायताओ ।।

८४ लोगागाससेढीओ णं भंते ! किं सादीयाओ सपज्जवसियाओ—पुच्छा।
गोयमा ! सादीयाओ सपज्जवसियाओ, नो सादीयाओ अपज्जवसियाओ, नो अणादीयाओ सपज्जवसियाओ, नो अणादीयाओ अपज्जवसियाओ। एवं जाव उड्ढमहायताओ ।।

८५. अलोगागाससेढीओ णं भंते ! किं सादीयाओ सपज्जवसियाओ—पुच्छा।[1]
गोयमा ! सिय सादीयाओ सपज्जवसियाओ, सिय सादीयाओ अपज्जवसियाओ, सिय अणादीयाओ सपज्जवसियाओ, सिय अणादीयाओ अपज्जवसियाओ। पाईणपडीणायताओ दाहिणुत्तरायताओ य एवं चेव, नवरं—नो सादीयाओ

१. पुच्छा (क, ता, व, म)।
२. एवं जाव (क, व)।
३. ०ताओ वि (अ, स)।

सपज्जवसियाओ, सिय सादीयाओ अपज्जवसियाओ। सेसं तं चेव। उड्ढमहाय-ताओ जहा ओहियाओ तहेव चउभंगो॥

८६. सेढीओ णं भंते! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्माओ, तेओयाओ—पुच्छा।
गोयमा! कडजुम्माओ, नो तेओयाओ, नो दावरजुम्माओ, नो कलियोगाओ। एवं जाव उड्ढमहायताओ। लोगागाससेढीओ एव चेव। एवं अलोगागास-सेढीओ वि॥

८७. सेढीओ णं भंते! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्माओ०? एवं चेव। एव जाव उड्ढमहायताओ॥

८८. लोगागाससेढीओ णं भंते! पदेसट्ठयाए—पुच्छा॥
गोयमा! सिय कडजुम्माओ, नो तेओयाओ, सिय दावरजुम्माओ, नो कलियो-गाओ। एवं पाईणपडीणायताओ वि, दाहिणुत्तरायताओ वि॥

८९. उड्ढमहायताओ णं भंते! पदेसट्ठयाए—पुच्छा।
गोयमा! कडजुम्माओ, नो तेयोगाओ, नो दावरजुम्माओ, नो कलियोगाओ॥

९०. अलोगागाससेढीओ णं भते! पदेसट्ठयाए—पुच्छा।
गोयमा! सिय कडजुम्माओ जाव सिय कलियोगाओ। एव पाईणपडीणाय-ताओ वि। एवं दाहिणुत्तरायताओ वि। उड्ढमहायताओ वि एव चेव, नवर—नो कलियोगाओ। सेसं तं चेव॥

९१. कति णं भंते! सेढीओ पण्णत्ताओ?
गोयमा! सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुआयता, एगओवंका, दुहओवंका, एगओखहा, दुहओखहा, चक्कवाला, अद्धचक्कवाला॥

अणुसेढि-विसेढि-गति-पदं

९२. परमाणुपोग्गलाणं[1] भंते! किं अणुसेढि गती पवत्तति? विसेढि गती पवत्तति?
गोयमा! अणुसेढि गती पवत्तति, नो विसेढि गती पवत्तति॥

९३. दुपएसियाण भंते! खधाण अणुसेढि गती पवत्तति? विसेढि गती पवत्तति?
एवं चेव। एव जाव अणंतपदेसियाण खंधाणं॥

९४. नेरइयाणं भते! किं अणुसेढि गती पवत्तति? विसेढि गती पवत्तति? एवं चेव। एव जाव वेमाणियाण॥

निरयावास-पदं

९५. इमीसे णं भते! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता?

---

१. ०पुग्गलाणं (अ)।

गोयमा! तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, एवं जहा पढमसते पंचमुद्देसए जाव[1] अणुत्तरविमाण[2] त्ति ॥

गणिपिडय-पदं

९६. कतिविहे ण भंते! गणिपिडए पण्णत्ते?
गोयमा! दुवालसंगे गणिपिडए पण्णत्ते, त जहा—आयारो जाव[3] दिट्ठिवाओ ॥

९७ से कि त आयारो? आयारे ण समणाण निग्गथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय-सिक्खा-भासा-अभासा-चरण-करण-जाया-माया-वित्तीओ आघविज्जति, एव अगपरूवणा भाणियव्वा जहा नदीए जाव[4]—

सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्तिमीसओ भणिओ।
तइओ य निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥१॥

अप्पाबहुय-पदं

९८. एएसि ण भंते! नेरइयाणं जाव देवाण सिद्धाण य पचगतिसमासेण कयरे कयरेहितो [5]॰अप्पा वा? बहुया वा? तुल्ला वा? विसेसाहिया वा?॰
गोयमा! अप्पाबहुय जहा[6] बहुवत्तव्वयाए, अट्ठगतिसमासप्पाबहुग[7] च ॥

९९. एएसि ण भंते! सइंदियाणं, एगिदियाण जाव अणिदियाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा? बहुया वा? तुल्ला वा? विसेसाहिया वा? एय पि जहा बहुवत्तव्वयाए तहेव ओहियं पय भाणियव्वं, सकाइयअप्पाबहुगं[8] तहेव ओहियं भाणियव्वं[9] ॥

१००. एएसि ण भंते! जीवाण पोग्गलाण[10] ॰अद्धासमयाण सव्वदव्वाण सव्वपदेसाणं॰ सव्वपज्जवाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा? बहुया वा? तुल्ला वा? विसेसाहिया वा? जहा बहुवत्तव्वयाए ॥

१०१. एएसि णं भंते! जीवाण, आउयस्स कम्मस्स बधगाण अबधगाणं? जहा बहुवत्तव्वयाए जाव[11] आउयस्स कम्मस्स अबंधगा विसेसाहिया ॥

१०२. सेव भंते! सेव भंते! त्ति ॥

---

१ भ० १।२१२-२१५।
२ एगा अणु॰ (अ)।
३. भ० २०।७५।
४. नदी सू० ८१-१२७।
५. सं० पा०—पुच्छा।
६. प० ३।
७. ॰समासप्पा॰ (ता, ब, म)।
८. सकायअप्पा॰ (ब)।
९. प० ३।
१० सं० पा०—पोग्गलाण जाव सव्वपज्जवाण। अस्य पूर्ति प्रज्ञापनायाः तृतीयपदात् कृता, वृत्तौ किञ्चिद्भेदो लभ्यते—इह यावत्करणादिद दृश्यं—'समयाण दव्वाण पएसाण' ति।
११. प० ३।

चउत्थो उद्देसो

जुम्म-पदं

१०३ कति णं भंते ! जुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे जाव[1] कलियोगे ।।

१०४. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता—कडजुम्मे जाव कलियोगे ? एवं जहा अट्ठारसमसते चउत्थे उद्देसए तहेव जाव[2] से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ ।।

१०५. नेरइयाणं भंते ! कति जुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ।।

१०६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयाणं चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे ? अट्ठो तहेव । एवं जाव वाउकाइयाणं ।।

१०७. वणस्सइकाइयाणं भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! वणस्सइकाइया सिय कडजुम्मा, सिय तेयोगा, सिय दावरजुम्मा, सिय कलियोगा ।।

१०८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—वणस्सइकाइया जाव कलियोगा ?
गोयमा ! उववायं पडुच्च । से तेणट्ठेणं तं चेव । बेदियाणं जहा नेरइयाणं । एवं जाव वेमाणियाणं । सिद्धाणं जहा वणस्सइकाइयाणं ।।

१०९. कतिविहा णं भंते ! सव्वदव्वा पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहा सव्वदव्वा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए जाव अद्धासमए ।।

११०. धम्मत्थिकाए णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे । एवं अधम्मत्थिकाए वि । एवं आगासत्थिकाए वि ।।

१११. जीवत्थिकाए णं भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे ।।

११२. पोग्गलत्थिकाए णं भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे । अद्धासमए जहा जीवत्थिकाए ।।

११३. धम्मत्थिकाए णं भंते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे । एवं जाव अद्धासमए ।।

---

१. भ० २५।५४ । २. भ० १८।९० ।

११४ एएसि णं भते ! धम्मत्थिकाय-अधम्मत्थिकाय जाव अद्धासमयाण दव्वट्ठ-याए ०? एएसि ण अप्पावहुगं जहा[1] बहुवत्तव्वयाए तहेव निरवसेस ॥

११५ धम्मत्थिकाए ण भते ! कि ओगाढे ? अणोगाढे ?
गोयमा ! ओगाढे, नो अणोगाढे ॥

११६. जइ ओगाढे कि सखेज्जपदेसोगाढे ? असंखेज्जपदेसोगाढे ? अणंतपदेसोगाढे ?
गोयमा ! नो संखेज्जपदेसोगाढे, असखेज्जपदेसोगाढे, नो अणंतपदेसोगाढे ॥

११७. जइ असखेज्जपदेसोगाढे किं कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, नो कलियोगपदेसोगाढे । एवं अधम्मत्थिकाए वि । एव आगासत्थिकाए वि । जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए, अद्धासमए एव चेव ॥

११८ इमा ण भते ! रयणप्पभा पुढवी कि ओगाढा ? अणोगाढा ? जहेव धम्म-त्थिकाए । एव जाव अहेसत्तमा । सोहम्मे एव चेव । एव जाव ईसिपब्भारा पुढवी ॥

११९. जीवे णं भते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे । एवं नेरइए वि । एवं जाव सिद्धे ॥

१२०. जीवा ण भते ! दव्वट्ठयाए कि कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा; विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा ॥

१२१ नेरइया ण भते ! दव्वट्ठयाए—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा । एवं जाव सिद्धा ॥

१२२. जीवे ण भते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलि-योगे । सरीरपदेसे पडुच्च सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे । एव जाव वेमाणिए ॥

१२३. सिद्धे णं भंते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे ॥

१२४ जीवा णं भते ! पदेसट्ठयाए कि कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा । सरीरपदेसे पडुच्च ओघादेसेण सिय

---

१. प० ३ ।

कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेण कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। एव नेरइया वि। एवं जाव वेमाणिया ॥

१२५. सिद्धा ण भते !—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा ॥

१२६. जीवे ण भते ! कि कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे जाव सिय कलियोगपदेसोगाढे। एव जाव सिद्धे ॥

१२७. जीवा ण भते ! कि कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि ॥

१२८. नेरइयाण—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मपदेसोगाढा जाव सिय कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि[1]। एवं 'एगिदिय-सिद्धवज्जा सव्वे वि'[1]। सिद्धा एगिदिया य जहा जीवा ॥

१२९. जीवे ण भते ! कि कडजुम्मसमयट्ठितीए—पुच्छा।
गोयमा! कडजुम्मसमयट्ठितीए, नो तेयोगसमयट्ठितीए, नो दावरजुम्मसमयट्ठितीए, नो कलियोगसमयट्ठितीए ॥

१३०. नेरइए ण भते !—पुच्छा।
गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयट्ठितीए जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीए। एव जाव वेमाणिए। सिद्धे जहा जीवे ॥

१३१. जीवा ण भते !—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मसमयट्ठितीया, नो तेयोगसमयट्ठितीया, नो दावरजम्मसमयट्ठितीया, नो कलियोगसमयट्ठितीया ॥

१३२. नेरइयाणं—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मसमयट्ठितीया जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीया वि; विहाणादेसेणं कडजुम्मसमयट्ठितीया वि जाव कलियोगसमयट्ठितीया वि। एव जाव वेमाणिया। सिद्धा जहा जीवा ॥

१३३. जीवे ण भते ! कालावण्णपज्जवेहि कि कडजुम्मे—पुच्छा।
गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च नो कडजुम्मे जाव नो कलियोगे। सरीरपदेसे

---

१. एगिंदियेवज्जा जाव (क, ता, ब)।

पडुच्च सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे। एवं जाव वेमाणिए। सिद्धो ण चेव पुच्छिज्जति ॥

१३४. जीवा ण भंते ! कालावण्णपज्जवेहिं—पुच्छा।
गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि नो कडजुम्मा जाव नो कलियोगा। सरीरपदेसे पडुच्च ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। एवं जाव वेमाणिया। एव नीलावण्णपज्जवेहि दडओ भाणियव्वो एगत्तपुहत्तेण। एवं जाव लुक्खफासपज्जवेहिं[1] ॥

१३५. जीवे ण भते ! आभिणिवोहियनाणपज्जवेहिं कि कडजुम्मे - पुच्छा।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे। एव एगिंदियवज्जं जाव वेमाणिए ॥

१३६. जीवा ण भते ! आभिणिवोहियनाणपज्जवेहि—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। एव एगिदियवज्ज जाव वेमाणिया। एव सुयनाणपज्जवेहिं[2] वि। ओहिनाणपज्जवेहि वि एव चेव, नवर—विगलिदियाण नत्थि ओहिनाण। मणपज्जवनाण पि एवं चेव, नवर—जीवाण मणुस्साण य, सेसाण नत्थि ॥

१३७. जीवे णं भते ! केवलनाणपज्जवेहिं किं कडजुम्मे—पुच्छा।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे। एव मणुस्से वि। एव सिद्धे वि ॥

१३८. जीवा ण भते ! केवलनाणपज्जवेहि कि कडजुम्मा—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा। एव मणुस्सा वि। एव सिद्धा वि ॥

१३९. जीवे ण भते ! मइअण्णाणपज्जवेहि कि कडजुम्मे० ? जहा आभिणिवोहियनाणपज्जवेहि तहेव दो दडगा। एवं सुयअण्णाणपज्जवेहि वि। एव विभगनाणपज्जवेहि वि। चक्खुदसण-अचक्खुदसण-ओहिदंसणपज्जवेहि वि एव चेव, नवरं—जस्स ज अत्थि त भाणियव्वं। केवलदसणपज्जवेहिं जहा केवलनाणपज्जवेहिं ॥

सरीर-पदं

१४०. कति णं भंते ! सरीरगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पच सरीरगा पण्णत्ता, त जहा—ओरालिए जाव कम्मए। एत्थ सरीरगपद निरवसेसं भाणियव्वं जहा[3] पण्णवणाए ॥

१. लुक्खाफास० (ता)।
२. ०पज्जवेहि (ता, स)।
३. प० १२।

सेय-निरेय-पदं

१४१. जीवा णं भंते ! किं सेया ? निरेया ?
गोयमा ! जीवा सेया वि, निरेया वि ।।

१४२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवा सेया वि, निरेया वि ?
गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—'संसारसमावण्णगा य, असंसारसमावण्णगा'[1] य । तत्थ णं जे ते असंसारसमावण्णगा ते णं सिद्धा । सिद्धा णं दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरसिद्धा य, परंपरसिद्धा य । तत्थ णं जे ते परंपरसिद्धा ते णं निरेया । तत्थ णं जे ते अणंतरसिद्धा ते णं सेया ।।

१४३. ते णं भंते ! किं देसेया ? सव्वेया ?
गोयमा ! नो देसेया, सव्वेया । तत्थ णं जे ते संसारसमावण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सेलेसिपडिवण्णगा य, असेलेसिपडिवण्णगा य । तत्थ णं जे ते सेलेसिपडिवण्णगा ते णं निरेया, तत्थ णं जे ते असेलेसीपडिवण्णगा ते णं सेया ।।

१४४. ते णं भंते ! किं देसेया ? सव्वेया ?
गोयमा ! देसेया वि, सव्वेया वि । से तेणट्ठेणं[2] °गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवा सेया वि,° निरेया वि ।।

१४५. नेरइया णं भंते ! किं देसेया ? सव्वेया ?
गोयमा ! देसेया वि, सव्वेया वि ।।

१४६. से केणट्ठेणं जाव सव्वेया वि ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—विग्गहगतिसमावण्णगा य, अविग्गहगतिसमावण्णगा य । तत्थ णं जे ते विग्गहगतिसमावण्णगा ते णं सव्वेया, तत्थ णं जे ते अविग्गहगतिसमावण्णगा ते णं देसेया । से तेणट्ठेणं जाव सव्वेया वि । एवं जाव वेमाणिया ।।

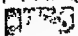
पोग्गल-पदं

१४७. परमाणुपोग्गला णं भंते ! किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ?
गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता । एवं जाव अणंतपदेसिया खंधा ।।

१४८. एगपदेसोगाढा णं भंते ! पोग्गला किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ? एवं चेव । एवं जाव असंखेज्जपदेसोगाढा ।।

---

१. असंसारसमावण्णगा य संसार° (ता) । २. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव निरेया ।



१४९ एगसमयट्ठितीया ण भते ! पोग्गला कि सखेज्जा० ? एव चेव। एव जाव असखेज्जसमयट्ठितीया ॥

१५० एगगुणकालगा ण भते ! पोग्गला कि सखेज्जा० ? एव चेव । एव जाव अणंत-गुणकालगा। एव अवसेसा वि वण्णगधरसफासा नेयव्वा जाव अणतगुण-लुक्ख त्ति ॥

१५१ एएसि ण भते ! परमाणुपोग्गलाण दुपदेसियाण य खधाण दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहितो वहुया[1] ?
गोयमा ! दुपदेसिएहितो खधेहितो परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए वहुया ॥

१५२ एएसि णं भते ! दुपदेसियाण तिपदेसियाण य खधाण दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहितो बहुया ?
गोयमा ! तिपदेसिएहितो खधेहितो दुपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए वहुया । एव एएण गमएण जाव दसपदेसिएहितो खधेहितो नवपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए वहुया ॥

१५३. एएसि ण भते ! दसपदेसियाण—पुच्छा ।
गोयमा ! दसपदेसिएहितो खधेहितो सखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए बहुया ॥

१५४. एएसि णं भते ! सखेज्जपदेसियाण—पुच्छा ।
गोयमा ! सखेज्जपदेसिएहितो खधेहितो असखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए वहुया ॥

१५५. एएसि णं भते ! असखेज्जपदेसियाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! अणतपदेसिएहितो खधेहितो असखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए वहुया ॥

१५६ एएसि ण भंते ! परमाणुपोग्गलाण दुपदेसियाण य खधाण पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहितो बहुया ?
गोयमा ! परमाणुपोग्गलेहितो दुपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए बहुया। एव एएणं गमएण जाव नवपदेसिएहितो खधेहितो दसपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए बहुया । एव सव्वत्थ[2] पुच्छियव्वं । दसपदेसिएहितो खधेहितो सखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए वहुया । सखेज्जपदेसिएहितो खधेहितो असखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए बहुया ॥

१५७. एएसि ण भते ! असंखेज्जपदेसियाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! अणंतपदेसिएहितो खधेहितो असखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए वहुया ॥

---

१. अप्पा वा वहुया वा (स) । २. सव्वत्थ वि (म) ।

१५८. एएसि णं भंते ! एगपदेसोगाढाण दुपदेसोगाढाण य पोग्गलाण दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो[1] विसेसाहिया[2] ?
गोयमा ! दुपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया। एव एएण गमएणं तिपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो दुपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया जाव दसपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो नवपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया। दसपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए वहुया। सखेज्जपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए वहुया। पुच्छा सव्वत्थ भाणियव्वा ॥

१५६. एएसि ण भंते ! एगपदेसोगाढाण दुपदेसोगाढाण य पोग्गलाणं पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो विसेसाहिया[3] ?
गोयमा ! एगपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो दुपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए विसेसाहिया। एव जाव नवपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो दसपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए विसेसाहिया। दसपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए वहुया। संखेज्जपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए वहुया ॥

१६०. एएसि ण भते ! एगसमयट्ठितीयाण दुसमयट्ठितीयाण य पोग्गलाण दव्वट्ठयाए० ?
जहा ओगाहणाए वत्तव्वया एवं ठितीए वि ॥

१६१ एएसि णं भंते ! एगगुणकालगाण दुगुणकालगाण य पोग्गलाण दव्वट्ठयाए० ?
एएसि ण जहा परमाणुपोग्गलादीण तहेव वत्तव्वया निरवसेसा[4]। एवं सव्वेसि वण्ण-गध-रसाणं ॥

१६२. एएसि ण भंते ! एगगुणकक्खडाण दुगुणकक्खडाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो विसेसाहिया[5] ?
गोयमा ! एगगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो दुगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया। एव जाव नवगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो दसगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया। दसगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो सखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया। सखेज्जगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो असखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया। असखेज्जगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो अणतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया। एवं पदेसट्ठयाए वि[6]। सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा। जहा कक्खडा एव मउय-गरुय-लहुया वि। सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खा जहा वण्णा।

---

१. कयरेहिंतो जाव (ता, स)।
२. विसेसाहिया वा (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. जाव विसेसाहिया वा (अ, ता, स)।
४. निरवसेस (अ, ता)।
५. जाव विसेसाहिया (ता)।
६. × (अ)।

१६३ एएसि ण भंते ! परमाणुपोग्गलाणं, सखेज्जपदेसियाणं, असंखेज्जपदेसियाणं, अणंतपदेसियाण य खधाण दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहितो[1] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?• विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए अणतगुणा, सखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, असखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा। पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए, परमाणुपोग्गला अपदेसट्ठयाए अणतगुणा, सखेज्जपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए सखेज्जगुणा, असखेज्जपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा। दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए, 'ते चेव'[2] पदेसट्ठयाए अणतगुणा, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए अणतगुणा, सखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ॥

१६४ एएसि णं भंते ! एगपदेसोगाढाण, सखेज्जपदेसोगाढाण, असंखेज्जपदेसोगाढाण य पोग्गलाण दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहितो[3] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?• विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए, सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा। पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला अपदेसट्ठयाए, सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए सखेज्जगुणा, असंखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए— सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए, सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा। असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ॥

१६५ एएसि णं भंते ! एगसमयट्ठितीयाणं, सखेज्जसमयट्ठितीयाण, असंखेज्जसमयट्ठितीयाण य पोग्गलाण० ? जहा ओगाहणाए तहा ठितीए वि भाणियव्वं अप्पावहुग ॥

१६६. एएसि णं भंते ! एगगुणकालगाण, सखेज्जगुणकालगाण, असंखेज्जगुणकालगाणं, अणतगुणकालगाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
एएसिं जहा परमाणुपोग्गलाण अप्पावहुग तहा एएसिं पि अप्पावहुगं। एव सेसाण वि वण्ण-गध-रसाणं ॥

१. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया।
२. तेच्चेव (ता)।
३. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया।

१६७. एएसि णं भंते ! एगगुणकक्खडाणं, संखेज्जगुणकक्खडाणं, असंखेज्जगुणकक्ख-डाणं, अणंतगुणकक्खडाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठ-याए कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा एगगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए, संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, अणंतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए अणंतगुणा। पदेसट्ठयाए एवं चेव, नवरं—संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। सेसं तं चेव। दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा एगगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठ-पदेस-ट्ठयाए। संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा। असंखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। अणंतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए अणंतगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए अणंतगुणा। एवं मउय-गरुय-लहुयाण वि अप्पाबहुयं। सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खाणं तहा वण्णाणं तहेव॥

१६८. परमाणुपोग्गले णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे ? तेयोए ? दावरजुम्मे ? कलियोगे ?

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे। एवं जाव अणंत-पदेसिए खंधे॥

१६९. परमाणुपोग्गला णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मा—पुच्छा।

गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा। एवं जाव अणंतपदेसिया खंधा॥

१७०. परमाणुपोग्गले णं भंते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे॥

१७१. दुपदेसिए—पुच्छा।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, दावरजुम्मे, नो कलियोगे॥

१७२. तिपदेसिए—पुच्छा।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे॥

१७३. चउप्पदेसिए—पुच्छा।

गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे। पंचपदेसिए जहा परमाणुपोग्गले। छप्पदेसिए जहा दुप्पदेसिए। सत्तपदेसिए जहा

---

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

तिपदेसिए। अट्ठपदेसिए जहा चउप्पदेसिए। नवपदेसिए जहा परमाणुपोग्गले। दसपदेसिए जहा दुप्पदेसिए ॥

१७४. सखेज्जपदेसिए ण भते! पोग्गले—पुच्छा।
गोयमा! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे। एव असखेज्जपदेसिए वि, अणतपदेसिए वि ॥

१७५ परमाणुपोग्गला णं भते! पदेसट्ठयाए कि कडजुम्मा—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा ॥

१७६ दुप्पदेसिया णं—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा, नो तेयोगा, सिय दावरजुम्मा, नो कलियोगा; विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, दावरजुम्मा, नो कलियोगा ॥

१७७ तिपदेसिया ण—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा ॥

१७८ चउप्पदेसिया ण—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा। पंचपदेसिया जहा परमाणुपोग्गला। छप्पदेसिया जहा दुप्पदेसिया। सत्तपदेसिया जहा तिपदेसिया। अट्ठपदेसिया जहा चउपदेसिया। नवपदेसिया जहा परमाणुपोग्गला। दसपदेसिया जहा दुपदेसिया ॥

१७९ सखेज्जपदेसिया णं—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेण कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। एवं असखेज्जपदेसिया वि, अणतपदेसिया वि ॥

१८० परमाणुपोग्गले ण भते! कि कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा।
गोयमा! नो कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, कलियोगपदेसोगाढे ॥

१८१. दुपदेसिए ण—पुच्छा।
गोयमा! नो कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, सिय दावरजुम्मपदेसोगाढे, सिय कलियोगपदेसोगाढे ॥

१८२. तिपदेसिए ण—पुच्छा।
गोयमा! नो कडजुम्मपदेसोगाढे, सिय तेयोगपदेसोगाढे, सिय दावरजुम्मपदेसोगाढे, सिय कलियोगपदेसोगाढे ॥

१८३. चउप्पदेसिए ण—पुच्छा।

गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे जाव सिय कलियोगपदेसोगाढे । एवं जाव अणतपदेसिए ॥

१८४. परमाणुपोग्गला णं भंते ! कि कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, कलियोगपदेसोगाढा ॥

१८५. दुप्पदेसिया णं—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, दावरजुम्मपदेसोगाढा वि, कलियोगपदेसोगाढा वि ॥

१८६. तिप्पदेसिया णं—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेण नो कडजुम्मपदेसोगाढा, तेयोगपदेसोगाढा वि, दावरजुम्मपदेसोगाढा वि, कलियोगपदेसोगाढा वि ॥

१८७. चउप्पदेसिया णं—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि । एवं जाव अणतपदेसिया ॥

१८८. परमाणुपोग्गले ण भते ! कि कडजुम्मसमयट्ठितीए—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयट्ठितीए जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीए । एवं जाव अणतपदेसिए ॥

१८९. परमाणुपोग्गला णं भते ! कि कडजुम्म—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मसमयट्ठितीया जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीया; विहाणादेसेण कडजुम्मसमयट्ठितीया वि जाव कलियोगसमयट्ठिनीया वि । एवं जाव अणतपदेसिया ॥

१९०. परमाणुपोग्गले णं भते ! कालावण्णपज्जवेहिं कि कडजुम्मे ? तेयोगे ? जहा ठितीए वत्तव्वया एव वण्णेसु वि सव्वेसु । गधेसु वि एव चेव । रसेसु वि जाव महुरो रसो त्ति ॥

१९१. अणंतपदेसिए ण भंते ! खधे कक्खडफासपज्जवेहि कि कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे ॥

१९२. अणतपदेसिया ण भंते ! खधा कक्खडफासपज्जवेहि कि कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेणं कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि । एवं मउय-गरुय-लहुया वि भाणियव्वा । सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खा जहा वण्णा ॥

१९३. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं सड्ढे ? अणड्ढे ?
गोयमा नो सड्ढे, अणड्ढे ॥

१९४ दुपदेसिए णं—पुच्छा ।
गोयमा ! सड्ढे, नो अणड्ढे । तिपदेसिए जहा परमाणुपोग्गले । चउपदेसिए जहा दुपदेसिए । पचपदेसिए जहा तिपदेसिए । छप्पदेसिए जहा दुपदेसिए । सत्तपदेसिए जहा तिपदेसिए । अट्ठपदेसिए जहा दुपदेसिए । नवपदेसिए जहा तिपदेसिए । दसपदेसिए जहा दुपदेसिए ॥

१९५. सखेज्जपदेसिए णं भंते ! खंधे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय सड्ढे, सिय अणड्ढे । एवं असखेज्जपदेसिए वि । एव अणंतपदेसिए वि ॥

१९६. परमाणुपोग्गला ण भते ! कि सड्ढा[1] ? अणड्ढा ?
गोयमा ! सड्ढा वा, अणड्ढा वा । एव जाव अणतपदेसिया ॥

१९७ परमाणुपोग्गले ण भते ! कि सेए ? निरेए ?
गोयमा ! सिय सेए, सिय निरेए । एव जाव अणंतपदेसिए ॥

१९८. परमाणुपोग्गला ण भते ! किं सेया ? निरेया ?
गोयमा ! सेया वि, निरेया वि । एव जाव अणतपदेसिया ॥

१९९. परमाणुपोग्गले ण भते ! सेए कालओ केवच्चिर[2] होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण आवलियाए असंखेज्जइभागं ॥

२००. परमाणुपोग्गले ण भते ! निरेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण असखेज्जं काल । एव जाव अणतपदेसिए ॥

२०१. परमाणुपोग्गला ण भते ! सेया कालओ केवच्चिर होंति ?
गोयमा ! सव्वद्ध ॥

२०२ परमाणुपोग्गला ण भते ! निरेया कालओ केवच्चिर होंति ?
गोयमा ! सव्वद्ध । एवं जाव अणतपदेसिया ॥

२०३. परमाणुपोग्गलस्स ण भते ! सेयस्स केवतिय काल अतरं होइ ?
गोयमा ! सट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल । परट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण असखेज्ज कालं ॥

२०४. निरेयस्स केवतिय काल अतर होइ ?
गोयमा ! सट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेणं आवलियाए असखेज्जइभाग । परट्ठाणंतर पडुच्च जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्ज कालं ॥

---

१. साढा (ख, ता) ।
२. केवचिर (अ, क, ख, म) ।

२०५. दुपदेसियस्स णं भंते ! खंधस्स सेयस्स—पुच्छा।
गोयमा ! सट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। परट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं ॥

२०६. निरेयस्स केवतिय कालं अंतर होइ ?
गोयमा ! सट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असखेज्जइभागं। परट्ठाणंतर पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं। एवं जाव अणंतपदेसियस्स ॥

२०७. परमाणुपोग्गलाणं भंते ! सेयाणं केवतियं कालं अंतर होइ ?
गोयमा ! नत्थि अंतरं ॥

२०८. निरेयाणं केवतियं काल अंतरं होइ ?
गोयमा ! नत्थि अतरं। एवं जाव अणंतपदेसियाणं खंधाण ॥

२०९. एएसि ण भंते ! परमाणुपोग्गलाणं सेयाणं निरेयाण य कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा परमाणुपोग्गला सेया, निरेया असंखेज्जगुणा। एव जाव असखेज्जपदेसियाणं खंधाणं ॥

२१०. एएसि णं भंते ! अणंतपदेसियाणं खंधाणं सेयाणं निरेयाण य कयरे कयरेहिंतो[2] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खंधा निरेया, सेया अणंतगुणा ॥

२११ एएसि ण भंते ! परमाणुपोग्गलाणं, सखेज्जपदेसियाणं, असखेज्जपदेसियाणं, अणतपदेसियाण य खधाण सेयाण निरेयाण य दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो[3] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! १ सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए २. अणतपदेसिया खधा सेया दव्वट्ठयाए अणतगुणा ३ परमाणुपोग्गला सेया दव्वट्ठयाए अणत-गुणा ४. सखेज्जपदेसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ५. असखेज्ज-पदेसिया खधा सेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ६. परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ७ सखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए सखेज्ज-गुणा[4] ८. असंखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा। पदेसट्ठयाए एव चेव, नवर—परमाणुपोग्गला अपदेसट्ठयाए भाणियव्वा। सखेज्जपदेसिया खधा निरेया पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा। सेस तं चेव। दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—१. सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए २. ते चेव पदेसट्ठयाए

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
३. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
४. असंखेज्जगुणा (ख, ता)।

अणतगुणा ३ अणतपदेसिया खधा सेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ४. ते चेव पदेसट्ठयाए अणंतगुणा ५. परमाणुपोग्गला सेया दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए अणंतगुणा ६ संखेज्जपदेसिया खधा सेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ७ ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ८ असखेज्जपदेसिया खधा सेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ९. ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा १० परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ११ सखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा १२ ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा १३ असंखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १४. ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्ज-गुणा ॥

२१२. परमाणुपोग्गले ण भते ! कि देसेए ? सव्वेए ? निरेए ?
गोयमा ! नो देसेए, सिय सव्वेए, सिय निरेए ॥

२१३ दुपदेसिए ण भते ! खधे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय देसेए, सिय सव्वेए, सिए निरेए । एवं जाव अणंतपदेसिए ॥

२१४. परमाणुपोग्गला ण भते ! कि देसेया ? सव्वेया ? निरेया ?
गोयमा ! नो देसेया, सव्वेया वि, निरेया वि ॥

२१५ दुपदेसिया णं भते ! खंधा—पुच्छा ।
गोयमा ! देसेया वि, सव्वेया वि, निरेया वि । एवं जाव अणतपदेसिया ॥

२१६ परमाणुपोग्गले ण भते ! सव्वेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभागं ॥

२१७ निरेए कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेणं असखेज्ज काल ॥

२१८. दुपदेसिए ण भते ! खधे देसेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभाग ॥

२१९. सव्वेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण आवलियाए असंखेज्जइभागं ॥

२२० निरेए कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण असंखेज्ज काल । एवं जाव अणत-पदेसिए ॥

२२१ परमाणुपोग्गला णं भते ! सव्वेया कालओ केवच्चिरं होंति ?
गोयमा ! सव्वद्ध ॥

२२२. निरेया कालओ केवच्चिर होंति ? सव्वद्ध ॥

२२३ दुप्पदेसिया णं भते ! खंधा देसेया कालओ केवच्चिर होंति ? सव्वद्धं ॥

२२४. सव्वेया कालओ केवच्चिर होंति ? सव्वद्ध ॥

२२५. निरेया कालओ केवच्चिर होंति ? सव्वद्धं । एवं जाव अणंतपदेसिया ॥

२२६ परमाणुपोग्गलस्स णं भंते ! सव्वेयस्स केवतिय काल अंतर होइ ?
गोयमा ! सट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण असंखेज्जं कालं । परट्ठाणंतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण एव चेव ॥

२२७. निरेयस्स केवतिय काल अतर होइ ?
सट्ठाणतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेणं आवलियाए असखेज्जइ-भागं । परट्ठाणंतर पडुच्च जहण्णेणं एक्क समयं, उक्कोसेण असखेज्जं काल ॥

२२८. दुपदेसियस्स ण भंते ! खंधस्स देसेयस्स केवतियं काल अतरं होइ ?
सट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेणं असखेज्ज कालं । परट्ठाणंतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण अणंतं कालं ॥

२२६. सव्वेयस्स केवतिय काल अतर होइ ? एव चेव जहा देसेयस्स ॥

२३०. निरेयस्स केवतिय काल अतरं होइ ?
सट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइ-भागं । परट्ठाणतरं पडुच्च जहण्णेण एक्क समयं, उक्कोसेण अणतं कालं । एवं जाव अणतपदेसियस्स ॥

२३१. परमाणुपोग्गलाणं भंते ! सव्वेयाण केवतियं कालं अंतर होइ ? 'नत्थि अंतर'[1] ॥

२३२. निरेयाणं केवतिय कालं अतरं होइ ? नत्थि अंतरं ॥

२३३. दुपदेसियाणं भंते ! खधाण देसेयाणं केवतियं काल अंतरं होइ ? नत्थि अंतरं ॥

२३४. सव्वेयाण केवतिय काल अतर होइ ? नत्थि अतर ॥

२३५. निरेयाण केवतियं काल अंतर होइ ? नत्थि अतर । एव जाव अणतपदेसियाण ॥

२३६. एएसि ण भंते ! परमाणुपोग्गलाणं सव्वेयाण निरेयाण य कयरे कयरेहितो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा परमाणुपोग्गला सव्वेया, निरेया असखेज्जगुणा ॥

२३७. एएसि ण भंते ! दुपदेसियाण खधाण देसेयाण, सव्वेयाणं, निरेयाण य कयरे कयरेहितो[3] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा दुपदेसिया खधा सव्वेया, देसेया असखेज्जगुणा, निरेया असखेज्जगुणा । एव जाव असखेज्जपदेसियाण खधाण ॥

२३८. एएसि ण भंते ! अणंतपदेसियाण खधाणं देसेयाण, सव्वेयाणं, निरेयाण य

---

१. नत्थतर (अ, क, ख, ता, म) ।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा सव्वेया, निरेया अणतगुणा, देसेया अणतगुणा ।।

२३९. एएसि ण भते ! परमाणुपोग्गलाण, संखेज्जपदेसियाण असखेज्जपदेसियाणं अणतपदेसियाण य खधाण देसेयाणं, सव्वेयाण, निरेयाण दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहितो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! १ सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा सव्वेया दव्वट्ठयाए २ अणत-पदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ३ अणंतपदेसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए अणतगुणा ४ असखेज्जपदेसिया खधा सव्वेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ५ सखेज्जपदेसिया खधा सव्वेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ६ परमाणुपोग्गला सव्वेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ७. सखेज्जपदेसिया खधा देसेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ८ असखेज्जपदेसिया खधा देसेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ९ परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा १०. सखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा ११ असखेज्जपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा । पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा अणतपदेसिया । एव पदेसट्ठयाए वि, नवर—परमाणुपोग्गला अपदेसट्ठयाए भाणियव्वा । सखेज्जपदे-सिया खधा निरेया पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा । सेसं त चेव । दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए —१ सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा सव्वेया दव्वट्ठयाए २ ते चेव पदेसट्ठयाए अणतगुणा ३ अणतपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ४ ते चेव पदेसट्ठयाए अणतगुणा ५. अणतपदेसिया खधा देसेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ६ ते चेव पदेसट्ठयाए अणतगुणा ७. असखेज्जपदेसिया खधा सव्वेया दव्वट्ठ-याए अणतगुणा ८. ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ९ सखेज्जपदेसिया खधा सव्वेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा १०. ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा[3] ११ परमाणुपोग्गला सव्वेया दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा १२ सखेज्ज-पदेसिया खधा देसेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा १३ ते चेव पदेसट्ठयाए असं-खेज्जगुणा १४ असखेज्जपदेसिया खधा देसेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा १५. ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १६ परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठ-अपदेसट्ठ-याए असखेज्जगुणा १७. संखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया । ३. संखेज्जगुणा (ता) ।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

१८. ते चेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा १९. असंखेज्जपदेसिया निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा २०. ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ॥

मज्झपदेसा-पदं

२४०. कति णं भंते ! धम्मत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठ धम्मत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ॥

२४१. कति ण भंते ! अधम्मत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ? एव चेव ॥

२४२. कति णं भते ! आगासत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ? एव चेव ॥

२४३. कति ण भंते ! जीवत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठ जीवत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ॥

२४४. एए णं भते ! अट्ठ जीवत्थिकायस्स मज्झपदेसा कतिसु आगासपदेसेसु ओगाहंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कसि वा दोहिं वा तीहि वा चउहि वा पंचहि वा छहि वा, उक्कोसेणं अट्ठसु, नो चेव णं सत्तसु ॥

२४५. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति ॥

पंचमो उद्देसो

पज्जव-पदं

२४६. कतिविहा ण भते ! पज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पज्जवा पण्णत्ता, तं जहा—जीवपज्जवा य, अजीवपज्जवा य । पज्जवपदं[1] निरवसेसं भाणियव्वं जहा[2] पण्णवणाए ॥

काल-पदं

२४७ आवलिया णं भते ! किं सखेज्जा समया ? असखेज्जा समया ? अणंता समया ?
गोयमा ! नो संखेज्जा समया, असंखेज्जा समया, नो अणता समया ॥

२४८. आणापाणू णं भंते ! किं सखेज्जा० ? एवं चेव ॥

---

१. जीवपय (अ) । २. प० ५ ।

गोयमा ! नो संखेज्जाओ आवलियाओ, सिय असंखेज्जाओ आवलियाओ, सिय अणंताओ आवलियाओ । एव जाव उस्सप्पिणीओ ॥

२६०. पोग्गलपरियट्टा णं—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सखेज्जाओ आवलियाओ, नो असंखेज्जाओ आवलियाओ, अणंताओ आवलियाओ ॥

२६१ थोवे णं भते ! कि संखेज्जाओ आणापाणूओ ? असंखेज्जाओ० ? जहा आवलियाए वत्तव्वया एवं आणापाणूओ वि निरवसेसा । एव एतेण गमएण जाव सीसपहेलिया भाणियव्वा ॥

२६२ सागरोवमे ण भते ! कि सखेज्जा पलिओवमा ?—पुच्छा ।
गोयमा ! संखेज्जा पलिओवमा, नो असंखेज्जा पलिओवमा, नो अणंता पलिओवमा । एव ओसप्पिणी वि, उस्सप्पिणी वि ॥

२६३. पोग्गलपरियट्टे ण—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जा पलिओवमा, नो असखेज्जा पलिओवमा, अणता पलिओवमा । एव जाव सव्वद्धा ॥

२६४. सागरोवमा ण भंते ! कि सखेज्जा पलिओवमा—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय सखेज्जा पलिओवमा, सिय असखेज्जा पलिओवमा, सिय अणता पलिओवमा । एव जाव ओसप्पिणी वि, उस्सप्पिणी वि ॥

२६५. पोग्गलपरियट्टा ण—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सखेज्जा पलिओवमा, नो असखेज्जा पलिओवमा, अणता पलिओवमा ॥

२६६. ओसप्पिणी ण भते ! कि सखेज्जा सागरोवमा० ? जहा पलिओवमस्स वत्तव्वया तहा सागरोवमस्स वि ॥

२६७. पोग्गलपरियट्टे ण भते ! कि सखेज्जाओ ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीओ—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, नो सखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, अणताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ । एवं जाव सव्वद्धा ॥

२६८. पोग्गलपरियट्टा ण भते ! कि सखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, नो असखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, अणताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ ॥

२६९. तीतद्धा णं भते ! कि सखेज्जा पोग्गलपरियट्टा—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, नो असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, अणता पोग्गलपरियट्टा । एव अणागयद्धा वि । एव सव्वद्धा वि ॥

२७०. अणागयद्धा ण भते ! कि संखेज्जाओ तीतद्धाओ ? असखेज्जाओ० ? अणताओ० ?

गोयमा ! नो सखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो असखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो अणताओ तीतद्धाओ। अणागयद्धा ण तीतद्धाओ समयाहिया, तीतद्धा ण अणागयद्धाओ समयूणा ।।

२७१ सव्वद्धा ण भते ! कि सखेज्जाओ तीतद्धाओ—पुच्छा।
गोयमा ! नो सखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो असखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो अणंताओ तीतद्धाओ। सव्वद्धा ण तीतद्धाओ सातिरेगदुगुणा, तीतद्धा ण सव्वद्धाओ थोवूणए अद्धे ।।

२७२. सव्वद्धा ण भते ! कि सखेज्जाओ अणागयद्धाओ—पुच्छा।
गोयमा ! नो सखेज्जाओ अणागयद्धाओ, नो असखेज्जाओ अणागयद्धाओ, नो अणंताओ अणागयद्धाओ। सव्वद्धा णं अणागयद्धाओ थोवूणगदुगुणा। अणागयद्धा ण सव्वद्धाओ सातिरेगे अद्धे ।।

निगोद-पदं

२७३ कतिविहा ण भते ! निओदा[1] पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा निओदा पण्णत्ता, त जहा—निओयगा य, निओयगजीवा य ।।

२७४. निओदा ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुहुमनिगोदा[2] य, बायरनिओदा[3] य। एव निओदा भाणियव्वा जहा[4] जीवाभिगमे तहेव निरवसेस ।।

नाम-पदं

२७५ कतिविहे ण भते ! नामे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे नामे पण्णत्ते, तं जहा—ओदइए जाव[5] सण्णिवाइए ।।

२७६. से कि तं ओदइए नामे ?
ओदइए नामे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—उदए य, उदयनिप्फण्णे य—एवं जहा सत्तरसमसए पढमे उद्देसए भावो तहेव इह वि, नवरं—इमं नामनाणत्त,[6] सेस तहेव जाव[7] सण्णिवाइए ।।

२७७ सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति ।।

---

१. नियोया (अ, ता)।
२. सुहुमा नि० (ता)।
३ वातरनि० (क), वादरा नि० (ता)।
४. जी० ५।२।
५. भ. १७।१६।
६. नाणत्त (अ, ख, ता, व, म, स)।
७. भ० १७।१७।

छट्ठो उद्देसो

१. पण्णवण २. वेद ३. रागे, ४. कप्प ५. चरित्त ६. पडिसेवणा ७. नाणे।
८. तित्थे ९. लिंग १०. सरीरे, ११. खेत्ते १२. काल १३. गइ १४. सजम
१५. निकासे ॥१॥
१६,१७. जोगुवओग १८. कसाए, १९. लेसा २०. परिणाम २१ 'बध
२२ वेदे य'[1]।
२३. कम्मोदीरण २४. उवसंपजहण्ण, २५. सण्णा य २६. आहारे ॥२॥
२७. भव २८. आगरिसे ,२९,३०. कालतरे य ३१. समुग्घाय ३२ खेत्त
३३ फुसणा य।
३४. भावे ३५ परिमाणे[2] खलु[3], ३६, अप्पाबहुय नियठाण ॥३॥

पण्णवण-पदं

२७८ रायगिहे जाव एवं वयासी—कति णं भंते ! नियंठा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच नियंठा पण्णत्ता, त जहा—पुलाए, बउसे, कुसीले, नियठे, सिणाए ॥

२७९. पुलाए णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—नाणपुलाए, दसणपुलाए, चरित्तपुलाए, लिंगपुलाए, अहासुहुमपुलाए नाम पचमे ॥

२८०. बउसे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—आभोगबउसे, अणाभोगबउसे, संवुडबउसे, असंवुडबउसे, अहासुहुमबउसे नामं पचमे ॥

२८१. कुसीले ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पडिसेवणाकुसीले य, कसायकुसीले य ॥

२८२. पडिसेवणाकुसीले ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—नाणपडिसेवणाकुसीले, दसणपडिसेवणाकुसीले, चरित्तपडिसेवणाकुसीले, लिगपडिसेवणाकुसीले, अहासुहुमपडिसेवणाकुसीले नाम पचमे ॥

२८३. कसायकुसीले णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—नाणकसायकुसीले, दंसणकसायकुसीले, चरित्तकसायकुसीले, लिगकसायकुसीले, अहासुहुमकसायकुसीले नामं पंचमे ॥

---

१. बधणे वेदे (ता, ब)।
२. परिणामे (अ, स)।
३. या (ता)।

२८४ नियठे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—पढमसमयनियठे, अपढमसमयनियठे, चरिमसमयनियठे[1], अचरिमसमयनियठे, अहासुहुमनियठे नाम पचमे ॥

२८५ सिणाए ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—अच्छवी, असवले, अकम्मसे, ससुद्धनाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली[2], अपरिस्सावी[3] ॥

वेद-पदं

२८६ पुलाए ण भते ! कि सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ॥

२८७ जइ सवेदए होज्जा कि इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिसनपुसग-वेदए होज्जा ?
गोयमा ! नो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, पुरिसनपुसगवेदए वा होज्जा ॥

२८८. वउसे ण भते ! कि सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ॥

२८९ जइ सवेदए होज्जा कि इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिस-नपुसगवेदए होज्जा ?
गोयमा ! इत्थिवेदए वा होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, पुरिसनपुसगवेदए वा होज्जा । एव पडिसेवणाकुसीले वि ॥

२९० कसायकुसीले ण भते ! कि सवेदए—पुच्छा ।
गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा ॥

२९१. जइ अवेदए कि उवसतवेदए ? खीणवेदए होज्जा ?
गोयमा ! उवसतवेदए वा होज्जा, खीणवेदए वा होज्जा ॥

२९२ जइ सवेदए होज्जा कि इत्थिवेदए—पुच्छा ।
गोयमा ! तिसु वि जहा बउसो ॥

---

१. चरम° (स) ।

२. उत्तराध्ययनेषु त्वर्हन् जिन केवलीत्यय पञ्चमो भेद उक्त । अपरिश्रावीति तु नाधीतमेव, इह चावस्थाभेदेन भेदो न केनचिद् वृत्तिकृतेहान्यत्र च ग्रन्थे व्याख्यातस्तत्र चैवं सभावयाम —शब्दनयापेक्षयैतेषा भेदो भावनीय शक्रपुरन्दरावदिति (वृ), स्थानाङ्गवृत्तौ भाष्योल्लेखपूर्वकमेतच्चर्चितमस्ति—निष्क्रियत्वात् सकलयोगनिरोधे अपरिश्रावीति पञ्चम, क्वचित्पुनरर्हन् जिन इति पञ्चम । अत्र भाष्यगाथा—अच्छवि अस्सवले या, अकम्म संसुद्ध अरह-जिणा ।

३. अपरिसाती (ता) ।

२९३. नियंठे णं भंते ! कि सवेदए—पुच्छा।
गोयमा ! नो सवेदए होज्जा, अवेदए होज्जा ॥

२९४. जइ अवेदए होज्जा कि उवसंतवेदए—पुच्छा।
गोयमा ! उवसतवेदए वा होज्जा, खीणवेदए वा होज्जा ॥

२९५. सिणाए णं भंते ! कि सवेदए होज्जा ०? जहा नियंठे तहा सिणाए वि, नवरं —नो उवसतवेदए होज्जा, खीणवेदए होज्जा ॥

राग-पदं

२९६. पुलाए णं भते ! किं सरागे होज्जा ? वीतरागे होज्जा ?
गोयमा ! सरागे होज्जा, नो वीतरागे होज्जा। एव जाव कसायकुसीले ॥

२९७. नियंठे णं भंते ! कि सरागे होज्जा—पुच्छा।
गोयमा ! नो सरागे होज्जा, वीतरागे होज्जा ॥

२९८. जइ वीतरागे होज्जा कि उवसंतकसायवीतरागे होज्जा ? खीणकसायवीतरागे होज्जा ?
गोयमा ! उवसंतकसायवीतरागे वा होज्जा, खीणकसायवीतरागे वा होज्जा। सिणाए एवं चेव, नवरं—नो उवसंतकसायवीतरागे होज्जा, खीणकसायवीतरागे होज्जा ॥

कप्प-पदं

२९९. पुलाए णं भंते ! कि ठियकप्पे होज्जा ? अट्ठियकप्पे होज्जा ?
गोयमा ! ठियकप्पे वा होज्जा, अट्ठियकप्पे वा होज्जा। एवं जाव सिणाए ॥

३००. पुलाए ण भते ! किं जिणकप्पे होज्जा ? थेरकप्पे होज्जा ? कप्पातीते होज्जा ?
गोयमा ! नो जिणकप्पे होज्जा, थेरकप्पे होज्जा, नो कप्पातीते होज्जा ॥

३०१ बउसे ण—पुच्छा।
गोयमा ! जिणकप्पे वा होज्जा, थेरकप्पे वा होज्जा, नो कप्पातीते होज्जा। एवं पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३०२. कसायकुसीले ण—पुच्छा।
गोयमा ! जिणकप्पे वा होज्जा, थेरकप्पे वा होज्जा, कप्पातीते वा होज्जा ॥

३०३. नियंठे ण—पुच्छा।
गोयमा ! नो जिणकप्पे होज्जा, नो थेरकप्पे होज्जा, कप्पातीते होज्जा। एवं सिणाए वि ॥

चरित्त-पदं

३०४. पुलाए णं भते ! कि सामाइयसंजमे होज्जा ? छेओवट्ठावणियसंजमे होज्जा ? परिहारविसुद्धियसंजमे होज्जा ? सुहुमसंपरागसंजमे होज्जा ? अहक्खायसंजमे होज्जा ?

गोयमा ! सामाइयसंजमे वा होज्जा, छेम्रोवट्ठावणियसजमे वा होज्जा, नो परिहारविसुद्धियसजमे होज्जा, नो सुहुमसपरागसजमे होज्जा, नो ग्रहक्खाय-सजमे होज्जा । एव बउसे वि । एव पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३०५. कसायकुसीले ण—पुच्छा ।
गोयमा ! सामाइयसजमे वा होज्जा जाव सुहुमसपरागसजमे वा होज्जा, नो ग्रहक्खायसजमे होज्जा ॥

३०६ नियठे ण—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सामाइयसजमे होज्जा जाव नो सुहुमसपरागसंजमे होज्जा, ग्रहक्खायसजमे होज्जा । एव सिणाए वि ॥

पडिसेवणा-पदं

३०७. पुलाए ण भते ! कि पडिसेवए होज्जा ? अपडिसेवए होज्जा ?
गोयमा ! पडिसेवए होज्जा, नो ग्रपडिसेवए होज्जा ॥

३०८ जइ पडिसेवए होज्जा किं मूलगुणपडिसेवए होज्जा ? उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा ?
गोयमा ! मूलगुणपडिसेवए वा होज्जा, उत्तरगुणपडिसेवए वा होज्जा । 'मूलगुणे पडिसेवमाणे'[1] पचण्ह ग्रासवाण ग्रण्णयर पडिसेवेज्जा, 'उत्तरगुणे पडिसेवमाणे'[2] दसविहस्स पच्चक्खाणस्स ग्रण्णयर पडिसेवेज्जा ॥

३०९ बउसे ण—पुच्छा ।
गोयमा ! पडिसेवए होज्जा, नो ग्रपडिसेवए होज्जा ॥

३१०. जइ पडिसेवए होज्जा किं मूलगुणपडिसेवए होज्जा ? उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा ?
गोयमा ! नो मूलगुणपडिसेवए होज्जा, उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा । उत्तरगुणे पडिसेवमाणे दसविहस्स पच्चक्खाणस्स ग्रण्णयर पडिसेवेज्जा । पडिसेवणा-कुसीले जहा पुलाए ॥

३११ कसायकुसीले ण—पुच्छा ।
गोयमा ! नो पडिसेवए होज्जा, ग्रपडिसेवए होज्जा । एवं नियठे[3] वि । एवं सिणाए वि ॥

नाण-पदं

३१२. पुलाए ण भते ! कतिसु नाणेसु होज्जा ?
गोयमा ! दोसु वा तिसु वा होज्जा । दोसु होमाणे दोसु आभिणिवोहियनाण-

---

१. मूलगुणपडि० (क, म) ;
२. उत्तरगुणपडि० (अ, ख, ब, म) ।
३. निग्गथे (स) ।

सुयनाणेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा। एवं वउसे वि। एवं पडिसेवणाकुसीले वि॥

३१३. कसायकुसीले णं—पुच्छा।
गोयमा! दोसु वा तिसु वा चउसु वा होज्जा। दोसु होमाणे दोसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाणेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा, अहवा तिसु होमाणे आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-मणपज्जवनाणेसु होज्जा, चउसु होमाणे चउसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाण-मणपज्जवनाणेसु होज्जा। एवं नियठे वि॥

३१४. सिणाए ण—पुच्छा।
गोयमा! एगम्मि केवलनाणे होज्जा॥

३१५. पुलाए ण भंते! केवतियं सुयं अहिज्जेज्जा?
गोयमा! जहण्णेणं नवमस्स पुव्वस्स ततिय आयारवत्थु, उक्कोसेण नव पुव्वाइं अहिज्जेज्जा॥

३१६. वउसे—पुच्छा।
गोयमा! जहण्णेणं अट्ठ पवयणमायाओ, उक्कोसेणं दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा। एवं पडिसेवणाकुसीले वि॥

३१७ कसायकुसीले—पुच्छा।
गोयमा! जहण्णेणं अट्ठ पवयणमायाओ, उक्कोसेणं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा। एवं नियठे वि॥

३१८. सिणाए—पुच्छा।
गोयमा! सुयवतिरित्ते होज्जा॥

तित्थ-पद

३१९. पुलाए ण भंते! किं तित्थे होज्जा? अतित्थे होज्जा?
गोयमा! तित्थे होज्जा, नो अतित्थे होज्जा। एवं वउसे वि। एव पडिसेवणा-कुसीले वि॥

३२०. कसायकुसीले—पुच्छा।
गोयमा! तित्थे वा होज्जा, अतित्थे वा होज्जा॥

३२१. जइ अतित्थे होज्जा कि तित्थकरे होज्जा? पत्तेयबुद्धे होज्जा?
गोयमा! तित्थकरे वा होज्जा, पत्तेयबुद्धे वा होज्जा। एवं नियंठे वि। एव सिणाए वि॥

लिंग-पदं

३२२. पुलाए णं भंते! कि सलिंगे होज्जा? अण्णलिंगे होज्जा? गिहिलिंगे होज्जा?

गोयमा ! दव्वलिंगं पडुच्च सलिंगे वा होज्जा, अण्णलिंगे वा होज्जा, गिहिलिंगे वा होज्जा। भावलिंग पडुच्च नियम सलिंगे होज्जा। एवं जाव सिणाए ॥

सरीर-पदं

३२३. पुलाए ण भंते ! कतिसु सरीरेसु होज्जा ?
गोयमा ! तिसु ओरालिय-तेया[1]-कम्मएसु होज्जा ॥

३२४ वउसे ण भंते !—पुच्छा।
गोयमा ! तिसु वा चउसु वा होज्जा। तिसु होमाणे तिसु ओरालिय-तेया-कम्मएसु होज्जा, चउसु होमाणे चउसु ओरालिय-वेउव्विय-तेया-कम्मएसु होज्जा। एव पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३२५ कसायकुसीले—पुच्छा।
गोयमा ! तिसु वा चउसु वा पंचसु वा होज्जा। तिसु होमाणे तिसु ओरालिय-तेया-कम्मएसु होज्जा, चउसु होमाणे चउसु ओरालिय-वेउव्विय-तेया-कम्मएसु होज्जा, पंचसु होमाणे पचसु ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेया-कम्मएसु होज्जा। नियंठो सिणाओ य जहा पुलाओ ॥

खेत्त-पदं

३२६. पुलाए णं भंते ! किं कम्मभूमीए होज्जा ? अकम्मभूमीए होज्जा ?
गोयमा ! जम्मण-संतिभाव पडुच्च कम्मभूमीए होज्जा, णो अकम्मभूमीए होज्जा ॥

३२७ वउसे णं—पुच्छा।
गोयमा ! जम्मण-संतिभाव पडुच्च कम्मभूमीए होज्जा, नो अकम्मभूमीए होज्जा। साहरणं पडुच्च कम्मभूमीए वा होज्जा, अकम्मभूमीए वा होज्जा। एव जाव सिणाए ॥

काल-पदं

३२८. पुलाए ण भते ! किं ओसप्पिणिकाले होज्जा ? उस्सप्पिणिकाले होज्जा ? नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले वा होज्जा ?
गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होज्जा, उस्सप्पिणिकाले वा होज्जा, नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले वा होज्जा ॥

३२९ जइ ओसप्पिणिकाले होज्जा किं सुसमसुसमाकाले होज्जा ? सुसमाकाले होज्जा ? सुसमदुस्समाकाले[2] होज्जा ? दुस्समसुसमाकाले होज्जा ? दुस्समाकाले होज्जा ? दुस्समदुस्समाकाले होज्जा ?

---

1. तेय (अ)।
2. °दुसमाकाले (अ, ता, म)।

गोयमा ! जम्मणं पडुच्च नो सुसमसुसमाकाले होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, नो दुस्समाकाले होज्जा, नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा। सतिभावं पडुच्च नो सुसमसुसमाकाले होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, दुस्समाकाले वा होज्जा, नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा ॥

३३०. जइ उस्सप्पिणिकाले होज्जा कि दुस्समदुस्समाकाले होज्जा ? दुस्समाकाले होज्जा ? दुस्समसुसमाकाले होज्जा ? सुसमदुस्समाकाले होज्जा ? सुसमाकाले होज्जा ? सुसमसुसमाकाले होज्जा ?

गोयमा ! जम्मण पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा, दुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, नो सुसमसुसमाकाले होज्जा। सतिभावं पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा, नो दुस्समाकाले होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, नो सुसमसुसमाकाले होज्जा ॥

३३१. जइ नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले[1] होज्जा कि सुसमसुसमापलिभागे होज्जा ? सुसमापलिभागे होज्जा ? सुसमदुस्समापलिभागे होज्जा ? दुस्समसुसमापलिभागे होज्जा ?

गोयमा ! जम्मण-सतिभावं पडुच्च नो सुसमसुसमापलिभागे होज्जा, नो सुसमापलिभागे होज्जा, नो सुसमदुस्समापलिभागे होज्जा, दुस्समसुसमापलिभागे होज्जा ॥

३३२ वउसे णं—पुच्छा।

गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होज्जा, उस्सप्पिणिकाले वा होज्जा, नोओसप्पिणि—नोउस्सप्पिणिकाले वा होज्जा ॥

३३३ जइ ओसप्पिणिकाले होज्जा कि सुसमसुसमाकाले होज्जा—पुच्छा।

गोयमा ! जम्मण-सतिभाव पडुच्च नो सुसमसुसमाकाले होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा। सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, दुस्समाकाले वा होज्जा, नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा। साहरण पडुच्च अण्णयरे समाकाले होज्जा ॥

३३४. जइ उस्सप्पिणिकाले होज्जा कि दुस्समदुस्समाकाले होज्जा - पुच्छा।

गोयमा ! जम्मणं पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा जहेव पुलाए। संति-

---

१. उस्स° (अ, क, ख, ता, म)।

भाव पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा, नो दुस्समाकाले होज्जा। एवं संतिभावेण वि जहा पुलाए जाव नो सुसमसुसमाकाले होज्जा। साहरणं पडुच्च अण्णयरे समाकाले होज्जा ॥

३३५ जइ नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले होज्जा—पुच्छा।
गोयमा! जम्मण-संतिभाव पडुच्च नो सुसमसुसमापलिभागे होज्जा जहेव पुलाए जाव दुस्समसुसमापलिभागे होज्जा। साहरण पडुच्च अण्णयरे पलिभागे होज्जा। जहा बउसे। एवं पडिसेवणाकुसीले वि। एव कसायकुसीले वि। नियठो सिणाओ य जहा पुलाओ, नवर—एतेसि अब्भहिय साहरण भाणियव्वं। सेस त चेव ॥

गति-पद

३३६. पुलाए ण भते! कालगए समाणे क[1] गति गच्छति?
गोयमा! देवगति गच्छति ॥

३३७. देवगति गच्छमाणे कि भवणवासीसु उववज्जेज्जा? वाणमतरेसु उववज्जेज्जा? जोइसिएसु उववज्जेज्जा? वेमाणिएसु उववज्जेज्जा?
गोयमा! नो भवणवासीसु, नो वाणमतरेसु, नो जोइसिएसु, वेमाणिएसु उववज्जेज्जा। वेमाणिएसु उववज्जमाणे जहण्णेण सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं सहस्सारे कप्पे उववज्जेज्जा। बउसे ण एव चेव, नवर—उक्कोसेण अच्चुए कप्पे। पडिसेवणाकुसीले जहा बउसे। कसायकुसीले जहा पुलाए, नवर-उक्कोसेणं अणुत्तरविमाणेसु उववज्जेज्जा। नियठे णं एव चेव जाव वेमाणिएसु उववज्जमाणे अजहण्णमणुक्कोसेण अणुत्तरविमाणेसु उववज्जेज्जा ॥

३३८ सिणाए ण भंते! कालगए समाणे क गति गच्छइ?
गोयमा! सिद्धिगति गच्छइ ॥

३३९ पुलाए ण भते! देवेसु उववज्जमाणे कि इदत्ताए उववज्जेज्जा? सामाणियत्ताए उववज्जेज्जा? तावत्तीसाए[2] उववज्जेज्जा? लोगपालत्ताए उववज्जेज्जा? अहमिदत्ताए[3] उववज्जेज्जा?
गोयमा! अविराहणं पडुच्च इदत्ताए उववज्जेज्जा, सामाणियत्ताए उववज्जेज्जा, तावत्तीसाए उववज्जेज्जा, लोगपालत्ताए उववज्जेज्जा, नो अहमिदत्ताए उववज्जेज्जा। विराहण पडुच्च अण्णयरेसु[4] उववज्जेज्जा। एव बउसे वि। एव पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३४० कसायकुसीले—पुच्छा।

---

१. कि (अ, स)।
२ तावत्तीसगत्ताए (ता)।
३. अहमिदत्ताए वा (स)।
४. भवनपत्यादीनामन्यतरेषु देवेषु (वृ)।

गोयमा ! अविराहणं पडुच्च इंदत्ताए वा उववज्जेज्जा जाव अहमिदत्ताए वा उववज्जेज्जा। विराहणं पडुच्च अण्णयरेसु उववज्जेज्जा ॥

३४१. नियंठे—पुच्छा।
गोयमा ! अविराहणं पडुच्च नो इंदत्ताए उववज्जेज्जा जाव नो लोगपालत्ताए उववज्जेज्जा, अहमिदत्ताए उववज्जेज्जा। विराहणं पडुच्च अण्णयरेसु उववज्जेज्जा ॥

३४२. पुलायस्स णं भंते ! देवलोगेसु उववज्जमाणस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहत्तं, उक्कोसेण अट्ठारस सागरोवमाइं ॥

३४३. बउसस्स—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहत्तं, उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइ। एवं पडिसेवणाकुसीलस्स वि ॥

३४४ कसायकुसीलस्स—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमपुहत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइ ॥

३४५. नियंठस्स—पुच्छा।
गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥

संजमट्ठाण-पदं

३४६. पुलागस्स णं भंते ! केवतिया संजमट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा सजमट्ठाणा पण्णत्ता। एव जाव कसायकुसीलस्स ॥

३४७. नियंठस्स ण भते ! केवतिया संजमट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एगे अजहण्णमणुक्कोसए संजमट्ठाणे। एवं सिणायस्स वि ॥

३४८. एतेसि ण भते ! पुलाग-बउस-पडिसेवणा-कसायकुसील-नियठ-सिणायाणं सजमट्ठाणाण कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे नियंठस्स सिणायस्स य एगे अजहण्णमणुक्कोसए संजमट्ठाणे। पुलागस्स णं संजमट्ठाणा असखेज्जगुणा। बउसस्स सजमट्ठाणा असखेज्जगुणा। पडिसेवणाकुसीलस्स संजमट्ठाणा असखेज्जगुणा। कसायकुसीलस्स सजमट्ठाणा असखेज्जगुणा ॥

निगास-पदं

३४९. पुलागस्स णं भते ! केवतिया चरित्तपज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणंता चरित्तपज्जवा पण्णत्ता। एवं जाव सिणायस्स ॥

---

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

३५०. पुलाए णं भते ! पुलागस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिए ?
गोयमा ! सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए।
जइ हीणे अणंतभागहीणे वा, असखेज्जइभागहीणे वा, संखेज्जइभागहीणे वा, संखेज्जगुणहीणे वा, असखेज्जगुणहीणे वा, अणतगुणहीणे वा। अह अब्भहिए अणंतभागमब्भहिए वा. असंखेज्जइभागमब्भहिए वा, सखेज्जभागमब्भहिए वा, सखेज्जगुणमब्भहिए वा, असखेज्जगुणमब्भहिए वा, अणंतगुणमब्भहिए वा[1] ॥
३५१ पुलाए ण भते ! बउसस्स परट्ठाणसण्णिगासेण चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिए ?
गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए; अणतगुणहीणे। एव पडिसेवणाकुसीलस्स वि। कसायकुसीलेणं समं छट्ठाणवडिए जहेव सट्ठाणे। नियठस्स जहा बउसस्स। एव सिणायस्स वि ॥
३५२ बउसे णं भते ! पुलागस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिए ?
गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणंतगुणमब्भहिए ॥
३५३ बउसे णं भंते ! बउसस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहि—पुच्छा।
गोयमा ! सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए। जइ हीणे छट्ठाणवडिए ॥
३५४ बउसे ण भते ! पडिसेवणाकुसीलस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे० ? छट्ठाणवडिए। एवं कसायकुसीलस्स वि ॥
३५५ बउसे ण भते ! नियठस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं—पुच्छा।
गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए, अणत गुणहीणे। एवं सिणायस्स वि। पडिसेवणाकुसीलस्स एव चेव बउसवत्तव्वया भाणियव्वा। कसायकुसीलस्स एस चेव बउसवत्तव्वया, नवरं—पुलाएण वि सम छट्ठाणवडिए ॥
३५६ नियठे णं भते ! पुलागस्स परट्ठाणसण्णिगासेण चरित्तपज्जवेहि—पुच्छा।

---

१. वृत्तौ असद्भावस्थापनया षट्स्थानपतितमेतद् उदाहृतमस्ति—

हीन			अधिक		
१. अनन्तभागहीन	१००००	९९००	१. अनन्तभागअधिक	९९००	१००००
२. असख्यातभागहीन	१००००	९८००	२ असख्यातभागअधिक	९८००	१००००
३. सख्यातभागहीन	१००००	९०००	३. सख्यातभागअधिक	९०००	१००००
४. सख्यातगुणहीन	१००००	१०००	४. सख्यातगुणअधिक	१०००	१००००
५. असख्यातगुणहीन	१००००	२००	५. असख्यातगुणअधिक	२००	१००००
६. अनन्तगुणहीन	१००००	१००	६ अनन्तगुणअधिक	१००	१००००

गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणंतगुणमब्भहिए। एवं जाव कसायकुसीलस्स ॥

३५७. नियठे णं भंते ! नियंठस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं— पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए ॥

३५८. [1]•नियंठस्स ण भंते ! सिणायस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं—पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए ॥०

३५९. सिणाए ण भंते ! पुलागस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं [2]•चरित्तपज्जवेहि—पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणंतगुणमब्भहिए। एवं जाव कसायकुसीलस्स ॥

३६०. सिणाए णं भंते ! नियंठस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं—पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए० ॥

३६१. सिणाए णं भंते ! सिणायस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं—पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए ॥

३६२. एएसि णं भंते ! पुलाग-बउस-पडिसेवणाकुसील-कसायकुसील-नियंठ-सिणायाणं जहण्णुक्कोसगाणं चरित्तपज्जवाणं कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ० विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! १. पुलागस्स कसायकुसीलस्स य एएसि णं जहण्णगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला सव्वत्थोवा २. पुलागस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा ३. बउसस्स पडिसेवणाकुसीलस्स य एएसि णं जहण्णगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला अणंतगुणा ४. बउसस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा ५. पडिसेवणाकुसीलस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा ६. कसायकुसीलस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा ७. नियंठस्स सिणायस्स य एतेसि णं अजहण्णमणुक्कोसगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला अणंतगुणा ॥

जोग-पदं

३६३ पुलाए णं भंते ! किं सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ?
गोयमा ! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा ॥

३६४. जइ सजोगी होज्जा किं मणजोगी होज्जा ? वइजोगी होज्जा ? कायजोगी होज्जा ?
गोयमा ! मणजोगी वा होज्जा, वइजोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा। एवं जाव नियठे ॥

---

१. सं० पा०—एवं सिणायस्स वि।
२. स० पा०—एवं जहा नियंठस्स वत्तव्वया तहा सिणायस्स वि भाणियव्वा जाव सिणाए।
३. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

३६५ सिणाए णं—पुच्छा।
गोयमा ! सजोगी वा होज्जा, अजोगी वा होज्जा। जइ सजोगी होज्जा किं मणजोगी होज्जा—सेसं जहा पुलागस्स ॥

उवओग-पदं

३६६ पुलाए णं भंते ! किं सागारोवउत्ते होज्जा ? अणागारोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारोवउत्ते वा होज्जा। एवं जाव सिणाए ॥

कसाय-पदं

३६७. पुलाए णं भंते। सकसायी होज्जा ? अकसायी होज्जा ?
गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा ॥

३६८. जइ सकसायी होज्जा, से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु कोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा। एवं बउसे वि। एवं पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३६९ कसायकुसीले णं – पुच्छा।
गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा ॥

३७०. जइ सकसायी होज्जा, से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु वा तिसु वा दोसु वा एगम्मि वा होज्जा। चउसु होमाणे चउसु संजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु संजलणमाण-माया-लोभेसु होज्जा, दोसु होमाणे संजलणमाया-लोभेसु होज्जा, एगम्मि होमाणे संजलणलोभे होज्जा ॥

३७१ नियंठे णं—पुच्छा।
गोयमा ! नो सकसायी होज्जा, अकसायी होज्जा ॥

३७२ जइ अकसायी होज्जा किं उवसंतकसायी होज्जा ? खीणकसायी होज्जा ?
गोयमा ! उवसंतकसायी वा होज्जा, खीणकसायी वा होज्जा। सिणाए एवं चेव, नवरं—नो उवसंतकसायी होज्जा, खीणकसायी होज्जा ॥

लेस्सा-पदं

३७३ पुलाए णं भंते ! किं सलेस्से होज्जा ? अलेस्से होज्जा ?
गोयमा ! सलेस्से होज्जा, नो अलेस्से होज्जा ॥

३७४. जइ सलेस्से होज्जा, से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! तिसु विसुद्धलेस्सासु होज्जा, तं जहा—तेउलेस्साए, पम्हलेस्साए, सुक्कलेस्साए। एवं बउसस्स वि। एवं पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३७५. कसायकुसीले—पुच्छा।
गोयमा ! सलेस्से होज्जा, नो अलेस्से होज्जा ॥

३७६. जइ सलेस्से होज्जा, से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! छसु लेस्सासु होज्जा, तं जहा—कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए ॥

३७७. नियंठे णं भंते !—पुच्छा।
गोयमा ! सलेस्से होज्जा, नो अलेस्से होज्जा ॥

३७८. जइ सलेस्से होज्जा, से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! एक्काए सुक्कलेस्साए होज्जा ॥

३७९. सिणाए—पुच्छा।
गोयमा ! सलेस्से वा होज्जा, अलेस्से वा होज्जा ॥

३८०. जइ सलेस्से होज्जा, से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! एगाए परमसुक्कलेस्साए होज्जा ॥

परिणाम-पदं

३८१. पुलाए णं भंते ! किं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ? हायमाणपरिणामे[1] होज्जा ? अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे वा होज्जा, हायमाणपरिणामे वा होज्जा, अवट्ठियपरिणामे वा होज्जा। एवं जाव कसायकुसीले ॥

३८२. नियंठे णं—पुच्छा।
गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे होज्जा, नो हायमाणपरिणामे होज्जा, अवट्ठियपरिणामे वा होज्जा। एवं सिणाए वि ॥

३८३. पुलाए णं भंते ! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण अंतोमुहुत्तं ॥

३८४ केवतियं कालं हायमाणपरिणामे होज्जा !
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेण अंतोमुहुत्तं ॥

३८५. केवतियं काल अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण सत्त समया। एवं जाव कसायकुसीले ॥

३८६ नियठे णं भंते ! केवतियं काल वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्त ॥

३८७. केवतियं काल अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्क समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्त ॥

३८८. सिणाए ण भते ! केवतिय कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! 'जहण्णेण वि'[2] अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

---

१. हीयमाण° (म, स)। २. जहण्णेणं (अ. क. ख. ब, म, स)।

३८९. केवतियं काल अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥

बंध-पदं

३९०. पुलाए ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वधति ?
गोयमा ! आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ ववति ॥

३९१. वउसे—पुच्छा ।
गोयमा ! सत्तविहवधए वा, अट्ठविहवधए वा । सत्त वंधमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वंधति, अट्ठ वधमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ वंधति । एव पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३९२ कसायकुसीले पुच्छा ।
गोयमा ! सत्तविहवधए वा, अट्ठविहवधए वा, छव्विहवधए वा । सत्त वधमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वधति, अट्ठ वधमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ वधति, छ वधमाणे आउय-मोहणिज्जवज्जाओ छवकम्मप्पगडीओ वंधति ॥

३९३. नियंठे ण—पुच्छा ।
गोयमा ! एग वेयणिज्ज कम्म वधइ ॥

३९४. सिणाए—पुच्छा ।
गोयमा ! एगविहवधए वा, अवधए वा । एग वधमाणे एग वेयणिज्ज कम्म वधइ ॥

वेदण-पदं

३९५. पुलाए णं भते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेइ ?
गोयमा ! नियम अट्ठ कम्मप्पगडीओ वेदेइ । एव जाव कसायकुसीले ॥

३९६. नियठे ण—पुच्छा ।
गोयमा ! मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वेदेइ ॥

३९७. सिणाए ण—पुच्छा ।
गोयमा ! वेयणिज्ज-आउय-नाम-गोयाओ चत्तारि कम्मप्पगडीओ वेदेइ ॥

उदीरणा-पदं

३९८. पुलाए णं भते ! कति कम्मप्पगडीओ उदीरेति ?
गोयमा ! आउय-वेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेति ॥

३९९ वउसे—पुच्छा ।

गोयमा ! सत्तविहउदीरए वा, अट्ठविहउदीरए वा, छव्विहउदीरए वा। सत्त उदीरेमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ उदीरेति, अट्ठ उदीरेमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ उदीरेति, छ उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-वज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेति। पडिसेवणाकुसीले एव चेव ॥

४००. कसायकुसीले—पुच्छा।
गोयमा ! सत्तविहउदीरए वा, अट्ठविहउदीरए वा, छव्विहउदीरए वा, पंच-विहउदीरए वा। सत्त उदीरेमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ उदीरेति, अट्ठ उदीरेमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ उदीरेति, छ उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेति, पंच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ पंच कम्मप्पगडीओ उदीरेति ॥

४०१. नियंठे—पुच्छा।
गोयमा ! पंचविहउदीरए वा, दुविहउदीरए वा। पंच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ पच कम्मप्पगडीओ उदीरेति, दो उदीरेमाणे नामं च गोयं च उदीरेति ॥

४०२. सिणाए—पुच्छा।
गोयमा ! दुविहउदीरए वा, अणुदीरए वा। दो उदीरेमाणे नामं च गोयं च उदीरेति ॥

उवसंपज्जहण-पदं

४०३. पुलाए णं भंते ! पुलायत्तं जहमाणे किं जहति ? किं उवसंपज्जति ?
गोयमा ! पुलायत्तं जहति। कसायकुसील[1] वा अस्संजमं वा उवसंपज्जति ॥

४०४. बउसे णं भंते ! बउसत्तं जहमाणे किं जहति ? किं उवसंपज्जति ?
गोयमा ! बउसत्तं जहति। पडिसेवणाकुसीलं वा कसायकुसीलं वा अस्संजमं वा संजमासंजमं वा उवसंपज्जति ॥

४०५. पडिसेवणाकुसीले णं[2]—पुच्छा।
गोयमा ! पडिसेवणाकुसीलत्तं जहति। बउसं वा कसायकुसीलं वा अस्संजमं वा संजमासंजमं वा उवसंपज्जति ॥

४०६. कसायकुसीले णं—पुच्छा।
गोयमा ! कसायकुसीलत्तं जहति। पुलायं वा बउसं वा पडिसेवणाकुसील वा नियंठं वा अस्संजमं वा संजमासंजमं वा उवसंपज्जति ॥

---

१. इह भावप्रत्ययलोपात् कषायकुशीलत्वमित्यादि दृश्यम् (वृ)।
२. ण भंते ! पडि (अ, क, ख, ब, म, स)।

४०७. णियठे—पुच्छा।
गोयमा ! नियंठत्त जहति। कसायकुसील वा सिणाय वा अस्संजम वा उवसपज्जति ॥

४०८. सिणाए—पुच्छा।
गोयमा ! सिणायत्तं जहति। सिद्धिगति उवसंपज्जति ॥

सण्णा-पदं

४०९. पुलाए णं भंते ! कि सण्णोवउत्ते होज्जा ? नोसण्णोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! नोसण्णोवउत्ते होज्जा ॥

४१०. बउसे णं भते !—पुच्छा।
गोयमा ! सण्णोवउत्ते वा होज्जा, नो सण्णोवउत्ते वा होज्जा। एवं पडिसेवणाकुसीले वि। एव कसायकुसीले वि। नियंठे सिणाए य जहा पुलाए ॥

आहार-पदं

४११ पुलाए ण भंते ! कि आहारए होज्जा ? अणाहारए होज्जा ?
गोयमा ! आहारए होज्जा, नो अणाहारए होज्जा। एवं जाव नियठे ॥

४१२. सिणाए—पुच्छा।
गोयमा ! आहारए वा होज्जा, अणाहारए वा होज्जा ॥

भव-पदं

४१३. पुलाए ण भते ! कति भवग्गहणाइं होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं, उक्कोसेणं तिण्णि ॥

४१४. बउसे—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण एक्क, उक्कोसेणं अट्ठ। एवं पडिसेवणाकुसीले वि। एवं कसायकुसीले वि। नियठे जहा पुलाए ॥

४१५. सिणाए—पुच्छा।
गोयमा ! एक्क ॥

आगरिस-पदं

४१६. पुलागस्स णं भते ! एगभवग्गहणीया केवतिया आगरिसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेणं तिण्णि ॥

४१७. बउसस्स णं—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेणं सतग्गसो। एवं पडिसेवणाकुसीले वि, कसायकुसीले[1] वि ॥

---

१. एवं कसाय० (व)।

४१८. नियंठस्स णं—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को, उक्कोसेण दोण्णि ॥

४१९. सिणायस्स ण—पुच्छा।
गोयमा ! एक्को[1] ॥

४२० पुलागस्स णं भते ! नाणाभवग्गहणीया केवतिया आगरिसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेणं सत्त ॥

४२१. बउसस्स—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेणं सहस्सग्गसो[2]। एवं जाव कसायकुसीलस्स ॥

४२२. नियंठस्स णं—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेणं पंच ॥

४२३. सिणायस्स—पुच्छा।
गोयमा ! नत्थि एक्को वि ॥

काल-पदं

४२४. पुलाए ण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्तं ॥

४२५. बउसे—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। एवं पडिसेवणा-कुसीले वि, कसायकुसीले वि ॥

४२६. नियठे—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेणं अतोमुहुत्तं ॥

४२७. सिणाए—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥

४२८. पुलाया ण भते ! कालओ केवच्चिर होति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेणं अतोमुहुत्तं ॥

४२९. बउसा ण—पुच्छा।
गोयमा ! सव्वद्धं। एवं जाव कसालकुसीला। नियठा जहा पुलागा। सिणाया जहा बउसा ॥

अंतर-पदं

४३०. पुलागस्स णं भते ! केवतिय कालं अतरं होइ ?

---

१. एक्को वि नत्थि (म, स)।

२. सहस्ससो (अ, क, ख, ता, म)।

गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं अणत काल—अणंताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूणं। एव जाव नियठस्स।

४३१. सिणायस्स—पुच्छा।
गोयमा ! 'नत्थि अतरं'[1] ।।

४३२ पुलायाण भते ! केवतिय काल अंतर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण सखेज्जाइ वासाइ ।।

४३३. बउसाणं भते !—पुच्छा।
गोयमा ! नत्थि अतर। एव जाव कसायकुसीलाण ।।

४३४. नियठाण—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण छम्मासा। सिणायाणं जहा बउसाण ।।

समुग्घाय-पदं

४३५. पुलागस्स ण भते ! कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिण्णि समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए, कसाय-समुग्घाए, मारणतियसमुग्घाए ।।

४३६ बउसस्स ण भते !—पुच्छा।
गोयमा ! पच समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए जाव तेया-समुग्घाए। एव पडिसेवणाकुसीले वि ।।

४३७. कसायकुसीलस्स—पुच्छा।
गोयमा ! छ समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए जाव आहार-समुग्घाए[2] ।।

४३८. नियठस्स ण—पुच्छा।
गोयमा ! नत्थि एक्को वि ।।

४३९. सिणायस्स—पुच्छा।
गोयमा ! एगे केवलिसमुग्घाए पण्णत्ते ।।

खेत्त-पदं

४४० पुलाए ण भते ! लोगस्स किं संखेज्जइभागे होज्जा ? असखेज्जइभागे होज्जा ? संखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? सव्वलोए होज्जा ?
गोयमा ! नो सखेज्जइभागे होज्जा, असंखेज्जइभागे होज्जा, नो सखेज्जेसु

---

१. नत्थतर (अ, क, ख, ता, ब, म)। २. आहारगसमुग्घाए (ब, म)।

भागेसु होज्जा, नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नो सव्वलोए होज्जा। एवं जाव नियठे ॥

४४१. सिणाए णं—पुच्छा।
गोयमा ! नो सखेज्जइभागे होज्जा, असंखेज्जइभागे होज्जा, नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा, असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा, सव्वलोए वा होज्जा ॥

फुसणा-पदं

४४२. पुलाए ण भंते ! लोगस्स कि संखेज्जइभागं फुसइ ? असखेज्जइभागं फुसइ ? एवं जहा ओगाहणा भणिया तहा फुसणा वि भाणियव्वा जाव सिणाए ॥

भाव-पदं

४४३. पुलाए णं भंते ! कतरम्मि भावे होज्जा ?
गोयमा ! खओवसमिए भावे होज्जा। एवं जाव कसायकुसीले ॥

४४४. नियंठे—पुच्छा।
गोयमा ! ओवसमिए वा[1] खइए वा भावे होज्जा ॥

४४५. सिणाए—पुच्छा।
गोयमा ! खइए भावे होज्जा ॥

परिमाण-पदं

४४६. पुलाया णं भंते ! एगसमएणं केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तं। पुव्वपडिवण्णए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सहस्सपुहत्त ॥

४४७. वउसा णं भंते ! एगसमएणं—पुच्छा।
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तं पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेणं कोडिसयपुहत्त, उक्कोसेण वि कोडिसयपुहत्तं। एवं पडिसेवणा-कुसीले वि ॥

४४८. कसायकुसीलाण—पुच्छा।
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सहस्सपुहत्त। पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेणं कोडिसहस्सपुहत्तं, उक्कोसेण वि कोडिसहस्सपुहत्त ॥

४४९. नियंठाणं—पुच्छा।

---

१. भावे वा (ता)।

गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण बावट्ठ सतं—अट्ठसयं खवगाणं, चउप्पन्नं उवसामगाण[1] । पुव्वपडिवण्णए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सयपुहत्त ॥

४५०. सिणायाण—पुच्छा ।
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण अट्ठसत । पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेण कोडिपुहत्त, उक्कोसेण वि कोडिपुहत्त ॥

अप्पाबहुयत्त-पदं

४५१. एएसि ण भते ! पुलाग-बउस-पडिसेवणाकुसील-कसायकुसील-नियंठ-सिणायाण कयरे कयरेहितो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा नियठा, पुलागा सखेज्जगुणा, सिणाया सखेज्जगुणा, बउसा सखेज्जगुणा, पडिसेवणाकुसीला सखेज्जगुणा, कसायकुसीला सखेज्ज-गुणा ॥

४५२. सेव भंते ! सेवं भते ! त्ति जाव[3] विहरइ ॥

सत्तमो उद्देसो

पण्णवण-पद

४५३. कति ण भते ! संजया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पच संजया पण्णत्ता, तं जहा—सामाइयसंजए, छेदोवट्ठावणियसजए[4], परिहारविसुद्धियसजए[5], सुहुमसपरायसंजए, अहक्खायसंजए ॥

४५४ सामाइयसजए ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—इत्तरिए य, आवकहिए य ॥

४५५ छेदोवट्ठावणियसजए ण—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सातियारे य, निरतियारे य ॥

४५६. परिहारविसुद्धियसजए—पुच्छा ।

---

१. उवसमगाण (स) ।
२. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।
३. भ० १।५१ ।
४. °ट्ठाणिय° (ता) ।
५. °विसुद्धिसंजए (ख) ।

गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—निव्विसमाणए य, निव्विट्ठकाइए य ॥

४५७. सुहुमसंपरायसंजए—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—संकिलिस्समाणए य, विसुज्झमाणए[1] य ॥

४५८. अहक्खायसंजए—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—छउमत्थे य, केवली य ॥

संगहणी-गाहा

सामाइयम्मि उ कए, चाउज्जाम अणुत्तरं धम्मं ।
तिविहेण फासयतो, सामाइयसंजओ स खलु ॥१॥
छेत्तूण उ परियागं, पोराण जो ठवेइ अप्पाण ।
धम्मम्मि पंचजामे, छेदोवट्ठावणो स खलु ॥२॥
परिहरइ जो विसुद्ध, तु पंचयामं अणुत्तर धम्म ।
तिविहेण फासयतो, परिहारियसंजओ स खलु ॥३॥
लोभाणू[2] वेदेंतो[3], जो खलु उवसामओ व खवओ वा ।
सो सुहुमसंपराओ, अहखाया[4] ऊणओ किंचि ॥४॥
उवसंते खीणम्मि व, जो खलु कम्मम्मि मोहणिज्जम्मि ।
छउमत्थो व जिणो वा, अहखाओ संजओ स खलु ॥५॥

वेद-पदं

४५९. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा । जइ सवेदए—एवं जहा[5] कसायकुसीले तहेव निरवसेसं । एवं छेदोवट्ठावणियसंजए वि । परिहारविसुद्धियसंजओ जहा[6] पुलाओ । सुहुमसंपरायसंजओ अहक्खायसंजओ य जहा[7] नियंठो ॥

राग-पदं

४६०. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सरागे होज्जा ? वीयरागे होज्जा ?
गोयमा ! सरागे होज्जा, नो वीयरागे होज्जा । एवं जाव सुहुमसंपरायसंजए । अहक्खायसंजए । जहा[8] नियंठे ॥

---

१. विसुद्धमाणए (ता) ।
२. लोभमणु (अ, क); लोभाणु (ख, ता, म, स); लोभाणु (ब) ।
३. वेदयतो (अ); वेयतो (ता) ।
४. अहक्खाया (अ, क, ख, ब, म, स) ।
५. भ० २५।२९१, २९२ ।
६. भ० २५।२८६,२८७ ।
७. भ० २५।२९३,२९४ ।
८. भ० २५।२९७,२९८ ।

कप्प-पदं

४६१. सामाइयसंजए णं भंते ! किं ठियकप्पे होज्जा ? अट्ठियकप्पे होज्जा ?
गोयमा ! ठियकप्पे वा होज्जा, अट्ठियकप्पे वा होज्जा ॥

४६२. छेदोवट्ठावणियसंजए—पुच्छा ।
गोयमा ! ठियकप्पे होज्जा, नो अट्ठियकप्पे होज्जा । एवं परिहारविसुद्धियसंजए वि । सेसा जहा सामाइयसंजए ॥

४६३. सामाइयसंजए णं भंते ! किं जिणकप्पे होज्जा ? थेरकप्पे होज्जा ? कप्पातीते होज्जा ?
गोयमा ! जिणकप्पे वा होज्जा, जहा[1] कसायकुसीले तहेव निरवसेसं । छेदोवट्ठावणिओ परिहारविसुद्धिओ य जहा[2] बउसो । सेसा जहा[3] नियंठे ॥

नियंठ-पदं

४६४. सामाइयसंजए णं भंते ! किं पुलाए होज्जा ? बउसे जाव सिणाए होज्जा ?
गोयमा ! पुलाए वा होज्जा, बउसे जाव कसायकुसीले वा होज्जा, नो नियंठे होज्जा, नो सिणाए होज्जा । एवं छेदोवट्ठावणिए वि ॥

४६५. परिहारविसुद्धियसंजए णं—पुच्छा ।
गोयमा ! नो पुलाए, नो बउसे, नो पडिसेवणाकुसीले होज्जा; कसायकुसीले होज्जा, नो नियंठे होज्जा, नो सिणाए होज्जा । एवं सुहुमसंपराए वि ॥

४६६. अहक्खायसंजए—पुच्छा ।
गोयमा ! नो पुलाए होज्जा जाव नो कसायकुसीले होज्जा, नियंठे वा होज्जा, सिणाए वा होज्जा ॥

पडिसेवणा-पदं

४६७. सामाइयसंजए णं भंते ! किं पडिसेवए होज्जा ? अपडिसेवए होज्जा ?
गोयमा ! पडिसेवए वा होज्जा, अपडिसेवए वा होज्जा । जइ पडिसेवए होज्जा—किं मूलगुणपडिसेवए होज्जा, सेसं जहा[4] पुलागस्स । जहा सामाइयसंजए एवं छेदोवट्ठावणिए वि ॥

४६८. परिहारविसुद्धियसंजए—पुच्छा ।
गोयमा ! नो पडिसेवए होज्जा, अपडिसेवए होज्जा । एवं जाव अहक्खायसंजए ॥

---

१. भ० २५।३०२ ।
२. भ० २५।३०१ ।
३. भ० २५।३०३ ।
४. भ० २५।३०८ ।

नाण-पदं

४६९. सामाइयसंजए णं भंते ! कतिसु नाणेसु होज्जा ?
गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा नाणेसु होज्जा। एवं जहा[1] कसायकुसीलस्स तहेव चत्तारि नाणाइं भयणाए। एवं जाव सुहुमसंपराए। अहक्खायसंजयस्स पंच नाणाइं भयणाए जहा[2] नाणुद्देसए ॥

४७०. सामाइयसंजए णं भंते ! केवतियं सुयं अहिज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठ पवयणमायाओ, जहा[3] कसायकुसीले। एवं छेदोवट्ठावणिए वि ॥

४७१. परिहारविसुद्धियसंजए—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं नवमस्स पुव्वस्स ततिय आयारवत्थुं, उक्कोसेणं असंपुण्णाइं दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा। सुहुमसंपरायसंजए जहा सामाइयसंजए ॥

४७२. अहक्खायसंजए—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठ पवयणमायाओ, उक्कोसेणं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा, सुयवतिरित्ते वा होज्जा ॥

तित्थ-पदं

४७३. सामाइयसंजए णं भंते ! किं तित्थे होज्जा ? अतित्थे होज्जा ?
गोयमा ! तित्थे वा होज्जा, अतित्थे वा होज्जा, जहा[4] कसायकुसीले। छेदोवट्ठावणिए परिहारविसुद्धिए य जहा[5] पुलाए। सेसा जहा सामाइयसंजए ॥

लिंग-पदं

४७४. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सलिंगे होज्जा ? अण्णलिंगे होज्जा ? गिहिलिंगे होज्जा ? जहा[6] पुलाए। एवं छेदोवट्ठावणिए वि ॥

४७५. परिहारविसुद्धियसंजए णं भंते ! किं—पुच्छा।
गोयमा ! दव्वलिंगं पि भावलिंगं पि पडुच्च सलिंगे होज्जा, नो अण्णलिंगे होज्जा, नो गिहिलिंगे होज्जा। सेसा जहा सामाइयसंजए ॥

सरीर-पदं

४७६. सामाइयसंजए णं भंते ! कतिसु सरीरेसु होज्जा ?
गोयमा ! तिसु वा चउसु वा पंचसु वा जहा[7] कसायकुसीले। एवं छेदोवट्ठावणिए वि। सेसा जहा[8] पुलाए ॥

---

१. भ० २५।३१३।
२. भ० ८।१०५।
३. भ० २५।३१७।
४. भ० २५।३२१।
५. भ० २५।३१९।
६. भ० २५।३२२।
७. भ० २५।३२५।
८. भ० २५।३२३।

खेत्त-पदं

४७७. सामाइयसंजए णं भंते ! किं कम्मभूमीए होज्जा ? अकम्मभूमीए होज्जा ?
गोयमा ! जम्मण-संतिभावं पडुच्च जहा[1] बउसे। एवं छेदोवट्ठावणिए वि। परिहारविसुद्धिए य जहा[2] पुलाए। सेसा जहा सामाइयसंजए॥

काल-पदं

४७८. सामाइयसंजए णं भंते ! किं ओसप्पिणिकाले होज्जा ? उस्सप्पिणिकाले होज्जा ? नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले होज्जा ?
गोयमा ! ओसप्पिणिकाले जहा[3] बउसे। एवं छेदोवट्ठावणिए वि, नवरं—जम्मण-संतिभावं पडुच्च चउसु वि पलिभागेसु नत्थि, साहरणं पडुच्च अण्णयरे पडिभागे होज्जा, सेसं तं चेव॥

४७९. परिहारविसुद्धिए—पुच्छा।
गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होज्जा, उस्सप्पिणिकाले वा होज्जा, नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले नो होज्जा। जइ ओसप्पिणिकाले होज्जा—जहा[4] पुलाओ। उस्सप्पिणिकाले वि जहा[4] पुलाओ। सुहुमसंपराइओ जहा[5] नियंठो। एवं अहक्खाओ वि॥

गति-पदं

४८०. सामाइयसंजए णं भंते ! कालगए समाणे कं[6] गतिं गच्छति ?
गोयमा ! देवगतिं गच्छति॥

४८१ देवगतिं गच्छमाणे किं भवणवासीसु उववज्जेज्जा ? वाणमंतरेसु उववज्जेज्जा ? जोइसिएसु उववज्जेज्जा ? वेमाणिएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो भवणवासीसु उववज्जेज्जा—जहा[8] कसायकुसीले। एवं छेदोवट्ठावणिए वि। परिहारविसुद्धिए जहा[9] पुलाए। सुहुमसंपराए जहा[10] नियंठे॥

४८२. अहक्खाए—पुच्छा।
गोयमा ! एवं अहक्खायसंजए वि जाव अजहण्णमणुक्कोसेणं अणुत्तरविमाणेसु उववज्जेज्जा; अत्थेगतिए सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति॥

४८३. सामाइयसंजए णं भंते ! देवलोगेसु उववज्जमाणे किं इंदत्ताए उववज्जति—पुच्छा।

---

१. भ० २५।३२७।
२. भ० २५।३२६।
३. भ० २५।३३२-३३५।
४. भ० २५।३२९।
५. भ० २५।३३०।
६. भ० २५।३३५।
७. किं (अ, स)।
८. भ० २५।३३७।
९. भ० २५।३३६,३३७।
१०. भ० २५।३३७।

गोयमा ! अविराहणं पडुच्च एवं जहा[1] कसायकुसीले। एवं छेदोवट्ठावणिए वि। परिहारविसुद्धिए जहा[2] पुलाए। सेसा जहा[3] नियठे॥

४८४. सामाइयसजयस्स णं भंते ! देवलोगेसु उववज्जमाणस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। एवं छेदोवट्ठावणिए वि॥

४८५. परिहारविसुद्धियस्स—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं, सेसाणं जहा[4] नियंठस्स॥

संजमट्ठाण-पदं

४८६. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! केवतिया संजमट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा संजमट्ठाणा पण्णत्ता। एवं जाव परिहारविसुद्धियस्स॥

४८७. सुहुमसंपरायसंजयस्स—पुच्छा।
गोयमा ! असखेज्जा अंतोमुहुत्तिया संजमट्ठाणा पण्णत्ता॥

४८८. अहक्खायसंजयस्स —पुच्छा।
गोयमा ! एगे अजहण्णमणुक्कोसए संजमट्ठाणे पण्णत्ते॥

४८९. एएसि णं भंते ! सामाइय-छेदोवट्ठावणिय-परिहारविसुद्धिय-सुहुमसंपराग-अहक्खायसंजयाणं संजमट्ठाणाणं कयरे कयरेहितो[5] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे अहक्खायसंजमस्स एगे अजहण्णमणुक्कोसए सजमट्ठाणे, सुहुमसंपरागसजयस्स अतोमुहुत्तिया संजमट्ठाणा असखेज्जगुणा, परिहारविसुद्धियसंजयस्स संजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा, सामाइयसंजयस्स छेदोवट्ठावणियसजयस्स य[6] एएसि णं संजमट्ठाणा दोण्ह वि तुल्ला असखेज्जगुणा॥

निगास-पदं

४९० सामाइयसंजयस्स णं भंते ! केवइया चरित्तपज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणंता चरित्तपज्जवा पण्णत्ता। एवं जाव अहक्खायसंजयस्स॥

४९१. सामाइयसंजए णं भंते ! सामाइयसंजयस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहि किं हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिए ?
गोयमा ! सिय हीणे—छट्ठाणवडिए॥

---

१. भ० २५।३४०।
२. भ० २५।३३९।
३. भ० २५।३४१।
४. भ० २५।३४५।
५. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
६. × (अ, क, ख, स)।

४९२ सामाइयसंजए ण भंते ! छेदोवट्ठावणियसंजयस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्त-पज्जवेहि—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय हीणे—छट्ठाणवडिए । एवं परिहारविसुद्धियस्स वि ॥

४९३. सामाइयसजए ण भंते ! सुहुमसंपरागसजयस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्त-पज्जवेहि—पुच्छा ।
गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए, अणंतगुणहीणे । एवं अहक्खाय-सजयस्स वि । एव छेदोवट्ठावणिए वि हेट्ठिल्लेसु तिसु वि सम छट्ठाणवडिए, उवरिल्लेसु दोसु तहेव हीणे । जहा छेदोवट्ठावणिए तहा परिहारविसुद्धिए वि ॥

४९४ सुहुमसपरागसजए ण भते ! सामाइयसजयस्स परट्ठाण—पुच्छा ।
गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणतगुणमब्भहिए । एव छेओवट्ठा-वणिय परिहारविसुद्धिएसु वि सम । सट्ठाणे सिय हीणे, नो तुल्ले, सिय अब्भ-हिए । जइ हीणे अणतगुणहीणे, अह अब्भहिए अणतगुणमब्भहिए ॥

४९५. सुहुमसपरायसजयस्स अहक्खायसजयस्स परट्ठाण—पुच्छा ।
गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए, अणतगुणहीणे । अहक्खाए हेट्ठिल्लाणं चउण्ह वि नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणतगुणमब्भहिए । सट्ठाणे नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए ॥

४९६. एएसि ण भते ! सामाइय-छेदोवट्ठावणिय-परिहारविसुद्धिय-सुहुमसंपराय-अहक्खायसजयाण जहण्णुक्कोसगाण चरित्तपज्जवाण कयरे कयरेहितो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सामाइयसंजयस्स छेओवट्ठावणियसजयस्स य एएसि ण जहण्णगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला सव्वत्थोवा, परिहारविसुद्धियसजयस्स जहण्णगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा, तस्स चेव उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा, सामाइयसजयस्स छेओवट्ठावणियसजयस्स य एएसि ण उक्कोसगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला अणतगुणा, सुहुमसपरायसजयस्स जहण्णगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा, तस्स चेव उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा, अहक्खायसजयस्स अजहण्णमणुक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा ॥

जोग-पदं

४९७ सामाइयसजए ण भते ! कि सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ?
गोयमा ! सजोगी जहा[2] पुलाए । एव जाव सुहुमसपरायसंजए । अहक्खाए जहा[3] सिणाए ॥

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया । ३. भ० २५।३६६ ।
२. भ० २५।३६३,३६४ ।

उवओग-पदं

४९८. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सागारोवउत्ते होज्जा ? अणागारोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! सागरोवउत्ते जहा[1] पुलाए। एवं जाव अहक्खाए, नवरं—सुहुमसंपराए सागारोवउत्ते होज्जा, नो अणागारोवउत्ते होज्जा ॥

कसाय-पदं

४९९. सामाइयसंजए ण भंते ! कि सकसायी होज्जा ? अकसायी होज्जा ?
गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा जहा[2] कसायकुसीले। एवं छेदोवट्ठावणिए वि। परिहारविसुद्धिए जहा[3] पुलाए ॥

५००. सुहुमसपरागसंजए—पुच्छा।
गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा ॥

५०१. जइ सकसायी होज्जा, से ण भंते ! कतिसु कसायेसु होज्जा ?
गोयमा ! एगम्मि संजलणलोभे होज्जा। अहक्खायसजए जहा[4] नियंठे ॥

लेस्सा-पदं

५०२. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सलेस्से होज्जा ? अलेस्से होज्जा ?
गोयमा ! सलेस्से होज्जा जहा[5] कसायकुसीले। एव छेदोवट्ठावणिए वि। परिहारविसुद्धिए जहा[6] पुलाए। सुहुमसपराए जहा[7] नियंठे। अहक्खाए जहा[8] सिणाए, नवरं—जइ सलेस्से होज्जा, एगाए सुक्कलेस्साए होज्जा ॥

परिणाम-पदं

५०३. सामाइयसंजए णं भंते ! किं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ? हायमाणपरिणामे[9] ? अवट्ठियपरिणामे ?
गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे जहा[10] पुलाए। एवं जाव परिहारविसुद्धिए ॥

५०४. सुहुमसंपराए—पुच्छा।
गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे वा होज्जा, हायमाणपरिणामे वा होज्जा, नो अवट्ठियपरिणामे होज्जा। अहक्खाए जहा[11] नियठे ॥

५०५. सामाइयसजए णं भते ! केवइय काल वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समय जहा[12] पुलाए। एवं जाव परिहारविसुद्धिए ॥

---

१. भ० २५।३६६।
२. भ० २५।३७०।
३. भ० २५।३६७,३६८।
४. भ० २५।३७१,३७२।
५. भ० २५।३७५,३७६।
६. भ० २५।३७३,३७४।
७. भ० २५।३७७,३७८।
८. भ० २५।३७९,३८०।
९. हीय० (स)।
१०. भ० २५।३८१।
११. भ० २५।३८२;
१२. भ० २५।३८३।

५०६. सुहुमसपरागसंजए णं भंते ! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

५०७. केवतिय काल हायमाणपरिणामे होज्जा ? एवं चेव ॥

५०८. अहक्खायसजए ण भते ! केवतियं काल वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त ॥

५०९ केवतिय काल अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥

बंध-पदं

५१० सामाइयसजए ण भते ! कइ कम्मप्पगडीओ बधइ ?
गोयमा ! सत्तविहबधए वा, अट्ठविहबधए वा, एव जहा[1] बउसे । एव जाव परिहारविसुद्धिए ॥

५११ सुहुमसपरागसजए—पुच्छा ।
गोयमा ! आउय-मोहणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ बधति । अहक्खायसंजए जहा[2] सिणाए ॥

वेदण-पद

५१२. सामाइयसंजए णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेति ?
गोयमा ! नियम अट्ठ कम्मप्पगडीओ वेदेति । एवं जाव सुहुमसपराए ॥

५१३. अहक्खाए—पुच्छा ।
गोयमा ! सत्तविहवेदए वा, चउव्विहवेदए वा । सत्त वेदेमाणे मोहणिज्ज-वज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वेदेति, चत्तारि वेदेमाणे वेयणिज्जाउय-नाम-गोयाओ चत्तारि कम्मप्पगडीओ वेदेति ॥

उदीरणा-पदं

५१४. सामाइयसजए ण भते ! कति[3] कम्मप्पगडीओ उदीरेति ?
गोयमा ! सत्तविहउदीरए वा जहा[4] बउसो । एव जाव परिहारविसुद्धिए ॥

५१५. सुहुमसपराए—पुच्छा ।
गोयमा ! छव्विहउदीरए वा, पंचविहउदीरए वा । छ उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, पच उदीरमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ पंच कम्मप्पगडीओ उदीरेइ ॥

५१६. अहक्खायसजए—पुच्छा ।

---

१. भ० २५।३९१ ।
२. भ० २५।३९४ ।
३. केवइ (ता) ।
४. भ० २५।३९९ ।

गोयमा ! पंचविहउदीरए वा दुविहउदीरए वा अणुदीरए वा । पंच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ । सेसं जहा[1] नियठस्स ॥

उवसंपज्जहण-पदं

५१७. सामाइयसंजए णं भंते ! सामाइयसंजयत्तं जहमाणे किं जहति ? किं उवसंपज्जति ?
गोयमा ! सामाइयसंजयत्तं जहति । छेदोवट्ठावणियसंजयं[2] वा, सुहुमसंपराग-संजयं वा, असंजमं वा, संजमासंजमं वा उवसंपज्जति ॥

५१८. छेओवट्ठावणिए—पुच्छा ।
गोयमा ! छेओवट्ठावणियसंजयत्तं जहति । सामाइयसंजयं वा, परिहारविसुद्धिय-संजयं वा, सुहुमसंपरागसंजयं वा असंजमं वा, संजमासंजमं वा उवसंपज्जति ॥

५१९. परिहारविसुद्धिए—पुच्छा ।
गोयमा ! परिहारविसुद्धियसंजयत्तं जहति । छेदोवट्ठावणियसंजयं वा असंजमं वा उवसंपज्जति ॥

५२०. सुहुमसंपराए—पुच्छा ।
गोयमा ! सुहुमसंपरायसंजयत्तं जहति । सामाइयसंजयं वा, छेओवट्ठावणियसंजयं वा, अहक्खायसंजयं वा, असंजमं वा उवसंपज्जइ ॥

५२१. अहक्खायसंजए—पुच्छा ।
गोयमा ! अहक्खायसंजयत्तं जहति । सुहुमसंपरागसंजयं वा, असंजमं वा, सिद्धिगतिं वा उवसंपज्जइ ॥

सण्णा-पदं

५२२. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सण्णोवउत्ते होज्जा ? नो सण्णोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! सण्णोवउत्ते जहा[3] बउसो । एवं जाव परिहारविसुद्धिए । सुहुमसंपराए अहक्खाए य जहा[4] पुलाए ॥

आहार-पदं

५२३. सामाइयसंजए णं भंते ! किं आहारए होज्जा ? अणाहारए होज्जा ? जहा[5] पुलाए । एवं जाव सुहुमसंपराए । अहक्खायसंजए जहा[6] सिणाए ॥

---

१. भ० २५।४०१ ।
२. उपसंपत्तिप्रसङ्गे सर्वत्रापि भावप्रत्ययलोपो दृश्यते ।
३. भ०।४१० ।
४. भ० २५।४०९ ।
५. भ० २५।४११ ।
६. भ० २५।४१२ ।

भव-पदं

५२४. सामाइयसंजए ण भंते ! कति भवग्गहणाइ होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क, उक्कोसेण अट्ठ । एवं छेदोवट्ठावणिए वि ॥

५२५ परिहारविसुद्धिए—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्क, उक्कोसेण तिण्णि । एव जाव अहक्खाए ॥

आगरिस-पद

५२६. सामाइयसजयस्स ण भंते ! एगभवग्गहणिया केवतिया आगरिसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण जहा[1] वउसस्स ॥

५२७. छेदोवट्ठावणियस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को[2], उक्कोसेणं वीसपुहत्त ॥

५२८ परिहारविसुद्धियस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेण तिण्णि ॥

५२९. सुहुमसपरायस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेण चत्तारि ॥

५३०. अहक्खायस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेण दोण्णि ॥

५३१. सामाइयसजयस्स ण भंते ! नाणाभवग्गहणिया केवतिया आगरिसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहा[3] बउसे ॥

५३२. छेदोवट्ठावणियस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेण उवरिं नवण्ह सयाण अंतो सहस्सस्स । परिहारविसुद्धियस्स जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेण सत्त । सुहुमसपरागस्स जहण्णेणं दोण्णि, उक्कोसेण नव । अहक्खायस्स जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेण पंच ॥

काल-पद

५३३. सामाइयसजए ण भंते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण देसूणएहि नवहिं वासेहिं ऊणिया पुव्वकोडी । एव छेदोवट्ठावणिए वि । परिहारविसुद्धिए जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेण देसूणएहि एकूणतीसाए वासेहिं ऊणिया पुव्वकोडी । सुहुमसंपराए जहा[4] नियठे । अहक्खाए जहा सामाइयसंजए ॥

५३४. सामाइयसजया ण भंते ! कालओ केवच्चिर होंति ?
गोयमा ! सव्वद्ध ॥

---

१. भ० २५।४१७ ।
२. एक्क (अ, ख, ता, ब, म) ।
३. भ० २५।४२१ ।
४. भ० २५।४२६ ।

५३५. छेदोवट्ठावणियसजया—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं अड्ढाइज्जाइ वाससयाइं, उक्कोसेण पण्णासं सागरोवम-कोडिसयसहस्साइं ॥

५३६. परिहारविसुद्धीयसंजया—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण देसूणाइ दो वाससयाइं, उक्कोसेणं देसूणाओ दो पुव्व-कोडीओ ॥

५३७. सुहुमसंपरागसजया—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्क समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । अहक्खायसंजया जहा सामाइयसंजया ॥

अंतर-पदं

५३८. सामाइयसजयस्स णं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ ? [1]
गोयमा ! जहण्णेण जहा[2] पुलागस्स । एवं जाव अहक्खायसजयस्स ॥

५३९. सामाइयसजयाण भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! 'नत्थि अंतरं'[3] ॥

५४०. छेदोवट्ठावणियाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं तेवट्ठि वाससहस्साइं, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमकोडा-कोडीओ ॥

५४१. परिहारविसुद्धियाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं चउरासीइं वाससहस्साइ, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवम-कोडाकोडीओ । सुहुमसपरायाणं जहा[4] नियंठाणं । अहक्खायाणं जहा सामाइय-सजयाण ॥

समुग्घाय-पदं

५४२. सामाइयसंजयस्स णं भते ! कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! छ समुग्घाया पण्णत्ता जहा[5] कसायकुसीलस्स । एव छेदोवट्ठावणियस्स वि । परिहारविसुद्धियस्स जहा[6] पुलागस्स । सुहुमसपरागस्स जहा[7] नियठस्स । अहक्खायस्स जहा[8] सिणायस्स ॥

खेत्त-पदं

५४३. सामाइयसंजए ण भते ! लोगस्स कि सखेज्जइभागे होज्जा, असखेज्जइभागे—पुच्छा ।

---

१. भ० २५।४३० ।
२. नत्थतर (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
३. भ० २५।४३४ ।
४. भ० २५।४३७ ।
५. भ० २५।४३५ ।
६. भ० २५।४३८ ।
७. भ० २५।४३९ ।

गोयमा ! नो संखेज्जइभागे जहा[1] पुलाए। एव जाव सुहुमसंपराए। अहक्खाय-सजए जहा[2] सिणाए ॥

फुसणा-पदं

५४४. सामाइयसजए ण भते ! लोगस्स कि सखेज्जइभाग फुसइ० ? जहेव होज्जा तहेव फुसइ ॥

भाव-पदं

५४५. सामाइयसजए ण भते ! कयरम्मि भावे होज्जा ?
गोयमा ! खओवसमिए भावे होज्जा। एव जाव सुहुमसपराए ॥

५४६. अहक्खायसजए – पुच्छा।
गोयमा ! उवसमिए वा खइए[3] वा भावे होज्जा ॥

परिमाण-पदं

५४७ सामाइयसजया ण भते ! एगसमएण केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! पडिवज्जमाणए य पडुच्च जहा[4] कसायकुसीला तहेव निरवसेसं ॥

५४८ छेदोवट्ठावणिया—पुच्छा।
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तं। पुव्वपडिवण्णए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेण कोडिसयपुहत्त, उक्कोसेण वि कोडि-सयपुहत्त। परिहारविसुद्धिया जहा[5] पुलागा। सुहुमसपराया जहा[6] नियठा ॥

५४९. अहक्खायसजया ण—पुच्छा।
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं बावट्ठ सयं—अट्ठुत्तरसय[7] खवगाण, चउप्पण्ण उवसामगाणं। पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेण कोडिपुहत्त, उक्को-सेण वि कोडिपुहत्त ॥

अप्पाबहुयत्त-पदं

५५०. एएसि णं भते ! सामाइय-छेओवट्ठावणिय-परिहारविसुद्धिय-सुहुमसंपराय-अहक्खायसजयाण कयरे कयरेहिंतो[8] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? • विसेसाहिया वा ?

---

१. भ० २५।४४०।
२. भ० २५।४४१।
३. खलिए (अ,क,ख,व,म,स); खविए (ता)।
४. भ० २५।४४८।
५. भ० २५।४४६।
६. भ० २५।४४६।
७. अट्ठसयं (क, ता, व)।
८. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमसपरायसंजया, परिहारविसुद्धियसजया सखेज्जगुणा, अहक्खायसजया सखेज्जगुणा, छेओवट्ठावणियसजया सखेज्जगुणा, सामाइय-सजया सखेज्जगुणा ॥

संगहणी-गाहा

पडिसेवण दोसालोयणा य, आलोयणारिहे चेव ।
तत्तो सामायारी, पायच्छित्ते तवे चेव ॥ १ ॥

पडिसेवणा-पदं

५५१. कइविहा णं भते ! पडिसेवणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दसविहा पडिसेवणा पण्णत्ता, तं जहा—
दप्पप्पमादणाभोगे, आउरे आवतीति य ।
सकिण्णे[1] सहसक्कारे, भयप्पओसा य वीमंसा ॥ १ ॥

आलोयणा-पदं

५५२. दस आलोयणादोसा पण्णत्ता, त जहा—
आकंपइत्ता अणुमाणइत्ता, ज दिट्ठ बादर व सुहुमं वा ।
छन्न सद्दाउलयं, बहुजण अव्वत्त तस्सेवी ॥ १ ॥

५५३. दसहि ठाणेहि सपण्णे अणगारे अरिहति अत्तदोस आलोइत्तए, तं जहा—जातिसपण्णे, कुलसंपण्णे, विणयसपण्णे, नाणसंपण्णे, दसणसपण्णे, चरित्तसपण्णे, खते, दते, अमायी, अपच्छाणुतावी ॥

५५४. अट्ठहि ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति आलोयणं पडिच्छित्तए, तं जहा—आयारवं, आहारव[2], ववहारव, उव्वीलए, पकुव्वए, अपरिस्सावी, निज्जवए, अवायदसी ॥

सामायारी-पदं

५५५. दसविहा सामायारी पण्णत्ता, तं जहा—
इच्छा मिच्छा तहक्कारो, आवस्सिया य निसीहिया ।
आपुच्छणा य पडिपुच्छा, छदणा य निमंतणा ।
उवसंपया य काले, सामायारी भवे दसहा ॥ १ ॥

पायच्छित्त-पदं

५५६. दसविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा—आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे, विवेगारिहे, विउसग्गारिहे, तवारिहे, छेदारिहे, मूलारिहे, अणवट्ठप्पारिहे, पारंचियारिहे ॥

---

१. सकिते (अ, क, ख, ता, व, म, वृपा); २. आधारव (अ, क, व); अववारव (म) । निशीथपाठे तु 'तितिण' इत्यभिधीयते (वृ) ।

तव-पदं

५५७. दुविहे तवे पण्णत्ते, तं जहा—बाहिरए य, अब्भिंतरए य ।।

५५८. से किं तं बाहिरए तवे ? बाहिरए तवे छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अणसण, ओमोदरिया, भिक्खायरिया, रसपरिच्चाओ, कायकिलेसो, पडिसंलीणता ।।

५५९. से किं तं अणसणे ? अणसणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—इत्तरिए य, आवकहिए य ।।

५६०. से किं तं इत्तरिए ? इत्तरिए अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—चउत्थे भत्ते, छट्ठे भत्ते, अट्ठमे भत्ते, दसमे भत्ते, दुवालसमे भत्ते, चोद्दसमे भत्ते, अद्धमासिए भत्ते, मासिए भत्ते, दोमासिए भत्ते, तेमासिए भत्ते जाव छम्मासिए भत्ते । सेत्तं इत्तरिए ।।

५६१. से किं तं आवकहिए ? आवकहिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पाओवगमणे[1] य, भत्तपच्चक्खाणे य ।।

५६२. से किं तं पाओवगमणे ? पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अणीहारिमे य । नियमं अपडिकम्मे । सेत्तं पाओवगमणे ।।

५६३. से किं तं भत्तपच्चक्खाणे ? भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अणीहारिमे य । नियमं सपडिकम्मे । सेत्तं भत्तपच्चक्खाणे । सेत्तं आवकहिए । सेत्तं अणसणे ।।

५६४. से किं तं ओमोदरिया ? ओमोदरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वोमोदरिया य, भावोमोदरिया य ।।

५६५. से किं तं दव्वोमोदरिया ? दव्वोमोदरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उवगरणदव्वोमोदरिया य, भत्तपाणदव्वोमोदरिया य ।।

५६६. से किं तं उवगरणदव्वोमोदरिया ? उवगरणदव्वोमोदरिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगे वत्थे, एगे पाए,[2] चियत्तोवगरणसातिज्जणया । सेत्तं उवगरणदव्वोमोदरिया ।।

५६७. से किं तं भत्तपाणदव्वोमोदरिया ? भत्तपाणदव्वोमोदरिया अट्ठकुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अप्पाहारे, दुवालस [3]°कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अवड्ढोमोदरिए, सोलस कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे दुभागप्पत्ते, चउव्वीसं कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे ओमोदरिए, बत्तीसं कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे पमाणमेत्ते, एत्तो एक्केण वि घासेणं ऊणगं

---

१. पादोव° (ख) ।

२. पादे (अ, क, व) ।

३. सं० पा०—जहा सत्तमसए पढमोद्देसए जाव नो ।

आहारमाहारेमाणे समणे निग्गंथे° नो पकामरसभोजीति वत्तव्वं सिया। सेत्तं भत्तपाणदव्वोमोदरिया। सेत्तं दव्वोमोदरिया॥

५६८. से किं तं भावोमोदरिया? भावोमोदरिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—अप्पकोहे[1], °अप्पमाणे, अप्पमाए,° अप्पलोभे, अप्पसद्दे, अप्पझंझे, अप्पतुमंतुमे। सेत्तं भावोमोदरिया। सेत्तं ओमोदरिया॥

५६९. से किं तं भिक्खायरिया? भिक्खायरिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वाभिग्गहचरए,[2] °खेत्ताभिग्गहचरए, कालाभिग्गहचरए, भावाभिग्गहचरए, उक्खित्तचरए, णिक्खित्तचरए, उक्खित्तणिक्खित्तचरए, णिक्खित्तउक्खित्तचरए, वट्टिज्जमाणचरए, साहरिज्जमाणचरए, उवणीयचरए, अवणीयचरए, उवणीयअवणीयचरए, अवणीयउवणीयचरए, संसट्ठचरए, असंसट्ठचरए, तज्जायससट्ठचरए, अण्णयचरए, मोणचरए°, सुद्धेसणिए, संखादत्तिए। सेत्तं भिक्खायरिया॥

५७०. से किं तं रसपरिच्चाए? रसपरिच्चाए अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—निव्विगितिए, पणीयरसविवज्जए, [3]°आयंबिलए, आयामसित्थभोई, अरसाहारे, विरसाहारे, अंताहारे, पंताहारे°, लूहाहारे। सेत्तं रसपरिच्चाए॥

५७१. से किं तं कायकिलेसे? कायकिलेसे अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—ठाणादीए, उक्कुडुयासणिए, [4]°पडिमट्ठाई, वीरासणिए, नेसज्जिए, आयावए, अवाउडए, अकंडुयए, अणिट्ठुहए°, सव्वगायपरिकम्म-विभूसविप्पमुक्के। सेत्तं कायकिलेसे॥

५७२. से किं तं पडिसंलीणया? पडिसंलीणया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—इंदियपडिसंलीणया, कसायपडिसंलीणया, जोगपडिसंलीणया, विवित्तसयणासणसेवणया॥

५७३. से किं तं इंदियपडिसंलीणया? इंदियपडिसंलीणया पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियविसयप्पयारणिरोहो वा, सोइंदियविसयप्पत्तेसु वा अत्थेसु रागदोसविणिग्गहो। चक्खिदियविसयप्पयारणिरोहो वा एवं जाव फासिंदियविसयप्पयारणिरोहो वा, फासिंदियविसयप्पत्तेसु वा अत्थेसु रागदोसविणिग्गहो। सेत्तं इंदियपडिसंलीणया॥

५७४. से किं तं कसायपडिसंलीणया? कसायपडिसंलीणया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—कोहोदयनिरोहो वा, उदयप्पत्तस्स वा कोहस्स विफलीकरणं। एवं

---

१. सं०पा०—अप्पकोहे जाव अप्पलोभे।
२. सं०पा०—जहा ओववाइए जाव सुद्धेसणिए।
३. सं० पा०—जहा ओववाइए जाव लूहाहारे।
४. सं० पा०—जहा ओववाइए जाव सव्वगाय°।

जाव लोभोदयनिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा लोभस्स विफलीकरणं। सेत्त कसायपडिसलीणया ॥

५७५. से कि त जोगपडिसलीणया ? 'जोगपडिसलीणया तिविहा पण्णत्ता, त जहा—मणजोगपडिसंलीणया, वइजोगपडिसलीणया, कायजोगपडिसलीणया ॥

५७६. से कि त मणजोगपडिसलीणया ? मणजोगपडिसंलीणया अकुसलमणनिरोहो वा, कुसलमणउदीरण वा, मणस्स वा एगत्तीभावकरण। सेत्त मणजोगपडिसलीणया ॥

५७७. से कि तं वइजोगपडिसलीणया ? वइजोगपडिसलीणया अकुसलवइनिरोहो वा, कुसलवइउदीरण वा, वईए वा एगत्तीभावकरण। सेत्त वइजोगपडिसलीणया'[1] ॥

५७८ से कि त कायजोगपडिसलीणया ? कायजोगपडिसलीणया जण्ण सुसमाहिय-पसत-साहरियपाणिपाए कुम्मो इव गुत्तिदिए अल्लीण-पल्लीणे चिट्ठति। सेत्त कायपडिसलीणया। सेत्त जोगपडिसलीणया ॥

५७९ से कि त विवित्तसयणासणसेवणया ? विवित्तसयणासणसेवणया जण्णं आरामेसु वा उज्जाणेसु वा [2]°देवकुलेसु वा सभासु वा पवासु वा इत्थी-पसु-पडगविवज्जियासु वा वसहीसु फासु-एसणिज्ज पीढ-फलग°-सेज्जा-सथारग उवसपज्जित्ताणं विहरइ। सेत्त विवित्तसयणासणसेवणया। सेत्त पडिसंलीणया। सेत्त बाहिरए तवे ॥

५८० से कि त अब्भितरए तवे ? अब्भितरए तवे छव्विहे पण्णत्ते, त जहा—पायच्छित्तं, विणओ, वेयावच्च, सज्झाओ, झाण, विउसग्गो ॥

५८१. से कि त पायच्छित्ते ? पायच्छित्ते दसविहे पण्णत्ते, त जहा—आलोयणारिहे जाव[3] पारचियारिहे। सेत्त पायच्छित्ते ॥

५८२. से किं त विणए ? विणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—नाणविणए, दसणविणए, चरित्तविणए, मणविणए, वइविणए, कायविणए, लोगोवयारविणए ॥

---

१. 'जोगपडिसंलीणया तिविहा पण्णत्ता' इति पाठे सूचिता योगप्रतिसलीनतायास्त्रयः प्रकारा प्रस्तुतप्रकरणे निर्दिष्टा न सन्ति तथा 'से किं त कायपडिसलीणया' इति पाठेनापि 'से किं त मणपडिसलीणया, से किं त वइपडिसलीणया' इति सूत्रयोरपि सकेतो लभ्यते। प्रतीयते लिपिकरणे सक्षेपो जातः। तस्य पूर्तिरौपपातिक (सू० ३७)—वर्ति-पाठानुसारेण कृता। प्रस्तुतपाठस्य सक्षेप. एवमस्ति—जोगपडिसलीणया तिविहा पण्णत्ता, त जहा—अकुसलमणनिरोहो वा, कुसलमणउदीरण वा, मणस्स वा एगत्तीभावकरण। अकुसलवइनिरोहो वा, कुसलवइउदीरण वा, वईए वा एगत्तीभावकरण।

२. स० पा०—जहा सोमिलुद्देसए जाव सेज्जा।

३. भ० २५।५५६।

५८३. से किं तं नाणविणए ? नाणविणए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—आभिणिबोहिय-नाणविणए,[1] •सुयनाणविणए ओहिनाणविणए, मणपज्जवनाणविणए°, केवलनाणविणए । सेत्त नाणविणए ॥

५८४. से कि त दसणविणए ? दसणविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुस्सूसणाविणए य, अणच्चासादणाविणए य ॥

५८५. से कि त सुस्सूसणाविणए ? सुस्सूसणाविणए अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—सक्कारे इ वा सम्माणे इ वा [2]•किइकम्मे इ वा अब्भुट्ठाणे इ वा अजलिपग्गहे इ वा आसणाभिग्गहे इ वा आसणाणुप्पदाणे इ वा, एतस्स पच्चुग्गच्छणया, ठियस्स पज्जुवासणया, गच्छंतस्स° पडिससाहणया । सेत्त सुस्सूसणाविणए ॥

५८६. से कि त अणच्चासादणाविणए ? अणच्चासादणाविणए पणयालीसइविहे पण्णत्ते, तं जहा—अरहंताण अणच्चासादणया[3], अरहतपण्णत्तस्स धम्मस्स अणच्चासादणया, आयरियाण अणच्चासादणया, उवज्झायाण अणच्चासादणया, थेराण अणच्चासादणया, कुलस्स अणच्चासादणया, गणस्स अणच्चासादणया, संघस्स अणच्चासादणया, किरियाए अणच्चासादणया, सभोगस्स अणच्चासादणया, आभिणिवोहियनाणस्स अणच्चासादणया, जाव केवलनाणस्स अणच्चासादणया, एएसि चेव भत्ति-बहुमाणेण, एएसि चेव वण्णसजलणया । सेत्त अणच्चासादणयाविणए । सेत्तं दसणविणए ॥

५८७. से कि त चरित्तविणए ? चरित्तविणए पचविहे पण्णत्ते, तं जहा—सामाइय-चरित्तविणए जाव अहक्खायचरित्तविणए । सेत्त चरित्तविणए ॥

५८८. से किं त मणविणए ? मणविणए दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पसत्थमणविणए य, अप्पसत्थमणविणए य ॥

५८९. से कि त पसत्थमणविणए ? पसत्थमणविणए[4] सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—अपावए, असावज्जे, अकिरिए, निरुवक्केसे[5], अणण्हवकरे, अच्छविकरे, अभूयाभिसकणे[6] । सेत्तं पसत्थमणविणए ॥

---

१. स० पा०—आभिणिवोहियनाणविणए जाव केवल° ।

२. स० पा०—जहा चोद्दसमसए ततिए उद्देसए जाव पडिससाहणया ।

३. अणच्चासायणया (अ, ख); अणच्चासात-णया (क, ता) ।

४. पसत्थमणविणए—जे य मणे असावज्जे अकिरिए अकक्कसे अकडुए अणिट्ठुरे अफरुसे अणण्हयकरे अछेयकरे अभेयकरे अपरितावणकरे अणुद्दवणकरे अभूओवघाइए तहप्पगार मणो पहारेज्जा (ओ० सू० ४०) ।

५. निरुवक्कोसे (अ, क) ।

६. °संकमणे (क, ता) ।

५६०. से किं तं अप्पसत्थमणविणए ? अप्पसत्थमणविणए[1] सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—पावए, सावज्जे, सकिरिए, सउवक्केसे[2], अण्हयकरे, छविकरे, भूयाभिसकणे। सेत्त अप्पसत्थमणविणए। सेत्त मणविणए॥

५६१ से किं त वइविणए ? वइविणए दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पसत्थवइविणए य, अप्पसत्थवइविणए य॥

५६२. से किं त पसत्थवइविणए ? पसत्थवइविणए[3] सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—अपावए, असावज्जे जाव अभूयाभिसकणे। सेत्त पसत्थवइविणए॥

५६३ से किं त अप्पसत्थवइविणए ? अप्पसत्थवइविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—पावए, सावज्जे जाव भूयाभिसकणे। सेत्त अप्पसत्थवइविणए। सेत्त वइविणए॥

५६४ से किं त कायविणए ? कायविणए दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पसत्थकायविणए य, अप्पसत्थकायविणए य॥

५६५. से किं त पसत्थकायविणए ? पसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—आउत्त गमण, आउत्तं ठाणं, आउत्त निसीयण, आउत्त तुयट्टण, आउत्तं उल्लघण, आउत्तं पल्लघण, आउत्तं सव्विदियजोगजुजणया। सेत्तं पसत्थकायविणए॥

५६६ से किं तं अप्पसत्थकायविणए ? अप्पसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणाउत्त गमण जाव अणाउत्त सव्विदियजोगजुजणया। सेत्त अप्पसत्थकायविणए। सेत्तं कायविणए॥

५६७ से किं त लोगोवयारविणए ? लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—अब्भासवत्तिय[4], परच्छदाणुवत्तिय, कज्जहेउ[5], कयपडिकइया[6], अत्तगवेसणया, देसकालण्णया[7], सव्वत्थेसु अप्पडिलोमया। सेत्त लोगोवयारविणए। सेत्तं विणए॥

५६८. से किं त वेयावच्चे ? वेयावच्चे दसविहे पण्णत्ते, त जहा—आयरियवेयावच्चे, उवज्झायवेयावच्चे, थेरवेयावच्चे, तवस्सिवेयावच्चे, गिलाणवेयावच्चे, सेहवेयावच्चे, कुलवेयावच्चे, गणवेयावच्चे, सघवेयावच्चे, साहम्मियवेयावच्चे। सेत्त वेयावच्चे॥

---

१ अपसत्थमणविणए—जे य मणे सावज्जे सकिरिए सकक्कसे कडुए णिट्ठुरे फरुसे अण्हयकरे छेयकरे भेयकरे परितावणकरे उद्दवणकरे भूओवघाइए तहप्पगारं मणो णो पहारेज्जा (ओ० सू० ४०)।

२. सउवक्कोसे (क, ख)।

३ पूर्ववत् अत्रापि ओपपातिकस्य पाठभेदो दृश्य।

४ °पत्तिय (ता)।

५ ज्ञानादिनिमित्त भक्तादिदानमिति गम्यम् (वृ)।

६. कइपडिकइयाए (ता)।

७. देसकालण्णुया (ओ० सू० ४०)।

५९९. से किं तं सज्झाए ? सज्झाए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा, धम्मकहा । से त्त सज्झाए ।।

६००. से किं तं झाणे ? झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अट्टे झाणे, रोद्दे झाणे, धम्मे झाणे, सुक्के झाणे ।।

६०१. अट्टे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा अमणुण्णसंपयोगसंपउत्ते तस्स विप्पयोग-सतिसमन्नागए यावि भवइ, मणुण्णसपयोगसंपउत्ते तस्स अविप्पयोगसतिसम-न्नागए यावि भवइ, आयंकसंपयोगसपउत्ते तस्स विप्पयोगसतिसमन्नागए यावि भवइ, परिभुसियकामभोगसंपयोगसंपउत्ते[1] तस्स अविप्पयोगसतिसमन्नागए यावि भवइ ।।

६०२. अट्टस्स ण झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—कंदणया, सोयणया, तिप्पणया, परिदेवणया ।।

६०३ रोद्दे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—हिंसाणुबंधी, मोसाणुबधी, तेयाणुबंधी, सारक्खणाणुबंधी ।।

६०४. रोद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—ओस्सन्नदोसे, वहुलदोसे, अण्णाणदोसे, आमरणंतदोसे ।।

६०५ धम्मे झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, तं जहा—आणाविजए, अवाय-विजए, विवागविजए, संठाणविजए ।।

६०६. धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—आणारुयी, निसग्ग-रुयी, सुत्तरुयी, ओगाढरुयी ।।

६०७ धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलबणा पण्णत्ता, त जहा—वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्टणा, धम्मकहा ।।

६०८. धम्मस्स ण झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—एगत्ताणुप्पेहा, अणिच्चाणुप्पेहा, असरणाणुप्पेहा, ससाराणुप्पेहा ।।

६०९. सुक्के झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, तं जहा—पुहत्तवितक्के[2] सवियारी, एगत्तवितक्के अवियारी, सुहुमकिरिए अणियट्टी, समोछिण्णकिरिए[3] अप्पडिवायी ।।

६१०. सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, त जहा—खती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे ।।

६११. सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता, त जहा—अव्वहे, असंमोहे, विवेगे, विउसग्गे ।।

---

१. परिज्जुसिय° (ख); परिज्झुसिय° (ता) ।
२. °वियक्के (ख) ।
३. समोच्छिण्ण° (ख, ता, म); समुच्छिण्ण° (क्व०) ।

६१२ सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—'अणंतवत्तियाणुप्पेहा, विप्परिणामाणुप्पेहा, असुभाणुप्पेहा, अवायाणुप्पेहा'[1]। सेत्तं झाणे ॥

६१३ से किं तं विउसग्गे ? विउसग्गे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वविउसग्गे य, भावविउसग्गे य ॥

६१४ से किं तं दव्वविउसग्गे ? दव्वविउसग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—गणविउसग्गे, सरीरविउसग्गे, उवहिविउसग्गे, भत्तपाणविउसग्गे। सेत्तं दव्वविउसग्गे ॥

६१५ से किं तं भावविउसग्गे ? भावविउसग्गे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—कसायविउसग्गे, संसारविउसग्गे, कम्मविउसग्गे ॥

६१६. से किं तं कसायविउसग्गे ? कसायविउसग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—कोहविउसग्गे, माणविउसग्गे, मायाविउसग्गे, लोभविउसग्गे। सेत्तं कसायविउसग्गे ॥

६१७ से किं तं संसारविउसग्गे ? संसारविउसग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयसंसारविउसग्गे जाव देवसंसारविउसग्गे। सेत्तं संसारविउसग्गे ॥

६१८ से किं तं कम्मविउसग्गे ? कम्मविउसग्गे अट्ठविहे पण्णत्ते, तं जहा—नाणावरणिज्जकम्मविउसग्गे जाव अंतराइयकम्मविउसग्गे। सेत्तं कम्मविउसग्गे। सेत्तं भावविउसग्गे। सेत्तं अब्भिंतरए तवे ॥

६१९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

अट्ठमो उद्देसो

नेरइयादीण-पुणब्भव-पदं

६२० रायगिहे जाव एवं वयासी—नेरइया णं भंते ! कहं उववज्जंति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे अज्झवसाणनिव्वत्तिएणं करणोवाएणं सेयकाले तं ठाणं विप्पजहित्ता पुरिमं ठाणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, एवामेव एए वि जीवा पवओ विव पवमाणा अज्झवसाणनिव्वत्तिएणं करणोवाएणं सेयकाले तं भवं विप्पजहित्ता पुरिमं भवं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति ॥

---

१. अवायाणुप्पेहा, असुभाणुप्पेहा, अणंतवत्तियाणुप्पेहा, विपरिणामाणुप्पेहा (ओ० सू० ४३)

छव्वीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

नमो सुयदेवयाए भगवईए

१. जीवा य २. लेस्स ३. पक्खिय, ४. दिट्ठि ५. अण्णाण ६. नाण ७. सण्णाओ।
८. वेय ९. कसाए १०. उवओग ११. जोग एक्कारस वि ठाणा॥१॥

जीवाणं लेस्सादिविसेसितजीवाणं च बंधाबंध-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—जीवा णं भंते! पावं कम्मं किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ? बंधी बंधइ न बंधिस्सइ? बंधी न बंधइ बंधिस्सइ? बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ?
गोयमा! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ॥

२. सलेस्से णं भंते! जीवे पावं कम्मं किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ? बंधी बंधइ न बंधिस्सइ—पुच्छा।
गोयमा! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए एवं चउभंगो॥

३. कण्हलेस्से णं भंते! जीवे पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ। एवं जाव पम्हलेस्से। सव्वत्थ पढम-बितियभंगा। सुक्कलेस्से जहा सलेस्से तहेव चउभंगो॥

४. अलेस्से णं भंते! जीवे पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा! बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ॥

५. कण्हपक्खिए णं भंते! जीवे पावं कम्मं—पुच्छा।
गोयमा! अत्थेगतिए बंधी, पढम-बितिया[2] भंगा॥

---

१. भ० १।४-१०।
२. बीया (ता)।

६ सुक्कपक्खिए णं भंते ! जीवे—पुच्छा।
गोयमा ! चउभंगो भाणियव्वो ॥

७ सम्मद्दिट्ठीणं चत्तारि भंगा, मिच्छादिट्ठीणं पढम-बितिया, सम्मामिच्छादिट्ठीणं एवं चेव ॥

८ नाणीणं चत्तारि भंगा, आभिणिवोहियनाणीणं जाव मणपज्जवनाणीणं चत्तारि भंगा, केवलनाणीणं चरिमो भंगो जहा अलेस्साणं ॥

९ अण्णाणीणं पढम-बितिया, एवं मइअण्णाणीणं, सुयअण्णाणीणं, विभंगनाणीण वि ॥

१० आहारसण्णोवउत्ताणं जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताणं पढम-बितिया, नोसण्णोवउत्ताणं चत्तारि ॥

११ सवेदगाणं पढम-बितिया। एवं इत्थिवेदगा, पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा वि। अवेदगाणं चत्तारि ॥

१२ सकसाईणं चत्तारि, कोहकसाईणं पढम-बितिया भंगा, एवं माणकसायिस्स वि, मायाकसायिस्स वि। लोभकसायिस्स चत्तारि भंगा ॥

१३ अकसायी णं भंते ! जीवे पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ॥

१४. सजोगिस्स चउभंगो, एवं मणजोगिस्स वि, वइजोगिस्स वि, कायजोगिस्स वि। अजोगिस्स चरिमो ॥

१५ सागारोवउत्ते चत्तारि, अणागारोवउत्ते वि चत्तारि भंगा ॥

नेरइयादीणं लेस्सादिविसेसितनेरइयादीणं च बंधाबंध-पदं

१६ नेरइए णं भंते ! पावं कम्मं किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ ?
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी, पढम-बितिया ॥

१७. सलेस्से णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं० ? एवं चेव। एवं कण्हलेस्से वि, नीललेस्से वि, काउलेस्से वि। एवं कण्हपक्खिए सुक्कपक्खिए, सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी, नाणी आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी, अण्णाणी मइअण्णाणी सुयअण्णाणी विभंगनाणी, आहारसण्णोवउत्ते जाव परिग्गहसण्णोवउत्ते, सवेदए नपुंसकवेदए, सकसायी जाव लोभकसायी, सजोगी मणजोगी वइजोगी कायजोगी, सागारोवउत्ते अणागारोवउत्ते—एएसु सव्वेसु पदेसु पढम-बितिया भंगा भाणियव्वा। एवं असुरकुमारस्स वि वत्तव्वया भाणियव्वा, नवरं—तेउलेसा, इत्थिवेदग-पुरिसवेदगा य अब्भहिया, नपुंसगवेदगा न भण्णंति, सेसं तं चेव, सव्वत्थ पढम-बितिया भंगा। एवं जाव थणियकुमारस्स।

एवं पुढविकाइयस्स वि, आउकाइयस्स वि जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स वि सव्वत्थ वि पढम-बितिया भंगा, नवरं—जस्स जा लेस्सा। दिट्ठी, नाण, अण्णाणं, वेदो, जोगो य अत्थि तं तस्स भाणियव्वं, सेस तहेव। मणूसस्स जच्चेव जीवपदे वत्तव्वया सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा। वाणमंतरस्स जहा असुरकुमारस्स। जोइसियस्स वेमाणियस्स एवं चेव, नवरं—लेस्साओ जाणियव्वाओ, सेसं तहेव भाणियव्वं॥

जीवादीणं नाणावरणादिकम्मं पडुच्च बंधाबंध-पदं

१८. जीवे णं भंते! नाणावरणिज्जं कम्मं किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ० ? एवं जहेव पावकम्मस्स वत्तव्वया तहेव नाणावरणिज्जस्स वि भाणियव्वा, नवरं—जीवपदे मणुस्सपदे य सकसाइम्मि जाव लोभकसाइम्मि य पढम-बितिया भंगा, अवसेसं तं चेव जाव वेमाणिया। एवं दरिसणावरणिज्जेण वि दंडगो भाणियव्वो निरवसेसो॥

१९. जीवे णं भंते! वेयणिज्जं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ। सलेस्से वि एवं चेव ततियविहूणा भंगा। कण्हलेस्से जाव पम्हलेस्से पढम-बितिया भंगा। सुक्कलेस्से ततियविहूणा भंगा। अलेस्से चरिमो भंगो। कण्हपक्खिए पढम-बितिया। सुक्कपक्खिया ततियविहूणा। एवं सम्मदिट्ठिस्स वि, मिच्छादिट्ठिस्स सम्मामिच्छादिट्ठिस्स य पढम-बितिया। नाणिस्स ततियविहूणा। आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी पढम-बितिया। केवलनाणी ततियविहूणा। एवं नोसण्णोवउत्ते, अवेदए, अकसायी। सागारोवउत्ते अणागारोवउत्ते—एएसु ततियविहूणा। अजोगिम्मि य चरिमो। सेसेसु पढम-बितिया॥

२०. नेरइए णं भंते! वेयणिज्जं कम्मं किं बंधी बंधइ० ? एवं नेरइया जाव वेमाणिय त्ति। जस्स जं अत्थि सव्वत्थ वि पढम-बितिया, नवरं—मणुस्से जहा जीवे॥

२१. जीवे णं भंते! मोहणिज्जं कम्मं किं बंधी बंधइ० ? जहेव पावं कम्मं तहेव मोहणिज्जं पि निरवसेसं जाव वेमाणिए॥

२२. जीवे णं भंते! आउयं कम्मं किं बंधी बंधइ—पुच्छा।
गोयमा! अत्थेगतिए बंधी चउभंगो। सलेस्से जाव सुक्कलेस्से चत्तारि भंगा। अलेस्से चरिमो भंगो॥

२३. कण्हपक्खिए णं—पुच्छा।
गोयमा! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ। सुक्कपक्खिए सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी चत्तारि भंगा॥

२४. सम्मामिच्छादिट्ठी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ । नाणी जाव ओहिनाणी चत्तारि भंगा ॥

२५. मणपज्जवनाणी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ । केवलनाणे चरिमो भंगो । एवं एएणं कमेणं नोसण्णोवउत्ते बितियविहूणा जहेव मणपज्जवनाणे । अवेदए अकसाई य ततिय-चउत्था जहेव सम्मामिच्छत्ते । अजोगिम्मि चरिमो, सेसेसु पदेसु चत्तारि भंगा जाव अणागारोवउत्ते ॥

२६. नेरइए णं भंते ! आउयं कम्मं किं बंधी - पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए चत्तारि भंगा, एवं सव्वत्थ वि नेरइयाणं चत्तारि भंगा, नवरं—कण्हलेस्से कण्हपक्खिए य पढम-ततिया भंगा; सम्मामिच्छत्ते ततिय-चउत्था । असुरकुमारे एवं चेव, नवरं—कण्हलेस्से वि चत्तारि भंगा भाणियव्वा, सेसं जहा नेरइयाणं । एवं जाव थणियकुमाराणं । पुढविक्काइयाणं सव्वत्थ वि चत्तारि भंगा, नवरं—कण्हपक्खिए पढम-ततिया भंगा ॥

२७. तेउलेस्से—पुच्छा ।
गोयमा ! बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, सेसेसु सव्वत्थ चत्तारि भंगा । एवं आउ-क्काइय-वणस्सइकाइयाण वि निरवसेसं । तेउकाइय-वाउक्काइयाणं सव्वत्थ वि पढम-ततिया भंगा । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं पि सव्वत्थ वि पढम-ततिया भंगा, नवरं—सम्मत्ते, नाणे, आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे ततिओ भंगो । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं कण्हपक्खिए पढम-ततिया भंगा, सम्मामिच्छत्ते ततियचउत्थो भंगो । सम्मत्ते, नाणे, आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे—एएसु पंचसु वि पदेसु बितियविहूणा भंगा, सेसेसु चत्तारि भंगा । मणुस्साणं जहा जीवाणं, नवरं—सम्मत्ते, ओहिए नाणे, आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे, ओहि-नाणे—एएसु बितियविहूणा भंगा, सेसं तं चेव । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा । नामं गोयं अंतरायं च एयाणि जहा नाणावरणिज्जं ॥

२८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

विसेसितनेरइयादीणं बंधाबंध-पदं

२९. अणंतरोववन्नए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा तहेव ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी, पढम-बितिया भंगा ॥

३०. सलेस्से ण भते ! अणंतरोववन्नए नेरइए पावं कम्मं कि बधी—पुच्छा।
गोयमा ! पढम-वितिया भगा। एव खलु सव्वत्थ पढम-बितिया भगा, नवर—सम्मामिच्छत्त मणजोगो वइजोगो य न पुच्छिज्जइ। एव जाव थणियकुमाराण। बेइदिय-तेइदिय-चउरिदियाण वइजोगो न भण्णइ। पचिदियतिरिक्खजोणियाण पि सम्मामिच्छत्त, ओहिनाण, विभंगनाणं, मणजोगो, वइजोगो—एयाणि पंच न भण्णति। मणुस्साण अलेस्स-सम्मामिच्छत्त-मणपज्जवनाण-केवलनाण-विभग-नाण-नोसण्णोवउत्त-अवेदग-अकसाय-मणजोग-वइजोग-अजोगि—एयाणि एक्कारस पदाणि न भण्णति। वाणमतर-जोइसिय-वेमाणियाण जहा नेरइयाण तहेव ते तिण्णि न भण्णति। सव्वेसि जाणि सेसाणि ठाणाणि सव्वत्थ पढम-बितिया भगा। एगिदियाणं सव्वत्थ पढम-वितिया भगा। जहा पावे एवं नाणा-वरणिज्जेण वि दडओ, एव आउयवज्जेसु जाव अतराइए दंडओ॥

३१. अणतरोववन्नए ण भते ! नेरइए आउय कम्मं कि बधी—पुच्छा।
गोयमा ! बंधी न बधइ बधिस्सइ॥

३२. सलेस्से ण भते ! अणतरोववन्नए नेरइए आउय कम्म कि बधी० ? एवं चेव ततिओ भगो। एव जाव अणागारोवउत्ते। सव्वत्थ वि ततिओ भंगो। एव मणुस्सवज्ज जाव वेमाणियाण। मणुस्साणं सव्वत्थ ततिय-चउत्था भगा, नवर—कण्हपक्खिएसु ततिओ भगो। सव्वेसि नाणत्ताइ ताइ चेव॥

३३. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति॥

३-१० उद्देसा

३४. परंपरोववन्नए णं भते ! नेरइए पावं कम्म कि बधी—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिए पढम-बितिया। एवं जहेव पढमो उद्देसओ तहेव परपरोववन्नएहि वि उद्देसओ भाणियव्वो नेरइयाईओ तहेव नवदंडगसगहिओ। अट्ठण्ह वि कम्मप्पगडीण जा जस्स कम्मस्स वत्तव्वया सा तस्स अहीणमतिरित्ता नेयव्वा जाव वेमाणिया अणागारोवउत्ता॥

३५. सेवं भते ! सेव भंते ! त्ति॥

३६. अणतरोगाढए णं भते ! नेरइए पावं कम्मं कि बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिए एव जहेव अणंतरोववन्नएहि नवदंडगसगहिओ[1] उद्देसो

---

१. ०सहिओ (ता, ब)।

भणिओ तहेव अणतरोगाढएहि वि अहीणमतिरित्तो भाणियव्वो नेरइयादीए जाव वेमाणिए ॥

३७ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

३८ परपरोगाढए ण भते ! नेरइए पाव कम्म किं वधी ? जहेव परंपरोववन्नएहि उद्देसो सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो ॥

३९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४०. अणतराहारए णं भते ! नेरइए पाव कम्मं कि वधी—पुच्छा । एवं जहेव अणतरोववन्नएहि उद्देसो तहेव निरवसेसं ॥

४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४२ परपराहारए ण भते ! नेरइए पाव कम्मं कि वधी—पुच्छा ।
गोयमा ! एव जहेव परपरोववन्नएहि उद्देसो तहेव निरवसेसो भाणियव्वो ॥

४३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४४. अणतरपज्जत्तए ण भते ! नेरइए पाव कम्मं किं वधी --पुच्छा ।
गोयमा ! जहेव अणतरोववन्नएहि उद्देसो तहेव निरवसेस ॥

४५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४६ परपरपज्जत्तए ण भते ! नेरइए पाव कम्म कि वधी—पुच्छा ।
गोयमा ! एव जहेव परपरोववन्नएहि उद्देसो तहेव निरवसेसो भाणियव्वो ॥

४७. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

४८. चरिमे ण भंते ! नेरइए पाव कम्मं कि वंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! एव जहेव परपरोववन्नएहि उद्देसो तहेव चरिमेहि निरवसेस ॥

४९. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति जाव[1] विहरइ ॥

एक्कारसमो उद्देसो

५०. अचरिमे ण भते ! नेरइए पावं कम्म कि वधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगइए एव जहेव पढमोद्देसए, पढम-वितिया भंगा भाणियव्वा सव्वत्थ जाव पचिदियतिरिक्खजोणियाण ॥

५१. अचरिमे ण भंते ! मणुस्से पाव कम्मं कि वधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए वधी वधइ वधिस्सइ, अत्थेगतिए वधी वंधइ न वधिस्सइ, अत्थेगतिए वधी न वंधइ वधिस्सइ ॥

---

१. भ० १।५१ ।

५२. सलेस्से णं भंते ! अचरिमे मणुस्से पावं कम्मं किं बंधी ०? एवं चेव तिण्णि भंगा चरमविहूणा भाणियव्वा एवं जहेव पढमुद्देसे, नवरं—जेसु तत्थ वीससु[1] चत्तारि भंगा तेसु इह आदिल्ला तिण्णि भंगा भाणियव्वा चरिमभंगवज्जा। अलेस्से केवलनाणी य अजोगी य—एए तिण्णि वि न पुच्छिज्जंति, सेसं तहेव। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिए जहा नेरइए॥

५३. अचरिमे णं भंते ! नेरइए नाणावरणिज्जं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! एवं जहेव पावं, नवरं—मणुस्सेसु सकसाईसु[2] लोभकसाईसु य पढम-बितिया भंगा, सेसा अट्ठारस चरमविहूणा, सेसं तहेव जाव वेमाणियाणं। दरिसणावरणिज्जं पि एवं चेव निरवसेसं। वेयणिज्जे सव्वत्थ वि पढम-बितिया भंगा जाव वेमाणियाणं, नवरं—मणुस्सेसु अलेस्से केवली अजोगी य नत्थि॥

५४. अचरिमे णं भंते ! नेरइए मोहणिज्जं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! जहेव पावं तहेव निरवसेसं जाव वेमाणिए॥

५५. अचरिमे णं भंते ! नेरइए आउयं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! पढम-बितिया भंगा। एवं सव्वपदेसु वि। नेरइयाणं पढम-ततिया भंगा, नवरं—सम्मामिच्छत्ते ततिओ भंगो। एवं जाव थणियकुमाराणं। पुढविक्काइय-आउक्काइय-वणस्सइकाइयाणं तेउलेस्साए ततिओ भंगो। सेसेसु पदेसु सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा। तेउकाइय-वाउक्काइयाणं सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं एवं चेव, नवरं—सम्मत्ते ओहिनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे—एएसु चउसु वि ठाणेसु ततिओ भंगो। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं सम्मामिच्छत्ते ततिओ भंगो। सेसपदेसु[3] सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा। मणुस्साणं सम्मामिच्छत्ते अवेदए अकसाइम्मि य ततिओ भंगो, अलेस्स-केवलनाण-अजोगी य न पुच्छिज्जंति। सेसपदेसु सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया। नामं गोयं अंतराइयं च जहेव नाणावरणिज्जं तहेव निरवसेसं॥

५६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ॥

---

१. वीसेसु (अ)।
२. कसायीसु (क, म, स)।
३. सेसेसु पदेसु (स)।

सत्तवीसइमं सतं

१-११ उद्देसा

जीवाणं पावकम्म-करणाकरण-पद

१. जीवे णं भंते ! पावं कम्मं किं करिसु करेति करेस्सति ? करिसु करेति न-करेस्सति ? करिसु न करेति करेस्सति ? करिसु न करेति न करेस्सति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए करिसु न करेति करेस्सति, अत्थेगतिए करिसु करेति न करेस्सति, अत्थेगतिए करिसु न करेति करेस्सति, अत्थेगतिए करिसु न करेति न करेस्सति ॥

२. सलेस्से णं भंते ! जीवे पावं कम्मं ०? एवं एएणं अभिलावेणं जच्चेव बंधिसए वत्तव्वया सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा, तहेव नवदंडगसंगहिया एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा ॥

अट्ठावीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

जीवाणं पावकम्म-समज्जण-समायरण-पदं

१. जीवा णं भंते ! पाव कम्म कहि समज्जिणिसु ? कहि समायरिसु ?
गोयमा ! १. सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा २. अहवा तिरिक्ख-जोणिएसु य नेरइएसु य होज्जा ३ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य होज्जा ४. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य देवेसु य होज्जा ५ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य होज्जा ६. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य देवेसु य होज्जा ७ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा ८. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा ॥

२. सलेस्सा ण भते ! जीवा पाव कम्म कहिं समज्जिणिसु ? कहि समायरिसु ?
एवं चेव । एव कण्हलेस्सा जाव अलेस्सा । कण्हपक्खिया, सुक्कपक्खिया । एवं जाव अणागारोवउत्ता ॥

३. नेरइया णं भते ! पावं कम्मं कहि समज्जिणिसु ? कहि समायरिसु ?
गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा, एवं चेव अट्ठ भगा भाणियव्वा । एव सव्वत्थ अट्ठभंगा जाव अणागारोवउत्तत्ति । एवं जाव वेमाणि-याणं । एवं नाणावरणिज्जेण वि दंडओ । एव जाव अतराइएण । एवं एए जीवादीया वेमाणियपज्जवसाणा नव दडगा भवति ॥

४. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

५. अणंतरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया पावं कम्मं कहिं समज्जिणिसु ? कहिं समायरिसु ?

गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा, एव एत्थ[1] वि अट्ठ भंगा। एव अणतरोववन्नगाण नेरइयाईण जस्स ज अत्थि लेसादीय अणागारोवओग-पज्जवसाण त सव्व एयाए भयणाए भाणियव्व जाव वेमाणियाण, नवर— अणतरेसु जे परिहरियव्वा ते जहा बधिसए तहा इह पि। एव नाणावरणिज्जेण वि दडओ। एव जाव अतराइएण निरवसेसं। एसो वि नवदडगसगहिओ उद्देसओ भाणियव्वो ॥

६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

३-११ उद्देसा

७ एव एएण कमेण जहेव बधिसए उद्देसगाण परिवाडी तहेव इह पि अट्ठसु भगेसु नेयव्वा, नवर—जाणियव्व जं जस्स अत्थि त तस्स भाणियव्व जाव अचरिमु-द्देसो। सव्वे वि एए एक्कारस उद्देसगा ॥

८ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

---

१. सव्वत्थ (ता)।

एगूणतीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

जीवाणं पावकम्म-पट्ठवण-निट्ठवण-पदं

१. जीवा ण भंते ! पावं कम्मं किं समायं पट्ठविसु समाय निट्ठविसु ? समाय पट्ठविसु विसमाय निट्ठविसु ? विसमाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु ? विसमाय पट्ठविसु विसमाय निट्ठविसु ?
गोयमा ! अत्थेगतिया समायं पट्ठविसु समायं निट्ठविसु जाव अत्थेगतिया विसमायं पट्ठविसु विसमायं निट्ठविसु ॥

२. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगतिया समाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु, त चेव ?
गोयमा ! जीवा चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—अत्थेगतिया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगतिया समाउया विसमोववन्नगा, अत्थेगतिया विसमाउया समोववन्नगा, अत्थेगतिया विसमाउया विसमोववन्नगा। तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते ण पावं कम्म समायं पट्ठविसु समायं निट्ठविसु। तत्थ ण जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते ण पाव कम्म समायं पट्ठविसु विसमाय निट्ठविसु। तत्थ ण जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते ण पाव कम्म विसमाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु। तत्थ ण जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा ते ण पाव कम्मं विसमायं पट्ठविसु विसमायं निट्ठविसु। से तेणट्ठेण गोयमा ! त चेव ॥

३. सलेस्सा ण भंते ! जीवा पावं कम्म० ? एवं चेव, एवं सव्वट्ठाणेसु वि जाव अणागारोवउत्ता। एए सव्वे वि पया एयाए वत्तव्वयाए भाणियव्वा ॥

४. नेरइया ण भते ! पावं कम्मं कि समाय पट्ठविसु समायं निट्ठविसु—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिया समायं पट्ठविसु, एव जहेव जीवाण तहेव भाणियव्व जाव अणागारोवउत्ता। एवं जाव वेमाणियाणं जस्स ज अत्थि तं एएण चेव

कमेणं भाणियव्वं। जहा पावेण दंडओ। एएणं कमेणं अट्ठसु वि कम्मप्पगडीसु अट्ठ दंडगा भाणियव्वा जीवादीया वेमाणियपज्जवसाणा। एसो नवदंडगसंगहिओ पढमो उद्देसो भाणियव्वो॥

५. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥

बीओ उद्देसो

६. अणंतरोववन्नगा णं भंते! नेरइया पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु—पुच्छा।
गोयमा! अत्थेगतिया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु, अत्थेगतिया समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु॥

७. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—अत्थेगतिया समायं पट्ठविंसु, तं चेव?
गोयमा! अणंतरोववन्नगा नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अत्थेगतिया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगतिया समाउया विसमोववन्नगा। तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु। तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु। से तेणट्ठेणं तं चेव॥

८. सलेस्सा णं भंते! अणंतरोववन्नगा नेरइया पाव०? एवं चेव, एवं जाव अणागारोवउत्ता। एवं असुरकुमारा वि। एवं जाव वेमाणिया[1], नवरं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं। एवं नाणावरणिज्जेण वि दंडओ। एवं निरवसेसं जाव अंतराइएणं॥

९. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ॥

३-११ उद्देसा

१०. एवं एएणं गमएणं जच्चेव बंधिसए उद्देसगपरिवाडी सच्चेव इह वि भाणियव्वा जाव अचरिमो त्ति। अणंतरउद्देसगाणं चउण्ह वि एक्का वत्तव्वया, सेसाणं सत्तण्हं एक्का॥

---

१. वेमाणियाणं (ता)।

तीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

समोसरण-पदं

१. कइ णं भंते ! समोसरणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि समोसरणा पण्णत्ता, तं जहा—किरियावादी, अकिरियावादी, अण्णाणियवादी, वेणइयवादी ॥

२. जीवा णं भंते ! किं किरियावादी ? अकिरियावादी ? अण्णाणियवादी ? वेणइयवादी ?
गोयमा ! जीवा किरियावादी वि, अकिरियावादी वि, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि ॥

३. सलेस्सा णं भंते ! जीवा किं किरियावादी—पुच्छा ।
गोयमा ! किरियावादी वि, अकिरियावादी वि, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि । एवं जाव सुक्कलेस्सा ॥

४ अलेस्सा णं भंते ! जीवा—पुच्छा ।
गोयमा ! किरियावादी, नो अकिरियावादी, नो अण्णाणियवादी, नो वेणइयवादी ॥

५. कण्हपक्खिया णं भंते ! जीवा किं किरियावादी—पुच्छा ।
गोयमा ! नो किरियावादी, अकिरियावादी, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि । सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा । सम्मदिट्ठी जहा अलेस्सा । मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया ।

६. सम्मामिच्छादिट्ठी णं—पुच्छा ।
गोयमा ! नो किरियावादी, नो अकिरियावादी, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि । नाणी जाव केवलनाणी जहा अलेस्से । अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया । आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता

जहा सलेस्सा। नोसण्णोवउत्ता जहा अलेस्सा। सवेदगा जाव नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा। अवेदगा जहा अलेस्सा। सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा। अकसायी जहा अलेस्सा। सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। अजोगी जहा अलेस्सा। सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता जहा सलेस्सा॥

७ नेरइया णं भंते! किं किरियावादी—पुच्छा।
गोयमा! किरियावादी वि जाव वेणइयवादी वि॥

८. सलेस्सा णं भंते! नेरइया किं किरियावादी? एवं चेव। एवं जाव काउलेस्सा। कण्हपक्खिया किरियाविवज्जिया। एवं एएणं कमेणं जच्चेव जीवाणं वत्तव्वया सच्चेव नेरइयाण वि जाव अणागारोवउत्ता, नवरं—जं अत्थि तं भाणियव्वं, सेसं न भण्णति। जहा नेरइया एवं जाव थणियकुमारा॥

९. पुढविकाइया णं भंते! किं किरियावादी—पुच्छा।
गोयमा! नो किरियावादी, अकिरियावादी वि, अण्णाणियवादी वि, नो वेणइयवादी। एवं पुढविकाइयाणं जं अत्थि तत्थ सव्वत्थ वि एयाइं दो मज्झिल्लाइं समोसरणाइं जाव अणागारोवउत्ता वि। एवं जाव चउरिंदियाणं। सव्वट्ठाणेसु एयाइं चेव मज्झिल्लगाइं दो समोसरणाइं। सम्मत्त-नाणेहिं वि एयाणि चेव मज्झिल्लगाइं दो समोसरणाइं। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा जीवा, नवरं—जं अत्थि तं भाणियव्वं। मणुस्सा जहा जीवा तहेव निरवसेसं। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा॥

१०. किरियावादी णं भंते! जीवा किं नेरइयाउयं पकरेंति? तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति? मणुस्साउयं पकरेंति? देवाउयं पकरेंति?
गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति॥

११. जइ देवाउयं पकरेंति किं भवणवासिदेवाउयं पकरेंति जाव वेमाणियदेवाउयं पकरेंति?
गोयमा! नो भवणवासिदेवाउयं पकरेंति, नो वाणमंतरदेवाउयं पकरेंति, नो जोइसियदेवाउयं पकरेंति, वेमाणियदेवाउयं पकरेंति॥

१२. अकिरियावादी णं भंते! जीवा किं नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं—पुच्छा।
गोयमा! नेरइयाउयं पि पकरेंति जाव देवाउयं पि पकरेंति। एवं अण्णाणियवादी वि वेणइयवादी वि॥

१३. सलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउयं, एवं जहेव जीवा तहेव सलेस्सा वि चउहि वि समोसरणेहिं भाणियव्वा॥

१४ कण्हलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति, मणुस्साउयं पकरेति, नो देवाउयं पकरेति। अकिरियवादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी य चत्तारि वि आउयाइं पकरेति। एवं नीललेस्सा वि, काउलेस्सा वि॥

१५. तेउलेस्सा ण भंते ! जीवा किरियावादी कि नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउय पकरेति, मणुस्साउय पि पकरेति, देवाउयं पि पकरेंति। जइ देवाउयं पकरेंति तहेव[1]॥

१६. तेउलेस्सा ण भंते ! जीवा अकिरियावादी किं नेरइयाउयं—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेति, तिरिक्खजोणियाउय पि पकरेंति, देवाउय पि पकरेति। एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि। जहा तेउलेस्सा एवं पम्हलेस्सा वि सुक्कलेस्सा वि नायव्वा॥

१७. अलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति, नो मणुस्साउय पकरेति, नो देवाउयं पकरेति॥

१८. कण्हपक्खिया ण भंते ! जीवा अकिरियावादी कि नेरइयाउयं—पुच्छा।
गोयमा ! नेरइयाउयं पि पकरेंति, एव चउविह पि। एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि। सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा॥

१९ सम्मदिट्ठी ण भंते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति, मणुस्साउयं पि पकरेति, देवाउयं पि पकरेति। मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया॥

२०. सम्मामिच्छादिट्ठी णं भंते ! जीवा अण्णाणियवादी किं नेरइयाउय० ? जहा अलेस्सा। एव वेणइयवादी वि। नाणी आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य ओहिनाणी य जहा सम्मद्दिट्ठी॥

२१. मणपज्जवनाणी ण भंते ! —पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति, नो मणुस्साउय पकरेति, देवाउयं पकरेति॥

२२. जइ देवाउयं पकरेति किं भवणवासि—पुच्छा।
गोयमा ! नो भवणवासिदेवाउयं पकरेति, नो वाणमंतरदेवाउय पकरेति, नो जोइसियदेवाउयं पकरेंति, वेमाणियदेवाउयं पकरेति। केवलनाणी जहा अलेस्सा। अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया। सण्णासु चउसु वि

---

१. भ० ३०।११।

जहा सलेस्सा। नोसण्णोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणी। सवेदगा जाव नपुंसग-वेदगा जहा सलेस्सा। अवेदगा जहा अलेस्सा। सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा। अकसायी जहा अलेस्सा। सजोगी[1] जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। अजोगी जहा अलेस्सा। सागारोवउत्ता य अणागारोवउत्ता य जहा सलेस्सा॥

२३ किरियावादी णं भंते! नेरइया किं नेरइयाउयं—पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति॥

२४ अकिरियावादी णं भंते! नेरइया—पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउयं, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति। एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि॥

२५ सलेस्सा णं भंते! नेरइया किरियावादी किं नेरइयाउयं०? एवं सव्वे वि नेरइया जे किरियावादी ते मणुस्साउयं एगं पकरेंति, जे अकिरियावादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी ते सव्वट्ठाणेसु वि नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति, नवरं—सम्मामिच्छत्ते उवरिल्लेहिं दोहिं वि समोसरणेहिं न किंचि वि पकरेंति जहेव जीवपदे। एवं जाव थणियकुमारा जहेव नेरइया॥

२६ अकिरियावादी णं भंते! पुढविक्काइया—पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति। एवं अण्णाणियवादी वि॥

२७. सलेस्सा णं भंते! एवं जं जं पदं अत्थि पुढविकाइयाणं तहिं तहिं मज्झिमेसु दोसु समोसरणेसु एवं चेव दुविहं आउयं पकरेंति, नवरं—तेउलेस्साए न किं पि पकरेंति। एवं आउक्काइयाण वि, वणस्सइकाइयाण वि। तेउकाइआ वाउकाइआ सव्वट्ठाणेसु मज्झिमेसु दोसु समोसरणेसु नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, नो मणुस्साउयं पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं जहा पुढविकाइयाणं, नवरं—सम्मत्त-नाणेसु न एक्कं पि आउयं पकरेंति॥

२८. किरियावादी णं भंते! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा।
गोयमा! जहा मणपज्जवनाणी। अकिरियावादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी य चउव्विहं पि पकरेंति। जहा ओहिया[2] तहा सलेस्सा वि॥

---

१. सजोती (ख)। २ ओघिता (ता)।

२९. कण्हलेस्सा णं भंते ! किरियावादी पंचिंदियतिरिक्खजोणिया किं नेरइयाउयं—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं, नो मणुस्साउयं नो देवाउयं पकरेंति। अकिरियावादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी चउव्विहं पि पकरेंति। जहा कण्हलेस्सा एवं नीललेस्सा वि, काउलेस्सा वि। तेउलेस्सा जहा सलेस्सा, नवरं—अकिरियावादी, अण्णाणियवादी, वेणइयवादी य नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति। एवं पम्हलेस्सा वि। एवं सुक्कलेस्सा वि भाणियव्वा। कण्हपक्खिया तिहिं समोसरणेहिं चउव्विहं पि आउयं पकरेंति। सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा। सम्मदिट्ठी जहा मणपज्जवनाणी तहेव वेमाणियाउय पकरेंति। मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया। सम्मामिच्छादिट्ठी ण य एक्कं पि पकरेंति जहेव नेरइया। नाणी जाव ओहिनाणी जहा सम्मद्दिट्ठी। अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया। सेसा जाव अणागारोवउत्ता सव्वे जहा सलेस्सा तहा चेव भाणियव्वा। जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं वत्तव्वया भणिया एवं मणुस्साण वि भाणियव्वा, नवरं - मणपज्जवनाणी नोसण्णोवउत्ता य जहा सम्मद्दिट्ठी तिरिक्खजोणिया तहेव भाणियव्वा। अलेस्सा केवलनाणी अवेदगा अकसायी अजोगी य एए न एगं पि आउयं पकरेंति। जहा ओहिया जीवा सेसं तहेव। वाणमंतर-जोइसिय वेमाणिया जहा असुरकुमारा॥

३०. किरियावादी णं भंते ! जीवा किं भवसिद्धीया ? अभवसिद्धीया ?
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया॥

३१. अकिरियावादी णं भंते ! जीवा किं भवसिद्धीया—पुच्छा।
गोयमा ! भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि। एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि॥

३२. सलेस्सा ण भंते ! जीवा किरियावादी कि भवसिद्धीया—पुच्छा।
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया॥

३३. सलेस्सा णं भंते ! जीवा अकिरियावादी कि भवसिद्धीया—पुच्छा।
गोयमा ! भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि। एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि जहा सलेस्सा। एव जाव सुक्कलेस्सा॥

३४. अलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं भवसिद्धीया—पुच्छा।
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया। एवं एएणं अभिलावेणं कण्हपक्खिया तिसु वि समोसरणेसु भयणाए। सुक्कपक्खिया चउसु वि समोसरणेसु भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया। सम्मदिट्ठी जहा अलेस्सा। मिच्छादिट्ठी जहा कण्ह-

पक्खिया। सम्मामिच्छादिट्ठी दोसु वि समोसरणेसु जहा अलेस्सा। नाणी जाव केवलनाणी भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया। अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया। सण्णासु चउसु वि जहा सलेस्सा। नोसण्णोवउत्ता जहा सम्मदिट्ठी। सवेदगा जाव नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा। अवेदगा जहा सम्मदिट्ठी। सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा। अकसायी जहा सम्मदिट्ठी। सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। अजोगी जहा सम्मदिट्ठी। सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता जहा सलेस्सा। एवं नेरइया वि भाणियव्वा, नवरं—नायव्वं[1] जं अत्थि। एवं असुरकुमारा वि जाव थणियकुमारा। पुढविक्काइया सव्वट्ठाणेसु वि मज्झिल्लेसु दोसु वि समोसरणेसु भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि। एवं जाव वणस्सइकाइया। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिया एवं चेव, नवरं—सम्मत्ते ओहिनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे—एएसु चेव दोसु मज्झिमेसु समोसरणेसु भवसिद्धिया, नो अभवसिद्धिया, सेसं तं चेव। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया, नवरं—नायव्वं जं अत्थि। मणुस्सा जहा ओहिया जीवा। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा॥

३५. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥

बीओ उद्देसो

३६. अणंतरोववन्नगा णं भंते! नेरइया किं किरियावादी—पुच्छा।
गोयमा! किरियावादी वि जाव वेणइयवादी वि॥

३७. सलेस्सा णं भंते! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं किरियावादी०? एवं चेव। एवं जहेव पढमुद्देसे नेरइयाणं वत्तव्वया तहेव इह वि भाणियव्वा, नवरं—जं जं[2] अत्थि अणंतरोववन्नगाणं नेरइयाणं तं तं[3] भाणियव्वं। एवं सव्वजीवाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं—अणंतरोववन्नगाणं जं जहिं अत्थि तं तहिं भाणियव्वं॥

३८. किरियावादी णं भंते! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं, नो मणुस्साउयं,

---

१. नेयव्वं (अ, क)।
२. जस्स (अ, स)।
३. तस्स (अ, स)।

नो देवाउयं पकरेंति। एवं अकिरियावादी वि अण्णाणियवादी वि वेणइयवादी वि ॥

३९. सलेस्सा णं भंते ! किरियावादी अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउय पकरेंति—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति। एवं जाव वेमाणिया। एवं सव्वट्ठाणेसु वि अणंतरोववन्नगा नेरइया न किंचि वि आउय पकरेंति जाव अणागारोवउत्तत्ति। एवं जाव वेमाणिया, नवरं—ज जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं ॥

४०. किरियावादी णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया कि भवसिद्धीया ? अभवसिद्धीया ?
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया ॥

४१. अकिरियावादी णं—पुच्छा।
गोयमा ! भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि। एवं अण्णाणियवादी वि वेणइयवादी वि ॥

४२. सलेस्सा ण भते ! किरियावादी अणंतरोववन्नगा नेरइया कि भवसिद्धीया ? अभवसिद्धीया ?
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया। एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिए उद्देसए नेरइयाणं वत्तव्वया भणिया तहेव इह वि भाणियव्वा जाव अणागारोवउत्तत्ति। एवं जाव वेमाणियाण, नवर—जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्व। इमं से लक्खणं—जे किरियावादी सुक्कपक्खिया सम्मामिच्छदिट्ठीया एए सव्वे भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया। सेसा सव्वे भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि ॥

४३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

४४. परंपरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किरियावादी० ? एवं जहेव ओहिओ उद्देसओ तहेव परंपरोववन्नएसु वि नेरइयादीओ तहेव निरवसेस भाणियव्व, तहेव तियदडगसगहिओ ॥

४५. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

४-११ उद्देसा

४६ एव एएण कमेण जच्चेव वधिसए उद्देसगाण परिवाडी सच्चेव इह पि जाव अचरिमो उद्देसो, नवर—अणतरा चत्तारि वि एक्कगमगा, परपरा चत्तारि वि एक्कगमएण। एव चरिमा वि, अचरिमा वि एव चेव, नवरं—अलेस्सो केवली अजोगी न भण्णति, सेस तहेव ॥

४७ सेव भते ! सेव भते ! त्ति। एए एक्कारस वि उद्देसगा ॥

इक्कतीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

खुड्डजुम्म-नेरइयादीणं उववाय-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—कति ण भंते ! खुड्डा जुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि खुड्डा जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे, तेयोए, दावरजुम्मे[1], कलियोगे ॥

२. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—चत्तारि खुड्डा जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए सेत्तं खुड्डागकडजुम्मे। जे ण रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए सेत्तं खुड्डागतेयोगे। जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए सेत्तं खुड्डागदावरजुम्मे। जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए सेत्त खुड्डागकलियोगे से तेणट्ठेणं जाव कलियोगे ॥

३. खुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जंति—कि नेरइएहिंतो उववज्जति ? तिरिक्खजोणिएहितो—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइएहितो उववज्जति। एवं नेरइयाणं उववाओ जहा[2] वक्कंतीए तहा भाणियव्वो ॥

४. ते ण भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ?
गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति ॥

५. ते णं भंते ! जीवा कह उववज्जंति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे अज्झवसाणनिव्वत्तिएणं करणोवाएणं,

---

१. वातर° (क); वादर° (ता); वायर° (म)।

२. प० ६।

एवं जहा पंचविसतिमे सए अट्ठमुद्देसए नेरइयाण वत्तव्वया तहेव इह वि भाणियव्वा जाव[1] आयप्पओगेण उववज्जति नो परप्पयोगेणं उववज्जंति ॥

६. रयणप्पभापुढविखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जति० ? एवं जहा ओहियनेरइयाण वत्तव्वया सच्चेव रयणप्पभाए वि भाणियव्वा जाव नो परप्पयोगेण उववज्जति । एव सक्करप्पभाए वि, एव जाव अहेसत्तमाए । एवं उववाओ जहा[2] वक्कतीए ।

असण्णी खलु पढम, दोच्चं व सरीसवा तइय पक्खी ।
[3]°सीहा जति चउत्थि, उरगा पुण पंचमि पुढवि ॥१॥
छट्ठि च इत्थियाओ, मच्छा मणुया य सत्तमि पुढवि ।
एसो परमुववाओ, बोधव्वो नरयपुढवीणं ॥२॥°

सेस तहेव ॥

७ खुड्डागतेयोगनेरइया ण भंते ! कओ उववज्जति—कि नेरइएहिंतो ०? उववाओ जहा वक्कतीए ॥

८. ते ण भंते ! जीवा एगसमएण केवइया उववज्जति ?
गोयमा ! तिण्णि वा सत्त वा एक्कारस वा पण्णरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जति । सेस जहा कडजुम्मस्स । एवं जाव अहेसत्तमाए ॥

९ खुड्डागदावरजुम्मनेरइया ण भंते ! कओ उववज्जति ? एव जहेव खुड्डागकडजुम्मे, नवर—परिमाण दो वा छ वा दस वा चोद्दस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा, सेस त चेव जाव अहेसत्तमाए ॥

१० खुड्डागकलिओगनेरइया ण भंते ! कओ उववज्जति ? एवं जहेव खुड्डागकडजुम्मे, नवर—परिमाण एक्को वा पंच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति, सेस तं चेव । एव जाव अहेसत्तमाए ॥

११. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

१२. कण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जति०? एव चेव जहा ओहियगमो जाव नो परप्पयोगेणं उववज्जति, नवर—उववाओ जहा वक्कंतीए धूमप्पभापुढविनेरइयाण, सेस त चेव ॥

१. भ० २५।६२०-६२६ ।
२. प० ६ ।
३. स० पा०—गाहा एनं उववाएयव्वा ।

१३ धूमप्पभापुढविकण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जति ? एव चेव निरवसेस । एवं तमाए वि, अहेसत्तमाए वि, नवरं—उववाओ सव्वत्थ जहा वक्कंतीए ॥

१४. कण्हलेस्सखुड्डागतेओगनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति०? एव चेव, नवरं—तिण्णि वा सत्त वा एक्कारस वा पन्नरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा, सेसं त चेव । एवं जाव अहेसत्तमाए वि ॥

१५. कण्हलेस्सखुड्डागदावरजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति०? एव चेव, नवरं— दो वा छ वा दस वा चोद्दस वा, सेसं तं चेव । एव धूमप्पभाए वि जाव अहेसत्तमाए ॥

१६. कण्हलेस्सखुड्डागकलियोगनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति०? एव चेव, नवर— एक्को वा पच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असखेज्जा वा, सेस त चेव । एव धूम्मप्पभाए वि, तमाए वि, अहेसत्तमाए वि ॥

१७ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

१८. नीललेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति ०? एव जहेव कण्हलेस्साखुड्डागकडजुम्मा, नवरं—उववाओ जो वालुयप्पभाए, सेस तं चेव । वालुयप्पभापुढविनीललेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया एव चेव । एवं पकप्पभाए वि, एव धूमप्पभाए वि । एवं चउसु वि जुम्मेसु, नवरं—परिमाण जाणियव्वं । परिमाण जहा कण्हलेस्सउद्देसए । सेस तहेव ॥

१९. सेवं भंते ! सेवं भते ! त्ति ॥

चउत्थो उद्देसो

२०. काउलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जंति ०? एवं जहेव कण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया, नवरं—उववाओ जो रयणप्पभाए, सेस त चेव ॥

२१. रयणप्पभापुढविकाउलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ०?

एव चेव। एवं सक्करप्पभाए वि, एवं वालुयप्पभाए वि। एवं चउसु वि जुम्मेसु, नवरं—परिमाणं जाणियव्व जहा कण्हलेस्सउद्देसए, सेस त चेव ॥

२२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

पंचमो उद्देसो

२३. भवसिद्धीयखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते ! कत्रो उववज्जति—किं नेरइए-हिंतो ०? एव जहेव ओहिओ गमओ तहेव निरवसेस जाव नो परप्पयोगेण उववज्जति ॥

२४. रयणप्पभपुढविभवसिद्धीयखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते ! ०? एव चेव निरव-सेस। एव जाव अहेसत्तमाए। एव भवसिद्धीयखुड्डागतेयोगनेरइया वि। एव जाव कलियोगत्ति, नवर—परिमाण जाणियव्व, परिमाण पुव्वभणिय जहा पढमुद्देसए ॥

२५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

छट्ठो उद्देसो

२६. कण्हलेस्सभवसिद्धीयखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति ०? एव जहेव ओहिओ कण्हलेस्सउद्देसओ तहेव निरवसेसं चउसु वि जुम्मेसु भाणियव्वो जाव—

२७. अहेसत्तमपुढविकण्हलेस्सखुड्डागकलियोगनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति ०? तहेव ॥

२८. सेव भंते ! सेवं भते ! त्ति ॥

७-२८ उद्देसा

२९ नीललेस्सभवसिद्धीया चउसु वि जुम्मेसु तहेव भाणियव्वा जहा ओहिए नील-लेस्सउद्देसए ॥

३०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

३१. काउलेस्सभवसिद्धीया चउसु वि जुम्मेसु तहेव उववाएयव्वा जहेव ओहिए काउलेस्सउद्देसए ॥

३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

३३. जहा भवसिद्धीएहिं चत्तारि उद्देसगा भणिया एवं अभवसिद्धीएहिं वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा जाव काउलेस्सउद्देसओ त्ति ॥

३४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३५. एवं सम्मदिट्ठीहिं वि लेस्सासजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं—सम्मदिट्ठी पढमबितिएसु दोसु वि उद्देसगेसु अहेसत्तमपुढवीए न उववाएयव्वो, सेसं तं चेव ॥

३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३७. मिच्छादिट्ठीहिं वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा जहा भवसिद्धीयाणं ॥

३८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३९. एवं कण्हपक्खिएहिं वि लेस्सासजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा जहेव भवसिद्धीएहिं ॥

४० सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४१. सुक्कपक्खिएहिं एवं चेव चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा जाव वालुयप्पभपुढवि-काउलेस्ससुक्कपक्खियखुड्डागकलिओगनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? तहेव जाव नो परप्पयोगेणं उववज्जंति ॥

४२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । सव्वे वि एए अट्ठावीसं उद्देसगा ॥

बत्तीसइमं सतं

१-२८ उद्देसा

खुड्डजुम्म-नेरइयादीणं उववट्टण-पदं

१. खुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति—किं नेरइएसु उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति ? उव्वट्टणा जहा[1] वक्कंतीए ॥

२. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उव्वट्टंति ?
गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उव्वट्टंति ॥

३. ते णं भंते ! जीवा कहं उव्वट्टंति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए, एवं तहेव । एवं सो चेव गमओ जाव[2] आयप्पयोगेणं उव्वट्टंति, नो परप्पयोगेणं उव्वट्टंति ॥

४. रयणप्पभापुढविखुड्डागकडजुम्म० ? एवं रयणप्पभाए वि । एवं जाव अहेसत्तमाए । एवं खुड्डागतेयोग-खुड्डागदावरजुम्म-खुड्डागकलियोगा, नवरं—परिमाणं जाणियव्वं, सेसं तं चेव ॥

५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

६. कण्हलेस्सकडजुम्मनेरइया० ? एवं एएणं कमेणं जहेव उववायसए अट्ठावीसं उद्देसगा भणिया तहेव उव्वट्टणासए वि अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा, नवरं—उव्वट्टंति त्ति अभिलावो भाणियव्वो, सेसं तं चेव ॥

७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

———

१. प० ६ । २. भ० २५।६२०-६२६ ।

तेत्तीसइमं सतं

पढमं एगिंदियं सतं

पढमो उद्देसो

एगिंदियाणं कम्मप्पगडि-पदं

१. कतिविहा णं भंते ! एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया ॥

२. पुढविक्कइया ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविक्काइया य, बादरपुढविक्काइया य ॥

३. सुहुमपुढविक्काइया ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तासुहुमपढविक्काइया य, अप्पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया य ॥

४. बादरपुढविक्काइया ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ? एव चेव । एव आउक्काइया वि चउक्कएण भेदेणं भाणियव्वा, एवं जाव वणस्सइकाइया ॥

५ अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं ॥

६. पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाणं भते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं ॥

७. अपज्जत्ताबादरपुढविक्काइयाणं भते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
एवं चेव ॥

८. पज्जत्ताबादरपुढविक्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं

चेव । एव एएणं कमेण जाव वादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ति[1] ॥

९. अप्पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वधति ?
गोयमा ! सत्तविहवधगा वि, अट्ठविहवधगा वि । सत्त वधमाणा आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वधति, अट्ठ वधमाणा पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ वधति ॥

१०. पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया णं भते ! कति कम्मप्पगडीओ वधति ? एवं चेव, एव सव्वे जाव—

११. पज्जत्तावादरवणस्सइकाइया ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वधति ? एव चेव ॥

१२ अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया ण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेति ?
गोयमा ! चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेति, त जहा—नाणावरणिज्जं जाव अतराइय[2] सोइदियवज्झ, चक्खिदियवज्झ, घाणिदियवज्झं, जिब्भिदियवज्झं, इत्थिवेदवज्झ, पुरिसवेदवज्झ । एव चउक्कएण भेदेण जाव—

१३ पज्जत्तावादरवणस्सइकाइया ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेति ?
गोयमा ! एव चेव चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेति ॥

१४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

१५. कतिविहा ण भते ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा अणतरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया ॥

१६. अणतरोववन्नगा ण भते ! पुढविक्काइया कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुहुमपुढविक्काइया य, वादरपुढविक्काइया य । एव दुपएणं भेदेणं जाव वणस्सइकाइया ॥

१७. अणतरोववन्नगसुहुमपुढविकाइयाण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, त जहा—नाणावरणिज्जं जाव अतराइयं ॥

१८. अणतरोववन्नगवादरपुढविक्काइयाणं भते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?

---

१. × (अ, क, ख, ता) ।　　२. °वज्जं (अ, ख, ता, व, म) ।

गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं। एवं जाव अणंतरोववन्नगबादरवणस्सइकाइयाणं[1] ति ॥

१९. अणंतरोववन्नगसुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ बंधंति ? गोयमा ! आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बंधंति। एवं जाव अणंतरोववन्नगबादरवणस्सइकाइय त्ति ॥

२०. अणंतरोववन्नगसुहुमपुढविक्काइया ण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेंति ? गोयमा ! चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेंति, त जहा—नाणावरणिज्जं, तहेव जाव पुरिसवेदवज्झं। एवं जाव अणंतरोववन्नगबादरवणस्सइकाइयत्ति ॥

२१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

२२. कतिविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पचविहा परंपरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया एवं चउक्कओ भेदो जहा ओहिउद्देसए ॥

२३. परपरोववन्नगअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिउद्देसए तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव चोद्दस वेदेंति ॥

२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४-११ उद्देसा

२५. अणंतरोगाढा जहा अणंतरोववन्नगा ॥

२६. परंपरोगाढा जहा परंपरोववन्नगा ॥

२७. अणंतराहारगा जहा अणंतरोववन्नगा ॥

२८. परंपराहारगा जहा परंपरोववन्नगा ॥

२९. अणंतरपज्जत्तगा जहा अणंतरोववन्नगा ॥

३०. परंपरपज्जत्तगा जहा परंपरोववन्नगा ॥

३१. चरिमा वि जहा परपरोववन्नगा तहेव ॥

३२. एवं अचरिमा वि। एवं एए एक्कारस उद्देसगा ॥

३३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

---

१. °गाणं (अ, ख, ब, म, स)।

बीअं सतं

पढमो उद्देसो

३४ कतिविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया ॥

३५. कण्हलेस्सा णं भंते ! पुढविक्काइया कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुहुमपुढविक्काइया य, बादरपुढविक्काइया य ॥

३६. कण्हलेस्सा ण भंते ! सुहुमपुढविक्काइया कतिविहा पण्णत्ता ? एवं एएण अभिलावेणं चउक्कओ भेदो जहेव ओहिउद्देसए[1] ॥

३७ कण्हलेस्सअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाणं भते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसए तहेव पण्णत्ताओ, तहेव बंधंति, तहेव वेदेति ॥

३८ सेवं भंते ! सेवं भते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

३९ कतिविहा ण भते ! अणंतरोववन्नगकण्हलेस्सएगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया एवं एएणं अभिलावेणं तहेव दुयओ भेदो जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

---

१. °उद्देसए जाव वणस्सइकाइयत्ति (स) ।

४०. अणंतरोववन्नगकण्हलेस्ससुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एव एएणं अभिलावेणं जहा ओहिओ अणंतरोववन्नगाण उद्देसओ तहेव जाव वेदेति ॥

४१. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

३-११ उद्देसा

४२. कतिविहा णं भंते ! परपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविक्काइया, एवं एएणं अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेदो जाव वणस्सइ-काइयत्ति ॥

४३. परपरोववन्नगकण्हलेस्सअपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयाणं भते ! कइ कम्मप्प-गडीओ पण्णत्ताओ ? एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिओ परंपरोववन्नगउद्दे-सओ तहेव जाव वेदेति । एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिएगिदियसए एक्का-रस उद्देसगा भणिया तहेव कण्हलेस्ससते वि भाणियव्वा जाव अचरिमचरिम-कण्हलेस्सा एगिदिया ॥

३,४ सताइं

४४. जहा कण्हलेस्सेहि भणिय एव नीललेस्सेहि वि सय भाणियव्व ॥

४५. सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४६. एवं काउलेस्सेहि वि सय भाणियव्व, नवर—काउलेस्से ति अभिलावो भाणि-यव्वो ॥

पंचमं सतं

भवसिद्धीयएगिंदियाणं कम्मप्पगडि-पदं

४७. कतिविहा णं भंते ! भवसिद्धीया एगिदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा भवसिद्धीया एगिदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया, भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

४८. भवसिद्धीयअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमिल्लगं एगिंदियसयं तहेव भवसिद्धीयसयं पि भाणियव्वं । उद्देसगपरिवाडी तहेव जाव अचरिमो[1] त्ति ।
४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

छट्ठं सतं

५०. कतिविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा भवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा भवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया ॥
५१. कण्हलेस्सभवसिद्धीयपुढविक्काइया णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविक्काइया य, बादरपुढविक्काइया य ॥
५२ कण्हलेस्सभवसिद्धीयसुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य, अपज्जत्तगा य । एवं बादरा वि । एएण अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेदो भाणियव्वो ॥
५३ कण्हलेस्सभवसिद्धीयअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाण भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एव एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसए तहेव जाव वेदेंति ॥
५४. कतिविहा ण भंते ! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा जाव वणस्सइकाइया ॥
५५ अणंतरोववन्नगकण्हलेस्सभवसिद्धीयपुढविक्काइया णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविक्काइया, एवं दुयओ भेदो ॥
५६ अणंतरोववन्नगकण्हलेस्सभवसिद्धीयसुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिओ अणंतरोववन्नउद्देसओ तहेव जाव वेदेंति । एव एएणं अभिलावेणं एक्कारस वि उद्देसगा तहेव भाणियव्वा जहा ओहियसए जाव अचरिमो त्ति ॥

---

1. अचरिम (ख, ता, ब) ।

७,८ सताइं

५७. जहा कण्हलेस्सभवसिद्धीएहिं सयं भणियं एवं नीललेस्सभवसिद्धीएहि वि सतं भाणियव्वं ॥

५८. एवं काउलेस्सभवसिद्धीएहि वि सतं ॥

९-१२ सताइं

अभवसिद्धीयएगिंदियाणं कम्मप्पगडि-पदं

५९. कइविहा णं भंते ! अभवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा अभवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया। एवं जहेव भवसिद्धीयसतं भणियं, नवरं—नव उद्देसगा चरिमअचरिमउद्देसगवज्जं, सेस तहेव ॥

६०. एवं कण्हलेस्सअभवसिद्धीयएगिंदियसतं पि ॥

६१. नीललेस्सअभवसिद्धीयएगिंदिएहि वि सतं ॥

६२. काउलेस्सअभवसिद्धीयसतं। एवं चत्तारि वि अभवसिद्धीयसताणि, नव-नव उद्देसगा भवंति। एवं एयाणि बारस एगिंदियसताणि भवंति ॥

चोतीसइमं सतं

पढमं एगिंदियसतं

पढमो उद्देसो

एगिंदियाणं विग्गहगइ-पदं

१ कइविहा णं भंते ! एगिंदिया पण्णत्ता ?

गोयमा ! पंचविहा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइ-काइया। एवमेते चउक्कएण भेदेण भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइया ॥

२ अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थि-मिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइ-समएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उव-वज्जेज्जा ॥

३ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—एगसमइएण वा दुसमइएण वा जाव उव-वज्जेज्जा ॥

एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुयायता सेढी, एगओवंका, दुहओवंका, एगओखहा[1], दुहओखहा[2], चक्कवाला, अद्धचक्कवाला। उज्जुआयताए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा। एगओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा। दुहओ-वंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव उववज्जेज्जा ॥

४ अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थि-

---

१. °खुहा (अ)। २. °खुहा (अ)।

मिल्ले चरिमंते पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ?

गोयमा! एगसमइएण वा सेसं तं चेव जाव[1] से तेणट्ठेणं[2] •गोयमा! एवं वुच्चइ—एगसमइएणं वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा° विग्गहेणं उववज्जेज्जा। एवं अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइओ पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहणावेत्ता पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते बादरपुढविकाइएसु अपज्जत्तएसु उववाएयव्वो, ताहे तेसु चेव पज्जत्तएसु। एवं आउक्काइएसु चत्तारि आलावगा सुहुमेहि अपज्जत्तएहि, ताहे पज्जत्तएहि, बादरेहि अपज्जत्तएहि, ताहे पज्जत्तएहि उववाएयव्वो। एवं चेव सुहुमतेउकाइएहि वि अपज्जत्तएहिं ताहे पज्जत्तएहि उववाएयव्वो॥

५. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? सेसं तं चेव। एवं पज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए उववाएयव्वो। वाउक्काइएसु सुहुमबादरेसु जहा आउक्काइएसु उववाइओ तहा उववाएयव्वो। एवं वणस्सइकाइएसु वि॥

६. पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए०? एव पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइओ वि पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहणावेत्ता एएणं चेव कमेणं एएसु चेव वीससु ठाणेसु उववाएयव्वो जाव बादरवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु वि। एव अपज्जत्ताबादरपुढविकाइओ वि। एवं पज्जत्ताबादरपुढविकाइओ वि। एवं आउकाइओ वि चउसु वि गमएसु पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, एयाए चेव वत्तव्वयाए एएसु चेव वीसइठाणेसु उववाएयव्वो। सुहुमतेउकाइओ वि अपज्जत्तओ पज्जत्तओ य एएसु चेव वीसाए ठाणेसु उववाएयव्वो।

७. अपज्जत्ताबादरतेउक्काइए णं भंते! मणुस्सखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते! कइसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा ? सेसं तहेव जाव से तेणट्ठेण। एवं पुढविक्काइएसु चउविहेसु वि उववाएयव्वो, एवं आउकाइएसु चउविहेसु वि, तेउकाइएसु सुहुमेसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य एवं चेव उववाएयव्वो॥

८. अपज्जत्ताबादरतेउक्काइए णं भंते! मणुस्सखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भंते!

---

१. भ० ३४।२,३।

२. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव विग्गहेणं।

कतिसमइएण० ? सेसं तं चेव। एवं पज्जत्तावादरतेउक्काइयत्ताए वि उववाएयव्वो। वाउकाइयत्ताए य वणस्सइकाइयत्ताए य जहा पुढविकाइएसु तहेव चउक्कएण भेदेणं उववाएयव्वो। एवं पज्जत्तावादरतेउकाइयो वि समयखेत्ते समोहणावेत्ता एएसु चेव वीसाए ठाणेसु उववाएयव्वो। जहेव अपज्जत्तओ उववाइओ, एव सव्वत्थ वि वादरतेउकाइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य समयखेत्ते उववाएयव्वा समोहणावेयव्या वि। वाउक्काइया वणस्सकाइया य जहा पुढविक्काइया तहेव चउक्कएण भेदेण उववाएयव्वा जाव—

९. पज्जत्तावादरवणस्सइकाइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमते पज्जत्तावादरवणस्सइकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कतिसमइएण० ? सेसं तहेव जाव से तेणट्ठेण ॥

१०. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कइसमइएण० ? सेस तहेव निरवसेस। एव जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमते सव्वपदेसु वि समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाइया, जे य समयखेत्त समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाइया, एव एएणं चेव कमेण पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य समोहया पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाएयव्वा तेणेव गमएणं। एवं एएणं गमएणं दाहिणिल्ले चरिमते समोहयाण उत्तरिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाओ। एव चेव उत्तरिल्ले चरिमते समयखेत्ते य समोहया दाहिणिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाएयव्वा तेणेव गमएणं ॥

११ अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण भते! सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव जहेव रयणप्पभाए जाव से तेणट्ठेण। एव एएणं कमेणं जाव पज्जत्तएसु सुहुमतेउकाइएसु ॥

१२. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए ण भंते ! सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्तावादरतेउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कतिसमइएणं—पुच्छा।
गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ॥

१३. से केणट्ठेणं ?
एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुयायता जाव अद्धचक्कवाला। एगओवकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा। दुहओवकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा।

से तेणट्ठेणं। एवं पज्जत्तएसु वि बादरतेउक्काइएसु। सेसं जहा रयणप्पभाए। जे वि बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य समयखेत्ते समोहणित्ता दोच्चाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमते पुढविकाइएसु चउव्विहेसु, आउक्काइएसु चउव्विहेसु, तेउकाइएसु दुविहेसु, वाउकाइएसु चउव्विहेसु, वणस्सकाइएसु चउव्विहेसु उववज्जति, ते वि एवं चेव दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उववाएयव्वा। बादरतेउक्काइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य जाहे तेसु चेव उववज्जंति ताहे जहेव रयणप्पभाए तहेव एगसमइय-दुसमइय-तिसमइयविग्गहा भाणियव्वा, सेसं जहेव रयणप्पभाए तहेव निरवसेस। जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया एव जाव अहेसत्तमाए[1] भाणियव्वा॥

१४. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते! अहेलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भंते! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा?

गोयमा! तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा॥

१५. से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ—तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा?

गोयमा! अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण अहेलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए एगपयरंसि अणुसेढिं[2] उववज्जित्तए, से ण तिसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा। जे भविए विसेढिं[3] उववज्जित्तए, से णं चउसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा। से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा। एवं पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए वि, एव जाव पज्जत्तासुहुमतेउकाइयत्ताए॥

१६. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते! अहेलोग[4]°खेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए,° समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते! कइसमइएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा?

गोयमा! दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा॥

१७. से केणट्ठेणं?

एवं खलु गोयमा! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुयायता जाव अद्धचक्कवाला। एगओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा, दुहओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा।

---

१. अहेसत्तमाए वि (स)।
२. अणुसेढीए (अ, क, ख, ब, म, स)।
३. विसेढीए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
४. स० पा—अहेलोग जाव समोहणित्ता।

से तेणट्ठेण । एव पज्जत्तएसु वि बादरतेउकाइएसु वि उववाएयव्वो । वाउक्का-इय-वणस्सइकाइत्ताए चउक्कएण भेदेण जहा आउक्काइयत्ताए तहेव उववाए-यव्वो । एव जहा अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयस्स गमओ भणिओ एवं पज्जत्ता-सुहुमपुढविकाइयस्स वि भाणियव्वो, तहेव वीसाए ठाणेसु उववाएव्वो ॥

१८. [अपज्जत्ताबादरपुढविक्काइए ण भते ?] अहेलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए०? एव बादरपुढविकाइयस्स वि अपज्जत्तगस्स पज्जत्तगस्स य भाणियव्व । एवं आउक्काइयस्स चउव्विहस्स वि भाणियव्व । सुहुमतेउक्काइयस्स दुविहस्स वि एव चेव ॥

१९ अपज्जत्ताबादरतेउक्काइए ण भते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कइसमइएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उवव-ज्जेज्जा ॥

२०. से केणट्ठेण ? अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्त सेढीओ । एवं जाव—

२१. अपज्जत्ताबादरतेउकाइए णं भते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते पज्जत्तासुहुमतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ०? सेस त चेव ॥

२२ अपज्जत्ताबादरतेउक्काइए णं भंते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भते ! कइसम-इएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेजा ॥

२३. से केणट्ठेणं ?

अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्त सेढीओ । एवं पज्जत्ताबादरतेउकाइयत्ताए वि । वाउकाइएसु वणस्सइकाइएसु य जहा पुढविक्काइएसु उववाइओ तहेव चउक्कएण भेदेणं उववाएयव्वो । एव पज्जत्ताबादरतेउकाइओ वि एएसु चेव ठाणेसु उववाएयव्वो । वाउक्काइय-वणस्सइकाइयाणं जहेव पुढविकाइयत्ते उववाओ तहेव भाणियव्वो ॥

२४. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए अहेलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्ता-सुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएण ०? एवं उड्ढ-लोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहयाणं अहेलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते उववज्जंताण सो चेव गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव बादरवणस्सइ-काइओ पज्जत्तओ बादरवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु उववाइओ ॥

२५. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, सेणं भते ! कइसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ॥

२६. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—एगसमइएण वा जाव उववज्जेज्जा ? एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुआयता जाव अद्धचक्कवाला। उज्जुआयताए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा। एगओवकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा। दुहओवकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंसि अणुसेढि उववज्जित्तए, से ण तिसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा। जे भविए विसेढि उववज्जित्तए, से ण चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। से तेणट्ठेण जाव उववज्जेज्जा। एव अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइओ लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमपुढविकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमआउकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमतेउक्काइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमवाउकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु बादरवाउकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमवणस्सइकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य बारससु वि ठाणेसु एएणं चेव कमेण भाणियव्वो। सुहुमपुढविकाइओ पज्जत्तओ एव चेव निरवसेसो बारससु वि ठाणेसु उववाएयव्वो। एवं एएण गमएणं जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव भाणियव्वो ॥

२७. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ॥

२८. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ ०? एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुयायता जाव अद्धचक्कवाला। एगओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा, दुहओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंसि अणुसेढि उववज्जित्तए, से णं तिसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा। जे भविए विसेढि उववज्जित्तए, से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं एएणं गमएणं पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए दाहिणिल्ले चरिमंते

उववाएयव्वो जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएमु पज्जत्तएसु चेव। सव्वेसि दुसमइओ तिसमइयो चउसमइओ विग्गहो भाणियव्वो ॥

२६ अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा ॥

३०. से केणट्ठेण ?
एवं जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते उववाइया तहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते उववाएयव्वा सव्वे ॥

३१. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स उत्तरिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते? ० एवं जहा पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहयओ[1] दाहिणिल्ले चरिमंते उववाइओ तहा पुरत्थिमिल्ले समोहयओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो ॥

३२. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चेव चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं जहा पुरत्थिमिल्ले समोहयओ पुरत्थिमिल्ले चेव उववाइओ तहेव दाहिणिल्ले समोहए दाहिणिल्ले चेव उववाएयव्वो, तहेव निरवसेसं जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएमु चेव पज्जत्तएसु दाहिणिल्ले चरिमंते उववाइओ, एवं दाहिणिल्ले समोहयओ पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो, नवरं—दुसमइय-तिसमइय-चउसमइयविग्गहो, सेसं तहेव। एवं दाहिणिल्ले समोहयओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो जहेव सट्ठाणे तहेव। एगसमइय-दुसमइय-तिसमइय-चउसमइयविग्गहो। पुरत्थिमिल्ले जहा पच्चत्थिमिल्ले, तहेव दुसमइय-तिसमइय-चउसमइयविग्गहो। पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समोहयाणं पच्चत्थिमिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे। उत्तरिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि, सेसं तहेव। पुरत्थिमिल्ले जहा सट्ठाणे, दाहिणिल्ले एगसमइओ विग्गहो नत्थि, सेसं तं चेव। उत्तरिल्ले समोहयाणं उत्तरिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे। उत्तरिल्ले समोहयाणं पुरत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एवं चेव, नवरं—एगसमइओ विग्गहो नत्थि।

---

१. समोहताओ (अ, क, ब) समोहतो (स)।

उत्तरिल्ले समोहयाणं दाहिणिल्ले उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे, उत्तरिल्ले समोहयाण पच्चत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि, सेस तहेव जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव ॥

एगिंदियाणं ठाण-पदं

३३. कहि णं भंते ! बादरपुढविक्काइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु जहा[1] ठाणपदे जाव सुहुमवणस्सइकाइया जे य पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसमणाणत्ता सव्वलोग-परियावन्ना पण्णत्ता समणाउसो !

एगिंदियाणं कम्म-पदं

३४. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयाण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं। एव चउक्कएणं भेदेण जहेव एगिंदियसएसु जाव[2] बादरवणस्सइ-काइयाण पज्जत्तगाण ॥

३५. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया ण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ बधति ?
गोयमा ! सत्तविहबधगा वि, अट्ठविहबंधगा वि, जहा एगिंदियसएसु जाव[3] पज्जत्ताबादरवणस्सइकाइया ॥

३६. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेंति ?
गोयमा ! चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेंति, तं जहा—नाणावरणिज्जं, जहा एगिं-दियसएसु जाव पुरिसवेदवज्झं। एव जाव[4] बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्त-गाण ॥

एगिंदियाणं उववत्ति-पदं

३७. एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जति० ? जहा[5] वक्कंतीए पुढविक्काइयाणं उववाओ ॥

एगिंदियाणं समुग्घाय-पदं

३८. एगिंदियाणं भंते ! कइ समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेदणासमुग्घाए जाव वेउव्विय-समुग्घाए ॥

---

१. प० २
२. भ० ३३।६-८।
३. भ० ३३।९-११।
४. भ० ३३।१२,१३।
५. प० ६।

एगिंदियाणं तुल्ल-विसेसाहिय-कम्मकरण-पदं

३९. एगिंदिया णं भंते ! किं तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? वेमायट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? वेमायट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया वेमायट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया वेमायट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ॥

४०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! एगिंदिया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा— अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा, अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा। तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। तत्थ णं जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते णं वेमायट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। तत्थ णं जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा ते णं वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ॥

४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति ॥

बीओ उद्देसो

विसेसित-एगिंदियाणं ठाणादि-पदं

४२. कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया, दुयाभेदो जहा एगिंदियसएसु जाव बादरवणस्सइकाइया य ॥

४३. कहिं णं भंते ! अणंतरोववन्नगाणं बादरपुढविक्काइयाणं ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु, तं जहा—रयणप्पभाए जहा ठाणपदे जाव[1]

---

1. प० २।

दीवेसु समुद्देसु, एत्थ णं अणंतरोववन्नगाणं बादरपुढविकाइयाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएण सव्वलोए, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेण लोगस्स असखेज्जइभागे। अणंतोववन्नगसुहुमपुढविक्काइया एगविहा अविसेसमणाणत्ता सव्वलोए परियावन्ना पण्णत्ता समणाउसो ! एवं एएणं कमेणं सव्वे एगिदिया भाणियव्वा, सट्ठाणाइं सव्वेसि जहा ठाणपदे। तेसिं पज्जत्तगाण बादराणं उववाय-समुग्घाय-सट्ठाणाणि जहा तेसि चेव अपज्जत्तगाण बादराण। सुहुमाण सव्वेसिं जहा पुढविकाइयाणं भणिया तहेव भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइयत्ति ।।

४४. अणंतरोववन्नगाणं सुहुमपुढविक्काइयाण भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ। एव जहा एगिदियसएसु अणंतरो-ववन्नगउद्देसए तहेव पण्णत्ताओ, तहेव बंधति, तहेव वेदेंति जाव[1] अणंतरो-ववन्नगा बादरवणस्सइकाइया ।।

४५. अणंतरोववन्नगएगिदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ?. जहेव ओहिए उद्देसओ भणिओ तहेव ।।

४६. अणतरोववन्नगएगिदियाण भते ! कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! दोन्नि[2] समुग्घाया पण्णत्ता त जहा—वेदणासमुग्घाए य कसायसमु-ग्घाए य ।।

४७ अणंतरोववन्नगएगिदिया णं भंते ! कि तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्म पकरेंति—पुच्छा तहेव ।।
गोयमा ! अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्म पकरेंति।

४८. से केणट्ठेणं जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! अणतरोववन्नगा एगिदिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा। तत्थ ण जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। तत्थ ण जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते ण तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। से तेणट्ठेण जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति।।

४९. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ।।

---

१. भ० ३३।१७-२०।   २. दो (ब, म)।

तइयो उद्देसो

५०. कइविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया, भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

५१. परंपरोववन्नगअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए[1] पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमो उद्देसओ जाव[2] लोगचरिमंतो त्ति ॥

५२. कहि णं भंते ! परंपरोववन्नगबादरपुढविक्काइयाणं[3] ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु । एवं एएणं अभिलावेणं जहा पढमे उद्देसए जाव तुल्लट्ठितीयत्ति ॥

५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४-११ उद्देसा

५४. एवं सेसा वि अट्ठ उद्देसगा जाव अचरिमो त्ति, नवरं—अणंतरा अणंतरसरिसा, परंपरा परंपरसरिसा, चरिमा य अचरिमा य एवं चेव । एवं एते एक्कारस उद्देसगा ॥

१. जाव (अ, ता, व); पुढवीए जाव (स) ।
२. भ० ३४।२-३२ ।
३. °बादर° (क, ब) ।

बिइयं सतं

१-११ उद्देसा

५५. कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता, भेदो चउक्कओ जहा कण्हलेस्सएगिंदियसए जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

५६. कण्हलेस्सअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले० ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसओ जाव लोगचरिमंते त्ति। सव्वत्थ कण्हलेस्सु चेव उववाएयव्वो ॥

५७. कहि णं भंते ! कण्हलेस्सअपज्जत्ताबादरपुढविक्काइयाणं ठाणा पण्णत्ता ?
एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिउद्देसओ जाव तुल्लट्ठिइय त्ति ॥

५८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५९. एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमं सेढिसयं तहेव एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा ॥

३-५ सताइं

६०. एवं नीललेस्सेहि वि सतं। काउलेस्सेहि वि सतं एवं चेव। भवसिद्धियएगिंदिएहिं[1] सतं ॥

---

१. ०एहिं वि (म, स)।

छट्ठं सतं

६१ कइविहा ण भते कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता ? जहेव[1] ओहिउद्देसओ ॥

६२ कइविहा ण भंते ! अणंतरोववन्ना कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता ? जहेव अणतरोववन्नाउद्देसओ ओहिओ तहेव ॥

६३ कइविहा ण भंते ! परपरोववन्ना कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पचविहा परंपरोववन्ना कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता, भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

६४ परपरोववन्नाकण्हलेस्सभवसिद्धियअपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए० ? एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव लोयचरिमते त्ति । सव्वत्थ कण्हलेस्सेसु भवसिद्धिएसु उववाएयव्वो ॥

६५. कहि ण भते ! परपरोववन्नाकण्हलेस्सभवसिद्धियपज्जत्तावादरपुढविकाइयाण ठाणा पण्णत्ता ? एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव तुल्लट्ठिइयत्ति । एव एएण अभिलावेण कण्हलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहि वि तहेव एक्कारसउद्देसगसजुत्त छट्ठ सत ॥

७-१२ सताइं

६६ नीललेस्सभवसिद्धियएगिंदिएसु सत । एवं काउलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहि वि सत । जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि सयाणि एवं अभवसिद्धिएहि वि चत्तारि सयाणि भाणियव्वाणि, नवरं—चरिमअचरिमवज्जा नव उद्देसगा भाणियव्वा, सेस त चेव । एव एयाइं बारस एगिंदियसेढीसताइं ॥

६७. सेवं भते ! सेव भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

---

१. एव जहेव (स) ।

पणतीसइमं सतं

पढमं एगिंदियमहाजुम्मसतं

पढमो उद्देसो

महाजुम्म-एगिंदियाण उववायादि-पदं

१. कइ णं भंते ! महाजुम्मा पण्णत्ता ?

गोयमा ! सोलस महाजुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—१ कडजुम्मकडजुम्मे, २ कडजुम्मतेओगे, ३ कडजुम्मदावरजुम्मे[1], ४ कडजुम्मकलियोगे, ५ तेओगकडजुम्मे, ६ तेओगतेओगे, ७ तेओगदावरजुम्मे, ८ तेओगकलिओगे, ९ दावरजुम्मकडजुम्मे, १० दावरजुम्मतेओगे, ११ दावरजुम्मदावरजुम्मे, १२ दावरजुम्मकलियोगे, १३ कलिओगकडजुम्मे १४ कलियोगतेओगे, १५ कलियोगदावरजुम्मे, १६. कलियोगकलिओगे ॥

२. से कणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सोलस महाजुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मकडजुम्मे जाव कलियोगकलियोगे ?

गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे[2] चउपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया ते वि कडजुम्मा, सेत्तं कडजुम्मकडजुम्मे १। जे णं रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा, सेत्तं कडजुम्मतेयोए २। जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे·ण तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा, सेत्त कडजुम्मदावरजुम्मे ३। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा, सेत्तं कडजुम्मकलियोगे ४। जे णं रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेयोगा, सेत्तं तेओगकडजुम्मे ५। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए,

---

१. °वादरजुम्मे (अ, ख, ता, म); °वातरजुम्मे (क)। २. अवहारमाणा (अ); अवहारमाणे (म)।

जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा, सेत्तं तेओगतेओगे ६। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दोपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहार-समया तेयोगा, सेत्त तेओगदावरजुम्मे ७। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा, सेत्तं तेओगकलियोगे ८। जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे चउपज्ज-वसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा, सेत्तं दावरजुम्मकड-जुम्मे ९। जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा सेत्त दावरजुम्मतेयोए १०। जे णं रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा, सेत्त दावरजुम्मदावरजुम्मे ११। जे णं रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहार-समया दावरजुम्मा, सेत्त दावरजुम्मकलियोए १२। जे णं रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्त कलिओगकडजुम्मे १३। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्त कलियोगतेयोए १४। जे ण रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्तं कलियोग-दावरजुम्मे १५। जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्तं कलियोगकलिओगे १६। से तेणट्ठेण जाव कलिओगकलिओगे ॥

३ कडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जति—किं नेरइएहिंतो० ?
जहा[1] उप्पलुद्देसए तहा उववाओ ॥

४ ते ण भंते ! जीवा एगसमएण केवइया उववज्जंति ?
गोयमा ! सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति ॥

५. ते ण भंते ! जीवा समए समए—पुच्छा।
गोयमा ! ते ण अणंता समए समए अवहीरमाणा-अवहीरमाणा अणंताहिं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहिं अवहीरंति, णो चेव णं अवहिया[2] सिया। उच्चत्तं जहा[3] उप्पलुद्देसए ॥

६. ते ण भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा ? अबंधगा ?
गोयमा ! बंधगा, नो अबंधगा। एवं सव्वेसिं आउयवज्जाणं। आउयस्स बंधगा वा अबंधगा वा ॥

---

१. भ० ११।२।
२. अवहरिया (स)।
३. भ० ११।५।

७. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स—पुच्छा।
गोयमा ! वेदगा, नो अवेदगा। एवं सव्वेसिं॥

८. ते णं भंते ! जीवा किं सातावेदगा ? असातावेदगा[1] ?
गोयमा ! सातावेदगा वा असातावेदगा वा। एवं उप्पलुद्देसगपरिवाडी[2]। सव्वेसिं कम्माणं उदई, नो अणुदई। छण्हं कम्माणं उदीरगा, नो अणुदीरगा। वेदणिज्जाउयाणं उदीरगा वा अणुदीरगा वा॥

९. ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेस्सा—पुच्छा।
गोयमा ! कण्हलेस्सा वा, नीललेस्सा वा, काउलेस्सा वा, तेउलेस्सा वा। नो सम्मदिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी। नो नाणी, अण्णाणी—नियम[3] दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य। नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी। सागारोवउत्ता वा, अणागारोवउत्ता वा॥

१०. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा[4] कतिवण्णा ? जहा[5] उप्पलुद्देसए सव्वत्थ—पुच्छा।
गोयमा ! जहा उप्पलुद्देसए ऊसासगा वा, नीसासगा वा, नो उस्सासनीसासगा वा। आहारगा वा अणाहारगा वा। नो विरया, अविरया, नो विरयाविरया। सकिरिया, नो अकिरिया। सत्तविहबंधगा वा अट्ठविहबंधगा वा। आहारसण्णोवउत्ता वा जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता वा। कोहकसायी वा जाव लोभकसायी वा। नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा। इत्थिवेदबंधगा वा पुरिसवेदबंधगा वा नपुंसगवेदबंधगा वा। नो सण्णी, असण्णी। सइंदिया, नो अणिंदिया॥

११. ते णं भंते ! कडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया कालओ केवच्चिरं[6] होंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंता ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, वणस्सइकाइयकालो। संवेहो न भण्णइ, आहारो जहा[7] उप्पलुद्देसए नवरं—निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउदिसिं, सिय पंचदिसिं, सेसं तहेव। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं। समुग्घाया आदिल्ला चत्तारि। मारणंतियसमुग्घातेणं समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति। उव्वट्टणा जहा[8] उप्पलुद्देसए॥

१२. अह भंते ! सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता कडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ताए उववन्नपुव्वा ?
हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो॥

---

१. पुच्छा (अ, क, ख, ता, ब, म)।
२. भ० ११।९-११।
३. नियमा (अ, ब)।
४. सरीरा (ख, स)।
५. भ० ११।१७-२८।
६. केवचिरं (अ, क, ख, ब, म)।
७. भ० ११।३५।
८. भ० ११।३९।

१३. कडजुम्मतेओयएगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जंति० ? उववाओ तहेव[1] ॥

१४ ते ण भते ! जीवा एगसमए—पुच्छा ।
गोयमा ! एकूणवीसा वा संखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति, सेस जहा कडजुम्मकडजुम्माण जाव अणतखुत्तो ॥

१५ कडजुम्मदावरजुम्मएगिंदिया ण भते ! कओहिंतो उववज्जति० ? उववाओ तहेव ॥

१६ ते ण भंते ! जीवा एगसमएण—पुच्छा ।
गोयमा ! अट्ठारस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति, सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो ॥

१७ कडजुम्मकलियोगएगिंदिया ण भंते ! कओहिंतो उववज्जति० ? उववाओ तहेव परिमाणं सत्तरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा, सेसं तहेव जाव अणतखुत्तो ॥

१८ तेयोगकडजुम्मएगिदिया णं भते ! कओहिंतो उववज्जति० उववाओ तहेव, परिमाणं बारस वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणता वा उववज्जंति, सेसं तहेव जाव अणतखुत्तो ॥

१९ तेयोयतेयोयएगिदिया णं भते ! कओहिंतो उववज्जति० ? उववाओ तहेव । परिमाण पन्नरस वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणता वा, सेसं तहेव जाव अणतखुत्तो । एवं एएसु सोलससु महाजुम्मेसु एक्को गमओ, नवर—परिमाणे नाणत्त—तेयोयदावरजुम्मेसु परिमाणं चोद्दस वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उवज्जति । तेयोगकलियोगेसु तेरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । दावरजुम्मकडजुम्मेसु अट्ठ वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । दावरजुम्मतेयोगेसु एक्कारस वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । दावरजुम्मदावरजुम्मेसु दस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणंता वा उववज्जति । दावरजुम्मकलियोगेसु नव वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति । कलियोगकडजुम्मे चत्तारि वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । कलियोगतेयोगेसु सत्त वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणंता वा उववज्जति । कलियोगदावरजुम्मेसु छ वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति ॥

२०. कलियोगकलियोगएगिदिया णं भते ! कओ उववज्जति० ? उववाओ तहेव । परिमाण पच वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति, सेसं तहेव जाव अणतखुत्तो ॥

२१ सेव भंते ! सेव भते ! त्ति ॥

---

१. भ० ३५।३ ।

बीओ उद्देसो

२२. पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? गोयमा ! तहेव, एवं जहेव पढमो उद्देसओ तहेव सोलसखुत्तो बितिओ[1] भाणियव्वो, तहेव सव्वं, नवर—इमाणि दस नाणत्ताणि—१. ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं। २ आउयकम्मस्स नो बंधगा, अबंधगा। ३. आउयस्स नो उदीरगा, अणुदीरगा। ४. नो उस्सासगा, नो निस्सासगा, नो उस्सासनिस्सासगा। ५. सत्तविहबंधगा, नो अट्ठबिहबंधगा ॥

२३. ते ण भंते ! पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! ६. एक्कं समयं। ७. एवं ठिती वि। ८. समुग्घाया आदिल्ला दोन्नि। ९. समोहया न पुच्छिज्जंति। १०. उव्वट्टणा न पुच्छिज्जइ, सेस तहेव सव्वं निरवसेसं सोलससु वि गमएसु जाव अणंतखुत्तो ॥

२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३-११ उद्देसा

२५. अपढमसमयकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एसो जहा पढमुद्देसो सोलसहि वि जुम्मेसु[2] तहेव नेयव्वो जाव कलियोगकलियोगत्ताए जाव अणंतखुत्तो ॥

२६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२७ चरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं जहेव पढमसमयउद्देसओ, नवर—देवा न उववज्जंति, तेउलेस्सा न पुच्छिज्जति, सेसं तहेव ॥

२८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२९. अचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जति० ? जहा अपढमसमयउद्देसो[3] तहेव निरवसेसो भाणितव्वो ॥

३०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. बितिओ वि (अ, क, ख, ब, म)।
२. जुम्मेहिंसु (ता)।
३. पढम० (अ, क, ख, ता, ब)।

३१. पढमपढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव निरवसेसं ॥

३२ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

३३ पढमअपढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा पढमसमयउद्देसो तहेव भाणियव्वो ॥

३४ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३५. पढमचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा चरिमुद्देसओ तहेव निरवसेसं ॥

३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३७ पढमअचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा 'बीओ उद्देसओ'[1] तहेव निरवसेसं ॥

३८ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

३९. चरिमचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा चउत्थो उद्देसओ[2] तहेव निरवसेसं ॥

४०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४१ चरिमअचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव निरवसेसं ॥

४२ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति ॥

४३ एवं एए एक्कारस उद्देसगा। पढमो ततिओ पंचमो[3] य सरिसगमा, सेसा अट्ठ सरिसगमा, नवरं—चउत्थे[4] अट्ठमे दसमे य देवा न उववज्जंति। तेउलेस्सा नत्थि ॥

बितियं एगिंदियमहाजुम्मसतं

४४ कण्णलेस्सकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ?
गोयमा ! उववाओ तहेव, एवं जहा ओहिउद्देसए, नवरं इमं नाणत्तं ॥

४५. ते णं भंते ! जीवा कण्हलेस्सा ?
हंता कण्हलेस्सा ॥

---

१. पढमउ° (अ, क, ख)।

२. चउत्थुद्देसओ (ता)।

३. पचमगो (अ, क, व, म); पंचमओ (ख, ता)।

४. चउत्थे छट्ठे (अ, व)।

४६. ते णं भंते ! कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। एवं ठिती वि। सेसं तहेव जाव अणतखुत्तो। एव सोलस वि जुम्मा भाणियव्वा ॥

४७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४८. पढमसमयकण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जति० ?
जहा पढमसमयउद्देसओ, नवर—

४९. ते ण भंते ! जीवा कण्हलेस्सा ?
हंता कण्हलेस्सा, सेस तहेव[1] ॥

५०. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

५१. एवं जहा ओहियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया तहा कण्हलेस्ससए वि एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा। पढमो तइओ पंचमो य सरिसगमा, सेसा अट्ठ वि सरिसगमा, नवर—चउत्थ-अट्ठम-दसमेसु उववाओ नत्थि देवस्स ॥

५२. सेवं भते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३-१२ एगिंदियमहाजुम्मसताइं

५३. एवं नीललेस्सेहि वि सतं कण्हलेस्ससतसरिसं, एक्कारस उद्देसगा तहेव ॥

५४. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

५५. एवं काउलेस्सेहि वि सतं कण्हलेस्ससतसरिसं ॥

५६. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

५७. भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भते ! कओ उववज्जति० ? जहा ओहियसतं तहेव, नवरं—एक्कारससु वि उद्देसएसु ॥

५८. अह भते ! सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ताए उववन्नपुव्वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, सेसं तहेव ॥

५९. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति ॥

६०. कण्हलेस्सभवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ?
एवं कण्हलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहि वि सतं बितियसतकण्हलेस्ससरिस भाणियव्वं ॥

६१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. त चेव (स)।

६२. एवं नीललेस्सभवसिद्धियएगिंदियएहि वि सतं ॥
६३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥
६४ एव काउलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहि वि तहेव एक्कारसउद्देसगसजुत्त सत । एवं एयाणि चत्तारि भवसिद्धिएसु सताणि। चउसु वि सएसु सव्वे पाणा जाव उववन्नपुव्वा ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥
६५. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥
६६ जहा भवसिद्धिएहि चत्तारि सताइ भणियाइं एवं अभवसिद्धिएहि वि चत्तारि सताणि लेस्सासजुत्ताणि भाणियव्वाणि । सव्वे पाणा तहेव नो इणट्ठे समट्ठे । एव एयाइ बारस एगिंदियमहाजुम्मसताइ भवति ॥
६७. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

छत्तीसइमं सतं

पढमं बेंदियमहाजुम्मसतं

पढमो उद्देसो

महाजुम्म-बेंदियाणं उववायादि-पदं

१. कडजुम्मकडजुम्मबेंदिया णं भंते ! कम्रो उववज्जति० ? उववाम्रो जहा[1] वक्कतीए। परिमाण सोलस वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जति। अवहारो[2] जहा[3] उप्पलुद्देसए। ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेण बारस जोयणाइ। एवं जहा एगिदियमहाजुम्माण पढमुद्देसए तहेव, नवरं—तिण्णि लेस्साम्रो, देवा न उववज्जति। सम्मदिट्ठी वा मिच्छदिट्ठी वा, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। नाणी वा अण्णाणी वा। नो मणजोगी, वइजोगी वा कायजोगी वा॥

२. ते णं भंते ! कडजुम्मकडजुम्मबेंदिया कालम्रो केवच्चिरं होति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेण सखेज्ज कालं। ठिती जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेणं बारस संवच्छराइ। आहारो नियम छद्दिसि। तिण्णि समुग्घाया, सेस तहेव जाव अणतखुत्तो। एव सोलससु वि जुम्मेसु॥

३. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति॥

२-११ उद्देसा

४. पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मबेंदिया णं भंते ! कम्रो उववज्जति० ? एवं जहा एगिदियमहाजुम्माणं पढमसमयउद्देसए। दस नाणत्ताइं ताइं चेव दस इह वि।

---

१. प० ६।
२. आहारो (अ, क, ता, ब)।
३. भ० ११।४।

एक्कारसमं इम नाणत्तं—नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी। सेसं जहा वेदियाणं चेव पढमुद्देसए ॥

५ सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

६ एवं एए वि जहा एगिंदियमहाजुम्मेसु एक्कारस उद्देसगा तहेव भाणियव्वा, नवरं—चउत्थ-अट्ठम-दसमेसु सम्मत्त-नाणाणि न भण्णंति। जहेव एगिंदिएसु पढमो तइओ पंचमो य एक्कगमा, सेसा अट्ठ एक्कगमा।

२-१२ बेंदियमहाजुम्मसताइं

७. कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मबेंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति०? एवं चेव। कण्हलेस्सेसु वि एक्कारसउद्देसगसंजुत्तं सतं, नवरं—लेस्सा, संचिट्ठणा[1] जहा एगिंदियकण्हलेस्साणं ॥

८ एवं नीललेस्सेहि वि सतं ॥

९. एवं काउलेस्सेहि वि ॥

१०. भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मबेंदिया णं भंते०? एवं भवसिद्धियसता वि चत्तारि तेणेव पुव्वगमएणं नेयव्वा, नवरं—सव्वे पाणा०? णो तिणट्ठे समट्ठे। सेसं तहेव ओहियसताणि चत्तारि ॥

११. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

१२. जहा भवसिद्धियसताणि चत्तारि एवं अभवसिद्धियसताणि चत्तारि भाणियव्वाणि, नवरं—सम्मत्त-नाणाणि सव्वेहिं नत्थि, सेसं तं चेव। एवं एयाणि बारस बेंदियमहाजुम्मसताणि भवंति ॥

१३ सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

---

१ संचिट्ठणा ठिती (अ, ब, स)

सत्ततीसइमं सतं

महाजुम्म-तेंदियाणं उववायादि-पद

१. कडजुम्मकडजुम्मतेंदिया णं भंते ! कओ उववज्जति० ? एवं तेंदिएसु वि बारस सता कायव्वा बेंदियसतसरिसा, नवरं—ओगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेण तिण्णि गाउयाइ। ठिती जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण एकूणवण्णं राइंदियाइ, सेस तहेव ॥

२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

अट्ठतीसइमं सतं

महाजुम्म-चउरिंदियाणं उववायादि-पदं

१. चउरिंदिएहि वि एवं चेव बारस सता कायव्वा, नवरं—ओगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेण चत्तारि गाउयाइ। ठिति जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण छम्मासा। सेसं जहा बेंदियाण ॥

२. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

एगूणयालीसइमं सतं

महाजुम्म-असण्णिपंचिंदियाणं उववायादि-पदं

१. कडजुम्मकडजुम्मअसण्णिपंचिंदिया ण भंते ! कओ उववज्जति० ? जहा बेंदियाण तहेव असण्णिसु वि बारस सता कातव्वा, नवर—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण जोयणसहस्सं। सचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेण पुव्वकोडीपुहत्त। ठिती जहण्णेणं एक्क समयं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी, सेस जहा बेंदियाण ॥

२. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

चत्तालीसतिमं सत

पढमं सण्णिपंचिंदियमहाजुम्मसतं

महाजुम्म-सण्णिपंचिंदियाणं उववायादि-पदं

१. कडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति०? उववाओ चउसु वि गईसु। संखेज्जवासाउय-असंखेज्जवासाउय-पज्जत्ता-अपज्जत्तएसु य न कओ वि पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाणत्ति। परिमाणं अवहारो ओगाहणा य जहा असण्णिपंचिंदियाणं। वेयणिज्जवज्जाणं सत्तण्ह पगडीणं बंधगा वा अबंधगा वा, वेयणिज्जस्स बंधगा, नो अबंधगा। मोहणिज्जस्स वेदगा वा अवेदगा वा, सेसाणं सत्तण्ह वि वेदगा, नो अवेदगा। सायावेदगा वा असायावेदगा वा। मोहणिज्जस्स उदई वा अणुदई वा, सेसाणं सत्तण्ह वि उदई, नो अणुदई। नामस्स गोयस्स य उदीरगा, नो अणुदीरगा, सेसाणं छण्ह वि उदीरगा वा अणुदीरगा वा। कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा। सम्मदिट्ठी वा मिच्छादिट्ठी वा सम्मामिच्छादिट्ठी वा। नाणी वा अण्णाणी वा। मणजोगी वइजोगी कायजोगी। उवओगो, वण्णमादी, उस्सासगा वा नीसासगा वा, आहारगा य जहा एगिंदियाणं। विरया य अविरया य विरयाविरया य। सकिरिया, नो अकिरिया॥

२. ते णं भंते! जीवा किं सत्तविहबंधगा? अट्ठविहबंधगा? छव्विहबंधगा? एगविहबंधगा वा?

गोयमा! सत्तविहबंधगा वा जाव एगविहबंधगा वा॥

३. ते णं भंते! जीवा किं आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता? नोसण्णोवउत्ता?

गोयमा! आहारसण्णोवउत्ता जाव नोसण्णोवउत्ता वा। सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा — कोहकसायी वा जाव लोभकसायी वा, अकसायी वा। इत्थीवेदगा वा पुरिसवेदगा वा नपुंसगवेदगा वा अवेदगा वा। इत्थिवेदबंधगा वा पुरिसवेदबंधगा वा नपुंसगवेदबंधगा वा अबंधगा वा। सण्णी, नो असण्णी। सइंदिया,

नो अणिंदिया। संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेण सागरोवमसयपुहत्तं सातिरेगं। आहारो तहेव जाव नियमं छद्दिसिं। ठिती जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं। छ समुग्घाया आदिल्लगा। मारणंतियसमुग्घाएणं समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति। उव्वट्टणा जहेव उववाओ, न कत्थइ पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाणत्ति।

४. अह भंते! 'सव्वेपाणा'[1] जाव अणंतखुत्तो। एवं सोलससु वि जुम्मेसु भाणियव्वं जाव अणंतखुत्तो, नवरं—परिमाणं जहा बेइंदियाणं, सेसं तहेव॥

५. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥

२-११ उद्देसा

६ पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति०? उववाओ, परिमाणं आहारो जहा एएसिं चेव पढमोद्देसए। ओगाहणा बंधो वेदो वेदणा उदयी उदीरगा य जहा बेंदियाणं पढमसमइयाणं, तहेव कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा। सेसं जहा बेंदियाणं पढमसमइयाणं जाव अणंतखुत्तो, नवरं—इत्थिवेदगा वा पुरिसवेदगा वा नपुंसगवेदगा वा, सण्णिणो नो असण्णिणो, सेसं तहेव। एवं सोलससु वि जुम्मेसु परिमाणं तहेव सव्वं।

७. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥

८. एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा तहेव, पढमो तइओ पंचमो य सरिसगमा, सेसा अट्ठ वि सरिसगमा। चउत्थ-अट्ठम-दसमेसु नत्थि विसेसो कायव्वो॥

९. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥

बितियं सण्णिपंचिंदियमहाजुम्मसतं

१०. कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति०? तहेव पढमुद्देसओ सण्णीणं, नवरं—बंध-वेद-उदइ-उदीरण-लेस्स-बंधग-सण्ण[2]-कसाय-वेदबंधगा य एयाणि जहा बेंदियाणं। कण्हलेस्साणं वेदो तिविहो, अवेदगा नत्थि। संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं। एवं ठिती वि, नवरं—ठितीए अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं न

---

१. सव्वपाणा (अ, क, ख, ता, ब, स)। २. सण्णि (ता); सण्णा (म, स)।

भण्णंति । सेसं जहा एएसिं चेव पढमे उद्देसए जाव अणंतखुत्तो । एवं सोलससु वि जुम्मेसु ॥

११ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१२ पढमसमयकण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जति०? जहा सण्णिपंचिंदियपढमसमयउद्देसए तहेव निरवसेसं, नवरं—

१३. ते णं भंते ! जीवा कण्हलेस्सा ?
हंता कण्हलेस्सा, सेसं तं चेव । एवं सोलससु वि जुम्मेसु ॥

१४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१५. एवं एए वि एक्कारस उद्देसगा कण्हलेस्ससए । पढम-ततिय-पंचमा सरिसगमा, सेसा अट्ठ वि सरिसगमा ॥

१६ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३-१४ सण्णिमहाजुम्मसताइं

१७ एवं नीललेस्सेसु वि सतं, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं । एवं ठिती वि । एवं तिसु उद्देसएसु[1], सेसं तं चेव ॥

१८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१९. एवं काउलेस्ससतं पि, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं । एवं ठितीवि । एवं तिसु वि उद्देसएसु, सेसं तं चेव ॥

२० सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२१ एवं तेउलेस्सेसु वि सतं, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं । एवं ठितीवि, नवरं—नोसण्णोवउत्ता वा । एवं तिसु वि उद्देसएसु[2], सेसं तं चेव ॥

२२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२३. जहा तेउलेस्ससतं तहा पम्हलेस्ससतं पि, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं । एवं ठितीवि नवरं—अंतोमुहुत्तं न भण्णति, सेसं तं चेव । एवं एएसु पंचसु सतेसु जहा कण्हलेस्ससते गमओ तहा नेयव्वो जाव अणंतखुत्तो ॥

---

१. प्रथम-तृतीय-पञ्चमेषु (वृ) ।
२. गमएसु (अ, क, ख, ता, ब, म) ।

२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
२५. सुक्कलेस्ससतं जहा ओहियसतं, नवरं—संचिट्ठणा ठिती य जहा कण्हलेस्ससते, सेसं तहेव जाव अणतखुत्तो ॥
२६ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
२७. भवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिदिया ण भते ! कओ उववज्जति०? जहा पढम सण्णिसत्तं तहा नेयव्वं भवसिद्धीयाभिलावेण, नवरं—
२८. सव्वे पाणा[1]०?
नो तिणट्ठे समट्ठे, सेसं त चेव ।
२९. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥
३० कण्हलेस्सभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति०? एवं एएण अभिलावेणं जहा ओहियकण्हलेस्ससत ॥
३१. सेव भंते ! सेवं भते ! त्ति ॥
३२. एव नीललेस्सभवसिद्धीए वि सत ॥
३३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
३४. एव जहा ओहियाणि सण्णिपचिदियाणं सत्त सताणि भणियाणि, एवं भवसिद्धीएहि वि सत्त सताणि कायव्वाणि, नवरं—सत्तसु वि सतेसु सव्वे पाणा जाव नो तिणट्ठे समट्ठे, सेस तं चेव ॥
३५. सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१५-२१ सण्णिमहाजुम्मसताइं

३६. अभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिदिया णं भंते ! कओ उववज्जति०? उववाओ तहेव अणुत्तरविमाणवज्जो । परिमाण अवहारो उच्चत्त बधो वेदो वेदण उदओ उदीरणा य जहा कण्हलेस्ससते । कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा । नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । नो नाणी, अण्णाणी, एवं जहा कण्हलेस्ससते, नवरं—नो विरया, अविरया, नो विरयाविरया । संचिट्ठणा ठिती य जहा ओहिउद्देसए । समुग्घाया आदिल्लगा पच । उव्वट्टणा तहेव अणुत्तरविमाणवज्जं । सव्वे पाणा०? नो तिणट्ठे समट्ठे, सेस जहा कण्हलेस्ससते जाव अणतखुत्तो । एवं सोलससु वि जुम्मेसु ।
३७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. भ० ४०।४ ।

३८ पढमसमयअभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया ण भंत ! कओ उवव-ज्जति० ? जहा सण्णीण पढमसमयउद्देसए तहेव, नवरं—सम्मत्तं सम्मामिच्छत्तं नाण च सव्वत्थ नत्थि, सेस तहेव ॥

३९ सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

४० एव एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा कायव्वा पढम-तइय-पचमा एक्कगमा, सेसा अट्ठ वि एक्कगमा ॥

४१ सेव भंते ! सेवं भते ! त्ति ॥

४२. कण्हलेस्सअभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया ण भते ! कओ उव-वज्जति० ? जहा एएसि चेव ओहियसत तहा कण्हलेस्ससय पि, नवरं—

४३. ते ण भते ! जीवा कण्हलेस्सा ?
हंता कण्हलेस्सा । ठिती, सचिट्ठणा य जहा कण्हलेस्ससते, सेस त चेव ॥

४४ सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति ॥

४५. एव छहि वि लेस्साहि छ सता कायव्वा जहा कण्हलेस्ससतं, नवरं—सचिट्ठणा ठिती य जहेव ओहियसते तहेव भाणियव्वा, नवर—सुक्कलेस्साए उक्कोसेण इक्कतीसं सागरोवमाइं अतोमुहुत्तमब्भहियाइ । ठिती एव चेव, नवर—अतो-मुहुत्त नत्थि जहण्णग तहेव सव्वत्थ सम्मत्त-नाणाणि नत्थि । विरई विरया-विरई अणुत्तरविमाणोववत्ति—एयाणि नत्थि । सव्वे पाणा०? नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

४६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४७ एव एयाणि सत्त अभवसिद्धीयमहाजुम्मसताइं भवति ।

४८. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

४९. एव एयाणि एक्कवीस सण्णिमहाजुम्मसताणि । सव्वाणि वि एकासीतिमहा-जुम्मसताइ ॥

एगचत्तालीसतिमं सतं

पढमो उद्देसो

रासीजुम्म-नेरइयादीणं उववायादि-पदं

१. कति णं भंते ! रासीजुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि रासीजुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ॥

२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—चत्तारि रासीजुम्मा पण्णत्ता, त जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए, सेत्तं रासीजुम्मकडजुम्मे। एवं जाव जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं एगपज्जवसिए, सेत्तं रासीजुम्मकलियोगे। से तेणट्ठेण जाव कलियोगे ॥

३. रासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जंति० ? उववाओ जहा[1] वक्कंतीए ॥

४. ते णं भते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ?
गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा सोलस वा संखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति ॥

५. ते णं भंते ! जीवा किं संतरं[2] उववज्जति ? निरंतरं उववज्जति ?
गोयमा ! संतर पि उववज्जंति, निरंतरं पि उववज्जंति। संतरं उववज्जमाणा जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण असखेज्जे समए अतरं कट्टु उववज्जति। निरतरं उववज्जमाणा जहण्णेणं दो समया, उक्कोसेण असखेज्जा समया अणुसमय अविरहियं निरतरं उववज्जति ॥

६. ते णं भंते ! जीवा जं समयं कडजुम्मा तं समयं तेयोगा ? जं समय तेयोगा त समय कडजुम्मा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

---

१. प० ६।   २. सांतरं (ब, म)।

७. जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावरजुम्मा ? जं समयं दावरजुम्मा त समयं कडजुम्मा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ।।

८. जं समय कडजुम्मा तं समयं कलियोगा ? जं समयं कलियोगा तं समयं कडजुम्मा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ।।

९. ते णं भंते ! जीवा कहिं उववज्जति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे, एवं जहा उववायसते जाव[1] नो परप्पयोगेण उववज्जति ।।

१०. ते णं भते ! जीवा किं आयजसेण उववज्जंति ? आयअजसेणं उववज्जति ?
गोयमा ! नो आयजसेण उववज्जति, आयअजसेणं उववज्जंति ।।

११ जइ आयअजसेण उववज्जति—किं आयजसं उवजीवंति ? आयअजस उवजीवंति ?
गोयमा ! नो आयजसं उवजीवति, आयअजसं उवजीवंति ।।

१२. जइ आयअजसं उवजीवति—कि सलेस्सा ? अलेस्सा ?
गोयमा ! सलेस्सा, नो अलेस्सा ।।

१३. जइ सलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया ।।

१४ जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ।।

१५ रासीजुम्मकडजुम्मअसुरकुमारा णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहेव नेरतिया तहेव निरवसेस । एव जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया, नवरं—वणस्सइकाइया जाव असंखेज्जा वा अणता वा उववज्जति, सेस एवं चेव । मणुस्सा वि एवं चेव जाव नो आयजसेणं उववज्जंति, आयअजसेण उववज्जति ।।

१६ जइ आयअजसेण उववज्जंति—किं आयजसं उवजीवति ? आयअजसं उवजीवति ?
गोयमा ! आयजस पि उवजीवति, आयअजसं पि उवजीवंति ।।

१७. जइ आयजस उवजीवंति कि सलेस्सा ? अलेस्सा ?
गोयमा ! सलेस्सा वि अलेस्सा वि ।।

१८. जइ अलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा नो सकिरिया, अकिरिया ।।

१९ जइ अकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?
हंता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ।।

---

१. भ० ३१।५।

२०. जइ सलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया ॥

२१. जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?
गोयमा ! अत्थेगइया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति, अत्थेगइया नो तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंत करेंति ॥

२२. जइ आयअजसं उवजीवंति कि सलेस्सा ? अलेस्सा ?
गोयमा ! सलेस्सा, नो अलेस्सा ॥

२३. जइ सलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया ॥

२४. जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंत करेंति ?
नो इणट्ठे समट्ठे । वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरइया ॥

२५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

२६. रासीजुम्मतेओयनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव उद्देसओ भाणियव्वो, नवरं—परिमाणं तिण्णि वा सत्त वा एक्कारस वा पन्नरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति । संतरं तहेव ॥

२७. ते णं भंते ! जीवा जं समयं तेयोगा तं समयं कडजुम्मा ? जं समयं कडजुम्मा तं समयं तेयोगा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

२८. जं समयं तेयोया तं समयं दावरजुम्मा ? जं समयं दावरजुम्मा तं समयं तेयोया ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं कलियोगेण वि समं, सेस तं चेव जाव वेमाणिया नवरं—उववाओ सव्वेसि जहा[1] वक्कंतीए ॥

२६. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

---

१. प० ६ ।

तइओ उद्देसो

३०. रासीजुम्मदावरजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव उद्देसओ, नवरं—परिमाणं दो वा छ वा दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति, संवेहो ॥

३१. ते णं भंते ! जीवा जं समयं दावरजुम्मा तं समयं कडजुम्मा ? जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावरजुम्मा ?
णो इणट्ठे समट्ठे । एवं तेयोएण वि समं, एवं कलियोगेण वि समं, सेसं जहा पढमुद्देसए जाव वेमाणिया ॥

३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

चउत्थो उद्देसो

३३ रासीजुम्मकलिओगनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव, नवरं—परिमाणं एक्को वा पंच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा उववज्जंति, संवेहो ॥

३४. ते णं भंते ! जीवा जं समयं कलियोगा तं समयं कडजुम्मा ? जं समयं कडजुम्मा तं समयं कलियोगा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं तेयोएण वि समं, एवं दावरजुम्मेण वि समं, सेसं जहा पढमुद्देसए जाव वेमाणिया ॥

३५ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५-२८ उद्देसा

३६. कण्हलेस्सरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? उववाओ जहा धूमप्पभाए, सेसं जहा पढमुद्देसए । असुरकुमाराणं तहेव, एवं जाव वाणमंतराणं । मणुस्साण वि जहेव नेरइयाणं आयअजसं उवजीवंति । अलेस्सा, अकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति एवं न भाणियव्वं, सेसं जहा पढमुद्देसए ॥

३७ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३८ कण्हलेस्सतेयोएहि वि एवं चेव उद्देसओ ॥

३९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४०. कण्हलेस्सदावरजुम्मेहिं एवं चेव उद्देसओ ॥

४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४२. कण्हलेस्सकलिओएहिं वि एवं चेव उद्देसओ। परिमाणं संवेहो य जहा ओहिएसु उद्देसएसु ॥

४३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४४. जहा कण्हलेस्सेहिं एवं नीललेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा, नवरं—नेरइयाणं उववाओ जहा वालुयप्पभाए, सेसं तं चेव ॥

४५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४६. काउलेस्सेहि वि एवं चेव चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं—नेरइयाणं उववाओ जहा रयणप्पभाए, सेसं तं चेव ॥

४७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४८. तेउलेस्सरासीजुम्मकडजुम्मअसुरकुमारा णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव, नवरं—जेसु तेउलेस्सा अत्थि तेसु भाणियव्वा[1]। एवं एए वि कण्हलेस्सा-सरिसा चत्तारि उद्देसगा कायव्वा ॥

४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५०. एवं पम्हलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा। पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं वेमाणियाण य एएसिं पम्हलेस्सा, सेसाणं नत्थि ॥

५१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५२. जहा पम्हलेस्साए एवं सुक्कलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं—मणुस्साणं गमओ जहा ओहिउद्देसएसु, सेसं तं चेव। एवं एए छसु लेस्सासु चउवीसं उद्देसगा, ओहिया चत्तारि, सव्वे ते अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति ॥

५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२९–५६ उद्देसा

५४. भवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा ओहिया पढमगा चत्तारि उद्देसगा तहेव निरवसेसं, एए चत्तारि उद्देसगा ॥

५५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५६. कण्हलेस्सभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा कण्हलेस्साए चत्तारि उद्देसगा भवंति तहा इमे वि भवसिद्धियकण्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा।

५७. एवं नीललेस्सभवसिद्धिएहिं वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा ॥

---

१. भाणियव्व (ख, ता)।

५८. एव काउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥

५९. तेउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ओहियसरिसा ॥

६०. पम्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥

६१. सुक्कलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ओहियसरिसा। एवं एए वि भवसिद्धिएहि वि अट्ठावीस उद्देसगा भवंति ॥

६२. सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५७-८४ उद्देसा

६३. अभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जति० ? जहा पढमो उद्देसगो, नवरं—मणुस्सा नेरइया य सरिसा भाणियव्वा, सेसं तहेव ॥

६४. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

६५. एव चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा ॥

६६. कण्हलेस्सअभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया ण भंते ! कओ उववज्जंति० ? एव चेव चत्तारि उद्देसगा ॥

६७. एव नीललेस्सअभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइयाणं चत्तारि उद्देसगा।

६८. काउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥

६९. तेउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥

७०. पम्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥

७१. सुक्कलेस्सअभवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा। एवं एएसु अट्ठावीसाए वि अभवसिद्धियउद्देसएसु मणुस्सा नेरइयगमेणं नेयव्वा ॥

७२. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

८५-११२ उद्देसा

७३. सम्मदिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववजंति० ? एवं जहा पढमो उद्देसओ। एव चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा भवसिद्धियसरिसा कायव्वा ॥

७४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

७५. कण्हलेस्ससम्मदिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एए वि कण्हलेस्ससरिसा चत्तारि वि उद्देसगा कायव्वा। एव सम्मदिट्ठीसु वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीस उद्देसगा कायव्वा ॥

७६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

११३-१४० उद्देसा

७७. मिच्छादिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जति० ? एवं एत्थ वि मिच्छादिट्ठिअभिलावेण अभवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा।
७८. सेवं भते। सेवं भते ! त्ति ॥

१४१-१६८ उद्देसा

७९. कण्हपक्खियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइयाणं भते ! कओ उववज्जति० ? एवं एत्थ वि अभवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा ॥
८०. सेवं भते ! सेव भंते ! त्ति ॥

१६९-१९६ उद्देसा

८१. सुक्कपक्खियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं एत्थ वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा भवति। एव एए सव्वे वि छन्नउयं उद्देसगसयं भवति रासीजुम्मसय जाव सुक्कलेस्ससुक्कपक्खियरासीजुम्मकलियोगवेमाणिया जाव—
८२. जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंत करेंति ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥
८३. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति ॥
८४. भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वंदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—एवमेयं भते ! तहमेयं भते ! अवितहमेयं भते ! असदिद्धमेय भते ! इच्छियमेयं भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भते ! सच्चे ण एसमट्ठे, जे णं तुब्भे वदह त्ति कट्टु अपुव्ववयणा[1] खलु अरहता भगवंतो, समणं भगवं महावीरं वंदति नमसति, वंदित्ता नमसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

॥ इति भगवई समत्ता ॥

ग्रंथाग्र

कुलगाथा १९३१९ अक्षर १६

कुल अक्षर ६१८२२४

---

१. अपूतिवयणा (अ, क, ता, ब, म)।

परिसेसो

सव्वाए भगवईए अट्ठतीस सतं सयाणं (१३८), उद्देसगाणं एगूणविंसतिसताणी पचविसइअहियाणी (१९२५)।

संगहणी-गाहा

चुलसीइ सयसहस्सा, पदाण पवरवरनाणदंसीहिं।
भावाभावमणता, पण्णत्ता एत्थमंगम्मि ॥ १ ॥
तवनियमविणयवेलो, जयति सदा नाणविमलविपुलजलो।
हेतुसतविपुलवेगो, संघसमुद्दो गुणविसालो ॥ २ ॥

पोत्थयलेहगकया नमोक्कारा

णमो गोयमाईण गणहराणं, णमो भगवईए विवाहपण्णत्तीए, णमो दुवालसंगस्स गणिपिडगस्स ॥

कुम्मसुसंठियचलणा, अमलियकोरेंटबेंटसंकासा।
सुयदेवया भगवई, मम मतितिमिर पणासेउ ॥१॥

उद्देस-विधि

पण्णत्तीए आइमाण अट्ठण्ह सयाण दो दो उद्देसगा उद्दिसिज्जति, नवर—चउत्थे सए पढमदिवसे अट्ठ, बितियदिवसे दो उद्देसगा उद्दिसिज्जति। नवमाओ सताओ आरद्ध जावइय-जावइय ठवेति तावतिय-तावतिय[1] उद्दिसिज्जति, उक्कोसेण सत पि एगदिवसेण, मज्झिमेण दोहि दिवसेहिं सत, जहण्णेण तिहिं दिवसेहि सत। एव जाव वीसतिमं सत, नवरं—गोसालो एगदिवसेणं उद्दिसिज्जति, जदि ठियो एगेण चेव आयबिलेणं अणुण्णवति[2]। अह ण ठितो आयबिलेण छट्ठेण अणुण्णवति। एक्कवीस-बावीस-तेवीसतिमाइ सताइं एक्केक्कदिवसेणं उद्दिसिज्जति। चउवीसतिमं सत दोहिं दिवसेहि छ-छ उद्देसगा। पचवीसतिम दोहिं दिवसेहिं छ-छ उद्देसगा। बंधिसयाइ अट्ठसयाइ एगेणं दिवसेण, सेढिसयाइ बारस एगेण, एगिदियमहाजुम्मसयाइं बारस एगेणं, एव बेंदियाणं बारस, तेंदियाण बारस, चउरिंदियाणं बारस एगेण, असण्णि-

१. °तिय एगदिवसेण (ख, स)।
२. अणुणच्चति (ता, स); अणुणज्जति (अ, ब)

पंचिंदियाणं बारस, सण्णिपंचिंदियमहाजुम्मसयाइं एक्कवीसं एगदिवसेणं उद्दिसिज्जंति, रासीजुम्मसतं एगदिवसेण उद्दिसिज्जति ।।

गाहातिगं

केषुचिदादर्शेषु पुस्तकलेखककृता अन्यापि गाथात्रयी लभ्यते—

वियसियअरविंदकरा, नासियतिमिरा सुयाहिया देवी ।
मज्झं पि देउ मेहं, बुहविबुहणमंसिया णिच्चं ।।१।।
सुयदेवयाए पणमिमो, जीए पसाएण सिक्खियं नाणं ।
अण्णं पवयणदेविं, संतिकरिं तं नमंसामि ।।२।।
सुयदेवया य जक्खो, कुंभधरो बंभसंतिवेरोट्टा ।
विज्जा य अंतहुंडी, देउ अविग्घं लिहंतस्स ।।३।।

परिशिष्ट :

परिशिष्ट—१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अंतिय जाव पव्वइत्तए	१८।१४७	९।१६७
अवकूणगहत्थगयं जाव अंजलिकम्म	१५।१२९	१५।१२०
अकततरिय जाव अमणामतरियं	१९।३५	१।२२४
अकता जाव अमणामा	७।११९	१।३५७
अकिट्ठे जाव विहरामि	३।१२९	३।१२९
अगामियाए जाव अडवीए	१५।८७	१५।८६
अगामियाए जाव सव्वओ	१५।८८	१५।८६
अग्गिसामण्णे जाव दाइयसामण्णे	९।१७६	९।१७६
अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे	१।४४२	१।११
अच्चासाइए जाव तं	३।१२९	३।१२९
अच्छे जाव पडिरूवे	२।११८	वृत्ति
अजीवदव्वदेसे जाव अणंतभागूणे	११।१०८	११।१०८
अजीवदव्वदेसे जाव सव्वागासस्स	११।१०८	२।१४
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जइ	३।१३१	२।३१
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था	२।६७; ३।३३, ३६, ११२, ११५, ११६, ५।८५; ९।१५८, २२८; ११।५९, ७२, ८५, १८८; १२।६; १३।१०३; १०९, ११९; १५।५३, ७५;१२८, १२९, १४१, १४८	२।३१
अज्झत्थिय जाव समुप्पन्न	१३।१०४	२।३१
अट्ठं जाव जाणामो	१।४२४	१।४२३
अट्ठं वा जाव वागरण	५।१०४	५।१०४
अट्ठं वा जाव वागरेइ	५।१०५	५।१०४

अट्ठाई जाव वागरणाई	१८।२०५	५।१०४
अट्ठे जाव विउसग्गस्स	१।४२६	१।४२३
अणंतपएसिय जाव पासइ	१४।१५४	१४।१५४
अणंताओ जाव आवलियाए	८।३६६	८।३८४
अणवदग्ग जाव ससार०	१५।१८७	१५।१८७
अणवदग्गे जाव संसार०	१६।६१	१।४५
अणालोइय जाव नत्थि	१०।२०	१०।१६
अणिदा जाव ठिति०	३।४०	३।३८
अणिक्खित्तेणं जाव आयावेमाणस्स	१६।४६	३।३३
अणिक्खित्तेणं जाव आयावेमाणे	१५।१७७	३।३३
अणिट्ठ जाव अमणामं	३।११३; १४।४०	१।३५७
अणिट्ठस्सरा जाव अमणामस्सरा	७।११६	१।३५७
अणुट्ठाणे जाव अपुरिसक्कार०	१४।१४४	१।१४६
अणुत्तरा जाव अपइट्ठाणे	१३।१२	वृत्ति
अणुत्तरे जाव केवल०	१६।६१	६।४६
०अणुत्तरोववाइय जाव उव०	१२।१८८	१२।१८८
०अणुत्तरोववातिय जाव देव०	१६।७७	१६।७७
अणेगगणणायग जाव संपरिवुडे	१३।११४	७।१६६
अणेगगणनायग जाव दूय	७।१६६	ओ० सू० ६३
अणेग जाव किच्चा	१५।१८६	१५।१८६
अणेगसय जाव किच्चा	१५।१८६	१५।१८६
अणेगसय जाव पच्चायाइस्सइ	१५।१८६	१५।१८६
अणेगसय जाव पच्चायाहिति	१५।१८६	१५।१८६
अणेगसयसह जाव किच्चा	१५।१८६	१५।१८६
अणेगसयसहस्स जाव किच्चा	१५।१८६	१५।१८६
अण्णमण्णपुट्ठाई जाव घडत्ताए	११।७८,७६	वृत्ति
अण्णमण्णपुट्ठा जाव अण्णमण्ण०	११।१११	११।७८
अतुरिय जाव जेणेव	१५।१५३	२।१०८
अतुरिय जाव सोहेमाणे	२।११०	२।१०८
अतुरियमचवल जाव गईए	११।१३५, १४४	११।१३३
अत्थमण जाव दीसंति	८।३३१	८।३२६
अत्थमणमुहुत्तंसि जाव उच्चत्तेणं	८।३३१	८।३३०
अत्थामे जाव अधारणिज्ज०	७।२०४	७।२०३

अत्थेगतिए जाव नो	९।३१	९।३१
अत्थेगतिए जाव नो	९।३१	९।३१
अत्थेगतियाणं जाव साहू	१२।५४	१२।५३
अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए	१२।५४	१०।११४
अदुक्खावणयाए जाव अपरियावणयाए	३।१४८	३।१४५
अधम्मत्थिकाए एव चेव नवर गुणओ ठाणगुणे	२।१२६	२।१२५
अधम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए	१३।५५	२।१२४
अपत्थियपत्थया जाव हीणपुण्ण°	३।११३	३।१०९
अप्पकोहे जाव अप्पलोभे	२५।५६८	ओ० सू० ३३
अप्पणो जाव पासइ	१४।१२३	१४।१२३
अब्भुगयाओ जाव पडिरूवाओ	१५।८८	१५।८७
अभिक्खण जाव अजलिकम्म	१५।१२१	१५।१२०
अभिमुहा जाव पज्जुवासति	५।८४	१।१०
अभिहणमाणा जाव उद्दवेमाणा	८।२८७	८।२८७
अमाणत्त जाव पसत्थ	१।४१८	१।४१८
अमुच्छिए जाव अणज्झोववन्ने	१५।१६२	७।२३
अमुच्छिए जाव आहारे	१४।८३	१४।८२
अमुच्छिए जाव आहारेइ	७।२३	७।२२
अम्मताओ जाव पव्वइत्तए	९।१७४	९।१६७
अम्मेहिं जाव पव्वइहिसि	९।१७७	९।१६९
अयकोट्ठाओ जाव निक्खिवइ	१६।७	१६।७
अयमेयारूवे जाव पण्णे	१५।१५२	१५।१४८
अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१२।१५; १६।५५; १८।२०५	२।३१
अवण्णकारए जाव वुप्पाएमाणे	९।२४३	९।२४०
अवण्णे जाव अरूवी	२।१२८	२।१२५
अवसेसं जहा सिवस्स जाव सव्व-दुक्खप्पहीणे नवर—तिदड-कुडियं जाव धाउरत्तवत्थपरिहिए परि-वडियविब्भगे आलभिय नगरिं मज्झमज्झेण निग्गच्छति जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्क-मति, अवक्कमित्ता तिदंडकुडियं च जहा खदओ जाव पव्वइओ सेसं जहा सिवस्स जाव	११।१९३-१९७	११।८३-८८

असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति	२४।५४	२४।५४
असणं जाव उवक्खडावेति	१८।४८	३।३३
असणं जाव उवक्खडावेह	१८।४७	३।३३
असणं जाव साइम	१२।१२	१२।४
असणं ४ जाव विहरइ	१२।१४	१२।४
असणं जाव विहरिस्सामो	१२।१८	१२।४
असद्दपरिणए जहा एगगुणकालए	५।१७४	५।१७२
असयं जाव उववज्जंति	६।१३२	६।१३२
असुरकुमारराया जाव विहरित्तए	१०।६८	१०।६७
असुरकुमारा जाव उववज्जंति	६।१२६	६।१२८
असुरकुमारा जाव उववज्जति	६।१३०	६।१३०
असोगवडेसए जाव मज्झे	१०।६६	३।२४६
अस्संजए जाव देवे०	१।५०	१।४८
अस्संजत जाव पावकम्मे	१७।२१	१७।१६
अस्संजय जाव एगंत०	१८।१६५	८।२७३
अस्साएमाणस्स जाव पडिजागरमाणस्स	१२।१३	१२।६
अस्साएमाणा जाव पडिजागरमाणा	१२।१२	१२।४
अस्साएमाणा जाव विहरइ	१२।१३	१२।४
अहापडिरूवं जाव विहरइ	६।१३६, १५७; ११।८५; १६।५५; १८।२०५	२।३०
अहिगरणियाए जाव पाणा०	१।३७२	१।३६५
अहेलोग जाव समोहणित्ता	३४।१६	३४।१४
आउक्खएणं जाव कहिं	३।५३, ७५; ६।२४४	२।७३
आउक्खएण जाव चइत्ता	१५।१०१	२।७३
आउक्खएण जाव महाविदेहे	१६।७४	२।७३
आओसइ जाव सुहमत्थि	१५।१०६	१५।१०३
आगयपण्हया जाव समूसविय०	६।१४८	६।१४७
आगासत्थिकाए वि एवं चेव नवरं खेत्तओ णं आगासत्थिकाए लोयालोयप्पमाणमेत्ते अणते चेव जाव गुणओ	२।१२७	२।१२५
आगासपदेसेसु जाव चिट्ठति	५।१११	५।११०
आघवेति जाव उवदसेति	१६।६१	१६।६१

वि निसिरणयाए वि दहणयाए वि ताव च ण से		
पुरिसे काइयाए जाव पचहि	१।३६७	१।३६५
एक्केण वा जाव उक्कोसेण	२०।११८	२०।११८
एगरूवं जाव हंता	७।१६८	७।१६७
एगवण्णाइ आणमति वा पाणमंति वा ऊससति		
वा नीससति वा आहारगमो नेयव्वो जाव पचदिसि	२।४,५	प० २८।१
°एगिंदिय जाव परिणए	८।५१	८।५१
एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा	२।१३९	२।१३९
एगिंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा	२।१३९	२।१३९
एगिंदियपयोगपरिणया जाव पचिंदिय०	८।२	२।१३९
एतेण अभिलावेणं चत्तारि भगा	३।१५६	३।१५४
एत्तो आढत्तं जहा जीवाभिगमे जाव से	६।१५६-१५९	वृति; जी. ३
एत्थ वि तह चेव भाणियव्व, नवरं अणुदिण्ण		
उवसामेइ सेसापडिसेहेयव्वा तिण्णि। ज त भते !		
अणुदिण्ण उवसामेइ तं किं उट्ठाणेण जाव		
पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा। से नूणं भते ! अप्पणा		
चेव वेदेइ अप्पणा चेव गरहइ एत्थ वि मच्चेव		
परिवाडी, नवरं उदिण्ण वेदेइ नो अणुदिण्ण		
वेदेइ एव जाव पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा।		
से नूण भते ! अप्पणा चेव निज्जरेइ अप्प०		
एत्थ वि, सच्चेव परिवाडी, नवर उदयअण-		
तरपच्छाकड कम्म निज्जरेइ एव जाव		
परक्कमेइ वा	१।१५१-१६२	१।१४७-१५०
एमहिड्ढीए जाव एमहाणुभागे	३।४	३।४
एयति जाव अते	३।१४८	३।१४४
एयति जाव त	३।१४३	३।१४३
एयति जाव नो	३।१४६-१४८	३।१४३
एयति जाव परिणमइ	३।१४५	३।१४३
एयाणि वि तहेव नवर सत्त		
संवच्छराइं सेस त चेव	६।१३१	६।१२९
एव अगणिकायस्स मज्झंमज्झेण तहिं नवरं		
झियाएज्ज भाणियव्व। एव पुक्खलसंवट्टगस्स		
महामेहस्स मज्झंमज्झेणं तहिं उल्ले सिया।		

एवं गंगाए महाणदीए पडिसोयं हव्वमागच्छेज्जा तहिं विणिहायमावज्जेज्जा । उदगावत्तं वा उदगबिंदुं वा ओगाहेज्जा से णं तत्थ परियावज्जेज्जा	५।१५७-१५६	५।१५४-१५६
एव अणागयमणंतं पि	१४।४६	१४।४५
एव अधम्मत्थिकाए लोयाकासे जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए पंच वि एक्काभिलावा	२।१४२-१४५	२।१४१
एवं अधम्मत्थिकायस्स वि	११।१०४	११।१०४
एव अप्पाबहुगाणि तिण्णि वि जहा पढमिल्लए दंडए, नवरं—सव्वत्थोवा पंचिदियतिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा	७।५०,५१	७।४१,४२
एवं आयकम्मुणा नो परकम्मुणा आयप्पयोगेण नो परप्पयोगेण उस्सिओदयं वा गच्छइ पयोदयं वा गच्छइ	३।२१३-२१५	३।२१२
एवं उरगजातिआसीविसस्स वि, नवरं जंबुद्दीवप्पमाणमेत्त बोंदि विसेणं विसपरिगयं सेसं तं चेव जाव करिस्संति	८।६०	८।८८
एव एएणं अभिलावेणं उदयंते, पोयंते छिद्दते दूसतं छायंते आयवत्तं जाव नियमा	१।२७३-२७५	१।२७२
एवं एएण अभिलावेण जहा अजीवपज्जवा जाव से	२५।११-१४	प०-५
एव एएणं कमेण जहेव खंदओ तहेव पव्वइओ	६।१५०,१५१	२।५२,५३
एव एक्केक्कं सचारेंतेण जाव अहवा	१२।७७	१२।७७
एव एक्केक्क सचारेंतेहिं जाव अहवा	१२।७६	१२।७६
एव एक्केक्क पुच्छा । सचित्ते वि काये, अचित्ते वि काये जीवे वि काये अजीवे वि काये जीवाण वि काये अजीवाण वि काये	१३।१२८	१३।१२४
एव कालओ वि, एवं भावओ वि	८।१८४	८।१८४
एवं किं मूलं पासइ कंदं पासइ ? चउभंगो	३।१५८	३।१५४
एव खंधेण वि तिण्णि आलावगा एव जीवेण वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा	१।१९४-१९६	१।१९१-१९३
एवं खेतओ कालओ	८।१९०	८।१९०
एवं खेत्तओ वि, कालओ वि	८।१८५	८।१८५
एवं चक्खिदियवसट्टे वि एवं जाव फासिंदियवसट्टे वि जाव अणुपरियट्टइ	१२।६०-६३	१२।५९

एवं चरित्तावरणिज्जाणं जयणावरणिज्जाणं अज्झवसाणावरणिज्जाणं आभिणिवोहियनाणा-वरणिज्जाण जाव मणपज्जव०	९।३२	९।३२,३१
एव चेव	३।१५५	३।१५४
एव चेव	६।१	६।१
एव चेव	८।४५९	८।४५८
एव चेव	९।२५५	९।२५४
एवं चेव	११।८०	११।७८
एव चेव	१२।१३०	१२।१३०
एवं चेव	१२।१४८	१२।१४७
एवं चेव	१४।२	१४।१
एव चेव	१६।८१	१६।८१
एव चेव	१८।१७५	१८।१७४
एव चेव एव छाया एव लेस्सा	१४।१३३-१३५	१४।१३२
एवं चेव एवं मज्झिमियं चरित्ताराहणं पि	८।४६२,४६३	८।४६१
एव चेव, एव मायवसट्टेवि, लोभवसट्टेवि जाव अणुपरियट्टइ	१२।२३-२५	१२।२२
एव चेव जहा छउमत्थे जाव महा०	७।१४७	७।१४६
एव चेव जहा परमाहोहिए जाव महा०	७।१४९	७।१४८
एव चेव जाव	१८।५९	१८।५७
एवं चेव जाव अफासा	१२।११०	१२।१०८
एव चेव जाव अफासे	१२।११२	१२।१०८
एव चेव जाव एव	१२।८५	१२।८४
एवं चेव जाव विसरीरेसु	१२।१५७	१२।१५४
एव चेव जाव वत्तव्वं	१२।१६०	१२।१५९
एव चेव तिविहा वि, एवं चरित्ताहणा वि	८।४५३,४५४	८।४५२
एव चेव नवर अत्थेगतिए	८।४६०	८।४५८
एवं चेव नवर—केवलनाणावरणिज्जाणं खए भाणियव्वे, सेसं त चेव	९।२९,३०	९।२१,२२
एवं चेव नवर तिरिक्खजोणियदव्वे भाणियव्वं सेस तं चेव एव जाव देवदव्वेयणा	१७।४०	१७।४०
एव चेव वितिओ वि आलावगो नवर परियातिइत्ता पभू	३।१८९	३।१८८
एव छत्ते चम्मे दंडे दूसे आउहे मोदए	२।१३३	२।१३३

एवं जहा अट्ठमसए ततिए उद्देसए जाव नो	१८।१४९	८।२२३
एवं जहा अट्ठारसमसए छट्ठुद्देसए जाव सिय	२०।२७	१८।११२
एव जहा असोच्चाए तहेव जाव केवल०	९।६६-६८	९।४४-४६
एव जहा आभिणिबोहियनाणस्स वत्तव्वया भणिया तहा सुयनाणस्स वि भाणियव्वा नवरं—सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे भाणियव्वा। एवं चेव केवलं ओहिनाणं भाणियव्व, नवर—ओहिनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे भाणियव्वे। एव केवल मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा नवरं—मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे भाणियव्वो	९।२३-२८	९।२१,२२
एवं जहा इंदादिसा तहेव निरवसेस भाणियव्व जाव अद्धासमए	११।१००	१०।५
एव जहा इंदियउद्देसए पढमे जाव वेमाणिया जाव तत्थ य जे ते उवउत्ता ते जाणंति, पासंति, आहारेति। से तेणट्ठेणं निक्खेवो भाणियव्वो	१८।६६-७१	प० ४
एव जहा उसभदत्तो तहेव पव्वइओ नवरं पंचहिं पुरिससएहिं सद्धिं तहेव जाव	९।२१४,२१५	९।१५०,१५१
एव जहा ओववाइए अम्मडस्स वत्तव्वया जाव	१४।११०-११२	ओ० सू० ११८-१२०
एव जहा ओववाइए कूणिओ जाव निगच्छइ	९।२०९	ओ० सू० ६९
एव जहा ओववाइए जाव आराहगा	१४।१०७-१०९	ओ० सू० ११५-११७
एवं जहा ओववाइए तहेव भाणियव्व जाव आलोय	९।२०४	ओ० सू० ६४
एव जहा कालासवेसियपुत्तो तहेव भाणियव्व जाव सव्व०	९।१३३-१३५	१।४३१-४३३
एव जहा कोहवसट्टे तहेव जाव अणुपरियट्टइ	१२।५९	१२।२२
एव जहा खदए जाव जओ	१५।१५७	२।३८
एव जहा खदए जाव से तेणट्ठेण जाव नो असरीरी	१६।३,४	२।११,१२
एवं जहा खदओ जाव एय	७।२०३	२।६८
एवं जहा छट्ठसए जाव नो	१६।५२	६।४
एवं जहा छट्ठसए तहा अयोकवल्ले वि जाव महापज्जवसाणा	१६।५२	६।४
एव जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पाबहुयं जाव जोतिसिया	१२।१९८	जी० ३; भ० वृत्ति
एव जहा जीवाभिगमे बितिए नेरइयउद्देसए	१३।४५	जी० ३; भ० वृत्ति

एवं जहा तइयसए चउत्थुद्देसए जाव अत्थि	१३।१६६	३।१९२
एवं जहा तइयसए पचमुद्देसए जाव नो	१३।१५०	३।१९६
एवं जहा तामली जाव सक्कारेइ	११।६३	३।३३
एवं जहा तिरयगरमायरो जाव	१६।८७	१६।८६
एवं जहा तुंगिउद्देसए जाव पज्जुवासति	११।१७८	२।१८७, ओ० सू० ५२
एवं जहा तेयगसरीरस्स अतरं तहेव	८।४३६	८।४१७
एवं जहा तेयगस्स सचिट्ठणा तहेव	८।४३५	८।४१६
एवं जहा दवियाया कसायाया भणिया तहा दवियाया जोगाया भाणियव्वा	१२।२०२	१२।२०१
एवं जहा दसमसए जाव नामधेज्जेत्ति	१३।५०,५१	१०।३,४
एवं जहा नवमसए उसभदत्तो जाव भविस्सइ	१२।३३	९।१३९
एवं जहा नाणावरणिज्ज नवर दंसणनाम घेतव्व जाव दसण०	८।४२१	८।४२०
एवं जहा नियंठस्स वत्तव्वया तहा सिणायस्स वि भाणियव्वा जाव सिणाए	२५।३५९,३६०	२५।३५६,३५७
एवं जहा नेरइयउद्देसए जाव	१३।४६	जी० ३, भ० वृत्ति
एवं जहा पचमसए परमाणुपोग्गलवत्तव्वया जाव अणगारेणं	१८।१९२-१९५	५।१५७
एवं जहा पढमं पारणगं नवर	११।६६	११।६४
एवं जहा पढमसए असवुडस्स अणगारस्स जाव अणुपरियट्टइ	१२।२२	१।४५
एवं जहा पढमसए चउत्थे उद्देसए तहा भाणियव्व जाव अलमत्थु	७।१५६,१५७	१।२००,२०९
एवं जहा पढमसए छट्ठुद्देसए जाव नो	१७।५१-५४	१।२७७-२८०
एवं जहा पढमसए नवमे उद्देसए तहा भाणियव्व	७।१६५	१।४३६
एवं जहा बारसमसए पंचमुद्देसे जाव कम्मओ	२०।२१,२२	१२।११९,१२०
एवं जहा बितियसए अत्थिकायउद्देसए जाव उवओग	१३।५९	२।१३७
एवं जहा बितियसए जाव तिविहाए	९।१४६	२।९७
एवं जहा बितियसए नियठुद्देसए जाव अडमाणे	१५।९-१२	२।१०६,१०७
एवं जहा रायपसेणइज्जे चित्ते जाव चक्खुभूए	१८।४०	राय०सू०६७५
एवं जहा रायपसेणइज्जो चित्तो	१८।२२१	राय०सू०६४५
एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव अट्ठसएण	९।१८२	राय०सू०२७९
एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव खुड्डियं	७।१५७,१५८	राय०सू०७७२

एवं जहा वेयणिज्जेण समं भणिया तहा आउएण वि सम भाणियव्वं	८।४८८	८।४८६
एवं जहा सत्तमसए अण्णउत्थियउद्देसए जाव से	१८।१३४,१३५	७।२१२,२१३
एवं जहा सत्तमसए दुस्समउद्देसए जाव अपरिया०	८।४२२	७।११४
एव जहा सत्तमसए पढमउद्देसए जाव से	१०।१४	७।२१
एवं जहा सद्दुद्देसए जाव निव्वुडे नाणे केवलिस्स	९।१२४	५।६७
एव जहा सुत्तस्स तहा दुब्बलियवत्तव्वया भाणियव्वा, बलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियव्व जाव सजोएत्तारो	१२।५६	१२।५४
एव जहा सूरियाभस्स अलंकारो तहेव जाव चित्तं	९।१९०	राय०सू०२७५
एवं जहा सूरियाभो	१६।६०-६३	राय०सू०६२-६५
एवं जहेव नेरइयाण नवरं देवे	१४।१९,२०	१४।१७,१८
एव जहेव भासा	१३।१२६	१३।१२४
एव जहेव विजयगाहावई नवरं सव्वकामगुणिएणं भोयणेण पडिलाभेइ सेसं त चेव जाव चउत्थ	१५।३९-४४	१५।२५-३०
एवं जहेव विजयस्स नवरं ममं विउलाए खज्जगविहीए पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे सेसं तं चेव जाव तच्चं	१५।३२-३७	१५।२५-३०
एवं जहेव विज्जाचारस्स नवरं तिसत्तखुत्तो	२०।८५	२०।८१
एवं जहेव सक्कस्स जाव तए	१४।२५	१४।२२
एव जाव अलोए	११।१०८	११।१०८
एव जाव उत्तर०	११।११०	११।११०
एवं जाव भावओ	८।१८८	८।१८८
एवं जाव भावओ	८।१९१	८।१९१
एव जाव मणपज्जवनाण	९।३१	९।३१
एवं जाव लोए	११।१०८	११।१०८
एवं जाव से	१३।१५९	ओ०सू०१५०
एव जाव हुंडे	१४।८१	ठा०६।३१
एवं जोगो, उवओगो, संघयणं, संठाणं, उच्चत्त, आउयं च एयाणि सव्वाणि जहा असोच्चाए तहेव भाणियव्वाणि	९।५८-६३	९।३६-४१

एव तं चेव नवरं	११।७०	११।६४
एव त चेव नवर नियम सपडिक्कमे	१३।१४५	१३।१४४
एव तवे संजमे	१।४२,४३	१।४१
एव तिण्णि वि भाणियव्वा	६।३६	६।३६
एव तिपएसिय वि, नवर सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे सिय तिवण्णे । एवं रसेसु वि, सेसं जहा दुपएसियस्स । एवं चउपएसिए वि, नवर—सिय एगवण्णे जाव सिय चउवण्णे । एव रसेसु वि, सेस त चेव । एवं पचपएसिए वि, नवरं—सिय एगवण्णे जाव सिय पचवण्णे, एवं रसेसु वि, गंधफासा तहेव ।	१८।११३-११५	१८।११२
एव तेइंदिया एव चउरिंदिया	२५।२	२५।२
एव दसणाराहणं पि एव चरित्ताराहण पि	८।४६५,४६६	८।४६४
एव दरिसणावरणिज्ज पि	६।३४	६।३४
एवं धायइसड दीवं जाव हंता	१८।१५३	१८।१५२
एव नाणी आभिणिवोहियनाणी जाव केवलनाणी अण्णाणी मइअण्णाणी सुयअण्णाणी विभगनाणी एएसिं दसण्ह वि [अट्ठण्ह वि (अ)] संचिट्ठणा जहा कायट्ठितीए अतर सव्व जहा जीवाभिगमे अप्पावहुगाणि तिण्णि जहा वहुवत्तव्वयाए	८।१९३-२०७	प०१८,जी०१०,प०३;भ०वृत्ति ।
एव नो आयकम्मुणा, परकम्मुणा । नो आयप्पयोगेण, परप्पयोगेण । उसिओदयं वा गच्छइ, पयोदय वा गच्छइ	३।१७५-१७७	३।१७४
एव पडिउच्चारेतव्व	१।३४	१।३३
एव परउत्थियवत्तव्वया नेयव्वा जाव इत्थिवेदं	२।७९	१।४२०
एवं वाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू	३।२१०	३।२०९
एव वितिओ वि आलावगो नवर बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू	३।२४१	३।२४०
एवं वोरियायाए वि समं	१२।२०३	१२।२०३
एव वेदणापरिणामं	१४।४१	१४।४०
एवं सपत्तेणवि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा जहा असपत्तेण	८।२५१	८।२५१
एव सवरेण वि	९।३१	९।३१

एवं संसार आउलीकरेति एवं परित्तीकरेति एव दीहीकरेति एव ह्रस्सीकरेति एव अणुपरियट्टेति एवं वीईवयति पसत्था चत्तारि अपसत्था चत्तारि	१।३८६-३९१	१।३८४,३८५
एवं स प सु आ च पसत्थं नेयव्व	३।७२	३।७२
एव सव्वजीवा वि अणतखुत्तो	१२।१५२	१२।१५१
एवं सिणायस्स वि	२५।३५८	२५।३५७
एवतियं जाव करेज्जा	२४।४७,५०	२४।२७
एवमाइक्खइ जाव उववत्तारो	७।१९३	७।१९२
एवमाइक्खइ जाव एवं	१५।७,२७	१।४२०
एवमाइक्खति जाव एवं	१।४४४	१।४२०
एवमाइक्खति जाव परूवेति	१।४४२	१।४२०
एवमाइक्खामि जाव एवामेव	५।१३७	५।१३६
एवमाइक्खामि जाव परूवेमि	१।४२१	१।४२०
एसणिज्जं जाव साइम	७।२४	७।२२
ओग्गहं जाव विहरइ	६।१५९	२।३०
ओग्गहे जाव धारणा	२०।२०	१२।११०
ओग्गहो जाव धारणा	८।१००	८।९८
ओभासंति जाव पभासेति	७।२२९	७।२२८
ओभासेइ जाव छद्दिसिं	१।२५८-२६६	वृत्ति; प०११
ओराल जाव अतीव	२।४३	२।४२
ओरालिए जाव कम्मए	१०।८;१६।१७	८।३६६
ओवसमिए जाव सन्निवाइए	१७।१६	१४।८१
ओसप्पिणी जाव समणाउसो	५।२३	५।१९
ओहिनाणी रूविदव्वाइं जाणइ पासइ जहा नंदीए जाव भावओ	८।१८६	नंदी सू०२२
ओरालेणं जाव किसे	२।६६	२।६४
कक्खिए जाव कलुस०	६।२३२	२।२७
कक्खियस्स जाव कलुस०	११।८४	२।२७
कंचुइज्जपुरिसो वि तहेव अक्खाति, नवरं— धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहिय-विणिच्छए करयल जाव निग्गच्छइ। एवं खलु देवाणुप्पिया ! विमलस्स अरहओ		

जहा ओववाइए जाव अभिनंदंता	९।२०८	ओ०सू० ६८
जहा ओववाइए जाव गगण०	९।२०४	ओ०सू० ६४
जहा ओववाइए जाव गहणयाए	११।८५	ओ०सू० ५२
जहा ओववाइए जाव लूहाहारे	२५।५७१	ओ०सू० ३५
जहा ओववाइए जाव सत्थवाह०	९।१५८	ओ०सू० ५२
जहा ओववाइए जाव सव्वगाय०	२५।५७१	ओ०सू० ३६
जहा ओववाइए जाव सुद्धेसणिए	२५।५६९	ओ०सू० ३४
जहा ओसप्पिणी उद्देसए जाव परस्सरे	१२।१६०	७।१२२
जहा कूणिओ जाव पायच्छित्ते	७।१९६	७।१७६
जहा कोहे तहेव	१२।१०४	१२।१०३
जहा खंदए जाव अणंता	११।१०८	२।४५
जहा खदए जाव गढपट्ठे	१३।१४२	२।४९
जहा खंदए जाव परिक्खेवेण	११।११०	२।४७
जहा खंदए जाव सव्वण्णू	१२।२१	२।३८
जहा खदए तहा चत्तारि आलावगा नेयव्वा अणेगसयसहस्स पुट्ठे उद्दाइ ससरीरी निक्खमइ	५।४६-५०	२।८-१२
जहा खदओ जाव अण्णेसु	९।१३७	२।२४
जहा खंदओ जाव से	९।१५०	२।५२
जहा गोयमसामी जाव जेणेव	१५।१५३	२।१०७
जहा चोद्दसमसए ततिए उद्देसए जाव पडिसंसाहणया	२५।५८५	१४।३२
जहा तामलिस्स जाव पुत्तेहिं	११।५९	३।३३
जहा तामलिस्स वत्तव्वया तहा नेतव्वा, नवरं चउप्पुडय दारुमयं पडिग्गहयं करेत्ता जाव विउलं असणपाणखाइम-साइम जाव सयमेव	३।१०१,१०२	३।३२,३३
जहा तेयनिसग्गे जाव अवकररासिं	१६।९८	१५।११६
जहा देवाणदा जाव पडिसुणेइ	१२।३४	९।१४०
जहा नंदीए जाव भावओ	८।१८७	नंदी सू० २५
जहा नाणावरणिज्जं	६।३४	६।३४
जहा नियठुद्देसए जाव तेण	११।७६	२।११०,११।७३
जहा पंचमसए जाव जे	९।१२२	५।२५५
जहा पढमसए कालासवेसियपुत्ते जाव सव्वदुक्ख०	७।२३१	१।४३३

जहा पण्णवणाए जाव नालियरी	८।२१७	प० १
जहा पण्णवणापदे जाव फला	८।२१८,२१९	प० १
जहा परमाहोहिए तहा केवली वि जाव	१८।१८०,१८१	१८।१७८,१७९
जहा परिणमइ दो आलावगा तहा गमणिज्जेण वि दो आलावगा भाणियव्वा जाव तहा	१।१३६-१३८	१।१३३-१३५
जहा पाणाइवाए नवरं अट्ठफासे	१२।११३	१२।१०२
जहा पादुब्भवणा तहा दो वि आलावगा णेयव्वा	३।६०-६३	३।५६-५९
जहा पादुब्भवा	३।६५-६७	३।५७-५९
जहा बितियसए जाव जीवियास	८।२७२	२।९५
जहा भासा तहा भाणियव्वा किरियावि जाव करणओ	१।४४३	१।४४३
जहा भासा तहा मणे वि जाव नो	१३।१२६	१३।१२४
जहा रायपसेणइज्जे जाव अट्ठ	११।१५९	राय०सू० १६१
जहा रायप्पसेणइज्जे जाव कल्लाण०	१३।९८	राय०सू० १८५
जहा रायप्पसेणइज्जे जाव दुवारवयणाइं	१३।८७	राय०सू० ७५५
जहा रोहे जाव उड्ढंजाणू जाव विहरइ	१०।४४	१।२८८
जहा विजयस्स जाव जम्मजीवियफले	१५।१५९,१६०	१५।२६,२७
जहा सवुडे नवरं आउयं च ण कम्मं सिय बंधइ सिय नो बंधइ सेस तहेव जाव वीईवयइ	१।४३८	१।४७
जहा सत्तमसए जाव एगतपंडिया	८।२७८	७।२८
जहा सत्तमसए दुस्समाउद्देसए जाव परिया०	८।४२३	७।११६
जहा सत्तमसए पढमुद्देसए जाव अंतं	११।९८;१३।९०	७।३
जहा सत्तमसए पढमोद्देसए जाव नो	२५।५६७	७।२४
जहा सत्तमसए बितिए उद्देसए जाव एगंतबाला	८।२७३	७।२८
जहा सत्तमसए संवुडुद्देसए जाव अट्ठो निक्खित्तो	१८।१५९	७।२०
जहा सत्तमसए सत्तमुद्देसए जाव से	१०।१४	७।१२६
जहा सत्तमे सए अण्णउत्थिउद्देसए जाव से	१८।१३९	७।२१६
जहा सव्वाणुभूती तहेव जाव सच्चेव	१५।१०७	१५।१०४
जहा सालीणं तहा एयाणि वि नवरं पंच संवच्छराइं सेसं तं चेव	६।१३०	६।१२९
जहा सिवभद्दे जाव पच्चुवेक्खमाणे	१३।१०२	११।५८; राय० सू० ६७३,६७४
जहा सिवस्स जाव विब्भंगे	११।१८७	११।१७१
जहा सिवे जाव पडिगया	१५।७८	११।८२

तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव परूवणे	१५।१४९	१५।१४७,१४८
तणुयस्स जाव कज्जइ	१।४३५	१।४३४
तणुवाए०	१।३०३	१।२९७
तत्थगए जाव वदइ	७।२०३	२।६८
तब्भत्तिया जाव चिट्ठति	३।२६२,२६७	३।२५२
तया णं जाव मंदरस्स	५।१४	५।१४
०तरागा तहेव	१।६५	१।६३
तलवर जाव सत्थवाह०	१३।१०२,१०४;१५।१७१	२।३०
तवसा जाव विहरेज्जा	१३।१०४	१।७
तवेण जाव करेत्तए	१५।९८	१५।९८
तस्स०	५।१४३	५।१३९
तस्स जाव अत्थि	५।१४५	५।१३९
तह चेव	५।२०२	५।२०२
तह चेव नेयव्वं अविसेसियं जाव पभू समिय आउज्जियपलिउज्जिय जाव सच्चे	२।११०	२।११०
तहेव	५।११८	५।११८
तहेव	५।१८५	५।१८४
तहेव	५।२०२	५।२०२
तहेव जाव अडमाणे	१५।३८	१५।२४
तहेव जाव उस्सुत्तं	७।१२६	७।२१
तहेव जाव एगं	७।२१७	७।२१२
तहेव जाव ओहिं	३।११६	३।११५
तहेव जाव कासवग	९।१८५	९।१८४
तहेव जाव किच्चा	१५।१८६	१५।१८६
तहेव जाव गवेसणं	९।५५	९।३३
तहेव जाव तं नो अप्पणा परिभुंजेज्जा, नो अण्णेसिं दावए, सेसं तं चेव जाव परिट्ठवेयव्वे	८।२५०	८।२४८
तहेव जाव दिसोदिसिं	७।१८६,१८७	७।१७७,१७८
तहेव जाव ममं विउलेणं महुघयसजुत्तेणं परमण्णेणं पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे सेसं जहा विजयस्स जाव बहुले माहणे २	१५।१४८-५०	१५।१२५-२७
तहेव जाव वोच्छिण्णा	११।१८८	११।१८८

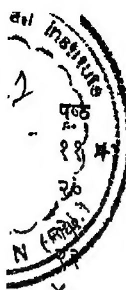
य जाव भविस्सइ	११।८५	२।३०
रट्ठे य जाव जणवए	१३।११०	राय०सू०७६०
रयण जाव सत०	११।५६	३।३३
रयणप्पभा जाव तमतमा	१।२११	२।७१
रयणप्पभापुढविनेरइयाउयं वा जाव अहेसत्तमा०	५।६२	२।७५
रयणाणं जाव रिट्ठाणं	३।४	राय०सू१०
रह जाव संपरिवुडे	७।१६६	७।१७७
रह जाव सण्णाहेति	७।१६५	७।१७४
राईसर जाव कारेमाणे	१३।१११	१३।१०२
राईसर जाव वदिहिंति	१५।१७४	१५।१७१
राईसर जाव सत्थवाह०	१५।१७२,१७५	२।३०
रायं वा जाव सत्थवाहं	३।३४	२।३०
रायगिहं जाव असपत्ते	८।२९२	८:२९१
रायगिहाओ जाव अतुरियमचवलमसभतं जाव रियं	७।२१४	२।११०
लद्धे जाव गंगदत्तेण देवेण सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए	१६।६५	राय०सू०६६७
लभिहिति जाव अविराहियसामण्णे	१५।१८६	१५।१८६
लभिहिति जाव विराहियसामण्णे	१५।१८६	१५।१८६
लाघविय जाव पसत्थं	१।४१७	१।४१७
लुक्खे जाव धमणि०	३।३५	२।६४
लोए जाव केण	२।२८	२।२६
लोए जाव दीवा	११।७२	११।७२
लोए जाव भइयव्वाइं	२५।२१	२५।२१
लोगस्स	११।१०६	११।१०५
लोहकडाह जाव किढिण	११।८५,८७	११।७२
लोह जाव घडावेत्ता	११।५६	११।५६
वदति जाव पडिगए	१८।१२१	११।८१
वंदित्ता जाव पडिगए	१८।१४६	११।८१
वंदिय जाव भविस्सइ	१४।१०५	१४।१०१
वंदिय जाव लाउल्लोइय०	१४।१०३	१४।१०१
वज्जं जहा सक्कस्स तहेव नवरं विसेसाहियं कायव्वं	३।१२२	३।१२०

परिशिष्ट—२

पूरकपाठ

('नेरइया जाव वेमाणिया' तथा 'नेरइया जाव सिद्धा' का पूरक पाठ)

१. नेरइय
२. असुरकुमार
३. नागकुमार
४. सुवण्णकुमार
५ विज्जुकुमार
६. अग्गिकुमार
७. दीवकुमार
८. उदहिकुमार
९. दिसाकुमार
१० वायुकुमार
११. थणियकुमार
१२. पुढविकाइय
१३. आउकाइय
१४. तेउकाइय
१५. वाउकाइय
१६. वणस्सइकाइय
१७. बेइंदिय
१८. तेइंदिय
१९. चउरिंदिय
२०. पंचिंदिय
२१. मणुस्स
२२. वाणमंतर
२३. जोइसिय
२४. वेमाणिय
२५. सिद्ध



शुद्धि-पत्र

मूलपाठ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११	१२	०भय०	०भया०
३०	१७	परिणामेति	परिणामेति
[illegible]	१७	मस्साणु	मणुस्सा
[illegible]	६	नेरइइ	नेरइए
४०	५	०वउत्ताय	०वउत्ते य
४०	९	वट्ठमाण	वट्टमाण
४६	२८	पूट्टं	पुट्ठ
३१	१७	वेदेति	वेदेंति
४८	२१	उड्डंजाणू	उड्ढजाणू
५१	१०	०ट्ठिति	०ट्ठितो
७७	७	दुक्तवा	दुक्खा
८९	२८	बलय०	वलय०
९३	५	तोरेइ	तीरेइ
१०३	११	०सुद्दिट्ठ०	०मुद्दिट्ठ०
१०३	१४	०वासेहि	०वासेहिं
१०४	२४	विउलस्य	विउलस्स
११७	६	घण्मत्थि०	घम्मत्थि०
१२८	५	जारिसिया	तारिसिया
१३७	२१	ढिच्चा	ठिच्चा
१४४	२३	जंदूदीवे	जवूदीवे
१४७	११	जाव	जाव ४
१४७	१३	न० ४,५, ६	नं० ५, ६, ७
१४७	१५	जाव ७	जाव
१५१	४	असुरण्णो	अमुररण्णो
१५७	५	सहृत्ण०	सहृत्थ०
१६३	१८	गतित्तए	गमित्तए
१७४	२०	उड्ढावाया	उड्ढवाया
१७७	१	पलिभ	पलिओवमं
८४	३	०जोयसणसय-हस्साइं	०जोयणसय-सहस्साइ
८५	८	–वग्गणायण०	–वग्गणाठाण०
९१	६	वि, तया	तया
९१	९	०समुहस्स	०समुद्दस्स
०९	२२,२४,२५	नं० ६,७,८	न० ७,८,९

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२९१	५	दीणस्सरा[१]	दीणस्सरा
		अणिट्ठस्सरा	अणिट्ठस्सरा[१]
३४०	१४	तस्स० भयणाए	यह पक्ति १६३ सूत्र के अत मे है
३४७	१८	अणादिय०	अणादीय०
४३७	१०	माइणे	माहणे
५०३	३	अज्झस्थिए	अज्झत्थिए
५२३	१७	अणुद्धय०	अणुद्धुय०
५२८	१९	सया—	राया—
५७९	१८	उवज्जति	उववज्जति
७६०	७	०गम्ममण-मग्गा	०गम्ममाण-मग्गा
७७९	२५	सव्ठ्व	सव्वट्ठ
७८७	१३	सजय	सजम
८२१	१४	महिंदाण	–माहिंदाण
९२०	१२	सेलोसि०	सेलेसि०

पाठान्तर

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१९	२	परित्थणो०	परित्थणे०
२६	५	अणू०	अणु
३६	१०	अते	अत
८६	११	०भोति	०भोती
९३	२	(७१३)	(७।१३)
९८	६	मणूस्सा	मणुस्सा
१००	४	अहियजिय	अहियुजिय
१०३	१२	त्रैयुक्ता	तैयुक्ता
११२	१	०द्वयोवर्नायो०	द्वयोर्वाचनयो०
११२	९	चउव्वीसाए	चउव्वीसाए
१४४	१२	एतदवर्णन…सन्निभि	एतद्वर्णन…सन्निभ
१६०	३	टितिय	तितिय
१८६	१	व्मायु	०मायु
२००	४ प०१	हरिणेगमेसि	णेगमेसि
२००	४	वाचनायोः	वाचनयो
२१०	९, १-९	१-१०	९, १-९
४८५	२	प्रमो०	प्रथमो०
५१६	११	पडिबुद्ध	पडिबुद्धा
८९५	३	०षठ	षष्ठ०